

गुरु ग्रंथ साहिब

कंप्यूट्रीकरण

अकथ कथा पबलीकेशस

ओपन गुरुदुआरा फाउंडेशन

ओंटैरीओ । कैनडा

२०१९

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-NoDerivs 4.0 Unported License available at <http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0>



You are free:

to Share – to copy, distribute and transmit this work (Guru Granth Sahib)

Under the following conditions:



Attribution

You must attribute this work (but not in any way that suggests that the author or Akath Katha Publications, endorse you or your use of the work).



Non
commercial

You may not use this work for commercial purposes.



No Derivative
Works

You may not alter, transform, or build upon this work.

With the understanding that:

- Waiver** Any of the above conditions can be waived if you get permission from the copyright holder.
- Public Domain** Where the work or any of its elements is in the public domain under applicable law, that status is in no way affected by the license.
- Other Rights** In no way are any of the following rights affected by the license:
- Your fair dealing or fair use rights, or other applicable copyright exceptions and limitations;
 - The author's moral rights;
 - Rights other persons may have either in the work itself or in how the work is used, such as publicity or privacy rights.
- Notice** For any reuse or distribution, you must make clear to others the license terms of this work.

©️ 2019 Akath Katha Publications, Toronto, Ontario, Canada. Some rights reserved.

इह कारज(गुरू ग्रंथ साहिब) आम सिरजनातमक गुण आरोपण-गैर वपारक-गैर विउतपन्न ४.० बे तबदील आगिआ पत्र हेठ मुहइआ कराइआ गइआ है॥

तुसीं अजाद हों:



इस किताब ए जंगल भाग दूजे नूँ साँझा करन वासते । जाँ फेर इसदीआं नकलां करन वासते । जाँ फेर इस कारज नूँ वँडन जाँ परचार करन वास्ते ॥

सिरफ हेठ लिखीआं शरतां दे मुताबक:



गुण आरोपण

इस कारज दा गुण आरोपण करना है(मगर इस तरीके नाल नहीं कि इँझ जाये कि तुहानूँ लेखक जाँ अकथ्य कथा पबलीकेशस दी आगिआ प्रापत है जाँ लेखक तुहाडे नाल सहमति है)



गैर वपारक

इस ग्रंथ दा इस्तमाल तुसी किसे वपारक कॅम वासते जाँ पैसा कमाउण वासते नहीं कर सकदे ॥ तुसीं इसनूँ छाप के वेच नहीं सकदे अते इस तों मुनाफा नहीं कमा सकदे ॥



गैर विउतपन्न

तुसीं इस ग्रंथ'च फेर बदल नहीं सकदे जाँ फेर इह्दे'ते आधारत कोई होर कारज नहीं बना सकदे हों ॥

इस समझ नाल कि:

छोट

उप्पर लिखीआं सारीआं शरतां'तों छोट मिल सकदी है जेकर तुसीं लेखक(कापीराईट होलडर) तों आगिआ प्राप्त कर लवों

लोकक

कारज जेकर इह कारज जां इस कारज दे कुछ तत्त लोकक कारज खेतर'च हण इस आगिआ

खेतर

पत्तर नाल ओहधी हैसिअत'च कोई तबदीली नहीं आवेगी

बाकी हक्क

हेठ लिखे हक्क किसे भी तरीके नाल इस आगिआ पत्तर करके असर पाउं दे ने:

- तुहाडु वाजब इस्तमाल करन दा हक्क जां फेर लागू कापीराईट दीआं कमजोरीआं जां छोट
- लेखक दे नैतक हक्क
- बाकी लोकां दे हक्क इस कारज'च जां जिवें इस नूँ इस्तमाल कीत्ता गइआ है जिवें कि मशहूरी करना अते निजी हक्क

हिदाइत

वँउन जां दुबारा इस्तमाल(इस कारज नूँ कुछ होर बणाउन वास्ते) । तुहानूँ इस कारज दीआं शरतां इस आगिआ पत्तर हेठ दूजिआं नूँ साफ करनीआं चाहिदीआं ने ॥

इह तरजमा तुहाडी सहूलिअत वास्ते मुहइईआ कराइआ गइआ है किसे भी शक्क जां शुभा दी हालत'च

English Version ही लागू होवेगा ॥

© 2019 अकथ्य कथा पबलिकेशंस । टोरँटो । ओंटैरिओ । कैनडा ॥ कुछ हक्क राखवें ॥

ततकरा

इस पोथी बारे.....	liv
त्रुटीआं.....	lv
जपु ॥	१
सोदरु रगु आसा महला १ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	८
रगु आसा महला ४ सो पुरखु ॥ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	१०
सोहिला: रगु गउडी दीपकी महला १ ॥ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	१२
रगु सिरीरगु महला पहिला १ घरु १ ॥	१४
सिरीरगु महला ३ घरु १ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	२६
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरगु महला १ घरु १ असटपदीआ ॥	७३
सिरीरगु महला ३ घरु १ असटपदीआ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	६४
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरगु महला १ घरु ३ ॥	७१
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरगु महला १ पहरे घरु १ ॥	७४
सिरीरगु महला ४ घरु २ छँत वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७८
सिरीरगु महला ७ छँत वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७९
सिरीरगु के छँत महला ७ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ डखणा ॥	८०
सिरीरगु महला ४ वणजारा वरिसेतिनामु गुर प्रसादि ॥	८१

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु की वार महला ४ सलोका नालि ॥	८३
१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु कबीर जीउ का ॥ एकु सुआनु कै घरि गावणा ॥	९१
स्त्रीरागु बाणी भगत बेणी जीउ की ॥ पहरिआ कै घरि गावणा ॥ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	९३
रागु माझा चउपदे घरु १ महला ४	९४
माझा महला ७ चउपदे घरु १ ॥	९६
रागु माझा असटपदीआ महला १ घरु १ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	१०९
१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥ माझा महला ७ घरु ३ ॥	१३२
बारह माहा माझा महला ७ घरु ४ ॥ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	१३३
माझा महला ७ दिन शैणि ॥ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	१३६
वार माझा की तथा सलोक महला १ मलक मुरीद तथा चँद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥	१३७
रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे	१५१
गउड़ी दीपकी महला १ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	१५७
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ३ चउपदे ॥ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	१५७
गऊड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे ॥ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	१६३
महला ७ रागु गउड़ी गुआरेरी चउपदे १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	१७७
गउड़ी गुआरेरी महला ७ चउपदे दुपदे १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	१८७
रागु गउड़ी चेती महला ७ दुपदे १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	२०२
रागु गउड़ी बैरागणि महला ७ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	२०३
गउड़ी बैरागणि रहोए के छँत के घरि मः ७ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥	२०३

शगु गउड़ी पूरबी महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२०४
शगु गउड़ी पूरबी, महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२०४
शगु गउड़ी, पूरबी महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२१०
शगु गउड़ी चेती, महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि.....	२१०
शगु गउड़ी महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२१३
शगु गौड़ी मालवा महला ७ ॥ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२१४
शगु गउड़ी माला, महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२१४
शगु गउड़ी माझ, महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२१६
शगु गउड़ी माझ महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२१७
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ शगु गउड़ी महला ९ ॥	२१९
शगु गउड़ी असटपदीआ महला १ गउड़ी गुआरेरी वरि सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥	२२०
गउड़ी बैरागणि महला १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२२८
शगु गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ असटपदीआ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२२९
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ शगु गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥	२३३
शगु गउड़ी पूरबी महला ४ करहले वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२३४
शगु गउड़ी गुआरेरी महला ७ असटपदीआ वरि सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥	२३७
शगु गउड़ी माझ महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२४०
गउड़ी महला ७ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥	२४१
वरि सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ शगु गउड़ी पूरबी छैत महला १ ॥	२४२

शगु गउड़ी पूरबी छँत महला ३ वरि सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥	२४३
शगु गउड़ी, छँत महला ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२४७
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बावन अखरी महला ५ ॥	२५०
गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥ सलोकु ॥ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२६२
थिती गउड़ी महला ५ सलोकु ॥ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	२९६
गउड़ी की वार महला ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	३००
गउड़ी की वार महला ५ ॥ शइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी ॥ वरि सतिगुर प्रसादि ॥ ..	३१८
शगु गउड़ी भगतां की बाणी ॥ वरि सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥	३२३
शगु गउड़ी गुआरेरी असटपदी कबीर जी की ॥ सतिगुर प्रसादि ॥	३३०
गउड़ी चेती वरि सतिगुर प्रसादि ॥	३३२
शगु गउड़ी बैरगणि, कबीर जी वरि सतिगुर प्रसादि ॥	३३२
शगु गउड़ी पूरबी, कबीर जी वरि सतिगुर प्रसादि ॥	३३४
शगु गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की वरि सतिनाम करता पुरखु गुर प्रसादि ॥	३४०
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ शगु गउड़ी थिती, कबीर जी की, ॥	३४३
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ शगु गउड़ी वार कबीर जीउ के ७ ॥	३४४
शगु गउड़ी चेती बाणी नाम देउ जीउ की वरि सतिगुर प्रसादि ॥	३४५
शगु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी वरि सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥	३४५
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बैरगणि रविदास जीउ ॥	३४५

गउडी पूरबी रविदास जीउ ॥ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३४६
रगु आसा महला १ घरु १ सो दरु ॥	३४७
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ रगु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥	३४८
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ३ महला १ ॥	३५८
आसा घरु ४ महला १ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३५८
आसा घरु ५ महला १ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३५९
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ६ महला १ ॥	३५९
रगु आसा घरु २ महला ३ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३६०
आसा घरु ८ काफी महला ३ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३६५
आसा महला ४ घरु २ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३६५
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ रगु आसा घरु २ महला ४ ॥	३६६
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ महला ४ रगु आसा घरु ६ के ३ ॥	३६८
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ रगु आसा घरु ८ के काफी महला ४ ॥	३६९
रगु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३६९
रगु आसा घरु २ महला ५ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३७०
आसा घरु ३ महला ५ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३७९
रगु आसा घरु ५ महला ५ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	३८०
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ रगु आसा घरु ६ महला ५ ॥	३८०
वरिसेतिगुर प्रसादि ॥ रगु आसा घरु ७ महला ५ ॥	३८४

आसा घरु ८ काफी महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	३९६
आसा घरु ९ महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४०१
वरिंशतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु १० महला ५ ॥	४०१
आसा घरु ११ महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४०३
रगु आसा महला ५ घरु १२ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४०५
रगु आसा महला ५ घरु १३ ॥ शतिगुर प्रसादि ॥	४०६
आसा महला ५ घरु १४ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४०७
आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४०८
रगु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४०९
वरिंशतिगुर प्रसादि ॥ रगु आसा महला ९ ॥	४११
रगु आसा महला १ असटपदीआ घरु २ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४११
रगु आसा महला १ ॥ असटपदीआ घरु ३ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४१७
वरिंशतिगुर प्रसादि ॥ आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥	४१८
आसा महला ३ असटपदीआ घरु २ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४२२
वरिंशतिगुर प्रसादि ॥ रगु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥	४२४
आसा महला ५ असटपदीआ घरु २ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४३०
आसावरी महला ५ घरु ३ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४३१
आसा महला ५ विरहडे घरु ४ छँता की जति वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४३१
रगु आसा महला १ पटी लिखी वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	४३२

रगु आसा महला ३ पटी वरिषतिगुर प्रसादि ॥	१३४
रगु आसा महला १ छँत घरु १ वरिषतिगुर प्रसादि ॥	१३५
रगु आसा महला १ छँत घरु २ वरिषतिगुर प्रसादि ॥	१३८
वरिषतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला १ छँत घरु ३ ॥	१३८
वरिषतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छँत घरु १ ॥	१३९
वरिषतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छँत घरु ३ ॥	१४०
रगु आसा छँत महला ४ घरु १ वरिषतिगुर प्रसादि ॥	१४२
वरिषतिगुर प्रसादि ॥ आसा छँत महला ४ घरु २ ॥	१४४
वरिषतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ४ छँत घरु ४ ॥	१४८
आसा महला ४ छँत घरु ५ वरिषतिगुर प्रसादि ॥	१५१
वरिषतिगुर प्रसादि ॥ रगु आसा महला ५ छँत घरु १ ॥	१५२
आसा छँत महला ५ घरु ४ वरिषतिगुर प्रसादि ॥	१५३
आसा महला ५ छँत घरु ६ वरिषतिगुर प्रसादि ॥	१५४
आसा महला ५ छँत घरु ७ वरिषतिगुर प्रसादि ॥	१५९
आसा महला ५ छँत घरु ८ वरिषतिगुर प्रसादि ॥	१६१
वरिषतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥	१६२
आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टूँडे अस राजै की धुनी ॥	१६२
रगु आसा बाणी भगता की ॥ कबीर जीऊ नामदेउ जीउ रविदास जीउ ॥ आसा स्त्री कबीर जीउ ॥	१७५
वरिषतिगुर प्रसादि ॥ आसा स्त्री कबीर जीउ के चउपदे इक्तुके ॥	१७८

आसा श्री कबीर जीउ के पँचपदे ९ दुतुके ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४७९
आसा श्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इकतुका १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४८१
आसा श्री कबीर जीउ के दुपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४८३
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ आसा बाणी श्री नामदेउ जी की ॥	४८७
आसा बाणी श्री शविदास जीउ की वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४८६
आसा बाणी भगत धँने जी की वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४८७
आसा सेख फरीद जीउ की बाणी वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४८८
शगु गूजरी महला १ चउपदे घरु १ ॥	४८९
शगु गूजरी महला ३ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४९०
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ शगु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥	४९२
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ गूजरी महला ४ घरु ३ ॥	४९४
गूजरी महला ५ चउपदे घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४९५
गूजरी महला ५ चउपदे घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४९६
गूजरी महला ५ पँचपदा घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४९७
गूजरी महला ५ तिपदे घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४९७
गूजरी महला ५ दुपदे घरु २ ॥ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	४९८
गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे ॥ सतिगुर प्रसादि ॥	५०१
गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५०२
गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५०३

गूजरी महला १ घरु ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५०५
गूजरी महला ३ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५०६
गूजरी महला ४ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५०६
गूजरी महला ५ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५०७
गूजरी महला ५ घरु ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५०८
गूजरी की वार महला ३ सिक्कंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५०८
रगु गूजरी वार महला ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५१७
रगु गूजरी भगता की बाणी वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५२४
गूजरी स्त्री नामदेव जी की पदे घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५२५
गूजरी स्त्री रविदास जी के पदे घरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५२५
गूजरी स्त्री त्रिलोचन जीउ के पदे घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५२५
गूजरी स्त्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५२६
रगु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥	५२७
देवगंधारी महला ५ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५२८
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ देवगंधारी महला ५ ॥	५३३
रगु देवगंधारी महला ५ घरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५३३
रगु देवगंधारी महला ५ घरु ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५३४
रगु देवगंधारी महला ५ घरु ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५३४
रगु देवगंधारी महला ५ घरु ६ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	५३५

शुगु देवगँधारी महला ७ घरु ७ ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७३६
ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥ शुगु देवगँधारी महला ९ ॥	७३६
शुगु वुहुरगुडु कुडुडुदु महला ७ घरु २ ॥	७३७
ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥ शुगु वुहुरगुडु महला ९ ॥	७३७
शुगु वुहुरगुडु छँतु महला ४ घरु १ ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७३७
वुहुरगुडु महला ७ छँतु घरु १ ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७४१
वुहुरगुडु महला ७ घरु २ ँरुसुतुनुगुरु प्रसुदुदु ॥	७४४
वुहुरगुडु कु वुरु महला ४ ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७४ॢ
शुगु वडुहँसु महला १ घरु १ ॥	७७७
वडुहँसु महला ३ घरु १ ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७७ॢ
वडुहँसु महला ४ ॥ घरु १ ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७६०
वडुहँसु महला ४ घरु २ ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७६१
वडुहँसु महला ७ घरु १ ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७६२
वडुहँसु महला ७ घरु २ ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७६४
वडुहँसु महला ३ असुतुडुदुडुडु ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७६४
वडुहँसु महला १ छँतु ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७६७
वडुहँसु महला ३ छँतु ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७६७
वडुहँसु महला ४ छँतु ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७७२
वडुहँसु महला ४ डुडुडुडुडुडु ँरुसुतुगुरु प्रसुदुदु ॥	७७७

शुगु वडहँसु महला ७ छँत घरु ४ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	७७६
शुगु वडहँसु महला १ घरु ७ अलाहणीआ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	७७८
वडहँसु महला ३ तीजा वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	७८२
वडहँसु की वार महला ४ ललां बहलीमा की धुनि गावणी वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	७८७

सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥ ७९७

सोरठि महला १ घरु ३ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	७९९
सोरठि महला ३ घरु १ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	७९९
सोरठि महला ४ घरु १ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६०४
सोरठि महला ७ घरु १ तितुके वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६०८
सोरठि महला ७ घरु २ चउपदे वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६११
सोरठि महला ७ घरु २ दुपदे वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६१७
सोरठि महला ७ घरु ३ चउपदे वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६२१
सोरठि महला ७ घरु ३ दुपदे वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६२७
सोरठि महला ९ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६३१
सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६३४
सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६३७
सोरठि महला ७ घरु १ असटपदीआ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६३९
सोरठि महला ७ घरु २ असटपदीआ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६४१
शुगु सोरठि वार महले ४ की वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६४२

रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६५४
सोरठि वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६५६
रागु सोरठि बानी भगत नामदे जी की घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६५६
रागु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६५७
रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की वरि सतिगुरु प्रसादि ॥	६५९

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे.....६६०

धनासरी महला १ घरु दूजा वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६६१
धनासरी महला १ घरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६६२
धनासरी महला १ आरती वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६६३
धनासरी महला ३ घरु २ चउपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६६३
रागु धनासरी महला ३ घरु ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६६६
धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६६६
धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६६८
धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६७०
रागु धनासरी महला ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६७५
धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६७६
धनासरी महला ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६७७
धनासरी महला ५ घरु ६ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६७८
धनासरी महला ५ घरु ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	६७९

धनासरी महला ७ घरू ८ दुपदे १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६७९
धनासरी महला ७ घरू ९ पड़ताल १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६८३
धनासरी महला ७ घरू १२ १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६८३
१३ सतिगुर परसादि ॥ धनासरी महला ९ ॥	६८४
धनासरी महला १ घरू २ असटपदीआ १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६८७
धनासरी महला ७ घरू ६ असटपदी १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६८६
धनासरी महला १ छँत १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६८७
धनासरी छँत महला ४ घरू १ १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६९०
धनासरी महला ७ छँत १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६९१
रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की १३ सतिगुर परसादि ॥	६९१
धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६९२
धनासरी भगत रविदास जी की १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६९४
धनासरी बाणी भगतां की त्रिलोचन १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६९७
जैतसरी महला ४ घरू १ चउपदे.....	६९६
जैतसरी महला ४ घरू २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥	६९८
जैतसरी महला ७ घरू ३ १३ सतिगुर प्रसादि ॥	७००
जैतसरी महला ७ घरू ३ दुपदे १३ सतिगुर प्रसादि ॥	७००
जैतसरी महला ९ १३ सतिगुर प्रसादि ॥	७०२
जैतसरी महला ७ छँत घरू १ १३ सतिगुर प्रसादि ॥	७०३

जैतसरी महला ७ घरु २ छँत वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७०४
जैतसरी महला ७ वार सलोका नालि वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७०५
जैतसरी बाणी भगता की वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७१०
अकाल मूरति अजूनी सैभै गुर प्रसादि ॥ रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥	७११
टोडी महला ७ घरु १ दुपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७११
टोडी महला ७ घरु २ चउपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७१२
टोडी महला ७ घरु २ दुपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७१३
टोडी महला ७ घरु ३ चउपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७१५
टोडी महला ७ घरु ४ दुपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७१५
टोडी महला ७ घरु ५ दुपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७१६
टोडी महला ९ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७१८
टोडी बाणी भगता की वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७१८
रागु बैराडी महला ४ घरु १ दुपदे	७१९
रागु बैराडी महला ७ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७२०
रागु तिलैंग महला १ घरु १	७२१
तिलैंग महला १ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७२१
तिलैंग महला १ घरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७२१
तिलैंगु महला ७ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७२३
तिलैंगु महला ७ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७२३

तिलौंग महला १ घरु २ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७२४
तिलौंग महला ९ काफी वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७२६
तिलौंग बाणी भगता की कबीर जी वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७२७
शगु सूही महला १ चउपदे घरु १ ॥	७२८
सूही महला १ घरु २ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७२८
सूही महला १ घरु ६ वरिसेतिगुर परसादि ॥	७२९
सूही महला १ घरु ७ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७३०
शगु सूही महला ४ घरु १ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७३१
सूही महला ४ घरु २ वरिसेतिगुर परसादि ॥	७३२
सूही महला ४ घरु ६ वरिसेतिगुर परसादि ॥	७३३
सूही महला ४ घरु ७ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७३४
शगु सूही महला ५ घरु १ वरिसेतिगुर परसादि ॥	७३६
सूही महला ५ घरु ३ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७३८
शगु सूही महला ५ घरु ६ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७४३
शगु सूही महला ५ घरु ७ पड़ताल वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७४६
शगु सूही महला ५ घरु ६ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७४६
शगु सूही महला ५ घरु ७ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७४७
शगु सूही असटपदीआ महला १ घरु १ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७५०
सूही महला १ घरु ९ वरिसेतिगुर प्रसादि ॥	७५१

सूही महला १ काफी घरु १० वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७५१
रागु सूही महला ३ घरु १ असटपदीआ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७५३
रागु सूही महला ३ घरु १० वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७५५
रागु सूही असटपदीआ महला ४ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७५७
रागु सूही महला ४ असटपदीआ घरु १० वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७५८
रागु सूही असटपदीआ महला ५ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७५९
रागु सूही महला ५ घरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७६०
रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु ९ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७६०
रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु १० काफी वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७६१
रागु सूही महला १ कुचजी वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७६२
रागु सूही छँत महला १ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७६३
रागु सूही महला १ छँतु घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७६४
रागु सूही महला १ घरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७६४
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छँत महला १ घरु ४ ॥	७६५
रागु सूही छँत महला ३ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७६७
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥	७६८
रागु सूही महला ४ छँत घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७७२
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छँत महला ४ घरु २ ॥	७७४
रागु सूही छँत महला ४ घरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	७७५

सूही महला ४ घरु ५ ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	७७६
रगु सूही छँत महला ५ घरु १ ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	७७७
रगु सूही छँत महला ५ घरु २ ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	७७८
रगु सूही छँत महला ५ घरु २ ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	७७९
रगु सूही महला ५ छँत ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	७८४
ँसिंतिगुर प्रसादि ॥ वार सूही की सलोका नालिं महला ३ ॥	७८५
रगु सूही बाणी स्त्री कबीर जीउ तथा सभना भगता की ॥ कबीर के ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	७९२
रगु सूही बाणी स्त्री रविदास जीउ की ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	७९३
ँसिंतिगुर प्रसादि ॥ रगु सूही बाणी सेख फरीद जी की ॥	७९४
रगु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥	७९५
बिलावलु महला ३ घरु १ ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	७९६
रगु बिलावलु महला ४ घरु ३ ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	७९८
ँसिंतिगुर प्रसादि ॥ रगु बिलावलु महला ४ पड़ताल घरु १३ ॥	८००
रगु बिलावलु महला ५ चउपदे घरु १ ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	८०१
रगु बिलावलु महला ५ घरु २ यानडीए के घरि गावणा ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	८०२
रगु बिलावलु महला ५ घरु ४ ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	८०३
रगु बिलावलु महला ५ घरु ४ दुपदे ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	८०६
रगु बिलावलु महला ५ घरु ५ चउपदे ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	८०८
रगु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ५ ँसिंतिगुर प्रसादि ॥	८१७

शगु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ६ १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८२०
शगु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ७ १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८२१
शगु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ८ १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८२७
शगु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ९ १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८२९
शगु बिलावलु महला ५ घरु १३ पड़ताल १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८३०
शगु बिलावलु महला ९ दुपदे १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८३०
बिलावलु असटपदीआ महला १ घरु १० १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८३१
बिलावलु महला ३ असटपदी घरु १० १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८३२
बिलावलु महला ४ असटपदीआ घरु ११ १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८३३
शगु बिलावलु महला ५ असटपदी घरु १२ १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८३७
बिलावलु महला १ थिती घरु १० जति १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८३८
बिलावलु महला ३ वार सत घरु १० १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८४१
बिलावलु महला १ छँत दखणी १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८४३
छँत बिलावलु महला ४ मँगल १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८४४
बिलावलु महला ५ छँत १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८४५
बिलावलु महला ५ छँत १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८४७
बिलावलु महला ५ छँत मँगल १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८४७
बिलावलु की वार महला ४ १८३३३तिगुर प्रसादि ॥	८४९
बिलावलु बाणी भगता की कबीर जीउ की १८३३३ति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥	८५५

बिलावलु बाणी भगत नामदेव जी की १८३७	१८३७
बिलावलु बाणी रविदास भगत की १८३८	१८३८
बाणी सधने की रागु बिलावलु १८३८	१८३८
रागु गोंड चउपदे महला ४ घरु १ ॥	१८३९
रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु १ १८६२	१८६२
रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु २ १८६२	१८६२
रागु गोंड असटपदीआ महला ५ घरु २ १८६९	१८६९
रागु गोंड बाणी भगता की ॥ कबीर जी घरु १ १८७०	१८७०
रागु गोंड बाणी कबीर जीउ की घरु २ १८७०	१८७०
रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु १ १८७३	१८७३
रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २ १८७४	१८७४
रागु गोंड बाणि रविदास जीउ की घरु २ १८७५	१८७५
रामकली महला १ घरु १ चउपदे	१८७६
१८८०	१८८०
१८८०	१८८०
१८८२	१८८२
१८८६	१८८६
१९०१	१९०१
१९०१	१९०१

१ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥ शगु रामकली महला ९ तिपदे ॥	९०१
रामकली महला १ असटपदीआ १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९०२
रामकली महला ३ असटपदीआ १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९०८
रामकली महला ७ असटपदीआ १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९१२
रामकली महला ७ असटपदी १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९१७
रामकली महला ३ अनंद १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९१७
रामकली सदु १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९२३
रामकली महला ७ छैत १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९२४
रामकली महला ७ रुती सलोकु १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९२७
रामकली महला १ दरवणी ओअँकारु १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९२९
रामकली महला १ सिध गोसटि १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९३८
१ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥ रामकली की वार महला ३ ॥ जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी ॥	९४७
रामकली की वार महला ७ १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९७७
रामकली की वार राइ बलवँडि तथा सतै डूमि आखी १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९६६
रामकली बाणी भगता की कबीर जीउ १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९६८
रामकली घरु २ बाणी कबीर जी की १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९७१
बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १ १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९७२
रामकली बाणी रविदास जी की १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९७३
रामकली बाणी बेणी जीउ की १ॐ शैतिगुर प्रसादि ॥	९७४

मारू महला ५ घर ६ दुपदे वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१००६
मारू अँजुली महला ५ घर ७ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१००७
वरिंशतिगुर प्रसादि ॥ मारू महला ९ ॥	१००८
मारू असटपदीआ महला १ घर १ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥	१००८
वरिंशतिगुर प्रसादि ॥ मारू काफी महला १ घर २ ॥	१०१४
मारू महला ३ घर ५ असटपदी वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०१६
मारू महला ५ घर ४ असटपदीआ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०१८
मारू महला ५ घर ८ अँजुलीआ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०१९
मारू सोलहे महला १ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०२०
मारू सोलहे महला ३ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०४३
मारू सोलहे महला ४ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०६९
मारू सोलहे महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०७१
मारू सोलहे महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०७२
मारू सोलहे महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०७३
मारू महला ५ सोलहे वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०७४
मारू सोलहे महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०७५
मारू सोलहे महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०७६
मारू सोलहे महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०७८
मारू सोलहे महला ५ वरिंशतिगुर प्रसादि ॥	१०८१

मारू महला ५ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	१०८५
मारू वार महला ३ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	१०८६
मारू वार महला ५ डखणे मः ५ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	१०९४
शगु मारू बाणी कबीर जीउ की वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	११०२
शगु मारू बाणी कबीर जीउ की वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	११०४
शगु मारू बाणी नामदेउ जी की वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	११०५
शगु मारू बाणी जैदेउ जीउ की वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	११०६
शगु मारू बाणी रविदास जीउ की वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	११०६
तुखारी छँत महला १ बारह माहा.....	११०७
तुखारी छँत महला ४ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	१११३
तुखारी छँत महला ५ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	१११७
केदार महला ४ घरु १.....	१११८
केदार महला ५ घरु २ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	१११९
केदार महला ५ घरु ३ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	१११९
केदार महला ५ घरु ४ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	१११९
केदार महला ५ घरु ५ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	११२१
केदार छँत महला ५ वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	११२२
शगु केदार बाणी कबीर जीउ की वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	११२३
शगु केदार बाणी रविदास जीउ की वरिं सतिगुर प्रसादि ॥	११२४

रागु भैरउ महला १ घरु १ चउपदे..... ११२५

रागु भैरउ महला ३ चउपदे घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११२८
भैरउ महला ३ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११३०
रागु भैरउ महला ४ चउपदे घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११३४
भैरउ महला ४ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११३५
भैरउ महला ५ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११३६
रागु भैरउ महला ५ चउपदे घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११३८
रागु भैरउ महला ५ पडताल घरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११५३
भैरउ असटपदीआ महला १ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११५३
भैरउ महला ३ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११५४
भैरउ महला ५ असटपदीआ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११५५
भैरउ बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११५७
भैरउ कबीर जी असटपदी घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११६२
भैरउ बानी नामदेउ जीउ की घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११६३
भैरउ नामदेउ जीउ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११६४
भैरउ बाणी रविदास जीउ की घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११६७

रागु बसँतु महला १ घरु १ चउपदे दुतुके..... ११६८

महला १ बसँतु हिंडोल घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११७१
बसँतु महला ३ घरु १ दुतुके वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११७२

बसँतु हिंडोल महला ३ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११७७
रागु बसँतु महला ४ घरु १ इक तुके वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११७७
बसँतु हिंडोल महला ४ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११७८
बसँतु महला ५ घरु १ दुतुके वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११८०
बसँतु महला ५ घरु १ इक तुके वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११८४
बसँतु महला ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११८५
बसँतु महला ५ घरु २ हिंडोल वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११८५
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बसँतु हिंडोल महला ९ ॥	११८६
बसँतु महला १ असटपदीआ घरु १ दुतुकीआ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११८७
बसँतु हिंडोलु महला १ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९०
बसँतु हिंडोलु घरु २ महला ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९१
बसँतु महला ५ घरु १ दुतुकीआ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९२
बसँतु की वार महला ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९३
बसँतु बाणी भगतां की ॥ कबीर जी घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९३
बसँतु हिंडोलु घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९५
रामानंद जी घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९५
बसँतु बाणी नामदेउ जी की वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९५
बसँतु बाणी रविदास जी की वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९६
बसँतु कबीर जीउ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९६

रागु सारंग चउपदे महला १ घरु १..... ११९७

सारंग महला ४ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	११९८
सारंग महला ४ घरु ३ दुपदा वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२००
सारंग महला ४ घरु ७ दुपदे पड़ताल वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२००
सारंग महला ७ चउपदे घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२०२
सारंग महला ७ घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२०६
सारंग महला ७ घरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२०८
सारंग महला ७ दुपदे घरु ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२०९
सारंग महला ७ चउपदे घरु ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२२९
सारंग महला ७ घरु ६ पड़ताल वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२२९
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सारंग महला ९ ॥	१२३१
रागु सारंग असटपदीआ महला १ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२३२
सारंग महला ३ असटपदीआ घरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२३३
सारंग महला ७ असटपदीआ घरु १ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥	१२३७
सारंग महला ७ असटपदी घरु ६ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२३७
सारंग छैत महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२३६
सारंग की वार महला ४ राड महमे रसने की धुनि वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२३७
रागु सारंग बाणी भगतां की ॥ कबीर जी ॥ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२७१
सारंग बाणी नमदेउ जी की ॥ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१२७२

सारंग वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७३
सारंग महला ७ सूरदास ॥ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७३
सारंग कबीर जीउ ॥ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७३
शगु मलार चउपदे महला १ घरु १.....	१२७४
मलार महला १ घरु २ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७६
मलार महला ३ चउपदे घरु १ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७७
मलार महला ३ घरु २ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२६१
शगु मलार महला ४ घरु १ चउपदे वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२६२
मलार महला ४ पड़ताल घरु ३ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२६७
शगु मलार महला ७ चउपदे घरु १ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२६६
शगु मलार महला ७ दुपदे घरु १ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२६७
शगु मलार महला ७ चउपदे घरु २ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७०
शगु मलार महला ७ पड़ताल घरु ३ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७१
मलार महला १ असटपदीआ घरु १ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७३
मलार महला १ असटपदीआ घरु २ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७७
मलार महला ३ असटपदीआ घरु १ ॥ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७६
मलार महला ३ असटपदी घरु २ ॥ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७७
शगु मलार छँत महला ७ ॥ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७८
वार मलार की महला १ शणे कैलास तथा मालदे की धुनि ॥ वरि शितिगुर प्रसादि ॥	१२७८

शुगु मलार बाणी नामदेव जीउ की ॥ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१२९२
मलार बाणी भगत रविदास जी की १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१२९३
मलार १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१२९३
शुगु कानड़ा चउपदे महला ४ घरू १.....	१२९४
कानड़ा महला ४ पड़ताल घरू ३ ॥ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१२९६
कानड़ा महला ५ घरू २ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१२९८
कानड़ा महला ५ घरू ३ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३००
कानड़ा महला ५ घरू ४ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३०१
कानड़ा महला ५ घरू ५ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३०४
कानड़ा महला ५ घरू ६ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३०४
कानड़ा महला ५ घरू ७ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३०५
कानड़ा महला ५ घरू ८ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३०५
कानड़ा महला ५ घरू ९ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३०६
कानड़ा महला ५ घरू १० १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३०७
कानड़ा महला ५ घरू ११ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३०७
कानड़ा असटपदीआ महला ४ घरू १ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३०८
कानड़ा छैंत महला ५ १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३१२
कानड़े की वार महला ४ मूसे की वार की धुनी १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३१२
शुगु कानड़ा बाणी नामदेव जीउ की १ॐसिदिगुर प्रसादि ॥	१३१८

शुगु कलिआन महला ॡ १३१९

कलिआनु भोपाली महला ॡ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३२१

शुगु कलिआनु महला ॡ घरु १ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३२१

कलिआन महला ॡ घरु २ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३२२

कलिआन महला ॡ असटपदीआ ॥ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३२३

शुगु प्रभाती बिभास महला १ चउपदे घरु १ ॥ १३२७

शुगु प्रभाती महला ३ चउपदे वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३३२

प्रभाती महला ॡ बिभास वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३३७

प्रभाती बिभास पड़ताल महला ॡ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ ॥ १३३७

प्रभाती बिभास पड़ताल महला ॡ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३३७

प्रभाती महला ॡ घरु २ बिभास वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३ॡ१

प्रभाती महला ॡ बिभास पड़ताल वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३ॡ१

प्रभाती असटपदीआ महला १ बिभास वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३ॡ२

प्रभाती महला ३ बिभास वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३ॡ६

बिभास प्रभाती महला ॡ असटपदीआ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३ॡ७

बिभास प्रभाती बाणी भगत कबीर जी की वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३ॡ९

प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३ॢ०

प्रभाती भगत बेणी जी की वरि सतिगुरु प्रसादि ॥ १३ॢ१

शुगु जैजावैती महला ॡ ॥ १३ॢ२

सलोक सहस्रक्रीती महला १ ॥	१३७३
सलोक सहस्रक्रीती महला ५.....	१३७३
महला ५ गाथा वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१३६०
फुनहे महला ५ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥	१३६१
चउबोले महला ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१३६३
सलोक भगत कबीर जीउ के वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१३६४
सलोक सेख फरीद के वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१३७७
सवये स्त्री मुखवाक्य महला ५ ॥	१३८५
सवये स्त्री मुखवाक्य महला ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१३८७
सवईए महले पहिले के १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१३८९
सवईए महले दूजे के २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१३९१
सवईए महले तीजे के ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१३९२
सवीए महले चउथे के ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१३९६
सवीए महले पँजवे के ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१४०६
सलोक वारां ते वधीक ॥ महला १ ॥	१४१०
सलोक महला ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१४१३
सलोक महला ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१४२१
सलोक महला ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥	१४२४
वरि सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक महला ९ ॥	१४२६

मुँदावणी महला ५ ॥	१४२९
सलोक महला ५ ॥	१४२९

इस पोथी बारे

वाहिगुरू जी का खालसा वाहिगुरू जी की फतहि ॥ इह पोथी इक अजाद कारज है अते इहधा किसे होर इस तहाँ दे कारजां । जिवें कि गुरबाणी सी डी वगैर्हा । नाल कोई रिश्ता नहीं है ॥ इहधेच कमींआ दा सिर्फ ओपन गुरदुआरा फांऊंडेशन जुम्मेवार है ॥ इह कारज क्रीएटिव कौमंस आगिआ पत्र हेठ जारी कीत्ता गइआ है ॥ इस कारज तों कोई मुनाफा खोरी नहीं कीत्ती जा सकदी जां इसनूँ छाप के मुल्ल वेच्चिआ जा सकदा है ॥ हां पर तुसीं मुफ्त'त जरूर वंड सकदे हो॥

*This is an independent work and is not derived from similar works such as Gurbani CD etc. Sole responsibility of all errors and omissions lies with Open Gurdwara Foundation. This work is released under Creative Commons Share Alike CC BY-ND 4.0 and is FREE for use for Non-Commercial purposes and **CAN NOT BE SOLD** in any format, digital or print . But yes free distribution is permitted.*

त्रुटीआं

वाहिंगुरू जी का खालसा वाहिंगुरू जी की फतहि ॥ इस पोथी'च कुछ शब्द जिवें कि इस वाक'च "जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणीं. ॥ सहजि सँतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥" शब्द गुणीं. इह हथ लिखत पोथी'च इँझ लिखिआ होइआ है ॥

गुणी

बिंदी बिहारी'तों पहिलां है मगर कॅंप्यूट्रीकरण करण'च जो "फौंट" इस्तमाल होइआ है ओह सान्णुँ इह शब्द ठीक तरीके नाल लिखण नहीं देंदा ॥ सो इन्हू असीं इक अँग्रेजी दा फुल सटौप जां पीरिअड लगा के दरशाइआ है ॥ नवें फौंट'ते कॅंम चालू है जो इस कमी नूँ दूर करन'च सहाई होवेगा ॥

इस तों इलावा जे कोई त्रुटी आप जी नूँ नजर आवे ते सान्णुँ जरूर पता देना जी ॥ आप जी ई मेल राहीं सान्णुँ sewadar@opengurdwara.org ते इत्तला कर सकदे हो ॥

ੴ

ਸਤਿਨਾਮ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ੴ ॥

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥ ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ ॥ ੧ ॥ ਸੋਚੈ ਸੋਚਿ ਨ ਹੋਵੈ ਜੇ ਸੋਚੀ ਲਖਵਾਰ ॥ ਚੁਪੈ ਚੁਪ ਨ ਹੋਵੈ ਜੇ
ਲਾਭੁ ਰਹਾ ਲਿਵ ਤਾਰ ॥ ਭੁਖਿਓ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਰ ॥ ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਲਖ ਹੋਹਿ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ ॥ ਕਿਵ
ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਏ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਟੁਟੈ ਪਾਲਿ ॥ ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਇ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲ ॥ ੧ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਆਕਾਰ ਹੁਕਮੁ ਨ
ਕਹਿਆ ਜਾਇ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਜੀਅ ਹੁਕਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਇ ॥ ਹੁਕਮੀ ਉਤਮੁ ਨੀਚ ਹੁਕਮਿ ਲਿਖਿ ਦੁਖ ਸੁਖ ਪਾਇਆਹਿ ॥ ਇਕਨਾ ਹੁਕਮੀ
ਬਖਸੀਸ ਇਕਿ ਹੁਕਮੀ ਸਦਾ ਭਵਾਇਆਹਿ ॥ ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਬਾਹਰਿ ਹੁਕਮ ਨ ਕੋਏ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਜੇ ਬੁਝੈ ਤ ਹਉਮੈ ਕਹੈ ਨ ਕੋਏ ॥
੨ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਟਾਣੁ ਹੋਵੈ ਕਿਸੈ ਟਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਦਾਤਿ ਜਾਣੇ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਗੁਣ

वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को
 जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे
 थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥ ३ ॥ साचा साहिबु साचु
 नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेर कि अगै रखीरे जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि
 बोलणु बोलीरे जितु सुणि धरे पिआर ॥ अमित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
 नानक एवै जाणीरे सभु आपे सचिआरु ॥ ४ ॥ थापिआ न जाइ कीता न होए ॥ आपे आपि निरँजनु सोइ ॥ जिनि सेविआ
 तिनि पाइआ मानु ॥ नानक गावीरे गुणी निधानु ॥ गावीरे सुणीरे मनि रखीरे भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
 गुरुमुखि नादँ गुरुमुखि वेदँ गरुमुखि रहिआ समाई ॥ गुर ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा
 नाही कहणा कथनु ना जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ५ ॥ तीरथि नावा
 जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक
 जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ६ ॥ जे जुग चारे आरजा
 होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीरे नालि चले सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि
 न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवँतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ
 न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥ ७ ॥ सुणिरे सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिरे धरति धवल आकास ॥ सुणिरे दीप लोअ
 पाताल ॥ सुणिरे पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिरे दूख पाप का नासु ॥ ८ ॥ सुणिरे ईसरु बरमा
 ईंद ॥ सुणिरे मुखि सालाहण मँदु ॥ सुणिरे जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिरे

सासत सिमिति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिरे दूख पाप का नासु ॥ ९ ॥ सुणिरे सतु संतोख गिआनु ॥
 सुणिरे अठसठि का इसनानु ॥ सुणिरे पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिरे लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु
 ॥ सुणिरे दूख पाप का नासु ॥ १० ॥ सुणिरे सरा गुणा के गाह ॥ सुणिरे सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिरे अँधे पावे राहु ॥
 सुणिरे हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिरे दूख पाप का नासु ॥ ११ ॥ मँने की गति कही न जाइ ॥
 जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखणहारु ॥ मँने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरँजनु होइ ॥ जे को
 मँनि जाणे मनि कोइ ॥ १२ ॥ मँने सुरति होवै मनि बुधि ॥ मँने सगलु भवण की सुधि ॥ मँने मुहि चोटा ना खाइ ॥ मँने जम
 कै साथि न जाइ ॥ ऐसा नामु निरँजनु होइ ॥ जे को मँनि जाणे मनि कोइ ॥ १३ ॥ मँने मारगि ठाक न पाइ ॥ मँने पति सिउ
 परगटु जाइ ॥ मँने मगु न चलै पँथु ॥ मँने धरम सेती सनबँधु ॥ ऐसा नामु निरँजनु होइ ॥ जे को मँनि जाणे मनि कोइ ॥
 १४ ॥ मँने पावहि मोखु दुआरु ॥ मँने परवारै साधारु ॥ मँने तरै तारे गुरु सिख ॥ मँने नानक भवहि न भिख ॥ ऐसा नामु
 निरँजनु होइ ॥ जे को मँनि जाणे मनि कोइ ॥ १५ ॥ पँच परवाण पँच परधानु ॥ पँचे पावहि दरगहि मानु ॥ पँचे सोहहि दरि
 राजानु ॥ पँचा का गुरु एकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइआ का पूतु
 ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु ॥
 तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रँगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥
 लेखा लिखिआ केता होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणे कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ एको कवाउ ॥ तिस ते
 होए लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा
 सलामति निरँकार ॥ १६ ॥ असँख जप असँख भाउ ॥ असँख पूजा असँख तप ताउ ॥ असँख गरँथ मुखि वेद पाठ ॥
 असँख जोग

मनि रहहि उदासु ॥ असँख भगत गुण गिआन वीचार ॥ असँख सती असँख दातार ॥ असँख सूर मुह भख सार ॥ असँख
मोनि लिख लाइ तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा
सलामति निरँकार ॥ १७ ॥ असँख मूरख अँध घोर ॥ असँख चोर हरामखोर ॥ असँख अमर करि जाहि जोर ॥ असँख गल
वढ हतिआ कमाहि ॥ असँख पापी पापु कर जाहि ॥ असँख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असँख मलेछ मलु भखि खाहि ॥
असँख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू
सदा सालमति निरँकार ॥ १८ ॥ असँख नाव असँख थाव ॥ अगँम अगँम असँख लोअ ॥ असँख कहहि सिरि भारु होइ ॥
अखरी नासु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलण बाणि ॥ अखरा सिरि सँजोगु
वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को
थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरँकार
॥ १९ ॥ भरीऐ हथु पैरु तनु देहु ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपडु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ भरिऐ
मति पापा कै सँगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रँगि ॥ पुँनी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि
आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ २० ॥ तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ
मँनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ ॥
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु सुवेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि
सि रुती माहु कवण जितु होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पँडती जे होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि
लेखु कुराणु ॥ थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ किव करि

आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक आखणि सभु को आखै इक दू इक सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई
 कीता जा का होवै ॥ नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥ २१ ॥ पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥ ओड़क
 ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ लेखा होइ ता लिखीरे लेखै होए
 विणासु ॥ नानक वडा आखीरे आपे जाणै आपु ॥ २२ ॥ सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि
 समुँदि न जाणीअहि ॥ समुँद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥ २३ ॥
 अँतु न सिफती कहणि न अँतु ॥ अँतु न करणै देणि न अँतु ॥ अँतु न वेखणि सुणणि न अँतु ॥ अँतु न जापै किआ मनि मँत ॥
 अँतु न जापै कीता आकारु ॥ अँतु न जापै पारावार ॥ अँतु कारणि केते बिललाहि ॥ ता के अँतु न पाए जाहि ॥ एहु अँतु न
 जाणै कोइ ॥ बहुता कहीरे बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे
 कउ जाणै सोइ ॥ जेवड आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥ २४ ॥ बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा
 दाता तिलु न तमाइ ॥ केते मँगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु
 पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भी दाति तेरी दातार ॥ बँदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु
 आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाहि ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि
 केई केइ ॥ जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातसाही पातिसाहु ॥ २५ ॥ अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल
 वापारीए अमुल भँडार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु
 तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥
 आखि आखि रहे लिव लाइ ॥ आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि ईंद ॥

आखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि
 सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ एते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि
 न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै बोलु विगाडु ॥ ता लिखीरे सिरि
 गावारा गावारु ॥ २६ ॥ सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद अनेक असँखा केते वावणहारे ॥
 केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥ गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसँतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु
 गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि ईंद इदासणि बैठे
 देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अँदरि गावनि साध विचारे ॥ गावनि जती सती सँतोखी गावहि वीर करारे ॥
 गावनि पँडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पड़आले ॥ गावनि रतन उपाए
 तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरु गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खँड मँडल वरभँडा करि करि रखे धारे ॥
 सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ सोई
 सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रँगी रँगी भाती करि करि जिनसी
 माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई
 ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ २७ ॥ मुँदा सँतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
 खिँथा कालु कुआरी काइआ जुगति डँडा परतीति ॥ आई पँथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥
 आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ २८ ॥ भुगति गिआनु दइआ भँडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ आपि
 नाथु नाथी सभ जाकी रिधि सिधि अवरा साद ॥ सँजोग विजोगु दुइ कार

चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ २९ ॥ एका माई
 जुगति विआई तिनि चले परवाणु ॥ इकु संसारी इकु भंडारी इकु भंडारी इकु लाइ दीबाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव
 होवै फुरमाणु ॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति
 जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३० ॥ आसणु लोइ लोइ भंडार ॥ जो किछु पाइआ सु एका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥
 नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३१ ॥ इक दू जीभौ
 लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥ एतु राति पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ ईकीस
 ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥ ३२ ॥ आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥
 जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती
 गिआनि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥ ३३ ॥
 राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल ॥ तिसु विचि जीअ जुगति के
 रंग ॥ तिन के नाम अनेक अनंत ॥ करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
 नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई ओथै पाइ ॥ नानक गइआ जापै जाइ ॥ ३४ ॥ धरम खंड का एहो धरमु ॥ गिआन
 खंड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ
 करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इंद चंद्र सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव
 दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न
 अंतु ॥ ३५ ॥ गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥ तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति
 घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥

ता की आ गला कथी आ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की
 सुधि ॥ ३६ ॥ कर्म खंड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर
 ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ता के रूप न कथने जाहि ॥ ना ओहि मरहि न ठगे जाहि ॥ जिन कै रामु वसै मन माहि
 ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥ सचखंडि वसै निरंकारु ॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
 तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै
 विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥ ३७ ॥ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
 भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि कर्मु तिन कार
 ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥ ३८ ॥ सलोकु ॥ पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ दाई दाइआ
 खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ कर्मी आपो आपणी के नेडै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ
 गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥ १ ॥

सोदरु रागु आसा महला १ १८ श्रुतिगुरु प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी
 सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुप्तु
 लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इंद्र
 इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ गावनि तुधनो जती सती

सँतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पँडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ
 मनु मोहनि सुरगु मछु पड़आले ॥ गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा
 गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खँड मँडल ब्रहमँडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि
 रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु
 साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रँगी रँगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
 करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु
 साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥ केवड वडा डीठा होइ ॥
 कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गँभीरा गुणी गहीरा ॥ कोइ न जाणै
 तेरा केता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी
 धिआनी गुर गुरहाई ॥ कहनु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चँगिआईआ ॥ सिधा पुरखा
 कीआ वडिआईआ ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥ आखण वाला किआ
 वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भँडारा ॥ जिसु तूदेहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला १
 ॥ आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख
 ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिल वडिआई ॥ आखि थके
 कीमति नहीं पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देदा रहै
 न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥ ३ ॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि

दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥ ४ ॥ ३ ॥ रागु गूजरी महला ४ ॥
 हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥ १ ॥ मेरे
 मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन
 के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन
 हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥ ३
 ॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धनु धंन सत संगति जितु हरि रसु पाइआ
 मिल जन नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥ ४ ॥ रागु गूजरी महला ५ ॥ काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ
 ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै कर धरिआ ॥ १ ॥ मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि
 परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि
 रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ तिन कवणु खलावै
 कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥ ३ ॥ सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि
 बलि सद बलि जाईरे तेरा आंतु न पारावरिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु आसा महला ४ सो पुरखु ॥ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥
 सभि जीअ तुमारे जी तूँ जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी

किआ नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तूँ घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी
 सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूँ आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूँ पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे
 किआ गुणु आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि
 तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ जिन
 निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूप
 समासी ॥ से धँनु से धँनु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥ ३ ॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे
 बिअंत बेअंता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा
 जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिमिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत
 से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥ तूँ आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई
 ॥ तूँ जुगु जुगु एको सदा सदा तूँ एको जी तूँ निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूँ आपे करहि सु होई ॥ तुधु
 आपे खिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥ ५ ॥ १
 ॥ आसा महला ४ ॥ तूँ करता सचिआरु मैडा साई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूँ देहि सोई हउ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 सभ तेरी तूँ सभनी धिआइआ ॥ जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु
 आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूँ दरिआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा
 खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥ २ ॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि
 वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ तूँ आपे करता तेरा कीआ

सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥
 आसा महला १ ॥ तितु सरवडै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि किआ ॥ पँकजु मोहु पगु नही चाले हम देखा तह डूबी अले ॥
 १ ॥ मन एकु न चेतसि मूड मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़इआ मूरख
 मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नही वीसरिआ ॥ २ ॥ ३ ॥ आसा महला ५ ॥ भई परापति
 मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिले साधसंगति भजु केवल नाम ॥
 १ ॥ सरँजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा जात रँगे माइआ कै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ
 ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करँमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ ४ ॥

सोहिला: रागु गउड़ी दीपकी महला १ ॥ १३३ श्रितिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीए करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥ १ ॥ तुम गावहु मेरे निरभउ
 का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित नित जीअडे समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे
 दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा लिखिआ मिलि कर पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसडीआ
 जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥ ३ ॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदडे नित पवँनि ॥ सदणहारा सिमरीए नानक से दिह आवँनि ॥ ४
 ॥ १ ॥ रागु आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥ १ ॥ बाबा जै घरि करते
 कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरजु एको
 रुति अनेक ॥ नानक करते के केते

वेस ॥ २ ॥ २ ॥ रागु धनासरी महला १ ॥ गगन मै थालु रवि चँदु दीपक बने तारिका मँडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो
 पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलँत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ ॥ भव खँडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजँत
 भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गँध
 बिनु सहस तव गँध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुरु
 साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कवल मकरँद लोभित मनो अनदिनु मोहि आही
 पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिँग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥ ४ ॥ ३ ॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि
 करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खँडल खँडा हे ॥ पुरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मँडल मँडा हे ॥ १ ॥
 करि साधू अँजुली पुनु वडा हे ॥ करि डँडउत पुनु वडा हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अँतरि हउमै
 कँडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डँडा हे ॥ २ ॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम
 मरण भव खँडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खँड ब्रहमँडा हे ॥ ३ ॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु
 राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मँडा हे ॥ ४ ॥ ४ ॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ करउ
 बेनँती सुणहु मेरे मीता सँत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥ १ ॥ १ ॥ अउध घटै दिनसु
 रैणारे ॥ मन गुरु मिलि काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइ
 पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥ २ ॥ जा कउ आए सोई बिहाइहु हरि गुरु ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु
 सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥ ३ ॥ अँतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानक दासु इहै सुखु मागै मोकउ करि
 सँतन की धूरे ॥ ४ ॥ ५ ॥

ॐ सातिगुर प्रसादि ॥

शुगु सिरीशुगु महला पहिला १ घरु १ ॥

मोती त मँदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥ कसतूरि कुँगू अगरि चँदनि लीपि आवै चाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ १ ॥ हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥ मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरती त हीरै लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥ मोहणी मुखि मणी सोहै करे रँगि पसाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ २ ॥ सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥ गुप्तु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ ३ ॥ सुलतानु होवा मेलि लसकर तरबति राखा पाउ ॥ हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ ४ ॥ १ ॥ सिरीशुगु महला १ ॥ कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥ चँदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ १ ॥ साचा निरँकारु निज थाइ ॥ सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥ अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ २ ॥ पँखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥ नदरी किसै न आवऊ ना

किछ पीआ न खाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ ३ ॥ नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ
 ॥ मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ ४ ॥ २ ॥ सिरीरागु महला
 १ ॥ लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥ लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ ॥ लेखै साह लवाईअहि पड़े कि पुछण
 जाउ ॥ १ ॥ बाबा माइआ रचना धोहु ॥ अँधै नामु विसारिआ ना तिसु एहु न ओहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवण मरणा जाइ कै
 एथै खाजै कालि ॥ जिथै बहि समझाईरे तिथै कोइ न चलिओ नालि ॥ रोवण वाले जेतड़े सभि बँनहि पँड परालि ॥ २ ॥
 सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै कोइ ॥ कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ ॥ साचा साहबु एकु तू होरि जीआ
 केते लोअ ॥ ३ ॥ नीचा अँदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥ नानकु तिन कै सँगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
 जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥ ४ ॥ ३ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ लबु कुता कूडु चूहड़ा ठगि खाधा
 मुरदारु ॥ पर निँदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चँडालु ॥ रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥ १ ॥ बाबा
 बोलीरे पति होइ ॥ ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु
 परमल की वासु ॥ रसु घोड़े रसु सेजा मँदर रसु मीठा रसु मासु ॥ एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥ २ ॥ जितु बोलिरे
 पति पाईरे सो बोलिआ परवाणु ॥ फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥ जो तिस भावहि से भले होरि कि कहण
 वखाण ॥ ३ ॥ तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ॥ तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिउ
 काइ ॥ नानक नदरी बाहरे राचहि दान न नाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि
 ॥ मती मरणु विसारिआ खुसी कीती दिन चारि ॥ सचु मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरवारु ॥ १ ॥ नानक साचे
 कउ सचु जाणु ॥ जितु सेविरे सुखु पाईरे तेरी दरगह चलै माणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु सरा गुड़ बाहरा

जिसु विचि सचा नाउ ॥ सुणहि वखाणहि जेतडे हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ ता मनु खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ॥ २ ॥
नाउ नीरु चँगिआईआ सतु परमलु तनि वासु ॥ ता मुखु होवै उजला लख दाती इक दाति ॥ दूख तिसै पहि आखीअहि
सूख जिसै ही पासि ॥ ३ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ जाके जीअ पराण ॥ तिसु विणु सभु अपवित्रु है जेता पैणु खाणु ॥
होरि गलां सभि कूड़ीआ तुधु भावै परवाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि
सारु ॥ भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥ लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥ १ ॥
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥ जिथै लेखा मँगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिथै मिलहि वडिआईआ सद
खुसीआ सद चाउ ॥ तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥ २ ॥
इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥ इकि उपाए मँगते इकना वडे दरवार ॥ अगै गइआ जाणीऐ विणु
नावै वेकार ॥ ३ ॥ भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥ नाव जिना सुलतान खान होदे डिठै खेह ॥ नानक उठी
चलिआ सभि कूडे तुटे नेह ॥ ४ ॥ ६ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ सभि रस मिठे मँनिऐ सुणिए सालोणे ॥ खट तुरसी मुखि
बोलणा मारण नाद कीए ॥ छतीह अँमित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥ १ ॥ बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥ जितु
खाथै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रता पैणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥ नीली सिआही कदा
करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥ कमरबँदु सँतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥ २ ॥ बाबा होरु पैणु खुसी खुआरु ॥ जितु
पैथै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥ तरकस तीर कमाण
सांग तेगबँद गुण धातु ॥ वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥ ३ ॥ बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥
जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घर मँदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥

हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥ नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥ ४ ॥ बाबा होरु सउणा
 खुसी खुआरु ॥ जितु सुतै तनु पीडीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ कुँगू की
 कांडा रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥ अठसठि तीरथ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥ ओतु मती
 सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥ १ ॥ बाबा होर मति होर होर ॥ जे सउ वेर कमाईऐ कूडै कूड़ा जोरु ॥ १ रहाउ ॥ पूज लगै
 पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥ नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥ जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥ २
 ॥ जिन कउ सतगुरि थापिआ तिन मेटि न सकै कोइ ॥ ओना अँदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥ नाउ पूजीऐ नाउ
 मँनीऐ अखँडु सदा सचु सोइ ॥ ३ ॥ खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥ जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥
 नानक नामि विसारिऐ दरि गइआ किआ होइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥
 जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥ ना बेडी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु
 ॥ गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ हरिमँदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥ मोती हीरा
 निरमला कँचन कोट शीमाल ॥ बिनु पउडी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥ २ ॥ गुर पउडी बेडी गुरू गुर तुलहा
 हरि नाउ ॥ गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥ जे तिसु भावै ऊजली सत सरि नावणु जाउ ॥ ३ ॥ पूरो पूरो
 आखीऐ पूरै तखति निवास ॥ पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥ नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥ ४ ॥ ९ ॥
 सिरीरागु महला १ ॥ आवहु भैणे गलि मिलह अँकि सहेलड़ीआह ॥ मिलि कै करह कहाणीआ समथ कँत कीआह ॥ साचे
 साहिब सभि गुण अउगुण सभि असाह ॥ १ ॥ करता सभु को तेरै जोरि ॥ एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणीं ॥ सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥

पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥ २ ॥ केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥ केते तेरे जीअ जँत
 सिफति करहि दिनु राति ॥ केते तेरे रूप रँग केते जाति अजाति ॥ ३ ॥ सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥
 सुरति होवै पति ऊगवै गुर बचनी भउ खाइ ॥ नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥ ४ ॥ १० ॥ सिरीरागु महला १
 ॥ भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु ॥ दूत लगै फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥ कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु
 ॥ १ ॥ मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥ भै बिनु निरभउ किउ थीरे गुरमुखि सबदि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केता आखणु
 आखीरे आखणि तोटि न होइ ॥ मँगण वाले केतडे दाता एको सोइ ॥ जिस के जीअ पराण है मनि वसिरे सुखु होइ ॥ २
 ॥ जगु सुपना बाजी बनी खिन महि खेलु खेलाइ ॥ सँजोगी मिलि एकसे विजोगी उठि जाइ ॥ जो तिसु भाणा सो थीरे
 अवरु न करणा जाइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि वसतु वेसाहीरे सचु वखरु सचु रासि ॥ जिनी सचु वणँजिआ गुर पूरे साबासि ॥
 नानक वसतु पछाणसी सचु सउदा जिसु पासि ॥ ४ ॥ ११ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती
 सिफति समाइ ॥ लालु गुलालु गहबरा सचा रँगु चड़ाउ ॥ सचु मिलै सँतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ॥ १ ॥ भाई रे सँत
 जना कीरेणु ॥ सँत सभा गुरु पाईरे मुकति पदारथु धेणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचउ थानु सुहावणा ऊपरि महलु मुरारि ॥ सचु
 करणी दे पाईरे दरु घरु महलु पिआरि ॥ गुरमुखि मनु समझाईरे आतमरामु बीचारि ॥ २ ॥ त्रिबिधि करम कमाईअहि
 आस अँदेसा होइ ॥ किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिरे सुखु होइ ॥ निज घरि महलु पछाणीरे नदरि करे मलु धोइ
 ॥ ३ ॥ बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥ एको सबदु वीचारीरे अवर तिआगै आस ॥ नानक देखि दिखाईरे
 हओ सद बलिहारै जासु ॥ ४ ॥ १२ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥ कलर केरी कँध
 जिउ अहिनिंसि किरि ढहि पाइ ॥ बिनु सबदै सुखु ना थीरे पिर बिनु दूखु न जाइ ॥ १ ॥ मुँधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥

दरि घरि ढोई ना लहै दरगह झूठ खुआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ॥ पहिला धरती
 साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥ नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै सीसाणु ॥ २ ॥ गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु
 चजु अचारु ॥ अँधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अँधु गुबारु ॥ आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ॥ ३ ॥
 चँदनु मिलि अणाइआ कुँगू मांग सँधूरु ॥ चोआ चँदनु बहु घणा पाना नालि कपूर ॥ जे धन कँति न भावई त सभि अडँबर
 कूड़ ॥ ४ ॥ सभि रस भोगण बादि हरि सभि सीगार विकार ॥ जब लगु सबदि न भेदीरे किउ सोहै गुरदुआरि ॥ नानक
 धनु सुहागणी जिन सहि नालि पिआरु ॥ ५ ॥ १३ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ सुँजी देह डरावनी जा जीउ विचहु जाइ ॥
 भाहि बलँदी विझवी धूउ न निकसिओ काइ ॥ पँचे रँने दुखि भरे बिनसे दूजै भाइ ॥ १ ॥ मूडे रामु जपहु गुण सारि ॥
 हउमै ममता मोहणी सभ मुठी अहँकारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी नामु विसारिआ दूजी करै लागि ॥ दुबिधा लागै पचि मुर
 अँतरि त्रिसना अगि ॥ गुरि राखे से उबरे होरि मुठी धँधै ठगि ॥ २ ॥ मुई परीति पिआरु गइआ मुआ वैरु विरोधु ॥ धँधा
 थका हउ मुई ममता माइआ क्रोधु ॥ करमि मिलै सचु पाईरे गुरमुखि सदा निरोधु ॥ ३ ॥ सची करै सचु मिलै गुरमति पलै
 पाइ ॥ सो नरु जँमै ना मरै ना आवै ना जाइ ॥ नानक दरि परधानु सो दरगहि पैधा जाइ ॥ ४ ॥ १४ ॥ सिरीरागु महल १
 ॥ तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ॥ अउगुण फिरि लागू भए कूरि वजावै तूर ॥ बिनु सबदै भरमाईरे
 दुबिधा डोबे पूर ॥ १ ॥ मन रे सबदि तरहु चितु लाइ ॥ जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ तनु सूचा सो आखीरे जिसु महि साचा नाउ ॥ भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ॥ सची नदरि निहालीरे
 बहुड़ि न पावै ताउ ॥ २ ॥ साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ॥ जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ॥
 निरमलु मैला ना थीरे सबदि रते पति होइ ॥ ३ ॥ इह मनु साचि सँतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ॥ पँच भूत

सचि भै रते जोति सची मन माहिं ॥ नानक अउगण वीसरे गुरिं राखे पति ताहिं ॥ ४ ॥ १५ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ नानक
 बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारिं ॥ इक आवहिं इक जावही पूरि भरे अहंकारिं ॥ मनहठि मती बूडीऐ गुरमुखिं सचु सु तारिं ॥
 १ ॥ गुर बिनु किउ तरीऐ सुखु होइ ॥ जिउ भावै तिउ राखु तू मै अवरु न दूजा कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगै देखउ डउ जलै
 पाछै हरिउ अंगूरु ॥ जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घट घटि सचु भरपूरि ॥ आपे मेलिं मिलावही साचै महलिं हदूरि ॥ २ ॥
 साहि साहि तुड्डु सँमला कदे न विसारेउ ॥ जिउ जिउ साहबु मनि वसै गुरमुखिं अँमितु पेउ ॥ मनु तनु तेरा तू धणी गरबु
 निवारिं समेउ ॥ ३ ॥ जिनि एहु जगतु उपाइआ त्रिभवणु करि आकारु ॥ गुरमुखिं चाणनु जाणीऐ मनमुखिं मुगधु गुबारु
 ॥ घटि घटि जोति निरँतरी बूझै गुरमति सारु ॥ ४ ॥ गुरमुखिं जिनी जाणिआ तिन कीचै साबासि ॥ सचे सेती रलिं मिलै
 सचे गुण परगासि ॥ नानक नामि सँतोखीआ जीउ पिँडु प्रभ पासि ॥ ५ ॥ १६ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ सुणिं मन मित्र
 पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥ जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥ बिनु गुण कामि न आवई ढहिं ढेरी तनु खेह
 ॥ १ ॥ मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ॥ गुरमुखिं नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणिं सुणिं गँढणु गँढीऐ
 लिखिं पडि बुझहिं भारु ॥ त्रिसना अहिनिंसि अगली हउमै रोगु विकारु ॥ ओहु वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमति सारु
 ॥ २ ॥ लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ॥ बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख सँतापु ॥ हरि जपि
 जीअरे छुटीऐ गुरमुखिं चीनै आपु ॥ ३ ॥ तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालिं ॥ त्रिभवणु खोजिं ढँढोलिआ
 गुरमुखिं खोजिं निहालिं ॥ सतगुरिं मेलिं मिलाइआ नानक सो प्रभु नालिं ॥ ४ ॥ १७ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ मरणै की
 चिँता नहीं जीवण की नहीं आस ॥ तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥ अँतरि गुरमुखिं तू वसहिं जिउ भावै तिउ
 निरजासि ॥ १ ॥ जीअरे राम जपत मनु मानु ॥ अँतरि लागी जलिं बूड़ी पाइआ गुरमुखिं गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥

अंतर की गति जाणीये गुर मिलीये सँक उतारि ॥ मुइआ जितु घरि जाईये तितु जीवदिआ मरु मारि ॥ अनहद सबदि
 सुहावणे पाईये गुर वीचारि ॥ २ ॥ अनहद बाणी पाईये तह हउमै होइ बिनास ॥ सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणे
 तासु ॥ खडि दरगह पैनाईये मुखि हरि नाम निवासु ॥ ३ ॥ जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ॥ त्रिहु गुण बँधी
 देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ॥ विजोगी दुखि विछुडे मनमुखि लहहि न मेलु ॥ ४ ॥ मनु बैरागी घरि वसै सच भै राता
 होइ ॥ गिआन महा रसु भोगवै बाहुडि भूख न होइ ॥ नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ॥ ५ ॥ १८ ॥
 सिरीरागु महला १ ॥ एहु मनो मूरखु लोभीआ लोभे लगा लोभानु ॥ सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥ साधू
 सतगुरु जे मिलै ता पाईये गुणी निधानु ॥ १ ॥ मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥ हरि गुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु जपि दिनसु राति गुरमुखि हरि धनु जानु ॥ सभि सुख हरि रस भोगणे सँत सभा मिलि गिआनु
 ॥ निति अहिनिशि हरि प्रभु सेविआ सतगुरि दीआ नामु ॥ २ ॥ कूकर कूडु कमाईये गुरनिँदा पचै पचानु ॥ भरमे भूला दुखु
 घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥ मनमुखि सुखु न पाईये गुरमुखि सुखु सुभानु ॥ ३ ॥ ऐथै धँधु पिटाईये सचु लिखतु परवानु
 ॥ हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ॥ नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥ ४ ॥ १९ ॥ सिरीरागु महला
 १ ॥ इकु तिलु पिआरा वीसरै रोगु वडा मन माहि ॥ किउ दरगह पति पाईये जा हरि न वसै मन माहि ॥ गुरि मिलिऐ सुखु
 पाईये अगनि मरै गुण माहि ॥ १ ॥ मन रे अहिनिशि हरि गुण सारि ॥ जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले सँसारि
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोती जोति मिलीये सुरती सुरति सँजोगु ॥ हिँसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ॥ गुरमुखि जिंसु
 हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु सँजोगु ॥ २ ॥ काइआ कामणि जे करी भोगे भोगणहारु ॥ तिसु सिउ नेहु न कीजई जो दीसै
 चलणहारु ॥ गुरमुखि रवहि सोहागणी सो प्रभु सेज भतारु ॥ ३ ॥ चारे अगनि निवारि मरु गुरमुखि हरि जलु

पाइ ॥ अंतरि कमलु प्रगासिआ अँम्रितु भरिआ अघाइ ॥ नानक सतगुरु मीतु करि सचु पावहि दरगह जाइ ॥ ४ ॥ २०
 ॥ सिरीरागु महला १ ॥ हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरुमति ले हरि बोलि ॥ मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥
 कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥ १ ॥ भाई रे हरि हीरा गुरु माहि ॥ सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिशि
 सबदि सलाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुरु परगासि ॥ जिउ अगनि मरै जलि पाईऐ तिउ तिसना
 दासनि दासि ॥ जम जँदारु न लगई इउ भउजलु तरै तरासि ॥ २ ॥ गुरुमुखि कूडु न भावई सचि रते सच भाइ ॥ साकत
 सचु न भावई कूडै कूडी पाइ ॥ सचि रते गुरि मेलिऐ सचे सचि समाइ ॥ ३ ॥ मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु
 ॥ सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर गँभीरु ॥ नानक गुरुमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥ ४ ॥ २१ ॥ सिरीरागु
 महला १ ॥ भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसँतर देसु ॥ अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥ होरु कितै भगति न
 होवई बिनु सतिगुरु के उपदेस ॥ १ ॥ मन रे गुरुमुखि अगनि निवारि ॥ गुरु का कहिआ मनि वसै हउमै तिसना मारि ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ मनु माणकु निरमोलु है राम नामि पति पाइ ॥ मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरुमुखि हरि लिव लाइ ॥ आपु
 गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥ २ ॥ जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ॥ जिनु
 सतगुरु पुरख न भेटओ सु भउजलि पचै पचाइ ॥ इह माणकु जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदलै जाइ ॥ ३ ॥ जिना
 सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥ गुरु मिलि भउजलु लँधीऐ दरगह पति परवाणु ॥ नानक ते मुख उजले धुनि उपजै
 सबदु नीसाणु ॥ ४ ॥ २२ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥ तैसी वसतु विसाहीऐ
 जैसी निबहै नालि ॥ अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥ १ ॥ भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥ हरि जसु वखरु लै
 चलहु सहु देखै पतीआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिना रासि न सचु है किउ तिना

सुखु होइ ॥ खोटै वणजि वणँजिरे मनु तनु खोटा होइ ॥ फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥ २ ॥ खोटे पोतै
 ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ ॥ खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥ खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ
 पति खोइ ॥ ३ ॥ नानक मनु समझाईरे गुर कै सबदि सालाह ॥ राम नाम रँगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥ हरि जपि
 लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥ ४ ॥ २३ ॥ सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअडे दिन
 चारि ॥ पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुँमणहार ॥ १ ॥ रँगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥ दिन थोड़डे थके
 भइआ पुराणा चोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सजण मेरे रँगुले जाइ सुते जीराणि ॥ हँ भी वँजा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥ २ ॥
 की न सुणेही गोरीए आपण कँनी सोइ ॥ लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥ ३ ॥ नानक सुती पेईरे जाणु विरती
 सँनि ॥ गुणा गवाई गँठडी अवगण चली बँनि ॥ ४ ॥ २४ ॥ सिरीरागु महला १ घरु दुजा २ ॥ आपे रसीआ आपि रसु
 आपे शवणहारु ॥ आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥ १ ॥ रँगि रता मेरा साहिबु पवि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥ आपे जाल मणकड़ा आपे अँदरि लालु ॥ २ ॥ आपे बहु बिधि रँगुला सखीए मेरा
 लालु ॥ नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥ ३ ॥ प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हँसु ॥ कउलु तू है कवीआ तू है
 आपे वेखि विगसु ॥ ४ ॥ २५ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ
 सारिँगपाणी ॥ मनु किरसाणु हरि रिदै जँमाइ लै इउ पावसि पदु निरबाणी ॥ १ ॥ काहे गरबसि मूडे माइआ ॥ पित सुतो
 सगल कालत्र माता तेरे होहि न अँति सखाइआ ॥ रहाउ ॥ बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजिँ आतमै होइ धिआई ॥
 जपु तपु सँजमु होहि जब राखे कमलु विगसै मधु आस्रमाई ॥ २ ॥ बीस सपताहरो बासरो सँग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु
 सारै ॥ दस अठार मै अपरँपरो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ॥ ३ ॥ २६ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ अमलु करि धरती

बीजू सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥ होइ किरसाणु ईमानु जँमाइ लै भिसतु दोजकु मूडे एव जाणी ॥ १ ॥ मत्तु
 जाण सहि गली पाइआ ॥ माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐब तनि चिकड़ो इहु
 मनु मीडको कमल की सार नहीं मूलि पाई ॥ भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥ २ ॥ आखणु
 सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥ खसम की नदरि दिलहि पसिँदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥ ३ ॥ तीह करि
 रखे पँज करि साथी नाउ सैतानु मत्तु कटि जाई ॥ नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कित कू सँजिआही ॥ ४ ॥ २७
 ॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ सँसारो ॥ आब खाकु जिनि बाँधि रहाई धँन
 सिरजणहारो ॥ १ ॥ मरणा मुला मरणा ॥ भी करतारहु डरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु
 खुदाई ॥ जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥ २ ॥ सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो
 ॥ है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥ ३ ॥ पँज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥ नानकु आखै
 गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥ ४ ॥ २८ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥ भलके
 भउकहि सदा बइआलि ॥ कूडु छुरा मुठा मुरदारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ १ ॥ मै पति की पँदि न करणी की कार
 ॥ हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥ तेरा एकु नामु तारे सँसारु ॥ मै एहा आस एहो आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुखे निँदा
 आखा दिनु शति ॥ पर घरु जोही नीच सनाति ॥ कामु क्रोधु तनि वसहि चँडाल ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ २ ॥
 फाही सुरति मलूकी वेसु ॥ हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥ खरा सिआणा बहुता भारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ ३ ॥ मै
 कीता न जाता हरामखोरु ॥ हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥
 ४ ॥ २९ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ एका सुरति जेते है जीअ ॥ सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥ जेही सुरति तेहा तिन

राहु ॥ लेखा इको आवहु जाहु ॥ १ ॥ काहे जीअ करहि चतुराई ॥ लेवै देवै ढिल न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे जीअ जीआ
 का तोहि ॥ कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥ जे तू साहिब आवहि रोहि ॥ तू ओना का तेरे ओहि ॥ २ ॥ असी बोलविगाड़
 विगाड़ह बोल ॥ तू नदरी अँदरि तोलहि तोल ॥ जह करणी तह पूरी मति ॥ करणी बाझहु घटे घटि ॥ ३ ॥ प्रणवति नानक
 गिआनी कैसा होइ ॥ आपु पछाणै बूझै सोइ ॥ गुर परसादि करे बीचारु ॥ सो गिआनी दरगह परवाणु ॥ ४ ॥ ३० ॥
 सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अँतु लहा ॥ जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी
 फूटि मरा ॥ १ ॥ न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥ जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू भरपूरि जानिआ मै दूरि
 ॥ जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥ तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥ तेरै कँमि न तेरै नाइ ॥ २ ॥ जेता देहि तेता हउ खाउ ॥ बिआ
 दरु नाही कै दरि जाउ ॥ नानकु एक कहै अरदासि ॥ जीउ पिँडु सभु तेरै पासि ॥ ३ ॥ आपे नेडै दूरि आपे ही आपे मँझि
 मिआनो ॥ आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरति करे जहानो ॥ जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानो ॥ ४ ॥ ३१ ॥
 सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ कीता कहा करे मनि मानु ॥ देवणहारे कै हथि दानु ॥ भावै देइ न देई सोइ ॥ कीते कै कहिरे
 किआ होइ ॥ १ ॥ आपे सचु भावै तिसु सचु ॥ अँधा कचा कचु निकचु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा के रुख बिरख आराउ ॥ जेही
 धातु तेहा तिन नाउ ॥ फुलु भाउ फुलु लिखिआ पाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खाइ ॥ २ ॥ कची कँध कचा विचि राजु ॥
 मति अलूणी फिका सादु ॥ नानक आणे आवै रासि ॥ विणु नावै नाही साबासि ॥ ३ ॥ ३२ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ५
 ॥ अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥ जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टल पलै ॥ १ ॥ बिनु
 तेल दीवा किउ जलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पोथी पुराण कमाईये ॥ भउ वटी इतु तनि पाईये ॥ सचु बूझणु आणि जलाईये ॥ २
 ॥ इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥ करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इतु तनि लागै बाणीआ ॥ सुखु होवै

सेव कमाणीआ ॥ सभ दुनीआ आवण जाणीआ ॥ ३ ॥ विचि दुनीआ सेव कमाईये ॥ ता दरगह बैसणु पाईये ॥ कहु
नानक बाह लुडाईये ॥ ४ ॥ ३३ ॥

सिरीरागु महला ३ घरु १ १ॐ सतिगुरु प्रसादि ॥

हउ सतिगुरु सेवी आपणा इक मनि इक चिति भाइ ॥ सतिगुरु मन कामना तीरथु है जिस नो देइ बुझाइ ॥ मन चिंदिआ वरु
पावणा जो इछै सो फलु पाइ ॥ नाउ धिआईये नाउ मँगीये नामे सहजि समाइ ॥ १ ॥ मन मेरे हरि रसु चाखु तिख जाइ ॥
जिनी गुरुमुखि चाखिआ सहजे रहे समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ॥ अँतरि हरि
रसु रवि रहिआ चूका मनि अभिमानु ॥ हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ॥ मनु निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ
दरगहि मानु ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसारि ॥ हउमै ममता मारि कै हरि राखिआ उर धारि ॥ हउ तिन कै
बलिहारणै जिना नामे लगा पिआरु ॥ सेई सुखीए चहु जुगी जिना नामु अखुटु अपारु ॥ ३ ॥ गुरु मिलिऐ नामु पाईये चूकै
मोह पिआस ॥ हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ॥ जिना हरि का सादु आइआ हउ तिन बलिहारै जासु ॥ नानक
नदरी पाईये सचु नामु गुणतासु ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ बहु भेख करि भरमाईये मनि हिरदै कपटु कमाइ
॥ हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ॥ १ ॥ मन रे गिह ही माहि उदासु ॥ सचु सँजमु करणी सो करे गुरुमुखि
होइ परगासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै माहि पाइ ॥ हरि का नामु धिआईये सतसंगति मेलि
मिलाइ ॥ २ ॥ जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खँड राजु कमाहि ॥ बिनु सतगुरु सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि
॥ ३ ॥ हरि हारु कँठि जिनी पहिरिआ गुरु चरणी चितु लाइ ॥ तिना पिछै रिधि सिधि फिरै ओना

तिलु न तमाइ ॥ ४ ॥ जो प्रभ भावै सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥ जनु नानकु जीवै नामु लै हरि देवहु सहजि सुभाइ ॥
 ५ ॥ २ ॥ ॥ ३५ ॥ सिरीरागु महला ३ घरु १ ॥ जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ ॥ गुरुमुखि कार कमावणी
 सचु घटि परगटु होइ ॥ अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ॥ सचि मिले से न विछुडहि तिन निज घरि वासा होइ ॥ १
 ॥ मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ सतगुरु सचु प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदि मिलै सो
 मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ ॥ दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ॥ सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ
 समाइ ॥ जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरुमुखि नामि समाइ ॥ २ ॥ पड़ि पड़ि पँडित जोतकी वाद करहि बीचारु ॥
 मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ॥ लख चउरासीह भ्रमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा
 कोइ न मेटणहारु ॥ ३ ॥ सतगुरु की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ
 थाइ ॥ पारसि परसिरे पारसु होइ जोती जोति समाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ॥ ४ ॥
 मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार ॥ लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ॥ निरभउ सदा दइआलु है
 सभना करदा सार ॥ नानक गुरुमुखि बुझीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥ ५ ॥ ३ ॥ ३६ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी सुणि कै
 मँनिआ तिना निज घरि वासु ॥ गुरुमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ॥ सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु
 ॥ हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥ १ ॥ मन मेरे हरि हरि निरमलु धिआइ ॥ धुरि मसतकि जिन कउ
 लिखिआ से गुरुमुखि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥ गुरुमति जिनी
 पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ॥ जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवँतिआ दूरि ॥ मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै
 मरदे झूरि ॥ २ ॥ जिन सबदि गुरु सुणि मँनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥ अनदिनु भगती रतिआ मनु

तनु निरमलु होइ ॥ कूड़ा रँगु कसुँभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ॥ जिसु अँदरि नाम प्रगास है ओहु सदा सदा थिरु होइ ॥ ३ ॥
 ॥ इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरि नामु न चेतै लिव लाइ ॥ पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठउरु न पाइ ॥ ओह वेला हथि
 न आवई अँति गइआ पछुताइ ॥ जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ॥ ४ ॥ देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ
 न पाइ ॥ जिन गुरुमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ॥ हरि गुण गावहि हरि नित पड़हि हरि गुण गाइ समाइ ॥ नानक
 तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ३७ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी इक मनि नामु
 धिआइआ गुरुमती वीचारि ॥ तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ ओइ अँमितु पीवहि सदा सदा सचै नामि
 पिआरि ॥ १ ॥ भाई रे गुरुमुखि सदा पति होइ ॥ हरि हरि सदा धिआईऐ मलु हउमै कढै धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख
 नामु न जाणनी विणु नावै पति जाइ ॥ सबदै सादु न आइओ लागै दूजै भाइ ॥ विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से
 विसटा माहि समाइ ॥ २ ॥ तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुरु भाइ ॥ कुलु उधारहि आपणा धँनु जणेदी माइ ॥
 हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ ॥ ३ ॥ जिनी गुरुमुखि नामु धिआइआ विचहु आपु गवाइ ॥ ओइ
 अँदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ॥ नानक आए से परवाणु हहि जिन गुरुमती हरि धिआइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३८ ॥
 सिरीरागु महला ३ ॥ हर भगता हरि धनु रासि है गुरु पूछि करहि वापारु ॥ हरि नामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरि नामु
 अधारु ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि भगता अतुटु भँडारु ॥ १ ॥ भाई रे इसु मन कउ समझाइ ॥ ए मन आलसु
 किआ करहि गुरुमुखि नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरुमुखि करे बीचारु ॥ पारखँडि
 भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥ सो जनु रलाइआ ना रलै जिसु अँतरि बिबेक बीचारु ॥ २ ॥ सो सेवकु हरि
 आखीऐ जो हरि राखै उरि धारि ॥ मनु तनु सउपै आगै धरे हउमै विचहु मारि ॥ धनु गुरुमुखि सो परवाणु है जि कदे न

आवै हरि ॥ ३ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ लख चउरासीह तरसदे जिखु मेले सो मिलै हरि आइ ॥
 ॥ नानक गुरमुखि हरि पाइआ सदा हरि नामि समाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ३९ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सुख सागरु हरि नामु
 है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ॥ अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरि गुण गाइ ॥
 १ ॥ भाईरे जगु दुखीआ दूजै भाइ ॥ गुर सरणाई सुखु लहहि अनदिनु नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचै मैलु न लागई
 मनु निरमलु हरि धिआइ ॥ गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अँम्रित नामि समाइ ॥ गुर गिआनु प्रचँडु बलाइआ अगिआनु
 अँधेरा जाइ ॥ २ ॥ मनमुख मैले मलु भरे हउमै त्रिसना विकारु ॥ बिनु सबदै मैलु न उतरै मरि जँमहि होइ खुआरु ॥
 धातुर बाजी पलचि रहे ना उरवारु न पारु ॥ ३ ॥ गुरमुखि जप तप सँजमी हरि कै नामि पिआरु ॥ गुरमुखि सदा
 धिआईऐ एक नामु करतारु ॥ नानक नामु धिआईऐ सभना जीआ का आधारु ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४० ॥ श्रीरागु महला ३ ॥
 मनमुखु मोहि विआपिआ बैरागु उदासी न होइ ॥ सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगहि पति खोइ ॥ हउमै गुरमुखि खोईऐ
 नामि रते सुखु होइ ॥ १ ॥ मेरे मन अहिनिशि पूरि रही नित आसा ॥ सतगुरु सेवि मोहु परजलै घर ही माहि उदासा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करम कमावै बिगसै हरि बैरागु अनँदु ॥ अहिनिशि भगति करे दिनु राती हउमै मारि निचँदु ॥ वडै
 भागि सतसंगति पाई हरि पाइआ सहजि अनँदु ॥ २ ॥ सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाए ॥ अंतरि लागि न तामसु
 मूले विचहु आपु गवाए ॥ नामु निधानु सतगुरु दिखालिआ हरि रसु पीआ अघाए ॥ ३ ॥ जिनि किनै पाइआ
 साधसंगती पूरै भागि बैरागि ॥ मनमुख फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि ॥ नानक सबदि रते हरि नामि
 रंगाए बिनु भै केही लागि ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४१ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ ॥ खिनु
 खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥ नामु निधानु अखुटु है वडभागि परापति होइ ॥ १ ॥ मेरे मन तजि

निँदा हउमै अहँकारु ॥ हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरुमुखि एकँकारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरुमुखा के मुख उजले गुरु सबदी
 बीचारि ॥ हलति पलति सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि ॥ घर ही विचि महलु पाइआ गुरु सबदी वीचारि ॥ २ ॥ सतगुरु
 ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥ अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥ सुपनै सुखु न देखनी बहु चिँता परजाले ॥
 ३ ॥ सभना का दाता एकु है आपे बखस करेइ ॥ कहणा किछू न जावई जिसु भावै तिसु देइ ॥ नानक गुरुमुखि पाईऐ आपे
 जाणै सोइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ४२ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सचा साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई देइ ॥ गुरु परसादी मनि वसै हउमै
 दूरि करेइ ॥ इहु मनु धावतु ता रहै जा आपे नदरि करेइ ॥ १ ॥ भाई रे गुरुमुखि हरि नामु धिआइ ॥ नामु निधानु सद मनि
 वसै महली पावै थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख मनु तनु अँधु है तिस नउ ठउर न ठाउ ॥ बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुँजै घर
 काउ ॥ गुरुमती घटि चानणा सबदि मिलै हरि नाउ ॥ २ ॥ त्रै गुण बिखिआ अँधु है माइआ मोह गुबार ॥ लोभी अन कउ
 सेवदे पडि वेदा करै पूकार ॥ बिखिआ अँदरि पचि मुए ना उरवारु न पारु ॥ ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ जगत पिता
 प्रतिपालि ॥ बाइहु गुरु अचेतु है सभ बधी जमकालि ॥ नानक गुरुमति उबरे सचा नामु समालि ॥ ४ ॥ १० ॥ ४३ ॥
 सिरीरागु महला ३ ॥ त्रै गुण माइआ मोहु है गुरुमुखि चउथा पदु पाइ ॥ करि किरपा मेलाइअनु हरि नामु वसिआ मनि आइ
 ॥ पोतै जिन कै पुँनु है तिन सतसँगति मेलाइ ॥ १ ॥ भाई रे गुरुमति साचि रहाउ ॥ साचो साचु कमावणा साचै सबदि
 मिलाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ॥ आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ॥
 लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ ॥ २ ॥ बिनु गुरु महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ ॥ ऐसा सतगुरु लोडि लहु
 जिदू पाईऐ सचु सोइ ॥ असुर सँघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ ॥ ३ ॥ जेहा सतगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु
 होइ ॥ एहु सहसा मूले नाही भाउ लाए जनु कोइ ॥ नानक एक जोति दुइ मूरती सबदि मिलावा होइ ॥ ४ ॥ ११ ॥ ४४ ॥

सिरीरागु महला ३ ॥ अँम्रित छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी ॥ आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु
 दुखि विहाणी ॥ मनमुख अँध न चेतही डूबि मुए बिनु पाणी ॥ १ ॥ मनरे सदा भजहु हरि सरणाई ॥ गुर का सबदु अँतरि
 वसै ता हरि विसरि न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥ आवणु जाणा जँमणु
 मरणा मनमुखि पति गवाई ॥ सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई ॥ २ ॥ सतगुर की सेवा अति
 सुखाली जो इछे सो फलु पाए ॥ जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मँनि वसाए ॥ सदा अनँदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम
 सुखु पाए ॥ ३ ॥ जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बलि जाउ ॥ दरि सचै सची वडिआई सहजे सचि समाउ ॥
 नानक नदरी पाईरे गुरमुखि मेलि मिलाउ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ४५ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ मनमुख करम कमावणे जिउ
 दुहागणि तनि सीगारु ॥ सेजै कँतु न आवई नित नित होइ खुआरु ॥ पिर का महलु न पावई ना दीसै घरु बारु ॥ १ ॥
 भाई रे इक मनि नामु धिआइ ॥ सँता सँगति मिलि रहै जपि राम नामु सुखु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी
 पिरु राखिआ उर धारि ॥ मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै खै भतारु ॥ सोभावँती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ॥
 २ ॥ पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ॥ अँतरहु दुखु भ्रमु कटीरे सुखु परापति होइ ॥ गुर कै भाणै जो चलै
 दुखु न पावै कोइ ॥ ३ ॥ गुर के भाणे विचि अँम्रितु है सहजे पावै कोइ ॥ जिना परापति तिन पीआ हउमै विचहु खोइ ॥
 नानक गुरमुखि नामु धिआइरे सचि मिलावा होइ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ४६ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जा पिरु जाणै आपणा
 तनु मनु अगै धरेइ ॥ सोहागणी करम कमावदीआ सेई करम करेइ ॥ सहजे साचि मिलावडा साचु वडाई देइ ॥ १ ॥ भाई
 रे गुर बिनु भगति न होइ ॥ बिनु गुर भगति न पाईरे जे लोचै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह फेरु पइआ
 कामणि दूजै भाइ ॥ बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइ ॥ बिनु सबदै पिरु न पाईरे बिरथा जनमु

गवाइ ॥ २ ॥ हउ हउ करती जग फिरी ना धनु सँपै नालि ॥ अँधी नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ॥ सतिगुरि मिलिऐ
 धनु पाइआ हरि नामा रिदै समालि ॥ ३ ॥ नामि रते से निरमले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ मनु तनु राता रँग सिउ रसना रसन
 रसाइ ॥ नानक रँगु न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ४७ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गुरमुखि क्रिपा करे
 भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ॥ आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै सोई ॥ हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि
 मिलावा होई ॥ १ ॥ भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ आपे जगजीवनु सुखदाता आपे बखसि मिलाए ॥ जीअ जँत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ गुरमुखि
 आपे देइ वडाई आपे सेव कराए ॥ २ ॥ देखि कुटँबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥ सतगुरु सेवि गुण निधानु
 पाइआ तिस दी कीम न पाई ॥ हरि प्रभु सरखा मीतु प्रभ मेरा अँते होइ सरखाई ॥ ३ ॥ आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर
 आपु न जाई ॥ हरि जीउ दाता भगति वछलु है करि किरपा मँनि वसाई ॥ नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे
 वडिआई ॥ ४ ॥ १५ ॥ ४८ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ धनु जननी जिनि जाइआ धँनु पिता परधानु ॥ सतगुरु सेवि सुखु
 पाइआ विचहु गइआ गुमानु ॥ दरि सेवनि सँत जन खडे पाइनि गुणी निधानु ॥ १ ॥ मेरे मन गुरमुखि धिआइ हरि सोइ
 ॥ गुर का सबदु मनि वसै मनु तनु निरमलु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा घरि आइआ आपे मिलिआ आइ ॥ गुर
 सबदी सालाहीरे रँगे सहजि सुभाइ ॥ सचै सचि समाइआ मिलि रहै न विछुडि जाइ ॥ २ ॥ जो किछु करणा सु करि रहिआ
 अवरु न करणा जाइ ॥ चिरी विछुँने मेलिअनु सतगुर पँनै पाइ ॥ आपे कार कराइसी अवरु न करणा जाइ ॥ ३ ॥ मनु
 तनु रता रँग सिउ हउमै तजि विकार ॥ अहिनि सि हिरदै रवि रहै निरभउ नामु निरँकार ॥ नानक आपि मिलाइअनु पूरै
 सबदि अपार ॥ ४ ॥ १६ ॥ ४९ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गोविदु गुणी निधानु है अँतु न पाइआ जाइ ॥ कथनी

बदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ ॥ सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ॥
 बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ
 ॥ अँमितु साचा नामु है कहणा कछु न जाइ ॥ पीवत हू परवाणु भइआ पूरै सबदि समाइ ॥ २ ॥ आपे देइ त पाईऐ होरु
 करणा किछु न जाइ ॥ देवण वाले कै हथि दाति है गुरू दुआरै पाइ ॥ जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे करम कमाइ ॥ ३ ॥
 जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ॥ पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ॥ नानक सहजे ही रँगि
 वरतदा हरि गुण पावै सोइ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ५० ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ कांइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ
 ॥ अधिआतम करम जे करे नामु न कब ही पाइ ॥ गुर कै सबदि जीवतु मरै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे
 भजु सतगुर सरणा ॥ गुर परसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण सभा धातु है दूजा
 भाउ विकारु ॥ पँडितु पडै बँधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ॥ सतगुरि मिलिऐ त्रिकुटी छूटै चउथै पदि मुकति
 दुआरु ॥ २ ॥ गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ॥ सबदि मरै ता उधरै पाए मोख दुआरु ॥ गुर परसादी मिलि रहै
 सचु नामु करतारु ॥ ३ ॥ इहु मनूआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ ॥ दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ ॥
 नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ ॥ ४ ॥ १८ ॥ ५१ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ किरपा करे गुरु पाईऐ हरि
 नामो देइ द्रिडाइ ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ ॥ मनमुख करम कमावणे दरगह मिलै सजाइ ॥ १ ॥
 मनरे दूजा भाउ चुकाइ ॥ अँतरि तेरै हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ ॥ रहाउ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु
 ॥ हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥ मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ २ ॥ हउमै विचि
 जगु बिनसदा मरि जँमै आवै जाइ ॥ मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति गवाइ ॥ गुर सेवा नाउ पाईऐ

सचे रहे समाइ ॥ ३ ॥ सबदि मँनिरे गुरु पाईरे विचहु आपु गवाइ ॥ अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥ नामु
 पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥ ४ ॥ १९ ॥ ५२ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ
 से दुखीए जुग चारि ॥ घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमनि मुठे अहँकारि ॥ सतगुरु किआ फिटकिआ मँगि थके
 सँसारि ॥ सचा सबदु न सेविओ सभि काज सवारणहारु ॥ १ ॥ मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि ॥ जनम मरन दुखु परहरै
 सबदि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥ सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु
 ॥ सचा साहु वरतदा कोइ न मेटणहारु ॥ मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥ २ ॥ हउमै करता जगु मुआ गुरु
 बिनु घोर अँधारु ॥ माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥ सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उर धारि ॥ किरपा
 ते हरि पाईरे सचि सबदि वीचारि ॥ ३ ॥ सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि विकार ॥ आपु छोडि जीवत मरै गुर कै
 सबदि वीचार ॥ धँधा धावत हरि गए लागा साचि पिआरु ॥ सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥ ४ ॥ सतगुरु
 पुरखु न मँनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥ इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥ हरि जीउ आपणी क्रिपा करे ता
 लागै नाम पिआरु ॥ नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ॥ ५ ॥ २० ॥ ५३ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ किसु हउ
 सेवी किआ जपु करी सतगुरु पूछउ जाइ ॥ सतगुरु का भाणा मँनि लई विचहु आपु गवाइ ॥ एहा सेवा चाकरी नामु वसै मन
 आइ ॥ नामै ही ते सुखु पाईरे सचै सबदि सुहाइ ॥ १ ॥ मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ॥ आपणी खेती रखि लै कुँज
 पड़ैगी खेति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन कीआ इच्छा पूरीआ सबदि रहिआ भरपूरि ॥ भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ
 वेखै सदा हदूरि ॥ सचै सबदि सदा मनु राता भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ॥ निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ॥ २ ॥
 जो जागे से उबरे सूते गए मुहाइ ॥ सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गइआ विहाइ ॥ सुँजे घर का पाहुणा जिउ

आइआ तितु जाइ ॥ मनमुख जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ ॥ ३ ॥ सभ किछु आपे आपि है हउमै विचि कहनु
 न जाइ ॥ गुर कै सबदि पछाणीरे दुखु हउमै विचहु गवाइ ॥ सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ॥ नानक
 दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ५४ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जे वेला वखतु वीचारीरे ता
 कितु वेला भगति होइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ सचे सची सोइ ॥ इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ॥ मनु तनु
 सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा कोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि का नामु धिआइ ॥ साची भगति ता थीरे जा हरि वसै मन आइ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजे खेती राहीरे सचु नामु बीजु पाइ ॥ खेती जँमी अगली मनूआ रजा सहजि सुभाइ ॥ गुर का सबदु
 अँमितु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ इहु मनु साचा सचि रता सचे रहिआ समाइ ॥ २ ॥ आखणु वेखणु बोलणा सबदे
 रहिआ समाइ ॥ बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ॥ हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ॥ तिन कउ महलु
 हदूरि है जो सचि रहे लिव लाइ ॥ ३ ॥ नदरी नामु धिआईरे विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ पूरै भागि सतसँगति लहै
 सतगुरु भेटै जिसु आइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु जाइ ॥ नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ
 ॥ ४ ॥ २२ ॥ ५५ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥ सतसँगती सदा
 मिलि रहे सचे के गुण सारि ॥ दुबिधा मैलु चुकाईअनु हरि राखिआ उर धारि ॥ सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु
 ॥ १ ॥ मन मेरे हउमै मैलु भर नालि ॥ हरि निरमलु सदा सोहणा सबदि सवारणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचै सबदि मनु
 मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ जोती जोति समाइ ॥ जोती हू प्रभु जापदा बिनु सतगुर बूझ न
 पाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ ॥ २ ॥ विणु नावै सभ डुमणी दूजै भाइ खुआइ ॥ तिसु
 बिनु घड़ी न जीवदी दुखी रैणि विहाइ ॥ भरमि भुलाणा अँधुला फिरि फिरि आवै जाइ ॥ नदरि करे प्रभ आपणी आपे

लए मिलाइ ॥ ३ ॥ सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पाइआ जाइ ॥ पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइ ॥ सो प्रभु
नदरि न आवई मनमुखि बूझ न पाइ ॥ जिसु वेखाले सोई वेखै नानक गुरमुखि पाइ ॥ ४ ॥ २३ ॥ ५६ ॥ श्रीरागु महला
३ ॥ बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइ ॥ गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइ ॥ गुर सबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै
भरमि भुलाइ ॥ १ ॥ मन रे निज घरि वासा होइ ॥ राम नामु सालाहि तू फिरि आवण जाणु न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि
इको दाता वरतदा दूजा अवरु न कोइ ॥ सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइ ॥ सभ नदरी अंदरि वेखदा जै भावै तै
देइ ॥ २ ॥ हउमै सभा गणत है गणतै नउ सुखु नाहि ॥ बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ॥ बिनु नावै ठउरु
न पाइनी जमपुरि दूख सहाहि ॥ ३ ॥ जीउ पिँडु सभु तिस दा तिसै दा आधारु ॥ गुर परसादी बुझीऐ ता पाए मोख दुआरु
॥ नानक नामु सलाहि तूँ अँतु न पारावारु ॥ ४ ॥ २४ ॥ ५७ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ तिना अनँदु सदा सुखु है जिना
सचु नामु आधारु ॥ गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥ सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ॥ किरपा
करि कै आपणी दितोनु भगति भँडारु ॥ १ ॥ मन रे सदा अनँदु गुण गाइ ॥ सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥ १
॥ रहाउ ॥ सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइ ॥ गुर सबदी मनु मोहिआ कहणा कछू न जाइ ॥ जिहवा रती
सबदि सचै अँम्रितु पीवै रसि गुण गाइ ॥ गुरमुखि एहु रँगु पाईऐ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ संसा इहु संसारु है
सुतिआ रैणि विहाइ ॥ इकि आपणै भाणै कढि लइअनु आपे लइओनु मिलाइ ॥ आपे ही आपि मनि वसिआ माइआ मोहु
चुकाइ ॥ आपि वडाई दितीअनु गुरमुखि देइ बुझाइ ॥ ३ ॥ सभना का दाता एकु है भुलिआ लए समझाइ ॥ इकि आपे
आपि खुआइअनु दूजै छडिअनु लाइ ॥ गुरमती हरि पईऐ जोती जोति मिलाइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइ
॥ ४ ॥ २५ ॥ ५८ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गुणवँती सचु पाइआ तिसना तजि विकार ॥ गुर सबदी मनु रँगिआ रसना

प्रेम पिआरि ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ करि वेखहु मनि वीचारि ॥ मनमुख मैलु न उतरै जिचरु गुर सबदि न करे
 पिआरु ॥ १ ॥ मन मेरे सतिगुर कै भाणै चलु ॥ निज घरि वसहि अँमितु पीवहि ता सुख लहहि महलु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 अउगुणवँती गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि ॥ मनमुखि सबदु न जाणई अवगणि सो प्रभु दूरि ॥ जिनी सचु पछाणिआ
 सचि रते भरपूरि ॥ गुर सबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि ॥ २ ॥ आपे रँगणि रँगिओनु सबदे लइओनु मिलाइ
 ॥ सचा रँगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइ ॥ चारे कुँडा भवि थके मनमुख बूझ न पाइ ॥ जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै
 सचै सबदि समाइ ॥ ३ ॥ मित्र घणेरै करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ॥ मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥
 सचु खटणा सचु रासि है सचे सची सोइ ॥ सचि मिले से न विछुडहि नानक गुरमुखि होइ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ७९ ॥
 सिरीरागु महला ३ ॥ आपे कारणु करता करे सिंसटि देखै आपि उपाइ ॥ सभ एको इकु वरतदा अलखु न लिखिआ जाइ
 ॥ आपे प्रभू दइआलु है आपे देइ बुझाइ ॥ गुरमती सद मनि वसिआ सचि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुर की मँनि लै
 रजाइ ॥ मनु तनु सीतलु सभु थीऐ नामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइ ॥ गुर
 कै सबदि पछाणीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ से जन सबदे सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ गुरमुखि सचै सबदि रते आपि मेले
 करतारि ॥ २ ॥ गुरमती सचु सलाहणा जिस दा अँतु न पारावारु ॥ घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥ गुर
 सबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइ ॥ साधन नावै बाहरी अवगणवँती रोइ ॥ ३ ॥ सचु सलाही सचि लगा सचै नाइ
 त्रिपति होइ ॥ गुण वीचारी गुण सँग्रहा अवगुण कटा धोइ ॥ आपे मेलि मिलाइदा फिरि वेछोड़ा न होइ ॥ नानक गुरु
 सालाही आपणा जिदू पाई प्रभ सोइ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ६० ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सुणि काम गहेलीए किआ चलहि बाह
 लुडाइ ॥ आपणा पिरु न पछाणही किआ मुहु देसहि जाइ ॥ जिनी सखीं, कँतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ

पाइ ॥ तिन ही जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाइ ॥ १ ॥ मुँधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईए गुर
 बीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि कँतु न पछाणई तिन किउ रैणि विहाइ ॥ गरबि अटीआ तिसना जलहि दुखु पावहि दूजै
 भाइ ॥ सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाइ ॥ सदा पिरु रावहि आपणा तिना सुखे सुखि विहाइ ॥ २ ॥
 गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाइआ जाइ ॥ अगिआन मती अँधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ॥ आवहु मिलहु
 सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाइआ सचि समाइ ॥ ३ ॥ से सहीआ सोहागणी जिंन कउ
 नदरि करेइ ॥ खसमु पछाणहि आपणा तनु मनु आगै देइ ॥ घरि वरु पाइआ आपणा हउमै दूरि करेइ ॥ नानक
 सोभावँतीआ सोहागणी अनदिनु भगति करेइ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ६१ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै
 दरि पूछउ जाइ ॥ सतिगुरु सेवी भाउ करि मै पिरु देहु मिलाइ ॥ सभु उपाए आपे वेखै किसु नेडै किसु दूरि ॥ जिनि पिरु
 संगे जाणिआ पिरु रावै सदा हदूरि ॥ १ ॥ मुँधे तू चलु गुर कै भाइ ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाइ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ सबदि रतीआ सोहागणी सचै सबदि सीगारि ॥ हरि वरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥ सेज सुहावी
 हरि रँगि रवै भगति भरे भँडार ॥ सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु ॥ २ ॥ पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ
 सद बलिहारै जाउ ॥ मन तनु अरपी सिरु देई तिन कै लागा पाइ ॥ जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ॥ गुरमुखि नामु
 पछाणीए नानक सचि समाइ ॥ ३ ॥ २९ ॥ ६२ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ हरि जी सचा सचु तू सभु किछु तेरै चीरै ॥ लख
 चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटे पीरै ॥ हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरिरे ॥ गुर परसादी सेव करी सचु गहिर
 गँभीरै ॥ १ ॥ मन मेरे नामि रते सुखु होइ ॥ गुरमती नामु सलाहीए दूजा अवरु न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरम राइ नो
 हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥ दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ॥ अधिआतमी हरि गुण तासु मनि

जपहि एकु मुरारि ॥ तिन की सेवा धरमराइ करै धँनु सवारणहारु ॥ २ ॥ मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु
अभिमानु ॥ आतम रामु पछाणिआ सहजे नामि समानु ॥ बिनु सतगुर मुकति न पाईऐ मनमुखि फिरै दिवानु ॥ सबदु न
चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहि समानु ॥ ३ ॥ सभु किछु आपे आपि है दूजा अवरु न कोइ ॥ जिउ बोलाए तितु
बोलीऐ जा आपि बुलाए सोइ ॥ गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ॥ नानक नामु समालि तू जितु सेविऐ सुखु होइ
॥ ४ ॥ ३० ॥ ६३ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ ॥ मलु हउमै धोती किवै न
उतरै जे सउ तीरथ नाइ ॥ बहु बिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइ ॥ पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ १
॥ मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ ॥ मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि मैलै
भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ॥ मनमुख मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ ॥ गुर परसादी मनि वसै मलु हउमै जाइ
समाइ ॥ जिउ अँधेरै दीपकु बालीऐ तितु गुर गिआनि अगिआनु तजाइ ॥ २ ॥ हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ॥
करणै वाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ॥ माइआ जेवडु दूखु नही सभि भवि थके संसारु ॥ गुरमती सुखु पाईऐ सचु नामु
उर धारि ॥ ३ ॥ जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ॥ ए मन भगती रतिआ सचु बाणी निज थाउ ॥ मनि रते
जिहवा रती हरि गुण सचे गाउ ॥ नानक नामु न वीसरै सचे माहि समाउ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ६४ ॥ सिरीरागु महला ४ घरु १
॥ मै मनि तनि बिरहु अति अगला किउ प्रीतमु मिलै घरि आइ ॥ जा देखा प्रभु आपणा प्रभि देखिऐ दुखु जाइ ॥ जाइ पुछा
तिन सजणा प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाइ ॥ १ ॥ मेरे सतिगुरा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ हम मूरख मुगध सरणागती
करि किरपा मेले हरि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु दाता हरि नाम का प्रभु आपि मिलावै सोइ ॥ सतिगुर हरि प्रभु बुझिआ
गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ हउ गुर सरणाई ढहि पवा करि दइआ मेले प्रभ सोइ ॥ २ ॥ मनहठि किनै न पाइआ करि

उपाव थके सभु कोइ ॥ सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रँगु न होइ ॥ कूड़ि कपटि किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ॥
 ३ ॥ सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूँ रासि ॥ प्रभ तुधहु खाली को नहीं दरि गुरमुखानो साबासि ॥ बिखु भउजल
 डुबदे कटि लै जन नानक की अरदासि ॥ ४ ॥ १ ॥ ६५ ॥ सिरीरागु महला ४ ॥ नामु मिलै मनु त्रिपतीरे बिनु नामै धिगु
 जीवासु ॥ कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥ हउ तिसु विटहु चउ खँनीरे मै नाम करे परगासु ॥ १ ॥ मेरे
 प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ ॥ बिनु नावै जीवणु ना थीरे मेरे सतिगुर नामु द्विडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु अमोलकु रतनु
 है पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुर सेवै लगिआ कटि रतनु देवै परगासि ॥ धँनु वडभागी वडभागीआ जो आइ मिले गुर पासि
 ॥ २ ॥ जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि
 विकराल ॥ ओना पासि दुआसि न भिटीरे जिन अंतरि क्रोधु चंडाल ॥ ३ ॥ सतिगुरु पुरखु अँमित सरु वडभागी नावहि
 आइ ॥ उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु द्विडाइ ॥ जन नानक उतम पदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥ ४ ॥
 २ ॥ ६६ ॥ सिरीरागु महला ४ ॥ गुण गावा गुण विथरा गुण बोली मेरी माइ ॥ गुरमुखि सजणु गुणकारीआ मिलि सजण
 हरि गुण गाइ ॥ हीरै हीरु मिलि बेधिआ रँगि चललै नाइ ॥ १ ॥ मेरे गोविंदा गुण गावा त्रिपति मन होइ ॥ अंतरि पिआस
 हरि नाम की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु रँगुहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥ गुरु नामु द्विडाए रँग
 सिउ हउ सतिगुर कै बलि जाउ ॥ बिनु सतिगुर हरि नामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ॥ २ ॥ बिनु भागा सतिगुरु ना
 मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि ॥ अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥ बिनु सतिगुर भेटे कँचनु
 ना थीरे मनमुखु लोहु बूडा बेड़ी पासि ॥ ३ ॥ सतिगुर बोहिथु हरि नाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥ सतिगुर कै भागै जो
 चलै विचि बोहिथु बैठा आइ ॥ धँनु धँनु वडभागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६७ ॥

सिरीरागु महला ४ ॥ हउ पँथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥ जिनी मेरा पिआरा राविआ तिन पीछै लागि
 फिराउ ॥ करि मिनीति कर जोदड़ी मै प्रभु मिलणै का चाउ ॥ १ ॥ मेरे भाई जना कोई मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥ हउ
 सतिगुरु विटहु वारिआ जिनि हरि प्रभु दीआ दिखाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुरु पासि ॥
 निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु करे साबासि ॥ हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥ २ ॥ सतिगुरु नो
 सभ को लोचदा जेता जगतु सभु कोइ ॥ बिनु भागा दरसनु ना थीरे भागहीण बहि रोइ ॥ जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि
 लिखिआ न मैटै कोइ ॥ ३ ॥ आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥ आपि दइआ करि मेलसी गुरु सतिगुरु पीछै
 पाइ ॥ सभु जगजीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६८ ॥ सिरीरागु महला ४ ॥ रसु अँमितु
 नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसा किउ करि मिलिआ प्रभ आइ ॥ ओइ वेपरवाह
 न बोलनी हउ मलि मलि धोवा तिन पाइ ॥ १ ॥ भाई रे मिलि सजण हरि गुण सारि ॥ सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढे
 हउमै मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ॥ सतिगुरु वचनु रतँनु है जो मँने सु हरि रसु
 खाइ ॥ से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरि रसु खाधा गुरु भाइ ॥ २ ॥ इहु हरि रसु वणि तिणि सभतु है भागहीण नही
 खाइ ॥ बिनु सतिगुरु पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ॥ ओइ सतिगुरु आगै ना निवहि ओना अँतरि क्रोधु बलाइ ॥ ३ ॥
 हरि हरि हरि रसु आपि है आपे हरि रसु होइ ॥ आपि दइआ करि देवसी गुरुमुखि अँमितु चोइ ॥ सभु तनु मनु हरिआ होइआ
 नानक हरि वसिआ मनि सोइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६९ ॥ सिरीरागु महला ४ ॥ दिनसु चडै फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥
 आव घटै नरु ना बुझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥ गुडु मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लागि माखी पचै पचाइ ॥ १ ॥ भाई रे
 मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥ पुतु कलतु मोहु बिखु है अँति बेली कोइ न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति हरि

लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥ ओनी चलणु सदा निहालिआ हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ गुरुमुखि दरगह मँनीअहि हरि
 आपि लए गलि लाइ ॥ २ ॥ गुरुमुखा नो पँथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ ॥ हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि
 लिव लाइ ॥ अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ॥ ३ ॥ जिनी गुरुमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि
 ॥ तिनि की संगति देहि प्रभ मै जाचिक की अरदासि ॥ नानक भाग वडे तिना गुरुमुखा जिन आँतरि नामु परगासि ॥ ४ ॥
 ३३ ॥ ३१ ॥ ६ ॥ ७० ॥ सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥ रस भोगहि खुसीआ
 करहि माणहि रँग अपार ॥ बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ॥ करता चिति न आवई मनमुख अँध गवार ॥ १ ॥
 मेरे मन मुखदाता हरि सोइ ॥ गुर परसादी पाईए करमि परापति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रुपा
 खाकु ॥ हैवर गैवर बहु रँगे कीए रथ अथाक ॥ किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ॥ सिरजणहारि भुलाइआ विणु
 नावै नापाक ॥ २ ॥ लैदा बद दुआइ तूँ माइआ करहि इकत ॥ जिस नो तूँ पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥ अहँकारु
 करहि अहँकारीआ विआपिआ मन की मति ॥ तिनि प्रभ आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ॥ ३ ॥ सतिगुरि पुरखि
 मिलाइआ इको सजणु सोइ ॥ हरि जन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ॥ जो हरि जन भावै सो करे दरि फेरु न पावै
 कोइ ॥ नानक रता रँगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ७१ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मनि बिलासु बहु रँगु
 घणा द्रिसटि भूलि खुसीआ ॥ छत्रधार बादिसाहीआ विचि सहसे परीआ ॥ १ ॥ भाई रे सुखु साधसँगि पाइआ ॥
 लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु सहसा मिटि गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते थान थनंतरा तेते भवि आइआ ॥ धन
 पाती वड भूमीआ मेरी मेरी करि परिआ ॥ २ ॥ हुकमु चलाए निसँग होइ वरतै अफरिआ ॥ सभु को वसगति करि लइओनु
 बिनु नावै खाकु रलिआ ॥ ३ ॥ कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ॥ गिरँबारी वड साहबी

सभु नानक सुपनु थीआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ७२ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ भलके उठि पपोलीरे विणु बुझे मुगध अजाणि ॥ सो प्रभ
 चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ॥ सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥ १ ॥ प्राणी तूँ आइआ लाहा लैणि ॥ लगा
 कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥ ओतै साथि मनुखु है फाथा
 माइआ जालि ॥ मुकते सेई भालीअहि जिं सचा नामु समालि ॥ २ ॥ जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥ जिथै जाइ
 तुधु वरतणा तिस की चिँता नाहि ॥ फाथे सेई निकले जिं गुर की पैरी पाहि ॥ ३ ॥ कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥
 चारे कुँडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥ नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७३ ॥ सिरीरागु महला ५
 ॥ घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ॥ माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ॥ उठि चलिआ पछुताइआ
 परिआ वसि जँदार ॥ १ ॥ अँधे तूँ बैठा कँधी पाहि ॥ जे होवी पूरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरी
 नाही नह डडुरी पकी वढणहार ॥ लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ॥ जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ
 खेतारु ॥ २ ॥ पहिला पहरु धँधै गइआ दूजै भरि सोइआ ॥ तीजै झाख झखाइआ चउथै भोरु भइआ ॥ कद ही चिति न
 आइओ जिनि जीउ पँडु दीआ ॥ ३ ॥ साधसंगति कउ वारिआ जीउ कीआ कुरबाणु ॥ जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु
 सुजाणु ॥ नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७४ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सभे गला विसरनु इको
 विसरि न जाउ ॥ धँधा सभु जलाइ कै गुरि नामु दीआ सचु सुआउ ॥ आसा सभे लाहि कै इका आस कमाउ ॥ जिनी सतिगुरु
 सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ॥ १ ॥ मन मेरे करते नो सालाहि ॥ सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 दुख भुख नह विआपई जे सुख दाता मनि होइ ॥ कित ही कँमि न छिजीरे जा हिरदै सचा सोइ ॥ जिसु तूँ रखहि हथ दे तिसु
 मारि न सकै कोइ ॥ सुखदाता गुरु सेवीरे सभि अवगण कढै धोइ ॥ २ ॥ सेवा मँगै सेवको लाईआं अपुनी सेव ॥

साधू सँगु मसकतै तूठै पावा देव ॥ सभु किछु वसगति साहिबै आपे करण करेव ॥ सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ॥ ३ ॥
इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ॥ इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ॥ इकस सिउ मनु मानिआ ता होआ निहचलु चीतु ॥
सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७५ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सभे थोक परापते जे आवै इकु
हथि ॥ जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥ गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ॥ १ ॥ मेरे मन एकस
सिउ चितु लाइ ॥ एकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु
नदरि करेइ ॥ निमख एक हरि नामु देइ मेरा मनु तनु सीतलु होइ ॥ जिस कउ पूरबि लिखिआ तिनि सतिगुर चरन गहे ॥ २ ॥
सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥ दूखु सँतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥ बाह पकड़ि गुरि
काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥ ३ ॥ थानु सुहावा पवितु है जिथै सँत सभा ॥ ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरु लभा ॥
नानक बधा घरु तहां जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७६ ॥ श्रीरागु महला ५ ॥ सोई धिआईए जीअड़े सिरि साहां
पातिसाहु ॥ तिस ही की करि आस मन जिस का सभसु वेसाहु ॥ सभि सिआणपा छडि कै गुर की चरणी पाहु ॥ १ ॥ मन मेरे
सुख सहज सेती जपि नाउ ॥ आठ पहर प्रभु धिआइ तूँ गुण गोइँद नित गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की सरनी परु मना जिसु
जेवडु अवरु न कोइ ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ घणा दुखु दरदु न मूले होइ ॥ सदा सदा करि चाकरी प्रभु साहिबु सचा सोइ ॥ २ ॥
साधसँगति होइ निरमला कटीए जम की फास ॥ सुखदाता भै भँजनो तिसु आगै करि अरदासि ॥ मिहर करे जिसु मिहरवानु
तां कारजु आवै रासि ॥ ३ ॥ बहुतो बहुतु वखाणीए ऊचो ऊचा थाउ ॥ वरना चिहना बाहरा कीमति कहि न सकाउ ॥ नानक
कउ प्रभ मइआ करि सचु देवहु अपुणा नाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ७७ ॥ श्रीरागु महला ५ ॥ नामु धिआए सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु
होइ ॥ पूरे गुर ते पाईए परगटु सभनी लोइ ॥ साधसँगति कै घरि वसै एको सचा सोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि

नामु धिआइ ॥ नामु सहाई सदा सँगि आगै लए छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि
॥ माइआ का रँगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥ जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ॥ २ ॥ साधू की होहु रेणुका
अपणा आपु तिआगि ॥ उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ॥ तिसहि परापति रतनु होइ जिसु मसतकि होवै
भागु ॥ ३ ॥ तिसै परापति भाइहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥ सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ॥ नानक कउ
गुरु भेटिआ बिनसे सगल सँताप ॥ ४ ॥ ८ ॥ ७८ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ इकु पछाणू जीअ का इको रखणहारु ॥
इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥ तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहमु करतारु ॥ १ ॥ मन मेरे सगल उपाव
तिआगु ॥ गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इको भाई मितु इकु इको मात पिता ॥ इकस की
मनि टेक है जिनि जीओ पिँडु दिता ॥ सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु वसि कीता ॥ २ ॥ घरि इको बाहरि इको
थान थनँतरि आपि ॥ जीअ जँत सभि जिनि कीए आठ पहर तिसु जापि ॥ इकसु सेती रतिआ न होवी सोग सँतापु ॥ ३
॥ पारब्रहमु प्रभु एकु है दूजा नाही कोइ ॥ जीउ पिँडु सभु तिस का जो तिसु भावै सु होइ ॥ गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक
सचा सोइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ७९ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान ॥ जिन कउ आपि
दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ॥ जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरि नामु ॥ १ ॥ मन मेरे एको नामु
धिआइ ॥ सब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल ॥
साधू सँगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ॥ जनम मरण की मलु कटीए गुर दरसनु देखि निहाल ॥ २ ॥ थान थनँतरि रव
रहिआ पारब्रहमु प्रभु सोइ ॥ सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ॥ तिसु सरणाई छुटीए कीता लोडे सु होइ ॥ ३ ॥ जिन
मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान ॥ तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान ॥ जिनी मेरा प्रभ धिआइआ

नानक तिन कुरबान ॥ ४ ॥ १० ॥ ८० ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मिलि सतिगुर सभु दुख गइआ हरि सुखु वसिआ मनि
 आइ ॥ अंतरि जोति प्रगासीआ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ मिलि साधू मुखु ऊजला पूरबि लिखिआ पाइ ॥ गुण गोविंद
 नित गावणे निरमल साचै नाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥ गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ मन कीआ इछां पूरीआ पाइआ नामु निधानु ॥ अंतरजामी सदा सँगि करणैहारु पछानु ॥ गुर परसादी मुखु
 ऊजला जपि नामु दानु इसनानु ॥ कामु क्रोध लोभु बिनसिआ तजिआ सभु अभिमानु ॥ २ ॥ पाइआ लाहा लाभु नामु
 पूरन होए काम ॥ करि किरपा प्रभि मेलिआ दीआ अपणा नामु ॥ आवण जाणा हरि गइआ आपि होआ मिहरवानु ॥ सचु
 महलु घरु पाइआ गुर का सबदु पछानु ॥ ३ ॥ भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥ हलति पलति मुख ऊजले
 साचे के गुण सारि ॥ आठ पहर गुण सारदे स्ते रँगि अपार ॥ पारब्रहमु सुख सागरो नानक सद बलिहार ॥ ४ ॥ ११ ॥
 ८१ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईए सबदु निधानु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी जपीए अँप्रित नामु ॥
 जनम मरण दुखु काटीए लागै सहजि धिआनु ॥ १ ॥ मेरे मन प्रभ सरणाई पाइ ॥ हरि बिनु दूजा को नहीं एको नामु
 धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीमति कहणु न जाईए सागरु गुणी अथाहु ॥ वडभागी मिलु सँगती सचा सबदु विसाहु ॥
 करि सेवा सुख सागरै सिरि साहा पातिसाहु ॥ २ ॥ चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ ॥ मै धर तेरी पारब्रहम तेरै
 ताणि रहाउ ॥ निमाणिआ प्रभु माणु तूँ तेरै सँगि समाउ ॥ ३ ॥ हरि जपीए आराधीए आठ पहर गोविंदु ॥ जीअ प्राण तनु
 धनु रखे करि किरपा राखी जिँदु ॥ नानक सगले दोख उतारिअनु प्रभु पारब्रहम बखसिँदु ॥ ४ ॥ १२ ॥ ८२ ॥
 सिरीरागु महला ५ ॥ प्रीति लगी तिसु सच सिउ मरै न आवै जाइ ॥ ना वेछोड़िआ विछुडै सभ महि रहिआ समाइ ॥ दीन
 दरद दुख भँजना सेवक कै सत भाइ ॥ अचरज रूपु निरँजनो गुरि मेलाइआ माइ ॥ १ ॥ भाई रे मीतु करहु

प्रभु सोइ ॥ माइआ मोह परीति धिगु सुखी न दीसै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दाना दाता सीलवँतु निरमलु रूपु अपारु ॥
 सखा सहाई अति वडा ऊचा वडा अपारु ॥ बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरवारु ॥ जो मँगीऐ सोई पाईऐ
 निधारा आधारु ॥ २ ॥ जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै सांति ॥ इक मनि एकु धिआईऐ मन की लाहि
 भरांति ॥ गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥ सदा सदा आराधीऐ दिनु विसरहु नही राति ॥ ३ ॥ जिन कउ
 पूरबि लिखिआ तिन का सखा गोविँदु ॥ तनु मनु धनु अरपी सभो सगल वारीऐ इह जिँद ॥ देखै सुणै हदूरि सद घटि घटि
 ब्रह्मु रविँदु ॥ अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिँदु ॥ ४ ॥ १३ ॥ ८३ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मनु तनु
 धनु जिनि प्रभि दीआ रखिआ सहजि सवारि ॥ सब कला करि थापिआ अंतरि जोति अपार ॥ सदा सदा प्रभु सिमरीऐ
 अंतरि रखु उर धारि ॥ १ ॥ मेरे मन हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रभ सरणाई सदा रहु दूखु न विआपै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 रतन पदारथ माणका सुइना रुपा खाकु ॥ मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥ जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख
 पसु नापाक ॥ २ ॥ अंतरि बाहरि रवि रहिआ तस नो जाणै दूरि ॥ तिसना लागी रचि रहिआ अंतरि हउमै कूरि ॥ भगती
 नाम विहूणिआ आवहि वँजहि पूर ॥ ३ ॥ राखि लेहु प्रभु करणहार जीअ जंत करि दइआ ॥ बिनु प्रभ कोइ न रखनहारु
 महा बिकट जम भइआ ॥ नानक नामु न वीसरउ करि अपुनी हरि मइआ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ८४ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मेरा
 तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥ सुत दारा बनिता अनेक बहुतु रँग अरु वेस ॥ हरि नामु रिदै न वसई कारजि कितै न
 लेखि ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥ करि संगति नित साध की गुर चरणी चितु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु
 निधानु धिआईऐ मसतकि होवै भागु ॥ कारज सभि सवारीअहि गुर की चरणी लागु ॥ हउमै रोगु भ्रमु कटीऐ ना आवै ना
 जागु ॥ २ ॥ करि संगति तू साध की अठसठि तीरथ नाउ ॥ जीउ प्राण मनु तनु हरे साचा एहु सुआउ ॥ ऐथै मिलहि

वडाईआ दरगहि पावहि थाउ ॥ ३ ॥ करे कराए आपि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥ मारि आपे जीवालदा अंतरि
 बाहरि साथि ॥ नानक प्रभु सरणागती सरब घटा के नाथ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ८५ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सरणि पए प्रभु
 आपणे गुरु होआ किरपालु ॥ सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जँजाल ॥ अँदरु लगा राम नामि अँमित नदरि निहालु
 ॥ १ ॥ मन मेरे सतिगुर सेवा सारु ॥ करे दइआ प्रभु आपणी इक निमख न मनहु विसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण
 गोविंद नित गावीअहि अवगुण कटनहार ॥ बिनु हरि नाम न सुखु होइ करि डिठे बिसथार ॥ सहजे सिफती रतिआ
 भवजलु उतरे पारि ॥ २ ॥ तीरथ वरत लख सँजमा पाईऐ साधू धूरि ॥ लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि ॥ थान
 थनंतरि रवि रहिआ प्रभु मेरा भरपूरि ॥ ३ ॥ सचु पातिसाही अमरु सचु सचे सचा थानु ॥ सची कुदरति धारीअनु सचि
 सिरजिओनु जहानु ॥ नानक जपीऐ सचु नामु हउ सदा सदा कुरबानु ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८६ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥
 उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥ सँतसँगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥ १ ॥ मन मेरे राम
 नामु जपि जापु ॥ मन इछे फल भुँचि तू सभु चूकै सोगु सँतापु ॥ रहाउ ॥ जिसु कारणि तनु धारिआ सो प्रभु डिठा नालि
 ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥ २ ॥ मनु तनु निरमलु होइआ लागी साचु परीति ॥ चरण
 भजे पारब्रहम के सभि जप तप तिन ही कीति ॥ ३ ॥ रतन जवेहर माणिका अँमितु हरि का नाउ ॥ सूख सहज आनँद
 रस जन नानक हरि गुण गाउ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ८७ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सोई सासतु सउणु सोइ जितु जपीऐ हरि
 नाउ ॥ चरण कमल गुरि धनु दीआ मिलिआ निथावे थाउ ॥ साची पूँजी सचु सँजमो आठ पहर गुण गाउ ॥ करि किरपा
 प्रभु भेटिआ मरणु न आवणु जाउ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु सदा इक रँगि ॥ घट घट अँतरि रवि रहिआ सदा सहार्इ सँगि
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखा की मिति किआ गणी जा सिमरी गोविँदु ॥ जिन चाखिआ से त्रिपतासिआ उह

रसु जाणै जिंदु ॥ सँता सँगति मनि वसै प्रभु प्रीतमु बखसिंदु ॥ जिनि सेविआ प्रभु आपणा सोई राज नरिंदु ॥ २ ॥
 अउसरि हरि जसु गुण रमण जितु कोटि मजन इसनानु ॥ रसना उचरै गुणवती कोइ न पुजै दानु ॥ द्रिसटि धारि मनि तनि
 वसै दइआल पुरखु मिहरवानु ॥ जीउ पिंडु धनु तिस दा हउ सदा सदा कुरबानु ॥ ३ ॥ मिलिआ कदे न विछुडै जो मेलिआ
 करतारि ॥ दासा के बँधन कटिआ साचै सिरजणहारि ॥ भूला मारगि पाइओनु गुण अवगुण न बीचारि ॥ नानक तिसु
 सरणागती जि सगल घटा आधारु ॥ ४ ॥ १८ ॥ ८८ ॥ सिरीरागु महला ७ ॥ रसना सचा सिमरीए मनु तनु निरमलु
 होइ ॥ मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ मिहर करे जे आपणी चसा न विसरै सोइ ॥ १ ॥ मन मेरे साचा
 सेवि जिचरु सासु ॥ बिनु सचे सभ कूडु है अँते होइ बिनासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिबु मेरा निरमला तिसु बिनु रहणु न जाइ
 ॥ मेरै मनि तनि भुख अति अगली कोई आणि मिलावै माइ ॥ चारे कुँडा भालीआ सह बिनु अवरु न जाइ ॥ २ ॥ तिसु
 आगै अरदासि करि जो मेले करतारु ॥ सतिगुरु दाता नाम का पूरा जिसु भँडारु ॥ सदा सदा सालाहीरे अँतु न पारावारु
 ॥ ३ ॥ परवदगारु सालाहीरे जिस दे चलत अनेक ॥ सदा सदा आराधीरे एहा मति विसेख ॥ मनि तनि मिठा तिसु लगै
 जिसु मसतकि नानक लेख ॥ ४ ॥ १९ ॥ ८९ ॥ सिरीरागु महला ७ ॥ सँत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥
 तोसा बँधहु जीअ का ऐथै ओथै नालि ॥ गुरु पूरे ते पाईरे अपणी नदरि निहालि ॥ करमि परापति तिसु होवै जिस नो होइ
 दइआलु ॥ १ ॥ मेरे मन गुरु जेवडु अवरु न कोइ ॥ दूजा थाउ न को सुझै गुरु मेले सचु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल
 पदारथ तिसु मिले जिनि गुरु डिठा जाइ ॥ गुरु चरणी जिन मनु लगा से वडभागी माइ ॥ गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ
 महि रहिआ समाइ ॥ गुरु परमेसरु पारब्रहमु गुरु डुबदा लए तराइ ॥ २ ॥ कितु मुखि गुरु सालाहीरे करण कारण समरथु
 ॥ से मथे निहचल रहे जिन गुरि धारिआ हथु ॥ गुरि अँमित नामु पीआलिआ जनम मरन का पथु ॥ गुरु परमेसरु

सेविआ भै भँजनु दुख लथु ॥ ३ ॥ सतिगुरु गहिर गभीरु है सुख सागरु अघ खँडु ॥ जिनि गुरु सेविआ आपणा जमदूत न
 लागै डँडु ॥ गुर नालि तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमँडु ॥ नामु निधानु सतिगुरि दीआ सुखु नानक मन महि मँडु ॥ ४ ॥ २०
 ॥ ९० ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मिठा करि कै खाइआ कउड़ा उपजिआ सादु ॥ भाई मीत सुरिद कीए बिखिआ रचिआ बादु ॥
 जादे बिलम न होवई विणु नावै बिसमादु ॥ १ ॥ मेरे मन सतगुर की सेवा लागु ॥ जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआगु
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दह दिस जाइ ॥ लोभी जँतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ॥ काम क्रोध मदि
 बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ २ ॥ माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ ॥ त्रिसना पँखी फासिआ निकसु न पाए
 माइ ॥ जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ ॥ ३ ॥ अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इहु संसारु ॥ जिस नो
 रखै सो रहै सँमिथु पुरखु अपारु ॥ हरि जन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहारु ॥ ४ ॥ २१ ॥ ९१ ॥ सिरीरागु महला ५
 घरु २ ॥ गोइलि आइआ गोइली किआ तिसु डँफु पसारु ॥ मुहलति पुँनी चलणा तूँ संमलु घर बारु ॥ १ ॥ हरि गुण गाउ
 मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥ किआ थोड़डी बात गुमानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥ किआ
 तूँ रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥ २ ॥ मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोडि ॥ सरपर उठी चलणा
 छडि जासी लख करोडि ॥ ३ ॥ लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥ नानक नामु समालि तूँ सो दिनु नेड़ा
 आइओइ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ९२ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ तिचरु वसहि सुहेलडी जिचरु साथी नालि ॥ जा साथी उठी चलिआ
 ता धन खाकू रालि ॥ १ ॥ मनि बैरागु भइआ दरसनु देखणै का चाउ ॥ धँनु सु तेरा थानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिचरु वसिआ
 कँतु घरि जीउ जीउ सभि कहाति ॥ जा उठी चलसी कँतड़ा ता कोइ न पुछै तेरी बात ॥ २ ॥ पेईअडै सहु सेवि तूँ साहुरडै सुखि
 वसु ॥ गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥ ३ ॥ सभना साहुरै वँजणा सभि मुकलावणहार ॥ नानक

धँनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥ ४ ॥ २३ ॥ ९३ ॥ सिरीरागु महला ५ घरु ६ ॥ करण कारण एकु ओही जिनि
 कीआ आकारु ॥ तिसहि धिआवहु मन मेरे सरब को आधारु ॥ १ ॥ गुर के चरन मन महि धिआइ ॥ छोडि सगल
 सिआणपा साचि सबदि लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुर मंत्रु हिरदै होइ ॥ कोटि जतना करि रहे गुर
 बिनु तरिओ न कोइ ॥ २ ॥ देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की पैरी पाहि ॥ ३
 ॥ साधसंगति मन वसै साचु हरि का नाउ ॥ से वडभागी नानका जिना मनि इहु भाउ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ९४ ॥ सिरीरागु
 महला ५ ॥ सँचि हरि धनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥ जिनि तूँ साजि सवारिआ हरि सिमरि होइ उधारु ॥ १ ॥
 जपि मन नामु एकु अपारु ॥ प्रान मनु तनु जिनिहि दीआ रिदै का आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि अहँकारि माते
 विआपिआ संसारु ॥ पउ संत सरणी लागु चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥ २ ॥ सतु संतोखु दइआ कमावै इह करणी सार ॥
 आपु छोडि सभ होइ रेणा जिसु देइ प्रभु निरँकारु ॥ ३ ॥ जो दीसै सो सगल तूँहै पसरिआ पासारु ॥ कहु नानक गुरि भरमु
 काटिआ सगल ब्रहम बीचारु ॥ ४ ॥ २५ ॥ ९५ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ दुकित सुकित मँधे संसारु सगलाणा ॥ दुहँते
 रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥ १ ॥ ठाकुरु सरबे समाणा ॥ किआ कहउ सुणउ सुआमी तूँ वड पुरखु समाणा ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ मान अभिमान मँधे सो सेवकु नाही ॥ तत समदरसी संतहु कोई कोटि मँधाही ॥ २ ॥ कहन कहावन इहु कीरति
 करला ॥ कथन कहन ते मुक्ता गुरमुखि कोई विरला ॥ ३ ॥ गति अविगति कछु नदरि न आइआ ॥ संतन की रेणु नानक
 दानु पाइआ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९६ ॥ सिरीरागु महला ५ घरु ७ ॥ तैरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥ भूलहि चूकहि
 बारिक तूँ हरि पिता माइआ ॥ १ ॥ सुहेला कहनु कहावनु ॥ तेरा बिखमु भावनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ माणु ताणु करउ तेरा
 हउ जानउ आपा ॥ सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥ २ ॥ पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन जुगता ॥

बंधन मुक्तु संतहु मेरी राखै ममता ॥ ३ ॥ भए किरपाल ठाकुर रहिओ आवण जाणा ॥ गुर मिलि नानक पारब्रह्म पछाणा
 ॥ ४ ॥ २७ ॥ ९७ ॥ सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु ॥ सचा साहिबु मनि वुठा
 होआ खसमु दइआलु ॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जँजालु ॥ १ ॥ मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु ॥ तेरे
 दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अँमित नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन तूँ सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान ॥ तिना पिछै
 छुटीरे जिन अँदरि नामु निधानु ॥ गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु ॥ २ ॥ आए से परवाणु हहि जिन गुर
 मिलिआ सुभाइ ॥ सचे सेती रतिआ दरगह बैसणु जाइ ॥ करते हथि वडिआईआ पूरबि लिखिआ पाइ ॥ ३ ॥ सचु करता
 सचु करणहारु सचु साहिबु सचु टेक ॥ सचो सचु वखाणीरे सचो बुधि बिबेक ॥ सरब निरँतरि रवि रहिआ जपि नानक
 जीवै एक ॥ ४ ॥ २८ ॥ ९८ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ गुरु परमेसुरु पूजीरे मनि तनि लाइ पिआरु ॥ सतिगुरु दाता
 जीअ का सभसै देइ अधारु ॥ सतिगुर बचन कमावणे सचा एहु वीचारु ॥ बिनु साधू संगति रतिआ माइआ मोहु सभु छारु
 ॥ १ ॥ मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥ साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु समरथु अपारु
 गुरु वडभागी दरसन होइ ॥ गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची
 सोइ ॥ गुर ते बाहरि किछु नही गुरु कीता लोड़े सु होइ ॥ २ ॥ गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥ गुरु
 दाता हरि नामु देइ उधरै सभु संसारु ॥ गुरु समरथु गुरु निरँकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥ गुर की महिमा अगम है
 किआ कथे कथनहारु ॥ ३ ॥ जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि ॥ पूरब लिखे पावणे साचु नामु दे रासि
 ॥ सतिगुर सरणी आइआं बाहुडि नही बिनासु ॥ हरि नानक कदे न विसरिउ एहु जीउ पिँडु तेरा सासु ॥ ४ ॥ २९ ॥ ९९
 ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइ ॥ गुर के चरण सरेवणे तीरथ हरि का नाउ ॥

आगै दरगहि मँनीअहि मिलै निथावे थाउ ॥ १ ॥ भाई रे साची सतिगुर सेव ॥ सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ ॥ अनदिनु सचु सलाहणा सचे के गुण गाउ ॥ सचु खाणा
 सचु पैनणा सचे सचा नाउ ॥ २ ॥ सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि ॥ गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ
 पहर तिसु जापि ॥ नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ॥ ३ ॥ गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ जिन
 कउ पूरबि लिखिआ सेई नामु धिआइ ॥ नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाइ ॥ ४ ॥ ३० ॥ १०० ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीशगु महला १ घरु १ असटपदीआ ॥

आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥ जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थइ ॥ आखण वाले जेतडे सभि
 आखि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ बाबा अलहु अगम अपारु ॥ पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा
 हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥ जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥ कीमति किनै न पाईआ सभि
 सुणि सुणि आखहि सोइ ॥ २ ॥ पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥ सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस
 रसीद ॥ बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरुद ॥ ३ ॥ पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥ आपणी
 कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥ सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥ ४ ॥ थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु
 नाउ ॥ जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥ अंबडि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥ ५ ॥ वरना वरन न
 भावनी जे किसै वडा करेइ ॥ वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥ ६ ॥ सभु
 को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै विचारि ॥ केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥ नानक तोटि न

आवई तेरे जुगह जुगह भँडार ॥ ७ ॥ १ ॥ महला १ ॥ सभे कँत महेलिआ सगलीआ करहि सीगारु ॥ गणत गणावणि
 आईआ सूहा वेसु विकारु ॥ पाखँडि प्रेम न पाईये खोटा पाजु खुआरु ॥ १ ॥ हरि जीउ इउ परु रावै नारि ॥ तुधु भावनि
 सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर सबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥ दुइ कर जोड़ि खड़ी
 तकै सचु कहै अरदासि ॥ लालि रती सच भै वसी भाइ रती रँगि रासि ॥ २ ॥ प्रिअ की चेरी कांठीये लाली मानै नाउ ॥
 साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥ सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहरै जाउ ॥ ३ ॥ साधन रँड न बैसई जे
 सतिगुर माहि समाइ ॥ पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ॥ नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥ ४ ॥ साचु
 धड़ी धन माडीये कापडु प्रेम सीगारु ॥ चँदनु चीति वसाइआ मँदरु दसवा दुआरु ॥ दीपकु सबदि विगासिआ राम नामु उर
 हारु ॥ ५ ॥ नारी अँदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥ सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥ बिनु पिर पुरखु न
 जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥ ६ ॥ निसि अँधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥ अँकु जलउ तनु जालीअउ
 मनु धनु जलि बलि जाइ ॥ जा धन कँति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥ ७ ॥ सेजै कँत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥
 हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥ सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेम सुखाइ ॥ ८ ॥ २ ॥ सिरीरागु महला १
 ॥ आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥ आपे रतनु परखि तूँ आपे मोलु अपारु ॥ साचउ मानु महतु तूँ आपे
 देवणहारु ॥ १ ॥ हरि जीउ तूँ करता करतारु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूँ हरि नामु मिलै आचारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे
 हीरा निरमला आपे रँगु मजीठ ॥ आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥ गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु
 ॥ २ ॥ आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥ साची वाट सुजाणु तूँ सबदि लघावणहारु ॥ निडरिआ डरु जाणीये
 बाझु गुरु गुबारु ॥ ३ ॥ असथिरु करता देखीये होरु केती आवै जाइ ॥ आपे निरमलु एकु तूँ होर बँधी धँधै

पाइ ॥ गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ ॥ ४ ॥ हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ॥ तितु तनि मैलु न
 लगई सच घरि जिंसु ओताकु ॥ नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥ ५ ॥ जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग
 चारि ॥ हउमै त्रिसना मारि कै सचु रखिआ उर धारि ॥ जगु महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥ ६ ॥ साचउ वखरु
 लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥ साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥ पति सिउ लेखा निबडै राम नामु परगासि ॥ ७ ॥
 ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ जह देखा तह एकु तूँ सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ जोति निरंतरि जाणीऐ नानक
 सहजि सुभाइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥ अति सिआणी सोहणी
 किउ कीतो वेसाहु ॥ कीते कारणि पाकडी कालु न टलै सिराहु ॥ १ ॥ भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥ जिउ मछी तितु
 माणसा पवै अचिँता जालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥ सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि
 विकार ॥ हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥ २ ॥ सीचाने जिउ पँखीआ जाली बधिक हाथि ॥ गुरि राखे से उबरे
 होरि फाथे चोगै साथि ॥ बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न सँगी साथि ॥ ३ ॥ सचे सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥ जिनी
 सचा मँनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥ मनिमुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥ ४ ॥ सतिगुर अगै अरदासि
 करि साजनु देइ मिलाइ ॥ साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥ नावै अँदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ॥
 ५ ॥ बाझु गुरु गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥ गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥ तिथै कालु न सँचरै जोती जोति
 समाइ ॥ ६ ॥ तूँ है साजनु तूँ सुजाणु तूँ आपे मेलणहारु ॥ गुर सबदी सालाहीऐ अँतु न पारावारु ॥ तिथै कालु न अपडै
 जिथै गुर का सबदु अपारु ॥ ७ ॥ हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥ हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥
 नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जँता वसि किछु नाहि ॥ ८ ॥ ४ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा

जूठी होइ ॥ मुखे झूठे झूठ बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥ बिनु अभ सबद न मांजीरे साचे ते सचु होइ ॥ १ ॥ मुँधे
 गुणहीणी सुखु केहि ॥ पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिरु परदेसी जे थीरे धन वांढी
 झूरेइ ॥ जिउ जलि थोडै मछुली करण पलाव करेइ ॥ पिर भावै सुखु पाईरे जा आपे नदरि करेइ ॥ २ ॥ पिरु सालाही
 आपणा सखी सहेली नालि ॥ तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥ सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥ ३
 ॥ कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥ ना सुखु पेईरे साहुरै झूठि जली वेकारि ॥ आवणु वँजणु डाखडो छोडी
 कँति विसारि ॥ ४ ॥ पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥ पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥ दरि घरि
 ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥ ५ ॥ पँडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ॥ अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु
 ॥ कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥ ६ ॥ केते पँडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥ वादि विरोधि सलाहणे वादे
 आवणु जाणु ॥ बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥ ७ ॥ सभि गुणवँती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥
 हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभ सोइ ॥ नानक सबदि मिलावडा ना वेछोडा होइ ॥ ८ ॥ ५ ॥ सिरीरागु महला १ ॥
 जपु तपु संजमु साधीरे तीरथि कीचै वासु ॥ पुँन दान चँगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ॥ जेहा राधे तेहा लुणे बिनु गुण
 जनमु विणासु ॥ १ ॥ मुँधे गुण दासी सुखु होइ ॥ अवगण तिआगि समाईरे गुरमति पूरा सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विणु रासी
 वापारीआ तके कुँडा चारि ॥ मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घर बारि ॥ विणु वखर दुखु अगला कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ २
 ॥ लाहा अहिनि सिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ॥ वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ॥ वणजारिआ सिउ वणजु करि
 गुरमुखि ब्रह्ममु बीचारि ॥ ३ ॥ संतां संगति पाईरे जे मेले मेलणहारु ॥ मिलिआ होइ न विछुडै जिसु अंतरि जोति अपार ॥
 सचै आसणि सचि रहै सचै प्रेम पिआर ॥ ४ ॥ जिनी आपु पछाणिआ घर महि महलु सुथाइ ॥ सचे सेती रतिआ सचो

पलै पाइ ॥ त्रिभवणि सो प्रभु जाणीरे साचो साचै नाइ ॥ ५ ॥ साधन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता सँगि ॥ महली
 महलि बुलाईरे सो पिरु रावै रँगि ॥ सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण सँगि ॥ ६ ॥ भूली भूली थलि चडा थलि चडि
 डूगरि जाउ ॥ बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥ नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥ ७ ॥ पुछहु
 जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ॥ राजनु जाणहि आपणा दरि घरि ठाक न होइ ॥ नानक एको रवि रहिआ दूजा अवरु न
 कोइ ॥ ८ ॥ ६ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ गुर ते निरमलु जाणीरे निरमल देह सरीरु ॥ निरमलु साचो मनि वसै सो जाणै
 अभ पीर ॥ सहजै ते सुखु अगलो ना लागै जम तीरु ॥ १ ॥ भाई रे मैलु नाही निरमल जलि नाइ ॥ निरमलु साचा एकु तूँ
 होरु मैलु भरी सभ जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥ रवि ससि दीप अनूप जोति त्रिभवणि
 जोति अपार ॥ हाट पटण गड़ कोठडी सचु सउदा वापार ॥ २ ॥ गिआन अँजनु भै भँजना देखु निरँजन भाइ ॥ गुपतु
 प्रगटु सभ जाणीरे जे मनु राखै ठाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै ता सहजे लए मिलाइ ॥ ३ ॥ कसि कसवटी लाईरे परखे हितु
 चितु लाइ ॥ खोटे ठउर न पाइनी खरे खजानै पाइ ॥ आस अँदेसा दूरि करि इउ मलु जाइ समाइ ॥ ४ ॥ सुख कउ मागै सभु
 को दुखु न मागै कोइ ॥ सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ॥ सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइ
 ॥ ५ ॥ बेदु पुकारे वाचीरे बाणी ब्रहम बिआसु ॥ मुनि जन सेवक साधिका नामि रते गुणतासु ॥ सचि रते से जिणि गए हउ
 सद बलिहारै जासु ॥ ६ ॥ चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइ ॥ भगती भाइ विहूणिआ मुहु काला पति खोइ ॥
 जिनी नामु विसारिआ अवगण मुठी रोइ ॥ ७ ॥ खोजत खोजत पाइआ डरु करि मिलै मिलाइ ॥ आपु पछाणै घरि वसै
 हउमै त्रिसना जाइ ॥ नानक निरमल ऊजले जो राते हरि नाइ ॥ ८ ॥ ७ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ सुणि मन भूले बावरे गुर
 की चरणी लागु ॥ हरि जपि नामु धिआइ तू जमु डरपै दुख भागु ॥ दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै सुहागु ॥ १ ॥

भाई रे अवरु नाही मै थाउ ॥ मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति पति साबासि तिसु
 तिसु कै सँगि मिलाउ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥ मै अँधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥ २
 ॥ गुरु जिना का अँधुला चले नाही ठाउ ॥ बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥ आइ गइआ
 पछुतावणा जिउ सुँजै घरि काउ ॥ ३ ॥ बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति ॥ तब लगु महलु न पाईऐ जब लगु साचु
 न चीति ॥ सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥ ४ ॥ हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥ सबदि सलाही
 मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥ सहजे होइ मिलावडा साचे साचि मिलाउ ॥ ५ ॥ सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु
 अहँकारु ॥ नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥ ६ ॥
 सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥ सबदै ही ते पाईऐ हरि नामे लगै पिआरु ॥ बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि
 जनमै वारो वार ॥ ७ ॥ सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ ॥ गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥ नानक
 सबदि पछाणीऐ हउमै करै न कोइ ॥ ८ ॥ ८ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥ ना
 माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥ दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥ १ ॥ मन रे रामु जपहु सुखु होइ
 ॥ बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रँगु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥ सचि माणे
 पिर सेजड़ी गूडा हेतु पिआरु ॥ गुरमखि जाणि सिजाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥ २ ॥ सचि मिलहु वर कामणी पिरि
 मोही रँगु लाइ ॥ मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥ हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥ ३ ॥
 मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु शवै नारि ॥ इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥ संत सभा सुखु ऊपजै
 गुरमुखि नाम अधारु ॥ ४ ॥ खिन महि ऊपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥ सबदु पछाणै रवि रहै ना तिसु कालु

सँताइ ॥ साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ॥ ५ ॥ वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥ कार
 कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥ पूँजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ ६ ॥ गुरुमुखि तोलि तोलाइसी सचु
 तराजी तोलु ॥ आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥ आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥ ७ ॥ कथनै कहणि न
 छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥ काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥ नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥
 ८ ॥ ९ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥ मनु दीजै गुरु आपणे पाईऐ सरब पिआरु
 ॥ मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ॥ १ ॥ भाई रे गुरु बिनु गिआनु न होइ ॥ पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ ॥ सफलिओ बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइ ॥
 लाल जवेहर माणकी गुरु भँडारै सोइ ॥ २ ॥ गुरु भँडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ॥ साचो वखरु सँचीऐ पूरै करमि
 अपारु ॥ सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुर सँघारु ॥ ३ ॥ भवजलु बिरखु डरावणो ना कँधी ना पारु ॥ ना बेडी
 ना तुलहड़ा ना तिसु वँजु मलारु ॥ सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥ ४ ॥ इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै
 सुखु जाइ ॥ जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइ ॥ घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ॥ ५ ॥ मेरी मेरी
 करि गए तनु धनु कलतु न साथि ॥ बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ॥ साचउ साहिबु सेविरे गुरुमुखि अकथो
 काथि ॥ ६ ॥ आवै जाइ भवाईऐ पड़े किरति कमाइ ॥ पूरबि लिखिआ किउ मेटिऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥ बिनु हरि
 नाम न छुटीऐ गुरुमति मिलै मिलाइ ॥ ७ ॥ तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ॥ हउमै ममता जलि बलउ लोभु
 जलउ अभिमानु ॥ नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥ ८ ॥ १० ॥ सिरीरागु महला १ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ
 प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥ लहरी नालि पछाडीऐ भी विगसै असनेहि ॥ जल महि जीअ उपाइ कै

बिनु जल मरणु तिनेहि ॥ १ ॥ मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥ गुरुमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ रे मन आसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥ जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सांति सरीर ॥
 बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभ जाणै अभ पीर ॥ २ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ॥ सर भरि थल
 हरीआवले इक बूँद न पवई केह ॥ करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥ ३ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि
 जैसी जल दुध होइ ॥ आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥ आपे मेलि विछुँनिआ सचि वडिआई देइ ॥ ४ ॥ रे
 मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ॥ खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥ मनमुखि सोझी ना पवै
 गुरुमुखि सदा हजूरि ॥ ५ ॥ मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ॥ ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥
 गुरुमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥ ६ ॥ सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ गिआन पदारथु पाईऐ
 त्रिभवन सोझी होइ ॥ निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥ ७ ॥ खेलि गए से पंखणूँ जो चुगदे सर तलि ॥
 घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥ जिसु तूँ मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिडु मलि ॥ ८ ॥ बिनु गुरु प्रीति न
 ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ॥ सोहँ आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥ गुरुमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥ ९
 ॥ मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ॥ मनमुखि सोझी ना पवै वीछुडि चोटा खाइ ॥ नानक दरु घरु एकु
 है अवरु न दूजी जाइ ॥ १० ॥ ११ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ मनमुखि भुलै भुलाईऐ भूली ठउर न काइ ॥ गुरु बिनु को न
 दिखावई अंधी आवै जाइ ॥ गिआन पदारथु खोइआ ठगिआ मुठा जाइ ॥ १ ॥ बाबा माइआ भरमि भुलाइ ॥ भरमि
 भूली डोहागणी ना पिर अँकि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूली फिरै दिसँतरी भूली गिहु तजि जाइ ॥ भूली डूँगरि थलि चडै
 भरमै मनु डोलाइ ॥ धुरहु विछुँनी किउ मिलै गरबि मुठी बिललाइ ॥ २ ॥ विछुडिआ गुरु मेलसी हरि रसि

नाम पिआरि ॥ साचि सहजि सोभा घणी हरि गुण नाम अधारि ॥ जिउ भावै तिउ रखु तूँ मै तुझ बिनु कवनु भतारु ॥ ३ ॥
अखर पड़ि पड़ि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ॥ तीरथ नाता किआ करे मन महि मैलु गुमानु ॥ गुर बिनु किनि समझाईऐ मनु
राजा सुलतानु ॥ ४ ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ गुरमुखि ततु वीचारु ॥ साधन आपु गवाइआ गुर कै सबदि सीगारु ॥ घर ही सो
पिरु पाइआ गुर कै हेति अपारु ॥ ५ ॥ गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ॥ गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु
खोइ ॥ नामु पदारथु पाइआ लाभु सदा मनि होइ ॥ ६ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ आपि न लाइआ जाइ ॥ गुर की चरणी लागि
रहु विचहु आपु गवाइ ॥ सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥ ७ ॥ भुलण अँदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु ॥ गुरमति मनु
समझाइआ लागी तिसै पिआरु ॥ नानक साचु न वीसरै मेले सबदु अपारु ॥ ८ ॥ १२ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ त्रिसना
माइआ मोहणी सुत बँधप घर नारि ॥ धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहँकारि ॥ मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि
॥ १ ॥ मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूँ भावहि सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु
सालाही रँग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ॥ जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥ वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु
॥ २ ॥ आखणि आखहि केतड़े गुर बिनु बूझ न होइ ॥ नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ॥ जो तुधु भवहि से भले खोटा
खरा न कोइ ॥ ३ ॥ गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रासि ॥ असट धातु पातिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ॥ आपे
परखे पारखु पवै खजानै रासि ॥ ४ ॥ तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥ कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ
॥ गुरमति तूँ सालाहणा होरु कीमति कहणु न जाइ ॥ ५ ॥ जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ॥ गुर बिनु
गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ॥ बिनु गुण कामि न आवई माइआ फीका सादु ॥ ६ ॥ आसा अँदरि जँमिआ आसा रस
कस खाइ ॥ आसा बाँधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ॥ अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ ॥ ७ ॥ सरबे थाई

एकू तूँ जिउ भावै तिउ राखु ॥ गुरुमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साखु ॥ हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ॥
 ८ ॥ आकासी पातालि तूँ तिभवणि रहिआ समाइ ॥ आपे भगती भाउ तूँ आपे मिलहि मिलाइ ॥ नानक नामु न वीसरै
 जिउ भावै तिवै रजाइ ॥ ९ ॥ १३ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ॥ सबद सुरति
 सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ॥ जिउ भवै तिउ राखु तूँ मै हरि नामु अधारु ॥ १ ॥ मन रे साची खसम रजाइ ॥ जिनि
 तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ ॥ तनु मनु
 समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ ॥ हरि नामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ ॥ २ ॥ अरध सरीरु कटाईऐ
 सिरि करवतु धराइ ॥ तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ ॥ हरि नामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥ ३
 ॥ कँचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ॥ भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ॥ राम नामि मनु बेधिआ
 गुरि दीआ सचु दानु ॥ ४ ॥ मनहठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ॥ केते बंधन जीअ के गुरुमुखि मोख दुआर ॥ सचहु
 औरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥ ५ ॥ सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ॥ इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु
 लोइ ॥ करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मैटै कोइ ॥ ६ ॥ साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुरु भाइ ॥ अकथ कथा
 वीचारीऐ जे सतिगुरु माहि समाइ ॥ पी अँमितु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ॥ ७ ॥ घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु
 सबदि सुभाइ ॥ विरले कउ सोझी पई गुरुमुखि मनु समझाइ ॥ नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥ ८ ॥ १४ ॥
 सिरीरागु महला १ ॥ चिते दिसहि धउलहर बगे बँक दुआर ॥ करि मन खुसी उसारिआ दूजै हेति पिआरि ॥ अँदरु खाली
 प्रेम बिनु ढहि ढेरी तनु छारु ॥ १ ॥ भाई रे तनु धनु साथि न होइ ॥ राम नामु धनु निरमलो गुरु दाति करे प्रभ सोइ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ राम नामु धनु निरमलो जे देवै देवणहारु ॥ आगै पूछ न होवई जिंसु बेली गुरु करतारु ॥ आपि छडाए छुटीऐ

आपे बखसणहारु ॥ २ ॥ मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत सँजोगु ॥ नारी देखि विगासीअहिं नाले हरखु सु सोगु ॥
 गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरि रसु भोगु ॥ ३ ॥ चितु चलै वितु जावणो साकत डोलिं डोलाइ ॥ बाहरि ढँढिं
 विगुचीरे घर महि वसतु सुथाइ ॥ मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै पाइ ॥ ४ ॥ साकत निरगुणिआरिआ आपणा
 मूलु पछाणु ॥ रक्तु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि पिराणु ॥ पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥ ५ ॥ बहुता
 जीवणु मँगीरे मुआ न लोडै कोइ ॥ सुख जीवणु तिसु आखीरे जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥ नाम विहूणे किआ गणी
 जिसु हरि गुर दरसु न होइ ॥ ६ ॥ जिउ सपनै निसि भुलीरे जब लगि निद्रा होइ ॥ इउ सरपनि कै वसि जीअडा अंतरि
 हउमै दोइ ॥ गुरमति होइ वीचारीरे सुपना इहु जगु लोइ ॥ ७ ॥ अगनि मरै जलु पाईरे जिउ बारिक दूथै माइ ॥ बिनु जल
 कमल सु ना थीरे बिनु जल मीनु मराइ ॥ नानक गुरमुखि हरि रसि मिलै जीवा हरि गुण गाइ ॥ ८ ॥ १५ ॥ सिरीरागु
 महला १ ॥ डूंगरु देखिं डरावणो पेईअडै डरीआसु ॥ ऊचउ परबतु गाखडो ना पउडीं तितु तासु ॥ गुरमुखि अंतरि
 जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥ १ ॥ भाईरे भवजलु बिखमु डरांउ ॥ पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरि नाउ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ चला चला जे करी जाणा चलणहारु ॥ जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ॥ भी सचा सालाहणा
 सचै थानि पिआरु ॥ २ ॥ दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ॥ हसती घोडे पाखरे लसकर लख अपार ॥ किस ही
 नालिं न चलिआ खपि खपि मुर असार ॥ ३ ॥ सुइना रुपा सँचीरे मालु जालु जँजालु ॥ सभ जग महि दोही फेरीरे बिनु
 नावै सिरि कालु ॥ पिँडु पडै जिउ खेलसी बदफैली किआ हालु ॥ ४ ॥ पुता देखिं विगसीरे नारी सेज भतार ॥ चोआ
 चँदनु लाईरे कापडु रूपु सीगारु ॥ खेहू खेहू रलाईरे छोडि चलै घर बारु ॥ ५ ॥ महर मलूक कहाईरे राजा राउ कि खानु
 ॥ चउधरी राउ सदाईरे जलिं बलीरे अभिमान ॥ मनमुखि नामु विसारिआ जिउ डवि दधा कानु ॥ ६ ॥

हउमै करिं करिं जाइसी जो आइआ जग माहिं ॥ सभु जगु काजल कोठडी तनु मनु देह सुआहिं ॥ गुरिं राखे से निरमले
सबदि निवारी भाहिं ॥ ७ ॥ नानक तरीरे सचि नामि सिरिं साहा पातिसाहु ॥ मै हरिं नामु न वीसरै हरिं नामु रतनु वेसाहु
॥ मनमुख भउजलिं पचि मूए गुरमुखिं तरे अथाहु ॥ ८ ॥ १६ ॥ सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ मुकामु करिं घरिं बैसणा
नित चलणै की धोख ॥ मुकामु ता परु जाणीरे जा रहै निहचलु लोक ॥ १ ॥ दुनीआ कैसि मुकामे ॥ करिं सिदकु करणी
खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी त आसणु करिं बहै मुला बहै मुकामि ॥ पंडित वखाणहि पोथीआ सिध
बहहि देव सथानि ॥ २ ॥ सुर सिध गण गंधरब मुनि जन सेख पीर सलार ॥ दरिं कूच कूचा करिं गए अवरे भिं चलणहार
॥ ३ ॥ सुलतान खान मलूक उमरे गए करिं करिं कूचु ॥ घड़ी मुहति किं चलणा दिल समझु तूँ भिं पहूचु ॥ ४ ॥ सबदाह
माहिं वखाणीरे विरला त बूझै कोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जलिं थलिं महीअलिं सोइ ॥ ५ ॥ अलाहु अलखु अगंमु
कादरु करणहारु करीमु ॥ सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥ ६ ॥ मुकामु तिस नो आखीरे जिंसु सिसि न
होवी लेखु ॥ असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥ ७ ॥ दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥
मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥ ८ ॥ १७ ॥ महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥

सिरीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखिं क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ॥ आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ॥ हरि जीउ सचा
सची बाणी सबदि मिलावा होइ ॥ १ ॥ भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु
गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे हरिं जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाए ॥ जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखिं
सुणाए ॥ गुरमुखिं आपे दे वडिआई आपे सेव कराए ॥ २ ॥ देखिं कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ

नालि न जाई ॥ सतिगुरु सेव गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ॥ प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अँते होइ सखाई ॥ ३ ॥
॥ पेईअडै जगजीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ॥ बिनु सतगुरि को मगु न जाणै अँधे ठउर न काई ॥ हरि सुखदाता मनि
नही वसिआ अँति गइआ पछुताई ॥ ४ ॥ पेईअडै जगजीवनु दाता गुरुमति मँनि वसाइआ ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु
राती हउमै मोहु चुकाइआ ॥ जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ॥ ५ ॥ आपे नदरि करे भाउ लाए गुर सबदी
बीचारि ॥ सतिगुरु सेविए सहजु ऊपजै हउमै तिसना मारि ॥ हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उर धारि ॥ ६ ॥
प्रभ मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ॥ नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु सभु जाइ । सतिगुरि सबदु
सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥ ७ ॥ आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥ हरि जीउ भगति वछलु
सुखदाता करि किरपा मँनि वसाई ॥ नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरुमुखि दे वडिआई ॥ ८ ॥ १ ॥ १८ ॥
सिरीशगु महला ३ ॥ हउमै करम कमावदे जम डँडु लगै तिन आइ ॥ जि सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ॥ १
॥ मन रे गुरुमुखि नामु धिआइ ॥ धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरुमति नामि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विणु सतिगुर
परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ॥ सपुनै सुखु न पावई दुख महि सवै समाइ ॥ २ ॥ जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीए
किरतु न मेटिआ जाइ ॥ हरि का भाणा भगती मँनिआ से भगत पर दरि थाइ ॥ ३ ॥ गुरु सबदु दिडावै रँग सिउ बिनु
किरपा लइआ ना जाइ ॥ जे सउ अँमितु नीरीरे भी बिखु फलु लागै धाइ ॥ ४ ॥ से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि
पिआरु ॥ सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥ ५ ॥ मनहठि कितै उपाइ न छुटीए सिमिति सासत्र
सोधहु जाइ ॥ मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ॥ ६ ॥ हरि का नामु निधानु है जिसु अँतु न पारावारु ॥
गुरुमुखि सेई सोहदे जिन किरपा करे करतारु ॥ ७ ॥ नानक दाता एकु है दूजा अउरु न कोइ ॥ गुर परसादी पाईरे

करमि परापति होइ ॥ ८ ॥ २ ॥ १९ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ पँखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ ॥ हरि रसु पीवै
 सहजि रहै उडै न आवै जाइ ॥ निज घरि वासा पाइआ हरि हरि नामि समाइ ॥ १ ॥ मन रे गुर की कार कमाइ ॥ गुर कै
 भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि हरि नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँखी बिरख सुहावड़े ऊडहि चहु दिसि जाहि ॥ जेता ऊडहि
 दुख घणे नित दाइहि तै बिललाहि ॥ बिनु गुर महलु न जापई ना अँमित फल पाहि ॥ २ ॥ गुरमुखि ब्रहमु हरीआवला
 साचै सहजि सुभाइ ॥ साखा तीनि निवारीआ एक सबदि लिव लाइ ॥ अँमित फलु हरि एकु है आपे देइ खवाइ ॥ ३ ॥
 मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिँना छाउ ॥ तिँना पासि न बैसीरे ओना घरु ना गिराउ ॥ कटीअहि तै नित जालीअहि
 ओना सबद न नाउ ॥ ४ ॥ हुकमे करम कमावणे पइरे किरति फिराउ ॥ हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ॥
 हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ ॥ ५ ॥ हुकमु न जाणहि बपुड़े भूले फिरहि गवार ॥ मनहठि करम कमावदे नित
 नित होहि खुआरु ॥ अँतरि सांति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥ ६ ॥ गुरमुखीआ मुह सोहणे गुर कै हेति पिआरि ॥
 सची भगती सचि रते दरि सचै सचिआर ॥ आए से परवाणु है सभ कुल का करहि उधारु ॥ ७ ॥ सभ नदरी करम कमावदे
 नदरी बाहरि न कोइ ॥ जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ॥ नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ ॥ ८ ॥ ३
 ॥ २० ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गुरमुखि नामु धिआईरे मनमुखि बूझ न पाइ ॥ गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ
 मनि आइ ॥ सहजे ही सुखु पाईरे सहजे रहे समाइ ॥ १ ॥ भाई रे दासनि दासा होइ ॥ गुर की सेवा गुर भगति है विरला
 पाए कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सदा पिरु निहचलु पाईरे ना ओहु मरै न जाइ
 ॥ सबदि मिली ना वीछुडै पिर कै अँकि समाइ ॥ २ ॥ हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाईआ न जाइ ॥ पाठु पडै ना
 बूझई भेखी भरमि भुलाइ ॥ गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ ॥ ३ ॥ माइआ मोहु चुकाइआ गुरमती

सहजि सुभाइ ॥ बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाइ ॥ सबदे नामु धिआईए सबदे सचि समाइ ॥ ४ ॥
 माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ॥ तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ॥ बिनु गुर मुकति न पाईए
 ना दुबुधा माइआ जाइ ॥ ५ ॥ माइआ किस नो आखीए किआ माइआ करम कमाइ ॥ दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै
 करम कमाइ ॥ बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहु हउमै जाइ ॥ ६ ॥ बिनु प्रीती भगति न होवई बिनु सबदै थाइ न पाइ
 ॥ सबदे हउमै मारीए माइआ का भ्रमु जाइ ॥ नामु पदारथ पाईए गुरमुखि सहजि सुभाइ ॥ ७ ॥ बिनु गुर गुण न जापनी
 बिनु गुण भगति न होइ ॥ भगति वछलु हरि मनि वसिआ सहजि मिलिआ प्रभु सोइ ॥ नानक सबदे हरि सालाहीए करमि
 प्रापति होइ ॥ ८ ॥ ४ ॥ २१ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥ मनमुखि करम
 करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥ गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥ १ ॥ मनरे नामु जपहु
 सुखु होइ ॥ गुरु पूरा सालाहीए सहजि मिलै प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमु गइआ भउ भागिआ हरि चरणी चितु लाइ
 ॥ गुरमुखि सबदु कमाईए हरि वसै मनि आइ ॥ घरि महलि सचि समाईए जमकालु न सकै खाइ ॥ २ ॥ नामा छीबा
 कबीर जोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥ ब्रहम के बेते सबदु पछानहि हउमै जाति गवाई ॥ सुरि नर तिन की बाणी गावहि
 कोइ न मेटै भाई ॥ ३ ॥ दैत पुतु करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै ॥ सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ
 अनदिनु नामु वखाणै ॥ एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥ ४ ॥ खटु दरसन जोगी सँनिआसी बिनु गुर
 भरमि भुलाए ॥ सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मँनि वसाए ॥ सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु
 रहाए ॥ ५ ॥ पँडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न
 पाए ॥ जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुरु मेलि मिलार ॥ ६ ॥ सतसंगति महि

नामु हरि उपजै जा सतिगुरु मिलै सुभाए ॥ मनु तनु अरपी आपु गवाई चला सतिगुर भाए ॥ सद बलिहारी गुर अपुने विटहु
जि हरि सेती चितु लाए ॥ ७ ॥ सो ब्राहमणु ब्रह्म जो बिंदै हरि सेती रंगि राता ॥ प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि
गुरमुखि विरलै जाता ॥ नानक नामु मिलै वडिआई गुर कै सबदि पछाता ॥ ८ ॥ ७ ॥ २२ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सहजै
नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाए ॥ गुर भेटे सहजु पाइआ
आपणी किरपा करे रजाइ ॥ १ ॥ भाई रे गुर बिनु सहजु न होइ ॥ सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइआ सचु सोइ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै कथनी बादि ॥ सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ॥ सहजै ही ते
सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि ॥ २ ॥ सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ॥ सहजे ही गुण ऊचरै
भगति करे किव लाइ ॥ सबदै ही हरि मनि वसै रसना हरि सरु खाइ ॥ ३ ॥ सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइ ॥
सहजे हरि नामु मनि वसिआ सची कार कमाइ ॥ से वडभागी जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ ॥ ४ ॥ माइआ विचि सहजु न
ऊपजै माइआ दूजै भाइ ॥ मनमुख करम कमावणे हउमै जलै जलाइ ॥ जंमणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइ ॥ ५ ॥
त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ ॥ पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुँढहु घुथा जाइ ॥ चउथे पद महि
सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ॥ ६ ॥ निरगुण नामु निधानु है सहजे सोइरी होइ ॥ गुणवंती सालाहिआ सचे सची सोई ॥
भुलिआ सहजि मिलाइसी सबदि मिलावा होइ ॥ ७ ॥ बिनु सहजै सभु अंधु है माइआ मोहु गुबारु ॥ सहजे ही सोइरी पई
सचै सबदि अपारि ॥ आपे बखसि मिलाइअनु पूरे गुर करतारि ॥ ८ ॥ सहजे अदिसटु पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु
॥ सभना जीआ का इकु दाता जोती जोति मिलावणहारु ॥ पूरै सबदि सलाहीऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥ ९ ॥
गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु ॥ अनदिनु लाहा हरि नामु लैनि अखुट भरे भंडार ॥ नानक तोटि न आवई

दीए देवणहारि ॥ १० ॥ ६ ॥ २३ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै जनम मरण दुखु जाइ ॥ पूरै
 सबदि सभ सोझी होई हरि नामै रहै समाइ ॥ १ ॥ मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै
 मनि आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा ॥ गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि
 भवजल तरणा ॥ २ ॥ वडै भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुजाई ॥ आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई
 ॥ ३ ॥ इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बाँधि भवाइआ ॥ लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु गवाइआ
 ॥ ४ ॥ भगता मनि आनँदु है सचै सबदि रँगि राते ॥ अनदिनु गुण गावहि सद निरमल सहजे नामि समाते ॥ ५ ॥
 गुरमुखि अँमित बाणी बोलहि सभ आतमरामु पछाणी ॥ एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ ६ ॥ सचा
 साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ सदा रँगि राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ॥ ७ ॥ आपे करे कराए आपे
 इकना सुतिआ देइ जगाइ ॥ आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ॥ ८ ॥ ७ ॥ २४ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥
 सतिगुर सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥ मनि आनँदु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर गँभीरु ॥ सची संगति
 बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥ १ ॥ मन रे सतिगुरु सेवि निसँगु ॥ सतिगुरु सेविऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतँगु ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥ जिनी हउमै मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ मनमुख सचु
 न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ॥ २ ॥ सचु खाणा सचु पैणणा सचे ही विचि वासु ॥ सदा सचा सालाहणा सचै सबदि
 निवासु ॥ सभु आतमरामु पछाणिआ गुरमती निज घरि वासु ॥ ३ ॥ सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ॥
 सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ ॥ जिनी सचु विसारिआ से दुखीए चले रोइ ॥ ४ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ से
 कितु आए संसारि ॥ जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥ बिरथा जनमु गवाइआ

मरि जँमहि वारो वार ॥ ५ ॥ एहु जगु जलता देखि कै भजि पए सतिगुर सरणा ॥ सतिगुर सचु दिडाइआ सदा सचि सँजमि
 रहणा ॥ सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥ ६ ॥ लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥
 पडि पडि पँडित मोनी थके दुजै भाइ पति खोई ॥ सतिगुर सबदु सुणाइआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥ ७ ॥ जो सचै लाए से
 सचि लगे नित सची कार करँनि ॥ तिना निज घरि वासा पाइआ सचै महलि रहँनि ॥ नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि
 रचँनि ॥ ८ ॥ १७ ॥ ८ ॥ २५ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ ॥ लागू होए दुसमना
 साक भि भजि खले ॥ सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न तती वाउ ॥ १ ॥ साहिबु
 निताणिआ का ताणु ॥ आइ न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे को हिवै दुबला नँग भुख की पीर
 ॥ दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥ सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥ चिति आवै ओसु पारभ्रहमु ता
 निहचलु होवै राजु ॥ २ ॥ जा कउ चिँता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥ गिसति कुटँबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥
 गउणु करे चहु कुँट का घड़ी न बैसणु सोइ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होइ ॥ ३ ॥ कामि करोधि मोहि
 वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ॥ चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर सँघारु ॥ पोथी गीत कवित किछु कदे न
 करनि धरिआ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ ॥ ४ ॥ सासत सिँम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे
 ॥ तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥ खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ॥ रँगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके
 जाइ ॥ ५ ॥ राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार ॥ बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार ॥ रँग तमासे बहु बिधी
 चाइ लागि रहिआ ॥ चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जुनि गइआ ॥ ६ ॥ बहुतु धनादि अचारवँतु सोभा निरमल
 रीति ॥ मात पिता सुत भाईआ साजन सँगि परीति ॥ लसकर तरकसबँद बँद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चिति न

आइओ पारब्रह्ममु ता खडि रसातलि दीत ॥ ७ ॥ काइआ रोगु न छिट्टु किछु ना किछु काड़ा सोगु ॥ मिरतु न आवी चिति
 तिसु अहिनि सिसि भोगै भोगु ॥ सभ किछु कीतोनु आपणा जीइ न सँक धरिआ ॥ चिति न आइओ पारब्रह्ममु जमकँकर वसि
 परिआ ॥ ८ ॥ किरपा करे जिसु पारब्रह्ममु होवै साधू सँगु ॥ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रँगु ॥ दुहा सिरिआ
 का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ ॥ सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ ॥ ९ ॥ १ ॥ २६ ॥ सिरीरागु महला ५
 घरु ५ ॥ जानउ नही भावै कवन बाता ॥ मन खोजि मारगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धिआनी धिआनु लावहि ॥ गिआनी
 गिआनु कमावहि ॥ प्रभु किनही जाता ॥ १ ॥ भगउती रहत जुगता ॥ जोगी कहत मुकता ॥ तपसी तपहि राता ॥
 २ ॥ मोनी मोनिधारी ॥ सनिआसी ब्रह्मचारी ॥ उदासी उदासि राता ॥ ३ ॥ भगति नवै परकारा ॥ पँडितु वेदु
 पुकारा ॥ गिरसती गिरसति धरमाता ॥ ४ ॥ इक सबदी बहुरूपि अवधूता ॥ कापड़ी कउते जागूता ॥ इकि तीरथि
 नाता ॥ ५ ॥ निरहार वरती आपरसा ॥ इकि लूकि न देवहि दरसा ॥ इकि मन ही गिआता ॥ ६ ॥ घाटि न किन ही
 कहाइआ ॥ सभ करते है पाइआ ॥ जिसु मेले सो भगता ॥ ७ ॥ सगल उकति उपावा ॥ तिआगी सरनि पावा ॥
 नानकु गुर चरणि पराता ॥ ८ ॥ २ ॥ २७ ॥

ॐ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥

जोगी अँदरि जोगीआ ॥ तूँ भोगी अँदरि भोगीआ ॥ तेरा अँतु न पाइआ सुरगि मछि पइआलि जीउ ॥ १ ॥ हउ वारी
 हउ वारणै कुरबाणु तेरे नाव नो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु सँसारु उपाइआ ॥ सिरे सिरि धँधे लाइआ ॥ वेखहि कीता
 आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥ २ ॥ परगटि पाहारै जापदा ॥ सभु नावै नो परतापदा ॥ सतिगुर बाझु न
 पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥ जितु मिलिऐ परम

गति पाईये ॥ सुरि नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥ ४ ॥ सतसंगति कैसी जाणीये ॥ जिथै एको नामु
 वखाणीये ॥ एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥ ५ ॥ इहु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ आपहु तुधु
 खुआइआ ॥ परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥ ६ ॥ दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥ खसमहु घुथीआ
 विरहि निमाणीआ ॥ मैले वेस तिना कामणी दुखी रैणे विहाइ जीउ ॥ ७ ॥ सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥ पूरबि
 लिखिआ फलु पाइआ ॥ नदरि करे कै आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥ ८ ॥ हुकमु जिना नि मनाइआ ॥ तिन अंतरि सबदु
 वासाइआ ॥ सहीआ से सोहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥ ९ ॥ जिना भाणे का रसु आइआ ॥ तिन विचहु भरमु
 चुकाइआ ॥ नानक सतिगुरु ऐसा जाणीये जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥ १० ॥ सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइआ ॥ जिनि
 विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥ दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइ जीउ ॥ ११ ॥ अँमित तेरी बाणीआ ॥ तेरीआ
 भगता रिदै समाणीआ ॥ सुख सेवा अँदरि रखिऐ आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥ १२ ॥ सतिगुरु मिलिआ जाणीये
 ॥ जितु मिलिऐ नामु वखाणीये ॥ सतिगुर बाझु न पाइउ सभ थकी करम कमाइ जीउ ॥ १३ ॥ हउ सतिगुर विटहु घुमाइआ
 ॥ जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥ नदरि करे जे आपणी आपे लए रलाइ जीउ ॥ १४ ॥ तूँ सभना माहि समाइआ ॥ तिनि
 करतै आपु लुकाइआ ॥ नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥ १५ ॥ आपे खसमि निवाजिआ
 ॥ जीउ पिँडु दे साजिआ ॥ आपणे सेवक की पैज रखीआ दुइ कर मसतकि धारि जीउ ॥ १६ ॥ सभि सँजम रहे सिआणपा
 ॥ मेरा प्रभु सभु किछु जाणदा ॥ प्रगट प्रतापु वरताइओ सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥ १७ ॥ मेरे गुण अवगन न बीचारिआ
 ॥ प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥ कँठि लाइ कै रखिओनु लगै न तती वाउ जीउ ॥ १८ ॥ मै मनि तनि प्रभू धिआइआ ॥
 जीइ इछिअड़ा फलु पाइआ ॥ साह पातिसाह सिरि खसमु तूँ जपि नानक जीवै नाउ जीउ ॥ १९ ॥ तुधु आपे आपु

उपाइआ ॥ दूजा खेलु करि दिखलाइआ ॥ सभु सचो सचु वरतदा जिसु भावै तिसै बुझाइ जीउ ॥ २० ॥ गुर परसादी
 पाइआ ॥ तिथै माइआ मोहु चुकाइआ ॥ किरपा करि कै आपणी आपे लए समाइ जीउ ॥ २१ ॥ गोपी नै गोआलीआ ॥
 तुधु आपे गोइ उठालीआ ॥ हुकमी भांडे साजिआ तूँ आपे भँनि सवारि जीउ ॥ २२ ॥ जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥
 तिनी दूजा भाउ चुकाइआ ॥ निरमल जोति तिन प्राणीआ ओइ चले जनमु सवारि जीउ ॥ २३ ॥ तेरीआ सदा सदा
 चँगिआईआ ॥ मै राति दिहै वडिआईआं ॥ अणमँगिआ दानु देवणा कहु नानक सचु समालि जीउ ॥ २४ ॥ १ ॥
 सिरीरागु महला ५ ॥ पै पाइ मनाई सोइ जीउ ॥ सतिगुर पुरखि मिलाइआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ जीउ ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ गोसाई मिहँडा इठड़ा ॥ अँम अबे थावहु मिठड़ा ॥ भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइ जीउ ॥ १ ॥ तेरै हुकमे
 सावणु आइआ ॥ मै सत का हलु जोआइआ ॥ नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ ॥ २ ॥ हउ गुर
 मिलि इकु पछाणदा ॥ दुया कागलु चिति न जाणदा ॥ हरि इकतै करै लाइओनु जिउ भावै तिवै निबाहि जीउ ॥ ३ ॥ तुसी
 भोगिहु भुँचहु भाईहो ॥ गुरि दीबाणि कवाइ पैनाईओ ॥ हउ होआ माहरु पिँड दा बँनि आदे पँजि सरीक जीउ ॥ ४ ॥ हउ
 आइआ साम्है तिहँडीआ ॥ पँजि किरसाण मुजेरे मिहडिआ ॥ कँनु कोई कढि न हँघई नानक वुठा घुघि गिराउ जीउ ॥ ५ ॥
 हउ वारी घुँमा जावदा ॥ इक साहा तुधु धिआइदा ॥ उजडु थेहु वसाइओ हउ तुधु विटहु कुरबाणु जीउ ॥ ६ ॥ हरि इठै नित
 धिआइदा ॥ मनि चिँदी सो फलु पाइदा ॥ सभे काज सवारिअनु लाहीअनु मन की भुख जीउ ॥ ७ ॥ मै छडिआ सभो
 धँधड़ा ॥ गोसाई सेवी सचड़ा ॥ नउ निधि नामु निधानु हरि मै पलै बधा छिकि जीउ ॥ ८ ॥ मै सुखी हूँ सुखु पाइआ ॥
 गुरि अँतरि सबदु वसाइआ ॥ सतिगुर पुरखि विखालिआ मसतकि धरि कै हथु जीउ ॥ ९ ॥ मै बधी सचु धरमसाल है ॥
 गुरसिखा लहदा भालि कै ॥ पैर धोवा परवा फेरदा तिसु निवि निवि लगा पाइ जीउ ॥ १० ॥ सुणि गला गुर पहि

आइआ ॥ नामु दानु इसनानु दिडाइआ ॥ सभु मुकतु होआ सैसारडा नानक सची बेड़ी चाड़ि जीउ ॥ ११ ॥ सभ
 खिसटि सेवे दिनु राति जीउ ॥ दे कँनु सुणहु अरदासि जीउ ॥ ठोकि वजाइ सभ डिठीआ तुसि आपे लइअनु छडाइ जीउ
 ॥ १२ ॥ हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥ पै कोइ न किसै रजाणदा ॥ सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ
 ॥ १३ ॥ झिँमि झिँमि अँमितु वरसदा ॥ बोलाइआ बोली खसम दा ॥ बहु माणु कीआ तुधु उपरे तूँ आपे पाइहि थाइ
 जीउ ॥ १४ ॥ तेरिआ भगता भुख सद तेरीआ ॥ हरि लोचा पूरन मेरीआ ॥ देहु दरसु सुखदातिआ मै गलि विचि लैहु
 मिलाइ जीउ ॥ १५ ॥ तुधु जेवडु अवरु न भालिआ ॥ तूँ दीप लोअ पइआलिआ ॥ तूँ थानि थनँतरि रवि रहिआ नानक
 भगता सचु अधारु जीउ ॥ १६ ॥ हउ गोसाई दा पहिलवानडा ॥ मै गुर मिलि उच दुमालडा ॥ सभ होई छिँझ इकठीआ
 दुय बैठा वेखै आपि जीउ ॥ १७ ॥ वात वजनि टमँक भेरीआ ॥ मल लथे लैदे फेरीआ ॥ निहते पँजि जुआन मै गुर
 थापी दिती कँडि जीउ ॥ १८ ॥ सभ इकठे होइ आइआ ॥ घरि जासनि वाट वटाइआ ॥ गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख
 चले मूलु गवाइ जीउ ॥ १९ ॥ तूँ वरना चिहना बाहरा हरि दिसहि हाजरु जाहरा ॥ सुणि सुणि तुझै धिआइदे तेरे भगत
 रते गुणतासु जीउ ॥ २० ॥ मै जुगि जुगि दयै सेवड़ी ॥ गुरि कटी मिहडी जेवड़ी ॥ हउ बाहुडिँ छिँझ न नचऊ नानक
 अउसरु लथा भालि जीउ ॥ २१ ॥ २ ॥ २९ ॥

१४४ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु महला १ पहरे घरु १ ॥

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥ उरध तपु अँतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती
 अरदासि ॥ खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥ ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुडिँ जासी
 नागा ॥ जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअडै पासि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै

हुकमि पइआ गरभासि ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥ हथो हथि नचाईरे
 वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि जानु ॥ हथो हथि नचाईरे प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥ चेति अचेत मूढ़ मन मेरे अँति
 नही कछु तेरा ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥ कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ
 धिआनु ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा अन जोबन सिउ चितु ॥ हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा
 बधा छुटहि जितु ॥ हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ सँगि माइआ ॥ धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु
 गवाइआ ॥ धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥ ३ ॥
 चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥ जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ
 भेतु ॥ भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ झूठा रुदनु होआ दोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥
 साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥ ४ ॥ १ ॥
 सिरीरागु महला १ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥ खीरु पीरे खेलैरे वणजारिआ मित्रा
 मात पिता सुत हेतु ॥ मात पिता सुत नेहु घनेरा माईआ मोहु सबाई ॥ सँजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई
 ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै
 वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥ अहिनि सिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अँधुले नामु न चिति ॥ राम नामु
 घट अँतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥ गिआनु धिआनु गुण सँजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥ तीरथ वरत सुचि
 सँजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥ नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै
 वणजारिआ मित्रा सरि हँस उलथड़े आइ ॥ जोबनु घटै जरुआ जिणै वणजारिआ मित्रा आव घटै दिनु

हुकमि पइआ गरभासि ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥ हथो हथि नचाईरे
 वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि जानु ॥ हथो हथि नचाईरे प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥ चेति अचेत मूड मन मेरे अँति
 नही कछु तेरा ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥ कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ
 धिआनु ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा अन जोबन सिउ चितु ॥ हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा
 बधा छुटहि जितु ॥ हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ सँगि माइआ ॥ धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु
 गवाइआ ॥ धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥ ३
 ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥ जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न
 मिलिआ भेतु ॥ भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ झूठा रुदनु होआ दोआलै खिन महि भइआ
 पराइआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥ ४ ॥
 १ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥ खीरु पीरे खेलाईरे वणजारिआ
 मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥ मात पिता सुत नेहु घनेरा माईआ मोहु सबाई ॥ सँजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार
 कराई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥ १ ॥ दूजै पहरै
 रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥ अहिनिशि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अँधुले नामु न चिति ॥
 राम नामु घट अँतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥ गिआनु धिआनु गुण सँजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥ तीरथ वरत
 सुचि सँजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥ नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै
 वणजारिआ मित्रा सरि हँस उलथडे आइ ॥ जोबनु घटै जरुआ जिणै वणजारिआ मित्रा आव घटै दिनु

माइआ झूठी अँति छोटि चलिआ पछुताई ॥ जिस नो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥ कहु नानक तीजै
 पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥ ३ ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥ करि सेवहु पूरा
 सतिगुरु वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥ हरि सेवहि खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु
 होवहु ॥ हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ॥ गुर सतिगुर सुआमी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि
 भगति सुखांदी ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलओ रैणि भगता दी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥
 पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धरि पाइता उदरै माहि ॥ दसी मासी मानसु कीआ वणजारिआ मित्रा करि मुहलति
 करम कमाहि ॥ मुहलति करि दीनी करम कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइआ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभु
 सँजोइआ ॥ करम सुकरमु कराए आपे इसु जँतै वसि किछु नाहि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइता उदरै माहि ॥
 १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइ ॥ बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता
 अहँमेइ ॥ बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पँथु करारा ॥ पूरा सतिगुरु कबहूँ न सेविआ सिरि ठाढे जम जँदारा ॥ धरम राइ
 जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइ ॥ कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैनि कै
 वणजारिआ मित्रा बिखु सँचै अँधु अगिआनु ॥ पुत्रि कलत्रि मोहि लपटिआ वणजारिआ मित्रा अँतरि लहरि लोभानु ॥
 अँतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न आवै ॥ साधसँगति सिउ सँगु न कीआ बहु जोनी दुखु पावै ॥ सिरजनहारु
 विसारिआ सुआमी इक निमख न लगो धिआनु ॥ कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु सँचै अँधु अगिआनु ॥ ३ ॥ चउथै
 पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा दिनु नेडै आइआ सोइ ॥ गुरमुखि नामु समालि तूँ वणजारिआ मित्रा तेरा दरगह बेली होइ
 ॥ गुरमुखि नामु समालि परानी अँते होइ सखाई ॥ इहु मोहु माइआ तेरै सँगि न चालै झूठी प्रीति लगाई ॥

सगली रैणि गुदरी अँधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेडै आइआ सोइ ॥ ४ ॥
 लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाण साथि ॥ इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा
 ओनी तकड़े पाए हाथ ॥ लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ॥ जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह
 सदा सुहेले ॥ करम धरती सरीरु जुग अँतरि जो बोवै सो खाति ॥ कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति
 ॥ ५ ॥ १ ॥ ४ ॥

सिरीरागु महला ४ वरु २ छँत वरि सतिगुरु प्रसादि ॥

मुँध इआणी पेईअडै किउ करि हरि दरसनु पिखै ॥ हरि हरि अपनी किरपा करे गुरुमुखि साहुरडै कँम सिखै ॥ साहुरडै कँम
 सिखै गुरुमुखि हरि हरि सदा धिआए ॥ सहीआ विचि फिरै सुहेली हरि दरगह बाह लुडाए ॥ लेखा धरमराइ की बाकी जपि
 हरि हरि नामु किरखै ॥ मुँध इआणी पेईअडै गुरुमुखि हरि दरसनु दिखै ॥ १ ॥ वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरुमुखे हरि
 पाइआ ॥ अगिआनु अँधेरा कटिआ गुरु गिआनु प्रचँडु बलाइआ ॥ बलिआ गुरु गिआनु अँधेरा बिनसिआ हरि रतनु
 पदारथु लाथा ॥ हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरुमति खाधा ॥ अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी ना कदे
 मरै न जाइआ ॥ वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरुमुखे हरि पाइआ ॥ २ ॥ हरि सति सते मेरे बाबुला हरि जन मिलि जँज
 सुहँदी ॥ पेवकडै हरि जपि सुहेली विचि साहुरडै खरी सोहँदी ॥ साहुरडै विचि खरी सोहँदी जिनि पेवकडै नामु समालिआ
 ॥ सभु सफलिओ जनमु तिना दा गुरुमुखि जिना मनु जिणि पासा ढालिआ ॥ हरि सँत जना मिलि कारजु सोहिआ वरु
 पाइआ पुरखु अनँदी ॥ हरि सति सति मेरे बाबोला हरि जन मिलि जँज सुहँदी ॥ ३ ॥ हरि प्रभु मेरे बाबुला

हरि देवहु दानु मै दाजो ॥ हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥ हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि
दानु दिवाइआ ॥ खँडि वरभँडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइआ ॥ होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूडु
अहँकारु कचु पाजो ॥ हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥ ४ ॥ हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल
वधँदी ॥ हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरु चलँदी ॥ जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरुमुखि
नामु धिआइआ ॥ हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चडै सवाइआ ॥ नानक सँत सँत हरि एको जपि हरि हरि
नामु सोहँदी ॥ हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि अन वेल वधँदी ॥ ५ ॥ १ ॥

शिरीरागु महला ५ छँत १३ सतिगुर प्रसादि ॥

मन पिआरिआ जीउ मित्रा गोबिंद नासु समाले ॥ मन पिआरिआ जी मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥ सँगि सहाई हरि नामु
धिआई बिरथा कोइ न जाए ॥ मन चिँदे सेई फल पावहि चरण कमल चितु लाए ॥ जलि थलि पूरि रहिआ बनवारी घटि
घटि नदरि निहाले ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम साधसँगि भ्रमु जाले ॥ १ ॥ मन पिआरिआ जी मित्रा हरि बिनु झूठु
पसारे ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा बिखु सागरु सँसारे ॥ चरण कमल करि बोहिथु करते सहसा दूरु न बिआपै ॥ गुरु
पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभ जापै ॥ आदि जुगादी सेवक सुआमी भगता नामु अधारे ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम
बिनु हरि झूठ पसारे ॥ २ ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि लदे खेप सवली ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि दरु
निहचलु मली ॥ हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाइआ ॥ तह जनम न मरणु न आवण जाणा सँसा दूरु
मिटाइआ ॥ चित्र गुपत का कागदु फारिआ जमदूता कछू न चली ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥
३ ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा करि सँता सँगि निवासो ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि नामु

जपत परगासो ॥ सिमरिं सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुँनीआ ॥ पुरबे कमाए खीरंग पाए हरि मिले चिरी विछुँनिआ ॥
 अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसुआसो ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम करि सँता सँगि निवासो ॥ ४ ॥ मन
 पिआरिआ जीउ मित्रा हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ॥ हरि पी आघाने
 अँमित बाने सब सुखा मन वुठे ॥ श्रीधर पाए मँगल गाए इछ पुँनी सतिगुर तुठे ॥ लडि लीने लाए नउ निधि पाए नाउ
 सरबसु ठाकुरि दीना ॥ नानक सिख सँत समझाई हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥ ५ ॥ १ ॥ २ ॥

सिरीरागु के छँत महला ५ १३ सतिगुर प्रसादि ॥ डखणा ॥

हठ मझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार ॥ सँत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार ॥ १ ॥ छँतु ॥ चरन कमल सिउ प्रीति रीति
 सँतन मनि आवए जीउ ॥ दुतीआ भाउ बिपरीति अनीति दासा नह भावए जीउ ॥ दासा नह भावए बिनु दरसावए इक खिनु
 धीरजु किउ करै ॥ नाम बिहूना तनु मनु हीना जल बिनु मछुली जिउ मरै ॥ मिलु मेरे पिआरे प्राण अधारे गुण साधसँगि
 मिलि गावए ॥ नानक के सुआमी धारि अनुग्रहु मनि तनि अँकि समावए ॥ १ ॥ डखणा ॥ सोहँदड़ो हभ ठाड़ कोइ न दिसै
 डूजड़ो ॥ खुल्हड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते ॥ १ ॥ छँतु ॥ तेरे बचन अनूप अपार सँतन आधार बाणी बीचारीए जीउ
 ॥ सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहु बिसारीए जीउ ॥ किउ मनहु बेसारीए निमख नही टारीए गुणवँत प्राण
 हमारे ॥ मन बाँछत फल देत है सुआमी जीअ की बिरथा सारे ॥ अनाथ के नाथे सब कै साथे जपि जूरे जनमु न हारीए ॥
 नानक की बेनँती प्रभ पहि क्रिपा करि भवजलु तारीए ॥ २ ॥ डखणा ॥ धूडी मजनु साध खे साई थीए क्रिपाल ॥ लधे हभे
 थोकड़े नानक हरि धनु माल ॥ १ ॥ छँतु ॥ सुँदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लागि जीवते जीउ ॥

मनि तने गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अँमितु पीवते जीउ ॥ अँमितु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै बनू फीका जानिआ ॥ भए किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसँगति निधि मानिआ ॥ सरबसो सूख आनँद घन पिआरे हरि रतनु मन अँतरि सीवते ॥ इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि नानक जीवते ॥ ३ ॥ डखणा ॥ जो तउ कीने आपणे तिना कूँ मिलिओहि ॥ आपे ही आपि मोहिओहु जसु नानक आपि सुणिओहि ॥ १ ॥ छँतु ॥ प्रेम ठगउरी पाइ रीडाइ गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ॥ सँतन कै परसादि अगाधि कँठे लगि सोहिआ जीउ ॥ हरि कँठे लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लखण करि वसि भए ॥ मनि सरब सुख वुठे गोविंद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गए ॥ सरबी मँगलो गाइआ इछ पुजाइआ बहुडि न माइआ होहिआ ॥ करु गहि लीने नानक प्रभ पिआरे सँसारु सागरु नही पोहिआ ॥ ४ ॥ डखणा ॥ साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥ जिना भाग मथाहि से नानक हरि रँगु माणदो ॥ १ ॥ छँतु ॥ कहते पवित्र सुणते सभि धँनु लिखतीं, कुलु तारिआ जीउ ॥ जिन कउ साधू सँगु नाम हरि रँगु तिनी ब्रहमु बीचारिआ जीउ ॥ ब्रहमु बीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन किरपा प्रभि करी ॥ करु गहि लीने हरि जसो दीने जोनि ना धावै नह मरी ॥ सतिगुर दइआल किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥ कथनु न जाइ अकथु सुआमी सदकै जाइ नानकु वारिआ ॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

सिरीरागु महला ४ वणजारा १४ सतिनामु गुर प्रसादि ॥

हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरीआ सभु कोइ जीउ ॥ हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइ ॥ सो हरि सदा धिआईरे तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि अँति सरवाई होइ ॥ १ ॥ मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ हरि गुर सरणाई पाईरे वणजारिआ मित्रा वडभाणि परापति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सँत जना विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥ विचि हउमै करम कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ ॥ पिता जाति ता होईऐ
 गुरु तुठा करे पसाउ ॥ वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिशि लगा भाउ ॥ जन नानकि ब्रह्मु पछाणिआ हरि कीरति करम
 कमाउ ॥ २ ॥ मनि हरि हरि लगा चाउ ॥ गुरि पूरै नामु द्विडाइआ हरि मिलिआ हरि प्रभ नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु
 जोबनि सासु है तब लगु नामु धिआइ ॥ चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अँते लए छडाइ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि
 मनि वुठा आइ ॥ जिनी हरि हरि नामु न चेतिओ से अँति गए पछुताइ ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ जन नानक नामु
 धिआइ ॥ ३ ॥ मन हरि हरि प्रीति लगाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ गुरु सबदी पारि लघाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपे आपु
 उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ॥ हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ ॥ गुरुमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ ॥
 हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरुमते ॥ जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठडा हे ॥ ४ ॥ मनि हरि
 हरि जपनु करे ॥ हरि गुरु सरणार्ई भजि पउ जिँदू सभ किलविख दुख परहरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ
 पाईऐ कितु भति ॥ गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ॥ मै धर नामु अधारु है हरि नामै ते गति मति ॥ मै हरि
 हरि नामु विसाहु है हरि नामे ही जति पति ॥ जन नानक नामु धिआइआ रँगि रतडा हरि रँगि रति ॥ ५ ॥ हरि धिआवहु हरि
 प्रभु सति ॥ गुरु बचनी हरि प्रभु जाणिआ सभ हरि प्रभु ते उतपति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले
 गुरु पासि ॥ सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ॥ धनु धनु वणजु वापारीआ जिन वखरु लदिअडा हरि
 रासि ॥ गुरुमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि ॥ जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि ॥ ६
 ॥ हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥ मनि प्रीति लगी तिना गुरुमुखा हरि नामु जिना रहरासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ १ ॥

१३ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु की वार महला ४ सलोका नालि ॥

सलोक मः ३ ॥ शगा विचि श्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ॥ सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ॥ रतनु अमोलकु पाइआ गुर का सबदु बीचारु ॥ जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ॥ नानक सचै सतिगुरि सेविरे सदा सचु वापारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ होरु बिरहा सभ धातु है जब लगु साहिब प्रीति न होइ ॥ इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ ॥ सह देखे बिनु प्रीति न ऊपजै अँधा किआ करेइ ॥ नानक जिनि अखी लीतीआ सोई सचा देइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥ हरि इकसै दा है अमरु इको हरि चिति धरि ॥ हरि तिसु बिनु कोई नाहि डरु भ्रमु भउ दूरि करि ॥ हरि तिसै नो सालाहि जि तुधु रखै बाहरि घरि ॥ हरि जिस नो होइ दइआलु सो हरि जपि भउ बिखमु तरि ॥ १ ॥ सलोक मः १ ॥ दाती साहिब सँदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ इक जागँदे ना लहँनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥ १ ॥ मः १ ॥ सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकां ॥ दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ आपे तुधु उपाइ कै आपि कारै लाई ॥ तूँ आपे वेखि विगसदा आपणी वडिआई ॥ हरि तुधहु बाहरि किछु नाही तूँ सचा साई ॥ तूँ आपे आपि वरतदा सभनी ही थाई ॥ हरि तिसै धिआवहु सँत जनहु जो लए छडाई ॥ २ ॥ सलोक मः १ ॥ फकड़ जाती फकड़ नाउ ॥ सभना जीआ इका छाउ ॥ आपहु जे को भला कहाए ॥ नानक ता परु जापै जा पति लेखै पाए ॥ १ ॥ मः २ ॥ जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीरे ॥ धिगु जीवण संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे धरती साजीरे चँदु सूरजु दुइ दीवे ॥ दस चारि हट तुधु साजिआ वापारु करीवे ॥ इकना नो हरि लाभु देइ जो गुरमुखि थीवे ॥ तिन जमकालु न विआपई जिन सचु अँमितु पीवे ॥ ओइ आपि छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभु जगतु छुटीवे ॥ ३ ॥ सलोक मः १ ॥

कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥ वखतु वीचारे सु बँदा होइ ॥ कुदरति है कीमति नहीं पाइ ॥ जा कीमति पाइ त कहीं न
 जाइ ॥ सरै सरीअति करहि बीचारु ॥ बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥ सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥ जिह धिरि
 देखा तिह धिरि मउजूदु ॥ मः ३ ॥ गुर सभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥ नानक सतिगुरु तां मिलै जा मनु रहै हदूरि ॥
 २ ॥ पउड़ी ॥ सपत दीप सपत सागरा नव खँड चारि वेद दस असट पुराणा ॥ हरि सभना विचि तूँ वरतदा हरि सभना
 भाणा ॥ सभिं तुझै धिआवहि जीअ जँत हरि सारगपाणा ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन हउ कुरबाणा ॥ तूँ आपे आपि
 वरतदा करि चोज विडाणा ॥ ४ ॥ सलोक मः ३ ॥ कलउ मसाजनी किआ सदाईऐ हिरदै ही लिखि लेहु ॥ सदा साहिब कै
 रँगि रहै कबहूँ न तूटसि नेहु ॥ कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ ॥ नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि
 छोडी सचै पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नदरी आवदा नालिं न चलई वेखहु को विउपाइ ॥ सतिगुरि सचु द्विडाइआ सचि रहहु
 लिव लाइ ॥ नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि अँदरि बाहरि इकु तूँ तूँ जाणहि भेतु ॥ जो कीचै
 सो हरि जाणदा मेरे मन हरि चेतु ॥ सो डरै जिं पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥ तूँ सचा आपि निआउ सचु ता डरीऐ केतु
 ॥ जिना नानक सचु पछाणिआ से सचि रलेतु ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥ कलम जलउ सणु मसवाणीऐ कागदु भी जलिं
 जाउ ॥ लिखण वाला जलिं बलउ जिनि लिखिआ दूजा भाउ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ
 ॥ १ ॥ मः ३ ॥ होरु कूडु पड़णा कूडु बोलणा माइआ नालिं पिआरु ॥ नानक विणु नावै को थिरु नहीं पड़ि पड़ि होइ
 खुआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि की वडिआई वडी है हरि कीरतनु हरि का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा निआउ है धरम का
 ॥ हरि की वडिआई वडी है जा फलु है जीअ का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ॥ हरि की
 वडिआई वडी है अपुछिआ दानु देवका ॥ ६ ॥ सलोक मः ३ ॥ हउ हउ करती सभ मुई सँपउ किसै न नालिं ॥ दूजै

भाइ दुखु पाइआ सभ जोही जमकालि ॥ नानक गुरुमुखि उबरे साचा नामु समालि ॥ १ ॥ मः १ ॥ गलीं, असी चंगीआ
 आचारी बुरीआह ॥ मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआहु ॥ रीसा करहि तिनाडीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥
 नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥ होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ॥ नानक जनमु सकारथा जे
 तिन कै सँगि मिलाह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तूँ आपे जलु मीना है आपे आपे ही आपि जालु ॥ तूँ आपे जालु वताइदा आपे विचि
 सेबालु ॥ तूँ आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि गुलालु ॥ तूँ आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ॥ हरि
 तुधहु बाहरि किछु नही गुर सबदी वेखि निहालु ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ हुकमु न जाणै बहुता रोवै ॥ अँदरि धोखा नीद न
 सोवै ॥ जो धन खसमै चलै रजाई ॥ दरि घरि सोभा महलि बुलाई ॥ नानक करमी इह मति पाई ॥ गुर परसादी सचि
 समाई ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुख नाम विहूणिआ रँगु कसुँभा देखि न भुलु ॥ इस का रँगु दिन थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ॥
 दूजै लगे पचि मुए मूरख अँध गवार ॥ बिसटा अँदरि कीट से पइ पचहि वारो वार ॥ नानक नाम रते से रँगुले गुर कै सहजि
 सुभाइ ॥ भगती रँगु न उतरै सहजे रहै समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु सँबाहिआ ॥ इकि वलु
 छलु करि कै खावदे मुहहु कूडु कुसतु तिनि ढाहिआ ॥ तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कँमि ओइ लाइआ ॥ इकना सचु
 बुझाइओनु तिना अतुट भँडार देवाइआ ॥ हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥
 पड़ि पड़ि पँडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ॥ दूजै भाइ हरि नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ जिनि जीउ
 पिँडु दिता तिसु कबहूँ न चेतै जो देंदा रिजकु सँबाहि ॥ जम का फाहा गलहु न कटीरे फिरि फिरि आवै जाइ ॥ मनमुखि
 किछु न सूझै अँधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखदाता नामु वसै मनि आइ ॥ सुखु माणहि सुखु
 पैणणा सुखे सुखि विहाइ ॥ नानक सो नाउ मनहु न विसारीरे जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरु

सेवि सुखु पाइआ सचु नामु गुणतासु ॥ गुरमती आपु पछाणिआ राम नाम परगासु ॥ सचो सचु कमावणा वडिआई वडे
 पासि ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे अरदासि ॥ सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ॥ जपु तपु सँजमु
 मनै माहि बिनु नावै धिगु जीवासु ॥ गुरमती नाउ पाईरे मनमुख मोहि विणासु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूँ नानकु तेरा दासु
 ॥ २ ॥ पउडी ॥ सभु को तेरा तूँ सभसु दा तूँ सभना रासि ॥ सभि तुधै पासहु मँगदे नीत करि अरदासि ॥ जिसु तूँ देहि
 तिसु सभु किछु मिलै इकना दूरि है पासि ॥ तुधु बाझहु थाउ को नाही जिसु पासहु मँगीरे मनि वेखहु को निरजासि ॥ सभि
 तुधै नो सालाहदे दरि गुरमुखा नो परगासि ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ पँडितु पडि पडि उचा कूकदा माइआ मोहि पिआरु
 ॥ अँतरि ब्रहमु न चीनई मनि मूरखु गावारु ॥ दूजै भाइ जगतु परबोधदा ना बूझै बीचारु ॥ बिरथा जनमु गवाइआ मरि
 जँमै वारो वार ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी नाउ पाइआ बूझहु करि बीचारु ॥ सदा सांति सुखु मनि
 वसै चूकै कूक पुकार ॥ आपै नो आपु खाइ मनु निरमलु होवै गुर सबदी वीचारु ॥ नानक सबदि रते से मुक्तु है हरि जीउ
 हेति पिआरु ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि की सेवा सफल है गुरमुखि पावै थाइ ॥ जिसु हरि भावै तिसु गुरु मिलै सो हरि नामु
 धिआइ ॥ गुर सबदी हरि पाईरे हरि पारि लघाइ ॥ मनहठि किनै न पाइओ पुछहु वेदा जाइ ॥ नानक हरि की सेवा सो करे
 जिसु लए हरि लाइ ॥ १० ॥ सलोक मः ३ ॥ नानक सो सूरु वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहँकरणु मारिआ ॥ गुरमुखि
 नामु सालाहि जनमु सवारिआ ॥ आपि होआ सदा मुक्तु सभु कुलु निसतारिआ ॥ सोहनि सचि दुआरि नामु पिआरिआ
 ॥ मनमुख मरहि अँहकारि मरणु विगाडिआ ॥ सभो वरतै हुकमु किआ करहि विचारिआ ॥ आपहु दूजै लागि खसमु
 विसारिआ ॥ नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुरि पूरै हरि नामु दिडाइआ तिनि विचहु भरमु
 चुकाइआ ॥ राम नामु हरि कीरति गाई करि चानणु मगु दिखाइआ ॥ हउमै मारि एक लिव लागी

अंतरि नामु वसाइआ ॥ गुरुमती जमु जोहि न साकै साचै नामि समाइआ ॥ सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ
 लाइआ ॥ जन नानकु नामु लए ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो
 सभनी दीबाणी मिलिआ ॥ जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरु उस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ ॥ ओसु अंतरि नामु निधानु
 है नामो परवरिआ ॥ नाउ पूजीरे नाउ मंनीरे नाइ किलविख सभ हिरिआ ॥ जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से
 असाथिरु जगि रहिआ ॥ ११ ॥ सलोक मः ३ ॥ आतमा देउ पूजीरे गुर कै सहजि सुभाइ ॥ आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ
 ता घर ही परचा पाइ ॥ आतमा अडोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ॥ गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु विचहु जाइ ॥ खिनु
 पलु हरि नामु मनि वसै सभ अठसठि तीरथ नाइ ॥ सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ ॥ धोती मूलि न उतरै जे अठसठि
 तीरथ नाइ ॥ मनमुख करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ॥ नानक मैला ऊजलु ता थीरे जा सतिगुर माहि समाइ ॥ १
 ॥ मः ३ ॥ मनमुखु लोकु समझाईरे कदहु समझाइआ जाइ ॥ मनमुखु रलाइआ ना रलै पइरे किरति फिराइ ॥ लिव धातु दुइ
 राह है हुकमी कार कमाइ ॥ गुरुमुखि आपणा मनु मारिआ सबदि कसवटी लाइ ॥ मन ही नालि झगडा मन ही नालि सथ मन ही
 मँझि समाइ ॥ मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ ॥ अँम्रित नामु सद भुँचीरे गुरुमुखि कार कमाइ ॥ विणु मनै जि होरी
 नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ ॥ मनमुखी मनहठि हारिआ कूडु कुसतु कमाइ ॥ गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ
 ॥ नानक गुरुमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी
 ॥ जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ॥ हरि अँम्रित कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी ॥
 तह भइआ प्रगासु मिटिआ अँधिआरा जिउ सूरज रैणि किराखी ॥ अदिसटु अगोचरु अलखु निरँजनु सो देखिआ गुरुमुखि

आखी ॥ १२ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुरु सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ ॥ विचहु आपु गवाइ कै रहनि सचि लिव लाइ ॥
 ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ तिना बिरथा जनमु गवाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥ मः
 ३ ॥ मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा करम कमाइ ॥ दूजै भाइ अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइ ॥ आतम देउ पूजीए बिनु
 सतिगुरु बूझ न पाइ ॥ जपु तपु सँजमु भाणा सतिगुरु का करमी पलै पाइ ॥ नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो
 थाइ पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु
 सिमरत सभि किलविख पाप लहाती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ॥ हरि हरि नामु
 जपहु मन मेरे मुखे गुरुमुखे प्रीति लगाती ॥ जितु मुखे भागु लिखिआ धुरि साचै हरि तितु मुखे नामु जपाती ॥ १३ ॥
 सलोक मः ३ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ॥ लख
 चउरासीह फेरु पइआ मरि जमै होइ खुआरु ॥ सतिगुरु की सेवा सो करे जिस नो आपि कराए सोइ ॥ सतिगुरु विचि नामु
 निधानु है करमि परापति होइ ॥ सचि रते गुरु सबद सिउ तिन सची सदा लिव होइ ॥ नानक जिस नो मेले न विछुडै सहजि
 समावै सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सो भगउती जो भगवतै जाणै ॥ गुरु परसादी आपु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु घरि आणै
 ॥ जीवतु मरै हरि नामु वखाणै ॥ ऐसा भगउती उतम होइ ॥ नानक सचि समावै सोइ ॥ २ ॥ मः ३ ॥ अंतरि कपटु
 भगउती कहाए ॥ पाखंडि पाखरहमु कदे न पाए ॥ पर निँदा करे अंतरि मनु लाए ॥ बाहरि मनु धोवै मन की जूठि न जाए
 ॥ सतसंगति सिउ बादु रचाए ॥ अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ रचाए ॥ हरि नामु न चेतै बहु करम कमाए ॥ पूरब लिखिआ
 सुमेटना न जाए ॥ नानक बिनु सतिगुरु सेवे मोखु न पाए ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ से कड़ि न सवाही
 ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ से त्रिपति अघाही ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ तिन जम डरु नाही ॥ जिन कउ

होआ क्रिपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ॥ तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैथे जाही ॥ १४ ॥ सलोक मः २ ॥ जो
 सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥ नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नहीं सो पिंजरु लै जारि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ मुँढहु
 भुली नानका फिरि फिरि जनमि मुईआसु ॥ कसतूरी कै भोलडै गँदे डुँमि पईआसु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो ऐसा हरि नामु
 धिआइये मन मेरे जो सभना उपरि हुकमु चलाए ॥ सो ऐसा हरि नामु जपीये मन मेरे जो अँती अउसरि लए छडाए ॥ सो
 ऐसा हरि नामु जपीये मन मेरे जु मन की त्रिसना सभ भुख गवाए ॥ सो गुरमुखि नामु जपिआ वडभागी तिन निँदक दुसट
 सभि पैरी पाए ॥ नानक नामु अराधि सभना ते वडा सभि नावै अगै आणि निवाए ॥ १५ ॥ सलोक मः ३ ॥ वेस करे
 कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूडीआरि ॥ पिर कै भाणै ना चलै हुकमु करे गावारि ॥ गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख
 निवारणहारि ॥ लिखिआ मेटि न सकीये जो धुरि लिखिआ करतारि ॥ मनु तनु सउपे कँत कउ सबदे धरे पिआरु ॥ बिनु
 नावै किनै न पाइआ देखहु रिदै बीचारि ॥ नानक सा सुआलिओ सुलखणी जिं रावी सिरजनहारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥
 माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु ॥ मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइदे डुबे हरि नामु विसारि ॥
 भलके उठि बहु करम कमावहि दूजै भाइ पिआरु ॥ सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु उतरे पारि ॥ नानक गुरमुखि सचि
 समावहि सचु नामु उर धारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोइ ॥ हरि आपि बहि करे
 निआउ कूडिआर सभ मारि कढोइ ॥ सचिआरा देइ वडिआई हरि धरम निआउ कीओइ ॥ सभ हरि की करहु उसतति जिनि
 गरीब अनाथ राखि लीओइ ॥ जैकारु कीओ धरमीआ का पापी कउ डँडु दीओइ ॥ १६ ॥ सलोक मः ३ ॥ मनमुख मैली
 कामणी कुलखणी कुनारि ॥ पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥ त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार
 ॥ नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै

भाइ पिआरि ॥ सदा रावे पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ॥ अति सुआलिउ सुंदरी सोभावँती नारि ॥ नानक नामि
 सोहागणी मेली मेलणहारि ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ॥ हरि तुधनो करहि सभ
 नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ॥ हरि निमाणिआ तूँ माणु हरि डाढी हूँ तूँ डाढिआ ॥ हरि अहँकरीआ मारि निवाए
 मनमुख मूड साधिआ ॥ हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ॥ १७ ॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै
 तिसु वडिआई वडी होइ ॥ हरि का नामु उतमु मनि वसै मेटि न सकै कोइ ॥ किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति
 होइ ॥ नानक कारणु करते वसि है गुरुमुखि बूझै कोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक हरि नामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि
 लिव तार ॥ माइआ बँदी खसम की तिन अगै कमावै कार ॥ पूरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार ॥ गुर परसादी
 जिनि बुझिआ तिनि पाइआ मोख दुआरु ॥ मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम जँदारु ॥ गुरुमुखि जिनी
 अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ॥ सभि अउगण गुणी मिटाइआ गुरु आपे बखसणहारु ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि
 की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ॥ हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ॥ काड़ा अँदेसा किउ कीजै
 जा नाही अधरमि मारदा ॥ सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ॥ सालाहिहु भगतहु कर जोडि हरि भगत जन
 तारदा ॥ १८ ॥ सलोक मः ३ ॥ आपणे प्रीतम मिलि रहा अँतरि रखा उरि धारि ॥ सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै
 हेति पिआरि ॥ नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा
 कउ नदरि करेई ॥ माणस ते देवते भए धिआइआ नामु हरे ॥ हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥ नानक सहजि
 समाइअनु हरि आपणी क्रिपा करे ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ॥ आपणी आपि
 करे परतीति आपे सेव घालीअनु ॥ हरि भगता नो देइ अनँदु थिरु घरी बहालिअनु ॥ पापीआ नो न देई थिरु रहणि

चूणि नरक घोरि चालिअनु ॥ हरि भगता नो देइ पिआरु करि अँगु निसतारिअनु ॥ १९ ॥ सलोक मः १ ॥ कुबुधि
 डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निँदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चँडालि ॥ कारी कठी किआ धीरे जां चारे बैठीआ नालि ॥ सचु
 सँजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही ॥ नानक अगै ऊतम सेई जि पापां पँदि न देही ॥ १ ॥ मः १ ॥ किआ हँसु किआ
 बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥ जो तिसु भावै नानका कागहु हँसु करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कीता लोड़ीरे कँमु सु हरि पहि
 आखीरे ॥ कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीरे ॥ सँता सँगि निधानु अँमितु चाखीरे ॥ भै भँजन मिहरवान दास की
 राखीरे ॥ नानक हरि गुण गाइ अलखु प्रभ लाखीरे ॥ २० ॥ सलोक मः ३ ॥ जीउ पिँडु सभु तिस का सभसै देइ अधारु
 ॥ नानक गुरमुखि सेवीरे सदा सदा दातारु ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिनि धिआइआ हरि निरँकारु ॥ ओना के मुख सद
 उजले ओना नो सभु जगतु करे नमसकारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुर मिलिरे उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥
 अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निज घरि वसै निज थाइ ॥ अनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ॥ नानक
 हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी हरि प्रभ खसम का हरि कै दरि
 आइआ ॥ हरि अँदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइआ ॥ हरि पुछिआ ढाढी सदि कै कितु अरथि तूँ आइआ ॥ नित देवहु
 दानु दइआल प्रभ हरि नामु धिआइआ ॥ हरि दातै हरि नामु जपाइआ नानकु पैनाइआ ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु ॥

१३ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु कबीर जीउ का ॥ एकु सुआनु कै घरि गावणा ॥

जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥ मोर मोर करि अधिक लाडु धरि

पेखत ही जम राउ हसै ॥ १ ॥ ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥ कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहत
 कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥ रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भव सागरु
 तरणा ॥ २ ॥ जां तिसु भावै ता लागै भाउ ॥ भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥ उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥ गुर प्रसादि
 अंतरि लिव लागै ॥ ३ ॥ इतु संगति नाही मरणा ॥ हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥
 सिरीरागु त्रिलोचन का ॥ माइआ मोहु मनि आगलडा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥ कुटंबु देखि बिगसहि कमला
 जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥ १ ॥ दूडा आइओहि जमहि तणा ॥ तिन आगलडै मै रहणु न जाइ ॥ कोई कोई साजणु
 आइ कहै ॥ मिलु मेरे बीठुला लै बाहडी वलाइ ॥ मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक अनिक भोग
 राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥ माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥ २ ॥ बिखम
 घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसँ ॥ माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारँ ॥ ३ ॥ आजु मेरै
 मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरमराउ ॥ तह कर दल करनि महाबली तिन आगलडै मै रहणु न जाइ ॥ ४ ॥ जे को मूँ
 उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतडा नाराइणा ॥ ऐ जी तूँ आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलोचनु रमईआ ॥ ५ ॥ २ ॥
 श्रीरागु भगत कबीर जीउ का ॥ अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥ सुरि नर गण गंधब जिनि मोहे
 त्रिभवण मेखुली लाई ॥ १ ॥ राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥ जा की दिसटि नाद लिव लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भाठी
 गगनु सिँडिआ अरु चुँडिआ कनक कलस इकु पाइआ ॥ तिसु महि धार चुरे अति निरमल रस महि रसन चुआइआ ॥ २
 ॥ एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥ तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥ ३ ॥ ऐसे
 गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रँग राता ॥ अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ॥ ४ ॥ ३ ॥

श्रीशगु बाणी भगत बेणी जीउ की ॥ पहरिआ कै घरि गावणा ॥ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ॥ मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनि सिसि एकु अगिआन सुनागा ॥
ते दिन सँमलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ॥ गरभ छोडि मित मंडल आइआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ
॥ १ ॥ फिरि पछुतावहिगा मूडिआ तूँ कवन कुमति भ्रमि लागा ॥ चेति शमु नाही जम पुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा
॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ॥ रसु मिसु मेधु अँमितु बिखु चाखी तउ पँच
प्रगट सँतापै ॥ जपु तपु सँजमु छोडि सुकित मति राम नामु न अराधिआ ॥ उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि
सकति गलि बांधिआ ॥ २ ॥ तरुण तेजु पर त्रिअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥ उनमत कामि महा बिखु
भूलै पापु पुँनु न पछानिआ ॥ सुत सँपति देखि इहु मनु गरबिआ शमु रिदै ते खोइआ ॥ अवर मरत माइआ मनु तोले तउ
भग मुखि जनमु विगोइआ ॥ ३ ॥ पुँडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥ लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता
कामु पवसि माधाणी ॥ ता ते बिखै भई मति पावसि काइआ कमलु कुमलाणा ॥ अवगति बाणि छोडि मित मंडलि तउ
पाछै पछुताणा ॥ ४ ॥ निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नहीं बूझै ॥ लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न
सूझै ॥ थाका तेजु उडिआ मनु पँखी घरि आंगनि न सुखाई ॥ बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥ ५ ॥
सिरीशगु ॥ तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ १ ॥ जउ पै हम न पाप करँता अहे
अनँता ॥ पतित पावन नामु कैसे हुँता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥ प्रभ ते जनु जानीजै जन
ते सुआमी ॥ २ ॥ सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥ रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥ ३ ॥

गगु माझ चउपदे घरु १ महला ४

१३ सतिनामु करता पुरखु निरभाउ निरवैरु अकाल मूरति आजूणी सैभँ गुर प्रसादि ॥

हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइआ ॥ वडभागी हरि नामु धिआइआ ॥ गुर पूरै हरि नाम सिधि पाई को विरला गुरमति चलै जीउ ॥ १ ॥ मै हरि हरि खरचु लइआ बँनि पलै ॥ मेरा प्राण सरवाई सदा नालि चलै ॥ गुरि पूरै हरि नामु दिडाइआ हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥ २ ॥ हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥ कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुरु मित्र मेरा बाल सरवाई ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु जन नानक हरि धनु पलै जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥ माझ महला ४ ॥ मधुसूदन मेरे मन तन प्राना ॥ हउ हरि बिनु दूजा अवरु न जाना ॥ कोई सजणु संतु मिलै वडभागी मै हरि प्रभु पिआरा दसै जीउ ॥ १ ॥ हउ मनु तनु खोजी भालि भालाई ॥ किउ पिआरा प्रीतमु मिलै मेरी माई ॥ मिलि सतसंगति खोजु दसाई विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥ २ ॥ मेरा पिआरा प्रीतमु सतिगुरु रखवाला ॥ हम बारिक दीन करहु प्रतिपाला ॥ मेरा मात पिता गुरु सतिगुरु पूरा गुर जल मिलि कमलु विगसै जीउ ॥ ३ ॥ मै बिनु गुर देखे नीद न आवै ॥ मेरे मन तनि वेदन गुर बिरहु लगावै ॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु जन नानक गुर मिलि रहसै जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥

माझ महला ४ ॥ हरि गुण पडींरे हरि गुण गुणींरे ॥ हरि हरि नाम कथा नित सुणींरे ॥ मिलिं सतसंगति हरि गुण गाए जगु
 भउजलु दुतरु तरींरे जीउ ॥ १ ॥ आउ सखी हरि मेलु करेहा ॥ मेरे प्रीतम का मै देइ सनेहा ॥ मेरा मित्रु सखा सो प्रीतमु भाई मै
 दसे हरि नरहरींरे जीउ ॥ २ ॥ मेरी बेदन हरि गुरु पूरा जाणै ॥ हउ हरि न सका बिनु नाम वखाणे ॥ मै सउखधु मंत्रु दीजै गुरु
 पूरे मै हरि हरि नामि उधरींरे जीउ ॥ ३ ॥ हम चात्रिक दीन सतिगुरु सरणाई ॥ हरि हरि नामु बूँद मुखि पाई ॥ हरि जलनिधि
 हम जल के मीने जन नानक जल बिनु मरींरे जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ माझ महला ४ ॥ हरि जन संत मिलहु मेरे भाई ॥ मेरा हरि प्रभु
 दसहु मै भुख लगाई ॥ मेरी सरथा पूरि जगजीवन दाते मिलिं हरि दरसनि मनु भीजै जीउ ॥ १ ॥ मिलिं सतसंगि बोली हरि
 बाणी ॥ हरि हरि कथा मेरै मनि भाणी ॥ हरि हरि अँम्रितु हरि मनि भावै मिलिं सतिगुरु अँम्रितु पीजै जीउ ॥ २ ॥ वडभागी हरि
 संगति पावहि ॥ भागहीन भ्रमि चोटा खावहि ॥ बिनु भागा सतसंगु न लभै बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥ ३ ॥ मै आइ
 मिलहु जगजीवन पिआरे ॥ हरि हरि नामु दइआ मनि धारे ॥ गुरुमति नामु मीठा मनि भाइआ जन नानक नामि मनु भीजै जीउ
 ॥ ४ ॥ ४ ॥ माझ महला ४ ॥ हरि गुरु गिआनु हरि रसु हरि पाइआ ॥ मनु हरि रँगि राता हरि रसु पीआइआ ॥ हरि हरि नामु
 मुखि हरि हरि बोली मनु हरि रसि टुलिं टुलिं पउदा जीउ ॥ १ ॥ आवहु संत मै गलिं मेलाईंरे ॥ मेरे प्रीतम की मै कथा सुणाईंरे
 ॥ हरि के संत मिलहु मनु देवा जो गुरुबाणी मुखिं चउदा जीउ ॥ २ ॥ वडभागी हरि संतु मिलाइआ ॥ गुरि पूरै हरि रसु मुखिं
 पाइआ ॥ भागहीन सतिगुरु नही पाइआ मनमुखु गरभ जूनी निति पउदा जीउ ॥ ३ ॥ आपिं दइआलिं दइआ प्रभिं धारी ॥
 मलु हउमै बिखिआ सभ निवारी ॥ नानक हट पटण विचि कांइआ हरि लैदे गुरुमुखिं सउदा जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ माझ महला ४
 ॥ हउ गुण गोविंद हरि नामु धिआई ॥ मिलिं संगति मनि नामु वसाई ॥ हरि प्रभ अगम अगोचर सुआमी मिलिं सतिगुरु हरि रसु

कीचै जीउ ॥ १ ॥ धनु धनु हरि जन जिनि हरि प्रभु जाता ॥ जाइ पुछा जन हरि की बाता ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा
 मिलि हरि जन हरि रसु पीचै जीउ ॥ २ ॥ सतिगुर दातै नामु दिडाइआ ॥ वडभागी गुर दरसन पाइआ ॥ अँमित रसु सचु
 अँमितु बोली गुरि पूरै अँमितु लीचै जीउ ॥ ३ ॥ हरि सतसंगति सत पुरखु मिलाईये ॥ मिलि सतसंगति हरि नामु धिआईये
 ॥ नानक हरि कथा सुणी मुखे बोली गुरमति हरि नामि परीचै जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ माझ महला ४ ॥ आवहु भैणे तुसी
 मिलहु पिआरीआ ॥ जो मेरा प्रीतमु दसे तिस कै हउ वारीआ ॥ मिलि सतसंगति लधा हरि सजणु हउ सतिगुर विटहु
 घुमाईआ जीउ ॥ १ ॥ जह जह देखा तह तह सुआमी ॥ तू घटि घटि रविआ अँतरजामी ॥ गुरि पूरै हरि नालि
 दिखालिआ हउ सतिगुर विटहु सद वारिआ जीउ ॥ २ ॥ एको पवणु माटी सभ एका सभ एका जोति सबाईआ ॥ सभ इका
 जोति वरतै भिनि भिनि न रलाई किसै दी रलाईआ ॥ गुर परसादी इकु नदरी आइआ हउ सतिगुर विटहु वताइआ जीउ ॥ ३
 ॥ जनु नानकु बोलै अँमित बाणी ॥ गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥ उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु
 परउपकारीआ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सत चउपदे महले चउथे के ॥

माझ महला ७ चउपदे घरु १ ॥

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ बिलप करे चात्रिक की निआई ॥ त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन सँत पिआरे
 जीउ ॥ १ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन सँत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि
 बाणी ॥ चिर होआ देखे सारिगपाणी ॥ धँनु सु देसु जहा तूँ वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥ २ ॥ हउ घोली हउ
 घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि मिलीरे प्रिअ

तुधु भगवँता ॥ मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीऊ ॥ ३ ॥ हउ घोली जीउ घोलिं घुमाई तिसु सचे
 गुर दरबारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ सेव करी पलु चसा न
 विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ ४ ॥ हउ घोली जीउ घोलिं घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥ १ ॥ ८
 ॥ रागु माझ महला ५ ॥ सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥ सो कँमु सुहेला जो तेरी घाली ॥ सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूँ
 वुठा सभना के दातारा जीउ ॥ १ ॥ तूँ साझा साहिबु बापु हमारा ॥ नउ निधि तेरै अखुट भँडारा ॥ जिसु तूँ देहि सु त्रिपति
 अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥ २ ॥ सभु को आसै तेरी बैठा ॥ घट घट अंतरि तूँहै वुठा ॥ सभे साझीवाल सदाइनि तूँ
 किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ ३ ॥ तूँ आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥ तूँ आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥ नानक दास
 तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ९ ॥ माझ महला ५ ॥ अनहदु वाजै सहजि सुहेला ॥ सबदि अनंद
 करे सद केला ॥ सहज गुफा महि ताड़ी लाई आसणु ऊच सवारिआ जीउ ॥ १ ॥ फिरि घिरि अपुने ग्रिह महि आइआ ॥ जो
 लोड़ीदा सोई पाइआ ॥ त्रिपति अघाइ रहिआ है संतहु गुरि अनभउ पुरखु दिखारिआ जीउ ॥ २ ॥ आपे राजनु आपे लोगा
 ॥ आपि निरबाणी आपे भोगा ॥ आपे तखति बहै सचु निआई सभ चूकी कूक पुकारिआ जीउ ॥ ३ ॥ जेहा डिठा मै तेहो
 कहिआ ॥ तिसु रसु आइआ जिनि भेदु लहिआ ॥ जोती जोति मिली सुखु पाइआ जन नानक इकु पसारिआ जीउ ॥ ४ ॥
 ३ ॥ १० ॥ माझ महला ५ ॥ जितु घरि पिरि सोहागु बणाइआ ॥ तितु घरि सखीए मँगलु गाइआ ॥ अनद बिनोद तितै
 घरि सोहहि जो धन कँति सिगारी जीउ ॥ १ ॥ सा गुणवँती सा वडभागणि ॥ पुत्रवँती सीलवँति सोहागणि ॥ रूपवँति सा
 सुघडि बिचखणि जो धन कँत पिआरी जीउ ॥ २ ॥ अचारवँति साई परधाने ॥ सभ सिँगार बणे तिसु गिआने ॥ सा
 कुलवँती सा सभराई जो पिरि कै रँगि सवारी जीउ ॥ ३ ॥ महिमा तिस की कहणु न जाए ॥ जो पिरि मेलि लई अँगि

लाए ॥ थिरु सुहागु वरु अगमु अगोचरु जन नानक प्रेम साधारी जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥ माझ महला ५ ॥ खोजत
 खोजत दरसन चाहे ॥ भाति भाति बन बन अवगाहे ॥ निरगुणु सरगुणु हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ ॥
 १ ॥ खट्टु सासत बिचरत मुखि गिआना ॥ पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ॥ निवली करम आसन चउरासीह इन महि
 सांति न आवै जीउ ॥ २ ॥ अनिक बरख कीए जप तापा ॥ गवनु कीआ धरती भरमाता ॥ इकु खिनु हिरदै सांति न आवै
 जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥ ३ ॥ करि किरपा मोहि साधु मिलाइआ ॥ मनु तनु सीतलु धीरजु पाइआ ॥ प्रभु
 अबिनासी बसिआ घट भीतरि हरि मंगलु नानकु गावै जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२ ॥ माझ महला ५ ॥ पारब्रहम अपरंपर देवा
 ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीन दइआल गोपाल गोबिंदा हरि धिआवहु गुरमुखि गाती जीउ ॥ १ ॥ गुरमुखि
 मधुसूदनु निसतारे ॥ गुरमुखि संगी क्रिसन मुरारे ॥ दइआल दमोदरु गुरमुखि पाईए होरतु कितै न भाती जीउ ॥ २ ॥
 निरहारी केसव निरवैरा ॥ कोटि जना जा के पूजहि पैरा ॥ गुरमुखि हिरदै जा कै हरि हरि सोई भगतु इकाती जीउ ॥ ३ ॥
 अमोघ दरसन बेअंत अपारा ॥ वड समरथु सदा दातारा ॥ गुरमुखि नामु जपीए तितु तरीए गति नानक विरली जाती
 जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३ ॥ माझ महला ५ ॥ कहिआ करणा दिता लैणा ॥ गरीबा अनाथा तेरा माणा ॥ सभ किछु तूहै
 तूहै मेरे पिआरे तेरी कुदरति कउ बलि जाई जीउ ॥ १ ॥ भाणै उझड़ भाणै राहा ॥ भाणै हरि गुण गुरमुखि गावाहा ॥
 भाणै भरमि भवै बहु जूनी सभ किछु तिसै रजाई जीउ ॥ २ ॥ ना को मूरखु ना को सिआणा ॥ वरतै सभ किछु तेरा भाणा
 ॥ अगम अगोचर बेअंत अथाहा तेरी कीमति कहणु न जाई जीउ ॥ ३ ॥ खाकु संतन की देहु पिआरे ॥ आइ पइआ हरि
 तेरै दुआरै ॥ दरसनु पेखत मनु आघावै नानक मिलणु सुभाई जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥ माझ महला ५ ॥ दुखु तदे जा
 विसरि जावै ॥ भुख विआपै बहु बिधि धावै ॥ सिमरत नामु सदा सुहेला जिंसु देवै दीन दइआला जीउ ॥ १ ॥

सतिगुरु मेरा वड समरथा ॥ जीइ समाली ता सभु दुखु लथा ॥ चिँता रोगु गई हउ पीड़ा आपि करे प्रतिपाला जीउ ॥ २
 ॥ बारिक वांगी हउ सभ किछु मँगा ॥ देदे तोटि नाही प्रभ रँगा ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाई दीन दइआल गोपाला जीउ ॥ ३
 ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ जिनि बँधन काटे सगले मेरे ॥ हिरदै नामु दे निरमल कीए नानक रँगि रसाला जीउ ॥ ४
 ॥ ८ ॥ १५ ॥ माझ महला ५ ॥ लाल गोपाल दइआल रँगीले ॥ गहिर गँभीर बेअँत गोविँदे ॥ ऊच अधाह बेअँत
 सुआमी सिमरि सिमरि हउ जीवां जीउ ॥ १ ॥ दुख भँजन निधान अमोले ॥ निरभउ निरखैर अथाह अतोले ॥ अकाल
 मूरति अजूनी सँभौ मन सिमरत ठँढा थीवां जीउ ॥ २ ॥ सदा सँगी हरि रँग गोपाला ॥ ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥ नामु
 रसाइणु मनु त्रिपताइणु गुरमुखि अँमितु पीवां जीउ ॥ ३ ॥ दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ॥ एह सुमति गुरू ते पाई
 ॥ नानक की धर तूँहै ठाकुर हरि रँगि पारि परीवां जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥ १६ ॥ माझ महला ५ ॥ धँनु सु वेला जितु मै
 सतिगुरु मिलिआ ॥ सफलु दरसनु नेत्र पेखत तरिआ ॥ धँनु मूरत चसे पल घडीआ धँनि सु ओइ सँजोगा जीउ ॥ १
 ॥ उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥ हरि मारगि चलत भ्रमु सगला खोइआ ॥ नामु निधानु सतिगुरू सुणाइआ मिटि
 गए सगले रोगा जीउ ॥ २ ॥ अँतरि बाहरि तेरी बाणी ॥ तुधु आपि कथी तै आपि वखाणी ॥ गुरि कहिआ सभु एको
 एको अवरु न कोई होइगा जीउ ॥ ३ ॥ अँमित रसु हरि गुर ते पीआ ॥ हरि पैणु नामु भोजनु थीआ ॥ नामि रँग नामि
 चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥ माझ महला ५ ॥ सगल सँतन पहि वसतु इक मांगउ
 ॥ करउ बिनँती मानु तिआगउ ॥ वारि वारि जाई लख वरीआ देहु सँतन की धूरा जीउ ॥ १ ॥ तुम दाते तुम पुरख
 बिधाते ॥ तुम समरथ सदा सुखदाते ॥ सभ को तुम ही ते वरसावै अउसरु करहु हमार पूरा जीउ ॥ २ ॥ दरसनि तैरै
 भवन पुनीता ॥ आतम गडु बिखमु तिना ही जीता ॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुधु जेवडु अवरु न सूरु जीउ ॥ ३ ॥

रेनु संतन की मेरै मुखि लागी ॥ रमति बिनसी कुबुधि अभागी ॥ सच घरि बैसि रहे गुण गाए नानक बिनसे कूरा जीउ ॥ ४
 ॥ ११ ॥ १८ ॥ माझ महला ५ ॥ विसरु नाही एवड दाते ॥ करि किरपा भगतन सँगि राते ॥ दिनसु रैणि जिउ तुधु
 धिआई एहु दानु मोहि करणा जीउ ॥ १ ॥ माटी अँधी सुरति समाई ॥ सभ किछु दीआ भलीआ जाई ॥ अनद बिनोद चोज
 तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ ॥ २ ॥ जिस दा दिता सभु किछु लैणा ॥ छतीह अँमित भोजनु खाणा ॥ सेज सुखाली
 सीतलु पवणा सहज केल रँग करणा जीउ ॥ ३ ॥ सा बुधि दीजै जितु विसरहि नाही ॥ सा मति दीजै जितु तुधु धिआई ॥
 सास सास तेरे गुण गावा ओट नानक गुरु चरणा जीउ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥ माझ महला ५ ॥ सिफति सालाहणु तेरा
 हुकमु रजाई ॥ सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥ सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ ॥ १ ॥ अँमित
 नामु तेरा सोई गावै ॥ जो साहिब तेरै मनि भावै ॥ तूँ संतन का संत तुमारे संत साहिब मनु माना जीउ ॥ २ ॥ तूँ संतन जी
 करहि प्रतिपाला ॥ संत खेलहि तुम सँगि गोपाला ॥ अपुने संत तुधु खरे पिआरे तूँ संतन के प्राणा जीउ ॥ ३ ॥ उन संतन
 कै मेरा मनु कुरबाने ॥ जिन तूँ जाता जो तुधु मनि भाने ॥ तिन कै सँगि सदा सुखु पाइआ हरि रस नानक त्रिपति अघाना
 जीउ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥ माझ महला ५ ॥ तूँ जलनिधि हम मीन तुमारे ॥ तेरा नामु बूँद हम चात्रिक तिखहारे ॥ तुमरी
 आस पिआसा तुमरी तुम ही सँगि मनु लीना जीउ ॥ १ ॥ जिउ बारिक पी खीरु अघावै ॥ जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै
 ॥ त्रिखावँत जलु पीवत ठँढा तिउ हरि सँगि इहु मनु भीना जीउ ॥ २ ॥ जिउ अँधिआरै दीपकु परगासा ॥ भरता चितवत
 पूरन आसा ॥ मिलि प्रीतम जिउ होत अनँदा तिउ हरि रँगि मनु रँगीना जीउ ॥ ३ ॥ संतन मो कउ हरि मारगि पाइआ ॥
 साध क्रिपालि हरि सँगि गिझाइआ ॥ हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरू सचु दीना जीउ ॥ ४ ॥ १४ ॥ २१ ॥
 माझ महला ५ ॥ अँमित नामु सदा निरमलीआ ॥ सुखदाई दूख बिडारन हरीआ ॥ आवरि साद चखि सगले देखे मन

हरि रसु सभ ते मीठा जीउ ॥ १ ॥ जो जो पीवै सो त्रिपतावै ॥ अमरु होवै जो नाम रसु पावै ॥ नाम निधान तिसहि
परापति जिसु सबदु गुरू मनि वूठा जीउ ॥ २ ॥ जिनि हरि रसु पाइआ सो त्रिपति अघाना ॥ जिनि हरि सादु पाइआ सो
नाहि डुलाना ॥ तिसहि परापति हरि हरि नामा जिसु मसतकि भागीठा जीउ ॥ ३ ॥ हरि इकसु हथि आइआ वरसाणे
बहुतेरे ॥ तिसु लागि मुकतु भए घणेरे ॥ नामु निधाना गुरुमुखि पाईऐ कहु नानक विरली डीठा जीउ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २२ ॥
माझ महला ५ ॥ निधि सिधि रिधि हरि हरि हरि मेरै ॥ जनमु पदारथु गहिर गँभीरै ॥ लाख कोट खुसीआ रँग रावै जो गुर
लागा पाई जीउ ॥ १ ॥ दरसनु पेखत भए पूनीता ॥ सगल उधारे भाई मीता ॥ अगम अगोचरु सुआमी अपुना गुर
किरपा ते सचु धिआई जीउ ॥ २ ॥ जा कउ खोजहि सरब उपाए ॥ वडभागी दरसनु को विरला पाए ॥ ऊच अपार
अगोचर थाना ओहु महलु गुरू देखई जीउ ॥ ३ ॥ गहिर गँभीर अँमित नामु तेरा ॥ मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥
गुरि बँधन तिन के सगले काटे जन नानक सहजि समाई जीउ ॥ ४ ॥ १६ ॥ २३ ॥ माझ महला ५ ॥ प्रभ किरपा ते हरि
हरि धिआवउ ॥ प्रभू दइआ ते मँगल गावउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत हरि धिआईऐ सगल अवरदा जीउ ॥ १ ॥ नामु
अउखधु मो कउ साधू दीआ ॥ किलबिख काटे निरमलु थीआ ॥ अनदु भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ
॥ २ ॥ जिस का अँगु करे मेरा पिआरा ॥ सो मुकता सागर सँसारा ॥ सति करे जिनि गुरू पछाता सो काहे कउ डरदा जीउ
॥ ३ ॥ जब ते साधू संगति पाए ॥ गुर भेटत हउ गई बलाए ॥ सासि सासि हरि गावै नानकु सतिगुर ढाकि लीआ मेरा
पड़दा जीउ ॥ ४ ॥ १७ ॥ २४ ॥ माझ महला ५ ॥ ओति पोति सेवक सँगि राता ॥ प्रभ प्रतिपाले सेवक सुखदाता ॥
पाणी परवा पीसउ सेवक कै ठाकुर ही का आहरु जीउ ॥ १ ॥ काटि सिलक प्रभि सेवा लाइआ ॥ हुकमु साहिब का सेवक
मनि भाइआ ॥ सोई कमावै जो साहिब भावै सेवकु अँतरि बाहरि माहरु जीउ ॥ २ ॥ तूँदाना ठाकुरु सभ बिधि जानहि ॥

ठाकुर के सेवक हरि रंग माणहि ॥ जो किछु ठाकुर का सो सेवक का सेवकु ठाकुर ही सँगि जाहरु जीउ ॥ ३ ॥ अपुनै
 ठाकुरि जो पहिराइआ ॥ बहुरि न लेखा पुछि बुलाइआ ॥ तिसु सेवक कै नानक कुरबाणी सो गहिर गभीरा गउहरु जीउ
 ॥ ४ ॥ १८ ॥ २५ ॥ माझ महला ५ ॥ सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ गुर परसादी
 जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥ १ ॥ झिमि झिमि वरसै अँप्रित धारा ॥ मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा
 ॥ अनद बिनोद करे दिन राती सदा सदा हरि केला जीउ ॥ २ ॥ जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ ॥ साध क्रिपा ते
 सूका हरिआ ॥ सुमति पाए नामु धिआए गुरमुखि होए मेला जीउ ॥ ३ ॥ जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ ॥ तिउ जोती
 सँगि जोति मिलाइआ ॥ कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा बहुड़ि न होईए जउला जीउ ॥ ४ ॥ १९ ॥ २६ ॥ माझ महला ५
 ॥ तिसु कुरबाणी जिनि तूँ सुणिआ ॥ तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिआ ॥ वारि वारि जाई तिसु विटहु जो मनि तनि
 तुधु आराधे जीउ ॥ १ ॥ तिसु चरण परखाली जो तेरै मारगि चालै ॥ नैन निहाली तिसु पुरख दइआलै ॥ मनु देवा तिसु
 अपुने साजन जिनि गुर मिलि सो प्रभु लाधे जीउ ॥ २ ॥ से वडभागी जिनि तुम जाणे ॥ सभ कै मधे अलिपत निरबाणे
 ॥ साध कै सँगि उनि भउजलु तरिआ सगल दूत उनि साधे जीउ ॥ ३ ॥ तिन की सरणि परिआ मनु मेरा ॥ माणु ताणु
 तजि मोहु अँधेरा ॥ नामु दानु दीजै नानक कउ तिसु प्रभ अगम अगाधे जीउ ॥ ४ ॥ २० ॥ २७ ॥ माझ महला ५ ॥ तूँ
 पेडु साख तेरी फूली ॥ तूँ सूखमु होआ असथूली ॥ तूँ जलनिधि तूँ फेनु बुदबुदा तुधु बिनु अवरु न भालीरे जीउ ॥ १ ॥
 तूँ सूतु मणीए भी तूँहै ॥ तूँ गँठी मेरु सिरि तूँहै ॥ आदि मधि अँति प्रभु सोई अवरु न कोइ दिखालीरे जीउ ॥ २ ॥ तूँ
 निरगुणु सरगुणु सुखदाता ॥ तूँ निरबाणु रसीआ रँगि राता ॥ अपने करतब आपे जाणहि आपे तुधु समालीरे जीउ ॥ ३
 ॥ तूँ ठाकुरु सेवकु फुनि आपे ॥ तूँ गुपतु परगटु प्रभ आपे ॥ नानक दासु सदा गुण गावै इक भोरी नदरि निहालीरे

जीउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ २८ ॥ माझ महला ५ ॥ सफल सु बाणी जितु नामु वखाणी ॥ गुर परसादि किनै विरलै जाणी ॥
 धँन सु वेला जितु हरि गावत सुनणा आए ते परवाना जीउ ॥ १ ॥ से नेत्र परवाणु जिनी दरसनु पेखा ॥ से कर भले
 जिनी हरि जसु लेखा ॥ से चरण सुहावै जो हरि मारगि चले हउ बलि तिन सँगि पछाणा जीउ ॥ २ ॥ सुणि साजन मेरे
 मीत पिआरे ॥ साधसँगि खिन माहि उधारे ॥ किलविख काटि होआ मनु निरमलु मिटि गए आवण जाणा जीउ ॥ ३ ॥
 दुइ कर जोडि इकु बिनउ करीजै ॥ करि किरपा डुबदा पथरु लीजै ॥ नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला प्रभ नानक मनि भाणा
 जीउ ॥ ४ ॥ २२ ॥ २९ ॥ माझ महला ५ ॥ अँमित बाणी हरि हरि तेरी ॥ सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥ जलनि
 बुझी सीतलु होइ मनूआ सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥ १ ॥ सूखु भइआ दुखु दूरि पराना ॥ संत रसन हरि नामु
 वखाना ॥ जल थल नीरि भरे सर सुभर बिरथा कोइ न जाए जीउ ॥ २ ॥ दइआ धारी तिनि सिरजनहारे ॥ जीअ जँत
 सगले प्रतिपारे ॥ मिहरवान किरपाल दइआला सगले त्रिपति अघाए जीउ ॥ ३ ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु कीतोनु हरिआ ॥
 करणहारि खिन भीतरि करिआ ॥ गुरमुखि नानक तिसै अराधे मन की आस पुजाए जीउ ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३० ॥ माझ
 महला ५ ॥ तूँ मेरा पिता तूँ है मेरा माता ॥ तूँ मेरा बँधपु तूँ मेरा भ्राता ॥ तूँ मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ
 ॥ १ ॥ तुमरी क्रिपा ते तुधु पछाणा ॥ तूँ मेरी ओट तूँ है मेरा माणा ॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु
 अखाड़ा जीउ ॥ २ ॥ जीअ जँतु सभि तुधु उपाए ॥ जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ॥ सभ किछु कीता तेरा होवै नाही
 किछु असाड़ा जीउ ॥ ३ ॥ नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ॥ हरि गुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ॥ गुरि पूरै वजी वाधाई
 नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३१ ॥ माझ महला ५ ॥ जीअ प्रान प्रभ मनहि अधारा ॥ भगत जीवहि
 गुण गाइ अपारा ॥ गुण निधान अँमितु हरि नामा हरि धिआइ धिआइ सुखु पाइआ जीउ ॥ १ ॥ मनसा धारि जो घर

ते आवै ॥ साधसँगि जनम मरण मिटावै ॥ आस मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइआ जीउ ॥ २ ॥ अगम अगोचर किछु
 मिति नही जानी ॥ साधिक सिध धिआवहि गिआनी ॥ खुदी मिटी चूका भोलावा गुरि मन ही महि प्रगटाइआ जीउ ॥ ३ ॥
 अनद मँगल कलिआण निधाना ॥ सूख सहज हरि नामु वखाना ॥ होइ क्रिपालु सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ
 जीउ ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३२ ॥ माझ महला ५ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ तूँ प्रीतमु ठाकुरु अति भारी ॥ तुमरे करतब
 तुम ही जाणहु तुमरी ओट गोपाला जीउ ॥ १ ॥ गुण गावत मनु हरिआ होवै ॥ कथा सुणत मलु सगली खोवै ॥ भेटत सँगि
 साध सँतन कै सदा जपउ दइआला जीउ ॥ २ ॥ प्रभु अपुना सासि सासि समारउ ॥ इह मति गुर प्रसादि मनि धारउ ॥ तुमरी
 क्रिपा ते होइ प्रगासा सरब मइआ प्रतिपाला जीउ ॥ ३ ॥ सति सति सति प्रभु सोई ॥ सदा सदा सद आपे होई ॥ चलित
 तुमारे प्रगट पिआरे देखि नानक भए निहाला जीउ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३३ ॥ माझ महला ५ ॥ हुकमी वरसण लागे मेहा ॥
 साजन सँत मिलि नामु जपेहा ॥ सीतल सांति सहज सुखु पाइआ ठाढि पाई प्रभि आपे जीउ ॥ १ ॥ सभु किछु बहुतो बहुतु
 उपाइआ ॥ करि किरपा प्रभि सगल रजाइआ ॥ दाति करहु मेरे दातारा जीअ जँत सभि ध्रापे जीउ ॥ २ ॥ सचा साहिबु सची
 नाई ॥ गुर परसादि तिसु सदा धिआई ॥ जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग सँतापे जीउ ॥ ३ ॥ सासि सासि नानकु
 सालाहे ॥ सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥ पूरन आस करी खिन भीतरि हरि हरि हरि गुण जापे जीउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३४ ॥
 माझ महला ५ ॥ आउ साजन सँत मीत पिआरे ॥ मिलि गावह गुण आगम अपारे ॥ गावत सुणत सभे ही मुकते सो
 धिआईऐ जिनि हम कीए जीउ ॥ १ ॥ जनम जनम के किलबिख जावहि ॥ मनि चिँदे सेई फल पावहि ॥ सिमरि साहिबु सो
 सचु सुआमी रिजकु सभसु कउ दीए जीउ ॥ २ ॥ नामु जपत सरब सुखु पाईऐ ॥ सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईऐ ॥ जिनि
 सेविआ सो पारगिरामी ॥ कारज सगले थीए जीउ ॥ ३ ॥ आइ पइआ तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥

करि किरपा प्रभु भगती लावहु सचु नानक अँमितु पीए जीउ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३५ ॥ माझ महला ५ ॥ भए क्रिपाल गोविंद
 गुसाई ॥ मेघु वरसै सभनी थाई ॥ दीन दइआल सदा किरपाला ठाढि पाई करतारे जीउ ॥ १ ॥ अपुने जीअ जँत
 प्रतिपारे ॥ जीउ बारिक माता संमारे ॥ दुख भँजन सुख सागर सुआमी देत सगल आहारे जीउ ॥ २ ॥ जलिं थलिं पूरिं
 रहिआ मिहरवाना ॥ सद बलिहारिं जाईए कुरबाना ॥ रैणिं दिनसु तिसु सदा धिआई जिं खिन महि सगल उधारे जीउ ॥
 ३ ॥ राखिं लीए सगले प्रभिं आपे ॥ उतरिं गए सभ सोग संतापे ॥ नामु जपत मनु तनु हरिआवलु प्रभ नानक नदरिं
 निहारे जीउ ॥ ४ ॥ २९ ॥ ३६ ॥ माझ महला ५ ॥ जिथै नामु जपीए प्रभ पिआरे ॥ से असथल सोइन चउबारे ॥
 जिथै नामु न जपीए मेरे गोइदा सेई नगर उजाडी जीउ ॥ १ ॥ हरिं रुखी रोटी खाइ समाले ॥ हरिं अँतरिं बाहरिं नदरिं
 निहाले ॥ खाइ खाइ करे बदफैली जाणु विसू की वाडी जीउ ॥ २ ॥ संता सेती रँगु न लाए ॥ साकत सँगि विकरम
 कमाए ॥ दुलभ देह खोई अगिआनी जड़ अपुणी आपि उपाडी जीउ ॥ ३ ॥ तेरी सरणिं मेरे दीन दइआला ॥ सुख सागर
 मेरे गुर गोपाला ॥ करि किरपा नानकु गुण गावै राखहु सरम असाडी जीउ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ३७ ॥ माझ महला ५ ॥
 चरण ठाकुर के रिदै समाणे ॥ कलिं कलेस सभ दूरिं पइआणे ॥ सांतिं सूख सहज धुनि उपजी साधू सँगि निवासा जीउ ॥
 १ ॥ लागी प्रीति न तूटै मूले ॥ हरिं अँतरिं बाहरिं रहिआ भरपूरे ॥ सिमरिं सिमरिं सिमरिं गुण गावा काटी जम की फासा
 जीउ ॥ २ ॥ अँमितु वरखै अनहद बाणी ॥ मन तन अँतरिं सांति समाणी ॥ त्रिपति अघाइ रहे जन तेरे सतिगुरिं कीआ
 दिलासा जीउ ॥ ३ ॥ जिस का सा तिस ते फलु पाइआ ॥ करि किरपा प्रभ सँगि मिलाइआ ॥ आवण जाण रहे वडभागी
 नानक पूरन आसा जीउ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ३८ ॥ माझ महला ५ ॥ मीहु पइआ परमेसरि पाइआ ॥ जीअ जँत सभिं सुखी
 वसाइआ ॥ गइआ कलेसु भइआ सुखु साचा हरि हरि नामु समाली जीउ ॥ १ ॥ जिस के से तिन ही प्रतिपारे ॥

पारब्रह्म प्रभ भए रखवारे ॥ सुणी बेनँती ठाकुरि मेरै पूरन होई घाली जीउ ॥ २ ॥ सरब जीआ कउ देवणहारा ॥ गुर
 परसादी नदरि निहारा ॥ जल थल महीअल सभि त्रिपताणे साधू चरन पखाली जीउ ॥ ३ ॥ मन की इछ पुजावणहारा ॥
 सदा सदा जाई बलिहारा ॥ नानक दानु कीआ दुख भँजनि रते रँगि रसाली जीउ ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ३९ ॥ माझ महला ५ ॥
 मनु तनु तेरा धनु भी तेरा ॥ तूँ ठाकुरु सुआमी प्रभु मेरा ॥ जीउ पिँडु सभु रासि तुमारी तेरा जोरु गोपाला जीउ ॥ १ ॥ सदा
 सदा तूँ है सुखदाई ॥ निवि लागा तेरी पाई ॥ कार कमावा जे तुधु भावा जा तूँ देहि दइआला जीउ ॥ २ ॥ प्रभ तुम ते लहणा
 तूँ मेरा गहणा ॥ जो तूँ देहि सोई सुखु सहणा ॥ जिथै रखहि बैकुँठु तिथाई तूँ सभना के प्रतिपाला जीउ ॥ ३ ॥ सिमरि
 सिमरि नानक सुखु पाइआ ॥ आठ पहर तेरे गुण गाइआ ॥ सगल मनोरथ पूरन होए कदे न होइ दुखाला जीउ ॥ ४ ॥ ३३
 ॥ ४० ॥ माझ महला ५ ॥ पारब्रह्मि प्रभि मेघु पठाइआ ॥ जलि थलि महीअलि दह दिसि वरसाइआ ॥ सांति भई बुझी
 सभ त्रिसना अनदु भइआ सभ ठाई जीउ ॥ १ ॥ सुखदाता दुख भँजनहारा ॥ आपे बखसि करे जीअ सारा ॥ अपने कीते
 नो आपि प्रतिपाले पइ पैरी तिसहि मनाई जीउ ॥ २ ॥ जा की सरणि पइआ गति पाईरे ॥ सासि सासि हरि नामु धिआईरे
 ॥ तिसु बिनु होरु न दूजा ठाकुरु सभ तिसै कीआ जाई जीउ ॥ ३ ॥ तेरा माणु ताणु प्रभ तेरा ॥ तूँ सचा साहिबु गुणी गहेरा
 ॥ नानकु दासु कहै बेनँती आठ पहर तुधु धिआई जीउ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ४१ ॥ माझ महला ५ ॥ सभे सुख भए प्रभ तुठे ॥
 गुर पूरे के चरण मनि वुठे ॥ सहज समाधि लगी लिव अँतरि सो रसि सोई जाणै जीउ ॥ १ ॥ अगम अगोचरु साहिबु मेरा ॥
 घट घट अँतरि वरतै नेरा ॥ सदा अलिपतु जीआ का दाता को विरला आपु पछाणै जीउ ॥ २ ॥ प्रभ मिलणै की एह नीसाणी
 ॥ मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥ सहजि संतोखि सदा त्रिपतासे अनदु खसम कै भाणै जीउ ॥ ३ ॥ हथी दिती प्रभि
 देवणहारै ॥ जनम मरण रोग सभि निवारे ॥ नानक दास कीए प्रभि अपुने हरि कीरतनि रँग माणे जीउ ॥ ४ ॥ ३५ ॥

४२ ॥ माझ महला ५ ॥ कीनी दइआ गोपाल गुसाई ॥ गुर के चरण वसे मन माही ॥ अंगीकारु कीआ तिनि करतै दुख का
 डेर ढाडआ जीउ ॥ १ ॥ मनि तनि वसिआ सचा सोई ॥ बिखड़ा थानु न दिसै कोई ॥ दूत दुसमण सभि सजण होए एको
 सुआमी आहिआ जीउ ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपे आपै ॥ बुधि सिआणप किछू न जापै ॥ आपणिआ सँता नो आपि
 सहाई प्रभि भरम भुलावा लाहिआ जीउ ॥ ३ ॥ चरण कमल जन का आधारे ॥ आठ पहर राम नामु वापारे ॥ सहज
 अनंद गावहि गुण गोविंद प्रभ नानक सरब समाहिआ जीउ ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४३ ॥ माझ महला ५ ॥ सो सचु मंदरु जितु
 सचु धिआईरे ॥ सो रिदा सुहेला जितु हरि गुण गाईरे ॥ सा धरति सुहावी जितु वसहि हरि जन सचे नाम विटहु कुरबाणो
 जीउ ॥ १ ॥ सचु वडाई कीम न पाई ॥ कुदरति करमु न कहणा जाई ॥ धिआइ धिआइ जीवहि जन तेरे सचु सबदु मनि
 माणो जीउ ॥ २ ॥ सचु सालाहणु वडभागी पाईरे ॥ गुर परसादी हरि गुण गाईरे ॥ रंगि रते तेरै तुधु भावहि सचु नामु
 नीसाणो जीउ ॥ ३ ॥ सचे अंतु न जाणै कोई ॥ थानि धनंतरि सचा सोई ॥ नानक सचु धिआईरे सद ही अंतरजामी जाणो
 जीउ ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ४४ ॥ माझ महला ५ ॥ रैणि सुहावडी दिनसु सुहेला ॥ जपि अँमित नामु संतसंगि मेला ॥ घडी
 मूरत सिमरत पल वँजहि जीवणु सफलु तिथाई जीउ ॥ १ ॥ सिमरत नामु दिख सभि लाथे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु साथे
 ॥ भै भउ भरमु खोइआ गुरि पूरे देखा सभनी जाई जीउ ॥ २ ॥ प्रभ समरथु वड ऊच अपारा ॥ नउ निधि नामु भरे भंडारा
 ॥ आदि अँति मधि प्रभु सोई दूजा लवै न लाई जीउ ॥ ३ ॥ करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ जाचिकु जाचै साध रवाला ॥
 देहि दानु नानकु जनु मागै सदा सदा हरि धिआई जीउ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ४५ ॥ माझ महला ५ ॥ ऐथै तूँ है आगै आपे ॥
 जीअ जँत्र सभि तेरे थापे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई करते मै धर ओट तुमारी जीउ ॥ १ ॥ रसना जपि जपि जीवै सुआमी ॥
 पारब्रहम प्रभ अंतरजामी ॥ जिनि सेविआ तिन ही सुखु पाइआ सो जनमु न जूरे हारी जीउ ॥ २ ॥ नामु अवरुधु

जिनि जन तेरै पाइआ ॥ जनम जनम का रोगु गवाइआ ॥ हरि कीरतनु गावहु दिनु राती सफल एहा है कारी जीउ ॥ ३ ॥
 ॥ द्रिसटि धारि अपना दासु सवारिआ ॥ घट घट अंतरि पारब्रह्मु नमसकारिआ ॥ इकसु विणु होरु दूजा नाही बाबा
 नानक इह मति सारी जीउ ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ४६ ॥ माझ महला ५ ॥ मनु तनु रता राम पिआरे ॥ सरबसु दीजै अपना
 वारे ॥ आठ पहर गोविंद गुण गाईरे बिसरु न कोई सासा जीउ ॥ १ ॥ सोई साजन मीतु पिआरा ॥ राम नामु साधसंगि
 बीचारा ॥ साधू संगि तरीजै सागरु कटीऐ जम की फासा जीउ ॥ २ ॥ चारि पदारथ हरि की सेवा ॥ पारजातु जपि
 अलख अभेवा ॥ कामु क्रोधु किलबिख गुरि काटे पूरन होई आसा जीउ ॥ ३ ॥ पूरन भाग भए जिसु प्राणी ॥ साधसंगि
 मिले सारंगपानी ॥ नानक नामु वसिआ जिसु अंतरि परवाणु गिरसत उदासा जीउ ॥ ४ ॥ ४० ॥ ४७ ॥ माझ महला
 ५ ॥ सिमरत नामु रिदै सुखु पाइआ ॥ करि किरपा भगतीं, प्रगटाइआ ॥ संतसंगि मिलि हरि हरि जपिआ बिनसे आलस
 रोगा जीउ ॥ १ ॥ जा कै छिहि नव निधि हरि भाई ॥ तिसु मिलिआ जिसु पुरब कमाई ॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर
 प्रभु सभना गला जोगा जीउ ॥ २ ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ आपि इकंती आपि पसारा ॥ लेपु नही
 जगजीवन दाते दरसन डिठे लहनि विजोगा जीउ ॥ ३ ॥ अंचलि लाइ सभ सिसटि तराई ॥ आपणा नाउ आपि जपाई
 ॥ गुर बोहिथु पाइआ किरपा ते नानक धुरि संजोगा जीउ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ४८ ॥ माझ महला ५ ॥ सोई करणा जि
 आपि कराए ॥ जिथै रखै सा भली जाए ॥ सोई सिआणा सो पतिवँता हुकमु लगै जिसु मीठा जीउ ॥ १ ॥ सभ परेई
 इकतु धागै ॥ जिसु लाइ लए सो चरणी लागै ॥ ऊंध कवलु जिसु होइ प्रगासा तिनि सरब निरँजनु डीठा जीउ ॥ २ ॥
 तेरी महिमा तूहै जाणहि ॥ आपणा आपु तूँ आपि पछाणहि ॥ हउ बलिहारी संतन तेरे जिनि कामु क्रोध लोभु पीठा जीउ
 ॥ ३ ॥ तूँ निरवैरु संत तेरे निरमल ॥ जिन देखे सभ उतरहि कलमल ॥ नानक नामु धिआइ धिआइ जीवै बिनसिआ

भ्रमु भउ धीठा जीउ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ४९ ॥ मांझ महला ५ ॥ झूठा मँगणु जे कोई मागै ॥ तिस कउ मरते घड़ी न लागै ॥
 पारब्रह्म जो सद ही सेवै सो गुर मिलि निहचलु कहणा ॥ १ ॥ प्रेम भगति जिस कै मनि लागी ॥ गुण गावै अनदिन निति
 जागी ॥ बाह पकड़ि तुसु सुआमी मेलै जिस कै मसतकि लहणा ॥ २ ॥ चरन कमल भगतां मनि वुठे ॥ विणु परमेसर
 सगले मुठे ॥ सँत जनां की धूड़ि नित बांछहि नामु सचे का गहणा ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि हरि गाईरे ॥ जिसु सिमरत वरु
 निहचलु पाईरे ॥ नानक कउ प्रभ होइ दइआला तेरा कीता सहणा ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५० ॥

शगु माझ असटपदीआ महला १ वरु १ १९ शितिगुर प्रसादि ॥

सबदि रंगाए हुकमि सबाए ॥ सची दरगह महलि बुलाए ॥ सचे दीन दइआल मेरे साहिबा सचे मनु पतीआवणिआ ॥ १ ॥
 हउ वारी जीउ वारी सबदि सुहावणिआ ॥ अँमित नामु सदा सुखदाता गुरमती मँनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को
 मेरा हउ किसु केरा ॥ साचा ठाकुरु त्रिभवणि मेरा ॥ हउमै करि करि जाइ घणेरी करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ हुकमु
 पछाणै सु हरि गुण वखाणै ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणै ॥ सभना का दरि लेखा सचै छूटसि नामि सुहावणिआ ॥ ३ ॥
 मनमुखु भूला ठउरु न पाए ॥ जम दरि बधा चोटा खाए ॥ बिनु नावै को सँगि न साथी मुकते नामु धिआवणिआ ॥ ४ ॥
 साकत कूड़े सचु न भावै ॥ दुबिधा बाधा आवै जावै ॥ लिखिआ लेखु न मेटै कोई गुरमुखि मुकति करावणिआ ॥ ५ ॥
 पेईअडै पिरु जातो नाही ॥ झूठि विछुँनी रोवै धाही ॥ अवगणि मुठी महलु न पाए अवगण गुणि बखसावणिआ ॥ ६ ॥
 पेईअडै जिनि जाता पिआरा ॥ गुरमुखि बूझै ततु बीचारा ॥ आवणु जाणा ठाकि रहाए सचै नामि समावणिआ ॥ ७ ॥
 गुरमुखि बूझै अकथु कहावै ॥ सचे ठाकुर साचो भावै ॥ नानक सचु कहै बेनँती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥

माझा महला ३ घर १ ॥ करमु होवै सतिगुरु लाए ॥ सेवा सुरति सबदि चितु लाए ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइआ
 माइआ मोहु चुकावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सतिगुरु कै बलिहारणिआ ॥ गुरुमती परगासु होआ जी अनदिनु
 हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजे ता नाउ पाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ गुरु की बाणी अनदिनु
 गावै सहजे भगति करावणिआ ॥ २ ॥ इसु काइआ अंदरि वसतु असंखा ॥ गुरुमुखि साचु मिलै ता वेखा ॥ नउ दरवाजे
 दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ ॥ ३ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुरु परसादी मंनि वसाई ॥ अनदिनु सदा रहै
 रंगि राता दरि सचै सोझी पावणिआ ॥ ४ ॥ पाप पुनँ की सार न जाणी ॥ दूजै लागी भरमि भुलाणी ॥ अगिआनी अंधा
 मगु न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥ ५ ॥ गुरु सेवा ते सदा सुखु पाइआ ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाइआ ॥ गुरु
 साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ॥ ६ ॥ हउमै मारि मंनि वसाइआ ॥ गुरु चरणी सदा चितु लाइआ
 ॥ गुरु किरपा ते मनु तनु निरमलु निरमल नामु धिआवणिआ ॥ ७ ॥ जीवणु मरणा सभु तुधै ताई ॥ जिसु बखसे तिसु दे
 वडिआई ॥ नानक नामु धिआइ सदा तूँ जंमणु मरणु सवारणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥ माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु निरमलु
 अगम अपारा ॥ बिनु तकडी तोलै संसारा ॥ गुरुमुखि होवै सोई बूझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ
 वारी हरि का नामु मंनि वसावणिआ ॥ जो सचि लागे से अनदिनु जागे दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि
 सुणै तै आपे वेखै ॥ जिस नो णदरि करे सोई जनु लेखै ॥ आपे लाइ लए सो लागै गुरुमुखि सचु कमावणिआ ॥ २ ॥
 जिसु आपि भुलाए सु किथै हथु पाए ॥ पूरबि लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ जिन सतिगुरु मिलिआ से वडभागी पूरै करमि
 मिलावणिआ ॥ ३ ॥ पेईअडै धन अनदिनु सुती ॥ कंति विसारी अवगणि मुती ॥ अनदिनु सदा फिरै बिललादी बिनु
 पिर नीद न पावणिआ ॥ ४ ॥ पेईअडै सुखदाता जाता ॥ हउमै मारि गुरु सबदि पछाता ॥ सेज सुहावी सदा पिर

रावे सचु सीगारु बणावणिआ ॥ ५ ॥ लख चउरासीह जीअ उपाए ॥ जिस नो नदरि करे तिसु गुरु मिलाए ॥ किलबिख
 काटि सदा जन निरमल दरि सचै नामि सुहावणिआ ॥ ६ ॥ लेखा मागै ता किनि दीरे ॥ सुखु नाही फुनि दूरे तीरे ॥ आपे
 बखसि लए प्रभु साचा आपे बखसि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ पूरे गुर कै सबदि मिलाए ॥ नानक
 नामु मिलै वडिआई आपे मेलि मिलावणिआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ३ ॥ माझ महला ३ ॥ इको आपि फिरै परछँना ॥ गुरुमुखि
 वेखा ता इहु मँनु भिँना ॥ तिसना तजि सहज सुखु पाइआ एको मँनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी इकसु सिउ
 चितु लावणिआ ॥ गुरुमती मनु इकतु घरि आइआ सचै रँगि रँगवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु भूला तैं आपि
 भुलाइआ ॥ इकु विसारि दूजै लोभाइआ ॥ अनदिनु सदा फिरै भ्रमि भूला बिनु नावै दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ जो रँगि राते
 करम बिधाते ॥ गुर सेवा ते जुग चारे जाते ॥ जिस नो आपि देइ वडिआई हरि कै नामि समावणिआ ॥ ३ ॥ माइआ मोहि
 हरि चेतै नाही ॥ जम पूरि बधा दुख सहाही ॥ अँना बोला किछु नदरि न आवै मनमुख पापि पचावणिआ ॥ ४ ॥ इकि
 रँगि राते जो तुधु आपि लिव लाए ॥ भाइ भगति तेरै मनि भाए ॥ सतिगुरु सेवनि सदा सुखदाता सभ इछा आपि
 पुजावणिआ ॥ ५ ॥ हरि जीउ तेरी सदा सरणाई ॥ आपे बखसिहि दे वडिआई ॥ जमकालु तिसु नेडि न आवै जो हरि हरि
 नामु धिआवणिआ ॥ ६ ॥ अनदिनु राते जो हरि भाए ॥ मेरै प्रभि मेले मेलि मिलाए ॥ सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूँ आपे
 सचु बुझावणिआ ॥ ७ ॥ जिन सचु जाता से सचि समाणे ॥ हरि गुण गावहि सचु वखाणे ॥ नानक नामि रते बैरागी
 निज घरि ताडी लावणिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ४ ॥ माझ महला ३ ॥ सबदि मरै सु मुआ जापै ॥ कालु न चापै दुखु न संतापै
 ॥ जोती विचि मिलि जोति समाणी सुणि मन सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि कै नाइ सोभा पावणिआ
 ॥ सतिगुरु सेवि सचि चितु लाइआ गुरुमती सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ कची कचा चीरु हँटाए ॥

दूजै लागी महलु न पाए ॥ अनदिनु जलदी फिरै दिनु राती बिनु पिर बहु दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ देही जाति न आगै जाए ॥
 जिथै लेखा मँगीरे तिथै छुटै सचु कमाए ॥ सतिगुरु सेवनि से अनवँतै ऐथै ओथै नामि समावणिआ ॥ ३ ॥ भै भाइ सीगारु
 बणाए ॥ गुर परसादी महलु घरु पाए ॥ अनदिनु सदा रवै दिनु राती मजीठै रँगु बणावणिआ ॥ ४ ॥ सभना पिरु वसै सदा
 नाले ॥ गुर परसादी को नदरि निहाले ॥ मेरा प्रभु अति ऊचो ऊचा करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ माइआ मोहि
 इहु जगु सुता ॥ नामु विसारि अँति विगुता ॥ जिस ते सुता सो जागाए गुरमति सोझी पावणिआ ॥ ६ ॥ अपिउ पीरे सो
 भरमु गवाए ॥ गुर परसादि मुकति गति पाए ॥ भगती रता सदा बैरागी आपु मारि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ आपि उपाए धँधै
 लाए ॥ लख चउरासी रिजकु आपि अपड़ाए ॥ नानक नामु धिआइ सचि राते जो तिसु भावै सु कार करावणिआ ॥ ८ ॥ ४
 ॥ ५ ॥ माइ महला ३ ॥ अँदरि हीरा लालु बणाइआ ॥ गुर कै सबदि परखि परखाइआ ॥ जिन सचु पलै सचु वखाणहि
 सचु कसवटी लावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मँनि वसावणिआ ॥ अँजन माहि निरँजनु पाइआ जोती
 जोति मिलावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इस काइआ अँदरि बहुतु पसारा ॥ नामु निरँजनु अति अगम अपारा ॥ गुरमुखि होवै
 सोई पाए आपे बखसि मिलावणिआ ॥ २ ॥ मेरा ठाकुरु सचु द्विड़ाए ॥ गुर परसादी सचि चितु लाए ॥ सचो सचु वरतै
 सभनी थाई सचे सचि समावणिआ ॥ ३ ॥ वेपरवाहु सचु मेरा पिआरा ॥ किलविख आवगण काटणहारा ॥ प्रेम प्रीति सदा
 धिआईरे भै भाइ भगति द्विड़ावणिआ ॥ ४ ॥ तेरी भगति सची जे सचे भावै ॥ आपे देइ न पछोतावै ॥ सभना जीआ का
 एको दाता सबदे मारि जिवावणिआ ॥ ५ ॥ हरि तुधु बाइहु मै कोई नाही ॥ हरि तुधै सेवी तै तुधु सालाही ॥ आपे मेलि लैहु
 प्रभ साचे पूरै करमि तूँ पावणिआ ॥ ६ ॥ मै होरु न कोई तुधै जेहा ॥ तेरी नदरी सीझसि देहा ॥ अनदिनु सारि समालि हरि
 राखहि गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ ७ ॥ तुधु जेवडु मै होरु न कोई ॥ तुधु आपे सिरजी आपे गोई ॥

तूँ आपे ही घडि भँनि सवारहि नानक नामि सुहावणिआ ॥ ८ ॥ ७ ॥ ६ ॥ माझ महला ३ ॥ सभ घट आपे भोगणहारा ॥
 अलखु वरतै अगम अपारा ॥ गुर कै सबदि मेरा हरि प्रभु धिआइए सहजे सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर
 सबदु मँनि वसावणिआ ॥ सबदु सूझै ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँच दूत मुहहि संसारा ॥
 मनमुख अँधे सुधि न सारा ॥ गुरमुखि होवै सु अपणा घरु राखै पँच दूत सबदि पचावणिआ ॥ २ ॥ इकि गुरमुखि सदा सचै
 रँगि राते ॥ सहजे प्रभु सेवहि अनदिनु माते ॥ मिलि प्रीतम सचे गुण गावहि हरि दरि सोभा पावणिआ ॥ ३ ॥ एकस एकै
 आपु उपाइआ ॥ दुबिधा दूजा त्रिबिधि माइआ ॥ चउथी पउडी गुरमुखि ऊची सचो सचु कमावणिआ ॥ ४ ॥ सभु है सचा
 जे सचे भावै ॥ जिनि सचु जाता सो सहजि समावै ॥ गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइ समावणिआ ॥ ५ ॥ सचे
 बाझहु को अवरु न दूआ ॥ दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ॥ गुरमुखि होवै सो एको जाणै एको सेवि सुखु पावणिआ ॥ ६
 ॥ जीअ जँत सभि सरणि तुमारी ॥ आपे धरि देखहि कची पकी सारी ॥ अनदिनु आपे कार कराए आपे मेलि मिलावणिआ
 ॥ ७ ॥ तूँ आपे मेलहि वेखहि हदूरि ॥ सभ महि आपि रहिआ भरपूरि ॥ नानक आपे आपि वरतै गुरमुखि सोझी पावणिआ
 ॥ ८ ॥ ६ ॥ ७ ॥ माझ महला ३ ॥ अँमित बाणी गुर की मीठी ॥ गुरमुखि विरलै किनै चखि डीठी ॥ अँतरि परगासु महा
 रसु पीवै दरि सचै सबदु वजावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ सतिगुरु है अँमित सरु
 साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा सचे किनै अँतु न पाइआ ॥ गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइआ
 ॥ तुधु सालाहि न रजा कबहूँ सचे नावै की भुख लावणिआ ॥ २ ॥ एको वेखा अवरु न बीआ ॥ गुर परसादी अँमित पीआ
 ॥ गुर कै सबदि तिखा निवारी सहजे सूखि समावणिआ ॥ ३ ॥ रतनु पदारथु पलरि तिआगै ॥ मनमुखु अँधा दूजै भाइ
 लागै ॥ जो बीजै सोई फलु पाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥ ४ ॥ अपनी किरपा करे सोई जनु पाए ॥ गुर का

सबदु मॉनि वसाए ॥ अनदिनु सदा रहै भै अंदरि भै मारि भरमु चुकावणिआ ॥ ५ ॥ भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ ॥ गुर
 परसादि परम पदु पाइआ ॥ अंतरु निरमलु निरमल बाणी हरि गुण सहजे गावणिआ ॥ ६ ॥ सिम्रिति सासत बेद वखाणै
 ॥ भरमे भूला ततु न जाणै ॥ बिनु सतिगुर सेवे सुखु न पाए दुखो दुखु कमावणिआ ॥ ७ ॥ आपि करे किसु आखै कोई ॥
 आखणि जाईए जे भूला होई ॥ नानक आपे करे कराए नामे नामि समावणिआ ॥ ८ ॥ ७ ॥ ८ ॥ माझ महला ३ ॥ आपे
 रंगे सहजि सुभाए ॥ गुर कै सबदि हरि रंगु चड़ाए ॥ मनु तनु रता रसना रंगि चलूली भै भाइ रंगु चड़ावणिआ ॥ १ ॥ हउ
 वारी जीउ वारी निरभउ मॉनि वसावणिआ ॥ गुर किरपा ते हरि निरभउ धिआइआ बिखु भउजलु सबदि तरावणिआ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ मनमुख मुगध करहि चतुराई ॥ नाता धोता थाइ न पाई ॥ जेहा आइआ तेहा जासी करि अवगण पछोतावणिआ
 ॥ २ ॥ मनमुख अंधे किछु न सूझै ॥ मरणु लिखाइ आए नही बूझै ॥ मनमुख करम करे नही पाए बिनु नावै जनमु
 गवावणिआ ॥ ३ ॥ सचु करणी सबदु है सारु ॥ पूरै गुरि पाईए मोख दुआरु ॥ अनदिनु बाणी सबदि सुणाए सचि राते
 रंगि रंगावणिआ ॥ ४ ॥ रसना हरि रसि राती रंगु लाए ॥ मनु तनु मोहिआ सहजि सुभाए ॥ सहजे प्रीतमु पिआरा पाइआ
 सहजे सहजि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ जिसु अंदरि रंगु सोई गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सहजे सुखि समावै ॥ हउ बलिहारी
 सदा तिन विटहु गुर सेवा चितु लावणिआ ॥ ६ ॥ सचा सचो सचि पतीजै ॥ गुर परसादी अंदरु भीजै ॥ बैसि सुथानि हरि
 गुण गावहि आपे करि सति मनावणिआ ॥ ७ ॥ जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ गुर परसादी हउमै जाए ॥ नानक नामु वसै
 मन अंतरि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ९ ॥ माझ महला ३ ॥ सतिगुरु सेविरे वडी वडिआई ॥ हरि जी
 अचिंतु वसै मनि आई ॥ हरि जीउ सफलओ बिरखु है अंम्रितु जिनि पीता तिसु तिखा लहावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ
 वारी सचु संगति मेलि मिलावणिआ ॥ हरि सतसंगति आपे मेलै गुर सबदी हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ ॥ जिनि हरि का नामु मँनि वसाइआ ॥ हरि निरमलु हउमै मैलु गवाए दरि सचै सोभा
 पावणिआ ॥ २ ॥ बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ ॥ सिध साधिक रहे बिललाइ ॥ बिनु गुर सेवे सुखु न होवी पूरै भागि
 गुरु पावणिआ ॥ ३ ॥ इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै ॥ मोरचा न लागै जा हउमै सोखै ॥ अनहत बाणी निरमल
 सबदु वजाए गुर सबदी सचि समावणिआ ॥ ४ ॥ बिनु सतिगुर किहु न देखिआ जाइ ॥ गुरि किरपा करि आपु दिता
 दिखाइ ॥ आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहजि समावणिआ ॥ ५ ॥ गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाए ॥
 दूजा भरमु गुर सबदि जलाए ॥ काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि करणी हरि
 कीरति सारु ॥ गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ अनदिनु रँगि रता गुण गावै अंदरि महलि बुलावणिआ ॥ ७ ॥ सतिगुरु
 दाता मिलै मिलाइआ ॥ पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ ८ ॥
 ९ ॥ १० ॥ माझ महला ३ ॥ आपु वँजाए ता सभ किछु पाए ॥ गुर सबदी सची लिव लाए ॥ सचु वणँजहि सचु संघरहि
 सचु वापारु करावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि गुण अनदिनु गावणिआ ॥ हउ तेरा तूँ ठाकुरु मेरा सबदि
 वडिआई देवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेला वखत सभि सुहाइआ ॥ जितु सचा मेरे मनि भाइआ ॥ सचे सेविरे सचु
 वडिआई गुर किरपा ते सचु पावणिआ ॥ ३ ॥ भाउ भोजनु सतिगुर तुठै पाए ॥ अन रसु चूकै हरि रसु मँनि वसाए ॥ सचु
 संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ३ ॥ सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा ॥ फिरि ओइ किथहु पाइनि
 मोख दुआरा ॥ मरि मरि जँमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ ॥ ४ ॥ सबदै सादु जाणहि ता आपु
 पछाणहि ॥ निरमल बाणी सबदि वखाणहि ॥ सचे सेवि सदा सुखु पाइनि नउ निधि नामु मँनि वसावणिआ ॥ ५ ॥ सो
 थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ ॥ सतसंगति बहि हरि गुण गाइआ ॥ अनदिनु हरि सालाहहि साचा निरमल

नादु वजावणिआ ॥ ६ ॥ मनमुख खोटी रासि खोटा पासारा ॥ कूडु कमावनि दुखु लागै भारा ॥ भरमे भूले फिरनि दिन
राती मरि जनमहि जनमु गवावणिआ ॥ ७ ॥ सचा साहिबु मै अति पिआरा ॥ पूरे गुर कै सबदि अधारा ॥ नानक नामि
मिलै वडिआई दुखु सुखु सम करि जानणिआ ॥ ८ ॥ १० ॥ ११ ॥ माझ महला ३ ॥ तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी ॥ बिनु
नावै सभ भरमि भुलाणी ॥ गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि
सेती चितु लावणिआ ॥ हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मँनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवे ता सभ किछु
पाए ॥ जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए ॥ सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ ॥ २ ॥ इहु मनु मैला
इकु न धिआए ॥ अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए ॥ तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहँकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ ॥ ३
॥ सतिगुरु सेवे ता मलु जाए ॥ जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए ॥ हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु
गवावणिआ ॥ ४ ॥ बाझु गुरु है अँधु गुबारा ॥ अगिआनी अँधा अँधु अँधारा ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि
बिसटा माहि पचावणिआ ॥ ५ ॥ मुकते सेवे मुकता होवै ॥ हउमै ममता सबदे खोवै ॥ अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै
भागि गुरु पावणिआ ॥ ६ ॥ आपे बखसे मेलि मिलाए ॥ पूरे गुर ते नामु निधि पाए ॥ सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे
दुखु गवावणिआ ॥ ७ ॥ सदा हजूरि दूरि न जाणहु ॥ गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु ॥ नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर
ते पावणिआ ॥ ८ ॥ ११ ॥ १२ ॥ माझ महला ३ ॥ ऐथै साचे सु आगै साचे ॥ मनु सचा सचै सबदि राचे ॥ सचा सेवहि
सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचा नामु मँनि वसावणिआ ॥ सचे सेवहि सचि समावहि
सचे के गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँडित पड़हि सादु न पावहि ॥ दूजै भाइ माइआ मनु भरमावहि ॥ माइआ मोहि
सभ सुधि गवाई करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ सतिगुरु मिलै ता ततु पाए ॥ हरि का नामु मँनि

वसाए ॥ सबदि मरै मनु मारै अपना मुकती का दरु पावणिआ ॥ ३ ॥ किलविख काटै क्रोधु निवारे ॥ गुर का सबदु रखै उर
 धारे ॥ सचि रते सदा बैरागी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ ४ ॥ अंतरि रतनु मिलै मिलाइआ ॥ त्रिबिधि मनसा त्रिबिधि माइआ
 ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके चउथे पद की सार न पावणिआ ॥ ५ ॥ आपे रंगे रंगु चड़ाए ॥ से जन राते गुर सबदि रंगाए ॥
 हरि रंगु चड़िआ आति अपारा हरि रसि रसि गुण गावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि रिधि सिधि सचु संजमु सोई ॥ गुरमुखि गिआनु
 नामि मुकति होई ॥ गुरमुखि कार सचु कमावहि सचे सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि थापे थापि उथापे ॥ गुरमुखि जाति
 पति सभु आपे ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआए नामे नामि समावणिआ ॥ ८ ॥ १२ ॥ १३ ॥ माझ महला ३ ॥ उतपति
 परलउ सबदे होवै ॥ सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ गुरमुखि वरतै सभु आपे सचा गुरमुखि उपाइ समावणिआ ॥ १ ॥ हउ
 वारी जीउ वारी गुरु पूरा मनि वसावणिआ ॥ गुर ते साति भगति करे दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ गुरमुखि धरती गुरमुखि पाणी ॥ गुरमुखि पवणु बैसंतरु खेलै विडाणी ॥ सो निगुरा जो मरि मरि जमै निगुरे आवण
 जावणिआ ॥ २ ॥ तिनि करतै इकु खेलु रचाइआ ॥ काइआ सररै विचि सभु किछु पाइआ ॥ सबदि भेदि कोई महलु पाए
 महले महलि बुलावणिआ ॥ ३ ॥ सचा साहु सचे वणजारे ॥ सच वणजहि गुर हेति अपारे ॥ सचु विहाइहि सचु कमावहि
 सचो सचु कमावणिआ ॥ ४ ॥ बिनु रासी को वथु किउ पाए ॥ मनमुख भूले लोक सबाए ॥ बिनु रासी सभ खाली चले खाली
 जाइ दुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ इकि सचु वणजहि गुर सबदि पिआरे ॥ आपि तरहि सगले कुल तारे ॥ आए से परवाणु होए
 मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ अंतरि वसतु मूडा बाहरु भाले ॥ मनमुख अंधे फिरहि बेताले ॥ जिथै वथु होवै तिथहु
 कोइ न पावै मनमुख भरमि भुलावणिआ ॥ ७ ॥ आपे देवै सबदि बुलाए ॥ महली महलि सहज सुखु पाए ॥ नानक नामि
 मिलै वडिआई आपे सुणि सुणि धिआवणिआ ॥ ८ ॥ १३ ॥ १४ ॥ माझ महला ३ ॥ सतिगुर

साची सिख सुणाई ॥ हरि चेतहु अँति होइ सखाई ॥ हरि अगमु अगोचरु अनाथु अजोनी सतिगुर कै भाइ पावणिआ ॥ १
 ॥ हउ वारी जीउ वारी आपु निवारणिआ ॥ आपु गवाए ता हरि पाए हरि सिउ सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरबि
 लिखिआ सु करमु कमाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ बिनु भागा गुरु पाईए नाही सबदै मेलि मिलावणिआ ॥
 २ ॥ गुरुमुखि अलिपतु रहै संसारे ॥ गुर कै तकीए नामि अधारे ॥ गुरुमुखि जोरु करे किआ तिस नो आपे खपि दुखु
 पावणिआ ॥ ३ ॥ मनमुखि अँधे सुधि न काई ॥ आतम घाती है जगत कमाई ॥ निँदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु
 मजूरी भारु पहुचावणिआ ॥ ४ ॥ इहु जगु वाडी मेरा प्रभु माली ॥ सदा समाले को नाही खाली ॥ जेही वासना पाए तेही
 वरतै वासू वासु जणावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु रोगी है संसारा ॥ सुखदाता विसरिआ अगम अपारा ॥ दुखीए निति
 फिरहि बिललादे बिनु गुर सांति न पावणिआ ॥ ६ ॥ जिनि कीते सोई बिधि जाणै ॥ आपि करे ता हुकमि पछाणै ॥ जेहा
 अँदरि पाए तेहा वरतै आपे बाहरि पावणिआ ॥ ७ ॥ तिसु बाझहु सचे मै होरु न कोई ॥ जिसु लाइ लए सो निरमलु होई ॥
 नानक नामु वसै घट अँतरि जिसु देवै सो पावणिआ ॥ ८ ॥ १४ ॥ १५ ॥ माझ महला ३ ॥ अँम्रित नामु मँनि वसाए ॥
 हउमै मेरा सभु दुखु गवाए ॥ अँम्रित बाणी सदा सलाहे अँम्रिति अँम्रितु पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी अँम्रित बाणी
 मँनि वसावणिआ ॥ अँम्रित बाणी मँनि वसाए अँम्रितु नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँम्रितु बोलै सदा मुखि वैणी ॥
 अँम्रितु वेखै परखै सदा नैणी ॥ अँम्रित कथा कहै सदा दिनु राती अवरु आखि सुनावणिआ ॥ २ ॥ अँम्रित रँगि रता लिव
 लाए ॥ अँम्रितु गुर परसादी पाए ॥ अँम्रितु रसना बोलै दिनु राती मनि तनि अँम्रितु पीआवणिआ ॥ ३ ॥ सो किछु करै जु
 चिति न होई ॥ तिस दा हुकमु मेटि न सकै कोई ॥ हुकमे वरतै अँम्रित बाणी हुकमे अँम्रितु पीआवणिआ ॥ ४ ॥ अजब कँम
 करते हरि केरे ॥ इहु मनु भूला जांदा फेरे ॥ अँम्रित बाणी सिउ चितु लाए अँम्रित सबदि वजावणिआ ॥ ५ ॥

खोटे खरे तुधु आपि उपाए ॥ तुधु आपे परखे लोक सबाए ॥ खरे परखि खजानै पाइहि खोटे भरमि भुलावणिआ ॥ ६ ॥
 किउ करि वेखा किउ सालाही ॥ गुर परसादी सबदि सलाही ॥ तेरे भाणे विचि अँमितु वसै तूँ भाणै अँमितु पीआवणिआ
 ॥ ७ ॥ अँमित सबदु अँमित हरि बाणी ॥ सतिगुरि सेविरे रिदै समाणी ॥ नानक अँमित नामु सदा सुखदाता पी अँमितु
 सभ भुख लहि जावणिआ ॥ ८ ॥ १५ ॥ १६ ॥ माझ महला ३ ॥ अँमितु वरसै सहजि सुभाए ॥ गुरमुखि विरला कोई
 जनु पाए ॥ अँमितु पी सदा त्रिपतासे करि किरपा त्रिसना बुझावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि अँमितु
 पीआवणिआ ॥ रसना रसु चाखि सदा रहै रँगि राती सहजे हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सहजु को
 पाए ॥ दुबिधा मारे इकसु सिउ लिव लाए ॥ नदरि करे ता हरि गुण गावै नदरी सचि समावणिआ ॥ २ ॥ सभना उपरि
 नदरि प्रभ तेरी ॥ किसै थोड़ी किसै है घणेरी ॥ तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥ ३ ॥ गुरमुखि
 ततु है बीचारा ॥ अँमिति भरे तेरे भँडारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे कोई न पावै गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ४ ॥ सतिगुरु सेवै
 सो जनु सोहै ॥ अँमित नामि अँतरु मनु मोहै ॥ अँमिति मनु तनु बाणी रता अँमितु सहजि सुणावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु
 भूला दूजै भाइ खुआए ॥ नामु न लेवै मरै बिखु खाए ॥ अनदिनु सदा विसटा महि वासा बिनु सेवा जनमु गवावणिआ ॥
 ६ ॥ अँमित पीवै जिस नो आपि पीआए ॥ गुर परसादी सहजि लिव लाए ॥ पूरन पूरि रहिआ सभ आपे गुरमति नदरी
 आवणिआ ॥ ७ ॥ आपे आपि निरँजनु सोई ॥ जिनि सिरजी तिनि आपे गोई ॥ नानक नामु समालि सदा तूँ सहजे
 सचि समावणिआ ॥ ८ ॥ १६ ॥ १७ ॥ माझ महला ३ ॥ से सचि लागे जो तुधु भाए ॥ सदा सचु सेवहि सहज सुभाए
 ॥ सचै सबदि सचा सालाही सचै मेलि मिलावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु सालाहणिआ ॥ सचु धिआइनि से
 सचि राते सचे सचि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखा सचु सभनी थाई ॥ गुर परसादी मँनि वसाई ॥ तनु

सचा रसना सचि राती सचु सुणि आखि वखानणिआ ॥ २ ॥ मनसा मारि सचि समाणी ॥ इनि मनि डीठी सभ आवण
 जाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा मनु निहचलु निज घरि वासा पावणिआ ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ ॥ माइआ मोहु
 सबदि जलाइआ ॥ सचो सचा वेखि सालाही गुर सबदी सचु पावणिआ ॥ ४ ॥ जो सचि राते तिन सची लिव लागी ॥ हरि
 नामु समालहि से वडभागी ॥ सचै सबदि आपि मिलाए सतसंगति सचु गुण गावणिआ ॥ ५ ॥ लेखा पडीऐ जे लेखे विचि
 होवै ॥ ओहु अगमु अगोचरु सबदि सुधि होवै ॥ अनदिनु सच सबदि सालाही होरु कोइ न कीमति पावणिआ ॥ ६ ॥ पडि
 पडि थाके सांति न आई ॥ तिसना जाले सुधि न काई ॥ बिखु बिहाइहि बिखु मोह पिआसे कूडु बोलि बिखु खावणिआ ॥ ७
 ॥ गुर परसादी एको जाणा ॥ दूजा मारि मनु सचि समाणा ॥ नानक एको नामु वरतै मन अंतरि गुर परसादी पावणिआ ॥ ८
 ॥ १७ ॥ १८ ॥ माइ महला ३ ॥ वरन रूप वरतहि सभ तेरे ॥ मरि मरि जंमहि फेर पवहि घणैरे ॥ तूँ एको निहचलु अगम
 अपारा गुरमती बूझ बुझावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी राम नामु मनि वसावणिआ ॥ तिसु रूपु न रेखिआ वरनु न कोई
 गुरमती आपि बुझावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ एका जोति जाणै जे कोई ॥ सतिगुरु सेविऐ परगटु होई ॥ गुपतु परगटु
 वरतै सभ थाई जोती जोति मिलावणिआ ॥ २ ॥ तिसना अगनि जलै संसारा ॥ लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥ मरि मरि
 जनमै पति गवाए अपणी बिरथा जनमु गवावणिआ ॥ ३ ॥ गुर का सबदु को विरला बूझै ॥ आपु मारे ता त्रिभवणु सूझै ॥
 फिरि ओहु मरै न मरणा होवै सहजे सचि समावणिआ ॥ ४ ॥ माइआ महि फिरि चितु न लाए ॥ गुर कै सबदि सद रहै समाए
 ॥ सचु सलाहे सभ घट अंतरि सचो सचु सुहावणिआ ॥ ५ ॥ सचु सालाही सदा हजुरे ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरे ॥ गुर
 परसादी सचु नदरी आवै सचे ही सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ सचु मन अंदरि रहिआ समाइ ॥ सदा सचु निहचलु आवै न जाइ ॥
 सचे लागै सो मनु निरमलु गुरमती सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ सचु सालाही अवरु न कोई ॥ जितु सेविऐ सदा सुखु

होई ॥ नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ ॥ ८ ॥ १८ ॥ १९ ॥ माझ महला ३ ॥ निरमल सबदु निरमल है
 बाणी ॥ निरमल जोति सभ माहि समाणी ॥ निरमल बाणी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावणिआ ॥ १ ॥ हउ
 वारी जीउ वारी सुखदाता मँनि वसावणिआ ॥ हरि निरमलु गुर सबदि सलाही सबदो सुणि तिसा मिटावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ निरमल नामु वसिआ मनि आए ॥ मनु तनु निरमलु माइआ मोहु गवाए ॥ निरमल गुण गावै नित साचे के निरमल नादु
 वजावणिआ ॥ २ ॥ निरमल अँप्रितु गुर ते पाइआ ॥ विचहु आपु मुआ तिथै मोहु न माइआ ॥ निरमल गिआनु धिआनु
 अति निरमलु निरमल बाणी मँनि वसावणिआ ॥ ३ ॥ जो निरमलु सेवे सु निरमलु होवै ॥ हउमै मैलु गुर सबदे धोवै ॥
 निरमल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचे सोभा पावणिआ ॥ ४ ॥ निरमल ते सभ निरमल होवै ॥ निरमलु मनूआ हरि
 सबदि परोवै ॥ निरमल नामि लगे बडभागी निरमलु नामि सुहावणिआ ॥ ५ ॥ सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥ निरमल नामि
 मनु तनु मोहै ॥ सचि नामि मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥ ६ ॥ मनु मैला है दूजै भाइ ॥ मैला चउका मैलै
 थाइ ॥ मैला खाइ फिरि मैलु वधाए मनमुख मैलु दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ मैलै निरमल सभि हुकमि सबाए ॥ से निरमल जो
 हरि साचे भाए ॥ नानक नामु वसै मन अँतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ ॥ ८ ॥ १९ ॥ २० ॥ माझ महला ३ ॥ गोविंदु
 ऊजलु ऊजल हँसा ॥ मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ॥ मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥ १
 ॥ हउ वारी जीउ वारी गोबिंद गुण गावणिआ ॥ गोबिंदु गोबिंदु कहै दिन राती गोबिंद गुण सबदि सुणावणिआ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ गोबिंदु गावहि सहजि सुभाए ॥ गुर कै भै ऊजल हउमै मलु जाए ॥ सदा अनँदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि
 गोबिंद गुण गावणिआ ॥ २ ॥ मनूआ नाचै भगति दिडाए ॥ गुर कै सबदि मनै मनु मिलार ॥ सचा तालु पूरे माइआ मोहु
 चुकाए सबदे निरति करावणिआ ॥ ३ ॥ ऊचा कूके तनहि पछाडे ॥ माइआ मोहि जोहिआ जमकाले ॥ माइआ

मोहु इसु मनहि नचाए अंतरि कपटु दुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ गुरमुखि भगति जा आपि कराए ॥ तनु मनु राता सहजि सुभाए
 ॥ बाणी वजै सबदि वजाए गुरमुखि भगति थाइ पावणिआ ॥ ५ ॥ बहु ताल पूरे वाजे वजाए ॥ ना को सुणे न मँनि वसाए
 ॥ माइआ कारणि पिड़ बँधि नाचै दूजै भाइ दुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुक्ता ॥ इँद्री वसि सच
 सँजमि जुगता ॥ गुर कै सबदि सदा हरि धिआए एहा भगति हरि भावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि भगति जुग चारे होई ॥ होरतु
 भगति न पाए कोई ॥ नानक नामु गुर भगती पाईरे गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ ८ ॥ २० ॥ २१ ॥ माझ महला ३ ॥
 सचा सेवी सचु सालाही ॥ सचै नाइ दुखु कब ही नाही ॥ सुखदाता सेवनि सुखु पाइनि गुरमति मँनि वसावणिआ ॥ १ ॥
 हउ वारी जीउ वारी सुख सहजि समाधि लगावणिआ ॥ जो हरि सेवहि से सदा सोहहि सोभा सुरति सुहावणिआ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ सभु को तेरा भगतु कहाए ॥ सेई भगत तेरै मनि भाए ॥ सचु बाणी तुधै सालाहनि रँगि राते भगति करावणिआ ॥
 २ ॥ सभु को सचे हरि जीउ तेरा ॥ गुरमुखि मिलै ता चूकै फेरा ॥ जा तुधु भावै ता नाइ रचावहि तूँ आपे नाउ जपावणिआ ॥
 ३ ॥ गुरमती हरि मँनि वसाइआ ॥ हरखु सोगु सभु मोहु गवाइआ ॥ इकसु सिउ लिव लागी सद ही हरि नामु मँनि
 वसावणिआ ॥ ४ ॥ भगत रँगि राते सदा तेरै चाए ॥ नउ निधि नामु वसिआ मनि आए ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाइआ सबदे
 मेलि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ तूँ दइआलु सदा सुखदाता ॥ तूँ आपे मेलहि गुरमुखि जाता ॥ तूँ आपे देवहि नामु वडाई नामि
 रते सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ सदा सदा साचे तुधु सालाही गुरमुखि जाता दूजा को नाही ॥ एकसु सिउ मनु रहिआ समाए मनि
 मँनिरे मनहि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि होवै सो सालाहे ॥ साचे ठाकुर वेपरवाहे ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि गुर
 सबदी हरि मेलवणिआ ॥ ८ ॥ २१ ॥ २२ ॥ माझ महला ३ ॥ तेरे भगत सोहहि साचै दरबारे ॥ गुर कै सबदि नामि सवारे
 ॥ सदा अनाँदि रहहि दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी नामु सुणि मँनि वसावणिआ ॥

हरि जीउ सचा ऊचो ऊचा हउमै मारि मिलावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जीउ साचा साची नाई ॥ गुर परसादी किसै
 मिलाई ॥ गुर सबदि मिलहि से विछुडहि नाही सहजे सचि समावणिआ ॥ २ ॥ तुझ ते बाहरि कछू न होइ ॥ तूँ जरि करि
 वेखहि जाणहि सोई ॥ आपे करे कराए करता गुरमति आपि मिलावणिआ ॥ ३ ॥ कामणि गुणवँती हरि पाए ॥ भै भाइ
 सीगरु बणाए ॥ सतिगुरु सेवि सदा सोहागणि सच उपदेसि समावणिआ ॥ ४ ॥ सबदु विसारनि तिना ठउरु न ठाउ ॥
 भ्रमि भूले जिउ सुँजै घरि काउ ॥ हलतु पलतु तिनी दोवै गवाए दुखे दुखि विहावणिआ ॥ ५ ॥ लिखदिआ लिखदिआ
 कागद मसु खोई ॥ दूजै भाइ सुखु पाए न कोई ॥ कूडु लिखहि तै कूडु कमावहि जलि जावहि कूडि चितु लावणिआ ॥ ६
 ॥ गुरमुखि सचो सचु लिखहि वीचारु ॥ से जन सचे पावहि मोख दुआरु ॥ सचु कागदु कलम मसवाणी सचु लिखि
 सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ मेरा प्रभु अंतरि बैठा वेखै ॥ गुर परसादी मिलै सोई जनु लेखै ॥ नानक नामु मिलै वडिआई
 पूरै गुर ते पावणिआ ॥ ८ ॥ २२ ॥ २३ ॥ माझ महला ३ ॥ आतमराम परगासु गुर ते होवै ॥ हउमै मैलु लागी गुर
 सबदी खोवै ॥ मनु निरमलु अनदिनु भगती राता भगति करे हरि पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी आपि भगति
 करनि अवरु भगति करावणिआ ॥ तिना भगत जना कउ सद नमसकारु कीजै जो अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ आपे करता कारणु कराए ॥ जितु भावै तितु कारै लाए ॥ पूरै भागि गुर सेवा होवै गुर सेवा ते सुखु पावणिआ ॥
 २ ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाए ॥ गुर परसादी हरि मँनि वसाए ॥ सदा मुकतु हरि मँनि वसाए सहजे सहजि समावणिआ
 ॥ ३ ॥ बहु करम कमावै मुकति न पाए ॥ देसँतरु भवै दूजै भाइ खुआए ॥ बिरथा जनमु गवाइआ कपटी बिनु सबदै दुखु
 पावणिआ ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ गुर परसादी परम पदु पाए ॥ सतिगुरु आपे मेलि मिलाए मिलि प्रीतम
 सुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ इकि कूडि लागे कूडे फल पाए ॥ दूजै भाइ बिरथा जनमु गवाए ॥ आपि डुबे सगले कुल डोबे कूडु

बोलिं बिखु खावणिआ ॥ ६ ॥ इसु तन महि मनु को गुरमुखि देखै ॥ भाइ भगति जा हउमै सोखै ॥ सिध साधिक
 मोनिधारी रहे लिव लाइ तिन भी तन महि मनु न दिखावणिआ ॥ ७ ॥ आपि कराए करता सोई ॥ होरु कि करे कीतै
 किआ होई ॥ नानक जिसु नामु देवै सो लेवै नामो मँनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २३ ॥ २४ ॥ माझ महला ३ ॥ इसु गुफा
 महि अखुट भंडारा ॥ तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥ आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंजावणिआ ॥ १
 ॥ हउ वारी जीउ वारी अँम्रित नामु मँनि वसावणिआ ॥ अँम्रित नामु महा रसु मीठा गुरमती अँम्रितु पीआवणिआ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ ॥ नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ ॥ बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा
 मँनि वसावणिआ ॥ २ ॥ गुर गिआन अँजनु सचु नेत्री पाइआ ॥ अँतरि चानणु अगिआनु अँधेरु गवाइआ ॥ जोती
 जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ ॥ ३ ॥ सरीरहु भालणि को बाहरि जाए ॥ नामु न लहै बहुतु वेगारि
 दुखु पाए ॥ मनमुख अँधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ ॥ ४ ॥ गुर परसादी सचा हरि पाए ॥ मनि
 तनि वेखै हउमै मैलु जाए ॥ बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ ॥ ५ ॥ नउ दरि ठाके धावतु रहाए ॥
 दसवै निज घरि वासा पाए ॥ ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥ ६ ॥ बिनु सबदै अँतरि
 आनेरा ॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥ सतिगुर हथि कुँजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ ॥ ७ ॥
 गुपतु परगटु तँ सभनी थाई ॥ गुर परसादी मिलि सोझी पाई ॥ नानक नामु सलाहि सदा तँ गुरमुखि मँनि वसावणिआ ॥
 ८ ॥ २४ ॥ २५ ॥ माझ महला ३ ॥ गुरमुखि मिलै मिलाए आपे ॥ कालु न जोहै दुखु न संतापे ॥ हउमै मारि बँधन सभ
 तोड़ै गुरमुखि सबदि सुहावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि हरि नामि सुहावणिआ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि नाचै
 हरि सेती चितु लावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जीवै मरै परवाणु ॥ आरजा न छीजै सबदु पछाणु ॥

गुरमुखिं मरै न कालु न खाए गुरमुखिं सचि समावणिआ ॥ २ ॥ गुरमुखिं हरिं दरिं सोभा पाए ॥ गुरमुखिं विचहु आपु
 गवाए ॥ आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखिं जनमु सवारणिआ ॥ ३ ॥ गुरमुखिं दुखु कदे न लगै सरीरिं ॥ गुरमुखिं हउमै
 चूकै पीर ॥ गुरमुखिं मनु निरमलु फिरिं मैलु न लागै गुरमुखिं सहजिं समावणिआ ॥ ४ ॥ गुरमुखिं नामु मिलै वडिआई ॥
 गुरमुखिं गुण गावै सोभा पाई ॥ सदा अनदिं रहै दिनु राती गुरमुखिं सबदु करावणिआ ॥ ५ ॥ गुरमुखिं अनदिनु सबदे
 राता ॥ गुरमुखिं जुग चारे है जाता ॥ गुरमुखिं गुण गावै सदा निरमलु सबदे भगति करावणिआ ॥ ६ ॥ बाझु गुरू है अँध
 अँधारा ॥ जमकालिं गरठे करहिं पुकारा ॥ अनदिनु रोगी बिसटा के कीड़े बिसटा महिं दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखिं
 आपे करे कराए ॥ गुरमुखिं हिरेद्वै वुठा आपिं आए ॥ नानक नामिं मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ८ ॥ २५ ॥ २६
 ॥ माझ महला ३ ॥ एका जोति जोति है सरीरा ॥ सबदिं दिखाए सतिगुरु पूरा ॥ आपे फरकु कीतोनु घट अँतरिं आपे
 बणत बणावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरिं सचे के गुण गावणिआ ॥ बाझु गुरू को सहजु न पाए गुरमुखिं सहजिं
 समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूँ आपे सोहहिं आपे जगु मोहहिं ॥ तूँ आपे नदरी जगतु परोवहिं ॥ तूँ आपे दुखु सुखु
 देवहिं करते गुरमुखिं हरिं देखावणिआ ॥ २ ॥ आपे करता करे कराए ॥ आपे सबदु गुर मँनि वसाए ॥ सबदे उपजै अँम्रित
 बाणी गुरमुखिं आखिं सुणावणिआ ॥ ३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ बँधन तोड़े सदा है मुकता ॥ सदा मुकतु आपे है
 सचा आपे अलखु लखावणिआ ॥ ४ ॥ आपे माइआ आपे छाइआ ॥ आपु मोहु सभु जगतु उपाइआ ॥ आपे गुणदाता
 गुण गावै आपे आखिं सुणावणिआ ॥ ५ ॥ आपे करे कराए आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ तुझ ते बाहरिं कछु न होवै
 तूँ आपे करै लावणिआ ॥ ६ ॥ आपे मारे आपिं जीवाए ॥ आपे मेले मेलिं मिलार ॥ सेवा ते सदा सुखु पाइआ गुरमुखिं
 सहजिं समावणिआ ॥ ७ ॥ आपे ऊचा ऊचो होई ॥ जिसु आपिं विखाले सुवेखै कोई ॥ नानक नामु वसै घट

अंतरि आपे वेखिं विखालणिआ ॥ ८ ॥ २६ ॥ २७ ॥ माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई ॥ गुर
 परसादी घर ही महि पाई ॥ सदा सरेवी इक मनि धिआई गुरमुखिं सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी
 जगजीवनु मनि वसावणिआ ॥ हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजिं समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घर महि
 धरती धउलु पाताला ॥ घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥ सदा अनदि रहै सुखदाता गुरमति सहजिं समावणिआ ॥ २ ॥
 काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥ जंमण मरणु न चूकै फेरा ॥ गुरमुखिं होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥ ३ ॥
 काइआ अंदरि पापु पुनुं दुइ भाई ॥ दुही मिलि कै खिसटि उपाई ॥ दोवै मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजिं
 समावणिआ ॥ ४ ॥ घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा ॥ चानणु होवै छोडै हउमै मेरा ॥ परगटु सबदु है सुखदाता अनदिनु
 नामु धिआवणिआ ॥ ५ ॥ अंतरि जोति परगटु पासारा ॥ गुर साखी मिटिआ अंधिआरा ॥ कमलु बिगासि सदा सुखु
 पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥ ६ ॥ अंदरि महल रतनी भरे भंडारा ॥ गुरमुखिं पाए नामु अपारा ॥ गुरमुखिं वणजे
 सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ ॥ ७ ॥ आपे वथु राखै आपे देइ ॥ गुरमुखिं वणजहिं केई केइ ॥ नानक जिसु
 नदरिं करे सो पाए करिं किरपा मनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २७ ॥ २८ ॥ माझ महला ३ ॥ हरि आपे मेले सेव कराए ॥ गुर
 कै सबदि भाउ दूजा जाए ॥ हरि निरमलु सदा गुणदाता हरि गुण महि आपि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु
 सचा हिरदै वसावणिआ ॥ सचा नामु सदा है निरमलु गुर सबदी मनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे गुरु दाता करमि
 बिधाता ॥ सेवक सेवहि गुरमुखिं हरि जाता ॥ अमित नामि सदा जन सोहहि गुरमति हरि रसु पावणिआ ॥ २ ॥ इसु
 गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ॥ पूरै गुरि हउमै भरमु चुकाइआ ॥ अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ
 ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि इहु गुफा वीचारे ॥ नामु निरंजनु अंतरि वसै मुरारे ॥ हरि गुण गावै सबदि सुहाए मिलिं प्रीतम

सुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ जमु जागाती दूजै भाइ करु लाए ॥ नावहु भूले देइ सजाए ॥ घड़ी मुहत का लेखा लेवै रतीअहु
मासा तोल कढावणिआ ॥ ५ ॥ पेईअडै पिरु चेतै नाही ॥ दूजै मुठी रोवै धाही ॥ खरी कुआलिओ कुरुपि कुलखणी
सुपनै पिरु नही पावणिआ ॥ ६ ॥ पेईअडै पिरु मँनि वसाइआ ॥ पूरै गुरि हदूरि दिखाइआ ॥ कामणि पिरु राखिआ कँठि
लाइ सबदे पिरु रावै सेज सुहावणिआ ॥ ७ ॥ आपे देवै सदि बुलाए ॥ आपणा नाउ मँनि वसाए ॥ नानक नामु मिलै
वडिआई अनदिनु सदा गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ २८ ॥ २९ ॥ माझ महला ३ ॥ ऊतम जनमु सुथानि है वासा ॥ सतिगुरु
सेवहि घर माहि उदासा ॥ हरि रँगि रहहि सदा रँगि राते हरि रसि मनु त्रिपतावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी पडि बुझि
मँनि वसावणिआ ॥ गुरमुखि पडहि हरि नामु सलाहहि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अलख अभेउ हरि
रहिआ समाए ॥ उपाइ न किती पाइआ जाए ॥ किरपा करे ता सतिगुरु भेटै नदरी मेलि मिलावणिआ ॥ २ ॥ दूजै भाइ
पडै नही बूझै ॥ त्रिबिधि माइआ कारणि लूझै ॥ त्रिबिधि बंधन तूटहि गुर सबदी गुर सबदी मुकति करावणिआ ॥ ३ ॥ इहु
मनु चंचलु वसि न आवै ॥ दुबिधा लागै दह दिसि धावै ॥ बिखु का कीड़ा बिखु महि राता बिखु ही माहि पचावणिआ ॥ ४
॥ हउ हउ करे तै आपु जणाए ॥ बहु करम करै किछु थाइ न पाए ॥ तुझ ते बाहरि किछु न होवै बखसे सबदि सुहावणिआ ॥
५ ॥ उपजै पचै हरि बूझै नाही ॥ अनदिनु दूजै भाइ फिराही ॥ मनमुख जनमु गइआ है बिरथा अँति गइआ पछुतावणिआ
॥ ६ ॥ पिरु परदेसि सिगारु बणाए ॥ मनमुख अँधु ऐसे करम कमाए ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई बिरथा जनमु
गवावणिआ ॥ ७ ॥ हरि का नामु किनै विरलै जाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती सहजे ही
सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ सभ महि वरतै एको सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नानक नामि रते जन सोहहि करि किरपा
आपि मिलावणिआ ॥ ९ ॥ २९ ॥ ३० ॥ माझ महला ३ ॥ मनमुख पडहि पँडित कहावहि ॥ दूजै भाइ महा

दूखु पावहि ॥ बिखिआ माते किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हउमै मारि
 मिलावणिआ ॥ गुर सेवा ते हरि मनि वसिआ हरि रसु सहजि पीआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेदु पड़हि हरि रसु नहीं
 आइआ ॥ वादु वखाणहि मोहे माइआ ॥ अगिआनमती सदा अँधिआरा गुरमुखि बूझि हरि गावणिआ ॥ २ ॥ अकथो
 कथीरे सबदि सुहावै ॥ गुरमतीं, मनि सचो भावै ॥ सचो सचु स्वहि दिनु राती इहु मनु सचि रँगावणिआ ॥ ३ ॥ जो सचि
 स्ते तिन सचो भावै ॥ आपे देइ न पछोतावै ॥ गुर कै सबदि सदा सचु जाता मिलि सचे सुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ कूडु कुसतु
 तिना मैलु न लागै ॥ गुर परसादी अनदिनु जागै ॥ निरमल नामु वसै घट भीतरि जोती जोति मिलावणिआ ॥ ५ ॥ त्रै
 गुण पड़हि हरि ततु न जाणहि ॥ मूलहु भुले गुर सबदु न पछाणहि ॥ मोह बिआपे किछु सूझै नाही गुर सबदी हरि पावणिआ
 ॥ ६ ॥ वेदु पुकारै त्रिबिधि माइआ ॥ मनमुख न बूझहि दूजै भाइआ ॥ त्रै गुण पड़हि हरि एकु न जाणहि बिनु बूझै दुखु
 पावणिआ ॥ ७ ॥ जा तिसु भावै ता आपि मिलाए ॥ गुर सबदी सहसा दूखु चुकाए ॥ नानक नावै की सची वडिआई नामो
 मँनि सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ ३० ३१ ॥ माइ महला ३ ॥ निरगुणु सरगुणु आपे सोई ॥ ततु पछाणै सो पँडितु होई ॥
 आपि तरै सगले कुल तारै हरि नामु मँनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि रसु चखि सादु पावणिआ ॥ हरि रसु
 चाखहि से जन निरमल निरमल नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥ अँतरि ततु
 गिआनि हउमै मारे ॥ नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥ २ ॥ हउमै करै निहकरमी न होवै ॥ गुर
 परसादी हउमै खोवै ॥ अँतरि बिबेकु सदा आपु वीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ ॥ ३ ॥ हरि सरु सागरु निरमलु सोई ॥
 संत चुगहि नित गुरमुखि होई ॥ इसनानु करहि सदा दिनु राती हउमै मैलु चुकावणिआ ॥ ४ ॥ निरमल हँसा प्रेम पिआर ॥
 हरि सरि वसै हउमै मारि ॥ अहिनिशि प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु सदा बगु मैला हउमै मलु

लाई ॥ इसनानु करै परु मैलु न जाई ॥ जीवतु मरै गुर सबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ ॥ ६ ॥ रतनु पदारथु घर ते
 पाइआ ॥ पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ गुर परसादि मिटिआ अँधिआरा घटि चानणु आपु पछानणिआ ॥ ७ ॥ आपि
 उपाए तै आपे वेखै ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु लेखै ॥ नानक नामु वसै घट अँतरि गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ८ ॥ ३१ ॥
 ३२ ॥ माझ महला ३ ॥ माइआ मोहु जगतु सबाइआ ॥ त्रै गुण दीसहि मोहे माइआ ॥ गुर परसादी को विरला बूझै चउथै
 पदि लिव लावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी माइआ मोहु सबदि जलावणिआ ॥ माइआ मोहु जलाए सो हरि सिउ चितु
 लाए हरि दरि महली सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देवी देवा मूलु है माइआ ॥ सिँमिति सासत जिनि उपाइआ ॥ कामु
 क्रोधु पसरिआ संसारे आइ जाइ दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ तिसु विचि गिआन रतनु इकु पाइआ ॥ गुर परसादी मँनि
 वसाइआ ॥ जतु सतु संजमु सचु कमावै गुरि पूरै नामु धिआवणिआ ॥ ३ ॥ पेईअडै धन भरमि भुलाणी ॥ दूजै लागी
 फिरि पछोताणी ॥ हलतु पलतु दोवै गवाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥ ४ ॥ पेईअडै धन कँतु समाले ॥ गुर परसादी वेखै
 नाले ॥ पिर कै सहजि रहै रँगि राती सबदि सिँगारु बणावणिआ ॥ ५ ॥ सफलु जनमु जिना सतिगुरु पाइआ ॥ दूजा
 भाउ गुर सबदि जलाइआ ॥ एको रवि रहिआ घट अँतरि मिलि सतसंगति हरि गुण गावणिआ ॥ ६ ॥ सतिगुरु न सेवे सो
 काहे आइआ ॥ धिगु जीवणु बिरथा जनमु गवाइआ ॥ मनमुखि नामु चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥
 जिनि सिसटि साजी सोई जाणै ॥ आपे मेलै सबदि पछाणै ॥ नानक नामु मिलिआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु
 लिखावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ माझ महला ४ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु आपे ॥ आपे थापे थापि उथापे ॥
 सभ महि वरतै एको सोई गुरमुखि सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी निरँकारी नामु धिआवणिआ ॥ तिसु रूप
 न रेखिआ घटि घटि देखिआ गुरमुखि अलखु लखावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूदइआलु किरपालु प्रभु

सोई ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ गुरु परसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिआ ॥ २ ॥ तूँ आपे सचा सिरजणहारा
 ॥ भगती भरे तेरे भंडारा ॥ गुरुमुखि नामु मिलै मनु भीजै सहजि समाधि लगावणिआ ॥ ३ ॥ अनदिनु गुण गावा प्रभ तेरे
 ॥ तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई जाचा गुरु परसादी तूँ पावणिआ ॥ ४ ॥ अगमु अगोचरु मिति नही
 पाई ॥ अपणी क्रिपा करहि तूँ लैहि मिलई ॥ पूरे गुरु कै सबदि धिआईरे सबदु सेवि सुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ रसना गुणवँती
 गुण गावै ॥ नामु सलाहे सचे भावै ॥ गुरुमुखि सदा रहै रँगि राती मिलि सचे सोभा पावणिआ ॥ ६ ॥ मनमुखु करमु करे
 अहँकारी ॥ जूरे जनमु सभ बाजी हारी ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥ ७ ॥ आपे करता दे
 वडिआई ॥ जिन कउ आपि लिखतु धुरि पाई ॥ नानक नामु मिलै भउ भँजनु गुरु सबदी सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३४
 ॥ माझ महला ५ घरु १ ॥ अंतरि अलखु न जाई लखिआ ॥ नामु रतनु लै गुझा रखिआ ॥ अगमु अगोचरु सभ ते ऊचा
 गुरु कै सबदि लखावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी कलि महि नामु सुणावणिआ ॥ संत पिआरे सचै धारे वडभागी दरसनु
 पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधिक सिध जिसै कउ फिरदे ॥ ब्रहमे इंद्र धिआइनि हिरदे ॥ कोटि तेतीसा खोजहि ता कउ गुरु
 मिलि हिरदै गावणिआ ॥ २ ॥ आठ पहर तुधु जापे पवना ॥ धरती सेवक पाइक चरना ॥ खाणी बाणी सरब निवासी
 सभना कै मनि भावणिआ ॥ ३ ॥ साचा साहिबु गुरुमुखि जापै ॥ पूरे गुरु कै सबदि सिजापै ॥ जिन पीआ सेई त्रिपतासे सचे
 सचि अघावणिआ ॥ ४ ॥ तिसु घरि सहजा सोई सुहेला ॥ अनद बिनोद करे सद केला ॥ सो धँनवँता सो वड साहा जो गुरु
 चरणी मनु लावणिआ ॥ ५ ॥ पहिलो दे तैं रिजकु समाहा ॥ पिछो दे तैं जँतु उपाहा ॥ तुधु जेवडु दाता अवरु न सुआमी लवै
 न कोई लावणिआ ॥ ६ ॥ जिसु तूँ तुठा सो तुधु धिआए ॥ साध जना का मँत्रु कमाए ॥ आपि तरै सगलै कुल तारे तिसु
 दरगह ठाक न पावणिआ ॥ ७ ॥ तूँ वडा तूँ ऊचो ऊचा ॥ तूँ बेअँतु अति मूचो मूचा ॥ हउ कुरबाणी तेरै वँजा नानक दास

दसावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३७ ॥ माझ महला ७ ॥ कउणु सु मुकता कउनु सु जुगता ॥ कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता
 ॥ कउणु सु गिरही कउणु उदासी कउणु सु कीमति पाए जीउ ॥ १ ॥ किनि बिधि बाधा किनि बिधि छूटा ॥ किनि बिधि
 आवणु जावणु तूटा ॥ कउणु करम कउणु निहकरमा कउणु सु कहै कहाए जीउ ॥ २ ॥ कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ
 ॥ कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥ किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै इह बिधि कउणु प्रगटाए जीउ ॥ ३ ॥ कउणु
 सु अखरु जितु धावतु रहता ॥ कउणु उपदेसु जितु दुख सुखु सम सहता ॥ कउणु सु चाल जितु पारब्रहमु धिआए किनि
 बिधि कीरतनु गाए जीउ ॥ ४ ॥ गुरमुखि मुकता गुरमुखि जुगता ॥ गुरमुखि गिआनी गुरमुखि बकता ॥ धंनु गिरही
 उदासी गुरमुखि गुरमुखि कीमति पाए जीउ ॥ ५ ॥ हउमै बाधा गुरमुखि छूटा ॥ गुरमुखि आवणु जावणु तूटा ॥ गुरमुखि
 करम गुरमुखि निहकरमा गुरमुखि करे सु सुभाए जीउ ॥ ६ ॥ गुरमुखि सुखीआ मनमुखि दुखीआ ॥ गुरमुखि सनमुखु
 मनमुखि वेमुखीआ ॥ गुरमुखि मिलीऐ मनमुखि विछुरै गुरमुखि बिधि प्रगटाए जीउ ॥ ७ ॥ गुरमुखि अखरु जितु धावतु
 रहता ॥ गुरमुखि उपदेसु दुखु सुखु सम सहता ॥ गुरमुखि चाल जितु पारब्रहमु धिआए गुरमुखि कीरतनु गाए जीउ ॥ ८ ॥
 सगली बणत बणाई आपे ॥ आपे करे कराए थापे ॥ इकसु ते होइओ अनंता नानक एकसु माहि समाए जीउ ॥ ९ ॥ २ ॥
 ३६ ॥ माझ महला ७ ॥ प्रभु अबिनासी ता किआ काडा ॥ हरि भगवँता ता जनु खरा सुखाला ॥ जीअ प्रान मान
 सुखदाता तूँ करहि सोई सुखु पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि मनि तनि भावणिआ ॥ तूँ मेरा परबतु तूँ मेरा
 ओला तुम सँगि लवै न लावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा कीता जिसु लागै मीठा ॥ घटि घटि पारब्रहमु तिनि जनि डीठा ॥
 थानि थनंतरि तूँ है तूँ है इको इकु वरतावणिआ ॥ २ ॥ सगल मनोरथ तूँ देवणहारा ॥ भगती भाइ भरे भँडारा ॥ दइआ
 धारि रखे तुधु सेई पूरै करमि समावणिआ ॥ ३ ॥ अँध कूप ते कँढे चाड़े ॥ करि किरपा दास नदरि निहाले ॥ गुण गावहि

पूरन अबिनासी कहि सुणि तोटि न आवणिआ ॥ ४ ॥ ऐथै ओथै तूँ है रखवाला ॥ मात गरभ महि तुम ही पाला ॥ माइआ
 अगनि न पोहै तिन कउ रँगि रते गुण गावणिआ ॥ ५ ॥ किआ गुण तेरे आखि समाली ॥ मन तन अंतरि तुधु नदरि निहाली
 ॥ तूँ मेरा मीतु साजणु मेरा सुआमी तुधु बिनु अवरु न जानणिआ ॥ ६ ॥ जिस कउ तूँ प्रभ भइआ सहाई ॥ तिसु तती वाउ न
 लगै काई ॥ तू साहिबु सरणि सुखदाता सतसंगति जपि प्रगटावणिआ ॥ ७ ॥ तूँ ऊच अथाहु अपारु अमोला ॥ तूँ साचा
 साहिबु दासु तेरा गोला ॥ तूँ मीरा साची ठकुराई नानक बलि बलि जावणिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ३७ ॥ माइ महला ५ घरु २ ॥
 नित नित दयु समालीरे ॥ मूलि न मनहु विसारीरे ॥ रहाउ ॥ सँता संगति पाईरे ॥ जितु जम कै पंथि न जाईरे ॥ तोसा हरि
 का नामु लै तेरे कुलहि न लागै गालि जीउ ॥ १ ॥ जो सिमरँदे साँईरे ॥ नरकि न सेई पाईरे ॥ तती वाउ न लगई जिन मनि
 वुठा आइ जीउ ॥ २ ॥ सेई सुँदर सोहणे ॥ साधसँगि जिन बैहणे ॥ हरि धनु जिनी सँजिआ सेई गँभीर अपार जीउ ॥ ३ ॥
 हरि अमिउ रसाइणु पीवीरे ॥ मुहि डिठै जन कै जीवीरे ॥ कारज सभि सवारि लै नित पूजहु गुर के पाव जीउ ॥ ४ ॥ जो हरि
 कीता आपणा ॥ तिनहि गुसाई जापणा ॥ सो सूरु परधानु सो मसतकि जिस दै भागु जीउ ॥ ५ ॥ मन मँधे प्रभु अवगाहीआ
 ॥ एहि रस भोगण पातिसाहीआ ॥ मँदा मूलि न उपजिओ तरे सची कारै लागि जीउ ॥ ६ ॥ करता मँनि वसाइआ ॥ जनमै
 का फलु पाइआ ॥ मनि भावँदा कँतु हरि तेरा थिरु होआ सोहागु जीउ ॥ ७ ॥ अटल पदारथ पाइआ ॥ भै भँजन की
 सरणाइआ ॥ लाइ अँचलि नानक तारिअनु जिता जनमु अपार जीउ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ३८ ॥

१३२

हरि जपि जपे मनु धीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि गुरदेउ

मिटि गए भै दूरे ॥ १ ॥ सरनि आवै पारब्रह्म की ता फिरि काहे झूरे ॥ २ ॥ चरन सेव सँत साध के सगल मनोरथ पूरे ॥
 ३ ॥ घटि घटि एकु वरतदा जलि थलि महीअलि पूरे ॥ ४ ॥ पाप बिनासनु सेविआ पवित्र सँतन की धूरे ॥ ५ ॥ सभ
 छडाई खसमि आपि हरि जपि भई ठरुरे ॥ ६ ॥ करतै कीआ तपावसो दुसट मुए होइ मूरे ॥ ७ ॥ नानक रता सचि नाइ
 हरि वेखै सदा हजुरे ॥ ८ ॥ ५ ॥ ३९ ॥ १ ॥ ३२ ॥ १ ॥ ५ ॥ ३९ ॥

बारह माहा मांडा महला ५ घरु ४ ॥ १३३ ॥ १३३ ॥ १३३ ॥

किरति करम के वीछुडे करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुँट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै
 न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु
 घरि हरि कँतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ सब सीगार तँबोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभ सुआमी कँत विहूणीआ
 मीत सजण सभिं जाम ॥ नानक की बेनँतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी सँगि प्रभ जिस का निहचल
 धाम ॥ १ ॥ चेति गोविंद अराधीऐ होवै अनँदु घणा ॥ सँत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ जिनि पाइआ प्रभु
 आपणा आए तिसहि गणा ॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ
 विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी रविआ सो प्रभू तिँना भागु मणा ॥ हरि दरसन कँउ मनु
 लोचदा नानक पिआस मना ॥ चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥ २ ॥ वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम
 बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥ पुत्र कलत्र न सँगि धना हरि अविनासी ओहु ॥ पलचि
 पलचि सगली मुई झूठै धँधै मोहु ॥ इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ द्यु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु

अवरु न कोई ॥ प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥ नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ वैसाखु
 सुहावा तां लगे जा संतु भेटै हरि सोइ ॥ ३ ॥ हरि हेठ जुडंदा लोड़ीरे जिसु अगै सभि निर्वनि ॥ हरि सजण दावणि लागिआ
 किसै न देई बनि ॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगे नाही सनि ॥ रंग सभे नाराइगै जेते मनि भावनि ॥ जो हरि लोडे सो
 करे सोई जीअ करनि ॥ जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धनि ॥ आपण लीआ जे मिलै विछुडि किउ रोवनि ॥ साधू
 सँगु परापते नानक रंग माणनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथनि ॥ ४ ॥ आसाडु तपंदा तिसु लगे हरि
 नाहु न जिना पासि ॥ जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस सँदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीरे गलि पईसु जम की फास ॥
 जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधू भेटीरे सो दरगह
 होइ खलासु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नहीं नानक की अरदासि ॥
 आसाडु सुहंदा तिसु लगे जिसु मनि हरि चरण निवास ॥ ५ ॥ सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु
 रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अँमित बूँद सुहावणी मिलि साधू
 पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ सँगि मउलिआ सँम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥
 जिनी सखीए प्रभु पाइआ हँउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना
 सुहावणी जिन राम नामु उरि हारु ॥ ६ ॥ भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइआ कारजि नाही
 केतु ॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥ छडि खडोते खिनै
 माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥ हथ मरोडै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा सँदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ
 सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥ ७ ॥ असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ

मिलीरे हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ सँत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥
 विणु प्रभु किय सुखु पाईरे दूजी नाही जाइ ॥ जिंन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि
 लेहु प्रभू लडि लाइ ॥ जो हरि कँति मिलाईआ सि विछुडि कतहि न जाइ ॥ प्रभु विणु दूजा को नहीं नानक हरि सरणाइ ॥
 असू सुखी वसँदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥ ८ ॥ कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआं
 विआपन्यि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगन्हि जनम विजोग ॥ खिन महि कउडे होइ गए जितडे माइआ भोग ॥ विचु
 न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि सँजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि
 सभि बिओग ॥ नानक कउ प्रभु राखि लेहि मेरे साहिब बँदी मोच ॥ कतिक होवै साधसँगु बिनसहि सभे सोच ॥ ९ ॥
 मँघरि माहि सोहँदीआ हरि पिर सँगि बैठडीआह ॥ तिन्ह की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलडीआह ॥ तनु मनु
 मउलिआ राम सिउ सँगि साध सहेलीडीआह ॥ साध जना ते बाहरी से रहन्हि इकेलडीआह ॥ तिन्ह दुखु न कबहू उतरै से
 जम कै वसि पडीआह ॥ जिन्ही राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खडीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कँठि तिन्हा
 जडीआह ॥ नानक बाँछै धूडि प्रभु सरणी दरि पडीआह ॥ मँघरि प्रभु आराधणा बहुडि न जनमडीआह ॥ १० ॥ पोखि
 तुखारु न विआपई कँठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥ ओट गोविंद गोपाल राइ
 सेवा सुआमी लाहु ॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ करु
 गहि लीनी पारब्रहमि बहुडि न विछुडीआहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक
 दरि पईआहु ॥ पोखु सोहँदा सरब सुखु जिसु बखसे वेपरवाहु ॥ ११ ॥ माघि मजनु सँगि साधूआ धूडी करि इसनानु ॥
 हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहिरे बिनसै

लोभु सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥ जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरवानु ॥ माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥ १२ ॥ फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥ संत सहार्इ राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥ हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥ हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥ संसार सागर ते रखिअनु बहुडि न जनमै धाइ ॥ जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥ फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥ १३ ॥ जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥ हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥ सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥ कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥ माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु रहे ॥ १४ ॥ १ ॥

माइ महला ७ दिन रैणि ॥ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सेवी सतिगुरु आपणा हरि सिमरी दिन सभिरैण ॥ आपु तिआगि सरणी पवां मुखि बोली मिठडे वैण ॥ जनम जनम का विछुडिआ हरि मेलहु सजणु सैण ॥ जो जीअ हरि ते विछुडे से सुखि न वसनि भैण ॥ हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ खोजि डिठे सभिरैण ॥ आप कमाणै विछुडी दोसु न काहू देण ॥ करि किरपा प्रभु राखि लेहु होरु नाही करण करेण ॥ हरि तुधु विणु खाकू रूलणा कहीऐ किथै वैण ॥ नानक की बेनंतीआ हरि सुरजनु देखा नैण ॥ १ ॥ जीअ की बिरथा सो सुणे हरि संमिथ पुरखु अपारु ॥ मरणि जीवणि

आराधना सभना का आधारु ॥ ससुरै पेईरे तिसु कँत की वडा जिसु परवारु ॥ ऊचा अगम अगाधि बोध किछु अँतु न पारावारु
 ॥ सेवा सा तिसु भावसी सँता की होइ छारु ॥ दीना नाथ दैआल देव पतित उधारणहारु ॥ आदि जुगादी रखदा सचु नामु
 करतारु ॥ कीमति कोइ न जाणई को नाही तोलणहारु ॥ मन तन अँतरि वसि रहे नानक नही सुमारु ॥ दिनु रैणि जिं प्रभ कँउ
 सेवदे तिन कै सद बलिहार ॥ २ ॥ सँत अराधनि सद सदा सभना का बखसिँदु ॥ जीउ पिँडु जिनि साजिआ करि किरपा दितीनु
 जिँदु ॥ गुरु सबदी आराधीरे जपीरे निरमल मँतु ॥ कीमति कहणु न जाईरे परमेसुरु बेअँतु ॥ जिसु मनि वसै नराइणो सो
 कहीरे भगवँतु ॥ जीअ की लोचा पूरीरे मिलै सुआमी कँतु ॥ नानकु जीवै जपि हरी दोख सभे ही हँतु ॥ दिनु रैणि जिसु न विसरै
 सो हरिआ होवै जँतु ॥ ३ ॥ सरब कला प्रभ पूरणो मँजु निमाणी थाउ ॥ हरि ओट गही मन अँदरे जपि जपि जीवां नाउ ॥ करि
 किरपा प्रभ आपणी जन धूडी सँगि समाउ ॥ जिउ तँ राखहि तिउ रहा तेरा दिता पैना खाउ ॥ उदमु सोई कराइ प्रभ मिलि साधू
 गुण गाउ ॥ दूजी जाइ न सुझई किथै कूकण जाउ ॥ अगिआन बिनासन तम हरण ऊचे अगम अमाउ ॥ मनु विछुडिआ हरि
 मेलीरे नानक एहु सुआउ ॥ सरब कलिआणा तितु दिनि हरि परसी गुरु के पाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

वार माझा की तथा सलोक महला १ मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥

वसिँति नाम करता पुरख गुरु प्रसादि ॥

सलोक मः १ ॥ गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥ अमर पदारथु नानका मनि मानिरे सुखु होइ ॥ १ ॥ मः १ ॥
 पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥ दूजै माइ बाप की सुधि ॥ तीजै भया भाभी बेब ॥ चउथै पिआरि उपँनी खेड ॥ पँजवै खाण
 पीअण की धातु ॥ छिवै कामु न पुछै जाति ॥ सतवै सँजि कीआ घर वासु ॥ अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥ नावै धउले

उभे साह ॥ दसवै दधा होआ सुआह ॥ गए सिगीत पुकारी धाह ॥ उडिआ हँसु दसाए राह ॥ आइआ गइआ मुइआ नाउ
 ॥ पिछै पतलि सदिहु काव ॥ नानक मनमुखि अँधु पिआरु ॥ बाझु गुरू डुबा संसारु ॥ २ ॥ मः १ ॥ दस बालतणि
 बीस खणि तीसा का सुँदरु कहावै ॥ चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोडेपा आवै ॥ सतरि का मतिहीणु
 असीहां का विउहारु न पावै ॥ नवै का सिंहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥ ढँढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूरु का
 धवलहरु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तूँ करता पुरखु अगँमु है आपि खिसटि उपाती ॥ रँग परँग उपारजना बहु बहु बिधि भाती ॥ तूँ
 जाणहि जिनि उपाईरे सभु खेलु तुमाती ॥ इकि आवहि इकि जाहि उठि बिनु नावै मरि जाती ॥ गुरमुखि रँगि चलूलिआ
 रँगि हरि रँगि राती ॥ सो सेवहु सति निरँजनो हरि पुरखु बिधाती ॥ तूँ आपे आपि सुजाणु है वड पुरखु वडाती ॥ जो मनि
 चिति तुधु धिआइदे मेरे सचिआ बलि बलि हउ तिन जाती ॥ १ ॥ सलोक मः १ ॥ जीउ पाइ तनु साजिआ रखिआ बणत
 बणाइ ॥ अखी देखै जिहवा बोलै कँनी सुरति समाइ ॥ पैरी चलै हथी करणा दिता पैनै खाइ ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न
 जाणै अँधा अँधु कमाइ ॥ जा भजै ता ठीकरु होवै घाड़त घड़ी न जाइ ॥ नानक गुर बिनु नाहि पति पति विणु पारि न पाइ
 ॥ १ ॥ मः २ ॥ देंदे थावहु दिता चँगा मनमुखि ऐसा जाणीरे ॥ सुरति मति चतुराई ता की किआ करि आखि वखाणीरे ॥
 अँतरि बहि कै करम कमावै सो चहु कुँडी जाणीरे ॥ जो धरमु कमावै तिसु धरम नाउ होवै पापि कमाणै पापी जाणीरे ॥ तूँ
 आपे खेल करहि सभि करते किआ दूजा आखि वखाणीरे ॥ जिचरु तेरी जोति तिचरु जोती विचि तूँ बोलहि विणु जोती
 कोई किछु करिहु दिखा सिआणीरे ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि इको सुघडु सुजाणीरे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे
 जगतु उपाइ कै तुधु आपे धँधै लाइआ ॥ मोह ठगउली पाइ कै तुधु आपहु जगतु खुआइआ ॥ तिसना अँदरि अगनि है नह
 तिपतै भुखा तिहाइआ ॥ सहसा इहु संसारु है मरि जँमै आइआ जाइआ ॥ बिनु सतिगुर मोहु न तुटई सभि थके करम

कमाइआ ॥ गुरमती नामु धिआईरे सुखि रजा जा तुधु भाइआ ॥ कुलु उधारे आपणा धँनु जणेदी माइआ ॥ सोभा सुरति
 सुहावणी जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥ २ ॥ सलोकु मः २ ॥ अखी बाइहु वेखणा विणु कँना सुनणा ॥ पैरा बाइहु
 चलणा विणु हथा करणा ॥ जीभै बाइहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥ नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥ १
 ॥ मः २ ॥ दिसै सुणीरे जाणीरे साउ न पाइआ जाइ ॥ रुहला टुँडा अँधुला किउ गलि लगै धाइ ॥ भै के चरण कर भाव
 के लोइण सुरति करेइ ॥ नानकु कहै सिआणीए इव कँत मिलावा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सदा सदा तूँ एकु है तुधु दूजा खेलु
 रचाइआ ॥ हउमै गरबु उपाइ कै लोभु अँतरि जँता पाइआ ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू सभ करे तेरा कराइआ ॥ इकना
 बखसहि मेलि लैहि गुरमती तुधै लाइआ ॥ इकि खडे करहि तेरी चाकरी विणु नावै होरु न भाइआ ॥ होरु कार वेकार है
 इकि सची कारै लाइआ ॥ पुतु कलतु कुटँबु है इकि अलिपतु रहे जो तुधु भाइआ ॥ ओहि अँदरहु बाहरहु निरमले सचै नाइ
 समाइआ ॥ ३ ॥ सलोकु मः १ ॥ सुइने कै परबति गुफा करी कै पाणी पइआलि ॥ कै विचि धरती कै आकासी उरधि रहा
 सिरि भारि ॥ पुरु करि काइआ कपडु पहिरा धोवा सदा कारि ॥ बगा रता पीअला काला बेदा करी पुकार ॥ होइ कुचीलु
 रहा मलु धारी दुरमति मति विकार ॥ ना हउ ना मै ना हउ होवा नानक सबदु वीचारि ॥ १ ॥ मः १ ॥ वसत्र परखालि
 परखाले काइआ आपे सँजमि होवै ॥ अँतरि मैलु लगी नही जाणै बाहरहु मलि मलि धोवै ॥ अँधा भूलि पइआ जम जाले ॥
 वसतु पराई अपुनी करि जानै हउमै विचि दुखु घाले ॥ नानक गुरमुखि हउमै तुटै ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ नामु जपे
 नामो आराधे नामे सुखि समावै ॥ २ ॥ पवड़ी ॥ काइआ हँसि सँजोगु मेलि मिलाइआ ॥ तिन ही कीआ विजोगु जिनि
 उपाइआ ॥ मूरखु भोगे भोगु दुखु सबाइआ ॥ सुखहु उठे रोग पाप कमाइआ ॥ हरखहु सोगु विजोगु उपाइ खपाइआ ॥
 मूरख गणत गणाइ झगडा पाइआ ॥ सतिगुर हथि निबेडु झगडु चुकाइआ ॥ करता करे सु होगु न चलै चलाइआ

॥ ४ ॥ सलोकु मः १ ॥ कूडु बोलि मुरदारु खाइ ॥ अवरी नो समझावणि जाइ ॥ मुठा आपि मुहाए साथै ॥ नानक ऐसा
 आगू जापै ॥ १ ॥ महला ४ ॥ जिस दै अँदरि सचु है सो सचा नामु मुखि सचु अलाए ॥ ओहु हरि मारगि आपि चलदा
 होरना नो हरि मारगि पाए ॥ जे अगै तीरथु होइ ता मलु लहै छपड़ि नातै सगवी मलु लाए ॥ तीरथु पूरा सतिगुरू जो
 अनदिनु हरि हरि नामु धिआए ॥ ओहु आपि छुटा कुटंब सिउ दे हरि हरि नामु सभ खिसटि छडाए ॥ जन नानक तिसु
 बलिहारणै जो आपि जपै अवरा नामु जपाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि कँद मूलु चुणि खाहि वण खँडि वासा ॥ इकि भगवा वेसु
 करि फिरहि जोगी सँनिआसा ॥ अँदरि तिसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥ बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥
 जमकालु सिरहु न उतरै त्रिबिधि मनसा ॥ गुरमती कालु न आवै नेडै जा होवै दासनि दासा ॥ सचा सबदु सचु मनि घर ही
 माहि उदासा ॥ नानक सतिगुरू सेवनि आपणा से आसा ते निरासा ॥ ५ ॥ सलोकु मः १ ॥ जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ
 पलीतु ॥ जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु ॥ अवरि दिवाजे
 दुनी के झूठे अमल करेहु ॥ १ ॥ मः १ ॥ जा हउ नाही ता किआ आखा किहु नाही किआ होवा ॥ कीता करणा कहिआ
 कथना भरिआ भरि भरि धोवां ॥ आपि न बुझा लोक बुझाई ऐसा आगू होवां ॥ नानक अँधा होइ कै दसे राहै सभसु मुहाए
 साथै ॥ अगै गइआ मुहे मुहि पाहि सु ऐसा आगू जापै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माहा रुती सभ तूँ घड़ी मूरत वीचारा ॥ तूँ गणतै
 किनै न पाइओ सचे अलख अपारा ॥ पड़िआ मूरख आखीरे जिसु लबु लोभु अहँकारा ॥ नाउ पड़ीरे नाउ बुझीरे गुरमती
 वीचारा ॥ गुरमती नामु धनु खटिआ भगती भरे भँडारा ॥ निरमलु नामु मँनिआ दरि सचै सचिआरा ॥ जिस दा जीउ पराणु
 है अँतरि जोति अपारा ॥ सचा साहु इकु तूँ होरु जगतु वणजारा ॥ ६ ॥ सलोकु मः १ ॥ मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु
 हलालु कुराणु ॥ सरम सुँनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥ करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ॥ तसबी सा तिसु

भावसी नानक रखै लाज ॥ १ ॥ मः १ ॥ हकु पराइआ नानक उस सूअर उसु गाइ ॥ गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु
 न खाइ ॥ गली भिसति न जाईरे छुटै सचु कमाइ ॥ मारण पाहिं हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥ नानक गली कूड़ीई
 कूड़ो पलै पाइ ॥ २ ॥ मः १ ॥ पँजि निवाजा वखत पँजि पँजा पँजे नाउ ॥ पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥
 चउथी नीअति रासि मनु पँजवी सिफति सनाइ ॥ करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥ नानक जेते कूड़िआर
 कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥ सतिगुर तुठै पाईअनि अँदरि रतन
 भँडारा ॥ विणु गुर किनै न लधिआ अँधे भउकि मुए कूड़िआरा ॥ मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझहि वीचारा ॥ इकसु बाझहु
 दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥ इकि निरधन सदा भउकदे इकना भरे तुजारा ॥ विणु नावै होरु धनु नाही होरु
 बिखिआ सभु छारा ॥ नानक आपि कराए करे आपि हुकमि सवारणहारा ॥ ७ ॥ सलोकु मः १ ॥ मुसलमाणु कहावणु
 मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै ॥ अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकल माना मालु मुसावै ॥ होइ मुसलिमु दीन
 मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥ ख की रजाइ मँने सिर उपरि करता मँने आपु गवावै ॥ तउ नानक सरब जीआ
 मिहरँमति होइ त मुसलमाणु कहावै ॥ १ ॥ महला ४ ॥ परहरि काम क्रोधु झूठु निँदा तजि माइआ अहँकारु चुकावै ॥
 तजि कामु कामिनी मोहु तजै ता अँजन माहि निरँजनु पावै ॥ तजि मानु अभिमानु प्रीति सुत दारा तजि पिआस आस राम
 लिव लावै ॥ नानक साचा मनि वसै साच सबदि हरि नामि समावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ राजे रयति सिकदार कोइ न रहसीओ
 ॥ हट पटण बाजार हुकमी ढहसीओ ॥ पके बँक दुआर मूरखु जाणै आपणे ॥ दरबि भरे भँडार रीते इकि खणे ॥ ताजी
 रथ तुखार हाथी पाखरे ॥ बाग मिलख घर बार किथै सि आपणे ॥ तँबू पलँघ निवार सराइचे लालती ॥ नानक सच
 दातारु सिनाखतु कुदरती ॥ ८ ॥ सलोकु मः १ ॥ नदीआ होवहि धेणवा सुँम होवहि दुधु घीउ ॥ सगली

धरती सकर होवै खुसी करे नित जीउ ॥ परबतु सुइना रुपा होवै हीरे लाल जड़ाउ ॥ भी तूँ है सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ १ ॥ मः १ ॥ भार अठारह मेवा होवै गरुड़ा होइ सुआउ ॥ चँदु सूरजु दुइ फिरदे रखीअहि निहचलु होवै थाउ ॥ भी तूँ है सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ २ ॥ मः १ ॥ जे देहै दुखु लाईरे पाप गरह दुइ राहु ॥ रतु पीणे राजे सिरै उपरि रखीअहि एवै जापै भाउ ॥ भी तूँ है सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ ३ ॥ मः १ ॥ अगी पाला कपडु होवै खाणा होवै वाउ ॥ सुरगै दीआ मोहणीआ इसतरीआ होवनि नानक सभो जाउ ॥ भी तूँ है सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ ४ ॥ पवड़ी ॥ बदफैली गैबाना खसमु न जाणई ॥ सो कहीरे देवाना आपु न पछाणई ॥ कलहि बुरी संसारि वादे खपीरे ॥ विणु नावै वेकारि भरमे पचीरे ॥ राह दोवै इकु जाणै सोई सिझसी ॥ कुफर गोअ कुफराणै पइआ दझसी ॥ सभ दुनीआ सुबहानु सचि समाईरे ॥ सिझै दरि दीवानि आपु गवाईरे ॥ ५ ॥ मः १ सलोकु ॥ सो जीविआ जिंसु मनि वसिआ सोइ ॥ नानक अवरु न जीवै कोइ ॥ जो जीवै पति लथी जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ राजि रँगु मालि रँगु ॥ रँगि रता नचै नँगु ॥ नानक ठगिआ मुठा जाइ ॥ विणु नावै पति गइआ गवाइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ किआ खाधै किआ पैधै होइ ॥ जा मनि नाही सचा सोइ ॥ किआ मेवा किआ घिउ गुडु मिठा किआ मैदा किआ मासु ॥ किआ कपडु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास ॥ किआ लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु ॥ नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु ॥ २ ॥ पवड़ी ॥ जाती दै किआ हथि सचु परखीरे ॥ महुरा होवै हथि मरीरे चखीरे ॥ सचे की सिरकार जुगु जुगु जाणीरे ॥ हुकमु मँने सिरदारु दरि दीबाणीरे ॥ फुरमानी है कार खसमि पठाइआ ॥ तबलबाज बीचार सबदि सुणाइआ ॥ इकि होए असवार इकना साखती ॥ इकनी बधे भार इकना ताखती ॥ १० ॥ सलोक मः १ ॥ जा पका ता कटिआ रही सु पलरि वाडि ॥ सणु कीसारा चिथिआ कणु लइआ तनु झाडि ॥ दुइ पुडु चकी जोडि कै पीसण आइ बहिठु ॥ जो दरि रहे सु उबरे नानक अजबु डिठु ॥ १ ॥ मः १ ॥

वेखु जि मिठा कटिआ कटि कुटि बधा पाइ ॥ खुँढा अँदरि रखि कै देनि सु मल सजाइ ॥ रसु कसु टटरि पाईऐ तपै तै विललाइ ॥
 ॥ भी सो फोगु समालीऐ दिचै अगि जालाइ ॥ नानक मिठै पतरीऐ वेखहु लोका आइ ॥ २ ॥ पवडी ॥ इकना मरणु न
 चिति आस घणेरिआ ॥ मरि मरि जँमहि नित किसै न केरिआ ॥ आपनडै मनि चिति कहनि चँगेरिआ ॥ जमराजै नित
 नित मनमुख हेरिआ ॥ मनमुख लूण हाराम किआ न जाणिआ ॥ बधे करनि सलाम खसम न भाणिआ ॥ सचु मिलै मुखि
 नामु साहिब भावसी ॥ करसनि तखति सलामु लिखिआ पावसी ॥ ११ ॥ मः १ सलोकु ॥ मछी तारु किआ करे पँखी
 किआ आकासु ॥ पथर पाला किआ करे खुसरे किआ घर वासु ॥ कुते चँदनु लाईऐ भी सो कुती धातु ॥ बोला जे समझाईऐ
 पडीअहि सिँमिति पाठ ॥ अँधा वानणि रखीऐ दीवे बलहि पचास ॥ चउणे सुइना पाईऐ चुणि चुणि खावै घासु ॥ लोहा
 मारणि पाईऐ ढहै न होइ कपास ॥ नानक मूरख एहि गुण बोले सदा विणासु ॥ १ ॥ मः १ ॥ कैहा कँचनु तुटै सारु ॥
 अगनी गँडु पाए लोहारु ॥ गोरी सेती तुटै भतारु ॥ पुतीं, गँडु पवै संसारि ॥ राजा मँगै दितै गँडु पाइ ॥ भुखिआ गँडु पवै
 जा खाइ ॥ काला गँडु नदीआ मीह झोल ॥ गँडु परीती मिठे बोल ॥ बेदा गँडु बोले सचु कोइ ॥ मुइआ गँडु नेकी सतु होइ
 ॥ एतु गँडि वरतै संसारु ॥ मूरख गँडु पवै मुहि मार ॥ नानकु आखै एहु बीचारु ॥ सिफती गँडु पवै दरबारि ॥ २ ॥
 पउडी ॥ आपे कुदरति साजि कै आपे करे बीचारु ॥ इकि खोटे इकि खरे आपे परखणहारु ॥ खरे खजानै पाईअहि खोटे
 सटीअहि बाहर वारि ॥ खोटे सची दरगह सुटीअहि किसु आगै करहि पुकार ॥ सतिगुर पिछै भजि पवहि एहा करणी सारु
 ॥ सतिगुरु खोटीअहि खरे करे सबदि सवारणहारु ॥ सची दरगह मँनीअनि गुर कै प्रेम पिआरि ॥ गणत तिना दी को
 किआ करे जो आपि बखसे करतसरि ॥ १२ ॥ सलोकु मः १ ॥ हम जेर जिमी दुनीआ पीरा मसाइका राइआ ॥ मे रवदि
 बादिसाहा अफजू खुदाइ ॥ एक तुही एक तुही ॥ १ ॥ मः १ ॥ न देव दानवा नरा ॥ न सिध साधिका धरा ॥ असति

एक दिगहि कुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ २ ॥ मः १ ॥ न दादे दिहँद आदमी ॥ न सपत जेर जिमी ॥ असति एक दिगरि
 कुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ ३ ॥ मः १ ॥ न सूर ससि मँडलो ॥ न सपत दीप नह जलो ॥ अँन पउण थिरु न कुई ॥ एक
 तुई एक तुई ॥ ४ ॥ मः १ ॥ न रिजकु दसत आ कसे ॥ हमारा एक आस वसे ॥ असति एक दिगर कुई ॥ एक तुई एक
 तुई ॥ ५ ॥ मः १ ॥ परँदए न गिराह जर ॥ दरखत आब आस कर ॥ दिहँद सुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ ६ ॥ मः १ ॥
 नानक लिलारि लिखिआ सोइ ॥ मेटि न साकै कोइ ॥ कला धरै हिरै सुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ ७ ॥ पउड़ी ॥ सचा तेरा
 हुकमु गुरमुखि जाणिआ ॥ गुरमती आपु गवाइ सचु पछाणिआ ॥ सचु तेरा दरबारु सबदु नीसाणिआ ॥ सचा सबदु
 वीचारि सचि समाणिआ ॥ मनमुख सदा कूड़िआर भरमि भुलाणिआ ॥ विसटा अँदरि वासु सादु न जाणिआ ॥ विण
 नावै दुखु पाइ आवण जाणिआ ॥ नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ॥ १३ ॥ सलोकु मः १ ॥ सीहा
 बाजा चरगा कुहीआ एना खवाले घाह ॥ घाहु खानि तिना मासु खवाले एहि चलाए राह ॥ नदीआ विचि टिबे देखाले
 थली करे असगाह ॥ कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥ जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह
 ॥ नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ॥ १ ॥ मः १ ॥ इकि मासहारी इकि त्रिणु खाहि ॥ इकना छतीह
 अँमित पाहि ॥ इकि मिटीआ महि मिटीआ खाहि ॥ इकि पउण सुमारी पउण सुमारि ॥ इकि निरँकारी नाम आधारि ॥
 जीवै दाता मरै न कोइ ॥ नानक मुठे जाहि नाही मनि सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पूरे गुर की कार करमि कमाईए ॥ गुरमती
 आपु गवाइ नामु धिआईए ॥ दूजी कारै लगि जनमु गवाईए ॥ विणु नावै सभ विसु पैद्री खाईए ॥ सचा सबदु सालाहि
 सचि समाईए ॥ विणु सतिगुरु सेवे नाही सुखि निवासु फिरि फिरि आईए ॥ दुनीआ खोटी रासि कूडु कमाईए ॥ नानक
 सचु खरा सालाहि पति सिउ जाईए ॥ १४ ॥ सलोक मः १ ॥ तुधु भावै ता वावहि गावहि तुधु भावै जलि नावहि ॥

जा तुधु भावहि ता करहि बिभूता सिँडी नादु वजावहि ॥ जा तुधु भावै ता पड़हि कतेबा मुला सेख कहावहि ॥ जा तुधु भावै
 ता होवहि राजे रस कस बहुतु कमावहि ॥ जा तुधु भावै तेग वगावहि सिर मुँडी कटि जावहि ॥ जा तुधु भावै जाहि दिसँतरि
 सुणि गला घरि आवहि ॥ जा तुधु भावै नाइ रचावहि तुधु भाणे तूँ भावहि ॥ नानकु एक कहै बेनँती होरि सगले कूडु
 कमावहि ॥ १ ॥ मः १ ॥ जा तूँ वडा सभि वडिआईआ चँगै चँगा होई ॥ जा तूँ सचा ता सभु को सचा कूडा कोइ न कोई
 ॥ आखणु वेखणु बोलणु चलणु जीवणु मरणा धातु ॥ हुकमु साजि हुकमै विचि रखै नानक सचा आपि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
 सतिगुरु सेवि निसँगु भरमु चुकाईरे ॥ सतिगुरु आखै कार सु कार कमाईरे ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त नामु धिआईरे ॥
 लाहा भगति सु सारु गुरमुखि पाईरे ॥ मनमुखि कूडु गुबारु कूडु कमाईरे ॥ सचे दै दरि जाइ सचु चवाँईरे ॥ सचै अँदरि
 महलि सचि बुलाईरे ॥ नानक सचु सदा सचिआरु सचि समाईरे ॥ १५ ॥ सलोकु मः १ ॥ कलि काती राजे कासाई धरमु
 पँख करि उडरिआ ॥ कूडु अमावसु सचु चँद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥ हउ भालि विकुँनी होई ॥ आधेरै राहु न कोई ॥
 विचि हउमै करि दुखु रोई ॥ कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥ १ ॥ मः ३ ॥ कलि कीरति परगटु चानणु सँसारि ॥
 गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ जिस नो नदरि करे तिसु देवै ॥ नानक गुरमुखि रतनु सो लेवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगता तै
 सैसारीआ जोडु कदे न आइआ ॥ करता आपि अभुलु है न भुलै किसै दा भुलाइआ ॥ भगत आपे मेलिअनु जिनी सचो सचु
 कमाइआ ॥ सैसारी आपि खुआइअनु जिनी कूडु बोलि बोलि बिखु खाइआ ॥ चलण सार न जाणनी कामु करोधु विसु
 वधाइआ ॥ भगत करनि हरि चाकरी जिनी अनदिनु नामु धिआइआ ॥ दासनि दास होइ कै जिनी विचहु आपु गवाइआ
 ॥ ओना खसमै कै दरि मुख उजले सचै सबदि सुहाइआ ॥ १६ ॥ सलोकु मः १ ॥ सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक
 मनि ॥ सेई पूरे साह वखतै उपरि लड़ि मुए ॥ दूजै बहुते राह मन कीआ मती खिँडीआ ॥ बहुतु पर असगाह गोते खाहि

न निकलहि ॥ तीजै मुही गिराह भुख तिरवा दुइ भउकीआ ॥ खाधा होइ सुआह भी खाणे सिउ दोसती ॥ चउथै आई ऊंघ
 अखी मीटि पवारि गइआ ॥ भी उठि रचिओनु वादु सै वहिआ की पिड़ बधी ॥ सभे वेला वखत सभि जे अठी भउ होइ ॥
 नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइ ॥ १ ॥ मः २ ॥ सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥ अठी वेपरवाह रहनि इकतै
 रँगि ॥ दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥ करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जा का बोलु ॥ नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जातूँ ता किआ होरि मै सचु सुणाईरे ॥ मुठी धँधै चोरि महलु न पाईरे ॥ एनै चिति कठोरि सेव गवाईरे
 ॥ जितु घटि सचु न पाइ सु भनि घड़ाईरे ॥ किउ करि पूरै वटि तोलि तुलाईरे ॥ कोइ न आखै घटि हउमै जाईरे ॥
 लईअनि खरे परखि दरि बीनाईरे ॥ सउदा इकतु हटि पूरै गुरि पाईरे ॥ १७ ॥ सलोक मः २ ॥ अठी पहरी अठ खँड नावा
 खँडु सरीरु ॥ तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालहि गुणी गहीरु ॥ करमवँती सालाहिआ नानक करि गुरु पीरु ॥
 चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥ तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ उथै अँमितु वँडीरे
 करमी होइ पसाउ ॥ कँचन काइआ कसीरे वँनी चडै चड़ाउ ॥ जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ ॥ सती पहरी
 सतु भला बहीरे पड़िआ पासि ॥ ओथै पापु पुँनु बीचारीरे कूडै घटै रासि ॥ ओथै खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि ॥
 बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि ॥ १ ॥ मः २ ॥ पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिनसु राति
 दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चँगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेडै के दूरि ॥
 जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा भोजनु
 भाउ सतिगुरि दसिआ ॥ सचे ही पतीआइ सचि विगसिआ ॥ सचै कोटि गिरांड निज घरि वसिआ ॥ सतिगुरि तुठै नाउ
 प्रेमि रहसिआ ॥ सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईरे ॥ झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुआईरे ॥ सचै सबदि नीसाणि ठाक न

पाईये ॥ सचु सुणि बूझि वखाणि महलि बुलाईये ॥ १८ ॥ सलोकु मः १ ॥ पहिरा अगनि हिवै घरु बाधा भोजनु सारु
 कराई ॥ सगले दूख पाणी करि पीवा धरती हाक चलाई ॥ धरि ताराजी अँबरु तोली पिछै टँकु चड़ाई ॥ एवडु वधा मावा
 नाही सभसै नथि चलाई ॥ एता ताणु होवै मन अँदरि करी भि आखि कराई ॥ जेवडु साहिबु तेवड दाती दे दे करे रजाई ॥
 नानक नदरि करे जिंसु उपरि सचि नामि वडिआई ॥ १ ॥ मः २ ॥ आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कँन ॥
 अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वँन ॥ भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥ नानक भुखा ता रजै जा गुण
 कहि गुणी समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ विणु सचे सभु कूडु कूडु कमाईये ॥ विणु सचे कूडिआरु बँनि चलाईये ॥ विणु सचे
 तनु छारु छारु रलाईये ॥ विणु सचे सभ भुख जि पैझै खाईये ॥ विणु सचे दरबारु कूडि न पाईये ॥ कूडै लालचि लागि
 महलु खुआईये ॥ सभु जगु ठगिओ ठगि आईये जाईये ॥ तन महि त्रिसना अगि सबदि बुझाईये ॥ १९ ॥ सलोक मः १
 ॥ नानक गुरु सँतोखु रुखु धरमु फुलु फलु गिआनु ॥ रसि रसिआ हरिआ सदा पकै करमि धिआनि ॥ पति के साद
 खादा लहै दाना कै सिरि दानु ॥ १ ॥ मः १ ॥ सुइने का बिखु पत परवाला फुल जवेहर लाल ॥ तितु फल रतन लगहि
 मुखि भाखित हिरदै रिदै निहालु ॥ नानक करमु होवै मुखि मसतकि लिखिआ होवै लेखु ॥ अठिसठि तीरथ गुर की
 चरणी पूजै सदा विसेखु ॥ हँसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥ पवहि दझहि नानक तरीये करमी लागि ॥ २ ॥
 पउड़ी ॥ जीवदिआ मरु मारि न पछोताईये ॥ झूठा इहु सँसारु किनि समझाईये ॥ सचि न धरे पिआरु अँधै धाईये ॥
 कालु बुरा खै कालु सिरि दुनीआईये ॥ हुकमी सिरि जँदारु मारे दाईये ॥ आपे देइ पिआरु मँनि वसाईये ॥ मुहतु न चसा
 विलँमु भरीये पाईये ॥ गुर परसादी बुझि सचि समाईये ॥ २० ॥ सलोकु मः १ ॥ तुमी तुमा विसु अकु धतूरा निमु फलु ॥
 मनि मुखे वसहि तिसु जिंसु तूँ चिति न आवही ॥ नानक कहीये किसु हँढनि करमा बाहरे ॥ १ ॥ मः १ ॥ मति पँखेरु

किरतु साथि कब उतम कब नीच ॥ कब चँदनि कब अकि डालि कब उची प्रीति ॥ नानक हुकमि चलाईऐ साहिब लगी रीत
 ॥ २ ॥ पउडी ॥ केते कहहि वखाण कहि कहि जावणा ॥ वेद कहहि वखिआण अँतु न पावणा ॥ पड़िऐ नाही भेदु बुझिऐ
 पावणा ॥ खटु दरसन कै भेखि किसै सचि समावणा ॥ सचा पुरखु अलखु सबदि सुहावणा ॥ मँने नाउ बिसँख दरगह
 पावणा ॥ खालक कउ आदेसु ढाढी गावणा ॥ नानक जुगु जुगु एकु मँनि वसावणा ॥ २१ ॥ सलोकु महला २ ॥ मँत्री
 होइ अठूहिआ नागी लगै जाइ ॥ आपण हथी आपणै दे कूचा आपे लाइ ॥ हुकमु पइआ धुरिं खसम का अती हू धका खाइ
 ॥ गुरमुख सिउ मनमुखु अडै डुबै हकि निआइ ॥ दुहा सिरिआ आपे खसमु वेखै करि विउपाइ ॥ नानक एवै जाणीऐ सभ
 किछु तिसहि रजाइ ॥ १ ॥ महला २ ॥ नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥ रोगु दारु दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ॥
 वाट न करई मामला जाणै मिहमाणु ॥ मूलु जाणि गला करे हाणि लाए हाणु ॥ लबि न चलई सचि रहै सो विसटु परवाणु
 ॥ सरु सँधे आगास कउ किउ पहुचै बाणु ॥ अगै ओहु अगँमु है वाहेदु जाणु ॥ २ ॥ पउडी ॥ नारी पुरख पिआरु प्रेमि
 सीगारिआ ॥ करनि भगति दिनु राति न रहनी वारीआ ॥ महला मँझि निवासु सबदि सवारीआ ॥ सचु कहनि अरदासि
 से वेचारीआ ॥ सोहनि खसमै पासि हुकमि सिधारीआ ॥ सखी कहनि अरदासि मनहु पिआरीआ ॥ बिन नावै धिगु वासु
 फिटु सु जीविआ ॥ सबदि सवारीआसु अँमितु पीविआ ॥ २२ ॥ सलोकु मः १ ॥ मारु मीहि न त्रिपतिआ अगी लहै न
 भुख ॥ राजा राजि न त्रिपतिआ साइर भरे किसुक ॥ नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ ॥ १ ॥ महला २ ॥ निहफलँ
 तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिँदते ॥ सागरँ संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥ करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि
 ॥ कारण करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥ २ ॥ पउडी ॥ खसमै कै दरबारि ढाढी वसिआ ॥ सचा खसमु कलाणि
 कमलु विगसिआ ॥ खसमहु पूरा पाइ मनहु रहसिआ ॥ दुसमन कढे मारि सजण सरसिआ ॥ सचा सतिगुरु

सेवनि सचा मारगु दसिआ ॥ सचा सबदु बीचारि कालु विधउसिआ ॥ ढाढी कथे अकथु सबदि सवारिआ ॥ नानक गुण गहि
 रासि हरि जीउ मिले पिआरिआ ॥ २३ ॥ सलोकु मः १ ॥ खतिअहु जँमे खते करनि त खतिआ विचि पाहि ॥ धोते मूलि न
 उतरहि जे सउ धोवण पाहि ॥ धोते मूलि न उतरहि जे सउ धोवण पाहि ॥ नानक बखसे बखसीअहि नाहि त पाही पाहि ॥ १
 ॥ मः १ ॥ नानक बोलणु झखणा दुख छडि मँगीअहि सुख ॥ सुखु दुखु दुइ दरि कपडे पहिरहि जाइ मनुख ॥ जिथै बोलणि
 हारीरे तिथै चँगी चुप ॥ २ ॥ पउडी ॥ चारे कुँडा देखि अँदरु भालिआ ॥ सचै पुरखि अलखि सिरजि निहालिआ ॥ उझडि
 भुले राह गुरि वेखालिआ ॥ सतिगुरु सचे वाहु सचु समालिआ ॥ पाइआ रतनु घराहु दीवा बालिआ ॥ सचै सबदि सलाहि
 सुखीए सच वालिआ ॥ निडरिआ डरु लगि गरबि सि गालिआ ॥ नावहु भुला जगु फिरै बेतालिआ ॥ २४ ॥ सलोकु मः ३
 ॥ भै विचि जँमे भै मरै भी भउ मन महि होइ ॥ नानक भै विचि जे मरै सहिला आइआ सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ भै विणु जीवै
 बहुतु बहुतु खुसीआ खुसी कमाइ ॥ नानक भै विणु जे मरै मुहि कालै उठि जाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ सतिगुरु होइ दइआल त
 सरधा पूरीरे ॥ सतिगुरु होइ दइआलु न कबहूँ झूरीरे ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता दुखु न जाणीरे ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता
 हरि रँगु माणीरे ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा ॥ सतिगुरु होइ
 दइआलु ता नव निधि पाईरे ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त सचि समाईरे ॥ २५ ॥ सलोकु मः १ ॥ सिरु खोहाइ पीअहि
 मलवाणी जूठा मँगि मँगि खाही ॥ फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही ॥ भेडा वागी सिरु खोहाइनि
 भरीअनि हथ सुआही ॥ माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥ ओना पिँडु न पतलि किरिआ न दीवा मुए किथाऊ
 पाही ॥ अठसठि तीरथ देनि न ढोई ब्रहमण अँनु न खाही ॥ सदा कुचील रहहि दिनु राती मथै टिके नाही ॥ झुँडी पाइ बहनि
 निति मरणै दडि दीबाणि न जाही ॥ लकी कासे हथी फुँमण अगो पिछी जाही ॥ ना ओइ जोगी ना ओइ जँगम ना ओइ

काजी मुँला ॥ दधि विगोए फिरहि विगुते फिट्टा वतै गला ॥ जीआ मारि जीवालै सोई अवरु न कोई रखै ॥ दानहु तै
 इसनानहु वँजे भसु पई सिरि खुथै ॥ पाणी विचहु रतन उपँने मेरु कीआ माधाणी ॥ अठसठि तीरथ देवी थापे पुरबी लगै
 बाणी ॥ नाइ निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी ॥ मुइआ जीवदिआ गति होवै जां सिरि पाईरे पाणी ॥ नानक
 सिरखुथे सैतानी एना गल न भाणी ॥ वुठै होइरे होइ बिलावल्नु जीआ जुगति समाणी ॥ वुठै अँनु कमादु कपाहा सभसै
 पड़दा होवै ॥ वुठै घाहु चरहि निति सुरही साधन दही विलोवै ॥ तितु घिइ होम जग सद पूजा पइरे कारजु सोहै ॥ गुरु
 समुँदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई ॥ नानक जे सिरखुथे नावनि नाही ता सत चटे सिर छाई ॥ १ ॥ मः २ ॥
 अगी पाला कि करे सूरज केही राति ॥ चँद अनेरा कि करे पउण पाणी किआ जाति ॥ धरती चीजी कि करे जिसु विचि सभु
 किछु होइ ॥ नानक ता पति जाणीरे जा पति रखै सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु सचे सुबहानु सदा कलाणिआ ॥ तूँ सचा
 दीबाणु होरि आवण जाणिआ ॥ सचु जि मँगहि दानु सि तुधै जेहिआ ॥ सचु तेरा फुरमानु सबदे सोहिआ ॥ मँनिरे
 गिआनु धिआनु तुधै ते पाइआ ॥ करमि पवै नीसानु न चलै चलाइआ ॥ तूँ सचा दातारु नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥
 नानकु मँगै दानु जो तुधु भाइआ ॥ २६ ॥ सलोक मः २ ॥ दीखिआ आखि बुझाइआ सिफती सचि समेउ ॥ तिन कउ
 किआ उपदेसीरे जिन गुरु नानक देउ ॥ १ ॥ मः १ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ जिसु आपि सुझाए तिसु सभु किछु सूझै
 ॥ कहि कहि कथना माइआ लूझै ॥ हुकमी सगल करे आकार ॥ आपे जाणै सरब वीचार ॥ अखर नानक अखिओ आपि
 ॥ लहै भराति होवै जिसु दाति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥ राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥
 ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ॥ सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥ सचा अँमित नामु भोजनु आइआ ॥ गुरमती
 खाधा रजि तिनि सुखु पाइआ ॥ ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइआ ॥ नानक सचु सालाहि पूरा पाइआ ॥ २७ ॥ सुधु ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे

१ॐ सतिनाम करता पुरखु निरभउ निरवैरु

अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

भउ मुचु भारा वडा तोलु ॥ मन मति हउली बोले बोलु ॥ सिरि धरि चलीरे सहीरे भारु
॥ नदरी करमी गुर बीचारु ॥ १ ॥ भै बिनु कोइ न लँघसि पारि ॥ भै भउ राखिआ भाइ सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै
तनि अगनि भखै भै नालि ॥ भै भउ घड़ीरे सबदि सवारि ॥ भै बिनु घाड़त कचु निकच ॥ अँधा सचा अँधी सट ॥ २ ॥
बुधी बाजी उपजै चाउ ॥ सहस सिआणप पवै न ताउ ॥ नानक मनमुखि बोलणु वाउ ॥ अँधा अखरु वाउ दुआउ ॥ ३
॥ १ ॥ गउड़ी महला १ ॥ डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥ सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥ तुधु बिनु दूजी नाही
जाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ डरीरे जे डरु होवै होरु ॥ डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥ १ ॥ रहाउ
॥ ना जीउ मरै न डुबै तरै ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥ आगै पाछै हुकमि समाइ ॥ २
॥ हँसु हेतु आसा असमानु ॥ तिसु विचि भूख बहुतु नै सानु ॥ भऊ खाणा पीणा आधारु ॥ विणु खाधे मरि होहि गवार
॥ ३ ॥ जिस का कोइ कोई कोइ कोइ ॥ सभु को तेरा तूँ सभना का सोइ ॥ जा को जीअ जँत धनु मालु ॥ नानक
आखणु बिखमु बीचारु ॥ ४ ॥ २ ॥ गउड़ी महला १ ॥ माता मति पिता सँतोखु ॥ सतु भाई करि एहु विसेखु ॥ १ ॥

कहणा है किछु कहणु न जाइ ॥ तउ कुदरति कीमति नही पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरम सुरति दुइ ससुर भए ॥ करणी
 कामणि करि मन लए ॥ २ ॥ साहा सँजोगु वीआहु विजोगु ॥ सचु सँतति कहु नानक जोगु ॥ ३ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला १
 ॥ पउणै पाणी अगनी का मेलु ॥ चँचल चपल बुधि का खेलु ॥ नउ दरवाजे दसवा दुआरु ॥ बुझुरे गिआनी एहु बीचारु
 ॥ १ ॥ कथता बकता सुनता सोई ॥ आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देही माटी बोलै पउणु ॥ बुझुरे
 गिआनी मूआ है कउणु ॥ मूई सुरति बादु अहँकारु ॥ ओहु न मूआ जो देखणहारु ॥ २ ॥ जै कारणे तटि तीरथ जाही
 ॥ रतन पदारथ घट ही माही ॥ पड़ि पड़ि पँडितु बादु वखाणै ॥ भीतरि होदी वसतु न जाणै ॥ ३ ॥ हउ न मूआ मेरी मुई
 बलाइ ॥ ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ॥ कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ मरता जाता नदरि न आइआ ॥ ४ ॥ ४
 ॥ गउड़ी महला १ देखणी ॥ सुणि सुणि बूझै मानै नाउ ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ आपि भुलाए ठउर न ठाउ ॥ तूँ
 समझावहि मेलि मिलाउ ॥ १ ॥ नामु मिलै चलै मै नालि ॥ बिनु नावै बाधी सभ कालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खेती वणजु नावै
 कि ओट ॥ पापु पुँनु बीज की पोट ॥ कामु क्रोधु जीअ महि चोट ॥ नामु विसारि चले मनि खोट ॥ २ ॥ साचे गुर की
 साची सीख ॥ तनु मनु सीतलु साचु परीख ॥ जल पुराइनि रस कमल परीख ॥ सबदि रते मीठे रस ईख ॥ ३ ॥ हुकमि
 सँजोगी गड़ि दस दुआर ॥ पँच वसहि मिलि जोति अपार ॥ आपि तुलै आपे वणजार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥ ४
 ॥ ५ ॥ गउड़ी महला १ ॥ जातो जाइ कहा ते आवै ॥ कह उपजै कह जाइ समावै ॥ किउ बाधिओ किउ मुक्ती पावै ॥
 किउ अबिनासी सहजि समावै ॥ १ ॥ नामु रिदै अँमितु मुखि नामु ॥ नरहर नामु नरहर निहकामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजे
 आवै सहजे जाइ ॥ मन ते उपजै मन माहि समाइ ॥ गुरमुखि मुक्तो बँधु न पाइ ॥ सबदु बीचारि छुटै हरि नाइ ॥ २ ॥
 तरवर पँखी बहु निसि बासु ॥ सुख दुखीआ मनि मोह विणासु ॥ साझ बिहाग तकहि आगासु ॥ दह दिसि धावहि करमि

लिखिआसु ॥ ३ ॥ नाम संजोगी गोइलिं थाटु ॥ काम क्रोध फूटै बिखु माटु ॥ बिनु वखर सूनो घरु हाटु ॥ गुर मिलिं
 खोले बजर कपाट ॥ ४ ॥ साधु मिलै पूरब संजोग ॥ सचि रहसे पूरे हरि लोग ॥ मनु तनु दे लै सहजिं सुभाइ ॥ नानक
 तिन कै लागउ पाइ ॥ ५ ॥ ६ ॥ गउड़ी महला १ ॥ कामु क्रोधु माइआ महि चीतु ॥ झूठ विकारि जागै हित चीतु ॥ पूंजी
 पाप लोभ की कीतु ॥ तरु तारी मनि नामु सुचीतु ॥ १ ॥ वाहु वाहु साचे मै तेरी टेक ॥ हउ पापी तूं निरमलु एक ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ अगनि पाणी बोलै भड़वाउ ॥ जिहवा डँद्री एकु सुआउ ॥ दिसटि विकारी नाही भउ भाउ ॥ आपु मारे ता पाए नाउ
 ॥ २ ॥ सबदि मरै फिरि मरणु न होइ ॥ बिनु मूए किउ पूरा होइ ॥ परपँचि विआपि रहिआ मनु दोइ ॥ थिरु नाराइणु करे
 सु होइ ॥ ३ ॥ बोहिथि चड़उ जा आवै वारु ॥ ठाके बोहिथ दरगह मार ॥ सचु सालाही धँनु गुरदुआरु ॥ नानक दरि घरि
 एकँकारु ॥ ४ ॥ ७ ॥ गउड़ी महला १ ॥ उलटिए कमलु ब्रहमु बीचारि ॥ अँमित धार गगनि दस दुआरि ॥ त्रिभवणु
 बेधिआ आपि मुरारि ॥ १ ॥ रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥ मनि मानिरे अँमित रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु जीति
 मरणि मनु मानिआ ॥ आपि मूआ मनु मन ते जानिआ ॥ नजरि भई घरु घर ते जानिआ ॥ २ ॥ जतु सतु तीरथु मजनु
 नामि ॥ अधिक बिथारु करउ किसु कामि ॥ नर नाराइण अँतरजामि ॥ ३ ॥ आन मनउ तउ पर घर जाउ ॥ किसु जाचउ
 नाही को थाउ ॥ नानक गुरमति सहजिं समाउ ॥ ४ ॥ ८ ॥ गउड़ी महला १ ॥ सतिगुरु मिलै सु मरणु दिखाए ॥ मरण
 रहण रसु अँतरि भाए ॥ गरबु निवारि गगन पुरु पाए ॥ १ ॥ मरणु लिखाइ आए नही रहणा ॥ हरि जपि जापि रहणु हरि
 सरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥ कमलु बिगासि मनु हरि प्रभ लागै ॥ जीवतु मरै महा रसु आगै
 ॥ २ ॥ सतिगुर मिलिरे सच संजमि सूचा ॥ गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥ करमि मिलै जम का भउ मूचा ॥ ३ ॥ गुरि
 मिलिरे मिलिं अँकि समाइआ ॥ करि किरपा घरु महलु दिखाइआ ॥ नानक हउमै मारि मिलाइआ ॥ ४ ॥ ९ ॥

गउड़ी महला १ ॥ किरतु पइआ नह मेटै कोइ ॥ किआ जाणा किआ आगै होइ ॥ जो तिसु भाणा सोई हूआ ॥ अवरु न
 करणै वाला दूआ ॥ १ ॥ ना जाणा करम केवड तेरी दाति ॥ करमु धरमु तेरे नाम की जाति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू एवडु
 दाता देवणहारु ॥ तोटि नाही तुधु भगति भँडार ॥ कीआ गरबु न आवै रासि ॥ जीउ पिँडु सभ तेरै पासि ॥ २ ॥ तू मारि
 जीवालहि बखसि मिलाइ ॥ जिउ भावी तिउ नामु जपाइ ॥ तूँ दाना बीना साचा सिरि मेरै ॥ गुरमति देइ भरोसै तेरै ॥ ३
 ॥ तन महि मैलु नाही मनु राता ॥ गुर बचनी सचु सबदि पछाता ॥ तेरा ताणु नाम की वडिआई ॥ नानक रहणा भगति
 सरणाई ॥ ४ ॥ १० ॥ गउड़ी महला १ ॥ जिनि अकथु कहाइआ अपिओ पीआइआ ॥ अन भै विसरे नामि समाइआ ॥
 १ ॥ किआ डरीऐ डरु डरहि समाना ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु नर रामु रिदै हरि रासि ॥ सहजि
 सुभाइ मिले साबासि ॥ २ ॥ जाहि सवारै साझ बिआल ॥ इत उत मनमुख बाधे काल ॥ ३ ॥ अहिनि सिरि रामु रिदै से पूरे
 ॥ नानक राम मिले भ्रम दूरे ॥ ४ ॥ ११ ॥ गउड़ी महला १ ॥ जनमि मेरै त्रै गुण हितकारु ॥ चारे बेद कथहि आकारु
 ॥ तीनि अवसथा कहहि वखिआनु ॥ तुरीआवसथा सतिगुरु ते हरि जानु ॥ १ ॥ राम भगति गुर सेवा तरणा ॥
 बाहुडि जनमु न होइ मरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि पदारथ कहै सभु कोई ॥ सिँमिति सासत पँडित मुखि सोई ॥ बिनु गुर
 अरथु बीचारु न पाइआ ॥ मुकति पदारथु भगति हरि पाइआ ॥ २ ॥ जा कै हिरदै वसिआ हरि सोई ॥ गुरमुखि भगति
 परापति होई ॥ हरि की भगति मुकति आनँदु ॥ गुरमति पाए परमानँदु ॥ ३ ॥ जिनि पाइआ गुरि देखि दिखाइआ ॥
 आसा माहि निरासु बुझाइआ ॥ दीना नाथु सरब सुखदाता ॥ नानक हरि चरणी मनु राता ॥ ४ ॥ १२ ॥ गउड़ी चेती
 महला १ ॥ अँमित काइआ रहै सुखाली बाजी इहु संसारो ॥ लबु लोभु मुचु कूडु कमावहि बहुतु उठावहि भारो ॥ तूँ काइआ
 मै रलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥ १ ॥ सुणि सुणि सिख हमारी ॥ सुक्रितु कीता रहसी मेरे जीअडे बहुडि न आवै

वारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ तुधु आखा मेरी काइआ तूँ सुणि सिख हमारी ॥ निँदा चिँदा करहि पराई झूठी लाइतबारी ॥ वेलि
 पराई जोहहि जीअडे करहि चोरी बुरिआरी ॥ हँसु चलिआ तूँ पिछै रहीएहि छुटड़ि होईअहि नारी ॥ २ ॥ तूँ काइआ रहीअहि
 सुपँनतरि तुधु किआ कर्म कमाइआ ॥ करि चोरी मै जा किछु लीआ ता मनि भला भाइआ ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई
 अहिला जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ हउ खरी दुहेली होई बाबा नानक मेरी बात न पुछै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताजी तुरकी
 सुइना रुपा कपड़ केरे भारा ॥ किस ही नालि न चले नानक झड़ि झड़ि पए गवारा ॥ कूजा मेवा मै सभ किछु चाखिआ इकु
 अँमितु नामु तुमारा ॥ ४ ॥ दे दे नीव दिवाल उसारी भसमँदर की ढेरी ॥ सँचे सँचि न देई किस ही अँधु जाणै सभ मेरी ॥
 सोइन लँका सोइन माड़ी सँपै किसै न केरी ॥ ५ ॥ सुणि मूरख मँन अजाणा ॥ होगु तिसै का भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहु
 हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे ॥ जीउ पिँडु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले ॥ ६ ॥ १ ॥ १३ ॥ गउड़ी
 चेती महला १ ॥ अवरि पँच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥ मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना
 ॥ १ ॥ श्री राम नामा उचरु मना ॥ आगै जम दलु बिखमु घना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उसारि मडोली राखै दुआरा भीतरि बैठी
 साधना ॥ अँमित केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पँच जना ॥ २ ॥ ढाहि मडोली लूटिआ देहुरा साधन पकड़ी एक
 जना ॥ जम डँडा गलि सँगलु पड़िआ भागि गए से पँच जना ॥ ३ ॥ कामणि लोडै सुइना रुपा मित्र लुडेनि सु खाधाता ॥
 नानक पाप करे तिन कारणि जासी जम पुरि बाधाता ॥ ४ ॥ २ ॥ १४ ॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ मुँद्रा ते घट भीतरि मुँद्रा
 काइआ कीजै खिँथाता ॥ पँच चेले वसि कीजहि रावल इहु मनु कीजै डँडाता ॥ १ ॥ जोग जुगति इव पावसिता ॥ एक
 सबदु दूजा होरु नासति कँद मूलि मनु लावसिता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूँडि मुँडाइरे जे गुरु पाईरे हम गुरु कीनी गँगाता ॥
 त्रिभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अँधाता ॥ २ ॥ करि पटँबु गली मनु लावसि सँसा मूलि न जावसिता ॥

कसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥ ३ ॥ जपसि निरँजनु रचसि मना ॥ काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ काइआ कमली हँसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥ प्रणवति नानकु नागी दाइँ फिरि पाछै पछुताणीता ॥
 ४ ॥ ३ ॥ १७ ॥ गउडी चेती महला १ ॥ अउखध मँत्र मूलु मन एकै जे करि द्रिडु चितु कीजैरे ॥ जनम जनम के पाप करम के
 काटनहारा लीजैरे ॥ १ ॥ मन एको साहिबु भाईरे ॥ तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाईरे ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ सकर खँडु माइआ तनि मीठी जम तऊ पँड उचाईरे ॥ राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाईरे ॥ २ ॥ मनमुखि
 करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाईरे ॥ जो तिनि कीआ सोई होआ किरतु न मेटिआ जाईरे ॥ ३ ॥ सुभर भरे न होवहि
 ऊणे जो रातै रँगु लाईरे ॥ तिन की पँक होवै जे नानकु तउ मूडा किछु पाईरे ॥ ४ ॥ ४ ॥ १६ ॥ गउडी चेती महला १ ॥ कत
 की माई बापु कत केरा किदू थावहु हम आए ॥ अगनि बिंब जल भीतरि निपजे काहे कँमि उपाए ॥ १ ॥ मेरे साहिबा कउणु जाणै
 गुण तेरे ॥ कहे न जानी अउगण मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥ केते नाग कुली महि आए
 केते पँख उडाए ॥ २ ॥ हट पटण बिज मँदर भँनै करि चोरी घरि आवै ॥ अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥ ३ ॥ तट
 तीरथ हम नव खँड देखे हट पटण बाजारा ॥ लै कै तकडी तोलणि लागा घट ही महि वणजारा ॥ ४ ॥ जेता समुँदु सागरु नीरि
 भरिआ तेते अउगण हमारे ॥ दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥ ५ ॥ जीअडा अगनि बराबरि तपै भीतरि वगै
 काती ॥ प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती ॥ ६ ॥ ५ ॥ १७ ॥ गउडी बैरागणि महला १ ॥ रैणि गवाई सोइ
 कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥ हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥ १ ॥ नामु न जानिआ राम का ॥ मूडे फिरि पाछै पछुताहिरे
 ॥ रहाउ ॥ अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइ ॥ अनत कउ चाहन जोगए से आए अनत गवाइ ॥ २ ॥

आपण लीआ जे मिलै ता सभु को भागठु होइ ॥ करमा उपरि निबडै जे लोचै सभु कोइ ॥ ३ ॥ नानक करणा जिनि कीआ
 सोई सार करेइ ॥ हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥ ४ ॥ १ ॥ १८ ॥ गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ हरणी होवा
 बनि बसा कँद मूल चुणि खाउ ॥ गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥ १ ॥ मै बनजारनि राम की ॥ तेरा
 नामु वखरु वापारु जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोकिल होवा अँबि बसा सहजि सबद बीचारु ॥ सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै
 दरसनि रूपि अपारु ॥ २ ॥ मछुली होवा जलि बसा जीअ जँत सभि सारि ॥ उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह
 पसारि ॥ ३ ॥ नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ २ ॥
 १९ ॥

गउड़ी दीपकी महला १ १९ सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीरे करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजणहारो ॥ १ ॥ तुम गावहु मेरे निरभउ
 का सोहिला ॥ हउ वारी जाउ जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित नित जीअडे समालीअनि देखैगा देवणहारु
 ॥ तेरे दानै कीमति न पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण
 आसीसडीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥ ३ ॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदडे नित पवँनि ॥ सदणहारा सिमरीए नानक से दिह
 अवंनि ॥ ४ ॥ १ ॥ २० ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ३ चउपदे ॥ १९ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरि मिलिऐ हरि मेला होई ॥ आपे मेलि मिलवै सोई ॥ मेरा प्रभु सभ बिधि आपे जाणै ॥ हुकमे मेले सबदि पछाणै ॥ १ ॥
 सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ ॥ भै राचै सच रँगि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि मिलिऐ हरि मनि वसै सुभाइ ॥ मेरा प्रभु

भारा कीमति नही पाइ ॥ सबदि सालाहै अंतु न पारावारु ॥ मेरा प्रभु बखसे बखसणहारु ॥ २ ॥ गुरि मिलिऐ सभ मति
 बुधि होइ ॥ मनि निरमलि वसै सचु सोइ ॥ साचि वसिऐ साची सभ कार ॥ ऊतम करणी सबद बीचार ॥ ३ ॥ गुर ते
 साची सेवा होइ ॥ गुरमुखि नामु पछाणै कोइ ॥ जीवै दाता देवणहारु ॥ नानक हरि नामे लगै पिआरु ॥ ४ ॥ १ ॥ २१
 ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ गुर ते गिआनु पाए जनु कोइ ॥ गुर ते बूझै सीझै सोइ ॥ गुर ते सहजु साचु बीचारु ॥ गुर
 ते पाए मुकति दुआरु ॥ १ ॥ पूरै भागि मिलै गुरु आइ ॥ साचै सहजि साचि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि मिलिऐ त्रिसना
 अगनि बुझाए ॥ गुर ते सांति वसै मनि आए ॥ गुर ते पवित पावन सुचि होइ ॥ गुर ते सबदि मिलावा होइ ॥ २ ॥ बाझु
 गुरु सभ भरमि भुलाई ॥ बिनु नावै बहुता दुखु पाई ॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिआई ॥ दरसनि सचै सची पति होई ॥ ३
 ॥ किस नो कहीऐ दाता इकु सोई ॥ किरपा करे सबदि मिलावा होई ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक साचे साचि
 समावा ॥ ४ ॥ २ ॥ २२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सु थाउ सचु मनु निरमलु होइ ॥ सचि निवासु करे सचु सोइ ॥
 सची बाणी जुग चारे जापै ॥ सभु किछु साचा आपे आपै ॥ १ ॥ करमु होवै सतसंगि मिलाए ॥ हरि गुण गावै बैसि सु थाए
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलउ इह जिहवा दूजै भाइ ॥ हरि रसु न चारवै फीका आलाइ ॥ बिनु बूझे तनु मनु फीका होइ ॥ बिनु
 नावै दुखीआ चलिआ रोइ ॥ २ ॥ रसना हरि रसु चारिआ सहजि सुभाइ ॥ गुर किरपा ते सचि समाइ ॥ साचे राती गुर
 सबदु वीचार ॥ अंम्रितु पीवै निरमल धार ॥ ३ ॥ नामि समावै जो भाडा होइ ॥ ऊंधै भांडै टिकै न कोइ ॥ गुर सबदी मनि
 नामि निवासु ॥ नानक सचु भांडा जिंसु सबद पिआस ॥ ४ ॥ ३ ॥ २३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ इकि गावत रहे
 मनि सादु न पाइ ॥ हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ ॥ गावणि गावहि जिन नाम पिआरु ॥ साची बाणी सबद बीचारु ॥
 १ ॥ गावत रहै जे सतिगुर भावै ॥ मनु तनु राता नामि सुहावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि गावहि इकि भगति करेहि ॥

नामु न पावहि बिनु असनेह ॥ सची भगति गुर सबद पिआरि ॥ अपना पिरु राखिआ सदा उरि धारि ॥ २ ॥ भगति
करहि मूरख आपु जणावहि ॥ नचि नचि टपहि बहुतु दुखु पावहि ॥ नचिरे टपिरे भगति न होइ ॥ सबदि मरै भगति पाए
जनु सोइ ॥ ३ ॥ भगति वछलु भगति कराए सोइ ॥ सची भगति विचहु आपु खोइ ॥ मेरा प्रभु साचा सभ बिधि जाणै ॥
नानक बखसे नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ४ ॥ २४ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनु मारे धातु मरि जाइ ॥ बिनु मूए कैसे हरि
पाइ ॥ मनु मरै दारु जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥ १ ॥ जिस नो बखसे दे वडिआई ॥ गुर परसादि हरि
वसै मनि आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी पावै ॥ मनु मै मतु मैगल मिकदारा
॥ गुरु अँकसु मारि जीवालणहारा ॥ २ ॥ मनु असाधु साथै जनु कोइ ॥ अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥ गुरमुखि इहु मनु
लइआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजे विकार ॥ ३ ॥ जो धुरि राखिअनु मेलि मिलाइ ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥
आपणी कला आपे ही जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ५ ॥ २५ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ हउमै विचि
सभु जगु बउराना ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाना ॥ बहु चिँता चितवै आपु न पछाना ॥ धँधा करतिआ अनदिनु विहाना ॥ १
॥ हिरदै रामु रमहु मेरे भाई ॥ गुरमुखि रसना हरि रसन रसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि हिरदै जिनि रामु पछाता ॥
जगजीवनु सेवि जुग चारे जाता ॥ हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ क्रिपा करे प्रभ करम बिधाता ॥ २ ॥ से जन सचे जो
गुर सबदि मिलाए ॥ धावत वरजे ठाकि रहाए ॥ नामु नव निधि गुर ते पाए ॥ हरि किरपा ते हरि वसै मनि आए ॥ ३ ॥
राम राम करतिआ सुखु सांति सरीर ॥ अँतरि वसै न लागै जम पीर ॥ आपे साहिबु आपि वजीर ॥ नानक सेवि सदा हरि
गुणी गहीर ॥ ४ ॥ ६ ॥ २६ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सो किउ विसरै जिस के जीअ पराना ॥ सो किउ विसरै सभ
माहि समाना ॥ जितु सेविरे दरगह पति परवाना ॥ १ ॥ हरि के नाम विटहु बलि जाउ ॥ तूँ विसरहि तदि ही मरि

जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिन तूँ विसरहि जिं तुधु आपि भुलाए ॥ तिन तूँ विसरहि जिं दूजै भाए ॥ मनमुख अगिआनी जोनी
 पाए ॥ २ ॥ जिन इक मनि तुठा से सतिगुर सेवा लाए ॥ जिन इक मनि तुठा तिन हरि मँनि वसाए ॥ गुरमती हरि नामि
 समाए ॥ ३ ॥ जिना पोतै पुँनु से गिआन बीचारी ॥ जिना पोतै पुँनु तिन हउमै मारी ॥ नानक जो नामि रते तिन कउ
 बलिहारी ॥ ४ ॥ ७ ॥ २७ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ तूँ अकथु किउ कथिआ जाहि ॥ गुर सबदु मारणु मन माहि
 समाहि ॥ तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥ १ ॥ जिस की बाणी तिसु माहि समाणी ॥ तेरी अकथ कथा गुर सबदि
 वखाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह सतिगुरु तह सतसंगति बणाई ॥ जह सतिगुरु सहजे हरि गुण गाई ॥ जह सतिगुरु तहा
 हउमै सबदि जलाई ॥ २ ॥ गुरमुखि सेवा महली थाउ पाए ॥ गुरमुखि अँतरि हरि नामु वसाए ॥ गुरमुखि भगति हरि नामि
 समाए ॥ ३ ॥ आपे दाति करे दातारु ॥ पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥ ४ ॥ ८
 ॥ २८ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ एकसु ते सभि रूप हरि रँगा ॥ पउणु पाणी बैसँतरु सभि सहलँगा ॥ भिँन भिँन वेखै
 हरि प्रभु रँगा ॥ १ ॥ एकु अचरजु एको है सोई ॥ गुरमुखि वीचारे विरला कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजिं भवै प्रभु सभनी थाई
 ॥ कहा गुपतु प्रगटु प्रभि बणत बणाई ॥ आपे सुतिआ देइ जगाई ॥ २ ॥ तिस की कीमति किनै न होई ॥ कहि कहि कथनु
 कहै सभु कोई ॥ गुर सबदि समावै बूझै हरि सोई ॥ ३ ॥ सुणि सुणि वेखै सबदि मिलाए ॥ वडी वडिआई गुर सेवा ते पाए ॥
 नानक नामि रते हरि नामि समाए ॥ ४ ॥ ९ ॥ २९ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनमुखि सूता माइआ मोहि पिआरि ॥
 गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ॥ से जन जागे जिन नाम पिआरि ॥ १ ॥ सहजे जागै सवै न कोइ ॥ पूरे गुर ते बूझै
 जनु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असँतु अनाड़ी कदे न बूझै ॥ कथनी करे तै माइआ नालि लूझै ॥ अँधु अगिआनी कदे न सीझै
 ॥ २ ॥ इसु जुग महि शम नामि निसतारा ॥ विरला को पाए गुर सबदि वीचारा ॥ आपि तरै सगले कुल उधारा ॥ ३ ॥

इसु कलिजुग महि करम धरमु न कोई ॥ कली का जनमु चंडाल कै घरिं होई ॥ नानक नाम बिना को मुकति न होई ॥ ४ ॥
 १० ॥ ३० ॥ गउड़ी महला ३ गुआरेरी ॥ सचा अमरु सचा पातिसाहु ॥ मनि साचै राते हरि वेपरवाहु ॥ सचै महलि
 सचि नामि समाहु ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे सबदु वीचारि ॥ राम जपहु भवजलु उतरहु पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमे आवै
 भरमे जाइ ॥ इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ॥ मनमुखि न चेतै आवै जाइ ॥ २ ॥ आपि भुला कि प्रभि आपि भुलाइआ ॥
 इहु जीउ विडाणी चाकरी लाइआ ॥ महा दुखु खटे बिरथा जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ किरपा करि सतिगुरु मिलाए ॥ एको
 नामु चेतै विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामु जपे नाउ नउ निधि पाए ॥ ४ ॥ ११ ॥ ३१ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
 जिना गुरुमुखि धिआइआ तिन पूछउ जाइ ॥ गुरु सेवा ते मनु पतीआइ ॥ से धनवँत हरि नामु कमाइ ॥ पूरे गुरु ते सोझी
 पाइ ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ गुरुमुखि सेवा हरि घाल थाइ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु पछाणै मनु निरमलु
 होइ ॥ जीवन मुकति हरि पावै सोइ ॥ हरि गुण गावै मति ऊतम होइ ॥ सहजे सहजि समावै सोइ ॥ २ ॥ दूजै भाइ न
 सेविआ जाइ ॥ हउमै माइआ महा बिखु खाइ ॥ पुति कुटंबि ग्रिहि मोहिआ माइ ॥ मनमुखि अँधा आवै जाइ ॥ ३ ॥ हरि
 हरि नामु देवै जनु सोइ ॥ अनदिनु भगति गुरु सबदी होइ ॥ गुरुमति विरला बूझै कोइ ॥ नानक नामि समावै सोइ ॥ ४ ॥
 १२ ॥ ३२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ गुरु सेवा जुग चारे होई ॥ पूरा जनु कार कमावै कोई ॥ अखुटु नाम धनु हरि
 तोटि न होई ॥ ऐथै सदा सुखु दरि सोभा होई ॥ १ ॥ ए मन मेरे भरमु न कीजै ॥ गुरुमुखि सेवा अँमित रसु पीजै ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ सतिगुरु सेवहि से महापुख सँसारे ॥ आपि उधरे कुल सगल निसतारे ॥ हरि का नामु रखहि उर धारे ॥ नामि
 रते भउजल उतरहि पारे ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ॥ हउमै मारि कमलु परगासा ॥ अनहदु वाजै निज घर
 वासा ॥ नामि रते घरि माहि उदासा ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवहि तिन की सची बाणी ॥ जुगु जुगु भगती आखि वखाणी ॥

अनदिनु जपहि हरि सारंगपाणी ॥ नानक नामि रते निहकेवल निरबाणी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ३३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥
 सतिगुरु मिलै वडभागि सँजोग ॥ हिरदै नामु नित हरि रस भोग ॥ १ ॥ गुरमुखि प्राणी नामु हरि धिआइ ॥ जनमु जीति
 लाहा नामु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु गुर सबदु है मीठा ॥ गुर किरपा ते किनै विरलै चखि डीठा ॥ २ ॥ कर्म
 कांड बहु करहि अचार ॥ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु अहँकार ॥ ३ ॥ बँधनि बाधिओ माइआ फास ॥ जन नानक छूटै गुर परगास
 ॥ ४ ॥ १४ ॥ ३४ ॥ महला ३ गउड़ी बैरागणि ॥ जैसी धरती ऊपरि मेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ॥
 जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पगा वरसत फिराही ॥ १ ॥ बाबा तूँ आसे भरमु चुकाही ॥ जो किछु करतु है सोई कोई
 है रे तैसे जाइ समाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसतरी पुरखु होइ कै किआ ओइ कर्म कमाही ॥ नाना रूप सदा हहि तेरे तुझ ही
 माहि समाही ॥ २ ॥ इतने जनम भूलि परे से जा पाइआ ता भूले नाही ॥ जा का कारजु सोई परु जाणै जे गुर कै सबदि
 समाही ॥ ३ ॥ तेरा सबदु तूँहै हहि आपे भरमु कहाही ॥ नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि जनमि न आही ॥ ४ ॥ १
 ॥ १५ ॥ ३५ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सभु जगु कालै वसि है बाधा दूजै भाइ ॥ हउमै कर्म कमावदे मनमुखि मिलै
 सजाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुर चरणी चितु लाइ ॥ गुरमुखि नामु निधानु लै दरगह लए छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह
 भरमदे मनहठि आवै जाइ ॥ गुर का सबदु न चीनिओ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ हरि नामु
 वसिआ मनि आइ ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरि नामे सुखि समाइ ॥ ३ ॥ मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥
 जन नानक कर्मी पाईअनि हरि नामा भगति भँडार ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ ३६ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ पेईअडै दिन
 चारि है हरि हरि लिखि पाइआ ॥ सोभावँती नारि है गुरमुखि गुण गाइआ ॥ पेवकडै गुण सँमलै साहुरै वासु पाइआ ॥
 गुरमुखि सहजि समाणीआ हरि हरि मनि भाइआ ॥ १ ॥ ससुरै पेईए पिरु वसै कहु कितु बिधि पाईए ॥ आपि निरँजनु

अलखु है आपे मेलाईरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे ही प्रभु देहि मति हरि नामु धिआईरे ॥ वडभागी सतिगुरु मिलै मुखि अँमितु
 पाईरे ॥ हउमै दुबिधा बिनसि जाइ सहजे सुखि समाईरे ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे नाइ लाईरे ॥ २ ॥ मनमुखि गरबि
 न पाइओ अगिआन इआणे ॥ सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥ गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे ॥ मेरे
 करते इवै भावदा मनमुख भरमाणे ॥ ३ ॥ मेरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि मसतकि पूरा ॥ हरि हरि नामु धिआइआ भेटिआ
 गुरु सूर ॥ मेरा पिता माता हरि नामु है हरि बँधपु बीरा ॥ हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभु जनु नानकु कीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७
 ॥ ३७ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ॥ मति मलीण परगटु भई जपि नामु मुरारा
 ॥ सिवि सकति मिटाईआ चूका अँधिआरा ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ तिन हरि नामु पिआरा ॥ १ ॥ हरि कितु
 बिधि पाईरे संत जनहु जिंसु देखि हउ जीवा ॥ हरि बिनु चसा न जीवती गुर मेलिहु हरि रसु पीवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ हरि
 गुण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति कीनी ॥ हरि रसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी ॥ धनु धनु गुरु सतपुरखु है जिनि
 भगति हरि दीनी ॥ जिंसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी ॥ २ ॥ गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ॥ पापी पाथर
 डूबदे गुरमति हरि तारे ॥ तूँ गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ॥ हरि सरणागति राखि लेहु मूड मुगध निसतारे ॥ ३ ॥
 सहजु अनँदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ॥ सजणु हरि प्रभु पाइआ घरि सोहिला गाइआ ॥ हरि दइआ धारि प्रभु
 बेनती हरि हरि चेताइआ ॥ जन नानकु मँगै धूडि तिन जिन सतिगुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १८ ॥ ३८ ॥

गऊड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे ॥ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

पँडितु सासत सिमिति पडिआ ॥ जोगी गोरखु गोरखु करिआ ॥ मै मूरख हरि हरि जपु पडिआ ॥ १ ॥ ना जाना किआ गति
 राम हमारी ॥ हरि भजु मन मेरे तरु भउजलु तू

तारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँनिआसी बिभूत लाइ देह सवारी ॥ पर त्रिअ तिआगु करी ब्रहमचारी ॥ मै मूरख हरि आस तुमारी ॥
 २ ॥ खत्री करम करे सूरतणु पावै ॥ सूदु वैसु पर किरति कमावै ॥ मै मूरख हरि नामु छडावै ॥ ३ ॥ सभ तेरी खिसटि तूँ
 आपि रहिआ समाई ॥ गुरमुखि नानक दे वडिआई ॥ मै अँधुले हरि टेक टिकाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३९ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला
 ४ ॥ निरगुण कथा कथा है हरि की ॥ भजु मिलि साधू सँगति जन की ॥ तरु भउजलु अकथ कथा सुनि हरि की ॥ १ ॥
 गोबिंद सतसँगति मेलाइ ॥ हरि रसु रसना राम गुन गाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जन धिआवहि हरि हरि नामा ॥ तिन दासनि
 दास करहु हम रामा ॥ जन की सेवा ऊतम कामा ॥ २ ॥ जो हरि की हरि कथा सुणावै ॥ सो जनु हमरै मनि चिति भावै ॥
 जन पगरेणु वडभागी पावै ॥ ३ ॥ सँत जना सिउ प्रीति बनि आई ॥ जिन कउ लिखतु लिखिआ धुरि पाई ॥ ते जन नानक
 नामि समाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४० ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ माता प्रीति करे पुतु खाइ ॥ मीने प्रीति भई जलि नाइ ॥
 सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ ॥ १ ॥ ते हरि जन हरि मेलहु हम पिआरे ॥ जिन मिलिआ दुख जाहि हमारे ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै ॥ कामनि प्रीति जा पिरु घरि आवै ॥ हरि जन प्रीति जा हरि जसु गावै ॥ २ ॥
 सारिँग प्रीति बसै जल धारा ॥ नरपति प्रीति माइआ देखि पसारा ॥ हरि जन प्रीति जपै निरँकारा ॥ ३ ॥ नर प्राणी प्रीति
 माइआ धनु खाटे ॥ गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे ॥ जन नानक प्रीति साध पग चाटे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४१ ॥ गउड़ी
 गुआरेरी महला ४ ॥ भीखक प्रीति भीख प्रभ पाइ ॥ भूखे प्रीति होवै अँनु खाइ ॥ गुरसिख प्रीति गुर मिलि आघाइ ॥ १ ॥
 हरि दरसनु देहु हरि आस तुमारी ॥ करि किरपा लोच पूरि हमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चकवी प्रीति सूरजु मुखि लागै ॥ मिलै
 पिआरे सभ दुख तिआगै ॥ गुरसिख प्रीति गुरु मुखि लागै ॥ २ ॥ बछरे प्रीति खीरु मुखि खाइ ॥ हिरदै बिगसै देखै माइ
 ॥ गुरसिख प्रीति गुरु मुखि लाइ ॥ ३ ॥ होरु सभ प्रीति माइआ मोहु काचा ॥ बिनसि जाइ कूरा कचु पाचा ॥ जन नानक

प्रीति त्रिपति गुरु साचा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ सतिगुर सेवा सफल है बणी ॥ जितु मिलि हरि
 नामु धिआइआ हरि धणी ॥ जिन हरि जपिआ तिन पीछै छूटी घणी ॥ १ ॥ गुरसिख हरि बोलहु मेरे भाई ॥ हरि बोलत
 सभ पाप लहि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब गुरु मिलिआ तब मनु वसि आइआ ॥ धावत पंच रहे हरि धिआइआ ॥
 अनदिनु नगरी हरि गुण गाइआ ॥ २ ॥ सतिगुर पग धूरि जिना मुखि लाई ॥ तिन कूड़ तिआगै हरि लिव लाई ॥ ते हरि
 दरगह मुख ऊजल भाई ॥ ३ ॥ गुर सेवा आपि हरि भावै ॥ क्रिसनु बलभद्रु गुर पग लागि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि हरि
 आपि तरावै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ हरि आपे जोगी डंडाधारी ॥ हरि आपे रवि रहिआ बनवारी
 ॥ हरि आपे तपु तापै लाइ तारी ॥ १ ॥ ऐसा मेरा रामु रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही हरि दूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि
 आपे सबदु सुरति धुनि आपे ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे ॥ हरि आपि जपाइ आपे हरि जापे ॥ २ ॥ हरि आपे सारिँग
 अँम्रितधारा ॥ हरि अँम्रितु आपि पीआवणहारा ॥ हरि आपि करे आपे निसतारा ॥ ३ ॥ हरि आपे बेड़ी तुलहा तारा ॥
 हरि आपे गुरमती निसतारा ॥ हरि आपे नानक पावै पारा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४४ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ साहु हमारा
 तूँ धणी जैसी तूँ रासि देहि तैसी हम लेहि ॥ हरि नामु वणँजह रँग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि ॥ १ ॥ हम वणजारे
 राम के ॥ हरि वणजु करावै दे रासिरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाहा हरि भगति धनु खाटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ ॥ हरि
 जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेडि न आइआ ॥ २ ॥ होरु वणजु करहि वापारीए अनंत तरंगी दुखु माइआ ॥
 ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ ॥ ३ ॥ हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभ देई ॥ जन
 नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ४५ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी
 गरभु पालती सुत की करि आसा ॥ वडा होइ धनु खाटि देइ करि भोग बिलासा ॥ तिउ हरि जन प्रीति हरि राखदा

दे आपि हथासा ॥ १ ॥ मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुसईआ ॥ जन की उपमा तुझहि वडईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंदरि
 घरि आनंदु हरि हरि जसु मनि भावै ॥ सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरि गुण गावै ॥ हरि जनु परवारु सधारु है इकीह
 कुली सभु जगतु छडावै ॥ २ ॥ जो किछु कीआ सो हरि कीआ हरि की वडिआई ॥ हरि जीअ तेरे तूँ वरतदा हरि पूज कराई
 ॥ हरि भगति भँडार लहाइदा आपे वरताई ॥ ३ ॥ लाला हाटि विहाइआ किआ तिसु चतुराई ॥ जे राजि बहाले ता हरि
 गुलामु घासी कउ हरि नामु कढाई ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥ ४६ ॥ गउड़ी
 गुआरेरी महला ४ ॥ किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥ हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥ तिउ हरि जनु
 हरि हरि जपु करे हरि अँति छडाइ ॥ १ ॥ मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥ गुर सतिगुर सेवा हरि लाइ हम काम ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥ धनु खटै आसा करै माइआ मोहु वधावै ॥ तिउ हरि जनु हरि हरि बोलता हरि
 बोलि सुखु पावै ॥ २ ॥ बिखु सँचै हटवाणीआ बहि हाटि कमाइ ॥ मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥ तिउ हरि
 जनि हरि धनु सँचिआ हरि खरचु लै जाइ ॥ ३ ॥ इहु माइआ मोह कुटँबु है भाइ दूजै फास ॥ गुरमती सो जनु तरै जो
 दासनि दास ॥ जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥ ४७ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥
 नित दिनसु राति लालचु करे भरमै भरमाइआ ॥ वेगारि फिरै वेगारीआ सिरि भारु उठाइआ ॥ जो गुर की जनु सेवा करे
 सो घर कै कँमि हरि लाइआ ॥ १ ॥ मेरे राम तोड़ि बँधन माइआ गर कै कँमि लाइ ॥ नित हरि गुण गावह हरि नामि समाइ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरु प्राणी चाकरी करे नरपति राजे अरथि सभ माइआ ॥ कै बँधै कै डानि लेइ कै नरपति मरि जाइआ ॥
 धँनु धनु सेवा सफल सतिगुरु की जितु हरि हरि नामु जपि हरि सुखु पाइआ ॥ २ ॥ नित सउदा सूदु कीचै बहु भाति करि
 माइआ कै ताई ॥ जा लाहा देइ ता सुखु मने तोटै मरि जाई ॥ जो गुण साझी गुर सिउ करे नित नित सुखु पाई ॥ ३ ॥

जितनी भूख अन रस साद है तितनी भूख फिरि लागै ॥ जिसु हरि आपि क्रिपा करे सो वेचे सिरु गुर आगै ॥ जन नानक
हरि रसि त्रिपतिआ फिरि भूख न लागै ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४८ ॥ गउडी बैरागणि महला ४ ॥ हमरै मनि चिति हरि
आस नित किउ देखा हरि दरसु तुमारा ॥ जिनि प्रीति लाई सो जाणता हमरै मनि चिति हरि बहुतु पिआरा ॥ हउ कुरबानी
गुर आपणे जिनि विछुड़िआ मेलिआ मेरा सिरजनहारा ॥ १ ॥ मेरे राम हम पापी सरणि परे हरि दुआरि ॥ मत्तु निरगुण हम
मेलै कबहूँ अपुनी किरपा धारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरे अवगुण बहुतु बहुतु है बहु बार बार हरि गणत न आवै ॥ तूँ गुणवँता
हरि हरि दइआलु हरि आपे बखसि लैहि हरि भावै ॥ हम अपराधी राखै गुर संगती उपदेसु दीओ हरि नामु छडावै ॥ २ ॥
तुमरे गुण किआ कहा मेरे सतिगुरा जब गुरु बोलह तब बिसमु होइ जाइ ॥ हम जैसे अपराधी अवरु कोई राखै जैसे हम
सतिगुरि राखि लीए छडाइ ॥ तूँ गुरु पिता तूँहै गुरु माता तूँ गुरु बँधपु मेरा सखा सखाइ ॥ ३ ॥ जो हमरी बिधि होती मेरे
सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥ हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर सँगि कीरे हम थापे ॥ धँनु
धँनु गुरु नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग सँतापे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥ ४९ ॥ गउडी बैरागणि महला ४ ॥
कँचन नारी महि जीउ लुभतु है मोहु मीठा माइआ ॥ घर मँदर घोड़े खुसी मनु अन रसि लाइआ ॥ हरि प्रभु चिति न आवई
किउ छूटा मेरे हरि राइआ ॥ १ ॥ मेरे राम इह नीच करम हरि मेरे ॥ गुणवँता हरि हरि दइआलु करि किरपा बखसि अवगण
सभि मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किछु रूपु नही किछु जाति नाही किछु ढँगु न मेरा ॥ किआ मुहु लै बोलहु गुण बिहून नामु
जपिआ न तेरा ॥ हम पापी सँगि गुर उबरे पुँनु सतिगुर केरा ॥ २ ॥ सभु जीउ पिँडु मुखु नकु दीआ वरतण कउ पाणी ॥
अँनु खाणा कपडु पैणु दीआ रस अनि भोगाणी ॥ जिनि दीए सु चिति न आचई पसू हउ करि जाणी ॥ ३ ॥ सभु कीता
तेरा वरतदा तूँ अँतरजामी ॥ हम जँत विचारे किआ करह सभु खेलु तुम सुआमी ॥ जनु नानकु हाटि विहाझिआ हरि

गुलम गुलामी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १२ ॥ ५० ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि
 ॥ अंतरि बाहरि मुखे दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥ तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥ १ ॥ मेरे राम
 हम बारिक हरि प्रभ के है इआणे ॥ धँनु धँनु गुरु गुरु सतिगुरु पाधा जिनि हरि उपदेसु दे कीए सिआणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जैसी गगनि फिरँती ऊडती कपरे बागे वाली ॥ ओह राखै चीतु पीछै बिचि बचरे नित हिरदै सारि समाली ॥ तिउ सतिगुरु
 सिख प्रीति हरि हरि की गुरु सिख राखै जीअ नाली ॥ २ ॥ जैसे काती तीस बतीस है विच राखै रसना मास रतु केरी ॥ कोई
 जाणहु मास काती कै किछु हाथि जै सभ वसगति है हरि केरी ॥ तिउ संत जना की नर निँदा करहि हरि राखै पैज जन केरी ॥
 ३ ॥ भाई मत कोई जाणहु किसी कै किछु हाथि है सभ करे कराइआ ॥ जरा मरा तापु सिरति सापु सभु हरि कै वसि है कोई
 लागे न सकै बिनु हरि का लाइआ ॥ ऐसा हरि नामु मनि चिति निति धिआवहु जन नानक जो अँती अउसरु लए छडाइआ
 ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥ ५१ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिसु मिलिऐ मनि होइ अनँदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥ मन की
 दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥ १ ॥ मेरा सतिगुरु पिआरा कितु बिधि मिलै ॥ हउ खिनु खिनु करी नसमकारु
 मेरा गुरु पूरा किउ मिलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा हरि मेलिआ मेरा सतिगुरु पूरा ॥ इछु पुँनी जन केरीआ ले सतिगुरु
 धूरा ॥ २ ॥ हरि भगति द्विड़वै हरि भगति सुणै तिसु सतिगुरु मिलीऐ ॥ तोटा मूलि न आवई हरि लाभु निति द्विड़ीऐ ॥ ३
 ॥ जिस कउ रिदै विगासु है भाउ दूजा नाही ॥ नानक तिसु गुरु मिलि उधरै हरि गुण गावाही ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ ५२ ॥
 महला ४ गउड़ी पूरबी ॥ हरि दइआलि दइआ प्रभि कीनी मेरै मनि तनि मुखे हरि बोली ॥ गुरुमुखे रँगु भइआ अति गूडा हरि
 रँगि भीनी मेरी चोली ॥ १ ॥ अपुने हरि प्रभ की हउ गोली ॥ जब हम हरि सेती मनु मानिआ करि दीनो जगतु सभु गोल
 अमोली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करहु बिबेकु संत जन भाई खोजि हिरदै देखि ढँढोली ॥ हरि हरि रूपु सभ जोति सबाई हरि

निकटि वसै हरि कोली ॥ २ ॥ हरि हरि निकटि वसै सभ जग कै अपरंपर पुरखु अतोली ॥ हरि हरि प्रगटु कीउ गुरि पूरै सिरु
 वेचिओ गुर पहि मोली ॥ ३ ॥ हरि जी अंतरि बाहरि तुम सरणागति तुम वड पुरख वडोली ॥ जनु नानकु अनदिनु हरि गुण
 गावै मिलि सतिगुर गुर वेचोली ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ ५३ ॥ गउडी पूरबी महला ४ ॥ जगजीवन अपरंपर सुआमी
 जगदीसुर पुरख बिधाते ॥ जितु मारगि तुम प्रेरहु सुआमी तितु मारगि हम जाते ॥ १ ॥ राम मेश मनु हरि सेती राते ॥
 सतसंगति मिलि राम रसु पाइआ हरि रामै नामि समाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु हरि हरि जगि अवरखधु हरि हरि नामु
 हरि साते ॥ तिन के पाप दोख सभि बिनसे जो गुरमति राम रसु खाते ॥ २ ॥ जिन कउ लिखतु लिखे धुरि मसतकि ते गुर
 संतोख सरि नाते ॥ दुरमति मैलु गई सभ तिन की जो राम नाम रंगि राते ॥ ३ ॥ राम तुम आपे आपि आपि प्रभु ठाकुर तुम
 जेवड अवरु न दाते ॥ जनु नानकु नामु लए तां जीवै हरि जपीरे हरि किरपा ते ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ ५४ ॥ गउडी पूरबी
 महला ४ ॥ करहु क्रिपा जगजीवन दाते मेश मनु हरि सेती राचे ॥ सतिगुरि बचनु दीओ अति निरमलु जपि हरि हरि हरि मनु
 माचे ॥ १ ॥ राम मेश मनु तनु बेधि लीओ हरि साचे ॥ जिह काल कै मुखि जगतु सभु ग्रसिआ गुर सतिगुर कै बचनि हरि
 हम बाचे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ते साकत मूड नर काचे ॥ तिन कउ जनमु मरणु अति भारी विचि
 विसटा मरि मरि पाचे ॥ २ ॥ तुम दइआल सरणि प्रतिपालक मो कउ दीजै दानु हरि हम जाचे ॥ हरि के दास दास हम कीजै
 मनु निरति करे करि नाचे ॥ ३ ॥ आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहि ता चे ॥ मेश मनु तनु जीउ रासि सभ तेरी
 जन नानक के साह प्रभ साचे ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७ ॥ ५५ ॥ गउडी पूरबी महला ४ ॥ तुम दइआल सरब दुख भँजन इक
 बिनउ सुनहु दे काने ॥ जिस ते तुम हरि जाने सुआमी सो सतिगुरु मेलि मेश प्राने ॥ १ ॥ राम हम सतिगुर पारब्रहम करि
 माने ॥ हम मूड मुगध असुध मति होते गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम जाने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितने रस अन रस हम

देखे सभ तितने फीक फीकाने ॥ हरि का नामु अँमित रसु चाखिआ मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ॥ २ ॥ जिंन कउ गुरु
 सतिगुरु नहीं भेटिआ ते साकत मूड दिवाने ॥ तिन के करमहीन धुरि पाए देखि दीपकु मोहि पचाने ॥ ३ ॥ जिंन कउ तुम
 दइआ करि मेलहु ते हरि हरि सेव लगाने ॥ जन नानक हरि हरि हरि जपि प्रगटे मति गुरमति नामि समाने ॥ ४ ॥ ४ ॥
 १८ ॥ ५६ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ मेरे मन सो प्रभु सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीऐ ॥ हरि आपे बखसि
 लए प्रभु साचा हरि आपि छडाए छुटीऐ ॥ १ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि हरि मनि जपीऐ ॥ सतिगुर की सरणाई भजि पउ मेरे
 मना गुर सतिगुर पीछै छुटीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे मन सेवहु सो प्रभु सब सुखदाता जितु सेविऐ निज घरि वसीऐ ॥
 गुरमुखि जाइ लहहु घरु अपना घरि चँदनु हरि जसु घसीऐ ॥ २ ॥ मेरे मन हरि हरि हरि हरि हरि जसु ऊतमु लै लाहा हरि
 मनि हसीऐ ॥ हरि हरि आपि दइआ करि देवै ता अँमितु हरि रसु चखीऐ ॥ ३ ॥ मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत
 नर जमि घुटीऐ ॥ ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीऐ ॥ ४ ॥ मेरे मन सेवहु अलख
 निरँजन नरहरि जितु सेविऐ लेखा छुटीऐ ॥ जन नानक हरि प्रभि पूरे कीए खिनु मासा तोलु न घटीऐ ॥ ५ ॥ ५ ॥ १९ ॥
 ५७ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हमरे प्रान वसगति प्रभु तुरै मेरा जीउ पिँडु सभ तेरी ॥ दइआ करहु हरि दरसु दिखावहु मेरे
 मनि तनि लोच घणेरी ॥ १ ॥ राम मेरे मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ॥ गुर क्रिपालि क्रिपा किचँत गुर कीनी हरि
 मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो हमरै मन चिति है सुआमी सा बिधि तुम हरि जानहु मेरी ॥ अनदिनु नामु जपी
 सुखु पाई नित जीवा आस हरि तेरी ॥ २ ॥ गुरि सतिगुरि दातै पँथु बताइआ हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ अनदिनु अनदु
 भइआ वडभागी सभ आस पुजी जन केरी ॥ ३ ॥ जगँनाथ जगदीसरु करते सभ वसगति है हरि केरी ॥ जन नानक
 सरणागति आए हरि राखहु पैज जन केरी ॥ ४ ॥ ६ ॥ २० ॥ ५८ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इहु मनूआ खिनु न टिकै

बहु रंगी दह दह दिसि चलिं चलिं हाढे ॥ गुरु पूरा पाइआ वडभागी हरि मंत्रु दीआ मनु ठाढे ॥ १ ॥ राम हम सतिगुरु लाले
 काढे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरै मसतकि दागु दगाना हम करज गुरु बहु साढे ॥ पउपकारु पुंनु बहु कीआ भउ दुतरु तारि
 पराढे ॥ २ ॥ जिन कउ प्रीति रिदै हरि नाही तिन कूरे गाढन गाढे ॥ जिउ पाणी कागदु बिनसि जात है तिउ मनमुख
 गरभिं गलाढे ॥ ३ ॥ हम जानिआ कछु न जानह आगै जिउ हरि राखै तिउ ठाढे ॥ हम भूल चूक गुरु किरपा धारहु जन
 नानक कुतरे काढे ॥ ४ ॥ ७ ॥ २१ ॥ ५९ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू
 खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥ १ ॥ करि साधू अंजुली पुंनु वडा हे ॥
 करि डंडउत पुनु वडा हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि
 चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥ २ ॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥
 अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥ ३ ॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे
 ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥ ४ ॥ ८ ॥ २२ ॥ ६० ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इसु गड़
 महि हरि राम राइ है किछु सादु न पावै धीठा ॥ हरि दीन दइआलिं अनुग्रहु कीआ हरि गुरु सबदी चखि डीठा ॥ १ ॥ राम
 हरि कीरतनु गुरु लिव मीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि अगमु अगोचरु पारब्रहमु है मिलि सतिगुरु लागि बसीठा ॥ जिन गुरु
 बचन सुखाने हीअरै तिन आगै आणि परीठा ॥ २ ॥ मनमुख हीअरा अति कठोरु है तिन अंतरि कार करीठा ॥ बिसीअर
 कउ बहु दूधु पीआईरे बिखु निकसै फोलि फुलीठा ॥ ३ ॥ हरि प्रभ आनि मिलावहु गुरु साधू घसि गरुडु सबदु मुखि लीठा
 ॥ जन नानक गुरु के लाले गोले लागि संगति करुआ मीठा ॥ ४ ॥ ९ ॥ २३ ॥ ६१ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हरि
 हरि अरथि सरीरु हम बेचिआ पूरे गुरु कै आगे ॥ सतिगुरु दातै नामु दिडाइआ मुखि मसतकि भाग सभागे ॥ १ ॥ राम

गुरमति हरिं लिव लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि रमईआ रमत राम राइ गुर सबदि गुरू लिव लागे ॥ हउ मनु तनु देवउ
 काटि गुरू कउ मेरा भ्रमु भउ गुर बचनी भागे ॥ २ ॥ अँधिआरै दीपक आनि जलाए गुर गिआनि गुरू लिव लागे ॥
 अगिआनु अँधेरा बिनसि बिनासिओ घरि वसतु लही मन्ह जागे ॥ ३ ॥ साकत बधिक माइआधारी तिन जम जोहनि
 लागे ॥ उन सतिगुर आगै सीसु न बेचिआ ओइ आवहि जाहि अभागे ॥ ४ ॥ हमरा बिनउ सुनहु प्रभ ठाकुर हम सरणि
 प्रभू हरि मागे ॥ जन नानक की लज पाति गुरू है सिरु बेचिओ सतिगुर आगे ॥ ५ ॥ १० ॥ २४ ॥ ६२ ॥ गउड़ी
 पूरबी महला ४ ॥ हम अहँकारी अहँकार अगिआन मति गुरि मिलिऐ आपु गवाइआ ॥ हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ
 धनु धँनु गुरू हरि राइआ ॥ १ ॥ राम गुर कै बचनि हरि पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरै हीअरै प्रीति राम राइ की गुरि
 मारगु पँथु बताइआ ॥ मेरा जीउ पिँडु सभु सतिगुर आगै जिनि विछुडिआ हरि गलिं लाइआ ॥ २ ॥ मेरै अँतरि प्रीति
 लगी देखन कउ गुरि हिरदै नालिं दिखाइआ ॥ सहज अनँदु भइआ मनि मोरै गुर आगै आपु वेचाइआ ॥ ३ ॥ हम
 अपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइआ ॥ अब नानक सरणागति आए हरि राखहु लाज हरि भाइआ ॥ ४ ॥
 ११ ॥ २५ ॥ ६३ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनूआ गावै ॥ वडभागी गुर
 दरसनु पाइआ धनु धँनु गुरू लिव लावै ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि लिव लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरा ठाकुरु सतिगुरु पूरा
 मनु गुर की कार कमावै ॥ हम मलिं मलिं धोवह पाव गुरू के जो हरि हरि कथा सुनावै ॥ २ ॥ हिरदै गुरमति राम रसाइणु
 जिहवा हरि गुण गावै ॥ मन रसकि रसकि हरि रसि आघाने फिरि बहुरि न भूख लगावै ॥ ३ ॥ कोई करै उपाव अनेक
 बहुतेरे बिनु किरपा नामु न पावै ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी मति गुरमति नामु द्रिडावै ॥ ४ ॥ १२ ॥ २६ ॥
 ६४ ॥ रागु गउड़ी माझ महला ४ ॥ गुरमुखि जिँदू जपि नामु करँमा ॥ मति माता मति जीउ नामु मुखि रामा ॥

सँतोखु पिता करि गुरु पुरखु अजनमा ॥ वडभागी मिलु रामा ॥ १ ॥ गुरु जोगी पुरखु मिलिआ रँगु माणी जीउ ॥ गुरु
 हरि रँगि रतड़ा सदा निरबाणी जीउ ॥ वडभागी मिलु सुघड़ सुजाणी जीउ ॥ मेरा मनु तनु हरि रँगि भिँना ॥ २ ॥ आवहु
 सँतहु मिलि नामु जपाहा ॥ विचि सँगति नामु सदा लै लाहा जीउ ॥ करि सेवा सँता अँमितु मुखि पाहा जीउ ॥ मिलु
 पूरबि लिखिअडे धुरि करमा ॥ ३ ॥ सावणि वरसु अँमिति जगु छाइआ जीउ ॥ मनु मोरु कुहुकिअड़ा सबदु मुखि पाइआ
 ॥ हरि अँमितु वुठड़ा मिलिआ हरि राइआ जीउ ॥ जन नानक प्रेमि रतँना ॥ ४ ॥ १ ॥ २७ ॥ ६५ ॥ गउड़ी माझ
 महला ४ ॥ आउ सखी गुण कामण करीहा जीउ ॥ मिलि सँत जना रँगु माणिह रलीआ जीउ ॥ गुरु दीपकु गिआनु सदा
 मनि बलीआ जीउ ॥ हरि तुठै ढुलि ढुलि मिलिआ जीउ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि ढोले जीउ ॥ मै मेले मित्रु
 सतिगुरु वेचोले जीउ ॥ मनु देवां सँता मेरा प्रभु मेले जीउ ॥ हरि विटडिअहु सदा घोले जीउ ॥ २ ॥ वसु मेरे पिआरिआ
 वसु मेरे गोविदा हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥ मनि चिँदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविँदा गुरु पूरा वेखि विगसु जीऊ ॥
 हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविँदा मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥ हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविँदा नित लै
 लाहा मनि हसु जीउ ॥ ३ ॥ हरि आपि उपाए हरि आपे वेखै हरि आपे कारै लाइआ जीउ ॥ इकि खावहि बखस तोटि न
 आवै इकना फका पाइआ जीउ ॥ इकि राजे तखति बहहि नित सुखीए इकना भिख मँगाइआ जीउ ॥ सभु इको सबदु
 वरतदा मेरे गोविदा जन नानक नामु धिआइआ जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ २८ ॥ ६६ ॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ मन माही
 मन माही मेरे गोविँदा हरि रँगि रता मन माही जीउ ॥ हरि रँगु नालि न लखीए मेरे गोविदा गुरु पूरा अलखु लखाही जीउ
 ॥ हरि हरि नामु परगासिआ मेरे गोविँदा सभ दालद दुख लहि जाही जीउ ॥ हरि पदु ऊतमु पाइआ मेरे गोविँदा वडभागी
 नामि समाही जीउ ॥ १ ॥ नैणी मेरे पिआरिआ नैणी मेरे गोविदा किनै हरि प्रभु डिठड़ा नैणी जीउ ॥ मेरा मनु

तनु बहुतु बैरागिआ मेरे गोविंदा हरि बाझहु धन कुमलैणी जीउ ॥ संत जना मिलि पाइआ मेरे गोविदा मेरा हरि प्रभु सजणु सैणी
 जीउ ॥ हरि आइ मिलिआ जगजीवनु मेरे गोविंदा मै सुखि विहाणी रैणी जीउ ॥ २ ॥ मै मेलहु संत मेरा हरि प्रभु सजणु मै मनि
 तनि भुख लगाईआ जीउ ॥ हउ रहि न सकउ बिनु देखे मेरे प्रीतम मै अंतरि बिरहु हरि लाईआ जीउ ॥ हरि राइआ मेरा सजणु
 पिआरा गुरु मेले मेरा मनु जीवाईआ जीउ ॥ मेरै मनि तनि आसा पूरीआ मेरे गोविंदा हरि मिलिआ मन वाधाईआ जीउ ॥ ३
 ॥ वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटडिअहु सद वारी जीउ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु पिरँम का मेरे गोविदा हरि पूंजी
 राखु हमारी जीउ ॥ सतिगुरु विसटु मेलि मेरे गोविंदा हरि मेले करि रैबारी जीउ ॥ हरि नामु दइआ करि पाइआ मेरे गोविंदा
 जन नानकु सरणि तुमारी जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ २९ ॥ ६७ ॥ गउडी माझ महला ४ ॥ चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ
 हरि प्रभु मेरा चोजी जीउ ॥ हरि आपे कान्हु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपे गोपी खोजी जीउ ॥ हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे
 गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ ॥ हरि सुजाणु न भुलई मेरे गोविंदा आपे सतिगुरु जोगी जीउ ॥ १ ॥ आपे जगतु उपाइदा
 मेरे गोविदा हरि आपि खेलै बहु रंगी जीउ ॥ इकना भोग भोगाइदा मेरे गोविंदा इकि नगन फिरहि नंग नंगी जीउ ॥ आपे
 जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि दानु देवै सभ मंगी जीउ ॥ भगता नामु आधारु है मेरे गोविंदा हरि कथा मंगहि हरि चंगी जीउ
 ॥ २ ॥ हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा हरि भगता लोच मनि पूरी जीउ ॥ आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि
 रहिआ नही दूरी जीउ ॥ हरि अंतरि बाहरि आपि है मेरे गोविदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ ॥ हरि आतमरामु पसारिआ मेरे
 गोविंदा हरि वेखै आपि हदूरी जीउ ॥ ३ ॥ हरि अंतरि वाजा पउणु है मेरे गोविंदा हरि आपि वजाए तित वाजै जीउ ॥ हरि
 अंतरि नामु निधानु है मेरे गोविंदा गुर सबदी हरि प्रभु गाजै जीउ ॥ आपे सरणि पवाइदा मेरे गोविंदा हरि भगत जना राखु लाजै

जीउ ॥ वडभागी मिलु संगती मेरे गोविंदा जन नानक नाम सिधि काजै जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६८ ॥ गउडी माझ
 महला ४ ॥ मै हरि नामै हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ मेरा हरि प्रभु मितु मिलै सुखु पाई जीउ ॥ हरि प्रभु देखि जीवा मेरी माई
 जीउ ॥ मेरा नामु सखा हरि भाई जीउ ॥ १ ॥ गुण गावहु संत जीउ मेरे हरि प्रभु केरे जीउ ॥ जपि गुरुमुखि नामु जीउ भाग
 वडरे जीउ ॥ हरि हरि नामु जीउ प्रान हरि मेरे जीउ ॥ फिरि बहुडि न भवजल फेरे जीउ ॥ २ ॥ किउ हरि प्रभु वेखा मेरै मनि
 तनि चाउ जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ मनि लगा भाउ जीउ ॥ गुरु सबदी पाईरे हरि प्रीतम राउ जीउ ॥ वडभागी जपि नाउ
 जीउ ॥ ३ ॥ मेरै मनि तनि वडडी गोविंद प्रभु आसा जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ गोविंद प्रभु पासा जीउ ॥ सतिगुरु मति
 नामु सदा परगासा जीउ ॥ जन नानक पूरिअडी मनि आसा जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३१ ॥ ६९ ॥ गउडी माझ महला ४ ॥
 मेरा बिहरी नामु मिलै ता जीवा जीउ ॥ मन अंदरि अँमितु गुरुमति हरि लीवा जीउ ॥ मनु हरि रँगि रतडा हरि रसु सदा पीवा
 जीउ ॥ हरि पाइअडा मनि जीवा जीउ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि बाणु जीउ ॥ मेरा प्रीतमु मित्रु हरि पुरखु सुजाणु
 जीउ ॥ गुरु मेले संत हरि सुघडु सुजाणु जीउ ॥ हउ नाम विटहु कुरबाणु जीउ ॥ २ ॥ हउ हरि हरि सजणु हरि मीतु दसाई
 जीउ ॥ हरि दसहु संतहु जी हरि खोजु पवाई जीउ ॥ सतिगुरु तुठडा दसे हरि पाई जीउ ॥ हरि नामे नामि समाई जीउ ॥
 ३ ॥ मै वेदन प्रेमु हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ गुरु सरधा पूरि अँमितु मुखे पाई जीउ ॥ हरि होहु दइआलु हरि नामु धिआई
 जीउ ॥ जन नानक हरि रसु पाई जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ २० ॥ १८ ॥ ३२ ॥ ७० ॥

महला ५ रागु गउडी गुआरेरी चउपदे १३ सतिगुरु प्रसादि ॥

किन बिधि कुसलु होत मेरे भाई ॥ किउ पाईरे हरि राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसलु न छिहि मेरी सभ माइआ ॥ ऊचे
 मँदर सुँदर छाइआ ॥ झूठे लालचि जनमु गवाइआ ॥ १ ॥

हसती घोड़े देखिं विगासा ॥ लसकर जोड़े नेब खवासा ॥ गलिं जेवड़ी हउमै के फासा ॥ २ ॥ राजु कमावै दह दिस सारी ॥ माणै रँग भोग बहु नारी ॥ जिउ नरपति सुपनै भेखारी ॥ ३ ॥ एकु कमलु मो कउ सतिगुरू बताइआ ॥ हरिं जो किछु करे सु हरिं किआ भगता भाइआ ॥ जन नानक हउमै मारिं समाइआ ॥ ४ ॥ इनि बिधि कुसल होत मेरे भाई ॥ इउ पाईऐ हरिं राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ किउ भ्रमीऐ भ्रमु किस का होई ॥ जा जलिं थलिं महीअलिं रविआ सोई ॥ गुरुमुखिं उबरे मनमुख पति खोई ॥ १ ॥ जिंसु राखै रामु दइआरा ॥ तिसु नही दूजा को पहुचनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ महि वरतै एकु अनँता ॥ ता तूँ सुखिं सोउ होइ अचिँता ॥ ओहु सभु किछु जाणै जो वरतँता ॥ २ ॥ मनमुख मुए जिंन दूजी पिआसा ॥ बहु जोनी भवहि धुरिं किरति लिखिआसा ॥ जैसा बीजहि तैसा खासा ॥ ३ ॥ देखिं दरसु मनि भइआ विगासा ॥ सभु नदरी आइआ ब्रहमु परगासा ॥ जन नानक की हरिं पूरन आसा ॥ ४ ॥ २ ॥ ७१ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कई जनम भए कीट पतंग ॥ कई जनम गज मीन कुरंग ॥ कई जनम पँखी सरप होइओ ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ ॥ १ ॥ मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥ चिरँकाल इह देह सँजरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कई जनम सैल गिरि करिआ ॥ कई जनम गरभ हिरि खरिआ ॥ कई जनम साख करि उपाइआ ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ ॥ २ ॥ साधसँगि भइओ जनमु परापति ॥ करि सेवा भजु हरिं हरिं गुरुमति ॥ तिआगि मानु झूठु अभिमानु ॥ जीवत मरहि दरगह परवानु ॥ ३ ॥ जो किछु होआ सु तुझ ते होगु ॥ अवरु न दूजा करणै जोगु ॥ ता मिलिऐ जा लैहि मिलाइ ॥ कहु नानक हरिं हरिं गुण गाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कर्म भूमि महि बोअहु नामु ॥ पूरन होइ तुमारा कामु ॥ फल पावहि मिटै जम त्रास ॥ नित गावहि हरिं हरिं गुण जास ॥ १ ॥ हरिं हरिं नामु अंतरि उरि धारि ॥ सीघर कारजु लेहु सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपने प्रभ सिउ होहु सावधानु ॥ ता तूँ दरगह पावहि

मानु ॥ उकति सिआणप सगली तिआगु ॥ संत जना की चरणी लागु ॥ २ ॥ सरब जीअ हहि जा कै हाथि ॥ कदे न विछुडै
 सभ कै साथि ॥ उपाव छोडि गहु तिस की ओट ॥ निमख माहि होवै तेरी छोटि ॥ ३ ॥ सदा निकटि करि तिस नो जाणु ॥
 प्रभ की आगिआ सति करि मानु ॥ गुर कै बचनि मिटावहु आपु ॥ हरि हरि नामु नानक जपि जापु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७३ ॥
 गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर का बचनु सदा अबिनासी ॥ गुर कै बचनि कटी जम फासी ॥ गुर का बचनु जीअ कै सँगि ॥
 गुर कै बचनि रचै राम कै रँगि ॥ १ ॥ जो गुरि दीआ सु मन कै कामि ॥ संत का कीआ सति करि मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर
 का बचनु अटल अछेद ॥ गुर कै बचनि कटे भ्रम भेद ॥ गुर का बचनु कतहु न जाइ ॥ गुर कै बचनि हरि के गुण गाइ ॥ २ ॥
 गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥ गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥ गुर कै बचनि नरके न पवै ॥ गुर कै बचनि रसना अँम्रितु रवै
 ॥ ३ ॥ गुर का बचनु परगटु सँसारि ॥ गुर कै बचनि न आवै हारि ॥ जिसु जन होए आपि क्रिपाल ॥ नानक सतिगुर सदा
 दइआल ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७४ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिनि कीता माटी ते रतनु ॥ गरभ महि राखिआ जिनि करि
 जतनु ॥ जिनि दीनी सोभा वडिआई ॥ तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥ १ ॥ रमईआ रेनु साधु जन पावउ ॥ गुर मिलि
 अपुना खसमु धिआवउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीता मूड ते बकता ॥ जिनि कीता बेसुरत ते सुरता ॥ जिसु परसादि नवै
 निधि पाई ॥ सो प्रभु मन ते बिसरत नाही ॥ २ ॥ जिनि दीआ निथावे कउ थानु ॥ जिनि दीआ निमाने कउ मानु ॥ जिनि
 कीनी सभ पूरन आसा ॥ सिमरउ दिनु रैनि सास गिरासा ॥ ३ ॥ जिसु प्रसादि माइआ सिलक काटी ॥ गुर प्रसादि अँम्रितु
 बिखु खाटी ॥ कहु नानक इस ते किछु नाही ॥ राखनहारे कउ सालाही ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७५ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
 तिस की सरणि नाही भउ सोगु ॥ उस ते बाहरि कछू न होगु ॥ तजी सिआणप बल बुधि बिकार ॥ दास अपने की राखनहार
 ॥ १ ॥ जपि मन मेरे राम राम रँगि ॥ घरि बाहरि तेरै सद सँगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की टेक मनै महि

राखु ॥ गुर का सबदु अँम्रित रसु चाखु ॥ अवरि जतन कहहु कउन काज ॥ करि किरपा राखै आपि लाज ॥ २ ॥ किआ
 मानुख कहहु किआ जोरु ॥ झूठा माइआ का सभु सोरु ॥ करण करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अँतरजामी ॥ ३ ॥
 सरब सुखा सुखु साचा एहु ॥ गुर उपदेसु मनै महि लेहु ॥ जा कउ राम नाम लिव लागी ॥ कहु नानक सो धँनु वडभागी ॥ ४
 ॥ ७ ॥ ७६ ॥ गउडी गुआरेरी महला ५ ॥ सुणि हरि कथा उतारी मैलु ॥ महा पुनीत भए सुख सैलु ॥ वडै भागि पाइआ
 साधसँगु ॥ पारब्रहम सिउ लागो रँगु ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपत जनु तारिओ ॥ अगनि सागरु गुरि पारि उतारिओ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ करि कीरतनु मन सीतल भए ॥ जनम जनम के किलविख गए ॥ सरब निधान पेखे मन माहि ॥ अब ढूढन
 काहे कउ जाहि ॥ २ ॥ प्रभ अपुने जब भए दइआल ॥ पूरन होई सेवक घाल ॥ बँधन काटि कीए अपने दास ॥ सिमरि
 सिमरि सिमरि गुणतास ॥ ३ ॥ एको मनि एको सभ ठाइ ॥ पूरन पूरि रहिओ सभ जाइ ॥ गुरि पूरै सभु भरमु चुकाइआ ॥
 हरि सिमरत नानक सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ७७ ॥ गउडी गुआरेरी महला ५ ॥ अगले मुए सि पाछै परे ॥ जो उबरे से
 बाँधि लकु खरे ॥ जिह धँधे महि ओइ लपटाए ॥ उन ते दुगुण दिडी उन माए ॥ १ ॥ ओह बेला कछु चीति न आवै ॥
 बिनसि जाइ ताहू लपटावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आसा बँधी मूरख देह ॥ काम क्रोध लपटिओ असनेह ॥ सिर ऊपरि ठाढो धरम
 राइ ॥ मीठी करि करि बिखिआ खाइ ॥ २ ॥ हउ बँधउ हउ साधउ बैरु ॥ हमरी भूमि कउणु घालै पैरु ॥ हउ पँडितु हउ
 चतुरु सिआणा ॥ करणैहारु न बुझै बिगाना ॥ ३ ॥ अपुनी गति मिति आपे जानै ॥ किआ को कहै किआ आखि वखानै
 ॥ जित जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ अपना भला सभ काहू मँगना ॥ ४ ॥ सभ किछु तेरा तूँ करणैहारु ॥ अँतु नाही
 किछु पारावारु ॥ दास अपने कउ दीजै दानु ॥ कबहू न विसरै नानक नामु ॥ ५ ॥ ९ ॥ ७८ ॥ गउडी गुआरेरी महला ५
 ॥ अनिक जतन नही होत छुटारा ॥ बहुतु सिआणप आगल भारा ॥ हरि की सेवा निरमल हेत ॥ प्रभ की दरगह

सोभा सेत ॥ १ ॥ मन मेरे गहु हरि नाम का ओला ॥ तुझै न लागै ताता झोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ बोहिथु भै सागर
 माहि ॥ अँधकार दीपक दीपाहि ॥ अगनि सीत का लाहसि दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ २ ॥ उतरि जाइ तेरे मन
 की पिआस ॥ पूरन होवै सगली आस ॥ डोलै नाही तुमरा चीतु ॥ अँमित नामु जपि गुरमुखि मीत ॥ ३ ॥ नामु अउखधु
 सोई जनु पावै ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवावै ॥ हरि हरि नामु जा कै हिरदै वसै ॥ दूखु दरदु तिह नानक नसै ॥ ४ ॥ १०
 ॥ ७९ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बहुतु दरबु करि मनु न अघाना ॥ अनिक रूप देखि नह पतीआना ॥ पुत्र कलत्र
 उरझिओ जानि मेरी ॥ ओह बिनसै ओइ भसमै ढेरी ॥ १ ॥ बिनु हरि भजन देखउ बिललाते ॥ धिगु तनु धिगु धनु माइआ
 साँगे राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ बिगारी कै सिरि दीजहि दाम ॥ ओइ खसमै कै छिहि उन दूख सहाम ॥ जिउ सुपनै होइ
 बैसत राजा ॥ नेत्र पसारै ता निररथ काजा ॥ २ ॥ जिउ राखा खेत ऊपरि पराए ॥ खेतु खसम का राखा उठि जाए ॥ उसु
 खेत कारणि राखा कडै ॥ तिस कै पालै कछु न पडै ॥ ३ ॥ जिस का राजु तिसै का सुपना ॥ जिनि माइआ दीनी तिनि लाई
 त्रिसना ॥ आपि बिनाहे आपि करे रासि ॥ नानक प्रभ आगै अरदासि ॥ ४ ॥ ११ ॥ ८० ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
 बहु रँग माइआ बहु बिधि पेखी ॥ कलम कागद सिआनप लेखी ॥ महर मलूक होइ देखिआ खान ॥ ता ते नाही मनु
 त्रिपतान ॥ १ ॥ सो सुखु मो कउ संत बतावहु ॥ त्रिसना बूझै मनु त्रिपतावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असु पवन हसति असवारी
 ॥ चोआ चँदनु सेज सुँदरि नारी ॥ नट नाटिक आखारे गाइआ ॥ ता महि मनि संतोखु न पाइआ ॥ २ ॥ तरखतु सभा
 मँडन दोलीचे ॥ सगल मेवे सुँदर बागीचे ॥ आखेड़ बिरति राजन की लीला ॥ मनु न सुहेला परपँचु हीला ॥ ३ ॥ करि
 किरपा संतन सचु कहिआ ॥ सब सूख इहु आनँदु लहिआ ॥ साधसाँगि हरि कीरतनु गाईरे ॥ कहु नानक वडभागी पाईरे
 ॥ ४ ॥ जा कै हरि धनु सोई सुहेला ॥ प्रभ किरपा ते साधसाँगि मेला ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १२ ॥ ८१ ॥ गउड़ी गुआरेरी

महला ५ ॥ प्राणी जाणै इहु तनु मेरा ॥ बहुरि बहुरि उआहू लपटेरा ॥ पुत्र कलत्र गिरसत का फासा ॥ होनु न पाईऐ राम के
 दासा ॥ १ ॥ कवन सु बिधि जितु राम गुण गाइ ॥ कवन सु मति जितु तरै इह माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो भलाई सो बुरा
 जानै ॥ साचु कहै सो बिखै समानै ॥ जाणै नाही जीत अरु हार ॥ इहु वलेवा साकत संसार ॥ २ ॥ जो हलाहल सो पीवै
 बउरा ॥ अँमितु नामु जानै करि कउरा ॥ साधसँग कै नाही नेरि ॥ लख चउरासीह भ्रमता फेरि ॥ ३ ॥ एकै जालि फहाए
 पँखी ॥ रसि रसि भोग करहि बहु रँगी ॥ कहु नानक जिसु भए क्रिपाल ॥ गुरि पूरै ता के काटे जाल ॥ ४ ॥ १३ ॥ ८२
 ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥ प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥ प्रभ किरपा ते बँधन छुटै ॥
 तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥ १ ॥ तुम लावहु तउ लागह सेव ॥ हम ते कछु न होवै देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु भावै ता गावा
 बाणी ॥ तुधु भावै ता सचु वखाणी ॥ तुधु भावै ता सतिगुर मइआ ॥ सरब सुखा प्रभ तेरी दइआ ॥ २ ॥ जो तुधु भावै सो
 निरमल करमा ॥ जो तुधु भावै सो सचु धरमा ॥ सरब निधान गुण तुम ही पासि ॥ तूँ साहिबु सेवक अरदासि ॥ ३ ॥ मनु
 तनु निरमलु होइ हरि रँगि ॥ सरब सुखा पावउ सतसँगि ॥ नामि तेरै रहै मनु राता ॥ इहु कलिआणु नानक करि जाता ॥
 ४ ॥ १४ ॥ ८३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ आन रसा जेते तै चारवै ॥ निमख न त्रिसना तेरी लाथे ॥ हरि रस का तूँ
 चारवहि सादु ॥ चारवत होइ रहहि बिसमादु ॥ १ ॥ अँमितु रसना पीउ पिआरी ॥ इह रस राती होइ त्रिपतारी ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ हे जिहवे तूँ राम गुण गाउ ॥ निमख निमख हरि हरि हरि धिआउ ॥ आन न सुनीऐ कतहूँ जाईऐ ॥ साधसँगति
 वडभागी पाईऐ ॥ २ ॥ आठ पहर जिहवे आराधि ॥ पारब्रहम ठाकुर आगाधि ॥ ईहा ऊहा सदा सुहेली ॥ हरि गुण
 गावत रसन अमोली ॥ ३ ॥ बनसपति मउली फल फुल पेडे ॥ इह रस राती बहुरि न छोडे ॥ आन न रस कस लवै न लाई
 ॥ कहु नानक गुर भए है सहाई ॥ ४ ॥ १५ ॥ ८४ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ मनु मँदरु तनु साजी बारि ॥

इस ही मधे बसतु अपार ॥ इस ही भीतरि सुनीअत साहु ॥ कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु ॥ १ ॥ नाम रतन को को
 बिउहारी ॥ अँम्रित भोजनु करे आहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु अरपी सेव करीजै ॥ कवन सु जुगति जितु करि भीजै ॥
 पाइ लगउ तजि मेरा तेरै ॥ कवनु सु जनु जो सउदा जोरै ॥ २ ॥ महलु साह का किन बिधि पावै ॥ कवन सु बिधि जितु
 भीतरि बुलावै ॥ तूँ वड साहु जा के कोटि वणजारे ॥ कवनु सु दाता ले सँचारे ॥ ३ ॥ खोजत खोजत निज घरु पाइआ ॥
 अमोल रतनु साचु दिखलाइआ ॥ करि किरपा जब लेले साहि ॥ कहु नानक गुर कै वेसाहि ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८५ ॥ गउड़ी
 महला ५ गुआरेरी ॥ रैणि दिनसु रहै इक रँगा ॥ प्रभ कउ जाणै सद ही सँगा ॥ ठाकुर नामु कीओ उनि वरतनि ॥ त्रिपति
 अघावनु हरि कै दरसनि ॥ १ ॥ हरि सँगि राते मन तन हरे ॥ गुर पूरे की सरनी परे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल आतम
 आधार ॥ एकु निहारहि आगिआकार ॥ एको बनजु एको बिउहारी ॥ अवरु न जानहि बिनु निरँकारी ॥ २ ॥ हरख सोग
 दुहूँ ते मुक्ते ॥ सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥ दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥ पारब्रहम का ओइ धिआनु धरते ॥ ३
 ॥ सँतन की महिमा कवन वखानउ ॥ अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ ॥ पारब्रहम मोहि किरपा कीजै ॥ धूरि सँतन
 की नानक दीजै ॥ ४ ॥ १७ ॥ ८६ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तूँ मेरा सखा तूँही मेरा मीतु ॥ तूँ मेरा प्रीतमु तुम सँगि
 हीतु ॥ तूँ मेरी पति तूँहै मेरा गहणा ॥ तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥ १ ॥ तूँ मेरे लालन तूँ मेरे प्रान ॥ तूँ मेरे साहिब तूँ
 मेरे खान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥ जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥ जह पेखउ तहा तुम बसना
 ॥ निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥ २ ॥ तूँ मेरी नव निधि तूँ भँडारु ॥ रँग रसा तूँ मनहि अधारु ॥ तूँ मेरी सोभा तुम
 सँगि रचीआ ॥ तूँ मेरी ओट तूँहै मेरा तकीआ ॥ ३ ॥ मन तन अँतरि तुही धिआइआ ॥ मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥
 सतिगुर ते द्विडिआ इकु एकै ॥ नानक दास हरि हरि हरि टेकै ॥ ४ ॥ १८ ॥ ८७ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बिआपत

हरख सोग बिसथार ॥ बिआपत सुरग नरक अवतार ॥ बिआपत धन निरधन पेखि सोभा ॥ मूलु बिआपी बिआपसि लोभा ॥
 ॥ १ ॥ माइआ बिआपत बहु परकारी ॥ सँत जीवहि प्रभ ओट तुमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिआपत अहँबुधि का माता ॥
 बिआपत पुत्र कलत्र सँगि राता ॥ बिआपत हसति घोड़े अरु बसता ॥ बिआपत रूप जोबन मद मसता ॥ २ ॥ बिआपत
 भूमि रँक अरु रँगा ॥ बिआपत गीत नाद सुणि सँगा ॥ बिआपत सेज महल सीगार ॥ पँच दूत बिआपत अँधिआर ॥ ३ ॥
 बिआपत करम करै हउ फासा ॥ बिआपति गिरसत बिआपत उदासा ॥ आचार बिउहार बिआपत इह जाति ॥ सभ किछु
 बिआपत बिनु हरि रँग रात ॥ ४ ॥ सँतन के बँधन काटे हरि राइ ॥ ता कउ कहा बिआपै माइ ॥ कहु नानक जिनि धूरि सँत
 पाई ॥ ता कै निकटि न आवै माई ॥ ५ ॥ १९ ॥ ८८ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ नैनहु नीद पर द्रिसटि विकार ॥ खवण
 सोए सुणि निँद वीचार ॥ रसना सोई लोभि मीठै सादि ॥ मनु सोइआ माइआ बिसमादि ॥ १ ॥ इसु ग्रिह महि कोई जागतु
 रहै ॥ साबतु वसतु ओहु अपनी लहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल सहेली अपनै रस माती ॥ ग्रिह अपुने की खबरि न जाती ॥
 मुसनहार पँच बटवारे ॥ सूने नगरि परे ठगहारे ॥ २ ॥ उन ते राखै बापु न माई ॥ उन ते राखै मीतु न भाई ॥ दरबि
 सिआणप ना ओइ रहते ॥ साधसँगि ओइ दुसट वसि होते ॥ ३ ॥ करि किरपा मोहि सारिँगपाणि ॥ सँतन धूरि सरब निधान
 ॥ साबतु पूँजी सतिगुर सँगि ॥ नानकु जागै पारब्रहम कै रँगि ॥ ४ ॥ सो जागै जिसु प्रभ किरपालु ॥ इह पूँजी साबतु धनु
 मालु ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ २० ॥ ८९ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जा कै वसि खान सुलतान ॥ जा कै वसि है सगल
 जहान ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस ते बाहरि नाही कोइ ॥ १ ॥ कहु बेनँती अपुने सतिगुर पाहि ॥ काज तुमारे
 देइ निबाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु सगल भगत जा का नामु अधारु ॥ सरब बिआपित पूरन धनी ॥
 जा की सोभा घटि घटि बनी ॥ २ ॥ जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥ जिसु सिमरत जमु किछु न कहै ॥ जिसु सिमरत

होत सूके हरे ॥ जिसु सिमरत दूबत पाहन तरे ॥ ३ ॥ सँत सभा कउ सदा जैकारु ॥ हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥
 कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥ सँत प्रसादि मो कउ नाम निवास ॥ ४ ॥ २१ ॥ ९० ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥
 सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥ सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥ सतिगुर सँगि नाही मनु डोलै ॥ अँमित बाणी गुरमुखि
 बोलै ॥ १ ॥ सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥ सीतल साति गुर ते प्रभ जातै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँत प्रसादि जपै हरि
 नाउ ॥ सँत प्रसादि हरि कीरतनु गाउ ॥ सँत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥ सँत प्रसादि बँधन ते छुटे ॥ २ ॥ सँत क्रिपा ते
 मिटे मोह भरम ॥ साधरेण मजन सभि धरम ॥ साध क्रिपाल दइआल गोविँदु ॥ साधा महि इह हमरी जिँदु ॥ ३ ॥ किरपा
 निधि किरपाल धिआवउ ॥ साधसँगि ता बैठणु पावउ ॥ मोहि निरगुण कउ प्रभि कीनी दइआ ॥ साधसँगि नानक नामु
 लइआ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ९१ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ साधसँगि जपिओ भगवँतु ॥ केवल नामु दीओ गुरि मँतु ॥
 तजि अभिमान भए निरवैर ॥ आठ पहर पूजहु गुर पैर ॥ १ ॥ अब मति बिनसी दुसट बिगानी ॥ जब ते सुणिआ हरि जसु
 कानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहज सूख आनँद निधान ॥ राखनहार रखि लेइ निदान ॥ दूख दरद बिनसे भै भरम ॥ आवण
 जाण रखे करि करम ॥ २ ॥ पेखै बोलै सुणै सभु आपि ॥ सदा सँगि ता कउ मन जापि ॥ सँत प्रसादि भइओ परगासु ॥
 पूरि रहे एकै गुणतासु ॥ ३ ॥ कहत पवित्र सुणत पुनीत ॥ गुण गोविँद गावहि नित नीत ॥ कहु नानक जा कउ होहु
 क्रिपाल ॥ तिसु जन की सभ पूरन घाल ॥ ४ ॥ २३ ॥ ९२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बँधन तोड़ि बोलावै रामु ॥
 मन महि लागै साचु धिआनु ॥ मिटहि कलेस सुखी होइ रहीऐ ॥ ऐसा दाता सतिगुरु कहीए ॥ १ ॥ सो सुखदाता जि नामु
 जपावै ॥ करि किरपा तिसु सँगि मिलावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु होइ दइआलु तिसु आपि मिलावै ॥ सरब निधान गुरु ते
 पावै ॥ आपु तिआगि मिटै आवण जाणा ॥ साध कै सँगि पारब्रहमु पछाणा ॥ २ ॥ जन ऊपरि प्रभ भए दइआल ॥

जन की टेक एक गोपाल ॥ एका लिव एको मनि भाउ ॥ सब निधान जन कै हरि नाउ ॥ ३ ॥ पारब्रहम सिउ लागी प्रीति ॥
 ॥ निरमल करणी साची रीति ॥ गुरि पूरै मेटिआ अँधिआरा ॥ नानक का प्रभु अपर अपारा ॥ ४ ॥ २४ ॥ ९३ ॥ गउडी
 गुआरेरी महला ५ ॥ जिंसु मनि वसै तरै जनु सोइ ॥ जा कै करमि परापति होइ ॥ दूखु रोगु कछु भउ न बिआपै ॥ अँमित
 नामु रिदै हरि जापै ॥ १ ॥ पारब्रहमु परमेसुरु धिआईऐ ॥ गुर पूरे ते इह मति पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण करावनहार
 दइआल ॥ जीअ जँत सगले प्रतिपाल ॥ अगम अगोचर सदा बेअँता ॥ सिमरि मना पूरे गुर मँता ॥ २ ॥ जा की सेवा
 सब निधानु ॥ प्रभ की पूजा पाईऐ मानु ॥ जा की टहल न बिरथी जाइ ॥ सदा सदा हरि के गुण गाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा
 प्रभ अँतरजामी ॥ सुख निधान हरि अलख सुआमी ॥ जीअ जँत तेरी सरणाई ॥ नानक नामु मिलै वडिआई ॥ ४ ॥ २५
 ॥ ९४ ॥ गउडी गुआरेरी महला ५ ॥ जीअ जुगति जा कै है हाथ ॥ सो सिमरहु अनाथ को नाथु ॥ प्रभ चिति आए सभु
 दुखु जाइ ॥ भै सभ बिनसहि हरि कै नाइ ॥ १ ॥ बिनु हरि भउ काहे का मानहि ॥ हरि बिसरत काहे सुखु जानहि ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ जिनि धारे बहु धरणि अगास ॥ जा की जोति जीअ परगास ॥ जा की बखस न मेटै कोइ ॥ सिमरि सिमरि
 प्रभु निरभउ होइ ॥ २ ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभ नामु ॥ अनिक तीरथ मजनु इसनानु ॥ पारब्रहम की सरणी पाहि ॥
 कोटि कलँक खिन महि मिटि जाहि ॥ ३ ॥ बेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ प्रभ सेवक साचा वेसाहु ॥ गुरि पूरै राखे दे हाथ
 ॥ नानक पारब्रहम समराथ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९५ ॥ गउडी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर परसादि नामि मनु लागा ॥ जनम
 जनम का सोइआ जागा ॥ अँमित गुण उचरै प्रभ बाणी ॥ पूरे गुर की सुमति पराणी ॥ १ ॥ प्रभ सिमरत कुसल सभि पाए
 ॥ घरि बाहरि सुख सहज सबार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई पछाता जिनहि उपाइआ ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाइआ ॥
 बाह पकरि लीनो करि अपना ॥ हरि हरि कथा सदा जपु जपना ॥ २ ॥ मँत्रु तँत्रु अउखधु पुनहचारु ॥

हरि हरि नामु जीअ प्रान अधारु ॥ साचा धनु पाइओ हरि रँगि ॥ दुतरु तरे साध कै सँगि ॥ ३ ॥ सुखि बैसहु संत सजन परवारु ॥ हरि धनु खटिओ जा का नाहि सुमारु ॥ जिसहि परापति तिसु गुरु देइ ॥ नानक बिरथा कोइ न होइ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ९६ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हसत पूनीत होहि ततकाल ॥ बिनसि जाहि माइआ जँजाल ॥ रसना रमहु राम गुण नीत ॥ सुखु पावहु मेरे भाई मीत ॥ १ ॥ लिखु लेखणि कागदि मसवाणी ॥ राम नाम हरि अँमित बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इह कारजि तेरे जाहि बिकार ॥ सिमरत राम नाही जम मार ॥ धरम राइ के दूत न जोहै ॥ माइआ मगन न कछूरे मोहै ॥ २ ॥ उधरहि आपि तरै संसारु ॥ राम नाम जपि एकँकारु ॥ आपि कमाउ अवरु उपदेस ॥ राम नाम हिरदै परवेस ॥ ३ ॥ जा कै माथै एहु निधानु ॥ सोई पुरखु जपै भगवानु ॥ आठ पहर हरि हरि गुण गाउ ॥ कहु नानक हउ तिसु बलि जाउ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ९७ ॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ चउपदे दुपदे १४ सतिगुर प्रसादि ॥

जो पराइओ सोई अपना ॥ जो तजि छोडन तिसु सिउ मनु रचना ॥ १ ॥ कहहु गुसाई मिलीरे केह ॥ जो बिबरजत तिस सिउ नेह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ झूठु बात सा सचु करि जाती ॥ सति होवनु मनि लगै न राती ॥ २ ॥ बावै मारगु टेढा चलना ॥ सीधा छोडि अपूठा बुनना ॥ ३ ॥ दुहा सिरिआ का खसमु प्रभु सोई ॥ जिसु मेले नानक सो मुकता होई ॥ ४ ॥ २९ ॥ ९८ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कलिजुग महि मिलि आए संजोग ॥ जिचरु आगिआ तिचरु भोगहि भोग ॥ १ ॥ जलै न पाईरे राम सनेही ॥ किरति संजोगि सती उठि होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखा देखी मनहठि जलि जाईरे ॥ प्रिअ संगु न पावै बहु जोनि भवाईरे ॥ २ ॥ सील संजमि प्रिअ आगिआ मानै ॥ तिसु नारी कउ दुखु न जमानै ॥ ३ ॥ कहु नानक जिनि प्रिउ परमेसरु करि जानिआ ॥ धँनु सती दरगह परवानिआ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ९९ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥ हरि गुण गावह

सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीऊ दादे का खोलिं डिठा खजाना ॥ ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥ १ ॥ रतन लाल जा
 का कछु न मोलु ॥ भरे भँडार अखूट अतोल ॥ २ ॥ खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥ तोटि न आवै वधदो जाई ॥ ३ ॥
 कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥ सु एतु खजानै लइआ रलाइ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ १०० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ डरि डरि
 मरते जब जानीऐ दूरि ॥ डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥ १ ॥ सतिगुर अपुने कउ बलिहारै ॥ छोडि न जाई सरपर तारै ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ दूखु रोगु सोगु बिसरै जब नामु ॥ सदा अनँदु जा हरि गुण गामु ॥ २ ॥ बुरा भला कोई न कहीजै ॥ छोडि मानु
 हरि चरन गहीजै ॥ ३ ॥ कहु नानक गुर मँत्रु चितारि ॥ सुखु पावहि साचै दरबारि ॥ ४ ॥ ३२ ॥ १०१ ॥ गउड़ी महला ५
 ॥ जा का मीतु साजनु है समीआ ॥ तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥ १ ॥ जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥ दूखु दरदु
 भ्रमु ता का भागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥ सो अन रस नाही लपटाइओ ॥ २ ॥ जा का कहिआ
 दरगह चलै ॥ सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥ ३ ॥ जा का सभु किछु ता का होइ ॥ नानक ता कउ सदा सुखु होइ ॥ ४
 ॥ ३३ ॥ १०२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जा कै दुखु सुखु सम करि जापै ॥ ता कउ काड़ा कहा बिआपै ॥ १ ॥ सहज अनँद
 हरि साधू माहि ॥ आगिआकारी हरि हरि राइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै अचिंतु वसै मनि आइ ॥ ता कउ चिंता कतहूँ नाहि ॥
 २ ॥ जा कै बिनसिओ मन ते भरमा ॥ ता कै कछु नाही डरु जमा ॥ ३ ॥ जा कै हिरदै दीओ गुरि नामा ॥ कहु नानक ता कै
 सगल निधाना ॥ ४ ॥ ३४ ॥ १०३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ अगम रूप का मन महि थाना ॥ गुर प्रसादि किनै विरलै जाना
 ॥ १ ॥ सहज कथा के अँमित कुँटा ॥ जिसहि परापति तिसु लै भुँचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनहत बाणी थानु निराला ॥ ता
 की धुनि मोहे गोपाला ॥ २ ॥ तह सहज अखारे अनेक अनँता ॥ पारब्रहम के संगी सँता ॥ ३ ॥ हरख अनँत सोग नहीं
 बीआ ॥ सो घरु गुरि नानक कउ दीआ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ १०४ ॥ गउड़ी मः ५ ॥ कवन रूपु तेरा आराधउ ॥ कवन जोग

काइआ ले साधउ ॥ १ ॥ कवन गुनु जो तुझु लै गावउ ॥ कवन बोल पारब्रहम रीझावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन सु पूजा
 तेरी करउ ॥ कवन सु बिधि जितु भवजल तरउ ॥ २ ॥ कवन तपू जितु तपीआ होइ ॥ कवन सु नामु हउमै मलु खोइ ॥ ३
 ॥ गुण पूजा गिआन धिआन नानक सगल घाल ॥ जिसु करि किरपा सतिगुरु मिलै दइआल ॥ ४ ॥ तिस ही गुनु तिन ही
 प्रभु जाता ॥ जिस की मानि लेइ सुखदाता ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ३६ ॥ १०५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ आपन तनु नही जा
 को दरबा ॥ शक मिलख नही आपन दरबा ॥ १ ॥ आपन नही का कउ लपटाइओ ॥ आपन नामु सतिगुर ते पाइओ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ सुत बनिता आपन नही भाई ॥ इसट मीत आप बापु न माई ॥ २ ॥ सुइना रूपा फुनि नही दाम ॥ हैवर गैवर
 आपन नही काम ॥ ३ ॥ कहु नानक जो गुरि बखसि मिलाइआ ॥ तिस का सभु किछु जिस का हरि राइआ ॥ ४ ॥ ३७
 ॥ १०६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर के चरण ऊपरि मेरे माथे ॥ ता ते दुख मेरे सगले लाथे ॥ १ ॥ सतिगुर अपुने कउ
 कुरबानी ॥ आतम चीनि परम रंग मानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण रेणु गुर की मुखि लागी ॥ अहुँबुधि तिनि सगल तिआगी
 ॥ २ ॥ गुर का सबदु लगे मनि मीठा ॥ पारब्रहमु ता ते मोहि डीठा ॥ ३ ॥ गुरु सुखदाता गुरु करतारु ॥ जीअ प्राण
 नानक गुरु आधारु ॥ ४ ॥ ३८ ॥ १०७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ रे मन मेरे तूँ ता कउ आहि ॥ जा कै ऊणा कछहू नाहि ॥
 १ ॥ हरि सा प्रीतमु करि मन मीत ॥ प्रान अधारु राखहु सद चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे मन मेरे तूँ ता कउ सेवि ॥ आदि
 पुरख अपरँपर देव ॥ २ ॥ तिसु ऊपरि मन करि तूँ आसा ॥ आदि जुगादि जा का भरवासा ॥ ३ ॥ जा की प्रीति सदा सुखु
 होइ ॥ नानकु गावै गुर मिलि सोइ ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १०८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मीतु करै सोई हम माना ॥ मीत के करतब
 कुसल समाना ॥ १ ॥ एकाटेक मेरै मनि चीत ॥ जिसु किछु करणा सु हमरा मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीतु हमारा वेपरवाहा
 ॥ गुर किरपा ते मोहि असनाहा ॥ २ ॥ मीतु हमारा अंतरजामी ॥ समरथ पुरखु पारब्रहमु सुआमी ॥ ३ ॥

हम दासे तुम ठाकुर मेरे ॥ मानु महतु नानक प्रभु तेरे ॥ ४ ॥ ४० ॥ १०९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ तुम भए समरथ
अंगा ॥ ता कउ कछु नाही कालंगा ॥ १ ॥ माधउ जा कउ है आस तुमारी ॥ ता कउ कछु नाही संसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जा कै हिरदै ठाकुर होइ ॥ ता कउ सहसा नाही कोइ ॥ २ ॥ जा कउ तुम दीनी प्रभ धीर ॥ ता कै निकटि न आवै पीर ॥ ३
॥ कहु नानक मै सो गुरु पाइआ ॥ पारब्रहम पूरन देखाइआ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ११० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ दुलभ देह पाई
वडभागी ॥ नामु न जपहि ते आतम घाती ॥ १ ॥ मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥ नाम बिहून जीवन कउन काम ॥ १
॥ रहाउ ॥ खात पीत खेलत हसत बिसथार ॥ कवन अरथ मिरतक सीगार ॥ २ ॥ जो न सुनहि जसु परमानंदा ॥ पसु
पंखी त्रिगद जोनि ते मंदा ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु द्विड़ाइआ ॥ केवल नामु रिद माहि समाइआ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ १११
॥ गउड़ी महला ५ ॥ का की माई का को बाप ॥ नाम धारीक झूठे सभि साक ॥ १ ॥ काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥ मिलि
संजोगि हुकमि तूँ आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एका माटी एका जोति ॥ एको पवनु कहा कउनु रोति ॥ २ ॥ मेरा मेरा करि
बिललाही ॥ मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि खोले कपाट ॥ मुकतु भए बिनसे भ्रम थाट ॥ ४ ॥ ४३
॥ ११२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ वडे वडे जो दीसहि लोग ॥ तिन कउ बिआपै चिँता रोग ॥ १ ॥ कउन वडा माइआ
वडिआई ॥ सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझै ॥ छोडि चलै त्रिसना नहीं बुझै
॥ २ ॥ कहु नानक इहु ततु बीचारा ॥ बिनु हरि भजन नाही छुटकारा ॥ ३ ॥ ४४ ॥ ११३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ पूरा
मारगु पूरा इसनानु ॥ सभु किछु पूरा हिरदै नामु ॥ १ ॥ पूरी रही जा पूरै राखी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥ १ ॥
रहाउ ॥ पूरा सुखु पूरा संतोखु ॥ पूरा तपु पूरन राजु जोगु ॥ २ ॥ हरि कै मारगि पतित पुनीत ॥ पूरी सोभा पूरा लोकीक
॥ ३ ॥ करणहारु सद वसै हदूरा ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा ॥ ४ ॥ ४५ ॥ ११४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ संत की

धूरि मिटे अघ कोट ॥ संत प्रसादि जनम मरण ते छोट ॥ १ ॥ संत का दरसु पूरन इसनानु ॥ संत क्रिपा ते जपीरे नामु ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ संत कै सँगि मिटिआ अहँकारु ॥ दिसटि आवै सभु एकँकारु ॥ २ ॥ संत सुप्रसँन आए वसि पँचा ॥ अँमित
 नामु रिदै लै सँचा ॥ ३ ॥ कहु नानक जा का पूरा करम ॥ तिसु भेटे साधू के चरन ॥ ४ ॥ ४६ ॥ ११५ ॥ गउड़ी महला ५
 ॥ हरि गुण जपत कमलु परगासै ॥ हरि सिमरत त्रास सभ नासै ॥ १ ॥ सा मति पूरी जितु हरि गुण गावै ॥ वडै भागि
 साधू सँगु पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसँगि पाईरे निधि नामा ॥ साधसँगि पूरन सभि कामा ॥ २ ॥ हरि की भगति जनमु
 परवानु ॥ गुर किरपा ते नामु वखाणु ॥ ३ ॥ कहु नानक सो जनु परवानु ॥ जा कै रिदै वसै भगवानु ॥ ४ ॥ ४७ ॥ ११६
 ॥ गउड़ी महला ५ ॥ एकसु सिउ जा का मनु राता ॥ विसरी तिसै पराई ताता ॥ १ ॥ बिनु गोबिंद न दीसै कोई ॥ करन
 करावन करता सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनहि कमावै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥ २ ॥ जा कै हरि
 धनु सो सच साहु ॥ गुरि पूरै करि दीनो विसाहु ॥ ३ ॥ जीवन पुरखु मिलिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक परम पदु पाइआ ॥
 ४ ॥ ४८ ॥ ११७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ नामु भगत कै प्रान अधारु ॥ नामो धनु नामो बिउहारु ॥ १ ॥ नाम वडाई जनु
 सोभा पाए ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु भगत कै सुख असथानु ॥ नाम रतु सो भगतु परवानु
 ॥ २ ॥ हरि का नामु जन कउ धारै ॥ सासि सासि जनु नामु समारै ॥ ३ ॥ कहु नानक जिसु पूरा भागु ॥ नाम सँगि ता का
 मनु लागु ॥ ४ ॥ ४९ ॥ ११८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ ॥ तब ते धावतु मनु त्रिपताइआ ॥
 १ ॥ सुख बिस्वामु पाइआ गुण गाइ ॥ स्रमु मिटिआ मेरी हती बलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल अराधि भगवँता ॥ हरि
 सिमरन ते मिटी मेरी चिँता ॥ २ ॥ सभ तजि अनाथु एक सरणि आइओ ॥ ऊच असथानु तब सहजे पाइओ ॥ ३ ॥ दूखु
 दरदु भरमु भउ नसिआ ॥ करणहारु नानक मनि बसिआ ॥ ४ ॥ ५० ॥ ११९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ कर करि टहल

रसना गुण गावउ ॥ चरन ठाकुर कै मारगि धावउ ॥ १ ॥ भलो समो सिमरन की बरीआ ॥ सिमरत नामु भै पारि उतरीआ ॥
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र सँतन का दरसनु पेखु ॥ प्रभ अविनासी मन महि लेखु ॥ २ ॥ सुणि कीरतनु साध पहि जाइ ॥
 जनम मरण की त्रास मिटाइ ॥ ३ ॥ चरण कमल ठाकुर उरि धारि ॥ दुलभ देह नानक निसतारि ॥ ४ ॥ ५१ ॥ १२० ॥
 गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ अपनी किरपा धारै ॥ सो जनु रसना नामु उचारै ॥ १ ॥ हरि बिसरत सहसा दुखु बिआपै ॥
 सिमरत नामु भरमु भउ भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥ तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥
 २ ॥ हरि की टहल करत जनु सोहै ॥ ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥ ३ ॥ मनि तनि मुखि हरि नामु दइआल ॥ नानक
 तजीअले अवरि जँजाल ॥ ४ ॥ ५२ ॥ १२१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ गुर पूरे की टेक
 टिकाई ॥ १ ॥ दुख बिनसे सुख हरि गुण गाइ ॥ गुरु पूरा भेटिआ लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का नामु दीओ गुरि
 मंत्रु ॥ मिटे विसूरे उतरी चिंत ॥ २ ॥ अनद भए गुर मिलत क्रिपाल ॥ करि किरपा काटे जम जाल ॥ ३ ॥ कहु नानक
 गुरु पूरा पाइआ ॥ ता ते बहुरि न बिआपै माइआ ॥ ४ ॥ ५३ ॥ १२२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ राखि लीआ गुर पूरे आपि
 ॥ मनमुख कउ लागो सँतापु ॥ १ ॥ गुरू गुरू जपि मीत हमारे ॥ मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के
 चरण हिरदै वसाइ ॥ दुख दुसमन तेरी हतै बलाइ ॥ २ ॥ गुर का सबदु तेरै सँगि सहाई ॥ दइआल भए सगले जीअ भाई
 ॥ ३ ॥ गुरि पूरे जब किरपा करी ॥ भनति नानक मेरी पूरी परी ॥ ४ ॥ ५४ ॥ १२३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ अनिक रसा
 खाए जैसे ढोर ॥ मोह की जेवरी बाधिओ चोर ॥ १ ॥ मिरतक देह साधसँग बिहूना ॥ आवत जात जोनी दुख खीना ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ अनिक बसत्र सुँदर पहिराइआ ॥ जिउ डरना खेत माहि डराइआ ॥ २ ॥ सगल सरीर आवत सभ काम ॥
 निहफल मानुखु जपै नही नाम ॥ ३ ॥ कहु नानक जा कउ भए दइआला ॥ साधसँगि मिलि भजहि गोपाला ॥

४ ॥ ५५ ॥ १२४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ कलिं कलेस गुर सबदि निवारे ॥ आवण जाण रहे सुख सारे ॥ १ ॥ भै बिनसे
 निरभउ हरि धिआइआ ॥ साधसँगि हरि के गुण गाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कवल रिद अँतरि धारे ॥ अगनि सागर
 गुरि पारि उतारे ॥ २ ॥ बूडत जात पूरै गुरि काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥ ३ ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥
 जिंसु भेटत गति भई हमारी ॥ ४ ॥ ५६ ॥ १२५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ साधसँगि ता की सरनी परहु ॥ मनु तनु अपना
 आगै धरहु ॥ १ ॥ अँमित नामु पीवहु मेरे भाई ॥ सिमरि सिमरि सभ तपति बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि अभिमानु जनम
 मरणु निवारहु ॥ हरि के दास के चरण नमसकारहु ॥ २ ॥ सासि सासि प्रभु मनहि समाले ॥ सो धनु सँचहु जो चालै नाले
 ॥ ३ ॥ तिसहि परापति जिंसु मसतकि भागु ॥ कहु नानक ता की चरणी लागु ॥ ४ ॥ ५७ ॥ १२६ ॥ गउड़ी महला ५
 ॥ सूके हरे कीए खिन माहे ॥ अँमित द्रिसटि सँचि जीवाए ॥ १ ॥ काटे कसट पूरे गुरदेव ॥ सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ मिटि गई चिँत पुनी मन आसा ॥ करी दइआ सतिगुरि गुणतासा ॥ २ ॥ दुख नाठे सुख आइ समाए ॥
 ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥ ३ ॥ इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥ नानक ते जन सुफल फले ॥ ४ ॥ ५८ ॥ १२७ ॥ गउड़ी
 महला ५ ॥ ताप गए पाई प्रभि सांति ॥ सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥ १ ॥ प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥ जनम जनम के
 बिछुरे मेले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत सिमरत प्रभ का नाउ ॥ सगल रोग का बिनसिआ थाउ ॥ २ ॥ सहजि सुभाइ बोलै
 हरि बाणी ॥ आठ पहर प्रभ सिमरहु प्राणी ॥ ३ ॥ दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥ कहु नानक जो हरि गुन गावै ॥ ४ ॥
 ५९ ॥ १२८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ भले दिनस भले सँजोग ॥ जितु भेटे पारभ्रहम निरजोग ॥ १ ॥ ओह बेला कउ हउ
 बलि जाउ ॥ जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल मूरतु सफल ओह घरी ॥ जितु रसना उचरै हरि हरी ॥ २
 ॥ सफलु ओहु माथा सँत नमसकारसि ॥ चरण पुनीत चलाहि हरि मारगि ॥ ३ ॥ कहु नानक भला मेरा करम ॥ जितु

भेते साधू के चरन ॥ ४ ॥ ६० ॥ १२९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर का सबदु राखु मन माहि ॥ नामु सिमरि चिंता सभ जाहि ॥
 ॥ १ ॥ बिनु भगवँत नाही अन कोइ ॥ मारै राखै एको सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण रिदै उरि धारि ॥ अगनि सागरु
 जपि उतरहि पारि ॥ २ ॥ गुर मूरति सिउ लाइ धिआनु ॥ ईहा ऊहा पावहि मानु ॥ ३ ॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइआ
 ॥ मिटे अँदेसे नानक सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ६१ ॥ १३० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जिसु सिमरत दूखु सभ जाइ ॥ नामु रतनु
 वसै मनि आइ ॥ १ ॥ जपि मन मेरे गोविंद की बाणी ॥ साधू जन रामु रसन वखाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकसु बिनु नाही
 दूजा कोइ ॥ जा की द्रिसटि सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ साजनु मीतु सखा करि एकु ॥ हरि हरि अखर मन महि लेखु ॥ ३ ॥ रवि
 रहिआ सरबत सुआमी ॥ गुण गावै नानक अंतरजामी ॥ ४ ॥ ६२ ॥ १३१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ भै महि रचिओ सभु
 संसारा ॥ तिसु भउ नाही जिसु नामु अधारा ॥ १ ॥ भउ न विआपै तेरी सरणा ॥ जो तुधु भावै सोई करणा ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ सोग हरख महि आवण जाणा ॥ तिनि सुखु पाइआ जो प्रभ भाणा ॥ २ ॥ अगनि सागरु महा विआपै माइआ ॥ सो
 सीतल जिन सतिगुरु पाइआ ॥ ३ ॥ राखि लेइ प्रभ राखनहारा ॥ कहु नानक किआ जँत विचारा ॥ ४ ॥ ६३ ॥ १३२ ॥
 गउड़ी महला ५ ॥ तुमरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥ तुमरी क्रिपा ते दरगह थाउ ॥ १ ॥ तुझ बिनु पारब्रहम नहीं कोइ ॥ तुमरी
 क्रिपा ते सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम मनि वसे तउ दूखु न लागै ॥ तुमरी क्रिपा ते भ्रम भउ भागै ॥ २ ॥ पारब्रहम
 अपरंपर सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ ३ ॥ करउ अरदासि अपने सतिगुर पासि ॥ नानक नामु मिलै सचु रासि ॥
 ४ ॥ ६४ ॥ १३३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ कण बिना जैसे थोथर तुखा ॥ नाम बिहून सूने से मुखा ॥ १ ॥ हरि हरि नामु
 जपहु नित प्राणी ॥ नाम बिहून धिगु देह बिगानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना नाही मुखि भागु ॥ भरत बिहूण कहा सोहागु
 ॥ २ ॥ नामु बिसारि लगै अन सुआइ ॥ ता की आसन पूजै काइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ अपनी दाति ॥ नानक नामु

जपै दिन राति ॥ ४ ॥ ६५ ॥ १३४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ तूँ समरथु तूँहै मेरा सुआमी ॥ सभु किछु तुम ते तूँ अंतरजामी ॥ १ ॥ पारब्रहम पूरन जन ओट ॥ तेरी सरणि उधरहि जन कोटि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे ॥ तुमरी क्रिपा ते सूख घनेरे ॥ २ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो सचि समाणा ॥ ३ ॥ करि किरपा दीजै प्रभ दानु ॥ नानक सिमरै नामु निधानु ॥ ४ ॥ ६६ ॥ १३५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ ता का दरसु पाईऐ वडभागी ॥ जा की राम नामि लिव लागी ॥ १ ॥ जा कै हरि वसिआ मन माही ॥ ता कउ दूखु सुपनै भी नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब निधान राखे जन माहि ॥ ता कै सँगि किलविख दुख जाहि ॥ २ ॥ जन की महिमा कथी न जाइ ॥ पारब्रहमु जनु रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ दास की धूरि नानक कउ दीजै ॥ ४ ॥ ६७ ॥ १३६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥ सरब कलिआण वसै मनि आइ ॥ १ ॥ भजु मन मेरे एको नाम ॥ जीअ तेरे कै आवै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रैणि दिनसु गुण गाउ अनंता ॥ गुर पूरे का निरमल मँता ॥ २ ॥ छोडि उपाव एक टेक राखु ॥ महा पदारथु अँमित रसु चाखु ॥ ३ ॥ बिखम सागरु तेई जन तेरे ॥ नानक जा कउ नदरि करे ॥ ४ ॥ ६८ ॥ १३७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हिरदै चरन कमल प्रभ धारे ॥ पूरे सतिगुर मिलि निसतारे ॥ १ ॥ गोविँद गुण गावहु मेरे भाई ॥ मिलि साधु हरि नामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ देह होई परवानु ॥ सतिगुर ते पाइआ नाम नीसानु ॥ २ ॥ हरि सिमरत पूरन पदु पाइआ ॥ साधसँगि भै भरम मिटाइआ ॥ ३ ॥ जत कत देखउ तत रहिआ समाइ ॥ नानक दास हरि की सरणाइ ॥ ४ ॥ ६९ ॥ १३८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर जी के दरसन कउ बलि जाउ ॥ जपि जपि जीवा सतिगुर नाउ ॥ १ ॥ पारब्रहम पूरन गुरदेव ॥ करि किरपा लागउ तेरी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल हिरदै उर धारी ॥ मन तन धन गुर प्रान अधारी ॥ २ ॥ सफल जनमु होवै परवाणु ॥ गुरु पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥ ३ ॥ सँत धूरि पाईऐ वडभागी ॥ नानक गुर भेटत

हरि सिउ लिव लागी ॥ ४ ॥ ७० ॥ १३९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ करै दुहकरम दिखावै होरु ॥ राम की दरगह बाधा चोरु
॥ १ ॥ रामु रमै सोई रमाणा ॥ जलि थलि महीअलि एकु समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बिखु मुखि अँमित सुणावै ॥
जम पुरि बाधा चोटा खावै ॥ २ ॥ अनिक पड़दे महि कमावै विकार ॥ खिन महि प्रगट होहि संसार ॥ ३ ॥ अंतरि साचि
नामि रसि राता ॥ नानक तिसु किरपालु बिधाता ॥ ४ ॥ ७१ ॥ १४० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ राम रँगु कदे उतरि न जाइ ॥
गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥ १ ॥ हरि रँगि राता सो मनु साचा ॥ लाल रँग पूरन पुरखु बिधाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह सँगि
बैसि गुन गाइ ॥ ता का रँगु न उतरै जाइ ॥ २ ॥ बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइआ ॥ आन रँग फीके सभ माइआ ॥ ३
॥ गुरि रँगो से भए निहाल ॥ कहु नानक गुर भए है दइआल ॥ ४ ॥ ७२ ॥ १४१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सिमरत सुआमी
किलबिख नासे ॥ सूख सहज आनँद निवासे ॥ १ ॥ राम जना कउ राम भरोसा ॥ नामु जपत सभु मिटिओ अँदेसा ॥ १
॥ रहाउ ॥ साधसँगि कछु भउ न भराती ॥ गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥ २ ॥ करि किरपा प्रभ बँधन छोट ॥ चरण
कमल की दीनी ओट ॥ ३ ॥ कहु नानक मनि भई परतीति ॥ निरमल जसु पीवहि जन नीति ॥ ४ ॥ ७३ ॥ १४२ ॥
गउड़ी महला ५ ॥ हरि चरणी जा का मनु लागी ॥ दूखु दरदु भ्रमुता का भागी ॥ १ ॥ हरि धन को वापारी पूरा ॥ जिसहि
निवाजे सो जनु सूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ भए किरपाल गुसाई ॥ से जन लागे गुर की पाई ॥ २ ॥ सूख सहज सांति
आनँदा ॥ जपि जपि जीवे परमानँदा ॥ ३ ॥ नाम रासि साधसँगि खाटी ॥ कहु नानक प्रभि अपदा काटी ॥ ४ ॥ ७४ ॥
१४३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत सबि मिटहि कलेस ॥ चरण कमल मन महि परवेस ॥ १ ॥ उचरहु राम नामु लख
बारी ॥ अँमित रसु पीवहु प्रभ पिआरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख सहज रस महा अनँदा ॥ जपि जपि जीवे परमानँदा ॥ २ ॥
काम क्रोध लोभ मद खोए ॥ साधकै सँगि किलबिख सभ धोए ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानक दीजै

साधखाला ॥ ४ ॥ ७५ ॥ १४४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जिसका दीआपै नै खाइ ॥ तिसुसिउ आलसुकिउ बनै माइ ॥
 १ ॥ खसमु बिसारिआन कॅमि लागहि ॥ कउडी बदले रतनु तिआगहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभू तिआगि लागत अन लोभा
 ॥ दासि सलामु करत कत सोभा ॥ २ ॥ अँम्रित रसु खावहि खान पान ॥ जिनि दीए तिसहि न जानहि सुआन ॥ ३ ॥
 कहु नानक हम लूण हरामी ॥ बखसि लेहु प्रभ अँतरजामी ॥ ४ ॥ ७६ ॥ १४५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ के चरन मन
 माहि धिआनु ॥ सगल तीरथ मजन इसनानु ॥ १ ॥ हरि दिनु हरि सिमरनु मेरे भाई ॥ कोटि जनम की मलु लहि जाई ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ हरि की कथा रिद माहि बसाई ॥ मन बाँछत सगले फल पाई ॥ २ ॥ जीवन मरणु जनमु परवानु ॥ जा कै
 रिदैं वसै भगवानु ॥ ३ ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥ जिना परापति साधू धूरे ॥ ४ ॥ ७७ ॥ १४६ ॥ गउड़ी महला ५
 ॥ खादा पैनदा मूकरि पाइ ॥ तिस नो जोहहि दूत धरमराइ ॥ १ ॥ तिसुसिउ बेमुखु जिनि जीउ पिँडु दीना ॥ कोटि
 जनम भरमहि बहु जूना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत की आसी है रीति ॥ जो किछु करै सगल बिपरीति ॥ २ ॥ जीउ प्राण
 जिनि मनु तनु धारिआ ॥ सोई ठाकुरु मनहु बिसारिआ ॥ ३ ॥ बधे बिकार लिखे बहु कागर ॥ नानक उधरु क्रिपा सुख
 सागर ॥ ४ ॥ पारब्रहम तेरी सरणाइ ॥ बँधन काटि तरै हरि नाइ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७८ ॥ १४७ ॥ गउड़ी महला
 ५ ॥ अपने लोभ कउ कीनो मीतु ॥ सगल मनोरथ मुकति पदु दीतु ॥ १ ॥ ऐसा मीतु करहु सभु कोइ ॥ जा ते बिरथा
 कोइ न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपुनै सुआइ रिदैं लै धारिआ ॥ दूख दरद रोग सगल बिदारिआ ॥ २ ॥ रसना गीधी
 बोलत राम ॥ पूरन होए सगले काम ॥ ३ ॥ अनिक बार नानक बलिहारा ॥ सफल दरसनु गोबिँदु हमारा ॥ ४ ॥ ७९
 ॥ १४८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ कोटि बिघन हिरे खिन माहि ॥ हरि हरि कथा साधसँगि सुनाहि ॥ १ ॥ पीवत राम रसु
 अँम्रित गुण जासु ॥ जपि हरि चरण मिटी खुधि तासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब कलिआण सुख सहज निधान ॥ जा कै रिदैं

वसहि भगवान् ॥ २ ॥ अउखध मंत्र तंत सभि छारु ॥ करणैहारु रिदे महि धारु ॥ ३ ॥ तजि सभि भरम भजिओ
 पारब्रह्म ॥ कहु नानक अटल इहु धरमु ॥ ४ ॥ ८० ॥ १४९ ॥ गउडी महला ५ ॥ करि किरपा भेटे गुर सोई ॥ तितु
 बलि रोगु न बिआपै कोई ॥ १ ॥ राम रमण तरण भै सागर ॥ सरणि सूर फारे जम कागर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर मंत्रु
 दीओ हरि नाम ॥ इह आसर पूरन भए काम ॥ २ ॥ जप तप संजम पूरी वडिआई ॥ गुर किरपाल हरि भए सहार्ई ॥ ३ ॥
 मान मोह खोए गुरि भरम ॥ पेखु नानक पसरे पारब्रह्म ॥ ४ ॥ ८१ ॥ १५० ॥ गउडी महला ५ ॥ बिखै राज ते अंधुला
 भारी ॥ दुखि लागै राम नामु चितारी ॥ १ ॥ तेरे दास कउ तुही वडिआई ॥ माइआ मगनु नरकि लै जाई ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ रोग गिरसत चितारे नाउ ॥ बिखु माते का ठउर न ठाउ ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ आन सुखा नही
 आवहि चीति ॥ ३ ॥ सदा सदा सिमरउ प्रभ सुआमी ॥ मिलु नानक हरि अंतरजामी ॥ ४ ॥ ८२ ॥ १५१ ॥ गउडी
 महला ५ ॥ आठ पहर संगी बटवारे ॥ करि किरपा प्रभि लए निवारे ॥ १ ॥ ऐसा हरि रसु रमहु सभु कोइ ॥ सरब कला
 पूरन प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा तपति सागर संसार ॥ प्रभ खिन महि पारि उतारणहार ॥ २ ॥ अनिक बंधन तोरे
 नही जाहि ॥ सिमरत नाम मुकति फल पाहि ॥ ३ ॥ उकति सिआनप इस ते कछु नाहि ॥ करि किरपा नानक गुण गाहि
 ॥ ४ ॥ ८३ ॥ १५२ ॥ गउडी महला ५ ॥ थाती पाई हरि को नामि ॥ बिचरु संसार पूरन सभि काम ॥ १ ॥ वडभागी
 हरि कीरतनु गाईए ॥ पारब्रह्म तूँ देहि त पाईए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के चरण हिरदै उरि धारि ॥ भव सागरु चडि उतरहि
 पारि ॥ २ ॥ साधू संगु करहु सभु कोइ ॥ सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ॥ ३ ॥ प्रेम भगति भजु गुणी निधानु ॥
 नानक दरगह पाईए मानु ॥ ४ ॥ ८४ ॥ १५३ ॥ गउडी महला ५ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥ भ्रम बिनसे
 गाए गुण नीत ॥ १ ॥ ऊठत सोवत हरि संगि पहरुआ ॥ जा कै सिमरणि जम नही डरुआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण

कमल प्रभ रिदै निवासु ॥ सगल दूख का होइआ नासु ॥ २ ॥ आसा माणु ताणु धनु एक ॥ साचे साह की मन महि टेक ॥ ३
 ॥ महा गरीब जन साध अनाथ ॥ नानक प्रभि राखे दे हाथ ॥ ४ ॥ ८५ ॥ १५४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि नामि मजनु
 करि सूचे ॥ कोटि ग्रहण पुँन फल मूचे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के चरण रिदै महि बसे ॥ जनम जनम के किल विख नसे ॥ १ ॥
 साधसँगि कीरतन फलु पाइआ ॥ जम का मारगु द्रिसटि न आइआ ॥ २ ॥ मन बच क्रम गोविँद अधारु ॥ ता ते छुटिओ
 बिखु सँसारु ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि कीनो अपना ॥ नानक जापु जपे हरि जपना ॥ ४ ॥ ८६ ॥ १५५ ॥ गउड़ी महला
 ५ ॥ पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥ मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥ १ ॥ भै भँजन प्रभ मनि न बसाही ॥ डरपत डरपत
 जनम बहुतु जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै रिदै बसिओ हरि नाम ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन काम ॥ २ ॥ जनमु जरा
 मिरतु जिंसु वासि ॥ सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥ ३ ॥ मीतु साजनु सखा प्रभ एक ॥ नामु सुआमी का नानक टेक ॥
 ४ ॥ ८७ ॥ १५६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ बाहरि राखिओ रिदै समालि ॥ घरि आए गोविँद लै नालि ॥ १ ॥ हरि हरि नामु
 सँतन कै सँगि ॥ मनु तनु राता राम कै रँगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सागरु तरिआ ॥ जनम जनम के किल विख सभि
 हिरिआ ॥ २ ॥ सोभा सुरति नामि भगवँतु ॥ पूरे गुर का निरमल मँतु ॥ ३ ॥ चरण कमल हिरदे महि जापु ॥ नानकु पेखि
 जीवै परतापु ॥ ४ ॥ ८८ ॥ १५७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ धँनु इहु थानु गोविँद गुण गाए ॥ कुसल खेम प्रभि आपि बसाए ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥ कोटि अनँद जह हरि गुन गाही ॥ २ ॥ हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥
 प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥ २ ॥ सो वडभागी निहचल थानु ॥ जह जपीऐ प्रभ केवल नामु ॥ ३ ॥ जह जाईऐ तह नालि
 मेरा सुआमी ॥ नानक कउ मिलिआ अंतरजामी ॥ ४ ॥ ८९ ॥ १५८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जो प्राणी गोविँदु धिआवै ॥
 पड़िआ अणपड़िआ परम गति पावै ॥ १ ॥ साधू सँगि सिमरि गोपाल ॥ बिनु नावै झूठा धनु मालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥

रूपवँतु सो चतुरु सिआणा ॥ जिनि जनि मानिआ प्रभ का भाणा ॥ २ ॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥ घटि घटि
 अपना सुआमी जाणु ॥ ३ ॥ कहु नानक जा के पूरन भाग ॥ हरि चरणी ता का मनु लाग ॥ ४ ॥ ९० ॥ १५९ ॥ गउड़ी
 महला ५ ॥ हरि के दास सिउ साकत नही सँगु ॥ ओहु बिखई ओसु राम को रँगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन असवार जैसे तुरी
 सीगारी ॥ जिउ कापुरखु पुचारै नारी ॥ १ ॥ बैल कउ नेत्रा पाइ दुहावै ॥ गऊ चरि सिँघ पाछै पावै ॥ २ ॥ गाडर ले
 कामधेनु करि पूजी ॥ सउदे कउ धावै बिनु पूंजी ॥ ३ ॥ नानक राम नामु जपि चीत ॥ सोमरि सुआमी हरि सा मीत ॥ ४ ॥
 ९१ ॥ १६० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सा सति निरमल कहीअत धीर ॥ राम रसाइणु पीवत बीर ॥ १ ॥ हरि के चरण हिरदै
 करि ओट ॥ जनम मरण ते होवत छोट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥ राम रँगि निरमल परतापु ॥
 २ ॥ साधसँगि मिटि जात बिकार ॥ सभ ते ऊच एहो उपकार ॥ ३ ॥ प्रेम भगति राते गोपाल ॥ नानक जाचै साध खाल
 ॥ ४ ॥ ९२ ॥ १६१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ ऐसी प्रीति गोविंद सिउ लागी ॥ मेलि लए पूरन वडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥ तिउ हरि जनु जीवै नामु चितारी ॥ १ ॥ पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥ ओति पोति जनु
 हरि सिउ राता ॥ २ ॥ लोभी अनदु करै पेखि धना ॥ जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥ ३ ॥ बिसरु नही डकु तिलु दातार
 ॥ नानक को प्रभ प्रान अधार ॥ ४ ॥ ९३ ॥ १६२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ राम रसाइणि जो जन गीधे ॥ चरन कमल प्रेम
 भगती बीधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन रसा दीसहि सभि छारु ॥ नाम बिना निहफल संसार ॥ १ ॥ अँध कूप ते काढे आपि ॥
 गुण गोविंद अचरज परताप ॥ २ ॥ वणि त्रिणि त्रिभवणि पूरन गोपाल ॥ ब्रहम पसारु जीअ सँगि दइआल ॥ ३ ॥ कहु
 नानक सा कथनी सारु ॥ मानि लेतु जिसु सिरजनहारु ॥ ४ ॥ ९४ ॥ १६३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ नितप्रति नावणु राम
 सरि कीजै ॥ झोलि महा रसु हरि अँमितु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल उदकु गोविंद का नाम ॥ मजनु करत पूरन

सभिं काम ॥ १ ॥ सँतसँगि तह गोसटि होइ ॥ कोटि जनम के किलविख खोइ ॥ २ ॥ सिमरहि साध करहि आनँदु ॥
 मनि तनि रविआ परमानँदु ॥ ३ ॥ जिसहि परापति हरि चरण निधान ॥ नानक दास तिसहि कुरबान ॥ ४ ॥ ९५ ॥ १६४
 ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सो किछु करि जितु मैलु न लागै ॥ हरि कीरतन महि एहु मनु जागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एको सिमरि न
 दूजा भाउ ॥ सँतसँगि जपि केवल नाउ ॥ १ ॥ करम धरम नेम ब्रत पूजा ॥ पारब्रहम बिनु जानु न दूजा ॥ २ ॥ ता की
 पूरन होई घाल ॥ जा की प्रीति अपुने प्रभ नालि ॥ ३ ॥ सो बैसनो है अपर अपारु ॥ कहु नानक जिनि तजे बिकार ॥ ४
 ॥ ९६ ॥ १६५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीवत छाडि जाहि देवाने ॥ मुडुआ उन ते को वरसाने ॥ १ ॥ सिमरि गोविँदु मनि
 तनि धुरि लिखिआ ॥ काहू काज न आवत बिखिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखै ठगउरी जिनि जिनि खाई ॥ ता की तिसना
 कबहूँ न जाई ॥ २ ॥ दारन दुख दुतर सँसारु ॥ राम नाम बिनु कैसे उतरसि पारि ॥ ३ ॥ साधसँगि मिलि दुइ कुल साधि
 ॥ राम नाम नानक आराधि ॥ ४ ॥ ९७ ॥ १६६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गरीबा उपरि जि खिँजै दाडी ॥ पारब्रहमि सा
 अगनि महि साडी ॥ पूरा निआउ करे करतारु ॥ अपुने दास कउ राखनहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि जुगादि प्रगटि परतापु
 ॥ निँदकु मुआ उपजि वड तापु ॥ २ ॥ तिनि मारिआ जि रखै न कोइ ॥ आगै पाछै मँदी सोइ ॥ ३ ॥ अपुने दास राखै
 कँठि लाइ ॥ सरणि नानक हरि नामु धिआइ ॥ ४ ॥ ९८ ॥ १६७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ महजरु झूठा कीतोनु आपि ॥
 पापी कउ लागा सँतापु ॥ १ ॥ जिसहि सह्राई गोबिदु मेरा ॥ तिसु कउ जमु नही आवै नेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साची दरगह
 बोलै कूडु ॥ सिरु हाथ पछोडै अँधा मूडु ॥ २ ॥ रोग बिआपे करदे पाप ॥ अदली होइ बैठा प्रभु आपि ॥ ३ ॥ अपन
 कमाइरे आपे बाधे ॥ दरबु गइआ सभु जीअ कै साथै ॥ ४ ॥ नानक सरनि परे दरबारि ॥ राखी पैज मेरै करतारि ॥ ५ ॥
 ९९ ॥ १६८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जन की धूरि मन मीठ खटानी ॥ पूरबि करमि लिखिआ धुरि प्रानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

अहँबुधि मन पूरि थिधाई ॥ साध धूरि करि सुध मँजाई ॥ १ ॥ अनिक जला जे धोवै देही ॥ मैलु न उतरै सुधु न तेही ॥
 २ ॥ सतिगुरु भेटिओ सदा क्रिपाल ॥ हरि सिमरि सिमरि काटिआ भउ काल ॥ ३ ॥ मुकति भुगति जुगति हरि नाउ ॥
 प्रेम भगति नानक गुण गाउ ॥ ४ ॥ १०० ॥ १६९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीवन पदवी हरि के दास ॥ जिन मिलिआ
 आतम परगासु ॥ १ ॥ हरि का सिमरनु सुनि मन कानी ॥ सुखु पावहि हरि दुआर परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर
 धिआईए गोपालु ॥ नानक दरसन देखि निहालु ॥ २ ॥ १०१ ॥ १७० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सांति भई गुर गोबिदि
 पाई ॥ ताप पाप बिनसे मेरे भाई ॥ रहाउ ॥ राम नामु नित रसन बखान ॥ बिनसे रोग भए कलिआन ॥ १ ॥ पारब्रहम
 गुण अगम बीचार ॥ साधू सँगमि है निसतार ॥ २ ॥ निरमल गुण गावहु नित नीत ॥ गई बिआधि उबरे जन मीत ॥ ३
 ॥ मन बच क्रम प्रभु अपना धिआई ॥ नानक दास तेरी सरणाई ॥ ४ ॥ १०२ ॥ १७१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ नेत्र
 प्रगासु कीआ गुरदेव ॥ भरम गए पूरन भई सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सीतला ते रखिआ बिहारी ॥ पारब्रहम प्रभ किरपा धारी
 ॥ १ ॥ नानक नामु जपै सो जीवै ॥ साधसँगि हरि अँमितु पीवै ॥ २ ॥ १०३ ॥ १७२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ धनु ओहु
 मसतकु धनु तेरे नेत ॥ धनु ओइ भगत जिन तुम सँगि हेत ॥ १ ॥ नाम बिना कैसे सुखु लहीए ॥ रसना राम नाम जसु
 कहीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिन ऊपरि जाईए कुरबाणु ॥ नानक जिनि जपिआ निरबाणु ॥ २ ॥ १०४ ॥ १७३ ॥ गउड़ी
 महला ५ ॥ तूँहै मसलति तूँहै नालि ॥ तूँहै राखहि सारि समालि ॥ १ ॥ ऐसा रामु दीन दुनी सहाई ॥ दास की पैज रखै
 मेरे भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगै आपि इहु थानु वसि जा कै ॥ आठ पहर मनु हरि कउ जापै ॥ २ ॥ पति परवाणु सचु
 नीसाणु ॥ जा कउ आपि करहि फुरमानु ॥ ३ ॥ आपे दाता आपि प्रतिपालि ॥ नित नित नानक राम नामु समालि ॥ ४
 ॥ १०५ ॥ १७४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सतिगुरु पूरा भइआ क्रिपालु ॥ हिरदै वसिआ सदा गुपालु ॥ १ ॥

रामु खत सद ही सुखु पाइआ ॥ मइआ करी पूरन हरि राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ हरि हरि नामु
 असथिरु सोहागु ॥ २ ॥ १०६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ धोती खोलि विछाए हेठि ॥ गरधप वांगू लाहे पेटि ॥ १ ॥ बिनु
 करतूती मुकति न पाईरे ॥ मुकति पदारथु नामु धिआईरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा तिलक करत इसनानां ॥ छुरी काढि लेवै
 हथि दाना ॥ २ ॥ बेदु पडै मुखि मीठी बाणी ॥ जीआं कुहत न सँगै पराणी ॥ ३ ॥ कहु नानक जिंसु किरपा धारै ॥ हिरदा
 सुधु ब्रहमु बीचारै ॥ ४ ॥ १०७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ थिर घर बैसहु हरि जन पिआरे ॥ सतिगुर तुमरे काज सवारे ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ दुसट दूत परमेसरि मारे ॥ जन की पैज रखी करतारे ॥ १ ॥ बादिसाह साह सभ वसि करि दीने ॥ अँमित नाम
 महा रस पीने ॥ २ ॥ निरभउ होइ भजहु भगवान ॥ साधसँगति मिलि कीनो दानु ॥ ३ ॥ सरणि परे प्रभ अँतरजामी ॥
 नानक ओट पकरी सुआमी ॥ ४ ॥ १०८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सँगि राते भाहि न जलै ॥ हरि सँगि राते माइआ नहीं
 छलै ॥ हरि सँगि राते नहीं डूबै जला ॥ हरि सँगि राते सुफल फला ॥ १ ॥ सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥ भेटत सँगि हरि हरि
 गुन गाइ ॥ रहाउ ॥ हरि सँगि राते मिटै सभ चिँता ॥ हरि सिउ सो रचै जिंसु साध का मँता ॥ हरि सँगि राते जम की नहीं
 त्रास ॥ हरि सँगि राते पूरन आस ॥ २ ॥ हरि सँगि राते दूखु न लागै ॥ हरि सँगि राता अनदिनु जागै ॥ हरि सँगि राता
 सहज घरि वसै ॥ हरि सँगि राते भ्रमु भउ नसै ॥ ३ ॥ हरि सँगि राते मति ऊतम होइ ॥ हरि सँगि राते निरमल सोइ ॥ कहु
 नानक तिन कउ बलि जाई ॥ जिन कउ प्रभु मेरा बिसरत नाही ॥ ४ ॥ १०९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ उदमु करत सीतल मन
 भए ॥ मारगि चलत सगल दुख गए ॥ नामु जपत मनि भए अनँद ॥ रसि गाए गुन परमानँद ॥ १ ॥ खेम भइआ कुसल
 घरि आए ॥ भेटत साधसँगि गई बलाए ॥ रहाउ ॥ नेत्र पुनीत पेखत ही दरस ॥ धनि मसतक चरन कमल ही परस ॥

गोबिंद की टहल सफल इह कांडा ॥ संत प्रसादि परम पदु पाइआ ॥ २ ॥ जन की कीनी आपि सहाइ ॥ सुखु पाइआ लागि
 दासहु पाइ ॥ आपु गइआ ता आपहि भए ॥ क्रिपा निधान की सरनी पर ॥ ३ ॥ जो चाहत सोई जब पाइआ ॥ तब ढूँढन
 कहा को जाइआ ॥ असथिर भए बसे सुख आसन ॥ गुर प्रसादि नानक सुख बासन ॥ ४ ॥ ११० ॥ गउड़ी महला ५ ॥
 कोटि मजन कीनो इसनान ॥ लाख अरब खरब दीनो दानु ॥ जा मनि वसिओ हरि को नामु ॥ १ ॥ सगल पवित गुन गाइ
 गुपाल ॥ पाप मिटहि साधू सरनि दइआल ॥ रहाउ ॥ बहुतु उरध तप साधन साथे ॥ अनिक लाभ मनोरथ लाथे ॥ हरि हरि
 नाम रसन आराथे ॥ २ ॥ सिँमिति सासत बेद बखाने ॥ जोग गिआन सिध सुख जाने ॥ नामु जपत प्रभ सिउ मन माने ॥
 ३ ॥ अगाधि बोधि हरि अगम अपारे ॥ नामु जपत नामु रिदै बीचारे ॥ नानक कउ प्रभ किरपा धारे ॥ ४ ॥ १११ ॥ गउड़ी
 मः ५ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ ॥ चरन कमल गुर रिदै बसाइआ ॥ १ ॥ गुर गोबिंदु पारब्रहमु पूरा ॥ तिसहि
 अराधि मेरा मनु धीरा ॥ रहाउ ॥ अनदिन जपउ गुरु गुर नाम ॥ ता ते सिधि भए सगल काम ॥ २ ॥ दरसन देखि सीतल
 मन भए ॥ जनम जनम के किलबिख गए ॥ ३ ॥ कहु नानक कहा भै भाई ॥ अपने सेवक की आपि पैज रखाई ॥ ४ ॥
 ११२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ अपने सेवक कउ आपि सहाई ॥ नित प्रतिपारै बाप जैसे माई ॥ १ ॥ प्रभ की सरनि उबरै सभ
 कोइ ॥ करन करावन पूरन सचु सोइ ॥ रहाउ ॥ अब मनि बसिआ करनैहारा ॥ भै बिनसे आतम सुख सारा ॥ २ ॥ करि
 किरपा अपने जन राखे ॥ जनम जनम के किलबिख लाथे ॥ ३ ॥ कहनु न जाइ प्रभ की वडिआई ॥ नानक दास सदा
 सरनाई ॥ ४ ॥ ११३ ॥

रागु गउड़ी चैती महला ५ दुपदे १३ सितिगुर प्रसादि ॥

राम को बलु पूरन भाई ॥ ता ते ब्रिथान बिआपै काई ॥ १ ॥

रहाउ ॥ जो जो चितवे दासु हरि माई ॥ सो सो करता आपि कराई ॥ १ ॥ निँदक की प्रभि पति गवाई ॥ नानक हरि गुण
 निरभउ गाई ॥ २ ॥ ११४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ भुज बल बीर ब्रहम सुख सागर गरत परत गहि लेहु अँगुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ स्रवनि न सुरति नैन सुँदर नही आरत दुआरि रतत पिँगुरीआ ॥ १ ॥ दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मीत पिता
 महतरीआ ॥ चरन कवल हिरदै गहि नानक भै सागर संत पारि उतरीआ ॥ २ ॥ २ ॥ ११५ ॥

रागु गउड़ी बैरागणि महला ५ १४ श्रितिगुर प्रसादि ॥

दय गुसाई मीतुला तूँ सँगि हमारै बासु जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुझ बिनु घरी न जीवना धिगु रहणा संसारि ॥ जीअ प्राण
 सुखदातिआ निमख निमख बलिहारि जी ॥ १ ॥ हसत अलँबनु देहु प्रभ गरतहु उधरु गोपाल ॥ मोहि निरगुन मति थोरीआ तूँ
 सद ही दीन दइआल ॥ २ ॥ किआ सुख तेरे संमला कवन बिधी बीचार ॥ सरणि समाई दास हित ऊचे अगम अपार ॥ ३ ॥
 सगल पदारथ असट सिधि नाम महा रस माहि ॥ सुप्रसँन भए केसवा से जन हरि गुण गाहि ॥ ४ ॥ मात पिता सुत बँधपो तूँ मेरे
 प्राण अधार ॥ साधसँगि नानकु भजै बिखु तरिआ संसारु ॥ ५ ॥ १ ॥ ११६ ॥

गउड़ी बैरागणि रहोए के छँत के घरि मः ५ १४ श्रितिगुर प्रसादि ॥

है कोई राम पिआरो गावै ॥ सरब कलिआण सूख सचु पावै ॥ रहाउ ॥ बनु बनु खोजत फिरत बैरागी ॥ बिरले काहू एक लिव
 लागी ॥ जिनि हरि पाइआ सो वडभागी ॥ १ ॥ ब्रहमादिक सनकादिक चाहै ॥ जोगी जती सिध हरि आहै ॥ जिसहि परापति
 सो हरि गुण गाहै ॥ २ ॥ ता की सरणि जिन बिसरत नाही ॥ वडभागी हरि संत मिलाही ॥ जनम मरण तिह मूले नाही ॥ ३
 ॥ करि किरपा मिलु प्रीतम पिआरे ॥ बिनउ सुनहु प्रभ ऊच अपारे ॥ नानकु मांगतु नामु अधारे ॥ ४ ॥ १ ॥ ११७ ॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥ १ ॥ नाहिन
दरबु न जोवन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥ २ ॥ खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥
३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ नानक साधसँगि मेरी जलनि बुझाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ११८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ मिलबे
कउ प्रीति मनि लागी ॥ पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ सँतु मिलै बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु अरपउ धनु राखउ आगै
मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥ जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥ १ ॥ पूरब करम अँकुर
जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥ मिटिओ अँधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥ २ ॥ २ ॥ ११९
॥ गउड़ी महला ५ ॥ निकसु रे पँखी सिमरि हरि पांख ॥ मिलि साधू सरणि गहु पूरन राम रतनु हीअरे सँगि राखु ॥ १ ॥
रहाउ ॥ भ्रम की कूई तिसना रस पँकज अति तीख्ण मोह की फास ॥ काटनहार जगत गुर गोबिंद चरन कमल ता के करहु
निवास ॥ १ ॥ करि किरपा गोबिंद प्रभ प्रीतम दीना नाथ सुनहु अरदासि ॥ करु गहि लेहु नानक के सुआमी जीउ पिँडु सभु
तुमरी रासि ॥ २ ॥ ३ ॥ १२० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि पेखन कउ सिमरत मनु मेरा ॥ आस पिआसी चितवउ दिनु रैनी है
कोई सँतु मिलावै नेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवा करउ दास की अनिक भांति तिसु करउ निहोरा ॥ तुला धारि तोले सुख सगले
बिनु हरि दरस सभो ही थोरा ॥ १ ॥ सँत प्रसादि गाए गुन सागर जनम जनम को जात बहोरा ॥ आनद सूख भेटत हरि
नानक जनमु क्रितारथु सफलु सवेरा ॥ २ ॥ ४ ॥ १२१ ॥

रागु गउड़ी पूरबी, महला ५ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ ॥ कोई आसा सँतु

सहज सुखदाता मोहिं मारगु देइ बताई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरिं अलखु न जाई लखिआ विचि पड़दा हउमै पाई ॥ माइआ
 मोहिं सभो जगु सोइआ इहु भरमु कहहु किउ जाई ॥ १ ॥ एका संगति इकतु ग्रिहिं बसते मिलिं बात न करते भाई ॥ एक
 बसतु बिनु पँच दुहेले ओह बसतु अगोचर ठाई ॥ २ ॥ जिस का ग्रिहु तिनि दीआ ताला कुँजी गुर सउपाई ॥ अनिक उपाव
 करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई ॥ ३ ॥ जिन के बँधन काटे सतिगुर तिन साधसंगति लिव लाई ॥ पँच जना मिलिं
 मँगलु गाइआ हरिं नानक भेदु न भाई ॥ ४ ॥ मेरे राम राइ इन बिधि मिलै गुसाई ॥ सहजु भइआ भ्रमु खिन महि नाठा
 मिलिं जोती जोति समाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ ऐसो परचउ पाइओ ॥ करी क्रिपा
 दइआल बीठुलै सतिगुर मुझहिं बताइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहिं इहु बिसुआसु होइ आइओ
 ॥ कै पहिं करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइओ ॥ १ ॥ लहिओ सहसा बँधन गुरिं तोरे तां सदा सहज सुखु पाइओ
 ॥ होणा सा सोई फुनि होसी सुखु दुखु कहा दिखाइओ ॥ २ ॥ खँड ब्रहमँड का एको ठाणा गुरिं परदा खोलिं दिखाइओ ॥
 नउ निधि नामु निधानु इक ठाई तउ बाहरिं कैठै जाइओ ॥ ३ ॥ एकै कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइओ ॥
 कहु नानक भरमु गुरिं खोई है इव ततै ततु मिलाइओ ॥ ४ ॥ २ ॥ १२३ ॥ गउ(२)ड़ी महला ५ ॥ अउधु घटै दिनसुरैनारे
 ॥ मन गुर मिलिं काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करउ बेनँती सुनहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरिं
 लाहा आगै बसनु सुहेला ॥ १ ॥ इहु संसारु बिकारु सहसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ जिसहिं जगाइ पीआए हरिं रसु
 अकथ कथा तिनि जानी ॥ २ ॥ जा कउ आए सोई विहाइहु हरिं गुर ते मनहिं बसेरा ॥ निह घरिं महलु पावहु सुख सहजे
 बहुरिं न होइगो फेरा ॥ ३ ॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानकु दास इही सुख मागै मो कउ करिं संतन
 की धूरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ राखु पिता प्रभ मेरे ॥ मोहिं निरगुनु सभ गुन तेरे ॥ १ ॥

रहाउ ॥ पंच बिखादी एकु गरीबा राखहु राखनहारे ॥ खेदु करहि अरु बहुतु संतावहि आइओ सरनि तुहारे ॥ १ ॥ करि करि
 हारिओ अनिक बहु भाती छोडहि कतहूँ नाही ॥ एक बात सुनि ताकी ओटा साधसंगि मिटि जाही ॥ २ ॥ करि किरपा संत
 मिले मोहि तिन ते धीरजु पाइआ ॥ संती मँतु दीओ मोहि निरभउ गुर का सबदु कमाइआ ॥ ३ ॥ जीति लए ओइ महा
 बिखादी सहज सुहेली बाणी ॥ कहु नानक मनि भइआ परगासा पाइआ पदु निरबाणी ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२५ ॥ गउड़ी महला ५
 ॥ ओहु अबिनासी राइआ ॥ निरभउ संगि तुमारै बसते इहु डरनु कहा ते आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक महलि तूँ होहि अफारो
 एक महलि निमानो ॥ एक महलि तूँ आपे आपे एक महलि गरीबानो ॥ १ ॥ एक महलि तूँ पँडितु बकता एक महलि खलु होता
 ॥ एक महलि तूँ सभु किछु ग्राहजु एक महलि कछु न लेता ॥ २ ॥ काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै ॥
 जैसा भेखु करावै बाजीगरु ओहु तैसो ही साजु आनै ॥ ३ ॥ अनिक कोठरी बहुतु भाति करीआ आपि होआ रखवारा ॥ जैसे
 महलि राखै तैसे रहना किआ इहु करै बिचारा ॥ ४ ॥ जिनि किछु कीआ सोई जानै जिनि इह सभ बिधि साजी ॥ कहु नानक
 अपरंपर सुआमी कीमति अपुने काजी ॥ ५ ॥ ५ ॥ १२६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ छोडि छोडि रे बिखिआ के रसूआ ॥ उरझि
 रहिओ रे बावर गावर जिउ किरखै हरिआइओ पसूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जानहि तूँ अपुने काजै सो संगि न चालै तेरै तसूआ
 ॥ नागो आइओ नाग सिधासी फेरि फिरिओ अरु कालि गरसूआ ॥ १ ॥ पेखि पेखि रे कुसँभ की लीला राचि माचि तिनहूँ
 लउ हसूआ ॥ छीजत डोरि दिनसु अरु रैनी जीअ को काजु न कीनो कछुआ ॥ २ ॥ करत करत इव ही बिरधानो हारिओ
 उकते तनु खीनसूआ ॥ जिउ मोहिओ उनि मोहनी बाला उस ते घटै नाही रुच चसूआ ॥ ३ ॥ जगु ऐसा मोहि गुरहि
 दिखाइओ तउ सरणि परिओ तजि गरबसूआ ॥ मारगु प्रभ को संति बताइओ द्विडी नानक दास भगति हरि जसूआ ॥ ४ ॥
 ६ ॥ १२७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुझ बिनु कवनु हमारा ॥ मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतर

की बिधि तुम ही जानी तुम ही सजन सुहेले ॥ सरब सुखा मै तुझ ते पाए मेरे ठाकुर अगह अतोले ॥ १ ॥ बरनि न साकउ
 तुमरे रंगा गुण निधान सुखदाते ॥ अगम अगोचर प्रभ अबिनासी पूरे गुर ते जाते ॥ २ ॥ भ्रमु भउ काटि कीए निहकेवल
 जब ते हउमै मारी ॥ जनम मरण को चूको सहसा साधसंगति दरसारी ॥ ३ ॥ चरण परखारि करउ गुर सेवा बारि जाउ लख
 बरीआ ॥ जिह प्रसादि इहु भउजलु तरिआ जन नानक प्रिअ सँगि मिरीआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १२८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुझ
 बिनु कवनु रीझावै तोही ॥ तेरो रूपु सगल देखि मोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग पइआल मिरत भूअ मँडल सरब समानो एकै
 ओही ॥ सिव सिव करत सगल कर जोरहि सरब मइआ ठाकुर तेरी दोही ॥ १ ॥ पतित पावन ठाकुर नामु तुमरा सुखदाई
 निरमल सीतलोही ॥ गिआन धिआन नानक वडिआई संत तेरे सिउ गाल गलोही ॥ २ ॥ ८ ॥ १२९ ॥ गउड़ी महला ५
 ॥ मिलहु पिआरे जीआ ॥ प्रभ कीआ तुमारा थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु
 पाइआ ॥ तुमरी क्रिपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राइआ ॥ १ ॥ सोई होआ जो तिसु भाणा अवरु न किन ही
 कीता ॥ तुमरै भाणै भरमि मोहि मोहिआ जागतु नाही सूता ॥ २ ॥ बिनउ सुनहु तुम प्रानपति पिआरे किरपा निधि
 दइआला ॥ राखि लेहु पिता प्रभ मेरे अनाथह करि प्रतिपाला ॥ ३ ॥ जिस नो तुमहि दिखाइओ दरसनु साधसंगति कै
 पाछै ॥ करि किरपा धूरि देहु संतन की सुखु नानक इहु बाछै ॥ ४ ॥ ९ ॥ १३० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हउ ता कै बलिहारी
 ॥ जा कै केवल नामु अधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महिमा ता की केतक गनीऐ जन पारब्रहम रँगि राते ॥ सूख सहज आनंद
 तिना सँगि उन समसरि अवर न दाते ॥ १ ॥ जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा ॥ उन की सरणि परै सो
 तरिआ संत सँगि पूरन आसा ॥ २ ॥ ता कै चरणि परउ ता जीवा जन कै सँगि निहाला ॥ भगतन की रेणु होइ मनु मेरा
 होहु प्रभू किरपाला ॥ ३ ॥ राजु जोबनु अवध जो दीसै सभु किछु जुग महि घाटिआ ॥ नामु निधानु सद नवतनु

निरमलु इहु नानक हरिं धनु खाटिआ ॥ ४ ॥ १० ॥ १३१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जोग जुगति सुनि आइओ गुर ते ॥ मो
 कउ सतिगुर सबदि बुझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नउ खँड प्रिथमी इसु तन महि रविआ निमख निमख नमसकारा ॥
 दीखिआ गुर की मुँद्रा कानी द्विडिओ एकु निरँकारा ॥ १ ॥ पँच चले मिलि भए इकत्रा एकसु कै वसि कीए ॥ दस बैरागनि
 आगिआकारी तब निरमल जोगी थीए ॥ २ ॥ भरमु जराइ चराई बिभूता पँथु एकु करि पेखिआ ॥ सहज सूख सो कीनी
 भुगता जो ठाकुरि मसतकि लेखिआ ॥ ३ ॥ जह भउ नाही तहा आसनु बाधिओ सिँगी अनहत बानी ॥ ततु बीचारु डँडा
 करि राखिओ जुगति नामु मनि भानी ॥ ४ ॥ ऐसा जोगी वडभागी भेटै माइआ के बँधन काटै ॥ सेवा पूज करउ तिसु
 मूरति की नानकु तिसु पग चाटै ॥ ५ ॥ ११ ॥ १३२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ अनूप पदारथु नामु सुनहु सगल धिआइले
 मीता ॥ हरिं अउखधु जा कउ गुरि दीआ ता के निरमल चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँधकारु मिटिओ तिह तन ते गुरि सबदि
 दीपकु परगासा ॥ भ्रम की जाली ता की काटी जा कउ साधसँगति बिस्वासा ॥ १ ॥ तारीले भवजलु तारु बिखड़ा बोहिथ
 साधू सँगा ॥ पूरन होई मन की आसा गुरु भेटिओ हरि रँगा ॥ २ ॥ नाम खजाना भगती पाइआ मन तन त्रिपति अघाए
 ॥ नानक हरिं जीउ ता कउ देवै जा कउ हुकमु मनाए ॥ ३ ॥ १२ ॥ १३३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ दइआ मइआ करि
 प्रानपति मोरे मोहि अनाथ सरणि प्रभ तोरी ॥ अँध कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 करन करावन सभ किछु तुम ही तुम समरथ नाही अन होरी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी से सेवक जिन भाग मथोरी ॥
 १ ॥ अपुने सेवक सँगि तुम प्रभ राते ओति पोति भगतन सँगि जोरी ॥ प्रिउ प्रिउ नामु तेरा दरसनु चाहै जैसे द्विसटि ओह
 चँद चकोरी ॥ २ ॥ राम सँत महि भेदु किछु नाही एकु जनु कई महि लाख करोरी ॥ जा कै हीऐ प्रगटु प्रभु होआ अनदिनु
 कीरतनु रसन रमोरी ॥ ३ ॥ तुम समरथ अपार अति ऊचे सुखदाते प्रभ प्रान अधोरी ॥ नानक कउ प्रभ कीजै किरपा

उन संतन कै सँगि सँगोरी ॥ ४ ॥ १३ ॥ १३४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुम हरि सेती राते संतहु ॥ निबाहि लेहु मो कउ पुरख
 बिधाते ओड़ि पहुचावहु दाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरा मरमु तुमा ही जानिआ तुम पूरन पुरख बिधाते ॥ राखहु सरणि अनाथ
 दीन कउ करहु हमारी गाते ॥ १ ॥ तरण सागर बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहु अपुनी भाते ॥ करि किरपा जिंसु राखहु सँगे ते
 ते पारि पराते ॥ २ ॥ ईत ऊत प्रभ समरथा सभु किछु तुमरै हाथै ॥ ऐसा निधानु देहु मो कउ हरि जन चलै हमारै साथे ॥ ३ ॥
 निरगुनी आरे कउ गुनु कीजै हरि नामु मेरा मनु जापे ॥ संत प्रसादि नानक हरि भेटे मन तन सीतल धापे ॥ ४ ॥ १४ ॥ १३५
 ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सहजि समाइओ देव ॥ मो कउ सतिगुर भए दइआल देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काटि जेवरी कीओ दासरो
 संतन टहलाइओ ॥ एक नाम को थीओ पूजारी मि कउ अचरजु गुरहि दिखाइओ ॥ १ ॥ भइओ प्रगासु सरब उजीआरा गुर
 गिआनु मनहि प्रगटाइओ ॥ अँम्रितु नामु पीओ मनु त्रिपतिआ अनभै ठहराइओ ॥ २ ॥ मानि आगिआ सरब सुख पाए दूरवह
 ठाउ गवाइओ ॥ जउ सुप्रसँन भए प्रभ ठाकुर सभु आनद रूपु दिखाइओ ॥ ३ ॥ ना किछु आवत ना किछु जावत सभु खेलु
 कीओ हरि राइओ ॥ कहु नानक अगम अगम है ठाकुर भगत टेक हरि नाइओ ॥ ४ ॥ १५ ॥ १३६ ॥ गउ(६)ड़ी महला ५ ॥
 पारब्रहम पूरन परमेसुर मन ता की ओट गहीजै रे ॥ जिनि धारे ब्रहमँड खँड हरि ता को नामु जपीजै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की
 मति तिआगहु हरि जन हुकमु बूझिं सुखु पाईऐ रे ॥ जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि ओही धिआईऐ रे ॥ १ ॥ कोटि
 पतित उधारे खिन महि करते बार न लागै रे ॥ दीन दरद दुख भँजन सुआमी जिंसु भावै तिसहि निवाजै रे ॥ २ ॥ सभ को
 मात पिता प्रतिपालक जीअ प्रान सुख सागरु रे ॥ देंदे तोटि नाही तिसु करते पूरि रहिओ रतनागरु रे ॥ ३ ॥ जाचिकु जाचै
 नामु तेरा सुआमी घट घट अँतरि सोई रे ॥ नानकु दासु ता की सरणाई जा ते ब्रिथान कोई रे ॥ ४ ॥ १६ ॥ १३७ ॥

शगु गउड़ी, पूरबी महला ५ १३८ शितिगुर प्रसादि ॥

हरिं हरिं कबहू न मनहु बिसारे ॥ ईहा ऊहा सरब सुखदाता सगल घटा प्रतिपारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा कसट काटै खिन
भीतरि रसना नामु चितारे ॥ सीतल सांति सूख हरि सरणी जलती अगनि निवारे ॥ १ ॥ गरभ कुँड नरक ते राखै भवजलु
पारि उतारे ॥ चरन कमल आराधत मन महि जम की त्रास बिदारे ॥ २ ॥ पूरन पारब्रहम परमेसुर ऊचा अगम अपारे ॥ गुण
गावत धिआवत सुख सागर जूए जनमु न हारे ॥ ३ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीनो निरगुण के दातारे ॥ करि किरपा
अपुनो नामु दीजै नानक सद बलिहारे ॥ ४ ॥ १ ॥ १३८ ॥

शगु गउड़ी चेती, महला ५ १३९ शितिगुर प्रसादि

सुखु नाही रे हरिं भगति बिना ॥ जीति जनमु इहु रतनु अमोलकु साधसंगति जपि इक खिना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुत संपति
बनिता बिनोद ॥ छोडि गए बहु लोग भोग ॥ १ ॥ हैवर गैवर राज रँग ॥ तिआगि चलिओ है मूड नँग ॥ २ ॥ चोआ
चंदन देह फूलिआ ॥ सो तनु धर साँगि रूलिआ ॥ ३ ॥ मोहि मोहिआ जानै दूरि है ॥ कहु नानक सदा हदूरि है ॥ ४ ॥ १
॥ १३९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मन धर तरबे हरिं नाम नो ॥ सागर लहरि संसा संसारु गुरु बोहिथु पार गरामनो ॥ १ ॥
रहाउ ॥ कलि कालख अँधिआरीआ ॥ गुर गिआन दीपक उजिआरीआ ॥ १ ॥ बिखु बिखिआ पसरी अति घनी ॥ उबरे
जपि जपि हरिं गुनी ॥ २ ॥ मतवारो माइआ सोइआ ॥ गुर भेटत भ्रमु भउ खोइआ ॥ ३ ॥ कहु नानक एकु धिआइआ ॥
घटि घटि नदरी आइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ १४० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ दीबानु हमारो तुही एक ॥ सेवा थारी गुरहि टेक ॥ १
॥ रहाउ ॥ अनिक जुगति नही पाइआ ॥ गुरि चाकर लै लाइआ ॥ १ ॥ मारे पँच बिखादीआ ॥ गुर किरपा ते दलु
साधिआ ॥ २ ॥ बखसीस वजहु मिलि एकु नाम ॥ सूख सहज आनँद बिस्राम ॥ ३ ॥ प्रभ के चाकर से भले ॥ नानक

तिन मुख ऊजले ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीअरे ओलहा नाम का ॥ अवरु जिं करन करावनो तिन महि
 भउ है जाम का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवर जतनि नही पाईऐ ॥ वडै भागि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ लाख हिकमती जानीऐ ॥
 आगै तिलु नही मानीऐ ॥ २ ॥ अहँबुधि करम कमावने ॥ ग्रिह बालू नीरि बहावने ॥ ३ ॥ प्रभु क्रिपालु किरपा करै ॥ नामु
 नानक साधू सँगि मिलै ॥ ४ ॥ ४ ॥ १४२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ बारनै बलिहारनै लख बरीआ ॥ नामो हो नामु साहिब
 को प्रान अधरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करन करावन तुही एक ॥ जीअ जँत की तुही टेक ॥ १ ॥ राज जोबन प्रभ तूँ धनी ॥
 तूँ निरगुन तूँ सरगुनी ॥ २ ॥ ईहा ऊहा तुम रखे ॥ गुर किरपा ते को लखे ॥ ३ ॥ अँतरजामी प्रभ सुजानु ॥ नानक
 तकीआ तुही ताणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि हरि आराधीऐ ॥ सँतसँगि हरि मनि वसै भरमु मोहु
 भउ साधीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुराण सिम्रिति भने ॥ सभ ऊच बिराजित जन सुने ॥ १ ॥ सगल असथान भै भीत
 चीन ॥ राम सेवक भै रहत कीन ॥ २ ॥ लख चउरासीह जोनि फिरहि ॥ गोबिंद लोक नही जनमि मरहि ॥ ३ ॥ बल बुधि
 सिआनप हउमै रही ॥ हरि साध सरणि नानक गही ॥ ४ ॥ ६ ॥ १४४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मन राम नाम गुन गाईऐ ॥
 नीत नीत हरि सेवीऐ सासि सासि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँतसँगि हरि मनि वसै ॥ दुखु दरदु अनेरा भ्रमु नसै ॥ १
 ॥ सँत प्रसादि हरि जापीऐ ॥ सो जनु दूखि न विआपीऐ ॥ २ ॥ जा कउ गुरु हरि मँत्रु दे ॥ सो उबरिआ मइआ अगनि ते
 ॥ ३ ॥ नानक कउ प्रभ मइआ करि ॥ मेरै मनि तनि वासै नामु हरि ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ रसना
 जपीऐ एक नाम ॥ ईहा सुखु आनँदु घना आगै जीअ कै सँगि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कटीऐ तेरा अहँ रोगु ॥ तूँ गुर प्रसादि
 करि राज जोगु ॥ १ ॥ हरि रसु जिनि जनि चाखिआ ॥ ता की त्रिसना लाथीआ ॥ २ ॥ हरि बिस्वाम निधि पाइआ ॥ सो
 बहुरिन कत ही थाइआ ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु जा कउ गुरि दीआ ॥ नानक ता का भउ गइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४६ ॥

गउड़ी, महला ५ ॥ जा कउ बिसरै राम नाम ताहू कउ पीर ॥ साधसंगति मिलि हरि खहि से गुणी गहीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जा कउ गुरुमुखि रिदै बुधि ॥ ता कै कर तल नव निधि सिधि ॥ १ ॥ जो जानहि हरि प्रभ धनी ॥ किछु नाही ता कै कमी ॥
 २ ॥ करणैहारु पछानिआ ॥ सरब सूख रँग माणिआ ॥ ३ ॥ हरि धनु जा कै ग्रिहि वसै ॥ कहु नानक तिन सँगि दुखु नसै
 ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गरबु बडो मूलु इतनो ॥ रहनु नही गहु कितनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेबरजत बेद
 सँतना उआहू सिउ रे हितनो ॥ हार जूआर जूआ बिधे इँद्री वसि लै जितनो ॥ १ ॥ हरन भरन सँपूरना चरन कमल रँगि
 रितनो ॥ नानक उधरे साधसँगि किरपा निधि मै दितनो ॥ २ ॥ १० ॥ १४८ ॥ गउड़ी, महला ५ ॥ मोहि दासरो ठाकुर
 को ॥ धानु प्रभ का खाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसो है रे खसमु हमारा ॥ खिन महि साजि सवारणहारा ॥ १ ॥ कामु करी जे
 ठाकुर भावा ॥ गीत चरित प्रभ के गुन गावा ॥ २ ॥ सरणि परिओ ठाकुर वजीरा ॥ तिना देखि मेरा मनु धीरा ॥ ३ ॥ एक
 टेक एको आधारा ॥ जन नानक हरि की लागा कारा ॥ ४ ॥ ११ ॥ १४९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ है कोई आसा हउमै तोरै
 ॥ इसु मीठी ते इहु मनु होरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगिआनी मानुखु भइआ जो नाही सो लोरै ॥ रैणि अँधारी कारीआ कवन
 जुगति जितु भोरै ॥ १ ॥ भ्रमतो भ्रमतो हारिआ अनिक बिधी करि टोरै ॥ कहु नानक किरपा भई साधसंगति निधि मोरै ॥
 २ ॥ १२ ॥ १५० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ चिँतामणि करुणा मए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआला पारब्रहम ॥ जा कै
 सिमरणि सुख भए ॥ १ ॥ अकाल पुरख अगाधि बोध ॥ सुनत जसो कोटि अघ खए ॥ २ ॥ किरपा निधि प्रभ मइआ
 धारि ॥ नानक हरि हरि नाम लए ॥ ३ ॥ १३ ॥ १५१ ॥ गउड़ी पूरबी, महला ५ ॥ मेरे मन सरणि प्रभू सुख पाए ॥ जा
 दिनि बिसरै प्रान सुखदाता सो दिनु जात अजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक रैण के पाहुन तुम आए बहु जुग आस बधाए ॥ ग्रिह
 मँदर सँपै जो दीसै जिउ तरवर की छाए ॥ १ ॥ तनु मेरा सँपै सभ मेरी बाग मिलख सभ जाए ॥ देवनहारा बिसरिओ ठाकुर

खिन महि होत पराए ॥ २ ॥ पहिरै बागा करि इसनाना चोआ चंदन लाए ॥ निरभउ निरँकार नही चीनिया जिउ हसती नावाए ॥ ३ ॥ जउ होइ क्रिपाल त सतिगुरु मेलै सभि सुख हरि के नाए ॥ मुक्त भइआ बँधन गुरि खोले जन नानक हरि गुण गाए ॥ ४ ॥ १४ ॥ १५२ ॥ गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ मेरे मन गुरु गुरु गुरु सद करीए ॥ रतन जनमु सफलु गुरि कीआ दरसन कउ बलिहरीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते सास ग्रास मनु लेता तेते ही गुन गाईए ॥ जउ होइ दैआलु सतिगुरु अपुना ता इह मति बुधि पाईए ॥ १ ॥ मेरे मन नामि लए जम बँध ते छूटहि सरब सुखा सुख पाईए ॥ सेवि सुआमी सतिगुरु दाता मन बँछत फल आईए ॥ २ ॥ नामु इसटु मीत सुत करता मन सँगि तुहारै चालै ॥ करि सेवा सतिगुरु अपुने की गुर ते पाईए पालै ॥ ३ ॥ गुरि किरपालि क्रिपा प्रभि धारी बिनसे सरब अँदिसा ॥ नानक सुखु पाइआ हरि कीरतनि मिटिओ सगल कलेसा ॥ ४ ॥ १५ ॥ १५३ ॥

शगु गउड़ी महला ५ १५ सतिगुरु प्रसादि ॥

त्रिसना बिरले ही की बुझी हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ॥ परै परै ही कउ लुझी हे ॥ १ ॥ सुँदर नारी अनिक परकारी पर ग्रिह बिकारी ॥ बुरा भला नही सुझी हे ॥ २ ॥ अनिक बँधन माइआ भरमतु भरमाइआ गुण निधि नही गाइआ ॥ मन बिख्रै ही महि लुझी हे ॥ ३ ॥ जा कउ रे किरपा करै जीवत सोई मरै साधसँगि माइआ तरै ॥ नानक सो जनु दरि हरि सिझी हे ॥ ४ ॥ १ ॥ १५४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सभहू को रसु हरि हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहू जोग काहू भोग काहू गिआन काहू धिआन ॥ काहू हो डँड धरि हो ॥ १ ॥ काहू जाप काहू ताप काहू पूजा होम नेम ॥ काहू हो गउनु करि हो ॥ २ ॥ काहू तीर काहू नीर काहू बेद बीचार ॥ नानका भगति प्रिअ हो ॥ ३ ॥ २ ॥ १५५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुन कीरति निधि मोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूँही रस तूँही जस तूँही रूप तूँही रँग ॥ आस ओट प्रभ तोरी ॥ १ ॥ तूँही मान तूँही धान तूँही पति तूँही प्रान ॥ गुरि तूटी लै

जोरी ॥ २ ॥ तूही छिहि तूही बनि तूही गाउ तूही सुनि ॥ है नानक नेर नेरी ॥ ३ ॥ ३ ॥ १५६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मातो
हरि रँगि मातो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ओही पीओ ओही खीओ गुरहि दीओ दानु कीओ ॥ उआहू सिउ मनु रातो ॥ १ ॥ ओही भाठी
ओही पोचा उही पिआरो उही रूचा ॥ मनि ओहो सुखु जातो ॥ २ ॥ सहज केल अनद खेल रहे फेर भए मेल ॥ नानक गुर
सबदि परातो ॥ ३ ॥ ४ ॥ १५७ ॥

रागु गौड़ी मालवा महला ५ ॥ १३३ शितिगुर प्रसादि ॥

हरि नामु लेहु मीता लेहु आगै बिखम पँथु भैआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवत सेवत सदा सेवि तेरै सँगि बसतु है कालु ॥ करि सेवा तूँ
साध की हो काटीए जम जालु ॥ १ ॥ होम जग तीरथ कीए बिचि हउमै बधे बिकार ॥ नरकु सुरगु दुइ भुँचना होइ बहुरि बहुरि
अवतार ॥ २ ॥ सिव पुरी ब्रहम इंद्र पुरी निहचलु को थाउ नाहि ॥ बिनु हरि सेवा सुखु नहीं हो साकत आवहि जाहि ॥ ३ ॥
जैसो गुरि उपदेसिआ मै तैसो कहिआ पुकारि ॥ नानकु कहै सुनिरे मना करि कीरतनु होइ उधारु ॥ ४ ॥ १ ॥ १५८ ॥

रागु गउड़ी माला, महला ५ १३३ शितिगुर प्रसादि ॥

पाइओ बाल बुधि सुखुरे ॥ हरख सोग हानि मिरतु दूख सुख चिति समसरि गुर मिले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ लउ हउ किछु सोचउ
चितवउ तउ लउ दुखनु भरे ॥ जउ क्रिपालु गुरु पूरा भेटिआ तउ आनद सहजे ॥ १ ॥ जेती सिआनप करम हउ कीए तेते बँध परे
॥ जउ साधू करु मसतकि धरिओ तब हम मुक्त भए ॥ २ ॥ जउ लउ मेरो मेरो करतो तउ लउ बिखु घेरे ॥ मनु तनु बुधि अरपी
ठाकुर कउ तब हम सहजि सोए ॥ ३ ॥ जउ लउ पोट उठाई चलिअउ तउ लउ डान भरे ॥ पोट डारि गुरु पूरा मिलिआ तउ नानक
निरभए ॥ ४ ॥ १ ॥ १५९ ॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ भावनु तिआगिओ री तिआगिओ ॥ तिआगिओ मै गुर मिलि
तिआगिओ ॥ सरब सूख आनँद मँगल रस

मानि गोबिंदै आगिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु अभिमानु दोऊ समाने मसतकु डारि गुर पागिउ ॥ संपत हरखु न आपत दूखा
 रँगु ठाकुरै लागिओ ॥ १ ॥ बास बासरी एकै सुआमी उदिआन दिसटागिओ ॥ निरभउ भए संत भ्रमु डारिओ पूरन
 सरबागिओ ॥ २ ॥ जो किछु करतै कारणु कीनो मनि बुरो न लागिओ ॥ साधसंगति परसादि संतन कै सोइओ मनु
 जागिओ ॥ ३ ॥ जन नानक ओड़ि तुहारी परिओ आइओ सरणागिओ ॥ नाम रँग सहज रस माणे फिरि दूखु न लागिओ
 ॥ ४ ॥ २ ॥ १६० ॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ पाइआ लालु रतनु मनि पाइआ ॥ तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ सतगुर
 सबदि समाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाथी भूख त्रिसन सभ लाथी चिंता सगल बिसारी ॥ करु मसतकि गुरि पूरै धरिओ मनु
 जीतो जगु सारी ॥ १ ॥ त्रिपति अघाइ रहे रिद अंतरि डोलन ते अब चूके ॥ अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ तोटि नही रे
 मूके ॥ २ ॥ अचरजु एकु सुनहु रे भाई गुरि ऐसी बूझ बुझाई ॥ लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ तउ बिसरी ताति पराई ॥ ३
 ॥ कहिओ न जाई एहु अचंभउ सो जानै जिनि चाखिआ ॥ कहु नानक सच भए बिगासा गुरि निधानु रिदै लै राखिआ ॥ ४
 ॥ ३ ॥ १६१ ॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ उबरत राजा राम की सरणी ॥ सब लोक माइआ के मंडल गिरि गिरि परते
 धरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत सिंमिति बेद बीचारे महा पुरखन इउ कहिआ ॥ बिनु हरि भजन नाही निसतारा सूखु न
 किनहुँ लहिआ ॥ १ ॥ तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥ बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे
 ॥ २ ॥ अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥ जलतो जलतो कबहू न बूझत न बूझत सगल ब्रिथे बिनु
 नामा ॥ ३ ॥ हरि का नामु जपहु मेरे मीता इहै सार सुखु पूरा ॥ साधसंगति जनम मरणु निवारै नानक जन की धूरा ॥ ४
 ॥ ४ ॥ १६२ ॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ मो कउ इह बिधि को समझावै ॥ करता होइ जनावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 अनजानत किछु इन्हि कमानो जप तप कछू न साधा ॥ दह दिसि लै इहु मनु दउराइओ कवन करम करि बाधा ॥ १ ॥

मन तन धन भूमि का ठाकुर हउ इस का इहु मेरा ॥ भरम मोह कछु सूझसि नाही इह पैखर पए पैरा ॥ २ ॥ तब इहु कहा
कमावन परिआ जब इहु कछु न होता ॥ जब एक निरँजन निरँकार प्रभु सभु किछु आपहि करता ॥ ३ ॥ आपने करतब
आपे जानै जिनि इहु रचनु रचाइआ ॥ कहु नानक करणहारु है आपे सतिगुर भरमु चुकाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६३ ॥
गउड़ी माला महला ५ ॥ हरि बिनु अवर क्रिआ बिरथे ॥ जप तप संजम करम कमाणे इहि औरै मूसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरत
नेम संजम महि रहता तिन का आढु न पाइआ ॥ आगै चलणु अउरु है भाई ऊहा कामि न आइआ ॥ १ ॥ तीरथि नाइ
अरु धरनी भ्रमता आगै ठउर न पावै ॥ ऊहा कामि न आवै इह बिधि ओहु लोगन ही पती आवै ॥ २ ॥ चतुर बेद मुख
बचनी उचरै आगै महलु न पाईऐ ॥ बूझै नाही एकु सुधारु ओहु सगली झाख झखाईऐ ॥ ३ ॥ नानकु कहतो इहु
बीचारा जि कमावै सु पार गरामी ॥ गुरु सेवहु अरु नामु धिआवहु तिआगहु मनहु गुमानी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६४ ॥ गउड़ी
माला महला ५ ॥ माधउ हरि हरि हरि मुखि कहीऐ ॥ हम ते कछु न होवै सुआमी जिउ राखहु तिउ रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
किआ किछु करै कि करणैहारा किआ इसु हाथि बिचारे ॥ जितु तुम लावहु तित ही लागा पूरन खसम हमारो ॥ १ ॥ करहु
क्रिपा सरब के दाते एक रूप लिव लावहु ॥ नानक की बेनँती हरि पहि अपुना नामु जपावहु ॥ २ ॥ ७ ॥ १६५ ॥

रागु गउड़ी माझा, महला ५ १६ सतिगुर प्रसादि ॥

दीन दइआल दमोदर राइआ जीउ ॥ कोटि जना करि सेव लगाइआ जीउ ॥ भगत वछलु तेरा बिरदु रखाइआ जीउ ॥
पूरन सभनी जाई जीउ ॥ १ ॥ किउ पेखा प्रीतमु कवण सुकरणी जीउ ॥ संता दासी सेवा चरणी जीउ ॥ इहु जीउ वताई
बलि बलि जाई जीउ ॥ तिसु निवि निवि लागउ पाई जीउ ॥ २ ॥ पोथी पँडित बेद खोजँता जीउ ॥ होइ बैरागी तीरथि
नावँता जीउ ॥ गीत नाद कीरतनु गावँता जीउ ॥ हरि निरभउ नामु धिआई जीउ ॥ ३ ॥ भए क्रिपाल

सुआमी मेरे जीउ ॥ पतित पवित लगि गुर के पैरे जीउ ॥ भ्रमु भउ काटि कीए निरवैरे जीउ ॥ गुर मन की आस पूराई जीउ ॥ ४
 ॥ जिनि नाउ पाइआ सो धँनवँता जीउ ॥ जिनि प्रभु धिआइआ सु सोभावँता जीउ ॥ जिसु साधू संगति तिसु सभ सुकरणी
 जीउ ॥ जन नानक सहजि समाई जीउ ॥ ५ ॥ १ ॥ १६६ ॥ गउड़ी महला ५ माझ ॥ आउ हमारै राम पिआरे जीउ ॥ रैणि
 दिनसु सासि सासि चितारे जीउ ॥ संत देउ सँदेसा पै चरणारे जीउ ॥ तुधु बिनु कितु बिधि तरीरे जीउ ॥ १ ॥ सँगि तुमारै मै
 करे अनँदा जीउ ॥ वणि तिणि त्रिभवणि सुख परमानँदा जीउ ॥ सेज सुहावी इहु मनु बिगसँदा जीउ ॥ पेखि दरसनु इहु सुखु
 लहीरे जीउ ॥ २ ॥ चरण परवारि करी नित सेवा जीउ ॥ पूजा अरचा बँदन देवा जीउ ॥ दासनि दासु नामु जपि लेवा जीउ ॥
 बिनउ ठाकुर पहि कहीरे जीउ ॥ ३ ॥ इछ पुँनी मेरी मनु तनु हरिआ जीउ ॥ दरसन पेखत सभ दुख परहरिआ जीउ ॥ हरि हरि
 नामु जपे जपि तरिआ जीउ ॥ इह अजरु नानक सुखु सहीरे जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ १६७ ॥ गउड़ी माझ महला ५ ॥ सुणि सुणि
 साजन मन मित पिआरे जीउ ॥ मनु तनु तेरा इहु जीउ भि वारे जीउ ॥ विसरु नाही प्रभ प्राण अधारे जीउ ॥ सदा तेरी सरणाई
 जीउ ॥ १ ॥ जिसु मिलिरे मनु जीवै भाई जीउ ॥ गुर परसादी सो हरि हरि पाई जीउ ॥ सभु किछु प्रभ का कीआ जाई जीउ ॥
 प्रभ कउ सद बलि जाई जीउ ॥ २ ॥ एहु निधानु जपै वडभागी जीउ ॥ नाम निरँजन एक लिव लागी जीउ ॥ गुरु पूरा पाइआ
 सभु दुखु मिटाइआ जीउ ॥ आठ पहर गुण गाइआ जीउ ॥ ३ ॥ रतन पदारथ हरि नामु तुमारा जीउ ॥ तूँ सचा साहु भगतु
 वणजारा जीउ ॥ हरि धनु रासि सचु वापारा जीउ ॥ जन नानक सद बलिहारा जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६८ ॥

गगु गउड़ी माझ महला ५ १६८ शितिगुर प्रसादि ॥

तूँ मेरा बहु माणु करते तूँ मेरा बहु माणु ॥ जोरि तुमारै सुखि वसा सचु सबदु नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभे गला जातीआ सुणि
 कै चुप कीआ ॥ कद ही सुरति न लधीआ

माइआ मोहड़िआ ॥ १ ॥ देइ बुझारत सारता से अखी डिठड़िआ ॥ कोई जि मूरखु लोभीआ मूलि न सुणी कहिआ ॥ २ ॥
 इकसु दुहु चहु किआ गणी सभ इकतु सादि मुठी ॥ इकु अधु नाइ रसीअड़ा का विरली जाइ वुठी ॥ ३ ॥ भगत सचे दरि
 सोहदे अनद करहि दिन राति ॥ रँगि रते परमेसरै जन नानक तिन बलि जात ॥ ४ ॥ १ ॥ १६९ ॥ गउड़ी महला ५ मांझ
 ॥ दुख भँजनु तेरा नाम जी दुख भँजनु तेरा नाम ॥ आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु
 घटि वसै पारब्रहमु सोई सुहावा थाउ ॥ जम कँकरु नेड़ि न आवई रसना हरि गुण गाउ ॥ १ ॥ सेवा सुरति न जाणीआ ना
 जापै आराधि ॥ ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥ २ ॥ भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग सँताप ॥ तती
 वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ॥ ३ ॥ गुरु नाराइणु द्यु गुरु गुरु सचा सिरजणहारु ॥ गुर तुठै सभ किछु पाइआ जन
 नानक सद बलिहार ॥ ४ ॥ २ ॥ १७० ॥ गउड़ी मांझ महला ५ ॥ हरि राम राम रामा ॥ जपि पूरन होए कामा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ राम गोबिंद जपेदिआ होआ मुखु पवित्रु ॥ हरि जसु सुणीऐ जिस ते सोई भाई मित्रु ॥ १ ॥ सभि पदारथ सभि
 फला सरब गुणा जिसु माहि ॥ किउ गोबिंदु मनहु विसारीऐ जिसु सिमरत दुख जाहि ॥ २ ॥ जिसु लड़ि लगीऐ जीवीऐ
 भवजलु पईऐ पारि ॥ मिलि साधूसँगि उधारु होइ मुख ऊजल दरबारि ॥ ३ ॥ जीवन रूप गोपाल जसु सँत जना की रासि
 ॥ नानक उबरे नामु जपि दरि सचै साबासि ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७१ ॥ गउड़ी मांझ महला ५ ॥ मीठे हरि गुण गाउ जिंदू तूँ
 मीठे हरि गुण गाउ ॥ सचे सेती रतिआ मिलिआ निथावे थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ होरि साद सभि फिकिआ तनु मनु फिका
 होइ ॥ विणु परमेसर जो करे फिटु सु जीवणु सोइ ॥ १ ॥ अँचलु गहि कै साध का तरणा इहु संसारु ॥ पारब्रहमु आराधीऐ
 उधरै सभ परवारु ॥ २ ॥ साजनु बँधु सुमित्रु सो हरि नामु हिरदै देइ ॥ अउगण सभ मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥ ३ ॥
 मालु खजाना थेहु घरु हरि के चरण निधान ॥ नानकु जाचकु दरि तेरै प्रभ तुधनो मँगै दानु ॥ ४ ॥ ४ ॥ १७२ ॥

१४३ शितिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी महला ९ ॥

साधो मन का मानु तिआगउ ॥ कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिशि भागउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख दुखु दोनो
सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥ हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥ १ ॥ उसतति निँदा दोऊ
तिआगै खोजै पद निरबाना ॥ जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूँ गुरमुखि जाना ॥ २ ॥ १ ॥ गउड़ी महला ९ ॥
साधो रचना राम बनाई ॥ इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध मोह बसि
प्राणी हरि मूरति बिसराई ॥ झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥ १ ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ
बादर की छाई ॥ जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥ २ ॥ २ ॥ गउड़ी महला ९ ॥ प्राणी कउ हरि
जसु मनि नही आवै ॥ अहिनिशि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूत मीत माइआ ममता सिउ इह
बिधि आपु बँधावै ॥ म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥ १ ॥ भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूढ़
ताहि बिसरावै ॥ जन नानक कोटन मै कोऊ भजन राम को पावै ॥ २ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला ९ ॥ साधो इह मनु गहिओ
न जाई ॥ चँचल त्रिसना सँगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ
बिसराई ॥ रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥ १ ॥ जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन
गाई ॥ जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥ २ ॥ ४ ॥ गउड़ी महला ९ ॥ साधो गोबिंद के गुन
गावउ ॥ मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पतित पुनीत दीन बँध हरि सरनि ताहि
तुम आवउ ॥ गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥ १ ॥ तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन
राम चितु लावउ ॥ नानक कहत मुकति पँथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥ २ ॥ ५ ॥ गउड़ी महला ९ ॥ कोऊ

माई भूलिओ मनु समझावै ॥ बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुर्लभ देह पाइ मानस की
 बिरथा जनमु सिरावै ॥ माइआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥ १ ॥ अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न
 लावै ॥ नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥ २ ॥ ६ ॥ गउड़ी महला ९ ॥ साधो राम सरनि बिसरामा ॥ बेद
 पुरान पड़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥ हरख सोग
 परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥ १ ॥ सुरग नरक अंमिअ बिखुए सभ तितु कंचन अरु पैसा ॥ उसतति निंदा ए सम जा कै
 लोभु मोहु फुनि तैसा ॥ २ ॥ दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥ नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि
 को जो प्रानी ॥ ३ ॥ ७ ॥ गउड़ी महला ९ ॥ मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥ अहिनि सि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि
 हउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर गिह नारी ॥ इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥ १
 ॥ रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥ निमख न लीन भइओ चरनन सिंओ बिरथा अउध सिरानी ॥ २ ॥
 कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥ अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥ ३ ॥ ८ ॥ गउड़ी
 महला ९ ॥ नर अचेत पाप ते डरु रे ॥ दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान जास
 गुन गावत ता को नामु हीरे मो धरु रे ॥ पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥ १ ॥ मानस देह बहुरि
 नह पावै कछु उपाउ मुकति का करु रे ॥ नानक कहत गाइ करुना मै भवसागर कै पारि उतरु रे ॥ २ ॥ ९ ॥ २५१ ॥

रगु गउड़ी असटपटीआ महला १ गउड़ी गुआरेरी वरि सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

निधि सिधि निरमल नामु बीचारु ॥ पूरन पूरि रहिआ बिखु मारि ॥ त्रिकुटी छूटी बिमल मझारि ॥ गुर की मति जीइ आई कारि
 ॥ १ ॥ इन बिधि राम रमत मनु मानिआ ॥

गिआन अँजनु गुर सबदि पछानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु सुखु मानिआ सहजिं मिलाइआ ॥ निरमल बाणी भरमु
 चुकाइआ ॥ लाल भए सूहा रँगु माइआ ॥ नदरि भई बिखु ठाकि रहाइआ ॥ २ ॥ उलट भई जीवत मरिं जागिआ ॥
 सबदि रवे मनु हरिं सिउ लागिआ ॥ रसु सँगहिं बिखु परहरिं तिआगिआ ॥ भाइ बसे जम का भउ भागिआ ॥ ३ ॥ साद
 रहे बादँ अहँकारा ॥ चितु हरिं सिउ राता हुकमि अपारा ॥ जाति रहे पति के आचारा ॥ द्रिसटि भई सुखु आतम धारा ॥ ४
 ॥ तुझ बिनु कोइ न देखउ मीतु ॥ किसु सेवउ किसु देवउ चीतु ॥ किसु पूछउ किसु लागउ पाइ ॥ किसु उपदेसि रहा लिव
 लाइ ॥ ५ ॥ गुर सेवी गुर लागउ पाइ ॥ भगति करी राचउ हरि नाइ ॥ सिखिआ दीखिआ भोजन भाउ ॥ हुकमि सँजोगी
 निज घरिं जाउ ॥ ६ ॥ गरब गतँ सुख आतम धिआना ॥ जोति भई जोती माहि समाना ॥ लिखतु मिटै नही सबदु
 नीसाना ॥ करता करणा करता जाना ॥ ७ ॥ नह पँडितु नह चतुरु सिआना ॥ नह भूलो नह भरमि भुलाना ॥ कथउ न
 कथनी हुकमु पछाना ॥ नानक गुरमति सहजिं समाना ॥ ८ ॥ १ ॥ गउडी गुआरेरी महला १ ॥ मनु कुँचरु काइआ
 उदिआनै ॥ गुरु अँकसु सचु सबदु नीसानै ॥ राज दुआरै सोभ सु मानै ॥ १ ॥ चतुराई नह चीनिआ जाइ ॥ बिनु मारे
 किउ कीमति पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घर महि अँम्रितु तसकरु लेई ॥ नँनाकारु न कोइ करेई ॥ राखै आपि वडिआई देई ॥
 २ ॥ नील अनील अगनि इक ठाई ॥ जलि निवरी गुरि बूझ बुझाई ॥ मनु दे लीआ रहसि गुण गाई ॥ ३ ॥ जैसा घरिं
 बाहरिं सो तैसा ॥ बैसि गुफा महि आखउ कैसा ॥ सागरि डूगरि निरभउ ऐसा ॥ ४ ॥ मूए कउ कहु मारे कउनु ॥ निडरे
 कउ कैसा डरु कवनु ॥ सबदि पछानै तीने भउन ॥ ५ ॥ जिनि कहिआ तिनि कहनु वखानिआ ॥ जिनि बूझिआ तिनि
 सहजिं पछानिआ ॥ देखिं बीचारिं मेरा मनु मानिआ ॥ ६ ॥ कीरति सूरति मुकति इक नाई ॥ तही निरँजनु रहिआ समाई
 ॥ निज घरिं बिआपि रहिआ निज ठाई ॥ ७ ॥ उसतति करहिं केते मुनि प्रीति ॥ तनि मनि सूचै साचु सु चीति ॥

नानक हरि भजु नीता नीति ॥ ८ ॥ २ ॥ गउडी गुआरेरी महला १ ॥ ना मनु मरै न कारजु होइ ॥ मनु वसि दूता दुरमति
 दोइ ॥ मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥ १ ॥ निरगुण रामु गुणह वसि होइ ॥ आपु निवारि बीचारे सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु
 भूलो बहु चितै विकारु ॥ मनु भूलो सिरि आवै भारु ॥ मनु मानै हरि एककारु ॥ २ ॥ मनु भूलो माइआ घरि जाइ ॥ कामि
 बिरुधउ रहै न ठाइ ॥ हरि भजु प्राणी रसन रसाइ ॥ ३ ॥ गैवर हैवर कंचन सुत नारी ॥ बहु चिंता पिड़ चालै हारी ॥ जूरे
 खेलणु काची सारी ॥ ४ ॥ संपउ संची भए विकार ॥ हरख सोक उभे दरवारि ॥ सुखु सहजे जपि रिदै मुरारि ॥ ५ ॥
 नदरि करे ता मेलि मिलार ॥ गुण संग्रहि अउगण सबदि जलार ॥ गुरमुखि नामु पदारथु पार ॥ ६ ॥ बिनु नावै सभ दूख
 निवासु ॥ मनमुख मूड़ माइआ चित वासु ॥ गुरमुखि गिआनु धुरि करमि लिखिआसु ॥ ७ ॥ मनु चंचलु धावतु फुनि धावै
 ॥ साचे सूचे मैलु न भावै ॥ नानक गुरमुखि हरि गुण गावै ॥ ८ ॥ ३ ॥ गउडी गुआरेरी महला १ ॥ हउमै करतिआ नह
 सुखु होइ ॥ मनमति झूठी सचा सोइ ॥ सगल बिगूते भावै दोइ ॥ सो कमावै धुरि लिखिआ होइ ॥ १ ॥ ऐसा जगु देखिआ
 जूआरी ॥ सभि सुख मागै नामु बिसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अदिसटु दिसै ता कहिआ जाइ ॥ बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ
 ॥ गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ ॥ सेवा सुरति एक लिव लाइ ॥ २ ॥ सुखु मांगत दुखु आगल होइ ॥ सगल विकारी हारु
 परोइ ॥ एक बिना झूठे मुकति न होइ ॥ करि करि करता देखै सोइ ॥ ३ ॥ त्रिसना अगनि सबदि बुझार ॥ दूजा भरमु
 सहजि सुभाए ॥ गुरमती नामु रिदै वसाए ॥ साची बाणी हरि गुण गाए ॥ ४ ॥ तन महि साचो गुरमुखि भाउ ॥ नाम बिना
 नाही निज ठाउ ॥ प्रेम पराइण प्रीतम राउ ॥ नदरि करै ता बूझै नाउ ॥ ५ ॥ माइआ मोहु सरब जंजाला ॥ मनमुख कुचील
 कुछित बिकराला ॥ सतिगुरु सेवे चूकै जंजाला ॥ अमित नामु सदा सुखु नाला ॥ ६ ॥ गुरमुखि बूझै एक लिव लाए ॥
 निज घरि वासै साचि समाए ॥ जंमणु मरणा ठाकि रहाए ॥ पूरे गुर ते इह मति पार ॥ ७ ॥ कथनी कथउ न

आवै ओरु ॥ गुरु पुछि देखिआ नाही दरु होरु ॥ दुखु सुखु भाणै तिसै रजाइ ॥ नानकु नीचु कहै लिव लाइ ॥ ८ ॥ ४
 ॥ गउडी महला १ ॥ दूजी माइआ जगत चित वासु ॥ काम क्रोध अहंकार बिनासु ॥ १ ॥ दूजा कउणु कहा नहीं कोई ॥
 सभ महि एकु निरँजनु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजी दुरमति आखै दोइ ॥ आवै जाइ मरि दूजा होइ ॥ २ ॥ धरणि गगन
 नह देखउ दोइ ॥ नारी पुरख सबई लोइ ॥ ३ ॥ रवि ससि देखउ दीपक उजिआला ॥ सब निरंतरि प्रीतमु बाला ॥ ४
 ॥ करि किरपा मेरा चितु लाइआ ॥ सतिगुरु मो कउ एकु बुझाइआ ॥ ५ ॥ एकु निरँजनु गुरुमुखि जाता ॥ दूजा मारि
 सबदि पछाता ॥ ६ ॥ एको हुकमु वरतै सभ लोई ॥ एकसु ते सभ ओपति होई ॥ ७ ॥ राह दोवै खसमु एको जाणु ॥ गुरु
 कै सबदि हुकमु पछाणु ॥ ८ ॥ सगल रूप वरन मन माही ॥ कहु नानक एको सालाही ॥ ९ ॥ ५ ॥ गउडी महला १ ॥
 अधिआतम करम करे ता साचा ॥ मुकति भेदु किआ जाणै काचा ॥ १ ॥ ऐसा जोगी जुगति बीचारै ॥ पँच मारि साचु उरि
 धारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस कै अंतरि साचु वसावै ॥ जोग जुगति की कीमति पावै ॥ २ ॥ रवि ससि एको ग्रिह उदिआनै
 ॥ करणी कीरति करम समानै ॥ ३ ॥ एक सबद इक भिखिआ मागै ॥ गिआनु धिआनु जुगति सचु जागै ॥ ४ ॥ भै रचि
 रहै न बाहरि जाइ ॥ कीमति कउण रहै लिव लाइ ॥ ५ ॥ आपे मेले भरमु चुकाए ॥ गुरु परसादि परम पदु पाए ॥ ६ ॥ गुरु
 की सेवा सबदु वीचारु ॥ हउमै मारे करणी सारु ॥ ७ ॥ जप तप संजम पाठ पुराणु ॥ कहु नानक अपरंपर मानु ॥ ८ ॥
 ६ ॥ गउडी महला १ ॥ खिमा गही ब्रतु सील संतोखँ ॥ रोगु न बिआपै ना जम दोखँ ॥ मुकत भए प्रभ रूप न रेखँ ॥ १
 ॥ जोगी कउ कैसा डरु होइ ॥ रूखि बिरखि ग्रिहि बाहरि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ जोगी निरँजनु धिआवै ॥
 अनदिनु जागै सचि लिव लावै ॥ सो जोगी मेरै मनि भावै ॥ २ ॥ कालु जालु ब्रहम अगनी जारे ॥ जरा मरण गतु गरबु
 निवारे ॥ आपि तरै पितरी निसतारे ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे सो जोगी होइ ॥ भै इचि रहै सु निरभउ होइ ॥ जैसा सेवै

तैसो होइ ॥ ४ ॥ नर निहकेवल निरभउ नाउ ॥ अनाथह नाथ करे बलिं जाउ ॥ पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ ॥ ५ ॥
 अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ साचै सबदि दरि नीसाणै ॥ ६ ॥ सबदि मरै तिसु निज घरि वासा
 ॥ आवै न जावै चूकै आसा ॥ गुर कै सबदि कमलु परगासा ॥ ७ ॥ जो दीसै सो आस निरासा ॥ काम क्रोध बिखु भूख
 पिआसा ॥ नानक बिरले मिलहि उदासा ॥ ८ ॥ ७ ॥ गउड़ी महला १ ॥ ऐसो दासु मिलै सुखु होई ॥ दुखु विसरै पावै
 सचु सोई ॥ १ ॥ दरसनु देखि भई मति पूरी ॥ अठसठि मजनु चरनह धूरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र सँतोखे एक लिव तारा
 ॥ जिहवा सूची हरि रस सारा ॥ २ ॥ सचु करणी अभ अंतरि सेवा ॥ मनु त्रिपतासिआ अलख आभेवा ॥ ३ ॥ जह जह
 देखउ तह तह साचा ॥ बिन बूझे इगरत जगु काचा ॥ ४ ॥ गुरु समझावै सोझी होई ॥ गुरुमुखि विरला बुझै कोई ॥ ५
 ॥ करि किरपा राखहु रखवाले ॥ बिनु बूझे पसू भए बेताले ॥ ६ ॥ गुरि कहिआ अवरु नही दूजा ॥ किसु कहु देखि करउ
 अन पूजा ॥ ७ ॥ संत हेति प्रभि त्रिभवण धारे ॥ आतमु चीनै सु ततु बीचारे ॥ ८ ॥ साचु रिदै सचु प्रेम निवास ॥
 प्रणवति नानक हम ता के दास ॥ ९ ॥ ८ ॥ गउड़ी महला १ ॥ ब्रहमै गरबु कीआ नही जानिआ ॥ बेद की बिपति पड़ी
 पछुतानिआ ॥ जह प्रभ सिमरे तही मनु मानिआ ॥ १ ॥ ऐसा गरबु बुरा संसारै ॥ जिसु गुरु मिलै तिसु गरबु निवारै ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ बलिं राजा माइआ अहंकारी ॥ जगन करै बहु भार अफारी ॥ बिनु गुर पूछे जाइ पइआरी ॥ २ ॥ हरीचंदु दानु
 करै जसु लेवै ॥ बिनु गुर अंतु न पाइ अभेवै ॥ आपि भुलाइ आपे मति देवै ॥ ३ ॥ दुर्मति हरणाखसु दुराचारी ॥ प्रभु
 नाराइणु गरब प्रहारी ॥ प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥ ४ ॥ भूलो रावणु मुग्धु अचेति ॥ लूटी लंका सीस समेति ॥ गरबि
 गइआ बिनु सतिगुर हेति ॥ ५ ॥ सहसबाहु मधु कीट महिखासा ॥ हरणाखसु ले नखहु बिधासा ॥ दैत संघारे बिनु भगति
 अभिआसा ॥ ६ ॥ जरासंधि कालजमुन संघारे ॥ रक्तबीजु कालुनेमु बिदारे ॥ दैत संघारि संत निसतारे ॥ ७ ॥ आपे

सतिगुरु सबदु बीचारे ॥ दूजै भाइ दैत सँघारे ॥ गुरुमुखि साचि भगति निसतारे ॥ ८ ॥ बूडा दुरजोधनु पति खोई ॥ रामु
 न जानिआ करता सोई ॥ जन कउ दूखि पचै दुखु होई ॥ ९ ॥ जनमेजै गुरु सबदु न जानिआ ॥ किउ सुखु पावै भरमि
 भुलानिआ ॥ इकु तिलु भूलै बहुरि पछुतानिआ ॥ १० ॥ कँसु केसु चांडूरु न कोई ॥ रामु न चीनिआ अपनी पति खोई ॥
 बिनु जगदीस न राखै कोई ॥ ११ ॥ बिन गुरु गरबु न मेटिआ जाइ ॥ गुरुमति धरमु धीरजु हरि नाइ ॥ नानक नामु मिलै
 गुण गाइ ॥ १२ ॥ ९ ॥ गउड़ी महला १ ॥ चोआ चँदनु अँकि चड़ावउ ॥ पाट पटँबर पहिरि हढावउ ॥ बिनु हरि नाम
 कहा सुखु पावउ ॥ १ ॥ किआ पहिरउ किआ ओढि दिखावउ ॥ बिनु जगदीस कहा सुखु पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कानी
 कुँडल गलि मोतीअन की माला ॥ लाल निहाली फूल गुलाला ॥ बिनु जगदीस कहा सुखु भाला ॥ २ ॥ नैन सलोनी
 सुँदर नारी ॥ खोड़ सीगार करै अति पिआरी ॥ बिनु जगदीस भजे नित खुआरी ॥ ३ ॥ दर घर महला सेज सुखाली ॥
 अहिनिंसि फूल बिछावै माली ॥ बिनु हरि नाम सु देह दुखाली ॥ ४ ॥ हैवर गैवर नेजे वाजे ॥ लसकर नेब खवासी पाजे
 ॥ बिनु जगदीस झूठे दिवाजे ॥ ५ ॥ सिधु कहावउ रिधि सिधि बुलावउ ॥ ताज कुलह सिरि छत्रु बनावउ ॥ बिनु
 जगदीस कहा सचु पावउ ॥ ६ ॥ खानु मल्लुकु कहावउ राजा ॥ अबे तबे कूड़े है पाजा ॥ बिनु गुरु सबद न सवरसि काजा
 ॥ ७ ॥ हउमै ममता गुरु सबदि विसारी ॥ गुरुमति जानिआ रिदै मुरारी ॥ पणवति नानक सरणि तुमारी ॥ ८ ॥ १० ॥
 गउड़ी महला १ ॥ सेवा एक न जानसि अवरै ॥ परपँच बिआपि तिआगै कवरै ॥ भाइ मिलै सचु साचै सचुरै ॥ १ ॥ ऐसा
 राम भगतु जनु होई ॥ हरि गुण गाइ मिलै मनु धोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊंधो कवलु सगल सँसारै ॥ दुरमति अगनि जगत
 परजारै ॥ सो उबरै गुरु सबदु बीचारै ॥ २ ॥ भ्रिँग पतँगु कुँचरु अरु मीना ॥ मिरगु मरै सहि अपुना कीना ॥ त्रिसना
 राचि ततु नहीं बीना ॥ ३ ॥ कामु चितै कामणि हितकारी ॥ क्रोधु बिनासै सगल विकारी ॥ पति मति खोवहि

नामु बिसारी ॥ ४ ॥ पर घरि चीतु मनमुखि डोलाइ ॥ गलि जेवरी धँधै लपटाइ ॥ गुरमुखि छूटसि हरि गुण गाइ ॥ ५ ॥
जिउ तनु बिधवा पर कउ देई ॥ कामि दामि चितु पर वसि सेई ॥ बिनु पिर त्रिपति न कबहूँ होई ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि पोथी
सिँमिति पाठा ॥ बेद पुराण पढ़ै सुण थाटा ॥ बिनु रस राते मनु बहु नाटा ॥ ७ ॥ जिउ चात्रिक जल प्रेम पिआसा ॥ जिउ
मीना जल माहि उलासा ॥ नानक हरि रसु पी त्रिपतासा ॥ ८ ॥ ११ ॥ गउड़ी महला १ ॥ हठु करि मरै न लेखै पावै ॥
वेस करै बहु भसम लगावै ॥ नामु बिसारि बहुरि पछुतावै ॥ १ ॥ तूँ मनि हरि जीउ तूँ मनि सूख ॥ नामु बिसारि सहहि जम
दूख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चोआ चँदन अगर कपूरि ॥ माइआ मगनु परम पदु दूरि ॥ नामि बिसारिरे सभु कूड़ो कूरि ॥ २ ॥
नेजे वाजे तखति सलामु ॥ अधकी त्रिसना विआपै कामु ॥ बिनु हरि जाचे भगति न नामु ॥ ३ ॥ वादि अहँकारि नाही
प्रभ मेला ॥ मनु दे पावहि नामु सुहेला ॥ दूजै भाइ अगिआन दुहेला ॥ ४ ॥ बिनु दम के सउदा नहीं हाट ॥ बिनु बोहिथ
सागर नहीं वाट ॥ बिनु गुर सेवे घाटे घाटि ॥ ५ ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि वाट दिखावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि सबदु
सुणावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै ॥ ६ ॥ वाहु वाहु तिस कउ जिस का इहु जीउ ॥ गुर सबदी मथि अँमितु
पीउ ॥ नाम वडाई तुधु भाणै दीउ ॥ ७ ॥ नाम बिना किउ जीवा माइ ॥ अनदिनु जपतु रहउ तेरी सरणाइ ॥ नानक नामि
रते पति पाइ ॥ ८ ॥ १२ ॥ गउड़ी महला १ ॥ हउमै करत भेखी नहीं जानिआ ॥ गुरमुखि भगति विरले मनु मानिआ
॥ १ ॥ हउ हउ करत नहीं चसु पाईरे ॥ हउमै जाइ परम पदु पाईरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै करि राजे बहु धावहि ॥ हउमै
खपहि जनमि मरि आवहि ॥ २ ॥ हउमै निवरै गुर सबदु वीचारै ॥ चँचल मति तिआगै पँच संघारै ॥ ३ ॥ अँतरि साचु
सहज घरि आवहि ॥ राजनु जाणि परम गति पावहि ॥ ४ ॥ सचु करणी गुरु भरमु चुकावै ॥ निरभउ कै घरि ताड़ी लावै
॥ ५ ॥ हउ हउ करि मरणा किआ पावै ॥ पूरा गुरु भेटे सो झगरु चुकावै ॥ ६ ॥ जेती है तेती किहु नाही ॥ गुरमुखि

गिआन भेटि गुण गाही ॥ ७ ॥ हउमै बँधन बँधि भवावै ॥ नानक राम भगति सुखु पावै ॥ ८ ॥ १३ ॥ गउड़ी महला १ ॥
 प्रथमे ब्रहमा कालै घरि आइआ ॥ ब्रहम कमलु पइआलि न पाइआ ॥ आगिआ नही लीनी भरमि भुलाइआ ॥ १ ॥ जो उपजै
 सो कालि सँघारिआ ॥ हम हरि राखे गुर सबदु बीचारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहे देवी सभि देवा ॥ कालु न छोडै बिनु
 गुर की सेवा ॥ ओहु अबिनासी अलख अभेवा ॥ २ ॥ सुलतान खान बादिसाह नही रहना ॥ नामहु भूलै जम का दुखु
 सहना ॥ मै धर नामु जिउ राखहु रहना ॥ ३ ॥ चउधरी राजे नही किसै मुकामु ॥ साह मरहि सँचहि माइआ दाम ॥ मै धनु
 दीजै हरि अँमित नामु ॥ ४ ॥ रयति महर मुकदम सिकदारै ॥ निहचलु कोई न दिसै संसारै ॥ अफरिओ कालु कूडु सिरि मारै
 ॥ ५ ॥ निहचलु एकु सचा सच सोई ॥ जिनि करि साजी तिनहि सभ गोई ॥ ओहु गुरमुखि जापै तां पति होई ॥ ६ ॥
 काजी सेख भेख फकीरा ॥ वडे कहावहि हउमै तनि पीरा ॥ कालु न छोडै बिनु सतिगुर की धीरा ॥ ७ ॥ कालु जालु जिहवा
 अरु नैणी ॥ कानी कालु सुणै बिखु बैणी ॥ बिनु सबदै मूढे दिनु रैणी ॥ ८ ॥ हिरदै साचु वसै हरि नाइ ॥ कालु न जोहि सकै
 गुण गाइ ॥ नानक गुरमुखि सबदि समाइ ॥ ९ ॥ १४ ॥ गउड़ी महला १ ॥ बोलहि साचु मिथिआ नही राई ॥ चालहि
 गुरमुखि हुकमि रजाई ॥ रहहि अतीत सचे सरणाई ॥ १ ॥ सच घरि बैसै कालु न जोहै ॥ मनमुख कउ आवत जावत दुखु
 मोहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपिउ पीअउ अकथु कथि रहीरे ॥ निज घरि बैसि सहज घरु लहीरे ॥ हरि रसि माते इहु सुखु कहीरे
 ॥ २ ॥ गुरमति चाल निहचल नही डोलै ॥ गुरमति साचि सहजि हरि बोलै ॥ पीवै अँमितु ततु विरोलै ॥ ३ ॥ सतिगुरु
 देखिआ दीखिआ लीनी ॥ मनु तनु अरपिओ अंतरगति कीनी ॥ गति मिति पाई आतमु चीनी ॥ ४ ॥ भोजनु नामु
 निरँजन सारु ॥ परम हँसु सचु जोति अपार ॥ जह देखउ तह एकँकारु ॥ ५ ॥ रहै निरालमु एका सचु करणी ॥ परम पदु
 पाइआ सेवा गुर चरणी ॥ मन ते मनु मानिआ चूकी अहँ भ्रमणी ॥ ६ ॥ इन बिधि कउणु कउणु नही तारिआ ॥ हरि जसि

सँत भगत निसतारिआ ॥ प्रभ पाए हम अवरु न भारिआ ॥ ७ ॥ साच महलिं गुरि अलखु लखाइआ ॥ निहचल महलु नही
 छाइआ माइआ ॥ साचि सँतोखे भरमु चुकाइआ ॥ ८ ॥ जिन कै मनि वसिआ सचु सोई ॥ तिन की संगति गुरमुखि होई ॥
 नानक साचि नामि मलु खोई ॥ ९ ॥ १५ ॥ गउड़ी महला १ ॥ रामि नामि चितु रापै जा का ॥ उपजँपि दरसनु कीजै ता का ॥
 १ ॥ राम न जपहु अभागु तुमारा ॥ जुगि जुगि दाता प्रभु रामु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति रामु जपै जनु पूरा ॥ तितु घट
 अनहत बाजे तूरा ॥ २ ॥ जो जन राम भगति हरि पिआरि ॥ से प्रभि राखे किरपा धारि ॥ ३ ॥ जिन कै हिरदै हरि हरि सोई ॥
 तिन का दरसु परसि सुखु होई ॥ ४ ॥ सरब जीआ महि एको रवै ॥ मनमुखि अहँकारी फिरि जूनी भवै ॥ ५ ॥ सो बूझै जो
 सतिगुरु पाए ॥ हउमै मारे गुर सबदे पाए ॥ ६ ॥ अरध उरध की सँधि किउ जानै ॥ गुरमुखि सँधि मिलै मनु मानै ॥ ७ ॥ हम
 पापी निरगुण कउ गुणु करीऐ ॥ प्रभ होइ दइआलु नानक जन तरीऐ ॥ ८ ॥ १६ ॥ सोलह असटपदीआ गुआरेरी गउड़ी कीआ
 ॥

गउड़ी बैरागणि महला १ १९ सतिगुर प्रसादि ॥

जिउ गाई कउ गोइली राखहि करि सारा ॥ अहि निसि पालहि राखि लेहि आतम सुखु धारा ॥ १ ॥ इत उत राखहु दीन दइआला
 ॥ तउ सरणागति नदरि निहाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखउ तह रवि रहे रखु राखनहारा ॥ तूँ दाता भुगता तूँ है तूँ प्राण अधारा
 ॥ २ ॥ किरतु पाइआ अध उरधी बिनु गिआन बीचारा ॥ बिनु उपमा जगदीस की बिनसै न अँधिआरा ॥ ३ ॥ जगु बिनसत
 हम देखिआ लोभे अहँकारा ॥ गुर सेवा प्रभु पाइआ सचु मुकति दुआरा ॥ ४ ॥ निज घरि महलु अपार को अपरँपरु सोई ॥ बिनु
 सबदै थिरु को नही बूझै सुखु होई ॥ ५ ॥ किआ लै आइआ ले जाइ किआ फासहि जम जाला ॥ डोलु बधा कसि जेवरी आकासि
 पताला ॥ ६ ॥ गुरमति नामु न वीसरै सहजे पति पाईऐ ॥ अँतरि सबदु निधानु है मिलि आपु गवाईऐ ॥ ७ ॥ नदरि करे प्रभु
 आपणी

गुण अँकि समावै ॥ नानक मेलु न चूकई लाहा सचु पावै ॥ ८ ॥ १ ॥ १७ ॥ गउड़ी महला १ ॥ गुर परसादी बूझि ले तउ होइ
 निबेरा ॥ घरि घरि नामु निरँजना सो ठाकुरु मेरा ॥ १ ॥ बिनु गुर सबद न छूटीऐ देखहु वीचारा ॥ जे लख करम कमावही बिन
 गुर अँधिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँधे अकली बाहरे किआ तिन सिउ कहीऐ ॥ बिनु गुर पँथु न सूझई कितु बिधि निरबहीऐ ॥ २
 ॥ खोटे कउ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥ अँधे का नाउ पारखू कली काल विडाणै ॥ ३ ॥ सूते कउ जागतु कहै जागत कउ
 सूता ॥ जीवत कउ मूआ कहै मूए नही रोता ॥ ४ ॥ आवत कउ जाता कहै जाते कउ आइआ ॥ पर की कउ अपुनी कहै अपुनो
 नही भाइआ ॥ ५ ॥ मीठे काउ कउड़ा कहै कडूए कउ मीठा ॥ राते की निँदा करहि ऐसा कलि महि डीठा ॥ ६ ॥ चेरी की सेवा
 करहि ठाकुरु नही दीसै ॥ पोखरु नीरु विरोलीऐ माखनु नही रीसै ॥ ७ ॥ इसु पद जो अरथाइ लेइ सो गुरु हमारा ॥ नानक
 चीनै आप कउ सो अपर अपारा ॥ ८ ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे भरमाइआ ॥ गुर किरपा ते बूझीऐ सभु ब्रहमु समाइआ ॥
 ९ ॥ २ ॥ १८ ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ असटपदीआ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

मन का सूतकु दूजा भाउ ॥ भरमे भूले आवउ जाउ ॥ १ ॥ मनमुखि सूतक कबहि न जाइ ॥ जिचरु सनदि न भीजै हरि कै नाइ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभो सूतकु जेता मोहु आकारु ॥ मरि मरि जँमै वारो वार ॥ २ ॥ सूतकु अगनि पउणै पाणी माहि ॥ सूतकु
 भोजनु जेता किछु खाहि ॥ ३ ॥ सूतकि करम न पूजा होइ ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ ४ ॥ सतिगुरु सेविऐ सूतकु जाइ
 ॥ मरै न जनमै कालु न खाइ ॥ ५ ॥ सासत सिँमिति सोधि देखहु कोइ ॥ विणु नावै को मुकति न होइ ॥ ६ ॥ जुग चारे नामु
 उतमु सबदु बीचारि ॥ कलि महि गुरमुखि उतरसि पारि ॥ ७ ॥ साचा मरै न आवै जाइ ॥ नानक गुरमुखि रहै समाइ ॥ ८ ॥ १
 ॥ गउड़ी महला ३ ॥ गुरमुखि सेवा प्रान अधारा ॥ हरि जीउ राखहु हिरदै उर धारा ॥ गुरमुखि सोभा साचु दुआरा ॥ १ ॥
 पँडित हरि पडु तजहु विकारा ॥ गुरमुखि

भउजलु उतरहु पारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखिं विचहु हउमै जाइ ॥ गुरमुखिं मैलु न लागै आइ ॥ गुरमुखिं नामु वसै मनि
 आइ ॥ २ ॥ गुरमुखिं करम धरम सचि होई ॥ गुरमुखिं अहँकारु जलाए दोई ॥ गुरमुखिं नाम रते सुखु होई ॥ ३ ॥
 आपणा मनु परबोधहु बूझहु सोई ॥ लोक समझावहु सुणे न कोई ॥ गुरमुखिं समझहु सदा सुखु होई ॥ ४ ॥ मनमुखिं डँफु
 बहुतु चतुराई ॥ जो किछु कमावै सु थाइ न पाई ॥ आवै जावै ठउर न काई ॥ ५ ॥ मनमुख करम करे बहुतु अभिमाना ॥
 बग जिउ लाइ बहै नित धिआना ॥ जमि पकड़िआ तब ही पछुताना ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ गुर
 परसादी मिलै हरि सोई ॥ गुरु दाता जुग चारे होई ॥ ७ ॥ गुरमुखिं जाति पति नामे वडिआई ॥ साइर की पुत्री बिदारि
 गवाई ॥ नानक बिनु नावै झूठी चतुराई ॥ ८ ॥ २ ॥ गउडी मः ३ ॥ इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई ॥ पूरै गुरिं सभ
 सोझी पाई ॥ ऐथै अगै हरिं नामु सखाई ॥ १ ॥ राम पड़हु मनि करहु बीचारु ॥ गुर परसादी मैलु उतारु ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ वादि विरोधि न पाइआ जाइ ॥ मनु तनु फीका दूजै भाइ ॥ गुर कै सबदि सचि लिव लाइ ॥ २ ॥ हउमै मैला इहु संसारा
 ॥ नित तीरथि नावै न जाइ अहँकारा ॥ बिनु गुर भेटे जमु करे खुआरा ॥ ३ ॥ सो जनु साचा जिं हउमै मारै ॥ गुर कै
 सबदि पँच संघारै ॥ आपि तरै सगले कुल तारै ॥ ४ ॥ माइआ मोहि नटि बाजी पाई ॥ मनमुख अँध रहे लपटाई ॥
 गुरमुखिं अलिपत रहे लिव लाई ॥ ५ ॥ बहुते भेख करै भेखधारी ॥ अँतरि तिसना फिरै अहँकारी ॥ आपु न चीनै बाजी
 हारी ॥ ६ ॥ कापड़ पहिरि करे चतुराई ॥ माइआ मोहि अति भरमि भुलाई ॥ बिनु गुर सेव बहुतु दुखु पाई ॥ ७ ॥ नामि
 रते सदा बैरागी ॥ छिही अँतरि साचि लिव लागी ॥ नानक सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ ८ ॥ ३ ॥ गउडी महला ३
 ॥ ब्रहमा मूलु वेद अभिआसा ॥ तिस ते उपजे देव मोह पिआसा ॥ त्रै गुण भरमे नाही निज घरिं वासा ॥ १ ॥ हम हरि
 राखे सतिगुरु मिलाइआ ॥ अनदिनु भगति हरिं नामु द्विडाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण बाणी ब्रहम जँजाला ॥ पडि

वादु वखाणहि सिरि मारे जमकाला ॥ ततु न चीनहि बँनहि पँड पराला ॥ २ ॥ मनमुख अगिआनि कुमारगि पाए ॥ हरि
 नामु बिसारआ बहु करम द्विडाए ॥ भवजलि डूबे दूजै भाए ॥ ३ ॥ माइआ का मुहताजु पँडितु कहावै ॥ बिखिआ राता
 बहुतु दुखु पावै ॥ जम का गलि जेवडा नित कालु सँतावै ॥ ४ ॥ गुरमुखि जमकालु नेडि न आवै ॥ हउमै दूजा सबदि
 जलावै ॥ नामे राते हरि गुण गावै ॥ ५ ॥ माइआ दासी भगता की कार कमावै ॥ चरणी लागै ता महलु पावै ॥ सद ही
 निरमलु सहजि समावै ॥ ६ ॥ हरि कथा सुणहि से धनवंत दिसहि जुग माही ॥ तिन कउ सभि निवहि अनदिनु पूज
 कराही ॥ सहजे गुण खहि साचे मन माही ॥ ७ ॥ पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ त्रै गुण मेटे चउथै चितु लाइआ ॥
 नानक हउमै मारि ब्रहम मिलाइआ ॥ ८ ॥ ४ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ ब्रहमा वेदु पडै वादु वखाणै ॥ अंतरि तामसु आपु न
 पछाणै ॥ ता प्रभु पाए गुर सबदु वखाणै ॥ १ ॥ गुर सेवा करउ फिरि कालु न खाइ ॥ मनमुख खाधे दूजै भाइ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ गुरमुखि प्राणी अपराधी सीधे ॥ गुर कै सबदि अंतरि सहजि रीधे ॥ मेरा प्रभु पाइआ गुर कै सबदि सीधे ॥ २ ॥
 सतिगुरि मेले प्रभि आपि मिलाए ॥ मेरे प्रभ साचे कै मनि भाए ॥ हरि गुण गावहि सहजि सुभाए ॥ ३ ॥ बिनु गुर साचे
 भरमि भुलाए ॥ मनमुख अँधे सदा बिखु खाए ॥ ४ ॥ जमूआ न जोहै हरि की सरणाई ॥ हउमै मारि सचि लिव लाई ॥
 सदा रहै हरि नामि लिव लाई ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवहि से जन निरमल पविता ॥ मन सिउ मनु मिलाइ सभु जगु जीता ॥
 इन बिधि कुसलु तैरै मेरे मीता ॥ ६ ॥ सतिगुरु सेवे सो फलु पाए ॥ हिरदे नामु विचहु आपु गवाए ॥ अनहद बाणी
 सबदु वजाए ॥ ७ ॥ सतिगुर ते कवनु कवनु न सीधो मेरे भाई ॥ भगती सीधे दरि सोभा पाई ॥ नानक राम नामि
 वडिआई ॥ ८ ॥ ५ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ त्रै गुण वखाणै भरमु न जाइ ॥ बँअन न तूटहि मुकति न पाइ ॥ मुकति दाता
 सतिगुरु जुग माहि ॥ १ ॥ गुरमुखि प्राणी भरमु गवाइ ॥ सहज धुनि उपजै हरि लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

त्रै गुण कालै की सिरिं कारा ॥ नामु न चेतहि उपावणहारा ॥ मरिं जँमहि फिरिं वारो वारा ॥ २ ॥ अँधे गुरू ते भरमु न जाई ॥ मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥ बिखु का माता बिखु माहिं समाई ॥ ३ ॥ माइआ करिं मूलु जँत्र भरमाए ॥ हरिं जीउ विसरिआ दूजै भाए ॥ जिसु नदरिं करे सो परम गति पाए ॥ ४ ॥ अँतरिं साचु बाहरिं साचु वरताए ॥ साचु न छपै जे को रखै छपाए ॥ गिआनी बूझहि सहजि सुभाए ॥ ५ ॥ गुरमुखिं साचि रहिआ लिव लाए ॥ हउमै माइआ सबदि जलाए ॥ मेरा प्रभु साचा मेलिं मिलाए ॥ ६ ॥ सतिगुरु दाता सबदु सुणाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ पूरे गुर ते सोझी पाए ॥ ७ ॥ आपे करता सिसटि सिरजिं जिनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक गुरमुखिं बूझै कोई ॥ ८ ॥ ६ ॥ गउडी महला ३ ॥ नामु अमोलकु गुरमुखिं पावै ॥ नामो सेवे नामि सहजिं समावै ॥ अँमितु नामु रसना नित गावै ॥ जिस नो क्रिपा करे सो हरिं रसु पावै ॥ १ ॥ अनदिनु हिरदै जपउ जगदीसा ॥ गुरमुखिं पावउ परम पदु सूखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै सूखु भइआ परगासु ॥ गुरमुखिं गावहिं सचु गुणतासु ॥ दासनि दास नित होवहिं दासु ॥ ग्रिह कुटँब महि सदा उदासु ॥ २ ॥ जीवन मुक्तु गुरमुखिं को होई ॥ परम पदारथु पावै सोई ॥ त्रै गुण मेटे निरमलु होई ॥ सहजे साचि मिलै प्रभु सोई ॥ ३ ॥ मोह कुटँब सिउ प्रीति न होइ ॥ जा हिरदै वसिआ सचु सोइ ॥ गुरमुखिं मनु बेधिआ असथिरु होइ ॥ हुकमु पछाणै बूझै सचु सोइ ॥ ४ ॥ तूँ करता मै अवरु न कोइ ॥ तुझु सेवी तुझ ते पति होइ ॥ किरपा करहिं गावा प्रभु सोइ ॥ नाम रतनु सभ जग महि लोइ ॥ ५ ॥ गुरमुखिं बाणी मीठी लागी ॥ अँतरु बिगसै अनदिनु लिव लागी ॥ सहजे सचु मिलिंआ परसादी ॥ सतिगुरु पाइआ पूरै वडभागी ॥ ६ ॥ हउमै ममता दुस्मति दुख नामु ॥ जब हिरदै राम नाम गुणतासु ॥ गुरमुखिं बुधि प्रगटी प्रभु जासु ॥ जब हिरदै रविआ चरण निवासु ॥ ७ ॥ जिसु नामु देइ सोई जनु पाए ॥ गुरमुखिं मेले आपु गवाए ॥ हिरदै साचा नामु वसाए ॥ नानक सहजे साचि समाए ॥ ८ ॥ ७ ॥ गउडी महला ३ ॥ मन ही मनु सवारिआ भै सहजिं सुभाइ ॥

सबदि मनु रँगिआ लिव लाइ ॥ निज घरि वसिआ प्रभ की रजाइ ॥ १ ॥ सतिगुरु सेविरे जाइ अभिमानु ॥ गोविंदु पाईरे
 गुणी निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु बैरागी जा सबदि भउ खाइ ॥ मेरा प्रभु निरमला सभ तै रहिआ समाइ ॥ गुर किरपा ते
 मुलै मिलाइ ॥ २ ॥ हरि दासन को दासु सुखु पाए ॥ मेरा हरि प्रभु इन बिधि पाइआ जाए ॥ हरि किरपा ते राम गुण गाए ॥
 ३ ॥ धिगु बहु जीवणु जितु हरि नामि न लगै पिआरु ॥ धिगु सेज सुखाली कामणि मोह गुबारु ॥ तिन सफलु जनमु जिन
 नामु अधारु ॥ ४ ॥ धिगु धिगु ग्रिहु कुटंबु जितु हरि प्रीति न होइ ॥ सोई हमारा मीतु जो हरि गुण गावै सोइ ॥ हरि नाम
 बिना मै अवरु न कोइ ॥ ५ ॥ सतिगुर ते हम गति पति पाई ॥ हरि नामु धिआइआ दूखु सगल मिटाई ॥ सदा अनँदु हरि
 नामि लिव लाई ॥ ६ ॥ गुरि मिलिरे हम कउ सरीर सुधि भई ॥ हउमै त्रिसना सभ अगनि बुझई ॥ बिनसे क्रोध खिमा गहि
 लई ॥ ७ ॥ हरि आपे क्रिपा करे नामु देवै ॥ गुरमुखि रतनु को विरला लेवै ॥ नानकु गुण गावै हरि अलख अभेवै ॥ ८ ॥ ८
 ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥

सतिगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुख बुरे दिसँनि ॥ अनदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला ना लहँनि ॥ १ ॥ हरि हरि राखहु क्रिपा
 धारि ॥ सतसंगति मेलाइ प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाइ चलँनि ॥
 आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहँनि ॥ २ ॥ जिस दा पिँडु पराण है तिस की सिरि कार ॥ ओहु किउ मनहु विसारीरे हरि
 रखीरे हिरदै धारि ॥ ३ ॥ नामि मिलिरे पति पाईरे नामि मँनिरे सुखु होइ ॥ सतिगुर ते नामु पाईरे करमि मिलै प्रभु सोइ ॥
 ४ ॥ सतिगुर ते जो मुहु फेरे ओइ भ्रमदे ना टिकँनि ॥ धरति असमानु न झलई विचि विसटा पर पचँनि ॥ ५ ॥ इहु जगु
 भरमि भुलाइआ मोह ठगउली पाइ ॥ जिना सतिगुरु भेटिआ तिन नेडि न भिटै माइ ॥ ६ ॥ सतिगुरु सेवनि सो सोहणे

हउमै मैलु गवाइ ॥ सबदि रते से निरमले चलहि सतिगुरु भाइ ॥ ७ ॥ हरि प्रभ दाता ओकु तूँ तूँ आपे बखसि मिलाइ ॥ जनु
नानकु सरणागती जिउ भावै तिवै छडाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ९ ॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ४ करहले १८ सतिगुरु प्रसादि ॥

करहले मन परदेसीआ किउ मिलीऐ हरि माइ ॥ गुरु भागि पूरै पाइआ गलि मिलिआ पिआरा आइ ॥ १ ॥ मन करहला
सतिगुरु पुरखु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन करहला वीचारीआ हरि राम नाम धिआइ ॥ जिथै लेखा मँगीऐ हरि आपे लए
छडाइ ॥ २ ॥ मन करहला अति निरमला मलु लागी हउमै आइ ॥ परतखि पिरु घरि नालि पिआरा विछुडि चोटा खाइ ॥
३ ॥ मन करहला मेरे प्रीतमा हरि रिदै भालि भालाइ ॥ उपाइ कितै न लभई गुरु हिरदै हरि दैखाइ ॥ ४ ॥ मन करहला मेरे
प्रीतमा दिनु रैणि हरि लिव लाइ ॥ घरु जाइ पावहि रँग महली गुरु मेले हरि मेलाइ ॥ ५ ॥ मन करहला तूँ मीतु मेरा पारखँडु
लोभु तजाइ ॥ पारखँडि लोभी मारीऐ जम डँडु देइ सजाइ ॥ ६ ॥ मन करहला मेरे प्रान तूँ मैलु पारखँडु भरमु गवाइ ॥ हरि
अँमित सरु गुरि पूरिआ मिलि सँगती मलु लहि जाइ ॥ ७ ॥ मन करहला मेरे पिआरिआ इक गुर की सिक सुणाइ ॥ इहु
मोहु माइआ पसरिआ अँति साथि न कोई जाइ ॥ ८ ॥ मन करहला मेरे साजना हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ हरि दरगह
पैनाइआ हरि आपि लइआ गलि लाइ ॥ ९ ॥ मन करहला गुरि मँनिआ गुरमुखि कार कमाइ ॥ गुर आगै करि जोदडी जन
नानक हरि मेलाइ ॥ १० ॥ १ ॥ गउड़ी महला ४ ॥ मन करहला वीचारीआ वीचारि देखु समालि ॥ बन फिरि थके
बनवासीआ पिरु गुरमति रिदै निहालि ॥ १ ॥ मन करहला गुर गोविँदु समालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन करहला वीचारीआ
मनमुख फाथिआ महा जालि ॥ गुरमुखि प्राणी मुक्तु है हरि हरि नामु समालि ॥ २ ॥ मन करहला मेरे पिआरिआ
सतसँगति सतिगुरु भालि ॥ सतसँगति लागि हरि धिआईऐ हरि हरि चलै तेरै नालि ॥ ३ ॥ मन करहला वडभागीआ

हरि एक नदरि निहालि ॥ आपि छडाए छुटीरे सतिगुर चरण समालि ॥ ४ ॥ मन करहला मेरे पिआरिआ विचि देही जोति
समालि ॥ गुरि नउ निधि नामु विखालिआ हरि दाति करी दइआलि ॥ ५ ॥ मन करहला तूँ चँचला चतुराई छडि विकरालि ॥
हरि हरि नामु समालि तूँ हरि मुकति करे अँत कालि ॥ ६ ॥ मन करहला वडभागीआ तूँ गिआनु रतनु समालि ॥ गुर गिआनु
खडगु हधि धारिआ जमु मारिअडा जमकालि ॥ ७ ॥ अँतरि निधानु मन करहले भमि भवहि बाहरि भालि ॥ गुरु पुरखु पूरा
भेतिआ हरि सजणु लधडा नालि ॥ ८ ॥ रँगि रतडे मन करहले हरि रँगु सदा समालि ॥ हरि रँगु कदे न उतरै गुर सेवा सबदु
समालि ॥ ९ ॥ हम पँखी मन करहले हरि तरवरु पुरखु अकालि ॥ वडभागी गुरमुखि पाइआ जन नानक नामु समालि ॥ १०
॥ २ ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ असटपदीआ १८ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

जब इहु मन महि करत गुमाना ॥ तब इहु भावरु फिरत बिगाना ॥ जब इहु हूआ सगल की रीना ॥ ता ते रमईआ घटि घटि
चीना ॥ १ ॥ सहज सुहेला फलु मसकीनी ॥ सतिगुर अपुनै मोहि दानु दीनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब किस कउ इहु जानसि मँदा
॥ तब सगले इसु मेलहि फँदा ॥ मेर तेर जब इनहि चुकाई ॥ ता ते इसु सँगि नही बैराई ॥ २ ॥ जब इनि अपुनी अपनी धारी
॥ तब इस कउ है मुसकलु भारी ॥ जब इनि करणैहारु पछाता ॥ तब इस नो नाही किछु ताता ॥ ३ ॥ जब इनि अपुनो
बाधिओ मोहा ॥ आवै जाइ सदा जमि जोहा ॥ जब इस ते सभ बिनसे भरमा ॥ भेदु नाही है पारब्रहमा ॥ ४ ॥ जब इनि किछु
करि माने भेदा ॥ तब ते दूख डँड अरु खेदा ॥ जब इनि एको एकी बूझिआ ॥ तब ते इस नो सभु किछु सूझिआ ॥ ५ ॥ जब
इहु धावै माइआ अरथी ॥ नह त्रिपतावै नह तिस लाथी ॥ जब इस ते इहु होइओ जउला ॥ पीछै लागि चली उठि कउला ॥ ६
॥ करि किरपा जउ सतिगुरु मिलिओ ॥ मन मँदर महि दीपकु जलिओ ॥ जीत हार की सोझी करी ॥ तउ इसु

घर की कीमति परी ॥ ७ ॥ करन करावन सभु किछु एकै ॥ आपे बुधि बीचारि बिबेकै ॥ दूरि न नैरै सभ कै संगी ॥ सचु
 सालाहणु नानक हरि रंगा ॥ ८ ॥ १ ॥ गउडी महला ७ ॥ गुर सेवा ते नामे लागा ॥ तिस कउ मिलिआ जिंसु मसतकि भागा
 ॥ तिस कै हिरदै रविआ सोइ ॥ मनु तनु सीतलु निहचलु होइ ॥ १ ॥ ऐसा कीरतनु करि मन मेरे ॥ ईहा ऊहा जो कामि तेरे
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जासु जपत भउ अपदा जाइ ॥ धावत मनूआ आवै ठाइ ॥ जासु जपत फिरि दूखु न लागै ॥ जासु जपत
 इह हउमै भागै ॥ २ ॥ जासु जपत वसि आवहि पंचा ॥ जासु जपत रिदै अँम्रितु संचा ॥ जासु जपत इह तिसना बुझै ॥
 जासु जपत हरि दरगह सिझै ॥ ३ ॥ जासु जपत कोटि मिटहि अपराध ॥ जासु जपत हरि होवहि साध ॥ जासु जपत मनु
 सीतलु होवै ॥ जासु जपत मलु सगली खोवै ॥ ४ ॥ जासु जपत रतनु हरि मिलै ॥ बहुरि न छोडै हरि संगि हिलै ॥ जासु
 जपत कई बैकुंठ वासु ॥ जासु जपत सुख सहजि निवासु ॥ ५ ॥ जासु जपत इह अगनि न पोहत ॥ जासु जपत इहु कालु न
 जोहत ॥ जासु जपत तेरा निरमल माथा ॥ जासु जपत सगला दुखु लाथा ॥ ६ ॥ जासु जपत मुसकलु कछु न बनै ॥
 जासु जपत सुणि अनहत धुनै ॥ जासु जपत इह निरमल सोइ ॥ जासु जपत कमलु सीधा होइ ॥ ७ ॥ गुरि सुभ द्रिसटि सभ
 ऊपरि करी ॥ जिस कै हिरदै मंत्रु दे हरी ॥ अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥ कहु नानक जिंसु सतिगुरु पूरा ॥ ८ ॥ २ ॥
 गउडी महला ७ ॥ गुर का सबदु रिद अंतरि धारै ॥ पंच जना सिउ संगु निवारै ॥ दस इंद्री करि राखै वासि ॥ ता कै आतमै
 होइ परगासु ॥ १ ॥ ऐसी द्रिड़ता ता कै होइ ॥ जा कउ दइआ मइआ प्रभ सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजनु दुसटु जा कै एक
 समानै ॥ जेता बोलणु तेता गिआनै ॥ जेता सुनणा तेता नामु ॥ जेता पेखनु तेता धिआनु ॥ २ ॥ सहजे जागणु सहजे
 सोइ ॥ सहजे होता जाइ सु होइ ॥ सहजि बैरागु सहजे ही हसना ॥ सहजे चूप सहजे ही जपना ॥ ३ ॥ सहजे भोजनु सहजे
 भाउ ॥ सहजे मिटिओ सगल दुराउ ॥ सहजे होआ साधू संगु ॥ सहजि मिलिओ पारब्रहमु निसंगु ॥ ४ ॥ सहजे

गिह महि सहजि उदासी ॥ सहजे दुबिधा तन की नासी ॥ जा कै सहजि मनि भइआ अनंदु ॥ ता कउ भेटिआ परमानंदु ॥ ५
 ॥ सहजे अँम्रितु पीओ नामु ॥ सहजे कीनो जीअ को दानु ॥ सहज कथा महि आतमु रसिआ ॥ ता कै सँगि अबिनासी
 वसिआ ॥ ६ ॥ सहजे आसणु असथिरु भाइआ ॥ सहजे अनहत सबदु वजाइआ ॥ सहजे रुणझुणकारु सुहाइआ ॥ ता
 कै घरि पारब्रहमु समाइआ ॥ ७ ॥ सहजे जा कउ परिओ करमा ॥ सहजे गुरु भेटिओ सचु धरमा ॥ जा कै सहजु भइआ सो
 जाणै ॥ नानक दास ता कै कुरबाणै ॥ ८ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रथमे गरभ वास ते टरिआ ॥ पुत्र कलत्र कुटंब सँगि
 जुरिआ ॥ भोजनु अनिक प्रकार बहु कपरे ॥ सरपर गवनु करहिगे बपुरे ॥ १ ॥ कवनु असथानु जो कबहु न टरै ॥ कवनु
 सबदु जितु दुर्मति हरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इँद्रपुरी महि सरपर मरणा ॥ ब्रहमपुरी निहचलु नही रहणा ॥ सिवपुरी का होइगा
 काला ॥ त्रैगुण माइआ बिनसि बिताला ॥ २ ॥ गिरि तर धरणि गगन अरु तारे ॥ रवि ससि पवणु पावकु नीरारे ॥ दिनसु
 रैणि बरत अरु भेदा ॥ सासत सिँम्रिति बिनसहिगे बेदा ॥ ३ ॥ तीरथ देव देहुरा पोथी ॥ माला तिलकु सोच पाक होती ॥
 धोती डँडउति परसादन भोगा ॥ गवनु करैगो सगलो लोगा ॥ ४ ॥ जाति वरन तुरक अरु हिंदू ॥ पसु पँखी अनिक जोनि
 जिँदू ॥ सगल पासारु दीसै पासारा ॥ बिनसि जाइगो सगल आकारा ॥ ५ ॥ सहज सिफति भगति ततु गिआना ॥ सदा
 अनंदु निहचलु सचु थाना ॥ तहा सँगति साध गुण रसै ॥ अनभउ नगरु तहा सद वसै ॥ ६ ॥ तह भउ भरमा सोगु न चिँता
 ॥ आवणु जावणु मिरतु न होता ॥ तह सदा अनंद अनहत आखारे ॥ भगत वसहि कीरतन आधारे ॥ ७ ॥ पारब्रहम का
 अँतु न पारु ॥ कउणु करै ता का बीचारु ॥ कहु नानक जिसु किरपा करै ॥ निहचल थानु साधसँगि तरै ॥ ८ ॥ ४ ॥
 गउड़ी महला ५ ॥ जो इसु मारे सोई सूरु ॥ जो इसु मारे सोई पूरा ॥ जो इसु मारे तिसहि वडिआई ॥ जो इसु मारे तिस का
 दूखु जाई ॥ १ ॥ ऐसा कोइ जि दुबिधा मारि गवावै ॥ इसहि मारि राज जोगु कमावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो इसु मारे

तिस कउ भउ नाहि ॥ जो इसु मारे सु नामि समाहि ॥ जो इसु मारे तिस की तिसना बुझै ॥ जो इसु मारे सु दरगह सिझै ॥ २ ॥
 जो इसु मारे सो धनवँता ॥ जो इसु मारे सो पतिवँता ॥ जो इसु मारे सोई जती ॥ जो इसु मारे तिसु होवै गती ॥ ३ ॥ जो इसु
 मारे तिस का आइआ गनी ॥ जो इसु मारे सु निहचलु धनी ॥ जो इसु मारे सो वडभागा ॥ जो इसु मारे सु अनदिनु जागा ॥ ४
 ॥ जो इसु मारे सु जीवन मुकता ॥ जो इसु मारे तिस की निरमल जुगता ॥ जो इसु मारे सोई सुगिआनी ॥ जो इसु मारे सु
 सहज धिआनी ॥ ५ ॥ इसु मारी बिनु धाड न परै ॥ कोटि करम जाप तप करै ॥ इसु मारी बिनु जनम न मिटै ॥ इसु मारी बिनु
 जम ते नही छुटै ॥ ६ ॥ इसु मारी बिनु गिआनु न होई ॥ इसु मारी बिनु जूठि न धोई ॥ इसु मारी बिनु सभु किछु मैला ॥ इसु
 मारी बिनु सभु किछु जउला ॥ ७ ॥ जा कउ भओ क्रिपाल क्रिपानिधि ॥ तिसु भई खलासी होई सगल सिधि ॥ गुरि दुबिधा जा
 की है मारी ॥ कहु नानक सो ब्रहम बीचारी ॥ ८ ॥ ५ ॥ गउडी महला ५ ॥ हरि सिउ जुरै त सभु को मीतु ॥ हरि सिउ जुरै त
 निहचलु चीतु ॥ हरि सिउ जुरै न विआपै काढा ॥ हरि सिउ जुरै त होइ निसतारा ॥ १ ॥ रे मन मेरे तूँ हरि सिउ जोरु ॥ काजि
 तुहारै नाही होरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडे वडे जो दुनीआदार ॥ काहू काजि नाही गावार ॥ हरि का दासु नीच कुलु सुणहि ॥
 तिस के सँगि खिन महि उधरहि ॥ २ ॥ कोटि मजन जा कै सुणि नाम ॥ कोटि पूजा जा कै है धिआन ॥ कोटि पुँन सुणि हरि
 की बाणी ॥ कोटि फला गुर ते बिधि जाणी ॥ ३ ॥ मन अपुने महि फिरि फिरि चेत ॥ बिनसि जाहि माइआ के हेत ॥ हरि
 अबिनासी तुमरै सँगि ॥ मन मेरे रचु राम कै रँगि ॥ ४ ॥ जा कै कामि उतरै सभ भूख ॥ जा कै कामि न जोहहि दूत ॥ जा कै
 कामि तेरा वड गमरु ॥ जा कै कामि होवहि तूँ अमरु ॥ ५ ॥ जा कै चाकर कउ नही डान ॥ जा कै चाकर कउ नही बान ॥ जा
 कै दफतरि पुछै न लेखा ॥ ता की चाकरी करहु बिसेखा ॥ ६ ॥ जा कै ऊन नाही काहू बात ॥ एकहि आपि अनेकहि भाति ॥
 जा की दिसटि होइ सदा निहाल ॥ मन मेरे करि ता की घाल ॥ ७ ॥ ना को चतुरु नाही को मूडा ॥ ना को हीणु नाही

को सूरु ॥ जितु को लाइआ तित ही लागु ॥ सो सेवकु नानक जिसु भागु ॥ ८ ॥ ६ ॥ गउडी महला ५ ॥ बिनु सिमरन
 जैसे सरप आरजारी ॥ तित जीवहि साकत नामु बिसारी ॥ १ ॥ एक निमख जो सिमरन महि जीआ ॥ कोटि दिनस लाख
 सदा थिरु थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन धिगु करम करास ॥ काग बतन बिसटा महि वास ॥ २ ॥ बिनु सिमरन
 भए कूकर काम ॥ साकत बेसुआ पूत निनाम ॥ ३ ॥ बिनु सिमरन जैसे सीड छतारा ॥ बोलहि कूरु साकत मुखु कारा ॥ ४
 ॥ बिनु सिमरन गरधभ की निआई ॥ साकत थान भरिसट फिराही ॥ ५ ॥ बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥ साकत लोभी
 बंधुन पाइआ ॥ ६ ॥ बिनु सिमरन है आतम घाती ॥ साकत नीच तिसु कुलु नही जाती ॥ ७ ॥ जिसु भइआ क्रिपालु तिसु
 सतसंगि मिलाइआ ॥ कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ॥ ८ ॥ ७ ॥ गउडी महला ५ ॥ गुर कै बचनि मोहि परम गति पाई
 ॥ गुरि पूरे मेरी पैज रखाई ॥ १ ॥ गुर कै बचनि धिआइओ मोहि नाउ ॥ गुर परसादि मोहि मिलिआ थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 गुर कै बचनि सुणि रसन वखाणी ॥ गुर किरपा ते अमित मेरी बाणी ॥ २ ॥ गुर कै बचनि मिटिआ मेरा आपु ॥ गुर की
 दइआ ते मेरा वड परतापु ॥ ३ ॥ गुर कै बचनि मिटिआ मेरा भरमु ॥ गुर कै बचनि पेखिओ सभु ब्रहमु ॥ ४ ॥ गुर कै बचनि
 कीनो राजु जोगु ॥ गुर कै संगि तरिआ सभु लोगु ॥ ५ ॥ गुर कै बचनि मेरे कारज सिधि ॥ गुर कै बचनि पाइआ नाउ निधि
 ॥ ६ ॥ जिनि जिनि कीनी मेरे गुर की आसा ॥ तिस की कटीरे जम की फासा ॥ ७ ॥ गुर कै बचनि जागिआ मेरा करमु ॥
 नानक गुरु भेटिआ पारब्रहमु ॥ ८ ॥ ८ ॥ गउडी महला ५ ॥ तिस गुर कउ सिमरउ सासि सासि ॥ गुरु मेरे प्राण सतिगुरु
 मेरी रासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का दरसनु देखि देखि जीवा ॥ गुर के चरण धोइ धोइ पीवा ॥ १ ॥ गुर की रेणु नित मजनु
 करउ ॥ जनम जनम की हउमै मलु हरउ ॥ २ ॥ तिसु गुर कउ झूलावउ पाखा ॥ महा अगनि ते हाथु दे राखा ॥ ३ ॥ तिसु
 गुर कै ग्रिहि ढेवउ पाणी ॥ जिसु गुर ते अकल गति जाणी ॥ ४ ॥ तिसु गुर कै ग्रिहि पीसउ नीत ॥ जिसु

परसादि वैरी सभ मीत ॥ ५ ॥ जिनि गुरि मो कउ दीना जीउ ॥ आपुना दासरा आपे मुलि लीउ ॥ ६ ॥ आपे लाइओ अपना
 पिआरु ॥ सदा सदा तिसु गुर कउ करी नमसकारु ॥ ७ ॥ कलि कलेस भै भ्रम दुख लाथा ॥ कहु नानक मेरा गुरु समराथा
 ॥ ८ ॥ ९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मिलु मेरे गोबिंद अपना नामु देहु ॥ नाम बिना धिगु धिगु असनेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम
 बिना जो पहिरै खाइ ॥ जिउ कूकरु जूठन महि पाइ ॥ १ ॥ नामु बिना जेता बिउहारु ॥ जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥
 २ ॥ नामु बिसारि करे रस भोग ॥ सुखु सुपनै नही तन महि रोग ॥ ३ ॥ नामु तिआगि करे अन काज ॥ बिनसि जाइ झूठे
 सभि पाज ॥ ४ ॥ नाम सँगि मनि प्रीति न लावै ॥ कोटि कर्म करतो नरकि जावै ॥ ५ ॥ हरि का नामु जिनि मनि न आराधा
 ॥ चोर की निआई जम पुरि बाधा ॥ ६ ॥ लाख अडंबर बहुतु बिसथारा ॥ नाम बिना झूठे पासारा ॥ ७ ॥ हरि का नामु सोई
 जनु लेइ ॥ करि किरपा नानक जिंसु देइ ॥ ८ ॥ १० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ आदि मधि जो अँति निबाहै ॥ सो साजनु मेरा
 मनु चाहै ॥ १ ॥ हरि की प्रीति सदा सँगि चालै ॥ दइआल पुरख पूरन प्रतिपालै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनसत नाही छोडि न
 जाइ ॥ जह पेखा तह रहिआ समाइ ॥ २ ॥ सुंदरु सुघडु चतुरु जीअ दाता ॥ भाई पूतु पिता प्रभ माता ॥ ३ ॥ जीवन प्रान
 अधार मेरी रासि ॥ प्रीति लाई करि रिदै निवासि ॥ ४ ॥ माइआ सिलक काटी गोपालि ॥ करि आपुना लीनो नदरि निहालि ॥
 ५ ॥ सिमरि सिमरि काटे सभि रोग ॥ चरण धिआन सरब सुख भोग ॥ ६ ॥ पूरन पुरखु नवतनु नित बाला ॥ हरि अंतरि
 बाहरि सँगि रखवाला ॥ ७ ॥ कहु नानक हरि हरि पदु चीन ॥ सरबसु नामु भगत कउ दीन ॥ ८ ॥ ११ ॥

रागु गउड़ी माझ महला ५ १८ सितिगुर प्रसादि ॥

खोजत फिरे असंख अँतु न पारीआ ॥ सेई होए भगत जिना किरपारीआ ॥ १ ॥ हउ वारीआ हरि वारीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 सुणि सुणि पँथु डराउ बहुतु भैहारीआ ॥ मै त

ओट सँताह लेहु उबारीआ ॥ २ ॥ मोहन लाल अनूप सरब साधारीआ ॥ गुर निवि निवि लागउ पाइ देहु दिखारीआ ॥ ३ ॥ मै कीए मित्र अनेक इकसु बलिहारीआ ॥ सभ गुण किस ही नाहिं हरि पूर भँडारीआ ॥ ४ ॥ चहु दिसि जपीरे नाउ सूखि सवारीआ ॥ मै आही ओड़ि तुहारि नानक बलिहारीआ ॥ ५ ॥ गुरि काढिओ भुजा पसारि मोह कूपारीआ ॥ मै जीतिओ जनमु अपारु बहुरि न हारीआ ॥ ६ ॥ मै पाइओ सरब निधानु अकथु कथारीआ ॥ हरि दरगह सोभावँत बाह लुडारीआ ॥ ७ ॥ जन नानक लधा रतनु अमोलु अपारीआ ॥ गुर सेवा भउजलु तरीरे कहउ पुकारीआ ॥ ८ ॥ १२ ॥

गउड़ी महला ५ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

नाराइण हरि रँग रँगो ॥ जपि जिहवा हरि एक मँगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि हउमै गुर गिआन भजो ॥ मिलि सँगति धुरि करम लिखिओ ॥ १ ॥ जो दीसै सो सँगि न गइओ ॥ साकतु मूडु लगे पचि मुइओ ॥ २ ॥ मोहन नामु सदा रवि रहिओ ॥ कोटि मधे किनै गुरमुखि लहिओ ॥ ३ ॥ हरि सँतन करि नमो नमो ॥ नउ निधि पावहि अतुलु सुखो ॥ ४ ॥ नैन अलोवउ साध जनो ॥ हिरै गावहु नाम निधो ॥ ५ ॥ काम क्रोध लोभु मोहु तजो ॥ जनम मरन दुहु ते रहिओ ॥ ६ ॥ दूखु अँधेरा घर ते मिटिओ ॥ गुरि गिआनु दिडाइओ दीप बलिओ ॥ ७ ॥ जिनि सेविआ सो पारि परिओ ॥ जन नानक गुरमुखि जगतु तरिओ ॥ ८ ॥ १ ॥ १३ ॥ महला ५ गउड़ी ॥ हरि हरि गुर गुर करत भरम गए ॥ मेरै मनि सभि सुख पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलतो जलतो तउकिआ गुर चँदनु सीतलाइओ ॥ १ ॥ अगिआन अँधेरा मिटि गइआ गुर गिआनु दीपाइओ ॥ २ ॥ पावकु सागरु गहरो चरि सँतन नाव तराइओ ॥ ३ ॥ ना हम करम न धरम सुच प्रभि गहि भुजा आपाइओ ॥ ४ ॥ भउ खँडनु दुख भँजनो भगति वछल हरि नाइओ ॥ ५ ॥ अनाथह नाथ क्रिपाल दीन सँमिथ सँत ओटाइओ ॥ ६ ॥ निरगुनीआरे की बेनती देहु दरसु हरि राइओ ॥ ७ ॥ नानक सरनि तुहारी ठाकुर सेवकु दुआरे आइओ ॥ ८ ॥ २ ॥ १४ ॥

गउड़ी महला ७ ॥ रँगि सँगि बिखिआ के भोगा इन सँगि अँध न जानी ॥ १ ॥ हउ सँचउ हउ खाटता सगली अवध बिहानी ॥ रहाउ ॥ हउ सूरु परधानु हउ को नाही मुझहि समानी ॥ २ ॥ जोबनवँत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी ॥ ३ ॥ जिउ उलझाइओ बाध बुधि का मरतिआ नही बिसरानी ॥ ४ ॥ भाई मीत बँधप सखे पाछे तिनहू कउ सँपानी ॥ ५ ॥ जितु लागो मनु बासना अँति साई प्रगटानी ॥ ६ ॥ अहँबुधि सुचि करम करि इह बँधन बँधानी ॥ ७ ॥ दइआल पुरख किरपा करहु नानक दास दसानी ॥ ८ ॥ ३ ॥ १७ ॥ ४४ ॥ जुमला

१८ शितीनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी पूरबी छँत महला १ ॥

मुँध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नीद न आवै ॥ साधन दुबलीआ जीउ पिर कै हावै ॥ धन थीई दुबलि कँत हावै केव नैणी देखए ॥ सीगार मिठ रस भोग भोजन सभु झूठु कितै न लेखए ॥ मै मत जोबनि गरबि गाली दुधा थणी न आवए ॥ नानक साधन मिलै मिलाई बिनु पिर नीद न आवए ॥ १ ॥ मुँध निमानड़ीआ जीउ बिनु धनी पिआरे ॥ किउ सुखु पावैगी बिनु उर धारे ॥ नाह बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सुहेलीआ ॥ बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सुहेलीआ ॥ सचु मनि सजन सँतोखि मेला गुरमती सहु जाणिआ ॥ नानक नामु न छोडै साधन नामि सहजि समाणीआ ॥ २ ॥ मिलु सखी सहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा ॥ गुर पुछि लिखउगी जीउ सबदि सनेहा ॥ सबदु साचा गुरि दिखाइआ मनमुखी पछुताणीआ ॥ निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु पछाणिआ ॥ साच की मति सदा नउतन सबदि नेहु नवेलओ ॥ नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी सहेलीहो ॥ ३ ॥ मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ ॥ मिलि वरु नारी मँगलु गाइआ ॥ गुण गाइ मँगलु प्रेमि रहसी मुँध मनि ओमाहओ ॥ साजन रहँसे दुसट विआपे साचु जपि सचु लाहओ ॥ कर जोडि साधन करै बिनती रैणि दिनु रसि भिँनीआ ॥ नानक पिरु धन करहि रलीआ

इछ मेरी पुँनीआ ॥ ४ ॥ १ ॥ गउडी छँत महला १ ॥ सुणि नाह प्रभू जीउ एकलडी बन माहे ॥ किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ
वेपरवाहे ॥ धन नाह बाझहु रहि न साकै बिखम रैणि घणेरीआ ॥ नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि बेनँती मेरीआ ॥ बाझहु पिआरे
कोइ न सारे एकलडी कुरलाए ॥ नानक साधन मिलै मिलार्इ बिनु प्रीतम दुखु पाए ॥ १ ॥ पिरि छोडिअडी जीउ कवणु मिलावै
॥ रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै ॥ सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै ॥ सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के
गुण सारै ॥ सतिगुर मेली ता पिरि रवी बिगसी अँमित बाणी ॥ नानक साधन ता पिरु रावै जा तिसकै मनि भाणी ॥ २ ॥
माइआ मोहणी नीघरीआ जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ किउ खूलै गल जेवडीआ जीउ बिनु गुर अति पिआरे ॥ हरि प्रीति पिआरे
सबदि वीचारे तिसही का सो होवै ॥ पुँन दान अनेक नावण किउ अँतरि मलु धोवै ॥ नाम बिना गति कोइ न पावै हठि निग्रहि
बेबाणै ॥ नानक सच घरु सबदि सिजापै दुबिधा महलु कि जाणै ॥ ३ ॥ तेरा नामु सचा जीउ सबदु सचा वीचारो ॥ तेरा महलु
सचा जीउ नामु सचा वापारो ॥ नाम का वापारु मीठा भगति लाहा अनदिनो ॥ तिसु बाझु वखरु कोइ न सूझै नामु लेवहु खिनु
खिनो ॥ परखि लेखा नदरि साची करमि पूरै पाइआ ॥ नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

शगु गउडी पूरबी छँत महला ३ १४ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

साधन बिनउ करे जीउ हरि के गुण सारे ॥ खिनु पलु रहि न सकै जीउ बिनु हरि पिआरे ॥ बिनु हरि पिआरे रहि न साकै गुर बिनु
महलु न पाईए ॥ जो गुरु कहै सोई परु कीजै तिसना अगनि बुझाईए ॥ हरि साचा सोई तिसु बिनु अवरु न कोई बिनु सेविरे
सुखु न पाए ॥ नानक साधन मिलै मिलार्इ जिसनो आपि मिलाए ॥ १ ॥ धन रैणि सुहेलडीए जीउ हरि सिउ चितु लाए ॥
सतिगुरु सेवे भाउ करे जीउ विचहु आपु गवाए ॥ विचहु आपु गवाए हरि गुण गाए अनदिनु लागा भाओ ॥ सुणि सखी सहेली
जीअ की मेली गुर के सबदि समाओ ॥ हरि गुण सारी ता

कँत पिआरी नामे धरी पिआरो ॥ नानक कामणि नाह पिआरी राम नामु गलि हारो ॥ २ ॥ धन एकलड़ी जीउ बिनु नाहि
 पिआरे ॥ दूजै भाइ मुठी जीउ बिनु गुर सबद करारे ॥ बिनु सबद पिआरे कउणु दुतरु तारे माइआ मोहि खुआई ॥ कूड़ि विगुती
 ता पिरि मुती साधन महलु न पाई ॥ गुर सबदे राती सहजे माती अनदिनु रहे समाए ॥ नानक कामणि सदा रँगि राती हरि जीउ
 आपि मिलाए ॥ ३ ॥ ता मिलिऐ हरि मेले जीउ हरि बिनु कवणु मिलाए ॥ बिनु गुर प्रीतम आपणे जीउ कउणु भरमु चुकाए ॥
 गुरु भरमु चुकाए इउ मिलिऐ माए ता साधन सुखु पाए ॥ गुर सेवा बिनु घोर अँधारु बिनु गुर मगु न पाए ॥ कामणि रँगि राती
 सहजे माती गुर कै सबदि वीचारे । नानक कामणि हरि वरु पाइआ गुर कै भाइ पिआरे ॥ ४ ॥ १ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ पिर
 बिनु खरी निमाणी जीउ बिनु पिर किउ जीवा मेरी माई ॥ पिर बिनु नीद न आवै जीउ कापड़ तनि न सुहाई ॥ कापरु तनि
 सुहावै जा पिर भावै गुरमती चितु लाईऐ ॥ सदा सुहागणि जा सतिगुरु सेवे गुर कै अँकि समाईऐ ॥ गुर सबदै मेला ता पिरु
 रावी लाहा नामु संसारे ॥ नानक कामणि नाह पिआरी जा हरि के गुण सारे ॥ १ ॥ साधन रँगु माणे जीउ आपणे नालि पिआरे
 ॥ अहिनिशि रँगि राती जीउ गुर सबदु वीचारे ॥ गुर सबदु वीचारे हउमै मारे इन बिधि मिलहु पिआरे ॥ साधन सोहागणि सदा
 रँगि राती साचै नामि पिआरे ॥ अपुने गुर मिलि रहीऐ अँमितु गहीऐ दुबिधा मारि निवारे ॥ नानक कामणि हरि वरु पाइआ
 सगले दूख विसारे ॥ २ ॥ कामणि पिरहु भुली जीउ माइआ मोहि पिआरे ॥ झूठी झूठि लगी जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ कूडु
 निवारे गुरमति सारे जूऐ जनमु न हारे ॥ गुर सबदु सेवे सचि समावै विचहु हउमै मारे ॥ हरि का नामु रिदै वसाए ऐसा करे
 सीगारो ॥ नानक कामणि सहजि समाणी जिसु साचा नामु अधारो ॥ ३ ॥ मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी ॥
 मै नैणी नीद न आवै जीउ भावै अँनु न पाणी ॥ पाणी अँनु न भावे मरीऐ हावै बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ ॥ गुर आगै

करउ बिनँती जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईये ॥ आपे मेलिं लए सुखदाता आपि मिलिंआ घरि आए ॥ नानक कामणिं सदा
 सुहागणिं ना पिरु मरै न जाए ॥ ४ ॥ २ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ कामणिं हरिं रसि बेधी जीउ हरिं कै सहजिं सुभाए ॥ मनु मोहनि
 मोहिं लीआ जीउ दुबिधा सहज समाए ॥ दुबिधा सहजिं समाए कामणिं वरु पाए गुरमती रँगु लाए ॥ इहु सरीरु कूड़ि कुसति
 भरिआ गल ताई पाप कमाए ॥ गुरमुखिं भगतिं जितु सहज धुनि उपजै बिनु भगती मैलु न जाए ॥ नानक कामणिं पिरहिं
 पिआरी विचहु आपु गवाए ॥ १ ॥ कामणिं पिरु पाइआ जीउ गुर कै भाइ पिआरे ॥ रैणिं सुखिं सुती जीउ अंतरि उरि धारे ॥
 अंतरि उरि धारे मिलीऐ पिआरे अनदिनु दुखु निवारे ॥ अंतरि महलु पिरु रावे कामणिं गुरमती वीचारे ॥ अँम्रितु नामु पीआ दिन
 राती दुबिधा मारिं निवारे ॥ नानक सचि मिली सोहागणिं गुर कै हेति अपारे ॥ २ ॥ आवहु दइआ करे जीउ प्रीतम अति पिआरे
 ॥ कामणिं बिनउ करे जीउ सचि सबदिं सीगारे ॥ सचि सबदिं सीगारे हउमै मारे गुरमुखिं कारज सवारे ॥ जुगि जुगि एको सचा
 सोई बूझै गुर बीचारे ॥ मनमुखिं कामिं विआपी मोहिं सँतापी किसु आगै जाइ पुकारे ॥ नानक मनमुखिं थाउ न पाए बिनु गुर
 अति पिआरे ॥ ३ ॥ मुँध इआणी भोलीं निगुणीआ जीउ पिरु अगम अपारा ॥ आपे मेलिं मिलीऐ जीउ आपे बखसणहारा ॥
 अवगण बखसणहारा कामणिं कँतु पिआरा घटि घटि रहिआ समाई ॥ प्रेम प्रीति भाइ भगती पाईऐ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ सदा
 अनँदि रहै दिन राती अनदिनु रहै लिव लाई ॥ नानक सहजे हरिं वरु पाइआ साधन नउ निधि पाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला
 ३ ॥ माइआ सरु सबलु वरतै जीउ किउ करि दुतरु तरिआ जाइ ॥ राम नामु करिं बोहिथा जीउ सबदु खेवटु विचि पाइ ॥ सबदु
 खेवटु विचि पाए हरिं आपि लघाए इन बिधि दुतरु तरीऐ ॥ गुरमुखिं भगतिं परापति होवै जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ खिन महि राम
 नामिं किलविख काटे भए पवितु सरीरा ॥ नानक राम नामिं निसतारा कँचन भए मनूरा ॥ १ ॥ इसतरी पुरख कामिं

विआपे जीउ राम नाम की बिधि नहीं जाणी ॥ मात पिता सुत भाई खरे पिआरे जीउ डूबि मुए बिनु पाणी ॥ डूबि मुए बिनु
 पाणी गति नहीं जाणी हउमै धातु संसारे ॥ जो आइआ सो सभु को जासी उबरे गुर वीचारे ॥ गुरमुखि होवै राम नामु
 वखाणै आपि तरै कुल तारे ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमति मिले पिआरे ॥ २ ॥ राम नाम बिनु को थिरु नाही जीउ
 बाजी है संसारा ॥ द्विडु भगति सची जीउ रामु नामु वापारा ॥ राम नामु वापारा अगम अपारा गुरमती धनु पाईरे ॥ सेवा
 सुरति भगति इह साची विचहु आपु गवाईरे ॥ हम मति हीण मूरख मुगध अंधे सतिगुर मारगि पाए ॥ नानक गुरमुखि
 सबदि सुहावे अनदिनु हरि गुण गाए ॥ ३ ॥ आपि कराए करे आपि जीउ आपे सबदि सवारे ॥ आपे सतिगुरु आपि सबदु
 जीउ जुगु जुगु भगत पिआरे ॥ जुगु जुगु भगत पिआरे हरि आपि सवारे आपे भगती लाए ॥ आपे दाना आपे बीना आपे
 सेव कराए ॥ आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नामु वसाए ॥ नानक सद बलिहारी सचे विटहु आपे करे कराए ॥ ४ ॥ ४
 ॥ गउड़ी महला ३ ॥ गुर की सेवा करि पिरा जीउ हरि नामु धिआए ॥ मँजहु दूरि न जाहि पिरा जीउ घरि बैठिआ हरि पाए
 ॥ घरि बैठिआ हरि पाए सदा चितु लाए सहजे सति सुभाए ॥ गुर की सेवा खरी सुखाली जिस नो आपि कराए ॥ नामो
 बीजे नामो जँमै नामो मँनि वसाए ॥ नानक सचि नामि वडिआई पूरबि लिखिआ पाए ॥ १ ॥ हरि का नामु मीठा पिरा जीउ
 जा चाखहि चितु लाए ॥ रसना हरि रसु चाखु मुये जीउ अन रस साद गवाए ॥ सदा हरि रसु पाए जा हरि भाए रसना सबदि
 सुहाए ॥ नामु धिआए सदा सुखु पाए नामि रहै लिव लाए ॥ नामे उपजे नामे बिनसै नामे सचि समाए ॥ नानक नामु
 गुरमती पाईरे आपे लए लवाए ॥ २ ॥ एह विडाणी चाकरी पिरा जीउ धन छोडि परदेसि सिधाए ॥ दूजै किनै सुखु न
 पाइओ पिरा जीउ बिखिआ लोभि लुभाए ॥ बिखिआ लोभि लुभाए भरमि भुलाए ओहु किउ करि सुखु पाए ॥ चाकरी
 विडाणी खरी दुखाली आपु वेचि धरमु गवाए ॥ माइआ बंधन टिकै नाही खिनु खिनु दुखु संताए ॥ नानक माइआ का

दुखु तदे चूकै जा गुर सबदी चितु लाए ॥ ३ ॥ मनमुख मुगध गावारु पिरा जीउ सबदु मनि न वसाए ॥ माइआ का भ्रमु अंधु
 पिरा जीउ हरि मारगु किउ पाए ॥ किउ मारगु पाए बिनु सतिगुर भाए मनमुखि आपु गणाए ॥ हरि के चाकर सदा सुहेले गुर
 चरणी चितु लाए ॥ जिसनो हरि जीउ करे किरपा सदा हरि के गुण गाए ॥ नानक नामु रतनु जगि लाहा गुरमुखि आपि
 बुझाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

रागु गउड़ी, छँत महला ५ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै मनि बैरागु भइआ जीउ किउ देखा प्रभ दाते ॥ मेरे मीत सखा हरि जीउ गुर पुरख बिधाते ॥ पुरखो बिधाता एकु स्त्रीधर
 किउ मिलह तुझै उडीणीआ ॥ कर करहि सेवा सीसु चरणी मनि आस दरस निमाणीआ ॥ सासि सासि न घडी विसरै पलु
 मूरतु दिनु राते ॥ नानक सारिँग जिउ पिआसे किउ मिलीऐ प्रभ दाते ॥ १ ॥ इक बिनउ करउ जीउ सुणि कँति पिआरे ॥ मेरा
 मनु तनु मोहि लीआ जीउ देखि चलत तुमारे ॥ चलता तुमारे देखि मोही उदास धन किउ धीरए ॥ गुणवंत नाह दइआलु बाला
 सरब गुण भरपूरए ॥ पिर दोसु नाही सुखह दाते हउ विछुडी बुरिआरे ॥ बिनवँति नानक दइआ धारहु घरि आवहु नाह पिआरे
 ॥ २ ॥ हउ मनु अरपी सभु तनु अरपी अरपी सभि देसा ॥ हउ सिरु अरपी तिसु मीत पिआरे जो प्रभ देइ सदेसा ॥ अरपिआ
 त सीसु सुथानि गुर पहि सँगि प्रभू दिखाइआ ॥ खिन माहि सगला दूरु मिटिआ मनहु चिँदिआ पाइआ ॥ दिनु रैणि रलीआ
 करै कामणि मिटे सगल अँदेसा ॥ बिनवँति नानकु कँतु मिलिआ लोड़ते हम जैसा ॥ ३ ॥ मेरै मनि अनदु भइआ जीउ वजी
 वाधाई ॥ घरि लालु आइआ पिआरा सभ तिखा बुझाई ॥ मिलिआ त लालु गुपालु ठाकुरु सखी मँगलु गाइआ ॥ सभ मीत
 बँधप हरखु उपजिआ दूत थाउ गवाइआ ॥ अनहत वाजे वजहि घर माहि पिर सँगि सेज विछाई ॥ बिनवँति नानकु सहजि रहै
 हरि मिलिआ कँतु सुखदाई ॥ ४ ॥ १ ॥

गउड़ी, महला ५ ॥ मोहन तेरे ऊचे मँदर महल अपारा ॥ मोहन तेरे सोहनि दुआर जीउ सँत धरमसाला ॥ धरमसाल
 अपार दैआर ठाकुर सदा कीरतनु गावहे ॥ जह साध सँत इकत्र होवहि तहा तुझहि धिआवहे ॥ करि दइआ मइआ दइआल
 सुआमी होहु दीन क्रिपारा ॥ बिनवँति नानक दरस पिआसे मिलि दरसन सुखु सारा ॥ १ ॥ मोहन तेरे बचन अनूप चाल
 निराली ॥ मोहन तूँ मानहि एकु जी अवर सभ राली ॥ मानहि त एकु अलेखु ठाकुरु जिनिहि सभ कल धारीआ ॥ तुधु
 बचनि गुर कै वसि कीआ आदि पुरखु बनवारीआ ॥ तूँ आपि चलिआ आपि रहिआ आपि सभ कल धारीआ ॥ बिनवँति
 नानक पैज राखहु सभ सेवक सरनि तुमारीआ ॥ २ ॥ मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ॥ मोहन जमु नेड़ि न
 आवै तुधु जपहि निदाना ॥ जमकालु तिन कउ लगै नाही जो इक मनि धिआवहे ॥ मनि बचनि करमि जि तुधु अराधहि से
 सभे फल पावहे ॥ मल मूत मूड जि मुगध होते सि देखि दरसु सुगिआना ॥ बिनवँति नानक राजु निहचलु पूरन पुरख
 भगवाना ॥ ३ ॥ मोहन तूँ सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥ मोहन पुत्र मीत भाई कुटँब सभि तारे ॥ तारिआ जहानु लहिआ
 अभिमानु जिनी दरसनु पाइआ ॥ जिनी तुधनो धँनु कहिआ तिन जमु नेड़ि न आइआ ॥ बेअँत गुण तेरे कथे न जाही
 सतिगुर पुरख मुरारे ॥ बिनवँति नानक टेक राखी जितु लागि तरिआ सँसारे ॥ ४ ॥ २ ॥ गउड़ी, महला ५ ॥ सलोकु ॥
 पतित असँख पुनीत करि पुनह पुनह बलिहार ॥ नानक राम नामु जपि पावको तिन किलबिख दाहनहार ॥ १ ॥ छँत ॥
 जपि मना तूँ राम नराइणु गोविँदा हरि माधो ॥ धिआइ मना मुरारि मुकँदे कटीरे काल दुख फाधो ॥ दुख हरण दीन सरण
 श्रीधर चरन कमल अराधीरे ॥ जप पँथु बिखड़ा अगनि सागरु निमख सिमरत साधीरे ॥ कलि मलह दहता सुधु करता
 दिनसु रैणि अराधो ॥ बिनवँति नानक करहु किरपा गोपाल गोबिँद माधो ॥ १ ॥ सिमरि मना दामोदारु दुख हरु भै
 भँजनु हरि राइआ ॥ श्री रँगो दइआल मनोहरु भगति वछलु बिरदाइआ ॥

भगति वछल पुरख पूरन मनहि चिँदिआ पाईऐ ॥ तम अँध कूप ते उधारै नामु मँनि वसाईऐ ॥ सुर सिध गण गँधरब मुनि जन
 गुण अनिक भगती गाइआ ॥ बिनवँति नानक करहु किरपा पारब्रहम हरि राइआ ॥ २ ॥ चेति मना पारब्रहमु परमेसरु सरब
 कला जिनि धारी ॥ करुणा मै समरथु सुआमी घट घट प्राण अधारी ॥ प्राण मन तन जीअ दाता बेअँत अगम अपारो ॥
 सरणि जोगु समरथु मोहनु सरब दोख बिदारो ॥ रोग सोग सभि दोख बिनसहि जपत नामु मुरारी ॥ बिनवँति नानक करहु
 किरपा समरथ सभ कल धारी ॥ ३ ॥ गुण गाउ मना अचुत अबिनासी सभ ते ऊच दइआला ॥ बिसँभरु देवन कउ एकै सरब
 करै प्रतिपाला ॥ प्रतिपाल महा दइआल दाना दइआ धारे सभ किसै ॥ कालु कँटकु लोभु मोहु नासै जीअ जाकै प्रभु बसै ॥
 सुप्रसँन देवा सफल सेवा भई पूरन घाला ॥ बिनवँत नानक इछ पुनी जपत दीन दैआला ॥ ४ ॥ ३ ॥ गउडी महला ५ ॥
 सुण सखीए मिलि उदमु करेहा मनाइ लैहि हरि कँतै ॥ मानु तिआगि करि भगति ठगउरी मोहह साधू मँतै ॥ सखी वसि
 आइआ फिरि छोडि न जाई इह रीति भली भगवँतै ॥ नानक जरा मरण भै नरक निवारै पुनीत करै तिसु जँतै ॥ १ ॥ सुणि
 सखीए इह भली बिनँती एहु मतांतु पकाईऐ ॥ सहजि सुभाइ उपाधि रहत होइ गीत गोविँदहि गाईऐ ॥ कलि कलेस मिटहि
 भ्रम नासहि मनि चिँदिआ फलु पाईऐ ॥ पारब्रहम पूरन परमेसर नानक नामु धिआईऐ ॥ २ ॥ सखी इछ करी नित सुख
 मनाई प्रभ मेरी आस पुजाए ॥ चरन पिआसी दरस बैरागनि पेखउ थान सबाए ॥ खोजि लहउ हरि सँत जना सँगु सँमिथ
 पुरख मिलाए ॥ नानक तिन मिलिआ सुरि जनु सुखदाता से वडभागी माए ॥ ३ ॥ सखी नालि वसा अपुने नाह पिआरे मेरा
 मनु तनु हरि सँगि हिलिआ ॥ सुणि सखीए मेरी नीद भली मै आपनडा पिरु मिलिआ ॥ भ्रमु खोइओ सांति सहजि सुआमी
 परगासु भइआ कउलु खिलिआ ॥ वरु पाइआ प्रभु अँतरजामी नानक सोहागु न टलिआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ ११ ॥

१३ सतिगुरु प्रसादि ॥ गउड़ी बावन अखरी महला ७ ॥

सलोकु ॥ गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ गुरदेव सखा अगिआन भँजनु गुरदेव बाँधिप सहोदरा ॥
गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मँतु निरोधरा ॥ गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस सरा ॥ गुरदेव तीरथु
अँमित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरँपरा ॥ गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ गुरदेव आदि
जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मँतु हरि जपि उधरा ॥ गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड पापी जितु लागि तरा ॥ गुरदेव
सतिगुरु पारभ्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥ १ ॥ सलोकु ॥ आपहि कीआ कराइआ आपहि करनै जोगु ॥
नानक एको रवि रहिआ दूसर होआ न होगु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ओअँ साध सतिगुर नमसकारँ ॥ आदि मधि अँति निरँकारँ ॥
आपहि सुँन आपहि सुख आसन ॥ आपहि सुनत आप ही जासन ॥ आपन आपु आपहि उपाइओ ॥ आपहि बाप आप ही
माइओ ॥ आपहि सूखम आपहि असथूला ॥ लखी न जाई नानक लीला ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ तेरे
सँतन की मनु होइ खाला ॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ निरँकार आकार आपि निरगुन सरगुन एक ॥ एकहि एक बखाननो नानक
एक अनेक ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ओअँ गुरमुखि कीओ अकारा ॥ एकहि सूति परोवनहारा ॥ भिँन भिँन त्रैगुण बिसथारँ ॥
निरगुन ते सरगुन द्रिसटारँ ॥ सगल भाति करि करहि उपाइओ ॥ जनम मरन मन मोहु बढाओ ॥ दुहु भाति ते आपि
निरारा ॥ नानक अँतु न पारावारा ॥ २ ॥ सलोकु ॥ सेई साह भगवँत से सचु सँधै हरि रासि ॥ नानक सचु सुचि पाईऐ
तिह सँतन कै पासि ॥ १ ॥ पवड़ी ॥ ससा सति सति सति सोऊ ॥ सति पुरख ते भिँन न कोऊ ॥ सोऊ सरनि परै जिह
पायँ ॥ सिमरि सिमरि गुन गाइ सुनायँ ॥ सँसै भरमु नही कछु बिआपत ॥ प्रगट प्रतापु ताहू को जापत ॥ सो साधू इह
पहुचनहारा ॥ नानक ता कै सद बलिहारा ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ धनु धनु कहा पुकारते माइआ मोह सभ कूर ॥ नाम बिहूने

नानका होत जात सभु धूर ॥ १ ॥ पवड़ी ॥ धधा धूरि पुनीत तेरे जनूआ ॥ धनि तेऊ जिह रुच इआ मनूआ ॥ धनु नही
 बाछहि सुरग न आछहि ॥ अति प्रिअ प्रीति साध रज राचहि ॥ धँधे कहा बिआपहि ताहू ॥ जो एक छाडि अन कतहि न जाहू ॥
 जा कै हीरे दीओ प्रभ नाम ॥ नानक साध पूरन भगवान ॥ ४ ॥ सलोक ॥ अनिक भेख अरु डिआन धिआन मनहठि
 मिलिअउ न कोइ ॥ कहू नानक किरपा भई भगतु डिआनी सोइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ डँडा डिआनु नही मुख बातउ ॥ अनिक
 जुगति सासत्र करि भातउ ॥ डिआनी सोइ जा कै द्रिड सोऊ ॥ कहत सुनत कछु जोगु न होऊ ॥ डिआनी रहत आगिआ द्रिडु
 जा कै ॥ उसन सीत समसरि सभ ता कै ॥ डिआनी ततु गुरमुखि बीचारी ॥ नानक जा कउ किरपा धारी ॥ ५ ॥ सलोकु ॥
 आवन आए खिसटि महि बिनु बूझे पसु ढोर ॥ नानक गुरमुखि सो बुझै जाकै भाग मथोर ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ या जुग महि एकहि
 कउ आइआ ॥ जनमत मोहिओ मोहनी माइआ ॥ गरभ कुँट महि उरध तप करते ॥ सासि सासि सिमरत प्रभु रहते ॥ उरझि परे
 जो छोडि छडाना ॥ देवनहारु मनहि बिसराना ॥ धारहु किरपा जिसहि गुसाई ॥ इत उत नानक तिसु बिसरहु नाही ॥ ६ ॥
 सलोकु ॥ आवत हुकमि बिनास हुकमि आगिआ भिँन न कोइ ॥ आवन जाना तिह मिटै नानक जिह मनि सोइ ॥ १ ॥ पउड़ी
 ॥ एऊ जीअ बहुतु ग्रभ वासे ॥ मोह मगन मीठ जोनि फासे ॥ इनि माइआ त्रै गुण बसि कीने ॥ आपन मोह घटे घटि दीने ॥ ए
 साजन कछु करहु उपाइआ ॥ जा ते तरउ बिखम इह माइआ ॥ करि किरपा सतसंगि मिलाए ॥ नानक ताकै निकटि न माए ॥
 ७ ॥ सलोकु ॥ किरत कमावन सुभ असुभ कीने तिनि प्रभि आपि ॥ पसु आपन हउ हउ करै नानक बिनु हरि कहा कमाति ॥ १
 ॥ पउड़ी ॥ एकहि आपि करावनहारा ॥ आपहि पाप पुँन बिसथारा ॥ इआ जुग जितु जितु आपहि लाइओ ॥ सो सो पाइओ
 जु आपि दिवाइओ ॥ उआ का अँतु न जानै कोऊ ॥ जो जो करै सोऊ फुनि होऊ ॥ एकहि ते सगला बिसथारा ॥ नानक आपि
 सवारनहारा ॥ ८ ॥ सलोकु ॥ राचि रहे बनिता बिनोद कुसम रँग बिख सोर ॥ नानक तिह सरनी परउ बिनसि जाइ मै मोर ॥

१ ॥ पउड़ी ॥ रे मन बिनु हरि जह रचहु तह तह बंधन पाहि ॥ जिह बिधि कतहू न छूटीऐ साकत तेऊ कमाहि ॥ हउ हउ करते
 करम रत ताको भारु अफार ॥ प्रीति नही जउ नाम सिउ तउ एऊ करम बिकार ॥ बाधे जम की जेवरी मीठी माइआ रँग ॥ भ्रम के
 मोहे नह बुझाहि सो प्रभु सदहू सँग ॥ लेखै गणत न छूटीऐ काची भीति न सुधि ॥ जिसहि बुझाए नानका तिह गुरमुखि निरमल
 बुधि ॥ ९ ॥ सलोकु ॥ टूटे बंधन जासु के होआ साधू सँगु ॥ जो राते रँग एक कै नानक गूड़ा रँगु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ रा रा रँगहु
 इआ मनु अपना ॥ हरि हरि नामु जपहु जपु रसना ॥ रेरे दरगह कहै न कोउ ॥ आउ बैठु आदरु सुभ देऊ ॥ उआ महली पावहि
 तू बासा ॥ जनम मरन नह होइ बिनासा ॥ मसतकि करमु लिखिओ धुरि जा कै ॥ हरि सँधै नानक घरि ताकै ॥ १० ॥ सलोकु
 ॥ लालच झूठ बिकार मोह बिआपत मूड़े अंध ॥ लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ लला लपटि बिखै
 रस राते ॥ अहँबुधि माइआ मद माते ॥ इआ माइआ महि जनमहि मरना ॥ जिउ जिउ हुकमु तिवै तिउ करना ॥ कोऊ ऊन न
 कोऊ पूरा ॥ कोऊ सुघरु न कोऊ मूरा ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक ठाकुर सदा अलिपना ॥ ११ ॥ सलोकु
 ॥ लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गँभीर अथाह ॥ दूसर नाही अवरु को नानक बेपरवाह ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ लला ताकै लवै न
 कोऊ ॥ एकहि आपि अवर नह होऊ ॥ होवनहारु होत सद आइआ ॥ उआ का अँत न काहू पाइआ ॥ कीट हसति महि पूर
 समाने ॥ प्रगट पुरख सभ ठाऊ जाने ॥ जा कउ दीनो हरि रसु अपना ॥ नानक गुरमुखि हरि हरि तिह जपना ॥ १२ ॥
 सलोकु ॥ आतम रसु जिह जानिआ हरि रँग सहजे माणु ॥ नानक धनि धनि धँनि जन आए ते परवाणु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥
 आइआ सफल ताहू को गनीऐ ॥ जासु रसन हरि हरि जसु भनीऐ ॥ आइ बसहि साधू कै सँगै ॥ अनदिनु नामु धिआवहि रँगै ॥
 आवत सो जनु नामहि राता ॥ जा कउ दइआ मइआ बिधाता ॥ एकहि आवन फिरि जोनि न आइआ ॥ नानक हरि कै दरसि
 समाइआ ॥ १३ ॥ सलोकु ॥ यासु जपत मनि होइ अनँदु बिनसै दूजा भाउ ॥ दूख दरद त्रिसना बुझै नानक नामि समाउ ॥

१ ॥ पउड़ी ॥ यया जारउ दुरमति दोऊ ॥ तिसहि तिआगि सुख सहजे सोऊ ॥ यया जाइ परहु सँत सरना ॥ जिह आसर
 इआ भवजलु तरना ॥ यया जनमि न आवै सोऊ ॥ एक नाम ले मनहि परोऊ ॥ यया जनमु न हारीऐ गुर पूरे की टेक ॥ नानक
 तिह सुखु पाइआ जाके हीअरै एक ॥ १४ ॥ सलोकु ॥ अँतरि मन तन बसि रहे ईत ऊत के मीत ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ नानक
 जपीऐ नीत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ अनदिनु सिमरहु तासु कउ जो अँति सहाई होइ ॥ इह बिखिआ दिन चारि छिअ छाडि चलिओ
 सभु कोइ ॥ का को मात पिता सुत थीआ ॥ ग्रहि बनिता कछु सँगि न लीआ ॥ ऐसी सँचि जु बिनसत नाही ॥ पति सेती अपुनै
 घरि जाही ॥ साधसँगि कलि कीरतनु गाइआ ॥ नानक ते ते बहुरि न आइआ ॥ १५ ॥ सलोकु ॥ अति सुँदर कुलीन चतुर
 मुखि डिआनी धनवंत ॥ मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ डँडा खटु सासत्र होइ डिआता
 ॥ पूरकु कुँभक रेचक करमाता ॥ डिआन धिआन तीरथ इसनानी ॥ सोमपाक अपरम उदिआनी ॥ राम नाम सँगि मनि नही
 हेता ॥ जो कछु कीनो सोऊ अनेता ॥ उआ ते ऊतम गनउ चँडाला ॥ नानक जिह मनि बसहि गुपाला ॥ १६ ॥ सलोकु ॥
 कुँट चारि दह दिसि भ्रमे कर्म किरति की रेख ॥ सूख दूख मुकति जोनि नानक लिखिओ लेख ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ कका कारन
 करता सोऊ ॥ लिखिओ लेखु न मेटत कोऊ ॥ नही होत कछु दोऊ बारा ॥ करनैहारु न भूलनहारा ॥ काहू पँथु दिखारै आपै
 ॥ काहू उदिआन भमत पछुतापै ॥ आपन खेलु आप ही कीनो ॥ जो जो दीनो सु नानक लीनो ॥ १७ ॥ सलोकु ॥ खात
 खरचत बिलछत रहे टूटि न जाहि भँडार ॥ हरि हरि जपत अनेक जन नानक नाहि सुमार ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ खखा खूना कछु
 नही तिसु सम्रथ कै पाहि ॥ जो देना सो दे रहिओ भावै तह तह जाहि ॥ खरचु खजाना नाम धनु इआ भगतन की रासि ॥
 खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहि गुणतास ॥ खेलहि बिगसहि अनद सिउ जा कउ होत क्रिपाल ॥ सदीव गनीव सुहावने
 राम नाम ग्रिहि माल ॥ खेदु न दूखु न डानु तिह जा कउ नदरि करी ॥ नानक जो प्रभ भाणिआ पूरी तिना परी ॥ १८ ॥

सलोकु ॥ गनि मिनि देखहु मनै माहि सरपर चलनो लोग ॥ आस अनित गुरमुखि मिटै नानक नाम अरोग ॥ १ ॥ पउडी ॥
 गगा गोबिद गुण खहु सासि सासि जपि नीत ॥ कहा बिसासा देह का बिलम न करिहो मीत ॥ नह बारिक नह जोबनै नह
 बिरधी कछु बंधु ॥ ओह बेरा नह बूझीऐ जउ आइ परै जम फँधु ॥ गिआनी धिआनी चतुर पेखि रहनु नही इह ठाइ ॥ छाडि
 छाडि सगली गई मूड तहा लपटाहि ॥ गुर प्रसादि सिमरत रहै जाहू मसतकि भाग ॥ नानक आए सफल ते जा कउ प्रिअहि
 सुहाग ॥ १९ ॥ सलोकु ॥ घोखे सासत्र बेद सभ आन न कथतउ कोइ ॥ आदि जुगादी हुणि होवत नानक एकै सोइ ॥ १ ॥
 पउडी ॥ घघा घालहु मनहि एह बिनु हरि दूसर नाहि ॥ नह होआ नह होवना जत कत ओही समाहि ॥ घूलहि तउ मन जउ
 आवहि सरना ॥ नाम ततु कल महि पुनहचरना ॥ घालिं घालिं अनिक पछुतावहि ॥ बिनु हरि भगति कहा थिति पावहि ॥
 घोलिं महा रसु अँमितु तिह पीआ ॥ नानक हरि गुरि जा कउ दीआ ॥ २० ॥ सलोकु ॥ डणिं घाले सभ दिवस सास नह बढन
 घटन तिलु सार ॥ जीवन लोरहि भरम मोह नानक तेऊ गवार ॥ १ ॥ पउडी ॥ डँडा ड्रासै कालु तिह जो साकत प्रभि कीन
 ॥ अनिक जोनि जनमहि मरहि आतम रामु न चीन ॥ डिआन धिआन ताहू कउ आए ॥ करि किरपा जिह आपि दिवाए ॥
 डणती डणी नही कोऊ छूटै ॥ काची गागरि सरपर फूटै ॥ सो जीवत जिह जीवत जपिआ ॥ प्रगट भए नानक नह छपिआ
 ॥ २१ ॥ सलोकु ॥ चिति चितवउ चरणारबिंद ऊध कवल बिगसांत ॥ प्रगट भए आपहि गोबिंद नानक संत मतांत ॥ १ ॥
 पउडी ॥ चचा चरन कमल गुर लागा ॥ धनि धनि उआ दिन संजोग सभागा ॥ चारिं कुँट दह दिसि भ्रमि आइओ ॥ भई
 क्रिपा तब दरसन पाइओ ॥ चार बिचार बिनसिओ सभ दूआ ॥ साधसँगि मनु निरमल हूआ ॥ चिंत बिसारी एक द्रिसटेता ॥
 नानक गिआन अँजनु जिह नेत्रा ॥ २२ ॥ सलोकु ॥ छाती सीतल मनु सुखी छँत गोबिद गुन गाइ ॥ ऐसी किरपा करहु प्रभ
 नानक दास दसाइ ॥ १ ॥ पउडी ॥ छछा छोहरे दास तुमारे ॥ दास दासन के पानीहारे ॥ छछा छारु होत तेरे

सँता ॥ अपनी क्रिपा करहु भगवँता ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ सँतन की मन टेक टिकाई ॥ छारु की पुतरी
 परमगति पाई ॥ नानक जाकउ सँत सहाई ॥ २३ ॥ सलोकु ॥ जोर जुलम फूलहि घनो काची देह बिकार ॥ अहँबुधि
 बँधन परे नानक नाम छुटार ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ जजा जानै हउ कछु हूआ ॥ बाधिओ जिउ नलिनी भ्रमि सूआ ॥ जउ जानै
 हउ भगतु गिआनी ॥ आगै ठाकुरि तिलु नही मानी ॥ जउ जानै मै कथनी करता ॥ बिआपारी बसुधा जिउ फिरता ॥
 साध सँगि जिह हउमै मारी ॥ नानक ताकउ मिले मुरारी ॥ २४ ॥ सलोकु ॥ झालाघे उठि नामु जपि निसि बासुर आराधि
 ॥ कार्हा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाधि ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ झझा झूरनु मिटै तुमारो ॥ राम नाम सिउ करि बिउहारो ॥
 झूरत झूरत साकत मूआ ॥ जाको रिदै होत भाउ बीआ ॥ झरहि कसँमल पाप तेरे मनूआ ॥ अँमित कथा सँत सँगि सुनूआ
 ॥ झरहि काम क्रोध द्रुसटाई ॥ नानक जाकउ क्रिपा गुसई ॥ २५ ॥ सलोकु ॥ जतन करहु तुम अनिक बिधि रहनु न
 पावहु मीत ॥ जीवत रहहु हरि हरि भजहु नानक नाम परीति ॥ १ ॥ पवड़ी ॥ जँजा जाणहु द्रिडु सही बिनसि जात एह हेत
 ॥ गणती गणउ न गणि सकउ ऊठि सिधारे केत ॥ जो पेखउ सो बिनसतउ का सिउ करीरे सँगु ॥ जानहु इआ बिधि सही
 चित झूठउ माइआ रँगु ॥ जानत सोई सँतु सुइ भ्रमते कीचित भिँन ॥ अँध कूप ते तिह कढहु जिह होवहु सुप्रसँन ॥ जाकै
 हाथि समरथ ते कारन करनै जोग ॥ नानक तिह उसतति करउ जाहू कीओ सँजोग ॥ २६ ॥ सलोकु ॥ टूटे बँधन जनम
 मरन साध सेव सुखु पाइ ॥ नानक मनहु न बीसरै गुण निधि गोबिद राइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ टहल करहु तउ एक की जा ते
 ब्रिथा न कोइ ॥ मनि तनि मुखि हीरे बसै जो चाहहु सो होइ ॥ टहल महल ताकउ मिलै जाकउ साध क्रिपाल साधू सँगति
 तउ बसै जउ आपन होहि दइआल ॥ टोहे टाहे बहु भवन बिनु नावै सुखु नाहि ॥ टलहि जाम के दूत तिह जु साधू सँगि
 समाहि ॥ बारि बारि जाउ सँत सदके ॥ नानक पाप बिनासे कदि के ॥ २७ ॥ सलोकु ॥ ठाकि न होती तिनहु दरि जिह

होवहु सुप्रसँन ॥ जो जन प्रभि अपुने करे नानक ते धनि धँनि ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ठठा मनूआ ठाहहि नाही ॥ जो सगल
 तिआगि एकहि लपटाही ॥ ठहकि ठहकि माइआ सँगि मूए ॥ उआ कै कुसल न कतहू हूए ॥ ठाँडि परी सँतह सँगि बसिआ
 ॥ अँमित नामु तहा जीअ रसिआ ॥ ठाकुर अपुने जो जनु भाइआ ॥ नानक उआ का मनु सीतलाइआ ॥ २८ ॥ सलोकु
 ॥ डँडउति बँदन अनिक बार सरब कला समरथ ॥ डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ डडा डेरा इहु
 नही जह डेरा तह जानु ॥ उआ डेरा का सँजमो गुर कै सबदि पछानु ॥ इआ डेरा कउ श्रमु करि घालै ॥ जा का तसू नही
 सँगि चालै ॥ उआ डेरा की सो मिति जानै ॥ जाकउ द्रिसटि पूरन भगवानै ॥ डेरा निहचलु सचु साधसँग पाइआ ॥
 नानक ते जन नह डोलाइआ ॥ २९ ॥ सलोकु ॥ ढाहन लागे धरम राइ किनहि न घालिओ बँध ॥ नानक उबरे जपि हरी
 साधसँगि सनबँध ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ढढा ढूढत कह फिरहु ढूढनु इआ मन माहि ॥ सँगि तुहारै प्रभु बसै बनु बनु कहा
 फिराहि ॥ ढेरी ढाहहु साधसँगि अहँबुधि बिकराल ॥ सुखु पावहु सहजे बसहु दरसनु देखि निहाल ॥ ढेरी जामै जमि मरै
 गरभ जोनि दुख पाइ ॥ मोह मगन लपटत रहै हउ हउ आवै जाइ ॥ ढहत ढहत अब ढहि परे साध जना सरनाइ ॥ दुख के
 फाहे काटिआ नानक लीए समाइ ॥ ३० ॥ सलोकु ॥ जह साधू गोबिद भजनु कीरतनु नानक नीत ॥ णा हउ णा तूँ णह
 छुटहि निकटि न जाईअहु दूत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ णाणा रण ते सीझीरे आतम जीतै कोइ ॥ हउमै अन सिउ लरि मरै सो
 सोभादू होइ ॥ मणी मिटाइ जीवत मरै गुर पूरे उपदेस ॥ मनूआ जीतै हरि मिलै तिह सूरतण वेस ॥ णा को जाणै आपणो
 एकहि टेक अधार ॥ रैणि दिणसु सिमरत रहै सो प्रभु पुरखु अपार ॥ रेण सगल इआ मनु करै एऊ करम कमाइ ॥ हुकमै बूझै
 सदा सुखु नानक लिखिआ पाइ ॥ ३१ ॥ सलोकु ॥ तनु मनु धनु अरपउ तिसै प्रभू मिलावै मोहि ॥ नानक भ्रम भउ
 काटीरे चूकै जम की जोह ॥ १ ॥ पऊड़ी ॥ तता ता सिउ प्रीति करि गुण निधि गोबिद राइ ॥ फल पावहि मन बाछते

तपति तुहारी जाइ ॥ त्रास मिटै जम पँथ की जासु बसै मनि नाउ ॥ गति पावहि मति होइ प्रगास महली पावहि ठाउ ॥
 ताहू सँगि न धनु चलै ग्रिह जोबन नह राज ॥ सँत सँगि सिमरत रहहु इहै तुहारै काज ॥ ताता कछू न होई है जउ ताप
 निवारै आप ॥ प्रतिपालै नानक हमहि आपहि माई बापु ॥ ३२ ॥ सलोकु ॥ थाके बहु बिधि घालते त्रिपति न त्रिसना लाथ
 ॥ सँचि सँचि साकत मूए नानक माइआ न साथ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ थथा थिरु कोऊ नही काइ पसारहु पाव ॥ अनिक बँच
 बल छल करहु माइआ एक उपाव ॥ थैली सँचहु श्रामु करहु थाकि परहु गावार ॥ मन कै कामि न आवई अँते अउसर बार ॥
 थिति पावहु गोबिद भजहु सँतह की सिख लेहु ॥ प्रीति करहु सद एक सिउ इआ साचा असनेहु ॥ कारन करन करावनो सभ
 बिधि एकै हाथ ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि नानक जँत अनाथ ॥ ३३ ॥ सलोकु ॥ दासह एकु निहारिआ सभु
 कछु देवनहार ॥ सासि सासि सिमरत रहहि नानक दसर अधार ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ददा दाता एकु है सभ कउ देवनहार ॥
 देंदे तोटि न आवई अगनत भरे भँडार ॥ दैनहारु सद जीवनहारा ॥ मन मूरख किउ ताहि बिसारा ॥ दोसु नही काहू कउ
 मीता ॥ माइआ मोह बँधु प्रभि कीता ॥ दरद निवारहि जा के आपे ॥ नानक ते ते गुरमुखि धापे ॥ ३४ ॥ सलोकु ॥ धरि
 जीअरे इकु टेक तू लाहि बिडानी आस ॥ नानक नामु धिआईऐ कारजु आवै रासि ॥ १ ॥ पऊड़ी ॥ धधा धावत तउ मिटै
 सँत सँगि होइ बासु ॥ धुर ते किरपा करहु आपि तउ होइ मनहि परगासु ॥ धनु साचा तेऊ सच साहा ॥ हरि हरि पूँजी नाम
 बिसाहा ॥ धीरजु जसु सोभा तिह बनिआ ॥ हरि हरि नामु श्रवन जिह सुनिआ ॥ गुरमुखि जिह घटि रहे समाई ॥ नानक
 तिह जन मिली वडाई ॥ ३५ ॥ सलोकु ॥ नानक नामु नामु जपु जपिआ अँतरि बाहरि रँगि ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ नरकु
 नाहि साध सँगि ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ नँना नरकि परहि ते नाही ॥ जा कै मनि तनि नामु बसाही ॥ नामु निधानु गुरमुखि जो
 जपते ॥ बिखु माइआ महि ना ओइ खपते ॥ नँनाकारु न होता ता कहु ॥ नाम मँत्रु गुरि दीनो जा कहु ॥ निधि निधान

हरिँ अँमित पूरे ॥ तह बाजे नानक अनहद तूरे ॥ ३६ ॥ सलोकु ॥ पति राखी गुरि पारब्रहम तजिं परपँच मोह बिकार ॥
 नानक सोऊ आराधीरे अँतु न पारावारु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ पपा परमिति पारु न पाइआ ॥ पतित पावन अगम हरिं राइआ
 ॥ होत पुनीत कोट अपराधू ॥ अँमित नामु जपहि मिलि साधू ॥ परपच धोह मोह मिटनाई ॥ जाकउ राखहु आपि गुसाई
 ॥ पातिसाहु छत्र सिर सोऊ ॥ नानक दूसर अवरु न कोऊ ॥ ३७ ॥ सलोकु ॥ फाहे काटे मिटे गवन फतिह भई मनि
 जीत ॥ नानक गुर ते थित पाई फिरन मिटे नित नीत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ फफा फिरत फिरत तू आइआ ॥ द्रुलभ देह
 कलिजुग महि पाइआ ॥ फिर इआ अउसरु चरै न हाथा ॥ नामु जपहु तउ कटीअहि फासा ॥ फिरि फिरि आवन जानु न
 होई ॥ एकहि एक जपहु जपु सोई ॥ करहु क्रिपा प्रभ करनैहारे ॥ मेलिं लेहु नानक बेचारे ॥ ३८ ॥ सलोकु ॥ बिनउ
 सुनहु तुम पारब्रहम दीन दइआल गुपाल ॥ सुख सँपै बहु भोग रस नानक साध रवाल ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ बबा ब्रहमु जानत
 ते ब्रहमा ॥ बैसनो ते गुरमुखि सुच धरमा ॥ बीरा आपन बुरा मिटावै ॥ ताहु बुरा निकटि नही आवै ॥ बाधिओ आपन हउ
 हउ बँधा ॥ दोसु देत आगह कउ अँधा ॥ बात चीत सभ रही सिआनप ॥ जिसहि जनावहु सो जानै नानक ॥ ३९ ॥
 सलोकु ॥ भै भँजन अघ दूख नास मनहि अराधि हरे ॥ सँत सँग जिह रिद बसिओ नानक ते न भ्रमे ॥ १ ॥ पउड़ी ॥
 भभा भरमु मिटावहु अपना ॥ इआ सँसारु सगल है सुपना ॥ भरमे सुरि नर देवी देवा ॥ भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा ॥
 भरमि भरमि मानुख डहकाए ॥ दुतर महा बिखम इह माए ॥ गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ ॥ नानक तेह परम सुख
 पाइआ ॥ ४० ॥ सलोकु ॥ माइआ डोलै बहु बिधी मनु लपटिओ तिह सँग ॥ मागन ते जिह तुम रखहु सु नानक नामहि
 रँग ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ममा मागनहार इआना ॥ देनहार दे रहिओ सुजाना ॥ जो दीनो सो एकहि बार ॥ मन मूरख कह
 करहि पुकार ॥ जउ मागहि तउ मागहि बीआ ॥ जा ते कुसल न काहु थीआ ॥ मागनि नाग त एकहि माग ॥ नानक

जा ते परहि पराग ॥ ४१ ॥ सलोक ॥ मति पूरी परधान ते गुर पूरे मन मँत ॥ जिह जानिओ प्रभु आपुना नानक ते
भगवँत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ममा जाहू मरमु पछाना ॥ भेटत साध सँग पतीआना ॥ दुख सुख उआ कै समत बीचारा ॥
नरक सुरग रहत अउतारा ॥ ताहू सँग ताहू निरलेपा ॥ पूरन घट घट पुरख बिसेखा ॥ उआ रस महि उआहू सुखु पाइआ
॥ नानक लिपत नही तिह माइआ ॥ ४२ ॥ सलोक ॥ यार मीत सुनि साजनहु बिनु हरि छूटनु नाहि ॥ नानक तिह
बंधन कटे गुर की चरनी पाहि ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ यया जतन करत बहु बिधीआ ॥ एक नाम बिनु कहु लउ सिधीआ ॥
याहू जतन करि होत छुटारा ॥ उआहू जतन साध सँगारा ॥ या उबरन धारै सभु कोऊ ॥ उआहि जपे बिनु उबर न होऊ
॥ याहू तरन तारन समराथा ॥ राखि लेहु निरगुन नरनाथा ॥ मन बचक्रम जिह आपि जनाई ॥ नानक तिह मति प्रगटी
आई ॥ ४३ ॥ सलोक ॥ रोसु न काहू सँग करहु आपन आपु बीचारि ॥ होइ निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥ १
॥ पउड़ी ॥ शरारेन होत सभ जा की ॥ तजि अभिमानु छुटै तेरी बाकी ॥ रणि दरगह तऊ सीझहि भाई ॥ जउ गुरमुखि
राम नाम लिव लाई ॥ रहत रहत रहि जाहि बिकारा ॥ गुर पूरे कै सबदि अपारा ॥ राते रँग नाम रस माते ॥ नानक हरि
गुरि कीनी दाते ॥ ४४ ॥ सलोक ॥ लालच झूठ बिखै बिआधि इआ देही महि बास ॥ हरि हरि अँमितु गुरमुखि पीआ
नानक सूखि निवास ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ लला लावउ अउखध जाहू ॥ दूख दरद तिह मिटहि खिनाहू ॥ नाम अउखधु
जिह रिदै हितावै ॥ ताहि रोगु सुपनै नही आवै ॥ हरि अउखधु सभ घट है भाई ॥ गुर पूरे बिनु बिधि न बनाई ॥ गुरि पूरे
सँजमु करि दीआ ॥ नानक तउ फिरि दूख न थीआ ॥ ४५ ॥ सलोक ॥ वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइ ॥ अँतरि
बाहरि सँगि है नानक काइ दुराइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ववा वैरु न करीरे काहू ॥ घट घट अँतरि ब्रहम समाहू ॥ वासुदेव जल
थल महि रविआ ॥ गुर प्रसादि विरलै ही गविआ ॥ वैर विरोध मिटे तिह मन ते ॥ हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ॥

वरन चिह्न सगलत ते रहता ॥ नानक हरि हरि गुरमुखि जो कहता ॥ ४६ ॥ सलोकु ॥ हउ हउ करत बिहानीआ साकत
 मुग्ध अजान ॥ डड़कि मुए जिउ त्रिखावँत नानक किरति कमान ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ड़ाड़ा ड़ाड़ि मिटै सँगि साधू ॥ कर्म
 धरम ततु नाम अराधू ॥ रूढ़ो जेह बसिओ रिद माही ॥ उआ की ड़ाड़ि मिटत बिनसाही ॥ ड़ाड़ि करत साकत गावारा ॥
 जेह हीरे अहँबुधि बिकारा ॥ ड़ाड़ा गुरमुखि ड़ाड़ि मिटाई ॥ निमख माहि नानक समझाई ॥ ४७ ॥ सलोकु ॥ साधू की मन
 ओट गहु उकति सिआनप तिआगु ॥ गुर दीखिआ जिह मनि बसै नानक मसतकि भागु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ससा सरनि परे
 अब हारे ॥ सासत्र सिमिति बेद पूकारे ॥ सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ बिनु हरि भजन नही छुटकारा ॥ सासि सासि हम
 भूलनहारे ॥ तुम समरथ अगनत अपारे ॥ सरनि परे की राखु दइआला ॥ नानक तुमरे बाल गुपाला ॥ ४८ ॥ सलोकु ॥
 खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥ नानक द्रिसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ खखा खरा
 सराहउ ताहू ॥ जो खिन महि ऊने सुभर भराहू ॥ खरा निमाना होत परानी ॥ अनदिनु जापै प्रभ निरबानी ॥ भावै खसम त
 उआ सुखु देता ॥ पारब्रहमु ऐसो आगनता ॥ असँख खते खिन बखसनहारा ॥ नानक साहिब सदा दइआरा ॥ ४९ ॥
 सलोकु ॥ सति कहउ सुनि मन मेरे सरनि परहु हरि राइ ॥ उकति सिआनप सगल तिआगि नानक लउ समाइ ॥ १ ॥ पउड़ी
 ॥ ससा सिआनप छाडु इआना ॥ हिकमति हुकमि न प्रभु पतीआना ॥ सहस भाति करहि चतुराई ॥ सँगि तुहारै एक न
 जाई ॥ सोऊ सोउ जपि दिन राती ॥ रे जीअ चलै तुहारै साथी ॥ साध सेवा लावै जिह आपै ॥ नानक ता कउ दूख न
 बिआपै ॥ ५० ॥ सलोकु ॥ हरि हरि मुख ते बोलना मनि वूठै सुखु होइ ॥ नानक सभ महि रवि रहिआ थान थनँतरि सोइ ॥
 १ ॥ पउड़ी ॥ हेरउ घटि घटि सगल कै पूरि रहे भगवान ॥ होवत आए सद सदीव दुख भँजन गुर गिआन ॥ हउ छुटकै होइ
 अनँद तिह हउ नाही तह आपि ॥ हते दूख जनमह मरन संत संग परताप ॥ हित करि नाम द्रिडै दइआला ॥ संतहि सँगि होत

किरपाला ॥ उरै कछु न किनहू कीआ ॥ नानक सभु कछु प्रभ ते हूआ ॥ ५१ ॥ सलोकु ॥ लेखै कतहि न छूटीरे खिनु खिनु
 भूलनहार ॥ बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ लूण हरामी गुनहगार बेगाना अल्प मति ॥ जीउ
 पिँडु जिनि सुख दीए ताहि न जानत तत ॥ लाहा माइआ कारनो दह दिसि दूढन जाइ ॥ देवनहार दातार प्रभ निमख न
 मनहि बसाइ ॥ लालच झूठ बिकार मोह इआ सँपै मन माहि ॥ लँपट चोर निँदक महा तिनहू सँगि बिहाइ ॥ तुधु भावै ता
 बखसि लैहि खोटे सँगि खरे ॥ नानक भावै पारब्रहम पाहन नीरि तरे ॥ ५२ ॥ सलोकु ॥ खात पीत खेलत हसत भरमे
 जनम अनेक ॥ भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक ॥ १ ॥ पऊड़ी ॥ खेलत खेलत आइओ अनिक जोनि दुख पाइ ॥
 खेद मिटे साधू मिलत सतिगुर बचन समाइ ॥ खिमा गही सचु सँचिओ खाइओ अँमितु नाम ॥ खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद
 सूख बिस्राम ॥ खेप निबाही बहुतु लाभ घरि आए पतिवँत ॥ खरा दिलासा गुरि दीआ आइ मिले भगवँत ॥ आपन कीआ
 करहि आपि आगै पाछै आपि ॥ नानक सोऊ सराहीरे जिं घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ ५३ ॥ सलोकु ॥ आए प्रभ
 सरनागती किरपा निधि दइआल ॥ एक अखरु हरि मनि बसत नानक होत निहाल ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ अखर महि त्रिभवन
 प्रभि धारे ॥ अखर करो करि बेद बीचारे ॥ अखर सासत्र सिमिति पुराना ॥ अखर नाद कथन वख्याना ॥ अखर मुकति
 जुगति भै भरमा ॥ अखर करम किरति सुच धरमा ॥ दिसटिमान अखर है जेता ॥ नानक पारब्रहम निरलेपा ॥ ५४ ॥
 सलोकु ॥ हथि कलँम अगँम मसतकि लिखावती ॥ उरझि रहिओ सभ सँगि अनूप रूपावती ॥ उसतति कहनु न जाइ मुखहु
 तुहारीआ ॥ मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ हे अचुत हे पारब्रहम अविनासी अघनास ॥ हे पूरन हे
 सरब मै दुख भँजन गुण तास ॥ हे सँगी हे निरँकार हे निरगुण सभ टेक ॥ हे गोबिद हे गुण निधान जा कै सदा बिबेक ॥ हे
 अपरँपर हरि हरे हहि भी होवनहार ॥ हे सँतह कै सदा सँगि निधारा आधार ॥ हे ठाकुर हउ दासरो मै निरगुन गुनु नही कोइ ॥

नानक दीजै नामु दानु राखउ हीरे परोइ ॥ ५५ ॥ सलोकु ॥ गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥
 गुरदेव सखा अगिआन भँजनु गुरदेव बँधिप सहोदरा ॥ गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मँतु निरोधरा ॥ गुरदेव
 सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥ गुरदेव तीरथु अँमित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरँपरा ॥
 गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मँतु हरि जपि उधरा
 ॥ गुरदेव सँगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड पापी जितु लागि तरा ॥ गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव
 नानक हरि नमसकरा ॥ १ ॥ एहु सलोकु आदि अँति पड़णा ॥

गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥ सलोकु ॥ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥ सतिगुरए नमह ॥ स्त्री गुरदेवए नमह ॥ १ ॥ असटपदी ॥ सिमरउ
 सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ कलिं कलेस तन माहि मिटावउ ॥ सिमरउ जासु बिसुँभर एकै ॥ नामु जपत अगनत
 अनेकै ॥ बेद पुरान सिँमिति सुधाख्यर ॥ कीने राम नाम इक आख्यर ॥ किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ ता की
 महिमा गनी न आवै ॥ कांखी एकै दरस तुहारो ॥ नानक उन सँगि मोहि उधारो ॥ १ ॥ सुखमनी सुख अँमित प्रभ
 नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ प्रभ
 सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥ प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥ प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥ प्रभ कै सिमरनि
 दूखु न सँतापै ॥ प्रभ का सिमरनु साध कै सँगि ॥ सब निधान नानक हरि रँगि ॥ २ ॥ प्रभ कै सिमरनि रिधि
 सिधि नउ निधि ॥ प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि
 बिनसै दूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥ प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ प्रभ कै सिमरनि होइ

सुभला ॥ प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ नानक ता कै लागउ पाए ॥ ३ ॥ प्रभ का
 सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥
 प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ अँप्रित नामु रिद
 माहि समाइ ॥ प्रभ जी बसाहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासनि दसना ॥ ४ ॥ प्रभ को सिमरहि से धनवँते ॥ प्रभ
 को सिमरहि से पतिवँते ॥ प्रभ को सिमरहि से जन परवान ॥ प्रभ को सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ प्रभ को सिमरहि सि
 बेमुहताजे ॥ प्रभ को सिमरहि सि सरब के राजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥ प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥
 सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥ नानक जन की मँगै खाला ॥ ५ ॥ प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ प्रभ कउ
 सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावै ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ प्रभ कउ सिमरहि
 तिन आतमु जीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥ प्रभ को सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ प्रभ को सिमरहि बसाहि
 हरि नेरे ॥ सँत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥ नानक सिमरनु पूरै भागि ॥ ६ ॥ प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि
 कबहू न झूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥ प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥ प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥ प्रभ
 कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥ प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥ सुखु प्रभ सिमरन का अँतु न पार ॥ सिमरहि से जन
 जिन कउ प्रभ मइआ ॥ नानक तिन जन सरनी पइआ ॥ ७ ॥ हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥ हरि सिमरनि लागि बेद
 उपाए ॥ हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥ हरि सिमरनि नीच चहु कूँट जाते ॥ हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥ सिमरि
 सिमरि हरि कारन करना ॥ हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥ हरि सिमरन महि आपि निरँकारा ॥ करि किरपा जिंसु
 आपि बुझाइआ ॥ नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ दिन दरद दुख भँजना घटि घटि

नाथ अनाथ ॥ सरणि तुमांरी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन
ऊहा नामु तेरै सँगि सहाई ॥ जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु सँगि तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अति भारी
॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनहचरन करत नहीं तेरै ॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ गुरमुखि नामु
जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥ १ ॥ सगल खिसटि को राजा दुखीआ ॥ हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥
लाख करोरी बंधु न परै ॥ हरि का नामु जपत निसतेरै ॥ अनिक माइआ रँग तिख न बुझावै ॥ हरि का नामु जपत आघावै
॥ जिह मारग इहु जात इकेला ॥ तह हरि नामु सँगि होत सुहेला ॥ ऐसा नामु मन सदा धिआईये ॥ नानक गुरमुखि
परमगति पाईये ॥ २ ॥ छूटत नहीं कोटि लख बाही ॥ नामु जपत तह पारि पराही ॥ अनिक बिघन जह आइ सँघारै ॥
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥ अनिक जोनि जनमै मरि मरि जाम ॥ नामु जपत पावै बिस्वाम ॥ हउ मैला मलु कबहु न धोवै
॥ हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥ ऐसा नामु जपहु मन रँगि ॥ नानक पाईये साध कै सँगि ॥ ३ ॥ जिह मारग के गने
जाहि न कोसा ॥ हरि का नामु ऊहा सँगि तोसा ॥ जिह पैडे महा अँध गुबारा ॥ हरि का नामु सँगि उजीआरा ॥ जहा पँथि
तेरा को न सिजानू ॥ हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ जह महा भइआन तपति बहु घास ॥ तह हरि के नाम की तुम ऊपरि
छाम ॥ जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥ तह नानक हरि हरि अँमितु बरखै ॥ ४ ॥ भगत जना की बरतनि नामु ॥ सँत
जना कै मनि बिस्वामु ॥ हरि का नामु दास की ओट ॥ हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥ हरि जसु करत सँत दिनु राति ॥ हरि
हरि अउखधु साध कमाति ॥ हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥ पारब्रहमि जन कीनो दान ॥ मन तन रँगि रते रँग एकै ॥
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥ ५ ॥ हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥ हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥ हरि
का नामु जन का रूप रँगु ॥ हरि नामु जपत कब परै न भँगु ॥ हरि का नामु जन की वडिआई ॥ हरि कै नामि जन

सोभा पाई ॥ हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥ हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥ जन राता हरि नाम की सेवा ॥
 नानक पूजै हरि हरि देवा ॥ ६ ॥ हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥ हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥ हरि हरि जन कै ओट
 सताणी ॥ हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥ ओति पोति जन हरि रसि राते ॥ सुँनि समाधि नाम रस माते ॥ आठ पहर जनु
 हरि हरि जपै ॥ हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥ हरि की भगति मुकटि बहु करे ॥ नानक जन सँगि केते तरे ॥ ७ ॥ पारजातु
 इहु हरि को नाम ॥ कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥ सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥ नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ नाम की महिमा
 संत रिद वसै ॥ संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥ संत का सँगु वडभागी पाईये ॥ संत की सेवा नामु धिआईये ॥ नाम तुलि कछु
 अवरु न होइ ॥ नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥ ८ ॥ २ ॥ सलोकु ॥ बहु सासत्र बहु सिमिती पेखे सरब ढढोलि ॥
 पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥ खट सासत्र सिमिति
 वखिआन ॥ जोग अभिआस करम धम किरिआ ॥ सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥ अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥
 पुँन दान होमे बहु रतना ॥ सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥ वरत नेम करै बहु भाती ॥ नही तुलि राम नाम बीचार ॥ नानक
 गुरमुखि नामु जपीए इक बार ॥ १ ॥ नउखँड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥ महा उदासु तपीसरु थीवै ॥ अगनि माहि होमत
 परान ॥ कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥ निउली करम करै बहु आसन ॥ जैन मारग सँजम अति साधन ॥ निमख निमख
 करि सरीरु कटावै ॥ तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥ हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥ नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि
 ॥ २ ॥ मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति ॥ मन की मैलु न तन ते जाति
 ॥ इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ सुध कहा होइ काची भीति
 ॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥ ३ ॥ बहुतु सिआणप जम का

भउ बिआपै ॥ अनिक जतन करि तिसन ना धापै ॥ भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥ छूटसि
 नाही ऊभ पड़आलि ॥ मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥ अवर करतूति सगली जमु डानै ॥ गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै
 ॥ हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥ नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥ चारि पदारथ जे को मागै ॥ साध जना की सेवा लागै
 ॥ जे को आपुना दूखु मिटावै ॥ हरि हरि नामु रिदैं सद गावै ॥ जे को अपुनी सोभा लोरै ॥ साध सँगि इह हउमै छोरै ॥ जे को
 जनम मरण ते डरै ॥ साध जना की सरनी परै ॥ जिंसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥ नानक ता कै बलि बलि जासा ॥ ५ ॥
 सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥ साध सँगि जाका मिटै अभिमानु ॥ आपस कउ जो जाणै नीचा ॥ सोऊ गनीरे सभ ते ऊचा
 ॥ जा का मनु होइ सगल की रीना ॥ हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीन्हा ॥ मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ पेखै सगल खिसटि
 साजना ॥ सूख दूख जन सम दिसटेता ॥ नानक पाप पुँन नही लेपा ॥ ६ ॥ निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥ निथावे कउ नाउ
 तेरा थाउ ॥ निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के
 अंतरजामी ॥ अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ आपन सँगि आपि प्रभ राते ॥ तुम्हरी उसतति तुमते होइ ॥ नानक अवरु न
 जानसि कोइ ॥ ७ ॥ सरब धरम महि खेसट धरमु ॥ हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥
 साध सँगि दुर्मति मलु हिरिआ ॥ सगल उदम महि उदमु भला ॥ हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥ सगल बानी महि अँमित
 बानी ॥ हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥ सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥ नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥ ८ ॥ ३ ॥
 सलोकु ॥ निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥ जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥ १ ॥
 असटपदी ॥ रमईआ के गुन चेति परानी ॥ कवन मूल ते कवन दिसटानी ॥ जिनि तूँ साजि सवारि सीगारिआ ॥ गरभ
 अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरधि भइआ ऊपरि

साक सैन ॥ मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥ इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥ १ ॥ जिह
 प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ सुत भ्रात मीत बनिता सँगि हसहि ॥ जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवनु
 पावकु अमुला ॥ जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री सँगि साथि बसा ॥ दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥
 तिसहि तिआगि अवर सँगि रचना ॥ ऐसे दोख मूड अँध बिआपे ॥ नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥ २ ॥ आदि अँति जो
 राखनहारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ जा की सेवा नव निधि पावै ॥ ता सिउ मूडा मनु नहीं लावै ॥ जो ठाकुरु सद
 सदा हजुरे ॥ ता कउ अँधा जानत दूरे ॥ जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ तिसहि बिसरै मुगधु अजानु ॥ सदा सदा इहु
 भूलनहारु ॥ नानक राखनहारु अपारु ॥ ३ ॥ रतनु तिआगि कउडी सँगि रचै ॥ साचु छोडि झूठ सँगि मचै ॥ जो छडना
 सु असथिरु करि मानै ॥ जो होवनु सो दूरि परानै ॥ छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥ सँगि सहाई तिसु परहरै ॥ चँदन लेपु
 उतारै धोइ ॥ गरधब प्रीति भसम सँगि होइ ॥ अँध कूप महि पतित बिकराल ॥ नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥ ४ ॥
 करतूति पसू की मानस जाति ॥ लोक पचारा करै दिनु राति ॥ बाहरि भेख अँतरि मलु माइआ ॥ छपसि नाहि कछु करै
 छपाइआ ॥ बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥ अँतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ अँतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ गलि
 पाथर कैसे तरै अथाह ॥ जा कै अँतरि बसै प्रभु आपि ॥ नानक ते जन सहजि समाति ॥ ५ ॥ सुनि अँधा कैसे मारगु पावै ॥
 करु गहि लेहु ओडि निबहावै ॥ कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ निसि कहीरे तउ समझै भोरा ॥ कहा बिसन पद गावै गुंग ॥
 जतन करै तउ भी सुर भँग ॥ कह पिँगुल परबत पर भवन ॥ नहीं होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करणामै दीनु बेनती करै ॥
 नानक तुमरी किरपा तरै ॥ ६ ॥ सँगि सहाई सु आवै न चीति ॥ जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै ॥
 अनद केल माइआ रँगि रसै ॥ द्रिडु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूडे चीति ॥ बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ

बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥ ७ ॥ तू ठाकुरु तुम पहि
 अरदासि ॥ जीउ पिँडु सभु तेरी रासि ॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी क्रिपा मे सूख घनेरे ॥ कोई न जाने तुमरा
 अँतु ॥ ऊचे ते ऊचा भगवँत ॥ सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥ तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥ तुमरी गति मिति तुमही
 जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥ ८ ॥ ४ ॥ सलोकु ॥ देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥ नानक कहू न
 सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ दस बसतू ले पाछै पावै ॥ एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ एक भी न
 देइ दस भी हिरि लेइ ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥ जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ जा कै
 मनि लागा प्रभु मीठा ॥ सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥ जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥ सरब थोक नानक तिनि पाइआ
 ॥ १ ॥ अगनत साहु अपनी दे रासि ॥ खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥ अगिआनी
 मनि रोसु करेइ ॥ अपनी परतीति आप ही खोवै ॥ बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥ जिसकी बसतु तिसु आगै राखै ॥ प्रभ
 की आगिआ मानै माथै ॥ उस ते चउगुन करै निहालु ॥ नानक साहिबु सदा दइआलु ॥ २ ॥ अनिक भाति माइआ के हेत
 ॥ सरपर होवत जानु अनेत ॥ बिरख की छाइआ सिउ रँगु लावै ॥ ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥ जो दीसै सो चालनहारु
 ॥ लपटि रहिओ तह अँध अँधारु ॥ बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥ ता कउ हाथि न आवै केह ॥ मन हरि के नाम की प्रीति
 सुखदाई ॥ करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥ ३ ॥ मिथिआ तनु धनु कुटँबु सबाइआ ॥ मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥
 मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥ मिथिआ रँग सँगि
 माइआ पेखि हसता ॥ मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥ मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ असथिरु भगति साध की
 सरन ॥ नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥ ४ ॥ मिथिआ स्रवन पर निँदा सुनहि ॥ मिथिआ हसत पर दरब कउ

हिरहि ॥ मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥ मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥ मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि
 ॥ मिथिआ मन पर लोभु लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ
 सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥ ५ ॥ बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा
 नाम बिना तनु अँध ॥ मुखि आवत ता कै दुरगँध ॥ बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥
 गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥ जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥ धँनि धँनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥
 नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥ ६ ॥ रहत आवर कछु अवर कमावत ॥ मनि नही प्रीति मुखहु गँढ लावत ॥ जाननहार प्रभू
 परबीन ॥ बाहरि भेखन काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आपि न करै ॥ आवत जावत जनमै मरै ॥ जिसकै अँतरि बसै निरँकारु
 ॥ तिस की सीख तरै संसारु ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरन पराता ॥ ७ ॥ करउ बेनती
 पारब्रह्म सुभु जानै ॥ अपना कीआ आपहि मानै ॥ आपहि आप आपि करत निबेरा ॥ किसै दूरि जनावत किसै बुझावत
 नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥ सभु कछु जानै आत्म की रहत ॥ जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥ थान धनँतरि
 रहिआ समाइ ॥ सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥ निमख निमख जपि नानक हरी ॥ ८ ॥ ९ ॥ सलोकु ॥ काम क्रोध अरु
 लोभ मोह बिनसि जाइ अहँमेव ॥ नानक प्रभु सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जिह प्रसादि छतीह
 अँमित खाहि ॥ तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ जिह प्रसादि सुगँधत तनि लावहि ॥ तिस कउ सिमरत परम गति पावहि
 ॥ जिह प्रसादि बसहि सुख मँदरि ॥ तिसहि धिआइ सदा मन अँदरि ॥ जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥ आठ पहर
 सिमरहु तिसु रसना ॥ जिह प्रसादि रँग रस भोग ॥ नानक सदा धिआईए धिआवन जोग ॥ १ ॥ जिह प्रसादि पाट पटँबर
 हढावहि ॥ तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥ मन आठ पहर ता का जसु

गावीजै ॥ जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥ मुखिं ताको जसु रसन बखानै ॥ जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥ मन सदा
 धिआइ केवल पारब्रह्म ॥ प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥ नानक पति सेती घरि जावहि ॥ २ ॥ जिह प्रसादि आरोग
 कंचन देही ॥ लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥ जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥ मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥ जिह
 प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥ जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥ मन सासि सासि सिमरहु प्रभ
 ऊचे ॥ जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥ नानक ता की भगत करेह ॥ ३ ॥ जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥ मन तिसु सिमरत
 किउ आलसु कीजै ॥ जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसादि बाग मिलख
 धना ॥ राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥ जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥ ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ तिसहि धिआइ जो एकु
 अलखै ॥ ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥ ४ ॥ जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥ मन आठ पहर करि तिसका धिआन ॥ जिह
 प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥ तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥ जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥ सो प्रभ सिमरहु सदा अनूपु
 ॥ जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥ सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥ जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥ गुर प्रसादि नानक जसु कहै
 ॥ ५ ॥ जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥ जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥ जिह प्रसादि बोलहि अंप्रित रसना ॥ जिह प्रसादि
 सुखिं सहजे बसना ॥ जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥ जिह प्रसादि संपूरन वलहि ॥ जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥ जिह
 प्रसादि सुखिं सहजि समावहि ॥ ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥ ६ ॥ जिह प्रसादि तू
 प्रगट सँसारि ॥ तिसु प्रभ कउ मूलिं न मनहु बिसारि ॥ जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ रे मन मूड तू ता कउ जापु ॥ जिह प्रसादि
 तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जानु मन सदा हजुरे ॥ जिह प्रसादि तू पावहि साचु ॥ रे मन मेरे तू ता सिउ राचु ॥ जिह प्रसादि सभ
 की गति होइ ॥ नानक जापु जपै जपु सोइ ॥ ७ ॥ आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥

प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ प्रभ सुप्रसँन बसै मनि सोइ ॥ प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥ सब
 निधान प्रभ तेरी मइआ ॥ आपहु कछु न किनहु लइआ ॥ जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ नानक इनकै कछु न हाथ
 ॥ ८ ॥ ६ ॥ सलोकु ॥ अगम अगाधि पारब्रह्म सोइ ॥ जो जो कहै सु मुक्ता होइ ॥ सुनि मीता नानकु बिनवँता ॥ साध
 जना की अचरज कथा ॥ १ ॥ असटपदी ॥ साध कै सँगि मुख ऊजल होत ॥ साध सँगि मलु सगली खोत ॥ साध कै सँगि
 मिटै अभिमानु ॥ साध कै सँगि प्रगटै सुगिआनु ॥ साध कै सँगि बुझै प्रभु नेरा ॥ साध सँगि सभु होत निबेरा ॥ साध कै सँगि
 पाए नाम रतनु ॥ साध कै सँगि एक ऊपरि जतनु ॥ साध की महिमा बरनै कउनु प्राणी ॥ नानक साध की सोभा भ माहि समानी
 ॥ १ ॥ साध कै सँगि अगोचरु मिलै ॥ साध कै सँगि सदा परफुलै ॥ साध कै सँगि आवहि बसि पँचा ॥ साध सँगि अँमित रसु
 भुँचा ॥ साध सँगि होइ सभ की रेन ॥ साध कै सँगि मनोहर बैन ॥ साध कै सँगि न कतहूँ धावै ॥ साध सँगि असथिति मनु पावै
 ॥ साध कै सँगि माइआ ते भिँन ॥ साध सँगि नानक प्रभ सुप्रसँन ॥ २ ॥ साध सँगि दुसमन सभि मीत ॥ साधू कै सँगि महा
 पुनीत ॥ साध सँगि किस सिउ नही बैरु ॥ साध कै सँगि न बीगा पैरु ॥ साध कै सँगि नाही को मँदा ॥ साध सँगि जाने
 परमानँदा ॥ साध कै सँगि नाही हउ तापु ॥ साध कै सँगि तजै सभु आपु ॥ आपे जानै साध बडाई ॥ नानक साध प्रभू बनि आई
 ॥ ३ ॥ साध कै सँगि न कबहूँ धावै ॥ साध कै सँगि सदा सुखु पावै ॥ साध सँगि बसतु अगोचर लहै ॥ साधू कै सँगि अजरु सहै
 ॥ साध कै सँगि बसै थानि ऊचै ॥ साधू कै सँगि महलि पहुँचै ॥ साध कै सँगि द्विडै सभि धरम ॥ साध कै सँगि केवल पारब्रह्म
 ॥ साध कै सँगि पाए नाम निधान ॥ नानक साधू कै कुरबान ॥ ४ ॥ साध कै सँगि सभ कुल उधारै ॥ साध सँगि साजन मीत
 कुटँब निसतारै ॥ साधू कै सँगि सो धनु पावै ॥ जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥ साध सँगि धरम राइ करे सेवा ॥ साध कै सँगि
 सोभा सुरदेवा ॥ साधू कै सँगि पाप पलाइन ॥ साध सँगि अँमित गुन गाइन ॥ साध कै सँगि सब थान गँमि ॥ नानक

साध कै सँगि सफल जनँम ॥ ५ ॥ साध कै सँगि नहीं कछु घाल ॥ दरसनु भेटत होत निहाल ॥ साध कै सँगि कलूखत हरै ॥
साध कै सँगि नरक परहरै ॥ साध कै सँगि ईहा ऊहा सुहेला ॥ साध सँगि बिछुरत हरि मेला ॥ जो इछै सोई फलु पावै ॥ साध कै
सँगि न बिरथा जावै ॥ पारब्रह्म साध रिद बसै ॥ नानक उधरै साध सुनि रसै ॥ ६ ॥ साध कै सँगि सुनउ हरि नाउ ॥ साध
सँगि हरि के गुन गाउ ॥ साध कै सँगि न मन ते बिसरै ॥ साध सँगि सरपर निसतरै ॥ साध कै सँगि लगै प्रभ मीठा ॥ साधू कै
सँगि घटि घटि डीठा ॥ साध सँगि भओ आगिआकारी ॥ साध सँगि गति भई हमारी ॥ साध कै सँगि मिटे सभि रोग ॥ नानक
साध भेटे सँजोग ॥ ७ ॥ साध की महिमा बेद न जानहि ॥ जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥ साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि
॥ साध की उपमा रही भरपूरि ॥ साध की सोभा का नहीं अँत ॥ साध की सोभा सदा बेअँत ॥ साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥
साध की सोभा मूच ते मूची ॥ साध की सोभा साध बनि आई ॥ नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥ ८ ॥ ७ ॥ सलोकु ॥ मनि
साचा मुखि साचा सोइ ॥ अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥ नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ ब्रहम
गिआनी सदा निरलेप ॥ जैसे जल महि कमल अलेप ॥ ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥ जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ ब्रहम
गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥ जैसे राज रँक कउ लागै तुलि पवान ॥ ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥ जिउ बसुधा कोऊ खोदै
कोऊ चँदन लेप ॥ ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥ नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥ १ ॥ ब्रहम गिआनी निरमल ते
निरमला ॥ जैसे मैलु न लागै जला ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥ जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ ब्रहम गिआनी कै मित्र
सत्रु समानि ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥ ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥ मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥ ब्रहम गिआनी
से जन भए ॥ नानक जिंन प्रभु आपि करेइ ॥ २ ॥ ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥ आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥ ब्रहम
गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥ ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥ ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥ ब्रहम गिआनी

की द्रिसटि अम्रितु बरसी ॥ ब्रह्म गिआनी बँधन ते मुक्ता ॥ ब्रह्म गिआनी की निरमल जुगता ॥ ब्रह्म गिआनी का
 भोजनु गिआन ॥ नानक ब्रह्म गिआनी का ब्रह्म धिआनु ॥ ३ ॥ ब्रह्म गिआनी एक ऊपरि आस ॥ ब्रह्म गिआनी का
 नहीं बिनास ॥ ब्रह्म गिआनी कै गरीबी समाहा ॥ ब्रह्म गिआनी परउपकार उमाहा ॥ ब्रह्म गिआनी कै नाही धँधा ॥
 ब्रह्म गिआनी ले धावतु बँधा ॥ ब्रह्म गिआनी कै होइ सु भला ॥ ब्रह्म गिआनी सुफल फला ॥ ब्रह्म गिआनी सँगि
 सगल उधारु ॥ नानक ब्रह्म गिआनी जपै सगल सँसारु ॥ ४ ॥ ब्रह्म गिआनी कै एकै रँग ॥ ब्रह्म गिआनी कै बसै प्रभु
 सँग ॥ ब्रह्म गिआनी कै नामु आधारु ॥ ब्रह्म गिआनी कै नामु परवारु ॥ ब्रह्म गिआनी सदा सद जागत ॥ ब्रह्म
 गिआनी अहँबुधि तिआगत ॥ ब्रह्म गिआनी कै मनि परमानँद ॥ ब्रह्म गिआनी कै घरि सदा अनँद ॥ ब्रह्म गिआनी
 सुख सहज निवास ॥ नानक ब्रह्म गिआनी का नहीं बिनास ॥ ५ ॥ ब्रह्म गिआनी ब्रह्म का बेता ॥ ब्रह्म गिआनी एक
 सँगि हेता ॥ ब्रह्म गिआनी कै होइ अचिँत ॥ ब्रह्म गिआनी का निरमल मँत ॥ ब्रह्म गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥
 ब्रह्म गिआनी का बड परताप ॥ ब्रह्म गिआनी का दरसु बडभागी पाईये ॥ ब्रह्म गिआनी कउ बलि बलि जाईये ॥ ब्रह्म
 गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रह्म गिआनी आपि परमेसुर ॥ ६ ॥ ब्रह्म गिआनी की कीमति नाहि ॥ ब्रह्म
 गिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रह्म गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रह्म गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ ब्रह्म गिआनी का
 कथिआ न जाइ अधाखरु ॥ ब्रह्म गिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रह्म गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ ब्रह्म
 गिआनी की गति ब्रह्म गिआनी जानै ॥ ब्रह्म गिआनी का अँतु न पारु ॥ नानक ब्रह्म गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥
 ७ ॥ ब्रह्म गिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥ ब्रह्म गिआनी सद जीवै नहीं मरता ॥ ब्रह्म गिआनी मुकति जुगति जीअ
 का दाता ॥ ब्रह्म गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥ ब्रह्म गिआनी अनाथ का नाथु ॥ ब्रह्म गिआनी का सभ ऊपरि

हाथु ॥ ब्रह्म गिआनी का सगल अकारु ॥ ब्रह्म गिआनी आपि निरँकारु ॥ ब्रह्म गिआनी की सोभा ब्रह्म गिआनी बनी ॥
 नानक ब्रह्म गिआनी सरब का धनी ॥ ८ ॥ ८ ॥ सलोकु ॥ उरि धारै जो अंतरि नामु ॥ सरब मै पेखै भगवानु ॥ निमख
 निमख ठाकुर नमसकारै ॥ नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥ १ ॥ असटपदी ॥ मिथिआ नाही रसना परस ॥ मन महि
 प्रीति निरँजन दरस ॥ पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥ साध की टहल संत सँगि हेत ॥ करन न सुनै काहू की निँदा ॥ सभ ते जानै
 आपस कउ मँदा ॥ गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ मन की बासना मन ते टरे ॥ इँद्री जित पँच दोख ते रहत ॥ नानक कोटि मधे
 को ऐसा अपरस ॥ १ ॥ बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसँन ॥ बिसन की माइआ ते होइ भिँन ॥ करम करत होवै निहकरम ॥
 तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥ काहू फल की इच्छा नही बाछै ॥ केवल भगति कीरतन सँगि राचै ॥ मन तन अंतरि सिमरन
 गोपाल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ आपि द्विडै अवरह नामु जपावै ॥ नानक ओहु बैसनो परमगति पावै ॥ २ ॥ भगउती
 भगवंत भगति का रँगु ॥ सगल तिआगै दुसट का सँगु ॥ मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ करि पूजै सगल पारब्रह्मु ॥ साध सँगि
 पापा मलु खोवै ॥ तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥ भगवंत की टहल करै नित नीति ॥ मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥
 हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥ ३ ॥ सो पँडितु जो मनु परबोधै ॥ राम नामु आतम महि
 सोधै ॥ राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु पँडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ सो पँडितु फिरि जोनि न
 आवै ॥ बेद पुरान सिमिति बूझै मूलु ॥ सूखम महि जानै असथूलु ॥ चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक उसु पँडित कउ सदा
 अदेसु ॥ ४ ॥ बीज मँत्रु सरब को गिआनु ॥ चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥ जो जो जपै तिस की गति होइ ॥ साध सँगि
 पावै जनु कोइ ॥ करि किरपा अंतरि उर धारै ॥ पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥ सरब रोग का अउखधु नामु ॥ कलिआण रूप
 मँगल गुण गाम ॥ काहू जुगति कितै न पाईरे धरमि ॥ नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥ ५ ॥ जिस कै

मनि पारब्रह्म का निवासु ॥ तिसका नामु सति रामदासु ॥ आत्मरामु तिसु नदरी आइआ ॥ दास दसँतण भाइ तिनि
पाइआ ॥ सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥ सो दासु दरगह परवानु ॥ अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥ तिसु दास कउ
सभ सोझी परै ॥ सगल सँगि आत्म उदासु ॥ ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥ ६ ॥ प्रभ की आगिआ आत्म हितावै ॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ सदा अनँदु तह नही बिओगु ॥ तैसा सुवरनु तूसी उसु माटी ॥
तैसा अँमितु तैसी बिखु खाटी ॥ तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ तैसा रँकु तैसा राजानु ॥ जो वरताए सई जुगति ॥ नानक
ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥ ७ ॥ पारब्रह्म के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन
करावन जोगु ॥ प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥ पसरिओ आपि होइ अनत तरँग ॥ लखे न जाहि पारब्रह्म के रँग ॥ जैसी मति
देइ तैसा परगास ॥ पारब्रह्मु करता अबिनास ॥ सदा सदा सदा दइआल ॥ सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥ ८ ॥ ९
॥ सलोकु ॥ उसतति करहि अनेक जन अँतु न पारावार ॥ नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥ १ ॥
असटपदी ॥ कई कोटि होए पूजारी ॥ कई कोटि आचार बिउहारी ॥ कई कोटि भए तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि
उदासी ॥ कई कोटि बेद के श्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥ कई कोटि आत्म धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि
बीचारहि ॥ कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ नानक करते का अँतु न पावहि ॥ १ ॥ कई कोटि भए अभिमानी ॥ कई
कोटि अँध अगिआनी ॥ कई कोटि किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आत्म निकोर ॥ कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥
कई कोटि पर दूरना करहि ॥ कई कोटि माइआ श्रम माहि ॥ कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना
॥ नानक करते की जानै करता रचना ॥ २ ॥ कई कोटि सिध जती जोगी ॥ कई कोटि राजे रस भोगी ॥ कई कोटि पँखी
सरप उपाए ॥ कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥ कई कोटि पवण पाणी बैसँतर ॥ कई कोटि देस भूमँडल ॥ कई कोटि

ससीअर सूर नख्यत्र ॥ कई कोटि देव दानव धँद्र सिरि छत्र ॥ सगल समर्गी अपनै सूति धारै ॥ नानक जिस्सु जिस्सु भावै तिसु
तिसु निसतारै ॥ ३ ॥ कई कोटि राजस तामस सातक ॥ कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥ कई कोटि कीए रतन
समुद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जँत ॥ कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ कई कोटि जख्य किनँर
पिसाच ॥ कई कोटि भूतप्रेत सूकर मिगाच ॥ सभ ते नैरै सभहू ते दूरि ॥ नानक आपि अलिंपतु रहिआ भरपूरि ॥ ४ ॥ कई
कोटि पाताल के वासी ॥ कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥ कई कोटि जनमहि जिवहि मरहि ॥ कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥
कई कोटि बैठत ही खाहि ॥ कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥ कई कोटि कीए धनवंत ॥ कई कोटि माइआ महि चिँत ॥ जह
जह भाणा तह तह राखे ॥ नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥ ५ ॥ कई कोटि भए बैरागी ॥ राम नाम सँगि तिनि लिव लागी ॥
कई कोटि प्रभ कउ खोजँते ॥ आतम महि पारब्रहम लहँते ॥ कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥ तिन कउ मिलिओ प्रभु
अबिनास ॥ कई कोटि मागहि सतसँगु ॥ पारब्रहम तिन लागा रँगु ॥ जिन कउ होए आपि सुप्रसँन ॥ नानक ते जन सदा
धँनि धँनि ॥ ६ ॥ कई कोटि खाणी अरु खँड ॥ कई कोटि अकास ब्रहमँड ॥ कई कोटि होए अवतार ॥ कई जुगति कीनो
बिसथार ॥ कई बार पसरिओ पासार ॥ सदा सदा इकु एकँकार ॥ कई कोटि कीनो बहु भाति ॥ प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति
॥ ता का अँतु न जानै कोइ ॥ आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥ ७ ॥ कई कोटि पारब्रहम के दास ॥ तिन होवत आतम परगास
॥ कई कोटि तत के बेते ॥ सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥ अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ कई
कोटि नाम गुन गावहि ॥ आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥ अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ नानक ओइ परमेसुर के
पिआरे ॥ ८ ॥ १० ॥ सलोकु ॥ करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि
सोइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥

अंतु नही किछु पारावारा ॥ हुकमे धारि अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ हुकमे
 अनिक रँग परकार ॥ करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ नानक सभ महि रहिआ समाई ॥ १ ॥ प्रभ भावै मानुख गति पावै
 ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥ प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥
 आपि करै आपन बीचारै ॥ दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ जो भवै सो कार करावै ॥ नानक
 द्रिसटी अवरु न आवै ॥ २ ॥ कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ जो तिसु भावै सोई करावै ॥ इस कै हाथि होइ ता सभु किछु
 लेइ ॥ जो तिसु भावै सोई करेइ ॥ अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ जे जानत आपन आप बचै ॥ भरमे भूला दह दिसि धावै
 ॥ निमख माहि चारि कुँट फिरि आवै ॥ करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ नानक ते जन नामि मिलेइ ॥ ३ ॥ खिन
 महि नीच कीट कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥ जा का द्रिसटि कछु न आवै ॥ तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥
 जाकउ अपुनी करै बखसीस ॥ ताका लेखा न गनै जगदीस ॥ जीउ पिँडु सभ तिसकी रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास
 ॥ अपनी बणत आपि बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥ ४ ॥ इसका बलु नाही इसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ
 ॥ आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग जरख रँगि हसै ॥
 कबहू निंद चिंद बिउहार ॥ कबहू ऊभ अकास पइआल ॥ कबहू बेता ब्रम बीचार ॥ नानक आपि मिलावणहार ॥ ५ ॥
 कबहू निरति करै बहु भाति ॥ कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥ कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूँ सरब की होत खाल ॥ कबहू
 होइ बहै बड राजा ॥ कबहू भेखारी नीच का साजा ॥ कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ प्रभु
 राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥ ६ ॥ कबहू होइ पँडितु करे बख्यानु ॥ कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥
 कबहू तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥ अनिक

जोनि भरमै भरमीआ ॥ नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ जो तिसु भावै सोई होइ ॥ नानक
दूजा अवरु न कोइ ॥ ७ ॥ कबहू साध संगति इहु पावै ॥ उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥ अंतरि होइ गिआन परगासु ॥
उसु असथान कस नही बिनासु ॥ मन तन नामि रते इक रंगि ॥ सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥ जिउ जल महि जलु आइ
खटाना ॥ तिउ जोती संगि जोति समाना ॥ मिटि गए गवन पाए बिस्त्राम ॥ नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥ ८ ॥ ११ ॥
सलोकु ॥ सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥ बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जिस
कै अंतरि राज अभिमानु ॥ सो नरक पाती होवत सुआनु ॥ जो जानै मै जोबनवँतु ॥ सो होवत बिसटा का जँतु ॥ आपस
कउ करमवँतु कहावै ॥ जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥ धन भूमि का जो करै गुमानु ॥ सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥ करि
किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥ १ ॥ धनवँता होइ करि गरबावै ॥ त्रिण समानि
कछु संगि न जावै ॥ बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥ पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥ सभ ते आप जानै बलवँतु ॥
खिन महि होइ जाइ भसमँतु ॥ किसै न बदै आपि अहंकारी ॥ धरमराइ तिसु करे खुआरी ॥ गुर प्रसादि जा का मिटै
अभिमानु ॥ सो जन नानक दरगह परवानु ॥ २ ॥ कोटि करम करै हउ धारे ॥ स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥ अनिक
तपसिआ करे अहंकार ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥ अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥ हरि दरगह कहु कैसे गवै
॥ आपस कउ जो भला कहावै ॥ तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥ सरब की रेन जाका मनु होइ ॥ कहु नानक ताकी
निरमल सोइ ॥ ३ ॥ जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥ तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥ जब इह जानै मै किछु करता ॥
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ जब लगु मोह मगन संगि
माइ ॥ तब लगु धरमराइ देइ सजाइ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥ गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥ ४ ॥ सहस खटे

लख कउ उठि धावै ॥ त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥ अनिक भोग बिखिआ के करै ॥ नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ सुपन मनोरथ त्रिथे सभ काजै ॥ नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥ बडभागी किसै परापति होइ ॥
करन करावन आपे आपि ॥ सदा सदा नानक हरि जापि ॥ ५ ॥ करन करावन करनैहारु ॥ इस कै हाथि कहा बीचारु ॥
जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ ॥ आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥ जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥ सभ ते दूरि सभहू के संगि ॥ बूझै
देखै करै बिबेक ॥ आपहि एक आपहि अनेक ॥ मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥ नानक सद ही रहिआ समाइ ॥ ६ ॥ आपि
उपदेसै समझै आपि ॥ आपे रचिआ सभ के साथि ॥ आपि कीनो आपन बिसथारु ॥ सभु कछु उसका ओहु करनैहारु ॥ उस
ते भिन कहहु किछु होइ ॥ थान थनंतरि एकै सोइ ॥ अपुने चलित आपि करणैहार ॥ कउतक करै रंग आपार ॥ मन महि आपि
मन अपुने माहि ॥ नानक कीमति कहनु न जाइ ॥ ७ ॥ सति सति सति प्रभु सुआमी ॥ गुर परसादि किनै वखिआनी ॥ सचु
सचु सचु सभु कीना ॥ कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥ भला भला भला तेरा रूप ॥ अति सुंदर अपार अनूप ॥ निरमल निरमल
निरमल तेरी बाणी ॥ घटि घटि सुनी श्रवन बख्यानी ॥ पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥ ८ ॥ १२
॥ सलोकु ॥ संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥ संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥ १ ॥ असटपदी ॥
संत कै दूखनि आरजा घटै ॥ संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥ संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥ संत कै दूखनि नरक महि पाइ
॥ संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥ संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥ संत के हते कउ रखै न कोइ ॥ संत कै दूखनि थान भ्रसटु
होइ ॥ संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥ नानक संत संगि निंदकु भीतरै ॥ १ ॥ संत के दूखन ते मुखु भवै ॥ संतन कै दूखनि काग
जिउ लवै ॥ संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥ संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥ संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥ संत कै दूखनि तेजु सभु जाई ॥ संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥ संत दोखी का थाउ को नाहि ॥

नानक सँत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥ २ ॥ सँत का निँदकु महा अतताई ॥ सँत का निँदकु खिनु टिकनु न पाई ॥ सँत का
 निँदकु महा हतिआरा ॥ सँत का निँदकु परमेसुरि मारा ॥ सँत का निँदकु राज ते हीनु ॥ सँत का निँदकु दुखीआ अरु दीनु ॥
 सँत के निँदक कउ सरब रोग ॥ सँत के निँदक कउ सदा बिजोग ॥ सँत की निँदा दोख महि दोखु ॥ नानक सँत भावै ता उस का
 भी होइ मोखु ॥ ३ ॥ सँत का दोखी सदा अपवितु ॥ सँत का दोखी किसै का नही मितु ॥ सँत के दोखी कउ डानु लागै ॥ सँत
 के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ सँत का दोखी महा अहँकारी ॥ सँत का दोखी सदा बिकारी ॥ सँत का दोखी जनमै मरै ॥ सँत की
 दूखना सुख ते टरै ॥ सँत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥ नानक सँत भावै ता लए मिलाइ ॥ ४ ॥ सँत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥
 सँत का दोखी कितै काजि न पहुँचै ॥ सँत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईए ॥ सँत का दोखी उझड़ि पाईए ॥ सँत का दोखी अंतर
 ते थोथा ॥ जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥ सँत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥ आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ सँत के
 दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥ नानक सँत भावै ता लए उबारि ॥ ५ ॥ सँत का दोखी इउ बिललाइ ॥ जिउ जल बिहून
 मछली तड़फड़ाइ ॥ सँत का दोखी भूखा नही राजै ॥ जिउ पावकु ईधनि नही धापै ॥ सँत का दोखी छुटै इकेला ॥ जिउ बूआडु
 तिलु खेत माहि दुहेला ॥ सँत का दोखी धरम ते रहत ॥ सँत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥ किरतु निँदक का धूरि ही पइआ ॥
 नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥ ६ ॥ सँत का दोखी बिगड़ रूप होइ जाइ ॥ सँत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ सँत
 का दोखी सदा सहकाईए ॥ सँत का दोखी न मरै न जीवाईए ॥ सँत के दोखी की पुजै न आसा ॥ सँत का दोखी उठि चलै
 निरासा ॥ सँत कै दोखि न तिसटै कोइ ॥ जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ नानक जानै सचा सोइ ॥
 ७ ॥ सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥ सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥ तिसहि
 धिआवहु सासि गिरासि ॥ सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥ जैसा करे तैसा को थीआ ॥ अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ दूसर
 कउनु

कहै बीचारु ॥ जिसनो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ बडभागी नानक जन सेइ ॥ ८ ॥ १३ ॥ सलोकु ॥ तजहु
 सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥
 मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥ देवन कउ एकै भगवानु ॥ जिस कै दीरे रहै अघाइ ॥ बहुरि न तिसना लागै आइ ॥ मारै
 राखै एको आपि ॥ मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥ सिमरि
 सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥ नानक बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥ उसतति मन महि करि निरँकार ॥ करि मन मेरे सति बिउहार ॥
 निरमल रसना अँम्रितु पीउ ॥ सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ नैनहु पेरु ठाकुर का रँगु ॥ साध सँगि बिनसै सभ सँगु ॥ चरन
 चलउ मारगि गोबिंद ॥ मिटहि पाप जपीरे हरि बिंद ॥ कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥ हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥ २
 ॥ बडभागी ते जन जग माहि ॥ सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ राम नाम जो करहि बीचार ॥ से धनवँत गनी संसार ॥ मनि
 तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ एको एकु एकु पछानै ॥ इत उत की ओहु सोझी जानै ॥ नाम सँगि
 जिस का मनु मानिआ ॥ नानक तिनहि निरँजनु जानिआ ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ तिसकी जानहु तिसना
 बुझै ॥ साध सँगि हरि हरि जसु कहत ॥ सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥ अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥ ग्रिहसत महि
 सोई निरबानु ॥ एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥ तिस की कटीरे जम की फासा ॥ पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥ नानक
 तिसहि न लागहि दूख ॥ ४ ॥ जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥ सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥ जिसु प्रभु अपुना किरपा
 करै ॥ सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥ अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥ सोधत सोधत सोधत
 सीझिआ ॥ गुर प्रसादि ततु सभ बूझिआ ॥ जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥ नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥ ५ ॥ नह
 किछु जनमै नह किछु मरै ॥ आपन चलितु आप ही करै ॥ आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥ आगिआकारी धारी सभ

खिसटि ॥ आपे आपि सगल महि आपि ॥ अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥ अबिनासी नाही किछु खंड ॥ धारण थारि
 रहिओ ब्रहमंड ॥ अलख अभेव पुरख परताप ॥ आपि जपाए त नानक जाप ॥ ६ ॥ जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥
 सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥ प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ आपे मेलि लए किरपाल ॥
 गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥ जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥ नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥
 नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥ ७ ॥ जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ सदा सदा बसै हरि संगि ॥ सहज सुभाइ होवै
 सो होइ ॥ करणैहारु पछाणै सोइ ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु
 माहि समाए ॥ ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥ आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ नानक प्रभ जनु एको जानु ॥ ८ ॥
 १४ ॥ सलोकु ॥ सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥ १ ॥
 असटपदी ॥ टूटी गाढनहार गोपाल ॥ सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥ तिस ते बिरथा
 कोई नाहि ॥ रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ आपन कीआ कछु न होइ ॥ जे सउ प्राणी लोचै
 कोइ ॥ तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ गति नानक जपि एक हरि नाम ॥ १ ॥ रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥ प्रभ की जोति
 सगल घटि सोहै ॥ धनवंतु होइ किआ को गरबै ॥ जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ अति सूरु जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ
 की कला बिना कह धावै ॥ जे को होइ बहै दातारु ॥ तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ नानक
 सो जनु सदा अरोगु ॥ २ ॥ जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥ तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥ जिउ पाखाणु नाव चडि
 तरै ॥ प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥ जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥ गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥ जिउ महा
 उदिआन महि मारगु पावै ॥ तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ तिन संतन की बाछउ धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि

॥ ३ ॥ मन मूर्ख काहे बिललाईरे ॥ पुरब लिखे का लिखिआ पाईरे ॥ दूरूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ अवर तिआगि तू
 तिसहि चितारु ॥ जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ भूला काहे फिरहि अजान ॥ कउन बसतु आई तैरै संग ॥ लपटि रहिओ
 रसि लोभी पतंग ॥ राम नाम जपि हिरदे माहि ॥ नानक पति सेती घरि जाहि ॥ ४ ॥ जिंसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
 राम नामु संतन घरि पाइआ ॥ तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ राम नामु हिरदे महि तोलि ॥ लादि खेप संतह सँगि चालु ॥
 अवर तिआगि बिखिआ जँजाल ॥ धँनि धँनि कहै सभु कोइ ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥ इहु वापारु विरला वापारै ॥
 नानक ता कै सद बलिहारै ॥ ५ ॥ चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धूरि करहु
 इसनानु ॥ साध ऊपरि जाईरे कुरबानु ॥ साध सेवा वडभागी पाईरे ॥ साध सँगि हरि कीरतनु गाईरे ॥ अनिक बिघन ते
 साधू राखै ॥ हरि गुन गाइ अँमित रसु चाखै ॥ ओट गही संतह दरि आइआ ॥ सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥ ६ ॥
 मिरतक कउ जीवालनहार ॥ भूखे कउ देवत अधार ॥ सरब निधान जा की दिसटी माहि ॥ पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥
 सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥ तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥ जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ सभ ते ऊच
 निरमल इह करणी ॥ करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥ नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥ ७ ॥ जा कै मनि गुर की
 परतीति तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ भगतु भगतु सुनीरे तिहु लोइ ॥ जा कै हिरदै एको होइ ॥ सचु करणी सचु ता की
 रहत ॥ सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥ साची दिसटि साचा आकारु ॥ सचु वरतै साचा पासारु ॥ पारब्रहमु जिनि सचु करि
 जाता ॥ नानक सो जनु सचि समाता ॥ ८ ॥ १५ ॥ सलोकु ॥ रूपु नरेख न रँगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिँन ॥ तिसहि
 बुझाए नानका जिंसु होवै सुप्रसँन ॥ १ ॥ असटपदी ॥ अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥
 तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥ सरब निरँतरि एको सोइ ॥ आपे बीना आपे दाना ॥ गहिर गँभीरु गहीरु सुजाना ॥

पारब्रह्म परमेशुर गोबिंद ॥ क्रिपा निधान दइआल बखसंद ॥ साध तेरे की चरनी पाउ ॥ नानक कै मनि इहु अनराउ ॥ १
 ॥ मनसा पूरन सरना जोग ॥ जो करि पाइआ सोई होगु ॥ हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥
 अनद रूप मंगल सद जा कै ॥ सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥ राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसरु
 ग्रिहसत महि भोगी ॥ धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥ नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥ २ ॥ जा की
 लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ सगल परोई अपुनै सूति ॥ सुमति
 गिआनु धिआनु जिन देइ ॥ जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥ तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥
 ऊच नीच तिस के असथान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥ ३ ॥ नाना रूप नाना जाके रंग ॥ नाना भेख करहि इक
 रंग ॥ नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ प्रभु अबिनासी एककारु ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ
 ॥ नाना बिधि करि बनत बनाई अपनी कीमति आपे पाई ॥ सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥ जपि जपि जीवै नानक हरि
 नाउ ॥ ४ ॥ नाम के धारे सगले जंत ॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ नाम के धारे सिमिति बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन
 गिआन धिआन ॥ नाम के धारे आगास पाताल ॥ नाम के धारे सगल आकार ॥ नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ नाम कै
 सँगि उधरे सुनि स्रवन ॥ करि किरपा जिंसु आपनै नामि लाए ॥ नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥ ५ ॥ रूपु सति
 जाका सति असथानु ॥ पुरखु सति केवल परधानु ॥ करतूति सति सति जाकी बाणी ॥ सति पुरख सभ माहि समाणी ॥
 सति करमु जा की रचना सति ॥ मूलु सति सति उतपति ॥ सति करणी निरमल निरमली ॥ जिसहि बुझाए तिसहि सभ
 भली ॥ सतिनामु प्रभ का सुखदाई ॥ बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥ ६ ॥ सति बचन साधू उपदेस ॥ सति ते जन जा
 कै रिदै प्रवेस ॥ सति निरति बूझै जे कोइ ॥ नामु जपत ता की गति होइ ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ आपे जानै अपनी

मिति गति ॥ जिस की खिसटि सु करणैहारु ॥ अवर न बूझि करत बीचारु ॥ करते की मिति न जानै कीआ ॥ नानक जो
 तिसु भावै सो वरतीआ ॥ ७ ॥ बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥ जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥ प्रभ कै रँगि राचि जन
 रहे ॥ गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥ ओइ दाते दुख काटनहार ॥ जा कै सँगि तरै संसार ॥ जन का सेवकु सो वडभागी ॥ जन
 कै सँगि एक लिव लागी ॥ गुन गोबिदु कीरतनु जनु गावै ॥ गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥ ८ ॥ १६ ॥ सलोकु ॥ आदि
 सचु जुगादि सचु ॥ है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥ १ ॥ असटपदी ॥ चरन सति सति परसनहार ॥ पूजा सति सति
 सेवदार ॥ दरसनु सति सति पेखनहार ॥ नामु सति सति धिआवनहार ॥ आपि सति सति सभ धारी ॥ आपे गुण आपे
 गुणकारी ॥ सबदु सति सति प्रभु बकता ॥ सुरति सति सति जसु सुनता ॥ बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥ नानक सति
 सति प्रभ सोइ ॥ १ ॥ सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥ करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥ जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ
 आइआ ॥ ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ भै ते निरभउ होइ बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥ बसतु
 माहि ले बसत गडाई ॥ ता कउ भिन न कहना जाई ॥ बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ नाराइन मिले नानक एक ॥ २ ॥ ठाकुरु का
 सेवक आगिआकारी ॥ ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥ ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ ठाकुर के सेवक की निरमल रीति
 ॥ ठाकुर कउ सेवकु जानै सँगि ॥ प्रभ का सेवकु नाम कै रँगि ॥ सेवक कउ प्रभ पालनहार ॥ सेवक की राखै निरँकारा ॥ सो
 सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥ नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥ ३ ॥ अपने जन का परदा ढाकै ॥ अपने सेवक की
 सरपर राखै ॥ अपने दास कउ देइ वडाई ॥ अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ अपने सेवक का आपि पति राखै ॥ ता की गति
 मिति कोइ न लाखै ॥ प्रभ के सेवक कउ को न पहुँचै ॥ प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥ नानक
 सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥ ४ ॥ नीकी कीरी महि कल राखै ॥ भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥ जिस का सासु न

काढत आपि ॥ ता कउ राखत दे करि हाथ ॥ मानस जतन करत बहु भाति ॥ तिस के करतब बिरथे जाति ॥ मारै न राखै
 अवरु न कोइ ॥ सरब जीआ का राखा सोइ ॥ काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥ ५ ॥
 बारँबार बार प्रभु जपीरे ॥ पी अँमितु इहु मनु तनु धपीरे ॥ नाम रतनु जिनि गुरुमुखि पाइआ ॥ तिसु किछु अवरु नाही
 द्रिसटाइआ ॥ नामु धनु नामो रूपु रँगु ॥ नामो सुखु हरि नाम का सँगु ॥ नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥ मन तन नामहि
 नामि समाने ॥ ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु नानक जन कै सद काम ॥ ६ ॥ बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥ प्रभि
 अपने जन कीनी दाति ॥ करहि भगति आत्म कै चाइ ॥ प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥ जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ
 अपने का हुकमु पछानै ॥ तिस की महिमा कउन बखानउ ॥ तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥ आठ पहर प्रभ बसहि हजुरे
 ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥ ७ ॥ मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥ मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ जिनि जनि अपना प्रभु
 पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥ तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ अवर
 सिआनप सगली छाडु ॥ तिसु जन की तू सेवा लागु ॥ आवनु जानु न होवी तेरा ॥ नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥
 ८ ॥ १७ ॥ सलोकु ॥ सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिसका नाउ ॥ तिस कै सँगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ
 ॥ १ ॥ असटपदी ॥ सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥ सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥ सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै
 ॥ गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ सतिगुरु सिख के बँधन काटै ॥ गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥ सतिगुरु सिख कउ नाम धनु
 देइ ॥ गुर का सिखु वडभागी हे ॥ सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥ नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै
 ॥ १ ॥ गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥ गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ हरि हरि नामु रिदै
 सद धिआवै ॥ मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइ निहकामी ॥ तिस कउ होत

परापति सुआमी ॥ अपुनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥ २ ॥ बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥
 ॥ सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥ सो सतिगुरु जिस रिदै हरि नाउ ॥ अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥ सरब निधान
 जीअ का दाता ॥ आठ पहर परब्रहम रँगि राता ॥ ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥ एकहि आपि नहीं कछु भरमु ॥ सहस
 सिआनप लइआ न जाईऐ ॥ नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥ ३ ॥ सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥ परसत चरन गति
 निरमल रीति ॥ भेटत सँगि राम गुन खे ॥ पारब्रहम की दरगह गवे ॥ सुनि करि बचन करन आघाने ॥ मनि सँतोखु आतम
 पतीआने ॥ पूरा गुरु अख्ओ जा का मँत्र ॥ अँमित दिसटि पेखै होइ सँत ॥ गुण बिअँत कीमति नहीं पाइ ॥ नानक जिसु
 भावै तिसु लए मिलाइ ॥ ४ ॥ जिहवा एक उसतति अनेक ॥ सति पुरख पूरन बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्राणी ॥ अगम
 अगोचर प्रभ निरबानी ॥ निराहार निरवैर सुखदाई ॥ ता की कीमति किनै न पाई ॥ अनिक भगत बँदन नित करहि ॥
 चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥ नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥ ५ ॥ इहु हरि रसु पावै
 जनु कोइ ॥ अँमितु पीवै अमरु सो होइ ॥ उसु पुरखु का नाही कदे बिनास ॥ जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥ आठ पहर हरि
 का नामु लेइ ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥ मोह माइआ कै सँगि न लेपु ॥ मन महि राखै हरि हरि एकु ॥ अँधकार दीपक
 परगासे ॥ नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥ ६ ॥ तपति माहि ठाढि वरताई ॥ अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥ जनम
 मरन के मिटे अँदेसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥ सगल बिआपि मन ते खै नसे ॥ जिस का सा
 तिनि किरपा धारी ॥ साध सँगि जपि नामु मुरारी ॥ धिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥ ७ ॥
 निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥ कला धारि जिनि सगली मोही ॥ अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥ अपुनी कीमति आपे
 पाए ॥ हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सरब निरँतरि एको सोइ ॥ ओति पोति रविआ रूप रँग ॥ भए प्रगास साध कै

सँग ॥ रचि रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ८ ॥ १८ ॥ सलोकु ॥ साथि न चालै बिनु भजन
 बिखिआ सगली छारु ॥ हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥ १ ॥ असटपदी ॥ सँत जना मिलि करहु बीचारु ॥
 एकु सिमरि नाम आधारु ॥ अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥ करन कारन सो प्रभु समरथु
 ॥ द्रिडु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ इहु धनु सँचहु होवहु भगवँत ॥ सँत जना का निरमल मँत ॥ एक आस राखहु मन माहि ॥
 सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥ १ ॥ जिसु धनु कउ चारि कुँट उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥ जिसु सुख कउ
 नित बाछहि मीत ॥ सो सुखु साधू सँगि परीति ॥ जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥ सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥
 अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ रोगु मिटै हरि अवरथु लाइ ॥ सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥ जपि नानक दरगहि
 परवानु ॥ २ ॥ मनु परबोधहु हरिकै नाइ ॥ दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥ ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥ जा कै रिदै बसै हरि
 सोइ ॥ कलि ताती ठाँढा हरि नाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥ भगति भाइ आत्म
 परगास ॥ तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥ कहु नानक काटी जम फासी ॥ ३ ॥ ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ जनमि मरै
 सो काचो काचा ॥ आवागवनु मिटै प्रभु सेव ॥ आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥ हरि हरि
 सिमरि प्रान आधारु ॥ अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ सिँमिति सासत बेद बीचारे ॥ हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥ मनि
 बँछत नानक फल पाइ ॥ ४ ॥ सँगि न चालसि तेरै धना ॥ तूँ किआ लपटावहि मूरख मना ॥ सुत मीत कुटँब अरु बनिता ॥
 इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ राज रँग माइआ बिसथार ॥ इन ते कहहु कवन छुटकार ॥ असु हसती रथ असवारी ॥ झूठा
 डँफु झूठु पासारी ॥ जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु बिसारि नानक पछुताना ॥ ५ ॥ गुर की मति तूँ लेहि इआने ॥
 भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥ हरि की भगति करहु मन मीत ॥ निरमल होइ तुम्हारे चीत ॥ चरन कमल राखहु

मन माहि ॥ जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ आपि जपहु अवर नामु जपावहु ॥ सुनत कहत रहत गति पावहु ॥ सार
 भूत सति हरि को नाउ ॥ सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥ ६ ॥ गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥ बिनसि जाइ हउमै बिखु
 फैलु ॥ होहि अचिंतु बसै सुखि नालि ॥ सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥ छाडि सिआनप सगली मना ॥ साधसंगि पावहि
 सच धना ॥ हरि पूंजी सँचि करहु बिउहारु ॥ ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ सरब निरंतरि एको देखु ॥ कहु नानक जा कै
 मसतकि लेखु ॥ ७ ॥ एको जपि एको सालाहि ॥ एकु सिमरि एको मन आहि ॥ एकस के गुन गाउ अनंत ॥ मनि तनि
 जापि एक भगवँत ॥ एको एकु एकु हरि आपि ॥ पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥ अनिक बिसथार एक ते भए ॥ एकु अराधि
 परछत गए ॥ मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥ गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥ ८ ॥ १९ ॥ सलोकु ॥ फिरत फिरत प्रभ
 आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥ नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जाचक जनु जाचै प्रभ दानु
 ॥ करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ साध जना की मागउ धूरि ॥ पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥ सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
 सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥ चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥ भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥ एक ओट एको
 आधारु ॥ नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥ १ ॥ प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥ हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥ जिन चाखिआ
 से जन त्रिपताने ॥ पूरन पुरख नही डोलाने ॥ सुभर भरे प्रेम रस सँगि ॥ ऊपजै चाउ साध कै सँगि ॥ परे सरनि आन सभ
 तिआगि ॥ अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥ बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु होइ ॥ २ ॥ सेवक
 की मनसा पूरी भई ॥ सतिगुर ते निरमल मति लई ॥ जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥ सेवकु कीनो सदा निहालु ॥ बँधन
 काटि मुकति जनु भइआ ॥ जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥ इछ पुँनी सरधा सभ पूरी ॥ रवि रहिआ सद सँगि हजुरी ॥ जिस
 का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥ नानक भगती नामि समाइ ॥ ३ ॥ सो किउ बिसरै जिं घाल न भानै ॥ सो किउ बिसरै जिं

कीआ जानै ॥ सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥ सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥ सो किउ बिसरै जि अगनि महि
 राखै ॥ गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥ सो किउ बिसरै जि बिख ते काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ गुर पूरै ततु इहै
 बुझाइआ ॥ प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥ ४ ॥ साजन सँत करहु इहु कामु ॥ आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥
 सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥ आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥ बिनु भगती तनु होसी
 छारु ॥ सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥ बूडत जात पाए बिश्रामु ॥ सगल दूख का होवत नामु ॥ नानक नामु जपहु
 गुनतासु ॥ ५ ॥ उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥ मन तन अंतरि इही सुआउ ॥ नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥ मनु बिगसै साध
 चरन धोइ ॥ भगत जना के मनि तनि रँगु ॥ बिरला कोऊ पावै सँगु ॥ एक बसतु दीजै करि मइआ ॥ गुर प्रसादि नामु जपि
 लइआ ॥ ता की उपमा कही न जाइ ॥ नानक रहिआ सरब समाइ ॥ ६ ॥ प्रभ बखसँद दीन दइआल ॥ भगति वछल सदा
 किरपाल ॥ अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥ सरब घटा करत प्रतिपाल ॥ आदि पुरख कारण करतार ॥ भगत जना के प्रान
 अधार ॥ जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥ भगति भाइ लावै मन हीत ॥ हम निरगुनीआर नीच अजान ॥ नानक तुमरी सरनि
 पुरख भगवान ॥ ७ ॥ सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥ एक निमख हरि के गुन गाए ॥ अनिक राज भोग बडिआई ॥ हरि
 के नाम की कथा मनि भाई ॥ बहु भोजन कापर संगीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सु करनी सोभा धनवंत ॥
 हिरदै बसे पूरन गुर मँत ॥ साध सँगि प्रभ देहु निवास ॥ सरब सूख नानक परगास ॥ ८ ॥ २० ॥ सलोकु ॥ सरगुन
 निरगुन निरँकार सुँन समाधी आपि ॥ आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जब अकारु इहु
 कछु न दिसटेता ॥ पाप पुँन तब कहु ते होता ॥ जब धारी आपन सुँन समाधि ॥ तब बैर बिरोध किसु सँगि कमाति ॥ जब
 इस का बरनु चिहनु न जापत ॥ तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥ तब

मोह कहा किसु होवत भरम ॥ आपन खेलु आपि वरतीजा ॥ नानक करनैहारु न दूजा ॥ १ ॥ जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब बँध मुक्ति कहु किस कउ गनी ॥ जब एकहि हरि अगम अपार ॥ तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥ तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥ जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥ तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥ आपन चलित आपि करनैहार ॥ नानक ठाकुर अगम अपार ॥ २ ॥ अबिनासी सुख आपन आसन ॥ तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥ तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥ जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥ तब चित्रगुप्त किसु पूछत लेखा ॥ जब नाथ निरँजन अगोचर अगाधे ॥ तब कउन छुटे कउन बँधन बाधे ॥ आपन आप आप ही अचरजा ॥ नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥ ३ ॥ जह निरमल पुरख पुरख पति होता ॥ तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥ जह निरँजन निरँकार निरबान ॥ तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥ जह सरूप केवल जगदीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ जह जोति सरूपी जोति सँगि समावै ॥ तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ॥ करन करावन करनैहारु ॥ नानक करते का नाहि सुमारु ॥ ४ ॥ जब अपनी सोभा आपन सँगि बनाई ॥ तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥ जह सब कला आपहि परबीन ॥ तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥ तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ तह कउन ठाकुरु कउनु कहीरे चेरा ॥ बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ नानक अपनी गति जानहु आपि ॥ ५ ॥ जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥ ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥ आपस कउ आपहि आदेसु ॥ तिहु गुण का नाही परवेसु ॥ जह एकहि एक एक भगवँता ॥ तह कउनु अचिँतु किसु लागै चिँता ॥ जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥ बहु बेअँत ऊच ते ऊचा ॥ नानक आपस कउ आपहि पहुँचा ॥ ६ ॥ जह आपि रचिओ परपँचु अकारु ॥ तिहु गुण

महि कीनो बिसथारु ॥ पापु पुँन तह भई कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बँछावत ॥ आल जाल माइआ जँजाल ॥ हउमै
 मोह भरम भै भार ॥ दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु सँकोचै
 तउ नानक एकै ॥ ७ ॥ जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ जह पसरै पासरु सँत परतापि ॥ दुहु पाख का आपहि धनी ॥
 उनकी सोभा उनहु बनी ॥ आपहि कउतक करै अनद चोज ॥ आपहि रस भोगन निरजोग ॥ जिसु भावै तिसु आपन नाइ
 लावै ॥ जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥ बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥ ८ ॥
 २१ ॥ सलोकु ॥ जीअ जँत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥ नानक एको पसरिआ दूजा कह दिसटार ॥ १ ॥ असटपदी ॥
 आपि कथै आपि सुननैहारु ॥ आपहि एकु आपि बिसथारु ॥ जा तिसु भावै ता खिसटि उपाए ॥ आपनै भाणै लए समाए ॥
 तुमते भिन नही किछु होइ ॥ आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥ जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥ सचु नामु सोई जनु पाए ॥
 सो समदरसी तत का बेता ॥ नानक सगल खिसटि का जेता ॥ १ ॥ जीअ जँत्र सभ ताकै हाथ ॥ दीन दइआल अनाथ को
 नाथु ॥ जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥ सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥ सभ सिरि एकु
 निरँजन राइ ॥ जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥ अँतरि बाहरि जानहु साथि ॥ गुन निधान बेअँत अपार ॥ नानक दास
 सदा बलिहार ॥ २ ॥ पूरन पूरि रहे दइआल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ अपने करतब जानै आपि ॥ अँतरजामी
 रहओ बिआपि ॥ प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
 भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥ मन अँतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥ करनहारु नानक इकु जानिआ ॥ ३ ॥ जनु लागा
 हरि एकै नाइ ॥ तिस की आस न बिरथी जाइ ॥ सेवक कउ सेवा बनि आई ॥ हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥ इस ते ऊपरि नही
 बीचारु ॥ जा कै मनि बसिआ निरँकारु ॥ बँधन तोरि भए निरवैर ॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥ इह लोक सुखीए

परलोक सुहेले ॥ नानक हरिं प्रभि आपहि मेले ॥ ४ ॥ साध सँगि मिलिं करहु अनँदु ॥ गुन गावहु प्रभ परमानँद ॥ राम
 नाम ततु करहु बीचारु ॥ द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥ अँम्रित बचन हरिं के गुन गाउ ॥ प्रान तरन का इहै सुआउ ॥
 आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अगिआनु बिनसै अँधेरा ॥ सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक फल पावहु
 ॥ ५ ॥ हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥ राम नामु अँतरि उरि धारि ॥ पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु
 साचु परीखिआ ॥ मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ दूरु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह
 निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥ ६ ॥ तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥
 उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूरु
 ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिँता जाइ मिटै अँहँकारु ॥ तिस जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा
 गुरु सूरु ॥ नानक ता कै कारज पूरा ॥ ७ ॥ मति पूरी अँम्रितु जा की द्रिसटि ॥ दरसनु पेखत उधरत खिसटि ॥ चरन
 कमल जा के अनूप ॥ सफल दरसनु सुँदर हरिं रूप ॥ धँनु सेवा सेवकु परवानु ॥ अँतरजामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि
 बसै सु होत निहालु ॥ ता कै निकटि न आवत कालु ॥ अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥ साध सँगि नानक हरिं धिआइआ
 ॥ ८ ॥ २२ ॥ सलोकु ॥ गिआन अँजनु गुरि दीआ अगिआन अँधेर बिनासु ॥ हरिं किरपा ते सँत भेटिआ नानक मनि
 परगासु ॥ १ ॥ असटपदी ॥ सँत सँगि अँतरि प्रभु डीठा ॥ नामु प्रभू का लागी मीठा ॥ सगल समिगी एकसु घट माहि
 ॥ अनिक रँग नाना द्रिसटाहि ॥ नउ निधि अँम्रितु प्रभ का नामु ॥ देही महि इसका बिस्वामु ॥ सुँन समाधि अनहत तह
 नाद ॥ कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ नानक तिसु जन सोझी पाए ॥ १ ॥
 सो अँतरि सो बाहरि अनँत ॥ घटि घटि बिआपि रहिआ भगवँत ॥ धरनि माहि आकास पइआल ॥ सरब

लोक पूरन प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रह्म ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बेसंतर माहि ॥ चारि कुँट
 दह दिसे समाहि ॥ तिस ते भिँन नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानक सुख पाउ ॥ २ ॥ बेद पुरान सिँमिति महि दोखु ॥
 ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ सरब कला करि खेलै खेल ॥
 मोलिं न पाईए गुणह अमोल ॥ सरब जोति महि जा की जोति ॥ धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ गुर परसादि भरम का
 नासु ॥ नानक तिन महि एहु बिसासु ॥ ३ ॥ संत जना की पेखनु सभु ब्रह्म ॥ संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥ संत जना
 सुनहि सुभ बचन ॥ सरब बिआपी राम सँगि रचन ॥ जिनि जाता तिस की इह रहत ॥ सति बचन साधू सभि कहत ॥ जो
 जो होइ सोई सुखु मानै ॥ करन करावनहारु प्रभु जानै ॥ अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥ नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥ ४
 ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥ तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥ तिसु भावै ता एकँकारु ॥
 अनिक कला लखी नह जाइ ॥ जिसु भवै तिसु लए मिलाइ ॥ कवन निकटि कवन कहीए दुरि ॥ आपे आपि आप भरपूरि ॥
 अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥ नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥ ५ ॥ सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि
 पेखनहारा ॥ सगल समग्री जा का तना ॥ आपन जसु आप ही सुना ॥ आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥ आगिआकारी
 कीनी माइआ ॥ सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥ आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥ नानक जा
 भावै ता लए समाइ ॥ ६ ॥ इस ते होइ सु नाही बुरा ॥ औरै कहहु किनै कछु करा ॥ आपि भला करतूति अति नीकी ॥ आपे
 जानै अपने जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु ॥ ओति पोति आपन सँगि राचु ॥ ता की गति मिति कही न जाइ ॥ दूसर
 होइ त सोझी पाइ ॥ तिस का कीआ सभु परवानु ॥ गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥ ७ ॥ जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥
 आपि मिलाइ लए प्रभ सोइ ॥ ओह धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ धँनु धँनु धँनु जनु

आइआ ॥ जिसु प्रसादि सभु जगत्तु तराइआ ॥ जन आवन का इहै सुआउ ॥ जन कै सँगि चिति आवै नाउ ॥ आपि मुकतु
 मुकतु करै सँसारु ॥ नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥ ८ ॥ २३ ॥ सलोकु ॥ पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जाका नाउ
 ॥ नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥ पारब्रह्मु निकटि करि पेरबु ॥
 सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आस अनित तिआगहु तरंग ॥ संत जना की धूरि मन मंग ॥
 आपु छोडि बेनती करहु ॥ साध सँगि अगनि सागरु तरहु ॥ हरि धन के भरि लेहु भँडार ॥ नानक गुर पूरे नमसकार ॥ १
 ॥ खेम कुसल सहज आनंद ॥ साध सँगि भजु परमानंद ॥ नरक निवारि उधारहु जीउ ॥ गुन गोबिंद अँमित रसु पीउ ॥
 चिति चितवहु नाराइण एक ॥ एक रूप जाके रँग अनेक ॥ गोपाल दामोदर दिन दइआल ॥ दुख भँजन पूरन किरपाल ॥
 सिमरि सिमरि नामु बारँबार ॥ नानक जीअ का इहै आधार ॥ २ ॥ उत्तम सलोक साध के बचन ॥ अमुलीक लाल एहि रतन
 ॥ सुनत कमावत होत उधार ॥ आपि तरै लोकह निसतार ॥ सफल जीवनु सफलुता का सँगु ॥ जा कै मनि लागा हरि
 रँगु ॥ जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥ सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥ नानक उधरे तिनकै
 साथे ॥ ३ ॥ सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥ करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥ मिटि गए बैर भए सभरेन ॥ अँमित नामु
 साध सँगि लैन ॥ सुप्रसँन भए गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक की सेव ॥ आल जँजाल बिकार ते रहते ॥ राम नाम सुनि रसना
 कहते ॥ करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥ नानक निबही खेप हमारी ॥ ४ ॥ प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥ सावधान
 एकागर चीत ॥ सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥ जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥ सरब इच्छा ताकी पूरन होइ ॥
 प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥ सभ ते ऊच पाए असथानु ॥ बहुरि न होवै आवन जानु ॥ हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥
 नानक जिसहि पारापति होइ ॥ ५ ॥ खेम सांति रिधि नव निधि ॥ बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥

बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥ गिआनु खेसट ऊतम इसनानु ॥ चारि पदारथ कमल प्रगास ॥ सभ कै मधि सगल ते उदास ॥ सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥ समदरसी एक दिसटेता ॥ इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥ ६ ॥ इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥ सभ जुग महि ता की गति होइ ॥ गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥ सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥ सगल मतांत केवल हरि नाम ॥ गोबिंद भगत कै मनि बिस्वाम ॥ कोटि अप्राध साध सँगि मिटै ॥ संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥ जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥ साध सरणि नानक ते आए ॥ ७ ॥ जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥ दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा अंम्रित ता की बानी ॥ एकु नामु मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ता के करम ॥ सभ ते ऊचता की सोभा बनी ॥ नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥ ८ ॥ २४ ॥

थिती गउड़ी महला ९ सलोकु ॥ १३३३तिगुर प्रसादि ॥

जलि थलि महीअलि पूरिआ सुआमी सिरजहारु ॥ अनिक भांति होइ पसरिआ नानक एकंकारु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ एकम एकंकारु प्रभु करउ बंदना धिआइ ॥ गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरनि परउ हरि राइ ॥ ता की आस कलिआण सुख जा ते सभु कछु होइ ॥ चारि कुंट दह दिसि भ्रमिओ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ बेद पुरान सिम्रिति सुने बहु बिधि करउ बीचारु ॥ पतित उधारन भै हरन सुख सागर निरंकार ॥ दाता भुगता देनहारु तिसु बिनु अवरु न जाइ ॥ जो चाहहि सोई मिलै नानक हरि गुन गाइ ॥ १ ॥ गोबिंद जसु गाईरे हरि नीत ॥ मिलि भजीरे साध सँगि मेरे मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ करउ बंदना अनिक वार सरनि परउ हरि राइ ॥ भ्रम कटीरे नानक साध सँगि दुतीआ भाउ मिटाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ दुतीआ दुरमति दूरि करि गुर सेवा करि नीत ॥ राम रतनु मनि तनि बसै तजि कामु क्रोधु लोभु मीत ॥ मरणु मिटै जीवनु मिलै बिनसहि

सगल कलेस ॥ आपु तजहु गोबिंद भजहु भाउ भगति परवेस ॥ लाभु मिलै तोटा हिरै हरि दरगह पतिवँत ॥ राम नाम
 धनु सँचवे साच साह भगवँत ॥ ऊठत बैठत हरि भजहु साधू सँगि परीति ॥ नानक दुरमति छुटि गई पारब्रहम बसे चीति
 ॥ २ ॥ सलोकु ॥ तीनि बिआपहि जगत कउ तुरीआ पावै कोइ ॥ नानक सँत निरमल भए जिन मनि वसिआ सोइ ॥
 ३ ॥ पउड़ी ॥ त्रितीआ त्रै गुण बिखै फल कब उतम कब नीचु ॥ नरक सुरग भ्रमतउ घणो सदा सँघारै मीचु ॥ हरख
 सोग सहसा सँसार हउ हउ करत बिहाइ ॥ जिनि कीए तिसहि न जाणनी चितवहि अनिक उपाइ ॥ आपि बिआपि
 उपाधि रस कबहु न तूटै ताप ॥ पारब्रहम पूरन धनी नह बूझै परताप ॥ मोह भरम बूडत घणो महा नरक महि वास ॥ करि
 किरपा प्रभ शखी लेहु नानक तेरी आस ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ चतुर सिआणा सुघडु सोइ जिनि तजिआ अभिमानु ॥ चारि
 पदारथ असट सिधि भजु नानक हरि नामु ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ चतुरथि चारे बेद सुणि सोधिओ ततु बीचारु ॥ सरब खेम
 कलिआण निधि राम नामु जपि सारु ॥ नरक निवारै दुख हरै तूटहि अनिक कलेस ॥ मीचु हुटै जम ते छुटै हरि कीरतन
 परवेस ॥ भउ बिनसै अँमितु रसै रँगि रते निरँकार ॥ दुख दारिद अपवित्रता नासहि नाम अधार ॥ सुरि नर मुनि जन
 खोजते सुख सागर गोपाल ॥ मनु निरमलु मुखु ऊजला होइ नानक साध रवाल ॥ ४ ॥ सलोकु ॥ पँच बिकार मन महि
 बसे राचे माइआ सँगि ॥ साध सँगि होइ निरमला नानक प्रभ कै रँगि ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ पँचमि पँच प्रधान ते जिह
 जानिओ परपँचु ॥ कुसम बास बहु रँगु घणो सभ मिथिआ बलबँचु ॥ नह जापै नह बूझीऐ नह कछु करत बीचारु ॥
 सुआद मोह रस बेधिओ अगिआनि रचिओ सँसारु ॥ जनम मरण बहु जोनि भ्रमण कीने करम अनेक ॥ रचनहारु नह
 सिमरिओ मनि न बीचारि बिबेक ॥ भाउ भगति भगवान सँगि माइआ लिपत न रँच ॥ नानक बिरले पाईअहि जो न
 रचहि परपँच ॥ ५ ॥ सलोकु ॥ खट सासत्र ऊचौ कहहि अँतु न पारावार ॥ भगत सोहहि गुण गावते नानक प्रभ कै

दुआर ॥ ६ ॥ पउड़ी ॥ खसटमि खट सासत्र कहहि सिमिति कथहि अनेक ॥ ऊतमु ऊचौ पारब्रह्म गुण अंतु न जाणहि
 सेख ॥ नारद मुनि जन सुक बिआस जसु गावत गोबिंद ॥ रस गीथे हरि सिउ बीथे भगत रचे भगवंत ॥ मोह मान भ्रमु
 बिनसिओ पाई सरनि दइआल ॥ चरन कमल मनि तनि बसे दरसनु देखि निहाल ॥ लाभु मिलै तोटा हिरै साध सँगि लिव
 लाइ ॥ खाटि खजाना गुण निधि हरे नानक नामु धिआइ ॥ ६ ॥ सलोकु ॥ संत मंडल हरि जसु कथहि बोलहि सति सुभाइ
 ॥ नानक मनु संतोखीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ ७ ॥ पउड़ी ॥ सपतमि संचहु नाम धनु टूटि न जाहि भंडार ॥ संत संगति
 महि पाईऐ अंतु न पारावार ॥ आपु तजहु गोबिंद भजहु सरनि परहु हरि राइ ॥ दूख हरै भवजलु तरै मन चिंदिआ फलु पाइ ॥
 आठ पहर मनि हरि जपै सफलु जनमु परवाणु ॥ अंतरि बाहरि सदा सँगि करनैहारु पछाणु ॥ सो साजनु सो सखा मीतु जो
 हरि की मति देइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै हरि हरि नामु जपेइ ॥ ७ ॥ सलोकु ॥ आठ पहर गुन गाईअहि तजीअहि अवरि
 जँजाल ॥ जम कँकरु जोहि न सकई नानक प्रभू दइआल ॥ ८ ॥ पउड़ी ॥ असटमी असट सिधि नव निधि ॥ सगल
 पदारथ पूरन बुधि ॥ कवल प्रगास सदा आनंद ॥ निरमल रीति निरोधर मंत ॥ सगल धरम पवित्र इसनानु ॥ सभ महि ऊच
 बिसेख गिआनु ॥ हरि हरि भजनु पूरे गुर सँगि ॥ जपि तरीऐ नानक नाम हरि रँगि ॥ ८ ॥ सलोकु ॥ नाराइणु नह
 सिमरिओ मोहिओ सुआद बिकार ॥ नानक नाम बिसारिऐ नरक सुरग अवतार ॥ ९ ॥ पउड़ी ॥ नउमी नवे छिद्र अपवीत
 ॥ हरि नामु न जपहि करत बिपरीति ॥ पर त्रिअ रमहि बकहि साध निंद ॥ करन न सुनही हरि जसु बिंद ॥ हिरहि पर दरबु
 उदर कै ताई ॥ अगनि न निवरै त्रिसना न बुझाई ॥ हरि सेवा बिनु एह फल लागे ॥ नानक प्रभ बिसरत मरि जमहि अभागे
 ॥ ९ ॥ सलोकु ॥ दस दिस खोजत मै फिरिओ जत देखउ तत सोइ ॥ मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ ॥ १०
 ॥ पउड़ी ॥ दसमी दस दुआर बसि कीने ॥ मनि संतोखु नाम जपि लीने ॥ करनी सुनीऐ जसु गोपाल ॥ नैनी पेखत

साध दइआल ॥ रसना गुन गावै बेअंत ॥ मन महि चितवै पूरन भगवंत ॥ हसत चरन संत टहल कमाईये ॥ नानक इहु
सँजमु प्रभ किरपा पाईये ॥ १० ॥ सलोकु ॥ ऐको एकु बखानीये बिरला जाणै स्वादु ॥ गुण गोबिंद न जाणीये नानक
सभु बिसमादु ॥ ११ ॥ पउड़ी ॥ एकादसी निकटि पेखहु हरि रामु ॥ इंद्री बसि करि सुणहु हरि नामु ॥ मनि संतोखु सरब
जीअ दइआ ॥ इन बिधि बरतु संपूरन भइआ ॥ धावत मनु राखै इक ठाइ ॥ मनु तनु सुधु जपत हरि नाइ ॥ सभ महि
पूरि रहे पारब्रहम ॥ नानक हरि कीरतनु करि अटल एहु धरम ॥ ११ ॥ सलोकु ॥ दुरमति हरी सेवा करी भेटे साध क्रिपाल
॥ नानक प्रभ सिउ मिलि रहे बिनसे सगल जँजाल ॥ १२ ॥ पउड़ी ॥ दुआदसी दानु नामु इसनानु ॥ हरि की भगति
करहु तजि मानु ॥ हरि अँम्रित पान करहु साध सँगि ॥ मन त्रिपतासै कीरतन प्रभ रँगि ॥ कोमल बाणी सभ कउ संतोखै
॥ पँच भू आतमा हरि नाम रसि पोखै ॥ गुर पूरे ते एह निहचउ पाईये ॥ नानक राम रमत फिरि जोनि न आईये ॥ १२ ॥
सलोकु ॥ तीनि गुणा महि बिआपिआ पूरन होत न काम ॥ पतित उधारणु मनि बसै नानक छूटै नाम ॥ १३ ॥ पउड़ी ॥
त्रउदसी तीनि ताप संसार ॥ आवत जात नरक अवतार ॥ हरि हरि भजनु न मन महि आइओ ॥ सुख सागर प्रभु निमख
न गाइओ ॥ हरख सोग का देह करि बाधिओ ॥ दीरघ रोगु माइआ आसाधिओ ॥ दिनहि बिकार करत स्रमु पाइओ ॥
नैनी नीद सुपन बरड़ाइओ ॥ हरि बिसरत होवत एह हाल ॥ सरनि नानक प्रभ पुरख दइआल ॥ १३ ॥ सलोकु ॥ चारि
कुँट चउदह भवन सगल बिआपत राम ॥ नानक ऊन न देखीये पूरन ता के काम ॥ १४ ॥ पउड़ी ॥ चउदहि चारि कुँट
प्रभ आप ॥ सगल भवन पूरन परताप ॥ दसे दिसा रविआ प्रभु एकु ॥ धरनि अकास सभ महि प्रभ पेखु ॥ जल थल बन
परबत पाताल ॥ परमेस्वर तह बसहि दइआल ॥ सूखम असथूल सगल भगवान ॥ नानक गुरमुखि ब्रहम पछान ॥ १४
॥ सलोकु ॥ आतमु जीता गुरमती गुण गाए गोबिंद ॥ संत प्रसादी भै मिटे नानक बिनसी चिंद ॥ १५ ॥

पउड़ी ॥ अमावस आतम सुखी भए संतोखु दीआ गुरदेव ॥ मनु तनु सीतलु सांति सहज लाग़ा प्रभ की सेव ॥ टूटे बंधन बहु
 बिकार सफल पूरन ता के काम ॥ दुर्मति मिटी हउमै छुटी सिमरत हरि को नाम ॥ सरनि गही पारब्रहम की मिटिआ आवा गवन
 ॥ आपि तरिआ कुटंब सिउ गुण गुबिंद प्रभ खन ॥ हरि की टहल कमावणी जपीरे प्रभ का नामु ॥ गुर पूरे ते पाइआ नानक सुख
 बिसामु ॥ १५ ॥ सलोकु ॥ पूरनु कबहु न डोलता पूरा कीआ प्रभ आपि ॥ दिनु दिनु चडै सवाइआ नानक होत न घाटि ॥ १६
 ॥ पउड़ी ॥ पूरनमा पूरन प्रभ एकु करण कारण समरथु ॥ जीअ जंत दइआल पुरखु सभ ऊपरि जा का हथु ॥ गुण निधान
 गोबिंद गुर कीआ जा का होइ ॥ अंतरजामी प्रभु सुजानु अलख निरंजन सोइ ॥ पारब्रहमु परमेसरो सभ बिधि जानणहार ॥ संत
 सहाई सरनि जोगु आठ पहर नमसकार ॥ अकथ कथा नह बूझीरे सिमरहु हरि के चरन ॥ पतित उधारन अनाथ नाथ नानक प्रभ
 की सरन ॥ १६ ॥ सलोकु ॥ दुख बिनसे सहसा गइओ सरनि गही हरि राइ ॥ मनि चिंदे फल पाइआ नानक हरि गुन गाइ ॥
 १७ ॥ पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै कोई करै बीचारु ॥ को उपदेसै को द्रिडै तिस का होइ उधारु ॥ किलबिख काटै होइ निरमला
 जनम जनम मलु जाइ ॥ हलति पलति मुखु ऊजला नह पोहै तिसु माइ ॥ सो सुरता सो बैसनो सो गिआनी धनवंतु ॥ सो सूरु
 कुलवंतु सोइ जिनि भजिआ भगवंतु ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु बैस उधरै सिमरि चंडाल ॥ जिनि जानिओ प्रभु आपना नानक तिसहि
 खाल ॥ १७ ॥

गउड़ी की वार महला ४ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु पुरखु दइआलु है जिसनो समतु सभु कोइ ॥ एक द्रिसटि करि देखदा मन भावनी ते सिधि होइ ॥
 सतिगुर विचि अमितु है हरि उतमु हरि पदु सोइ ॥ नानक किरपा ते हरि धिआईरे गुरमुखि पावै कोइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हउमै
 माइआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि ॥ लाहा हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि ॥ हउमै मैलु बिखु उतरै हरि

अँम्रितु हरि उर धारि ॥ सभि कारज तिन के सिधि हरि जिन गुरमुखि किरपा धारि ॥ नानक जो धुरि मिले से मिलि रहे हरि
 मेले सिरजणहारि ॥ २ ॥ पउडी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचा गोसाई ॥ तुधुनो सभ धिआईदी सभ लगै तेरी पाई
 ॥ तेरी सिफति सुआलिओ सरूप है जिनि कीती तिसु पारि लघाई ॥ गुरमुखा नो फलु पाइदा सचि नामि समाई ॥ वडे मेरे
 साहिबा वडी तेरी वडिआई ॥ १ ॥ सलोक मः ४ ॥ विणु नावै होरु सलाहणा सभु बोलणु फिका सादु ॥ मनमुख
 अहँकारु सलाहदे हउमै ममता वादु ॥ जिन सालाहनि से मरहि खपि जावै सभु अपवादु ॥ जन नानक गुरमुखि उबरे जपि
 हरि हरि परमानादु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सतिगुर हरि प्रभु दसि नामु धिआई मन हरी ॥ नानक नामु पवितु हरि मुखि बोली
 सभि दुख परहरी ॥ २ ॥ पउडी ॥ तु आपे आपि निरँकारु है निरँजन हरि राइआ ॥ जिनी तू इक मनि सचु धिआइआ
 तिन का सभु दुखु गवाइआ ॥ तेरा सरीकु को नाही जिसनो लवै लाइ सुणाइआ ॥ तुधु जेवडु दाता तू है निरँजना तू है सचु
 मेरै मनि भाइआ ॥ सचे मेरे साहिबा सचे सचु नाइआ ॥ २ ॥ सलोक मः ४ ॥ मन अँतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख
 दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥ १ ॥ मः ४ ॥ मनु तनु रता रँग सिउ गुरमुखि हरि गुणतासु
 ॥ जन नानक हरि सरणागती हरि मेले गुर साबासि ॥ २ ॥ पउडी ॥ तू करता पुरखु अगँमु है किसु नालि तू वडीरे ॥
 तुधु जेवडु होइ सु आखीरे तुधु जेहा तू है पडीरे ॥ तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगडीरे ॥ तू सचा सभस दा खसमु है
 सभ दू तू चडीरे ॥ तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कडीरे ॥ ३ ॥ सलोकु मः ४ ॥ मै मनि तनि प्रेमु पिरँम का अठे पहर
 लगनि ॥ जन नानक किरपा धारि प्रभ सतिगुर सुखि वसनि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ जिन अँदरि प्रीति पिरँम की जिउ बोलनि
 तिवै सोहनि ॥ नानक हरि आपे जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरँनि ॥ २ ॥ पउडी ॥ तू करता आपि अभुलु है भुलण विचि
 नाही ॥ तू करहि सु सचे भला है गुर सबदि बुझाही ॥ तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही ॥ तू साहिबु अगमु

दइआलु है सभ तुधु धिआही ॥ सभि जीअ तेरे तू सभस दा तू सभ छडाही ॥ ४ ॥ सलोक मः ४ ॥ सुणि साजन प्रेम सदेसरा
 अखी तार लगनि ॥ गुरि तुठै सजणु मेलिआ जन नानक सुखि सर्वनि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सतिगुरु दाता दइआलु है जिस नो
 दइआ सदा होइ ॥ सतिगुरु अँदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रहमु इकु सोइ ॥ निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु
 तिसटिआ न कोइ ॥ सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ ॥ सतिगुरु नो जेहा को इछदा तेहा फलु पाए
 कोइ ॥ नानक करता सभु किछु जाणदा जिदू किछु गुझा न होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसनो साहिबु वडा करे सोई वड जाणी
 ॥ जिसु साहिब भावै तिसु बखसि लए सो साहिब मनि भाणी ॥ जे को ओस दी रीस करे सो मूड अजाणी ॥ जिस नो
 सतिगुरु मेले सु गुण रवै गुण आखि वखाणी ॥ नानक सचा सचु है बुझि सचि समाणी ॥ ५ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि सति
 निरँजन अमरु है निरभउ निरवैरु निरँकारु ॥ जिन जपिआ इक मनि इक चिति तिन लथा हउमै भारु ॥ जिन गुरुमुखि हरि
 आराधिआ तिन संत जना जैकारु ॥ कोई निँदा करे पूरे सतिगुरु की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु ॥ सतिगुरु विचि
 आपि वरतदा हरि आपे रखणहारु ॥ धनु धँनु गुरु गुण गावदा तिस नो सदा सदा नमसकारु ॥ जन नानक तिन कउ
 वारिआ जिन जपिआ सिरजणहारु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ आपे धरती साजीअनु आपे आकासु ॥ विचि आपे जँत उपाइअनु
 मुखि आपे देइ गिरासु ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे ही गुणतासु ॥ जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख कटे तासु
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचे भावै ॥ जो तुधु सचु सलाहदे तिन जम कँकरु नेडि न आवै ॥ तिन के मुख
 दरि उजले जिन हरि हिरदै सचा भावै ॥ कूड़िआर पिछाहा सटीअनि कूडु हिरदै कपटु महा दुखु पावै ॥ मुह काले कूड़िआरीआ
 कूड़िआर कूडो होइ जावै ॥ ६ ॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु धरती धरम है तिसु विचि जेहा को बीजे तेहा फलु पाए ॥
 गुरसिखी अँमितु बीजिआ तिन अँमित फलु हरि पाए ॥ ओना हलति पलति मुख उजले ओइ हरि दरगह सची पैनाए ॥

इकन्हा अँदरिं खोटु नित खोटु कमावहि ओहु जेहा बीजे तेहा फलु खाए ॥ जा सतिगुरु सराफु नदरिं करि देखै सुआवगीर
 सभि उघडि आए ॥ ओइ जेहा चितवहि नित तेहा पाइनि ओइ तेहो जेहे दयि वजाए ॥ नानक दुही सिरी खसमु आपे वरतै
 नित करि करि देखै चलत सबाए ॥ १ ॥ मः ४ ॥ इकु मनु इकु वरतदा जितु लगै सो थाइ पाइ ॥ कोई गला करे घनेरीआ
 जि घरि वथु होवै साई खाइ ॥ बिनु सतिगुर सोझी ना पवै अहंकार न विचहु जाइ ॥ अहंकारीआ नो दुख भुख है हथु तडहि
 घरि घरि मँगाइ ॥ कूडु ठगी गुझी ना रहै मुलँमा पाजु लहि जाइ ॥ जिसु होवै पूरबि लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ
 ॥ जिउ लोहा पारसि भेटीरे मिलि संगति सुवरनु होइ जाइ ॥ जन नानक के प्रभ तू धणी जिउ भावै तिवै चलाइ ॥ २ ॥
 पउडी ॥ जिन हरि हिरदै सेविआ तिन हरि आपि मिलाए ॥ गुण की साझ तिन सिउ करी सभि अवगण सबदि जलाए ॥
 अउगण विकणि पलरी जिसु देहि सु सचे पाए ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि अउगण मेटि गुण परगटीआए ॥ वडी
 वडिआई वडे की गुरमुखि आलाए ॥ ७ ॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुर विचि वडी वडिआई जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआवै
 ॥ हरि हरि नामु रमत सुच सँजमु हरि नामे ही त्रिपतावै ॥ हरि नामु ताणु हरि नामु दीबाणु हरि नामो रख कारावै ॥ जो
 चितु लाइ पूजे गुर मूरति सो मन इछे फल पावै ॥ जो निँदा करे सतिगुर पूरे की तिसु करता मार दिवावै ॥ फेरि ओहु वेला
 ओसु हथि न आवै ओहु आपणा बीजिआ आपे खावै ॥ नरकि घोरि मुहि कालै खडिआ जिउ तसकरु पाइ गलावै ॥ फिरि
 सतिगुर की सरणी पवै ता उबरै जा हरि हरि नामु धिआवै ॥ हरि बाता आखि सुणाए नानकु हरि करते एवै भावै ॥ १ ॥ मः
 ४ ॥ पूरे गुर का हुकमु न मँनै ओहु मनमुखु अगिआनु मुठा बिखु माइआ ॥ ओसु अँदरिं कूडु कूडो करि बुझै अणहोदे झगडे
 दयि ओस दै गलि पाइआ ॥ ओहु गल फरोसी करे बहुतेरी ओस दा बोलिआ किसै न भाइआ ॥ ओहु घरि घरि हँढै जिउ रँन
 दोहागणि ओसु नालि मुहु जोड़े ओसु भी लछणु लाइआ ॥ गुरमुखि होइ सु अलिपतो वरतै ओस दा पासु छडि गुर

पासि बहि जाइआ ॥ जो गुरु गोपे आपणा सु भला नाही पंचहु ओनि लाहा मूलु सभु गवाइआ ॥ पहिला आगमु निगमु
 नानकु आखि सुणाए पूरे गुर का बचनु उपरि आइआ ॥ गुरसिखा वडिआई भावै गुर पूरे की मनमुखा ओह वेला हथि न आइआ
 ॥ २ ॥ पउडी ॥ सचु सचा सभ दू वडा है सो लए जिसु सतिगुरु टिके ॥ सो सतिगुरु जिं सचु धिआइदा सचु सचा सतिगुरु
 इके ॥ सोई सतिगुरु पुरख है जिनि पँजे दूत कीते वसि छिके ॥ जिं बिनु सतिगुर सेवे आपु गणाइदे तिन अँदरि कूडु फिटु फिटु
 मुह फिके ॥ ओइ बोले किसै न भावनी मुह काले सतिगुर ते चुके ॥ ८ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि प्रभ का सभु खेतु है हरि आपि
 किरसाणी लाइआ ॥ गुरमुखि बखसि जमाईअनु मनमुखी मूलु गवाइआ ॥ सभु को बीजे आपणे भले नो हरि भावै सो खेतु
 जमाइआ ॥ गुरसिखी हरि अँमितु बीजिआ हरि अँमित नामु फलु अँमितु पाइआ ॥ जमु चूहा किरस नित कुरकदा हरि करतै
 मारि कढाइआ ॥ किरसाणी जँमी भाउ करि हरि बोहल बखस जमाइआ ॥ तिन का काड़ा अँदेसा सभु लाहिओनु जिनी
 सतिगुरु पुरखु धिआइआ ॥ जन नानक नामु अराधिआ आपि तरिआ सभु जगतु तराइआ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सारा दिनु
 लालचि अटिआ मनमुखि होरे गला ॥ राती ऊँचै दबिआ नवे सोत सभि ढिला ॥ मनमुखा दै सिरि जोरा अमरु है नित देवहि
 भला ॥ जोरा दा आखिआ पुरख कमावदे से अपवित अमेध खला ॥ कामि विआपे कुसुध नर से जोरा पुछि चला ॥ सतिगुर
 कै आखिरे जो चलै सो सति पुरखु भल भला ॥ जोरा पुरख सभि आपि उपाइअनु हरि खेल सभि खिला ॥ सभ तेरी बणत
 बणावणी नानक भल भला ॥ २ ॥ पउडी ॥ तूँ वेपरवाहु अथाहु है अतुलु किउ तुलीरे ॥ से वडभागी जिं तुधु धिआइदे जिं
 सतिगुरु मिलीरे ॥ सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीरे ॥ सतिगुर की रीसै होरि कचु पिचु बोलदे से कूडिआर
 कूडे झड़ि पड़ीरे ॥ ओन्हा अँदरि होरु मुखि होरु है बिखु माइआ नो झखि मरदे कड़ीरे ॥ ९ ॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुर की
 सेवा निरमली निरमल जनु होइ सु सेवा घाले ॥ जिन्ह अँदरि कपटु विकारु झूठु ओइ आपे सचै वखि कढे जजमाले ॥

सचिआर सिख बहि सतिगुर पासि घालनि कूड़िआर न लभनी कितै थाइ भाले ॥ जिना सतिगुर का आखिआ सुखावै नाही
 तिन्हा मुह भलेरे फिरहि दयि गाले ॥ जिन अँदरि प्रीति नही हरि केरी से किचरकु वेराईअनि मनमुख बेताले ॥ सतिगुर नो
 मिलै सु आपणा मनु थाइ रखै ओहु आपि वरतै आपणी वथु नाले ॥ जन नानक इकना गुरु मेलिं सुखु देवै इकि आपे वखि
 कडै ठगवाले ॥ १ ॥ मः ४ ॥ जिन्हा अँदरि नामु निधान हरि तिन के काज दयिआ दे रासि ॥ तिन चूकी मुहताजी लोकन
 की हरि प्रभु अँगु करि बैठा पासि ॥ जां करता वलिं ता सभु को वलिं सभिं दरसनु देखिं करहि साबासि ॥ साहु पातिसाहु
 सभु हरि का कीआ सभिं जन कउ आइ करहि रहरासि ॥ गुर पूरे की वडी वडिआई हरि वडा सेवि अतल्लु सुखु पाइआ ॥ गुर
 पूरे दानु दीआ हरि निहचलु नित बखसे चडै सवाइआ ॥ कोई निँदकु वडिआई देखिं न सकै सो करतै आपि पचाइआ ॥
 जनु नानकु गुण बोलै करते के भगता नो सदा रखदा आइआ ॥ २ ॥ पउडी ॥ तूसाहिबु अगम दइआलु है वड दाता दाणा
 ॥ तुधु जेवडु मै होरु को दिसि न आवई तू हैं सुघडु मेरै मनि भाणा ॥ मोहु कुटँबु दिसि आवदा सभु चलणहारा आवण
 जाणा ॥ जो बिनु सचे होरतु चितु लाइदे से कूड़िआर कूड़ा तिन माणा ॥ नानक सचु धिआइ तू बिनु सचे पचि पचि मुए
 अजाणा ॥ १० ॥ सलोक मः ४ ॥ अगो दे सत भाउ न दिचै पिछो दे आखिआ कंमि न आवै ॥ अध विचि फिरै मनमुखु
 वेचारा गली किउ सुखु पावै ॥ जिसु अँदरि प्रीति नही सतिगुर की सु कूड़ी आवै कूड़ी जावै ॥ जे क्रिपा करे मेरा हरि प्रभ
 करता तां सतिगुरु पारब्रहमु नदरी आवै ॥ ता अपिउ पीवै सबदु गुर केरा सभु काड़ा अँदेसा भरमु चुकावै ॥ सदा अनँदि रहै
 दिनु राती जन नानक अनदिनु हरि गुण गावै ॥ १ ॥ मः ४ ॥ गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु
 धिआवै ॥ उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अँमित सरि नावै ॥ उपदेसि गुरु हरि हरि जपु जापै सभिं किलविख पाप
 दोख लहि जावै ॥ फिरि चडै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥ जो सासि गिरासि धिआए

मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥ जनु
 नानकु धूड़ि मँगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो तुधु सचु धिआइदे से विरले थोड़े
 ॥ जो मनि चिटि इकु अराधदे तिन की बरकति खाहि असँख करोड़े ॥ तुधुनो सभ धिआइदी से थाइ पए जो साहिब लोड़े ॥
 जो बिनु सतिगुर सेवे खादे पैनदे से मुए मरि जँमे कोढ़े ॥ ओइ हाजरु मिठा बोलदे बाहरि विसु कढहि मुखि घोले ॥ मनि खोटे
 दयि विछोड़े ॥ ११ ॥ सलोक मः ४ ॥ मलु जूई भरिआ नीला काला खिधोलड़ा तिनि वेसुखि वेसुखै नो पाइआ ॥ पासि न
 देई कोई बहणि जगत महि गूह पड़ि सगवी मलु लाइ मनमुखु आइआ ॥ पराई जो निँदा चुगली नो वेमुखु करि कै भेजिआ
 ओथै भी मुहु काला दुहा वेमुखा दा कराइआ ॥ तड़ सुणिआ सभतु जगत विचि भाई वेमुखु सणै नफरै पउली पउदी फावा होइ
 कै उठि घरि आइआ ॥ अगै संगती कुड़मी वेसुखु रलणा न मिलै ता वहुटी भतीजीं, फिरि आणि घरि पाइआ ॥ हलतु पलतु
 दोवै गए नित भुखा कूके तिहाइआ ॥ धनु धनु सुआमी करता पुरखु है जिनि निआउ सचु बहि आपि कराइआ ॥ जो निँदा
 करे सतिगुर पूरे की सो साचै मारि पचाइआ ॥ एहु अखरु तिनि आखिआ जिनि जगतु सभु उपाइआ ॥ १ ॥ मः ४ ॥
 साहिबु जिसका नंगा भुखा होवै तिसदा नफरु किथहु रजि खाए ॥ जि साहिब कै घरि वथु होवै सु नफरै हथि आवै अणहोदी
 किथहु पाए ॥ जिस दी सेवा कीती फिरि लेखा मँगीए सा सेवा अउखी होई ॥ नानक सेवा करहु हरि गुर सफल दरसन की
 फिरि लेखा मँगै न कोई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नानक वीचारहि सँति जन चारि वेद कहँदे ॥ भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवँदे
 ॥ प्रगट पहारा जापदा सभि लोक सुणँदे ॥ सुखु न पाइनि मुगध नर सँत नालि खहँदे ॥ ओइ लोचनि ओना गुणै नो ओइ
 अहँकारि सडँदे ॥ ओइ विचारे किआ करहि जा भाग धुरि मँदे ॥ जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न सँदे ॥ वैरु करहि निरवैर
 नालि धरम निआइ पचँदे ॥ जो जो सँति सरापिआ से फिरहि भवँदे ॥ पेडु मुँढाहँ कटिआ तिसु डाल सुकँदे ॥ १२ ॥

सलोक मः ४ ॥ अंतरि हरि गुरू धिआइदा वडी वडिआई ॥ तुसि दिती पूरे सतिगुरू घटै नाही इकु तिलु किसै दी घटाई ॥
 ॥ सचु साहिबु सतिगुरू कै वलि है तां झखिं झखिं मरै सभ लोकाई ॥ निंदका के मुह काले करे हरि करतै आपि वधाई ॥
 जिउ जिउ निंदक निंद करहि तित तित नित नित चडै सवाई ॥ जन नानक हरि आराधिया तिनि पैरी आणि सभ पाई ॥ १
 ॥ मः ४ ॥ सतिगुर सेती गणत जि रखै हलतु पलतु सभु तिस का गइआ ॥ नित झहीआ पाए झगू सुटे झखदा झखदा
 झड़ि पइआ ॥ नित उपाव करै माइआ धन कारणि अगला धनु भी उडि गइआ ॥ किआ ओहु खटे किआ ओहु खावै जिसु
 अंदरि सहसा दुखु पइआ ॥ निरवैरै नालि जि वैरु रचाए सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ ॥ ओसु अगै पिछै ढोई
 नाही जिसु अंदरि निंदा मुहि अंबु पइआ ॥ जे सुइने नो ओहु हथु पाए ता खेहू सेती रलि गइआ ॥ जे गुर की सरणी फिरि
 ओहु आवै ता पिछले अउगण बखसि लइआ ॥ जन नानक अनदिनु नामु धिआइआ हरि सिमरत किलविख पाप गइआ
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुहै सचा सचु तू सभ दू उपरि तू दीबाणु ॥ जो तुधु सचु धिआइदे सचु सेवनि सचे तेरा माणु ॥ ओन्हा
 अंदरि सचु मुख उजले सचु बोलनि सचे तेरा ताणु ॥ से भगत जिनी गुरमुखि सालाहिआ सचु सबदु नीसाणु ॥ सचु जि
 सचे सेवदे तिन वारी सद कुरबाणु ॥ १३ ॥ सलोक मः ४ ॥ धुरि मारे पूरे सतिगुरू सेई हुणि सतिगुरि मारे ॥ जे मेलण
 नो बहुतेरा लोचीए न देई मिलण करतारे ॥ सत संगति ढोई ना लहनि विचि संगति गुरि वीचारे ॥ कोई जाइ मिलै हुणि
 ओन्हा नो तिसु मारे जमु जंदारे ॥ गुरि बाबै फिटके से फिटे गुर अंगादि कीते कूड़िआरे ॥ गुरि तीजी पीड़ी वीचारिआ
 किआ हथि एना वेचारे ॥ गुरु चउथी पीड़ी टिकिआ तिनि निंदक दुसट सभि तारे ॥ कोई पुतु सिखु सेवा करे सतिगुरू की
 तिसु कारज सभि सवारे ॥ जो इछै सो फलु पाइसी पुतु धनु लखमी खड़ि मेले हरि निसतारे ॥ सभि निधान सतिगुरू
 विचि जिसु अंदरि हरि उर धारे ॥ सो पाए पूरा सतिगुरू जिसु लिखिआ लिखतु लिलारे ॥ जनु नानकु मागै धूड़ि तिन जो

गुरसिख मित पिआरे ॥ १ ॥ मः ४ ॥ जिन कउ आपि देइ वडिआई जगतु भी आपे आणि तिन कउ पैरी पाए ॥ डरीऐ तां
 जे किछु आप दू कीचै सभु करता आपणी कला वधाए ॥ देखहु भाई एहु अखाड़ा हरि प्रीतम सचे का जिनि आपणै जोरि
 सभि आणि निवाए ॥ आपणिआ भगता की रख करे हरि सुआमी निंदका दुसटा के मुह काले कराए ॥ सतिगुर की वडिआई
 नित चडै सवाई हरि कीरति भगति नित आपि कराए ॥ अनदिनु नामु जपहु गुरसिखहु हरि करता सतिगुरु घरी वसाए ॥
 सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥ गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा
 गुर का जैकारु संसारि सभतु कराए ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दासन की हरि पैज रखाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा
 साहिबु आपि है सचु साह हमारे ॥ सचु पूजी नामु द्रिड़ाइ प्रभ वणजारे थारे ॥ सचु सेवहि सचु वणंजि लैहि गुण कथह निरारे
 ॥ सेवक भइ से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥ तू सचा साहिबु अलखु है गुर सबदि लखारे ॥ १४ ॥ सलोक मः ४ ॥ जिंसु
 अंदरि ताति पराई होवै तिसदा कदे न होवी भला ॥ ओस दै आखिरे कोई न लगै नित ओजाड़ी पूकारे खला ॥ जिंसु अंदरि
 चुगली चुगलो वजै कीता करतिआ ओसदा सभु गइआ ॥ नित चुगली करे अणहोदी पराई मुहु कढि न सकै ओसदा काला
 भइआ ॥ करम धरती सरीरु कलिजुग विचि जेहा को बीजे तेहा को खाए ॥ गला उपरि तपावसु न होई विसु खाधी
 ततकाल मरि जाए ॥ भाई वेखहु निआउ सचु करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाए ॥ जन नानक कउ सभ सोझी पाई हरि
 दर कीआ बाता आखि सुणाए ॥ १ ॥ मः ४ ॥ होदैं परतखि गुरु जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही ॥ कोई जाइ मिलै
 तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही ॥ जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भँभलभूसे खाही ॥ जिन गुरु
 गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही ॥ तिनकी भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही ॥ ओन्हा दा आखिआ को ना
 सुणै नित हउले हउलि मराही ॥ सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओन्हा अगै पिछै थाउ नाही ॥ जो सतिगुर मारे

तिन जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पति गवाही ॥ ओइ अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओसु मिलै तिसु कुसटु उठाही ॥
 हरि तिन का दरसनु ना करहु जो दूजै भाइ चितु लाही ॥ धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिसु नालि किहु चारा नाही ॥
 जन नानक नामु अराधि तू तिसु अपडि को न सकाही ॥ नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चडै चड़ाही ॥ २ ॥ मः ४
 ॥ जि होदैं गुरू बहि टिकिआ तिसु जन की वडिआई वडी होई ॥ तिसु कउ जगतु निविआ सभु पैरी पइआ जसु वरतिआ
 लोई ॥ तिसु कउ खंड ब्रहमंड नमसकारु करहि जिसकै मसतकि हथु धरिआ गुरि पूरे सो पूरा होई ॥ गुर की वडिआई नित
 चडै सवाई अपडि को न सकोई ॥ जनु नानकु हरि करतै आपि बहि टिकिआ आपे पैज रखै प्रभु सोई ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥
 काइआ कोटु अपारु है अंदरि हटनाले ॥ गुरमुखि सउदा जो करे हरि वसतु समाले ॥ नामु निधानु हरि वणजीरे हीरे
 परवाले ॥ विणु काइआ जि होर थै धनु खोजदे से मूड बेताले ॥ से उझडि भरमि भवाईअहि जिउ झाड़ मिरगु भाले ॥ १७
 ॥ सलोक मः ४ ॥ जो निँदा करे सतिगुर पूरे की सु अउखा जग महि होइआ ॥ नरक घोरु दुख खूहु है ओथै पकडि ओहु
 ढोइआ ॥ कूक पुकार को न सुणे ओहु अउखा होइ होइ रोइआ ॥ ओनि हलतु पलतु सभु गवाइआ लाहा मूलु सभु खोइआ
 ॥ ओहु तेली सँदा बलदु करि नित भलके उठि प्रभि जोइआ ॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु तिदू किछु गुझा न होइआ ॥
 जैसा बीजे सो लुणै जेहा पुरबि किनै बोइआ ॥ जिसु क्रिपा करे प्रभु आपणी तिसु सतिगुर के चरण धोइआ ॥ गुर सतिगुर
 पिछै तरि गइआ जिउ लोहा काठ सँगोइआ ॥ जन नानक नामु धिआइ तू जपि हरि हरि नामि सुखु होइआ ॥ १ ॥ मः ४
 ॥ वडभागीआ सोहागणी जिना गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ अंतर जोति प्रगासीआ नानक नामि समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ इहु सरीरु सभु धरमु है जिसु अंदरि सचे की विचि जोति ॥ गुहज रतन विचि लुकि रहे कोई गुरमुखि सेवकु कटै खोति
 ॥ सभु आतमरामु पछाणिआ तां इकु रविआ इको ओति पोति ॥ इकु देखिआ इकु मँनिआ इको सुणिआ स्रवण

सरोति ॥ जन नानक नामु सलाहि तू सचु सचे सेवा तेरी होति ॥ १६ ॥ सलोक मः ४ ॥ सभि रस तिन कै रिदै हहि जिन
 हरि वसिआ मन माहि ॥ हरि दरगहि ते मुख उजले तिन कउ सभि देखण जाहि ॥ जिन निरभउ नामु धिआइआ तिन कउ
 भउ कोई नाहि ॥ हरि उतमु तिनी सरेविआ जिन्ह कउ धुरि लिखिआ आहि ॥ ते हरि दरगहि पैन्हाईअहि जिन हरि वुठा मन
 माहि ॥ ओइ आपि तरे सभ कुटंब सिउ तिन पिछै सभु जगतु छडाहि ॥ जन नानक कउ हरि मेलि जन तिन वेखि वेखि हम
 जीवाहि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ से जँत भए हरीआवले जिनी मेरा
 सतिगुरु देखिआ जाइ ॥ धनु धँनु पिता धनु धँनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरु जणिआ माइ ॥ धनु धँनु गुरु जिनि
 नामु अराधिआ आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाइ ॥ हरि सतिगुरु मेलहु दइआ करि जनु नानकु धोवै पाइ ॥ २
 ॥ पउड़ी ॥ सचु सचा सतिगुरु अमरु है जिसु अँदरि हरि उरि धारिआ ॥ सचु सचा सतिगुरु पुरखु है जिनि कामु क्रोधु
 बिखु मारिआ ॥ जा डिठा पूरा सतिगुरु तां अँदरहु मनु साधारिआ ॥ बलिहारी गुरु आपणे सदा सदा घुमि वारिआ ॥
 गुरुमुखि जिता मनमुखि हारिआ ॥ १७ ॥ सलोक मः ४ ॥ करि किरपा सतिगुरु मेलिओनु मुखि गुरुमुखि नामु धिआइसी
 ॥ सो करे जि सतिगुरु भावसी गुरु पूरा घरी वसाइसी ॥ जिन अँदरि नामु निधानु है तिन का भउ सभु गवाइसी ॥ जिन
 रखण कउ हरि आपि होइ होर केती झखि झखि जाइसी ॥ जन नानक नामु धिआइ तू हरि हलति पलति छोडाइसी ॥ १
 ॥ मः ४ ॥ गुरसिखा कै मनि भावदी गुरु सतिगुरु की वडिआई ॥ हरि राखहु पैज सतिगुरु की नित चडै सवाई ॥ गुरु
 सतिगुरु कै मनि पारब्रहमु है पारब्रहमु छडाई ॥ गुरु सतिगुरु ताणु दीबाणु हरि तिनि सभ आणि निवाई ॥ जिनी डिठा मेरा
 सतिगुरु भाउ करि तिन के सभि पाप गवाई ॥ हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई ॥ जनु नानकु मँगै धूड़ि तिन जो
 गुरु के सिख मेरे भाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ आखि सलाही सिफति सचु सचु सचे की वडिआई ॥ सालाही सचु

सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाई ॥ सचु सचा रसु जिनी चखिआ से त्रिपति रहे आघाई ॥ इहु हरि रसु सेई जाणदे
 जिउ गूँगे मिठिआई खाई ॥ गुरि पूरै हरि प्रभु सेविआ मनि वजी वाधाई ॥ १८ ॥ सलोक मः ४ ॥ जिना अँदरि उमरथल
 सेई जाणनि सूलीआ ॥ हरि जाणहि सेई बिरहु हउ तिन विटहु सद घुमि घोलीआ ॥ हरि मेलहु सजणु पुरखु मेरा सिरु
 तिन विटहु तल रोलीआ ॥ जो सिख गुर कार कमावहि हउ गुलमु तिना का गोलीआ ॥ हरि रँगि चलूलै जो रते तिन
 भिनी हरि रँगि चोलीआ ॥ करि किरपा नानक मेलि गुर पहि सिरु वेचिआ मोलीआ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ अउगणी भरिआ
 सरीरु है किउ संतहु निरमलु होइ ॥ गुरमुखि गुण वेहाझीअहि मलु हउमै कढै धोइ ॥ सचु वणँजहि रँग सिउ सचु सउदा
 होइ ॥ तोटा मूलि न आवई लाहा हरि भावै सोइ ॥ नानक तिन सचु वणँजिआ जिना धुरि लिखिआ परापति होइ ॥ २
 ॥ पउडी ॥ सालाही सचु सालाहणा सचु सचा पुरखु निराले ॥ सचु सेवी सचु मनि वसै सचु सचा हरि रखवाले ॥ सचु
 सचा जिनी अराधिआ से जाइ रले सच नाले ॥ सचु सचा जिनी न सेविआ से मनमुख मूड बेताले ॥ ओह आलु पतालु
 मुहुहु बोलदे जिउ पीतै मदि मतवाले ॥ १९ ॥ सलोक महला ३ ॥ गउडी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेइ ॥ भाणै
 चलै सतिगुरु कै ऐसा सीगारु करेइ ॥ सचा सबदु भतारु है सदा सदा रावेइ ॥ जिउ उबली मजीठै रँगु गहगहा तिउ सचे
 नो जीउ देइ ॥ रँगि चलूलै अति रती सचे सिउ लगा नेहु ॥ कूडु ठगी गुझी ना रहै कूडु मुलँमा पलेटि धरेहु ॥ कूडी करनि
 वडाईआ कूडे सिउ लगा नेहु ॥ नानक सचा आपि है आपे नदरि करेइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सतसँगति महि हरि उसतति है
 सँगि साधू मिले पिआरिआ ॥ ओइ पुरख प्राणी धँनि जन हरि उपदेसु करहि परउपकारिआ ॥ हरि नामु द्विडावहि हरि
 नामु सुणावहि हरि नामे जगु निसतारिआ ॥ गुर वेखण कउ सभु कई लोचै नवरखँड जगति नमसकारिआ ॥ तुधु आपे
 आपु रखिआ सतिगुर विचि गुरु आपे तुधु सवारिआ ॥ तू आपे पूजहि पूज करावहि सतिगुर कउ सिरजणहारिआ ॥

कोई विछुड़ि जाइ सतिगुरू पासहु तिसु काला मुहु जमि मारिआ ॥ तिसु अगै पिछै ढोई नाही गुरसिखी मनि वीचारिआ ॥
 सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिआ ॥ जन नानक के गुरसिख पुतहु हरि जपिअहु हरि निसतारिआ
 ॥ २ ॥ महला ३ ॥ हउमै जगतु भुलाइआ दुर्मति बिखिआ बिकार ॥ सतिगुरू मिलै त नदरि होइ मनमुख अँधिआर ॥
 नानक आपे मेलिं लए जिसनो सबदि लए पिआरु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सचु सचे की सिफति सलाह है सो करे जिसु अँदरु
 भिजै ॥ जिन्ही इक मनि इकु अराधिआ तिन का कँधु न कबहू छिजै ॥ धनु धनु पुरख साबासि है जिन सचु रसना अँमितु
 पिजै ॥ सचु सचा जिन मनि भावदा से मनि सची दरगह लिजै ॥ धनु धँनु जनमु सचिआरीआ मुख उजल सचु करिजै ॥
 २० ॥ सलोक मः ४ ॥ साकत जाइ निवहि गुर आगै मनि खोटे कूड़ि कूड़िआरे ॥ जा गुरु कहै उठहु मेरे भाई बहि जाहि
 घुसरि बगुलारे ॥ गुरसिखा अँदरि सतिगुरू वरतै चुणि कढे लधोवारे ॥ ओइ अगै पिछै बहि मुहु छपाइनि न रलनी खोटेआरे
 ॥ ओन्हा दा भखु सु ओथै नाही जाइ कूडु लहनि भेडारे ॥ जे साकतु नरु खावाईरे लोचीरे बिखु कढै मुख उगलारे ॥ हरि
 साकत सेती सँगु न करीअहु ओइ मारे सिरजणहारे ॥ जिसका इहु खेलु सोई करि वेखै जन नानक नामु समारे ॥ १ ॥ मः ४
 ॥ सतिगुरू पुरखु अगँमु है जिसु अँदरि हरि उरि धारिआ ॥ सतिगुरू नो अपडि कोइ न सकई जिसु वलि सिरजणहारिआ
 ॥ सतिगुरू का खडगु सँजेउ हरि भगति है जितु कालु कँटकु मारि विडारिआ ॥ सतिगुरू का रखणहारा हरि आपि है
 सतिगुरू कै पिछै हरि सभि उबारिआ ॥ जो मँदा चितवै पूरे सतिगुरू का सो आपि उपावणहारै मारिआ ॥ एह गल होवै हरि
 दरगह सचे की जन नानक अगमु वीचारिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचु सुतिआ जिनी अराधिआ जा उठे ता सचु चवे ॥ से
 विरले जुग महि जाणीअहि जो गुरमुखि सचु रवे ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जि अनदिनु सचु लवे ॥ जिन मनि तनि सचा
 भावदा से सची दरगह गवे ॥ जनु नानकु बोलै सचु नामु सचु सचा सदा नवे ॥ २१ ॥ सलोकु मः ४ ॥

किआ सवणा किआ जागणा गुरमुखि ते परवाणु ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै से पूरे पुरख परधान ॥ करमी सतिगुरु
 पाईऐ अनदिनु लगै धिआनु ॥ तिन की संगति मिलि रहा दरगह पाई मानु ॥ सउदे वाहु वाहु उचरहि उठदे भी वाहु करेनि ॥
 नानक ते मुख उजले जिं नित उठि सँमालेनि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सतिगुरु सेवीऐ आपणा पाईऐ नामु अपारु ॥ भउजलिं
 डुबदिआ कढि लए हरि दाति करे दातारु ॥ धँनु धँनु से साह है जिं नामि करहि वापारु ॥ वणजारे सिख आवदे सबदि
 लघावणहारु ॥ जन नानक जिंन कउ क्रिपा भई तिन सेविआ सिरजणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचु सचे के जन भगत हहि
 सचु सचा जिनी अराधिआ ॥ जिंन गुरमुखि खोजि ढँढोलिआ तिन अँदरहु ही सचु लाधिआ ॥ सचु साहिबु सचु जिनी सेविआ
 कालु कँटकु मारि तिनी साधिआ ॥ सचु सचा सभ दू वडा है सचु सेवनि से सचि रलाधिआ ॥ सचु सचे नो साबासि है सचु सचा
 सेवि फलाधिआ ॥ २२ ॥ सलोक मः ४ ॥ मनमुखु प्राणी मुग्धु है नाम हीण भरमाइ ॥ बिनु गुर मनूआ ना टिकै फिरि फिरि
 जूनी पाइ ॥ हरि प्रभु आपि दइआल होहि तां सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ जन नानक नामु सलाहि तू जनम मरण दुखु जाइ ॥
 १ ॥ मः ४ ॥ गुरु सालाही आपणा बहु बिधि रँगि सुभाइ ॥ सतिगुर सेती मनु रता रखिआ बणत बणाइ ॥ जिहवा सालाहि
 न रजई हरि प्रीतम चितु लाइ ॥ नानक नावै की मनि भुख है मनु त्रिपतै हरि रसु खाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचु सचा कुदरति
 जाणीऐ दिनु राती जिनि बणाईआ ॥ सो सचु सलाही सदा सदा सचु सचे कीआ वडिआईआ ॥ सालाही सचु सलाह सचु सचु
 कीमति किनै न पाईआ ॥ जा मिलिआ पूरा सतिगुरु ता हाजरु नदरी आईआ ॥ सचु गुरमुखि जिनी सलाहिआ तिन्हा भुखा
 सभिं गवाईआ ॥ २३ ॥ सलोक मः ४ ॥ मै मनु तनु खोजि खोजेदिआ सो प्रभु लधा लोडि ॥ विसटु गुरु मै पाइआ जिनि
 हरि प्रभु दिता जोडि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ माइआधारी अति अँन्हा बोला ॥ सबदु न सुणई बहु शेल घचोला ॥ गुरमुखि जापै
 सबदि लिव लाइ ॥ हरि नामु सुणि मँने हरि नामि समाइ ॥ जो तिसु भावै सु करे कराइआ ॥ नानक वजदा जँतु

वजाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तु करता सभु किछु जाणदा जो जीआ अँदरि वरतै ॥ तू करता आपि अगणतु है सभु जगु विचि
 गणतै ॥ सभु कीता तेरा वरतदा सभ तेरी बणतै ॥ तू घटि घटि इकु वरतदा सचु साहिब चलतै ॥ सतिगुर नो मिले सु हरि
 मिले नाही किसै परतै ॥ २४ ॥ सलोकु मः ४ ॥ इहु मनूआ द्रिडु करि रखीऐ गुरमुखि लाईऐ चितु ॥ किउ सासि गिरासि
 विसारीऐ बहदिआ उठदिआ नित ॥ मरण जीवण की चिँता गई इहु जीअडा हरि प्रभ वसि ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू जन
 नानक नामु बखसि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुखु अहँकारी महलु न जाणै खिनु आगै खिनु पीछै ॥ सदा बुलाईऐ महलि न आवै
 किउ करि दरगह सीझै ॥ सतिगुर का महलु विरला जाणै सदा रहै कर जोड़ि ॥ आपणी क्रिपा करे हरि मेरा नानक लए बहोड़ि
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मँने ॥ जा सतिगुर का मनु मँनिआ ता पाप कसँमल भँने ॥
 उपदेसु जिं दिता सतिगुरु सो सुणिआ सिखी कँने ॥ जिन सतिगुर का भाणा मँनिआ तिन चड़ी चवगणि वँने ॥ इह चाल
 निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुणि मनु भिँने ॥ २५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जिनि गुरु गोपिआ आपणा तिसु ठउर न ठाउ ॥
 हलतु पलतु दोवै गए दरगह नाही थाउ ॥ ओह वेला हथि न आवई फिरि सतिगुर लगहि पाइ ॥ सतिगुर की गणतै घुसीऐ
 दुखे दुखि विहाइ ॥ सतिगुरु पुरखु निरवैरु है आपे लए जिंसु लाइ ॥ नानक दरसनु जिना वेखालिओनु तिना दरगह लए
 छडाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुखु अगिआनु दुर्मति अहँकारी ॥ अँतरि क्रोधु जूऐ मति हारी ॥ कूडु कुसतु ओहु पाप कमावै
 ॥ किआ ओहु सुणै किआ आखि सुणावै ॥ अँन्हा बोला खुइ उझड़ि पाइ ॥ मनमुखु अँधा आवै जाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे
 थाइ न पाइ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन के चित कठोर हहि से बहहि न सतिगुर पासि ॥ ओथै
 सचु वरतदा कूड़िआरा चित उदासि ॥ ओइ वलु छलु करि झति कढे फिरि जाइ बहहि कूड़िआरा पासि ॥ विचि सचे कूडु न
 गडई मनि वेखहु को निरजासि ॥ कूड़िआर कूड़िआरी जाइ रले सचिआर सिख बैठे सतिगुर पासि ॥ २६ ॥

सलोक मः ५ ॥ रहदे खुहदे निँदक मारिअनु करि आपे आहरु ॥ संत सहाई नानका वरतै सभ जाहरु ॥ १ ॥ मः ५ ॥
 मुँढहु भुले मुँढ ते किथै पाइनि हथु ॥ तिँनै मारे नानका जि करण कारण समरथु ॥ २ ॥ पउड़ी ५ ॥ लै फाहे राती तुरहि प्रभु
 जाणै प्राणी ॥ तकहि नारि पराईआ लुकि अँदरि ठाणी ॥ संन्ही देन्हि विखँम थाइ मिठा मद्दु माणी ॥ करमी आपो आपणी
 आपे पछुताणी ॥ अजरईल फरेसता तिल पीड़े घाणी ॥ २७ ॥ सलोक मः ५ ॥ सेवक सचे साह के सेई परवाणु ॥ दूजा
 सेवनि नानका से पचि पचि मुए अजाण ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु प्रभ मेटणा न जाइ ॥ राम नामु धनु
 वखरो नानक सदा धिआइ ॥ २ ॥ पउड़ी ५ ॥ नाराइणि लइआ नाठूँगड़ा पैर किथै रखै ॥ करदा पाप अमितिआ नित
 विसो चखै ॥ निँदा करदा पचि मुआ विचि देही भखै ॥ सचै साहिबु मारिआ कउणु तिसनो रखै ॥ नानक तिसु सरणागती
 जो पुरखु अलखै ॥ २८ ॥ सलोक मः ५ ॥ नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु ॥ तिनि प्रभि मारे नानका होइ
 होइ मुए हरामु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ अवरखध सभे कीतिअनु निँदक का दारु नाहि ॥ आपि भुलाए नानका पचि पचि जोनी
 पाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ५ ॥ तुसि दिता पूरै सतिगुरु हरि धनु सचु अखुटु ॥ सभि अँदैसे मिटि गए जम का भउ छुटु ॥ काम
 क्रोध बुरिआईआं सँगि साधू तुटु ॥ विणु सचे दूजा सेवदे हुइ मरसनि बुटु ॥ नानक कउ गुर बखसिआ नामै सँगि जुटु ॥
 २९ ॥ सलोक मः ४ ॥ तपा न होवै अँद्रहु लोभी नित माइआ नो फिरै जजमालिआ ॥ अगो दे सदिआ सतै दी भिखिआ
 लए नाही पिछो दे पछुताइ कै आणि तपै पुतु विचि बहालिआ ॥ पँच लोग सभि हसण लगे तपा लोभि लहरि है गालिआ ॥
 जिथै थोड़ा धनु वेखै तिथै तपा भिटै नाही धनि बहुतै डिठै तपै धरमु हारिआ ॥ भाई एहु तपा न होवी बगुला है बहि साध
 जना वीचारिआ ॥ सत पुरख की तपा निँदा करै संसारै की उसतती विचि होवै एतु दोखै तपा दयि मारिआ ॥ महा पुरखां
 की निँदा का वेखु जि तपे नो फलु लगा सभु गइआ तपे का घालिआ ॥ बाहरि बहै पँचा विचि तपा सदाए ॥ अँदरि बहै

तपा पाप कमार ॥ हरि अंदरला पापु पंचा नो उघा करि वेखालिआ ॥ धरम राइ जमकंकरा नो आखि छडिआ एसु तपे नो
 तिथै खडि पाइहु जिथै महा महं हतिआरिआ ॥ फिरि एसु तपे दै मुहि कोई लगहु नाही एह सतिगुर है फिटकारिआ ॥ हरि कै
 दरि वरतिआ सु नानकि आखि सुणाइआ ॥ सो बूझै जु दये सवारिआ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि भगतां हरि आराधिआ हरि की
 वडिआई ॥ हरि कीरतनु भगति नित गांवदे हरि नामु सुखदाई ॥ हरि भगतां नो नित नावै दी वडिआई बखसीअनु नित
 चडै सवाई ॥ हरि भगतां नो थिरु घरी बहालिअनु अपणी पैज रखाई ॥ निंदकां पासहु हरि लेखा मंगसी बहु देइ सजाई ॥
 जेहा निंदक अपणै जीइ कमावदे तेहो फलु पाई ॥ अंदरि कमाणा सरपर उघडै भावै कोई बहि धरती विचि कमाई ॥ जन
 नानकु देखि विगसिआ हरि की वडिआई ॥ २ ॥ पउड़ी मः ५ ॥ भगत जनां का राखा हरि आपि है किआ पापी करीरे ॥
 गुमानु करहि मूड गमानीआ विसु खाधी मरीरे ॥ आइ लगे नी दिह थोड़डे जिउ पका खेतु लुणीरे ॥ जेहे करम कमावदे
 तेवेहो भणीरे ॥ जन नानक का खसमु वडा है सभना दा धणीरे ॥ ३० ॥ सलोक मः ४ ॥ मनमुख मूलहु भुलिआ विचि
 लबु लोभु अहंकारु ॥ झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करहि वीचारु ॥ सुधि मति करतै सभ हिरि लई बोलनि सभु
 विकारु ॥ दितै कितै न संतोखीअहि अंतरि तिसना बहु अगिआनु अंध्यारु ॥ नानक मनमुखा नालो तुटी भली जिन
 माइआ मोह पिआरु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ जिना अंदरि दूजा भाउ है तिन्हा गुरमुखि प्रीति न होइ ॥ ओहु आवै जाइ भवाईरे
 सुपनै सुखु न कोइ ॥ कूडु कमावै कूडु उचरै कूडि लागिआ कूडु होइ ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है दुखि बिनसै दुखु रोइ ॥
 नानक धातु लिवै जोडु न आवई जे लोचै सभु कोई ॥ जिन कउ पोतै पुंनु पइआ तिना गुर सबदी सुखु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी
 मः ५ ॥ नानक वीचारहि संत मुनि जनां चारि वेद कहंदे ॥ भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ परगट पाहारै जापदे
 सभि लोक सुणंदे ॥ सुखु न पाइन्हि मुगध नर संत नाल खहंदे ॥ ओइ लोचनि ओन्हा गुणै नो ओइ अहंकारि संडंदे ॥ ओइ

वेचारे किआ करहि जां भाग धुरि मँदे ॥ जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न सँदे ॥ वैरु करनि निरवैर नालि धरमि निआइ
 पचँदे ॥ जो जो सँत सरापिआ से फिरहि भवँदे ॥ पेडु मुँढाहू कटिआ तिसु डाल सुकँदे ॥ ३१ ॥ सलोक मः ५ ॥ गुर नानक
 हरि नामु द्विडाइआ भँनण घड़न समरथु ॥ प्रभु सदा समालहि मित्र तू दुखु सबाइआ लथु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ खुधिआवँतु न
 जाणई लाज कुलाज कुबोलु ॥ नानकु मांगै नामु हरि करि किरपा सँजोगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जेवेहे करम कमावदा तेवेहे फलते
 ॥ चबे तता लोह सारु विचि सँघै पलते ॥ घति गलावां चालिआ तिनि दूति अमल ते ॥ काई आस न पुँनीआ नित पर मलु
 हिरते ॥ कीआ न जाणै अकिरतघण विचि जोनी फिरते ॥ सभे धिरां निखुटीअसु हिरि लईअसु धरते ॥ विझण कलह न
 देवदा तां लइआ करते ॥ जो जो करते अँहमेउ झड़ि धरती पड़ते ॥ ३२ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखिं गिआनु बिबेक बुधि होइ
 ॥ हरि गुण गावै हिरदै हारु परोइ ॥ पवितु पावनु परम बीचारी ॥ जि ओसु मिलै तिसु पारि उतारी ॥ अँतरि हरि नामु
 बासना समाणी ॥ हरि दरि सोभा महा उतम बाणी ॥ जि पुरखु सुणै सु होइ निहालु ॥ नानक सतिगुर मिलिऐ पाइआ नामु
 धनु मालु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सतिगुर के जीअ की सार न जापै कि पूरै सतिगुर भावै ॥ गुरसिखां अँदरि सतिगुरु वरतै जो
 सिखां नो लोचै सो गुर खुसी आवै ॥ सतिगुरु आखै सु कार कमावनि सु जपु कमावहि गुरसिखां की घाल सचा थाइ पावै ॥
 विणु सतिगुर के हुकमै जि गुरसिखां पासहु कँमु कराइआ लोडे तिसु गुरसिखु फिरि नेडि न आवै ॥ गुर सतिगुर अगै को जीउ
 लाइ घालै तिसु अगै गुरसिखु कार कमावै ॥ जे ठगी आवै ठगी उठि जाइ तिसु नेडै गुरसिखु मूलि न आवै ॥ ब्रहमु बीचारु
 नानकु आखि सुणावै ॥ जि विणु सतिगुर के मनु मँने कँमु कराए सो जँतु महा दुखु पावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तूँ सचा साहिबु
 अति वडा तुहि जेवडु तूँ वड वडे ॥ जिसु तूँ मेलहि सो तुधु मिलै तूँ आपे बखसि लैहि लेखा छडे ॥ जिस नो तूँ आपि मिलाइदा
 सो सतिगुरु सेवे मनु गड गडे ॥ तूँ सचा साहिबु सचु तूँ सभु जीउ पिँडु चँमु तेरा हडे ॥ जिउ भावै तिउ रखु तूँ सचिआ

नानक मनि आस तेरी वड वडे ॥ ३३ ॥ १ ॥ सुधु ॥

गउड़ी की वार महला ५ ॥ शइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी ॥ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ५ ॥ हरि हरि नामु जो जनु जपै सो आइआ परवाणु ॥ तिसु जन कै बलिहारणै जिनि भजिआ प्रभु निरबाणु ॥
जनम मरन दुखु कटिआ हरि भेटिआ पुरखु सुजाणु ॥ सँत सँगि सागरु तरे जन नानक सचा ताणु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ भलके
उठि पराहुणा मेरै घरि आवउ ॥ पाउ परखाला तिस के मनि तनि नित भावउ ॥ नामु सुणे नामु संग्रहै नामे लिव लावउ ॥ ग्रिहु
धनु सभु पवित्रु होइ हरि के गुण गावउ ॥ हरि नाम वापारी नानका वडभागी पावउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो तुधु भावै सो भला
सचु तेरा भाणा ॥ तू सभ महि एकु वरतदा सभ माहि समाणा ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ जीअ अंदरि जाणा ॥ साधसँगि
मिलि पाईऐ मनि सचे भाणा ॥ नानक प्रभ सरणागती सद सद कुरबाणा ॥ १ ॥ सलोक मः ५ ॥ चेता ई तां चेति साहिबु
सचा सो धणी ॥ नानक सतिगुरु सेवि चडि बोहिथि भउजलु पारि पउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ वाऊ सँदे कपडे पहिरहि गरबि गवार
॥ नानक नालि न चलनी जलि बलि होए छारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सेई उबरे जगै विचि जो सचै रखे ॥ मुहि डिठै तिन कै
जीवीऐ हरि अँम्रितु चखे ॥ कामु क्रोधु लोभ मोहु सँगि साधा भखे ॥ करि किरपा प्रभि आपणी हरि आपि परखे ॥ नानक
चलत न जापनी को सकै न लखे ॥ २ ॥ सलोक मः ५ ॥ नानक सोई दिनसु सुहावड़ा जितु प्रभु आवै चिति ॥ जितु दिनि
विसरै पारब्रहमु फिटु भलेरी रुति ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक मित्राई तिसु सिउ सभ किछु जिस कै हाथि ॥ कुमित्रा सेई
कांठीअहि इक विख न चलहि साथि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अँम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ
सभ तिखा बुझाई ॥ करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥ सगल मनोरथ पुँनिआ अमरा पदु पाई ॥ तुधु जेवडु तू है
पारब्रहम नानक सरणाई ॥ ३ ॥ सलोक मः ५ ॥ डिठडो हभ ठाइ ऊण न काई जाइ ॥ नानक लधा तिन्ह सुआउ जिन्हा

सतिगुरु भेटिआ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ दामनी चमतकार तिउ वरतारा जग खे ॥ वथु सुहावी साइ नानक नाउ जपँदे तिसु धणी
॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिम्रिति सासत्र सोधि सभि किनै कीम न जाणी ॥ जो जनु भेटै साध सँगि सो हरि रँगु माणी ॥ सचु नामु
करता पुरखु एह रतना खाणी ॥ मसतकि होवै लिखिआ हरि सिमरि पराणी ॥ तोसा दिचै सचु नामु नानक मिहमाणी ॥ ४
॥ सलोक मः ५ ॥ अंतरि चिंता नैणी सुखी मूलि न उतरै भुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथो दुखु ॥ १ ॥ मः ५ ॥
मुठडे सेई साथ जिन्ही सचु न लदिआ ॥ नानक से साबासि जिन्ही गुर मिलि इकु पछाणिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिथै बैसनि
साध जन सो थानु सुहँदा ॥ ओइ सेवनि सँमिथु आपणा बिनसै सभु मँदा ॥ पतित उधारण पारब्रहम सँत बेदु कहँदा ॥
भगति वछलु तेरा बिरदु है जुगि जुगि वरतँदा ॥ नानकु जाचै एकु नामु मनि तनि भावँदा ॥ ५ ॥ सलोक मः ५ ॥ चिड़ी
चुहकी पहु फुटी वगनि बहुत तरँग ॥ अचरज रूप सँतन रचे नानक नामहि रँग ॥ १ ॥ मः ५ ॥ घर मँदर खुसीआ तही जह
तू आवहि चिति ॥ दुनीआ कीआ वडिआईआ नानक सभि कुमित ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि धनु सची रासि है किनै विरलै जाता
॥ तिसै परापति भाइरहु जिसु देइ बिधाता ॥ मन तन भीतरि मउलिआ हरि रँगि जनु राता ॥ साध सँगि गुण गाइआ सभि
दोखहु खाता ॥ नानक सोई जीविआ जिनि इकु पछाता ॥ ६ ॥ सलोक मः ५ ॥ खखड़ीआ सुहावीआ लगड़ीआ अक
कँठि ॥ बिरह विछोड़ा धणी सिउ नानक सहसै गँठि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ विसारेदे मरि गए मरि भि न सकहि मूलि ॥ वेमुख होए
राम ते जिउ तसकर उपरि सूलि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सुख निधानु प्रभु एकु है अबिनासी सुणिआ ॥ जलि थलि महीअलि
पूरिआ घटि घटि हरि भणिआ ॥ ऊच नीच सभ इक समानि कीट हसती बणिआ ॥ मीत सखा सुत बाँधिपो सभि तिस दे
जाणिआ ॥ तुसि नानकु देवै जिसु नामु तिनि हरि रँगु मणिआ ॥ ७ ॥ सलोक मः ५ ॥ जिन्ही सासि गिरासि न विसरै हरि
नामां मनि मँतु ॥ धँनु सि सेई नानका पूरनु सोई सँतु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ अठे पहर भउदा फिरै खावण सँदड़ै सूलि ॥ दोजकि

पउदा किउ रहै जा चिति न होइ रसूलि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसै सरेवहु प्राणीहो जिसदै नाउ पलै ॥ ऐथै रहहु सुहेलिआ अगै
 नालि चलै ॥ घरु बंधहु सच धरम का गडि थँमु अहलै ॥ ओट लैहु नाराइणै दीन दुनीआ झलै ॥ नानक पकड़े चरण हरि
 तिसु दरगह मलै ॥ ८ ॥ सलोक मः ५ ॥ जाचकु मँगै दानु देहि पिआरिआ ॥ देवणहारु दातारु मै नित चितारिआ ॥
 निखुटि न जाई मूलि अतुल भँडारिआ ॥ नानक सबदु अपारु तिनि सभु किछु सारिआ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सिखहु सबदु
 पिआरिहो जनम मरन कीटेक ॥ मुख ऊजल सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ओथै अँम्रितु वँडीरे सुखीआ
 हरि करणे ॥ जम कै पँथि न पाईअहि फिरि नाही मरणे ॥ जिसनो आइआ प्रेम रसु तिसै ही जरणे ॥ बाणी उचरहि साध
 जन अमिउ चलहि झरणे ॥ पेखि दरसनु नानकु जीविआ मन अँदरि धरणे ॥ ९ ॥ सलोक मः ५ ॥ सतिगुरि पूरै सेविये
 दूखा का होइ नासु ॥ नानक नामि अराधिये कारजु आवै रासि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जिसु सिमरत संकट छुटहि अनद मँगल
 बिस्राम ॥ नानक जपीरे सदा हरि निमख न बिसरउ नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिन्ह की सोभा किआ गणी जिनी हरि हरि
 लधा ॥ साधा सरणी जो पवै सो छोटै बधा ॥ गुण गावै अबिनासीरे जोनि गरभि न दधा ॥ गुरु भेटिआ पारब्रहमु हरि पडि
 बुझि समधा ॥ नानक पाइआ सो धणी हरि अगम अगधा ॥ १० ॥ सलोक मः ५ ॥ कामु न करही आपणा फिरहि अवता
 लोइ ॥ नानक नाइ विसारिये सुखु किनेहा होइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ बिखै कउड़तणि सगल माहि जगति रही लपटाइ ॥
 नानक जनि वीचारिआ मीठा हरि का नाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीरे ॥ जमकँकरु नेडि न
 आवई फिरि बहुडि न मरीरे ॥ भव सागरु संसारु बिखु सो पारि उतरीरे ॥ हरि गुण गुँफहु मनि माल हरि सभ मलु परहरीरे
 ॥ नानक प्रीतम मिल रहे पारब्रहम नरहरीरे ॥ ११ ॥ सलोक मः ५ ॥ नानक आए से परवाणु है जिन्ह हरि वुठा चिति ॥
 गालही अल पलालीआ कँमि न आवहि मित ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पारब्रहमु प्रभु द्विसटी आइआ पूरन अगम बिसमाद ॥

नानक राम नामु धनु कीता पूरे गुर परसादि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धोहु न चली खसम नालि लबि मोहि विगुते ॥ करतब करनि
 भलेरिआ मदि माइआ सुते ॥ फिरि फिरि जूनि भवाईअन्हि जम मारगि मुते ॥ कीता पाइनि आपणा दुख सेती जुते ॥
 नानक नाइ विसारिरे सभ मँदी रुते ॥ १२ ॥ सलोक मः ५ ॥ उठँदिआ बहँदिआ संवदिआ सुखु सोइ ॥ नानक नामि
 सलाहिरे मनु तनु सीतलु होइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ लालचि अटिआ नित फिरै सुआरथु करे न कोइ ॥ जिंसु गुरु भेटै नानका
 तिसु मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभे वसतू कउड़ीआ सचे नाउ मिठा ॥ सादु आइआ तिन हरि जनां चखि साथी
 डिठा ॥ पारब्रहमि जिंसु लिखिआ मनि तिसै वुठा ॥ इकु निरँजनु रवि रहिआ भाउ द्युा कुठा ॥ हरि नानकु मँगै जोड़ि करि
 प्रभुदेवै तुठा ॥ १३ ॥ सलोक मः ५ ॥ जाचड़ी सा सारु जो जाचँदी हेकडो ॥ गाल्ही बिआ विकार नानक धणी विहूणीआ
 ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नीहि जि विधा मँनु पछाणू विरलो थिओ ॥ जोड़नहारा संतु नानक पाधरु पधरो ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सोई
 सेविहु जीअडे दाता बखसिँदु ॥ किलविख सभि बिनासु होन्हि सिमरत गोविँदु ॥ हरि मारगु साधू दसिआ जपीरे गुर मँतु ॥
 माइआ सुआद सभि फिकिआ हरि मनि भावँदु ॥ धिआइ नानक परमेसरै जिनि दिती जिँदु ॥ १४ ॥ सलोक मः ५ ॥ वत
 लगी सचे नाम की जो बीजे सो खाइ ॥ तिसहि परापति नानका जिस नो लिखिआ आइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ मँगणा त सचु
 इकु जिंसु तुसि देवै आपि ॥ जितु खाधै मनु त्रिपतीरे नानक साहिब दाति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ लाहा जग महि से खटहि जिन
 हरि धनु रासि ॥ दुतीआ भाउ न जाणनी सचे दी आस ॥ निहचलु एकु सरेविआ होरु सभ विणासु ॥ पारब्रहमु जिंसु विसरै
 तिसु बिरथा सासु ॥ कँठि लाइ जन रखिआ नानक बलि जासु ॥ १५ ॥ सलोक मः ५ ॥ पारब्रहमि फुरमाइआ मीहु वुठा
 सहजि सुभाइ ॥ अँनु धँनु बहुतु उपजिआ प्रिथमी रजी तिपति अघाइ ॥ सदा सदा गुण उचरै दुखु दालदु गइआ बिलाइ ॥
 पूरबि लिखिआ पाइआ मिलिआ तिसै रजाइ ॥ परमेसरि जीवालिआ नानक तिसै धिआइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥

जीवन पदु निरबाणु इको सिमरीरे ॥ दूजी नाही जाइ किनि बिधि धीरीरे ॥ डिठा सभ संसारु सुखु न नाम बिनु ॥ तनु धनु
 होसी छारु जाणै कोइ जनु ॥ रंग रूप रस बादि कि करहि पराणीआ ॥ जिसु भुलाए आपि तिसु कल नही जाणीआ ॥ रंगि
 रते निरबाणु सचा गावही ॥ नानक सरणि दुआरि जे तुधु भावही ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जँमणु मरणु न तिन्ह कउ जो हरि लडु
 लागे ॥ जीवत से परवाणु होए हरि कीरतनि जागे ॥ साध सँगु जिन्ह पाइआ सेई वडभागे ॥ नाइ विसरिरे धिगु जीवणा
 तूटे कच धागे ॥ नानक धूड़ि पुनीत साध लख कोटि पिरागे ॥ १६ ॥ सलोकु मः ५ ॥ धरणि सुवँनी खड रतन जडावी हरि
 प्रेम पुरखु मनि वुठा ॥ सभे काज सुहेलडे थीए गुर नानकु सतिगुरु तुठा ॥ १ ॥ मः ५ ॥ फिरदी फिरदी दह दिसा जल
 परबत बनराइ ॥ जिथै डिठा मिरतको इल बहिठी आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु सरब सुखा फल लोड़ीअहि सो सचु कमाचउ
 ॥ नेडै देखउ पारब्रहमु इकु नामु धिआवउ ॥ होइ सगल की रेणुका हरि सँगि समावउ ॥ दूरु न देई किसै जीअ पति सिउ
 घरि जावउ ॥ पतित पुनीत करता पुरखु नानक सुणावउ ॥ १७ ॥ सलोक दोहा मः ५ ॥ एकु जि साजनु मै कीआ सरब
 कला समरथु ॥ जीउ हमारा खँनीरे हरि मन तन सँदडी वथु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जे करु गहहि पिआरडे तुधु न छोडा मूलि ॥
 हरि छोडनि से दुरजना पड़हि दोजक कै सूलि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभि निधान घरि जिस दै हरि करे सु होवै ॥ जपि जपि
 जीवहि संत जन पापा मलु धोवै ॥ चरन कमल हिरदै वसहि संकट सभि खोवै ॥ गुरु पूरा जिसु भेटीरे मरि जनमि न रोवै ॥
 प्रभ दरस पिआस नानक घणी किरपा करि देवै ॥ १८ ॥ सलोक डखणा मः ५ ॥ भोरी भरमु वजाइ पिरी मुहबति हिकु तू ॥
 जिथहु वँजै जाइ तिथाऊ मउजूदु सोइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ चडि कै घोड़डै कुँदे पकड़ि खँडी दी खेडारी ॥ हँसा सेती चितु
 उलासहि कुकड़ दी ओडारी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ रसना उचरै हरि स्रवणी सुणै सो उधरै मिता ॥ हरि जसु लिखहि लाइ भावनी
 से हसत पविता ॥ अठसठि तीरथ मजना सभि पुँन तिनि किता ॥ संसार सागर ते उधरे बिखिआ गडु जिता ॥ नानक

लडिं लाइ उधारिअनु द्यु सेवि अमिता ॥ १९ ॥ सलोकु मः ५ ॥ धँधड़े कुलाह चिति न आवै हेकड़ो ॥ नानक सेई तँन फुटँनि
 जिना सांई विसरै ॥ १ ॥ मः ५ ॥ परेतहु कीतोनु देवता तिनि करणैहारे ॥ सभे सिख उबारिआनु प्रभिं काज सवारे ॥ निंदक
 पलडिं पछाडिअनु झूठे दरबारे ॥ नानक का प्रभु वडा है आपि साजिं सवारे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु बेअँतु किछु अँतु नाहिं सभु
 तिसै करणा ॥ अगम अगोचरु साहिबो जीआं का परणा ॥ हसत देइ प्रतिपालदा भरण पोखणु करणा ॥ मिहरवानु बखसिँदु
 आपि जपि सचे तरणा ॥ जो तुधु भावै सो भला नानक दास सरणा ॥ २० ॥ सलोक मः ५ ॥ तिँन्हा भुख न का रही जिस दा
 प्रभु है सोइ ॥ नानक चरणी लागिआ उधरै सभो कोइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जाचिकु मँगै नित नामु साहिबु करे कबूलु ॥ नानक
 परमेसरु जजमानु तिसहिं भुख न मूलि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनु रता गोविँद सँगि सचु भोजनु जोड़े ॥ प्रीति लगी हरि नाम सिउ
 ए हसती घोड़े ॥ राज मिलख खुसीआ घणी धिआइ मुखु न मोड़े ॥ ढाढी दरिं प्रभ मँगणा दरु कदे न छोड़े ॥ नानक मनि तनि
 चाउ एहु नित प्रभ कउ लोड़े ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु कीचे

रागु गउड़ी भगतां की बाणी ॥ १४३ तिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

गउड़ी गुआरेरी श्री कबीर जीउ के चउपदे १४ ॥ अब मोहि जलत राम जलु पाइआ ॥ राम उदकि तनु जलत बुझाइआ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ मनु मारण कारणे बन जाईऐ ॥ सो जलु बिनु भगवँत न पाईऐ ॥ १ ॥ जिह पावक सुरि नह है जारे ॥ राम उदकि जन
 जलत उबारे ॥ २ ॥ भव सागर सुख सागर माही ॥ पीविरहे जल निखुटत नाही ॥ ३ ॥ कहि कबीर भजु सारिँगपानी ॥ राम
 उदकि मेरी तिखा बुझानी ॥ ४ ॥ १ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ माधउ जल की पिआस न जाइ ॥ जल महि अगनि उठी अधिकाइ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूँ जलनिधि हउ जल का मीनु ॥ जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥ १ ॥ तूँ पिँजरु हउ सूअटा तोर ॥ जमु
 मँजारु कहा करै मोर ॥ २ ॥ तूँ तरवरु हउ पँखी आहि ॥ मँदभागी तेरो दरसनु नाहि ॥ ३ ॥ तूँ सतिगुरु हउ नउतनु

चेला ॥ कहि कबीर मिलु अँत की बेला ॥ ४ ॥ २ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जब हम एको एकु करि जानिआ ॥ तब लोगह
 काहे दुखु मानिआ ॥ १ ॥ हम अपतह अपुनी पति खोई ॥ हमरै खोजिं परहु मति कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम मँदे मँदे मन
 माही ॥ साझ पाति काहू सिउ नाही ॥ २ ॥ पति अपति ताकी नहीं लाज ॥ तब जानहुगे जब उघरैगो पाज ॥ ३ ॥ कहु
 कबीर पति हरि परवानु ॥ सरब तिआगि भजु केवल रामु ॥ ४ ॥ ३ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥
 बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥ १ ॥ किआ नागे किआ बाधे चाम ॥ जब नहीं चीनसि आतमराम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूड
 मुँडाए जौ सिधि पाई ॥ मुकती भेड न गईआ काई ॥ २ ॥ बिंदु राखि जौ तरीरे भाई ॥ खुसरै किउ न परम गति पाई ॥ ३
 ॥ कहु कबीर सुनहु नर भाई ॥ राम नामु बिनु किनि गति पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ सँधिआ प्रात इस्नानु
 कराही ॥ जिउ भए दादुर पानी माही ॥ १ ॥ जउ पै राम राम रति नाही ॥ ते सभि धरमराइ कै जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 काइआ रति बहु रूप रचाही ॥ तिन कउ दइआ सुपनै भी नाही ॥ २ ॥ चारि चरन कहहि बहु आगर ॥ साधू सुखु पावहि
 कलि सागर ॥ ३ ॥ कहु कबीर बहु काइ करीजै ॥ सरबसु छोडि महारसु पीजै ॥ ४ ॥ ५ ॥ कबीर जी गउड़ी ॥ किआ जपु
 किआ तपु किआ व्रत पूजा जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥ १ ॥ रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥ चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥ परहरु कामु क्रोधु अहँकारु ॥ २ ॥ करम करत बधे अहँमेव ॥ मिलि पाथर की
 करही सेव ॥ ३ ॥ कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥ भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ गरभ वास
 महि कुलु नहीं जाती ॥ ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥ १ ॥ कहु रे पँडित बामन कब के होए ॥ बामन कहि कहि जनमु मत
 खोए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जौ तूँ ब्राहमणु ब्राहमणी जाइआ ॥ तउ आन बाट काहे नहीं आइआ ॥ २ ॥ तुम कत ब्राहमण हम
 कत सूद ॥ हम कत लोहू तुम कत दूध ॥ ३ ॥ कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥ सो ब्रहमणु कही अतु है हमारै ॥ ४ ॥

७ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ अँधकार सुखि कबहि न सोई है ॥ राजा रँकु दोऊ मिलि रोई है ॥ १ ॥ जउ पै रसना रामु न कहिबो
 ॥ उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जस देखीऐ तरवर की छाइआ ॥ प्रान गए कहु का की माइआ ॥ २ ॥
 जम जँती महि जीउ समाना ॥ मूए मरमु को का कर जाना ॥ ३ ॥ हँसा सरवरु कालु सरीर ॥ राम रसाइन पीउ रे कबीर ॥
 ४ ॥ ८ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जोति की जाति जाति की जोती ॥ तितु लागे कँचूआ फल मोती ॥ १ ॥ कवनु सु घरु जो
 निरभउ कहीऐ ॥ भउ भजि जाइ अभै होइ रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥ चार अचार रहे उरझाइ
 ॥ २ ॥ पाप पुँन दुइ एक समान ॥ निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥ ३ ॥ कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥ इसु परचाइ
 परचि रहु एसु ॥ ४ ॥ ९ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जो जन परमिति परमनु जाना ॥ बातन ही बैकुँठ समाना ॥ १ ॥ ना
 जाना बैकुँठ कहा ही ॥ जानु जानु सभि कहहि तहा ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहन कहावन नह पतीअई है ॥ तउ मनु मानै जा
 ते हउमै जई है ॥ २ ॥ जब लगु मनि बैकुँठ की आस ॥ तब लगु होइ नही चरन निवासु ॥ ३ ॥ कहु कबीर इह कहीऐ काहि
 ॥ साथ संगति बैकुँठे आहि ॥ ४ ॥ १० ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ उपजै निपजै निपजि समाई ॥ नैनह देखत इहु जगु जाई
 ॥ १ ॥ लाज न मरहु कहहु घरु मेरा ॥ अँत की बार नही कछु तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जतन करि काइआ पाली ॥
 मरती बार अगनि संगि जाली ॥ २ ॥ चोआ चँदनु मरदन अँगा ॥ सो तनु जलै काठ कै संग ॥ ३ ॥ कहु कबीर सुनहु रे
 गुनीआ ॥ बिनसैगो रूपु देखै सभ दुनीआ ॥ ४ ॥ ११ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ अवर मूए किआ सोगु करीजै ॥ तउ कीजै
 जउ आपन जीजै ॥ १ ॥ मै न मरउ मरिबो संसारा ॥ अब मोहि मिलिओ है जीआवनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इआ देही
 परमल महकँदा ॥ ता सुख बिसरे परमानँदा ॥ २ ॥ कूअटा एकु पँच पनिहारी ॥ टूटी लाजु भरै मति हारी ॥ ३ ॥ कहु
 कबीर इक बुधि बीचारी ॥ ना ओहु कूअटा ना पनिहारी ॥ ४ ॥ १२ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ असथावर जँगम कीट पतँगा ॥

अनिक जनम कीए बहु रंगा ॥ १ ॥ ऐसे घर राम बहुतु बसाए ॥ जब हम राम गरभ होइ आए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी जती
 तपी ब्रहमचारी ॥ कबहु राजा छत्रपति कबहु भेखारी ॥ २ ॥ साकत मरहि संत सभि जीवहि ॥ राम रसाइनु रसना पीवहि
 ॥ ३ ॥ कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥ हारि परे अब पूरा दीजै ॥ ४ ॥ १३ ॥ गउड़ी कबीर जी की नालि रलाइ लिखिआ
 महला ५ ॥ ऐसो अचरजु देखिओ कबीर ॥ दधि कै भोलै बिरोलै नीरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरी अंगूरी गदहा चरै ॥ नित उठि
 हासै हीगै मरै ॥ माता भैसा अँमुहा जाइ ॥ कुदि कुदि चरै रसातलि पाइ ॥ २ ॥ कहु कबीर परगटु भई खेड ॥ लेले कउ चूघै
 नित भेड ॥ ३ ॥ राम रमत मति परगटी आई ॥ कहु कबीर गुरि सोझी पाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥ गउड़ी कबीर जी
 पंचपदे ॥ जिउ जल छोडि बाहरि भइओ मीना ॥ पूरब जनम हउ तप का हीना ॥ १ ॥ अब कहु राम कवन गति मोरी ॥
 तजी ले बनारस मति भई थोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल जनमु सिवपुरी गवाइआ ॥ मरती बार मगहरि उठि आइआ ॥ २
 ॥ बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥ मरनु भइआ मगहर की बासी ॥ ३ ॥ कासी मगहर सम बीचारी ॥ ओछी भगति कैसे
 उतरसि पारी ॥ ४ ॥ कहु गुर गज सिव सभु को जानै ॥ मुआ कबीरु रमत श्री रामै ॥ ५ ॥ १५ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥
 चोआ चंदन मरदन अँगा ॥ सो तनु जलै काठ कै सँगा ॥ १ ॥ इसु तन धन की कवन बडाई ॥ धरनि परै उरवारि न जाई
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राति जि सोवहि दिन करहि काम ॥ इकु खिनु लेहि न हरि को नाम ॥ २ ॥ हाथि त डोर मुखि खाइओ
 तँबोर ॥ मरती बार कसि बाधिओ चोर ॥ गुरमति रसि रसि हरि गुन गावै ॥ रामै राम रमत सुखु पावै ॥ ४ ॥ किरपा करि
 कै नामु द्विडाई ॥ हरि हरि बासु सुगंध बसाई ॥ ५ ॥ कहत कबीर चेतिरे अँधा ॥ सति रामु झूठा सभु धँधा ॥ ६ ॥ १६ ॥
 गउड़ी कबीर जी तिपदे चारतुके ॥ जम ते उलटि भए है राम ॥ दुख बिनसे सुख कीओ बिसराम ॥ बैरी उलटि भए है मीता
 ॥ साकत उलटि सुजन भए चीता ॥ १ ॥ अब मोहि सरब कुसल करि मानिआ ॥ सांति भई जब गोबिदु जानिआ ॥ १ ॥

रहाउ ॥ तन महि होती कोटि उपाधि ॥ उलटि भई सुख सहजि समाधि ॥ आपु पछानै आपै आप ॥ रोगु न बिआपै तीनों
 ताप ॥ २ ॥ अब मनु उलटि सनातनु हूआ ॥ तब जानिआ जब जीवत मूआ ॥ कहु कबीर सुखि सहजि समावउ ॥ आपि
 न डरउ न अवर डरावउ ॥ ३ ॥ १७ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ पिँडि मूरे जीउ किह घरि जाता ॥ सबदि अतीति अनाहदि राता
 ॥ जिनि रामु जानिआ तिनहि पछानिआ ॥ जिउ गूँगे साकर मनु मानिआ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु कथै बनवारी ॥ मन रे
 पवन द्विड सुखमन नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो गुरु करहु जिं बहुरि न करना ॥ सो पदु खहु जिं बहुरि न खना ॥ सो धिआनु
 धरहु जिं बहुरि न धरना ॥ ऐसे मरहु जिं बहुरि न मरना ॥ २ ॥ उलटी गंगा जमुन मिलावउ ॥ बिन जल संगम मन महि
 न्हावउ ॥ लोचा समसरि इहु बिउहारा ॥ ततु बीचारि किआ अवरि बीचारा ॥ ३ ॥ अपु तेजु बाइ प्रिथमी आकासा ॥
 ऐसी रहत रहउ हरि पासा ॥ कहै कबीर निरँजन धिआवउ ॥ तितु घरि जाउ जिं बहुरि न आवउ ॥ ४ ॥ १८ ॥ गउड़ी कबीर
 जी तिपदे_{१३} ॥ कँचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥ मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥ १ ॥ अब मोहि रामु अपुना करि जानिआ ॥
 सहज सुभाइ मेरा मनु मानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमै कथि कथि अँतु न पाइआ ॥ राम भगति बैठै घरि आइआ ॥ २ ॥
 कहु कबीर चँचल मति तिआगी ॥ केवल राम भगति निज भागी ॥ ३ ॥ १९ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह मरनै सभु जगतु
 तरासिआ ॥ सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ॥ १ ॥ अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ॥ मरि मरि जाते जिनि रामु न
 जानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मरनो मरनु कहै सभु कोई ॥ सहजे मरै अमरु होइ सोई ॥ २ ॥ कहु कबीर मनि भइआ अनँदा
 ॥ गइआ भरमु रहिआ परमानँदा ॥ ३ ॥ २० ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥ खोजत तन महि
 ठउर न पावउ ॥ १ ॥ लागी होइ सु जानै पीर ॥ राम भगति अनीआले तीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक भाइ देखउ सभ नारी ॥
 किआ जानउ सह कउन पिआरी ॥ २ ॥ कहु कबीर जा कै मसतकि भागु ॥ सभ परहरि ताकउ मिलै सुहागु ॥

३ ॥ २१ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जाकै हरि सा ठाकुरु भाई ॥ मुकति अनंत पुकारणि जाई ॥ १ ॥ अब कहु राम भरोसा
 तोरा ॥ तब काहू का वणु निहोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीनि लोक जाकै हहि भार ॥ सो कोहे न करै प्रतिपार ॥ २ ॥ कहु
 कबीर इक बुधि बीचारी ॥ किआ बसु जउ बिखु दे महतारी ॥ ३ ॥ २२ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ बिनु सत सती होइ कैसे नारि
 ॥ पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥ १ ॥ प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥ जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहनि
 सतु करै जीअ अपनै ॥ सो रमयो कउ मिलै न सुपनै ॥ २ ॥ तनु मनु धनु छिहु सउपि सरीरु ॥ सोई सुहागनि कहै कबीरु
 ॥ ३ ॥ २३ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ बिखिआ बिआपिआ सगल संसारु ॥ बिखिआ लै डूबी परवारु ॥ १ ॥ रे नर नाव
 चउड़ि कत बोड़ी ॥ हरि सिउ तोड़ि बिखिआ सँगि जोड़ी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरि नर दाधे लागी आगि ॥ निकटि नीरु पसु
 पीवसि न झागि ॥ २ ॥ चेतत चेतत निकसिओ नीरु ॥ सो जलु निरमलु कथत कबीरु ॥ ३ ॥ २४ ॥ गउड़ी कबीर जी
 ॥ जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥ बिधवा कस न भई महतारी ॥ १ ॥ जिह नर राम भगति नहि साधी ॥ जनमत कस
 न मुओ अपराधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुचु मुचु गरभ गए कीन बचिआ ॥ बुडभुज रूप जीवे जग मझिआ ॥ २ ॥ कहु कबीर
 जैसे सुंदर सरूप ॥ नाम बिना जैसे कुबज करूप ॥ ३ ॥ २५ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जो जन लेहि खसम का नाउ ॥ तिन
 कै सद बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ सो निरमलु निरमलु हरि गुन गावै ॥ सो भाई मेरै मनि भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह घट रामु
 रहिआ भरपूरि ॥ तिन की पग पंकज हम धूरि ॥ २ ॥ जाति जुलाहा मति का धीरु ॥ सहजि सहजि गुण रमै कबीरु ॥ ३
 ॥ २६ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ गगनि रसाल चुरे मेरी भाठी ॥ सँचि महा रसु तनु भइआ काठी ॥ १ ॥ उआ कउ कहीरे
 सहज मतवारा ॥ पीवत राम रसु गिआन बीचारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहज कलालनि जउ मिलि आई ॥ आनँदि माते
 अनदिनु जाई ॥ २ ॥ चीनत चीतु निरँजन लाइआ ॥ कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ॥ ३ ॥ २७ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥

मन का सुभाउ मनहि बिआपी ॥ मनहि मारि कवन सिधि थापी ॥ १ ॥ कवनु सु मुनि जो मनु मारै ॥ मन कउ मारि कहहु
 किसु तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन अंतरि बोलै सभु कोई ॥ मन मारे बिनु भगति न होई ॥ २ ॥ कहु कबीर जो जानै भेउ ॥
 मनु मधुसूदनु त्रिभवण देउ ॥ ३ ॥ २८ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ ओइ जु दीसहि अंबरि तारे ॥ किनि ओइ चीते चीतनहारे ॥
 १ ॥ कहुरे पंडित अंबरु का सिउ लागा ॥ बूझै बूझनहारु सभागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूरज चंदु करहि उजीआरा ॥ सभ महि
 पसरिआ ब्रहम पसारा ॥ २ ॥ कहु कबीर जानैगा सोइ ॥ हिरदै रामु मुखि रामै होइ ॥ ३ ॥ २९ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ बेद
 की पुत्री सिंमिति भाई ॥ सांकल जेवरी लै है आई ॥ १ ॥ आपन नगरु आप ते बाधिआ ॥ मोह कै फाधि काल सरु
 सांधिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कटी न कटै तूटि नह जाई ॥ सा सापनि होइ जग कउ खाई ॥ २ ॥ हम देखत जिनि सभु जगु
 लूटिआ ॥ कहु कबीर मै राम कहि छूटिआ ॥ ३ ॥ ३० ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ देइ मुहार लगामु पहिरावउ ॥ सगल त जीनु
 गगन दउरावउ ॥ १ ॥ अपनै बीचारि असवारी कीजै ॥ सहस कै पावडै पगु धरि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चलुरे बैकुंठ
 तुझहि ले तारउ ॥ हिचहि त प्रेम कै चाबुक मारउ ॥ २ ॥ कहत कबीर भले असवारा ॥ बेद कतेब ते रहहि निरारा ॥ ३ ॥
 ३१ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह मुखि पांचउ अंमि त खाए ॥ तिह मुख देखत लूकट लाए ॥ १ ॥ इकु दुखु राम राइ काटहु
 मेरा ॥ अगनि दहै अरु गरभ बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ बिगूती बहु बिधि भाती ॥ को जारे को गड ले माटी ॥ २ ॥
 कहु कबीर हरि चरण दिखावहु ॥ पाछै ते जमु किउ न पठावहु ॥ ३ ॥ ३२ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ आपे पावकु आपे पवना
 ॥ जारै खसमु त राखै कवना ॥ १ ॥ राम जपत तनु जरि कीन जाइ ॥ राम नाम चितु रहिआ समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ का
 को जरै काहि होइ हानि ॥ नट वट खेलै सारिगपानि ॥ २ ॥ कहु कबीर अखर दुइ भाखि ॥ होइगा खसमु त लेइगा राखि
 ॥ ३ ॥ ३३ ॥ गउड़ी कबीर जी दुपदे ॥ नामै जोग धिआन चितु लाइआ ॥ बिनु बैराग न छूटसि माइआ ॥ १ ॥

कैसे जीवन् होइ हमारा ॥ जब न होइ राम नाम अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु कबीर खोजउ असमान ॥ राम समान न देखउ
आन ॥ २ ॥ ३४ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिहि सिरि रचि रचि बाधत पाग ॥ सो सिरु चुँच सवारहि काग ॥ १ ॥ इसु तन
धन को क्किया गरबईआ ॥ राम नामु काहे न दिइहीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ इही हवाल होहिंगे तेरे
॥ २ ॥ ३५ ॥ गउड़ी गुआरेरी के पदे पैतीस ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी असटपटी कबीर जी की ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

सुखु मांगत दुखु आगै आवै ॥ मो सुखु हमहु न मांगिआ भावै ॥ १ ॥ बिखिआ अजहु सुरति सुख आसा ॥ कैसे होई है
राजा राम निवासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु सुख ते सिव ब्रहम डराना ॥ सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥ २ ॥ सनकादिक
नारद मुनि सेखा ॥ तिन भी तन महि मनु नहीं पेखा ॥ ३ ॥ इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ तन छूटे मनु कहा समाई ॥ ४
॥ गुर परसादी जैदेउ नामां ॥ भगति कै प्रेमि इनही है जानां ॥ ५ ॥ इसु मन कउ नहीं आवन जाना ॥ जिस का भरमु
गइआ तिनि साचु पछाना ॥ ६ ॥ इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥ हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥ ७ ॥ इस मन का
कोई जानै भेउ ॥ इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥ ८ ॥ जीउ एकु अरु सगल सरीरा ॥ इसु मन कउ रवि रहे कबीरा ॥ ९ ॥ १
॥ ३६ ॥ गउड़ी गुआरेरी ॥ अहिनि सि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिध भए लिव लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधक सिध
सगल मुनि हारे ॥ एक नाम कलिपतर तारे ॥ १ ॥ जो हरि हरे सु होहि न आना ॥ कहि कबीर राम नाम पछाना ॥ २ ॥
३७ ॥ **गउड़ी भी सोरठि भी** ॥ रे जीअ निलज लाज तोहि नाही ॥ हरि तजि कत काहू के जांही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा
को ठाकुरु ऊचा होई ॥ सो जनु पर घर जात न सोही ॥ १ ॥ सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥ सदा संगि नाही हरि दूरि ॥ २ ॥
कवला चरन सरन है जा के ॥ कहु जन का नाही घर ता के ॥ ३ ॥ सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥ सो संमथु निज पति है

दाता ॥ ४ ॥ कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥ जा कै हिरदै अवरु न होई ॥ ५ ॥ ३८ ॥ कउनु को पूतु पिता को का को ॥
 कउन मरै को देइ सँतापो ॥ १ ॥ हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥ हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 कउन को पुरखु कउन की नारी ॥ इआ तत लेहु सरीर बिचारी ॥ २ ॥ कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥ गई ठगउरी
 ठगु पहिचानिआ ॥ ३ ॥ ३९ ॥ अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥ जनम मरन कटि परमगति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 साधू संगति दीओ रलाइ ॥ पँच दूत ते लीओ छडाइ ॥ अँमित नामु जपउ जपु रसना ॥ अमोल दासु करि लीनो अपना ॥
 १ ॥ सतिगुर कीनो परउपकारु ॥ काढि लीन सागर संसार ॥ चरन कमल सिओ लागी प्रीति ॥ गोबिंदु बसै निता नित
 चीत ॥ २ ॥ माइआ तपति बुझिआ अँगिआरु ॥ मनि सँतोखु नामु आधारु ॥ जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥ जत
 पेखउ तत अँतरजामी ॥ ३ ॥ अपनी भगति आपि ही दिडाई ॥ पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥ जिंसु क्रिपा करे तिसु
 पूरन साज ॥ कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥ ४ ॥ ४० ॥ जलि है सूतक थल है सूतकु सूतक ओपति होई ॥ जनमे
 सूतक मूर फुनि सूतकु सूतक परज बिगोई ॥ १ ॥ कहु रे पँडीआ कउन पवीता ॥ ऐसा गिआनु जपहु मेरे मीता ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ नैनहु सूतकु बैनहु सूतकु सूतकु श्रवनी होई ॥ ऊठत बैठत सूतकु लागै सूतकु परै रसोई ॥ २ ॥ फासन की बिधि
 सभु कोऊ जानै छूटन की डकु कोई ॥ कहि कबीर रामु रिदै बिचारै सूतकु तिन्है न होई ॥ ३ ॥ ४१ ॥ गउड़ी ॥ इगरा एकु
 निबेरहु राम ॥ जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥ रामु बडा कै रामहि
 जानिआ ॥ १ ॥ ब्रहमा बडा कि जासु उपाइआ ॥ बेदु बडा कि जहां ते आइआ ॥ २ ॥ कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥
 तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥ ३ ॥ ४२ ॥ रागु गउड़ी चेती ॥ देखौ भाई ग्यान की आई आंधी ॥ सभै उडानी भ्रम की
 टाटी रहै न माइआ बांधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुचिते की दुइ थूनि गिरानी मोहु बलेडा टूटा ॥ तिसना छानि परी

धर ऊपरि दुर्मति भांडा फूटा ॥ १ ॥ आंधी पाछै जो जलु बरखै तिहि तेरा जनु भीनां ॥ कहि कबीर मनि भइआ प्रगासा उदै भानु
जब चीना ॥ २ ॥ ४३ ॥

गउड़ी चेती १४३ तिगुर प्रसादि ॥

हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥ बातन ही असमानु गिरावहि ॥ १ ॥ ऐसे लोगन सिउ किआ कहीरे ॥ जो प्रभु कीए भगति
ते बाहज तिन ते सदा डराने रहींरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि न देहि चुरू भरि पानी ॥ तिह निँदहि जिह गंगा आनी ॥ २ ॥ बैठत
उठत कुटिलता चालहि ॥ आपु गए अउरनु हू घालहि ॥ ३ ॥ छाडि कुचरचा आन न जानहि ॥ ब्रहमा हू को कहिओ न मानहि
॥ ४ ॥ आपु गए अउरन हू खोवहि ॥ आगि लगाइ मँदर मै सोवहि ॥ ५ ॥ अवरन हसत आप हहि कांने ॥ तिन कउ देखि
कबीर लजाने ॥ ६ ॥ १ ॥ ४४ ॥

रागु गउड़ी वैरागणि, कबीर जी १४३ तिगुर प्रसादि ॥

जीवत पितर न मानै कोऊ मूँ सिराध कराही ॥ पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ॥ १ ॥ मोकउ कुसलु
बतावहि कोई ॥ कुसल कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माटी के करि देवी देवा तिसु आगै जीउ देही
॥ ऐसे पितर तुमारे कहीअहि आपन कहिआ न लेही ॥ २ ॥ सरजीउ काटहि निरजीउ पूजहि अँतकाल कउ भारी ॥ राम नाम की
गति नही जानी भै डूबे संसारी ॥ ३ ॥ देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रहमु नही जाना ॥ कहत कबीर अकुलु नही चेतिआ बिखीआ
सिउ लपटाना ॥ ४ ॥ १ ॥ ४५ ॥ गउड़ी ॥ जीवत मरै मरै फुनि जीवै ऐसे सुँनि समाइआ ॥ अँजन माहि निरँजनि रहींरे बहुडि
न भवजलि पाइआ ॥ १ ॥ मेरे राम ऐसा खीरु बिलोईरे ॥ गुरमति मनूआ असथिरु राखहु इन बिधि अँमितु पीओईरे ॥ १ ॥
रहाउ ॥ गुर कै बाणि बजर कल छेदी प्रगटिआ पदु परगासा ॥ सकति अधेर जेवड़ी भ्रमु चूका निहचलु सिव घरि

बासा ॥ २ ॥ तिनि बिनु बाणै धनखु चढाईये इहु जगु बेधिया भाई ॥ दह दिस बूडी पवनु झुलावै डोरि रही लिव लाई ॥
 ३ ॥ उनमनि मनूआ सुँनि समाना दुबिधा दुर्मति भागी ॥ कहु कबीर अनभउ इकु देखिआ राम नामि लिव लागी ॥ ४ ॥
 २ ॥ ४६ ॥ गउड़ी बैरागणि तिपदे ॥ उलटत पवन चक्र खटु भेदे सुरति सुँन अनरागी ॥ आवै न जाइ मरै न जीवै तासु
 खोजु बैरागी ॥ १ ॥ मेरे मन मन ही उलटि समाना ॥ गुर परसादि अकलि भई अवरै नातरु था बेगाना ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ निवरै दूरि दूरि फुनि निवरै जिनि जैसा करि मानिआ ॥ अलउती का जैस भइआ बरेडा जिनि पीआ तिनि जानिआ ॥
 २ ॥ तेरी निरगुन कथा काइ सिउ कहीऐ ऐसा कोइ बिबेकी ॥ कहु कबीर जिनि दीआ पलीता तिनि तैसी झल देखी ॥ ३
 ॥ ३ ॥ ४७ ॥ गउड़ी ॥ तह पावस सिँधु धूप नही छहीआ तह उतपति परलउ नाही ॥ जीवन मिरतु न दुखु सुखु
 बिआपै सुँन समाधि दोऊ तह नाही ॥ १ ॥ सहज की अकथ कथा है निरारी ॥ तुलि नही चढै जाइ न मुकाती हलुकी लगै
 न भारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अरथ उरथ दोऊ तह नाही राति दिनसु तह नाही ॥ जलु नही पवनु पावकु फुनि नाही सतिगुर
 तहा समाही ॥ २ ॥ अगम अगोचरु रहै निरंतरि गुर किरपा ते लहीऐ ॥ कहु कबीर बलि जाउ गुर अपुने सतसंगति मिलि
 रहीऐ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४८ ॥ पापु पुँनु दुइ बैल बिसाहे पवनु पूजी परगासिओ ॥ त्रिसना गूणि भरी घट भीतरि इन बिधि
 टांड बिसाहिओ ॥ १ ॥ ऐसा नाइकु रामु हमारा ॥ सगल संसारु कीओ बनजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु दुइ भए
 जगाती मन तरंग बटवारा ॥ पंच ततु मिलि दानु नेबेरहि टांडा उतरिओ पारा ॥ २ ॥ कहत कबीरु सुनहु अब ऐसी बनि
 आई ॥ घाटी चढत बैलु इकु थाका चलो गोनि छिटकाई ॥ ३ ॥ ५ ॥ ४९ ॥ गउड़ी पंचपदा ॥ पेवकडै दिन चारि है
 साहुरडै जाणा ॥ अँधा लोके न जाणई मूरखु एआणा ॥ १ ॥ कहु डडीआ बाथै धन खडी ॥ पाहू घरि आए मुकलाऊ
 आए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ओह जी दिसै खूहडी कउन लाजु वहारी ॥ लाजु घडी सिउ तूटि पडी उठि चली पनिहारी ॥ २ ॥

साहिबु होइ दइआलु क्रिपा करे अपुना कारजु सवारे ॥ ता सोहागणि जाणीऐ गुर सबदु बीचारे ॥ ३ ॥ किरत की बांधी सभ
 फिरै देखहु बीचारी ॥ एस नो किआ आखीऐ किआ करे विचारी ॥ ४ ॥ भई निरासी उठि चली चित बंधि न धीरा ॥ हरि की
 चरणी लागि रहु भजु सरणि कबीरा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५० ॥ गउड़ी ॥ जोगी कहहि जोगु भल मीठा अवरु न दूजा भाई ॥
 रूंडित मुँडित एकै सबदी एइ कहहि सिधि पाई ॥ १ ॥ हरि बिनु भरमि भुलाने अँधा ॥ जा पहि जाउ आपु छुटकावनि ते बाधे
 बहु फँधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह ते उपजी तही समानी इह बिधि बिसरी तब ही ॥ पँडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहि बड हम
 ही ॥ २ ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै बिन बूझे किउ रहीऐ ॥ सतिगुरु मिलै अँधेरा चूकै इन बिधि माणक लहीऐ ॥ ३ ॥ तजि
 बावे दाहने बिकारा हरि पदु द्रिडु करि रहीऐ ॥ कहु कबीर गूँगे गुडु खाइआ पूछे ते किआ कहीऐ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५१ ॥

रागु गउड़ी पूरबी, कबीर जी १८ सतिगुर प्रसादि ॥

जह कछु अहा तहा किछु नाही पंच ततु तह नाही ॥ इडा पिँगुला सुखमन बँदे ए अवगन कत जाही ॥ १ ॥ तागा तूटा गगनु
 बिनसि गइआ तेरा बोलतु कहा समाई ॥ एह संसा मो कउ अनदिनु बिआपै मो कउ को न कहै समझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह
 बरभँडु पिँडु तह नाही रचनहारु तह नाही ॥ जोड़नहारो सदा अतीता इह कहीऐ किसु माही ॥ २ ॥ जोड़ी जुड़ै न तोड़ी तूटै
 जब लगु होइ बिनासी ॥ का को ठाकुरु का को सेवकु को काहू कै जासी ॥ ३ ॥ कहु कबीर लिव लागि रही है जहा बसे दिन
 राती ॥ उआ का मरमु ओही परु जानै ओहु तउ सदा अबिनासी ॥ ४ ॥ १ ॥ ५२ ॥ गउड़ी ॥ सुरति सिम्रिति दुइ कँनी
 मुँदा परमिति बाहरि खिँथा ॥ सुँन गुफा महि आसणु बैसणु कलप बिबरजित पँथा ॥ १ ॥ मेरे राजन मै बैरागी जोगी ॥
 मरत न सोग बिओगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खँड ब्रहमंड महि सिँडी मेरा बटूआ सभु जगु भसमाधारी ॥ ताड़ी लागी त्रिपलु
 पलटीऐ छूटै होइ पसारी ॥ २ ॥ मनु पवनु दुइ तूँबा

करी है जुग जुग सारद साजी ॥ थिरु भई तँती तुटसि नाही अनहद किँगुरी बाजी ॥ ३ ॥ सुनि मन मगन भए है पूरे
 माइआ डोल न लागी ॥ कहु कबीर ता कउ पुनरपि जनमु नही खेलि गइओ बैरागी ॥ ४ ॥ २ ॥ ५३ ॥ गउडी ॥ गज
 नव गज दस गज इकीस पुरीआ एक तनाई ॥ साठ सूत नव खँड बहतारि पाटु लगो अधिकाई ॥ १ ॥ गई बुनावन माहो
 ॥ घर छोडिरे जाइ जुलाहो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गजी न मिनीरे तोलि न तुलीरे पाचनु सेर अढाई ॥ जौ करि पाचनु बेगि न
 पावै झगरु करै घरहाई ॥ २ ॥ दिन की बैठ खसम की बरकस इह बेला कत आई ॥ छूटे कूँडे भीगै पुरीआ चलिओ जुलाहो
 रीसाई ॥ ३ ॥ छोछी नली तँतु नही निकसै नतर रही उरझाई ॥ छोडि पसारु ईहा रहु बपुरी कहु कबीर समझाई ॥ ४ ॥
 ३ ॥ ५४ ॥ गउडी ॥ एक जोति एका मिली किँबा होइ महोइ ॥ जितु घटि नामु न ऊपजै फूटि मरै जनु सोइ ॥ १ ॥
 सावल सुँदर शमईआ ॥ मेरा मनु लागा तोहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधु मिलै सिधि पाईरे कि एहु जोगु कि भोगु ॥ दुहु मिलि
 कारजु ऊपजै शम नाम सँजोगु ॥ २ ॥ लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥ जिउ कासी उपदेसु होइ मानस मरती
 बार ॥ ३ ॥ कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥ कहु कबीर सँसा नही अँति परम गति पाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ ५५
 ॥ गउडी ॥ जेते जतन करत ते डूबे भव सागरु नही तारिओरे ॥ करम धरम करते बहु सँजम अहँबुधि मनु जारिओरे ॥
 १ ॥ सास ग्रास को दातो ठाकुरु सो किउ मनहु बिसारिओरे ॥ हीरा लालु अमोलु जनमु है कउडी बदलै हारिओरे ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ त्रिसना त्रिखा भूख भ्रमि लागी हिरदै नाहि बीचारिओरे ॥ उनमत मान हिरिओ मन माही गुर का सबदु न धारिओ
 रे ॥ २ ॥ सुआद लुभत इँद्री रस प्रेरिओ मद रस लैत बिकारिओरे ॥ करम भाग सँतन सँगाने कासट लोह उधारिओरे ॥
 ३ ॥ धावत जोनि जनम भ्रमि थाके अब दुख करि हम हारिओरे ॥ कहि कबीर गुर मिलत महा रसु प्रेम भगति निसतारिओ
 रे ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ ५६ ॥ गउडी ॥ कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिओ जगदीस ॥ काम

सुआइ गज बसि परे मन बउरा रे अँकसु सहिओ सीस ॥ १ ॥ बिखै बाचु हरि राचु समझु मन बउरा रे ॥ निरभै होइ न हरि
 भजे मन बउरा रे गहिओ न राम जहाजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मरकट मुसटी अनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि ॥ छूटन
 को सहसा परिआ मन बउरा रे नाचिओ घर घर बारि ॥ २ ॥ जिउ नलनी सूअटा गहिओ मन बउरा रे माया इहु बिउहारु ॥
 जैसा रँगु कसुँभ का मन बउरा रे तिउ पसरिओ पासारु ॥ ३ ॥ नावन कउ तीरथ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव ॥ कहु
 कबीर छूटनु नहीं मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ ५७ ॥ गउड़ी ॥ अगनि न दहै पवनु नहीं मगनै
 तसकरु नेरि न आवै ॥ राम नाम धनु करि सँचउनी सो धनु कत ही न जावै ॥ १ ॥ हमरा धनु माधउ गोबिंदु धरणीधरु इहै
 सार धनु कहीरे ॥ जो सुखु प्रभ गोबिंद की सेवा सो सुखु राजि न लहीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु धन कारणि सिव सनकादिक
 खोजत भए उदासी ॥ मनि मुकँदु जिहबा नाराइनु परै न जम की फासी ॥ २ ॥ निज धनु गिआनु भगति गुरि दीनी तासु
 सुमति मनु लागा ॥ जलत अँभ थँभि मनु धावत भरम बँधन भउ भागा ॥ ३ ॥ कहै कबीरु मदन के माते हिरदै देखु बीचारी
 ॥ तुम घरि लाख कोटि अस्व हसती हम घरि एकु मुरारी ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ५८ ॥ गउड़ी ॥ जिउ कपि के कर मुसटि
 चनन की लुबाधि न तिआगु दइओ ॥ जो जो करम कीए लालच सिउ ते फिरि गरहि परिओ ॥ १ ॥ भगति बिनु बिरथे जनमु
 गइओ ॥ साधसंगति भगवान भजन बिनु कही न सचु रहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ उदिआन कुसम परफुलित किनहि न
 घ्राउ लइओ ॥ तैसे भ्रमत अनेल जोनि महि फिरि फिरि काल हइओ ॥ २ ॥ इआ धन जोबन अरु सुत दारा पेखन कउ जु
 दइओ ॥ तिन ही माहि अटकि जो उरझे इंद्री प्रेरि लइओ ॥ ३ ॥ अउध अनल तनु तिन को मँदरु चहु दिस ठाटु ठइओ ॥
 कहि कबीर भै सागर तरन कउ मै सतिगुर ओट लइओ ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ ५९ ॥ गउड़ी ॥ पानी मैला माटी गोरी ॥ इस
 माटी की पुतरी जोरी ॥ १ ॥ मै नाही कछु आहि न मोरा ॥ तनु धनु सभुरसु गोबिंद तोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥

इस माटी महि पवनु समाइआ ॥ झूठा परपंचु जोरि चलाइआ ॥ २ ॥ किनहू लाख पांच की जोरी ॥ अंत की बार गगरीआ
 फोरी ॥ ३ ॥ कहि कबीर इक नीव उसारी ॥ खिन महि बिनसि जाइ अहंकारी ॥ ४ ॥ १ ॥ ९ ॥ ६० ॥ गउड़ी ॥ राम
 जपउ जी ऐसे ऐसे ॥ ध्रु प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥ १ ॥ दीन दइआल भरोसे तेरे ॥ सभु परवारु चड़ाइआ बेडे ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ जा तिस भावै ता हुकमु मनावै ॥ इस बेडे कउ पारि लघावै ॥ २ ॥ गुर परसादि ऐसी बुधि समानी ॥ चूकि गई
 फिरि आवन जानी ॥ ३ ॥ कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ उरवारि पारि सभ एको दानी ॥ ४ ॥ २ ॥ १० ॥ ६१ ॥
 गउड़ी ९ ॥ जोनि छाडि जउ जग महि आइओ ॥ लागत पवन खसमु बिसराइओ ॥ १ ॥ जीअरा हरि के गुना गाउ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ गरभ जोनि महि उरध तपु करता ॥ तउ जठर अगनि महि रहता ॥ २ ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमि आइओ
 अब के छुटके ठउर न ठाइओ ॥ ३ ॥ कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ आवत दीसै जात न जानी ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥ ६२
 ॥ गउड़ी पूरबी ॥ सुरग बासु न बाछीऐ डरीऐ न नरकि निवासु ॥ होना है सो होई है मनहि न कीजै आस ॥ १ ॥ रमईआ
 गुन गाईऐ ॥ जाते पाईऐ परम निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ जपु किआ तपु संजमो किआ बरतु किआ इसनानु ॥ जब
 लगु जुगति न जानीऐ भाउ भगति भगवान ॥ २ ॥ सँपै देखि न हरखीऐ बिपति देखि न रोइ ॥ जिउ सँपै तिउ बिपति है
 बिध ने रचिआ सो होइ ॥ ३ ॥ कहि कबीर अब जानिआ संतन रिदै मझारि ॥ सेवक सो सेवा भले जिह घट बसै मुरारि ॥
 ४ ॥ १ ॥ १२ ॥ ६३ ॥ गउड़ी ॥ रे मन तेरो कोइ नही खिँचि लेइ जिनि भारु ॥ बिख बसेरो पँखि को तेसो इहु संसारु
 ॥ १ ॥ राम रसु पीआरे ॥ जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउर मुए किआ रोईऐ जउ आपा थिरु न रहाइ
 ॥ जो उपजै सो बिनसि है दुखु करि रोवै बलाइ ॥ २ ॥ जह की उपजी तह रची पीवत मरदन लाग ॥ कहि कबीर चिति
 चेतिआ राम सिमरि बैराग ॥ ३ ॥ २ ॥ १३ ॥ ६४ ॥ रागु गउड़ी ॥ पँथु निहारै कामनी लोचन

भरी ले उसासा ॥ उर ना भीजै पगु न खिसै हरि दरसन की आसा ॥ १ ॥ उडहु न कागा कारे ॥ बेगि मिलीजै अपुने राम
 पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ॥ एकु आधारु नामु नाराइन रसना रामु
 रवीजै ॥ २ ॥ १ ॥ १४ ॥ ६५ ॥ रागु गउड़ी ११ ॥ आस पास घन तुरसी का बिरबा माझ बना रसि गाऊं रे ॥ उआ का
 सरूप देखि मोही गुआरनि मो कउ छोडि न आउ न जाहू रे ॥ १ ॥ तोहि चरन मनु लागो सारिँगधर ॥ सो मिलै जो
 बडभागो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिँद्राबन मन हरन मनोहर क्रिसन चरावत गाऊ रे ॥ जा का ठाकुरु तुही सारिँगधर मोहि कबीरा
 नाऊ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १५ ॥ ६६ ॥ गउड़ी पूरबी १२ ॥ बिपल बसत्र केते है पहिरे किआ बन मधे बासा ॥ कहा भइआ नर
 देवा धोखे किआ जलि बोरिओ गिआता ॥ १ ॥ जीअरे जाहिगा मै जानां ॥ अबिगत समझु इआना ॥ जत जत देखउ
 बहुरि न पेखउ सँगि माइआ लपटाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनी धिआनी बहु उपदेसी इहु जगु सगलो धँधा ॥ कहि कबीर
 इक राम नाम बिनु इआ जगु माइआ अँधा ॥ २ ॥ १ ॥ १६ ॥ ६७ ॥ गउड़ी १२ ॥ मन रे छाडहु भरमु प्रगट होइ नाचहु
 इआ माइआ के डाँडे ॥ सूरु कि सनमुख रन ते डरपै सती कि साँचै भाँडे ॥ १ ॥ डगमग छाडि रे मन बउरा ॥ अब तउ जरे
 मरे सिधि पाईऐ लीनो हाथि सँधउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध माइआ के लीने इआ बिधि जगतु बिगूता ॥ कहि कबीर
 राजा राम न छोडउ सगल ऊच ते ऊचा ॥ २ ॥ २ ॥ १७ ॥ ६८ ॥ गउड़ी १३ ॥ फुरमानु तेरा सिरै ऊपरि फिरि न करत
 बीचार ॥ तुही दरीआ तुही करीआ तुझै ते निसतार ॥ १ ॥ बँदे बँदगी इकतीआर ॥ साहिबु रोसु धरउ कि पिआरु ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ नामु तेरा आधारु मेरा जिउ फूलु जई है नारि ॥ कहि कबीर गुलामु घर का जीआइ भावै मारि ॥ २ ॥ १८ ॥ ६९
 ॥ गउड़ी ॥ लख चउरासीह जीअ जोनि महि भ्रमत नँद बहु थाको रे ॥ भगति हेति अवतारु लीओ है भागु बडो बपुरा को
 रे ॥ १ ॥ तुम्ह जु कहत हउ नँद को नँदनु नँद सु नँदनु का को रे ॥ धरनि अकासु दसो दिस नाही तब इहु नँदु कहा थो रे

॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँकटि नही परै जोनि नही आवै नामु निरँजन जा कोरे ॥ कबीर को सुआमी ऐसो ठाकुरु जा कै माई न
 बापोरे ॥ २ ॥ १९ ॥ ७० ॥ गउड़ी ॥ निँदउ निँदउ मो कउ लोगु निँदउ ॥ निँदा जन कउ खरी पिआरी ॥ निँदा बापु
 निँदा महतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निँदा होइ त बैकुँठि जाईऐ ॥ नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥ रिँदै सुध जउ निँदा होइ ॥
 हमरे कपरे निँदकु धोइ ॥ १ ॥ निँदा करै ससु हमरा मीतु ॥ निँदक माहि हमारा चीतु ॥ निँदकु सो जो निँदा होरै ॥ हमारा
 जीवनु निँदकु लोरै ॥ २ ॥ निँदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ निँदा हमरा करै उधारु ॥ जन कबीर कउ निँदा सारु ॥ निँदकु
 डूबा हम उतरे पारिं ॥ ३ ॥ २० ॥ ७१ ॥ राजा राम तूँ ऐसा निरभउ तरन तारन राम राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब हम
 होते तब तुम नाही अब तुम हहु हम नाही ॥ अब हम तुम एक भए हहि एकै देखत मनु पतीआही ॥ १ ॥ जब बुधि होती
 तब बलु कैसा अब बुधि बलु न खटाई ॥ कहि कबीर बुधि हरि लई मेरी बुधि बदली सिधि पाई ॥ २ ॥ २१ ॥ ७२ ॥
 गउड़ी ॥ खट नेम करि कोठड़ी बांधी बसतु अनूपु बीच पाई ॥ कुँजी कुलफु प्रान करि राखे करते बार न लाई ॥ १ ॥ अब
 मन जागत रहुरे भाई ॥ गाफलु होइ कै जनमु गवाइओ चोरु मुसै घरु जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँच पहरुआ दर महि रहते
 तिन का नही पतीआरा ॥ चेति सुचेत चित होइ रहु तउ लै परगासु उजारा ॥ २ ॥ नउ घर देखिं जु कामनि भूली बसतु
 अनूप न पाई ॥ कहतु कबीर नवै घर मूसे दसवै ततु समाई ॥ ३ ॥ २२ ॥ ७३ ॥ गउड़ी ॥ माई मोहि अवरु न जानिओ
 आनानां ॥ सिव सनकादि जासु गुन गावहि तासु बसहि मोरे प्रानानां ॥ रहाउ ॥ हिरेदे प्रगासु गिआन गुर गँमित गगन
 मँडल महि धिआनानां ॥ बिखै रोग भै बँधन भागे मन निज घरि सुखु जानाना ॥ १ ॥ एक सुमति रति जानि मानि प्रभ
 दूसर मनहि न आनाना ॥ चँदन बासु भए मन बासन तिआगि घटिओ अभिमानाना ॥ २ ॥ जो जन गाइ धिआइ जसु
 ठाकुर तासु प्रभू है थानानां ॥ तिह बड भाग बसिओ मनि जा कै करम प्रधान मथानाना ॥ ३ ॥ काटि सकति सिव सहजु

प्रगासिओ एकै एक समानाना ॥ कहिं कबीर गुर भेटि महा सुख भ्रमत रहे मनु मानानां ॥ ४ ॥ २३ ॥ ७४ ॥

रागु गउडी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की १४ शितीनाम करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ॥ ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ॥ १ ॥ जहा बोलि तह अछर आवा ॥ जह अबोल तह मनु न रहावा ॥ बोल अबोल मधि है सोई ॥ जस ओहु है तस लखै न कोई ॥ २ ॥ अलह लहउ तउ किआ कहउ कहउ त को उपकार ॥ बटक बीज महि रवि रहिओ जा को तीनि लोक बिसथार ॥ ३ ॥ अलह लहँता भेद छै कछु कछु पाइओ भेद ॥ उलटि भेद मनु बेधिओ पाइओ अभँग अछेद ॥ ४ ॥ तुरक तरीकति जानीरे हिंदू बेद पुरान ॥ मन समझावन कारने कछुअक पडीरे गिआन ॥ ५ ॥ ओअँकार आदि मै जाना ॥ लिखि अरु मेटै ताहि न माना ॥ ओअँकार लखै जउ कोई ॥ सोई लखि मेटणा न होई ॥ ६ ॥ कका किरणि कमल महि पावा ॥ ससि बिगास सँपट नही आवा ॥ अरु जे तहा कुसम रसु पावा ॥ अकह कहा कहिं का समझावा ॥ ७ ॥ खखा इहै खोडि मन आवा ॥ खोडे छाडि न दह दिस धावा ॥ खसमहि जाणि खिमा करि रहै ॥ तउ होइ निखिअउ अखै पदु लहै ॥ ८ ॥ गगा गुर के बचन पछाना ॥ दूजी बात न धरई काना ॥ रहै बिहँगम कतहि न जाई ॥ अगह गहै गहि गगन रहाई ॥ ९ ॥ घघा घटि घटि निमसै सोई ॥ घट फूटे घटि कबहि न होई ॥ ता घट माहि घाट जउ पावा ॥ सो घटु छाडि अवघट कत धावा ॥ १० ॥ डँडा निग्रहि सनेहु करि निरवारो सँदेह ॥ नाही देखि न भाजीरे परम सिआनप एह ॥ ११ ॥ चचा रचित चित्र है भारी ॥ तजि चित्रै चेतहु चितकारी ॥ चित्र बचित्र इहै अवझेरा ॥ तजि चित्रै चितु राखि चितेरा ॥ १२ ॥ छछा इहै छत्रपति पासा ॥ छकि कि न रहहु छाडि कि न आसा ॥ रे मन मै तउ छिन छिन समझावा ॥ ताहि छाडि कत आपु बधावा ॥ १३ ॥ जजा जउ तन जीवत जरावै ॥ जोबन जारि जुगति सो पावै ॥ अस जरि पर जरि जरि जब रहै ॥ तब जाइ जोति उजारउ लहै ॥ १४ ॥ झझा उरझि

सुरझिं नही जाना ॥ रहिओ झझकि नाही परवाना ॥ कत झखिं झखिं अउरन समझावा ॥ झगरु कीए झगरउ ही पावा ॥ १५ ॥ गँजा निकटि जु घट रहिओ दूरि कहा तजि जाइ ॥ जा कारणि जगु दूढिअउ नेरउ पाइअउ टाहि ॥ १६ ॥ टटा बिकट घाट घट माही ॥ खोलि कपाट महलि कि न जाही ॥ देखि अटल टलि कतहि न जावा ॥ रहै लपटि घट परचउ पावा ॥ १७ ॥ ठठा इहै दूरि ठग नीरा ॥ नीठि नीठि मनु कीआ धीरा ॥ जिनि ठगि ठगिआ सगल जगु खावा ॥ सो ठगु ठगिआ ठउर मनु आवा ॥ १८ ॥ डडा डर उपजे डरु जाई ॥ ता डर महि डरु रहिआ समाई ॥ जउ डर डरै ता फिरि डरु लागै ॥ निडर हूआ डरु उर होइ भागै ॥ १९ ॥ ढढा ढिग दूढहि कत आना ॥ दूढत ही ढहि गए पराना ॥ चडि सुमेरि दूढि जब आवा ॥ जिह गडु गडिओ सुगड महि पावा ॥ २० ॥ णाणा रणि रूतउ नर नेही करै ॥ ना निवै ना फुनि सँचरै ॥ धँनि जनमु ताही को गणै ॥ मारै एकहि तजि जाइ घणै ॥ २१ ॥ तता अतर तरिओ नह जाई ॥ तन त्रिभवण महि रहिओ समाई ॥ जउ त्रिभवण तन माहि समावा ॥ तउ ततहि तत मिलिआ सचु पावा ॥ २२ ॥ थथा अथाह थाह नही पावा ॥ ओहु अथाह इहु थिरु न रहावा ॥ थोडै थलि थानक आरँभै ॥ बिनु ही थाभह मँदिरु थँभै ॥ २३ ॥ ददा देखि जु बिनसनहारा ॥ जस अदेखि तस राखि बिचारा ॥ दसवै दुआरि कुँची जब दीजै ॥ तउ दइआल को दरसनु कीजै ॥ २४ ॥ धधा अरधहि उरध निबेरा ॥ अरधहि उरधह मँझि बसेरा ॥ अरधह छाडि उरध जउ आवा ॥ तउ अरधहि उरध मिलिआ सुख पावा ॥ २५ ॥ नँना निसि दिनु निरखत जाई ॥ निरखत नैन रहे रतवाई ॥ निरखत निरखत जब जाइ पावा ॥ तब ले निरखहि निरख मिलावा ॥ २६ ॥ पपा अपर पारु नही पावा ॥ परम जोति सिउ परचउ लावा ॥ पांचउ इँद्री निग्रह करई ॥ पापु पुँनु दोऊ निरवरई ॥ २७ ॥ फफा बिनु फूलह फलु होई ॥ ता फल फँक लखै जउ कोई ॥ दूणि न परई फँक बिचारै ॥ ता फल फँक सभै तन फारै ॥ २८ ॥ बबा बिँदहि बिँद मिलावा ॥ बिँदहि बिँदि न बिँछुरन पावा ॥ बँदउ

होइ बँदगी गहै ॥ बँदक होइ बँध सुधि लहै ॥ २९ ॥ भभा भेदहि भेद मिलावा ॥ अब भउ भानि भरोसउ आवा ॥ जो बाहरि
 सो भीतरि जानिआ ॥ भइआ भेदु भूपति पहिचानिआ ॥ ३० ॥ ममा मूल गइआ मनु मानै ॥ मरमी होइ सु मन कउ जानै
 ॥ मत कोई मन मिलता बिलमावै ॥ मगन भइआ ते सो सचु पावै ॥ ३१ ॥ ममा मन सिउ काजु है मन साधे सिधि होइ ॥
 मन ही मन सिउ कहै कबीरा मन सा मिलिआ न कोइ ॥ ३२ ॥ इहु मनु सकती इहु मनु सीउ ॥ इहु मनु पँच तत को जीउ ॥
 इहु मनु ले जउ उनमनि रहै ॥ तउ तीनि लोक की बातै कहै ॥ ३३ ॥ यथा जउ जानहि तउ दुरमति हनि करि बसि काइआ
 गाउ ॥ रणि रूतउ भाजै नही सूरउ थारउ नाउ ॥ ३४ ॥ शरा रसु निरस करि जानिआ ॥ होइ निरस सु रसु पहिचानिआ ॥
 इस रस छाडे उह रसु आवा ॥ उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ॥ ३५ ॥ लला ऐसे लिव मनु लावै ॥ अनत न जाइ परम सचु
 पावै ॥ अरु जउ तहा प्रेम लिव लावै ॥ तउ अलह लहै लहि चरन समावै ॥ ३६ ॥ ववा बार बार बिसन सँहारि ॥ बिसन
 सँहारि न आवै हारि ॥ बलि बलि जे बिसन तना जसु गावै ॥ बिसन मिले सभ ही सचु पावै ॥ ३७ ॥ वावा वाही जानीरे वा
 जाने इहु होइ ॥ इहु अरु ओहु जब मिलै तब मिलत न जानै कोइ ॥ ३८ ॥ ससा सो नीका करि सोधहु ॥ घट परचा की बात
 निरोधहु ॥ घट परचै जउ उपजै भाउ ॥ पूरि रहिआ तह त्रिभवण राउ ॥ ३९ ॥ खखा खोजि परै जउ कोई ॥ जो खोजै सो
 बहुरि न होई ॥ खोज बूझि जउ करै बीचारा ॥ तउ भवजल तरत न लावै बारा ॥ ४० ॥ ससा सो सह सेज सवारै ॥ सोई
 सही सँदेह निवारै ॥ अल्प सुख छाडि परम सुख पावा ॥ तब इह त्रीअ ओहु कँतु कहावा ॥ ४१ ॥ हाहा होत होइ नही
 जाना ॥ जब ही होइ तबहि मनु माना ॥ है तउ सही लखै जउ कोई ॥ तब ओही उहु एहु न होई ॥ ४२ ॥ लिँउ लिँउ करत
 फिरै सभु लोगु ॥ ता कारणि बिआपै बहु सोगु ॥ लखिमी बर सिउ जउ लिँउ लावै ॥ सोगु मिटै सभ ही सुख पावै ॥ ४३ ॥
 खखा खिरत खपत गए केते ॥ खिरत खपत अजहूँ नह चेतै ॥ अब जगु जानि जउ मना रहै ॥ जह का बिछुरा तह थिरु

लहै ॥ ४४ ॥ बावन अखर जोरे आनि ॥ सकिआ न अखर एकु पछानि ॥ सत का सबदु कबीरा कहै ॥ पंडित होइ सु अनभै
रहै ॥ पंडित लोगह कउ बिउहार ॥ गिआनवँत कउ ततु बीचार ॥ जा कै जीअ जैसी बुधि होई ॥ कहि कबीर जानैगा सोई ॥
४५ ॥

१६ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी थितीं कबीर जी कीं ॥

सलोकु ॥ पंद्रह थितीं सात वार ॥ कहि कबीर उरवार न पार ॥ साधिक सिध लखै जउ भेउ ॥ आपे करता आपे देउ ॥ १ ॥
थितीं ॥ अंमावस महि आस निवारहु ॥ अंतरजामी रामु समारहु ॥ जीवत पावहु मोख दुआर ॥ अनभउ सबदु ततु निजु सार
॥ १ ॥ चरन कमल गोबिंद रँगु लागा ॥ संत प्रसादि भए मन निरमल हरि कीरतन महि अनदिनु जागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
परिवा प्रीतम करहु बीचार ॥ घट महि खेलै अघट अपार ॥ काल कल्पना कदे न खाइ ॥ आदि पुरख महि रहै समाइ ॥ २ ॥
दुतीआ दुह करि जानै अंग ॥ माइआ ब्रहम रमै सभ संग ॥ ना ओहु बढै न घटता जाइ ॥ अकुल निरँजन एकै भाइ ॥ ३ ॥
त्रितीआ तीने सम करि लिआवै ॥ आनद मूल परम पदु पावै ॥ साधसंगति उपजै बिस्वास ॥ बाहरि भीतरि सदा प्रगास ॥ ४
॥ चउथहि चंचल मन कउ गहहु ॥ काम क्रोध संगि कबहु न बहहु ॥ जल थल माहे आपहि आप ॥ आपै जपहु आपना जाप
॥ ५ ॥ पांचै पंच तत बिसथार ॥ कनिक कामिनी जुग बिउहार ॥ प्रेम सुधा रसु पीवै कोइ ॥ जरा मरण दुखु फेरि न होइ ॥
६ ॥ छठि खटु चक्र छहूँ दिस धाइ ॥ बिनु परचै नही थिरा रहाइ ॥ दुबिधा मेटि खिमा गहि रहहु ॥ करम धरम की सूल न सहहु
॥ ७ ॥ सातैं सति करि बाचा जाणि ॥ आतमरामु लेहु परवाणि ॥ छूटै संसा मिटि जाइ दुख ॥ सुँन सरोवरि पावहु सुख ॥
८ ॥ असटमी असट धातु की काइआ ॥ ता महि अकुल महा निधि राइआ ॥ गुर गम गिआन बतावै भेद ॥ उलटा रहै अभँग
अछेद ॥ ९ ॥ नउमी नवै दुआर कउ साधि ॥ बहती मनसा राखहु बांधि ॥ लोभ मोह सभ बीसरि जाहु ॥ जुगु जुगु

जीवहु अमर फल खाहु ॥ १० ॥ दसमी दह दिस होइ अनंद ॥ छूटै भरमु मिलै गोबिंद ॥ जोति सरूपी तत अनूप ॥
 अमल न मल न छाह नही धूप ॥ ११ ॥ एकादसी एक दिस धावै ॥ तउ जोनी संकट बहुरि न आवै ॥ सीतल निरमल
 भइआ सरीरा ॥ दूरि बतावत पाइआ नीरा ॥ १२ ॥ बारसि बारह उगवै सूर ॥ अहिनिंसि बाजे अनहद तूर ॥ देखिआ
 तिहूँ लोक का पीउ ॥ अचरजु भइआ जीव ते सीउ ॥ १३ ॥ तेरसि तेरह अगम बखाणि ॥ अरध उरध बिचि सम
 पहिचाणि ॥ नीच ऊच नही मान अमान ॥ बिआपिक राम सगल समान ॥ १४ ॥ चउदसि चउदह लोक मझारि ॥ रोम
 रोम महि बसहि मुरारि ॥ सत संतोख का धरहु धिआन ॥ कथनी कथीऐ ब्रहम गिआन ॥ १५ ॥ पूनिउ पूरा चंद अकास
 ॥ पसरहि कला सहज परगास ॥ आदि अंति मधि होइ रहिआ थीर ॥ सुख सागर महि रमहि कबीर ॥ १६ ॥

१८ सिंतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी वार कबीर जीउ के ७ ॥

बार बार हरि के गुन गावउ ॥ गुर गमि भेदु सु हरि जा पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदित करै भगति आरंभ ॥ काइआ मंदर
 मनसा थंभ ॥ अहिनिंसि अखंड सुरही जाइ ॥ तउ अनहद बेणु सहज महि बाइ ॥ १ ॥ सोमवारि ससि अंम्रितु झरै ॥
 चाखत बेगि सगल बिख हरै ॥ बाणी रोकिआ रहै दुआर ॥ तउ मनु मतवारो पीवनहार ॥ २ ॥ मंगलवारै ले माहीति ॥
 पंच चोर की जाणै रीति ॥ घर छोडें बाहरि जिनि जाइ ॥ नातरु खरा रिसै है राइ ॥ ३ ॥ बुधवारि बुधि करै प्रगास ॥
 हिरदै कमल महि हरि का बास ॥ गुर मिलि दोऊ एक सम धरै ॥ उरध पंक लै सूधा करै ॥ ४ ॥ ब्रहिसपति बिखिआ देइ
 बहाइ ॥ तिनि देव एक सांगि लाइ ॥ तीनि नदी तह त्रिकुटी माहि ॥ अहिनिंसि कसमल धोवहि नाहि ॥ ५ ॥ सुक्रितु
 सहारै सुइह ब्रति चडै ॥ अनदिन आपि आप सिउ लडै ॥ सुरखी पांचउ राखै सबै ॥ तउ दूजी दिसटि न पैसै कबै ॥ ६ ॥
 थावर थिरु करि राखै सोइ ॥ जोति दी वटी घट महि जोइ ॥ बाहरि भीतरि भइआ प्रगासु ॥ तब हूआ सगल करम का नासु

॥ ७ ॥ जब लगु घट महि दूजी आन ॥ तउ लउ महलि न लाभै जान ॥ रमत राम सिउ लागो रँगु ॥ कहि कबीर तब निरमल
अँग ॥ ८ ॥ १ ॥

रगु गउड़ी चेती बाणी नाम देउ जीउ की १९ शितिगुर प्रसादि ॥

देवा पाहन तारीअले ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआपि अजामलु
तारीअले ॥ चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए ॥ हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥ १ ॥ दासी सुत जनु बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ
राज दीए ॥ जप हीन तु हीन कुल हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥ २ ॥ १ ॥

रगु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी १९ शितिनामु करता पुरख गुर प्रसादि ॥

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥ मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥ १ ॥ राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥ मोहि न
बिसारहु मै जनु तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥ चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥ २ ॥ कहु रविदास
परउ तेरी साभा ॥ बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥ ३ ॥ १ ॥ बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ दूख अँदोहु नहीं तिहि ठाउ ॥ नां
तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥ १ ॥ अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥
१ ॥ रहाउ ॥ काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥ आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥
२ ॥ तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥ कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु
हमारा ॥ ३ ॥ २ ॥

१९ शितिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥

घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥ रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥ १ ॥ को बनजारो राम को

मेरा टांडा लादिया जाइ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥ मै राम नाम धनु लादिया बिखु लादी संसारि ॥ २ ॥ उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥ मोहि जम डँडु न लागई तजीले सरब जँजाल ॥ ३ ॥ जैसा रँगु कसुँभ का तैसा इहु संसारु ॥ मेरे रमईए रँगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥ ४ ॥ १ ॥

गउड़ी पूरबी रविदास जीउ ॥ १३३३तिगुर प्रसादि ॥

कूप भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥ ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥ १ ॥ सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥ करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥ २ ॥ जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥ प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥ ३ ॥ १ ॥

गउड़ी बैरागणि ॥ १३३३तिगुर प्रसादि ॥

सतिजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥ तीनौ जुग तीनौ दिडे कलि केवल नाम अधार ॥ १ ॥ पारु कैसे पाइबो रे ॥ मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥ जाते आवा गवनु बिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बिधि धरम निरूपीए करता दीसै सभ लोइ ॥ कवन करम ते छूटीए जिह साधे सभ सिधि होइ ॥ २ ॥ करम अकरम बिचारीए संका सुनि बेद पुरान ॥ संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु ॥ ३ ॥ बाहरु उदकि परवारीए घट भीतरि बिबिधि बिकार ॥ सुध कवन पर होइबो सुच कुँचर बिधि बिउहार ॥ ४ ॥ रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार ॥ पारस मानो ताबो छुटे कनक होत नही बार ॥ ५ ॥ परम परस गुरु भेटीए पूरब लिखत लिलाट ॥ उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट ॥ ६ ॥ भगति जुगति मति सति करी भ्रम बँधन काटि बिकार ॥ सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार ॥ ७ ॥ अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥ प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥ ८ ॥ १ ॥

वसिं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजुनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

रगु आसा महला १ घरु १ सो दरु ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब सम्हाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असँखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे रग पुरी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावन्हि तुधनो पउणु पाणी बैसँतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावन्हि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावन्हि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावन्हि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावन्हि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावन्हि तुधनो साध बीचारे ॥ गावन्हि तुधनो जती सती सँतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पंडित पडे रखीसुर जुगु जुगु बेदा नाले ॥ गावन्हि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ गावन्हि तुधनो रतन उपाए तेरे जेते अठसठि तीरथ नाले ॥ गावन्हि तुधनो जोध महाबल सूरु गावन्हि तुधनो खाणी चारे ॥ गावन्हि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावन्हि जो तुधु भावन्हि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिन रचाई ॥ रंगी रंगी भाती जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता अपना जिउ तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु

न करणा जाई ॥ सो पातिसाह साहा पति साहिबु नानक रहणुरजाई ॥ १ ॥ १ ॥ आसा महला ४ ॥ सो पुरखु निरंजनु हरि
 पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे
 जी तूँ जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ
 नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तूँ घट घट आंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे
 चोज विडाणा ॥ तूँ आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूँ पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण
 आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन्ह कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से
 जन जुग महि सुखवासी ॥ से मुकतु से मुकत भए जिन्ह हरि धिआइआ जीउ तिन टूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन्ह
 हरि निरभउ धिआइआ जीउ तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन्ह सेविआ जिन्ह सेविआ मेरा हरि जीउ ते हरि हरि रूप समासी
 ॥ से धँनु से धँनु जिन हरि धिआइआ जीउ जनु नानकु तिन बलि जासी ॥ ३ ॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बेअंत
 बेअंता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु
 तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिंमिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत
 भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥ तूँ आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूँ जुगु
 जुगु एको सदा सदा तूँ एको जी तूँ निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूँ आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे
 खिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥ ५ ॥ २ ॥

१४३ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोई ॥ केवड वडा डीठा होई ॥ कीमति पाइ

न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गँभीरा गुणी गहीरा ॥ कोई न जाणै तेरा केता
 केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर
 गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चँगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआं
 ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥ आखण वाला किआ बेचारा ॥ सिफती भरे तेरे
 भँडारा ॥ जिंसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारण हारा ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ आखा जीवा विसरै
 मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ तितु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ
 विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नहीं पाई ॥
 जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न हौवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देंदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु
 एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥ ३ ॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥
 खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाड्हु सनाति ॥ ४ ॥ २ ॥ जे दरि मांगतु कूक करे महली खसमु सुणे ॥ भावै
 धीरक भावै धके एक वडाई देइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि कराए आपि करेइ ॥ आपि उलामे चिति धरेइ ॥ जा तूँ करणहारु
 करतारु ॥ किआ मुहताजी किआ सँसारु ॥ २ ॥ आपि उपाए आपु देइ ॥ आपे दुस्मति मनहि करेइ ॥ गुर परसादि वसै मनि
 आइ ॥ दुखु अन्हेरा विचहु जाइ ॥ ३ ॥ साचु पिआरा आपि करेइ ॥ अवरी कउ साचु न देइ ॥ जे किसै देइ वखाणै नानकु
 आगै पूछ न लेइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा महला १ ॥ ताल मदीरे घट के घाट ॥ दोलक दुनीआ वाजहि वाज ॥ नारदु नाचै कलि
 का भाउ ॥ जती सती कह राखहि पाउ ॥ १ ॥ नानक नाम विटहु कुरबाणु ॥ अँधी दुनीआ साहिबु जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 गुरु पासहु फिरि चेला खाइ ॥ तामि परीति वसै घरि

आइ ॥ जे सउ वहिआ जीवण खाणु ॥ खसम पछाणै सो दिनु परवाणु ॥ २ ॥ दरसनि देखिऐ दइआ न होइ ॥ लए दिते विणु
 रहै न कोइ ॥ राजा निआउ करे हथि होइ ॥ कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥ ३ ॥ माणस मूरति नानकु नामु ॥ करणी कुता दरि
 फुरमानु ॥ गुर परसादि जाणै मिहमानु ॥ ता किछु दरगह पावै मानु ॥ ४ ॥ ४ ॥ आसा महला १ ॥ जेता सबदु सुरति धुनि
 तेती जेता रूपु काइआ तेरी ॥ तूँ आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ॥ १ ॥ साहिबु मेरा एको है ॥ एको है भाई
 एको है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइ ॥ आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ॥ २ ॥ जो किछु
 करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥ जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ कलि कलवाली माइआ मद्दु
 मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै ॥ आपे रूप करे बहु भांतीं नानकु बपुड़ा एव कहै ॥ ४ ॥ ५ ॥ आसा महला १ ॥ वाजा मति
 पखावजु भाउ ॥ होइ अनँदु सदा मनि चाउ ॥ एहा भगत एहो तप ताउ ॥ इतु रँगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ १ ॥ पूरे ताल
 जाणै सालाह ॥ होरु नचणा खुसीआ मन माह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु सँतोखु वजहि दुइ ताल ॥ पैरी वाजा सदा निहाल ॥
 रागु नादु नही दूजा भाउ ॥ इतु रँगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ २ ॥ भउ फेरी होवै मन चीति ॥ बहदिआ उठदिआ नीता नीति
 ॥ लेटणि लेटि जाणै तनु सुआहु ॥ इतु रँगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ ३ ॥ सिख सभा दीखिआ का भाउ ॥ गुरमुखि सुणणा
 साचा नाउ ॥ नानक आखणु वेरा वेर ॥ इतु रँगि नाचहु रखि रखि पैर ॥ ४ ॥ ६ ॥ आसा महला १ ॥ पउणु उपाइ धरी सभ
 धरती जल अगनी का बँधु कीआ ॥ अँधुलै दहसिरि मँड कटाइआ रावणु मारि किआ वडा भइआ ॥ १ ॥ किआ उपमा तेरी
 आखी जाइ ॥ तूँ सरबे पूरि रहिआ लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ उपाइ जुगति हथि कीनी काली नथि किआ वडा भइआ
 ॥ किसु तूँ पुरखु जोरु कउण कहीऐ सरब निरँतरि रवि रहिआ ॥ २ ॥ नालि कुटँबु साथि वरदाता ब्रहमा भालण खिसटि
 गइआ ॥ आगै अँतु न पाइओ ता का कँसु छेदि किआ वडा भइआ ॥ ३ ॥ रतन उपाइ धरे खीरु मथिआ

होरिं भखलाए जिं असी कीआ ॥ कहै नानकु छपै किउ छपिआ एकी एकी वंडि दीआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ आसा महला १ ॥ कर्म
 करतूति बेलिं बिसथारी राम नामु फलु हूआ ॥ तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सब निरंजनि कीआ ॥ १ ॥ करे वखिआणु
 जाणै जे कोई ॥ अँमितु पीवै सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह पीआ से मसत भए है तूटे बंधन फाहे ॥ जोती जोति समाणी
 भीतरि ता छोडे माइआ के लाहे ॥ २ ॥ सरब जोति रूपु तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइआ ॥ शरै रूपि निरालमु बैठा
 नदरि करे विचि छाइआ ॥ ३ ॥ बीणा सबदु वजावै जोगी दरसनि रूपि अपारा ॥ सबदि अनाहदि सो सहु राता नानकु कहै
 विचारा ॥ ४ ॥ ८ ॥ आसा महला १ ॥ मै गुण गला के सिरिं भार ॥ गली गला सिरजणहार ॥ खाणा पीणा हसणा बादि
 ॥ जब लगु रिदै न आवहि यादि ॥ १ ॥ तउ परवाह केही किआ कीजै ॥ जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 मन की मति मतागलु मता ॥ जो किछु बोलीऐ सभु खतो खता ॥ किआ मुहु लै कीचै अरदासि ॥ पापु पुँनु दुइ साखी पासि
 ॥ २ ॥ जैसा तूँ करहि तैसा को होइ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ जेही तूँ मति देहि तेही को पावै ॥ तुधु आपे भावै तिवै
 चलावै ॥ ३ ॥ राग रतन परीआ परवार ॥ तिसु विचि उपजै अँमितु सार ॥ नानक करते का इहु धनु मालु ॥ जे को बूझै एहु
 बीचार ॥ ४ ॥ ९ ॥ आसा महला १ ॥ करि किरपा अपनै घरि आइआ ता मिलिं सखीआ काजु रचाइआ ॥ खेलु देखिं मनि
 अनदु भइआ सहु वीआहण आइआ ॥ १ ॥ गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु ॥ हमरै घरि आइआ जगजीवनु भतारु ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ गुरु दुआरै हमरा वीआहु जिं होआ जां सहु मिलिंआ तां जानिआ ॥ तिहु लोका महि सबदु रविआ है आपु
 गइआ मनु मानिआ ॥ २ ॥ आपणा कारजु आपि सवारे होरनि कारजु न होई ॥ जितु कारजिं सतु संतोखु दइआ धरमु है
 गुरमुखिं बूझै कोई ॥ ३ ॥ भनति नानकु सभना का पिरु एको सोइ ॥ जिस नो नदरि करे सा सोहागणिं होइ ॥ ४ ॥ १० ॥
 आसा महला १ ॥ ग्रिहु बनु समसरि सहजिं सुभाइ ॥ दुरमति गतु भई कीरति ठाइ ॥ सच पउड़ी साचउ मुखिं नांउ ॥

सतिगुरु सेवि पाए निज थाउ ॥ १ ॥ मन चूरे खटु दरसन जाणु ॥ सरब जोति पूरन भगवानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अधिक
 तिआस भेख बहु करै ॥ दुखु बिखिआ सुखु तनि परहरै ॥ कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै ॥ दुबिधा छोडि नामि निसतरै ॥
 २ ॥ सिफति सलाहणु सहज अनंद ॥ सरवा सैनु प्रेम गोबिंद ॥ आपे करे आपे बखसिंदु ॥ तन मनु हरि पहि आगै जिंदु
 ॥ ३ ॥ झूठ विकार महा दुखु देह ॥ भेख वरन दीसहि सभि खेह ॥ जो उपजै सो आवै जाइ ॥ नानक असथिरु नामु
 रजाइ ॥ ४ ॥ ११ ॥ आसा महला १ ॥ इको सरवरु कमल अनूप ॥ सदा बिगसै परमल रूप ॥ ऊजल मोती चूगहि
 हंस ॥ सरब कला जगदीसै अंस ॥ १ ॥ जो दीसै सो उपजै बिनसै ॥ बिनु जल सरवरि कमलु न दीसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 बिरला बूझै पवै भेदु ॥ साखा तीनि कहै नित बेदु ॥ नाद बिंद की सूरति समाइ ॥ सतिगुरु सेवि परम पदु पाइ ॥ २ ॥
 मुकतो रातउ रंगि स्वांतउ ॥ राजन राजि सदा बिगसांतउ ॥ जिसु तूं राखहि किरपा धारि ॥ बूडत पाहन तारहि तारि ॥
 ३ ॥ त्रिभवण महि जोति त्रिभवण महि जाणिआ ॥ उलट भई घरु घर महि आणिआ ॥ अहिनिशि भगति करे लिव लाइ
 ॥ नानकु तिन कै लागै पाइ ॥ ४ ॥ १२ ॥ आसा महला १ ॥ गुरमति साची हुजति दूरि ॥ बहुतु सिआणप लागै धूरि
 ॥ लागी मैलु मिटै सच नाइ ॥ गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ है हजूरि हाजरु अरदासि ॥ दुखु सुखु साचु करते प्रभ
 पासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूडु कमावै आवै जावै ॥ कहणि कथनि वारा नही आवै ॥ किआ देखा सूझ बूझ न पावै ॥ बिनु
 नावै मनि त्रिपति न आवै ॥ २ ॥ जो जनमे से रोगि विआपे ॥ हउमै माइआ दूखि संतापे ॥ से जन बाचे जो प्रभि राखे
 ॥ सतिगुरु सेवि अंम्रित रसु चाखे ॥ ३ ॥ चलतउ मनु राखै अंम्रितु चाखै ॥ सतिगुर सेवि अंम्रित सबदु भाखै ॥ साचै
 सबदि मुकति गति पाए ॥ नानक विचहु आपु गवाए ॥ ४ ॥ १३ ॥ आसा महला १ ॥ जो तिनि कीआ सो सचु थीआ
 ॥ अंम्रित नामु सतिगुरि दीआ ॥ हिरदै नामु नाही मनि भंगु ॥ अनदिनु नालि पिआरे सँगु ॥ १ ॥ हरि जीउ

राखहु अपनी सरणाई ॥ गुर परसादी हरि रसु पाइआ नामु पदारथु नउ निधि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम धरम सचु
 साचा नाउ ॥ ताकै सद बलिहारै जाउ ॥ जो हरि राते से जन परवाणु ॥ तिन की संगति परम निधानु ॥ २ ॥ हरि वरु
 जिनि पाइआ धन नारी ॥ हरि सिउ राती सबदु वीचारी ॥ आपि तरै संगति कुल तारै ॥ सतिगुरु सेवि ततु वीचारै ॥
 ३ ॥ हमरी जाति पति सचु नाउ ॥ करम धरम सँजमु सत भाउ ॥ नानक बखसे पूछ न होइ ॥ दूजा मेटे एको सोइ ॥ ४
 ॥ १४ ॥ आसा महला १ ॥ इकि आवहि इकि जावहि आई ॥ इकि हरि राते रहहि समाई ॥ इकि धरनि गगन महि
 ठउर न पावहि ॥ से करमहीण हरि नामु न धिआवहि ॥ १ ॥ गुर पूरे ते गति मिति पाई ॥ इहु सँसारु बिखु वत अति
 भउजलु गुर सबदी हरि पारि लँघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह कउ आपि लए प्रभु मेलि ॥ तिन कउ कालु न साकै पेलि ॥
 गुरमुखि निरमल रहहि पिआरे ॥ जिउ जल अँभ ऊपरि कमल निशारे ॥ २ ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीरे ॥ दीसै
 ब्रह्मु गुरमुखि सचु लहीरे ॥ अकथु कथउ गुरमति वीचारु ॥ मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥ ३ ॥ सासत बेद सिमिति
 बहु भेद ॥ अठसठि मजनु हरि रसु रेद ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै ॥ नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥ ४ ॥ १५
 ॥ आसा महला १ ॥ निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ ॥ करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै
 देखि बीचारिआ ॥ १ ॥ बोलहु रामु करे निसतारा ॥ गुर परसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजिआरा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ खनी खै बँधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पाई ॥ २ ॥
 हरि हरि नामु भगति प्रिअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥ भगति वछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥ ३
 ॥ मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए ॥ नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥ ४ ॥ १६
 ॥ आसा महला १ ॥ किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किसु समझावहि समझि रहे ॥ किसै पड़ावहि

पड़ि गुणि बूझे सतिगुर सबदि संतोखि रहे ॥ १ ॥ ऐसा गुरमति रमतु सरीरा ॥ हरि भजु मेरे मन गहिर गंभीरा ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ अनत तरंग भगति हरि रंगा ॥ अनदिनु सूचे हरि गुण संगा ॥ मिथिआ जनमु साकत संसारा ॥ राम भगति जनु
 रहै निरास ॥ २ ॥ सूची काइआ हरि गुण गाइआ ॥ आतमु चीनि रहै लिव लाइआ ॥ आदि अपारु अपरंपरु हीरा ॥
 लालि रता मेरा मनु धीरा ॥ ३ ॥ कथनी कहहि कहहि से मूए ॥ सो प्रभु दूरि नाही प्रभु तूँ है ॥ सभु जगु देखिआ माइआ
 छाइआ ॥ नानक गुरमति नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ १७ ॥ आसा महला १ तितुका ॥ कोई भीखकु भीखिआ खाइ ॥ कोई
 राजा रहिआ समाइ ॥ किस ही मानु किसै अपमानु ॥ ढाहि उसारे धरे धिआनु ॥ तुझ ते वडा नाही कोइ ॥ किसु वेखाली
 चंगा होइ ॥ १ ॥ मै तां नामु तेरा आधारु ॥ तूँ दाता करणहारु करतारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वाट न पावउ वीगा जाउ ॥
 दरगह बैसण नाही थाउ ॥ मन का अँधुला माइआ का बँधु ॥ खीन खराबु होवै नित कँधु ॥ खाण जीवण की बहुती आस ॥
 लेखै तेरै सास गिरास ॥ २ ॥ अहिनि सि अँधुले दीपक देइ ॥ भउजल डूबत चिँत करेइ ॥ कहहि सुणहि जो मानहि नाउ ॥
 हउ बलिहारै ता कै जाउ ॥ नानकु एक कहै अरदासि ॥ जीउ पिँडु सभु तेरै पासि ॥ ३ ॥ जां तूँ देहि जपी तेरा नाउ ॥ दरगह
 बैसण होवै थाउ ॥ जां तुधु भवै ता दुर्मति जाइ ॥ गिआन रतनु मनि वसै आइ ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मिलै ॥ प्रणवति
 नानकु भवजल तरै ॥ ४ ॥ १८ ॥ आसा महला १ पंचपदे ॥ दुध बिनु धेनु पँख बिन पँखी जल बिनु उतभुज कामि नाही
 ॥ किआ सुलतानु सलाम विहूणा अँधी कोठी तेरा नामु नाही ॥ १ ॥ की विसरहि दुखु बहुता लागै ॥ दूखु लागै तूँ विसरु
 नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी अँधु जीभ रसु नाही कँनी पवणु न वाजै ॥ चरणी चलै पजूता आगै विणु सेवा फल लागै ॥ २
 ॥ अखर बिरख बाग भुइ चोखी सिँचित भाउ करेही ॥ सभना फलु लागै नामु एको बिनु करमा कैसे लेही ॥ ३ ॥ जेते जीअ
 तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही ॥ दुखु सुखु भाणा तेरा होवै विणु नावै जीउ रहै नाही ॥ ४ ॥ मति विचि

मरणु जीवणु होरु कैसा जा जीवा तां जुगति नाही ॥ कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥ ७ ॥ १९ ॥
 आसा महला १ ॥ काइआ ब्रहमा मनु है धोती ॥ गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती ॥ हरि नामा जसु जाचउ नाउ ॥ गुरु
 परसादी ब्रहमि समाउ ॥ १ ॥ पांडे ऐसा ब्रहम बीचारु ॥ नामे सुचि नामो पड़उ नामे चजु आचारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि
 जनेऊ जिचरु जोति है नालि ॥ धोती टिका नामु समालि ॥ ऐथै ओथै निबही नालि ॥ विणु नावै होरि करम न भालि ॥ २
 ॥ पूजा प्रेम माइआ परजालि ॥ एको वेखहु अवरु न भालि ॥ चीन्है ततु गगन दस दुआर ॥ हरि मुखि पाठ पढ़ै बीचार ॥ ३
 ॥ भोजनु भाउ भरमु भउ भागै ॥ पाहरु अरा छबि चोरु न लागै ॥ तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु एकु ॥ बूझै ब्रहमु अंतरि बिबेकु
 ॥ ४ ॥ आचारी नहीं जीतिआ जाइ ॥ पाठ पढ़ै नहीं कीमति पाइ ॥ असट दसी चहु भेदु न पाइआ ॥ नानक सतिगुरि ब्रहम
 दिखाइआ ॥ ७ ॥ २० ॥ आसा महला १ ॥ सेवकु दासु भगतु जन सोई ॥ ठाकुर का दासु गुरुमुखि होई ॥ जिनि सिरि
 साजी तिनि फुनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ १ ॥ साचु नामु गुरु सबदि वीचारि ॥ गुरुमुखि साचे साचै दरबारि
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचा अरजु सची अरदासि ॥ महली खसमु सुणे साबासि ॥ सचै तरखति बुलावै सोइ ॥ दे वडिआई करे सु
 होइ ॥ २ ॥ तेरा ताणु तूहै दीबाणु ॥ गुरु का सबदु सचु नीसाणु ॥ मँने हुकमु सु परगटु जाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥
 ३ ॥ पँडित पड़हि वखाणहि वेदु ॥ अंतरि वरतु न जाणहि भेदु ॥ गुरु बिनु सोझी बूझ न होइ ॥ साचा रवि रहिआ प्रभु सोइ
 ॥ ४ ॥ किआ हउ आखा आखि वखाणी ॥ तूँ आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ नानक एको दरु दीबाणु ॥ गुरुमुखि साचु
 तहा गुदराणु ॥ ७ ॥ २१ ॥ आसा महला १ ॥ काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पाई ॥ इहु जगु सागरु दुतरु किउ
 तरीरे बिनु हरि गुरु पारि न पाई ॥ १ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥ सरबी रंगी रूपी तूँहै
 तिसु बखसे जिसु नदरि करे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ॥ सरवी

साजनी के हउ चरन सरेवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥ २ ॥ आपु बीचारि मारि मनु देखिआ तुम सा मीतु न अवरु कोई ॥
 जिउ तूँ राखहि तिव ही रहणा दुखु सुखु देवहि करहि सोई ॥ ३ ॥ आसा मनसा दोऊ बिनासत त्रिहु गुण आस निरास भई ॥
 तुरी आवसथा गुरमुखि पाईऐ सँत सभा की ओट लही ॥ ४ ॥ गिआन धिआन सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख
 अभेवा ॥ नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाए सहज सेवा ॥ ५ ॥ २२ ॥ आसा महला १ पँचपदे ॥ मोहु कुटँबु मोह सभ
 कार ॥ मोहु तुम तजहु सगल वेकार ॥ १ ॥ मोहु अरु भरमु तजहु तुम्ह बीर ॥ साचु नामु रिदै रवै सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 सचु नामु जानव निधि पाई ॥ रोवै पूतु न कलपै माई ॥ २ ॥ एतु मोहि डूबा संसारु ॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ ३ ॥ एतु
 मोहि फिरि जूनी पाहि ॥ मोहे लागा जम पुरि जाहि ॥ ४ ॥ गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि ॥ ना मोहु तूटै ना थाइ पाहि ॥
 ५ ॥ नदरि करे ता एहु मोहु जाइ ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥ ६ ॥ २३ ॥ आसा महला १ ॥ आपि करे सचु अलख
 अपारु ॥ हउ पापी तूँ बखसणहारु ॥ १ ॥ तेरा भाणा सभु किछु होवै ॥ मनहठि कीचै अँति विगोवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 मनमुख की मति कूड़ि विआपी ॥ बिनु हरि सिमरण पापि सँतापी ॥ २ ॥ दुर्मति तिआगि लाहा किछु लेवहु ॥ जो उपजै सो
 अलख अभेवहु ॥ ३ ॥ ऐसा हमरा सखा सहाई ॥ गुर हरि मिलिआ भगति द्विड़ाई ॥ ४ ॥ सगलीं, सउदीं, तोटा आवै ॥
 नानक राम नामु मनि भावै ॥ ५ ॥ २४ ॥ आसा महला १ चउपदे ॥ विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥ जां पँच रासी तां
 तीरथ वासी ॥ १ ॥ घुँघरु वाजै जे मनु लागै ॥ तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस निरासी तउ
 सँनिआसी ॥ जां जतु जोगी तां काइआ भोगी ॥ २ ॥ दइआ दिगंबरु देह बीचारी ॥ आपि मरै अवरा नह मारी ॥ ३ ॥ एकु
 तू होरिवेस बहुतेरे ॥ नानकु जाणै चोज न तेरे ॥ ४ ॥ २५ ॥ आसा महला १ ॥ एक न भरीआ गुण करि धोवा ॥ मेरा सहु
 जागै हउ निसि भरि सोवा ॥ १ ॥ इउ किउ कँत पिआरी होवा ॥ सह जागै हउ निस भरि सोवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥

आस पिआसी सेजै आवा ॥ आगै सह भावा कि न भावा ॥ २ ॥ किआ जाना किआ होइगा री माई ॥ हरि दरसन बिनु रहनु
 न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुतानी ॥ ३ ॥ अजै सु जागउ
 आस पिआसी ॥ भईले उदासी रहउ निरासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै खोइ करे सीगारु ॥ तउ कामणि सेजै रवै भतारु ॥ ४
 ॥ तउ नानक कँतै मनि भावै ॥ छोडि वडाई अपने खसम समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २६ ॥ आसा महला १ ॥ पेवकडै धन
 खरी इआणी ॥ तिसु सह की मै सार न जाणी ॥ १ ॥ सहु मेरा एकु दूजा नही कोई ॥ नदरि करे मेलावा होई ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ साहुरडै धन साचु पछाणिआ ॥ सहजि सुभाइ अपना पिरु जाणिआ ॥ २ ॥ गुर परसादी ऐसी मति आवै ॥ तां कामणि
 कँतै मनि भावै ॥ ३ ॥ कहतु नानकु भै भाव का करे सीगारु ॥ सद ही सेजे रवै भतारु ॥ ४ ॥ २७ ॥ आसा महला १ ॥
 न किस का पूतु न किस की माई ॥ झूठै मोहि भरमि भलाई ॥ १ ॥ मेरे साहिब हउ कीता तेरा ॥ जां तूँ देहि जपी नाउ तेरा ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ बहुते अउगण कूकै कोई ॥ जा तिसु भावै बखसे सोई ॥ २ ॥ गुर परसादी दुरमति खोई ॥ जह देखा तह
 एको सोई ॥ ३ ॥ कहत नानक ऐसी मति आवै ॥ तां को सचे सचि समावै ॥ ४ ॥ २८ ॥ आसा महला १ ॥ दुपदे ॥ तितु
 सरवडै भईअले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पँकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥ मन एकु न
 चेतसि मूड मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पडिआ मूरख मुगधा जनमु भइआ
 ॥ पणवति नानक तिन्ह की सरणा जिन्ह तूँ नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ २९ ॥ आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ
 उपदेस ॥ गुर गुरु एको वेस अनेक ॥ १ ॥ बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के कैते वेस ॥ २ ॥ ३० ॥

१ॐ शितिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ३ महला १ ॥

लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहिं सलामु ॥ लखा उपरि फुरमइसि तेरी लख उठि राखहि मानु ॥ जां पति लेखै ना पवै तां सभि निराफल काम ॥ १ ॥ हरि के नाम बिना जगु धँधा ॥ जे बहुता समझाईरे भोला भी सो अँधो अँधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख खटीअहि लख सँजीअहि खाजहि लख आवहि लख जाहि ॥ जां पति लेखै ना पवै तां जीअ किथै फिरि पाहि ॥ २ ॥ लख सासत समझावणी लख पँडित पड़हि पुराण ॥ जां पति लेखै ना पवै तां सभे कुपरवाण ॥ ३ ॥ सच नामि पति ऊपजै करमि नामु करतारु ॥ अहिनिं स हिंरै जे वसै नानक नदरी पारु ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥ आसा महला १ ॥ दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥ उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥ १ ॥ लोका मत को फकड़ि पाइ ॥ लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिँडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥ ऐथै ओथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥ २ ॥ गँग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥ सचा नावणु तां थीरे जां अहिनिं स लागै भाउ ॥ ३ ॥ इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिँडु खाइ ॥ नानक पिँडु बखसीस का कबहूँ निखूटसि नाहि ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

आसा घरु ४ महला १ १ॐ शितिगुर प्रसादि ॥

देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ कीए ॥ जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भए ॥ १ ॥ तउ कारणि साहिबा रँगि रते ॥ तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दर घर महला हसती घोड़े छोड़ि विलाइति देस गए ॥ पीर पेकांबर सालिक सादिक छोड़ी दुनीआ थाइ पए ॥ २ ॥ साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोड़े चमड़ लीए ॥ दुखीए दरदवंद दरि तेरै नामि रते दरवेस भए ॥ ३ ॥ खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ही ॥ तुँ साहिबु हउ सांगी तेरा पणवै नानकु जाति कैसी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३३ ॥

आसा घरु ५ महला १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

भीतरि पंच गुपत मनि वासे ॥ थिरु न रहहि जैसे भवहि उदासे ॥ १ ॥ मनु मेरा दइआल सेती थिरु न रहै ॥ लोभी लपटी पापी पाखंडी माइआ अधिक लगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फूल माला गलि पहिरउगी हारो ॥ मिलैगा प्रीतमु तब करउगी सीगारो ॥ २ ॥ पंच सखी हम एकु भतारो ॥ पेडि लगी है जीअड़ा चालणहारो ॥ ३ ॥ पंच सखी मिलि रुदनु करेहा ॥ साहु पजूता प्रणवति नानक लेखा देहा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥

वरि सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ६ महला १ ॥

मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥ खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥ १ ॥ लाल बहु गुणि कामणि मोही ॥ तेरे गुण होहि न अवरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हारु कंठि ले पहिरे दामोदरु दंतु लेई ॥ कर करि करता कंगन पहिरै इन बिधि चितु धरेई ॥ २ ॥ मधुसूदनु कर मुंदरी पहिरै परमेसरु पटु लेई ॥ धीरजु धड़ी बंधावै कामणि श्रीरंगु सुरमा देई ॥ ३ ॥ मन मंदरि जे दीपकु जाले काइआ सेज करेई ॥ गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोगु करेई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३५ ॥ आसा महला १ ॥ कीता होवै करे कराइआ तिसु किआ कहीऐ भाई ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराई ॥ १ ॥ तेरा हुकमु भला तुधु भावै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नामि समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरतु पइआ परवाणा लिखिआ बाहुडि हुकमु न होई ॥ जैसा लिखिआ तैसा पडिआ मेटि न सकै कोई ॥ २ ॥ जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी ॥ सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥ ३ ॥ ना को पडिआ पंडित बीना ना को मूरखु मंदा ॥ बंदी अंदरि सिफति कराए ता कउ कहीऐ बंदा ॥ ४ ॥ २ ॥ ३६ ॥ आसा महला १ ॥ गुर का सबदु मनै महि मुंदा खिंथा खिमा हटावउ ॥ जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि

पावउ ॥ १ ॥ बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तँत महि जोगँ ॥ अँम्रितु नामु निरँजन पाइआ गिआन काइआ रस
 भोगँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप तिआगी बादँ ॥ सिँडी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिशि पूरै नादँ ॥
 २ ॥ पतु वीचारु गिआन मति डँडा वरतमान बिभूतँ ॥ हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पँथु अतीतँ ॥ ३ ॥ सगली जोति
 हमारी सँमिआ नाना वरन अनेकँ ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी पारब्रहम लिव एकँ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३७ ॥ आसा महला १ ॥
 गुडु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ ॥ भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ ॥ १ ॥ बाबा
 मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रँग रचि रहिआ ॥ अहिनिशि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरा
 साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे ॥ अँम्रित का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥ २ ॥ गुर की
 साखी अँम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥ दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुँठै करै किआ ॥ ३ ॥ सिफती रता सद
 बैरागी जूरे जनमु न हारै ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अँम्रित धारै ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ आसा महला १ ॥
 खुरासान खसमाना कीआ हिँदुसतानु डराइआ ॥ आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ एती मार पई करलाणे तैं
 की दरदु न आइआ ॥ १ ॥ करता तूँ सभना का सोई ॥ जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकता
 सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥ रतन विगाड़ि विगोए कुतीं, मुइआ सार न काई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी
 वडिआई ॥ २ ॥ जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे ॥ खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥ मरि मरि जीवै ता
 किछु पाए नानक नामु वखाणे ॥ ३ ॥ ५ ॥ ३९ ॥

रागु आसा घरु २ महला ३ १३ सितिगुर प्रसादि ॥

हरि दरसन पावै वडभागि ॥ गुर कै सबदि सचै बैरागि ॥ खटु दरसन

वरतै वरतारा ॥ गुर का दरसन अगम अपारा ॥ १ ॥ गुर कै दरसनि मुक्ति गति होइ ॥ साचा आपि वसै मनि सोइ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ गुर दरसनि उधरै संसारा ॥ जे को लाए भाउ पिआरा ॥ भाउ पिआरा लाए विरला कोइ ॥ गुर कै दरसनि सदा
 सखु होइ ॥ २ ॥ गुर कै दरसनि मोख दुआरु ॥ सतिगुरु सेवै परवार साधारु ॥ निगुरे कउ गति काई नाही ॥ अवगुणि
 मुठे चोटा खाही ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि सुखु सांति सरीर ॥ गुरमुखि ता कउ लगै न पीर ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै ॥
 नानक गुरमुखि साचि समावै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४० ॥ आसा महला ३ ॥ सबदि मुआ विचहु आपु गवाइ ॥ सतिगुरु सेवे तिलु
 न तामइ ॥ निरभउ दाता सदा मनि होइ ॥ सची बाणी पाए भागि कोइ ॥ १ ॥ गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि ॥ पूरे गुर
 कै सबदि समाहि १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का गाहकु होवै सो गुण जाणै ॥ अमित सबदि नामु वखाणै ॥ साची बाणी सूचा होइ
 ॥ गुण ते नामु परापति होइ ॥ २ ॥ गुण अमोलक पाए न जाहि ॥ मनि निरमल साचै सबदि समाहि ॥ सेवडभागी जिन्ह
 नामु धिआइआ ॥ सदा गुणदाता मनि वसाइआ ॥ ३ ॥ जो गुण संग्रहै तिन्ह बलिहरै जाउ ॥ दरि साचै साचे गुण गाउ
 ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ नानक कीमति कहणु न जाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर विचि वडी
 वडिआई ॥ चिरी विछँने मेलि मिली ॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ आपणी कीमति आपे पाए ॥ १ ॥ हरि की कीमति किन
 बिधि होइ ॥ हरि अपरंपरु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि कीमति जाणै कोइ ॥
 विरले करमि परापति होइ ॥ ऊची बाणी ऊचा होइ ॥ गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ ॥ २ ॥ विणु नावै दुखु दरदु सरीरि ॥
 सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर ॥ बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ ॥ मनमुखि बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ हरि का नामु मीठा अति रसु
 होइ ॥ पीवत रहै पीआए सोइ ॥ गुर किरपा ते हरि रसु पाए ॥ नानक नामि रते गति पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥ आसा
 महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा गहिर गंभीर ॥ सेवत ही सुखु सांति सरीर ॥ सबदि तरे जन सहजि सुभाइ ॥ तिन कै

हम सद लागह पाइ ॥ १ ॥ जो मनि राते रँगु लाइ ॥ तिन का जनम मरण दुखु लाथा ते हरि दरगह मिले सुभाइ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ सबदु चाखै साचा सादु पाए ॥ हरि का नामु मँनि वसाए ॥ हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि ॥ आपे नेडै आपे दूरि ॥
 २ ॥ आखणिं आखै बकै सभु कोइ ॥ आपे बखसि मिलाए सोइ ॥ कहणै कथनि न पाइआ जाइ ॥ गुर परसादि वसै मनि
 आइ ॥ ३ ॥ गुरमुखिं विचहु आपु गवाइ ॥ हरि रँगि राते मोहु चुकाइ ॥ अति निरमलु गुर सबद वीचार ॥ नानक नामि
 सवारणहार ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ आसा महला ३ ॥ दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ ॥ बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ ॥
 सतिगुरु सेवै सोझी होइ ॥ दूजै भाइ न लागै कोइ ॥ १ ॥ मूलिं लागे से जन परवाणु ॥ अनदिनु राम नामु जपिं हिरदै गुर
 सबदी हरि एको जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ डालीं लागै निहफलु जाइ ॥ अँधीं, कँमी अँध सजाइ ॥ मनमुखु अँधा ठउर न पाइ
 ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ ॥ २ ॥ गुर की सेवा सदा सुखु पाए ॥ संत संगति मिलिं हरि गुण गाए ॥ नामे
 नामि करे वीचारु ॥ आपि तरै कुल उधरणहारु ॥ ३ ॥ गुर की बाणी नामि वजाए ॥ नानक महलु सबदि घरु पाए ॥
 गुरमति सत सरि हरि जलिं नाइआ ॥ दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४४ ॥ आसा महला ३ ॥ मनमुख
 मरहिं मरि मरणु विगाड़हिं ॥ दूजै भाइ आतम संघारहिं ॥ मेरा मेरा करिं करिं विगूता ॥ आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता ॥
 १ ॥ मरु मुइआ सबदे मरिं जाइ ॥ उसतति निँदा गुरिं सम जाणाई इसु जुग महिं लाहा हरिं जपिं लै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 नाम विहूण गरभ गलिं जाइ ॥ बिरथा जनमु दूजै लोभाइ ॥ नाम बिहूणी दुखिं जलै सबाई ॥ सतिगुरिं पूरै बूझ बुझाई ॥ २
 ॥ मनु चँचलु बहु चोटा खाइ ॥ एथहु छुड़किआ ठउर न पाइ ॥ गरभ जोनि विसटा का वासु ॥ तित घरिं मनमुखु करे
 निवासु ॥ ३ ॥ अपुने सतिगुर कउ सदा बलिं जाई ॥ गुरमुखिं जोती जोति मिलाई ॥ निरमल बाणीं निज घरिं वासा ॥
 नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥ आसा महला ३ ॥ लालै आपणी जाती गवाई ॥ तनु मनु अरपे सतिगुर

सरणाई ॥ हिरदै नामु वडी वडिआई ॥ सदा प्रीतमु प्रभु होइ सरवाई ॥ १ ॥ सो लाला जीवतु मरै ॥ सोगु हरखु दुइ सम
 करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कार धुरुहु फुरमाई ॥ बिनु सबदै को थाइ न पाई ॥ करणी
 कीरति नामु वसाई ॥ आपे देवै ढिल न पाई ॥ २ ॥ मनमुखि भरमि भुलै संसारु ॥ बिन रासी कूड़ा करे वापारु ॥ विणु
 रासी वखरु पलै न पाइ ॥ मनमुखि भुला जनमु गवाइ ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे सु लाला होइ ॥ ऊतम जाती ऊतमु सोइ ॥
 गुर पउड़ी सभ दू ऊचा होइ ॥ नानक नामि वडाई होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥ आसा महला ३ ॥ मनमुखि झूठो झूठु कमावै
 ॥ खसमै का महलु कदे न पावै ॥ दूजै लगी भरमि भुलावै ॥ ममता बाधा आवै जावै ॥ १ ॥ दोहागणी का मन देखु
 सीगारु ॥ पुत्र कलति धनि माइआ चितु लाए झूठु मोहु पारखंड विकारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सोहागणि जो प्रभ भावै ॥
 गुर सबदी सीगारु बणावै ॥ सेज सुखाली अनदिनु हरि रावै ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै ॥ २ ॥ सा सोहागणि साची
 जिसु साचि पिआरु ॥ अपणा पिरु राखै सदा उर धारि ॥ नेडै वेखै सदा हदूरि ॥ मेरा प्रभु सरब रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥
 आगै जाति रूपु न जाइ ॥ तेहा होवै जेहे कर्म कमाइ ॥ सबदे ऊचो ऊचा होइ ॥ नानक साचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ ८ ॥
 ४७ ॥ आसा महला ३ ॥ भगति रता जनु सहजि सुभाइ ॥ गुर कै भै साचै साचि समाइ ॥ बिनु गुर पूरे भगति न होइ ॥
 मनमुख रँने अपनी पति खोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ ॥ सदा अनँदु होवै दिनु राती जो इछै सोई फलु पाइ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूरे ते पूरा पाए ॥ हिरदै सबदु सचु नामु वसाए ॥ अंतरु निरमलु अँमित सरि नाए ॥ सदा सूचे साचि
 समाए ॥ २ ॥ हरि प्रभु वेखै सदा हजूरि ॥ गुर परसादि रहिआ भरपूरि ॥ जहा जाउ तह वेखा सोइ ॥ गुर बिनु दाता अवरु
 न कोइ ॥ ३ ॥ गुरु सागरु पूरा भँडार ॥ ऊतम रतन जवाहर अपार ॥ गुर परसादी देवणहारु ॥ नानक बखसे
 बखसणहारु ॥ ४ ॥ ९ ॥ ४८ ॥ आसा महला ३ ॥ गुरु साइरु सतिगुरु सचु सोइ ॥ पूरै भागि गुर सेवा होइ ॥

सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ गुर परसादी सेव कराए ॥ १ ॥ गिआन रतनि सभ सोझी होइ ॥ गुर परसादि अगिआनु
 बिनासै अनदिनु जागै वेखै सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहु गुमानु गुर सबदि जलाए ॥ पूरे गुर ते सोझी पाए ॥ अंतरि महलु
 गुर सबदि पछाणै ॥ आवण जाणु रहै थिरु नामि समाणे ॥ २ ॥ जँमणु मरणा है संसारु ॥ मनमुखु अचेतु माइआ मोहु
 गुबारु ॥ पर निँदा बहु कूडु कमावै ॥ विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै ॥ ३ ॥ सत संगति मिलि सभ सोझी पाए ॥ गुर
 का सबदु हरि भगति दिडाए ॥ भाणा मँने सदा सुखु होइ ॥ नानक सचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥ आसा महला ३
 पँचपदे ॥ सबदि मरै तिसु सदा अनँद ॥ सतिगुर भेटे गुर गोबिंद ॥ ना फिरि मरै न आवै जाइ ॥ पूरे गुर ते साचि समाइ ॥
 १ ॥ जिन्ह कउ नामु लिखिआ धुरि लेखु ॥ ते अनदिनु नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह
 कउ हरि प्रभु लए मिलाइ ॥ तिन्ह की गहण गति कही न जाइ ॥ पूरे सतिगुर दिती वडिआई ॥ ऊतम पदवी हरि नामि समाई
 ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपे आपि ॥ एक घड़ी महि थापि उथापि ॥ कहि कहि कहणा आखि सुणाए ॥ जे सउ घाले थाइ न
 पाए ॥ ३ ॥ जिन्ह कै पोतै पुँनु तिन्हा गुरु मिलाए ॥ सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए ॥ जहां सबदु तहां दुखु जाए ॥ गिआनि
 रतनि साचै सहजि समाए ॥ ४ ॥ नावै जेवडु होरु धनु नाही कोइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ पूरे सबदि मँनि वसाए ॥
 नानक नामि रते सुखु पाए ॥ ५ ॥ ११ ॥ ५० ॥ आसा महला ३ ॥ निरति करे बहु वाजे वजाए ॥ इहु मनु अँधा बोला है
 किसु आखि सुणाए ॥ अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ ॥ दीवा बलै न सोझी पाइ ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति घटि चानणु होइ ॥
 आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ ॥ पूरे ताल विचहु आपु गवाइ ॥ मेरा प्रभु साचा
 आपे जाणु ॥ गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु ॥ २ ॥ गुरमुखि भगति अंतरि पतीति पिआरु ॥ गुर का सबदु सहजि
 वीचारु ॥ गुरमुखि भगति जुगति सचु सोइ ॥ पाखँडि भगति निरति दुखु होइ ॥ ३ ॥ एहा भगति जनु जीवत

मरै ॥ गुर परसादी भवजलु तरै ॥ गुर कै बचनि भगति थाइ पाइ ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ ४ ॥ हरि क्रिपा करे
सतिगुरु मिलाए ॥ निहचल भगति हरि सिउ चितु लाए ॥ भगति रते तिन्ह सची सोइ ॥ नानक नाम रते सुखु होइ ॥ ५
॥ १२ ॥ ५१ ॥

आसा घरु ८ काफी महला ३ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि कै भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोइही होई ॥ गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ॥ १ ॥ मै सहु दाता एकु है अवरु नाही
कोई ॥ गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि निरभउ हरि नामु है पाईरे गुर वीचारि ॥
बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि ॥ २ ॥ हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई ॥ हरि कै भाणै सालाहीरे
भाणै मॉनिरे सुखु होई ॥ ३ ॥ हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइआ मति ऊतम होई ॥ नानक नामु सलाहि तूँ गुरमुखि गति
होई ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ ५२ ॥

आसा महला ४ घरु २ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

तूँ करता सचिआरु मैडा साई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूँ देहि सोई हउ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूँ सभनी
धिआइआ ॥ जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ
आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूँ दरिआउ सभ तुझही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥
विजोगि मिलि विछोड़िआ सँजोगी मेलु ॥ २ ॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु
बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५३ ॥

१८ सतिगुरु प्रसादि ॥ रागु आसा घरु २ महला ४ ॥

किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥ किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥ किस ही धड़ा कीआ सिकदार
चउधरी नालि आपणै सुआई ॥ हमारा धड़ा हरि रहिआ सआई ॥ १ ॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥ मै हरि
बिनु परखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह सिओ धड़े करहि से जाहि ॥ झूठ
धड़े करि पछोताहि ॥ थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि ॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ॥ २ ॥
एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी ॥ माइआ कउ लूझहि गावारी ॥ जनमि मरहि जूरे बाजी हारी ॥ हमरै हरि धड़ा जि
हलतु पलतु सभु सवारी ॥ ३ ॥ कलिजुग महि धड़े पँच चोर झगड़ाए ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु वधाए ॥ जिस
नो क्रिपा करे तिसु सतसंगि मिलाए ॥ हमारा हरि धड़ा जिनि एह धड़े सभि गवाए ॥ ४ ॥ मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि
पावै ॥ पराइआ छिद्रु अटकलै आपणा अहंकारु वधावै ॥ जैसा बीजै तसा खावै ॥ जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ
स्त्रिसटि जिणि आवै ॥ ५ ॥ २ ॥ ५४ ॥ आसा महला ४ ॥ हिरदे सुणि सुणि मनि अँमितु भाइआ ॥ गुरबाणी हरि
अलखु लखाइआ ॥ १ ॥ गुरमुखि नामु सुनहु मेरी भैना ॥ एको रवि इहिआ घट अंतरि मुखि बोलहु गुर अँमित बैना ॥
१ ॥ रहाउ ॥ मै मनि तनि प्रेमु महा बैरागु ॥ सतिगुरु पुरखु पाइआ वडभागु ॥ २ ॥ दूजै भाइ भवहि बिखु माइआ ॥
भागहीन नही सतिगुरु पाइआ ॥ ३ ॥ अँमितु हरि रसु हरि आपि पीआइआ ॥ गुर पूरै नानक हरि पाइआ ॥ ४ ॥ ३
॥ ५५ ॥ आसा महला ४ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु नामु आधारु ॥ नामु जपी नामो सुख सारु ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे
साजन सैना ॥ नाम बिना मै अवरु न कोई वडै भागि गुरमुखि हरि लैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना नही जीविआ जाइ
॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पाइ ॥ २ ॥ नामहीन कालख मुखि माइआ ॥ नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु जीवाइआ ॥

३ ॥ वडा वडा हरि भाग करि पाइआ ॥ नानक गुरमुखि नामु दिवाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५६ ॥ आसा महला ४ ॥ गुण गावा
 गुण बोली बाणी ॥ गुरमुखि हरि गुण आखि वखाणी ॥ १ ॥ जपि जपि नामु मनि भइआ अनंदा ॥ सति सति सतिगुरि
 नामु दिडाइआ रसि गाए गुण परमानंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावै हरि जन लोगा ॥ वडै भागि पाए हरि निरजोगा ॥
 २ ॥ गुण विहूण माइआ मलु धारी ॥ विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥ ३ ॥ सरीरि सरोवरि गुण परगटि कीए ॥ नानक
 गुरमुखि मथि ततु कढीए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५७ ॥ आसा महला ४ ॥ नामु सुणी नामो मनि भावै ॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पावै
 ॥ १ ॥ नामु जपहु गुरमुखि परगासा ॥ नाम बिना मै धर नहीं काई नामु रविआ सभ सास गिरासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामै
 सुरति सुनी मनि भाई ॥ जो नामु सुनावै सो मेरा मीतु सखाई ॥ २ ॥ नामहीण गए मूड नंगा ॥ पचि पचि मुए बिख देखि
 पतंगा ॥ ३ ॥ आपे थापे थापि उथापे ॥ नानक नामु देवै हरि आपे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५८ ॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि हरि
 हरि वेलि वधाई ॥ फल लागे हरि रसक रसाई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपि अनत तरंगा ॥ जपि जपि नामु गुरमति सालाही
 मारिआ कालु जमकंकर भुइअंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि गुर महि भगति रखाई ॥ गुर तुठा सिख देवै मेरे भाई ॥ २ ॥
 हउमै करम किछु बिधि नहीं जाणै ॥ जिउ कुंचरु नाइ खाकु सिरि छाणै ॥ ३ ॥ जे वड भाग होवहि वड ऊचे ॥ नानक नामु
 जपहि सचि सूचे ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५९ ॥ आसा महला ४ ॥ हरि हरि नाम की मनि भूख लगाई ॥ नामि सुनिरे मनु त्रिपतै मेरे
 भाई ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे गुरसिख मीता ॥ नामु जपहु नामे सुखु पावहु नामु रखहु गुरमति मनि चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 नामो नामु सुणी मनु सरसा ॥ नामु लाहा लै गुरमति बिगसा ॥ २ ॥ नाम बिना कुसटी मोह अंधा ॥ सभ निहफल करम
 कीए दुखु धंधा ॥ ३ ॥ हरि हरि हरि जसु जपै वडभागी ॥ नानक गुरमति नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ६० ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ महला ४ राग आसा घरु ६ के ३ ॥

हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन ॥ गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रँगि भेन ॥ १ ॥ जोगी हरि देहु मती उपदेसु ॥ जुगु जुगु हरि हरि एको वरतै तिसु आगै हम आदेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल ॥ जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि बैल ॥ २ ॥ काइआ नगर महि करम हरि बोवहु हरि जामै हरिआ खेतु ॥ मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि सिंचहु गुरमति जेतु ॥ ३ ॥ जोगी जंगम खिसटि सभ तुमरी जो देहु मती तितु चेल ॥ जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि लावहु मनूआ पेल ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६१ ॥ आसा महला ४ ॥ कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाबु ॥ आवत जात बार खिनु लागै हउ तब लगु समारउ नामु ॥ १ ॥ मेरै मनि ऐसी भगति बनि आई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे जल बिनु मीनु मरि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुनि उठावै ॥ मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ॥ २ ॥ कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै ॥ हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै तब लगु मेरा मनु राम सम्हारै ॥ ३ ॥ कब कोऊ लोगन कउ पती आवै लोकि पतीगै ना पति होइ ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु ता जै जै करे सभु कोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६२ ॥ आसा महला ४ ॥ सत संगति मिलीऐ हरि साधू मिलि संगति हरि गुण गाइ ॥ गिआन रतनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ १ ॥ हरि जन नाचहु हरि हरि धिआइ ॥ ऐसे सत मिलहि मेरे भाई हम जन के धोवह पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे अनदिनु हरि लिव लाइ ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि भूख न लागै आइ ॥ २ ॥ आपे हरि अपरंपरु करता हरि आपे बोलि बुलाइ ॥ सेई सत भले तुधु भावहि जिन्ह की पति पावहि थाइ ॥ ३ ॥ नानकु आखि न राजै हरि गुण जिउ आखै तितु सुखु पाइ ॥ भगति भंडार दीए हरि अपुने गुण गाहकु वणजि लै जाइ ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६३ ॥

१८ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा वरु ८ के काफी, महला ४ ॥

आइआ मरणु धुराहु हउमै रोईरे ॥ गुरमुखि नामु धिआइ असथिरु होईरे ॥ १ ॥ गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ ॥ लाहा नामु
सु सारु सबदि समाणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखे डेह सि आए माइआ ॥ चलणु अजु कि कलिह धुरहु फुरमाइआ ॥ २ ॥
बिरथा जनमु तिना जिन्ही नामु विसारआ ॥ जूरे खेलणु जगि कि इहु मनु हारिआ ॥ ३ ॥ जीवणि मरणि सुखु होइ जिन्हा गुरु
पाइआ ॥ नानक सचे सचि सचि समाइआ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६४ ॥ आसा महला ४ ॥ जनमु पदारथु पाइ नामु धिआइआ ॥ गुर
परसादी बुद्धि सचि समाइआ ॥ १ ॥ जिन्ह धुरि लिखिआ लेखु तिन्ही नामु कमाइआ ॥ दरि सचै सचिआर महलि बुलाइआ ॥
१ ॥ रहाउ ॥ अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईरे ॥ अनदिनु नामु धिआइ हरि गुण गाईरे ॥ २ ॥ अंतरि वसतु अनेक मनमुखि
नही पाईरे ॥ हउमै गरबै गरबु आपि खुआईरे ॥ ३ ॥ नानक आपे आपि आपि खुआईरे ॥ गुरमति मनि परगासु सचा पाईरे ॥
४ ॥ १३ ॥ ६७ ॥

रागु आसावरी वरु १६ के २ महला ४ सुधंग १८ सतिगुर प्रसादि ॥

हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ॥ सतिगुर मो कउ हरि नामु बताइआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकु खिनु ॥ जैसे हँसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै
हरि सेवा बिनु ॥ १ ॥ किनहूँ प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि किनहूँ प्रीति लाई मोह अपमान ॥ हरि जन प्रीति लाई हरि निरबाण
पद नानक सिमरत हरि हरि भगवान ॥ २ ॥ १४ ॥ ६६ ॥ आसावरी महला ४ ॥ माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई । हउ
हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरा मनु बैराग बिरकतु भइओ हरि दरसन मीत कै

ताई ॥ जैसे अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ राखु सरणि जगदीसुर पिआरे मोहि सरधा
पूरि हरि गुसाई ॥ जन नानक कै मनि अनदु होत है हरि दरसनु निमख दिखाई ॥ २ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ १५ ॥ ६७ ॥

रागु आसा घरु २ महला ५ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥ जिनि सुखु बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥ भाई मीत कुटंब देखि बिबादे ॥ हम
आई वसगति गुर परसादे ॥ १ ॥ ऐसा देखि बिमोहित होए ॥ साधिक सिध सुरदेव मनुखा बिनु साथू सभि ध्रोहनि ध्रोहे ॥ १
॥ रहाउ ॥ इकि फिरहि उदासी तिन्ह कामि विआपै ॥ इकि सँचहि गिरही तिन्ह होइ न आपै ॥ इकि सती कहावहि तिन्ह बहुतु
कलपावै ॥ हम हरि राखे लागि सतिगुर पावै ॥ २ ॥ तपु करते तपसी भूलाए ॥ पंडित मोहे लोभि सबाए ॥ त्रै गुण मोहे
मोहिआ आकासु ॥ हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥ ३ ॥ गिआनी की होइ वरती दासि ॥ कर जोड़े सेवा करे अरदासि ॥ जो
तूँ कहहि सु कार कमावा ॥ जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला ५ ॥ ससूते पिरि कीनी वाखि ॥ देर
जिठाणी मुई दूखि सँतापि ॥ घर के जिठेरे की चूकी काणि ॥ पिरि रखिआ कीनी सुघड़ सुजाणि ॥ १ ॥ सुनहु लोका मै प्रेम रसु
पाइआ ॥ दुरजन मारे वैरी सँघारे सतिगुरि मो कउ हरि नामु दिवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥ दुतीआ
तिआगी लोगा शीति ॥ त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने ॥ तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥ २ ॥ सहज गुफा महि आसणु
बाधिआ ॥ जोति सरूप अनाहदु वाजिआ ॥ महा अनंदु गुर सबदु वीचारि ॥ प्रिअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥ ३ ॥
जन नानक बोले ब्रहम बीचारु ॥ जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥
४ ॥ २ ॥ आसा महला ५ ॥ निज भगती सीलवँती नारि ॥ रूपि अनूप पूरी आचारि ॥ जितु ग्रिहु वसै सो ग्रिहु सोभावँता ॥

गुरुमुखि पाई किनै विरलै जँता ॥ १ ॥ सुकरणी कामणि गुर मिलि हम पाई ॥ जजिं काजि परथाइ सुहाई ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ जिचरु वसी पिता कै साथि ॥ तिचरु कँतु बहु फिरै उदासि ॥ करि सेवा सत पुरखु मनाइआ ॥ गुर आणी घर महि ता
 सरब सुख पाइआ ॥ २ ॥ बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥ आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥ इछ पूरे मन कँत सुआमी
 ॥ सगल संतोखी देर जेठानी ॥ ३ ॥ सभ परवारै माहिं सरेसट ॥ मती देवी देवर जेसट ॥ धँनु सु गिहु जितु प्रगटी आइ
 ॥ जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा महला ५ ॥ मता करउ सो पकनि न देई ॥ सील संजम कै निकटि
 खलोई ॥ वेस करे बहु रूप दिखावै ॥ गिह बसनि न देई वखि वखि भरमावै ॥ १ ॥ घर की नाइकि घर वासु न देवै ॥
 जतन करउ उरझाइ परेवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुर की भेजी आई आमरि ॥ नउ खँड जीते सभिं थान थनंतर ॥ तटि तीरथि
 न छोडै जोग सँनिआस ॥ पड़ि थाके सिँमिति बेद अभिंआस ॥ २ ॥ जह बैसउ तह नाले बैसै ॥ सगल भवन महि सबल
 प्रवेसै ॥ होछी सरणि पइआ रहणु न पाई ॥ कहु मीता हउ कै पहिं जाई ॥ ३ ॥ सुणि उपदेसु सतिगुर पहिं आइआ ॥ गुरि
 हरि हरि नामु मोहिं मँत्रु द्विड़ाइआ ॥ निज घरि वसिआ गुण गाइ अनँता ॥ प्रभु मिलिओ नानक भए अचिँता ॥ ४ ॥ घरु
 मेरा इह नाइकि हमारी ॥ इह आमरिं हम गुरिं कीए दरबारी ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे
 मता जि पत्री चलावउ ॥ दूतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ ॥ त्रितीए मता किछु करउ उपाइआ ॥ मै सभु किछु छोडि प्रभ
 तुही धिआइआ ॥ १ ॥ महा अनँद अचिँत सहजाइआ ॥ दुसमन दूत मुए सुखु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरिं मो कउ
 दीआ उपदेसु ॥ जीउ पिँडु सभु हरि का देसु ॥ जो किछु करी सु तेरा ताणु ॥ तूँ मेरी ओट तूँहै दीबाणु ॥ २ ॥ तुधनो
 छोडि जाईरे प्रभु कै धरि ॥ आन न बीआ तेरी समसरि ॥ तेरे सेवक कउ किस की काणि ॥ साकतु भूला फिरै बेबाणि ॥ ३
 ॥ तेरी वडिआई कही न जाइ ॥ जह कह राखि लैहिं गलिं लाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाई ॥ प्रभिं राखी पैज वजी

वाधाई ॥ ४ ॥ ५ ॥ आसा महला ५ ॥ परदेसु झागि सउदे कउ आइआ ॥ वसतु अनूप सुणी लाभाइआ ॥ गुण रासि बँन्हि
 पलै आनी ॥ देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥ १ ॥ साह वापारी दुआरै आए ॥ वखरु काढहु सउदा कराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 साहि पठाइआ साहै पासि ॥ अमोल रतन अमोला रासि ॥ विसटु सुभाई पाइआ मीत ॥ सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥ २
 ॥ भउ नही तसकर पउण न पानी ॥ सहजि विहाइही सहजि लै जानी ॥ सत कै खटिरे दुखु नही पाइआ ॥ सही सलामति घरि
 लै आइआ ॥ ३ ॥ मिलिआ लाहा भए अनंद ॥ धँनु साह पूरे बखसिंद ॥ इहु सउदा गुरुमुखि किनै विरलै पाइआ ॥ सहली
 खेप नानकु लै आइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ आसा महला ५ ॥ गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो ॥ नह देखिओ रूप रँग सीं गारो ॥
 चज अचार किछु बिधि नही जानी ॥ बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥ १ ॥ सुनिबो सखी कँति हमारो कीअलो खसमाना ॥
 करु मसतकि धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोको अजाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ ॥
 कँतु मिलिओ मेरो सभु दुखु जोहिओ ॥ आंगनि मेरै सोभा चंद ॥ निसि बासुर प्रिअ सँगि अनंद ॥ २ ॥ बसत्र हमारे रँगि चलूल
 ॥ सगल आभरण सोभा कँठि फूल ॥ प्रिअ पेखी दिसटि पाए सगल निधान ॥ दुसट दूत की चूकी कानि ॥ ३ ॥ सद खुसीआ
 सदा रँग माणे ॥ नउ निधि नामु ग्रिह महि त्रिपताने ॥ कहु नानक जउ पिरहि सीगारी ॥ थिरु सोहागनि सँगि भतारी ॥ ४ ॥
 ७ ॥ आसा महला ५ ॥ दानु देइ करि पूजा करना ॥ लैत देत उन्ह मूकरि परना ॥ जितु दरि तुम्ह है ब्राहमण जाणा ॥ तितु दरि
 तूही है पछुताणा ॥ १ ॥ ऐसे ब्राहमण डूबे भाई ॥ निरापराध चितवहि बुरिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि लोभु फिरहि हलकाए
 ॥ निँदा करहि सिरि भारु उठाए ॥ माइआ मूठा चेतै नाही ॥ भरमे भूला बहुती राही ॥ २ ॥ बाहरि भैख करहि घनेरे ॥
 अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ॥ अवर उपदेसै आपि न बूझै ॥ ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥ ३ ॥ मूरख बामण प्रभू समालि ॥
 देखत सुनत तेरै है नालि ॥ कहु नानक जे होवी भागु ॥ मानु छोडि गुरु चरणी लागु ॥ ४ ॥ ८ ॥ आसा महला ५ ॥

दूख रोग भए गतु तन ते मनु निरमलु हरि हरि गुण गाइ ॥ भए अनंद मिलि साधू संगि अब मेरा मनु कत ही न जाइ ॥ १
 ॥ तपति बुझी गुर सबदी माइ ॥ बिनसि गइओ ताप सभ सहसा गुरु सीतलु मिलिओ सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 धावत रहे एकु इकु बूझिआ आइ बसे अब निहचलु थाइ ॥ जगतु उधारन संत तुमारे दरसनु पेखत रहे अघाइ ॥ २ ॥
 जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचलु साधू पाइ ॥ सहज धुनि गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुनि कालु न खाइ ॥
 ३ ॥ करन कारन समरथ हमारे सुखदाई मेरे हरि हरि राइ ॥ नामु तेरा जपि जीवै नानकु ओति पोति मेरे संगि सहाइ ॥ ४
 ॥ ९ ॥ आसा महला ५ ॥ अरडावै बिललावै निंदकु ॥ पारब्रह्मु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ जे कोई उस का संगी होवै नाले लए सिधावै ॥ अणहोदा अजगरु भारु उठाए निंदकु अगनी माहि जलावै ॥ १
 ॥ परमेसर कै दुआरै जि होइ बितीतै सु नानकु आखि सुणावै ॥ भगत जना कउ सदा अनंदु है हरि कीरतनु गाइ बिगसावै
 ॥ २ ॥ १० ॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै कीओ सगल सीगारा ॥ तउ भी मेरा मनु न पतीआरा ॥ अनिक सुंगधत तन
 महि लावउ ॥ ओहु सुखु तिलु समानि नही पावउ ॥ मन महि चितवउ ऐसी आसाई ॥ प्रिअ देखत जीवउ मेरी माई ॥ १
 ॥ माई कहा करउ इहु मनु न धीरै ॥ प्रिअ प्रीतम बैरागु हिरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसत्र बिभूखन सुख बुत बिसेखै ॥ ओइ
 भी जानउ कितै न लेखै ॥ पति सोभा अरु मानु महतु ॥ आगिआकारी सगल जगतु ॥ ग्रिहु ऐसा है सुंदर लाल ॥ प्रभ
 भावा ता सदा निहाल ॥ २ ॥ बिँजन भोजन अनिक परकार ॥ रँग तमासे बहुतु बिसथार ॥ राज मिलख अरु बहुतु
 फुरमाइसि ॥ मनु नही ध्रापै त्रिसना न जाइसि ॥ बिनु मिलबे इहु दिनु न बिहावै ॥ मिलै प्रभू ता सभ सुख पावै ॥ ३ ॥
 खोजत खोजत सुनी इह सोइ ॥ साध संगति बिनु तरिओ न कोइ ॥ जिसु मसतकि भागु तिनि सतिगुरु पाइआ ॥ पूरी
 आसा मनु त्रिपताइआ ॥ प्रभ मिलिआ ता चूकी डँझा ॥ नानक लथा मन तन मँझा ॥ ४ ॥ ११ ॥ आसा महला ५

पंचपदे ॥ पथमे तेरी नीकी जाति ॥ दुतीआ तेरी मनीरे पांति ॥ त्रितीआ तेरा सुंदर थानु ॥ बिगड़ रूपु मन महि अभिमानु ॥
 ॥ १ ॥ सोहनी सरूपि सुजाणि बिचखनि ॥ अति गरबै मोहि फाकी तूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अति सूची तेरी पाकसाल ॥ करि
 इसनानु पूजा तिलकु लाल ॥ गली गरबहि मुखि गोवहि गिआन ॥ सभ बिधि खोई लोभि सुआन ॥ २ ॥ कापर पहिरहि
 भोगहि भोग ॥ आचार करहि सोभा महि लोग ॥ चोआ चंदन सुगंध बिसथार ॥ सँगी खोटा क्रोधु चंडाल ॥ ३ ॥ अवर
 जोनि तेरी पनिहारी ॥ इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ सुइना रूपा तुझ पहि दाम ॥ सीलु बिगारिओ तेरा काम ॥ ४ ॥ जा
 कउ द्रिसटि मइआ हरि राइ ॥ सा बँदी ते लई छडाइ ॥ साधसँगि मिलि हरि रसु पाइआ ॥ कहु नानक सफल ओह काइआ ॥
 ५ ॥ सभि रूप सभि सुख बने सुहागनि ॥ अति सुंदरि बिचखनि तूँ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १२ ॥ आसा महला ५ इकतुके २
 ॥ जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा ॥ मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ॥ १ ॥ जीवत मुए मुए से जीवे ॥ हरि हरि नामु
 अवरखधु मुखि पाइआ गुर सबदी रसु अँमितु पीवे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काची मटुकी बिनसि बिनासा ॥ जिसु छूटै त्रिकुटी तिसु
 निज घरि वासा ॥ २ ॥ ऊचा चडै सुपवै पइआला ॥ धरनि पडै तिसु लगै न काला ॥ ३ ॥ भ्रमत फिरे तिन किछू न पाइआ
 ॥ से असाथिर जिन गुर सबदु कमाइआ ॥ ४ ॥ जीउ पिँडु सभु हरि का मालु ॥ नानक गुर मिलि भए निहाल ॥ ५ ॥ १३ ॥
 आसा महला ५ ॥ पुतरी तेरी बिधि करि थाटी ॥ जानु सति करि होइगी माटी ॥ १ ॥ मूलु समालहु अचेत गवारा ॥ इतने
 कउ तुम्ह किआ गरबे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीनि सेर का दिहाड़ी मिहमानु ॥ अवर वसतु तुझ पाहि अमान ॥ २ ॥ बिसटा असत
 रकतु परेते चाम ॥ इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ॥ ३ ॥ एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक ॥ बिनु बूझै तूँ सदा नापाक ॥ ४
 ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबानु ॥ जिस ते पाईए हरि पुरखु सुजानु ॥ ५ ॥ १४ ॥ आसा महला ५ इकतुके चउपदे ॥ इक
 घड़ी दिनसु मो कउ बहुतु दिहारे ॥ मनु न रहै कैसे मिलउ पिआरे ॥ १ ॥ इकु पलु दिनसु मो कउ कबहु न बिहावै ॥ दरसन

की मनि आस घनेरी कोई ऐसा सँतु मो कउ पिरहि मिलावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि पहर चहु जुगह समाने ॥ रैणि भई तब अँतु
 न जाने ॥ २ ॥ पँच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी ॥ भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ पछोड़ी ॥ ३ ॥ जन नानक कउ हरि दरसु दिखाइआ
 ॥ आतम चीन्हि परम सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि सेवा महि परम निधानु ॥ हरि सेवा मुखि
 अँम्रित नामु ॥ १ ॥ हरि मेरा साथी सँगि सखाई ॥ दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मो कउ कहा डराई ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ हरि मेरी ओट मै हरि का ताणु ॥ हरि मेरा सखा मन माहि दीबाणु ॥ २ ॥ हरि मेरी पूँजी मेरा हरि वेसाहु ॥
 गुरुमुखि धनु खटी हरि मेरा साहु ॥ ३ ॥ गुर किरपा ते इह मति आवै ॥ जन नानकु हरि कै अँकि समावै ॥ ४ ॥ १६ ॥
 आसा महला ५ ॥ प्रभु होइ क्रिपालु त इहु मनु लाई ॥ सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ॥ १ ॥ मन किउ बैरागु करहिगा
 सतिगुरु मेरा पूरा ॥ मनसा का दाता सभ सुख निधानु अँम्रित सरि सद ही भरपूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल रिद अँतरि
 धारे ॥ प्रगटी जोति मिले राम पिआरे ॥ २ ॥ पँच सखी मिलि मँगलु गाइआ ॥ अनहद बाणी नादु वजाइआ ॥ ३ ॥ गुरु
 नानकु तुठा मिलिआ हरि राइ ॥ सुखि रैणि विहाणी सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥ १७ ॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा हरि
 परगटी आइआ ॥ मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥ १ ॥ ऐसा हरि धनु सँचीरे भाई ॥ भाहि न जालै जलि नही डूबै सँगु
 छोडि करि कतहु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोटि न आवै निखुटि न जाइ ॥ खाइ खरचि मनु रहिआ अघाइ ॥ २ ॥ सो सचु
 साहु जिसु घरि हरि धनु सँचाणा ॥ इसु धन ते सभु जगु वरसाणा ॥ ३ ॥ तिनि हरि धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा
 ॥ जन नानक अँति वार नामु गहणा ॥ ४ ॥ १८ ॥ आसा महला ५ ॥ जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥ काची पाकी
 बाढि परानी ॥ १ ॥ जो जनमै सो जानहु मूआ ॥ गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिन ते सरपर पउसी
 राति ॥ रैणि गई फिरि होइ परभाति ॥ २ ॥ माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ गुर प्रसादि को विरला जागे ॥ ३ ॥ कहु

नानक गुण गाईअहि नीत ॥ मुख ऊजल होइ निरमल चीत ॥ ४ ॥ १९ ॥ आसा महला ५ ॥ नउ निधि तेरै सगल निधान
 ॥ इछा पूरकु रखै निदान ॥ १ ॥ तूँ मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥ तूँ मनि वसिआ लगै न दूखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तूँ
 करहिं सोई परवाणु ॥ साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥ २ ॥ जा तुधु भावै ता हरि गुण गाउ ॥ तेरै घरि सदा सदा है निआउ
 ॥ ३ ॥ साचे साहिब अलख अभैव ॥ नानक लाइआ लागे सेव ॥ ४ ॥ २० ॥ आसा महला ५ ॥ निकटि जीअ कै सद ही
 सँगा ॥ कुदरति वरतै रूप अरु रँगा ॥ १ ॥ कहै न झुरै ना मनु रोवनहारा ॥ अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति
 खसमु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे दासरे कउ किस की काणि ॥ जिस की मीरा रखै आणि ॥ २ ॥ जो लउडा प्रभि कीआ
 अजाति ॥ तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥ ३ ॥ वेमुहताजा वेपरवाहु ॥ नानक दास कहहु गुर वाहु ॥ ४ ॥ २१ ॥
 आसा महला ५ ॥ हरि रसु छोडि होछै रसि माता ॥ घर महि वसतु बाहरि उठि जाता ॥ १ ॥ सुनी न जाई सचु अँमित काथा
 ॥ शरि करत झूठी लागि गाथा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वजहु साहिब का सेव बिरानी ॥ ऐसे गुनह अछादिओ प्रानी ॥ २ ॥ तिसु
 सिउ लूक जो सद ही सँगी ॥ कामि न आवै सो फिरि फिरि मँगी ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभ दीन दइआला ॥ जिउ भावै तिउ
 करि प्रतिपाला ॥ ४ ॥ २२ ॥ आसा महला ५ ॥ जीअ प्रान धनु हरि को नामु ॥ ईहा ऊहां उन सँगि कामु ॥ १ ॥ बिनु हरि
 नाम अवरु सभ थोरा ॥ त्रिपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति भँडार गुरबाणी लाल ॥ गावत सुनत
 कमावत निहाल ॥ २ ॥ चरण कमल सिउ लागो मानु ॥ सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥ ३ ॥ नानक कउ गुरि दीखिआ दीन्ह
 ॥ प्रभ अविनासी घटि घटि चीन्ह ॥ ४ ॥ २३ ॥ आसा महला ५ ॥ अनद बिनोद भरेपूरि धारिआ ॥ अपुना कारजु आपि
 सवारिआ ॥ १ ॥ पूर समग्री पूरे ठाकुर की ॥ भरिपुरि धारि रही सोभ जा की ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु निधानु जा की निरमल
 सोइ ॥ आपे करता अवरु न कोइ ॥ २ ॥ जीअ जँत सभि ता कै हाथि ॥ रवि रहिआ प्रभु सभ कै साथि ॥

३ ॥ पूरा गुरु पूरी बणत बणाई ॥ नानक भगत मिली वडिआई ॥ ४ ॥ २४ ॥ आसा महला ५ ॥ गुर कै सबदि
 बनावहु इहु मनु ॥ गुर का दरसनु सँचहु हरि धनु ॥ १ ॥ ऊतम मति मेरै रिदै तूँ आउ ॥ धिआवउ गावउ गुण गोविंदा
 अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिपति अघावनु साचै नाइ ॥ अठसठि मजनु सँत धूराइ ॥ २ ॥ सभ
 महि जानउ करता एक ॥ साध सँगति मिलि बुधि बिबेक ॥ ३ ॥ दासु सगल का छोडि अभिमानु ॥ नानक कउ गुरि
 दीनो दानु ॥ ४ ॥ २५ ॥ आसा महला ५ ॥ बुधि प्रगास भई मति पूरी ॥ ता ते बिनसी दुर्मति दूरी ॥ १ ॥ ऐसी
 गुरमति पाईअले ॥ बूडत घोर अँध कूप महि निकसिओ मेरे भाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा अगाह अगनि का सागरु ॥
 गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ॥ २ ॥ दुतर अँध बिखम इह माइआ ॥ गुरि पूरै परगटु मारगु दिखाइआ ॥ ३ ॥ जाप ताप
 कछु उकति न मोरी ॥ गुर नानक सरणागति तोरी ॥ ४ ॥ २६ ॥ आसा महला ५ तिपदे २ ॥ हरि रसु पीवत सद ही
 शता ॥ आन रसा खिन महि लहि जाता ॥ हरि रस के माते मनि सदा अनँद ॥ आन रसा महि विआपै चिँद ॥ १ ॥
 हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥ आन रसा सभि होछे रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रस की कीमति कही न जाइ ॥ हरि रसु
 साधू हाटि समाइ ॥ लाख करोरी मिलै न केह ॥ जिसहि परापति तिस ही देहि ॥ २ ॥ नानक चाखि भए बिसमादु ॥
 नानक गुर ते आइआ सादु ॥ ईत ऊत कत छोडि न जाइ ॥ नानक गीधा हरि रस माहि ॥ ३ ॥ २७ ॥ आसा महला ५
 ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुर्मति अपुनी धारी ॥ होइ निमाणी सेव कमावहि ता प्रीतम होवहि मनि पिआरी
 ॥ १ ॥ सुणि सुँदरि साधू बचन उधारी ॥ दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुख पावहि तूँ सुखमनि नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 चरण परवारि करउ गुर सेवा आतम सुधु बिखु तिआस निवारी ॥ दासन की होइ दासि दासरी ता पावहि सोभा हरि
 दुआरी ॥ २ ॥ इही अचार इही बिउहारा आगिआ मानि भगति होइ तुम्हारी ॥ जो इहु मँत्रु कमावै नानक सो भउजलु

पारि उतारी ॥ ३ ॥ २८ ॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
 अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥ १ ॥ सरँजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा
 जात रँगि माइआ कै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तुप सँजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक
 हम नीच करँमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ २९ ॥ आसा महला ५ ॥ तुझ बिन अवरु नाही मै दूजा तूँ मेरे मन
 माही ॥ तूँ साजनु सँगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही ॥ १ ॥ तुमरी ओट तुमारी आसा ॥ बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु
 नाही तूँ सास गिरासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखु राखु सरणि प्रभु अपनी अगनि सागर विकराला ॥ नानक के सुखदाते
 सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला ॥ २ ॥ ३० ॥ आसा महला ५ ॥ हरि जन लीने प्रभू छडाइ ॥ प्रीतम सिउ मेरो मनु
 मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाइ ॥ डाकी को चिति कछू न
 लागै चरन कमल सरनाइ ॥ १ ॥ सँत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ ॥ गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु
 मिटाइ ॥ २ ॥ ३१ ॥ आसा महला ५ ॥ अउखधु खाइओ हरि को नाउ ॥ सुख पाए दुख बिनसिआ थाउ ॥ १ ॥ तापु
 गइआ बचनि गुर पूरे ॥ अनदु भइआ सभि मिटे विसूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जँत सगल सुखु पाइआ ॥ पारब्रहमु नानक
 मनि धिआइआ ॥ २ ॥ ३२ ॥ आसा महला ५ ॥ बाँछत नाही सु बेला आई ॥ बिनु हुकमै किउ बुझै बुझाई ॥ १ ॥ ठँढी
 ताती मिटी खाई ॥ ओहु न बाला बूढा भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक दास साध सरणाई ॥ गुर प्रसादि भउ पारि पराई ॥ २
 ॥ ३३ ॥ आसा महला ५ ॥ सदा सदा आतम परगासु ॥ साध संगति हरि चरण निवासु ॥ १ ॥ राम नाम निति जपि मन
 मेरे ॥ सीतल सांति सदा सुख पावहि किल विख जाहि सभे मन तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरन करम ॥
 सतिगुर भेटे पूरन पारब्रहम ॥ २ ॥ ३४ ॥ दूजे घर के चउतीस ॥ आसा महला ५ ॥ जा का हरि सुआमी प्रभु बेली ॥

पीड़ गई फिरि नही दुहेली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा चरन सँगि मेली ॥ सूख सहज आनंद सुहेली ॥ १ ॥ साध सँगि गुण
 गाइ अतोली ॥ हरि सिमरत नानक भई अमोली ॥ २ ॥ ३५ ॥ आसा महला ५ ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत
 सभि जूए हारे ॥ सतु सँतोखु दइआ धरमु सचु इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥ १ ॥ जनम मरन चूके सभि भारे ॥ मिलत सँगि
 भइओ मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥ सभ
 मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ सम्हारे ॥ २ ॥ एको एकु आपि इकु एकै एकै है सगला पासारे ॥ जपि जपि होए
 सगल साध जन एकु नामु धिआइ बहुतु उधारे ॥ ३ ॥ गहिर गँभीर बिअँत गुसाई अँतु नही किछु पारावारे ॥ तुम्हरी क्रिपा ते
 गुन गावै नानक धिआइ धिआइ प्रभ कउ नमसकारे ॥ ४ ॥ ३६ ॥ आसा महला ५ ॥ तू बिअँत अविगतु अगोचरु इहु सभु
 तेरा आकारु ॥ किआ हम जँत करह चतुराई जां सभु किछु तुझै मझारि ॥ १ ॥ मेरे सतिगुर अपने बालिक राखहु लीला धारि
 ॥ देहु सुमति सदा गुण गावा मेरे ठाकुर अगम अपार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे जननि जठर महि प्रानी ओहु रहता नाम अधारि ॥
 अनदु करै सासि सासि सम्हारै ना पोहै अगनारि ॥ २ ॥ पर धन पर दारा पर निँदा इन सिउ प्रीति निवारि ॥ चरन कमल सेवी
 रिद अँतरि गुर पूरै कै आधारि ॥ ३ ॥ ग्रिहु मँदर महला जो दीसहि ना कोई सँगारि ॥ जब लगु जीवहि कली काल महि जन
 नानक नामु सम्हारि ॥ ४ ॥ ३७ ॥

आसा घरु ३ महला ५ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

राज मिलक जोबन ग्रिह सोभा रूपवँतु जुआनी ॥ बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बै आनी ॥ आगै दरगहि कामि न
 आवै छोडि चलै अभिमानी ॥ १ ॥ काहे एक बिना चितु लाईऐ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ महा बचित्र सुँदर आखाड़े रण महि

जिते पवाड़े ॥ हउ मारउ हउ बँधउ छोडउ मुख ते एव बबाड़े ॥ आइआ हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिआ एक दिहाड़े ॥ २ ॥
 करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै ॥ उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥ नांगा आइआ नांगो जासी
 जिउ हसती खाकु छानै ॥ ३ ॥ सँत सजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा ॥ मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुए गवारा
 ॥ गुर मिलि नानक नामु धिआइआ साचि नामि निसतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३८ ॥

शगु आसा वरु ७ महला ७ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

भ्रम महि सोई सगल जगत धँध अँध ॥ कोऊ जागै हरि जनु ॥ १ ॥ महा मोहनी मगन प्रिअ प्रीति प्रान ॥ कोऊ तिआगै विरला
 ॥ २ ॥ चरन कमल आनूप हरि सँत मँत ॥ कोऊ लागै साधू ॥ ३ ॥ नानक साधू सँगि जागे गिआन रँगि ॥ वडभागे किरपा
 ॥ ४ ॥ १ ॥ ३९ ॥

१३ शितिगुर प्रसादि ॥ शगु आसा वरु ६ महला ७ ॥

जो तुधु भावै सो परवाना सूरु सहजु मनि सोई ॥ करण कारण समरथ अपारा अवरु नाहीरे कोई ॥ १ ॥ तेरे जन रसकि रसकि
 गुण गावहि ॥ मसलति मता सिआणप जन की जो तूँ करहि करावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँप्रितु नामु तुमारा पिआरे साध सँगि
 रसु पाइआ ॥ त्रिपति अघाइ सेई जन पूरे सुख निधानु हरि गाइआ ॥ २ ॥ जा कउ टेक तुम्हारी सुआमी ता कउ नाही चिँता ॥
 जा कउ दइआ तुमारी होई से साह भले भगवँता ॥ ३ ॥ भ्रम मोह धोह सभि निकसे जब का दरसनु पाइआ ॥ वरतणि नामु
 नानक सचु कीना हरि नामे रँगि समाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४० ॥ आसा महला ७ ॥ जनम जनम की मलु धोवै पराई आपणा
 कीता पावै ॥ ईहा सूरु नही दरगह ढोई जमपुरि जाइ पचावै ॥ १ ॥ निँदकि अहिला जनमु गवाइआ ॥ पहुचि न साकै काहू
 बातै आगै ठउर न पाइआ ॥ १ ॥

रहाउ ॥ किरतु पइआ निँदक बपुरे का किआ ओहु करै बिचारा ॥ तहा बिगूता जह कोइ न राखै ओहु किसु पहि करे पुकारा
 ॥ २ ॥ निँदक की गति कतहूँ नाही खसमै एवै भाणा ॥ जो जो निँद करे सँतन की तिउ सँतन सुखु माना ॥ ३ ॥ सँता टेक
 तुमारी सुआमी तूँ सँतन का सहाई ॥ कहु नानक सँत हरि राखे निँदक दीए रुड़ाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥ आसा महला ५ ॥
 बाहरु धोइ अँतरु मनु मैला दुइ ठउर अपुने खोए ॥ ईहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोए ॥ १ ॥ गोविँद
 भजन की मति है होरा ॥ वरमी मारी सापु न मरई नामु न सुनई डोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ की किरति छोडि गवाई
 भगती सार न जानै ॥ बेद सासत्र कउ तरकनि लागा ततु जोगु न पछानै ॥ २ ॥ उघरिं गइआ जैसा खोटा ढबूआ नदरिं
 सराफा आइआ ॥ अँतरजामी सभु किछु जानै उस ते कहा छपाइआ ॥ ३ ॥ कूडि कपटि बँचि निँमुनीआदा बिनसि गइआ
 ततकाले ॥ सति सति सति नानकि कहिआ अपनै हिरदै देखु समाले ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥ आसा महला ५ ॥ उदमु करत
 होवै मनु निरमलु नाचै आपु निवारे ॥ पँच जना ले वसगति राखै मन महि एकँकारे ॥ १ ॥ तेरा जनु निरति करे गुन गावै
 ॥ रबाबु परखावज ताल घुँघरु अनहद सबदु वजावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर शीझावै ॥ राम
 नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥ २ ॥ कर सँगि साधू चरन परवारै सँत धूरि तनि लावै ॥ मनु तनु अरपि धरे गुर
 आगै सति पदारथु पावै ॥ ३ ॥ जो जो सुनै पेखै लाइ सरधा ता का जनम मरन दुखु भागै ॥ ऐसी निरति नरक निवारै
 नानक गुरमुखि जागै ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ आसा महला ५ ॥ अधम चँडाली भई ब्रहमणी सूदी ते खेसटाई रे ॥ पाताली
 आकासी सखनी लहबर बूझी खाई रे ॥ १ ॥ घर की बिलाई अवर सिखाई मूसा देखि डराई रे ॥ अज कै वसि गुरि कीनो
 केहरि कूकर तिनहि लगाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाझु थूनीआ छपरा थाम्हिआ नीघरिआ घरु पाइआ रे ॥ बिनु जड़ीए लै
 जड़िओ जड़ावा थेवा अचरजु लाइआ रे ॥ २ ॥ दादी दादि न पहुचनहारा चूपी निरनउ पाइआ रे ॥ मालि दुलीचै बैठी ले

मिरतकु नैन दिखालनु धाइआ रे ॥ ३ ॥ सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना रे ॥ कहु नानक गुरि अमिउ
 पीआइआ रसकि रसकि बिगसाना रे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४४ ॥ आसा महला ५ ॥ बँधन काटि बिसारे अउगन अपना बिरदु
 सम्हारिआ ॥ होए क्रिपाल मात पित निआई बारिक जिउ प्रतिपारिआ ॥ १ ॥ गुरसिख राखे गुर गोपालि ॥ काढि लीए
 महा भवजल ते अपनी नदरि निहालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरणे जम ते छुटीए हलति पलति सुखु पाईए ॥ सासि
 गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईए ॥ २ ॥ भगति प्रेम परम पदु पाइआ साध साँगि दुख नाठे ॥ छिजै न जाइ
 किठु भउ न बिआपे हरि धनु निरमलु गाठे ॥ ३ ॥ अँति काल प्रभ भए सहाई इत उत राखनहारे ॥ प्रान मीत हीत धनु मेरै
 नानक सद बलिहारे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥ आसा महला ५ ॥ जा तूँ साहिबु ता भउ केहा हउ तुधु बिनु किसु सालाही ॥ एकु
 तूँ ता सभु किछु है मै तुधु बिनु दूजा नाही ॥ १ ॥ बाबा बिखु देखिआ संसारु ॥ रखिआ करहु गुसाई मेरे मै नामु तेरा
 आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाणहि बिरथा सभा मन की होरु किसु पहि आखि सुणाईए ॥ विणु नावै सभु जगु बउराइआ
 नामु मिलै सुखु पाईए ॥ २ ॥ किआ कहीए किसु आखि सुणाईए जि कहणा सु प्रभ जी पासि ॥ सभि किछु कीता तेरा वरतै
 सदा सदा तेरी आस ॥ ३ ॥ जे देहि वडिआई ता तेरी वडिआई इत उत तुझहि धिआउ ॥ नानक के प्रभ सदा सुखदाते मै
 ताणु तेरा इकु नाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥ आसा महला ५ ॥ अँमितु नाम तुम्हारा ठाकुर एहु महा रसु जनहि पीओ ॥ जनम
 जनम चूके भै भारे दुरतु बिनासिओ भरमु बीओ ॥ १ ॥ दरसनु पेखत मै जीओ ॥ सुनि करि बचन तुम्हारे सतिगुर मनु तनु
 मेरा ठारु थीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते भइओ साध संगु एहु काजु तुम्ह आपि कीओ ॥ दिडु करि चरण गहे प्रभ
 तुम्हरे सहजे बिखिआ भई खीउ ॥ २ ॥ सुख निधान नामु प्रभ तुमरा एहु अबिनासी मँत्रु लीओ ॥ करि किरपा मोहि
 सतिगुरि दीना तापु संतापु मेरा बैरु गीओ ॥ ३ ॥ धँनु सु माणस देही पाई जितु प्रभि अपनै मेलि लीओ ॥ धँनु सु कलिजुगु

साधसँगि कीरतनु गाईरे नानक नामु अधारु हीओ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥ आसा महला ५ ॥ आगै ही ते सभु किछु हूआ
अवरु कि जागै गिआना ॥ भूल चूक अपना बारिकु बखसिआ पारब्रहम भगवाना ॥ १ ॥ सतिगुरु मेरा सदा दइआला मोहि
दिन कउ राखि लीआ ॥ काटिआ रोगु महा सुखु पाइआ हरि अँमितु मुखि नामु दीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक पाप मेरे
परहरिआ बँधन काटे मुक्त भए ॥ अँध कूप महा घोर ते बाह पकरि गुरि काढि लीए ॥ २ ॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ
राखे राखनहारे ॥ ऐसी दाति तेरी प्रभ मेरे कारज सगल सवारे ॥ ३ ॥ गुण निधान साहिब मनि मेला ॥ सरणि पइआ
नानक सोहेला ॥ ४ ॥ ९ ॥ ४८ ॥ आसा महला ५ ॥ तूँ विसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा ॥ अवरु न कोऊ
दूजा सूझै साचे अलख अभेवा ॥ १ ॥ चीति आवै तां सदा दइआला लोगन किआ वेचारे ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीए
सगले जीअ तुम्हारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी टेक तेरा आधार हाथ देइ तूँ राखहि ॥ जिसु जन उपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु
न कोऊ भारवै ॥ २ ॥ ओहो सुखु ओहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी ॥ तूँ दाना तूँ सद मिहरवाना नामु मिलै रँगु माणी
॥ ३ ॥ तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिँडु सभु तेरा ॥ कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जागै मेरा ॥ ४ ॥ १०
॥ ४९ ॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा प्रभ अँतरजामी साधसँगि हरि पाईरे ॥ खोलि किवार दिखाले दरसनु पुनरपि
जनमि न आईरे ॥ १ ॥ मिलउ परीतम सुआमी अपुने सगले दूख हरउ रे ॥ पारब्रहम जिन्हि रिदै अराधिआ ता कै सँगि तरउ
रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा उदिआन पावक सागर भए हरख सोग महि बसना ॥ सतिगुरु भेटि भइआ मनु निरमलु जपि अँमितु
हरि रसना ॥ २ ॥ तनु धनु थापि कीओ सभु अपना कोमल बँधन बांधिआ ॥ गुर परसादि भए जन मुक्ते हरि हरि नामु
अराधिआ ॥ ३ ॥ राखि लीए प्रभि राखनहारै जो प्रभ अपुने भाणे ॥ जीउ पिँडु सभु तुम्हरा दाते नानक सद कुरबाणे ॥ ४
॥ ११ ॥ ५० ॥ आसा महला ५ ॥ मोह मलन नीद ते छुटकी कउनु अनुग्रहु भइओ री ॥ महा मोहनी तुधु न विआपै

तेरा आलसु कहा गइओ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु अहँकारु गाखरो सँजमि कउन छुटिओ री ॥ सुरि देव असुर त्रै
गुनीआ सगलो भवनु लुटिओ री ॥ १ ॥ दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री ॥ ऐसो समरथु वरनि न
साकउ ता की उपमा जात न कहिओ री ॥ २ ॥ काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिओ री ॥ महा मँत्रु गुर हिरदै
बसिओ अचरज नामु सुनिओ री ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ नदरि अवलोकन अपुनै चरणि लगाई ॥ प्रेम भगति नानक सुखु
पाइआ साधु सँगि समाई ॥ ४ ॥ १२ ॥ ५१ ॥

१८४ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ७ महला ५ ॥

लालु चोलना तै तनि सोहिआ ॥ सुरिजन भानी तां मनु मोहिआ ॥ १ ॥ कवन बनी री तेरी लाली ॥ कवन रँगि तूँ भई
गुलाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही सुँदरि तुमहि सुहागु ॥ तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ॥ २ ॥ तूँ सतवँती तूँ परधानि ॥ तूँ
प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ॥ ३ ॥ प्रीतम भानी तां रँगि गुलाल ॥ कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल ॥ ४ ॥ सुनि री
सखी इह हमरी घाल ॥ प्रभ आपि सीगारि सवारनहार ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ५२ ॥ आसा महला ५ ॥ दूखु घनो
जब होते दूरि ॥ अब मसलति मोहि मिली हदूरि ॥ १ ॥ चुका निहोरा सखी सहेरी ॥ भरमु गइआ गुरि पिर सँगि मेरी ॥ १
॥ रहाउ ॥ निकटि आनि प्रिअ सेज धरी ॥ काणि कढन ते छूटि परी ॥ २ ॥ मँदरि मेरै सबदि उजारा ॥ अनद बिनोदी
खसमु हमारा ॥ ३ ॥ मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ ॥ थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५३ ॥ आसा
महला ५ ॥ साचि नामि मेरा मनु लागा ॥ लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ॥ १ ॥ बाहरि सूतु सगल सिउ मउला ॥ अलिपतु
रहउ जैसे जल महि कउला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुख की बात सगल सिउ करता ॥ जीअ सँगि प्रभु अपुना धरता ॥ २ ॥ दीसि
आवत है बहुतु भीहाला ॥ सगल चरन की इहु मनु राला ॥ ३ ॥ नानक जनि गुरु पूरा पाइआ ॥ अँतरि बाहरि एक

दिखाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५४ ॥ आसा महला ५ ॥ पावतु रलीआ जोबनि बलीआ ॥ नाम बिना माटी सँगि रलीआ ॥ १
 ॥ कान कुँडलीआ बसत्र ओढलीआ ॥ सेज सुखलीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तलै कुँचरीआ सिरि कनिक छतरीआ ॥ हरि
 भगति बिना ले धरनि गडलीआ ॥ २ ॥ रूप सुँदरीआ अनिक इसतरीआ ॥ हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ॥ ३ ॥
 माइआ छलीआ बिकार बिखलीआ ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख दइअलीआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५५ ॥ आसा महला ५ ॥ एक
 बगीचा पेड घन करिआ ॥ अँमित नामु तहा महि फलिआ ॥ १ ॥ ऐसा करहु बीचारु गिआनी ॥ जा ते पाईरे पदु निरबानी
 ॥ आसि पासि बिखूआ के कुँटा बीचि अँमितु है भाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिँचनहारे एकै माली ॥ खबरि करतु है पात पत
 डाली ॥ २ ॥ सगल बनसपति आणि जड़ाई ॥ सगली फूली निफल न काई ॥ ३ ॥ अँमित फलु नामु जिनि गुर ते पाइआ
 ॥ नानक दास तरी तिनि माइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५६ ॥ आसा महला ५ ॥ राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ जोगु बनिआ तेरा
 कीरतनु गाई ॥ १ ॥ सरब सुखा बने तेरै ओलहै ॥ भ्रम के परदे सतिगुर खोलहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हुकमु बूझि रँग रस माणे
 ॥ सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥ २ ॥ जिनि तूँ जाता सो गिरसत उदासी परवाणु ॥ नामि रता सोई निरबाणु ॥ ३ ॥ जा
 कउ मिलिओ नामु निधाना ॥ भनति नानक ता का पूर खजाना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५७ ॥ आसा महला ५ ॥ तीरथि जाउ तहउ
 हउ करते ॥ पँडित पूछउ त माइआ राते ॥ १ ॥ सो असथानु बतावहु मीता ॥ जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ सासत्र बेद पाप पुँन वीचार ॥ नरकि सुरगि फिरि फिरि अउतार ॥ २ ॥ गिरसत महि चिँत उदास अहँकार ॥ करम करत
 जीअ कउ जँजार ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते मनु वसि आइआ ॥ नानक गुरमुखि तरी तिनि माइआ ॥ ४ ॥ साध सँगि हरि
 कीरतनु गाईरे ॥ इहु असथानु गुरू ते पाईरे ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७ ॥ ५८ ॥ आसा महला ५ ॥ घर महि सूख बाहरि
 फुनि सूखा ॥ हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥ १ ॥ सगल सूख जां तूँ चिति आंवेँ ॥ सो नामु जपै जो जनु

तुधु भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा ॥ हरि हरि जपत ढहै दुख डेरा ॥ २ ॥ हुकमु बूझै सोई परवानु
 ॥ साचु सबदु जा का नीसानु ॥ ३ ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्विड़ाइआ ॥ भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥
 ५९ ॥ आसा महला ५ ॥ जहा पठावहु तह तह जाई ॥ जो तुम देहु सोई सुखु पाई ॥ १ ॥ सदा चेरे गोविंद गोसाई ॥
 तुम्हरी क्रिपा ते त्रिपति अघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरा दीआ पैन्हउ खाई ॥ तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाई ॥ २ ॥ मन
 तन अंतरि तुझै धिआई ॥ तुम्हरै लवै न कोऊ लाई ॥ ३ ॥ कहि नानक नित इवै धिआई ॥ गति होवै सँतह लागि पाई
 ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६० ॥ आसा महला ५ ॥ ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥ मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥ १ ॥ श्रवन
 सुनीजै अँमित कथा ॥ जासु सुनी मनि होइ अनँदा दूख रोग मन सगले लथा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कारजि कामि बाट घाट
 जपीजै ॥ गुर प्रसादि हरि अँमितु पीजै ॥ २ ॥ दिनसुरैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥ ३ ॥
 आठ पहर जिंसु विसरहि नाही ॥ गति होवै नानक तिसु लागि पाई ॥ ४ ॥ १० ॥ ६१ ॥ आसा महला ५ ॥ जा कै
 सिमरनि सूख निवासु ॥ भई कलिआण दुख होवत नासु ॥ १ ॥ अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु ॥ सतिगुरु अपना सद
 सदा मनावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥ थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥ २ ॥ पर का बुरा न
 राखहु चीत ॥ तुम कउ दुखु नहीं भाई मीत ॥ ३ ॥ हरि हरि तँतु मँतु गुरि दीन्हा ॥ इहु सुखु नानक अनदिनु चीन्हा ॥ ४
 ॥ ११ ॥ ६२ ॥ आसा महला ५ ॥ जिंसु नीच कउ कोई न जानै ॥ नामु जपत उहु चहु कुँट मानै ॥ १ ॥ दरसनु मागउ
 देहि पिआरे ॥ तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै निकटि न आवै कोई ॥ सगल खिसटि उआ के चरन
 मलि धोई ॥ २ ॥ जो प्राणी काहू न आवत काम ॥ सँत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥ ३ ॥ साध सँगि मन सोवत जागे ॥
 तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६३ ॥ आसा महला ५ ॥ एको एकी नैन निहारउ ॥ सदा सदा हरि नामु

सम्हारउ ॥ १ ॥ राम रामा रामा गुन गावउ ॥ सँत प्रतापि साध कै सँगे हरि हरि नामु धिआवउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल
 समग्री जा कै सूति परोई ॥ घट घट अँतरि रविआ सोई ॥ २ ॥ ओपति परलउ खिन महि करता ॥ आपि अलेपा निरगुनु
 रहता ॥ ३ ॥ करन करावन अँतरजामी ॥ अनँद करै नानक का सुआमी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६४ ॥ आसा महला ५ ॥ कोटि
 जनम के रहे भवारे ॥ दुलभ देह जीती नही हारे ॥ १ ॥ किलबिख बिनासे दुख दरद दूरि ॥ भए पुनीत सँतन की धूरि ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ प्रभ के सँत उधारन जोग ॥ तिसु भेटे जिसु धुरि सँजोग ॥ २ ॥ मनि आनँदु मँत्रु गुरि दीआ ॥ तिसन बुझी मनु
 निहचलु थीआ ॥ ३ ॥ नामु पदारथु नउ निधि सिधि ॥ नानक गुर ते पाई बुधि ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६५ ॥ आसा महला ५ ॥
 मिटी तिआस अगिआन अँधेरे ॥ साध सेवा अघ कटे घनेरे ॥ १ ॥ सूख सहज आनँदु घना ॥ गुर सेवा ते भए मन निरमल
 हरि हरि हरि हरि नामु सुना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनासिओ मन का मूरखु ढीठा ॥ प्रभ का भाणा लागा मीठा ॥ २ ॥ गुर पूरे
 के चरण गहे ॥ कोटि जनम के पाप लहे ॥ ३ ॥ रतन जनमु इहु सफल भइआ ॥ कहु नानक प्रभ करी मइआ ॥ ४ ॥ १५
 ॥ ६६ ॥ आसा महला ५ ॥ सतिगुरु अपना सद सदा सम्हारे ॥ गुर के चरन केस सँगि झारे ॥ १ ॥ जागु रे मन
 जागनहारे ॥ बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर की बाणी सिउ रँगु लाइ ॥
 गुरु किरपालु होइ दुखु जाइ ॥ २ ॥ गुर बिनु दूजा नाही थाउ ॥ गुरु दाता गुरु देवै नाउ ॥ ३ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु
 आपि ॥ आठ पहर नानक गुर जापि ॥ ४ ॥ १६ ॥ ६७ ॥ आसा महला ५ ॥ आपे पेडु बिसथारी साख ॥ अपनी खेती
 आपे राख ॥ १ ॥ जत कत पेखउ एकै ओही ॥ घट घट अँतरि आपे सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे सूरु किरणि बिसथारु ॥
 सोई गुपतु सोई आकारु ॥ २ ॥ सरगुण निरगुण थापै नाउ ॥ दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि भ्रमु भउ
 खोइआ ॥ अनद रूपु सभु नैन अलोइआ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ६८ ॥ आसा महला ५ ॥ उकति सिआनप किछु न जाना ॥

दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ॥ १ ॥ मै निरगुन गुणु नाही कोइ ॥ करन करावनहार प्रभ सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूरख मुगध
 अगिआन अवीचारी ॥ नाम तेरे की आस मनि धारी ॥ २ ॥ जपु तुप सँजमु करम न साधा ॥ नामु प्रभू का मनहि अराधा
 ॥ ३ ॥ किछू न जाना मति मेरी थोरी ॥ बिनवति नानक ओट प्रभ तोरी ॥ ४ ॥ १८ ॥ ६९ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि
 हरि अखर दुइ इह माला ॥ जपत जपत भए दीन दइआला ॥ १ ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुनी ॥ करि किरपा राखहु
 सरणाई मो कउ देहु हरे हरि जपनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि माला उर अंतरि धारै ॥ जनम मरण का दूखु निवारै ॥ २ ॥ हिरदै
 समालै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥ ३ ॥ कहु नानक जो राचै नाइ ॥ हरि माला ता कै संगि जाइ
 ॥ ४ ॥ १९ ॥ ७० ॥ आसा महला ५ ॥ जिस का सभ किछु तिस का होइ ॥ तिसु जन लेपु न बिआपै कोइ ॥ १ ॥ हरि
 का सेवकु सद ही मुकता ॥ जो किछु करै सोई भल जन कै अति निरमल दास की जुगता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल तिआगि
 हरि सरणी आइआ ॥ तिसु जन कहा बिआपै माइआ ॥ २ ॥ नामु निधानु जा के मन माहि ॥ तिस कउ चिँता सुपनै नाहि
 ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ भरमु मोहु सगल बिनसाइआ ॥ ४ ॥ २० ॥ ७१ ॥ आसा महला ५ ॥ जउ
 सुप्रसँन होइओ प्रभु मेरा ॥ तां दूखु भरमु कहु कैसे नेरा ॥ १ ॥ सुनि सुनि जीवा सोइ तुम्हारी ॥ मोहि निरगुन कउ लेहु
 उधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटि गइआ दूखु बिसारी चिँता ॥ फलु पाइआ जपि सतिगुर मँता ॥ २ ॥ सोई सति सति है सोइ
 ॥ सिमरि सिमरि रखु कँडि परोइ ॥ ३ ॥ कहु नानक कउन उह करमा ॥ जा कै मनि वसिआ हरि नामा ॥ ४ ॥ २१ ॥ ७२
 ॥ आसा महला ५ ॥ कामि क्रोधि अहँकारि विगूते ॥ हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥ १ ॥ सोइ रहे माइआ मद माते ॥
 जागत भगत सिमरत हरु राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह भरमि बहु जोनि भवाइआ ॥ असथिरु भगत हरि चरण धिआइआ ॥
 २ ॥ बँधन अँध कूप गिह मेरा ॥ मुकते सँत बुझहि हरि नेरा ॥ ३ ॥ कहु नानक जो प्रभ सरणाई ॥ इहा सुखु आगै

गति पाई ॥ ४ ॥ २२ ॥ ७३ ॥ आसा महला ५ ॥ तू मेरा तरँगु हम मीन तुमारे ॥ तू मेरा ठाकुरु हम तेरै दुआरे ॥ १ ॥
 तू मेरा करता हउ सेवक तेरा ॥ सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू मेरा जीवनु तू आधारु ॥ तुझहि पेखि
 बिगसै कउलारु ॥ २ ॥ तू मेरी गति पति तू परवानु ॥ तू समरथु मै तेरा ताणु ॥ ३ ॥ अनदिनु जपउ नाम गुणतासि ॥
 नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥ ४ ॥ २३ ॥ ७४ ॥ आसा महला ५ ॥ रोवनहारै झूठु कमाना ॥ हसि हसि सोगु करत
 बेगाना ॥ १ ॥ को मूआ का कै घरि गावनु ॥ को रोवै को हसि हसि पावनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा ते बिरधाना
 ॥ पहुचि न मूका फिरि पछुताना ॥ २ ॥ त्रिहु गुण महि वरतै संसारा ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥ ३ ॥ कहु
 नानक जो लाइआ नाम ॥ सफल जनमु ता का परवान ॥ ४ ॥ २४ ॥ ७५ ॥ आसा महला ५ ॥ सोइ रही प्रभ खबरि न
 जानी ॥ भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥ १ ॥ प्रिअ प्रेम सहजि अनदु धरउ री ॥ प्रभ मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा
 करउ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर महि अँमितु आणि निसारिओ ॥ खिसरि गइओ भूम परि डारिओ ॥ २ ॥ सादि मोहि लादी
 अहँकारे ॥ दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥ ३ ॥ साध सँगि मिटे भरम अँधारे ॥ नानक मेली सिरजणहारे ॥ ४ ॥ २५ ॥ ७६
 ॥ आसा महला ५ ॥ चरन कमल की आस पिआरे ॥ जमकँकर नसि गए विचारे ॥ १ ॥ तू चिति आवहि तेरी मइआ ॥
 सिमरत नाम सगल रोग खइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक दूरु देवहि अवरा कउ ॥ पहुचि न साकहि जन तेरे कउ ॥ २ ॥
 दरस तेरे की पिआस मनि लागी ॥ सहज अनँद बसै बैरागी ॥ ३ ॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ केवल नामु रिदे महि
 दीजै ॥ ४ ॥ २६ ॥ ७७ ॥ आसा महला ५ ॥ मनु त्रिपतानो मिटे जँजाल ॥ प्रभु अपुना होइआ किरपाल ॥ १ ॥ सँत
 प्रसादि भली बनी ॥ जा कै ग्रहि सभु किछु है पूरनु सो भेटिआ निरभै धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु द्रिडाइआ साध किरपाल
 ॥ मिटि गई भूख महा बिकराल ॥ २ ॥ ठाकुरि अपुनै कीनी दाति ॥ जलनि बुझी मनि होई सांति ॥ ३ ॥ मिटि

गई भाल मनु सहजि समाना ॥ नानक पाइआ नाम खजाना ॥ ४ ॥ २७ ॥ ७८ ॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर सिउ जा की
 बनि आई ॥ भोजन पूरन रहे अघाई ॥ १ ॥ कछू न थोरा हरि भगतन कउ ॥ खात खरचत बिलछत देवन कउ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ जा का धनी अगम गुसाई ॥ मानुख की कहु केत चलाई ॥ २ ॥ जा की सेवा दस असट सिधाई ॥ पलक दिसटि ता
 की लागहु पाई ॥ ३ ॥ जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी ॥ कहु नानक नाही तिन कामी ॥ ४ ॥ २८ ॥ ७९ ॥ आसा
 महला ५ ॥ जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ ॥ तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ मिटि गई गणत बिनासिउ संसा ॥
 नामि रते जन भए भगवँता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ मै अपुना साहिबु चीति ॥ तउ भउ मिटिओ मेरे मीत ॥ २ ॥ जउ मै ओट
 गही प्रभ तेरी ॥ तां पूरन होई मनसा मेरी ॥ ३ ॥ देखि चलित मनि भए दिलासा ॥ नानक दास तेरा भरवासा ॥ ४ ॥ २९
 ॥ ८० ॥ आसा महला ५ ॥ अनदिनु मूसा लाजु टुकाई ॥ गिरत कूप महि खाहि मिठाई ॥ १ ॥ सोचत साचत रैनि बिहानी
 ॥ अनिक रँग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै सारिँगपानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ द्रुम की छाइआ निहचल ग्रिहु बांधिआ ॥
 काल कै फांसि सकत सरु सांधिआ ॥ २ ॥ बालू कनारा तरँग मुखि आइआ ॥ सो थानु मूडि निहचलु करि पाइआ ॥ ३ ॥
 साध सँगि जपिओ हरि राइ ॥ नानक जीवै हरि गुण गाइ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ८१ ॥ आसा महला ५ दुतुके ९ ॥ उन कै सँगि तू
 करती केल ॥ उन कै सँगि हम तुम सँगि मेल ॥ उन्ह कै सँगि तुम सभ कोउ लोरै ॥ ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै ॥ १ ॥
 ते बैरागी कहा समाए ॥ तिसु बिनु तुही दुहेरी शी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उन्ह कै सँगि तू ग्रिह महि माहरि ॥ उन्ह कै सँगि तू होई
 जाहरि ॥ उन्ह कै सँगि तू रखी पपोलि ॥ ओसु बिना तूँ छुटकी रोलि ॥ २ ॥ ओन्ह कै सँगि तेरा मानु महतु ॥ उन्ह कै सँगि
 तुम साकु जगतु ॥ उन्ह कै सँगि तेरी सभ बिधि थाटी ॥ ओसु बिना तूँ होई है माटी ॥ ३ ॥ ओहु बैरागी मरै न जाइ ॥ हुकमे
 बाधा कार कमाइ ॥ जोडि विछोडे नानक थापि ॥ अपनी कुदरति जाणै आपि ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ८२ ॥ आसा महला ५ ॥

ना ओहु मरता ना हम डरिआ ॥ ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ ॥ ना ओहु निरधनु ना हम भूखे ॥ ना ओसु दूखु न हम कउ
दूखे ॥ १ ॥ अवरु न कोऊ मारनवारा ॥ जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना उसु बँधन ना हम बाधे ॥ ना
उसु धँधा ना हम धाधे ॥ ना उसु मैलु न हम कउ मैला ॥ ओसु अनँदु त हम सद केला ॥ २ ॥ ना उसु सोचु न हम कउ सोचा
॥ ना उसु लेपु न हम कउ पोचा ॥ ना उसु भूख न हम कउ त्रिसना ॥ जा उहु निरमलु तां हम जचना ॥ ३ ॥ हम किछु
नाही एकै ओही ॥ आगै पाछै एको सोई ॥ नानक गुरि खोए भ्रम भँगा ॥ हम ओइ मिलि होए इक रँगा ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ८३
॥ आसा महला ५ ॥ अनिक भांति करि सेवा करीरे ॥ जीउ प्रान धनु आगै धरीरे ॥ पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥
अनिक बार जाईरे कुरबानु ॥ १ ॥ साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥ तिस कै सँगि मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दासनि
दासी की पनिहारि ॥ उन्ह की रेणु बसै जीअ नालि ॥ माथै भागु त पावउ सँगु ॥ मिलै सुआमी अपुनै रँगि ॥ २ ॥ जाप
ताप सेवउ सभ नेमा ॥ करम धरम अरपउ सभ होमा ॥ गरबु मोहु तजि होवउ रेन ॥ उन्ह कै सँगि देखउ प्रभु नैन ॥ ३ ॥
निमख निमख एही आराधउ ॥ दिनसु रँगि एह सेवा साधउ ॥ भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद ॥ साध सँगि नानक बखसिंद ॥
४ ॥ ३३ ॥ ८४ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ ॥ प्रभ की प्रीति हउमै
मलु खोइ ॥ प्रभ की प्रीति सद निरमल होइ ॥ १ ॥ सुनहु मीत ऐसा प्रेम पिआरु ॥ जीअ प्रान घट घट आधारु ॥ १ ॥
रहाउ ॥ प्रभ की प्रीति भए सगल निधान ॥ प्रभ की प्रीति रिदै निरमल नाम ॥ प्रभ की प्रीति सद सोभावँत ॥ प्रभ की प्रीति
सभ मिटी है चिंत ॥ २ ॥ प्रभ की प्रीति इहु भवजलु तरै ॥ प्रभ की प्रीति जम ते नहीं डरै ॥ प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥
प्रभ की प्रीति चलै सँगारै ॥ ३ ॥ आपहु कोई मिलै न भूलै ॥ जिसु क्रिपालु तिस साध सँगि घूलै ॥ कहु नानक तेरै कुरबाणु
॥ सँत ओट प्रभ तेरा ताणु ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ८५ ॥ आसा महला ५ ॥ भूपति होइ कै राजु कमाइआ ॥ करि करि अनरथ

विहाड्री माइआ ॥ संचत संचत थैली कीन्ही ॥ प्रभि उस ते डारि अवर कउ दीन्ही ॥ १ ॥ काच गगरीआ अँभ मडरीआ ॥
 गरबि गरबि उआहू महि परीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ होइओ भइआ निहँगा ॥ चीति न आइओ करता सँगा ॥ लसकर
 जोड़े कीआ सँबाहा ॥ निकसिआ फूक त होइ गइउ सुआहा ॥ २ ॥ ऊचे मँदर महल अरु शनी ॥ हसति घोड़े जोड़े मनि
 भानी ॥ वड परवारु पूत अरु धीआ ॥ मोहि पचे पचि अँधा मूआ ॥ ३ ॥ जिनिहि उपाहा तिनहि बिनाहा ॥ रँग रसा जैसे
 सुपनाहा ॥ सोई मुकता तिसु राजु मालु ॥ नानक दास जिंसु खसमु दइआलु ॥ ४ ॥ ३५ ८६ ॥ आसा महला ५ ॥ इन्ह
 सिउ प्रीति करी घनेरी ॥ जउ मिलीरे तउ वधै वधेरी ॥ गलिं चमड़ी जउ छोडै नाही ॥ लागि छुटो सतिगुरु की पाई ॥ १ ॥
 जग मोहनी हम तिआगि गवाई ॥ निरगुनु मिलिओ वजी वधई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी सुँदरि मन कउ मोहै ॥ बाटि घाटि
 ग्रिहि बनि बनि जोहै ॥ मनि तनि लागै होइ कै मीठी ॥ गुर प्रसादि मै खोटी डीठी ॥ २ ॥ अगरक उस के वडे ठगाऊ ॥
 छोडहि नाही बाप न माऊ ॥ मेली अपने उनि ले बांधे ॥ गुर किरपा ते मै सगले साथे ॥ ३ ॥ अब मोरै मनि भइआ अनँद ॥
 भउ चूका टूटे सभि फँद ॥ कहु नानक जा सतिगुरु पाइआ ॥ घरु सगला मै सुखी बसाइआ ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ८७ ॥ आसा
 महला ५ ॥ आठ पहर निकटि करि जानै ॥ प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥ एकु नामु सँतन आधारु ॥ होइ रहे सभ की पग
 छारु ॥ १ ॥ सँत रहत सुनहु मेरे भाई ॥ उआ की महिमा कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरतणि जा कै केवल नामु ॥
 अनद रूप कीरतनु बिस्त्राम ॥ मित्र सत्रु जा कै एक समानै ॥ प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥ २ ॥ कोटि कोटि अघ
 काटनहारा ॥ दुख दूरि करन जीअ के दातारा ॥ सूरबीर बचन के बली ॥ कउला बपुरी सँती छली ॥ ३ ॥ ताका सँगु बाछहि
 सुरदेव ॥ अमोघ दरसु सफल जा की सेव ॥ कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥ मोहि सँतह टहल दीजै गुणतासि ॥ ४ ॥ ३७
 ॥ ८८ ॥ आसा महला ५ ॥ सगल सुख जपि एकै नाम ॥ सगल धरम हरि के गुण गाम ॥ महा पवित्र साध का सँगु ॥

जिसु भेटत लागै प्रभ रँगु ॥ १ ॥ गुर प्रसादि ओइ आनँद पावै ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न
जावे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥ बेद पुरान तिनि सिँमिति सुनीजा ॥ महा पुनीत जा का निरमल थानु
॥ साध संगति जा कै हरि हरि नामु ॥ २ ॥ प्रगटिओ सो जनु सगले भवन ॥ पतित पुनीत ता की पग रेन ॥ जा कउ
भेटिओ हरि हरि राइ ॥ ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥ ३ ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥ उन साधा का दरसनु
पावउ ॥ मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥ नानक आइ पए सरणाइ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ८९ ॥ आसा महला ५ ॥ आठ पहर उदक
इसनानी ॥ सद ही भोगु लगाइ सुगिआनी ॥ बिरथा काहू छोडै नाही ॥ बहुरि बहरि तिसु लागह पाई ॥ १ ॥ सालगिरामु
हमारै सेवा ॥ पूजा अरचा बँदन देवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घँटा जा का सुनीरे चहु कुँट ॥ आसनु जा का सदा बैकुँठ ॥ जा का
चवरु सभ ऊपरि झूलै ॥ ता का धूपु सदा परफुलै ॥ २ ॥ घटि घटि सँपटु है रे जा का ॥ अभग सभा संगि है साधा ॥
आरती कीरतनु सदा अनँद ॥ महिमा सुँदर सदा बेअँत ॥ ३ ॥ जिसह परापति तिस ही लहना ॥ संत चरन ओहु आइओ
सरना ॥ हाथ चड़िओ हरि सालगिरामु ॥ कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ९० ॥ आसा महला ५ पँचपदा, ॥
जिह पैडे लूटी पनिहारी ॥ सो मारगु संतन दूरी ॥ १ ॥ सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥ नाम तेरे की मुकते बीथी जम का
मारगु दूरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह लालच जागाती घाट ॥ दूरि रही ओह जन ते बाट ॥ २ ॥ जह आवटे बहुत घन
साथ ॥ पारब्रहम के संगी साध ॥ ३ ॥ चित्र गुप्तु सभ लिखते लेखा ॥ भगत जना कउ द्रिसटि न पेखा ॥ ४ ॥ कहु
नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ वाजे ता कै अनहद तूरा ॥ ५ ॥ ४० ॥ ९१ ॥ आसा महला ५ दुपदा १ ॥ साधू संगि
सिखाइओ नामु ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ बुझि गई त्रिसना हरि जसहि अघाने ॥ जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥ १
॥ करन करावन सरनि परिआ ॥ गुर परसादि सहज घरु पाइआ मिटिआ अँधेरा चँदु चड़िआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

लाल जवेहर भरे भंडार ॥ तोटि न आवै जपि निरंकार ॥ अंम्रित सबदु पीवै जनु कोइ ॥ नानक ता की परम गति होइ ॥ २
 ॥ ४१ ॥ ९२ ॥ आसा घरु ७ महला ५ ॥ हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥ संगी साथी सगल तराई ॥ १ ॥ गुरु मेरै
 संगि सदा है नाले ॥ सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा कीआ मीठा लागै हरि नामु पदारथु नानक
 मांगै ॥ २ ॥ ४२ ॥ ९३ ॥ आसा महला ५ ॥ साधू संगति तरिआ संसारु ॥ हरि का नामु मनहि आधारु ॥ १ ॥ चरन
 कमल गुरदेव पिआरे ॥ पूजहि संत हरि प्रीति पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै मसतकि लिखिआ भागु ॥ कहु नानक ता का
 थिरु सोहागु ॥ २ ॥ ४३ ॥ ९४ ॥ आसा महला ५ ॥ मीठी आगिआ पिर की लागी ॥ सउकनि घर की कंति तिआगी ॥
 प्रिअ सोहागनि सीगारि करी ॥ मन मेरे की तपति हरी ॥ १ ॥ भलो भइओ प्रिअ कहिआ मानिआ ॥ सूखु सहजु इसु घर
 का जानिआ ॥ रहाउ ॥ हउ बंदी प्रिअ खिजमतदार ॥ ओहु अबिनासी अगम अपार ॥ ले परवा प्रिअ झलउ पाए ॥ भागि
 गए पंच दूत लावे ॥ २ ॥ ना मै कुलु ना सोभावंत ॥ किआ जाना किउ भानी कंत ॥ मोहि अनाथ गरीब निमानी ॥ कंत
 पकरि हम कीनी शनी ॥ ३ ॥ जब मुखि प्रीतमु साजनु लागु ॥ सूख सहज मेश धनु सोहागा ॥ कहु नानक मोरी पूरन
 आसा ॥ सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ९५ ॥ आसा महला ५ ॥ माथै त्रिकुटी दिसटि करु रि ॥ बोलै कउड़ा
 जिहबा की फूड़ि ॥ सदा भूखी पिरु जानै दूरि ॥ १ ॥ ऐसी इसत्री इक रामि उपाई ॥ उनि सभु जगु खाइआ हम गुरि राखे
 मेरे भाई ॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउली सभ जगु जोहिआ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ मोहिआ ॥ गुरमुखि नामि लगे से सोहिआ ॥
 २ ॥ वरत नेम करि थाके पुनहचरना ॥ तट तीरथ भवे सभ धरना ॥ से उबरे जिं सतिगुर की सरना ॥ ३ ॥ माइआ मोहिं
 सभो जगु बाधा ॥ हउमै पचै मनमुख मूराखा ॥ गुर नानक बाह पकरि हम राखा ॥ ४ ॥ २ ॥ ९६ ॥ आसा महला ५ ॥
 सरब दूख जब बिसरहि सुआमी ॥ ईहा ऊहा कामि न प्राणी ॥ १ ॥ संत त्रिपतासे हरि हरि ध्याइ ॥

करि किरपा अपुनै नाइ लाए सरब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥ रहाउ ॥ सँगि होवत कउ जानत दूरि ॥ सो जनु मरता नित
 नित झूरि ॥ २ ॥ जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि ॥ महा बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक
 सभि सिमरहु एक ॥ गति पाईये गुर पूरे टेक ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९७ ॥ आसा महला ५ ॥ नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ ॥
 कलमल दोख सगल परहरिआ ॥ १ ॥ सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥ हरि गुन गाइ परम गति पाई ॥ रहाउ ॥ साध जना
 के पूजे पैर ॥ मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥ २ ॥ गुर पूरे मिलिं झगरु चुकाइआ ॥ पँच दूत सभि वसगति आइआ ॥ ३ ॥
 जिसु मनि वसिआ हरि का नामु ॥ नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९८ ॥ आसा महला ५ ॥ गावि ले तू
 गावनहारे ॥ जीअ पिंड के प्रान अधारे ॥ जा की सेवा सरब सुख पावहि ॥ अवर काहू पहि बहुडि न जावहि ॥ १ ॥
 सदा अनंद अनंदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीरे ॥ बलिहारी तिसु संत पिआरे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीरे ॥
 रहाउ ॥ जा का दानु निखूटै नाही ॥ भली भाति सभ सहजि समाही ॥ जा की बखस न मेटै कोई ॥ मनि वासाईये साचा
 सोई ॥ २ ॥ सगल समग्री छिह जा कै पूरन ॥ प्रभ के सेवक दूख न झूरन ॥ ओटि गही निरभउ पदु पाईये ॥ सासि
 सासि सो गुन निधि गाईये ॥ ३ ॥ दूरि न होई कतहू जाईये ॥ नदरि करे ता हरि हरि पाईये ॥ अरदासि करी पूरे गुर पासि
 ॥ नानकु मँगै हरि धनु रासि ॥ ४ ॥ ५ ॥ ९९ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मिटिआ तन का दूख ॥ मन सगल कउ
 होआ सूख ॥ करि किरपा गुर दीनो नाउ ॥ बलि बलि तिसु सतिगुर कउ जाउ ॥ १ ॥ गुरु पूरा पाइओ मेरे भाई ॥ रोग
 सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ मन चिंतत सगले फल पाए ॥ अगनि
 बुझी सभ होई सांति ॥ करि किरपा गुरि कीनी दाति ॥ २ ॥ निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥ निमाने कउ गुरि कीनो मानु
 ॥ बँधन काटि सेवक करि राखे ॥ अँमित बानी रसना चाखे ॥ ३ ॥ वडै भागि पूज गुर चरना ॥ सगल तिआगि पाई

प्रभ सरना ॥ गुर नानक जा कउ भइआ दइआला ॥ सो जनु होआ सदा निहाला ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०० ॥ आसा महला ५
 ॥ सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ चिरु जीवनु उपजिआ सँजोगि ॥ उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥ माता कै मनि बहुतु
 बिगासु ॥ १ ॥ जँमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥ प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥ दसी मासी हुकमि
 बालक जनमु लीआ ॥ मिटिआ सोगु महा अनँदु थीआ ॥ गुरबाणी सखी अनँदु गावै ॥ साचे साहिब कै मनि भावै ॥ २ ॥
 वधी वेलि नबु पीड़ी चाली ॥ धरम कला हरि बँधि बहाली ॥ मन चिँदिआ सतिगुरु दिवाइआ ॥ भए अचिँत एक लिव
 लाइआ ॥ ३ ॥ जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥ बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि ॥ गुड्री छँनी नाही बात ॥ गुरु
 नानकु तुठा कीनी दाति ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०१ ॥ आसा महला ५ ॥ गुर पूरे राखिआ दे हाथ ॥ प्रगटु भइआ जन का परतापु
 ॥ १ ॥ गुरु गुरु जपी गुरु गुरु धिआई ॥ जीअ की अरदासि गुरु पहि पाई ॥ रहाउ ॥ सरनि परे साचे गुरदेव ॥ पूरन
 होई सेवक सेव ॥ जीउ पिँडु जोबनु राखै प्रान ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबान ॥ ३ ॥ ८ ॥ १०२ ॥

आसा घरु ८ काफी महला ५ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मै बँदा बै खरीदु सचु साहिब मेरा ॥ जीउ पिँडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥ १ ॥ माणु निमाणे तूँ धणी तेरा भरवासा ॥
 बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु अपार है कोई अँतु न पाए ॥ जिसु गुरु पूरा भेटसी सो
 चलै रजाए ॥ २ ॥ चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईए ॥ तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईए ॥ ३ ॥ जे लख करम
 कमाईअहि किछु पवै न बँधा ॥ जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धँधा ॥ ४ ॥ १ ॥ १०३ ॥ आसा महला ५ ॥
 सरब सुखा मै भालिआ हरि जेवडु न कोई ॥ गुर तुठे ते पाईए सचु साहिबु सोई ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद
 कुरबाना ॥ नामु न विसरउ इकु खिनु चसा इहु कीजै दाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागटु सचा सोइ

है जिसु हरि धनु अंतरि ॥ सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥ २ ॥ गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत
 सरु ॥ ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥ ३ ॥ नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु रंगे ॥ जीउ प्राण धनु गुरु
 है नानक कै संगे ॥ ४ ॥ २ ॥ १०४ ॥ आसा महला ५ ॥ साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै ॥ दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु
 नसै ॥ १ ॥ हउ वंजा कुरबाणु साई आपणे ॥ होवे अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिंदक गाल्हि सुणी सचे
 तिसु धणी ॥ सूखी हूँ सुखु पाइ माइ न कीम गणी ॥ २ ॥ नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई ॥ मै निरगुणि मेरी माइ आपि
 लडि लाइ लई ॥ ३ ॥ बेद कतेब संसार हभा हूँ बाहरा ॥ नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १०५ ॥ आसा
 महला ५ ॥ लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ ॥ कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखई जीउ ॥ १ ॥ तेरी टेक गोविंद
 गुपाल दइआल प्रभ ॥ तूँ सभना के नाथ तेरी खिसटि सभ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि ॥ नाम
 बिहूनडिआ से सरन्हि विसूरि विसूरि ॥ २ ॥ दास दासतण भाइ मिटिआ तिना गउणु ॥ विसरिआ जिन्हा नामु तिनाड़ा हालु
 कउणु ॥ ३ ॥ जैसे पसु हर्हिआउ तैसा संसारु सभ ॥ नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १०६ ॥ आसा
 महला ५ ॥ सभे थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥ झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥ १ ॥ आठ पहर सालाहि
 सिरजनहार तूँ ॥ जीवां तेरी दाति किरपा करहु मूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥ सोई लगै सचि जिसु
 तूँ देहि अला ॥ २ ॥ जो न ढहंदे मूलि सो घरु रासि करि ॥ हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥ ३ ॥ तिन्हा पिआरा रामु
 जो प्रभ भाणिआ ॥ गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १०७ ॥ आसा महला ५ ॥ जिन्हा न विसरै नामु
 से किनेहिआ ॥ भेदु न जाणहु मूलि साई जेहिआ ॥ १ ॥ मनु तनु होइ निहालु तुम्ह सँगि भेटिआ ॥ सुखु पाइआ जन
 परसादि दुखु सभु मेटिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते खंड ब्रहमंड उधारे तिन्ह खे ॥ जिन्ह मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥ २ ॥

जिस नो मँने आपि सोई मानीरे ॥ प्रगट पुरखु परवाणु सभ ठाई जानीरे ॥ ३ ॥ दिनसु रैणि आराधि समांले साह साह ॥
नानक की लोचा पूरि सचे पातिसाह ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०८ ॥ आसा महला ५ ॥ पूरि रहिआ सब ठाड हमार खसमु सोइ ॥ एकु
साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥ १ ॥ जिउ भावै तिउ राखु राखणहारिआ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहारिआ ॥
१ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपाले प्रभु आपि घटि घटि सारीरे ॥ जिसु मनि वुठा आपि तिसु न विसारीरे ॥ २ ॥ को किछु करे सु आपि
आपण भाणिआ ॥ भगता का सहाई जुगि जुगि जाणिआ ॥ ३ ॥ जपि जपि हरि का नामु कदे न झूरीरे ॥ नानक दरस
पिआस लोचा पूरीरे ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०९ ॥ आसा महला ५ ॥ किआ सोवहि नामु विसारि गाफल गहिलिआ ॥ कितीं इतु
दरीआइ वँजन्हि वहदिआ ॥ १ ॥ बोहिथड़ा हरि चरण मन चडि लँघीरे ॥ आठ पहर गुण गाइ साधू सँगीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
भोगहि भोग अनेक विणि नावै सुँजिआ ॥ हरि की भगति बिना मरि मरि रँनिआ ॥ २ ॥ कपड़ भोग सुगँध तनि मरदन
मालणा ॥ बिनु सिमरन तनु छारु सरपर चालणा ॥ ३ ॥ महा बिखमु संसारु विरलै पेखिआ ॥ छूटनु हरि की सरणि लेखु
नानक लेखिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ११० ॥ आसा महला ५ ॥ कोइ न किस ही सँगि कोहे गरबीरे ॥ एकु नामु आधारु भउजलु
तरबीरे ॥ १ ॥ मै गरीब सचु टेक तूँ मेरे सतिगुर पूरे ॥ देखि तुम्हारा दरसनो मेरा मनु धीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु
जँजालु काजि न कितै गनु ॥ हरि कीरतनु आधारु निहचल एहु धनु ॥ २ ॥ जेते माइआ रँग तेत पछाविआ ॥ सुख का
नामु निधानु गुरमुखि गाविआ ॥ ३ ॥ सचा गुणी निधानु तूँ प्रभ गहिर गँभीरे ॥ आस भरोसा खसम का नानक के जीअरे ॥
४ ॥ ९ ॥ १११ ॥ आसा महला ५ ॥ जिसु सिमरत दुखु जाइ सहज सुखु पाईरे ॥ रैणि दिनसु कर जोडि हरि हरि धिआईरे
॥ १ ॥ नानक का प्रभु सोइ जिस का सभु कोइ ॥ सरब रहिआ भरपूरि सचा सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँतरि बाहरि सँगि
सहाई गिआन जोगु ॥ तिसहि अराधि मना बिनासै सगल रोगु ॥ २ ॥ राखनहारु अपारु राखै अगनि माहि ॥

सीतल हरि हरि नामु सिमरत तपति जाइ ॥ ३ ॥ सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा ॥ कारज सगले सिधि भए
 भेटिआ गुरु पूरा ॥ ४ ॥ १० ॥ ११२ ॥ आसा महला ५ ॥ गोबिंदु गुणी निधानु गुरुमुखि जाणीरे ॥ होइ क्रिपालु दइआलु
 हरि रंगु माणीरे ॥ १ ॥ आवहु सँत मिलाह हरि कथा कहाणीआ ॥ अनदिनु सिमरह नामु तजि लाज लोकाणीआ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ जपि जपि जीवा नामु होवै अनदु घणा ॥ मिथिआ मोहु संसारु झूठा विणसणा ॥ २ ॥ चरण कमल सँगि नेहु किनै
 विरलै लाइआ ॥ धँनु सुहावा मुखु जिनि हरि धिआइआ ॥ ३ ॥ जनम मरण दुख काल सिमरत मिटि जावई ॥ नानक कै
 सुखु सोइ जो प्रभ भावई ॥ ४ ॥ ११ ॥ ११३ ॥ आसा महला ५ ॥ आवहु मीत इकर होइ रस कस सभि भुँचह ॥ अँमित
 नामु हरि हरि जपह मिलि पापा मुँचह ॥ १ ॥ ततु वीचारहु सँत जनहु ता ते बिघनु न लागै ॥ खीन भए सभि तसकरा
 गुरुमुखि जनु जागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु ॥ साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु वापारहु ॥
 २ ॥ जीउ पिँडु धनु अरपिआ सेई पतिवँते ॥ आपनडे प्रभ भाणिआ नित केल करँते ॥ ३ ॥ दुरमति मदु जो पीवते बिखली
 पति कमली ॥ राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥ ४ ॥ १२ ॥ ११४ ॥ आसा महला ५ ॥ उदमु कीआ कराइआ
 आरँभु रचाइआ ॥ नामु जपे जपि जीवणा गुरि मँत्रु द्विडाइआ ॥ १ ॥ पाइ परह सतिगुरु कै जिनि भरमु बिदारिआ ॥ करि
 किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई ॥ जो प्रभि दिती दाति
 सा पूरन वडिआई ॥ २ ॥ सदा सदा गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी ॥ नेमु निबाहिओ सतिगुरु प्रभि किरपा धारी ॥ ३ ॥
 नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता ॥ वणजारे सँत नानका प्रभु साहु अमिता ॥ ४ ॥ १३ ॥ ११५ ॥ आसा महला ५ ॥
 जा का ठाकुरु तुही प्रभ ता के वडभागा ॥ ओहु सुहेला सद सुखी सभु भ्रमु भउ भागा ॥ १ ॥ हम चाकर गोबिंद के ठाकुरु मेरा
 भारा ॥ करन करावन सगल बिधि सो सतिगुरु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा नाही अउरु को ता का भउ करीरे ॥

गुर सेवा महलु पाईऐ जगु दुतरु तरीऐ ॥ २ ॥ द्रिसटि तेरी सुखु पाईऐ मन महि निधाना ॥ जा कउ तुम किरपाल भए सेवक
 से परवाना ॥ ३ ॥ अँमित रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥ वजहु नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥ ४ ॥
 १४ ॥ ११६ ॥ आसा महला ५ ॥ जा प्रभ की हउ चेरुली सो सभ ते ऊचा ॥ सभु किछु ता का कांठीऐ थोरा अरु मूचा ॥
 १ ॥ जीअ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ ॥ नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेपरवाहु
 अनँद मै नाउ माणक हीरा ॥ रजी धाई सदा सुखु जा का तूँ मीरा ॥ २ ॥ सखी सहेरी सँग की सुमति द्विडावउ ॥ सेवहु
 साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ ॥ ३ ॥ सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा ॥ जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि
 बसेरा ॥ ४ ॥ १५ ॥ ११७ ॥ आसा महला ५ ॥ सँता की होइ दासरी एहु अचारा सिखुरी ॥ १ ॥ सगल गुणा गुण
 ऊतमो भरता दूरि न पिखुरी ॥ १ ॥ इहु मनु सुँदरि आपणा हरि नामि मजीठै रँगि री ॥ तिआगि सिआणप चातुरी तूँ जाणु
 गुपालहि सँगि री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥ दूजा भाउ विसारीऐ एहु तँबोला खाइ री
 ॥ २ ॥ गुर का सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाइ री ॥ आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥ ३ ॥ तिस
 ही चजु सीगारु सभु साई रूपि अपारि री ॥ साई सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥ ४ ॥ १६ ॥ ११८ ॥ आसा
 महला ५ ॥ डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा ॥ भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा ॥ १ ॥ उइ बिखादी दोखीआ
 ते गुर ते हूटे ॥ हम छूटे अब उना ते ओइ हम ते छूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा तेरा जानता तब ही ते बँधा ॥ गुरि काटी
 अगिआनता तब छुटके फँधा ॥ २ ॥ जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ ॥ गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते
 सुखीआ ॥ ३ ॥ ना को दुसमनु दोखीआ नाही को मँदा ॥ गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बँदा ॥ ४ ॥ १७ ॥ ११९
 ॥ आसा महला ५ ॥ सूख सहज आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ ॥ गरह निवारे सतिगुरू दे अपणा नाउ ॥

१ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद बलि जाउ ॥ गुरू विटहु हउ वारिआ जिंसु मिलि सचु सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगुन
 अपसगुन तिस कउ लगहि जिंसु चीति न आवै ॥ तिसु जमु नेडि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥ २ ॥ पुँन दान जप तप जेते सभ
 ऊपरि नामु ॥ हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥ ३ ॥ भै बिनसे भ्रम मोह गए को दिसै न बीआ ॥ नानक राखे पारब्रहमि
 फिरि दूखु न थीआ ॥ ४ ॥ १८ ॥ १२० ॥

आसा घरु ९ महला ९ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ ॥ एकु दातारु सगल है जाचिक दूसर कै पहि जावउ ॥ १ ॥ हउ
 मागउ आन लजावउ ॥ सगल छत्रपति एको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु
 खोजि खोजावउ ॥ ब्रहमादिक सनकादिक सनक सनंदन सनातन सनत कुमार तिन्ह कउ महलु दुलभावउ ॥ २ ॥ अगम अगम
 आगाधि बोध कीमति परै न पावउ ॥ ताकी सरणि सति पुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥ ३ ॥ भइओ क्रिपालु दइआलु प्रभु
 ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ ॥ कहु नानक जउ साधसंगु पाइओ तउ फिरि जनमि न आवउ ॥ ४ ॥ १ ॥ १२१ ॥ आसा महला
 ९ ॥ अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥ सँगि चलन कउ तोसा दीन्हा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥ १ ॥ अवर
 बिसारी बिसारी ॥ नाम दानु गुरि पूरै दीओ मै एहो आधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पँथि समहारी
 ॥ नाम द्रिडु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥ २ ॥ दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी ॥ सत
 सँगति महि बिसासु होइ हरि जीवत मरत सँगारी ॥ ३ ॥ जन नानक कउ इहु दानु देहु प्रभ पावउ संत रेन उरि धारी ॥ खवनी
 कथा नैन दरसु पेखउ मसतकु गुर चरनारी ॥ ४ ॥ २ ॥ १२२ ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु १० महला ९ ॥

जिस नो तूँ असाथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा ॥

पुत्र कलत्र ग्रिह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥ १ ॥ रे मन किआ करहि है हा हा ॥ द्रिसटि देखु जैसे हरिचँदउरी
 इकु राम भजनु लै लाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोइ चारि भोराहा ॥ भीति ऊपरे केतकु धाईरे अँति
 ओरको आहा ॥ २ ॥ जैसे अँभ कुँड करि राखिओ परत सिँधु गलि जाहा ॥ आवगि आगिआ पारब्रहम की उठि जासी
 मुहत चमाहा ॥ ३ ॥ रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा ॥ सदा कीरति करि नानक हरि की उबरे सतिगुर
 चरण ओटाहा ॥ ४ ॥ १ ॥ १२३ ॥ आसा महला ५ ॥ अपुसट बात ते भई सीधरी दूत दुसट सजनई ॥ अँधकार महि
 रतनु प्रगासिओ मलीन बुधि हछनई ॥ १ ॥ जउ किरपा गोबिंद भई ॥ सुख सँपति हरि नाम फल पाए सतिगुर मिलई ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ मोहि किरपन कउ कोइ न जानत सगल भवन प्रगटई ॥ सँगि बैठनो कही न पावत हुणि सगल चरण सेवई
 ॥ २ ॥ आढ आढ कउ फिरत दूढते मन सगल त्रिसन बुझि गई ॥ एकु बोलु भी खवतो नाही साध सँगति सीतलई ॥ ३
 ॥ एक जीह गुण कवन वखानै अगम अगम अगमई ॥ दासु दास दास को कहीअहु जन नानक हरि सरणई ॥ ४ ॥ २ ॥
 १२४ ॥ आसा महला ५ ॥ रे मूडे लाहे कउ तूँ ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइआ ॥ ससत वखरु तूँ छिँनहि नाही पापी
 बाधा रेनाइआ ॥ १ ॥ सतिगुर तेरी आसाइआ ॥ पतित पावनु तेरो नामु पारब्रहम मै एहा ओटाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 गँधण वैण सुणहि ओरझावहि नामु लैत अलकाइआ ॥ निँद चिँद कउ बहुतु ओमाहिओ बूझी उलटाइआ ॥ २ ॥ पर धन
 पर तन पर ती निँदा अखाधि खाहि हरकाइआ ॥ साच धरम सिओ रुचि नही आवै सति सुनत छोहाइआ ॥ ३ ॥ दीन
 दइआल क्रिपाल प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइआ ॥ नानक आहि सरण प्रभ आइओ राखु लाज अपनाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥
 १२५ ॥ आसा महला ५ ॥ मिथिआ सँगि सँगि लपटाए मोह माइआ करि बाधे ॥ जह जानो सो चीति न आवै अहँबुधि भए
 आंधे ॥ १ ॥ मन बैरागी किउ न अराधे ॥ काच कोठरी माहि तूँ बसता सँगि सगल बिखै की बिआधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥

मेरी मेरी करत दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै अरजाधे ॥ जैसे मीठै सादि लोभाए झूठ धौंधि दुरगाधे ॥ २ ॥ काम क्रोध अरु
 लोभ मोह इह इंद्री रसि लपटाधे ॥ दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ॥ ३ ॥ जओ भइओ क्रिपालु दीन दुख भँजनु
 तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ॥ कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि काढी सगल उपाधे ॥ ४ ॥ इओ जपिओ भाई पुरखु बिधाते
 ॥ भइओ क्रिपालु दीन दुख भँजनु जनम मरण दुख लाधे ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२६ ॥ आसा महला ५ ॥ निमख
 काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥ घरी मुहत रँग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥ १ ॥ अँधे चेति हरि हरि
 राइआ ॥ तेरा सो दिनु नेडै आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पलक द्रिसटि देखि भूलो आक नीम को तँमरु ॥ जैसा सँगु बिसीअर सिउ
 है रे तैसो ही इहु पर छिहु ॥ २ ॥ बैरी कारणि पाप करता बसतु रही अमाना ॥ छोडि जाहि तिन ही सिउ सँगी साजन सिउ बैराना
 ॥ ३ ॥ सगल संसारु इहै बिधि बिआपिओ सो उबरिओ जिंसु गुरु पूरा ॥ कहु नानक भव सागरु तरिओ भए पुनीत सरीरा ॥
 ४ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ लूकि कमानो सोई तुम्ह पेखिओ मूड मुगध मुकरानी ॥ आप कमाने कउ ले बांधे
 फिरि पाछै पछुतानी ॥ १ ॥ प्रभ मेरे सभ बिधि आगै जानी ॥ भ्रम के मूसे तँ राखत परदा पाछै जीअ की मानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जितु जितु लाए तितु तितु लागे किआ को करै परानी ॥ बखसि लैहु पारब्रहम सुआमी नानक सद कुरबानी ॥ २ ॥ ६ ॥ १२८
 ॥ आसा महला ५ ॥ अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥ जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥ १
 ॥ सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥ जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु सेवक कै हउ
 बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥ २ ॥ ७ ॥ १२९ ॥

आसा घरु ११ महला ५ ११ शितिगुर प्रसादि ॥

नटूआ भेख दिखावै बहु बिधि जैसा है ओहु तैसारे ॥ अनिक जोनि

भ्रमिओ भ्रम भीतरि सुखहि नाही परवेसा रे ॥ १ ॥ साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीतारे ॥ साध सँगि मिलि हरि
 गुण गाए इहु जनमु पदारथु जीतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ ब्रहम की कीन्ही कहहु कवन बिधि तरीऐ रे ॥ घूमन घेर
 अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥ २ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ ततु नानक इहु जाना रे ॥ सिमरत नामु
 निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे ॥ ३ ॥ १ ॥ १३० ॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो
 मागउ सो पावउ रे ॥ नाम रँगि इहु मनु त्रिपताना बहुरि न कतहूँ धावउ रे ॥ १ ॥ हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचारैणि दिनसु तिसु
 गावउ रे ॥ खिन महि थापि उथापनहारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब देखउ प्रभु अपुना सुआमी तउ
 अवरहि चीति न पावउ रे ॥ नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइआ भ्रमु भउ मेटि लिखावउ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥ आसा महला
 ५ ॥ चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे ॥ सुंदर सुघर सरूप सिआने पँचहु ही मोहि छली रे ॥ १ ॥ जिनि
 मिलि मारे पँच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे ॥ जिनि पँच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडी कोम वसि
 भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे ॥ कहु नानक तिनि जिनि निरदलिआ साध सँगति कै झली रे ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥
 आसा महला ५ ॥ नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम आन सगल रस फीकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु गुनि धुनि मुनि जन खटु
 बेते अवरु न किछु लाईकी रे ॥ १ ॥ बिखारी निरारी अपारी सहजारी साधसँगि नानक पीकी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ १३३ ॥
 आसा महला ५ ॥ हमारी पिआरी अँमित धारी गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन परसन सरसन हरसन
 रँगि रँगि करतारी रे ॥ १ ॥ खिन रम गुर गम हरि दम नह जम हरि कँठि नानक उरि हारी रे ॥ २ ॥ ५ ॥ १३४ ॥ आसा
 महला ५ ॥ नीकी साध सँगानी ॥ रहाउ ॥ पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥ १ ॥ चालत बैसत सोवत
 हरि जसु मनि तनि चरन खटानी ॥ २ ॥ हंउ हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥ ३ ॥ ६ ॥ १३५ ॥

रागु आसा महला ५ वरु १२ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

तिआगि सगल सिआनपा भजु पारब्रहम निरँकारु ॥ एक साचे नाम बाझहु सगल दीसै छारु ॥ १ ॥ सो प्रभु जाणीऐ सद
सँगि ॥ गुर प्रसादी बूझीऐ एक हरि कै रँगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि समरथ एक केरी दूजा नाही ठाउ ॥ महा भउजलु लँधीऐ
सदा हरि गुण गाउ ॥ २ ॥ जनम मरणु निवारीऐ दुखु न जम पुरि होइ ॥ नामु निधानु सोई पाए क्रिपा करे प्रभु सोइ ॥ ३ ॥
एक एक अधारु एको एक का मनि जोरु ॥ नानक जपीऐ मिलि साध सँगति हरि बिनु अवरु न होरु ॥ ४ ॥ १ ॥ १३६ ॥
आसा महला ५ ॥ जीउ मनु तनु प्रान प्रभ के दीए सभि रस भोग ॥ दीन बँधप जीअ दाता सरणि शरण जोगु ॥ १ ॥ मेरे
मन धिआइ हरि हरि नाउ ॥ हकति पलति सहाइ सँगे एक सिउ लिव लाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन धिआवहि तरण
कउ सँसारु ॥ करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपरि नामु अचारु ॥ २ ॥ कामु क्रोधु अहँकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव ॥
नामु द्रिडु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ॥ ३ ॥ चरण सरण दइआल तेरी तूँ निमाणे माणु ॥ जीअ प्राण अधारु तेरा
नानक का प्रभु ताणु ॥ ४ ॥ २ ॥ १३७ ॥ आसा महला ५ ॥ डोलि डोलि महा दुखु पाइआ बिना साधू सँग ॥ खाटि लाभु
गोबिंद हरि रसु पारब्रहम इक रँग ॥ १ ॥ हरि को नामु जपीऐ नीति ॥ सासि सासि धिआइ सो प्रभु तिआगि अवर परीति ॥
१ ॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथ सो प्रभु जीअ दाता आपि ॥ तिआगि सगल सिआणपा आठ पहर प्रभु जापि ॥ २ ॥
मीतु सरवा सहाइ सँगी ऊच अगम अपारु ॥ चरण कमल बसाइ हिरदै जीअ को आधारु ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ पारब्रहम
गुण तेरा जसु गाउ ॥ सरब सूख वडी वडिआई जपि जीवै नानकु नाउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३८ ॥ आसा महला ५ ॥ उदमु
करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू सँगि ॥ हरि हरि नामु चरावहु रँगनि आपे ही प्रभ रँगि ॥ १ ॥ मन महि राम नामा जापि ॥
करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइ सहाई आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सुणिं सुणिं नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ ॥ दइआ करहु किरम अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ ॥ २ ॥ तनु धनु तेरा तूँ
 प्रभु मेरा हमरै वसि किछु नाहि ॥ जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥ ३ ॥ जनम जनम के किलविख काटै
 मजनु हरि जन धूरि ॥ भाइ भगति भरम भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३९ ॥ आसा महला ५ ॥ अगम
 अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मसतकि भागु ॥ आपि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी सतिगुरि बखसिआ हरि नामु ॥ १ ॥
 कलिजुगु उधारिआ गुरदेव ॥ मल मूत मूड जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू आपि करता सभ खिसटि
 धरता सभ महि रहिआ समाइ ॥ धरम राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइ ॥ २ ॥ सतजुगु त्रेता दुआपरु भणीऐ कलिजुगु
 ऊतमो जुगा माहि ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ॥ ३ ॥ हरि जीउ सोई करहि जेभगत तेरे
 जाचहि एहु तेरा बिरदु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ सँता देहि हरि दरसु ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४० ॥

रागु आसा महला ५ वरु १३ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर बचन तुम्हारे ॥ निरगुण निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत सँगारे ॥ १ ॥ जनम
 भवँते नरकि पड़ँते तिन्ह के कुल उधारे ॥ २ ॥ कोई न जानै कोई न मानै से परगटु हरि दुआरे ॥ ३ ॥ कवन उपमा देउ कवन
 वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥ ४ ॥ १ ॥ १४१ ॥ आसा महला ५ ॥ बावर सोइ रहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहु कुटँब बिखै रस
 माते मिथिआ गहन गहे ॥ १ ॥ मिथन मनोरथ सुपन आनँद उलास मनिमुखि सति कहे ॥ २ ॥ अँमितु नामु पदारथु सँगे
 तिलु मरमु न लहे ॥ ३ ॥ करि कपरा राखे सतसँगे नानक सरणि आहे ॥ ४ ॥ २ ॥ १४२ ॥ आसा महला ५ तिपदे ॥
 ओहा प्रेम पीरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥ १ ॥ राज न भाग न हुकम न सादन
 ॥ किछु किछु न चाही ॥ २ ॥

चरनन सरनन सँतन बँदन ॥ सुखो सुखु पाही ॥ नानक तपति हरी ॥ मिले प्रेम पिरी ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४३ ॥ आसा महला
 ५ ॥ गुरहि दिखाइओ लोइना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि तूँही तूँही मोहिना ॥ १ ॥ कारन करना
 धारन धरना एकै एकै सोहिना ॥ २ ॥ सँतन परसन बलिहारी दरसन नानक सुखि सुखि सोइना ॥ ३ ॥ ४ ॥ १४४ ॥
 आसा महला ५ ॥ हरि हरि नामु अमोला ॥ ओहु सहजि सुहेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँगि सहाई छोडि न जाई ओहु अगह
 अतोला ॥ १ ॥ प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का ओल्हा ॥ २ ॥ अलखु लखाइआ गुर ते पाइआ नानक इहु हरि का
 चोल्हा ॥ ३ ॥ ५ ॥ १४५ ॥ आसा महला ५ ॥ आपुनी भगति निबाहि ॥ ठाकुर आइओ आहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु
 पदारथु होइ सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥ १ ॥ एह मुकता एह जुगता राखहु सँत सँगाहि ॥ २ ॥ नामु धिआवउ सहजि
 समावउ नानक हरि गुन गाहि ॥ ३ ॥ ६ ॥ १४६ ॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर चरण सुहावे ॥ हरि सँतन पावे ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ आपु गवाइआ सेव कमाइआ गुन रसि रसि गावे ॥ १ ॥ एकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥ २ ॥ दइआ
 तुहारी किआ जँत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥ ३ ॥ ७ ॥ १४७ ॥ आसा महला ५ ॥ एकु सिमरि मन माही ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥ १ ॥ प्रभ सरनी आईऐ सरब फल पाईऐ सगले दुख जाही ॥ २ ॥
 जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि घटि आही ॥ ३ ॥ ८ ॥ १४८ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि बिसरत सो मूआ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ नामु धिआवै सरब फल पावै सो जन सुखीआ हूआ ॥ १ ॥ राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रमु
 सूआ ॥ २ ॥ कहु नानक जिंसु सतिगुरु भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥ ३ ॥ ९ ॥ १४९ ॥

आसा महला ५ घरु १४ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

ओहु नेहु नवेला ॥ अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो प्रभ

भावै जनमि न आवै ॥ हरिप्रेम भगति हरिप्रीति रचै ॥ १ ॥ प्रभसँगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥ नानक नामु मिलै अपनी दइआ
करहु ॥ २ ॥ १ ॥ १५० ॥ आसा महला ५ ॥ मिलु राम पिआरे तुम बिनु धीरजु को न करै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिँमिति सासत्र बहु
करम कमाए प्रभ तुमरे दरस बिनु सुखु नाही ॥ १ ॥ वरत नेम सँजम करि थाके नानक साध सरनि प्रभसँगि वसै ॥ २ ॥ २ ॥
१५१ ॥

आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल १८ सितिगुर प्रसादि ॥

बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै ॥ पकर केस जमि उठारिओ तद ही घरि जावै ॥ १ ॥ लोभ बिखिआ बिखै लागे
हिरि वित चित दुखाही ॥ खिन भँगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही
डोरा ॥ निपटि बाजी हरि मूका पछुताइओ मनि भोरा ॥ २ ॥ डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥ जेह
कारजि रहै ओल्हा सोइ कामु न करिआ ॥ ३ ॥ ऐसो जगु मोहि गुरि दिखाइओ तउ एक कीरति गाइआ ॥ मानु तानु तजि
सिआनप सरणि नानकु आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १५२ ॥ आसा महला ५ ॥ बापारि गोविंद नाए ॥ साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन
गाए पँच नाद तूर बजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रातिआ गोविंद सिउ ॥ संत सेवि प्रीति नाथ रँगु
लालन लाए ॥ १ ॥ गुर गिआनु मनि दिडाए रहसाए नहीं आए सहजाए मनि निधानु पाए ॥ सभ तजी मनै की काम करा ॥ चिरु
चिरु चिरु भइआ मनि बहुतु पिआस लागी ॥ हरि दरसनो दिखावहु मोहि तुम बतावहु ॥ नानक दीन सरणि आए गलि लाए
॥ २ ॥ २ ॥ १५३ ॥ आसा महला ५ ॥ कोऊ बिखम गार तोरै ॥ आस पिआस धोह मोह भरम ही ते होरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
काम क्रोध लोभ मान इह बिआधि छोरै ॥ १ ॥ संतसँगि नाम रँगि गुन गोविंद गावउ ॥ अनदिनो प्रभ धिआवउ ॥ भ्रम भीति
जीति मिटावउ ॥ निधि नामु नानक मोरै ॥ २ ॥ ३ ॥ १५४ ॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु तिआगु ॥ मनि सिमरि

गोबिंद नाम ॥ हरि भजन सफल काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि मान मोह विकार मिथिआ जपि राम राम राम ॥ मन सँतना
 कै चरनि लागु ॥ १ ॥ प्रभ गोपाल दीन दइआल पतित पावन पारब्रहम हरि चरण सिमरि जागु ॥ करि भगति नानक पूरन
 भागु ॥ २ ॥ ४ ॥ १५५ ॥ आसा महला ५ ॥ हरख सोग बैराग अनंदी खेलु री दिखाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिनहूँ भै
 निरभै खिनहूँ खिनहूँ उठि धाइओ ॥ खिनहूँ रस भोगन खिनहूँ खिनहूँ तजि जाइओ ॥ १ ॥ खिनहूँ जोग ताप बहु पूजा
 खिनहूँ भरमाइओ ॥ खिनहूँ किरपा साधू संग नानक हरि रँगु लाइओ ॥ २ ॥ ५ ॥ १५६ ॥

रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी १८ सितिगुर प्रसादि ॥

गोबिंद गोबिंद करि हां ॥ हरि हरि मनि पिआरि हां ॥ गुर कहिआ सि चिति धरि हां ॥ अन सिओ तोरि फेरि हां ॥ ऐसे
 लालनु पाइओ री सखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँकज मोह सरि हां ॥ पग नही चलै हरि हां ॥ गहडिओ मूड नरि हां ॥ अनिन
 ओपाव करि हां ॥ तओ निकसै सरनि पै री सखी ॥ १ ॥ थिर थिर चित थिर हां ॥ बनु ग्रिहु समसरि हां ॥ अंतरि एक पिर
 हां ॥ बाहरि अनेक धरि हां ॥ राजन जोगु करि हां ॥ कहु नानक लोग अलोगी री सखी ॥ २ ॥ १ ॥ १५७ ॥ आसावरी
 महला ५ ॥ मनसा एक मानि हां ॥ गुर सिओ नेत थिआनि हां ॥ द्रिडु सँत मँत गिआनि हां ॥ सेवा गुर चरनि हां ॥ तउ
 मिलीऐ गुर क्रिपानि मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटे अन भरानि हां ॥ रविओ सरब थानि हां ॥ लहिओ जम भइआनि हां ॥
 पाइओ पेड थानि हां ॥ तउ चूकी सगल कानि ॥ १ ॥ लहनो जिसु मथानि हां ॥ भै पावक पारि परानि हां ॥ निज घरि
 तिसहि थानि हां ॥ हरि रस रसहि मानि हां ॥ लाथी तिस भुखानि हां ॥ नानक सहजि समाइओ रे मना ॥ २ ॥ २ ॥
 १५८ ॥ आसावरी महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुनी हां ॥ जपीऐ सहज धुनी हां ॥ साधू रसन भनी हां ॥ छूटन बिधि सुनी
 हां ॥ पाईऐ वड पुनी मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजहि जन मुनी हां ॥ सब का प्रभ धनी हां ॥ दुलभ कलि दुनी

हां ॥ दूख बिनसनी हां ॥ प्रभ पूरन आसनी मेरे मना ॥ १ ॥ मन सो सेवीऐ हां ॥ अलख अभेवीऐ हां ॥ तां सिओ प्रीति करि
 हां ॥ बिनसि न जाइ मरि हां ॥ गुर ते जानिआ हां ॥ नानक मनु मानिआ मेरे मना ॥ २ ॥ ३ ॥ १५९ ॥ आसावरी महला ५
 ॥ एका ओट गहु हां ॥ गुर का सबदु कहु हां ॥ आगिआ सति सहु हां ॥ मनहि निधानु लहु हां ॥ सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ जीवत जो मरै हां ॥ दुतरु सो तरै हां ॥ सभ की रेनु होइ हां ॥ निरभउ कहओ सोइ हां ॥ मिटे अँदेसिआ हां ॥
 सँत ओपदेसिआ मेरे मना ॥ १ ॥ जिसु जन नाम सुखु हां ॥ तिसु निकटि न कदे दुखु हां ॥ जो हरि हरि जसु सुने हां ॥ सभु
 को तिसु मँने हां ॥ सफलु सु आइआ हां ॥ नानक प्रभ भाइआ मेरे मना ॥ २ ॥ ४ ॥ १६० ॥ आसावरी महला ५ ॥ मिलि
 हरि जसु गाईऐ हां ॥ परम पदु पाईऐ हां ॥ उआ रस जो बिधे हां ॥ ता कउ सगल सिधे हां ॥ अनदिनु जागिआ हां ॥ नानक
 बडभागिआ मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँत पग धोईऐ हां ॥ दुरमति खोईऐ हां ॥ दासह रेनु होइ हां ॥ बिआपै दुखु न कोइ हां
 ॥ भगतां सरनि परु हां ॥ जनमि न कदे मरु हां ॥ असथिरु से भए हां ॥ हरि हरि जिन्ह जपि लए मेरे मना ॥ १ ॥ साजनु
 मीतु तूँ हां ॥ नामु द्विडाइ मूँ हां ॥ तिसु बिनु नाहि कोइ हां ॥ मनहि अराधि सोइ हां ॥ निमख न वीसरै हां ॥ तिसु बिनु किओ
 सरै हां ॥ गुर कओ कुरबानु जाउ हां ॥ नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥ २ ॥ ५ ॥ १६१ ॥ आसावरी महला ५ ॥ कारन करन तू
 हां ॥ अवरु ना सुझै मूँ हां ॥ करहि सु होईऐ हां ॥ सहजि सुखि सोईऐ हां ॥ धीरज मनि भए हां ॥ प्रभ कै दरि पए मेरे मना ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगमे हां ॥ पूरन सँजमे हां ॥ जब ते छुटे आप हां ॥ तब ते मिटे ताप हां ॥ किरपा धारीआ हां ॥ पति
 रखु बनवारीआ मेरे मना ॥ १ ॥ इहु सुखु जानीऐ हां ॥ पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥ १ ॥ इहु सुख जानीऐ हां ॥ हरि करे
 सु मानीऐ हां ॥ मँदा नाहि कोइ हां ॥ सँत की रेन होइ हां ॥ आपे जिसु रखै हां ॥ हरि अँमितु सो चखै मेरे मना ॥ २ ॥ जिस
 का नाहि कोइ हां ॥ तिस का प्रभू सोइ हां ॥ अँतरगति बुझै हां ॥ सभु किछु तिसु सुझै हां ॥ पतित ओधारि लेहु हां ॥ नानक
 अरदासि एहु मेरे मना ॥ ३ ॥ ६ ॥ १६२ ॥ आसावरी महला ५

इकतुका ॥ ओइ परदेसीआ हां ॥ सुनत सँदेसिआ हां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा सिओ रचि रहे हां ॥ सभ कउ तजि गए हां ॥
सुपना जिओ भए हां ॥ हरि नामु जिन्हि लए ॥ १ ॥ हरि तजि अन लगे हां ॥ जनमहि मरि भगे हां ॥ हरि हरि जनि लहे हां
॥ जीवत से रहे हां ॥ जिसहि क्रिपालु होइ हां ॥ नानक भगत सोइ ॥ २ ॥ ७ ॥ १६३ ॥ २३२ ॥

१३ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ९ ॥

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥ लोभिं ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख कै हेति
बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥ दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥ १ ॥ मानस जनम
अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥ नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥ २ ॥ १ ॥ २३३ ॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

उतरि अवघटि सरवरि न्हावे ॥ बकै न बोलै हरि गुण गावै ॥ जल आकासी सुँनि समावै ॥ रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥ १
॥ ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे ॥ भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु ब्रतु नेमु न कालु संतावै ॥ सतिगुर
सबदि करोधु जलावै ॥ गगनि निवासि समाधि लगावै ॥ पारसु परसि परम पदु पावै ॥ २ ॥ सचु मन कारणि ततु बिलोवै
॥ सुभर सरवरि मैलु न धोवै ॥ जै सिउ राता तैसो होवै ॥ आपे करता करे सु होवै ॥ ३ ॥ गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै ॥
सेवा सुरति बिभूत चड़ावै ॥ दरसनु आपि सहज घरि आवै ॥ निरमल बाणी नादु वजावै ॥ ४ ॥ अंतरि गिआनु महा रसु
सारा ॥ तीरथ मजनु गुर वीचारा ॥ अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥ जोती जोति मिलावणहारा ॥ ५ ॥ रसि रसिआ मति एकै
भाइ ॥ तखत निवासी पँच समाइ ॥ कार कमाई खसम रजाइ ॥ अविगत नाथु न लखिआ जाइ ॥ ६ ॥ जल महि उपजै
जल ते दूरि ॥ जल महि जोति रहिआ भरपूरि ॥ किसु नेडै किसु आखा दूरि ॥ निधि गुण गावा देखि हदूरि ॥ ७ ॥ अंतरि

बाहरि अवरु न कोइ ॥ जो तिसु भावै सो फुनि होइ ॥ सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु ॥ निरमल नामु मेरा अधारु ॥ ८
 ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ सभि जप सभितप सभ चतुराई ॥ ऊझड़ि भरमै राहि न पाई ॥ बिनु बूझे को थाइ न पाई ॥ नाम
 बिहूणै माथे छाई ॥ १ ॥ साच धणी जगु आइ बिनासा ॥ छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगु मोहि बाधा
 बहुती आसा ॥ गुरमती इकि भए उदासा ॥ अंतरि नामु कमलु परगासा ॥ तिन्ह कउ नाही जम की त्रासा ॥ २ ॥ जगु त्रिअ
 जितु कामणि हितकारी ॥ पुत्र कलत्र लागि मानु विसारी ॥ बिरथा जनमु गवाइआ बाजी हारी ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी
 ॥ ३ ॥ बाहरहु हउमै कहै कहाए ॥ अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाए ॥ माइआ मोहु गुर सबदि जलाए ॥ निरमल नामु सद
 हिरदै धिआए ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ सिख संगति करमि मिलाए ॥ गुर बिनु भूलो आवै जाए ॥ नदरि करे
 संजोगि मिलाए ॥ ५ ॥ रूडो कहउ न कहिआ जाई ॥ अकथ कथउ नह कीमति पाई ॥ सभ दुख तेरे सूख रजाई ॥ सभि
 दुख मेटे साचै नाई ॥ ६ ॥ कर बिनु वाजा पग बिनु ताला ॥ जे सबदु बूझै ता सचु निहाला ॥ अंतरि साचु सभे सुख नाला
 ॥ नदरि करे राखै रखवाला ॥ ७ ॥ त्रिभवण सूझै आपु गवावै ॥ बाणी बूझै सचि समावै ॥ सबदु वीचारे एक लिव तारा ॥
 नानक धँनु सवारणहारा ॥ ८ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ लेख असंख लिखि लिखि मानु ॥ मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु
 ॥ कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥ लेख असंख अलेखु अपारु ॥ १ ॥ ऐसा साचा तूँ एको जाणु ॥ जँमणु मरणा हुकमु
 पछाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहि जगु बाधा जमकालि ॥ बांधा छूटै नामु सम्हालि ॥ गुरु सुखदाता अवरु न भालि ॥
 हलति पलति निबही तुधु नालि ॥ २ ॥ सबदि मरै तां एक लिव लाए ॥ अचरु चरै तां भरमु चुकाए ॥ जीवन मुकतु मनि
 नामु वसाए ॥ गुरमुखि होइ त सचि समाए ॥ ३ ॥ जिनि धर साजी गगनु अकासु ॥ जिनि सभ थापी थापि उथापि ॥ सरब
 निरंतरि आपे आपि ॥ किसै न पूछे बखसे आपि ॥ ४ ॥ तू पुरु सागरु माणक हीरु ॥ तू निरमलु सचु गुणी गहीरु ॥

सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥ एको साहिबु एकु वजीरु ॥ ५ ॥ जगु बँदी मुकते हउ मारी ॥ जगि गिआनी विरला आचारी ॥
 जगि पँडितु विरला वीचारी ॥ बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहँकारी ॥ ६ ॥ जगु दुखीआ सुखीआ जनु कोइ ॥ जगु रोगी
 भोगी गुण रोइ ॥ जगु उपजै बिनसै पति खोइ ॥ गुरुमुखि होवै बूझै सोइ ॥ ७ ॥ महघो मोलिं भारि अफारु ॥ अटल
 अछलु गुरुमती धारु ॥ भाइ मिलै भावै भइकारु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ ८ ॥ ३ ॥ आसा महला ५ ॥ एकु मरै पँचे
 मिलि रोवहि ॥ हउमै जाइ सबदि मलु धोवहि ॥ समझिं सूझिं सहज घरि होवहि ॥ बिनु बूझे सगली पति खोवहि ॥ १ ॥
 कउणु मरै कउणु रोवै ओही ॥ करण कारण सभसै सिरिं तोही ॥ रहाउ ॥ मूए कउ रोवै दुखु कोइ ॥ सो रिवै जिसु बेदन होइ
 ॥ जिसु बीती जाणै प्रभ सोइ ॥ आपे करता करे सु होइ ॥ २ ॥ जीवत मरणा तारे तरणा ॥ जै जगदीस परस गति सरणा
 ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ॥ ३ ॥ निरभउ आपि निरँतरि जोति ॥ बिनु नावै सूतकु
 जगि छोति ॥ दुरमति बिनसै किआ कहि रोति ॥ जनमि मूए बिनु भगति सरोति ॥ ४ ॥ मूए कउ सचु रोवहि मीत ॥ त्रै
 गुण रोवहि नीता नीत ॥ दुखु सुखु परहरि सहजिं सुचीत ॥ तनु मनु सउपउ क्रिसन परीति ॥ ५ ॥ भीतरि एकु अनेक
 असँख ॥ करम धरम बहु सँख असँख ॥ बिनु भै भगती जनमु बिरँथ ॥ हरि गुण गावहि मिलि परमारँथ ॥ ६ ॥ आपि मरै
 मारे भी आपि ॥ आपि उपाए थापि उथापि ॥ खिसटि उपाई जोती तू जाति ॥ सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ॥ ७ ॥
 सूतकु अगनि भखै जगु खाइ ॥ सूतकु जलिं थलिं सभ ही थाइ ॥ नानक सूतकि जनमि मरीजै ॥ गुर परसादी हरि रसु पीजै
 ॥ ८ ॥ ४ ॥ रागु आसा महला १ ॥ आपु वीचारै सु परखे हीरा ॥ एक द्रिसटि तारे गुर पूरा ॥ गुरु मानै मन ते मनु धीरा
 ॥ १ ॥ ऐसा साहु सराफी करै ॥ साची नदरि एक लिव तरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूँजी नामु निरँजन सारु ॥ निरमलु साचि
 रता पैकारु ॥ सिफति सहज घरि गुरु करतारु ॥ २ ॥ आसा मनसा सबदि जलाए ॥ राम नराइणु कहै कहाए ॥ गुर ते

वाट महलु घरु पाए ॥ ३ ॥ कँचन काइआ जोति अनूपु ॥ त्रिभवण देवा सगल सरूपु ॥ मै सो धनु पलै साचु अखूटु ॥ ४
 ॥ पँच तीनि नव चारि समावै ॥ धरणि गगनु कल धारि रहावै ॥ बाहरि जातउ उलटि परावै ॥ ५ ॥ मूरखु होइ न आखी
 सूझै ॥ जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ॥ बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥ ६ ॥ ऊतम सँगति ऊतमु होवै ॥ गुण कउ धावै
 अवगण धोवै ॥ बिनु गुर सेवे सहजु न होवै ॥ ७ ॥ हीरा नामु जवेहर लालु ॥ मनु मोती है तिस का मालु ॥ नानक परखै
 नदरि निहालु ॥ ८ ॥ ५ ॥ आसा महला १ ॥ गुरमुखि गिआनु धिआनु मनि मानु ॥ गुरमुखि महली महलु पछानु ॥
 गुरमुखि सुरति सबदु नीसानु ॥ १ ॥ ऐसे प्रेम भगति वीचारी ॥ गुरमुखि साचा नामु मुरारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहिनिशि
 निरमलु थानि सुथानु ॥ तीन भवन निहकेवल गिआनु ॥ साचे गुर ते हुकमु पछानु ॥ २ ॥ साचा हरखु नाही तिसु सोगु ॥
 अँमितु गिआनु महा रसु भोगु ॥ पँच समाई सुखी सभु लोगु ॥ ३ ॥ सगली जोति तेरा सभु कोई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े सोई
 ॥ आपे करता करे सु होई ॥ ४ ॥ ढाहि उसारे हुकमि समावै ॥ हुकमो वरतै जो तिसु भावै ॥ गुर बिनु पूरा कोइ न पावै ॥ ५
 ॥ बालक बिरधि न सुरति परानि ॥ भरि जोबनि बूडै अभिमानि ॥ बिनु नावै किआ लहसि निदानि ॥ ६ ॥ जिस का अनु
 धनु सहजि न जाना ॥ भरमि भुलाना फिरि पछुताना ॥ गलि फाही बउरा बउराना ॥ ७ ॥ बूडत जगु देखिआ तउ डरि
 भागे ॥ सतिगुरि राखे से वडभागे ॥ नानक गुर की चरणी लागे ॥ ८ ॥ ६ ॥ आसा महला १ ॥ गावहि गीते चीति अनीते
 ॥ राग सुणाइ कहावहि बीते ॥ बिनु नावै मनि झूठु अनीते ॥ १ ॥ कहा चलहु मन रहहु घरे ॥ गुरमुखि राम नामि त्रिपतासे
 खोजत पावहु सहजि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा ॥ लबु लोभु अहँकारु सु पीरा ॥ राम नाम बिनु किउ
 मनु धीरा ॥ २ ॥ अँतरि नावणु साचु पछाणै ॥ अँतर की गति गुरमुखि जाणै ॥ साच सबद बिनु महलु न पछाणै ॥ ३ ॥
 निरँकार महि आकारु समावै ॥ अकल कला सचु साचि टिकावै ॥ सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥ ४ ॥ जहां नामु मिलै

तह जाउ ॥ गुर परसादी करम कमाउ ॥ नामे शता हरि गुण गाउ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते आपु पछाता ॥ अँप्रित नामु
 वसिआ सुखदाता ॥ अनदिनु बाणी नामे शता ॥ ६ ॥ मेरा प्रभु लाए ता को लागै ॥ हउमै मारे सबदे जागै ॥ ऐथै ओथै
 सदा सुखु आगै ॥ ७ ॥ मनु चँचलु बिधि नाही जाणै ॥ मनमुखि मैला सबदु न पछाणै ॥ गुरमुखि निरमलु नामु वखाणै
 ॥ ८ ॥ हरि जीउ आगै करी अरदासि ॥ साधू जन संगति होइ निवासु ॥ किलविख दुख काटे हरि नामु प्रगासु ॥ ९ ॥
 करि बीचारु आचारु पराता ॥ सतिगुर बचनी एको जाता ॥ नानक राम नामि मनु शता ॥ १० ॥ ७ ॥ आसा महला १
 ॥ मनु मैगलु साकतु देवाना ॥ बन खँडि माइआ मोहि हैशाना ॥ इत उत जाहि काल के चापे ॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु
 आपे ॥ १ ॥ बिनु गुर सबदै मनु नही ठउरा ॥ सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ इहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी ॥ बिनु समझे जम का दुखु सहसी ॥ आपे बखसे सतिगुरु मेलै ॥ कालु कँटकु मारे
 सचु पेलै ॥ २ ॥ इहु मनु करमा इहु मनु धरमा ॥ इहु मनु पँच ततु ते जनमा ॥ साकतु लोभी इहु मनु मूडा ॥ गुरमुखि
 नामु जपै मनु रूडा ॥ ३ ॥ गुरमुखि मनु असथाने सोई ॥ गुरमुखि त्रिभवणि सोझी होई ॥ इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै
 ॥ गुरमुखि चीन्है हरि प्रभु आपै ॥ ४ ॥ मनु बैरागी हउमै तिआगी ॥ घटि घटि मनसा दुबिधा लागी ॥ राम रसाइणु
 गुरमुखि चारवै ॥ दरि घरि महली हरि पति राखै ॥ ५ ॥ इहु मनु राजा सूर संग्रामि ॥ इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि ॥
 मारे पँच अपुनै वसि कीए ॥ हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए ॥ ६ ॥ गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे ॥ गुरमुखि इहु मनु
 भगती जागे ॥ अनहद सुणि मानिआ सबदु वीचारी ॥ आतमु चीन्हि भए निरँकारी ॥ ७ ॥ इहु मनु निरमलु दरि घरि सोई
 ॥ गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई ॥ अहिनिंसि हरि जसु गुर परसादि ॥ घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि ॥ ८ ॥ राम
 रसाइणि इहु मनु माता ॥ सरब रसाइणु गुरमुखि जाता ॥ भगति हेतु गुर चरण निवासा ॥ नानक हरि जन के दासनि

दासा ॥ ९ ॥ ८ ॥ आसा महला १ ॥ तनु बिनसै धनु का को कहीरे ॥ बिनु गुरु राम नामु कत लहीरे ॥ राम नाम धनु
 सँगि सखाई ॥ अहिनिशि निरमलु हरि लिव लाई ॥ १ ॥ राम नाम बिनु कवनु हमारा ॥ सुख दुख सम करि नामु न
 छोडउ आपे बखसि मिलावणहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक कामनी हेतु गवारा ॥ दुबिधा लागे नामु विसारा ॥ जिस्सु तूँ
 बखसहि नामु जपाइ ॥ दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥ २ ॥ हरि गुरु दाता राम गुपाला ॥ जिउ भावै तिउ राखु दइआला
 ॥ गुरुमुखि रामु मेरै मनि भाइआ ॥ रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥ ३ ॥ अवरु न अउखधु तँत न मँता ॥ हरि हरि
 सिमरणु किलविख हँता ॥ तूँ आपि भुलावहि नामु विसारि ॥ तूँ आपे राखहि किरपा धारि ॥ ४ ॥ रोगु भरमु भेदु मनि
 दूजा ॥ गुरु बिनु भरमि जपहि जपु दूजा ॥ आदि पुरख गुरु दरस न देखहि ॥ विणु गुरु सबदै जनमु कि लेखहि ॥ ५ ॥
 देखि अचरजु रहे बिसमादि ॥ घटि घटि सुर नर सहज समाधि ॥ भरिपुरि धारि रहे मन माही ॥ तुम समसरि अवरु को
 नाही ॥ ६ ॥ जा की भगति हेतु मुखि नामु ॥ संत भगत की संगति रामु ॥ बँधन तोरे सहजि धिआनु ॥ छूटै गुरुमुखि
 हरि गुरु गिआनु ॥ ७ ॥ ना जमदूत दूखु तिसु लागै ॥ जो जनु राम नामि लिव जागै ॥ भगति वछलु भगता हरि सँगि
 ॥ नानक मुकति भए हरि रँगि ॥ ८ ॥ ९ ॥ आसा महला १ इकतुकी ॥ गुरु सेवे सो ठाकुर जानै ॥ दूखु मिटै सचु सबदि
 पछानै ॥ १ ॥ रामु जपहु मेरी सखी सखैनी ॥ सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बँधन मात पिता सँसारि
 ॥ बँधन सुत कँनिआ अरु नारि ॥ २ ॥ बँधन करम धरम हउ कीआ ॥ बँधन पुतु कलतु मनि बीआ ॥ ३ ॥ बँधन
 किरखी करहि किरसान ॥ हउमै डँनु सहै राजा मँगै दान ॥ ४ ॥ बँधन सउदा अणवीचारी ॥ तिपति नाही माइआ मोह
 पसारी ॥ ५ ॥ बँधन साह सँचहि धनु जाइ ॥ बिनु हरि भगति न पवई थाइ ॥ ६ ॥ बँधन बेदु बादु अहँकार ॥ बँधनि
 बिनसै मोह विकार ॥ ७ ॥ नानक राम नाम सरणाई ॥ सतिगुरि राखे बँधन पाई ॥ ८ ॥ १० ॥

रागु आसा महला १ ॥ असटपदीआ घरु ३ १३ सितिगुर प्रसादि ॥

जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥ से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूडि ॥ महला अंदरि होदीआ
हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥ १ ॥ आदेसु बाबा आदेसु ॥ आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥ १
॥ रहाउ ॥ जदहु सीआ वीआहीआ लाडे सोहनि पासि ॥ हीडोली चडि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥ उपरहु पाणी
वारीरे झले झिमकनि पासि ॥ २ ॥ इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खडीआ ॥ गरी छुआरे खांदीआ माणन्हि
सेजडीआ ॥ तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥ ३ ॥ धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥
दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥ जे तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥ ४ ॥ अगोदे जे चेतीरे तां काइतु
मिलै सजाइ ॥ साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥ बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥ ५ ॥ इकना वखत
खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥ चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥ रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न
मिलै खुदाइ ॥ ६ ॥ इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ॥ इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख
॥ जो तिसु भावै सो थीरे नानक किआ मानुख ॥ ७ ॥ ११ ॥ आसा महला १ ॥ कहा सु खेल तबेला घोड़े भेरी सहनाई
॥ कहा सु तेगबंद गाडेरडि कहा सु लाल कवाई ॥ कहा सु आरसीआ मुह बँके ऐथै दिसहि नाही ॥ १ ॥ इहु जगु तेरा तू
गोसाई ॥ एक घड़ी महि थापि उथापे जरु वँडि देवै भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहां सु घर दर मँडप महला कहा सु बँक सराई
॥ कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई ॥ कहा सु पान तँबोली हरमा होईआ छाई माई ॥ २ ॥ इसु जर
कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥ पाप बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥ जिस नो आपि खुआए
करता खुसिलए चंगिआई ॥ ३ ॥ कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ ॥ थान मुकाम जले

बिज मँदर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ ॥ कोई मुगलु न होआ अँधा किनै न परचा लाइआ ॥ ४ ॥ मुगल पठाणा भई लड़ाई
रण महि तेग वगाई ॥ ओन्ही तुपक ताणिं चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई ॥ जिन्ह की चीरी दरगह पाटी तिन्हा मरणा भाई
॥ ५ ॥ इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी ॥ इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी ॥ जिन्ह के
बँके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी ॥ ६ ॥ आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणाईऐ ॥ दुखु सुखु तैरै भाणै
होवै किस थै जाइ रूआईऐ ॥ हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥ ७ ॥ १२ ॥

वसतिगुर प्रसादि ॥ आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥

जैसे गोइलिं गोइली तैसे संसारा ॥ कूडु कमावहि आदमी बांधहि घर बारा ॥ १ ॥ जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा
॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीत नीत घर बांधीअहि जे रहणा होई ॥ पिँडु पवै जीउ चलसी जे जाणै कोई ॥ २ ॥ ओही ओही किआ
करहु है होसी सोई ॥ तुम होवहुगे ओस नो तुम्ह कउ कउणु रोई ॥ ३ ॥ धँधा पिटिहु भाईहो तुम्ह कूडु कमावहु ॥ ओहु न
सुणई कत ही तुम्ह लोक सुणावहु ॥ ४ ॥ जिस ते सुता नानका जागाए सोई ॥ जे घरु बूझै आपणा तां नीद न होई ॥ ५
॥ जे चलदा लै चलिआ किछु सँपै नाले ता धनु सँचहु देखिं कै बूझहु बीचारे ॥ ६ ॥ वणजु करहु मखसूदु लैहु मत
पछोतावहु ॥ अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥ ७ ॥ धरमु भूमि सतु बीजु करिं ऐसी किरस कमावहु ॥ तां
वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥ ८ ॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा ॥ नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा
॥ ९ ॥ जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई ॥ जो तिसु भावै नानका साई वडिआई ॥ १० ॥ १३ ॥ आसा महला १
॥ चारे कुँडा ढूढीआ को नीम्ही मैडा ॥ जे तुधु भावै साहिबा तू मै हउ तैडा ॥ १ ॥ दरु बीभा मै नीम्ही को कै करी सलामु
॥ हिको मैडा तू धणी साचा मुखि नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधा सेवनि सिध पीर मागहि रिधि सिधि ॥ मै इकु नामु न वीसरै

साचे गुर बुधि ॥ २ ॥ जोगी भोगी कापडी किआ भवहि दिसंतर ॥ गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥ ३ ॥
 पंडित पाथे जोइसी नित पढिहि पुराणा ॥ अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रह्मु लुकाणा ॥ ४ ॥ इकि तपसी बन महि तपु
 करहि नित तीरथ वासा ॥ आपु न चीनहि तामसी काहे उदासा ॥ ५ ॥ इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥
 बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥ ६ ॥ इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥ नामु दानु इसनानु द्रिडु
 हरि भगति सु जागे ॥ ७ ॥ गुर ते दरु घरु जाणीरे सो जाए सिजाणै ॥ नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥ ८ ॥ १४
 ॥ आसा महला १ ॥ मनसा मनहि समाइले भउजलु सचि तरणा ॥ आदि जुगादि दइआलु तूठाकुर तेरी सरणा ॥ १ ॥
 तू दातौ हम जाचिका हरि दरसनु दीजै ॥ गुरमुखि नामु धिआईरे मन मंदरु भीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूडा लालचु छोडीरे
 तउ साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि समाईरे परमारथु जाणै ॥ २ ॥ इहु मनु राजा लोभीआ लुभतउ लोभाई ॥ गुरमुखि लोभु
 निवारीरे हरि सिउ बणि आई ॥ ३ ॥ कलरि खेती बीजीरे किउ लाहा पावै ॥ मनमुखु सचि न भीजई कूडु कूडि गडावै ॥
 ४ ॥ लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी ॥ साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥ ५ ॥ दुबिधा छोडि कुवाटडी
 मूसहुगे भाई ॥ अहिनिशि नामु सलाहीरे सतिगुर सरणाई ॥ ६ ॥ मनमुख पथरु सैलु है ध्रिगु जीवणु फीका ॥ जल महि
 केता राखीरे अभ अंतरि सूका ॥ ७ ॥ हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ ॥ नानक नामु न वीसरै मथि अमितु पीआ
 ॥ ८ ॥ १५ ॥ आसा महला १ ॥ चले चलणहार वाट वटाइआ ॥ धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥ १ ॥ किआ
 भवीरे किआ ढूढीरे गुर सबदि दिखाइआ ॥ ममता मोहु विसरजिआ अपनै घरि आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि मिलै
 सचिआरु कूडि न पाईरे ॥ सचे सिउ चितु लाइ बहुडि न आईरे ॥ २ ॥ मोइआ कउ किआ रोवहु रोइ न जाणहू ॥ रोवहु
 सचु सलाहि हुकमु पछाणहू ॥ ३ ॥ हुकमी वजहु लिखाइ आइआ जाणीरे ॥ लाहा पलै पाइ हुकमु सिजाणीरे ॥ ४ ॥

हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीरे ॥ हुकमे ही सिरि मार बँदि रबाणीरे ॥ ५ ॥ लाहा सचु निआउ मनि वसाईरे ॥ लिखिआ
 पलै पाइ गरबु वजाईरे ॥ ६ ॥ मनमुखीआ सिरि मार वादि खपाईरे ॥ ठगि मुठी कूड़िआर बँन्हि चलाईरे ॥ ७ ॥ साहिबु
 रिदै वसाइ न पछोतावही ॥ गुनहां बखसणहारु सबदु कमावही ॥ ८ ॥ नानकु मँगै सचु गुरमुखिं घालीरे ॥ मै तुझ बिनु
 अवरु न कोइ नदरि निहालीरे ॥ ९ ॥ १६ ॥ आसा महला १ ॥ किआ जँगलु ढूढी जाइ मै घरि बनु हरीआवला ॥ सचि
 टिकै घरि आइ सबदि उतावला ॥ १ ॥ जह देखा तह सोइ अवरु न जाणीरे ॥ गुर की कार कमाइ महलु पछाणीरे ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ आपि मिलावै सचु ता मनि भावई ॥ चलै सदा रजाइ अँकि समावई ॥ २ ॥ सचा साहिबु मनि वसै वसिआ
 मनि सोई ॥ आपे दे वडिआईआ दे तोटि न होई ॥ ३ ॥ अबे तबे की चाकरी किउ दरगह पावै ॥ पथर की बेड़ी जे चडै भर
 नालि बुडावै ॥ ४ ॥ आपनडा मनु वेचीरे सिरु दीजै नाले ॥ गुरमुखिं वसतु पछाणीरे अपना घरु भाले ॥ ५ ॥ जँमण
 मरणा आखीरे तिनि करतै कीआ ॥ आपु गवाइआ मरि रहे फिरि मरणु न थीआ ॥ ६ ॥ साई कार कमावणी धुर की
 फुरमाई ॥ जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई ॥ ७ ॥ रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई ॥ नानक साहिबु
 मनि वसै सची वडिआई ॥ ८ ॥ १७ ॥ आसा महला १ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई ॥ मूलु छोडि डाली
 लगे किआ पावहि छाई ॥ १ ॥ बिनु नावै किउ छूटीरे जे जाणै कोई ॥ गुरमुखिं होइ त छूटीरे मनमुखिं पति खौई ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ जिन्ही एको सेविआ पूरी मति भाई ॥ आदि जुगादि निरँजना जन हरि सरणाई ॥ २ ॥ साहिबु मेरा एकु है
 अवरु नहीं भाई ॥ किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई ॥ ३ ॥ गुर बिनु किनै न पाइओ केती कहै कहाए ॥ आपि
 दिखावै वाटडीं सची भगति दिड़ाए ॥ ४ ॥ मनमुखु जे समझाईरे भी उझड़ि जाए ॥ बिनु हरि नाम न छूटसी मरि नरक
 समाए ॥ ५ ॥ जनमि मरै भरमाईरे हरि नामु न लेवै ॥ ता की कीमति ना पवै बिनु गुर की सेवै ॥ ६ ॥

जेही सेव कराईये करणी भी साई ॥ आपि करे किसु आखीये वेखै वडिआई ॥ ७ ॥ गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए ॥
 ॥ नानक सिरु दे छूटीये दरगह पति पाए ॥ ८ ॥ १८ ॥ आसा महला १ ॥ रूडो ठाकुर माहरो रूडी गुरबाणी ॥ वडै
 भागि सतिगुरु मिलै पाईये पदु निरबाणी ॥ १ ॥ मै ओल्हगीआ ओल्हगी हम छोरु थारै ॥ जिउ तूँ राखहि तिउ रहा
 मुखि नामु हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआसा घणी भाणै मनि भाईये ॥ मेरे ठाकुर हाथि वडिआईआ भाणै पति
 पाईये ॥ २ ॥ साचउ दूरि न जाणीये अंतरि है सोई ॥ जह देखा तह रवि किनि कीमति होई ॥ ३ ॥ आपि करे आपे हरे
 वेखै वडिआई ॥ गुरमुखि होइ निहालीये इउ कीमति पाई ॥ ४ ॥ जीवदिआ लाहा मिलै गुर कार कमावै ॥ पूरबि होवै
 लिखिआ ता सतिगुरु पावै ॥ ५ ॥ मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए ॥ मनमुखु अँधु न चेतई किउ दरसन पाए ॥ ६
 ॥ ता जगि आइआ जाणीये साचै लिव लाए ॥ गुर भेटे पारसु भए जोती जोति मिलाए ॥ ७ ॥ अहिनिसि रहै निरालमो
 कार धुर की करणी ॥ नानक नामि सँतोखीआ राते हरि चरणी ॥ ८ ॥ १९ ॥ आसा महला १ ॥ केता आखणु आखीये
 ता के अँत न जाणा ॥ मै निधरिआ धर एक तूँ मै ताणु सताणा ॥ १ ॥ नानक की अरदासि है सच नामि सुहेला ॥ आपु
 गइआ सोझी पई गुर सबदी मेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै गरबु गवाईये पाईये वीचारु ॥ साहिब सिउ मनु मानिआ दे साचु
 अधारु ॥ २ ॥ अहिनिसि नामि सँतोखीआ सेवा सचु साई ॥ ता कउ बिघनु न लागई चालै हुकमि रजाई ॥ ३ ॥
 हुकमि रजाई जो चलै सो पवै खजानै ॥ खोटे ठवर न पाइनी रले जूठानै ॥ ४ ॥ नित नित खरा समालीये सचु सउदा
 पाईये ॥ खोटे नदरि न आवनी ले अगनि जलाईये ॥ ५ ॥ जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥ एको अँमित बिरखु
 है फलु अँमितु होई ॥ ६ ॥ अँमितु फलु जिनी चाखिआ सचि रहे अघाई ॥ तिँना भरमु न भेदु है हरि रसन रसाई ॥ ७ ॥
 हुकमि सँजोगी आइआ चलु सदा रजाई ॥ अउगणिआरे कउ गुणु नानकै सचु मिलै वडाई ॥ ८ ॥ २० ॥

आसा महला १ ॥ मनु रातउ हरिं नाइ सचु वखाणिआ ॥ लोका दा किआ जाई जा तुधु भाणिआ ॥ १ ॥ जउ लगु जीउ पराण
 सचु धिआईऐ ॥ लाहा हरिं गुण गाइ मिलै सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सची तेरी कार देहि दइआल तूँ ॥ हउ जीवा तुधु
 सालाहि मै टेक अधारु तूँ ॥ २ ॥ दरि सेवकु दरवानु दरदु तूँ जाणही ॥ भगति तेरी हैरानु दरदु गवावही ॥ ३ ॥ दरगह नामु
 हदूरि गुरुमुखिं जाणसी ॥ वेला सचु परवाणु सबदु पछाणसी ॥ ४ ॥ सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरिं नामु सेइ ॥ मनहु छोडि
 विकार सचा सचु देइ ॥ ५ ॥ सचे सचा नेहु सचै लाइआ ॥ आपे करे निआउ जो तिसु भाइआ ॥ ६ ॥ सचे सची दाति देहि
 दइआलु है ॥ तिसु सेवी दिनु राति नामु अमोलु है ॥ ७ ॥ तूँ उतमु हउ नीचु सेवकु कांठीआ ॥ नानक नदरिं करेहु मिलै सचु
 वांठीआ ॥ ८ ॥ २१ ॥ आसा महला १ ॥ आवण जाणा किउ रहै किउ मेला होई ॥ जनम मरण का दुखु घणो नित सहसा दोई
 ॥ १ ॥ बिनु नावै किआ जीवना फिटु ध्रिगु चतुराई ॥ सतिगुर साधु न सेविआ हरिं भगति न भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवणु
 जावणु तउ रहै पाईऐ गुरु पूरा ॥ राम नामु धनु रासि देइ बिनसै भ्रमु कूरा ॥ २ ॥ संत जना कउ मिलिं रहै धनु धनु जसु गाए ॥
 आदि पुरखु अपरंपरा गुरुमुखिं हरि पाए ॥ ३ ॥ नटूरे साँगु बणाइआ बाजी संसारा ॥ खिनु पलु बाजी देखीऐ उझरत नही बारा
 ॥ ४ ॥ हउमै चउपड़ि खेलणा झूड़े अहंकारा ॥ सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु वीचारा ॥ ५ ॥ जिउ अंधुलै हथि टोहणी हरि
 नामु हमारै ॥ राम नामु हरिं टेक है निसि दउत सवारै ॥ ६ ॥ जिउ तूँ राखहि तिउ रहा हरिं नाम अधारा ॥ अँति सखाई पाइआ
 जन मुकति दुआरा ॥ ७ ॥ जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे ॥ नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥ ८ ॥ २२ ॥

आसा महला ३ असटपदीआ घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

सासतु बेदु सिँमिति सरु तेरा सुरसरी चरण समाणी ॥ साखा तीनि मूलु मति रावै तूँ तां सरब विडाणी ॥ १ ॥ ता के चरण जपै
 जनु नानकु बोलै अँमित बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

तेतीस करोड़ी दास तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ॥ ता के रूप न जाही लखणे किया करि आखि वीचारी ॥ २ ॥ तीनि
 गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरी आखाणी ॥ करमु होवै ता परम पदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी ॥ ३ ॥ तूँ करता कीआ सभु
 तेरा किया को करे पराणी ॥ जा कउ नदरि करहि तूँ अपणी साई सचि समाणी ॥ ४ ॥ नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती
 आवण जाणी ॥ जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी ॥ ५ ॥ चारे वेद ब्रहमे कउ दीए पड़ि पड़ि करे
 वीचारी ॥ ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥ ६ ॥ जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥ तिन
 भी अँतु न पाइआ ता का किया करि आखि वीचारी ॥ ७ ॥ तूँ सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि त साचु वखाणी ॥ जा कउ
 सचु बुझावहि अपना सहजे नामि समाणी ॥ ८ ॥ १ ॥ २३ ॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ॥ हरि
 नामु निरँजनु मँनि वसाइआ ॥ सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे ततु गिआनु ॥ देवण वाला सभ निधि
 जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर भेटे की वडिआई ॥ जिनि ममता अगनि तिसना बुझाई ॥
 सहजे माता हरि गुण गाई ॥ २ ॥ विणु गुर पूरे कोइ न जाणी ॥ माइआ मोहि दूजै लोभाणी ॥ गुरमुखि नामु मिलै हरि
 बाणी ॥ ३ ॥ गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु ॥ हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ॥ दरि साचै दीसै सचिआरु ॥ ४
 ॥ गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होइ ॥ आपु पछाणि हरि पावै सोइ ॥ साची बाणी महलु परापति होइ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते
 सभ कुल उधारे ॥ निरमल नामु रखै उरि धारे ॥ साची सोभा साचि दुआरे ॥ ६ ॥ से वडभागी जिं गुरि सेवा लाए ॥
 अनदिनु भगति सचु नामु द्विड़ाए ॥ नामे उधरे कुल सबाए ॥ ७ ॥ नानकु साचु कहै वीचारु ॥ हरि का नामु रखहु उरि धारि
 ॥ हरि भगती शते मोख दुआरु ॥ ८ ॥ २ ॥ २४ ॥ आसा महला ३ ॥ आसा आस करे सभु कोई ॥ हुकमै बूझै निरासा
 होई ॥ आसा विचि सुतै कई लोई ॥ सो जागै जागावै सोई ॥ १ ॥ सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख न जाई ॥

नामे त्रिसना अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलि कीरति सबदु पछानु ॥ एहा भगति चूकै अभिमानु ॥
 सतिगुरु सेविरे होवै परवानु ॥ जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥ २ ॥ तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए ॥ करि किरपा
 नामु मँनि वसाए ॥ इहु सिरु दीजै आपु गवाए ॥ हुकमै बूझै सदा सुखु पाए ॥ ३ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ आपे गुरुमुखि
 नामु वसाए ॥ आपि भुलावै आपि मारगि पाए ॥ सचै सबदि सचि समाए ॥ ४ ॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरुमुखि जुगि
 जुगि आखि वखाणी ॥ मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी ॥ बिनु नावै सभ फिरै बउराणी ॥ ५ ॥ तीनि भवन महि एका माइआ
 ॥ मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ दिडाइआ ॥ बहु करम कमावै दुखु सबाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ ६ ॥ अँमितु
 मीठा सबदु वीचारि ॥ अनदिनु भोगे हउमै मारि ॥ सहजि अनँदि किरपा धारि ॥ नामि रते सदा सचि पिआरि ॥ ७ ॥ हरि
 जपि पड़ीरे गुरु सबदु वीचारि ॥ हरि जपि पड़ीरे हउमै मारि ॥ हरि जपीरे भइ सचि पिआरि ॥ नानक नामु गुरुमति उर धारि ॥
 ८ ॥ ३ ॥ २५ ॥

१४ सतिगुरु प्रसादि ॥ रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥

गुरु ते सांति ऊपजै जिनि त्रिसना अगनि बुझाई ॥ गुरु ते नामु पाईरे वडी वडिआई ॥ १ ॥ एको नामु चेति मेरे भाई ॥ जगतु
 जलँदा देखि कै भजि परे सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु ते गिआनु ऊपजै महा ततु बीचारा ॥ गुरु ते घरु दरु पाइआ भगती भरे
 भँडारा ॥ २ ॥ गुरुमुखि नामु धिआईरे बूझै वीचारा ॥ गुरुमुखि भगति सलाह है अँतरि सबदु अपारा ॥ ३ ॥ गुरुमुखि सुखु
 ऊपजै दुखु कदे न होई ॥ गुरुमुखि हउमै मारीरे मनु निरमलु होई ॥ ४ ॥ सतिगुरु मिलिरे आपु गइआ त्रिभवण सोझी पाई ॥
 निरमल जोति पसरि रही जोती जोति मिलाई ॥ ५ ॥ पूरै गुरि समझाइआ मति ऊतम होई ॥ अँतरु सीतलु सांति होइ नामे
 सुखु होई ॥ ६ ॥ पूरा सतिगुरु तां मिलै जां नदरि करेई ॥ किलविख पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न होई ॥ ७ ॥

आपणै हथि वडिआईआ दे नामे लाए ॥ नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई पाए ॥ ८ ॥ ४ ॥ २६ ॥ आसा महला
 ३ ॥ सुणि मन मनि वसाइ तूँ आपे आइ मिलै मेरे भाई ॥ अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई ॥ १ ॥ एको नामु
 धिआइ तूँ सुखु पावहि मेरे भाई ॥ हउमै दूजा दूरि करि वडी वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु भगती नो सुरि नर मुनि जन
 लोचदे विणु सतिगुर पाई न जाइ ॥ पँडित पड़दे जोतिकी तिन बूझ न पाइ ॥ २ ॥ आपै थै सभु रखिओनु किछु कहणु न
 जाई ॥ आपे देइ सु पाईऐ गुरि बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ जीअ जँत सभि तिस दे सभना का सोई ॥ मँदा किस नो आखीऐ जे
 दूजा होई ॥ ४ ॥ इको हुकमु वरतदा एका सिरि कारा ॥ आपि भवाली दितीअनु अँतरि लोभु विकारा ॥ ५ ॥ इक आपे
 गुरमुखि कीतिअनु बूझनि वीचारा ॥ भगति भी ओना नो बखसीअनु अँतरि भँडारा ॥ ६ ॥ गिआनीआ नो सभु सचु है
 सचु सोझी होई ॥ ओइ भुलाए किसै दे न भुलन्ही सचु जाणनि सोई ॥ ७ ॥ घर महि पँच वरतदे पँचे वीचारी ॥ नानक बिनु
 सतिगुर वसि न आवन्ही नामि हउमै मारी ॥ ८ ॥ ५ ॥ २७ ॥ आसा महला ३ ॥ घरै अँदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही
 ॥ गुर परसादी पाईऐ अँतरि कपट खुलाही ॥ १ ॥ सतिगुर ते हरि पाईऐ भाई ॥ अँतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ
 दिखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का गाहकु होवै सो लए पाए रतनु वीचारा ॥ अँदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भँडारा ॥
 २ ॥ अँदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा ॥ मन चिँदिआ फलु पाइसी फिरि होइ न फेरा ॥ ३ ॥ पारखीआ वथु समालि
 लई गुर सोझी होई ॥ नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई ॥ ४ ॥ बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अँदरि भाई ॥
 भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गवाई ॥ ५ ॥ घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई ॥ चौरै वांगू पकड़ीऐ बिनु
 नावै चोटा खाई ॥ ६ ॥ जिन्ही घरु जाता आपणा से सुखीए भाई ॥ अँतरि ब्रहमु पछाणिआ गुर की वडिआई ॥ ७ ॥
 आपे दानु करे किसु आखीऐ आपे देइ बुझाई ॥ नानक नामु धिआइ तूँ दरि सचै सोभा पाई ॥ ८ ॥ ६ ॥ २८ ॥

आसा महला ३ ॥ आपै आपु पछाणिआ सादु मीठा भाई ॥ हरि रसि चाखिरे मुकतु भए जिन्हा साचो भाई ॥ १ ॥ हरि
 जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा ॥ गुरमती सालाहीरे बिखिआ माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु सबदै आपु न
 जापई सभ अँधी भाई ॥ गुरमती घटि चानणा नामु अँति सखाई ॥ २ ॥ नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा ॥ अँतरि नामु
 मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा ॥ ३ ॥ नामु सुणीरे नामु मँनीरे नामे वडिआई ॥ नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पाई
 ॥ ४ ॥ नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई ॥ नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई ॥ ५ ॥ बिनु नावै कोइ न मनीरे
 मनमुखि पति गवाई ॥ जमपुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई ॥ ६ ॥ नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई ॥
 नामहु ही नामु मँनीरे नामे वडिआई ॥ ७ ॥ जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमती नामु बुझाई ॥ नानक सभ किछु नावै कै वसि
 है पूरै भागि को पाई ॥ ८ ॥ ७ ॥ २९ ॥ आसा महला ३ ॥ दोहागणी महलु न पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ ॥
 फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥ १ ॥ इहु मनूआ किउ करि वसि आवै ॥ गुर परसादी ठाकीरे गिआन मती
 घरि आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥ सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि
 सीगारु ॥ २ ॥ सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ ॥ पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि प्रीतम सुखु पाइ ॥ ३ ॥
 गिआन अपारु सीगारु है सोभावँती नारि ॥ सा सभराई सुँदरी पिर कै हेति पिआरि ॥ ४ ॥ सोहागणी विचि रँगु रखिओनु
 सचै अलखि अपारि ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ पिआरि ॥ ५ ॥ सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु
 ॥ प्रेम पिरमलु तनि लावणा अँतरि रतनु वीचारु ॥ ६ ॥ भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ॥ बिनु नावै सभ नीच
 जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥ ७ ॥ हउ हउ करदी सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ ॥ नानक नामि रते तिन हउमै गई
 सचै रहे समाइ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ३० ॥ आसा महला ३ ॥ सचे रते से निरमले सदा सची सोइ ॥ ऐथै घरि घरि जापदे

आगै जुगि जुगि परगटु होइ ॥ १ ॥ ए मन रूड्हे रँगुले तूँ सचा रँगु चड़ाइ ॥ रूडी बाणी जे रपै ना इहु रँगु लहै न जाइ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ विकार ॥ गुरि पारसि मिलिऐ कँचनु होए निरमल जोति अपार
 ॥ २ ॥ बिनु गुर कोइ न रँगीऐ गुरि मिलिऐ रँगु चड़ाउ ॥ गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ ॥ ३ ॥ भै बिनु
 लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ ॥ बिनु भै कर्म कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥ ४ ॥ जिस नो आपे रँगो सुरपसी सत
 संगति मिलाइ ॥ पूरे गुर ते सत संगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ ॥ ५ ॥ बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥
 जिन्हि कीते तिसै न जाणन्ही बिनु नावै सभि चोर ॥ ६ ॥ इकि गुण विहाइहि अउगण विकणहि गुर कै सहजि सुभाइ ॥
 गुर सेवा ते नाउ पाइआ वुठा अंदरि आइ ॥ ७ ॥ सभना का दाता एकु है सिरि धँधै लाइ ॥ नानक नामे लाइ सवारिअनु
 सबदे लए मिलाइ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३१ ॥ आसा महला ३ ॥ सभ नावै नो लोचदी जिसु क्रिपा करे सो पाए ॥ बिनु नावै
 सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मँनि वसाए ॥ १ ॥ तूँ बेअँतु दइआलु है तेरी सरणाई ॥ गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि एकु है बहु बिधि सिंसटि उपाई ॥ हुकमे कार कराइदा दूजा किसु कहीऐ भाई ॥ २ ॥ बुझणा
 अबुझणा तुधु कीआ इह तेरी सिरि कार ॥ इकन्हा बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िआर ॥ ३ ॥ इकि धुरि
 पवित पावन हहि तुधु नामे लाए ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाए ॥ ४ ॥ इकि कुचल कुचील विखली पते
 नावहु आपि खुआए ॥ ना ओन सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताए ॥ ५ ॥ नदरि करे जिसु आपणी तिस नो
 भावनी लाए ॥ सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाए ॥ ६ ॥ लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै अँतु न पाइ
 ॥ गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ ॥ ७ ॥ इहु मनु देही सोधि तूँ गुर सबदि वीचारि ॥ नानक इसु देही विचि
 नामु निधानु है पाईऐ गुर कै हेति अपारि ॥ ८ ॥ १० ॥ ३२ ॥ आसा महला ३ ॥ सचि रतीआ सोहागणी जिना

गुर कै सबदि सीगारि ॥ घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ १ ॥ अवगण गुणी बखसाइआ हरि सिउ लिव लाई ॥
 ॥ हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही दूजै भरमि भुलाइ ॥ किउ
 पाइन्हि डोहागणी दूखी रैणि विहाइ ॥ २ ॥ जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ ॥ अनदिनु सेवहि सहज सिउ सचे
 माहि समाइ ॥ ३ ॥ दोहागणी भरमि भुलाईआ कूडु बोलि बिखु खाहि ॥ पिरु न जाणनि आपणा सुंजी सेज दुखु पाहि ॥
 ४ ॥ सचा साहिबु एकु है मतु मन भरमि भुलाहि ॥ गुर पूछि सेवा करहि सचु निरमलु मनि वसाहि ॥ ५ ॥ सोहागणी सदा
 पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ ॥ पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ ॥ ६ ॥ मेरी मेरी करि गए पलै किछु न
 पाइ ॥ महलु नाही डोहागणी अँति गई पछुताइ ॥ ७ ॥ सो पिरु मेरा एकु है एकसु सिउ लिव लाइ ॥ नानक जे सुखु
 लोडहि कामणी हरि का नामु मनि वसाइ ॥ ८ ॥ ११ ॥ ३३ ॥ आसा महला ३ ॥ अँमितु जिन्हा चखाइओनु रसु आइआ
 सहजि सुभाइ ॥ सचा वेपरवाहु है तिस नो तिलु न तमाइ ॥ १ ॥ अँमितु सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ ॥ मनु सदा
 हरीआवला सहजे हरि गुण गाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि सदा दोहागणी दरि खडीआ बिललाहि ॥ जिन्हा पिर का सुआदु
 न आइओ जो धुरि लिखिआ सो कमाहि ॥ २ ॥ गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ॥ जो इतु लाहै लाइअनु भगती
 देइ भँडार ॥ ३ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सचु रखहि ओर धारि ॥ ४
 ॥ जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु बलि जाउ ॥ सदा पिर कै साँगे रहहि विचहु आपु गवाइ ॥ ५ ॥ तनु मनु
 सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि ॥ सेज सुखाली पिरु रवै हउमै तिसना मारि ॥ ६ ॥ करि किरपा घरि आइआ गुर कै
 हेति अपारि ॥ वरु पाइआ सोहागणी केवल एकु मुरारि ॥ ७ ॥ सभे गुनह बखसाइ लइओनु मेले मेलणहारि ॥ नानक
 आखणु आखीरे जे सुणि धरे पिआरु ॥ ८ ॥ १२ ॥ ३४ ॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ ॥

सहजे नामु धिआईरे गिआनु परगटु होइ ॥ १ ॥ ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥ सद सुणदा सद वेखदा
 सबदि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ ॥ सदा खहि पिरु आपणा
 सचै नामि सुखु पाइआ ॥ २ ॥ ए मन तेरा को नही करि वेखु सबदि वीचारु ॥ हरि सरणाई भजि पउ पाइहि मोख दुआरु
 ॥ ३ ॥ सबदि सुणीरे सबदि बुझीरे सचि रहै लिव लाइ ॥ सबदे हउमै मारीरे सचै महलि सुखु पाइ ॥ ४ ॥ इसु जुग महि
 सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ॥ इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥ ५ ॥ जिनी नामु
 विसारिआ से मुए मरि जाहि ॥ हरि रस सादु न आइओ बिसटा माहि समाहि ॥ ६ ॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु अनदिनु
 नामे लाइ ॥ सचु कमावहि सचि रहहि सचे साचि समाहि ॥ ७ ॥ बिनु सबदै सुणीरे न देखीरे जगु बोला अँन्हा भरमाइ ॥
 बिनु नावै दुखु पाईसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥ ८ ॥ जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निरमल परवाणु ॥ नानक नामु
 तिन्हा कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥ ९ ॥ १३ ॥ ३५ ॥ आसा महला ३ ॥ सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी
 सची होइ ॥ विचहु आपु गइआ नाउ मँनिआ सचि मिलावा होइ ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जन की पति होइ ॥ सफलु तिन्हा का
 जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥ सबदि मरै ता जाति जाइ जोती
 जोति मिलै भगवानु ॥ २ ॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ॥ नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट भँडारा ॥ ३
 ॥ आवहि इसु रासी के वापारीए जिन्हा नामु पिआरा ॥ गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिन्हा अँतरि सबदु वीचारा ॥ ४ ॥
 भगती सार न जाणन्ही मनमुख अहँकारी ॥ धुरुहु आपि खुआइअनु जूरे बाजी हारी ॥ ५ ॥ बिनु पिआरै भगति न होवई ना
 सुखु होइ सरीरि ॥ प्रेम पदारथु पाईरे गुर भगती मन धीरि ॥ ६ ॥ जिस नो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि ॥ हिरदै
 एको नामु वसै हउमै दुबिधा मारि ॥ ७ ॥ भगता की जाति पति एको नामु है आपे लए सवारि ॥ सदा सरणाई तिस की जिउ

भावै तितु कारजु सारि ॥ ८ ॥ भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि ॥ नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ॥ ९ ॥
 १४ ॥ ३६ ॥ आसा महला ३ ॥ अन रस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ ॥ सतिगुरु पुरखु न भेटिओ जि सची बूझ बुझाइ ॥
 १ ॥ ए मन मेरे बावले हरि रसु चखि सादु पाइ ॥ अन रसि लागी तूँ फिरहि बिरथा जनमु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि
 गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिव लाइ ॥ विणु करमा किछु पाईरे नही किआ करि कहिआ जाइ ॥ २ ॥ आपु पछाणहि सबदि
 मरहि मनहु तजि विकार ॥ गुर सरणाई भजि पए बखसे बखसणहार ॥ ३ ॥ बिनु नावै सुखु न पाईरे ना दुखु विचहु जाइ ॥ इहु
 जगु माइआ मोहि विआपिआ दूजै भरमि भुलाइ ॥ ४ ॥ दोहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु ॥ अनदिनु
 सदा जलदीआ फिरहि सेजै खै न भतारु ॥ ५ ॥ सोहागणी महलु पाइआ विचहु आपु गवाइ ॥ गुर सबदी सीगारीआ अपणे सहि
 लईआ मिलाइ ॥ ६ ॥ मरणा मनहु विसारिआ माइआ मोहु गुबारु ॥ मनमुख मरि मरि जँमहि भी मरहि जम दरि होहि खुआरु ॥ ७
 ॥ आपि मिलाइअनु से मिले गुर सबदि वीचारि ॥ नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरवारि ॥ ८ ॥ २२ ॥ १५ ॥ ३७ ॥

आसा महला ५ असटपदीआ घरु २ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

पँच मनाए पँच रुसाए ॥ पँच वसाए पँच गवाए ॥ १ ॥ इन्ह बिधि नगरु वुठा मेरे भाई ॥ दुरतु गइआ गुरि गिआनु द्विडाई ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ साच धरम की करि दीनी वारि ॥ फरहे मुहकम गुर गिआनु बीचारि ॥ २ ॥ नामु खेती बीजहु भाई मीत ॥ सउदा करहु गुरु
 सेवहु नीत ॥ ३ ॥ सांति सहज सुख के सभि हाट ॥ साह वापारी एकै थाट ॥ ४ ॥ जेजीआ डँनु को लए न जगाति ॥ सतिगुरि
 करि दीनी धुर की छाप ॥ ५ ॥ वखरु नामु लदि खेप चलावहु ॥ लै लाहा गुरमुखि घरि आवहु ॥ ६ ॥ सतिगुरु साहु सिख
 वणजारे ॥ पूँजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥ ७ ॥ सो वसै इतु घरि जिसु गुरु पूरा सेव ॥ अबिचल नगरी नानक देव ॥ ८ ॥ १ ॥

आसावरी महला ५ घरु ३ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति ॥ साध साँगि हरि हरि जपत निरमल साची रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआस घणी चितवत
अनिक प्रकार ॥ करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि ॥ १ ॥ मनु परदेसी आइआ मिलिओ साध कै साँगि ॥ जिंसु वखर
कओ चाहता सो पाइओ नामहि रँगि ॥ २ ॥ जेते माइआ रँग रस बिनसि जाहि खिन माहि ॥ भगत रते तेरे नाम सिउ सुखु भूँचहि
सभ ठाइ ॥ ३ ॥ सभु जगु चलतउ पेखीऐ निहचलु हरि को नाउ ॥ करि मित्राई साध सिउ निहचलु पावहि ठाउ ॥ ४ ॥ मीत
साजन सुत बँधपा कोऊ होत न साथ ॥ एकु निवाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ ॥ ५ ॥ चरन कमल बोहिथ भए लागि सागरु
तरिओ तेह ॥ भेटिओ पूरा सतिगुरु साचा प्रभ सिउ नेह ॥ ६ ॥ साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि ॥ जो तुधु भावै
सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥ ७ ॥ सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अनँद ॥ कहु नानक सभ दुख मिते प्रभ भेटे परमानँद ॥
८ ॥ १ ॥ २ ॥

आसा महला ५ विरहडे घरु ४ छँता की जति १८ सतिगुर प्रसादि ॥

पारब्रहमु प्रभु सिमरीऐ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥ १ ॥ जिंसु सिमरत दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥ २ ॥ इहु
तनु वेची सँत पहि पिआरे प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ ३ ॥ सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥ ४ ॥ कामु क्रोधु लोभु
तजि गए पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥ ५ ॥ जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥ ६ ॥ हरि रसु जिन्ही चाखिआ
पिआरे त्रिपति रहे आघाइ ॥ ७ ॥ अँचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ जनम मरण दुखु
कटीऐ पिआरे जब भेटै हरि राइ ॥ १ ॥ सुँदरु सुघरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु दिखाइ ॥ २ ॥ जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे
जनमि मरहि बिखु खाइ ॥ ३ ॥ जिंसु तूँ मेलहि सो मिलै पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥ ४ ॥ जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख

ते कहणु न जाइ ॥ ५ ॥ साची प्रीति न तुटई पिआरे जुगु जुगु रही समाइ ॥ ६ ॥ जो तुधु भावै सो भला पिआरे तेरी अमरु
रजाइ ॥ ७ ॥ नानक रँगि रते नाराइगै पिआरे माते सहजि सुभाइ ॥ ८ ॥ २ ॥ ४ ॥ सभ बिधि तुम ही जानते पिआरे किसु
पहि कहउ सुनाइ ॥ १ ॥ तूँ दाता जीआ सभना का तेरा दिता पहिरहि खाइ ॥ २ ॥ सुखु दुखु तेरी आगिआ पिआरे दूजी
नाही जाइ ॥ ३ ॥ जो तूँ करावहि सो करी पिआरे अवरु किछु करणु न जाइ ॥ ४ ॥ दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे जितु
जपीरे हरि नाउ ॥ ५ ॥ साई कार कमावणी पिआरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइ ॥ ६ ॥ एको आपि वरतदा पिआरे घटि घटि
रहिआ समाइ ॥ ७ ॥ संसार कूप ते उधरि लै पिआरे नानक हरि सरणाइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ २२ ॥ १५ ॥ २ ॥ ४२ ॥

रागु आसा महला १ पटी लिखी १४ शितिगुरि प्रसादि ॥

ससै सोइ खिसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥ सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइआ
॥ १ ॥ मन काहे भूले मूड़ मना ॥ जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा
सोई ॥ एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई ॥ २ ॥ ऊँडे उपमा ता की कीजै जा का अँतु न पाइआ ॥
सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ ॥ ३ ॥ डँडे डिआनु बूझै जे कोई पड़िआ पँडितु सोई ॥ सरब जीआ महि
एको जाणै ता हउमै कहै न कोई ॥ ४ ॥ ककै केस पुँडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ ॥ जम राजे के हेरु आए माइआ कै
सँगलि बँधि लइआ ॥ ५ ॥ खखै खुँदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ ॥ बँधनि जा कै सभु जगु बाधिआ
अवरी का नही हुकमु पाइआ ॥ ६ ॥ गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिदु गरबि भइआ ॥ घड़ि भांडे जिनि आवी साजी
चाड़ण वाहै तई कीआ ॥ ७ ॥ घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरु कै लागि रहै ॥ बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि
साहिबु रमतु रहै ॥ ८ ॥ चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा ॥ जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी

पड़िआ पँडितु आपि थीआ ॥ ९ ॥ छछै छाड़आ वरती सभ अँतरि तेरा कीआ भरमु होआ ॥ भरमु उपाड़ भुलाईअनु आपे
 तेरा करमु होआ तिन्ह गुरू मिलिआ ॥ १० ॥ जजै जानु मँगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ ॥ एको लेवै एको
 देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥ ११ ॥ झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिआ ॥ दे दे वेखै हुकमु चलाए जिउ
 जीआ का रिजकु पड़आ ॥ १२ ॥ जँजै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही ॥ एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन
 माही ॥ १३ ॥ टटै टँच करहु किआ प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा ॥ जूरे जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि
 सरणा ॥ १४ ॥ ठठै ठाढि वरती तिन अँतरि हरि चरणी जिन्ह का चितु लागा ॥ चितु लागा सेई जन निसतरे तउ परसादी
 सुखु पाड़आ ॥ १५ ॥ डडै डँफु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सु सभु चलणा ॥ तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सरब निरँतर
 रवि रहिआ ॥ १६ ॥ ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥ करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जा कउ
 नदरि करे ॥ १७ ॥ णाणै खतु रहै घट अँतरि हरि गुण गावै सोई ॥ आपे आप मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ॥ १८
 ॥ ततै तारु भवजलु होआ ता का अँतु न पाड़आ ॥ ना तरना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राड़आ ॥ १९ ॥ थथै
 थानि थानँतरि सोई जा का कीआ सभु होआ ॥ किआ भरमु किआ माड़आ कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला ॥ २० ॥ ददै
 दोसु न देऊ किसै दोसु करँमा आपणिआ ॥ जो मै कीआ सो मै पाड़आ दोसु न दीजै अवर जना ॥ २१ ॥ धधै धारि कला
 जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रँग कीआ ॥ तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पड़आ ॥ २२ ॥ नँनै नाह भोग
 नित भोगै ना डीठा ना सँहलिआ ॥ गली हउ सोहागणि भैणे कँतु न कबहूँ मै मिलिआ ॥ २३ ॥ पपै पातिसाहु परमेसरु
 वेखण कउ परपँचु कीआ ॥ देखै बूझै सभु किछु जाणै अँतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ २४ ॥ फफै फाही सभु जगु फासा जम कै
 सँगलि बाँधि लड़आ ॥ गुर परसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पड़आ ॥ २५ ॥ बबै बाजी खेलण लागा

चउपड़ि कीते चारि जुगा ॥ जीअ जंत सभ सारी कीते पासा ढालणिं आपि लगा ॥ २६ ॥ भभै भालहिं से फलु पावहि गुर
 परसादी जिन्ह कउ भउ पइआ ॥ मनमुख फिरहिं न चेतहिं मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ ॥ २७ ॥ मँमै मोहु मधुसूदनु
 मरणु भइआ तब चेतविआ ॥ काइआ भीतरि अवरो पड़िआ मँमा अखरु वीसरिआ ॥ २८ ॥ ययै जनमु न होवी कद ही
 जे करि सचु पछाणै ॥ गुरमुखिं आखै गुरमुखिं बूझै गुरमुखिं एको जाणै ॥ २९ ॥ शरै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीए
 जंता ॥ जंत उपाइ धँधै सभ लाए करमु होआ तिन नामु लइआ ॥ ३० ॥ ललै लाइ धँधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु
 कीआ ॥ खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ता कै हुकमु पइआ ॥ ३१ ॥ ववै वासुदेउ परमेसरु वेखण कउ जिनि वेसु
 कीआ ॥ वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ ३२ ॥ ड़ाडै राड़ि करहिं किआ प्राणी तिसहिं धिआवहु
 जिं अमरु होआ ॥ तिसहिं धिआवहु सचि समावहु ओसु विटहु कुरबाणु कीआ ॥ ३३ ॥ हाहै होर न कोई दाता जीअ
 उपाइ जिनि रिजकु दीआ ॥ हरि नामु धिआवहु हरि नाम समावहु अनदिनु लाहा हरि नामु लीआ ॥ ३४ ॥ आइडै आपि
 करे जिनि छोडी जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ करे कराए सभ किछु जाणै नानक साइर इव कहिआ ॥ ३५ ॥ १ ॥

रागु आसा महला ३ पटी १८ सतिगुर प्रसादि ॥

अयो अँडै सभु जगु आइआ काखै घँडै कालु भइआ ॥ शीरी लली पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ ॥ १ ॥ मन
 ऐसा लेखा तूँ की पड़िआ ॥ लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिँधडाइरे सिमरहिं नाही नँनै ना तुधु नामु
 लइआ ॥ छछै छीजहिं अहिनिंसि मूड़े किउ छूटहिं जमि पाकड़िआ ॥ २ ॥ बबै बूझहिं नाही मूड़े भरमि भुले तेरा जनमु
 गइआ ॥ अणहोदा नाउ धराइओ पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ ॥ ३ ॥ जजै जोति हिरिं लई तेरी मूड़े अँति गइआ
 पछुतावहिगा ॥ एकु सबदु तूँ चीनहिं नाही फिरिं फिरिं जूनी आवहिगा ॥ ४ ॥ तुधु सिरिं लिखिआ सो पडु

पंडित अवरा नो न सिखालि बिखिआ ॥ पहिला फाहा पइआ पाधे पिछो दे गलि चाटडिआ ॥ ७ ॥ ससै सँजमु गइओ मूडे
 एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ ॥ साई पुत्री जजमान की सा तेरी एतु धानि खाधै तेरा जनमु गइआ ॥ ६ ॥ मँमै मति हिरि लई
 तेरी मूडे हउमै वडा रोगु पइआ ॥ अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ माइआ का मुहताजु भइआ ॥ ७ ॥ ककै कामि क्रोधि
 भरमिओहु मूडे ममता लागे तुधु हरि विसरिआ ॥ पड़हि गुणहि तूँ बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूँ डूबि मुआ ॥ ८ ॥ ततै तामसि
 जलिओहु मूडे थथै थान भरिसटु होआ ॥ घघै घरि घरि फिरहि तूँ मूडे ददै दानु न तुधु लइआ ॥ ९ ॥ पपै पारि न पवही मूडे
 परपँचि तूँ पलचि रहिआ ॥ सचै आपि खुआइओहु मूडे इहु सिरि तेरै लेखु पइआ ॥ १० ॥ भभै भवजलि डुबोहु मूडे माइआ
 विचि गलतानु भइआ ॥ गुर परसादी एको जाणै एक घड़ी महि पारि पइआ ॥ ११ ॥ ववै वारी आईआ वासुदेउ तुधु वीसरिआ
 ॥ एह वेला न लहसहि मूडे फिरि तूँ जम कै वसि पइआ ॥ १२ ॥ झझै कदे न झुरहि मूडे सतिगुर का उपदेसु सुणि तूँ विखा ॥
 सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा ॥ १३ ॥ धधै धावत वरजि रखु मूडे अंतरि तेरै निधानु पइआ ॥ गुरमुखि
 होवहि ता हरि रसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइआ ॥ १४ ॥ गगै गोबिदु चिति करि मूडे गली किनै न पाइआ ॥ गुर के
 चरन हिरदै वसाइ मूडे मिछले गुनह सभ बखसि लइआ ॥ १५ ॥ हाहै हरि कथा बूझु तूँ मूडे ता सदा सुखु होई ॥ मनमुखि
 पड़हि तेता दुखु लागै विणु सतिगुर मुकति न होई ॥ १६ ॥ राँरै रामु चिति करि मैडे हिरदै जिन्ह कै रवि रहिआ ॥ गुर परसादी
 जिन्ही रामु पछाता निरगुण रामु तिन्ही बूझि लहिआ ॥ १७ ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथु न जाई हरि कथिआ ॥
 नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबडिआ ॥ १८ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु आसा महला १ छँत घरु १ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मुँध जोबनि बालड़ीए मेशा पिरु रलीआला राम ॥ धन पिर नेहु घणा

रसि प्रीति दइआला राम ॥ धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे ॥ सेजा सुहावी सँगि पिर कै सात सर
 अँमित भरे ॥ करि दइआ मइआ दइआल साचे सबदि मिलि गुण गावओ ॥ नानका हरि वरु देखि बिगसी मुँध मनि
 ओमाहओ ॥ १ ॥ मुँध सहजि सलोनडीए इक प्रेम बिनँती राम ॥ मै मनि तनि हरि भावै प्रभु सँगमि राती राम ॥ प्रभु
 प्रेमि राती हरि बिनँती नामि हरि कै सुखि वसै ॥ तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै ॥ तुधु बाझु
 इकु तिलु रहि न साका कहणि सुनणि न धीजए ॥ नानका प्रिउ प्रिउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजए ॥ २ ॥ सखीहो
 सहेलडीहो मेश पिरु वणजारा राम ॥ हरि नामो वणँजडिआ रसि मोलि अपारा राम ॥ मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभु
 भवै ता मुँध भली ॥ इकि सँगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥ करण कारण समरथ श्रीधर आपि कारजु
 सारए ॥ नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारए ॥ ३ ॥ हम घरि साचा सोहिलडा प्रभु आइअडे मीता राम ॥
 रावे रँगि रातडिआ मनु लीअडा दीता राम ॥ आपणा मनु दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए ॥ तनु मनु पिर
 आगै सबदि सभागै घरि अँमित फलु पावए ॥ बुधि पाठि न पाईए बहु चतुराईए भाइ मिलै मनि भाणे ॥ नानक ठाकुर मीत
 हमारे हम नाही लोकाणे ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ॥ मेश मनो मेश मनु
 राता लाल पिआरे राम ॥ अनदिनु राता मनु बैरागी सुँन मँडलि घरि पाइआ ॥ आदि पुरखु अपरँपरु पिआरा सतिगुरि
 अलखु लखाइआ ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे ॥ नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण
 झुणकारे ॥ १ ॥ तितु अगम तितु अगम पूरे कहु कितु बिधि जाईए राम ॥ सचु सँजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईए राम
 ॥ सचु सबदु कमाईए निज घरि जाईए पाईए गुणी निधाना ॥ तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना ॥
 जपु तपु करि करि सँजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईए ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईए ॥ २ ॥

गुर सागरो रतनागरु तितु रतन घनेरे राम ॥ करि मजनो सपत सरे मन निरमल मेरे राम ॥ निरमल जलि न्हाए जा प्रभ
 भाए पँच मिले वीचारे ॥ कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे ॥ हउमै लोभ लहरि लब थाके पाए दीन
 दइआला ॥ नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला ॥ ३ ॥ हउ बनू बनो देखि रही त्रिणु देखि सबाइआ
 राम ॥ त्रिभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइआ राम ॥ तेरा सभु कीआ तूँ थिरु थीआ तुधु समानि को नाही ॥ तूँ
 दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही ॥ अणमँगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भँडारा ॥ राम नाम बिनु
 मुकति न होई नानकु कहै वीचारा ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम ॥ सचु
 साहिबो आदि पुरखु अपरँपरो धारे राम ॥ अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रह्मु परधानो ॥ आदि जुगादी है भी होसी
 अवरु झूठा सभु मानो ॥ कर्म धरम की सार न जाणै सुरति मुकति किउ पाईऐ ॥ नानक गुरमुखि सबदि पछाणै
 अहिनिशि नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु मानिआ नामु सखाई राम ॥ हउमै ममता माइआ सँगि न जाई राम
 ॥ माता पित भाई सुत चतुराई सँगि न सँपै नारे ॥ साइर की पुत्री परहरि तिआगी चरण तलै वीचारे ॥ आदि पुरखि इकु
 चलतु दिखाइआ जह देखा तह सोई ॥ नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइ सु होई ॥ २ ॥ मेरा मनो मेरा मनु
 निरमलु साचु समाले राम ॥ अवगण मेटि चले गुण सँगम नाले राम ॥ अवगण परहरि करणी सारी दरि सचै सचिआरो ॥
 आवणु जावणु ठाकि रहाए गुरमुखि ततु वीचारे ॥ साजनु मीतु सुजाणु सखा तूँ सचि मिलै वडिआई ॥ नानक नामु रतनु
 परगासिआ ऐसी गुरमति पाई ॥ ३ ॥ सचु अँजनो अँजनु सारि निरँजनि राता राम ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनो
 दाता राम ॥ जगजीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलाइआ ॥ साध सभा सँता की सँगति नदरि प्रभू सुखु पाइआ
 ॥ हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥ नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु आसा महला १ छँत घरु २ १०८ शितिगुर प्रसादि ॥

तूँ सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ सभना का दाता करम बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ ॥ दूख बिसारणहारु सुआमी कीता जा का होवै ॥ कोट कोटंतर पापा केरे एक घडी महि खोवै ॥ हँस सि हँसा बग सि बगा घट घट करे बीचारु जीउ ॥ तूँ सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ १ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ १ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ तिन जमु नेडि न आवै गुर सबदु कमावै कबहु न आवहि हारि जीउ ॥ ते कबहु न हारहि हरि हरि गुण सारहि तिन्ह जमु नेडि न आवै ॥ जँमणु मरणु तिन्हा का चूका जो हरि लागे पावै ॥ गुरमति हरि रसु हरि फलु पाइआ हरि हरि नामु उर धारि जीउ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ २ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धँधै लाइआ तिसै विटहु कुरबाणु जीउ ॥ ता की सेव करीजै लाहा लीजै हरि दरगह पाईरे माणु जीउ ॥ हरि दरगह मानु सोई जनु पावै जो नरु एकु पछाणै ॥ ओहु नव निधि पावै गुरमति हरि धिआवै नित हरि गुण आखि वखाणै ॥ अहिनि सि नामु तिसै का लीजै हरि ऊतम पुरखु परधानु जीउ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धँधै लाइआ हउ तिसै विटहु कुरबानु जीउ ॥ ३ ॥ नामु लैनि सि सोहहि तिन सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ तिन फल तोटि न आवै जा तिसु भावै जे जुग केते जाहि जीउ ॥ जे जुग केते जाहि सुआमी तिन फल तोटि न आवै ॥ तिन्ह जरा न मरणा नरकि न परणा जो हरि नामु धिआवै ॥ हरि हरि करहि सि सूकहि नाही नानक पीड़ न खाहि जीउ ॥ नामु लैन्हि सि सोहहि तिन्ह सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

१०८ शितिगुर प्रसादि ॥ आसा महला १ छँत घरु ३ ॥

तूँ सुणि हरणा कालिआ की वाडीरे शता राम ॥ बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम ॥ फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापए ॥ ओहु

जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए ॥ हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥ १ ॥ भवरा फूलि भवतिआ दुखु अति बारी राम ॥ मै गुर पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम ॥ बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ ॥ सूरजु चडिआ पिंडु पडिआ तेलु तावणि तातओ ॥ जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥ २ ॥ मेरे जीअडिआ परदेसीआ कितु पवहि जँजाले राम ॥ साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम ॥ मछुली विछुँनी नैण रँनी जालु बधिकि पाइआ ॥ संसारु माइआ मोहु मीठा अँति भरमु चुकाइआ ॥ भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अँदेसिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअडिआ परदेसीआ ॥ ३ ॥ नदीआ वाह विछुँनिआ मेला संजोगी राम ॥ जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥ कोइ सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरु जिनि चेतिआ ॥ बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥ हरि नामु भगति न रिदै साचा से अँति धाही रँनिआ ॥ सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुँनिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

१८ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छँत घरु १ ॥

हम घरे साचा सोहिला साचै सबदि सुहाइआ राम ॥ धन पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम ॥ प्रभि आपि मिलाइआ सचु मँनि वसाइआ कामणि सहजे माती ॥ गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रँगि राती ॥ आपु गवाए हरि वरु पाए ता हरि इसु मँनि वसाइआ ॥ कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलित जनमु सबाइआ ॥ १ ॥ दूजडै कामणि भरमि भुली हरि वरु न पाए राम ॥ कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाए राम ॥ बिरथा जनमु गवाए मनमुखि इआणी अउगणवँती झूरे ॥ आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ता पिरु मिलिआ हदूरे ॥ देखि पिरु विगसी अँदरहु सरसी सचै सबदि सुभाए ॥ नानक विणु नावै

कामणिं भरमि भुलाणी मिलिं प्रीतम सुखु पाए ॥ २ ॥ पिरु सँगि कामणिं जाणिआ गुरिं मेलिं मिलार्इ राम ॥ अँतरि सबदि
मिलीं सहजे तपति बुझार्इ राम ॥ सबदि तपति बुझार्इ अँतरि सांति आर्इ सहजे हरि रसु चाखिआ ॥ मिलिं प्रीतम अपने सदा
रँगु माणे सचै सबदि सुभाइआ ॥ पडि पडि पँडित मोनीं थाके भेखीं मुकति न पाई ॥ नानक बिनु भगती जगु बउराना सचै
सबदि मिलार्इ ॥ ३ ॥ साधन मनि अनदु भइआ हरि जीउ मेलिं पिआरे राम ॥ साधन हरि कै रसि रसी गुर कै सबदि अपारे
राम ॥ सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे ॥ सेज सुहावी जा पिरिं रावी मिलिं प्रीतम अवगण नसे ॥ जितु
घरि नामु हरि सदा धिआईए सोहिलड़ा जुग चारे ॥ नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे ॥ ४ ॥ १ ॥ ६
॥

१८ सतिगुर प्रसादि ॥ आशा महला ३ छँत घरु ३ ॥

साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह की भगति करेहो ॥ गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो ॥ भगति करहु तुम सहै केरी जो
सह पिआरे भावए ॥ आपणा भाणा तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवए ॥ भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को
पावए ॥ कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चितु लावए ॥ १ ॥ मेरे मन बैरागीआ तूँ बैरागु करि किसु दिखावहि ॥
हरि सोहिला तिन्ह सद सदा जो हरि गुण गावहि ॥ करि बैरागु तूँ छोडि पाखँडु सो सहु सभु किछु जाणए ॥ जलिं थलिं
महीअलिं एको सोई गुरमुखि हुकमु पछाणए ॥ जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावए ॥ इव कहै नानकु सो
बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए ॥ २ ॥ जह जह मन तूँ धावदा तह तह हरि तेरै नाले ॥ मन सिआणप छोडीए गुर का सबदु
समाले ॥ साथि तेरै सो सहु सदा है इकु खिनु हरि नामु समालहे ॥ जनम जनम के तेरे पाप कटे अँति परम पदु पावहे ॥ साचे
नालिं तेरा गँडु लागै गुरमुखि सदा समाले ॥ इउ लहै नानकु जह मन तूँ धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ॥ ३ ॥ सतिगुर
मिलिरे धावतु थँहिआ निज घरि वसिआ आए ॥ नामु विहाझे नामु लए नामि रहे समाए ॥

धावत थँम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ ॥ तिथै अँमित भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु
 थँम्हि रहाइआ ॥ तह अनेक वाजे सदा अनदु है सचे रहिआ समाए ॥ इउ कहै नानकु सतिगुर मिलिऐ धावतु थँम्हिआ
 निज घरि वसिआ आए ॥ ४ ॥ मन तूँ जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रँगु
 माणु ॥ मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥ गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई
 ॥ मनि सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥ इउ कहै नानकु मन तूँ जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाण ॥ ५ ॥
 मन तूँ गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि ॥ माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि ॥ गारबि लागा जाहि
 मुगध मन अँति गइआ पछुतावहे ॥ अहँकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ॥ मनमुख मुगध चेतहि नाही
 अगै गइआ पछुतावहे ॥ इउ कहै नानकु मन तूँ गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे ॥ ६ ॥ मन तूँ मत माणु करहि
 जि हउ किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु ॥ अँतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु ॥ होहु निमाणा
 सतिगुरु अगै मत किछु आपु लखावहे ॥ आपणै अहँकारि जगतु जलिआ मत तूँ आपणा आपु गवावहे ॥ सतिगुर कै
 भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु ॥ इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ॥ ७ ॥
 धँनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ महा अनँदु सहजु भइआ मनि तनि सुख पाइआ ॥
 सो सहु चिति आइआ मनि वसाइआ अवगण सभि विसारे ॥ जा तिसु भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ॥
 से जन परवाणु होए जिनी इकु नामु दिडिआ दुतीआ भाउ चुकाइआ ॥ इउ कहै नानकु धँनु सु वेला जितु मै सतिगुरु
 मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ ८ ॥ इकि जँत भरमि भुले तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न
 वसाई ॥ तिन की गति अवगति तूँहै जाणहि जिनि इह रचन रचाई ॥ हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै

बुझाए ॥ इउ कहै नानकु किआ जँत विचारे जा तुधु भरमि भुलाए ॥ ९ ॥ सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ तूँ पारब्रह्म
 बेअँतु सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई ॥ सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु मँनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे ॥ तेरे गुण गावहि
 जा तुधु भावहि सचे सिउ चितु लावहे ॥ जिस नो तूँ आपे मेलहि सु गुरुमुखि रहै समाई ॥ इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची
 तेरी वडिआई ॥ १० ॥ २ ॥ ७ ॥ ५ ॥ २ ॥ ७ ॥

रागु आसा छँत महला ४ वरु १ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

जीवनो मै जीवनु पाइआ गुरुमुखि भाए राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरै प्रानि वसाए राम ॥ हरि हरि नामु मेरै प्रानि वसाए सभु
 संसा दूखु गवाइआ ॥ अदिसटु अगोचरु गुरु बचनि धिआइआ पवित्र परम पदु पाइआ ॥ अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई
 सतिगुर बाणी ॥ नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ॥ १ ॥ मनमुखा मनमुखि मुए मेरी करि माइआ राम ॥
 खिनु आवे खिनु जावै दुरगंध मडै चितु लाइआ राम ॥ लाइआ दुरगंध मडै चितु लागा जिउ रँगु कुसँभ दिखाइआ ॥ खिनु पूरबि
 खिनु पछमि छाए जिउ चकु कुमिआरि भवाइआ ॥ दुखु खावहि दुखु सँचहि भोगहि दुख की बिरधि वधाई ॥ नानक बिखमु
 सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई ॥ २ ॥ मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम ॥ हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर
 साहा राम ॥ हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥ नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुँने सुँनि समावै ॥ वणजारे
 इक भाती आवहि लाहा हरि नामु लै जाहे ॥ नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाए ॥ ३ ॥ रतना रतन पदारथ
 बहु सागरु भरिआ राम ॥ बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चडिआ राम ॥ गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चडिआ निरमोलकु रतनु
 अपारा ॥ हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भँडारा ॥ समुँदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई
 ॥ गुर गोविँदु गोविँदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ आसा महला ४ ॥ द्विम द्विमे द्विमि द्विमि वरसै अँमित

धारा राम ॥ गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम ॥ राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई ॥
 कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई ॥ हलति पलति राम नामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी ॥ नानक
 दाति दइआ करि देवै राम नामि निसतारी ॥ १ ॥ रामो राम नामु जपिआ दुख किलविख नास गवाइआ राम ॥ गुर
 परचै गुर परचै धिआइआ मै हिरदै रामु रवाइआ राम ॥ रविआ रामु हिरदै परम गति पाई जा गुर सरणाई आए ॥ लोभ
 विकार नाव डुबदी निकली जा सतिगुर नामु दिडाए ॥ जीअ दानु गुरि पूरै दीआ राम नामि चितु लाए ॥ आपि क्रिपालु
 क्रिपा करि देवै नानक गुर सरणाए ॥ २ ॥ बाणी राम नाम सुणी सिधि कारज सभि सुहाए राम ॥ रोमे रोमि रोमि रोमे मै
 गुरमुखि रामु धिआए राम ॥ राम नामु धिआए पवितु होइ आए तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ रामो रामु रविआ घट अंतरि
 सभ तिसना भूख गवाई ॥ मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा ॥ नानक आपि अनुग्रहु कीआ हम
 दासनि दासनि दासा ॥ ३ ॥ जिनी रामो राम नामु विसारिआ से मनमुख मूड अभागी राम ॥ तिन अंतरे मोहु विआपै
 खिनु खिनु माइआ लागी राम ॥ माइआ मलु लागि मूड भए अभागी जिन राम नामु नह भाइआ ॥ अनेक करम करहि
 अभिमानी हरि रामो नामु चोराइआ ॥ महा बिखमु जम पँथु दुहेला कालूखत मोह अँधिआरा ॥ नानक गुरमुखि नामु
 धिआइआ ता पाए मोख दुआरा ॥ ४ ॥ रामो राम नामु गुरू रामु गुरमुखे जाणै राम ॥ इहु मनूआ खिनु ऊभ पइआली
 भरमदा इकतु घरि आणै राम ॥ मनु इकतु घरि आणै सभ गति मिति जाणै हरि रामो नामु रसाए ॥ जन की पैज रखै राम
 नामा प्रहिलाद उधारि तराए ॥ रामो रामु रमो रमु ऊचा गुण कहतिआ अँतु न पाइआ ॥ नानक राम नामु सुणि भीने रामै
 नामि समाइआ ॥ ५ ॥ जिन अंतरे राम नामु वसै तिन चिँता सभ गवाइआ राम ॥ सभि अरथा सभि धरम मिले मनि
 चिँदिआ सो फलु पाइआ राम ॥ मन चिँदिआ फलु पाइआ राम नामु धिआइआ राम नाम गुण गाए ॥ दुरमति कबुधि

गई सुधि होई राम नामि मनु लाए ॥ सफलु जनमु सरीरु सभ होआ जितु राम नामु परगासिआ ॥ नानक हरि भजु सदा दिनु राती गुरुमुखि निज घरि वासिआ ॥ ६ ॥ जिन सरधा राम नामि लगी तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम ॥ जे धरती सभ कंचनु करि दीजै बिनु नावै सवरु न भाइआ राम ॥ राम नामु मनि भाइआ परम सुखु पाइआ अँति चलदिआ नालि सरवाई ॥ राम नाम धनु पूँजी सँची ना डूबै ना जाई ॥ राम नामु इसु जुग महि तुलहा जमकालु नेड़ि न आवै ॥ नानक गुरुमुखि रामु पछाता करि किरपा आपि मिलावै ॥ ७ ॥ रामो राम नामु सते सति गुरुमुखि जाणिआ राम ॥ सेवको गुरु सेवा लागा जिनि मनु तनु अरपि चडाइआ राम ॥ मनु तनु अरपिआ बहुतु मनि सरधिआ गुरु सेवक भाइ मिलाए ॥ दीना नाथु जीआ का दाता पूरे गुरु ते पाए ॥ गुरु सिखु सिखु गुरु है एको गुरु उपदेसु चलाए ॥ राम नाम मँत हिरदै देवै नानक मिलणु सुभाए ॥ ८ ॥ २ ॥ ९ ॥

१३ सतिगुरु प्रसादि ॥ आसा छँत महला ४ घरु २ ॥

हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ हरि सेवा भाई परम गति पाई हरि ऊतमु हरि हरि कामु जीउ ॥ हरि ऊतम काम जपीऐ हरि नामु हरि जपीऐ असथिरु होवै ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे सहजे ही सुखि सोवै ॥ हरि हरि किरपा धारहु ठाकुर हरि जपीऐ आतमरामु जीउ ॥ हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ १ ॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुरु भाइ जीउ ॥ गुरुमुखि हरि पड़ीऐ गुरुमुखि हरि सुणीऐ हरि जपत सुणत दुखु जाइ जीउ ॥ हरि हरि नामु जपिआ दुखु बिनासिआ हरि नामु परम सुखु पाइआ ॥ सतिगुरु गिआनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अँधेरु गवाइआ ॥ हरि हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि धुरि लिखि पाइ जीउ ॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुरु भाइ जीउ ॥ २ ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ हरि

प्रीति लगाई हरि नामु सरखाई भ्रमु चूका आवणु जाणु जीउ ॥ आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि हरि गुण गाइआ ॥
 जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि हरि नामि समाइआ ॥ जिन हरि धिआइआ धुरि भाग लिखि पाइआ तिन
 सफलु जनमु परवाणु जीउ ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ ३ ॥ जिन्ह हरि
 मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ हरि नामु वडाई हरि नामु सरखाई गुर सबदी हरि रस भोग
 जीउ ॥ हरि रस भोग महा निरजोग वडभागी हरि रसु पाइआ ॥ से धँनु वडे सत पुरखा पूरे जिन गुरमति नामु
 धिआइआ ॥ जनु नानकु रेणु मँगै पग साधु मनि चूका सोगु विजोगु जीउ ॥ जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते
 ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥ आसा महला ४ ॥ सतजुगि सभु सँतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु
 जीउ ॥ मनि तनि हरि गावहि परम सुखु पावहि हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ ॥ गुण गिआनु पदारथु हरि हरि
 किरतारथु सोभा गुरमुखि होई ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दूजा अवरु न कोई ॥ हरि हरि लिव लाई हरि नामु सरखाई
 हरि दरगह पावै मानु जीउ ॥ सतजुगि सभु सँतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ १ ॥ तेता जुगु आइआ अंतरि
 जोरु पाइआ जतु सँजम करम कमाइ जीउ ॥ पगु चउथा खिसिआ त्रै पग टिकिआ मनि हिरदै क्रोधु जलाइ जीउ ॥ मनि
 हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लडि दुखु पाइआ ॥ अंतरि ममता रोगु लगाना हउमै अहँकारु वधाइआ ॥ हरि
 हरि क्रिपा धारी मैरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि लहि जाइ जीउ ॥ तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु सँजम
 करम कमाइ जीउ ॥ २ ॥ जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥ तपु तापन तापहि जग
 पुँन आरँभहि अति किरिआ करम कमाइ जीउ ॥ किरिआ करम कमाइआ पग दुइ खिसकाइआ दुइ पग टिकै टिकाइ जीउ
 ॥ महा जुध जोध बहु कीन्हे विचि हउमै पचै पचाइ जीउ ॥ दीन दइआलि गुरु साधु मिलाइआ मिलि

सतिगुर मलु लहि जाइ जीउ ॥ जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥ ३ ॥ कलिजुगु
 हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ गुर सबदु कमाइआ अउखधु हरि पाइआ हरि कीरति हरि
 सांति पाइ जीउ ॥ हरि कीरति रति आई हरि नामु वडाई हरि हरि नामु खेतु जमाइआ ॥ कलिजुगि बीजु बीजे बिनु
 नावै सभु लाहा मूलु गवाइआ ॥ जन नानकि गुरु पूरा पाइआ मनि हिरदै नामु लखाइ जीउ ॥ कलजुगु हरि कीआ पग
 त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥ आसा महला ४ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम राति
 पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ हरि हरि रसु पाइआ गुरमति हरि धिआइआ धुरि मसतकि भाग पुरान जीउ ॥
 धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु हरि नामै हरि गुण गाइआ ॥ मसतकि मणी प्रीति बहु प्रगटी हरि नामै हरि सोहाइआ
 ॥ जोती जोति मिली प्रभु पाइआ मिलि सतिगुर मनूआ मान जीउ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि
 तनि मीठ लगान जीउ ॥ १ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ तिन्ह हम चरण
 सरेवह खिनु खिनु पग धोवह जिन हरि मीठ लगान जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ परम सुख पाइआ मुखे भागा रती चारे
 ॥ गुरमति हरि गाइआ हरि हारु उरि पाइआ हरि नामा कँठि धारे ॥ सभ एक दिसटि समतु करि देखै सभु आतमरामु
 पछान जीउ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ २ ॥ सतसंगति मनि भाई हरि
 रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ हरि हरि आराधिआ गुर सबदि विगासिआ बीजा अवरु न कोइ जीउ ॥
 अवरु न कोइ हरि अँमितु सोइ जिनि पीआ सो बिधि जाणै ॥ धनु धँनु गुरु पूरा प्रभु पाइआ लागि संगति नामु पछाणै
 ॥ नामो सेवि नामो आराधै बिनु नामै अवरु न कोइ जीउ ॥ सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु
 होइ जीउ ॥ ३ ॥ हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ मोह चीकड़ि फाथे निघरत

हम जाते हरि बांह प्रभू पकराइ जीउ ॥ प्रभि बांह पकराइ ऊतम मति पाई गुर चरणी जनु लागा ॥ हरि हरि नामु जपिआ
 आराधिआ मुखि मसतकि भागु सभागा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी मनि हरि हरि मीठा लाइ जीउ ॥ हरि दइआ
 प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १२ ॥ आसा महला ४ ॥ मनि नामु जपाना
 हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ जो जन मरि जीवे तिन्ह अँमितु पीवै मनि लागा गुरमति भाउ
 जीउ ॥ मनि हरि हरि भाउ गुरु करे पसाउ जीवन मुक्त सुखु होई ॥ जीवणि मरणि हरि नामि सुहेले मनि हरि हरि हिरेद
 सोई ॥ मनि हरि हरि वसिआ गुरमति हरि रसिआ हरि हरि रस गटाक पीआउ जीउ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि
 भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ १ ॥ जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ
 ॥ हरि अँतरि बाहरि हरि प्रभु एको इहु जीअड़ा रखिआ न जाइ जीउ ॥ किउ जीउ रखीजै हरि वसतु लोड़ीजै जिस की
 वसतु सो लै जाइ जीउ ॥ मनमुख करण पलाव करि भरमे सभि अउखध दारु लाइ जीउ ॥ जिस की वसतु प्रभ लए
 सुआमी जन उबरे सबदु कमाइ जीउ ॥ जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ २ ॥
 धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ हरि दरगह पैधे हरि नामै सीधे हरि नामै ते
 सुख पाइआ ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे हरि रामै नामि समाइआ ॥ हरि जन प्रभु रलि एको होए हरि जन प्रभु एक
 समानि जीउ ॥ धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ ३ ॥ गुरु मँत्रु द्विड़ाए
 हरि रसकि रसाए हरि अँमितु हरि मुखि चोइ जीउ ॥ हरि अँमित रसु पाइआ मुआ जीवाइआ फिरि बाहुडि मरणु न होई
 ॥ हरि हरि नामु अमर पदु पाइआ हरि नामि समावै सोई ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है बिनु नावै अवरु न कोइ

जीउ ॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लागि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३ ॥ आसा महला ४ छँत ॥
 वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचर आदि निरँजनु निरँकारु जीउ ॥ ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु
 अलख अपार जीउ ॥ गोविंदु अलख अपारु अपरँपरु आपु आपणा जाणै ॥ किआ इह जँत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि
 वखाणै ॥ जिस नो नदरि करहि तूँ अपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरँजनु
 निरँकारु जीउ ॥ १ ॥ तूँ आदि पुरखु अपरँपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ तूँ घट घट अँतरि सरब निरँतरि सभ
 महि रहिआ समाइ जीउ ॥ घट अँतरि पारब्रह्मु परमेसरु ता का अँतु न पाइआ ॥ तिस रूपु न रेख अदिसटु अगोचरु
 गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सदा अनँदि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ ॥ तूँ आदि पुरखु अपरँपरु करता तेरा पारु
 न पाइआ जाइ जीउ ॥ २ ॥ तूँ सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ हरि हरि प्रभु एको अवरु न कोई
 तूँ आपे पुरखु सुजानु जीउ ॥ पुरखु सुजानु तूँ परधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तेरा सबदु सभु तूँ है वरताहि तूँ आपे करहि
 सु होई ॥ हरि सभ महि रविआ एको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ ॥ तूँ सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी
 निधानु जीउ ॥ ३ ॥ सभु तूँ है करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीऊ ॥ तुधु आपे भावै तिवै चलावहि सभ
 तेरै सबदि समाइ जीउ ॥ सभ सबदि समावै जां तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई ॥ गुरमुखि बुधि पाईए आपु गवाईए सबदे
 रहिआ समाई ॥ तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईए नानक नामि समाइ जीउ ॥ सभु तूँ है करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै
 तिवै चलाइ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ४ छँत घरु ४ ॥

हरि अँमित भिँने लोइणा मनु प्रेमि रतँना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कँचनु सोविँना ॥ गुरमुखि रँगि चलूलिआ
 मेरा मनु तनो भिँना ॥ जनु

नानक मुसकि इकोलिआ सभु जनमु धनु धँना ॥ १ ॥ हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ जिंसु
 लागी पीर पिरँम की सो जाणै जरीआ ॥ जीवन मुकति सो आखीरे मरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि
 जगु दुतरु तरीआ ॥ २ ॥ हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रँगा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक
 मँगा ॥ मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरँगा ॥ मिलि सँत जना हरि पाइआ नानक सतसँगा ॥ ३ ॥ दीन
 दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखे पाइआ ॥ भगति वछलु
 हरि बिखु है हरि लाज रखाइआ ॥ जनु नानक सरणागती हरि नामि तराइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १५ ॥ आसा महला ४ ॥
 गुरमुखि ढँढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ कँचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है
 मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥ १ ॥ पँथु दसावा नित खड़ी मुँध जोबनि बाली राम
 राजे ॥ हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ जन नानक
 सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥ २ ॥ गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुँने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु
 बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिँने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मँने ॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि
 कँमे ॥ ३ ॥ गुर अँम्रित भिँनी देहुरी अँम्रितु बुरके राम राजे ॥ जिना गुरबाणी मनि भाईआ अँम्रिति छकि छके ॥ गुर तुठै
 हरि पाइआ चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइआ नानक हरि इके ॥ ४ ॥ ९ ॥ १६ ॥ आसा महला ४ ॥ हरि अँम्रित
 भगति भँडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धनु धँनु वणजारा वणजु है
 गुरु साहु साबासे ॥ जनु नानक गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥ १ ॥ सचु साहु हमारा तूँ धणी
 सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भांडे विचि वसतु सा

निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भँडारा ॥ २ ॥ हम किआ गुण तेरे विथरह
 सुआमी तूँ अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥ हम मूरख किछूअ न जाणहा किव
 पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥ ३ ॥ जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥
 हम भूलिं विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ हम बारिक तूँ गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ जनु नानकु दासु हरि
 कांठिआ हरि पैज रखाए ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥ आसा महला ४ ॥ जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ
 राम राजे ॥ अगिआनु अँधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ जन
 नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥ १ ॥ जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु
 माणस जनमु दुलँभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ॥ मनमुखा नो
 फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥ २ ॥ तूँ हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि
 चलहि चलाए ॥ जिन्ह तूँ मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥ जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥
 ३ ॥ कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अँतरि कपटु विकारु है तिना रोड़ किआ
 कीजै ॥ हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥ ४
 ॥ ११ ॥ १८ ॥ आसा महला ४ ॥ जिन अँतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे बाहरहु भुलिं चुकि
 बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥
 १ ॥ जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरु सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुरसिखीं, सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुरसिख
 की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥ २ ॥ गुरसिखा

मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥ गुरसिखा की भुख सभ गई
तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ जन नानक हरि पुँनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुँन केरी ॥ ३ ॥ गुरसिखा मनि वाधाईआ
जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख
पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरू तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥ आसा महला
४ ॥ जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्विड़ावै राम राजे ॥ तिस की तिसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु
धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि क्रिपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि
तरावै ॥ १ ॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरू पुरखु मनाइआ तिन पूजे
सभु कोई ॥ जिन्ही सतिगुरू पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ॥ जिन्हा नानकु सतिगुरू भेटिआ तिन्हा मिलिआ हरि
सोई ॥ २ ॥ जिन्हा अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन्ह हरि रखणहारा राम राजे ॥ तिन्ह की निँदा कोई किआ करे जिन्ह हरि नामु
पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥ ३ ॥ हरि जुगु
जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखस दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अहँकारीआ निँदका
पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अँति लए छडाइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥

आसा महला ४ छँत घरु ७ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥ हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥ रँगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा
करे ॥ गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥ गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥ १ ॥ मै प्रेमु न चाखिआ मेरे
पिआरे भाउ करे ॥ मनि तिसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥

नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरै ॥ भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरि धारे ॥ २ ॥ पिर रतिअडे
 मैडे लोइण मेरे पिआरे चात्रिक बूँद जिवै ॥ मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे हरि बूँद पीवै ॥ तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद
 न पवै किवै ॥ हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥ ३ ॥ चडि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते ॥ पिर
 बाझाडिअहु मेरे पिआरे आंगणि धूँडे लुते ॥ मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइ नैन जुते ॥ गुरू नानकु देखि विगसी मेरे
 पिआरे जिउ मात सुते ॥ ४ ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ ॥ गुर विटडिअहु हउ घोली मेरे
 पिआरे जिनि हरि मेलआईआ ॥ सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिँदिअडा फलु पाइआ ॥ हरि तुठडा मेरे पिआरे
 जनु नानकु नामि समाइआ ॥ ५ ॥ पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा ॥ किउ पाई गुरू जितु लागि पिआरा देखसा ॥ हरि
 दातडे मेलि गुरू मुखि गुरमुखि मेलसा ॥ गुरू नानकु पाइआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखुसा ॥ ६ ॥ १४ ॥ २१ ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ५ छँत घरु १ ॥

अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम ॥ चाखिअडा चाखिअडा मै हरि रसु मीठा राम ॥ हरि रसु मीठा मन महि वूठा
 सतिगुरू तूठा सहजु भइआ ॥ छिहु वसि आइआ मंगलु गाइआ पंच दुसट ओइ भागि गइआ ॥ सीतल आघाणे अँमित
 बाणे साजन सँत बसीठा ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ सो प्रभु नैणी डीठा ॥ १ ॥ सोहिअडे सोहिअडे मेरे बँक
 दुआरे राम ॥ पाहुनडे पाहुनडे मेरे सँत पिआरे राम ॥ सँत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा ॥ आपे जात्री
 आपु मात्री आपि सुआमी आपि देवा ॥ अपना कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ॥ कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे
 बँक दुआरे ॥ २ ॥ नव निधे नउ निधे मेरे घर महि आई राम ॥ सभु किछु मै सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम ॥ नामु
 धिआई सदा सखाई सहज सुभाई गोविंदा ॥ गणत

मिटाई चूकी धाई कदे न विआपै मन चिंदा ॥ गोविंद गाजे अनहद वाजे अचरज सोभ बणाई ॥ कहु नानक पिरु मेरै संगे ता मै
 नव निधि पाई ॥ ३ ॥ सरसिअडे सरसिअडे मेरे भाई सभ मीता राम ॥ बिखमो बिखमु अखाड़ा मै गुर मिलि जीता राम ॥
 गुर मिलि जीता हरि हरि कीता तूटी भीता भरम गड़ा ॥ पाइआ खजाना बहुतु निधाना साणथ मेरी आपि खड़ा ॥ सोई
 सुगिआना सो परधाना जो प्रभि अपना कीता ॥ कहु नानक जां वलि सुआमी ता सरसे भाई मीता ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला
 ५ ॥ अकथा हरि अकथ कथा किछु जाइ न जाणी राम ॥ सुरि नर सुरि नर मुनि जन सहजि वखाणी राम ॥ सहजे वखाणी
 अमिउ बाणी चरण कमल रँगु लाइआ जपि एकु अलखु प्रभु निरँजनु मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ तजि मानु मोहु विकारु दूजा
 जोती जोति समाणी ॥ बिनवँति नानक गुर प्रसादी सदा हरि रँगु माणी ॥ १ ॥ हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम
 ॥ वडभागी वडभागी सत संगति पाई राम ॥ वडभागी पाए नामु धिआए लाथे दूख संतापै ॥ गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे
 आपु मिटाइआ आपै ॥ करि किरपा मेले प्रभि अपुनै विछुडि कतहि न जाई ॥ बिनवँति नानक दासु तेरा सदा हरि सरणाई ॥
 २ ॥ हरि दरे हरि दरि सोहनि तेरे भगत पिआरे राम ॥ वारी तिन वारी जावा सद बलिहारे राम ॥ सद बलिहारे करि नमसकारे
 जिन भेटत प्रभु जाता ॥ घटि घटि रवि रहिआ सभ थाई पूरन पुरखु बिधाता ॥ गुर पूरा पाइआ नामु धिआइआ जूरे जनमु न
 हारे ॥ बिनवँति नानक सरणि तेरी राखु किरपा धारे ॥ ३ ॥ बेअँता बेअँत गुण तेरे केतक गावा राम ॥ तेरे चरणा तेरे चरण
 धूडि वडभागी पावा राम ॥ हरि धूडी नाईऐ मैलु गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे ॥ अँतरि बाहरि सदा हदूरे परमेसरु प्रभु साथे
 ॥ मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुडि जोनि न पावा ॥ बिनवँति नानक गुर सरणि तरीऐ आपणे प्रभ भावा ॥ ४ ॥ २ ॥

आसा अँत महला ५ घरु ४ १८ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

हरि चरन कमल मनु बेधिआ किछु आन न मीठा राम राजे ॥ मिलि

संत संगति आराधिया हरिं घटि घटे डीठा राम राजे ॥ हरिं घटि घटे डीठा अँमितो वूठा जनम मरन दुख नाठे ॥ गुण
निधि गाइआ सभ दूख मिटाइआ हउमै बिनसी गाठे ॥ प्रिउ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रँगु मजीठा ॥ हरिं
नानक बेधे चरन कमल किछु आन न मीठा ॥ १ ॥ जिउ राती जलि माछुली तिउ राम रसि माते राम राजे ॥ गुर पूरै
उपदेसिआ जीवन गति भाते राम राजे ॥ जीवन गति सुआमी अँतरजामी आपि लीए लडि लाए ॥ हरिं रतन पदारथो
परगतो पूरमो छोडि न कतहू जाए ॥ प्रभु सुघरु सरूपु सुजानु सुआमी ता की मिटै न दाते ॥ जल सँगि राती माछुली
नानक हरि माते ॥ २ ॥ चात्रिकु जाचै बूँद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे ॥ मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूँ ते
पिआरा राम राजे ॥ सभहूँ ते पिआरा पुरखु निरारा ता की गति नही जाणीए ॥ हरि सासि गिरासि न बिसरै कबहूँ गुर
सबदी रँगु माणीए ॥ प्रभु पुरखु जगजीवनो संत रसु पीवनो जपि भरम मोह दुख डारा ॥ चात्रिकु जाचै बूँद जिउ नानक
हरि पिआरा ॥ ३ ॥ मिले नराइण आपणे मानोरथो पूरा राम राजे ॥ ढाठी भीति भरँम की भेटत गुरु सूरु राम राजे ॥
पूरन गुर पाए पुरबि लिखाए सभ निधि दीन दइआला ॥ आदि मधि अँति प्रभु सोई सुँदर गुर गोपाला ॥ सूख सहज
आनँद घनेरे पतित पावन साधू धूरा ॥ हरि मिले नराइण नानका मानोरथो पूरा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

आसा महला ७ छँत घरु ६ १४ सितिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन्ह राम सिउ भेटत साध संगीत ॥ १ ॥
छँतु ॥ जल दुध निआई रीति अब दुध आच नही मन ऐसी प्रीति हरे ॥ अब उरझिओ अलि कमलेह बासन माहि मगन
इकु खिनु भी नाहि टरै ॥ खिनु नाहि टरीए प्रीति हरीए सीगार हभि रस अरपीए ॥ जह दूखु सुणीए जम पँथु भणीए तह
साध सँगि न डरपीए ॥ करि कीरति गोविंद गुणीए सगल प्राछत दुख हरे ॥ कहु नानक छँत गोविंद हरि के मन

हरि सिउ नेहु करेहु ऐसी मन प्रीति हरे ॥ १ ॥ जैसी मछुली नीर डकु खिनु भी ना धीरे मन ऐसा नेहु करेहु ॥ जैसी चात्रिक
 पिआस खिनु खिनु बूँद चवै बरसु सुहावे मेहु ॥ हरि प्रीति करीजै इहु मनु दीजै अति लाईरे चितु मुरारी ॥ मानु न कीजै
 सरणि परीजै दरसन कउ बलिहारी ॥ गुरु सुप्रसँने मिलु नाह विछुँने धन देदी साचु सनेहा ॥ कहु नानक छँत अनँत ठाकुर
 के हरि सिउ कीजै नेहा मन ऐसा नेहु करेहु ॥ २ ॥ चकवी सूर सनेहु चितवै आस घणी कदि दिनीअरु देखीरे ॥ कोकिल
 अँब परीति चवै सुहावीआ मन हरि रँगु कीजीरे ॥ हरि प्रीति करीजै मानु न कीजै इक राती के हभि पाहुणिआ ॥ अब
 किआ रँगु लाइओ मोहु रचाइओ नागे आवण जावणिआ ॥ थिरु साधू सरणी पड़ीरे चरणी अब टूटसि मोहु जु कितीरे ॥
 कहु नानक छँत दइआल पुरख के मन हरि लाइ परीति कब दिनीअरु देखीरे ॥ ३ ॥ निसि कुरँक जैसे नाद सुणि स्रवणी
 हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै ॥ जैसी तरुणि भतार उरझी पिरहि सिवै इहु मनु लाल दीजै ॥ मनु लालहि दीजै भोग
 करीजै हभि खुसीआ रँग माणे ॥ पिरु अपना पाइआ रँगु लालु बणाइआ अति मिलिओ मित्र चिराणे ॥ गुरु थीआ सारवी
 ता डिठमु आरवी पिर जेहा अवरु न दीसै ॥ कहु नानक छँत दइआल मोहन के मन हरि चरण गहीजै ऐसी मन प्रीति कीजै
 ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ आसा महला ५ ॥ सलोकु ॥ बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि ॥ नानक भेटे साध जब
 हरि पाइआ मन माहि ॥ १ ॥ छँत ॥ जा कउ खोजहि असँख मुनी अनेक तपे ॥ ब्रहमे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे
 ॥ जप ताप सँजम किरिआ पूजा अनिक सोधन बँदना ॥ करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरँजना ॥
 मानुख बनु तिनु पसू पँखी सगल तुझहि अराधते ॥ दइआल लाल गोबिंद नानक मिलु साध सँगति होइ गते ॥ १ ॥
 कोटि बिसन अबतार सँकर जटाधार ॥ चाहहि तुझहि दइआर मनि तनि रुच अपार ॥ अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल
 पूरक प्रभ धनी ॥ सुर सिध गण गँधरब धिआवहि जख किँनर गुण भनी ॥ कोटि इँद्र अनेक देवा जपत सुआमी जै

जैकार ॥ अनाथ नाथ दइआल नानक साध संगति मिलि उधार ॥ २ ॥ कोटि देवी जा कउ सेवहि लखिमी अनिक भाति ॥
 ॥ गुपति प्रगट जा कउ अराधहि पउण पाणी दिनसु राति ॥ नखिअत्र ससीअर सूर धिआवहि बसुध गगना गावए ॥
 सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिआवए ॥ सिम्रिति पुराण चतुर बेदह खटु सासत्र जा कउ जपाति ॥ पतित पावन
 भगति वछल नानक मिलिऐ सँगि सात ॥ ३ ॥ जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी ॥ अनजानत जो सेवै तेती नह जाइ
 गनी ॥ अविगत अगनत अथाह ठाकुर सगल मँझे बाहरा ॥ सरब जाचिक एकु दाता नह दूरि सँगि जाहरा ॥ वसि भगत
 थीआ मिले जीआ ता की उपमा कित गनी ॥ इहु दानु मानु नानकु पाए सीसु साधह धरिं चरनी ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥
 आसा महला ५ ॥ सलोक ॥ उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरिं हरिं राइ ॥ नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु
 दरदु भ्रमु जाइ ॥ १ ॥ छँत ॥ नाम जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥ भेटत साधू संग जम पुरिं नह जाईऐ ॥ दूख दरद न
 भउ बिआपै नामु सिमरत सद सुखी ॥ सासि सासि अराधि हरिं हरिं धिआइ सो प्रभु मनि मुखी ॥ क्रिपाल दइआल रसाल
 गुण निधि करिं दइआ सेवा लाईऐ ॥ नानकु पइअँपै चरण जँपै नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥ १ ॥ पावन पतित
 पुनीत नाम निरँजना ॥ भरम अँधेर बिनास गिआन गुर अँजना ॥ गुर गिआन अँजन प्रभ निरँजन जलिं थलिं महीअलिं
 पूरिआ ॥ इक निमख जा कै रिदँ वसिआ मिटे तिसहि विसूरिआ ॥ अगाधि बोध समरथ सुआमी सरब का भउ भँजना ॥
 नानकु पइअँपै चरण जँपै पावन पतित पुनीत नाम निरँजना ॥ २ ॥ ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥ मोहि
 आसर तुअ चरन तुमारी सरनि सिधे ॥ हरिं चरन कारन करन सुआमी पतित उधरन हरिं रहे ॥ सागर संसार भव उतार
 नामु सिमरत बहु तरे ॥ आदि अँति बेअँत खोजहि सुनी उधरन संत संग बिधे ॥ नानकु पइअँपै चरण जँपै ओट गही
 गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥ ३ ॥ भगति वछुल हरिं बिरदु आपि बनाइआ ॥ जह जह संत अराधहि तह तह

प्रगटाइआ ॥ प्रभिं आपि लीए समाइ सहजिं सुभाइ भगत कारज सारिआ ॥ आनंद हरि जस महा मंगल सरब दूख
 विसारिआ ॥ चमतकार प्रगासु दह दिस एकु तह द्रितसटाइआ ॥ नानकु पइअँपै चरण जँपै भगति वछलु हरि बिरदु आपि
 बनाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ आसा महला ५ ॥ थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ जा कै ग्रिहि हरि नाहु सु सद ही रावए
 ॥ अविनासी अविगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला ॥ नह दूरिं सदा हदूरिं ठाकुरु दह दिस पूरनु सद सदा ॥ प्रानपति
 गति मति जा ते प्रिअ प्रीति प्रीतमु भावए ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ १ ॥ जा
 कउ राम भतारु ता कै अनदु घणा ॥ सुखवंती सा नारिं सोभा पूरिं बणा ॥ माणु महतु कलिआणु हरि जसु सँगि सुरजनु सो
 प्रभू ॥ सरब सिधि नव निधि तितु ग्रिहि नही ऊना सभु कछू ॥ मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ता का बणा ॥
 नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा को रामु भतारु ता कै अनदु घणा ॥ २ ॥ आउ सरखी संत पासि सेवा लागीरे ॥ पीसउ
 चरण परवारि आपु तिआगीरे ॥ तजिं आपु मिटै संतापु आपु नह जाणाईरे ॥ सरणिं गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईरे
 ॥ करिं दास दासी तजिं उदासी कर जोड़ि दिनु रैणिं जागीरे ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आउ सरखी संत पासि सेवा
 लागीरे ॥ ३ ॥ जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ ता की पूरन आस जिन्ह साध सँगु पाइआ ॥ साध सँगि हरि कै
 रँगि गोबिंद सिमरण लागिआ ॥ भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहिं तिआगिआ ॥ मनि सांति सहजु सुभाउ वूठा अनद
 मंगल गुण गाइआ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥ आसा
 महला ५ ॥ सलोकु ॥ हरिं हरिं नामु जपँतिआ कछु न कहै जमकालु ॥ नानक मनु तनु सुखी होइ अँते मिलै गोपालु ॥ १
 ॥ छँत ॥ मिलउ संतन कै सँगि मोहि उधारि लेहु ॥ बिनउ करउ कर जोड़ि हरिं हरिं नामु देहु ॥ हरि नामु मागउ चरण
 लागउ मानु तिआगउ तुम्ह दइआ ॥ कतहँ न धावउ सरणिं पावउ करुणा मै प्रभ करि मइआ ॥ समरथ अगथ

अपार निरमल सुणहु सुआमी बिनउ एहु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥ १ ॥ अपराधी मतिहीनु
 निरगुनु अनाथु नीचु ॥ सठ कठोरु कुलहीनु बिआपत मोह कीचु ॥ मल भरम करम अहँ ममता मरणु चीति न आवए ॥
 बनिता बिनोद अनंद माइआ अगिआनता लपटावए ॥ खिसै जोबनु बधै जरुआ दिन निहारे सँगि मीचु ॥ बिनवँति नानक
 आस तेरी सरणि साधू राखु नीचु ॥ २ ॥ भरमे जनम अनेक संकट महा जोन ॥ लपटि रहिओ तिह सँगि मीठे भोग सोन ॥
 भ्रमत भार अगनत आइओ बहु प्रदेसह धाइओ ॥ अब ओट धारी प्रभ मुरारी सरब सुख हरि नाइओ ॥ राखनहारे प्रभ पिआरे
 मुझ ते कछू न होआ होन ॥ सूख सहज आनंद नानक क्रिपा तेरी तरै भउन ॥ ३ ॥ नाम धारीक उधारे भगतह संसा कउन ॥
 जेन केन परकारे हरि हरि जसु सुनहु श्रवन ॥ सुनि श्रवन बानी पुरख गिआनी मनि निधाना पावहे ॥ हरि रँगि राते प्रभ बिधाते
 राम के गुण गावहे ॥ बसुध कागद बनराज कलमा लिखण कउ जे होइ पवन ॥ बेअँत अँतु न जाइ पाइआ गही नानक चरण
 सरन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥ आसा महला ५ ॥ पुरख पते भगवान ता की सरणि गही ॥ निरभउ भए परान चिँता सगल लही ॥
 मात पिता सुत मीत सुरिजन इसट बँधप जाणिआ ॥ गहि कँठि लाइआ गुरि मिलाइआ जसु बिमल संत वखाणिआ ॥ बेअँत
 गुण अनेक महिमा कीमति कछू न जाइ कही ॥ प्रभ एक अनिक अलख ठाकुर ओट नानक तिसु गही ॥ १ ॥ अँमित बनु
 संसारु सहाई आपि भए ॥ राम नामु उर हारु बिखु के दिवस गए ॥ गतु भरम मोह बिकार बिनसे जोनि आवण सभ रहे ॥
 अगनि सागर भए सीतल साध अँचल गहि रहे ॥ गोविंद गुपाल दइआल संमिथ बोलि साधू हरि जै जए ॥ नानक नामु धिआइ
 पूरन साध सँगि पाई परम गते ॥ २ ॥ जह देखउ तह सँगि एको रवि रहिआ ॥ घट घट वासी आपि विरलै किनै लहिआ ॥
 जलि थलि महीअलि पूरि पूरन कीट हसति समानिआ ॥ आदि अँते मधि सोई गुर प्रसादी जानिआ ॥ ब्रहमु पसरिआ ब्रहम
 लीला गोविंद गुण निधि जनि कहिआ ॥ सिमरि सुआमी अँतरजामी हरि एकु नानक रवि रहिआ ॥ ३ ॥ दिनु रैणि

सुहावडी आई सिमरत नामु हरे ॥ चरण कमल सँगि प्रीति कलमल पाप टरे ॥ दूख भूख दारिद्र नाठे प्रगटु मगु दिखाइआ ॥
मिलि साधसँगे नाम रँगे मनि लोडीदा पाइआ ॥ हरि देखि दरसनु इछु पुँनी कुल संबूहा सभि तरे ॥ दिनसु रैणि अनंद अनदिनु
सिमरंत नानक हरि हरे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

आसा महला ५ छँत घरु ७ १४ शितिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू सँग ॥ नानक नामु न विसरउ इक घडी करि किरपा भगवँत ॥ १ ॥ छँत ॥
भिँनी रैनडीऐ चामकनि तारे ॥ जागहि सँत जना मेरे राम पिआरे ॥ राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥ चरण
कमल धिआनु हिरदै प्रभ विसरु नाही इकु खिनो ॥ तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे ॥ बिनवँति नानक सदा
जागहि हरि दास सँत पिआरे ॥ १ ॥ मेरी सेजडीऐ आडँबरु बणिआ ॥ मनि अनदु भइआ प्रभु आवत सुणिआ ॥ प्रभ मिले
सुआमी सुखह गामी चाव मँगल रस भरे ॥ अँग सँगि लागे दूख भागे प्राण मन तन सभि हरे ॥ मन इछ पाई प्रभ धिआई
सँजोगु साहा सुभ गणिआ ॥ बिनवँति नानक मिले श्रीधर सगल आनंद रसु बणिआ ॥ २ ॥ मिलि सखीआ पुछहि कहु कँत
नीसाणी ॥ रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी ॥ गुण गूड गुपत अपार करते निगम अँतु न पावहे ॥ भगति भाइ धिआइ
सुआमी सदा हरि गुण गावहे ॥ सगल गुण सुगिआन पूरन आपणे प्रभ भाणी ॥ बिनवँति नानक रँगि राती प्रेम सहजि समाणी
॥ ३ ॥ सुख सोहिलडे हरि गावण लागे ॥ साजन सरसिअडे दुख दुसमन भागे ॥ सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे प्रभि
आपि किरपा धारीआ ॥ हरि चरण लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ ॥ सुभ दिवस आए सहजि पाए सगल निधि प्रभ पागे
॥ बिनवँति नानक सरणि सुआमी सदा हरि जन तागे ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥ आसा महला ५ ॥ उठि वँजु वटाऊडिआ तै किआ
चिरु लाइआ ॥ मुहलति पँनडीआ कितु कूडि लोभाइआ ॥ कूडे लुभाइआ धोहु माइआ करहि पाप अमितिआ ॥ तनु भसम

देरी जमहि हेरी कालि बपुडै जितिआ ॥ मालु जोबनु छोडि वैसी रहिओ पैणु खाइआ ॥ नानक कमाणे सँगि जुलिआ
 नह जाइ किरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ फाथोहु मिरग जिवै पेखि रैणि चंद्राइणु ॥ सूखहु दूख भए नित पाप कमाइणु ॥ पापा
 कमाणे छडहि नाही लै चले घति गलाविआ ॥ हरिचंदउरी देखि मूठा कूडु सेजा राविआ ॥ लबि लोभि अहँकारि माता
 गरबि भइआ समाइणु ॥ नानक म्रिग अगिआनि बिनसे नह मिटै आवणु जाइणु ॥ २ ॥ मिठै मखु मुआ किउ लए ओडारी
 ॥ हसती गरति पइआ किउ तरीऐ तारी ॥ तरणु दुहेला भइआ खिन महि खसमु चिति न आइओ ॥ दूखा सजाई गणत
 नाही कीआ अपणा पाइओ ॥ गुझा कमाणे प्रगटु होआ ईत उतहि खुआरी ॥ नानक सतिगुर बाझु मूठा मनमुखो
 अहँकारी ॥ ३ ॥ हरि के दास जीवै लगि प्रभ की चरणी ॥ कँठि लगाइ लीए तिसु ठाकुर सरणी ॥ बल बुधि गिआनु
 धिआनु अपणा आपि नामु जपाइआ ॥ साध सँगति आपि होआ आपि जगतु तराइआ ॥ राखि लीए रखणहारै सदा
 निरमल करणी ॥ नानक नरकि न जाहि कबहुँ हरि सँत हरि की सरणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ आसा महला ५ ॥ वँजु मेरे
 आलसा हरि पासि बेनँती ॥ रावउ सहु आपनडा प्रभ सँगि सोहँती ॥ सँगे सोहँती कँत सुआमी दिनसु रैणी रावीरे ॥
 सासि सासि चितारि जीवा प्रभु पेखि हरि गुण गावीरे ॥ बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ अमिउ द्रिसटि सिँचँती ॥ बिनवँति
 नानकु मेरी इछ पुँनी मिले जिसु खोजँती ॥ १ ॥ नसि वँजहु किलविखहु करता घरि आइआ ॥ दूतह दहनु भइआ गोविँदु
 प्रगटाइआ ॥ प्रगटे गुपाल गोबिँद लालन साध सँगि वखाणिआ ॥ आचरजु डीठा अमिउ वूठा गुर प्रसादी जाणिआ ॥
 मनि साँति आई वजी वधाई नह अँतु जाई पाइआ ॥ बिनवँति नानक सुख सहजि मेला प्रभू आपि बणाइआ ॥ २ ॥ नरक
 न डीठडिआ सिमरत नाराइण ॥ जै जै धरमु करे दूत भए पलाइण ॥ धरम धीरज सहज सुखीए साध सँगति हरि भजे ॥
 करि अनुग्रहु राखि लीने मोह ममता सभ तजे ॥ गहि कँठि लाए गुरि मिलाए गोविँद जपत अघाइण ॥ बिनवँत नानक

सिमरि सुआमी सगल आस पुजाइण ॥ ३ ॥ निधि सिधि चरण गहे ता केहा काड़ा ॥ सभु किछु वसि जिसै सो प्रभू असाड़ा ॥
 ॥ गहि भुजा लीने नाम दीने करु धारि मसतकि राखिआ ॥ संसार सागरु नह विआपै अमिओ हरि रसु चाखिआ ॥ साध
 संगे नाम रंगे रणुजीति वडा अखाड़ा ॥ बिनवति नानक सरणि सुआमी बहुड़ि जमि न उपाड़ा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥ आसा
 महला ५ ॥ दिनु राति कमाइअडो सो आइओ माथै ॥ जिसु पासि लुकाइदडो सो वेखी साथै ॥ सँगि देखै करणहारा काइ
 पापु कमाईऐ ॥ सुकितु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥ आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तैरै साथे ॥ भजु साध
 संगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥ १ ॥ वलवँच करि उदरु भरहि मूरख गावारा ॥ सभु किछु दे रहिआ हरि
 देवणहारा ॥ दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ ॥ मिलु साध संगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ ॥ सिध
 साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा ॥ बिनवति नानक सदा भजीऐ प्रभु एकु करणैहारा ॥ २ ॥ खोटु न कीचई प्रभु
 परखणहारा ॥ कूडु कपटु कमावदडे जनमहि संसारा ॥ संसारु सागरु तिन्ही तरिआ जिन्ही एक धिआइआ ॥ तजि कामु
 क्रोधु अनिँद निँदा प्रभ सरणाई आइआ ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा ॥ बिनवति नानक टेक
 जन की चरण कमल अधारा ॥ ३ ॥ पेखु हरिचँदउरडी असथिरु किछु नाही ॥ माइआ रँग जेते से सँगि न जाही ॥ हरि
 सँगि साथी सदा तैरै दिनसु रैणि समालीऐ ॥ हरि एक बिनु कछु अवरु नाही भाउ दुतीआ जालीऐ ॥ मीतु जोबनु मालु
 सरबसु प्रभु एकु करि मन माही ॥ बिनवति नानक वडभागि पाईऐ सूखि सहजि समाही ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

आसा महला ५ छँत घरु ८ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

कमला भ्रम भीति कमला भ्रम भीति है तीखण मद बिपरीति हे अवध अकारथ जात ॥ गहबर बन घोर गहबर बन घोर हे गिह
 मूसत चोर हे दिनकरो अनदिनु खात ॥

दिन खात जात बिहात प्रभ बिनु मिलहु प्रभ करुणापते ॥ जनम मरण अनेक बीते प्रिअ सँग बिनु कछु नह गते ॥ कुल रूप
 धूप गिआनहीनी तुझ बिना मोहि कवन मात ॥ कर जोड़ि नानकु सरणि आइओ प्रिअ नाथ नरहर करहु गात ॥ १ ॥ मीना
 जल हीन मीना जल हीन हे ओहु बिछुरत मन तन खीन हे कत जीवनु प्रिअ बिनु होत ॥ सनमुख सहि बान सनमुख सहि बान
 हे प्रिग अपे मन तन प्रान हे ओहु बेधिओ सहज सरोत ॥ प्रिअ प्रीति लागी मिलु बैरागी खिनु रहनु धिगु तनु तिसु बिना ॥
 पलका न लागै प्रिअ प्रेम पागै चितवति अनदिनु प्रभ मना ॥ श्रीरंग राते नाम माते भै भरम दुतीआ सगल खोत ॥ करि मइआ
 दइआ दइआल पूरन हरि प्रेम नानक मगन होत ॥ २ ॥ अलीअल गुंजात अलीअल गुंजात हे मकरंद रस बासन मात हे प्रीति
 कमल बंधावत आप ॥ चात्रिक चित पिआस चात्रिक चित पिआस हे घन बूँद बचित्रि मनि आस हे अल पीवत बिनसत ताप
 ॥ तापा बिनासन दूख नासन मिलु प्रेमु मनि तनि अति घना ॥ सुंदरु चतुरु सुजान सुआमी कवन रसना गुण भना ॥ गहि
 भुजा लेवहु नामु देवहु दिसटि धारत मिटत पाप ॥ नानकु जँपै पतित पावन हरि दरसु पेखत नह सँताप ॥ ३ ॥ चितवउ
 चित नाथ चितवउ चित नाथ हे रखि लेवहु सरणि अनाथ हे मिलु चाउ चाईले प्रान ॥ सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे
 मनु लुबध गोपाल गिआन हे जाचिक जन राखत मान ॥ प्रभ मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछ पुजँतीआ ॥ हरि कँठि लागे
 दिन सभागे मिलि नाह सेज सोहँतीआ ॥ प्रभ दिसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भए हान ॥ बिनवति नानक मेरी आस
 पूरन मिले श्रीधर गुण निधान ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥

वृत्तिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजुनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टूँडे अस राजै की धुनी ॥

सलोक मः १ ॥ बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥

जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥ १ ॥ महला २ ॥ जे सउ चँदा उगवहि सूरज चढ़हि हजार ॥ एते चानण
 होदिआं गुर बिनु घोर अँधार ॥ २ ॥ मः १ ॥ नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड़ जिउ सुँजे अँदरि
 खेत ॥ खेतै अँदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआहु ॥ ३ ॥ आपीन्है आपु
 साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥ दुरी कुदरति साजीए करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि तूँ तुसि देवहि करहि
 पसाउ ॥ तूँ जाणोई सभसै दे लैसहि जिँदु कवाउ ॥ कर आसणु डिठो चाउ ॥ १ ॥ सलोक मः १ ॥ सचे तेरे खँड सचे ब्रहमँड
 ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु
 ॥ सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ सचे तुधु आरवहि लख करोड़ि ॥ सचे सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ सची तेरी सिफति
 सची सालाह ॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ नानक सचु धिआइनि सचु ॥ जो मरि जँमे सु कचु निकचु ॥ १ ॥ मः १
 ॥ वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ वडी वडिआई जाणै
 आलाउ ॥ वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ वडी वडिआई जा आपे आपि ॥ नानक कार न
 कथनी जाइ ॥ कीता करणा सरब रजाइ ॥ २ ॥ महला २ ॥ इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ इकन्हा हुकमि
 समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ इकन्हा भाणै कटि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ एव भि आखि न जापई जि
 किसै आणे रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीए जा कउ आपि करे परगासु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै
 धरमु बहालिआ ॥ ओथै सचे ही सचि निबडै चुणि वखि कटे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह कालहै दोजकि
 चालिआ ॥ तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ २ ॥ सलोक मः १ ॥
 विसमादु नाद विसमादु वेद ॥ विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥ विसमादु रूप विसमादु रँग ॥ विसमादु नागे फिरहि

जँत ॥ विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥ विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥ विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ विसमादु
 सादि लगहि पराणी ॥ विसमादु सँजोगु विसमादु विजोगु ॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥ विसमादु सिफति विसमादु
 सालाह ॥ विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥ विसमादु नेडै विसमादु दूरि ॥ विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ वेखि विडाणु
 रहिआ विसमादु ॥ नानक बुझणु पूरै भागि ॥ १ ॥ मः १ ॥ कुदरति दिसै कुदरति सुणीरे कुदरति भउ सुख सारु ॥
 कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥ कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा
 पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥ कुदरति जाती जिनसी रँगी कुदरति जीअ जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ
 कुदरति मानु अभिमानु ॥ कुदरति पउणु पाणी बैसँतरु कुदरति धरती खाकु ॥ सभ तेरी कुदरति तूँ कादिरु करता पाकी नाई
 पाकु ॥ नानक हुकमै अँदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥ २ ॥ पउडी ॥ आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमडि भउरु सिधाइआ
 ॥ वडा होआ दुनीदारु गलि सँगलु घति चलाइआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीरे बहि लेखा करि समझाइआ ॥ थाउ न होवी
 पउदीई हुणि सुणीरे किआ रूआइआ ॥ मनि अँधै जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ सलोक मः १ ॥ भै विचि वहै सद वाउ ॥ भै
 विचि चलहि लख दरीआउ ॥ भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ भै विचि धरती दबी भारि ॥ भै विचि इँदु फिरै सिर भारि ॥ भै
 विचि राजा धरम दुआरु ॥ भै विचि सूरजु भै विचि चँदु ॥ कोह करोड़ी चलत न अँतु ॥ भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ भै
 विचि आडाणे आकास ॥ भै विचि जोध महाबल सूर ॥ भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु
 ॥ नानक निरभउ निरँकार सचु एकु ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक निरभउ निरँकारु होरि केते राम खाल ॥ केतीआ कँन्ह
 कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ केते नचहि मँगते गिडि मुडि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥ गावहि
 राजे राणीआ बोलहि आल पाताल ॥ लख टकिआ के मुँदड़े लख टकिआ के हार ॥ जितु तनि पाईअहि नानका से तन

होवहि छार ॥ गिआनु न गलीई दूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥ २ ॥
 पउडी ॥ नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ एहु जीउ बहुते जनम भरमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ
 ॥ सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु
 गवाइआ ॥ जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥ ४ ॥ सलोक मः १ ॥ घडीआ सभे गोपीआ पहर कँन्ह गोपाल ॥ गहणे पउणु
 पाणी बैसंतरु चँदु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जँजाल ॥ नानक मूसै गिआन विहूणी खाइ
 गइआ जमकालु ॥ १ ॥ मः १ ॥ वाइनि चले नचनि गुर ॥ पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥ उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥ वेखै
 लोकु हसै घरि जाइ ॥ रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥
 गावनि सीता राजे राम ॥ निरभउ निरँकारु सचु नामु ॥ जा का कीआ सगल जहानु ॥ सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥
 भिनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥ सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥ कोलू चरखा चकी चकु ॥
 थल वारोले बहुतु अनँतु ॥ लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ पँखी भउदीआ लैनि न साह ॥ सूऐ चाड़ि भवाईअहि जँत ॥
 नानक भउदिआ गणत न अँत ॥ बँधन बँधि भवाए सोइ ॥ पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥ नचि नचि हसहि चलहि से रोइ
 ॥ उडि न जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥ २ ॥ पउडी ॥
 नाउ तेरा निरँकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ पिँडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चँगा
 आपणा करि पुँनहु नीचु सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥ ५ ॥ सलोक मः
 १ ॥ मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बँद से जि पवहि विचि बँदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू
 सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सँनि धिआवन्हि

जेते अलख नामु करतारु ॥ सूखम मूरति नामु निरँजन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि सँतोखु उपजै देणै कै वीचारि
 ॥ दे दे मँगहि सहसा गूणा सोभ करे सँसारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ
 तिना भि काई कार ॥ जलिं थलिं जीआ पूरीआ लोआ आकारा आकार ॥ ओइ जिं आखहिं सु तूँ है जाणहिं तिना भि तेरी
 सार ॥ नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ सदा अनँदि रहहिं दिनु राती गुणवँतिआ पा छारु ॥ १ ॥ मः १
 ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ जलिं जलिं रिवै बपुड़ी झड़ि झड़ि
 पवहिं अँगिआर ॥ नानक जिनिं करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु
 सतिगुर किनै न पाइआ ॥ सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखिं सुणाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है
 जिनिं विचहु मोहु चुकाइआ उतमु एहु बीचारु है जिनिं सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥ ६ ॥ सलोक मः
 १ ॥ हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जँमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ हउ विचि
 खटिआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुँन वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि
 अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जातीं जिनसी खोवै ॥ हउ विचि
 मूरख हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ हउमै करिं करिं जँत
 उपाइआ ॥ हउमै बूझौ ता दरु सूझौ ॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझौ ॥ नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ जेहा वेखहिं तेहा
 वेखु ॥ १ ॥ महला २ ॥ हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाइ ॥ हउमै एई बँधना फिरि फिरि जोनी पाहिं ॥ हउमै किथहु
 ऊपजै कितु सँजमि इह जाइ ॥ हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहिं ॥ हउमै दीरघ रोगु है दारु भी इसु माहिं ॥ किरपा करे
 जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहिं ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु इतु सँजमि दुख जाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सेव कीती सँतोखीई.

जिन्हीं सचो सचु धिआइआ ॥ ओन्ह मँदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥ ओन्हीं दुनीआ तोड़े बँधना अँनु पाणी
थोड़ा खाइआ ॥ तूँ बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ वडिआई वडा पाइआ ॥ ७ ॥ सलोक मः १ ॥ पुरखां
बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥ दीपां लोआं मँडलां खँडां वरभँडांह ॥ अँडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥ सो मिति
जाणै नानका सरां मेरां जँताह ॥ नानक जँत उपाइ कै सँमाले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिँता भिं करणी ताह ॥ सो
करता चिँता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका
किआ तगु ॥ १ ॥ मः १ ॥ लख नेकीआ चँगिआईआ लख पुँना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥ सख
सूरतण सँगराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ
लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा साहिबु एकु तूँ जिनि सचो सचु
वरताइआ ॥ जिसु तूँ देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्हीं सचु कमाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ
॥ मूरख सचु न जाणणी मनमुखी जनमु गवाइआ ॥ विचि दुनीऐ काहे आइआ ॥ ८ ॥ सलोक मः १ ॥ पड़ि पड़ि गडी
लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते
मास ॥ पड़ीअहि जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥ १ ॥ मः १ ॥ लिखि
लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ ॥ तेतो लविआ ॥ बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ सहु वे जीआ
अपणा कीआ ॥ अँनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥ बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥ बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥ मोनि
विगूता ॥ किउ जाणै गुर बिनु सूता ॥ पग उपेताणा ॥ अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ मूरखि अँधै
पति गवाई ॥ विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥ रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ अँधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥ सतिगुरु भेटे सो

सुखु पाए ॥ हरि का नामु मँनि वसाए ॥ नानक नदरि करे सो पाए ॥ आस अँदैसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥ २ ॥
 पउड़ी ॥ भगत तैरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ॥ इकि मूलु न
 बुझनिहि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥ हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥ तिन्ह मँगा जिं तुझै
 धिआइदे ॥ ९ ॥ सलोकु मः १ ॥ कूडु राजा कूडु परजा कूडु सभु सँसारु ॥ कूडु मँडप कूडु माड़ी कूडु बैसणहारु ॥ कूडु
 सुइना कूडु रुपा कूडु पैन्हणहारु ॥ कूडु काइआ कूडु कपडु कूडु रूप अपारु ॥ कूडु मीआ कूडु बीबी खपि होए खारु ॥
 कूडि कूडै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूडु मिठा कूडु माखिउ कूडु डोबे
 पूरु ॥ नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूडो कूडु ॥ १ ॥ मः १ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ कूडु की मलु
 उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ सचु
 ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची
 लेइ ॥ दइआ जाणै जीअ की किछु पुँनु दानु करेइ ॥ सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ सतिगुरु नो
 पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ सचु सभना होइ दारु पाप कढै धोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥ २ ॥
 पउड़ी ॥ दानु महिँडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ कूडा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु
 तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूडि तिन्हा दी पाईऐ ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥ १० ॥
 सलोकु मः १ ॥ सचि कालु कूडु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इकु होइ
 त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रँगु न सोइ ॥ भै विचि खुँबि चड़ाईऐ सरमु पाह तनि होइ ॥ नानक
 भगती जे रपै कूडै सोइ न कोइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ लबु पापु दुइ राजा महता कूडु होआ सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ

बहि बहि करे बीचारु ॥ अँधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥ गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु
 ॥ ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥ मूरख पँडित हिकमति हुजति सँजै करहि पिआरु ॥ धरमी धरमु करहि
 गावावहि मँगहि मोख दुआरु ॥ जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥ सभु को पूरा आपे होवै घटि न
 कोई आखै ॥ पति परवाणा पिछै पाईरे ता नानक तोलिआ जापै ॥ २ ॥ मः १ ॥ वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ
 ॥ सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ जिन की लेखै पति पवै चँगे सेई केइ
 ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥ एना जँता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी
 जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूँ मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥ गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ
 ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥ ११ ॥ सलोक मः १ ॥ दुखु दारु सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूँ करता
 करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥ १ ॥ बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अँतु न जाई लखिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूँ सचा साहिबु सिफति सुआलिहउ जिनि कीती सो पारि
 पइआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ २ ॥ मः २ ॥ जोग सबदँ गिआन सबदँ बेद
 सबदँ ब्राहमणह ॥ खत्री सबदँ सूर सबदँ सूद्र सबदँ परा क्रितह ॥ सरब सबदँ एक सबदँ जे को जाणै भेउ ॥ नानक ता का
 दासु है सोई निरँजन देउ ॥ ३ ॥ मः २ ॥ एक क्रिसनँ सरब देवा देव देवा त आतमा ॥ आतमा बासुदेवस्थि जे को जाणै
 भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरँजन देउ ॥ ४ ॥ मः १ ॥ कुँभे बधा जलु रहै जल बिनु कुँभु न होइ ॥ गिआन का
 बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ पडिआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीरे ॥ जेहा घाले
 घालणा तेवेहो नाउ पचारीरे ॥ ऐसी कला न खेडीरे जितु दरगह गइआ हारीरे ॥ पडिआ अतै ओमीआ वीचारु अगै

वीचारीरे ॥ मुहि चलै सु अगै मारीरे ॥ १२ ॥ सलोकु मः १ ॥ नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि
 वटाईअहि गिआनी बुझाहि ताहि ॥ सतिजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रैतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥
 दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूडु अगै रथवाहु ॥ १ ॥ मः १ ॥ साम कहै सेतंबरु
 सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥ रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइ
 लइरे परछत जाहि ॥ नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥
 पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥ नील बसत्र
 ले कपडे पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ चारे वेद होए सचिआर ॥ पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥ भाउ भगति करि
 नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखंतरु पाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिरे खसमु समालिआ ॥ जिनि
 करि उपदेसु गिआन अँजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥ खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ सतिगुरु है
 बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥ १३ ॥ सलोक मः १ ॥ सिँमल रुखु सराइरा अति दीरघ
 अति मुचु ॥ ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कँमि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी
 नानका गुण चँगिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीरे निवै सु गउरा होइ ॥
 अपराधी दूणा निवै जो हँता मिरगाहि ॥ सीसि निवाइरे किआ थीरे जा रिदै कुसुधे जाहि ॥ १ ॥ मः १ ॥ पड़ि पुसतक
 सँधिआ बादँ ॥ सिल पूजसि बगुल समाधँ ॥ मुखि जूठ बिभूखण सारँ ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारँ ॥ गलि माला तिलकु
 लिलाटँ ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटँ ॥ जे जाणसि ब्रहमँ करमँ ॥ सभि फोकट निसचउ करमँ ॥ कहु नानक निहचउ धिआवै
 ॥ विणु सतिगुर वाट न पावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कपडु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अँदरि जावणा ॥ मँदा चँगा आपणा

आपे ही कीता पावणा ॥ हुकम कीए मनि भावदे राहि भीडै अगै जावणा ॥ नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥
 करि अउगण पछोतावणा ॥ १४ ॥ सलोकु मः १ ॥ दइआ कपाह सँतोखु सूतु जतु गँढी सतु वटु ॥ एह जनेऊ जीअ
 का हई त पाडे घतु ॥ ना एहु तूटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥ धँनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ चउकड़ि
 मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ सिखा कँनि चड़ाइआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ ओहु मुआ ओहु इडि पइआ वेतगा
 गइआ ॥ १ ॥ मः १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु
 जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीरे बाम्हणु वटे आइ ॥ कुहि बकरा रिन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ होइ पुराणा सुटीरे
 भी फिरि पाईरे होरु ॥ नानक तगु न तूटई जे तगि होवै जोरु ॥ २ ॥ मः १ ॥ नाइ मँनिरे पति ऊपजै सालाही सचु सूतु
 ॥ दरगह अँदरि पाईरे तगु न तूटसि पूत ॥ ३ ॥ मः १ ॥ तगु न इँद्री तगु न नारी ॥ भलके थुक पवै नित दाडी ॥ तगु न
 पैरी तग न हथी ॥ तगु न जिहवा तगु न अखी ॥ वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे अवर घतै ॥ लै भाड़ि करे वीआहु ॥
 कटि कागलु दसे राहु ॥ सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥ मनि अँधा नाउ सुजाणु ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ साहिबु होइ दइआल
 किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥ सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥ हुकमि मँनिरे होवै परवाणु ता खसमै का
 महलु पाईसी ॥ खसमै भावै सो करे मनहु चिँदिआ सो फलु पाइसी ॥ ता दरगह पैधा जाइसी ॥ १५ ॥ सलोक मः १ ॥
 गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥ अँतरि पूजा पड़हि
 कतेबा सँजमु तुरका भाई ॥ छोडीले पाखँडा ॥ नामि लइरे जाहि तरँदा ॥ १ ॥ मः १ ॥ माणस खाणे करहि निवाज ॥
 छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥ तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥ उन्हा भि आवहि ओई साद ॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥
 कूडु बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूडु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥

हथि छुरी जगत कासाई ॥ नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा
 बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसे न जाणा ॥ दे के चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै
 ॥ इहु अँनु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईरे ॥ सुचि होवै ता
 सचु पाईरे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चितै अँदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा
 ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धँधै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मँगनि भिख न पाइदा
 ॥ १६ ॥ सलोकु मः १ ॥ जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिआणीरे पितरी चोर करेइ ॥
 वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जिं खटे घाले देइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ जिउ जोरु
 सिरनावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखे वसै नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे एहि न आखीअहि बहनि जिं पिँडा धोइ
 ॥ सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण वेग हर रँगी हरम सवारिआ ॥ कोठे मँडप
 माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि खाइआ वेखि
 महलति मरणु विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥ १७ ॥ सलोकु मः १ ॥ जे करि सूतकु मँनीरे सभ तै सूतकु होइ
 ॥ गोहे अतै लकड़ी अँदरि कीड़ा होइ ॥ जेते दाणे अँन के जीअ बाझु न कोइ ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभ
 कोइ ॥ सूतकु किउ करि रखीरे सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ मन का
 सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूडु ॥ अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥ कँनी सूतकु कँनि पै लाइतबारी खाहि
 ॥ नानक हँसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥ २ ॥ मः १ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥ जँमणु मरणा हुकमु है
 भाणै आवै जाइ ॥ खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु सँबाहि ॥ नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा

सूतक नाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु वडा करि सालाहीरे जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि मेले ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कठीआ बुरिआईआ ॥ सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥ १८ ॥ सलोकु मः १ ॥ पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़नि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ अँनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पँजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक एवै जाणीरे तितु मुखि थुका पाहि ॥ १ ॥ मः १ ॥ भँडि जँमीरे भँडि निँमीरे भँडि मँगणु वीआहु ॥ भँडहु होवै दोसती भडहु चलै राहु ॥ भँडु मुआ भँडु भालीरे भँडि होवै बँधानु ॥ सो किआ मँदा आखीरे जितु जँमहि राजान ॥ भँडहु ही भँडु ऊपजै भँडै बाझु न कोइ ॥ नानक भँडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ जितु मुखि सदा सालाहीरे भागा रती चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कठीरे ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा सँढीरे ॥ जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हँढीरे ॥ मँदा किसै न आखीरे पड़ि अखरु एहो बुझीरे ॥ मूरखै नालि न लुझीरे ॥ १९ ॥ सलोक मः १ ॥ नानक फिकै बोलिरे तन मनु फिका होइ ॥ फिको फिका सदीरे फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह सटीरे मुहि थुका फिके पाइ ॥ फिका मूरखु आखीरे पाणा लहै सजाइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ अँदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अँदरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ जिन्ह पटु अँदरि बाहरि गुदडु ते भले सँसारि ॥ तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥ रँगि हसहि रँगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु मँगा जबै देइ त खाहि ॥ दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥ दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥ पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीओ कल आपे

ही तै धारीये ॥ देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीये ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीये ॥ जिस के
 जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीये ॥ आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीये ॥ २० ॥ सलोकु महला २ ॥
 एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु कांठीये सद ही रहै समाइ ॥ चंगै चंगा करि मँने मँदै मँदा होइ ॥
 आसकु एहु न आखीये जि लेखै वरतै सोइ ॥ १ ॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दिवै करे मुँढहु घुथा जाइ ॥ नानक दोवै
 कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जितु सेविये सुखु पाईये सो साहिबु सदा सम्हालीये ॥ जितु कीता पाईये आपणा
 सा घाल बुरी किउ घालीये ॥ मँदा मूलि न कीचई दे लँमी नदरि निहालीये ॥ जिउ साहिब नालि न हारीये तेवेहा पासा ढालीये
 ॥ किछु लाहे उपरि घालीये ॥ २१ ॥ सलोकु महला २ ॥ चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घणेरीआ
 खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ नानक किस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥ १ ॥
 महला २ ॥ जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मँगै अँमितु वेखहु एहु निआउ ॥ २ ॥ महला २ ॥
 नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ वसतू अँदरि वसतु समावै दूजी होवै
 पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥ ३ ॥ महला २
 ॥ नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ पाणी अँदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥ ४ ॥ महला २ ॥ होइ इआणा
 करे कँमु आणि न सकै रासि ॥ जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै
 भइ ॥ हुसमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अँदरि पाइ ॥ वजहु गवाए
 अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ जिस दा दिता खावणा तिसु कहीये साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै
 अरदासि ॥ २२ ॥ सलोकु महला २ ॥ एह किनेही दाति आपस ते जो पाईये ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै

जो मिलै ॥ १ ॥ महला २ ॥ एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जिं सेती खसम समाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ नानक अँत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥ आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ इकन्हा गली जँजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥ २३ ॥ सलोकु मः १ ॥ आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुलहै रहन्हि चडे ॥ इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खडे ॥ तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥ १ ॥ महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ तिसु विचि जँत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥ किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥ २ ॥ पउडी ॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहण न जाइ ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु सँबाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिनै पाइ ॥ नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ सो करे जिं तिसै रजाइ ॥ २४ ॥ १ ॥ सुधु

ॐ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

गगु आसा बाणी भगता की ॥ कबीर जीऊ नामदेउ जीउ रविदास जीउ ॥ आसा श्री कबीर जीउ ॥

गुर गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ॥ कवन काजिं जगु उपजै बिनसै कहहु मोहिं समझाइआ ॥ १ ॥ देव करहु दइआ मोहिं मारगि लावहु जितु भै बँधन तूटै ॥ जनम मरन दुख फेड़ करम सुख जीअ जनम ते छूटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ फास बँध नहीं फारै अरु मन सुँनि न लूके ॥ आपा पदु निरबाणु न चीन्हिआ इन बिधि अभिउ न चूके ॥ २ ॥ कही न उपजै उपजी जाणै भाव अभाव बिहूणा ॥ उदै असत की मन बुधि नासी तउ सदा सहजिं लिव लीणा ॥ ३ ॥ जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है उदक कुँभु बिगराना ॥ कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुँनि समानां ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा ॥ गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥ गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥

ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥ १ ॥ ऐसे संत न मो कउ भावहि ॥ डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ बासन मांजि चरावहि ऊपरि काठी धोइ जलावहि ॥ बसुधा खोदि करहि दुइ चूल्हे सारे माणस खावहि ॥ २ ॥ ओइ
 पापी सदा फिरहि अपराधी मुखहु अपरस कहावहि ॥ सदा सदा फिरहि अभिमानी सगल कुटंब डुबावहि ॥ ३ ॥ जितु को
 लाइआ तित ही लागा तैसे करम कमावै ॥ कहु कबीर जिसु सतिगुरु भेटै पुनरपि जनमि न आवै ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा ॥ बापि
 दिलासा मेरो कीन्हा ॥ सेज सुखाली मुखि अंम्रितु दीन्हा ॥ तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी ॥ आगै गइआ न बाजी हारी ॥
 १ ॥ मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला ॥ पहिरिओ नही दगली लगै न पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि तिसु बापै जिनि हउ जाइआ
 ॥ पँचा ते मेरा संगु चुकाइआ ॥ पँच मारि पावा तलि दीने ॥ हरि सिमरनि मेरा मनु तनु भीने ॥ २ ॥ पिता हमरो वड गोसाई
 ॥ तिसु पिता पहि हउ किउ करि जाई ॥ सतिगुर मिले त मारगु दिखाइआ ॥ जगत पिता मेरै मनि भाइआ ॥ ३ ॥ हउ पूतु
 तेरा तूँ बापु मेरा ॥ एकै ठाहर दुहा बसेरा ॥ कहु कबीर जनि एको बूझिआ ॥ गुर प्रसादि मै सभु किछु सूझिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥
 आसा ॥ इकतु पतरि भरि उरकट कुरकट इकतु पतरि भरि पानी ॥ आसि पासि पँच जोगीआ बैठे बीचि नकट दे रानी ॥ १ ॥
 नकटी को ठनगनु बाडा डूँ ॥ किनहि बिबेकी काटी तूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी ॥
 सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥ २ ॥ हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै ॥ ओहु हमारै माथै
 काइमु अउरु हमरै निकटि न आवै ॥ ३ ॥ नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी ॥ कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि
 लोक की पिआरी ॥ ४ ॥ ४ ॥ आसा ॥ जोगी जती तपी सँनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥ लुँजित मुँजित मोनि जटाधर अँति
 तऊ मरना ॥ १ ॥ ता ते सेवीअले रामना ॥ रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगम निरगम
 जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥ तँत मँत्र सभ अउखध जानहि अँति तऊ मरना ॥ २ ॥ राज भोग अरु छत्र सिँघासन

बहु सुंदरि रमना ॥ पान कपूर सुवासक चंदन अँति तऊ मरना ॥ ३ ॥ बेद पुरान सिँमिति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥
 कहू कबीर इउ रामहि जँपउ मेटि जनम मरना ॥ ४ ॥ ५ ॥ आसा ॥ फीलु खाबी बलदु परखावज कऊआ ताल बजावै ॥
 पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥ १ ॥ राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥ किनै बूझनहारै खाए ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ बैठि सिँघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै ॥ घरि घरि मुसरी मँगलु गावहि कछूआ सँखु बजावै ॥ २ ॥
 बँस को पूतु बीआहन चलिआ सुइने मँडप छाए ॥ रूप कँनिआ सुँदरि बेधी ससै सिँघ गुन गाए ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु
 रे सँतहु कीटी परबतु खाइआ ॥ कछूआ कहै अँगार भि लोरउ लूकी सबदु सुनाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ आसा ॥ बटूआ एकु
 बहतारि आधारी एको जिसहि दुआरा ॥ नवै खँड की प्रिथमी मागै सो जोगी जगि सारा ॥ १ ॥ ऐसा जोगी नउ निधि पावै
 ॥ तल का ब्रहमु ले गगनि चरावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिँथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥ पँच ततु की
 करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥ २ ॥ दइआ फाहुरी काइआ करि धूई दिसटि की अगनि जलावै ॥ तिस का भाउ लए
 रिद अँतरि चहु जुग ताडी लावै ॥ ३ ॥ सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिँड पराना ॥ कहू कबीर जे किरपा धारै देइ
 सचा नीसाना ॥ ४ ॥ ७ ॥ आसा ॥ हिँदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥ दिल महि सोचि बिचारि कवादे
 भिसत दोजक किनि पाई ॥ १ ॥ काजी तै कवन कतेब बखानी ॥ पढत गुनत ऐसे सभ मारे किनहूँ खबरि न जानी ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ सकति सनेहु करि सुँनति करीरे मै न बदउगा भाई ॥ जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥
 २ ॥ सुँनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीरे ॥ अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिँदू ही रहीरे ॥ ३ ॥ छाडि
 कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥ कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचि हारी ॥ ४ ॥ ८ ॥ आसा ॥ जब लगु
 तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥ तेल जले बाती ठहरानी सुँना मँदरु होई ॥ १ ॥ रे बउरे तुहि घरी

न रखै कोई ॥ तुँ राम नामु जपि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई ॥ घट फूटे
कोऊ बात न पूछै काडहु काढहु होई ॥ २ ॥ देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई ॥ लट छिटकाए तिरीआ रोवै हँसु
इकेला जाई ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ॥ इसु बँदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥ ४
॥ ९ ॥ दुतुके

१४ श्रुतिगुर प्रसादि ॥ आसा श्री कबीर जीउ के चउपदे इकतुके ॥

सनक सनंद अँतु नही पाइआ ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥
सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई ॥ इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥
२ ॥ हरि का बिलोवना मन का बीचारा ॥ गुर प्रसादि पावै अँमित धारा ॥ ३ ॥ कहु कबीर नदरि करे जे मीं रा राम नाम
लगि उतरे तीरा ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥ आसा ॥ बाती सूकी तेल निखूटा ॥ मँदलु न बाजै नटु पै सूता ॥ १ ॥ बुझि गई
अगनि न निकसिओ धूँआ ॥ रवि रहिआ एकु अवरु नही दूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटी तँत न बजै रबाबु ॥ भूलि
बिगारिओ अपना काजु ॥ २ ॥ कथनी बदनी कहनु कहावनु ॥ समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ॥ ३ ॥ कहत कबीर
पँच जो चूरे ॥ तिन ते नाहि परम पदु दूरे ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ आसा ॥ सुतु अपराध करत है जेते ॥ जननी चीति न
राखसि तेते ॥ रामईआ हउ बारिकु तेरा ॥ काहे न खँडसि अवगनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे अति क्रोप करे करि धाइआ
॥ ता भी चीति न राखसि माइआ ॥ २ ॥ चिँत भवनि मनु परिओ हमार ॥ नाम बिना कैसे उतरसि पारा ॥ ३ ॥ देहि
बिमल मति सदा सरीरा ॥ सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥ आसा ॥ हज हमारी गोमती तीर ॥
जहा बसहि पीतंबर पीर ॥ १ ॥ वाहु वाहु किआ खूबु गावता है ॥ हरि का नामु मेरै मनि भावता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥
नारद सारद करहि खवासी ॥ पासि बैठी बीबी कवला दासी ॥ २ ॥ कँठै माला जिहवा रामु ॥ सहँस नामु

लैलै करउ सलामु ॥ ३ ॥ कहत कबीर राम गुन गावउ ॥ हिंदू तुरक दोऊ समजावउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

आसा श्री कबीर जीउ के पँचपदे ९ दूतुके ५ ँतिगुर प्रसादि ॥

पाती तौरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥ जिसु पाहन कउ पाती तौरै सो पाहन निरजीउ ॥ १ ॥ भूली मालनी है एउ ॥
सतिगुरु जागता है देउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहम पाती बिसनु डारी फूल सँकरदेउ ॥ तिनि देव प्रतखिं तोरहिं करहिं किस की
सेउ ॥ २ ॥ पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥ जे एह मूरति साची है तउ गढ़णहारे खाउ ॥ ३ ॥ भातु पहिति
अरु लापसी करकरा कासारु ॥ भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥ ४ ॥ मालिनि भूली जगु भुलाना हम भुलाने
नाहिं ॥ कहु कबीर हम राम राखे क्रिपा करि हरि राइ ॥ ५ ॥ १ ॥ १४ ॥ आसा ॥ बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु
तपु न कीओ ॥ तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥ १ ॥ मेरी मेरी करते जनमु गइओ ॥ साइरु
सोखि भुँज बलइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूके सरवारि पालि बँधावै लूणै खेति हथ वारि करै ॥ आइओ चोरु तुरँतहु ले गइओ मेरी
राखत मुगधु फिरै ॥ २ ॥ चरन सीसु कर कँपन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥ जिहवा बचनु सुधु नहीं निकसै तब रे धरम की
आस करै ॥ ३ ॥ हरि जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ ॥ गुर परसादी हरि अनु पाइओ अँते चलदिआ
नालिं चलिओ ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे सँतहु अनु धनु कछूरे लै न गइओ ॥ आई तलब गोपाल राइ की माइआ मँदर
छोडि चलिओ ॥ ५ ॥ २ ॥ १५ ॥ आसा ॥ काहू दीन्हे पाट पटँबर काहू पलघ निवारा ॥ काहू गरी गोदरी नाही काहू खान
परा ॥ १ ॥ अहिरख वादु न कीजै रे मन ॥ सुक्रितु करि करि लीजै रे मन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुम्हारै एक जु माटी गूंधी बहु
बिधि बानी लाई ॥ काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआपि लगाई ॥ २ ॥ सूमहि धनु राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा
॥ जम का डँडु मूँड महि लागै खिन महि करै निबेरा ॥ ३ ॥ हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥ जो तिसु

भावै सति करि मानै भाणा मनि वसाई ॥ ४ ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी ॥ चिरगट फारि चटारा लै गइओ
 तरी तागरी छूटी ॥ ५ ॥ ३ ॥ १६ ॥ आसा ॥ हम मसकीन खुदाई बँदे तुम राजसु मनि भावै ॥ अलह अवलि दीन को
 साहिबु जोरु नहीं फुरमावै ॥ १ ॥ काजी बोलिआ बनि नहीं आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा
 भिसति न होई ॥ सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥ २ ॥ निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि
 जानै ॥ पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥ ३ ॥ खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि
 फीकी ॥ आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी ॥ ४ ॥ माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना ॥
 कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना ॥ ५ ॥ ४ ॥ १७ ॥ आसा ॥ गगन नगरि इक बँद न बरखै नादु
 कहा जु समाना ॥ पारब्रहम परमेसुर माधो परम हँसु ले सिधाना ॥ १ ॥ बाबा बोलते ते कहा गए देही के सँगि रहते ॥
 सुरति माहि जो निरते करते कथा बारता कहते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बजावनहारो कहा गइओ जिनि इहु मँदरु कीन्हा ॥
 साखी सबदु सुरति नहीं उपजै खिँचि तेजु सभु लीन्हा ॥ २ ॥ अवनन बिकल भए सँगि तेरे इँद्री का बलु थाका ॥ चरन रहे
 कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥ ३ ॥ थाके पँच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥ थाका मनु कुँचर उरु
 थाका तेजु सूतुधरि रमते ॥ ४ ॥ मिरतक भए दसै बँद छूटै मित्र भाई सभ छोरे ॥ कहत कबीरा जो हरि धिआवै जीवत
 बँधन तोरे ॥ ५ ॥ ५ ॥ १८ ॥ आसा इकतुके ४ ॥ सरपनी ते ऊपरि नहीं बलीआ ॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ
 छलीआ ॥ १ ॥ मारु मारु अपनी निरमल जलि पैठी ॥ जिनि त्रिभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 अपनी अपनी किआ कहहु भाई ॥ जिनि साचु पछानिआ तिनि अपनी खाई ॥ २ ॥ अपनी ते आन छूछ नहीं अवर ॥
 अपनी जीती कहा करै जमरा ॥ ३ ॥ इह अपनी ताकी कीती होई ॥ बलु अबलु किआ इस ते होई ॥ ४ ॥ इह बसती

ता बसत सरीरा ॥ गुर प्रसादि सहजिं तरे कबीरा ॥ ५ ॥ ६ ॥ १९ ॥ आसा ॥ कहा सुआन कउ सिमिति सुनाए ॥ कहा
 साकत पहि हरि गुन गाए ॥ १ ॥ राम राम राम रमे रमि रहीरे ॥ साकत सिउ भूलिं नही कहीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कऊआ कहा
 कपूर चराए ॥ कह बिसीअर कउ दूधु पीआए ॥ २ ॥ सत संगति मिलिं बिबेक बुधि होई ॥ पारसु परसि लोहा कँचनु सोई ॥ ३
 ॥ साकतु सुआनु सभु करे कराइआ ॥ जो धूरिं लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ ४ ॥ अँमितु लै लै नीमु सिँचाई ॥ कहत कबीर
 उआ को सहजु न जाई ॥ ५ ॥ ७ ॥ २० ॥ आसा ॥ लँका सा कोटु समुँद सी खाई ॥ तिह रावन घर खबरिं न पाई ॥ १ ॥
 किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ॥ देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥ तिह
 रावन घर दीआ न बाती ॥ २ ॥ चँदु सूरजु जा के तपत रसोई ॥ बैसँतरु जा के कपरे धोई ॥ ३ ॥ गुरमति रामै नामि बसाई
 ॥ असथिरु रहै न कतहूँ जाई ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे लोई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई ॥ ५ ॥ ८ ॥ २१ ॥ आसा
 ॥ पहिला पूतु पिछैरी माई ॥ गुरु लागो चले की पाई ॥ १ ॥ एकु अचँभउ सुनहु तुम्ह भाई ॥ देखत सिँघु चरावत गाई ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ जल की मछुली तरवरिं बिआई ॥ देखत कुतरा लै गई बिलाई ॥ २ ॥ तलै रे बैसा ऊपरिं सूला ॥ तिस कै पेडि
 लगे फल फूला ॥ ३ ॥ घोरै चरिं भैस चरावन जाई ॥ बाहरिं बैलु गोनि घरिं आई ॥ ४ ॥ कहत कबीर जु इस पद बूझै ॥ राम
 रमत तिसु सभु किछु सूझै ॥ ५ ॥ ९ ॥ २२ ॥ बाईस चउपदे तथा पँचपदे ॥

आसा श्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दूतुके ७ इकतुका १ १८ सिमिति गुर प्रसादि ॥

बिँदु ते जिनि पिँडु कीआ अगनि कुँड रहाइआ ॥ दस मास माता उदरिं राखिआ बहुरिं लागी माइआ ॥ १ ॥ प्रानी काहे कउ
 लोभिं लागे रतन जनमु खोइआ ॥ पूरब जनमि करम भूमि बीजु नाही बोइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारिक ते बिरधि भइआ होना
 सो होइआ ॥ जा जमु आइ झोट पकरै तबहि काहे रोइआ ॥ २ ॥ जीवनै की आस करहिं जमु निहारै सासा ॥ बाजीगरी

सँसारु कबीरा चेति ढालिं पासा ॥ ३ ॥ १ ॥ २३ ॥ आसा ॥ तनु रैनी मनु पुनरपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥ राम
 राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रँगि राती ॥ १ ॥ गाउ गाउ री दुलहनी मँगलचारा ॥ मेरे ग्रिह आए राजा राम भतारा
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाभि कमल महि बेदी रचि ले ब्रहम गिआन उचारा ॥ राम राइ सो दूलहु पाइओ अस बडभाग हमारा
 ॥ २ ॥ सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीस उजानां ॥ कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना
 ॥ ३ ॥ २ ॥ २४ ॥ आसा ॥ सासु की दुखी ससुर की पिआरी जेठ के नामि डरउ रे ॥ सरखी सहेली ननद गहेली देवर
 कै बिरहि जरउ रे ॥ १ ॥ मेरी मति बउरी मै राम बिसारिओ किन बिधि रहनि रहउ रे ॥ सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु
 का सउ कहउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बापु सावका करै लराई माइआ सद मतवारी ॥ बडे भाई कै जब सँगि होती तब हउ नाह
 पिआरी ॥ २ ॥ कहत कबीर पँच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ ॥ झूठी माइआ सभु जगु बाधिआ मै राम रमत सुखु
 पाइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥ २५ ॥ आसा ॥ हम घरि सूतु तनहि नित ताना कँठि जनेऊ तुमारे ॥ तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री
 गोबिंदु रिदै हमारे ॥ १ ॥ मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा ॥ जम दुआर जब पूछसि बवरे तब
 किआ कहसि मुकँदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम गोरु तुम गुआर गुसाई जनम जनम रखवारे ॥ कबहूँ न पारि उतारि चराइहु
 कैसे खसम हमारे ॥ २ ॥ तुँ बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥ तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर
 धिआना ॥ ३ ॥ ४ ॥ २६ ॥ आसा ॥ जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानँ ॥ साचु करि हम गाठि
 दीनी छोडि परम निधानँ ॥ १ ॥ बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह ॥ जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 नैन देखि पतँगु उरझै पसु न देखै आगि ॥ काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि ॥ २ ॥ करि बिचारु बिकार
 परहरि तरन तारन सोइ ॥ कहि कबीर जगजीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ ॥ ३ ॥ ५ ॥ २७ ॥ आसा ॥

जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई ॥ तागा तँतु साजु सभु थाका राम नाम बसि होई ॥ १ ॥ अब मोहि नाचनो
न आवै ॥ मेरा मनु मँदरीआ न बजावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु माइआ लै जारी त्रिसना गागरि फूटी ॥ काम चोलना
भइआ है पुराना गइआ भरमु सभु छूटी ॥ २ ॥ सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥ कहि कबीर मै पूरा पाइआ
भए राम परसादा ॥ ३ ॥ ६ ॥ २८ ॥ आसा ॥ रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ सँघारै ॥ आपा देखि अवर नहीं
देखै काहे कउ झख मारै ॥ १ ॥ काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै ॥ खबरि न करहि दीन के बउरे ता
ते जनमु अलेखै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नहीं कोई ॥ पढे गुने नाही कछु बउरे जउ दिल
महि खबरि न होई ॥ २ ॥ अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥ हिंदू तुरक दुहँ महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥
३ ॥ ७ ॥ २९ ॥ आसा ॥ तिपदा ॥ इकतुका ॥ कीओ सिँगारु मिलन के ताई ॥ हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥ १
॥ हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ ॥ राम बडे मै तनक लहुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धन पिर एकै सँगि बसेरा ॥ सेज
एक पै मिलनु दुहेरा ॥ २ ॥ धँनि सुहागनि जो पीअ भावै ॥ कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥ ३ ॥ ८ ॥ ३० ॥

आसा श्री कबीर जीउ के दुपदे १३ श्रितिगुर प्रसादि ॥

हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई ॥ सगल जोति इनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई ॥ १ ॥ हरि की कथा
अनाहद बानी ॥ हँसु हुइ हीरा लेइ पछानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहि कबीर हीरा अस देखिओ जग मह रहा समाई ॥ गुपता
हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥ आसा ॥ पहिली करुपि कुजाति कुलखनी साहुरै
पेईए बुरी ॥ अब की सरुपि सुकानि सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥ १ ॥ भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ॥ जुगु जुगु
जीवउ मेरी अब की धरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु

टरिओ ॥ लहुरी सँगि भई अब मेरै जेठी अउर धरिओ ॥ २ ॥ २ ॥ ३२ ॥ आसा ॥ मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ ॥ ले
 राखिओ राम जनीआ नाउ ॥ १ ॥ इन्ह मुँडीअन मेरा घरु धुंधरावा ॥ बिटवहि राम रमऊआ लावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 कहतु कबीर सुनहु मेरी माई ॥ इन्ह मुँडीअन मेरी जाति गवाई ॥ २ ॥ ३ ॥ ३३ ॥ आसा ॥ रहु रहु री बहुरीआ घूँघटु
 जिनि काढै ॥ अँत की बार लहैगी न आढै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घूँघटु काढि गई तेरी आगै ॥ उन की गैलि तोहि जिनि लागै
 ॥ १ ॥ घूँघट काढे की इहै बडाई ॥ दिन दस पांच बहू भले आई ॥ २ ॥ घूँघटु तेरो तउ परि साचै ॥ हरि गुन गाइ कूदहि
 अरु नाचै ॥ ३ ॥ कहत कबीर बहू तब जीतै ॥ हरि गुन गावत जनमु बितीतै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥ आसा ॥ करवतु
 भला न करवट तेरी ॥ लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥ १ ॥ हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥ करवटु दे मो कउ काहे कउ मारे ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ जउ तनु चीरहि अँगु न मोरउ ॥ पिँडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥ २ ॥ हम तुम बीचु भइओ नही कोई ॥ तुमहि
 सु कँत नारि हम सोई ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥ अब तुमरी परतीति न होई ॥ ४ ॥ २ ॥ ३५ ॥ आसा ॥
 कोरी को काहू मरनु न जानां ॥ सभु जगु आनि तनाइओ तानां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब तुम सुनि ले बेद पुरानां ॥ तब
 इतनकु पसरिओ तानां ॥ १ ॥ धरनि अकास की करगह बनाई ॥ चँदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥ २ ॥ पाई जोरि बात इक
 कीनी तह तांती मनु मानां ॥ जोलाहे घरु अपना चीन्हां घट ही रामु पछानां ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥ सूतै
 सूत मिलाए कोरी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३६ ॥ आसा ॥ अँतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुँठ न जानां ॥ लोक पतीणे कछू न होवै
 नाही रामु अयाना ॥ १ ॥ पूजहु रामु एकु ही देवा ॥ साचा नावणु गुर की सेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल कै मजनि जे गति
 होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥ २ ॥ मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु
 न बाँचिआ जाई ॥ हरि का संतु मरै हाडँबै त सगली नैन तराई ॥ ३ ॥ दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरँकारा ॥

कहिं कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा बाणी श्री नामदेउ जी की ॥

एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई ॥ माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥ १ ॥ सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंदु बिनु नहीं कोई ॥ सूतु एकु मणि सत सहँस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिँन न होई ॥ इहु परपँच पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ॥ २ ॥ मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ ॥ सुकृत मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ॥ ३ ॥ कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा ॥ आनीले कुँभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥ बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥ १ ॥ जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥ महा अनंद करे सद केला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥ पहिले बासु लई हे भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥ २ ॥ आनीले दूधु रीधाईले खीरँ ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥ पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥ ३ ॥ ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नहीं ॥ थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूँ सरब मही ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा ॥ मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥ मपि मपि काटउ जम की फासी ॥ १ ॥ कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥ राम को नामु जपउ दिन राती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ॥ राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥ २ ॥ भगति करउ हरि के गुन गावउ ॥ आठ पहर अपना खसम धिआवउ ॥ ३ ॥ सुइने की सूई रूपे का धागा ॥ नामे का चित हरि सउ लागा ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा ॥ सापु कुँच छोडै बिखु नहीं छाडै ॥ उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥ १ ॥ काहे कउ कीजै धिआनु जपँना ॥ जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिँघच

भोजनु जो नरु जानै ॥ ऐसे ही ठगदेउ बखानै ॥ २ ॥ नामे के सुआमी लाहि ले झगरा ॥ राम रसाइनि पीओ रे दगरा ॥ ३ ॥ ४
 ॥ आसा ॥ पारब्रह्म जि चीन्हसी आसा ते न भावसी ॥ रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥ १ ॥ कैसे मन तरहिगारे
 संसारु सागरु बिखै को बना ॥ झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥
 संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥ २ ॥ ५ ॥

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की १८ सतिगुर प्रसादि ॥

मिग मीन भिंग पतंग कुंकर एक दोख बिनास ॥ पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥ १ ॥ माधो अबिदिआ हित
 कीन ॥ बिबेक दीप मलीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच ॥ मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति
 पोच ॥ २ ॥ जीअ जंत जहा जहा लगु कर्म के बसि जाइ ॥ काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥ ३ ॥ रविदास दास
 उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥ भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा ॥ संत तुझी तनु
 संगति प्रान ॥ सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥ १ ॥ संत ची संगत संत कथा रसु संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ संत आचरण संत चो मारगु संत च ओलहग ओलहगणी ॥ २ ॥ अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥ जणी लखावहु
 असंत पापीसणि ॥ ३ ॥ रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥ संत अनंतहि अंतरु नाही ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा ॥ तुम चंदन हम
 इरंड बापुरे सांगि तुमारे बासा ॥ नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥ १ ॥ माधउ सत संगति सरनि तुम्हारी ॥ हम
 अउगन तुम्ह उपकारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥ सत संगति मिलि रहीरे माधउ जैसे
 मधुप मखीरा ॥ २ ॥ जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥ राजा राम की सेव न कीन्ही कहि रविदास चमारा ॥ ३
 ॥ ३ ॥ आसा ॥ कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥ प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥ १ ॥ तुझहि चरन अरबिंद भवन
 मनु ॥ पान करत पाइओ

पाइओ रमईआ धनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँपति बिपति पटल माइआ धनु ॥ ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥ २ ॥ प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥ कहि रविदास छूटिबो कवन गुनु ॥ ३ ॥ ४ ॥ आसा ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥ हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम कबीर उजागर ॥ जनम जनम के काटे कागर ॥ १ ॥ निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥ तउ जग जनम सँकट नही आइआ ॥ २ ॥ जन रविदास राम रँगि राता ॥ इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥ ३ ॥ ५ ॥ माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥ देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥ माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥ १ ॥ मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥ बिनसि गइआ जाइ कहूँ समाना ॥ २ ॥ कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥ बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥ ३ ॥ ६ ॥

आसा बाणी भगत धँने जी की १३ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥ लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥ गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥ १ ॥ जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फँध परे ॥ बिखु फल सँचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥ २ ॥ गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥ प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥ ३ ॥ जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥ धँने धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन सँत समानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ महला ५ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद सँगि नामदेउ मनु लीणा ॥ आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥ नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥ १ ॥ रविदासु ढुवँता ढोर नीति तिन्हि तिआगी माइआ ॥ परगटु होआ साध सँगि हरि दरसनु पाइआ ॥ २ ॥ सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥

हिरदे वसिआ पारब्रह्म भगता महि गनिआ ॥ ३ ॥ इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥ मिले प्रतखि गुसाईआ धँना वडभागा ॥ ४ ॥ २ ॥ रेचित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥ जे धावहि ब्रह्मँड खँड कउ करता करै सु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननी केरे उदर उदक महि पिँडु कीआ दस दुआरा ॥ देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ॥ १ ॥ कुँमी जल माहि तन तिसु बाहरि पँख खीरु तिन नाही ॥ पूरन परमानंद मनोहर समझि दोखु मन माही ॥ २ ॥ पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥ कहै धँना पूरन ताहू को मतरे जीअ डरांही ॥ ३ ॥ ३ ॥

आसा सेख फरीद जीउ की बाणी १३ शितिगुर प्रसादि ॥

दिलहु मुहबति जिन्ह सेई सचिआ ॥ जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि काढे कचिआ ॥ १ ॥ रते इसक खुदाइ रँगि दीदार के ॥ विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥ तिन धँनु जणेदी माउ आए सफ्लु से ॥ २ ॥ परवरदगार अपार अगम बेअँत तू ॥ जिना पछाता सचु चुँमा पैर मूँ ॥ ३ ॥ तेरी पनह खुदाइ तू बखसँदगी ॥ सेख फरीदै खैरु दीजै बँदगी ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा ॥ बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे ॥ इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥ १ ॥ आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कुँजड़ीआ मनहु सचिँदड़ीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे जाणा मरि जाईरे घुमि न आईरे ॥ झूठी दुनीआ लगे न आपु वजाईरे ॥ २ ॥ बोलीरे सचु धरमु झूठु न बोलीरे ॥ जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीरे ॥ ३ ॥ छैल लँघँदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥ कँचन वँने पासे कलवति चीरिआ ॥ ४ ॥ सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥ जिंसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ॥ ५ ॥ कतिक कुँजां चेति डउ सावणि बिजुलीआं ॥ सीआले सोहँदीआं पिर गलिं बाहड़ीआं ॥ ६ ॥ चले चलणहार विचारा लेइ मनो ॥ गँढेदिआं छिअ माह तुडँदिआ हिंकु खिनो ॥ ७ ॥ जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गए ॥ जालण गोरां नालिं उलामे जीअ सहे ॥ ८ ॥ २ ॥

१ॐ सतिनामु करता पुरुषु निरभउ निरवैरु

अकाल मूरति अजनी सैभँ गुर प्रसादि

शगु गूजरी महला १ चउपदे घरु १ ॥

तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ ॥ करणी कुँगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥ १ ॥ पूजा कीचै नामु धिआईरे
बिनु नावै पूजा न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि देव परखालीअहि जे मनु धोवै कोइ ॥ जूठि लहै जीउ माजीरे मोख पड़आणा
होइ ॥ २ ॥ पसू मिलहि चँगिआईआ खडु खावहि अँमितु देहि ॥ नाम विहूणे आदमी धिगु जीवण करम करेहि ॥ ३ ॥
नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे सँमहाले ॥ जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी महला १ ॥
नाभि कमल ते ब्रहमा उपजे बेद पड़हि मुखि कँठि सवारि ॥ ता को अँतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि ॥ १ ॥
प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राण अधार ॥ जा की भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर वीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रवि
ससि दीपक जा के त्रिभवणि एका जोति मुरारि ॥ गुरमुखि होइ सु अहिनि सिसि निरमलु मनमुखि रैणि अँधारि ॥ २ ॥ सिध
समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै ॥ अँतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै ॥ ३ ॥ सुरि नर
नाथ बेअँत अजोनी साचै महलि अपारा ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥ ४ ॥ २ ॥

शुगु गूजरी महला ३ वरु १ १३ सतिगुरु प्रसादि ॥

धिगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ ॥ जितु कंमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ॥ १ ॥ ऐसा सतिगुरु सेवीरे मना
जितु सेवीरे गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि सभ जाइ ॥ हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ न होवई जीवन पदवी पाइ
॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिंद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ वेखु जैसी भगति बनी ॥ आप सेती आपु खाइआ ता मनु
निरमलु होआ जोती जोति समई ॥ २ ॥ बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईरे जे लोचै सभु कोइ ॥ कूडै की पालि विचहु
निकलै ता सदा सुखु होइ ॥ ३ ॥ नानक ऐसे सतिगुरु की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुरु आगै जीउ धरेइ ॥ सतिगुरु का
भाणा चिति करे सतिगुरु आपे क्रिपा करेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ गूजरी महला ३ ॥ हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु
न कोइ जी ॥ हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईरे दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥ १ ॥ हरि मेरी प्रीति रीति है
हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥ गुरु प्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मेरा सिमिति
हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ॥ हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु त्रिपतै हरि मेरा साकु अंति होइ
सखाई ॥ २ ॥ हरि बिनु होर रासि कूडी है चलदिआ नालि न जाई ॥ हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह
जाई ॥ ३ ॥ सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई ॥ कहै नानकु हरि का भाणा कहणा कछु न जाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४
॥ गूजरी महला ३ ॥ जुग माहि नामु दुल्लंभु है गुरुमुखि पाइआ जाइ ॥ बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ ॥ १
॥ बलिहारी गुरु आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ सतिगुरु मिलिरे हरि मनि वसै सहजे रहै समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जां भउ
पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ ॥ बैरागै ते हरि पाईरे हरि सिउ रहै समाइ ॥ २ ॥ सेइ मुकत जि मनु जिणहि फिरि
धातु न लागै आइ ॥ दसवै दुआरि रहत करे त्रिभवण सोझी पाइ ॥ ३ ॥ नानक गुरु ते होइआ वेखहु तिस की रजाइ ॥

इह कारणु करता करे जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ गूजरी महला ३ ॥ राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ ॥
 ॥ गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥ १ ॥ अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ॥ हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि
 करहि सदा मनि चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ॥ त्रिसना मूलि न चुकई अंति गए
 पछुताहि ॥ २ ॥ अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ ॥ जिसु नर की दुबिधा न जाइ धरमराइ तिसु
 देइ सजाइ ॥ ३ ॥ करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥ नानक विचहु हउमै मारे तां हरि भेटै सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥
 ६ ॥ गूजरी महला ३ ॥ तिसु जन सांति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाए ॥ सो जनु निरमलु जिं गुरमुखि
 बूझै हरि चरणी चितु लाए ॥ १ ॥ हरि चेति अचेत मना जो इछहि सो फलु होई ॥ गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि
 सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए ॥ जो उसु पूजे सो फलु पाए
 दीखिआ देवै साचु बुझाए ॥ २ ॥ विणु पारसै पूज न होवई विणु मन परचे अवरा समझाए ॥ गुरु सदाए अगिआनी अंधा
 किसु ओहु मारगि पाए ॥ ३ ॥ नानक विणु नदरी किछु न पाईऐ जिसु नदरि करे सो पाए ॥ गुर परसादी दे वडिआई
 अपणा सबदु वरताए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ गूजरी महला ३ पंचपदे ॥ ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइ ॥ सतिगुर
 मिलिऐ मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ ॥ १ ॥ हरि कथा तुं सुणिरे मन सबदु मनि वसाइ ॥ इह मति तेरी थिरु रहै तां भरमु
 विचहु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि चरण रिंदे वसाइ तू किलविख होवहि नासु ॥ पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि
 निवासु ॥ २ ॥ मनमुखि इहु मनु मुगधु है सोझी किछु न पाइ ॥ हरि का नामु न बुझई अंति गइआ पछुताइ ॥ ३ ॥ इहु
 मनु कासी सभि तीरथ सिम्रिति सतिगुर दीआ बुझाइ ॥ अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाइ ॥
 ४ ॥ नानक सतिगुर मिलिऐ हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ ॥ जो तुधु भावै सभु सचु है सचे रहै समाइ ॥

५ ॥ ६ ॥ ८ ॥ गूजरी महला ३ तीजा ॥ एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ॥ दूजै भाइ जेता पड़हि
 पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥ १ ॥ हरि चरणी तूँ लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ॥ हरि रसु रसना चाखु तूँ तां मनु
 निरमलु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर मिलिऐ मनु संतोखीऐ ता फिरि तिसना भूख न होइ ॥ नामु निधानु पाइआ पर
 घरि जाइ न कोइ ॥ २ ॥ कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ न होइ ॥ गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥ ३
 ॥ सुणि सासत्र तूँ न बुझही ता फिरहि बारो बार ॥ सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥ ४ ॥ सचै
 जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ९ ॥

१३ सतिगुर प्रसादि ॥ गगु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥

हरि के जन सतिगुर सतपुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि
 ॥ १ ॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिले त्रिपतासहि मिलि संगति
 गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन्ह हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही
 आए धिगु जीवे धिगु जीवासि ॥ ३ ॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥
 धँनु अँनु सत संगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी महला ४ ॥ गोविंदु गोविंदु
 प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सत संगति सबदि मनु मोहै ॥ जपि गोविंदु गोविंदु धिआईऐ सभ कउ दानु देइ प्रभु ओहै ॥ १
 ॥ मेरे भाई जना मो कउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै ॥ गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साध संगति
 जनु सोहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि ओहै ॥ जन कउ

राम नामु आधारा हरि नामु जपत हरि नामे सोहै ॥ २ ॥ दुरमति भागहीन मति फीके नामु सुनत आवै मनि रोहै ॥
 कऊआ काग कउ अँमित रसु पाईऐ त्रिपते विसटा खाइ मुखि गोहै ॥ ३ ॥ अँमित सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै
 कऊआ हँसु होहै ॥ नानक धनु धँनु वडे वडभागी जिन्ह गुरुमति नामु रिदै मलु धोहै ॥ ४ ॥ २ ॥ गूजरी महला ४ ॥ हरि
 जन ऊतम ऊतम बाणी मुखि बोलहि परउपकारे ॥ जो जनु सुणै सरधा भगति सेती करि किरपा हरि निसतारे ॥ १ ॥
 राम मो कउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ मेरे प्रीतम प्रान सतिगुरु गुरु पूरा हम पापी गुरि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरुमुखि
 वडभागी वडभागे जिन हरि हरि नामु अधारे ॥ हरि हरि अँमितु हरि रसु पावहि गुरुमति भगति भँडारे ॥ २ ॥ जिन दरसनु
 सतिगुरु सतपुरख न पाइआ ते भागहीण जमि मारे ॥ से कूकर सूकर गरधभ पवहि गरभ जोनी दयि मारे महा हतिआरे ॥
 ३ ॥ दीन दइआल होहु जन उपरि करि किरपा लेहु उबारे ॥ नानक जन हरि की सरणाई हरि भावै हरि निसतारे ॥ ४ ॥
 ३ ॥ गूजरी महला ४ ॥ होहु दइआल मेरा मनु लावहु हउ अनदिनु राम नामु नित धिआई ॥ सभि सुख सभि गुण सभि
 निधान हरि जितु जपिऐ दुख भुख सभ लहि जाई ॥ १ ॥ मन मेरे मेरा राम नामु सरखा हरि भाई ॥ गुरुमति राम नामु जसु
 गावा अँति बेली दरगह लए छडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूँ आपे दाता प्रभु अँतरजामी करि किरपा लोच मेरै मनि लाई ॥ मै
 मनि तनि लोच लगी हरि सेती प्रभि लोच पूरी सतिगुरु सरणाई ॥ २ ॥ माणस जनमु पुँनि करि पाइआ बिनु नावै धिगु
 धिगु बिरथा जाई ॥ नाम बिना रस कस दुखु खावै सुखु फीका थुक थूक मुखि पाई ॥ ३ ॥ जो जन हरि प्रभु हरि हरि
 सरणा तिन दरगह हरि हरि दे वडिआई ॥ धँनु धँनु साबासि कहै प्रभु जन कउ जन नानक मेलि लए गलि लाई ॥ ४ ॥ ४
 ॥ गूजरी महला ४ ॥ गुरुमुखि सरखी सहेली मेरी मो कउ देवहु दानु हरि प्रान जीवाइआ ॥ हम होवह लाले गोले गुरुसिखा
 के जिन्हा अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि बिरहु गुरुसिख पग लाइआ ॥ मेरे प्रान

सरखा गुर के सिख भाई मो कउ करहु उपदेस हरि मिलै मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा हरि प्रभ भावै ता गुरमुखि मेले जिन्ह
 वचन गुरू सतिगुर मनि भाइआ ॥ वडभागी गुर के सिख पिआरे हरि निरबाणी निरबाण पदु पाइआ ॥ २ ॥ सत संगति गुर
 की हरि पिआरी जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ ॥ जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ से भागहीण पापी जमि खाइआ
 ॥ ३ ॥ आपि क्रिपालु क्रिपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ ॥ जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि
 समाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ गूजरी महला ४ ॥ जिन सतिगुरु पुरखु जिनि हरि प्रभु पाइआ मो कउ करि उपदेसु हरि मीठ लगावै
 ॥ मनु तनु सीतलु सभ हरिआ होआ वडभागी हरि नामु धिआवै ॥ १ ॥ भाईरे मो कउ कोई आइ मिलै हरि नामु द्रिड़ावै ॥ मेरे
 प्रीतम प्रान मनु तनु सभु देवा मेरे हरि प्रभ की हरि कथा सुनावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धीरजु धरमु गुरमति हरि पाइआ नित हरि नामै
 हरि सिउ चितु लावै ॥ अँमित बचन सतिगुर की बाणी जो बोलै सो मुखि अँमितु पावै ॥ २ ॥ निरमलु नामु जितु मैलु न लागै
 गुरमति नामु जपै लिव लावै ॥ नामु पदारथु जिन नर नही पाइआ सो भागहीण मुए मरि जावै ॥ ३ ॥ आनद मूलु जगजीवन
 दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै ॥ तूँ दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥ ४ ॥ ६ ॥

ॐ सतिगुर प्रसादि ॥ गूजरी महला ४ घरु ३ ॥

माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए ॥ सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ॥ १ ॥ हमरा जोरु सभु रहिओ मेरे बीर ॥ हरि का तनु
 मनु सभु हरि कै वसि है सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जना कउ सरधा आपि हरि लाई ॥ विचे ग्रिसत उदास रहाई ॥ २ ॥
 जब अँतरि प्रीति सिउ बनि आई ॥ तब को किछु करे सु मेरे हरि प्रभ भाई ॥ ३ ॥ जितु करै कँमि हम हरि लाए ॥ सो हम करह
 जु आपि कराए ॥ ४ ॥ जिन की भगति मेरे प्रभ भाई ॥ ते जन नानक राम नाम लिव लाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ७ ॥ १६ ॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु १ १८ शितिगुर प्रसादि ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जँत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥ १ ॥
मेरे माधउ जी सत संगति मिले सि तरिआ ॥ गुर परसादि परम पद पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननि
पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु सँबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि
आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥ ३ ॥ सभि निधान
दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अँतु न पारावरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु २ १८ शितिगुर प्रसादि ॥

किरिआचार करहि खटु करमा इतु राते संसारी ॥ अँतरि मैलु न उतरै हउमै बिनु गुर बाजी हारी ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर रखि लेवहु
किरपा धारी ॥ कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत बेद सिमिति सभि सोधे सभ एका
बात पुकारी ॥ बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥ २ ॥ अठसठि मजनु करि इसनाना भ्रमि आए धर
सारी ॥ अनिक सोच करहि दिन राती बिनु सतिगुर अँधिआरी ॥ ३ ॥ धावत धावत सभु जगु धाइओ अब आए हरि दुआरी
॥ दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ गूजरी महला ५ ॥ हरि धनु जाप हरि धनु ताप
हरि धनु भोजनु भाइआ ॥ निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साध संगति महि पाइआ ॥ १ ॥ माई खाटि आइओ घरि पूता
॥ हरि धनु चलते हरि धनु बैसे हरि धनु जागत सूता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि धनु इसनानु हरि धनु गिआनु हरि सँगि लाइ
धिआना ॥ हरि धनु तुलहा हरि धनु बेड़ी हरि हरि तारि पराना ॥ २ ॥ हरि धन मेरी चिँत विसारी हरि धनि लाहिआ

धोखा ॥ हरिं धन ते मै नव निधि पाई हाथि चरिओ हरिं थोका ॥ ३ ॥ खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥
 लादि खजाना गुरि नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रँगि रँगे ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ गूजरी महला ५ ॥ जिंसु सिमरत सभि किलविख
 नासहि पितरी होइ उधारो ॥ सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अँतु न पारो ॥ १ ॥ पूता माता की आसीस ॥ निमख न
 बिसरउ तुम्ह कउ होइ दइआला संत सँगि तेरी प्रीति ॥ कापड़ पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥ २ ॥ अँमितु पीवहु
 सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनँता ॥ रँग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिँता ॥ ३ ॥ भवरु तुम्हारा इहु मनु
 होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥ नानक दासु उन सँगि लपटाइओ जिउ बँदहि चात्रिकु मउला ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ गूजरी महला
 ५ ॥ मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात ॥ खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ॥ १ ॥ सिआनप काहू कामि
 न आत ॥ जो अनरूपिओ ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देसु कमावन धन जोरन की मनसा बीचे निकसे सास
 ॥ लसकर नेब खवास सभ तिआगे जम पुरि ऊठि सिधास ॥ २ ॥ होइ अनँनि मनहठ की द्रिडता आपस कउ जानात ॥ जो
 अनिँदु निँदु करि छोडिओ सोई फिरि फिरि खात ॥ ३ ॥ सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास ॥ कहु नानक
 गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥ गूजरी महला ५ ॥ नामु निधानु जिनि जनि जपिओ तिन के
 बँधन काटे ॥ काम क्रोध माइआ बिखु ममता इह बिआपि ते हाटे ॥ १ ॥ हरि जसु साध सँगि मिलि गाइओ ॥ गुरु परसादि
 भइओ मनु निरमलु सरब सुखा सुख पाइअउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु कीओ सोई भल मानै ऐसी भगति कमानी ॥ मित्र सत्रु
 सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ॥ २ ॥ पूरन पूरि रहिओ सब थाई आन न कतहँ जाता ॥ घट घट अँतरि सरब निरँतरि
 रँगि रविओ रँगि राता ॥ ३ ॥ भए क्रिपाल दइआल गुपाला ता निरभै कै घरि आइआ ॥ कलि कलेस मिटे खिन

भीतरि नानक सहजि समाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ गूजरी महला ५ ॥ जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ ॥ पारब्रहम जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ॥ १ ॥ गुर हरि बिनु को न बिथा दुखु काटै ॥ प्रभु तजि अवर सेवकु जे होई है तितु मानु महतु जसु घाटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ के सनबंध सैन साक कित ही कामि न आइआ ॥ हरि का दासु नीच कुलु ऊचा तिसु सँगि मन बाँछत फल पाइआ ॥ २ ॥ लाख कोटि बिखिआ के बिँजन ता महि तिसन न बूझी ॥ सिमरत नामु कोटि उजीआरा बसतु अगोचर सूझी ॥ ३ ॥ फिरत फिरत तुम्हरै दुआरि आइआ भै भँजन हरि राइआ ॥ साध के चरन धूरि जनु बाँछै सुखु नानक इहु पाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥

गूजरी महला ५ पँचपदा घरु २ १८ सितिगुर प्रसादि ॥

प्रथमे गरभ माता कै वासा ऊहा छोडि धरनि महि आइआ ॥ चित्रसाल सुँदर बाग मँदर सँगि न कछहू जाइआ ॥ १ ॥ अवर सभ मिथिआ लोभ लबी ॥ गुरि पूरै दीओ हरि नामा जीअ कउ एहा वसतु फबी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसट मीत बँधप सुत भाई सँगि बनिता रचि हसिआ ॥ जब अँती अउसरु आइ बनिओ है उन्ह पेखत ही कालि ग्रसिआ ॥ २ ॥ करि करि अनरथ बिहाइगी सँपै सुइना रूपा दामा ॥ भाड़ी कउ ओहु भाड़ा मिलिआ होरु सगल भइओ बिराना ॥ ३ ॥ हैवर गैवर रथ सँबाहे गहु करि कीने मेरे ॥ जब ते होई लांमी धाई चलहि नाही इक पैरे ॥ ४ ॥ नामु धनु नामु सुख राजा नामु कुटँब सहाई ॥ नामु सँपति गुरि नानक कउ दीई ओह मरै न आवै जाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ८ ॥

गूजरी महला ५ तिपदे घरु २ १८ सितिगुर प्रसादि ॥

दुख बिनसे सुख कीआ निवासा तिसना जलनि बुझाई ॥ नामु निधानु सतिगुरु द्रिडाइआ बिनसि न आवै जाई ॥ १ ॥ हरि जपि माइआ बँधन तूटे ॥ भए क्रिपाल दइआल प्रभ मेरे साध सँगति मिलि छूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम

रसि माता ॥ हरख सोग दुहु माहि निराला करणैहारु पछाता ॥ २ ॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ सगल जुगति बणि
आई ॥ कहु नानक प्रभु पुरख दइआला कीमति कहणु न जाई ॥ ३ ॥ १ ॥ ९ ॥

गूजरी महला ७ दुपदे घरु २ ॥ १८३८१ गुरु प्रसादि ॥

पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो ॥ बरनु जाति कोऊ पूछै नाहीं बाछहि चरन खारो ॥ १ ॥ ठाकुर ऐसो
नामु तुम्हारो ॥ सगल खिसटि को धणी कहीजै जन को अँगु निरारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साथ संगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु
आधारो ॥ नामदेउ त्रिलोचनु कबीर दासरो मुक्ति भइओ चँमिआरो ॥ २ ॥ १ ॥ १० ॥ गूजरी महला ७ ॥ है नाहीं कोऊ
बूझनहारो जानै कवनु भता ॥ सिव बिरँचि अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥ १ ॥ प्रभ की अगम अगाधि कथा
॥ सुनीऐ अवर अवर बिधि बुझीऐ बकन कथन रहता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे भगता आपि सुआमी आपन संगि रता ॥ नानक
को प्रभु पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥ २ ॥ २ ॥ ११ ॥ गूजरी महला ७ ॥ मता मसूरति अवर सिआनप जन कउ कछु
न आइओ ॥ जह जह अउसरु आइ बनिओ है तहा तहा हरि धिआइओ ॥ १ ॥ प्रभ को भगति वछलु बिरदाइओ ॥ करे
प्रितपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जप तप सँजम करम धरम हरि कीरतनु जानि गाइओ ॥
सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभै दानु सुख पाइओ ॥ २ ॥ ३ ॥ १२ ॥ गूजरी महला ७ ॥ दिन राती आराधहु पिआरो
निमख न कीजै ढीला ॥ सँत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥ १ ॥ मोहनु प्रान मान रागीला ॥ बासि
रहिओ हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु सिमरत मनि होत अनँदा उतरै मनहु जँगीला ॥ मिलबे
की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥ २ ॥ ४ ॥ १३ ॥ गूजरी महला ७ ॥ मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ
कीन्हे बस अपनही ॥ तीनि देव अरु कोडि तेतिसा तिन की हैरति कछु न रही ॥ १ ॥ बलवँति बिआपि रही

सभ महीं ॥ अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लहीं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन
 लपटहीं ॥ कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी चरन गहीं ॥ २ ॥ ७ ॥ १४ ॥ गूजरी महला ७ ॥ दुइ कर जोड़ि करी
 बेनँती ठाकुर अपना धिआइआ ॥ हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥
 भई कलिआण आनँद रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि वर नारी मँगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु
 नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥ २ ॥ ६ ॥ १५ ॥ गूजरी महला ७ ॥ मात पिता भाई सुत बँधप
 तिन का बलु है थोरा ॥ अनिक रँग माइआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिन आहि न मोरा ॥
 मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिओ तुम्हरा थोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि बलि बलि बलि चरण तुम्हारे ईहा ऊहा
 तुम्हारा जोरा ॥ साध सँगि नानक दरसु पाइओ बिनसिओ सगल निहोरा ॥ २ ॥ ७ ॥ १६ ॥ गूजरी महला ७ ॥ आल
 जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रँगु लाई ॥ मन कउ इह उपदेसु दिड़ावै सहजिं सहजिं गुण गाई ॥ १ ॥ साजन ऐसो सँतु
 सहाई ॥ जिसु भेटे तूटहिं माइआ बँध बिसरि न कबहूँ जाई ॥ रहाउ ॥ करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई ॥
 मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥ २ ॥ ८ ॥ १७ ॥ गूजरी महला ७ ॥ खिन महि थापि
 उथापनहारा कीमति काइ न करी ॥ राजा रँकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥ १ ॥ धिआईऐ अपनो सदा हरी ॥
 सोच अँदेसा ता का कहा करीऐ जा महि एक घरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी टेक पूरे मेरे सतिगुर मन सरनि तुम्हारै परी ॥
 अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥ २ ॥ ९ ॥ १८ ॥ गूजरी महला ७ ॥ तूँ दाता जीआ सभना का
 बसहु मेरे मन माहीं ॥ चरण कमल रिद माहि समाए तह भरसु अँधेरा नाही ॥ १ ॥ ठाकुर जा सिमरा तूँ ताही ॥ करि किरपा
 सरब प्रतिपालक प्रभ कउ सदा सलाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासि सासि तेरा नामु समारउ तुम ही कउ प्रभ आही ॥

नानक टेक भई करते की होर आस बिडाणी लाही ॥ २ ॥ १० ॥ १९ ॥ गूजरी महला ५ ॥ करि किरपा अपना दरसु दीजै
 जसु गावउ निसि अरु भोर ॥ केस सँगि दास पग द्वारउ इहै मनोरथ मोर ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर ॥ चिति
 चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख सरब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि ॥ नामु
 जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥ २ ॥ ११ ॥ २० ॥ गूजरी महला ५ ॥ ब्रहम लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र
 लोक ते धाइ ॥ साध सँगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ ॥ १ ॥ अब मोहि आइ परिओ सरनाइ ॥ गुहज पावको
 बहुतु प्रजारै मो कउ सतिगुर दीओ है बताइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिध साधिक अरु जख्य किंनर नर रही कँठि उरझाइ ॥ जन
 नानक अँगु कीआ प्रभि करतै जा कै कोटि ऐसी दासाइ ॥ २ ॥ १२ ॥ २१ ॥ गूजरी महला ५ ॥ अपजसु मिटै होवै जगि
 कीरति दरगह बैसणु पाईऐ ॥ जम की त्रास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती घरि जाईऐ ॥ १ ॥ जा ते घाल न बिरथी
 जाईऐ ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि सरनि दीन दुख भँजन तूँ देहि सोई
 प्रभ पाईऐ ॥ चरण कमल नानक रँगि राते हरि दासहु पैज रखाईऐ ॥ २ ॥ १३ ॥ २२ ॥ गूजरी महला ५ ॥ बिस्वँभर
 जीअन को दाता भगति भरे भँडार ॥ जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करे उधार ॥ १ ॥ मन मेरे चरन कमल सँगि राचु
 ॥ सगल जीअ जा कउ आराधहि ताहू कउ तूँ जाचु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक सरणि तुमाहरी करते तूँ प्रभ प्रान अधार ॥ होइ
 सहाई जिसु तूँ राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥ २ ॥ १४ ॥ २३ ॥ गूजरी महला ५ ॥ जन की पैज सवारी आप ॥ हरि हरि
 नामु दीओ गुरि अवरधु उतरि गइओ सभु ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिगोबिंदु रखिओ परमेसरि अपुनी किरपा धारि ॥ मिटी
 बिआधि सरब सुख होए हरि गुण सदा बीचारि ॥ १ ॥ अँगीकारु कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई ॥ अबिचल नीव धरी

गुर नानक नित नित चडै सवाई ॥ २ ॥ १५ ॥ २४ ॥ गूजरी महला ५ ॥ कबहू हरि सिउ चीतु न लाइओ ॥ धँधा करत बिहानी
 अउधहि गुण निधि नामु न गाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउडी कउडी जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइओ ॥ बिसरत प्रभ केते
 दुख गनीअहि महा मोहनी खाइओ ॥ १ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ ॥ गोबिंद दइआल क्रिपाल सुख
 सागर नानक हरि सरणाइओ ॥ २ ॥ १६ ॥ २५ ॥ गूजरी महला ५ ॥ रसना राम राम रवंत ॥ छोडि आन बिउहार मिथिआ
 भजु सदा भगवंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु एक अधारु भगता ईत आगै टेक ॥ करि क्रिपा गोबिंद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥
 १ ॥ करण कारण सँम्रथ स्त्रीधर सरणि ता की गही ॥ मुकति जुगति खाल साधू नानक हरि निधि लही ॥ २ ॥ १७ ॥ २६ ॥

गूजरी महला ५ वरु ४ चउपदे ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आओ ॥ पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥ १ ॥ रे चित चरण कमल अराधि ॥
 सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइ ॥ ईत ऊत
 जीअ नालि सँगी सरब रविआ सोइ ॥ २ ॥ कोटि जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि ॥ सरणि साधू निरमला गति होइ
 प्रभ कै नामि ॥ ३ ॥ अगम दइआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु ॥ तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि सँजोगु ॥ ४
 ॥ १ ॥ २७ ॥ गूजरी महला ५ ॥ आपना गुरु सेवि सद ही रमहु गुण गोबिंद ॥ सासि सासि अराधि हरि हरि लहि जाइ मन
 की चिंद ॥ १ ॥ मेरे मन जापि प्रभ का नाउ ॥ सूख सहज अनंद पावहि मिली निरमल थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध सँगि
 उधारि इहु मनु आठ पहर आराधि ॥ कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिटै सगल उपाधि ॥ २ ॥ अटल अछेद अभेद सुआमी
 सरणि ता की आउ ॥ चरण कमल अराधि हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ ३ ॥ पारब्रहमि प्रभि दइआ धारी बखसि लीन्हे आपि
 ॥

सरब सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ॥ ४ ॥ २ ॥ २८ ॥ गूजरी महला ५ ॥ गुर प्रसादी प्रभ धिआइआ गई
 सँका तूटि ॥ दुख अनेरा भै बिनासे पाप गए निखूटि ॥ १ ॥ हरि हरि नाम की मनि प्रीति ॥ मिलि साध बचन गोबिंद
 धिआए महा निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप ताप अनेक करणी सफल सिमरत नाम ॥ करि अनुग्रहु आपि राखे भए
 पूरन काम ॥ २ ॥ सासि सासि न बिसरु कबहुँ ब्रहम प्रभ समरथ ॥ गुण अनिक रसना किआ बखानै अगनत सदा अकथ
 ॥ ३ ॥ दीन दरद निवारि तारण दइआल किरपा करण ॥ अटल पदवी नाम सिमरण द्रिडु नानक हरि हरि सरण ॥ ४ ॥ ३
 ॥ २९ ॥ गूजरी महला ५ ॥ अहुँबुधि बहु सघन माइआ महा दीरघ रोगु ॥ हरि नामु अउखधु गुरि नामु दीनो करण कारण
 जोगु ॥ १ ॥ मनि तनि बाछीरे जन धूरि ॥ कोटि जनम के लहहि पातिक गोबिंद लोचा पूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि अँते
 मअि आसा कूकरी बिकराल ॥ गुर गिआन कीरतन गोबिंद रमणँ काटीरे जम जाल ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा
 आवा गवण ॥ प्रभ प्रेम भगति गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥ ३ ॥ मित्र पुत्र कलत्र सुररिद तिनि ताप जलँत ॥
 जपि राम रामा दुख निवारे मिलै हरि जन सँत ॥ ४ ॥ सरब विधि भ्रमते पुकारहि कतहि नाही छोटि ॥ हरि चरण सरण
 अपार प्रभ के द्रिडु गही नानक ओट ॥ ५ ॥ ४ ॥ ३० ॥

गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे १३ सितिगुर प्रसादि ॥

आराधि स्त्रीधर सफल मूरति करण कारण जोगु ॥ गुण रमण श्रवण अपार महिमा फिरि न होत बिओगु ॥ १ ॥ मन
 चरणारबिंद उपास ॥ कलि कलेस मिटँत सिमरणि काटि जमदूत फास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सत्रु दहन हरि नाम कहन अवर कछु
 न उपाउ ॥ करि अनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुआउ ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥ गूजरी महला ५ ॥ तूँ समरथु सरनि को दाता
 दुख भँजनु सुख राइ ॥ जाहि कलेस मिटे भै भरमा निरमल गुण प्रभ गाइ ॥ १ ॥ गोविंद तुझ बिनु अवरु न ठाउ ॥

करि किरपा पारब्रह्म सुआमी जपी तुमारा नाउ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिव लागी ॥ कवल प्रगास भए साध सँगे दुरमति बुधि तिआगी ॥ २ ॥ आठ पहर हरि को गुण गावै सिमरै दीन दैआला ॥ आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जँजाला ॥ ३ ॥ चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी ओति पोति प्रभु साथि ॥ सरनि परिओ नानक प्रभ तुमरी दे राखिओ हरि हाथ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

एक नगरी पँच चोर बसीअले बरजत चोरी धावै ॥ त्रिहदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥ १ ॥ चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥ रामु रिदै जपमाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे ॥ सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रह्म लिव जागे ॥ २ ॥ पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥ सरब जोति निरँजन सँभू छोडहु बहुतु जँजाला ॥ ३ ॥ सुणि सिखवँते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला ॥ मनि बीचारि एक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥ ४ ॥ सो गुरु सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ॥ तिसु कारणि कँमु न धँधा नाही धँधै गिरही जोगी ॥ ५ ॥ कामु क्रोधु अहँकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइआ ॥ मनि ततु अविगतु धिआइआ गुर परसादी पाइआ ॥ ६ ॥ गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि दूता ॥ ब्रह्म कमल मधु तासु रसादँ जागत नाही सूता ॥ ७ ॥ महा गँभीर पत्र पाताला नानक सरब जुआइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ गूजरी महला १ ॥ कवन कवन जाचहि प्रभ दाते ता के अँत न परहि सुमार ॥ जैसी भूख होइ अभ अँतरि तूँ समरथु सचु देवणहार ॥ १ ॥ ऐ जी जपु तपु सँजमु सचु अधार ॥ हरि हरि नामु देहि सुखु पाईऐ तेरी भगति भरे भँडार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुँन समाधि रहहि लिव लागे एका एकी सबदु बीचार ॥ जलु थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥ २ ॥ ना तदि माइआ मगनु न छाइआ ना सूरज चँद न जोति

अपार ॥ सरब द्रिसटि लोचन अभ अंतरि एका नदरि सु त्रिभवण सार ॥ ३ ॥ पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रहमा
 बिसनु महेस अकार ॥ सरबे जाचिक तूँ प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥ ४ ॥ कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइक देदे
 तोटि नाही भँडार ॥ ऊँधै भाँडे कछु न समावै सीधै अँमितु परै निहार ॥ ५ ॥ सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि
 जाचि करहि जैकार ॥ जैसी पिआस होइ मन अंतरि तैसो जलु देवहि परकार ॥ ६ ॥ बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु
 नाही गुरदेव मुरार ॥ ता कउ कालु नाही जमु जोहै बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥ ७ ॥ अब तब अवरु न मागउ हरि
 पहि नामु निरँजन दीजै पिआरि ॥ नानक चात्रिकु अँमित जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥ ८ ॥ २ ॥ गूजरी
 महला १ ॥ ऐ जी जनमि मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई ॥ गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई
 ॥ १ ॥ भाई रे राम नामि चितु लाई ॥ गुर परसादी हरि प्रभ जाचे ऐसी नाम बडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐ जी बहुते भेख
 करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई ॥ बिनु हरि भगति नाही सुखु प्राणी बिनु गुर गरबु न जाई ॥ २ ॥ ऐ जी
 कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई ॥ साचै सबदि रते से बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ गुर सरणाई
 जोहि न साकै दूतु न सकै सँताई ॥ अविगत नाथ निरँजनि राते निरभउ सिउ लिव लाई ॥ ४ ॥ ऐ जीउ नामु दिडहु
 नामे लिव लावहु सतिगुर टेक टिकाई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥ ५ ॥ ऐ जी भागि परे गुर
 सरणि तुम्हारी मै अवर न दूजी भाई ॥ अब तब एको एकु पुकारउ आदि जुगादि सरखाई ॥ ६ ॥ ऐ जी राखहु पैज नाम
 अपुने की तुझ ही सिउ बनि आई ॥ करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई ॥ ७ ॥ ऐ जी किआ मागउ
 किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइआ जाई ॥ नानक नामु पदारथु दीजै हिरदै कँठि बणाई ॥ ८ ॥ ३ ॥ गूजरी
 महला १ ॥ ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥ नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग

बिसरजित रोग ॥ १ ॥ भाई रे गुर किरपा ते भगति ठाकुर की ॥ सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण रसन खहि प्रभ सँगे जो तिसु भावै सहजि हरी ॥ बिनु हरि नाम त्रिथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफल मेक घरी ॥ २ ॥ ऐ जी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निँदक गति नही काई ॥ रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चडै सवाई ॥ ३ ॥ ऐ जी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई ॥ निँदक नर काले मुख निँदा जिन्ह गुर की दाति न भाई ॥ ४ ॥ ऐ जी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई ॥ आनद मूलु नाथु सिरि नाथा सतिगुरु मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ ऐ जी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ॥ पारसु भेटि कँचनु धातु होई सत संगति की वडिआई ॥ ६ ॥ हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई ॥ पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥ ७ ॥ तूँ वड पुरखु अगँम तरोवरु हम पँखी तुझ माही ॥ नानक नामु निरँजन दीजै जुगि हुगि सबदि सलाही ॥ ८ ॥ ४ ॥

गूजरी महला १ वरु ४ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

भगति प्रेम आराधितँ सचु पिआस परम हितँ ॥ बिललाप बिलल बिनँतीआ सुख भाइ चित हितँ ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरि सरणी ॥ संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ए मन मिरत सुभ चितँ गुर सबदि रमणँ ॥ मति ततु गिआनँ कलिआण निधानँ हरि नाम मनि रमणँ ॥ २ ॥ चल चित वित भ्रमा भ्रमँ जगु मोह मगन हितँ ॥ थिरु नामु भगति दिडँ मती गुर वाकि सबद रतँ ॥ ३ ॥ भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपँ ॥ असथानु हरि निहकेवलँ सति मती नाम तपँ ॥ ४ ॥ इहु जगु मोह हेत बिआपितँ दुखु अधिक जनम मरणँ ॥ भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणँ ॥ ५ ॥ गुरमति निहचल मनि मनु मनँ सहज बीचारँ ॥ सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारँ ॥ ६ ॥ भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी ॥

हरि नामु हिरदै पवित्रु पावनु इहु सरीरु तउ सरणी ॥ ७ ॥ लब लोभ लहरि निवारणु हरि नाम रासि मन ॥ मनु मारि तुही निरंजना
कहु नानका सरन ॥ ८ ॥ १ ॥ ९ ॥

गूजरी महला ३ वरु १ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

निरति करी इहु मनु नचाई ॥ गुर परसादी आपु गवाई ॥ चितु थिरु राखै सो मुकति होवै जो इछी सोई फलु पाई ॥ १ ॥ नाचुरे
मन गुर कै आगै ॥ गुर कै भाणै नाचहि ता सुखु पावहि अँते जम भउ भागै ॥ रहाउ ॥ आपि नचाए सो भगतु कहीरे आपणा
पिआरु आपि लाए ॥ आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अँधे कउ मारगि पाए ॥ २ ॥ अनदिनु नाचै सकति निवारै सिव गरि नीद न
होई ॥ सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ॥ ३ ॥ सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनि जन
गिआन बीचारी ॥ सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी ॥ ४ ॥ खँड ब्रहमँड त्रै गुण नाचे जिन लागी हरि
लिव तुमारी ॥ जीअ जँत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ॥ ५ ॥ जो तुधु भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाए ॥
से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाए ॥ ६ ॥ एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई ॥ जीवतु मरै ता
सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥ ७ ॥ माइआ कै अरथि बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी ॥ गुर परसादी सोई जनु पाए
जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ ८ ॥ इकु दमु साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाइ ॥ साहि साहि सदा समालीरे आपे बखसे करे रजाइ ॥ ९
॥ सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु वीचारी ॥ कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ॥ १० ॥ १
॥ ६ ॥

गूजरी महला ४ वरु २ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु जीअरा हरि न सकै जिउ बालकु खीर अधारी ॥ अगम अगोचर प्रभु गुरमुखि पाईरे अपुने सतिगुर कै बलिहारी ॥ १ ॥
मनरे हरि कीरति तरु तारी ॥ गुरमुखि

नामु अँमित जलु पाईऐ जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ रहाउ ॥ सनक सनँदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी ॥
 सरणागति प्रह्लाद जन आए तिन की पैज सवारी ॥ २ ॥ अलख निरँजनु एको वरतै एका जोति मुरारी ॥ सभि जाचिक तू
 एको दाता मागहि हाथ पसारी ॥ ३ ॥ भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ कथा नित निआरी ॥ सफल जनमु भइआ
 तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥ ४ ॥ मनमुख दुबिधा दुर्मति बिआपे जिन अँतरि मोह गुबारी ॥ सँत जना की कथा न भावै
 ओइ डूबे सणु परवारी ॥ ५ ॥ निँदकु निँदा करि मलु धोवै ओहु मलभखु माइआधारी ॥ सँत जना की निँदा विआपे ना उरवारि
 न पारी ॥ ६ ॥ एहु परपँचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी ॥ हरि एको सूतु वरतै जुग अँतरि सूतु खिँचै एकँकारी
 ॥ ७ ॥ रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी ॥ नानक हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥ ८
 ॥ १ ॥ ७ ॥

गूजरी महला ५ घरु २ १८ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

राजन महि तूँ राजा कहीअहि भूमन महि भूमा ॥ ठाकुर महि ठाकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा ॥ १ ॥ पिता मेरो बडो धनी अगमा
 ॥ उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखीअन महि सुखीआ तूँ कहीअहि दातन सिरि दाता ॥
 तेजन महि तेजवँसी कहीअहि रसीअन महि शता ॥ २ ॥ सूरन कहि सूरु तूँ कहीअहि भोगन महि भोगी ॥ ग्रसतन महि तूँ बडो
 ग्रिहसती जोगन महि जोगी ॥ ३ ॥ करतन महि तूँ करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥ साहन महि तूँ साचा साहा
 वापारन महि वापारी ॥ ४ ॥ दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥ लखिमी केतक गनी न जाईऐ गनि न सकउ सीका
 ॥ ५ ॥ नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन महि गिआनी ॥ जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इसनानन महि इसनानी ॥ ६ ॥
 सिधन महि तेरी प्रभ सिधा करमन सिरि करमा ॥ आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा ॥ ७ ॥ जिउ बोलावहि

तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ॥ साध सँगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥

गूजरी महला ७ घरु ४ १९ शितिगुर प्रसादि ॥

नाथ नरहर दिन बँधव पतित पावन देव ॥ भै त्रास नास क्रिपाल गुण निधि सफल सुआमी सेव ॥ १ ॥ हरि गोपाल गुर गोबिंद
चरण सरण दिआल केसव तारि जग भव सिँध ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध हरन मद मोह दहन मुरारि मन मकरँद ॥ जनम
मरण निवारि धरणीधर पति राखु परमानंद ॥ २ ॥ जलत अनिक तरँग माइआ गुर गिआन हरि रिद मँत ॥ छेदि अहँबुधि
करुणामै चिँत मेटि पुरख अनँत ॥ ३ ॥ सिमरि समरथ पल महरत प्रभ धिआनु सहज समाधि ॥ दीन दइआल प्रसँन पूरन
जाचीऐ रज साध ॥ ४ ॥ मोह मिथन दुँरँत आसा बासना बिकार ॥ राखु धरम भरम बिदारि मन ते उधरु हरि निरँकार ॥ ५ ॥
धनाढि आढि भँडार हरि निधि होत जिना न चीर ॥ खल मुगअ मूड कटाख्य स्त्रीधर भए गुण मति धीर ॥ ६ ॥ जीवन मुक्त
जगदीस जपि मन धारि रिद परतीति ॥ जीअ दइआ मइआ सबत्र रमणँ परम हँसह रीति ॥ ७ ॥ देत दरसन सुवन हरि जसु
रसन नाम उचार ॥ अँग सँग भगवान परसन प्रभ नानक पतित उधार ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥ ५ ॥ १ ॥ १ ॥ २ ॥ ५७ ॥

गूजरी की वार महला ३ सिकँदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी १९ शितिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ३ ॥ इह जगतु ममता मुआ जीवन की बिधि नाहि ॥ गुर कै भाणै जो चलै तां जीवण पदवी पाहि ॥ ओइ सदा सदा
जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि ॥ नानक नदरी मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ अँदरि सहसा दुखु है
आपै सिरि धँधै मार ॥

दूजै भाइ सुते कबहिं न जागहिं माइआ मोह पिआर ॥ नामु न चेतहिं सबदु न वीचारहिं इहु मनमुख का आचारु ॥ हरिं नामु
 न पाइआ जनमु बिरथा गवाइआ नानक जमु मारिं करे खुआर ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई
 ॥ मता मसूरति आपिं करे जो करे सु होई ॥ तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥ तदहु आपे आपिं निरँकारु है ना
 ओपति होई ॥ जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ १ ॥ सलोकु मः ३ ॥ साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु
 कमाइ ॥ ओहु अउहाणी कदे नाहिं ना आवै ना जाइ ॥ सदा सदा सो सेवीरे जो सभ महिं रहै समाइ ॥ अवरु दूजा किउ
 सेवीरे जँमै ते मरिं जाइ ॥ निहफलु तिन का जीविआ जिं खसमु न जाणहिं आपणा अवरी कउ चितु लाइ ॥ नानक एव न
 जापई करता केती देइ सजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सचा नामु धिआईरे सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमु बुझिं परवाणु होइ ता
 फलु पावै सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलिं न बुझई अँधा कचु निकचु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सँजोगु विजोगु
 उपाइओनु खिसटी का मूलु रचाइआ ॥ हुकमी खिसटिं साजीअनु जोती जोति मिलाइआ ॥ जोती हँ सभु चानणा सतिगुरिं
 सबदु सुणाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धँधै लाइआ ॥ माइआ का मूलु रचाइओनु तुरीआ सुखु पाइआ ॥ २ ॥
 सलोक मः ३ ॥ सो जपु सो तपु जिं सतिगुर भावै ॥ सतिगुर कै भाणै वडिआई पावै ॥ नानक आपु छोडि गुर माहिं समावै
 ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुर की सिख को विरला लेवै ॥ नानक जिंसु आपिं वडिआई देवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु
 अगिआनु है बिखमु अति भारी ॥ पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीरे तारी ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरिं पारि उतारी ॥ गुर
 सबदी मनु निरमला हउमै छडिं विकारी ॥ हरिं हरिं नामु धिआईरे हरिं हरिं निसतारी ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ कबीर मुकति
 दुआरा सँकुड़ा राई दसवै भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिआ किउ करिं जाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ
 ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक मुकति दुआरा अति नीका नाबहा होइ सु जाइ ॥

हउमै मनु असथूलु है किउ करि विचु दे जाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ हउमै गई जोति रही सभ आइ ॥ इहु जीउ सदा मुकतु है
 सहजे रहिआ समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता ॥ गणतै प्रभू न पाईऐ दूजै भरमीता ॥
 सतिगुर मिलिऐ जीवत मरै बुद्धि सचि समीता ॥ सबदे हउमै खोईऐ हरि मेलि मिलीता ॥ सभ किछु जाणै करे आपि आपे
 विगसीता ॥ ४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ ॥ धिगु इवेहा जीविआ
 किआ जुग महि पाइआ आइ ॥ माइआ खोटी रासि है एक चसे महि पाजु लहि जाइ ॥ हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ
 बदनु जाइ कुमलाइ ॥ जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन्ह सुखु वसिआ मनि आइ ॥ हरि नामु धिआवहि रँग सिउ
 हरि नामि रहे लिव लाइ ॥ नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ ॥ रँगु तिसै कउ अगला वँनी
 चडै चड़ाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥ इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥
 गुरमुखि कोई गारडू तिनि मलि दलि लाई पाइ ॥ नानक सोई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ढाढी करे
 पुकार प्रभू सुणाइसी ॥ अँदरि धीरक होइ पूरा पाइसी ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु से करम कमाइसी ॥ जा होवै खसमु
 दइआलु ता महलु घरु पाइसी ॥ सो प्रभु मेरा अति वडा गुरमुखि मेलाइसी ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ सभना का सहु एकु
 है सद ही रहै हजूरि ॥ नानक हुकमु न मँनई ता गर ही अँदरि दूरि ॥ हुकमु भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदरि करेइ ॥
 हुकमु मँनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ रैणि सबाई जलि मुई कँत न लाइओ भाउ ॥ नानक सुखि
 वसनि सोहागणी जिन्ह पिआरा पुरखु हरि राउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु जगु फिरि मै देखिआ हरि इको दाता ॥ उपाइ
 कितै न पाईऐ हरि करम बिधाता ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता ॥ अँदरहु तिसना अगनि बुजी हरि अँमित
 सरि नाता ॥ वडी वडिआई वडे की गुरमुखि बोलाता ॥ ६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ काइआ हँस किआ

प्रीति है जिं पइआ ही छडि जाइ ॥ एस नो कूडु बोलिं किं खवालीऐ जिं चलदिआ नालिं न जाइ ॥ काइआ मिटी अँधु है
 पउणै पुछहु जाइ ॥ हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ ॥ नानक हुकमु न जातो खसम का जिं रहा सचि समाइ
 ॥ १ ॥ मः ३ ॥ एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥ इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ
 ॥ इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ ॥ पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखिं पलै न पाइ ॥ धनु वापारी नानका
 जिंहा नाम धनु खटिआ आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर गँभीरा ॥ सभु जगु तिस कै वसि है सभु
 तिस का चीरा ॥ गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा ॥ किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरु ॥ गुणवँती सालाहिआ
 सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥ ७ ॥ सलोकु मः ३ ॥ धिगु तिन्हा दा जीविआ जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै
 पाप कमाइ ॥ मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन्ह बूझ न काई पाइ ॥ हलति पलति ओइ सुखु न पावहि अँति
 गए पछुताइ ॥ गुर परसादी को नामु धिआए तिसु हउमै विचहु जाइ ॥ नानक जिंसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी
 आइ पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुखु ऊधा कउलु है ना तिसु भगति न नाउ ॥ सकती अँदरि वरतदा कूडु तिस का है उपाउ
 ॥ तिस का अँदरु चितु न भिजई मुखिं फीका आलाउ ॥ ओइ धरमि रलाए ना रलनिह ओना अँदरि कूड़ि सुआउ ॥ नानक
 करतै बणत बणाई मनमुखु कूडु बोलिं बोलिं डुबे गुरमुखिं तरे जपिं हरि नाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बिनु बूझे वडा फेरु पइआ
 फिरि आवै जाई ॥ सतिगुर की सेवा न कीतीआ अँति गइआ पछुताई ॥ आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई
 ॥ तिसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई ॥ सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई ॥ ८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जिं
 सतिगुरु सेवे आपणा तिस नो पूजे सभु कोइ ॥ सभना उपावा सिरि उपाउ है हरि नामु परापति होइ ॥ अँतरि सीतल साति
 वसै जपिं हिरदै सदा सुखु होइ ॥ अँमितु खाणा अँमितु पैणणा नानक नामु वडाई होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ए मन गुर

की सिख सुणि हरि पावहि फुणी निधानु ॥ हरि सुखदाता मनि वसै हउमै जाइ गुमानु ॥ नानक नदरी पाईरे ता अनदिनु
 लागै धिआनु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता ॥ अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता
 ॥ तह जोति प्रगासु अनंद रसु अगिआनु गविता ॥ अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता ॥ सभना दाता एकु है
 इको हरि मिता ॥ ९ ॥ सलोकु मः ३ ॥ ब्रह्मु बिंदे सो ब्राहमणु कहीरे जिं अनदिनु हरि लिव लाए ॥ सतिगुर पुछै सचु
 संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाए ॥ हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए ॥ इसु जुग महि को विरला ब्रह्म
 गिआनी जिं हउमै मेटि समाए ॥ नानक तिस नो मिलिआ सदा सुखु पाईरे जिं अनदिनु हरि नामु धिआए ॥ १ ॥ मः ३
 ॥ अंतरि कपटु मनमुखु अगिआनी रसना झूठु बोलाइ ॥ कपटि कीतै हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाइ ॥ दूजै
 भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ ॥ इतु कमाणै सदा दुखु पावै जमै मरै फिरि आवै जाइ ॥ सहसा मूलि न
 चुकई विचि विसटा पचै पचाइ ॥ जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ॥ हरि नामु धिआवै हरि नामो
 गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि ॥ साहिबु सेवन्हि आपणा पूरै सबदि
 वीचारि ॥ हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ॥ हरि का महलु तिन्ही पाइआ जिन्ह हउमै विचहु मारि ॥ नानक
 गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उर धारि ॥ १० ॥ सलोकु मः ३ ॥ गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु
 लाइआ ॥ गुरमुखि अनदिनु रहै रंगि राता हरि का नामु मनि भाइआ ॥ गुरमुखि हरि वेखाहि गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि
 हरि सहजि रंगु लाइआ ॥ नानक गुरमुखि गिआनु परापटि होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ ॥ जिस नो करमु होवै
 धुरि पूरा तिनि गुरमुखि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु ॥ सहजे
 नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि ॥ फिरि फिरि जूनी पाईरे विसटा सदा खुआरु ॥ कूड़ै लालचि लगिआ

ना उखार न पारु ॥ नानक गुरमुखि उबरे जिं आपि मेले करतारिं ॥ २ ॥ पउडी ॥ भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि
रहाए ॥ हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए ॥ हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते रसना हरि रसु पिआए ॥ सफलु
जनमु जिन्ही गुरमुखि जाता हरि जीउ रिदै वसाए ॥ बाझु गुरु फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआए ॥ ११ ॥ सलोकु मः ३
॥ कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि उतम पदु पाइआ ॥ सतिगुर सेवि हरि नामु मनि वसाइआ अनदिनु
नामु धिआइआ ॥ विचे ग्रिह गुर बचनि उदासी हउमै मोहु जलाइआ ॥ आपि तरिआ कुल जगतु तराइआ धँनु जणेदी
माइआ ॥ ऐसा सतिगुरु सोई पाए जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइआ ॥ जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु
जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ त्रै गुण माइआ वेखि भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइआ ॥ पँडित
भुलि भुलि माइआ वेखाहि दिखा किनै किहु आणि चड़ाइआ ॥ दूजै भाइ पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि खुआइआ ॥
जोगी जंगम सँनिआसी भुले ओन्हा अहँकारु बहु गरबु वधाइआ ॥ छादनु भोजनु न लैही सत भिखिआ मनहठि जनमु
गवाइआ ॥ एतड़िआ विचहु सो जनु समधा जिनि गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ जन नानक किस नो आखि सुणाईए जा
करदे सभि कराइआ ॥ २ ॥ पउडी ॥ माइआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहँकारा ॥ एह जम की सिकदार है एन्हा उपरि
जम का डँडु करारा ॥ मनमुख जम मगि पाईअन्हि जिन्ह दूजा भाउ पिआरा ॥ जम पुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा
॥ जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा ॥ १२ ॥ सलोकु मः ३ ॥ हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो
गई खाइ ॥ जो मोहि दूजै चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ ॥ गुर कै सबदि परजालीरे ता एह विचहु जाइ ॥ तनु
मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ नानक माइआ का मारणु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इहु
मनु केतड़िआ जुग भरमिआ थिरु रहै न आवै जाइ ॥ हरि भाणा ता भरमाइनु करि परपँचु खेलु उपाइ ॥

जा हरि बखसे ता गुर मिलै असथिरु रहै समाइ ॥ नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
 काइआ कोटु अपारु है मिलणा सँजोगी ॥ काइआ अँदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी ॥ आपि अतीतु अलिपतु है
 निरजोगु हरि जोगी ॥ जो तिसु भावै सो करे हरि करे सु होगी ॥ हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि विजोगी ॥ १३
 ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु आपि अखाइदा गुर सबदी सचु सोइ ॥ वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ वाहु
 वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ ॥ नानक वाह वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ वाहु
 वाहु करती रसना सबदि सुहाई ॥ पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई ॥ वडभागीआ वाहु वाहु मुहहु कढाई ॥ वाहु वाहु करहिं
 सेई जन सोहणे तिन्ह कउ परजा पूजण आई ॥ वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ बजर कपाट काइआ गडह भीतरि कूडु कुसतु अभिमानी ॥ भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अँध अगिआनी ॥
 उपाइ कितै न लभनी करि भेख थके भेखवानी ॥ गुर सबदी खोलाईअन्हि हरि नामु जपानी ॥ हरि जीउ अँम्रित बिरखु है
 जिंन पीआ ते त्रिपतानी ॥ १४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु करतिआ रैणै सुखि विहाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ सदा
 अनँदु होवै मेरी माइ ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि सिउ लिव लाइ ॥ वाहि वाहु करमी बोलै बोलाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ
 सोभा पाइ ॥ नानक वाहु वाहु सति रजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ॥ वाहु वाहु सबदे
 उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि ॥ से वडभागी नानका हरि हरि रिदै
 समालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ए मना अति लोभीआ नित लोभे राता ॥ माइआ मनसा मोहणी दह दिस फिराता ॥ अगै नाउ
 जाति न जाइसी मनमुखि दुखु खाता ॥ रसना हरि रसु न चखिओ फीका बोलाता ॥ जिना गुरमुखि अँम्रितु चाखिआ से
 जन त्रिपताता ॥ १५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सचा गहिर गँभीरु ॥ वाहु वाहु तिस नो

आखीरे जि गुणदाता मति थीरु ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीरे जि सभ महि रहिआ समाइ ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीरे जि
 देदा रिजकु सबाहि ॥ नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीरे जि सतिगुर दीआ दिखाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु गुरमुख
 सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ ॥ ओना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ ॥ गुरमुखि अँमितु पीवणा वाहु वाहु
 करहि लिव लाइ ॥ नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले त्रिभवण सोझी पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि कै भाणै गुरु मिलै
 सेवा भगति बनीजै ॥ हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै ॥ हरि कै भाणै सुखु पाईरे हरि लाहा नित लीजै ॥ हरि कै
 तखति बहालीरे निज घरि सदा वसीजै ॥ हरि का भाणा तिनी मँनिआ जिना गुरु मिलीजै ॥ १६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु
 वाहु से जन सदा करहि जिन्ह कउ आपे देइ बुझाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ ॥ वाहु वाहु
 गुरसिखु जो नित करे मन चिँदिआ फलु पाइ ॥ वाहु वाहु करहि से जन सोहणे हरि तिन्ह कै सँगि मिलाइ ॥ वाहु वाहु हिरदै
 उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ ॥ नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन्ह कउ देउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु साहिबु
 सचु है अँमितु जा का नाउ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारे जाउ ॥ वाहु वाहु गुणी निधानु है जिस नो
 देइ सुखाइ ॥ वाहु वाहु गुणी निधानु है जिस नो देइ सुखाइ ॥ वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ वाहु
 वाहु गुरसिख नित सभ कहहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै ॥ नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जमकँकरु नेड़ि न आवै ॥ २
 ॥ पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ॥ सतिगुर ते सचु पछाणीरे सचि सहजि समाणी ॥ अनदिनु जागहि ना
 सवहि जागत रैणि विहाणी ॥ गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुँन पराणी ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ पचि मुए अजाणी ॥ १७
 ॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु बाणी निरँकार है तिसु जेवडु अवर न कोइ ॥ वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥
 वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ ॥ वाहु वाहु अँमित नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ वाहु वाहु करमी पाईरे आपि दइआ

रिं देइ ॥ नानक वाहु वाहु गुरमुखिं पाईऐ अनदिनु नामु लएइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे साति न आवई दूजी
 नाही जाइ ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमै न पाइआ जाइ ॥ जिन्हा अंतरि लोभ विकारु है दूजै भइ खुआइ ॥ जंमणु
 मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ जिन्हा सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न
 होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ढाढी तिस नो आखीऐ जिं खसमै
 धरे पिआरु ॥ दरिं खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥ ढाढी दरु घरु पाइसी सचु रखै उर धारि ॥ ढाढी का महलु अगला
 हरिं कै नाइ पिआरि ॥ ढाढी की सेवा चाकरी हरिं जपि हरिं निसतारि ॥ १८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ गूजरी जाति गवारि जा
 सहु पाए आपणा ॥ गुर कै सबदि वीचारि अनदिनु हरिं जपु जापणा ॥ जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ पवै सा कुलवँती नारि
 ॥ सा हुकमु पछाणै कँत का जिस नो क्रिपा कीती करतारि ॥ ओह कुचजी कुलखणी परहरि छोडी भतारि ॥ भै पइऐ मलु
 कटीऐ निरमल होवै सरीरु ॥ अंतरि परगासु मति ऊतम होवै हरिं जपि गुणी गहीरु ॥ भै विचि बैसै भै रहै भै विचि कमावै
 कार ॥ ऐथै सुखु वडिआईआ दरगह मोख दुआर ॥ भै ते निरभउ पाईऐ मिलिं जोती जोति अपार ॥ नानक खसमै भावै
 सा भली जिस नो आपे बखसे करतारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सदा सदा सालाहीऐ सचे कउ बलिं जाउ ॥ नानक एकु छोडिं दूजै
 लगै सा जिहवा जलिं जाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अँसा अउतारु उपाइओनु भाउ दूजा कीआ ॥ जिउ राजे राजु कमावदे दुख
 सुख भिड़ीआ ॥ ईसरु ब्रहमा सेवदे अँतु तिन्ही न लहीआ ॥ निरभउ निरँकारु अलखु है गुरमुखि प्रगटीआ ॥ तिथै सोगु
 विजोगु न विआपई असथिरु जगि थीआ ॥ १९ ॥ सलोकु मः ३ ॥ एहु सभु किछु आवण जाणु है जेता हे आकारु ॥
 जिनि एहु लेखा लिखिआ सो होआ परवाणु ॥ नानक जे को आपु गणाइदा सो मूरखु गावारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनु कुँचरु
 पीलकु गुरु गिआनु कुँडा जह खिँचे तह जाइ ॥ नानक हसती कुँडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥

तिसु आगै अरदासि जिनि उपाइआ ॥ सतिगुरु आपणा सेवि सभ फल पाइआ ॥ अँमित हरि का नाउ सदा धिआइआ ॥ सँत
 जना कै सँगि दुखु मिटाइआ ॥ नानक भए अचिँतु हरि धनु निहचलाइआ ॥ २० ॥ सलोकु मः ३ ॥ खेति मिआला उचीआ
 घरु उचा निरणउ ॥ महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ ॥ बरसना त बरसु खना बहुड़ि बरसहि काहि ॥ नानक तिन्ह
 बलिहारणै जिन्ह गुरुमुखि पाइआ मनि माहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि ॥ नानक गुरुमुखि
 जाणीरे जा कउ आपि करे परगासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा साई ॥ तूरखवाला सदा सदा हउ
 तुधु धिआई ॥ जीअ जँत सभि तेरिआ तूरहिआ समाई ॥ जो दास तेरे की निँदा करे तिसु मारि पचाई ॥ चिँता छडि अचिँतु
 रहु नानक लागि पाई ॥ २१ ॥ सलोक मः ३ ॥ आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ ॥ नानक आसा पूरीआ सचे सिउ
 चितु लाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ ॥ नानक निहचलु को नही बाइहु हरि कै नाइ
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥ आपे सागरु आपे
 बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु ॥ जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥ २२
 ॥ १ ॥ सुधु

शुगु गूजरी वार महला ७ १३ सतिगुरु प्रसादि ॥

सलोकु मः ७ ॥ अँतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुरु नाउ ॥ नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुरु नाउ ॥ सतिगुरु सेती
 रतिआ दरगह पाईरे ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथु देइ ॥ जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥ १ ॥
 मः ७ ॥ रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥ गुरु की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥ होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥
 साध जना कै सँगि भवजलु तारिअनु ॥ साकत निँदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ तिसु साहिब की टेक नानक मने माहि
 ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दुख जाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥

अकुल निरँजन पुरखु अगमु अपारीये ॥ सचो सचा सचु सचु निहारीये ॥ कूडु न जापै किछु तेरी धारीये ॥ सभसै दे
 दातारु जेत उपारीये ॥ इकतु सूति परोइ जोति सँजारीये ॥ हुकमे भवजल मँझि हुकमे तारीये ॥ प्रभ जीउ तुधु धिआए
 सोइ जिंसु भागु मथारीये ॥ तेरी गति मिति लखी न जाइ हउ तुधु बलिहारीये ॥ १ ॥ सलोकु मः ५ ॥ जा तू तुसहि
 मिहरवान अचिँतु वसहि मन माहि ॥ जा तूँ तुसहि मिहरवान नउ निधि घर महि पाहि ॥ जा तूँ तुसहि मिहरवान ता गुर का
 मँत्रु कमाहि ॥ जा तूँ तुसहि मिहरवान ता नानक सचि समाहि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ किती बैहन्हि बैहणे मुचु वजाइनि वज ॥
 नानक सचे नाम विणु किसै न रही आ लज ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु धिआइन्हि बेद कतेबा सणु खड़े ॥ गणती गणी न जाइ
 तेरै दरि पड़े ॥ ब्रहमे तुधु धिआइन्हि इँद्र इँद्रासणा ॥ सँकर बिसन अवतार हरि जसु मुखि भणा ॥ पीर पिकाबर सेख
 मसाइक अउलीये ॥ ओति पोति निरँकार घटि घटि मउलीये ॥ कूडहु करे विणासु धरमे तगीये ॥ जितु जितु लाइहि आपि
 तितु लगीये ॥ २ ॥ सलोकु मः ५ ॥ चँगिआई. आलकु करे बुरिआई. होइ सेरु ॥ नानक अजु कलि आवसी गाफल फाही
 पेरु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ कितीआ कुढँग गुझा थीये न हितु ॥ नानक तै सहि ढकिआ मन महि सचा मितु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
 हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ ॥ नउ निधि पाई राजु जीवा बोलिआ ॥ अँमित नामु निधानु दासा घरि घणा
 ॥ तिन कै सँगि निहालु खवणी जसु सुणा ॥ कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ ॥ परवा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ
 ॥ आपहु कछु न होइ प्रभ नदरि निहालीये ॥ मोहि निरगुण दिचै थाउ सँत धरम सालीये ॥ ३ ॥ सलोक मः ५ ॥ साजन
 तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पतित पुनीत असँख होहि
 हरि चरणी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ जिंसु नानक मसतकि भाग ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नित जपीये सासि गिरासि
 नाउ परवदिगार दा ॥ जिस नो करे रहँम तिसु न विसारदा ॥ आपि उपावणहार आपे ही मारदा ॥ सभु

किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा ॥ अनिक रूप खिन माहि कुरति धारदा ॥ जिस नो लाइ सचि तिसहि उधारदा ॥ जिस
 दै होवै वलि सु कदे न हारदा ॥ सदा अभगु दीबाणु है हउ तिसु नमसकारदा ॥ ४ ॥ सलोक मः ५ ॥ कामु क्रोध लोभु
 छोडीरे दीजै अगनि जलाइ ॥ जीवदिआ नित जापीरे नानक साचा नाउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सिमरत सिमरत प्रभु आपणा
 सभ फल पाए आहि ॥ नानक नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ सो मुकता संसारि जि गुरि
 उपदेसिआ ॥ तिस की गई बलाइ मिटे अँदेसिआ ॥ तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ ॥ जन कै संगि निहालु पापा
 मैलु थोइ ॥ अँम्रितु साचा नाउ ओथै जापीरे ॥ मन कउ होइ संतोखु भुखा धापीरे ॥ जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बँधन
 काटीरे ॥ गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीरे ॥ ५ ॥ सलोक मः ५ ॥ मन माहि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि
 नीत ॥ हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत ॥ १ ॥ मः ५ ॥ द्रिसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि ॥
 नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी सूलि ॥ २ ॥ पउडी ॥ जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥ छोडि
 सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥ पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइ जरि ॥ साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥
 सेवहु सतिगुर देव अगै न मरहु डरि ॥ खिन माहि करे निहालु ऊणे सुभर भरि ॥ मन कउ होइ संतोखु धिआईरे सदा हरि ॥
 सो लगा सतिगुर सेव जा कउ करमु धुरि ॥ ६ ॥ सलोक मः ५ ॥ लगडी सुथानि जोड़णहारै जोडीआ ॥ नानक लहरी
 लख सै आन डुबण देइ न मा पिरि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥ बलि बलि
 जाई संत पिआरे नानक पूरन कामां ॥ २ ॥ पउडी ॥ पाईअनि सभि निधान तेरै रंगि रतिआ ॥ न होवी पछोताउ तुधनो
 जपतिआ ॥ पहुचि न सकै कोइ तेरी टेक जन ॥ गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन ॥ गुर पहि सिफति भँडारु करमी
 पाईरे ॥ सतिगुर नदरि निहाल बहुडि न धाईरे ॥ रखै आपि दइआलु करि दासा आपणे ॥ हरि हरि हरि हरि नामु जीवा

सुणि सुणे ॥ ७ ॥ सलोक मः ५ ॥ प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी ॥ दाना बीना साई मैडा नानक सार न
 जाणा तेरी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ तैडे सिमरणि हभु किछु लधमु बिखमु न डिठमु कोई ॥ जिस्सु पति रखै सचा साहिबु नानक
 मेटि न सकै कोई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ होवै सुखु घणा दधि धिआइये ॥ वँजै रोगा घाणि हरि गुण गाइये ॥ अँदरि वरतै ठाढि
 प्रभि चिति आइये ॥ पूरन होवै आस नाइ मँनि वसाइये ॥ कोइ न लगै बिघनु आपु गवाइये ॥ गिआन पदारथु मति गुर ते
 पाइये ॥ तिनि पाए सभे थोक जिस्सु आपि दिवाइये ॥ तूँ सभना का खसमु सभ तेरी छाइये ॥ ८ ॥ सलोक मः ५ ॥ नदी
 तरँदड़ी मैडा खोजु न खँभै मँझि मुहबति तेरी ॥ तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी ॥ १ ॥ मः ५
 ॥ जिन्हा दिसँदड़िआ दुरमति वँजै मित्र असाडडे सेई ॥ हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
 आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ ॥ मन की कटीरे मैलु साध सँगि वुठिआ ॥ जनम मरण भउ कटीरे जन का सबदु
 जपि ॥ बँधन खोलनिह सँत दूत सभि जाहि छपि ॥ तिस सिउ लाइनिह रँगु जिस दी सभ धारीआ ॥ ऊची हूँ ऊचा थानु
 अगम अपारीआ ॥ रैणि दिनसु कर जोड़ि सासि सासि धिआइये ॥ जा आपे होइ दइआलु तां भगत सँगु पाइये ॥ ९ ॥
 सलोक मः ५ ॥ बारि विडानडै हुँमस धुँमस कूका पईआ राही ॥ तउ सह सेती लगड़ी डोरी नानक अनद सेती बनु गाही ॥
 १ ॥ मः ५ ॥ सची बैसक तिन्हा सँगि जिन सँगि जपीरे नाउ ॥ तिन्ह सँगि सँगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ॥
 २ ॥ पउड़ी ॥ सा वेला परवाणु जितु सतिगुरु भेटिआ ॥ होआ साधू सँगु फिरि दूख न तेटिआ ॥ पाइआ निहचलु थानु
 फिरि गरभि न लेटिआ ॥ नदरी आइआ इकु सगल ब्रहमेटिआ ॥ ततु गिआनु लाइ धिआनु द्रिसटि समेटिआ ॥ सभो
 जपीरे जापु जि मुखहु बोलेटिआ ॥ हुकमे बुझि निहालु सुखि सुखेटिआ ॥ परखि खजानै पाए से बहुड़ि न खोटिआ ॥ १०
 ॥ सलोक मः ५ ॥ विछोहे जँबूर खवे न वँजनि गाखडे ॥ जे सो धणी मिलनि नानक सुख सँबूह सचु ॥ १ ॥ मः ५ ॥

जिमी वसँदी पाणीरे ईधणु रखै भाहि ॥ नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरे कीते कंम तुधै ही
गोचरे ॥ सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे ॥ बिखमु भए बिसमाद देखि कुदरति तेरीआ ॥ सरणि परे तेरी दास करि गति
होइ मेरीआ ॥ तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि ॥ जिस नो होइ दइआलु हरि नामु सेइ लेहि ॥ अगम अगोचर बेअँत अँत न
पाईरे ॥ जिस नो होहि क्रिपालु सु नामु धिआईरे ॥ ११ ॥ सलोक मः ५ ॥ कडछीआ फिरँन्हि सुआउ न जाणन्हि सुजीआ
॥ सेई मुख दिसँन्हि नानक रते प्रेम रसि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाड़ि ॥ तै सहि दिती वाड़ि
नानक खेतु न छिजई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥ दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि
करे रासि ॥ तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु ॥ पउ सरणाई भजि सुखी हूँ सुख लहु ॥ करम धरम ततु गिआनु
सँता सँगु होइ ॥ जपीरे अँमित नामु बिघनु न लगै कोइ ॥ जिस नो आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ ॥ पाईअन्हि सभि
निधान साहिबि तुठिआ ॥ १२ ॥ सलोक मः ५ ॥ लधमु लभणहारु करमु करँदो मा पिरी ॥ इको सिरजणहारु नानक
बिआ न पसीरे ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पापड़िआ पछाड़ि बाणु सचावा सँन्हि कै ॥ गुर मँत्रड़ा चितारि नानक दुखु न थीवई ॥ २
॥ पउड़ी ॥ वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाठि आपि ॥ जीअ जँत मिहरवानु तिस नो सदा जापि ॥ दइआ धारी समरथि
चुके बिल बिलाप ॥ नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि ॥ कीतीअनु आपणी रख गरीब निवाजि थापि ॥ आपे लइअनु
छडाइ बँधन सगल कापि ॥ तिसन बुझी आस पुँनी मन सँतोखि ध्रापि ॥ वडी हूँ वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुँनि पापि
॥ १३ ॥ सलोक मः ५ ॥ जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध
सँगात ॥ १ ॥ मः ५ ॥ रामु रमहु बडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ ॥ नानक नामि अराधिरे बिघनु न लगै कोइ ॥
२ ॥ पउड़ी ॥ भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ ॥ भगता तेरीटेक रते सचि नाइ ॥ जिस नो होइ क्रिपालु

तिस का दूखु जाइ ॥ भगत तेरे दइआल ओन्हा मिहर पाइ ॥ दूखु दरदु वड रोगु न पोहे तिसु माइ ॥ भगता एहु अधारु
 गुण गोविंद गाइ ॥ सदा सदा दिनु रैणि इको इकु धिआइ ॥ पीवति अँमित नामु जन नामे रहे अघाइ ॥ १४ ॥ सलोक मः
 ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सँजै घरि काउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥
 पिरी मिलावा जा थीरे साई सुहावी रुति ॥ घड़ी मुहतु नह वीसरै नानक रवीरे नित ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सूरबीर वरीआम
 किनै न होड़ीरे ॥ फउज सताणी हाठ पँचा जोड़ीरे ॥ दस नारी अउधूत देनि चमोड़ीरे ॥ जिणि जिणि लैन्हि रलाइ एहो
 एना लोड़ीरे ॥ त्रै गुण इन कै वसि किनै न मोड़ीरे ॥ भरमु कोटु माइआ खाई कहु कितु बिधि तोड़ीरे ॥ गुरु पूरा आराधि
 बिखम दलु फोड़ीरे ॥ हउ तिसु अगै दिनु राति रहा कर जोड़ीरे ॥ १५ ॥ सलोक मः ५ ॥ किनबिख सभे उतरनि नीत
 नीत गुण गाउ ॥ कोटि कलेसा ऊपजहि नानक बिसरै नाउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक सतिगुरि भेटिरे पूरी होवै जुगति ॥
 हँसदिआ खेलँदिआ पैनँदिआ खावँदिआ विचे होवै मुकति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो सतिगुरु धनु धँनु जिनि भरम गडु
 तोड़िआ ॥ सो सतिगुरु वाहु वाहु जिनि हरि सिउ जोड़िआ ॥ नामु निधानु अखुटु गुरु देइ दारुओ ॥ महा रोगु बिकराल
 तिनै बिदारुओ ॥ पाइआ नामु निधानु बहुतु खजानिआ ॥ जिता जनमु अपारु आपु पछानिआ ॥ महिमा कही न जाइ
 गुर समरथ देव ॥ गुर पारब्रहम परमेसुर अपरँपर अलख अभेव ॥ १६ ॥ सलोक मः ५ ॥ उदमु करेदिआ जीउ तूँ
 कमावदिआ सुख भुँचु ॥ धिआइदिआ तूँ प्रभू मिलु नानक उतरी चिँत ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सुभ चिँतन गोबिंद रमण निरमल
 साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवँत ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरा कीता होइ त काहे डरपीरे ॥
 जिसु मिलि जपीरे नाउ तिसु जीउ अरपीरे ॥ आइरे चिति निहालु साहिब बेसुमार ॥ तिस नो पोहे कवणु जिसु वलि
 निरँकार ॥ सभु किछु तिस कै वसि न कोई बाहरा ॥ सो भगता मनि वुठा सचि समाहरा ॥ तेरे दास धिआइनि तुधु

तूँ रखण वालिआ ॥ सिरि सभना समरथु नदरि निहालिआ ॥ १७ ॥ सलोक मः ५ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह दुसट
 बासना निवारि ॥ राखि लेहु प्रभ आपणे नानक सद बलिहारि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ खांदिआ खांदिआ मुहु घठा पैनांदिआ सभु
 अंगु ॥ नानक धिगु तिना दा जीविआ जिनि सचि न लगो रंगु ॥ २ ॥ पउडी ॥ जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥
 जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥ नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा ॥ जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा ॥
 जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा ॥ अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा ॥ जिन्ही पछाता हुकमु तिन्ह कदे न रोवणा ॥ नाउ
 नानक बखसीस मन माहि परोवणा ॥ १८ ॥ सलोक मः ५ ॥ जीवदिआ न चेतिओ मुआ रलंदडो खाक ॥ नानक दुनीआ
 सँगि गुदारिआ साकत मूड नपाक ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जीवदिआ हरि चेतिआ मरदिआ हरि रंगि ॥ जनमु पदारथु तारिआ
 नानक साधू सँगि ॥ २ ॥ पउडी ॥ आदि जुगादी आपि रखण वालिआ ॥ सचु नामु करतारु सचु पसारिआ ॥ ऊणा कही
 न होइ घटे घटि सारिआ ॥ मिहरवान समरथ आपे ही घालिआ ॥ जिन्ह मनि वुठा आपि से सदा सुखालिआ ॥ आपे रचनु
 रचाइ आपे ही पालिआ ॥ सभु किछु आपे आपि बेअंत अपारिआ ॥ गुर पूरे की टेक नानक सँहालिआ ॥ १९ ॥ सलोक
 मः ५ ॥ आदि मधि अरु अँति परमेसरि रखिआ ॥ सतिगुरि दिता हरि नाम अँमितु चखिआ ॥ साधा सँगु अपारु अनदिनु
 हरि गुण खै ॥ पाए मनोरथ सभि जोनी नह भवै ॥ सभु किछु करते हथि कारणु जो करै ॥ नानकु मँगै दानु सँता धुरि तरै ॥
 १ ॥ मः ५ ॥ तिस नो मँनि वसाइ जिनि उपाइआ ॥ जिनि जनि धिआइआ खसमु तिन सुखु पाइआ ॥ सफलु जनमु
 परवानु गुरमुखि आइआ ॥ हुकमै बुझि निहालु खसमि फुरमाइआ ॥ जिसु होआ आपि क्रिपालु सु नह भरमाइआ ॥ जो जो
 दिता खसमि सोई सुखु पाइआ ॥ नानक जिसहि दइआलु बुझाए हुकमु मित ॥ जिसहि भुलाए आपि मरि मरि जमहि नित
 ॥ २ ॥ पउडी ॥ निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दिते ॥ प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फडि जोनी जुते ॥

मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते ॥ दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते ॥ कँठि लाइ दास रखिअनु नानक हरि
सते ॥ २० ॥ सलोक मः ५ ॥ रामु जपहु वडभागीहो जलि थलि पूरनु सोइ ॥ नानक नामि धिआईए बिघनु न लागै कोइ ॥
१ ॥ मः ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुँजै घरि काउ ॥ २ ॥ पउडी
॥ सिमरि सिमरि दातारु मनोरथ पूरिआ ॥ इछ पुँनी मनि आस गए विसूरिआ ॥ पाइआ नामु निधानु जिस नो भालदा ॥
जोति मिली सँगि जोति रहिआ घालदा ॥ सूख सहज आनँद वुठे तितु घरि ॥ आवण जाण रहे जनमु न तहा मरि ॥ साहिबु
सेवकु इकु इकु द्रिसटाइआ ॥ गुर प्रसादि नानक सचि समाइआ ॥ २१ ॥ १ ॥ २ ॥ सुधु

रागु गूजरी भगता की बाणी १८ शितिगुर प्रसादि ॥

श्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥ चारि पाव दुइ सिँग गुँग मुख तब कैसे गुन गईहै ॥ ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत
मूड लुकईहै ॥ १ ॥ हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥ फाटे नाकन टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारो दिनु
डोलत बन महीआ अजहु न पेट अघईहै ॥ जन भगतन को कहै न मानो कीओ अपनो पईहै ॥ २ ॥ दुख सुख करत महा भ्रमि
बूडो अनिक जोनि भरमईहै ॥ रतन जनमु खोइओ प्रभु बिसरिओ इहु अउसरु कत पईहै ॥ ३ ॥ भ्रमत फिरत तेलक के कपि
जिउ गति बिनु रैनि बिहईहै ॥ कहत कबीर राम नाम बिनु मूँड धुने पछुतईहै ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी घरु ३ ॥ मुसि मुसि रोवै
कबीर की माई ॥ ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ १ ॥ तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ॥ हरि का नामु लिखि लीओ
सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु तागा बाहउ बेही ॥ तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥ २ ॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥
हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥ ४ ॥ २ ॥

गूजरी श्री नामदेव जी की पदे घरु १ १ॐ सतिगुरु प्रसादि ॥

जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥ जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥ १ ॥ तूँ हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥ बहुरि न होइ
तेरा आवान जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि तै उपाई भरम भुलाई ॥ जिस तूँ देवहि तिसहि बुझाई ॥ २ ॥ सतिगुरु मिलै त
सहसा जाई ॥ किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥ ३ ॥ एकै पाथर कीजै भाउ ॥ दूजै पाथर धरीरे पाउ ॥ जे ओहु देउ त
ओहु भी देवा ॥ कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी घरु १ ॥ मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठे री आई
॥ आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥ १ ॥ कउणु कहै किणि बूझीरे रमईआ आकुलु री बाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥ २ ॥ जिउ आकासै
घडूअलो म्रिग त्रिसना भरिआ ॥ नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तिनै जरिआ ॥ ३ ॥ २ ॥

गूजरी श्री रविदास जी के पदे घरु ३ १ॐ सतिगुरु प्रसादि ॥

दधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥ १ ॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥ अवरु न फूलु
अनूपु न पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैलागर बेहे है भुइअंगा ॥ बिखु अँमितु बसहि इक अँगा ॥ २ ॥ धूप दीप नईबेदहि बासा
॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥ ३ ॥ तनु मनु अरपओ पूज चरावउ ॥ गुरु परसादि निरँजनु पावउ ॥ ४ ॥ पूजा अरचा
आहि न तोरी ॥ कहि रविदास कवन गति मोरी ॥ ५ ॥ १ ॥

गूजरी श्री त्रिलोचन जीउ के पदे घरु १ १ॐ सतिगुरु प्रसादि ॥

अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥ हिरदै कमलु घटि ब्रहम न चीन्हा काहे भइआ सँनिआसी ॥ १ ॥ भरमे
भूली

रे जै चँदा ॥ नही नही चीन्हिआ परमानँदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरिं घरिं खाइआ पिँडु बधाइआ खिँथा मुँदा माइआ ॥ भूमि
 मसाण की भसम लगाई गुर बिनु तत न पाइआ ॥ २ ॥ काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बोलोवहु पाणी ॥ लख चउरासीह
 जिनिह उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥ ३ ॥ काइ कमँडलु कापडीआ रे अठसठि काइ फिराही ॥ बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी
 कण बिनु गाहु कि पाही ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी ॥ अँति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिँता महि जे मरै ॥ सरप जोनि वलि वलि
 अउतरै ॥ १ ॥ अरी बाई गोबिद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥ अँति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिँता महि जे मरै ॥ बेसवा
 जोनि वलि वलि अउतरै ॥ २ ॥ अँति कालि जो लडिके सिमरै ऐसी चिँता महि जे मरै ॥ सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥ ३ ॥
 अँत कालि जो मँदर सिमरै ऐसी चिँता महि जे मरै ॥ प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥ ४ ॥ अँति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिँता
 महि जे मरै ॥ बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतंबरु वा के रिदै बसै ॥ ५ ॥ २ ॥

गूजरी श्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

परमादि पुरखमनोपिमँ सति आदि भाव रतँ ॥ परमदभुतँ परकृति परँ जदिचिँति सरब गतँ ॥ १ ॥ केवल राम नाम मनोरमँ ॥
 बदि अँमित तत मइअँ ॥ न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइअँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इछमि जमादि पराभयँ जसु स्वसति
 सुकृत कृतँ ॥ भव भूत भाव समब्धिअँ परमँ प्रसँनमिदँ ॥ २ ॥ लोभादि द्रिसटि पर ग्रिहँ जदिबिधि आचरणँ ॥ तजि सकल
 दुहकृत दुर्मती भजु चक्रधर सरणँ ॥ ३ ॥ हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥ जोगेन किँ जगेन किँ दानेन किँ
 तपसा ॥ ४ ॥ गोबिँद गोबिँदिति जपि नर सकल सिधि पदँ ॥ जैदेव आइउ तस सफुटँ भव भूत सरब गतँ ॥ ५ ॥ १ ॥

१३ सतिनाम करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

शुगु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥

सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे ॥ जो तुमरा जसु कहते गुरमति तिन मुख भाग सभागे ॥

१ ॥ रहाउ ॥ टूटे माइआ के बंधन फाहे हरि राम नाम लिव लागे ॥ हमरा मनु मोहिओ गुर मोहनि हम बिसम भई मुखि लागे ॥ १ ॥ सगली रैणि सोई अंधिआरी गुर किंचत किरपा जागे ॥ जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहि तुम सरि अवरु न लागे ॥ २ ॥ १ ॥ देवगंधारी ॥ मेरो सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ॥ हरि के संत बतावहु मारगु हम पीछै लागि चली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रिअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली ॥ लटुरी मधुरी ठाकुर भाई ओह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥ १ ॥ एको प्रिउ सखीआ सभ प्रिअ की जो भावै पिर सा भली ॥ नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली ॥ २ ॥ २ ॥ देवगंधारी ॥ मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीरे ॥ गुरमुखि रंगि चललै राती हरि प्रेम भीनी चोलीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ फिरउ दिवानी आवल बावल तिसु कारणि हरि ढोलीरे ॥ कोई मेलै मेरा प्रीतमु पिआरा हम तिस की गुल गोलीरे ॥ १ ॥ सतिगुरु पुरखु मनावहु अपुना हरि अमितु पी झोलीरे ॥ गुर प्रसादि जन नानक पाइआ हरि लाधा देह टोलीरे ॥ २ ॥ ३ ॥ देवगंधारी ॥ अब हम चली ठाकुर पहि हरि ॥ जब हम सरणि प्रभू की आई

राखु प्रभु भावै मारिं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोकन की चतुराई उपमा ते बैसँतरिं जारिं ॥ कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम
 तनु दीओ है ढारिं ॥ १ ॥ जो आवत सरणि ठाकुर प्रभु तुमरी तिसु राखहु किरपा धारिं ॥ जन नानक सरणि तुमारी हरिं
 जीउ राखहु लाज मुरारिं ॥ २ ॥ ४ ॥ देवगंधारी ॥ हरिं गुण गावै हउ तिसु बलिहारी ॥ देखि देखि जीवा साध गुर
 दरसनु जिसु हिरदै नामु मुरारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउ करि मिलह जूठारी ॥ हमरै
 जीइ होरु मुखिं होरु होत है हम करमहीण कूड़िआरी ॥ १ ॥ हमरी मुद्र नामु हरि सुआमी रिद अँतरि दुसट दुसटारी ॥
 जिउ भवै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरणि तुम्हारी ॥ २ ॥ ५ ॥ देवगंधारी ॥ हरिं के नाम बिना सुँदरिं है नकटी ॥
 जिउ बेसुआ के घरिं पूतु जमतु है तिसु नामु परिओ है ध्रकटी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कै हिरदै नाहिं हरि सुआमी ते बिगड़
 रूप बेरकटी ॥ जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओहु हरिं दरगह है भ्रसटी ॥ १ ॥ जिन कउ दइआलु होआ मेरा सुआमी
 तिना साध जना पग चकटी ॥ नानक पतित पवित मिलि संगति गुर सतिगुर पाछै छुकटी ॥ २ ॥ ६ ॥ छका १

देवगंधारी महला ५ घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

माई गुर चरणी चितु लाईये ॥ प्रभु होइ क्रिपालु कमलु परगासे सदा सदा हरिं धिआईये ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँतरिं एको
 बाहरिं एको सभ महिं एकु समाईये ॥ घटि अवघटि रविआ सभ ठाई हरिं पूरन ब्रहमु दिखाईये ॥ १ ॥ उसतति करहिं
 सेवक मुनि केते तेरा अँतु न कतहू पाईये ॥ सुखदाते दुख भँजन सुआमी जन नानक सद बलिं जाईये ॥ २ ॥ १ ॥
 देवगंधारी ॥ माई होनहार सो होईये ॥ राचि रहिओ रचना प्रभु अपनी कहा लाभु कहा खोईये ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कह
 फूलहि आनँद बिखै सोग कब हसनो कब रोईये ॥ कबहू मैलु भरे अभिमानी कब साधू सँगि धोईये ॥ १ ॥ कोइ न मेटै प्रभ
 का कीआ दूसर नाही अलोईये ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी

जिह प्रसादि सुखि सोईए ॥ २ ॥ २ ॥ देवगंधारी ॥ माई सुनत सोच भै डरत ॥ मेर तेर तजउ अभिमाना सरनि सुआमी
 की परत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो कहै सोई भल मानउ नाहि न का बोल करत ॥ निमख न बिसरउ हीए मोरे ते बिसरत
 जाई हउ मरत ॥ १ ॥ सुखदाई पूरन प्रभु करता मेरी बहुतु इआनप जरत ॥ निरगुनि करुपि कुलहीण नानक हउ अनद
 रूप सुआमी भरत ॥ २ ॥ ३ ॥ देवगंधारी ॥ मन हरि कीरति करि सदहूँ ॥ गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना
 सभहूँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह ते उपजिओ तही समाइओ इह बिधि जानी तबहूँ ॥ जहा जहा इह देही धारी रहनु न पाइओ
 कबहूँ ॥ १ ॥ सुखु आइओ भै भरम बिनासे क्रिपाल हूए प्रभ जबहू ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ साध सँगि तजि लबहूँ
 ॥ २ ॥ ४ ॥ देवगंधारी ॥ मन जिउ अपुने प्रभ भावउ ॥ नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइ गरीबु बुलावउ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ अनिक अडँबर माइआ के बिरथे ता सिउ प्रीति घटावउ ॥ जिउ अपुनो सुआमी सुखु मानै ता महि सोभा पावउ
 ॥ १ ॥ दासन दासरेणु दासन की जन की टहल कमावउ ॥ सरब सुख बडिआई नानक जीवउ मुखहु बुलावउ ॥ २ ॥
 ५ ॥ देवगंधारी ॥ प्रभ जी तउ प्रसादि भ्रमु डारिओ ॥ तुमरी क्रिपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिओ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ कोटि पराध मिटे तेरी सेवा दरसनि दूखु उतारिओ ॥ नामु जपत महा सुखु पाइओ चिँता रोगु बिदारओ ॥ १ ॥
 कामु क्रोधु लोभु ड्रुठु निँदा साधू सँगि बिसारिओ ॥ माइआ बँध काटे किरपा निधि नानक आपि उधारिओ ॥ २ ॥ ६ ॥
 देवगंधारी ॥ मन सगल सिआनप रही ॥ करन करावनहार सुआमी नानक ओट गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु मेटि पर
 सरणाई इह मति साधू कही ॥ प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ भरमु अधेरा लही ॥ १ ॥ जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे
 सरणि तुमारी अही ॥ खिन महि थापि उथापनहारे कुदरति कीम न पही ॥ २ ॥ ७ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ हरि प्रान
 प्रभु सुखदाते ॥ गुर प्रसादि काहू जाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँत तुमारे तुमरे प्रीतम तिन कउ काल न खाते ॥ रँगि

तुमारै लाल भए है राम नाम रसि माते ॥ १ ॥ महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ द्रिसटि तुहारी हाते ॥ सोवत जागि हरि
 हरि हरि गाइआ नानक गुर चरन पराते ॥ २ ॥ ८ ॥ देवगंधारी ७ ॥ सो प्रभु जत कत पेखिओ नैणी ॥ सुखदाई जीअन
 को दाता अँमितु जा की बैणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगिआनु अधेरा सँती काटिआ जीअ दानु गुर दैणी ॥ करि किरपा करि
 लीनो अपुना जलते सीतल होणी ॥ १ ॥ करमु धरमु किछु उपजि न आइओ नह उपजी निरमल करणी ॥ छाडि सिआनप
 सँजम नानक लागो गुर की चरणी ॥ २ ॥ ९ ॥ देवगंधारी ७ ॥ हरि राम नामु जपि लाहा ॥ गति पावहि सुख सहज
 अनँदा काटे जम के फाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि सँत जना पहि आहा ॥ तिन्हा परापति
 एहु निधाना जिन्ह कै करमि लिखाहा ॥ १ ॥ से बडभागी से पतिवँते सेई पूरे साहा ॥ सुँदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन्ह
 हरि हरि नामु विसाहा ॥ २ ॥ १० ॥ देवगंधारी ७ ॥ मन कह अहँकारि अफारा ॥ दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो
 दीसै सो छारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी जीउ प्रान जिनि धारा ॥ तिसहि तिआगि अवर
 लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ॥ १ ॥ अँध गुँग पिँगुल मति हीना प्रभु राखहु राखनहारा ॥ करन करावनहार
 समरथा किआ नानक जँत बिचारा ॥ २ ॥ ११ ॥ देवगंधारी ७ ॥ सो प्रभु नैरै हू ते नैरै ॥ सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद
 दिनु रैनि साझ सवेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उधरु देह दुलभ साधू सँगि हरि हरि नामु जपेरै ॥ घरी न मुहतु न चसा बिलँबहु कालु
 नितहि नित हेरै ॥ १ ॥ अँध बिला ते काडहु करते किआ नाही घरि तेरै ॥ नामु अधारु दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै
 ॥ २ ॥ १२ ॥ छके २ ॥ देवगंधारी ७ ॥ मन गुर मिलि नामु अराधिओ ॥ सूख सहज आनँद मँगल रस जीवन का मूलु
 बाधिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइआ फाधिओ ॥ भाउ भगति गाइ गुण गोबिंद जम का
 मारगु साधिओ ॥ १ ॥ भइओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा अमोल पदारथु लाधिओ ॥ बलिहारै नानक लख बेरा मेरे ठाकुर

अगम अगाधिओ ॥ २ ॥ १३ ॥ देवगंधारी ५ ॥ माई जो प्रभ के गुन गावै ॥ सफल आइआ जीवन फलु ता को पारब्रहम
 लिव लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघडु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ॥ नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी
 धावै ॥ १ ॥ पूरन ब्रहम रविआ मन तन महि आन न द्रिसटी आवै ॥ नरक रोग नही होवत जन सँगि नानक जिस्सु लडि
 लावै ॥ २ ॥ १४ ॥ देवगंधारी ५ ॥ चंचलु सुपनै ही उरझाइओ ॥ इतनी न बूझै कबहु चलना बिकल भइओ सँगि माइओ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसम रँग सँग रसि रचिआ बिखिआ एक उपाइओ ॥ लोभ सुनै मनि सुखु करि मानै बेगि तहा उठि
 धाइओ ॥ १ ॥ फिरत फिरत बहुतु श्रम पाइओ संत दुआरै आइओ ॥ करी क्रिपा पारब्रहमि सुआमी नानक लीओ समाइओ
 ॥ २ ॥ १५ ॥ देवगंधारी ५ ॥ सरब सुखा गुरु चरना ॥ कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ पूजा अरचा सेवा बँदन इहै टहल मोहि करना ॥ बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥ १ ॥ सफल
 मूरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना ॥ भइओ क्रिपालु ठाकुरु नानक कउ परिओ साध की सरना ॥ २ ॥ १६ ॥
 देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ ॥ चारि पदारथ अनद मँगल निधि सूख सहज सिधि लहीऐ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अँचलु गहीऐ ॥ आंच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की
 अहीऐ ॥ १ ॥ कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥ करुणा मै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥ २
 ॥ १७ ॥ देवगंधारी ५ ॥ गुरु के चरन रिदै परवेसा ॥ रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥ नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धिआना ॥ १
 ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो बँधन तोरि निशरे ॥ जपि जपि नामु जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे ॥ २ ॥ १८
 ॥ छके ३ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ माई प्रभ के चरन निहारउ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे मन ते कबहु

न डारउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू धूरि लाई मुखि मसतकि काम क्रोध बिखु जारउ ॥ सभ ते नीचु आतम करि मानउ मन महि
 इहु सुखु धारउ ॥ १ ॥ गुन गावह ठाकुर अबिनासी कलमल सगले झारउ ॥ नाम निधानु नानक दानु पावउ कँठि लाइ उरि
 धारउ ॥ २ ॥ १९ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ प्रभ जीउ पेखउ दरसु तुमारा ॥ सुँदर धिआनु धारु दिनु रैनी जीअ प्रान ते
 पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पुरान अविलोके सिम्रित ततु बीचारा ॥ दीना नाथ प्रानपति पूरन भवजल उधरनहारा
 ॥ १ ॥ आदि जुगादि भगत जन सेवक ता की बिखै अधारा ॥ तिन जन की धूरि बाछै नित नानकु परमेसरु देवनहारा ॥
 २ ॥ २० ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ तेरा जनु राम रसाइणि माता ॥ प्रेम रसा निधि जा कउ उपजी छोडि न कतहू जाता ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीनो साधू धूरी नाता ॥ १ ॥
 सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता ॥ सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता ॥ २ ॥
 २१ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ माई गुर बिनु गिआनु न पाईऐ ॥ अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ मोह रोग सोग तनु बाधिओ बहु जोनी भरमाईऐ ॥ टिकनु न पावै बिनु सत संगति किसु आगै जाइ रू आईऐ ॥
 १ ॥ करै अनुग्रहु सुआमी मेरा साध चरन चित लाईऐ ॥ संकट घोर कटे खिन भीतरि नानक हरि दरसि समाईऐ ॥ २ ॥ २२
 ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥ भई कलिआण अनंद रूप होई है उबरे बाल गुपाल ॥ रहाउ ॥ दुइ
 कर जोडि करी बेनँती पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ हाथु देइ राखे परमेसुरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ वर नारी मिलि
 मँगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक जन कउ बलि जाईऐ जो सभना करे उधारु ॥ २ ॥ २३ ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ देवगंधारी महला ५ ॥

अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ॥ भए क्रिपाल दइआल दुख भँजन मेरा सगल अँदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥ हम पापी
पाखँडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ ॥ करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥ १ ॥
परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥ कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ ॥ २ ॥ २४
॥ देवगंधारी महला ५ ॥ अनाथ नाथ प्रभ हमारे ॥ सरनि आइओ राखनहारे ॥ रहाउ ॥ सरब पाप राखु मुरारे ॥ आगै
पाछै अँती वारे ॥ १ ॥ जब चितवउ तब तुहारे ॥ उन समहारि मेरा मनु सधारे ॥ २ ॥ सुनि गावउ गुर बचनारे ॥ बलि
बलि जाउ साध दरसारे ॥ ३ ॥ मन महि राखउ एक असारे ॥ नानक प्रभ मेरे करनैहरै ॥ ४ ॥ २५ ॥ देवगंधारी महला
५ ॥ प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥ क्रिपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥ रहाउ ॥ प्रातहकाल लागउ जन
चरनी निस बासुर दरसु पावउ ॥ तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ ॥ १ ॥ सासि सासि सिमरउ प्रभु
अपुना संत संगि नित रहीरे ॥ एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीरे ॥ २ ॥ २६ ॥

शागु देवगंधारी महला ५ वरु ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मीता ऐसे हरि जीओ पाए ॥ छोडि न जाई सद ही सँगे अनदिनु गुर मिलि गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलिओ मनोहरु सरब
सुखैना तिआगि न कतहू जाए ॥ अनिक अनिक भाति बहु पेखे प्रिअ रोम न समसरि लाए ॥ १ ॥ मँदरि भागु सोभ
दुआरै अनहत रुणु झुणु लाए ॥ कहु नानक सदा रँगु माणे छिह प्रिअ थीते सद थाए ॥ २ ॥ १ ॥ २७ ॥ देवगंधारी ५
॥ दरसन नाम कउ मनु आछै ॥ भ्रमि आइओ है सगल थान रे आहि परिओ संत पाछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किसु हउ सेवी
किसु आराधी जो दिसटै सो गाछै ॥ साध संगति की सरनी परीरे चरण रेनु मनु बाछै ॥ १ ॥ जुगति न जाना

गुनु नही कोई महा दुतरु माइ आछै ॥ आइ पइओ नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै ॥ २ ॥ २ ॥ २८ ॥ देवगंधारी ७
 ॥ अँमिता प्रिअ बचन तुहारे ॥ अति सुँदर मनमोहन पिआरे सभ हू मधि निरारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु न चाहउ मुकति न चाहउ
 मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥ १ ॥ दीनु दुआरै आइओ ठाकुर सरनि परिओ
 सँत हारे ॥ कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥ २ ॥ ३ ॥ २९ ॥ देवगंधारी महला ७ ॥ हरि जपि सेवकु पारि
 उतारिओ ॥ दीन दइआल भए प्रभ अपने बहुड़ि जनमि नही हारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध सँगमि गुण गावहु हरि के रतन
 जनमु नही हारिओ ॥ प्रभ गुन गाइ बिखै बनु तरिआ कुलह समूह उधारिओ ॥ १ ॥ चरन कमल बसिआ रिद भीतरि सासि
 गिरासि उचारिओ ॥ नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ३० ॥

शगु देवगंधारी महला ७ वरु ४ १३३सितिगुर प्रसादि ॥

करत फिरे बन भेख मोहन रहत निरार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कथन सुनावन गीत नीके गावन मन महि धरते गार ॥ अति सुँदर बहु
 चतुर सिआने बिदिआ रसना चार ॥ २ ॥ मान मोह मेर तेर बिबरजित एहु मारगु खँडे धार ॥ ३ ॥ कहु नानक तिनि भवजलु
 तरीअले प्रभ किरपा सँत सँगार ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥

शगु देवगंधारी महला ७ वरु ५ १३३सितिगुर प्रसादि ॥

मै पेखिओ शी ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा ॥ आन न समसरि कोऊ लागै दूढि रहे हम मूचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बेअँतु अति बडो
 गाहरो थाह नही अगहूचा ॥ तोलि न तुलीऐ मोलि न मुलीऐ कत पाईए मन रूचा ॥ १ ॥ खोज असँखा अनिकत पँथा बिनु गुर
 नही पहूचा ॥ कहु नानक किरपा करी ठाकुर मिलि साधू रस भूँचा ॥ २ ॥ १ ॥ ३२ ॥ देवगंधारी महला ७ ॥ मै बहु बिधि

पेखिओ दूजा नाही री कोऊ ॥ खंड दीप सभ भीतरि रविआ पूरि रहिओ सभ लोऊ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगंमा कवन
महिंमा मनु जीवै सुनि सोऊ ॥ चारि आसरम चारि बरँना मुकति भए सेव तोऊ ॥ १ ॥ गुरि सबदु द्विडाइआ परम पदु
पाइआ दुतीअ गए सुख होऊ ॥ कहु नानक भव सागरु तरिआ हरिनिधि पाई सहजोऊ ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥

शगु देवगंधारी महला ७ घरु ६ १३३ शितिगुर प्रसादि ॥

एकै रे हरि एकै जान ॥ एकै रे गुरमुखि जान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहु न भाई रविआ रे रविआ सब थान
॥ १ ॥ जिउ बैसंतरु कासट मझारि बिनु संजम नही कारज सारि ॥ बिनु गुर न पावैगो हरि जी को दुआर ॥ मिलि संगति
तजि अभिमान कहु नानक पाए है परम निधान ॥ २ ॥ १ ॥ ३४ ॥ देवगंधारी ७ ॥ जानी न जाई ता की गाति ॥ १ ॥
रहाउ ॥ कह पेखारउ हउ करि चतुराई बिसमन बिसमे कहन कहाति ॥ १ ॥ गण गंधरब सिध अरु साधिक ॥ सुर नर देव
ब्रहम ब्रहमादिक ॥ चतुर बेद उचरत दिनु राति ॥ अगम अगम ठाकुरु आगाधि ॥ गुन बेअंत बेअंत भनु नानक कहनु न
जाई परै पराति ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥ देवगंधारी महला ७ ॥ धिआए गए करनैहार ॥ भउ नाही सुख सहज अनंदा
अनिक ओही रे एक समार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल मूरति गुरु मेरै माथै ॥ जत कत पेखउ तत तत साथै ॥ चरन कमल
मेरे प्रान अधार ॥ १ ॥ समरथ अथाह बडा प्रभु मेरा ॥ घट घट अंतरि साहिबु नेरा ॥ ताकी सरनि आसर प्रभ नानक जा
का अंतु न पारावार ॥ २ ॥ ३ ॥ ३६ ॥ देवगंधारी महला ७ ॥ उलटी रे मन उलटी रे ॥ साकत सिउ करि उलटी रे ॥
झूठे की रे झूठु परीति छुटकी रे मन छुटकी रे साकत संगि न छुटकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ काजर भरि मंदरु राखिओ जो
पैसै कालूखी रे ॥ दूरहु ही ते भागि गइओ है जिसु गुर मिलि छुटकी त्रिकुटी रे ॥ १ ॥ मागउ दानु क्रिपाल क्रिपा निधि

मेरा मुखु साकत सँगि न जुटसी रे ॥ जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूँडु साध पगा हेठि रुलसी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ ३७
॥

रागु देवगंधारी महला ७ घरु ७ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

सभ दिन के समरथ पँथ बिठुले हउ बलि बलि जाउ ॥ गावन भावन संतन तौरै चरन उवा कै पाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जासन
बासन सहज केल करुणा मै एक अनंत अनूपै ठाउ ॥ १ ॥ रिधि सिधि निधि कर तल जगजीवन सब नाथ अनेकै नाउ ॥
दइआ मइआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ॥ २ ॥ १ ॥ ३८ ॥ ६ ॥ ४४ ॥

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु देवगंधारी महला ९ ॥

यह मनु नैक न कहिओ करै ॥ सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुर्मति ते न टरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मदि माइआ कै भइओ बावरो
हरि जसु नहि उचरै ॥ करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥ १ ॥ सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान
धरै ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥ २ ॥ १ ॥ देवगंधारी महला ९ ॥ सभ किछु जीवत को बिहवार ॥
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तन ते प्रान होत जब निआरे टेस्त प्रेति पुकारि ॥ आध
घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥ १ ॥ मिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥ कहु नानक भजु राम
नाम नित जा ते होत उधार ॥ २ ॥ २ ॥ देवगंधारी महला ९ ॥ जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥ अपने ही सुख सिउ सभ लागे
किया दारा किया मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥ अँति कालि सँगी नह कोऊ इह
अचरज है रीति ॥ १ ॥ मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥ नानक बउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत
॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ३८ ॥ ४७ ॥

१ॐ शिनिनाडु कर्ता डुरखु निरभउ निरवैरु अकाल डूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

शगु बिहागड़ा चउपदे डहला ७ घरु २ ॥

दूतन सँगरीआ ॥ डुडुअँगनि बसरीआ ॥ अनिक उडरीआ ॥ १ ॥ तउ डै हरि हरि करीआ ॥ तउ सुख सहजरीआ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ मिथन डुहरीआ ॥ अन कउ डेरीआ ॥ विचि घूडन घिरिआ ॥ २ ॥ सगल बटरीआ ॥ बिरख इक तरीआ ॥ डहु
बँधहि डरीआ ॥ ३ ॥ थिरु साध सडरीआ ॥ जह कीरतनु हरीआ ॥ नानक सरनरीआ ॥ ४ ॥ १ ॥

१ॐ शितिगुर प्रसादि ॥ शगु बिहागड़ा डहला ९ ॥

हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥ जोगी जती तपी डचि हारे अरु डहु डोग सिआने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिन डहि राउ रँक कउ
करई राउ रँक करि डारे ॥ रीते डरे डरे सखनावै यह ता को बिवहारै ॥ १ ॥ अपनी डाइआ आपि डसारी आपहि डेखनहारा ॥
नाना रूपु धरे डहु रँगी सड ते रहै निआरा ॥ २ ॥ अगनत अपारु अलख निरँजन जिह सड जगु डरडाइओ ॥ सगल डरड
तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥

शगु बिहागड़ा छँत डहला ४ घरु १ १ॐ शितिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि नामु थिआईरे डेरी जिँदुडीए

गुरुमुखि नामु अमोले राम ॥ हरि रसि बीधा हरि मनु पिआरा मनु हरि रसि नामि झकोले राम ॥ गुरुमति मनु ठहराईरे मेरी
 जिंदुड़ीए अनत न काहू डोले राम ॥ मन चिँदिअड़ा फलु पाइआ हरि प्रभु गुण नानक बाणी बोले राम ॥ १ ॥ गुरुमति मनि
 अँमितु वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुखि अँमित बैण अलाए राम ॥ अमित बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मनि सुणीए हरि लिव
 लाए राम ॥ चिरी विछुँना हरि प्रभु पाइआ गलि मिलिआ सहजि सुभाए राम ॥ जन नानक मनि अनदु भइआ है मेरी जिंदुड़ीए
 अनहत सबद वजाए राम ॥ २ ॥ सखी सहेली मेरीआ मेरी जिंदुड़ीए कोई हरि प्रभु आणि मिलावै राम ॥ हउ मनु देवउ तिसु
 आपणा मेरी जिंदुड़ीए हरि प्रभ की हरि कथा सुणावै राम ॥ गुरुमुखि सदा अराधि हरि मेरी जिंदुड़ीए मन चिँदिअड़ा फलु पावै
 राम ॥ नानक भजु हरि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए वडभागी नामु धिआवै राम ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ आइ मिलु मेरू
 जिंदुड़ीए गुरुमति नामु परगासे राम ॥ हउ हरि बाझु उडीणीआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ जल बिनु कमल उदासे राम ॥ गुरु पूरै
 मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सजणु हरि प्रभु पासे राम ॥ धनु धनु गुरु हरि दसिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि बिगासे
 राम ॥ ४ ॥ १ ॥ रागु बिहागड़ा महला ४ ॥ अँमितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अँमितु गुरुमति पाए राम ॥ हउमै माइआ
 बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अँमिति बिखु लहि जाए राम ॥ मनु सुका हरिआ होइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हरि नामु धिआए राम ॥
 हरि भाग वडे लिखि पाइआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि समाए राम ॥ १ ॥ हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ
 बालक लगि दुध खीरे राम ॥ हरि बिनु सांति न पाईरे मेरी जिंदुड़ीए जिउ चात्रिकु जल बिनु टेरे राम ॥ सतिगुर सरणी जाइ
 पउ मेरी जिंदुड़ीए गुण दसे हरि प्रभ केरे राम ॥ जन नानक हरि मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए घरि वाजे सबद घणेरे राम ॥ २ ॥
 मनमुखि हउमै विछुडे मेरी जिंदुड़ीए बिखु बाधे हउमै जाले राम ॥ जिउ पँखी कपोति आपु बन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए मनमुख

सभिं वसि काले राम ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिँदुड़ीए से मनमुख मूड़ बिताले राम ॥ जन त्राहि त्राहि सरणागती
 मेरी जिँदुड़ीए गुर नानक हरि रखवाले राम ॥ ३ ॥ हरि जन हरि लिव उबरे मेरी जिँदुड़ीए धुरि भाग वडे हरि पाइआ राम ॥ हरि
 हरि नामु पोतु है मेरी जिँदुड़ीए गुर खेवट सबदि तराइआ राम ॥ हरि हरि पुरखु दइआलु है मेरी जिँदुड़ीए गुर सतिगुर मीठ
 लगाइआ राम ॥ करि किरपा सुणि बेनती हरि हरि जन नानक नामु धिआइआ राम ॥ ४ ॥ २ ॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ जगि
 सुक्रितु कीरति नामु है मेरी जिँदुड़ीए हरि कीरति हरि मनि धारे राम ॥ हरि हरि नामु पवितु है मेरी जिँदुड़ीए जपि हरि हरि नामु
 उधारे राम ॥ सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिँदुड़ीए मलु गुरमुखि नामि उतारे राम ॥ वड पुँनी हरि धिआइआ जन
 नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम ॥ १ ॥ जो हरि नामु धिआइदे मेरी जिँदुड़ीए तिना पँचे वसगति आए राम ॥ अँतरि नव
 निधि नामु है मेरी जिँदुड़ीए गुर सतिगुरु अलखु लखाए राम ॥ गुरि आसा मनसा पूरीआ मेरी जिँदुड़ीए हरि मिलिआ भुख सभ
 जाए राम ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ मेरी जिँदुड़ीए जन नानक हरि गुण गाए राम ॥ २ ॥ हम पापी बलवँचीआ मेरी
 जिँदुड़ीए पर द्रोही ठग माइआ राम ॥ वडभागी गुरु पाइआ मेरी जिँदुड़ीए गुरि पूरै गति मिति पाइआ राम ॥ गुर अँम्रितु हरि
 मुखि चोइआ मेरी जिँदुड़ीए फिरि मरदा बहुड़ि जीवाइआ राम ॥ जन नानक सतिगुर जो मिले मेरी जिँदुड़ीए तिन के सभ दुख
 गवाइआ राम ॥ ३ ॥ अति ऊतमु हरि नाम है मेरी जिँदुड़ीए जितु जपिये पाप गवाते राम ॥ पतित पवित्र गुरि हरि कीए मेरी
 जिँदुड़ीए चहु कुँडी चहु जुगि जाते राम ॥ हउमै मैलु सभ उतरी मेरी जिँदुड़ीए हरि अँम्रिति हरि सरि नाते राम ॥ अपराधी पापी
 उधरे मेरी जिँदुड़ीए जन नानक खिनु हरि राते राम ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ हउ बलिहारी तिन्ह कउ मेरी जिँदुड़ीए
 जिन्ह हरि हरि नामु अधारो राम ॥ गुरि सतिगुर नामु द्विड़ाइआ मेरी जिँदुड़ीए बिखु भउजलु तारणहारो राम ॥

जिन इक मनि हरि धिआइआ मेरी जिँदुड़ीए तिन सँत जना जैकारो राम ॥ नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिँदुड़ीए
सभि दूख निवारणहारो राम ॥ १ ॥ सा रसना धनु धँनु है मेरी जिँदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥ ते स्रवन भले
सोभनीक हरि मेरी जिँदुड़ीए हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥ सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिँदुड़ीए जो जाइ लगै
गुर पैरे राम ॥ गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिँदुड़ीए जिनि हरि हरि नाम चितेरे राम ॥ २ ॥ ते नेत्र भले परवाणु हहि
मेरी जिँदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥ ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी जिँदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम
॥ तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिँदुड़ीए जो मारगि धरम चलेसहि राम ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी
जिँदुड़ीए हरि सुणि हरि नामु मनेसहि राम ॥ ३ ॥ धरति पातालु आकासु है मेरी जिँदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम
॥ पउणु पाणी बैसँतरो मेरी जिँदुड़ीए नित हरि हरि हरि जसु गावै राम ॥ वणु त्रिणु सभु आकारु है मेरी जिँदुड़ीए मुखि
हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ नानक ते हरि दरि पैन्हाइआ मेरी जिँदुड़ीए जो गुरमुखि भगति मनु लावै राम ॥ ४ ॥ ४ ॥
बिहागड़ा महला ४ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ मेरी जिँदुड़ीए ते मनमुख मूडु इआणे राम ॥ जो मोहि माइआ चितु
लाइदे मेरी जिँदुड़ीए से अँति गए पछुताणे राम ॥ हरि दरगह ढोई ना लहन्हि मेरी जिँदुड़ीए जो मनमुख पापि लुभाणे राम
॥ जन नानक गुर मिलि उबरे मेरी जिँदुड़ीए हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥ १ ॥ सभि जाइ मिलहु सतिगुरु कउ मेरी
जिँदुड़ीए जो हरि हरि नामु द्विड़वै राम ॥ हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिँदुड़ीए मतु कि जापै साहु आवै कि न
आवै राम ॥ सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है मेरी जिँदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥ जन नानक
नामु धिआइआ मेरी जिँदुड़ीए जम कँकरु नेड़ि न आवै राम ॥ २ ॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिँदुड़ीए सो डरै
जिनि पाप कमते राम ॥ जिसु अँतरु हिरदा सुधु है मेरी जिँदुड़ीए तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम ॥ हरि

निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभिं झख मारनु दुसट कुपते राम ॥ गुरु पूरा नानकि सेविआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी
 आणिं सभिं घते राम ॥ ३ ॥ सो ऐसा हरिं नित सेवीए मेरी जिंदुड़ीए जो सभ दू साहिबु वडा राम ॥ जिन्ही इक मनि इकु
 अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही किसै दी किछु चडा राम ॥ गुरु सेविरे हरिं महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभिं
 निंदक घंडा राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरिं मसतकि हरिं लिखि छडा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥ बिहागड़ा
 महला ४ ॥ सभिं जीअ तेरे तूँ वरतदा मेरे हरिं प्रभ तूँ जाणहि जो जीइ कमाईए राम ॥ हरिं अंतरिं बाहरिं नालिं है मेरी जिंदुड़ीए
 सभ वेखै मनि मुकराईए राम ॥ मनमुखा नो हरिं दुरिं है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी घाल गवाईए राम ॥ जन नानक गुरुमुखि
 धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरिं हाजरु नदरी आईए राम ॥ १ ॥ से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मनि भाणे राम ॥ से
 हरिं दरगह पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए अहिनिंसा साचि समाणे राम ॥ तिन कै सँगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रँगि राते नदरिं नीसाणे
 राम ॥ नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलिं साधू सँगि अघाणे राम ॥ २ ॥ हे रसना जपि गोबिंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरिं
 हरिं तिसना जाए राम ॥ जिसु दइआ करे मेरा पारब्रह्म मेरी जिंदुड़ीए तिसु मनि नामु वसाए राम ॥ जिसु भेटे पूरा सतिगुरु मेरी
 जिंदुड़ीए सो हरिं धनु निधि पाए राम ॥ वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरिं गुण गाए राम ॥ ३ ॥ थान थनंतरिं
 रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रह्म प्रभु दाता राम ॥ ता का अंतु न पाईए मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम ॥ सरब जीआ
 प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक पित माता राम ॥ सहस सिआणप नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरुमुखि जाता
 राम ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

बिहागड़ा महला ५ छँत घरु १ १४ सतिगुरु प्रसादि ॥

हरिं का एक अचँभउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धरम निआए राम ॥

हरि रँगु अखाड़ा पाइओनु मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाए राम ॥ आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि
 सिरजीआ ॥ इकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाए इकि भरमि भूले फिरदिआ ॥ अँतु तेरा तूँहै जाणहि तूँ सभ महि रहिआ
 समाए ॥ सचु कहै नानकु सुणहु सँतहु हरि वरतै धरम निआए ॥ १ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो मेरे लाल जीउ हरि हरि
 नामु अराधे राम ॥ करि सेवहु पूरा सतिगुरु मेरे लाल जीउ जम का मारगु साधे राम ॥ मारगु बिखड़ा साधि गुरुमुखि
 हरि दरगहु सोभा पाईरे ॥ जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ तिन्हा रैणि दिनु लिव लाईरे ॥ हउमै ममता मोहु छुटा जा
 सँगि मिलिआ साधे ॥ जनु कहै नानकु मुकतु होआ हरि हरि नामु अराधे ॥ २ ॥ कर जोड़िहु सँत इकत्र होइ मेरे लाल
 जीउ अबिनासी पुरखु पूजेहा राम ॥ बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इहु मनु तनु सभु अरपेहा राम ॥ मनु तनु
 धनु सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावए ॥ जिसु होइ क्रिपाल दइआलु सुआमी सो प्रभ अँकि समावए ॥ भागु मसतकि
 होइ जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा ॥ जनु कहै नानकु मिलि साध सँगति हरि हरि नामु पूजेहा ॥ ३ ॥ दह दिस
 खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम ॥ हरि मँदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु
 महि रहिआ समाए राम ॥ सरबे समाणा आपि सुआमी गुरुमुखि परगटु होइआ ॥ मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि
 रसु चोइआ ॥ जहा देखा ताह सुआमी पारब्रहमु सभ ठाए ॥ जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि
 आए ॥ ४ ॥ १ ॥ रागु बिहागड़ा महला ५ ॥ अति प्रीतम मनमोहना घट सोहना प्रान अधारा राम ॥ सुँदर सोभा
 लाल गोपाल दइआल की अपर अपारा राम ॥ गोपाल दइआल गोबिंद लालन मिलहु कँत निमाणीआ ॥ नैन तरसन
 दरस परसन नह नीद रैणि विहाणीआ ॥ गिआन अँजन नाम बिँजन भए सगल सीगारा ॥ नानकु पइअँपै सँत जँपै
 मेलि कँतु हमारा ॥ १ ॥ लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम ॥ मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह

चलै राम ॥ चल चित बित अनित प्रिअ बिनु कवन बिधी न धीजीरे ॥ खान पान सीगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीरे
 ॥ आसा पिआसी रैनि दिनीअरु रहि न सकीरे डकु तिलै ॥ नानकु पइअँपै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै ॥ २ ॥
 सेज एक प्रिउ सँगि दरसु न पाईरे राम ॥ अवगन मोहि अनेक कत महलि बुलाईरे राम ॥ निरगुनि निमाणी अनाथि बिनवै
 मिलहु प्रभ किरपा निधे ॥ भ्रम भीति खोईरे सहजि सोईरे प्रभ पलक पेखत नव निधे ॥ ग्रिहि लालु आवै महलु पावै मिलि
 सँगि मँगलु गाईरे ॥ नानकु पइअँपै संत सरणी मोहि दरसु दिखाईरे ॥ ३ ॥ संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम ॥
 इछ पुँनी मनि सांति तपति बुझाइआ राम ॥ सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मँगल रसु घना ॥ प्रगटे गुपाल गोबिंद
 लालन कवन रसना गुण भना ॥ भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सरखी मँगलु गाइआ ॥ नानकु पइअँपै संत जँपै जिनि
 हरि हरि सँजोगि मिलाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ करि किरपा गुर पारब्रहम पूरे अनदिनु नामु वखाणा राम
 ॥ अँमित बाणी उचरा हरि जसु मिठा लागै तेरा भाणा राम ॥ करि दइआ मइआ गोपाल गोबिंद कोइ नाही तुझ बिना ॥
 समरथ अगथ अपार पूरन जीउ तन धनु तुम्ह मना ॥ मूरख मुगध अनाथ चँचल बलहीन नीच अजाणा ॥ बिनवँति
 नानक सरणि तेरी रखि लेहु आवण जाणा ॥ १ ॥ साधह सरणी पाईरे हरि जीउ गुण गावह हरि नीता राम ॥ धूरि
 भगतन की मनि तनि लगउ हरि जीउ सभ पतित पुनीता राम ॥ पतिता पुनीता होहि तिन्ह सँगि जिन्ह बिधाता पाइआ ॥
 नाम राते जीअ दाते नित देहि चडहि सवाइआ ॥ रिधि सिधि नव निधि हरि जपि जिनी आतमु जीता ॥ बिनवँति नानकु
 वडभागि पाईअहि साध साजन मीता ॥ २ ॥ जिनी सचु वणँजिआ हरि जीउ से पूरे साहा राम ॥ बहुतु खजाना तिँन पहि
 हरि जीउ हरि कीरतनु लाहा राम ॥ कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिओ रातिआ ॥ एकु जानहि एकु मानहि राम
 कै रँगि मातिआ ॥ लगि संत चरणी पडे सरणी मनि तिना ओमाहा ॥ बिनवँति नानकु जिन्ह नामु पलै

सेई सचे साहा ॥ ३ ॥ नानक सोई सिमरीऐ हरि जीउ जा की कल धारी राम ॥ गुरमुखि मनु न वीसरै हरि जीउ करता
 पुरखु मुरारी राम ॥ दूखु रोगु न भउ बिआपै जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ सँत प्रसादि तरे भवजलु पूरबि लिखिआ
 पाइआ ॥ वजी वधाई मनि सांति आई मिलिआ पुरखु अपारी ॥ बिनवँति नानकु सिमरि हरि हरि इछु पुँनी हमारी ॥ ४
 ॥ ३ ॥

बिहागड़ा महला ७ घरु २ १४ शितिनामु गुर प्रसादि ॥

वधु सुखु रैनडीए प्रिअ प्रेम लगा ॥ घटु दुख नीदडीए परसउ सदा पगा ॥ पग धूरि बांछउ सदा जाचउ नाम रसि
 बैरागनी ॥ प्रिअ रँगि राती सहज माती महा दुर्मति तिआगनी ॥ गहि भुजा लीन्ही प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा
 ॥ बिनवँति नानक धारि किरपा रहउ चरणह सँगि लगा ॥ १ ॥ मेरी सखी सहेलडीहो प्रभ कै चरणि लगह ॥ मनि
 प्रिअ प्रेम घणा हरि की भगति मँगह ॥ हरि भगति पाईऐ प्रभु धिआईऐ जाइ मिलीऐ हरि जना ॥ मानु मोहु बिकारु
 तजीऐ अरपि तनु धनु इहु मना ॥ बड पुरख पूरन गुण संपूरन भ्रम भीति हरि हरि मिलि भगह ॥ बिनवँति नानक सुणि
 मँत्रु सखीए हरि नामु नित नित नित जपह ॥ २ ॥ हरि नारि सुहागणे सभि रँग माणे ॥ राँड न बैसई प्रभ पुरख चिराणे
 ॥ नह दूख पावै प्रभ धिआवै धँनि ते बडभागीआ ॥ सुख सहजि सोवहि किलबिख खोवहि नाम इसि रँगि जागीआ ॥
 मिलि प्रेम रहणा हरि नामु गहणा प्रिअ बचन मीठे भाणे ॥ बिनवँति नानक मन इछ पाई हरि मिले पुरख चिराणे ॥ ३ ॥
 तितु ग्रिहि सोहिलडे कोड अनँदा ॥ मनि तनि रवि रहिआ प्रभ परमानँदा ॥ हरि कँत अनँत दइआल श्रीधर गोबिंद
 पतित उधारणो ॥ प्रभि क्रिपा धारी हरि मुरारी भै सिँधु सागर तारणो ॥ जो सरणि आवै तिसु कँठि लावै इह बिरदु
 सुआमी सँदा ॥ बिनवँति नानक हरि कँतु मिलिआ सदा केल करँदा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिहागड़ा महला ७ ॥

हरि चरण सरोवर तह करहु निवासु मना ॥ करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना ॥ करि सदा मजनु गोबिंद
 सजनु दुख अंधेरा नासे ॥ जनम मरणु न होइ तिस कउ कटै जम के फासे ॥ मिलु साध संगे नाम रंगे तहा पूरन आसो ॥
 बिनवँति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥ १ ॥ तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम ॥ मिलि
 गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ॥ मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिँनीआ ॥ हरि लाभु पाइआ
 आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुँनिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ कीन्हे प्रभ एक अगम अपारो ॥ बिनवँति नानक सदा
 निरमल सचु सबदु रुण झुणकारो ॥ २ ॥ सुणि वडभागीआ हरि अँमित बाणी राम ॥ जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै
 समाणी राम ॥ अकथ कहाणी तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे ॥ अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख
 हरे ॥ हरि सरणि पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी ॥ बिनवँति नानक सदा गाईऐ पवित्र अँमित बाणी ॥ ३
 ॥ मन तन गलतु भए किछु कहणु न जाई राम ॥ जिस ते उपजिअड़ा तिनि लीआ समाई राम ॥ मिलि ब्रहम जोती
 ओति पोती उदकु उदकि समाइआ ॥ जलि थलि महीअलि एकु रविआ नह दूजा दिसटाइआ ॥ बणि त्रिणि त्रिभवणि पूरि
 पूरन कीमति कहणु न जाई ॥ बिनवँति नानक आपि जाणै जिनि एह बणत बणाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ बिहागड़ा महला
 ५ ॥ खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण अधारे राम ॥ ताणु तनु खीन भइआ बिनु मिलत पिआरे राम ॥ प्रभ मिलहु पिआरे
 मइआ धारे करि दइआ लडि लाइ लीजीऐ ॥ देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीऐ ॥ समरथ पूरन सदा
 निहचल ऊच अगम अपारे ॥ बिनवँति नानक धारि किरपा मिलहु प्राण पिआरे ॥ १ ॥ जप तप बरत कीने पेखन कउ
 चरणा राम ॥ तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम ॥ प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीऐ ॥
 अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु अउगणु न बीचारीऐ ॥ दीन दइआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण करणा ॥

नानक चात्रिक हरि बूँद मागै जपि जीवा हरि हरि चरणा ॥ २ ॥ अमिअ सरोवरो पीउ हरि हरि नामा राम ॥ सँतह सँगि
 मिलै जपि पूरन कामा राम ॥ सभ काम पूरन दुख बिदीरन हरि निमख मनहु न बीसरै ॥ आनँद अनदिनु सदा साचा सरब
 गुण जगदीसरै ॥ अगणत ऊच अपार ठाकुर अगम जा को धामा ॥ बिनवँति नानक मेरी इछ पूरन मिले श्रीरँग रामा ॥ ३
 ॥ कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥ हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम ॥ हरि नामु जपत सोहँत प्राणी
 ता की महिमा कित गना ॥ हरि बिसरु नाही प्रान पिआरे चितवँति दरसनु सद मना ॥ सुभ दिवस आए गहि कँठि लाए
 प्रभ ऊच अगम अपारे ॥ बिनवँति नानक सफलु सभु किछु प्रभ मिले अति पिआरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ बिहागड़ा महला ५
 छँत ॥ अन काए रातड़िआ वाट दुहेली राम ॥ पाप कमावदिआ तेरा कोइ न बेली राम ॥ कोए न बेली होइ तेरा सदा
 पछोतावहे ॥ गुन गुपाल न जपहि रसना फिरि कदहु से दिह आवहे ॥ तरवर विछुँने नह पात जुड़ते जम मगि गउनु इकेली
 ॥ बिनवँत नानक बिनु नाम हरि के सदा फिरत दुहेली ॥ १ ॥ तूँ वलवँच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ॥ लेखा धरम
 भइआ तिल पीडे घाणी राम ॥ किरत कमाणे दुख सहु पराणी अनिक जोनि भ्रमाइआ ॥ महा मोहनी सँगि राता रतन
 जनमु गवाइआ ॥ इकसु हरि के नाम बाइहु आन काज सिआणी ॥ बिनवँत नानक लेखु लिखिआ भरमि मोहि लुभाणी
 ॥ २ ॥ बीचु न कोइ करे अकितघणु विछुड़ि पइआ ॥ आए खरे कठिन जमकँकरि पकड़ि लइआ ॥ पकड़े चलाइआ
 अपना कमाइआ महा मोहनी रातिआ ॥ गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थँम्ह गलि लातिआ ॥ काम क्रोधि
 अहँकारि मूठा खोइ गिआनु पछुतापिआ ॥ बिनवँत नानक सँजोगि भूला हरि जापु रसन न जापिआ ॥ ३ ॥ तुइ बिनु
 को नाही प्रभ राखनहारा राम ॥ पतित उधारण हरि बिरदु तुमारा राम ॥ पतित उधारन सरनि सुआमी क्रिपा निधि
 दइआला ॥ अँध कूप ते उधरु करते सगल घट प्रतिपाला ॥ सरनि तेरी कटि महा बेड़ी इकु नामु देहि अधारा ॥

बिनवँत नानक कर देइ राखहु गोबिंद दीन दइआरा ॥ ४ ॥ सो दिनु सफलु गणिआ हरि प्रभू मिलाइआ राम ॥ सभि सुख
 परगटिआ दुख दूरि पराइआ राम ॥ सुख सहज अनद बिनोद सद ही गुन गुपाल नित गाईये ॥ भज साध सँगे मिले रँगे
 बहुड़ि जोनि न धाईये ॥ गहि कँठि लाए सहजि सुभाए आदि अँकुरु आइआ ॥ बिनवँत नानक आपि मिलिआ बहुड़ि कतहू
 न जाइआ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बिहागड़ा महला ५ छँत ॥ सुनहु बेनँतीआ सुआमी मेरे राम ॥ कोटि अप्राध भरे भी तेरे चरे
 राम ॥ दुख हरन किरपा करन मोहन कलि कलेसह भँजना ॥ सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरब मै निरँजना ॥ सुनत पेखत
 सँगे सभ कै प्रभ नेरहू ते नेरे ॥ अरदासि नानक सुनि सुआमी रखि लेहु घर के चरे ॥ १ ॥ तू समरथु सदा हम दीन भेखारी
 राम ॥ माइआ मोहि मगनु कठि लेहु मुरारी राम ॥ लोभि मोहि बिकारि बाधिओ अनिक दोख कमावने ॥ अलिपत बँधन
 रहत करता कीआ अपना पावने ॥ करि अनुग्रहु पतित पावन बहु जोनि भ्रमते हारी ॥ बिनवँति नानक दासु हरि का प्रभ
 जीअ प्रान अधारी ॥ २ ॥ तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम ॥ पालहि अकिरतघना पूरन द्रिसटि तेरी राम ॥ अगाधि
 बोधि अपार करते मोहि नीचु कछु न जाना ॥ रतनु तिआगि सँग्रहन कउडी पसू नीचु इआना ॥ तिआगि चलती महा
 चँचलि दोख करि करि जोरी ॥ नानक सरनि समरथ सुआमी पैज राखहु मोरी ॥ ३ ॥ जा ते वीछुड़िआ तिनि आपि
 मिलाइआ राम ॥ साधू सँगमे हरि गुण गाइआ राम ॥ गुण गाइ गोविंद सदा नीके कलिआण मै परगट भए ॥ सेजा सुहावी
 सँगे प्रभ कै आपणे प्रभ करि लए ॥ छोडि चिँत अचिँत होए बहुड़ि दूखु न पाइआ ॥ नानक दरसनु पेखि जीवे गोविंद गुण
 निधि गाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥ बिहागड़ा महला ५ छँत ॥ बोलि सुधरमीड़िआ मोनि कत धारी राम ॥ तू नेत्री देखि
 चलिआ माइआ बिउहारी राम ॥ सँगे तेरै कछु न चालै बिना गोबिंद नामा ॥ देस वेस सुवरन रूपा सगल ऊणे कामा ॥
 पुत्र कलत्र न सँगे सोभा हसत घोरि विकारी ॥ बिनवँत नानक बिनु साध सँगम सभ मिथिआ सँसारी ॥ १ ॥ राजन

किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम ॥ माइआ झूठ रुदनु केते बिललाही राम ॥ बिललाहि केते महा मोहन
 बिनु नाम हरि के सुखु नही ॥ सहस सिआणप उपाव थाके जह भावत तह जाही ॥ आदि अँते मधि पूरन सरबत्र घटि
 घटि आही ॥ बिनवँत नानक जिन साध संगमु से पति सेती घरि जाही ॥ २ ॥ नरपति जाणि गहिओ सेवक सिआणे
 राम ॥ सरपर वीछुडणा मोहे पछुताणे राम ॥ हरिचँदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईरे ॥ बिनु नाम हरि के आन
 रचना अहिला जनमु गवाईरे ॥ हउ हउ करत न तिसन बूझै नह कांम पूरन गिआने ॥ बिनवँति नानक बिनु नाम हरि
 के केतिआ पछुताने ॥ ३ ॥ धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम ॥ भुजा गहि काढि लीओ साधू संगु दीना राम ॥
 साध संगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ॥ महा धरम सुदान किरिआ साँगि तेरै से चले ॥ रसना अराधै एकु
 सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना ॥ नानक जिस नो हरि मिलाए सो सरब गुण परबीना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

बिहागड़े की वार महला ४ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु पाईरे होर थै सुखु न भालि ॥ गुर कै सबदि मनु भेदीरे सदा वसै हरि नालि ॥ नानक
 नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सिफति खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै
 खाइ ॥ सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके करम कमाइ ॥ नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ ॥
 २ ॥ पउड़ी ॥ सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु उपाइआ ॥ सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइआ ॥ तिस दी तू
 भगति थाइ पाइहि जो तुधु मनि भाइआ ॥ जो हरि प्रभ भावै सो थीरे सभि करनि तेरा कराइआ ॥ सलाहिहु हरि
 सभना ते वडा जो संत जनां की पैज रखदा आइआ ॥ १ ॥ सलोक मः ३ ॥ नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता
 सभु कोइ ॥ नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ ॥ गुरमति मति अचलु है चलाइ

न सकै कोइ ॥ भगता का हरि अँगीकारु करे कारजु सुहावा होइ ॥ मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहँकारु ॥
 झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥ सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ दितै कितै न
 सँतोखीअनि अँतरि त्रिसना बहुतु अग्यानु अँधारु ॥ नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥ १
 ॥ मः ३ ॥ तिन्ह भउ सँसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ॥ धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥ मिलि
 प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥ २ ॥ पउडी ॥ जीअ जँत सभि
 तेरिआ तू सभना रासि ॥ जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि ॥ तुइको दाता सभस दा
 हरि पहि अरदासि ॥ जिस दी तुधु भावै तिस दी तू मँनि लैहि सो जनु साबासि ॥ सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि
 ॥ २ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरुमुखि सचै भावदे दरि सचै सचिआर ॥ साजन मनि आनँदु है गुरु का सबदु वीचार ॥ अँतरि
 सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ नानक रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुरु
 की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ ॥ जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥ नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी
 जाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ तेरी वडिआई तूहै जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीरे तुधु
 जेवडु तूहै होई ॥ जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिस दी रीस करे किआ कोई ॥ तू भँनण घड़ण समरथु दातारु
 हहि तुधु अगै मँगण नो हथ जोड़ि खली सभ होई ॥ तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खँडी
 वरभँडी पाताली पुरई सभ लोई ॥ ३ ॥ सलोक मः ३ ॥ मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ ॥ सबदै सादु न
 पाइओ मनहठि किआ गुण गाइ ॥ नानक आइआ सो परवाणु है जि गुरुमुखि सचि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आपणा आपु न
 पछाणै मूडा अवरा आखि दुखाए ॥ मुँढे दी खसलति न गईआ अँधे विछुड़ि चोटा खाए ॥ सतिगुर कै भै भँनि न घड़िओ रहै

अँकि समाए ॥ अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाए ॥ कामु क्रोधु लोभु अँतरि सबला नित धँधा करत विहाए ॥
 ॥ चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेडै आए ॥ सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नव निधि पाए ॥ जीवतु मरै मरै
 फुनि जीवै तां मोखँतरु पाए ॥ धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा किआ पाए ॥ गुर का सबदु समालि तू मूडे गति
 मति सबदे पाए ॥ नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस दै चिति वसिआ मेरा
 सुआमी तिस नो किउ अँदेसा किसै गलै दा लोड़ीरे ॥ हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख
 घड़ी मुहु मोड़ीरे ॥ जिनि हरि धिआइआ तिस नो सरब कलिआण होए नित सँत जना की संगति जाइ बहीरे मुहु जोड़ीरे ॥
 सभि दुख भुख रोग गए हरि सेवक के सभि जन के बँधन तोड़ीरे ॥ हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि भगत जना कै मुहि
 डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीरे ॥ ४ ॥ सलोक मः ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ न पाइआ ॥ नानक
 रसना सबदि रसाइ जिनि हरि हरि मँनि वसाइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ ॥
 नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ पिआरिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराए
 ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे जितु भावे तितु लाए ॥ हरि इकना मारगि पाए आपे हरि इकना उझड़ि पाए ॥ हरि सचा
 साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाए ॥ गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाए ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥
 दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु ॥ जे घरि घरि हँडै मँगदा धिगु जीवणु धिगु वेसु ॥ जे आसा अँदेसा तजि रहै
 गुरमुखि भिखिआ नाउ ॥ तिस के चरन परवालीअहि नानक हउ बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक तरवरु एकु फलु
 दुइ पँखेरु आहि ॥ आवत जात न दीसही ना पर पँखी ताहि ॥ बहु रँगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु ॥ हरि रसि
 फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे धरती आपे है राहकु आपि जँमाइ पीसावै ॥ आपि पकावै

आपि भांडे देइ परोसै आपे ही बहि खावै ॥ आपे जलु आपे दे छिँगा आपे चुली भरावै ॥ आपे संगति सदि बहालै आपे
 विदा करावै ॥ जिस नो किरपालु होवै हरि आपे तिस नो हुकमु मनावै ॥ ६ ॥ सलोक मः ३ ॥ करम धरम सभि बँधना
 पाप पुँन सनबँधु ॥ ममता मोहु सु बँधना पुत्र कलत्र सु धँधु ॥ जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबँधु ॥ नानक सचे नाम
 बिनु वरतणि वरतै अँधु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ अँधे चानणु ता थीरे जा सतिगुरु मिलै रजाइ ॥ बँधन तोडै सचि वसै अगिआनु
 अधेरा जाइ ॥ सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि ॥ नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ॥ २ ॥
 पउड़ी ॥ जदहु आपे थाटु कीआ बहि करतै तदहु पुछि न सेवकु बीआ ॥ तदहु किआ को लेवै किआ को देवै जां अवरु न
 दूजा कीआ ॥ फिरि आपे जगतु उपाइआ करतै दानु सभना कउ दीआ ॥ आपे सेव बणाईअनु गुरुमुखि आपे अँम्रितु पीआ
 ॥ आपि निरँकार आकारु है आपे आपे करै सु थीआ ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरुमुखि प्रभु सेवहि सद साचा अनदिनु
 सहजि पिआरि ॥ सदा अनँदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि उरि धारि ॥ अँतरि प्रीतमु वसिआ धुरि करमु लिखिआ
 करतारि ॥ नानक आपि मिलाइअनु आपे किरपा धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ कहिरे कथिरे न पाईरे अनदिनु रहै सदा गुण
 गाइ ॥ विणु करमै किनै न पाइओ भउकि मूए बिललाइ ॥ गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ ॥ नानक
 नदरी पाईरे आपे लए मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै ॥ आपे ही बहि पूजे
 करता आपि परपँचु करीजै ॥ आपि परविरति आपि निरविरती आपे अकथु कथीजै ॥ आपे पुँनु सभु आपि कराए आपि
 अलिपतु वरतीजै ॥ आपे सुखु दुखु देवै करता आपे बखस करीजै ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ सेखा अँदरहु जोरु छडि तू
 भउ करि झलु गवाइ ॥ गुर कै भै केते निसतरे भै विचि निरभउ पाइ ॥ मनु कठोरु सबदि भेदि तूँ सांति वसै मनि आइ ॥
 सांती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ ॥ नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु गिआनी जाइ ॥ १ ॥

मः ३ ॥ मनमुख माइआ मोहु है नामि न लगो पिआरु ॥ कूडु कमावै कूडु सँगहै कूडु करे आहारु ॥ बिखु माइआ धनु
 सँचि मरहि अँते होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुच सँजम करहि अँतरि लोभु विकारु ॥ नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ
 ना पवै दरगहि होइ खुआरु ॥ २ ॥ पउडी ॥ आपे खाणी आपे बाणी आपे खँड वरभँड करे ॥ आपि समुँदु आपि है
 सागरु आपे ही विचि रतन धरे ॥ आपि लहाए करे जिसु किरपा जिस नो गुरमुखि करे हरे ॥ आपे भउजलु आपि है
 बोहिथा आपे खेवटु आपि तरे ॥ आपे करे कारए करता अवरु न दूजा तुझै सरे ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा
 सफल है जे को करे चितु लाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ अचिँतु वसै मनि आए ॥ जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै ममता जाइ ॥
 उतम पदवी पाईऐ सचे रहै समाइ ॥ नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥
 नामि रता सतिगुरु है कलिजुग बोहिथु होइ ॥ गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना अँदरि सचा सोइ ॥ नामु सम्हाले नामु
 सँगहै नामे ही पति होइ ॥ नानक सतिगुरु पाइआ करमि परापति होइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ आपे पारसु आपि धातु है आपि
 कीतोनु कँचनु ॥ आपे ठाकुरु सेवकु आपे आपे ही पाप खँडनु ॥ आपे सभिं घट भोगवै सुआमी आपे ही सभु अँजनु ॥
 आपि बिबेकु आपि सभु बेता आपे गुरमुखि भँजनु ॥ जनु नानक सालाहि न रजै तुधु करते तू हरि सुख दाता वडनु ॥ १०
 ॥ सलोक मः ४ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बँधना जेते करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जँमहि
 आवहि जाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आइ ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे
 मारीअहि मुहि कालै उठि जाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ॥ नानक
 जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ॥ २ ॥ पउडी ॥ आपे चाटसाल आपि है पाधा आपे चाटडे पड़न कउ आणे
 ॥ आपे पिता माता है आपे आपे बालक करे सिआणे ॥ इक थै पड़ि बुझै सभु आपे इक थै आपे करे इआणे ॥ इकना अँदरि

महलि बुलाए जा आपि तेरै मनि सचे भाणे ॥ जिना आपे गुरमुखि दे वडिआई से जन सची दरगहि जाणे ॥ ११ ॥
 सलोकु मरदाना १ ॥ कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥ क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहँकारु ॥ मजलस
 कूडे लब की पी पी होइ खुआरु ॥ करणी लाहणि सतु गुडु सचु सरा करि सारु ॥ गुण मँडे करि सीलु घिउ सरमु मासु
 आहारु ॥ गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार ॥ १ ॥ मरदाना १ ॥ काइआ लाहणि आपु मदु मजलस त्रिसना
 धातु ॥ मनसा कटोरी कूडि भरी पीलाए जमकालु ॥ इतु मदि पीतै नानका बहते खटीअहि बिकार ॥ गिआनु गुडु सालाह
 मँडे भउ मासु आहारु ॥ नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥ २ ॥ कांयां लाहणि आपु मदु अँमित तिस की धार
 ॥ सत सँगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अँमित भरी पी पी कटहि बिकार ॥ ३ ॥ पउडी ॥ आपे सुरि नर गण गँधरबा
 आपे खट दरसन की बाणी ॥ आपे सिव सँकर महेसा आपे गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे जोगी आपे भोगी आपे
 सँनिआसी फिरै बिबाणी ॥ आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघडु सरूपु सिआणी ॥ आपणा चोजु करि वेखै आपे
 आपे सभना जीआ का है जाणी ॥ १२ ॥ सलोक मः ३ ॥ एहा सँधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभि मेरा चिति आवे ॥ हरि
 सिउ प्रीति ऊपजै माइआ मोहु जलावै ॥ गुर परसादी दुबिधा मरै मनूआ असथिरु सँधिआ करे वीचारु ॥ नानक सँधिआ
 करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जँमै होइ खुआरु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइ ॥
 नानक सतिगुरि मिलिऐ मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि आइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ आपे तँतु परम तँतु सभु आपे आपे
 ठाकुरु दासु भइआ ॥ आपे दसअठ वरन उपाइअनु आपि ब्रहमु आपि राजु लइआ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे
 दइआ ॥ आपि अभुलु न भुलै कब ही सभु सचु तपावसु सचु थिआ ॥ आपे जिना बुझाए गुरमुखि तिन आँदरहु दूजा भरमु
 गइआ ॥ १३ ॥ सलोक मः ५ ॥ हरि नामु न सिमरहि साध सँगि तै तनि उडै खेह ॥ जिनि कीती तिसै न जाणई

नानक फिटु अलूणी देह ॥ १ ॥ मः ५ ॥ घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल ॥ नानक सो प्रभु सिमरीए तिसु देही
 कउ पालि ॥ २ ॥ पउडी ॥ आपे अठसठि तीरथ करता आपि करे इसनानु ॥ आपे सँजमि वरतै स्वामी आपि जपाइहि
 नामु ॥ आपि दइआलु होइ भउ खँडनु आपि करै सभु दानु ॥ जिस नो गुरुमुखि आपि बुझाए सो सद ही दरगहि पाए मानु
 ॥ जिस दी पैज रखै हरि सुआमी सो सचा हरि जानु ॥ १४ ॥ सलोक मः ३ ॥ नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अँधु है अँधे
 करम कमाइ ॥ सबदै सिउ चितु न लावई जितु सुखु वसै मनि आइ ॥ तामसि लगा सदा फिरै अहिनि सि जलतु बिहाइ ॥
 जो तिसु भावै सो थीए कहणा किछु न जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरु फुरमाइआ कारी एहु करेहु ॥ गुरु दुआरै होइ कै
 साहिबु सँमालेहु ॥ साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड कटि कै अंतरि जोति धरेहु ॥ हरि का नामु अँमितु है दारु एहु
 लाएहु ॥ सतिगुर का भाणा चिति रखहु सँजमु सचा नेहु ॥ नानक ऐथै सुखै अँदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥ २
 ॥ पउडी ॥ आपे भार अठारह बणसपति आपे ही फल लाए ॥ आपे माली आपि सभु सिँचै आपे ही मुहि पाए ॥ आपे
 करता आपे भुगता आपे देइ दिवाए ॥ आपे साहिबु आपे है राखा आपे रहिआ समाए ॥ जनु नानक वडिआई आखै हरि
 करते की जिस नो तिलु न तमाए ॥ १५ ॥ सलोक मः ३ ॥ माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥ जितु पीतै
 मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥ आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥ जितु पीतै खसमु विसरै दरगह
 मिलै सजाइ ॥ झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥ नानक नदरी सचु मदु पाईए सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ सदा
 साहिब कै रँगि रहै महली पावै थाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इहु जगतु जीवतु मरै जा इस नो सोझी होइ ॥ जा तिन्हि सवालिया
 तां सवि रहिआ जगाए तां सुधि होइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ॥ गुरु प्रसादि जीवतु मरै ता फिरि
 मरणु न होइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ जिस दा कीता सभु किछु होवै तिस नो परवाह नाही किसै केरी ॥ हरि जीउ तेरा

दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥ जिं तुध नो सालाहे सु सभु किछु पावै जिस नो किरपा निरँजन केरी ॥ सोई
 साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरि नामु धनु तेरी ॥ सभिं तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि
 विडारी ढेरी ॥ १६ ॥ सलोक ॥ कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भिं न जानै कोइ ॥ ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना
 होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ ॥ जे करि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइ
 ॥ मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोडै सभु कोइ ॥ गुर परसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइ ॥ नानक ऐसी मरनी जो मरै ता
 सद जीवणु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जा आपि क्रिपालु होवै हरि सुआमी ता आपणां नाउ हरि आपि जपावै ॥ आपे सतिगुरु
 मेलिं सुखु देवै आपणां सेवकु आपि हरि भावै ॥ आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै ॥
 धरम राइ है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेडिं न आवै ॥ जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखिं झखिं
 आवै जावै ॥ १७ ॥ सलोक मः ३ ॥ रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइआ जाइ ॥ अगमु अगोचरु अति वडा
 अतुलु न तुलिंआ जाइ ॥ कीमति किनै न पाईआ कितै न लइआ जाइ ॥ गुर कै सबदि भेदिआ इन बिधि वसिआ मनि आइ
 ॥ नानक आपि अमेउ है गुर किरपा ते रहिआ समाइ ॥ आपे मिलिंआ मिलिं रहिआ आपे मिलिंआ आइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥
 ए मन इहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ तोटा मूलिं न आवई लाहा सद ही होइ ॥ खाधै खरचिरे तोटि न आवई
 सदा सदा ओहु देइ ॥ सहसा मूलिं न होवई हाणत कदे न होइ ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरिं करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ आपे सभ घट अँदरे आपे ही बाहरि ॥ आपे गुप्तु वरतदा आपे ही जाहरि ॥ जुग छतीह गुबारु करि वरतिआ सुँनाहरि
 ॥ ओथै वेद पुरान न सासता आपे हरि नरहरि ॥ बैठा ताड़ी लाइ आपि सभ दू ही बाहरि ॥ आपणी मिति आपि जाणदा
 आपे ही गउहरु ॥ १८ ॥ सलोक मः ३ ॥ हउमै विचि जगतु मुआ मरदो मरदा जाइ ॥ जिं चरु विचि दँमु है तिचरु न

चेतई कि करेगु अगै जाइ ॥ गिआनी होइ सु चेतनु होइ अगिआनी अंधु कमाइ ॥ नानक एथै कमावै सो मिलै अगै पाए
 जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥ सतिगुरि मिलिरे अंतरि रवि रहिआ
 सदा रहिआ लिव लाइ ॥ दमि दमि सदा सम्हालदा दंमु न बिरथा जाइ ॥ जनम मरन का भउ गइआ जीवन पदवी पाइ ॥
 नानक इहु मरतबा तिस नो देइ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे दानां बीनिआ आपे परधानां ॥ आपे
 रूप दिखालदा आपे लाइ धिआनां ॥ आपे मोनी वरतदा आपे कथै गिआनां ॥ कउड़ा किसै न लगई सभना ही भाना ॥
 उसतति बरनि न सकीरे सद सद कुरबाना ॥ १९ ॥ सलोक मः १ ॥ कली अंदरि नानका जिंनां दा अउतारु ॥ पुतु
 जिनूरा धीअ जिंनूरी जोरु जिंनां दा सिकदारु ॥ १ ॥ मः १ ॥ हिंदू मूले भूले अखुटी जांही ॥ नारदि कहिआ सि पूज
 करांही ॥ अंधे गुंगे अंध अंधारु ॥ पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ॥ ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥ २ ॥
 पउड़ी ॥ सभि किहु तेरै वसि है तू सचा साहु ॥ भगत रते रंगि एक कै पूरा वेसाहु ॥ अँमितु भोजनु नामु हरि रजि रजि
 जन खाहु ॥ सभि पदारथ पाईअनि सिमरणु सचु लाहु ॥ संत पिआरे पारब्रहम नानक हरि अगम अगाहु ॥ २० ॥
 सलोक मः ३ ॥ सभु किछु हुकमे आवदा सभु किछु हुकमे जाइ ॥ जे को मूरखु आपहु जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ नानक
 हुकमु को गुरमुखि बुझै जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सो जोगी जुगति सो पाए जिस नो गुरमुखि नामु
 परापति होइ ॥ तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ ॥ नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु
 होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे जंत उपाइअनु आपे आधारु ॥ आपे सूखमु भालीरे आपे पासारु ॥ आपि इकाती होइ रहै
 आपे वड परवारु ॥ नानकु मंगै दानु हरि संतारेनारु ॥ होरु दातार न सुझई तू देवणहारु ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु ॥

१ॐ सतिनामु करता पुरुषु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

रागु वडहँसु महला १ घरु १ ॥

अमली अमलु न अँबडै मछी नीरु न होइ ॥ जो रतै सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥ १ ॥ हउ वारी वँजा खँनीरे वँजा तउ
साहिब के नावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिबु सफलओ रुखड़ा अँमितु जा का नाउ ॥ जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै
जाउ ॥ २ ॥ मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि ॥ तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ॥ ३ ॥ नानकु
तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि ॥ मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहँसु महला १ ॥ गुणवँती
सहु राविआ निरगुणि कूके काइ ॥ जे गुणवँती थी रहै ता भी सहु रावण जाइ ॥ १ ॥ मेरा कँतु शीसालू की धन अवरा रावे जी
॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कामण जे थीरे जे मनु धागा होइ ॥ माणकु मुलि न पाईरे लीजै चिति परोइ ॥ २ ॥ राहु दसाई न
जुलां आखां अँमडीआसु ॥ तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु ॥ ३ ॥ नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ ॥ तै सह
लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहँसु महला १ घरु २ ॥ मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ ॥ तेरे मुँध
कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइआ ॥ तेरे दरसन विटहु खँनीरे वँजा तेरे नाम विटहु कुरबाणो ॥ जा तू ता मै माणु कीआ
है तुधु बिनु केहा मेरा माणो ॥ चूडा भँनु पलँघ सिउ मुँधे सणु बाही सणु बाहा ॥ एते वेस करेदीए मुँधे सहु रातो अवराहा ॥

ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वँगुड़ीआहा ॥ जो सह कँडि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा ॥ सभिं सहीआ सहु रावणि
 गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥ अँमाली हउ खरी सुचजी तै सह एके न भावा ॥ माठि गुँदाई. पटीआ भरीऐ माग सँधूरे
 ॥ अगै गई न मँनीआ मरउ विसूरि विसूरे ॥ मै शेवँदी सभु जगु रुना रँनडे वणहु पँखेरु ॥ इकु न रुना मेरे तन का
 बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी ॥ सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ ॥ आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न
 सका कोइ ॥ आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ ॥ तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥ सीसु
 वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइआ विडाणा ॥ १ ॥ ३ ॥

वडहँसु महला ३ घरु १ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

मनि मैलै सभु किछु मैला तनि थोतै मनु हछा न होइ ॥ इह जगतु बरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥ १ ॥ जपि मन मेरे
 तू एको नामु ॥ सतिगुर दीआ मो कउ एहु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधा के आसण जे सिखै इँद्री वसि करि कमाइ ॥ मन
 की मैलु न उत्रै हउमै मैलु न जाइ ॥ २ ॥ इसु मन कउ होरु सँजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ
 उलटी भई कहणा किछु न जाइ ॥ ३ ॥ भणति नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै गुर कै सबदि फिरि जीवै कोइ ॥ ममता की
 मलु उतरै इहु मनु हछा होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ नदरी सतगुरु सेविरे नदरी सेवा होइ ॥ नदरी इहु मनु वसि
 आवै नदरी मनु निरमलु होइ ॥ १ ॥ मेरे मन चेति सचा सोइ ॥ एको चेतहि ता सुखु पावहि फिरि दूखु न मूले होइ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ नदरी मरि कै जीवीऐ नदरी सबदु वसै मनि आइ ॥ नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाइ ॥ २ ॥ जिनि जिहवा
 हरि रसु न चखिओ सा जिहवा जलि जाउ ॥ अन रस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥ ३ ॥ सभना नदरि

एक है आपे फरक करेइ ॥ नानक सतगुरि मिलिरे फलु पाइआ नामु वडाई देइ ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ माइआ
 मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई ॥ सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥ १ ॥ मन मेरे गुरमति करणी
 सारु ॥ सदा सदा हरि प्रभु खहि ता पावहि मोख दुआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का निधानु एकु है आपे देइ ता को पाए
 ॥ बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए ॥ २ ॥ मेरी मेरी करदे घटि गए तिना हथि किहु न आइआ ॥ सतगुरि
 मिलिरे सचि मिले सचि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ आसा मनसा एहु सरीरु है अंतरि जोति जगाए ॥ नानक मनमुखि बंधु
 है गुरमुखि मुकति कराए ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइ ॥ सदा
 पिरु शवहि आपणा विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ ॥ सतगुरि मो कउ हरि दीआ बुझाइ ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ ॥ दूजै भाइ करूपी दूखु पावहि आगै जाइ ॥ २ ॥
 गुणवँती नित गुण खै हिरदै नामु वसाइ ॥ अउगणवँती कामणी दुखु लागै बिललाइ ॥ ३ ॥ सभना का भतारु एक है
 सुआमी कहणा किछु न जाइ ॥ नानक आपे वेक कीतिअनु नामे लइअनु लाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ अमित
 नामु सद मीठा लागा गुर सबदी सादु आइआ ॥ सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ ॥ १ ॥ हरि करि
 किरपा सतगुरु मिलाइआ ॥ पूरै सतगुरि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइआ मोह
 पसारा ॥ महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अहंकारा ॥ २ ॥ किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगे तरै
 संसारा ॥ गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥ ३ ॥ सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ॥
 साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोख दुआरा ॥ ४ ॥ एको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला ॥ नानक इकसु बिनु
 मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइआला ॥ ५ ॥ ५ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ गुरमुखि सचु संजमु ततु

गिआनु ॥ गुरमुखिं साचे लगै धिआनु ॥ १ ॥ गुरमुखिं मन मेरे नामु समालि ॥ सदा निबहै चलै तैरै नालि ॥ रहाउ ॥
 गुरमुखिं जाति पति सचु सोइ ॥ गुरमुखिं अंतरिं सखाई प्रभु होइ ॥ २ ॥ गुरमुखिं जिस नो आपि करे सो होइ ॥ गुरमुखिं
 आपि वडाई देवै सोइ ॥ ३ ॥ गुरमुखिं सबदु सचु करणी सारु ॥ गुरमुखिं नानक परवारै साधारु ॥ ४ ॥ ६ ॥ वडहँसु महला
 ३ ॥ रसना हरिं सादि लगी सहजिं सुभाइ ॥ मनु त्रिपतिआ हरिं नामु धिआइ ॥ १ ॥ सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ॥
 आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी संतोखीआ एक लिव लाइ ॥ मनु संतोखीआ दूजा भाउ गवाइ ॥
 २ ॥ देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरिं नाइ ॥ नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ नानक मसतकिं जिंसु वडभागु ॥ गुर
 की बाणी सहज बैरागु ॥ ४ ॥ ७ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ सचै सबदि सचि समाइ ॥ १ ॥ ए मन
 नामु निधानु तू पाइ ॥ आपणे गुर की मँनि लै रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै सबदि विचहु मैलु गवाइ ॥ निरमलु नामु वसै मनि
 आइ ॥ २ ॥ भरमे भूला फिरै संसारु ॥ मरिं जनमै जमु करे खुआरु ॥ ३ ॥ नानक से वडभागी जिन हरिं नामु धिआइआ ॥
 गुर परसादी मँनि वसाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ हउमै नावै नालिं विरोधु है दुइ न वसहिं इक ठाइ ॥ हउमै विचि
 सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥ १ ॥ हरिं चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ॥ हुकमु मँनिहिं ता हरिं मिलै ता विचहु हउमै
 जाइ ॥ रहाउ ॥ हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ ॥ हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुद्धिं न सकै कोइ ॥ २ ॥ हउमै विचि
 भगति न होवई हुकमु न बुद्धिआ जाइ ॥ हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ नानक सतगुरिं मिलिरे हउमै
 गई ता सचु वसिआ मनि आइ ॥ सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ १२ ॥

वडहँसु महला ४ ॥ घरु १ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

सेज एक एको प्रभु ठाकुरु ॥ गुरमुखिं हरिं शवे सुख सागरु ॥ १ ॥

मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा ॥ गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरु कउ जासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै अवगण भरपूरि सरिरे ॥ हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ॥ २ ॥ जिन गुणवँती मेरा प्रीतमु पाइआ ॥ से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ॥ ३ ॥ हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ॥ नानक गरीब राखहु हरि मेरे ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहँसु महला ४ ॥ मेरा हरि प्रभु सुँदरु मै सार न जाणी ॥ हउ हरि प्रभ छोडि दूजै लोभाणी ॥ १ ॥ हउ किउ करि पिर कउ मिलउ इआणी ॥ जो पिर भावै सा सोहागणि साई पिर कउ मिलै सिआणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै विचि दोस हउ किउ करि पिरु पावा ॥ तेरे अनेक पिआरे हउ पिर चिति न आवा ॥ २ ॥ जिनि पिरु राविआ सा भली सुहागणि ॥ से मै गुण नाही हउ किआ करी दुहागणि ॥ ३ ॥ नित सुहागणि सदा पिरु रावै ॥ मै करमहीण कब ही गलि लावै ॥ ४ ॥ तू पिरु गुणवँता हउ अउगुणिआरा ॥ मै निरगुण बखसि नानकु वेचारा ॥ ५ ॥ २ ॥

वडहँसु महला ४ घरु २ १३ श्रितिगुर प्रसादि ॥

मै मनि वडी आस हरे किउ करि हरि दरसन पावा ॥ हउ जाइ पुछा अपने सतगुरै गुर पुछि मनु मुगथु समझावा ॥ भूला मनु समझै गुर सबदी हरि हरि सदा धिआए ॥ नानक जिसु नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि चरणी चितु लाए ॥ १ ॥ हउ सभि वेस करी पिर कारणि जे हरि प्रभ साचे भावा ॥ सो पिरु पिआरा मै नदरि न देखै हउ किउ करि धीरजु पावा ॥ जिसु कारणि हउ सीगारु सीगारी सो पिरु रता मेरा अवरा ॥ नानक धनु धँनु धँनु सोहागणि जिनि पिरु राविअड़ा सचु सवरा ॥ २ ॥ हउ जाइ पुछा सोहाग सुहागणि तुसी किउ पिरु पाइअड़ा प्रभु मेरा ॥ मै ऊपरि नदरि करी पिरि साचै मै छोडिअड़ा मेरा तेरा ॥ सभु मनु तनु जीउ करहु हरि प्रभ का इतु मारगि भैणे मिलीरे ॥ आपनड़ा प्रभु नदरि करि देखै नानक जोति जोती रलीरे ॥ ३ ॥ जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपना देवा ॥ नित परखा फेरी सेव कमावा तिसु आगै पाणी

दोवां ॥ नित नित सेव करी हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाए ॥ धनु धँनु गुरू गुर सतिगुरू पूरा नानक मनि आस
 पुजाए ॥ ४ ॥ गुरू सजणु मेरा मेलि हरे जितु मिलि हरि नामु धिआवा ॥ गुर सतिगुर पासहु हरि गोसटि पूछां करि सांझी
 हरि गुण गावां ॥ गुण गावा नित नित सद हरि के मनु जीवै नामु सुणि तेरा ॥ नानक जितु वेला विसरै मेरा सुआमी तितु
 वेलै मरि जाइ जीउ मेरा ॥ ५ ॥ हरि वेखण कउ सभु कोई लोचै सो वेखै जिसु आपि विखाले ॥ जिस नो नदरि करे मेरा
 पिआरा सो हरि हरि सदा समाले ॥ सो हरि हरि नामु सदा सदा समाले जिसु सतगुरू पूरा मेरा मिलिआ ॥ नानक हरि जन
 हरि इके होए हरि जपि हरि सेती रलिआ ॥ ६ ॥ १ ॥ ३ ॥

वडहँसु महला ५ वरु १ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

अति ऊचा ता का दरबारा ॥ अँतु नाही किछु पारावारा ॥ कोटि कोटि लख धावै ॥ इकु तिलु ता का महलु न पावै ॥ १ ॥
 सुहावी कउणु सु वेला जितु प्रभ मेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाख भगत जा कउ आराधहि ॥ लाख तपीसर तपु ही साधहि ॥
 लाख जोगीसर करते जोगा ॥ लाख भोगीसर भोगहि भोगा ॥ २ ॥ घटि घटि वसहि जाणहि थोरा ॥ है कोई साजणु
 परदा तोरा ॥ कउ जतन जे होइ मिहरवाना ॥ ता कउ देई जीउ कुरबाना ॥ ३ ॥ फिरत फिरत संतन पहि आइआ ॥
 दूख भ्रमु हमारा सगल मिटाइआ ॥ महलि बुलाइआ प्रभ अँमितु भूँचा ॥ कहु नानक प्रभु मेरा ऊचा ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहँसु
 महला ५ ॥ धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ १ ॥ जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे ॥ मनु
 जीवै प्रभ नामु चितेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु मँत्रु तुमारा अँमित बाणी ॥ सीतल पुरख दिसटि सुजाणी ॥ २ ॥ सचु हुकमु
 तुमारा तखति निवासी ॥ आइ न जावै मेरा प्रभु अबिनासी ॥ ३ ॥ तुम मिहरवान दास हम दीना ॥ नानक साहिबु भरपुरि
 लीणा ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहँसु महला ५ ॥ तू बेअँतु को विरला जाणै ॥ गुर प्रसादि को सबदि पछाणै ॥ १ ॥ सेवक की

अरदासि पिआरे ॥ जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख मेरे प्रभ दाते ॥ जिसहि जनावहु तिनहि
 तुम जाते ॥ २ ॥ सदा सदा जाई बलिहारी ॥ इत उत देखउ ओट तुमारी ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण गुणु किछु न जाता ॥
 नानक साधू देखि मनु राता ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहँसु मः ५ ॥ अंतरजामी सो प्रभु पूरा ॥ दानु देइ साधू की धूरा ॥ १ ॥ करि
 किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ तेरी ओट पूरन गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरे ॥ निकटि वसै
 नाही प्रभु दूरे ॥ २ ॥ जिस नो नदरि करे सो धिआए ॥ आठ पहर हरि के गुण गाए ॥ ३ ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥
 सरनि परिओ नानक हरि दुआरे ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहँसु महला ५ ॥ तू वड दाता अंतरजामी ॥ सभ महि रविआ पूरन प्रभ
 सुआमी ॥ १ ॥ मेरे प्रभ प्रीतम नामु अधारा ॥ हउ सुणि सुणि जीवा नामु तुमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी सरणि सतिगुरु
 मेरे पूरे ॥ मनु निरमलु होइ संता धूरे ॥ २ ॥ चरन कमल हिरदै उरि धारे ॥ तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे ॥ ३ ॥ करि
 किरपा तेरे गुण गावा ॥ नानक नामु जपत सुखु पावा ॥ ४ ॥ ५ ॥ वडहँसु महला ५ ॥ साध संगि हरि अँमितु पीजै ॥
 ना जीउ मरै न कबहू छीजै ॥ १ ॥ वडभागी गुरु पूरा पाईए ॥ गुरु किरपा ते प्रभू धिआईए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन जवाहर
 हरि माणक लाला ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए निहाला ॥ २ ॥ जत कत पेखउ साधू सरणा ॥ हरि गुण गाइ निरमल मनु
 करणा ॥ ३ ॥ घट घट अंतरि मेरा सुआमी वूठा ॥ नानक नामु पाइआ प्रभु तूठा ॥ ४ ॥ ६ ॥ वडहँसु महला ५ ॥
 विसरु नाही प्रभ दीन दइआला ॥ तेरी सरणि पूरन किरपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह चिति आवहि सो थानु सुहावा ॥
 जितु वेला विसरहि ता लागै हावा ॥ १ ॥ तेरे जीअ तू सद ही साथी ॥ संसार सागर ते कढु दे हाथी ॥ २ ॥ आवणु
 जाणा तुम ही कीआ ॥ जिसु तू राखहि तिसु दूखु न थीआ ॥ ३ ॥ तू एको साहिबु अवरु न होरि ॥ बिनउ करै नानकु कर
 जोरि ॥ ४ ॥ ७ ॥ वडहँसु मः ५ ॥ तू जाणाइहि ता कोई जाणै ॥ तेरा दीआ नामु वखाणै ॥ १ ॥ तू अचरजु कुदरति

तेरी बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु आपे कारणु आपे करणा ॥ हुकमे जँमणु हुकमे मरणा ॥ २ ॥ नामु तेरा मन तन आधारी ॥
नानक दासु बखसीस तुमारी ॥ ३ ॥ ८ ॥

वडहँसु महला ७ घरु २ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै अंतरि लोचा मिलण की पिआरे हउ किउ पाई गुर पूरे ॥ जो सउ खेल खेलाईरे बालकु रहि न सकै बिनु खीरे ॥ मेरै अंतरि भुख
न उतरै अँमाली जे सउ भोजन मै नीरे ॥ मेरै मनि तनि प्रमु पिरँम का बिनु दरसन किउ मनु धीरे ॥ १ ॥ सुणि सजण मेरे प्रीतम
भाई ॥ मै मेलिहु मित्रु सुखदाता ॥ ओहु जीअ की मेरी सभ बेदन जाणै नित सुणावै हरि कीआ बाता ॥ हउ इकु खिनु तिसु बिनु
रहि न सका जिउ चात्रिकु जल कउ बिललाता ॥ हउ किआ गुण तेरे सारि समाली मै निरगुण कउ रखि लेता ॥ २ ॥ हउ भई
उडीणी कंत कउ अँमाली सो पिरु कदि नैणी देखा ॥ सभि रस भोगण विसरे बिनु पिर कितै न लेखा ॥ इहु कापडु तनि न
सुखावई करि न सकउ हउ वेसा ॥ जिनी सखी लालु राविआ पिआरा तिन आगै हम आदेसा ॥ ३ ॥ मै सभि सीगार बणाइआ
अँमाली बिनु पिर कामि न आए ॥ जा सहि बात न पूछीआ अँमाली ता बिरथा जोबनु सभु जाए ॥ धनु धनु ते सोहागणी अँमाली
जिन सहु रहिआ समाए ॥ हउ वारिआ तिन सोहागणी अँमाली तिन के धोवा सद पाए ॥ ४ ॥ जिचरु दूजा भरमु सा अँमाली
तिचरु मै जाणिआ प्रभु दूरे ॥ जा मिलिआ पूरा सतिगुरू अँमाली ता आसा मनसा सभ पूरे ॥ मै सरब सुखा सुख पाइआ
अँमाली पिरु सरब रहिआ भरपूरे ॥ जन नानक हरि रँगु माणिआ अँमाली गुर सतिगुर कै लागि पँरे ॥ ५ ॥ १ ॥ ९ ॥

वडहँसु महला ३ असटपदीआ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ॥ अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग हमारा ॥ १ ॥ मन मेरे साचे नाम विटहु
बलि जाउ ॥ दासनि दास होइ रहहि ता पावहि सचा नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइ ॥ बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ ॥ २ ॥ सचु खेती सचु
 बीजणा साचा वापारा ॥ अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा ॥ ३ ॥ सचु खाणा सचु पैणणा सचु टेक हरि नाउ
 ॥ जिस नो बखसे तिसु मिलै महली पाए थाउ ॥ ४ ॥ आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ॥ गुरुमुखि दरि साचै
 सचिआर हहि साचे माहि समाहि ॥ ५ ॥ अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइ ॥ सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुरु
 बलिहारै जाउ ॥ ६ ॥ सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु ॥ सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥ ७ ॥
 नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ ॥ जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ मनूआ
 दह दिस धावदा ओहु कैसे हरि गुण गावै ॥ इंढी विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित सँतावै ॥ १ ॥ वाहु वाहु सहजे गुण
 रवीजै ॥ राम नामु इसु जुग महि दुलभु है गुरुमति हरि रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण
 गावै ॥ गुरुमती आपै आपु पछाणै ता निज घरि वासा पावै ॥ २ ॥ ए मन मेरे सदा रँगि राते सदा हरि के गुण गाउ ॥ हरि
 निरमलु सदा सुखदाता मनि चिँदिआ फलु पाउ ॥ ३ ॥ हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई ॥ पाथरु डुबदा काढि लीआ
 साची वडिआई ॥ ४ ॥ बिखु से अमित भए गुरुमति बुधि पाई ॥ अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई ॥ ५ ॥ माणस
 जनमु दुलँभु है जग महि खटिआ आइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरि नामु धिआइ ॥ ६ ॥ मनमुख भूले बिखु लगे अहिला
 जनमु गवाइआ ॥ हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइआ ॥ ७ ॥ मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै
 वसाइआ ॥ नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ ॥ ८ ॥ २ ॥

वडहँसु महला १ अँत १४ सतिगुरु प्रसादि ॥

काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईरे ॥ नाता सो परवाणु सचु कमाईरे ॥

जब साच अँदरिं होइ साचा तामि साचा पाईरे ॥ लिखे बाइहु सुरति नाही बोलिं बोलिं गवाईरे ॥ जिथै जाइ बहीरे भला
कहीरे सुरति सबदु लिखाईरे ॥ काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईरे ॥ १ ॥ तामै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ अँमितु
हरि का नामु मैरै मनि भाइआ ॥ नामु मीठा मनहि लागा दूखि डेरा ढाहिआ ॥ सूखु मन महि आइ वसिआ जामि तै
फुरमाइआ ॥ नदरि तुधु अरदासि मेरी जिनि आपु उपाइआ ॥ तामै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ २ ॥ वारी खसमु
कढाए किरतु कमावणा ॥ मँदा किसै न आखिं झगड़ा पावणा ॥ नह पाइ झगड़ा सुआमि सेती आपि आपु वजावणा ॥
जिसु नालिं सँगति करिं सरीकी जाइ किआ रूआवणा ॥ जो देइ सहणा मनहि कहणा आखिं नाही वावणा ॥ वारी खसमु
कढाए किरतु कमावणा ॥ ३ ॥ सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ कउड़ा कोइ न मागै मीठा सभ मागै ॥ सभु कोइ
मीठा मँगि देखै खसम भावै सो करे ॥ किछु पुँन दान अनेक करणी नामि तुलिं न समसरे ॥ नानका जिनि नामु मिलिआ
करमु होआ धुरिं कदे ॥ सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहँसु महला १ ॥ करहु दइआ तेरा नामु
वखाणा ॥ सभ उपाईरे आपि आपे सरब समाणा ॥ सरबे समाणा आपि तूहै उपाइ धँधै लाईआ ॥ इकि तुझ ही कीए राजे
इकना भिख भवाईआ ॥ लोभु मोहु तुझु कीआ मीठा एतु भरमि भुलाणा ॥ सदा दइआ करहु अपणी तामि नामु वखाणा ॥
१ ॥ नामु तेरा है साचा सदा मै मनि भाणा ॥ दूखु गइआ सुखु आइ समाणा ॥ गावनि सुरिं नर सुघड़ सुजाणा ॥ सुरिं नर
सुघड़ सुजाण गावहि जो तेरै मनि भावहे ॥ माइआ मोहे चेतहि नाही अहिला जनमु गवावहे ॥ इकि मूड़ मुगध न चेतहि मूले
जो आइआ तिसु जाणा ॥ नामु तेरा सदा साचा सोइ मै मनि भाणा ॥ २ ॥ तेरा वखतु सुहावा अँमितु तेरी बाणी ॥ सेवक
सेवहि भाउ करिं लागा साउ पराणी ॥ साउ प्राणी तिना लागा जिनी अँमितु पाइआ ॥ नामि तेरै जोइ राते नित चड़हि
सवाइआ ॥ इकु करमु धरमु न होइ सँजमु जामि न एकु पछाणी ॥ वखतु सुहावा सदा तेरा अँमित तेरी बाणी ॥ ३ ॥

हउ बलिहारी साचे नावै ॥ राजु तेरा कबहु न जावै ॥ राजो त तेरा सदा निहचलु एहु कबहु न जावए ॥ चाकरु त तेरा सोइ
 होवै जोइ सहजि समावए ॥ दुसमनु त दूखु न लगै मूले पापु नेड़ि न आवए ॥ हउ बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ॥ ४
 ॥ जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ कीरति करहि सुआमी तेरै दुआरे ॥ जपहि त साचा एकु मुरारे ॥ साचा मुरारे तामि जापहि
 जामि माँनि वसावहे ॥ भरमो भुलावा तुझहि कीआ जामि एहु चुकावहे ॥ गुर परसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे ॥ जुगह
 जुगंतरि भगत तुमारे ॥ ५ ॥ वडे मेरे साहिबा अलख अपारा ॥ किउ करि करउ बेनँती हउ आखि न जाणा ॥ नदरि करहि
 ता साचु पछाणा ॥ साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे ॥ दूख भूख संसारि कीऐ सहसा एहु चुकावहे ॥ बिनवँति
 नानकु जाइ सहसा बुझै गुर बीचारा ॥ वडा साहिबु है आपि अलख अपारा ॥ ६ ॥ तेरे बँके लोइण दँत रीसाला ॥ सोहणे
 नक जिन लँमडे वाला ॥ कँचन काइआ सुइने की ढाला ॥ सोवँन ढाला क्रिसन माला जपहु तुसी सहेलीहो ॥ जम दुआरि न
 होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो ॥ हँस हँसा बग बगा लहै मन की जाला ॥ बँके लोइण दँत रीसाला ॥ ७ ॥ तेरी चाल
 सुहावी मधुराडी बाणी ॥ कुहकनि कोकिला तरल जुआणी ॥ तरला जुआणी आपि भाणी इछ मन की पूरीए ॥ सारँग जिउ
 पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु सँधूरए ॥ श्रीरँग राती फिरै माती उदकु गँगा वाणी ॥ बिनवँति नानकु दासु हरि का तेरी चाल
 सुहावी मधुराडी बाणी ॥ ८ ॥ २ ॥

वडहँसु महला ३ छँत १४ सतिगुर प्रसादि ॥

आपणे पिर कै रँगि मुईए सोभावँती नारे ॥ सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे ॥ सचे भाइ पिआरी कँति
 सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइआ ॥ आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि समाइआ ॥ साधन सबदि सुहाई प्रेम
 कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥ नानक साधन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥ १ ॥ निरगुणवँतड़ीए पिरु देखि

हदूरे राम ॥ गुरुमुखि जिनी राविआ मुईए पिरु रवि रहिआ भरपूरे राम ॥ पिरु रवि रहिआ भरपूरे वेखु हजुरे जुगि जुगि
एको जाता ॥ धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिआ करम बिधाता ॥ जिनि हरि रसु चाखिआ सबदि सुभाखिआ
हरि सरि रही भरपूरे ॥ नानक कामणि सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे ॥ २ ॥ सोहागणी जाइ पूछहु मुईए जिनी विचहु आपु
गवाइआ ॥ पिर का हुकमु न पाइओ मुईए जिनी विचहु आपु न गवाइआ ॥ जिनी आपु गवाइआ तिनी पिरु पाइआ रँग
सिउ रलीआ माणै ॥ सदा रँगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणै ॥ कामणि वडभागी अंतरि लिव लागी हरि का
प्रेमु सुभाइआ ॥ नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइआ ॥ ३ ॥ हउमै मारि मुईए तू चलु गुर कै भाए ॥
हरि वरु रावहि सदा मुईए निज घरि वासा पाए ॥ निज घरि वासा पाए सबदु वजाए सदा सुहागणि नारी ॥ पिरु
रलीआला जोबनु बाला अनदिनु कँति सवारी ॥ हरि वरु सोहागो मसतकि भागो सचै सबदि सुहाए ॥ नानक कामणि
हरि रँगि राती जा चलै सतिगुर भाए ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ गुरुमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम
॥ अनदिनु नामु वखाणीए लाहा हरि रसु पीजै राम ॥ लाहा हरि रसु लीजै हरि रावीजै अनदिनु नामु वखाणै ॥ गुण
संग्रहि अवगण विकणहि आपै आपु पछाणै ॥ गुरुमति पाई वडी वडिआई सचै सबदि रसु पीजै ॥ नानक हरि की भगति
निराली गुरुमुखि विरलै कीजै ॥ १ ॥ गुरुमुखि खेती हरि अंतरि बीजीए हरि लीजै सरीरि जमाए राम ॥ आपणे घर अंदरि
रसु भुँचु तू लाहा लै परथाए राम ॥ लाहा परथाए हरि मँनि वसाए धनु खेती वापारा ॥ हरि नामु धिआए मँनि वसाए बूझै
गुर बीचारा ॥ मनमुख खेती वणजु करि थाके त्रिसना भुख न जाए ॥ नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए
॥ २ ॥ हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो राम ॥ गुरुमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो
राम ॥ मुखि मसतकि भगो सचि बैरागो साचि रते वीचारी ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना सबदे हउमै मारी ॥

साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि नामु सोहागो ॥ नानक सबदि मिलै भउ भँजनु हरि रावै मसतकि भागो ॥ ३ ॥
 खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मँनि वडिआई राम ॥ गुरमती हुकमु बूझीरे हुकमे मेलिं मिलीआई राम ॥ हुकमिं मिलीआई
 सहजिं समाई गुर का सबदु अपारा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ॥ भउ भँजनु पाइआ आपु गवाइआ
 गुरमुखिं मेलिं मिलीआई ॥ कहु नानक नामु निरँजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहँसु महला ३ ॥
 मन मेरिआ तु सदा सचु समालिं जीउ ॥ आपणै घरिं तू सुखि वसहिं पोहिं न सकै जमकालु जीउ ॥ कालु जालु जमु जोहिं
 न साकै साचै सबदि लिव लाए ॥ सदा सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए ॥ दूजै भाइ भरमि विगुती मनमुखिं मोही
 जमकालिं ॥ कहै नानकु सुणिं मन मेरे तु सदा सचु समालिं ॥ १ ॥ मन मेरिआ अँतरिं तेरै निधानु है बाहरि वसतु न भालिं
 ॥ जो भावै सो भँचि तू गुरमुखिं नदरिं निहालिं ॥ गुरमुखिं नदरिं निहालिं मन मेरे अँतरिं हरिं नामु सखाई ॥ मनमुख
 अँधुले गिआन विहूणे दूजै भाइ खुआई ॥ बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालिं ॥ नानक अँतरिं तेरै निधानु है तू
 बाहरि वसतु न भालिं ॥ २ ॥ मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइ कै इकि सचि लगे वापारा ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा अँतरिं
 सबदु अपारा ॥ अँतरिं सबदु अपारा हरिं नामु पिआरा नामे नउ निधि पाई ॥ मनमुख माइआ मोह विआपे दूखिं सँतापे
 दूजै पति गवाई ॥ हउमै मारिं सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकारि ॥ नानक माणस जनमु दुलँभु है सतिगुरिं बूझ बुझाई
 ॥ ३ ॥ मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम ॥ जो मनु मारहिं आपणा से पुरख बैरागी राम ॥ से जन
 बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ ॥ मति निहचल अति गूडी गुरमुखिं सहजे नामु वखाणिआ ॥ इक
 कामणिं हितकारी माइआ मोहिं पिआरी मनमुख सोइ रहे अभागे ॥ नानक सहजे सेवहिं गुरु अपणा से पूरे वडभागे ॥ ४
 ॥ २ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ रतन पदारथ वणजीअहिं सतिगुरिं दीआ बुझाई राम ॥ लाहा लाभु हरिं

भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥ गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे ॥ बिनु भगती सुखु न
 होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे ॥ वखरु नामु सदा लाभु है जिस नो एतु वापारि लाए ॥ रतन पदारथ वणजीअहि
 जां सतिगुरु देइ बुझाए ॥ १ ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा राम ॥ कूडु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि
 विकारा राम ॥ बहु वधहि विकारा सहसा इहु संसारा बिनु नावै पति खोई ॥ पड़ि पड़ि पँडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न
 होई ॥ आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा ॥ २ ॥ खोटे खरे सभिं
 परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ॥ खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम ॥ ऊभे करनि पुकारा मुगअ गवारा
 मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ ॥ मनमुख सँता नालि वैरु करि
 दुखु खटे संसारा ॥ खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरवारा राम ॥ ३ ॥ आपि करे किसु आखीरे होरु करणा किछु न जाई
 राम ॥ जितु भावै तितु लाइसी जिउ तिस दी वडिआई राम ॥ जिउ तिस दी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई ॥
 जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे सोई ॥ गुर परसादी आपु गवाईरे नानक नामि पति पाई ॥ आपि करे किसु
 आखीरे होरु करणा किछु न जाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहँसु महला ३ ॥ सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥ गुरमती
 हरि नामु वणजीरे अति मोलु अफारा राम ॥ अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥ अंतरि बाहरि
 भगती राते सचि नामि लिव लागी ॥ नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा ॥ नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ
 साचै के वापारा ॥ १ ॥ हँउमै माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै राम ॥ गुरमती मनु निरमला रसना हरि रसु पीजै राम ॥
 रसना हरि रसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि बीचारी ॥ अंतरि खूहटा अँमिति भरिआ सबदे काढि पीरे पनिहारी ॥ जिसु
 नदरि करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै ॥ नानक नामि रते से निरमल होर हउमै मैलु भरीजै ॥ २ ॥ पँडित

जोतकी सभि पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम ॥ माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम ॥
माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुखु पाई ॥ बिखु का खीड़ा बिखु सिउ लागा बिस्टा माहि समाई ॥ जो
धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा ॥ नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि मुए गावारा ॥ ३
॥ माइआ मोहि मनु रंगिआ मोहि सुधि न काई राम ॥ गुरमुखि इहु मनु रंगीरे दूजा रंगु जाई राम ॥ दूजा रंगु जाई साचि
समाई सचि भरे भंडारा ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा ॥ आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछु न जाए ॥
नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ ए मन मेरिआ आवा गउणु
संसारु है अँति सचि निबेड़ा राम ॥ आपे सचा बखसि लए फिरि होइ न फेरा राम ॥ फिरि होइ न फेरा अँति सचि निबेड़ा
गुरमुखि मिलै वडिआई ॥ साचै रंगि रते सहजे माते सहजे रहे समाई ॥ सचा मनि भाइआ सचु वसाइआ सबदि रते अँति
निबेरा ॥ नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ॥ १ ॥ माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम
॥ माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम ॥ हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई ॥ जिनि खिसटि साजी सो करि
वेखै तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ मनमुखि अँधा तपि तपि खपै बिनु सबदै सांति न आई ॥ नानक बिनु नावै सभु कोई
भुला माइआ मोहि खुआई ॥ २ ॥ एहु जगु जलता देखि कै भजि पए हरि सरणाई राम ॥ अरदासि करीं, गुर पूरे आगै रखि
लेवहु देहु वडाई राम ॥ रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता ॥ सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि
एको जाता ॥ जतु सतु संजमु करम कमावै बिनु गुर गति नही पाई ॥ नानक तिस नो सबदु बुझाए जो जाइ पवै हरि
सरणाई ॥ ३ ॥ जो हरि मति देइ सा ऊपजै होर मति न काई राम ॥ अंतरि बाहरि एकु तू आपे देहि बुझाई राम ॥ आपे देहि
बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ ॥ दरि साचै सदा है साचा साचै सबदि सुभाखिआ ॥ घर माहि

निज घरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई ॥ नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनि मति परवाणु सचुसाई ॥ ४ ॥ ६ ॥

वडहँसु महला ४ छँत १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ॥ हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मनि वसाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरै मनि वसाई
सभि दूख विसारणहारा ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु सतिगुरु हमार ॥ ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु
सेविये सांति पाई ॥ मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ॥ १ ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम ॥ हरि
नामो हरि नामु द्विड़ाए जपि हरि हरि नामु विगसे राम ॥ जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवँ निधि पाई ॥
हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई ॥ हरि नामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर देव मनु परसे ॥
हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥ २ ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम ॥ हउ मनु तनु
हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ॥ हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाए ॥ मेरै मनि बैरागु
भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाए ॥ हरि हरि क्रिपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥ कोई आणि
कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा ॥ ३ ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई राम ॥ हरि दानो हरि दानु देवै
हरि पुरखु निरँजनु सोई राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिया तिन का दुखु भरमु भउ भागा ॥ सेवक भाइ मिले
वडभागी जिन गुर चरनी मनु लागा ॥ कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई ॥ गुर जेवडु गुर
जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहँसु महला ४ ॥ हँउ गुर बिनु हँउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥
जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥ सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ ॥

जिसु कारणि हँउ ढँढि ढूढेदी सो सजणु हरि घरि पाइआ ॥ एक द्विस्टि हरि एको जाता हरि आतम रामु पछाणी ॥ हँउ
 गुर बिनु हँउ गुर बिनु खरी निमाणी ॥ १ ॥ जिना सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए राम ॥
 तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम ॥ हरि हरि चरण सरेवह तिन के जिन सतिगुरु पुरखु प्रभु
 ध्याइआ ॥ तू वड दाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ ॥ गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी अनदिनु राम गुण गाए
 ॥ जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए ॥ २ ॥ हँउ वारी हँउ वारी गुरसिख मीत पिआरे
 राम ॥ हरि नामो हरि नामु सुणाए मेरा प्रीतमु नामु अधारे राम ॥ हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख
 नही जीवां ॥ हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि अँमितु पीवां ॥ हरि आपे सरधा लाइ मिलाए हरि आपे आपि सवारे
 ॥ हँउ वारी हँउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥ ३ ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरँजनु सोई राम ॥ हरि आपे हरि आपे
 मेलै करै सो होई राम ॥ जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई ॥ बहुतु सिआणप लइआ न जाई करि थाके
 सभिं चतुराई ॥ गुर प्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरँजनु सोई
 ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहँसु महला ४ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ राम ॥ तिमर
 अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अँजनु गुरि पाइआ राम ॥ गुर गिआन अँजनु सतिगुरु पाइआ अगिआन अँधेर
 बिनासे ॥ सतिगुर सेवि परम पदु पाइआ हरि जपिआ सास गिरासे ॥ जिन कँउ हरि प्रभिं किरपा धारी ते सतिगुर सेवा
 लाइआ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ ॥ १ ॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा
 मै गुर बिनु रहणु न जाई राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अँति सखाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरा अँति सखाई गुरि
 सतिगुरि नामु द्विडाइआ ॥ जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइआ ॥ धनु धनु सतिगुरु

पुरखु निरँजनु जितु मिलि हरि नामु धिआई ॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥ २ ॥
 जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ राम ॥ तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु ब्रिथा गवाइआ राम
 ॥ निहफलु जनमु तिन ब्रिथा गवाइआ ते साकत मुए मरि झूरे ॥ घरि होदैं रतनि पदारथि भूखे भागहीण हरि दूरे ॥ हरि
 हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ
 ॥ ३ ॥ हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनँती राम ॥ गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती
 राम ॥ हरि हरि सतिगुर करह भगती जां हरि प्रभु किरपा धारे ॥ मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण
 हमूहरे ॥ कहु नानक गुरि नामु द्विडाइआ हरि हरि नामु हरि सती ॥ हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनँती ॥
 ४ ॥ ३ ॥ वडहँसु महला ४ ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुखदाता राम ॥ हम पूछह हम पूछह
 सतिगुर पासि हरि बाता राम ॥ सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ ॥ पाइ लगह नित करह
 बिनँती गुरि सतिगुरि पँथु बताइआ ॥ सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि हरि नामि हरि राता ॥ हरि किरपा हरि
 किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ॥ १ ॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे हँउमै पापा राम ॥
 जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअडे जगि तापा राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिया तिन के दुख पाप निवारे
 ॥ सतिगुरि गिआन खडगु हथि दीना जमकँकर मारि बिदारे ॥ हरि प्रभि क्रिपा धारी सुखदाते दुख लाथे पाप सँतापा
 ॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे हँउमै पापा ॥ २ ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ
 राम ॥ मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम ॥ गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ अरोगत भए
 सरीरा ॥ अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर गँभीरा ॥ जाति अजाति नामु जिन धिआइआ

तिन परम पदारथु पाइआ ॥ जपि हरि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ ॥ ३ ॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ हम पापी हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे राम ॥ हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे हरि दैआल सरणाइआ ॥ तू दुख भँजनु सरब सुखदाता हम पाथर तरे तराइआ ॥ सतिगुर भेटि राम रसु पाइआ जन नानक नामि उधारे ॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ ४ ॥ ४ ॥

वडहँसु महला ४ घोड़ीआ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

देह तेजणि जी रामि उपाइआ राम ॥ धँनु माणस जनम पुँनि पाईआ राम ॥ माणस जनमु वड पुँने पाइआ देहु सु कँचन चँगड़ीआ ॥ गुरमुखि रँगु चलूला पावै हरि हरि हरि नव रँगड़ीआ ॥ एह देह सु बांकी जितु हरि जापी हरि हरि नामि सुहावीआ ॥ वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥ १ ॥ देह पावउ जीनु बुझि चँगा राम ॥ चडि लँघा जी बिखमु भुइअँगा राम ॥ बिखमु भुइअँगा अनत तरँगा गुरमुखि पारि लँघाए ॥ हरि बोहिथि चडि वडभागी लँघै गुरु खेवटु सबदि तराए ॥ अनदिनु हरि रँगि हरि गुण गावै हरि रँगी हरि रँगा ॥ जन नानक निरबाण पदु पाइआ हरि उतमु हरि पदु चँगा ॥ २ ॥ कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु द्विडाइआ राम ॥ तनि प्रेम हरि चाबकु लाइआ राम ॥ तनि प्रेम हरि हरि लाइ चाबकु मन जिणै गुरमुखि जीतिआ ॥ अघडो घडावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ ॥ सुणि श्रवण बाणी गुरि वखाणी हरि रँगु तुरी चडाइआ ॥ महा मारगु पँथु बिखडा जन नानक पारि लँघाइआ ॥ ३ ॥ घोड़ी तेजणि देह रामि उपाइआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धनु धँनु तुखाईआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धँनु साबासै धुरि पाइआ किरतु जुडँदा ॥ चडि देहडि घोड़ी बिखमु लघाए मिलु गुरमुखि परमानँदा ॥ हरि हरि काजु रचाइआ पूरै मिलि संत जना जँन आई ॥ जन नानक हरि वरु पाइआ मँगलु मिलि संत जना वाधाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

वडहँसु महला ४ ॥ देह तेजनड़ी हरि नव रँगीआ राम ॥ गुर गिआनु गुरू हरि मँगीआ राम ॥ गिआन मँगी हरि कथा
 चँगी हरि नामु गति मिति जाणीआ ॥ सभु जनमु सफलित कीआ करतै हरि राम नामि वखाणीआ ॥ हरि राम नामु
 सलाहि हरि प्रभ हरि भगति हरि जन मँगीआ ॥ जनु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि भगति गोविंद चँगीआ ॥ १ ॥ देह
 कँचन जीनु सुविना राम ॥ जड़ि हरि हरि नामु रतँना राम ॥ जड़ि नाम रतनु गोविंद पाइआ हरि मिले हरि गुण सुख घणे
 ॥ गुर सबदु पाइआ हरि नामु धिआइआ वडभागी हरि रँग हरि बणे ॥ हरि मिले सुआमी अंतरजामी हरि नवतन हरि नव
 रँगीआ ॥ नानकु वखाणै नामु जाणै हरि नामु हरि प्रभ मँगीआ ॥ २ ॥ कड़ीआलु मुखे गुरि अँकसु पाइआ राम ॥ मनु
 मैगलु गुर सबदि वसि आइआ राम ॥ मनु वसगति आइआ परम पदु पाइआ साधन कँति पिआरी ॥ अंतरि प्रेमु लगा
 हरि सेती घरि सोहै हरि प्रभ नारी ॥ हरि रँगे राती सहजे माती हरि प्रभु हरि हरि पाइआ ॥ नानक जनु हरि दासु कहतु है
 वडभागी हरि हरि धिआइआ ॥ ३ ॥ देह घोड़ी जी जितु हरि पाइआ राम ॥ मिलि सतिगुर जी मँगलु गाइआ राम ॥
 हरि गाइ मँगलु राम नामा हरि सेव सेवक सेवकी ॥ प्रभ जाइ पावै रँग महली हरि रँगु माणै रँग की ॥ गुण राम गाए मनि
 सुभाए हरि गुरमती मनि धिआइआ ॥ जन नानक हरि किरपा धारी देह घोड़ी चड़ि हरि पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

रागु वडहँसु महला ५ छँत घरु ४ १रि सतिगुर प्रसादि ॥

गुर मिलि लधा जी रामु पिआरा राम ॥ इहु तनु मनु दितड़ा वारो वारा राम ॥ तनु मनु दिता भवजलु जिता चूकी कांणि
 जमाणी ॥ असथिरु थीआ अँमितु पीआ रहिआ आवण जाणी ॥ सो घरु लधा सहजि समधा हरि का नामु अधारा ॥
 कहु नानक सुखि माणे रलीआं गुर पूरे कँउ नसमकारा ॥ १ ॥ सुणि सजण जी मैडडे मीता राम ॥ गुरि मँत्रु सबदु सचु
 दीता राम ॥ सचु सबदु धिआइआ मँगलु गाइआ चूके मनहु अदेसा ॥ सो प्रभु पाइआ कताहि न जाइआ सदा

सदा सँगि बैसा ॥ प्रभ जी भाणा सचा माणा प्रभि हरि धनु सहजे दीता ॥ कहु नानक तिसु जन बलिहारी तेरा दानु सभनी
 है लीता ॥ २ ॥ तउ भाणा तां त्रिपति अघाए राम ॥ मन थीआ ठँढा सभ त्रिसन बुझाए राम ॥ मनु थीआ ठँढा चूकी डँझा
 पाइआ बहुतु खजाना ॥ सिख सेवक सभि भुँचण लगे हँउ सतगुर कै कुरबाना ॥ निरभउ भए खसम रँगि राते जम की
 त्रास बुझाए ॥ नानक दासु सदा सँगि सेवकु तेरी भगति करँउ लिव लाए ॥ ३ ॥ पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥ मोहि
 निरगुण जीउ सभि गुण तेरे राम ॥ सभि गुण तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही ॥ गुणु अवगुणु मेरा किछु न
 बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही ॥ नउ निधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥ कहु नानक मै वरु घरि पाइआ मेरे
 लाथे जी सगल विसूरे ॥ ४ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ किआ सुणेदो कूडु वँजनि पवण झुलारिआ ॥ नानक सुणीअर ते परवाणु
 जो सुणेदे सचु धणी ॥ १ ॥ छँतु ॥ तिन घोलि घुमाई जिन प्रभु खवणी सुणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले जिन हरि हरि
 रसना भाणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आए ॥ भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पारि लघाए
 ॥ जिन कँउ क्रिपा करी मेरे ठाकुरि तिन का लेखा न गणिआ ॥ कहु नानक तिसु घोलि घुमाई जिनि प्रभु खवणी सुणिआ
 ॥ सलोकु ॥ लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥ नानक से अखड़ीआं बिअँनि जिनी डिसँदो मा पिरि ॥ १ ॥
 छँतु ॥ जिनी हरि प्रभु डिठा तिन कुरबाणे राम ॥ से साची दरगह भाणे राम ॥ ठाकुरि माने से परधाने हरि सेती रँगि राते
 ॥ हरि रसहि अघाए सहजि समाए घटि घटि रमईआ जाते ॥ सेई सजण सँत से सुखीए ठाकुर अपणे भाणे ॥ कहु नानक
 जिनि हरि प्रभु डिठा तिन कै सद कुरबाणे ॥ २ ॥ सलोकु ॥ देह अंधारी अंध सुँजी नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जनमु
 जै घटि वुठा सचु धणी ॥ १ ॥ छँतु ॥ तिन खँनीए वँजां जिन मेरा हरि प्रभु डीठा राम ॥ जन चाखि अघाणे हरि हरि
 अँमितु मीठा राम ॥ हरि मनहि मीठा प्रभू तूठा अमिउ वूठा सुख भए ॥ दुख नास भरम बिनास तन ते जपि जगदीस

ईसह जै जए ॥ मोह रहत बिकार थाके पंच ते सँगु तूटा ॥ कहु नानक तिन खँनीऐ वँजा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥ ३ ॥
सलोकु ॥ जो लोड़ीदे राम सेवक सेई कांढिआ ॥ नानक जाणे सति साई सँत न बाहरा ॥ १ ॥ छँतु ॥ मिलिं जलु जलहि
खटाना राम ॥ सँगि जोती जोति मिलाना राम ॥ सँमाइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीऐ ॥ तह सुँनि सहजिं समाधि
लागी एकु एकु वखाणीऐ ॥ आपि गुपता आपि मुक्ता आपि आपु वखाना ॥ नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलिं जलु जलहि
खटाना ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहँसु महला ५ ॥ प्रभ करण कारण समरथा राम ॥ रखु जगतु सगल दे हथा राम ॥ समरथ सरणा
जोगु सुआमी क्रिपा निधि सुखदाता ॥ हँउ कुरबाणी दास तेरे जिनी एकु पछाता ॥ वरनु चिहनु न जाइ लखिआ कथन ते
अकथा ॥ बिनवँति नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥ १ ॥ एहि जीअ तेरे तू करता राम ॥ प्रभ दूख दरद भ्रम
हरता राम ॥ भ्रम दूख दरद निवारिं खिन महि रखि लेहु दीन दैआला ॥ मात पिता सुआमि सजणु सभु जगतु बाल गोपाला ॥
जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता ॥ बिनवँति नानक दासु तेरा सभिं जीअ तेरे तू करता ॥ २ ॥ आठ
पहर हरि धिआईऐ राम ॥ मन इछिअड़ा फलु पाईऐ राम ॥ मन इछ पाईऐ प्रभु धिआईऐ मिटहिं जम के त्रासा ॥ गोबिंदु गाइआ
साध सँगाइआ भई पूरन आसा ॥ तजिं मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईऐ ॥ बिनवँति नानक दिनसुरैणी सदा हरि हरि
धिआईऐ ॥ ३ ॥ दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥ घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥ गोविंद गाजे सदा बिराजे अगम
अगोचरु ऊचा ॥ गुण बेअँत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा ॥ आपि उपाए आपि प्रतिपाले कीअ जँत सभिं साजे ॥
बिनवँति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि अनहत वाजे ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु वडहँस महला १ घरु ५ अलाहणीआ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

धँनु सिरँदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धँधै लाइआ ॥ मुहलति पुनी

पाई भरी जानीअड़ा घति चलाइआ ॥ जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रँने वीर सबार ॥ कांइआ हँस थीआ वेछोड़ा
 जां दिन पुँने मेरी मार ॥ जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ ॥ धँनु सिरँदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धँधै
 लाइआ ॥ १ ॥ साहिबु सिमरहु मेरे भाइहो सभना एहु पइआणा ॥ एथै धँधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा ॥ आगै
 सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै ॥ जितु सेविरे दरगह सुखु पाईरे नामु तिसै का लीजै ॥ आगै हुकमु न चलै मूले
 सिरि सिरि किआ विहाणा ॥ साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥ २ ॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीरे हीलड़ा
 एहु संसारो ॥ जलिं थलिं महीअलिं रवि रहिआ साचड़ा सिरजणहारो ॥ साचा सिरजणहारो अलख अपारो ता का अँतु न
 पाइआ ॥ आइआ तिन का सफलु भइआ है इक मनि जिनी धिआइआ ॥ ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो ॥ जो
 तिसु भावै संम्रथ सो थीरे हीलड़ा एहु संसारो ॥ ३ ॥ नानक रँना बाबा जाणीरे जे रोवै लाइ पिआरो ॥ वालेवे कारणि बाबा
 रोईरे रोवणु सगल बिकारो ॥ रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइआ कारणि रोवै ॥ चंगा मँदा किछु सूझै नाही इहु तनु
 एवै खोवै ॥ ऐथै आइआ सभु को जासी कूड़ि करहु अहँकारो ॥ नानक रँना बाबा जाणीरे जे रोवै लाइ पिआरो ॥ ४ ॥ १ ॥
 वडहँसु महला १ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहां ॥ १ ॥ रोवह बिरहा तन का आपणा साहिबु संम्हाहलेहां ॥
 साहिबु सम्हालिह पँथु निहालिह असा भि ओथै जाणा ॥ जिस का कीआ तिन ही लीआ होआ तिसै का भाणा ॥ जो तिनि
 करि पाइआ सु आगै आइआ असी कि हुकमु करेहा ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहा ॥ १ ॥ मरणु न मँदा लोका
 आखीरे जे कोई मरि जाणै ऐसा कोइ ॥ सेविहु साहिबु संम्रथु आपणा पँथु सुहेला आगै होइ ॥ पँथि सुहेलै जावहु तां फलु
 पावहु आगै मिलै वडाई ॥ भेटै सिउ जावहु सचि समावहु तां पति लेखै पाई ॥ महली जाइ पावहु खसमै भावहु रँग सिउ
 रलीआ माणै ॥ मरणु न मँदा लोका आखीरे जे कोई मरि जाणै ॥ २ ॥ मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो ॥

सूरै सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो ॥ दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै ॥ करि
 एकु धिआवहि तां फलु पावहि जितु सेविरे भउ भागै ॥ ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो ॥ मरणु मुणसां
 सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो ॥ ३ ॥ नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ कीता वेखै साहिबु
 आपणा कुदरति करे बीचारो ॥ कुदरति बीचारे धारण धारे जिनि कीआ सो जाणै ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपे हुकमु पछाणै
 ॥ जिनि किछु कीआ सोई जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ ४ ॥ २ ॥
 वडहंस महला १ दखणी ॥ सचु सिरँदा सचा जाणीऐ सचड़ा परवरदगारो ॥ जिनि आपीनै आपु साजिआ सचड़ा अलख
 अपारो ॥ दुइ पुड़ जोड़ि विछोड़िअनु गुर बिनु घोरु अंधारो ॥ सूरजु चंदु सिरजिअनु अहिनि सि चलतु वीचारो ॥ १ ॥
 सचड़ा साहिबु सचु तू सचड़ा देहि पिआरो ॥ रहाउ ॥ तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो ॥ नारी पुरख सिरजिऐ
 बिखु माइआ मोहु पिआरो ॥ खाणी बाणी तेरीआ देहि जीआ आधारो ॥ कुदरति तरखतु रचाइआ सचि निबेड़णहारो ॥ २
 ॥ आवा गवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥ जँमणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो ॥ भूडडै नामु विसारिआ
 बूडडै किआ तिसु चारो ॥ गुण छोड़ि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ॥ ३ ॥ सदडे आए तिना जानीआ हुकमि सचे
 करतारो ॥ नारी पुरख विछुँनिआ विछुड़िआ मेलणहारो ॥ रूपु न जाणै सोहणीऐ हुकमि बधी सिरि कारो ॥ बालक
 बिरधि न जाणनी तोड़नि हेतु पिआरो ॥ ४ ॥ नउ दर ठाके हुकमि सचै हँसु गइआ गैणारे ॥ साधन छुटी मुठी झूठि
 विधणीआ मिरतकड़ा अँडनडे बारे ॥ सुरति मुई मरु माईए महल रँनी दरबारे ॥ रोवहु कँत महेलीहो सचे के गुण सारे ॥
 ५ ॥ जलिं मलिं जानी नावालिआ कपड़ि पटि अँबारे ॥ वाजे वजे सची बाणीआ पँच मुए मनु मारे ॥ जानी विछुँनडे मेरा
 मरणु भइआ थ्रिगु जीवणु संसारे ॥ जीवतु मरै सु जाणीऐ पिर सचडै हेति पिआरे ॥ ६ ॥ तुसी रोवहु रोवण आईहो झूठि

मुठी संसारे ॥ हउ मुठड़ी धँधै धावणीआ पिरि छोडिअड़ी विधणकारो ॥ घरि घरि कंतु महेलीआ रूडै हेति पिआरे ॥ मै पिरु
 सचु सालाहणा हउ रहसिअड़ी नामि भतारे ॥ ७ ॥ गुर मिलिरे वेसु पलटिआ साधन सचु सीगारो ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो
 सिमरहु सिरजणहारो ॥ बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो ॥ गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ॥ ८ ॥
 ३ ॥ वडहँस महला १ ॥ जिनि जगु सिरजि समाइआ सो साहिबु कुदरति जाणोवा ॥ सचड़ा दूरि न भालीरे घटि घटि सबदु
 पछाणोवा ॥ सचु सबदु पछाणहु दूरि न जाणहु जिनि एह रचना राची ॥ नामु धिआए ता सुखु पाए बिनु नावै पिड़ काची ॥
 जिनि थापी बिधि जाणै सोई किआ को कहै वखाणो ॥ जिनि जगु थापि वताइआ जालो सो साहिबु परवाणो ॥ १ ॥ बाबा
 आइआ है उठि चलणा अध पँधै है संसारोवा ॥ सिरि सिरि सचडै लिखिआ दुखु सुखु पुरबि वीचारोवा ॥ दुखु सुखु दीआ
 जेहा कीआ सो निबहै जीअ नाले ॥ जेहे करम कराए करता दूजी कार न भाले ॥ आपि निरालमु धँधै बाधी करि हुकमु
 छडावणहारो ॥ अजु कलि करदिआ कालु बिआपै दूजै भाइ विकारो ॥ २ ॥ जम मारग पँथु न सुझई उझडु अँध गुबारोवा
 ॥ ना जलु लेफ तुलाईआ ना भोजन परकारोवा ॥ भोजन भाउ न ठँढा पाणी ना कापडु सीगारो ॥ गलि संगलु सिरि मारे
 उभौ ना दीसै घर बारो ॥ इब के राहे जँमनि नाही पछुताणे सिरि भारो ॥ बिनु साचे को बेली नाही साचा एहु बीचारो ॥ ३ ॥
 बाबा रोवहि र्वहि सु जाणीअहि मिलि रोवै गुण सारेवा ॥ रोवै माइआ मुठड़ी धँधड़ा रोवणहारेवा ॥ धँधा रोवै मैलु न धोवै
 सुपनंतरु संसारे ॥ जिउ बाजीगरु भरमै भूलै झूठि मुठी अहँकारो ॥ आपे मारगि पावणहार आपे करम कमाए ॥ नामि
 रते गुरि पूरै राखे नानक सहजि सुभाए ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहँसु महला १ ॥ बाबा आइआ है उठि चलणा इहु जगु झूठु
 पसारोवा ॥ सचा घरु सचडै सेवीरे सचु खरा सचिआरोवा ॥ कूड़ि लबि जां थाइ न पासी अगै लहै न ठाओ ॥ अंतरि आउ
 न बैसहु कहीरे जिउ सुँजै घरि काओ ॥ जँमणु मरणु वडा वेछोड़ा बिनसै जगु सबाए ॥ लबि धँधै माइआ जगतु भुलाइआ

कालु खड़ा रूआए ॥ १ ॥ बाबा आवहु भाईहो गलि मिलह मिलि मिलि देह आसीसा हे ॥ बाबा सचड़ा मेलु न चुकई
 प्रीतम कीआ देह असीसा हे ॥ आसीसा देवहो भगति करेवहो मिलिआ का किआ मेलो ॥ इकि भूले नावहु थेहहु थावहु
 गुर सबदी सचु खेलो ॥ जम मारगि नही जाणा सबदि समाणा जुगि जुगि साचै वेसे ॥ साजन सैण मिलह सँजोगी गुर
 मिलि खोले फासे ॥ २ ॥ बाबा नांगड़ा आइआ जग महि दुखु सुखु लेखु लिखाइआ ॥ लिखिअड़ा साहा ना टलै जेहड़ा
 पुरबि कमाइआ ॥ बहि साचै लिखिआ अँम्रितु बिखिआ कितु लाइआ तितु लागा ॥ कामणिआरी कामण पाए बहु रँगी
 गलि तागा ॥ होछी मति भइआ मनु होछा गुडु सा मखी खाइआ ॥ ना मरजादु आइआ कलि भीतरि नांगो बँधि
 चलाइआ ॥ ३ ॥ बाबा रोवहु जे किसै रोवणा जानीअड़ा बँधि पठाइआ है ॥ लिखिअड़ा लेखु न मेटीऐ दरि हाकारड़ा
 आइआ है ॥ हाकारा आइआ जा तिसु भाइआ रँने रोवणहारे ॥ पुत भाई भातीजे रोवहि प्रीतम अति पिआरे ॥ भै रोवै
 गुण सारि समाले को मरै न मुडुआ नाले ॥ नानक जुगि जुगि जाण सिजाणा रोवहि सचु समाले ॥ ४ ॥ ५ ॥

वडहँसु महला ३ तीजा १४ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभु सचड़ा हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु ॥ साधन रँड न कबहू बैसई ना कदे होवै सोगु ॥ ना कदे होवै
 सोगु अनदिनु रस भोग साधन महलि समाणी ॥ जिनि प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अँम्रित बाणी ॥ गुणवँतीआ गुण
 सारहि आपणे कँत समालहि ना कदे लगै विजोगो ॥ सचड़ा पिरु सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो ॥ १ ॥ सचड़ा
 साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ साधन प्रिअ कै रँगि रती विचहु आपु गवाए ॥ विचहु आपु गवाए फिरि कालु
 न खाए गुरमुखि एको जाता ॥ कामणि इछ पुँनी अँतरि भिँनी मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ सबद रँगि राती जोबनि माती
 पिर कै अँकि समाए ॥ सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ २ ॥

जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ आपु छोडि सेवा करी पिरु सचडा मिलै सहजि सुभाए ॥ पिरु सचा मिलै आए साचु कमाए साचि सबदि धन राती ॥ कदे न रांड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी ॥ पिरु रहिआ भरपूरे वेखु हदूरे रंगु माणे सहजि सुभाए ॥ जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ ३ ॥ पिरहु विछुंणीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ सतिगुरु सदा दइआलु है अवगुण सबदि जलाए ॥ अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ गवाए सचे ही सचि राती ॥ सचै सबदि सदा सुखु पाइआ हउमै गई भराती ॥ पिरु निरमाइलु सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाए ॥ पिरहु विछुंणीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारि ॥ अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी रोवै कंत विसारि ॥ रोवै कंत संमालि सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाए ॥ गुरमुखि जाता सबदि पछाता साचै प्रेमि समाए ॥ जिनि अपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूडि मुठी कूडिआरे ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे ॥ १ ॥ सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारा ॥ माइआ मोहु खुआइअनु मरि जमै वारो वारा ॥ मरि जमै वारो वारा वधहि बिकारा गिआन विहूणी मूठी ॥ बिनु सबदै पिरु न पाइओ जनमु गवाइओ रोवै अवगुणिआरी झूठी ॥ पिरु जगजीवनु किस नो रोईऐ रोवै कंतु विसारे ॥ सभु जगु आपि ओपाइओनु आवणु जाणु संसारे ॥ २ ॥ सो पिरु सचा सद ही साचा है ना ओहु मरै न जाए ॥ भूली फिरै धन इआणीआ रंड बैठी दूजै भाए ॥ रंड बैठी दूजै भाए माइआ मोहि दुखु पाए आव घटै तनु छीजै ॥ जो किछु आइआ सभु किछु जासी दूखु लागा भाइ दूजै ॥ जमकालु न सूझै माइआ जगु लूझै लबि लोभि चितु लाए ॥ सो पिरु साचा सद ही साचा न ओहु मरै न जाए ॥ ३ ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुंणीआ अंधी ना जाणै पिरु नाले ॥ गुर परसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले ॥ पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे ॥ इहु तनु रुलै रुलाइआ कामि

न आइआ जिनि खसमु न जाता हदूरे ॥ नानक साधन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले ॥ इकि रोवहि पिरहि
 विछुंणीआ धंधी न जाणै पिरु है नाले ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु मः ३ ॥ रोवहि पिरहि विछुंणीआ मै पिरु सचड़ा है सदा
 नाले ॥ जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ ॥ सबदे कालु मारि सचु उरि धारि फिरि आवण जाणु
 न होइआ ॥ सचा साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले ॥ रोवहि पिरहु विछुंणीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ १
 ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किव मिलां प्रीतम पिआरे ॥ सतिगुरि मेली तां सहजि मिली पिरु राखिआ उर धारे
 ॥ सदा उर धारे नेहु नालि पिआरे सतिगुर ते पिरु दिसै ॥ माइआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै ॥ पिरु
 रँगि राता सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे ॥ २ ॥
 मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ मै सदा रावे पिरु आपणा सचडै सबदि वीचारे ॥ सचै सबदि वीचारे
 रँगि राती नारे मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइआ ॥ अंतरि रँगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ ॥ अपने गुर
 कँउ तनु मनु दीजै तां मनु भीजै तिसना दूख निवारे ॥ मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ ३ ॥ सचडै
 आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो ॥ आपे देइ पिआरो सहजि
 वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥ धनु जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि साचै सचिआरो ॥ गिआनि रतनि घटि
 चानणु होआ नानक नाम पिआरो ॥ सच e डै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु
 महला ३ ॥ इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आए ॥ गुरि राखे से उबरे होरु मरि जँमै आवै जाए ॥ होरि मरि
 जँमहि आवहि जावहि अँति गए पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ॥ ऐथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई ॥
 जम पुरि घोर अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण न भाई ॥ इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आई ॥ १ ॥

काइआ कँचनु तां थीरे जां सतिगुरु लए मिलाए ॥ भ्रमु माइआ विचहु कटीरे सचडै नामि समाए ॥ सचै नामि समाए हरि गुण गाए मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ सदा अनँदि रहै दिनु राती विचहु हँउमै जाए ॥ जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइआ तिन कै हँउ लागउ पाए ॥ काइआ कँचनु तां थीरे जा सतिगुरु लए मिलाए ॥ २ ॥ सो सचा सचु सलाहीरे जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ बिनु सतिगुरु भरमि भुलाणीआ किआ मुहु देसनि आगै जाए ॥ किआ देनि मुहु जाए अवगुणि पछुताए दुखो दुखु कमाए ॥ नामि रतीआ से रँगि चलूला पिर कै अँकि समाए ॥ तिसु जेवडु अवरु न सूझई किसु आगै कहीरे जाए ॥ सो सचा सचु सलाहीरे जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ ३ ॥ जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ हँउ तिन लागउ पाए ॥ से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाए ॥ तिन मिलिआ मलु सभ जाए सचै सरि नाए सचै सहजि सुभाए ॥ नामु निरँजनु अगमु अगोचर सतिगुरि दीआ बुझाए ॥ अनदिनु भगति करहि रँगि राते नानक सचि समाए ॥ जिनी सचड़ा धिआइआ हँउ तिन कै लागउ पाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

वडहँसु की वार महला ४ ललां बहलीमा की धुनि गावणी १३ सतिगुरु प्रसादि ॥

सलोक मः ३ ॥ सबदि रते वडहँस है सचु नामु उरि धारि ॥ सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥ सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥ नानक हउ तिन कै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मै जानिआ वडहँस है ता मै कीआ संगु ॥ जे जाणा बहु बपुड़ा त जनमि न देदी अँगु ॥ २ ॥ मः ३ ॥ हँसा वेखि तरँदिआ बगां भि आया चाउ ॥ डुबि नुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥ तू आपे आपि निरँकारु है को अवरु न बीआ ॥ तू करण कारण समरथु है तू करहि सु थीआ ॥ तू अणमँगिआ दानु देवणा सभनाहा जीआ ॥ सभिं आखहु सतिगुरु वाहु वाहु जिनि दानु हरि नामु मुखि दीआ ॥ १ ॥

सलोकु मः ३ ॥ भै विचि सभु आकारु है निरभउ हरि जीउ सोइ ॥ सतिगुरि सेविरे हरि मनि वसै तिथै भउ कदे न होइ ॥
 दुसमनु दुखु तिस नो नेडि न आवै पोहि न सकै कोइ ॥ गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भावै सु होइ ॥ नानक आपे ही
 पति रखसी कारज सवारे सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इकि सजण चले इकि चलि गए रहदे भी फुनि जाहि ॥ जिनी सतिगुरु न
 सेविओ से आइ गए पछुताहि ॥ नानक सचि रते से न विछुड़हि सतिगुरु डेवि समाहि ॥ २ ॥ पउडी ॥ तिसु मिलीरे
 सतिगुर सजणै जिसु अंतरि हरि गुणकारी ॥ तिसु मिलीरे सतिगुर प्रीतमै जिनि हँउमै विचहु मारी ॥ सो सतिगुरु पूरा धनु
 धँनु है जिनि हरि उपदेसु दे सभ ख्रिस्टि सवारी ॥ नित जपिअहु संतहु राम नामु भउजल बिखु तारी ॥ गुरि पूरै हरि
 उपदेसिआ गुर विटडिअहु हँउ सद वारी ॥ २ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूँ सुख सारु ॥ ऐथै
 मिलनि वडिआईआ दरगह मोख दुआरु ॥ सची कार कमावणी सचु पैणणु सचु नामु अधारु ॥ सची संगति सचि मिलै सचै
 नाइ पिआरु ॥ सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु ॥ नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिस नो नदरि करै करतारु
 ॥ १ ॥ मः ३ ॥ होर विडाणी चाकरी ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ अँमितु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि ॥ बिखु
 खाणा बिखु पैणणा बिखु के मुखि गिरास ॥ ऐथै दुखो दुखु कमावणा मुइआ नरकि निवासु ॥ मनमुख मुहि मैलै सबदु न
 जाणनी काम करोधि विणासु ॥ सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कँमु न आवै रासि ॥ जम पुरि बधे मारीअहि को न सुणे
 अरदासि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु ॥ २ ॥ पउडी ॥ सो सतिगुरु सेवहि साध जनु जिनि
 हरि हरि नामु द्रिडाइआ ॥ सो सतिगुरु पूजहु दिनसु राति जिनि जगँनाथु जगदीसु जपाइआ ॥ सो सतिगुरु देखहु इक
 निमख निमख जिनि हरि का हरि पँथु बताइआ ॥ तिसु सतिगुर की सभ पगी पवहु जिनि मोह अँधेरु चुकाइआ ॥ सो
 सतगुरु कहहु सभि धँनु धँनु जिनि हरि भगति भँडार लहाइआ ॥ ३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुरि मिलिरे भुख गई भेखी

भुख न जाइ ॥ दुखिँ लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ ॥ अँदरि सहजु न आइओ सहजे ही कै खाइ ॥ मनहठि
 जिस ते मँगणा लैणा दुखु मनाइ ॥ इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ ॥ सबदि रते तिना सोझी पई दूजै भरमि
 भुलाइ ॥ पइरे किरति कमावणा कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ ॥ १ ॥
 मः ३ ॥ सतिगुरि सेविरे सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ ॥ चिँता मूलि न होवई अचिँतु वसै मनि आइ ॥ अँतरि तीरथु
 गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ मैलु गई मनु निरमलु होआ अँमित सरि तीरथि नाइ ॥ सजण मिलै सजणा सचै सबदि
 सुभाइ ॥ घर ही परचा पाइआ जोती जोति मिलाइ ॥ पाखँडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ ॥ नानक नामि रते
 से उबरे सचे सिउ लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तितु जाइ बहहु सतसंगती जिथै हरि का हरि नामु बिलोईए ॥ सहजे ही हरि
 नामु लेहु हरि ततु न खोईए ॥ नित जपिअहु हरि हरि दिनसु राति हरि दरगह ढोईए ॥ सो पाए पूरा सतगुरु जिंसु धुरि
 मसतकि लिलाटि लिखोईए ॥ तिसु गुर कँउ सभि नमसकारु करहु जिनि हरि की हरि गाल गलोईए ॥ ४ ॥ सलोक मः ३
 ॥ सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआरु ॥ मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु ॥ मन ही ते मनु
 मानिआ गुर कै सबदि अपारि ॥ एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ॥ इकना दरसन की परतीति न
 आईआ सबदि न करहि वीचारु ॥ विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु ॥ मनमुख सेती दोसती
 थोड़िआ दिन चारि ॥ इसु परीती तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार ॥ जिना अँदरि सचे का भउ नाही
 नामि न करहि पिआरु ॥ नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इकि सदा
 इकतै रँगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ तनु मनु धनु अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाइ ॥ तिन मिलिआ
 मनु सँतोखीए तिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामि रते सुखीए सदा सचे सिउ लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु गुर कउ

हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणार्इ ॥ तिसु गुर कउ सद बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बणार्इ ॥ सो सतिगुरु
पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडार्इ ॥ तिसु गुर कउ साबासि है जिनि हरि सोझी पार्इ ॥ नानकु गुर विटहु
वारिआ जिनि हरि नामु दीआ मेरे मन की आस पुरार्इ ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥ तिसना दाधी जलि मुई जलि जलि करे
पुकार ॥ सतिगुर सीतल जे मिलै फिरि जलै न दूजी वार ॥ नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु सबदि न करे
वीचारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ भैखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि ॥ वरमी मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि ॥
सतिगुरु दाता सेवीरे सबदु वसै मनि आइ ॥ मनु तनु सीतलु सांति होइ तिसना अगनि बुझाइ ॥ सुखा सिरि सदा सुखु
होइ जा विचहु आपु गवाइ ॥ गुरमुखि उदासी सो करे जि सचि रहै लिव लाइ ॥ चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ
॥ नानक नाम बिना नह छूटीरे हउमै पचहि पचाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनी हरि हरि नामु धिआइआ तिनी पाइअडे सरब
सुखा ॥ सभु जनमु तिना का सफलु है जिन हरि के नाम की मनि लागी भुखा ॥ जिनी गुर कै बचनि आराधिआ तिन
विसरि गए सभि दुखा ॥ ते संत भले गुरसिख है जिन नाही चिंत परार्इ चुखा ॥ धनु धंनु तिना का गुरु है जिसु अंमि
फल हरि लागे मुखा ॥ ६ ॥ सलोक मः ३ ॥ कलि महि जमु जंदारु है हुकमे कार कमाइ ॥ गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ
सजाइ ॥ जमकालै वसि जगु बांधिआ तिसदा फरु न कोइ ॥ जिनि जमु कीता सो सेवीरे गुरमुखि दूरु न होइ ॥ नानक
गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ एहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदै दुखु हउमै रोगु न जाइ ॥
सतिगुरु मिलै ता निरमल होवै हरि नामो मॉनि वसाइ ॥ नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ सहजि सुभाइ ॥
२ ॥ पउड़ी ॥ जिनि जगजीवनु उपदेसिआ तिसु गुर कउ हउ सदा घुमाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ खंणीरे जिनि मधुसूदनु
हरि नाम सुणाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ वारणै जिनि हउमै बिखु सभु रोगु गवाइआ ॥ तिसु सतिगुर कउ वड पुंनु

है जिनि अवगण कटि गुणी समझाइआ ॥ सो सतिगुरु तिन कउ भेटिआ जिन कै मुखि मसतकि भागु पाइआ ॥ ७ ॥
 सलोकु मः ३ ॥ भगति करहि मरजीवडे गुरुमुखि भगति सदा होइ ॥ ओना कउ धुरि भगति खजाना बखसिआ मेटि न
 सकै कोइ ॥ गुण निधानु मनि पाइआ एको सचा सोइ ॥ नानक गुरुमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होइ ॥ १ ॥ मः
 ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ किआ ओहु करे वीचारु ॥ सबदै सार न जाणई बिखु भूला गावारु ॥ अगिआनी अँधु
 बहु करम कमावै दूजै भाइ पिआरु ॥ अणहोदा आपु गणाइदे जमु मारि करे तिन खुआरु ॥ नानक किस नो आखीरे जा
 आपे बखसणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू करता सभु किछु जाणदा सभि जीअ तुमारे ॥ जिसु तू भावै तिसु तू मेलि लैहि
 किआ जँत विचारे ॥ तू करण कारण समरथु है सचु सिरजणहारो ॥ जिसु तू मेलहि पिआरिआ सो तुधु मिलै गुरुमुखि
 वीचारे ॥ हउ बलिहारी सतिगुर आपणे जिनि मेरा हरि अलखु लखारे ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ रतना पारखु जो होवै सु
 रतना करे वीचारु ॥ रतना सार न जाणई अगिआनी अँधु अँधारु ॥ रतनु गुरु का सबदु है बूझै बूझणहारु ॥ मूरख
 आपु गणाइदे मरि जँमहि होइ खुआरु ॥ नानक रतना सो लहै जिसु गुरुमुखि लगै पिआरु ॥ सदा सदा नामु उचरै हरि
 नामो नित बिउहारु ॥ क्रिपा करे जे आपणी ता हरि रखा उर धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ हरि नामि
 न लगो पिआरु ॥ मत तुम जाणहु ओइ जीवदे ओइ आपि मारे करतारि ॥ हउमै वडा रोगु है भाइ दूझै करम कमाइ ॥
 नानक मनमुखि जीवदिआ मुए हरि विसरिआ दुखु पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है तिसु जन कउ सभि
 नमसकारी ॥ जिसु अँदरि नामु निधानु है तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ जिसु अँदरि बुधि बिबेकु है हरि नामु मुरारी ॥ सो
 सतिगुरु सभना का मितु है सभ तिसहि पिआरी ॥ सभु आतम रामु पसारिआ गुरु बुधि बीचारी ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥
 बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बँधना विचि हउमै करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठउर न पावही मरि जँमहि आवहि जाहि ॥

बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जमपुरि बधे मारीअनि मुहि कालै उठि
 जाहि ॥ १ ॥ महला १ ॥ जालउ ऐसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै ॥ नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति
 रहै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ ॥ हरि इको दाता मँगीऐ मन चिँदिआ पाईऐ ॥ जे दूजे
 पासहु मँगीऐ ता लाज मराईऐ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईऐ ॥ नानकु तिन विटहु
 वारिआ जिन अनदिनु हिरदै हरि नामु धिआईऐ ॥ १० ॥ सलोकु मः ३ ॥ भगत जना कँउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे
 लइअनु जन लाइ ॥ पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाइ ॥ सदा सुखीए निरमले सतिगुर की
 कार कमाइ ॥ राजे ओइ न आखीअहि भिडि मरहि फिरि जूनी पाहि ॥ नानक विणु नावै नकीं, वढीं, फिरहि सोभा मूलि न
 पाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सुणि सिखिऐ सादु न आइओ जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ सतिगुरि सेविऐ नामु मनि वसै
 विचहु भ्रमु भउ भागै ॥ जेहा सतिगुर नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि
 सोहनि आगै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरसिखां मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि ॥ हरि नामि वणँजहि रँग सिउ लाहा हरि
 नामु लै जावहि ॥ गुरसिखा के मुख उजले हरि दरगह भावहि ॥ गुरु सतिगुरु बोहलु हरि नाम का वडभागी सिख गुण
 सांझ करावहि ॥ तिना गुरसिखा कँउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवहि ॥ ११ ॥ सलोक मः ३ ॥
 नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी अँधे भउकि मुए बिललाइ ॥ १ ॥ मः ३
 ॥ कँचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी ॥ निरमल जोति निरँजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ॥
 नानक गुरमुखि सदा सुखु पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ से गुरसिख धनु धँनु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ
 हरि कँनी ॥ गुरि सतिगुरि नामु द्विडाइआ तिनि हँउमै दुबिधा भँनी ॥ बिनु हरि नावै को मित्रु नाही वीचारि डिठा हरि

जँनी ॥ जिना गुरसिखा कउ हरि सँतुसटु है तिनी सतिगुर की गल मँनी ॥ जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिनी चडी चवगणि
 वँनी ॥ १२ ॥ सलोक मः ३ ॥ मनमुखु काइरु करुपु है बिनु नावै नकु नाहि ॥ अनदिनु धँधै विआपिआ सुपनै भी सुखु
 नाहि ॥ नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे दुख सहाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुरमुखि सदा दरि सोहणे गुर का
 सबदु कमाहि ॥ अँतरि सांति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि ॥ नानक गुरमुखि हरि नामु पाइआ सहजे सचि समाहि ॥ २
 ॥ पउडी ॥ गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई ॥ गुरमुखि जनकि हरि नामि लिव लाई ॥ गुरमुखि बसिसटि हरि
 उपदेसु सुणार्इ ॥ बिनु गुर हरि नामु न किनै पाइआ मेरे भाई ॥ गुरमुखि हरि भगति हरि आपि लहाई ॥ १३ ॥ सलोक मः
 ३ ॥ सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ ॥ ओस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ ॥ नानक
 गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविरे जनम मरण दुखु
 जाइ ॥ सहसा मूलि न होवई हउमै सबदि जलाइ ॥ कूडै की पालि चिचहु निकलै सचु वसै मनि आइ ॥ अँतरि सांति मनि
 सुखु होइ सच सँजमि कार कमाइ ॥ नानक पूरै करमि सतिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ जिस कै
 घरि दीबानु हरि होवै तिस की मुठी विचि जगत्तु सभु आइआ ॥ तिस कउ तलकी किसै दी नाही हरि दीबानि सभि आणि पैरी
 पाइआ ॥ माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ ॥ सो ऐसा हरि दीबानु वसिआ
 भगता कै हिरदै तिनि रहदे खुहदे आणि सभि भगता अगै खलवाइआ ॥ हरि नावै की वडिआई करमि परापति होवै
 गुरमुखि विरलै किनै धिआइआ ॥ १४ ॥ सलोक मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जगत्तु मुआ बिरथा जनमु गवाइ ॥ दूजै भाइ
 अति दुखु लगा मरि जँमै आवै जाइ ॥ विसटा अँदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ नानक बिनु नावै जमु मारसी अँति
 गइआ पछुताइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इस जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई ॥ सभि घट

भोगवै अलिपतु रहै न लखणा जाई ॥ पूरै गुरि वेखालिआ सबदे सोझी पाई ॥ पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै
 सबदि जलाई ॥ तिस का सरीकु को नही ना को कँटकु वैराई ॥ निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ॥
 अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई ॥ नानकु वेखि विगसिआ हरि सचे की वडिआई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन कै
 हरि नामु वसिआ सद हिरदै हरि नामो तिन कँउ रखणहारा ॥ हरि नामु पिता हरि नामो माता हरि नामु सखाई मित्रु हमारा
 ॥ हरि नावै नालि गला हरि नावै नालि मसलति हरि नामु हमारी करदा नित सारा ॥ हरि नामु हमारी संगति अति पिआरी
 हरि नामु कुलु हरि नामु परवारा ॥ जन नानक कँउ हरि नामु हरि गुरि दीआ हरि हलति पलति सदा करे निसतारा ॥ १५ ॥
 सलोकु मः ३ ॥ जिन कँउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि ॥ अचिँतु हरि नामु तिन कै मनि वसिआ सचै
 सबदि समाहि ॥ कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि ॥ पारब्रहमु तिन कँउ सँतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन
 पाहि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हँउमै अँदरि खड़कु जहै खड़के खड़कि
 विहाइ ॥ हँउमै वडा रोगु है मरि जँमै आवै जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ नानक
 गुर परसादी उबरे हउमै सबदि जलाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा प्रभु अबिगतु अगोचरु अबिनासी पुरखु बिधाता
 ॥ हरि नामु हम खेवह हरि नामु हम पूजह हरि नामे ही मनु राता ॥ हरि नामै जेवडु कोई अवरु न सूझै हरि नामो अँति
 छडाता ॥ हरि नामु दीआ गुरि परउपकारी धनु धँनु गुरू का पिता माता ॥ हँउ सतिगुर अपुणे कँउ सदा नमसकारी जितु
 मिलिरे हरि नामु मै जाता ॥ १६ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ सबदै सादु न
 आइओ मरि जनमै वारो वार ॥ मनमुखि अँधु न चेतई कितु आइआ सैसारि ॥ नानक जिन कउ नदरि करे से गुरमुखि लँघै
 पारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि ॥ सतिगुरु सेवनि जागँनि से

जो रते सचि नामि गुणतासि ॥ मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ॥ नानक गुरमुखि तिनी नामु
धिआइआ जिन कँउ धुरि पूरबि लिखिआसि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाईऐ हम कउ
त्रिपति भई ॥ हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नंगे न होवह होर पैनण की हमारी सरध गई ॥ हरि नामु हमारा वणजु हरि
नामु वापारु हरि नामै की हम कँउ सतिगुरि कारकुनी दीई ॥ हरि नामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि
गई ॥ हरि का नामु गुरमुखि किनै विरलै धिआइआ जिन कँउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥ १७ ॥ सलोक मः ३ ॥
जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाइ करम कमाइ ॥ दूजै भाइ जेते करम करे दुखु लगै तनि धाइ ॥ गुर परसादी सुखु ऊपजै
जा गुर का सबदु कमाइ ॥ सची बाणी करम करे अनदिनु नामु धिआइ ॥ नानक जितु आपे लाए तितु लगे कहणा किछू न
जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा ॥ सतगुरु दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा ॥
अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा ॥ सबदु गुरु का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥ इहु मनूआ
सदा सुखि वसै सहजे करे वापारा ॥ अंतरि गुर गिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा ॥ नानक जिस नो नदरि करे सो
पाए सो होवै दरि सचिआरा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धँनु धँनु सो गुरसिखु कहीऐ जो सतिगुर चरणी जाइ पइआ ॥ धँनु धँनु सो
गुरसिखु कहीऐ जिनि हरि नामा मुखि रामु कहिआ ॥ धँनु धँनु सो गुरसिखु कहीऐ जिस हरि नामि सुणिए अनदु भइआ ॥
धँनु धँनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि सतिगुर सेवा करि हरि नामु लइआ ॥ तिसु गुरसिखु कँउ हँउ सदा नमसकारी जो गुर कै
भाणै गुरसिखु चलिआ ॥ १८ ॥ सलोक मः ३ ॥ मनहठि किनै न पाइओ सभ थके करम कमाइ ॥ मनहठि भेख करि
भरमदे दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥ रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ ॥ गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै अगिआनु
अंधेरा जाइ ॥ नामु रतनु घरि परगटु होआ नानक सहजि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सबदै सादु न आइओ

नामि न लगो पिआरु ॥ रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ नानक किरति पइये कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥
२ ॥ पउड़ी ॥ धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम कउ सांति आई ॥ धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा
जितु मिलिऐ हम हरि भगति पाई ॥ धनु धनु हरि भगतु सतिगुरू हमारा जिस की सेवा ते हम हरि नामि लिव लाई ॥ धनु धनु
हरि गिआनी सतिगुरू हमारा जिनि वैरी मित्रु हम कउ सभ सम दिसटि दिखाई ॥ धनु धनु सतिगुरू मित्रु हमारा जिनि हरि
नामि हमारी प्रीति बणाई ॥ १९ ॥ सलोकु मः १ ॥ घर ही मुँधि विदेसि पिरु नित झूरे सँहाले ॥ मिलदिआ ढिल न होवई जे
नीअति रासि करे ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक गाली कूडीआ बाझु परीति करेइ ॥ तिचरु जाणै भला करि जिचरु लेवै देइ ॥ २
॥ पउड़ी ॥ जिनि उपाए जीअ तिनि हरि राखिआ ॥ अँमितु सचा नाउ भोजनु चाखिआ ॥ तिपति रहे आघाइ मिटी
भभाखिआ ॥ सभ अँदरि इकु वरतै किनै विरलै लाखिआ ॥ जन नानक भए निहालु प्रभ की पाखिआ ॥ २० ॥ सलोक मः
३ ॥ सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु सँसारु ॥ डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ हउमै मैलु न
चुकई नामि न लगै पिआरु ॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु दुबिधा तजि विकार ॥ नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले
सतिगुर हेति पिआरि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरू न सेविओ मूरख अँध गवारि ॥ दूजै भाइ बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार
॥ जिन कारणे गुरू विसारिआ से न उपकरे अँती वार ॥ नानक गुरमती सुखु पाइआ बखसे बखसनहार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
तू आपे आपि आपि सभु करता कोई दूजा होइ सु अवरो कहीऐ ॥ हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि आपे जलि थलि रवि रहीऐ
॥ हरि आपे मारै हरि आपै छोडै मन हरि सरणी पडि रहीऐ ॥ हरि बिनु कोई मारि जीवालिन सके मन होइ निचिँद निसलु होइ
रहीऐ ॥ उठदिआ बहदिआ सुतिआ सदा सदा हरि नामु धिआईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

१ॐ सतिनाम करता पुरुखु निरभउ निरवैरु

अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥

सभना मरणा आइआ वेछोड़ा सभनाह ॥ पुछहु जाइ सिआणिआ आगै मिलणु किनाह ॥ जिन मेरा साहिबु वीसरै वडड़ी वेदन तिनाह ॥ १ ॥ भी सालाहिहु साचा सोइ ॥ जा की नदरि सदा सुखु होइ ॥ रहाउ ॥ वडा करि सालाहणा है भी होसी सोइ ॥ सभना दाता एकु तू माणस दाति न होइ ॥ जो तिसु भावै सो थीरे रँन कि रँनै होइ ॥ २ ॥ धरती उपरि कोट गड़ केती गई वजाइ ॥ जो असमानि न मावनी तिन नकि नथा पाइ ॥ जे मन जाणहि सूलीआ काहे मिठा खाहि ॥ ३ ॥ नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जँजीर ॥ जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥ अगै गए न मँनीअनि मारि कढहु वेपीर ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला १ घरु १ ॥ मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तन खेतु ॥ नामु बीजु सँतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥ भाउ करम करि जँमसी से घर भागठ देखु ॥ १ ॥ बाबा माइआ साथि न होइ ॥ इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ रहाउ ॥ हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥ सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु ॥ वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥ २ ॥ सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥ खरचु बँनु चँगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥ निरँकार कै देसि जाहि सुखि लहहि महलु ॥ ३ ॥

लाइ चितु करि चाकरी मँनि नामु करि कँमु ॥ बँनु बदीआ करि धावणी ता को आखै धँनु ॥ नानक वेखै नदरि करि चडै
 चवगण वँनु ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि मः १ चउतुके ॥ माइ बाप को बेटा नीका ससुरै चतुर जवाई ॥ बाल कँनिआ कौ बापु
 पिआरा भाई कौ अति भाई ॥ हुकमु भइआ बाहरु घरु छोडिआ खिन महि भई पराई ॥ नामु दानु इसनानु न मनमुखि
 तितु तनि धूडि धुमाई ॥ १ ॥ मनु मानिआ नामु सखाई ॥ पाइ परउ गुर कै बलिहरै जिनि साची बूझ बुझाई ॥ रहाउ
 ॥ जग सिउ झूठ प्रीति मनु बेधिआ जन सिउ वादु रचाई ॥ माइआ मगनु अहिनिमि मगु जोहै नामु न लेवै मरै बिखु खाई
 ॥ गँधण वैणि रता हितकारी सबदै सुरति न आई ॥ रँगि न राता रसि नही बेधिआ मनमुखि पति गवाई ॥ २ ॥ साध
 सभा महि सहजु न चाखिआ जिहबा रसु नही राई ॥ मनु तनु धनु अपुना करि जानिआ दर की खबरि न पाई ॥ अखी
 मीटि चलिआ अँधिआरा घरु दरु दिसै न भाई ॥ जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥ ३ ॥ नदरि करे ता
 अखी वेखा कहणा कथनु न जाई ॥ कँनी सुणि सुणि सबदि सलाही अँमितु रिदै वसाई ॥ निरभउ निरँकारु निरवैरु पूरन
 जोति समाई ॥ नानक गुर विणु भरमु न भागै सचि नामि वडिआई ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला १ दुतुके ॥ पुडु धरती
 पुडु पाणी आसणु चारि कँट चउबारा ॥ सगल भवण की मूरति एका मुखि तेरै टकसाला ॥ १ ॥ मेरे साहिबा तेरे चोज
 विडाणा ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा आपे सरब समाणा ॥ रहाउ ॥ जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा
 रूपु किनेहा ॥ इकतु रूपि फिरहि परछँना कोइ न किस ही जेहा ॥ २ ॥ अँडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जँता ॥
 एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि खँता ॥ ३ ॥ तेरे गुण बहुते मै एकु न जाणिआ मै मूरख किछु दीजै ॥ प्रणवति
 नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला १ ॥ हउ पापी पतितु परम पाखँडी तू निरमलु
 निरँकारी ॥ अँमितु चाखि परम रसि राते ठाकुर सरणि तुमारी ॥ १ ॥ करता तू मै माणु निमाणे ॥ माणु महतु नामु धनु

पलै साचै सबदि समाणे ॥ रहाउ ॥ तू पूरा हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥ तुझ ही मन राते अहिनिशि परभाते हरि
 रसना जपि मन रे ॥ २ ॥ तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे ॥ अहिनिशि नामि रते सु सूचे मरि जनमे से
 काचे ॥ ३ ॥ अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा गुरमति जानिआ
 सोई ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि महला १ ॥ अलख अपार अगँम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥ जाति अजाति अजोनी
 सँभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥ १ ॥ साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥ ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचै सबदि
 नीसाणु ॥ रहाउ ॥ ना तिसु मात पिता सुत बँधप ना तिसु कामु न नारी ॥ अकुल निरँजन अपर परँपरु सगली जोति
 तुमारी ॥ २ ॥ घट घट अँतरि ब्रहमु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥ बजर कपाट मुकते गुरमती निरमै ताडी लाई
 ॥ ३ ॥ जँत उपाइ कालु सिरि जँता वसगति जुगति सबाई ॥ सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥ ४
 ॥ सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचाचारी ॥ तँतै कउ परम तँतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥ ५ ॥ ६ ॥ सोरठि
 महला १ ॥ जिउ मीना बिनु पाणीरे तिउ साकतु मरै पिआस ॥ तिउ हरि बिनु मरीरे रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥ १
 ॥ मन रे राम नाम जसु लेइ ॥ बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि देइ ॥ रहाउ ॥ सँत जना मिलु सँगती गुरमुखि
 तीरथु होइ ॥ अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥ २ ॥ जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु सँतोखु ॥
 तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै अँतरि दोखु ॥ ३ ॥ साकत प्रेमु न पाईरे हरि पाईरे सतिगुर भाइ ॥ सुख दुख दाता गुरु
 मिलै कहु नानक सिफति समाइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि महला १ ॥ तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥
 मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥ १ ॥ घटि घटि रवि रविआ बनवारी ॥ जलि थलि
 महीअलि गुपतो वरतै गुर सबदी दैखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥ मरत पइआल अकासु दिखाइओ गुरि सतिगुरि

किरपा धारी जीउ ॥ सो ब्रह्म अजोनी हत भी होनी घट भीतरि देखु मुरारी जीउ ॥ २ ॥ जनम मरन कउ इहु जगु
 बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ ॥ सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुरु
 बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ ॥ नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ ॥
 ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला १ ॥ जिसु जल निधि कारणे तुम जगि आए सो अँमितु गुर पाही जीउ ॥ छोडहु वेसु भेख
 चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥ १ ॥ मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥ बाहरि दूढत बहुतु दुखु पावहि घरि
 अँमितु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥ अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥ सर अपसर की सार
 न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥ २ ॥ अँतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥ निरमल नामु
 जपहु सद गुरमुखि अँतर की गति ताही जीउ ॥ ३ ॥ परहरि लोभु निँदा कूडु तिआगहु सचु गुर बचनी फलु पाही जीउ
 ॥ जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥ सोरठि महला १ पँचपदे ॥ अपना
 घरु मूसत राखि न साकहि की पर घरु जोहन लागा ॥ घरु दरु राखहि जे रसु चाखहि जो गुरमुखि सेवकु लागा ॥ १
 ॥ मन रे समझु कवन मति लागा ॥ नामु विसारि अन रस लोभाने फिरि पछुताहि अभागा ॥ रहाउ ॥ आवत कउ
 हरख जात कउ रोवहि इहु दुखु सुखु नाले लागा ॥ आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ॥ २ ॥ हरि
 रस ऊपरि अवरु किआ कहीऐ जिनि पीआ सो त्रिपतागा ॥ माइआ मोहित जिनि इहु रसु खोइआ जा साकत दुरमति
 लागा ॥ ३ ॥ मन का जीउ पवन पति देही देही महि देउ समागा ॥ जे तू देहि त हरि रसु गाई मनु त्रिपतै हरि लिव
 लागा ॥ ४ ॥ साधसंगति महि हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए
 मसतकि भागा ॥ ५ ॥ १० ॥ सोरठि महला १ ॥ सरब जीआ सिरि लेखु धुराहू बिनु लेखै नही कोई जीउ ॥ आपि

अलेखु कुदरति करि देखै हुकमि चलाए सोई जीउ ॥ १ ॥ मन रे राम जपहु सुखु होई ॥ अहिनि सि गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोई ॥ रहाउ ॥ जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोई जीउ ॥ गुरमुखि एक द्रिसटि करि देखहु घटि घटि जोति समोई जीउ ॥ २ ॥ चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलिऐ इह मति होई जीउ ॥ देखि अद्रिसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होई जीउ ॥ ३ ॥ पीवहु अपिउ परम सुखु पाईऐ निज घरि वासा होई जीउ ॥ जनम मरण भव भँजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होई जीउ ॥ ४ ॥ ततु निरँजनु जोति सबाई सोहँ भेदु न कोई जीउ ॥ अपरँपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥ ५ ॥ ११ ॥

सोरठि महला १ घरु ३ १४ श्रितिगुर प्रसादि ॥

जा तिसु भावा तद ही गावा ॥ ता गावे का फलु पावा ॥ गावे का फलु होई ॥ जा आपे दैवै सोई ॥ १ ॥ मन मेरे गुर बचनी निधि पाई ॥ ता ते सच महि रहिआ समाई ॥ रहाउ ॥ गुर साखी अंतरि जागी ॥ ता चँचल मति तिआगी ॥ गुर साखी का उजिआरा ॥ ता मिटिआ सगल अँधारा ॥ २ ॥ गुर चरनी मनु लागा ॥ ता जम का मारगु भागा ॥ भै विचि निरभउ पाइआ ॥ ता सहजै घरि आइआ ॥ ३ ॥ भणति नानकु बूझै को बीचारी ॥ इसु जग महि करणी सारी ॥ करणी कीरति होई ॥ जा आपे मिलिआ सोई ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥

सोरठि महला ३ घरु १ १४ श्रितिगुर प्रसादि ॥

सेवक सेव करहि सभि तेरी जिन सबदै सादु आइआ ॥ गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ अनदिनु गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर हम बारिक सरणि तुमारी ॥ एको सचा सचु तूकेवलु आपि मुरारी ॥ रहाउ ॥ जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ सबदे हउमै मारी ॥ गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत

बीचारी ॥ सतिगुरु सेवि सद सुखु पाइआ हरि राखिआ उर धरी ॥ २ ॥ इहु मनूआ दह दिसि धावदा दूजै भाइ
 खुआइआ ॥ मनमुख मुग्धु हरि नामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ सतिगुरु भेटे ता नाउ पाए हउमै मोहु चुकाइआ
 ॥ ३ ॥ हरि जन साचे साचु कमावहि गुरु कै सबदि वीचारी ॥ आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु राखिआ उर धारी ॥
 नानक नावहु गति मति पाई एहा रासि हमारी ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला ३ ॥ भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ
 हरि धनु सच सोइ ॥ अखुट्टु नाम धनु कदे निखुट्टै नाही किनै न कीमति होइ ॥ नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ
 सचु सोइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुरु सबदी हरि पाइआ जाइ ॥ बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइ ॥ रहाउ ॥
 इसु देही अँदरि पँच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अँकारा ॥ अमितु लूटहि मनमुख नहीं बूझहि कोइ न सुणै पूकारा
 ॥ अँधा जगतु अँधु वरतारा बाझु गुरु गुबारा ॥ २ ॥ हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि ॥
 गुरुमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरि नामु समालि ॥ सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि ॥ ३ ॥ सतिगुरु
 गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा ॥ नानक राम
 नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि मः ३ ॥ दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई ॥
 भगता का कारजु हरि अनँदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥ सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥ १ ॥ हरि जीउ
 साची नदरि तुमारी ॥ आपणिआ दासा नो क्रिपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥ सबदि सलाही सदा हउ
 जीवा गुरुमती भउ भागा ॥ मेरा प्रभु साचा अति सुआलिउ गुरु सेविआ चितु लागा ॥ साचा सबदु सची सचु बाणी सो
 जनु अनदिनु जागा ॥ २ ॥ महा गँभीरु सदा सुखदाता तिस का अँतु न पाइआ ॥ पूरे गुरु की सेवा कीनी अचिँतु हरि
 मँनि वसाइआ ॥ मनु तनु निरमलु सदा सुखु अँतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि का मारगु सदा पँथु विखड़ा

को पाए गुर वीचारा ॥ हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा ॥ नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ तुधु नो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा ॥ इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा ॥ हम मूड मुगध सदा से भाई गुर कै सबदि प्रगासा ॥ १ ॥ हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई ॥ हरि जीउ तुधु विटहु वारिआ सद ही तेरे नाम विटहु बलि जाई ॥ रहाउ ॥ हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले भाई सबदे ही मुकति पाई ॥ सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई ॥ सबदु गुर दाता जितु मनु राता हरि सिउ रहिआ समाई ॥ २ ॥ सबदु न जाणहि से अँने बोले से कितु आए संसारा ॥ हरि रसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जँमहि वारो वारा ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥ ३ ॥ आपे करि वेखै मारगि लाए भाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जो धुरि लिखिआ सु कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई ॥ नानक नामु वसिआ मन अंतरि भाई अवरु न दूजा कोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ३ ॥ गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि अनदिनु नामु वखाणे ॥ भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे ॥ तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे ॥ १ ॥ मन मेरे हरि जीउ सदा समालि ॥ अँत कालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ दुसट चउकड़ी सदा कूडु कमावहि ना बूझहि वीचारे ॥ निँदा दुसटी ते किनि फलु पाइआ हरणाखस नखहि बिदारे ॥ प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे ॥ २ ॥ आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई ॥ साधू जन की निँदा विआपे जासनि जनमु गवाई ॥ राम नामु कदे चेतहि नाही अँति गए पछुताई ॥ ३ ॥ सफलु जनमु भगता का कीता गुर सेवा आपि लाए ॥ सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ॥ नानक दासु कहै बेनँती हउ लागा तिन कै पाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि महला ३ ॥ सो सिखु सखा बँधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥ आपणै भाणै जो चलै भाई विछुडि

चोटा खावै ॥ बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥ १ ॥ हरि के दास सुहेले भाई ॥ जनम जनम
 के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥ इहु कुटंबु सभु जीअ के बँधन भाई भरमि भुला सँसारा ॥ बिनु गुर
 बँधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥ करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारो वारा ॥ २ ॥ हउ मेरा
 जगु पलचि रहिआ भाई कोइ न किस ही केरा ॥ गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा ॥ ऐथै बूझै सु
 आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥ ३ ॥ सतिगुरु सदा दइआलु है भाई विणे भागा किआ पाईये ॥ एक नदरि करि वेखै
 सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईये ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईये ॥ ४ ॥ ६ ॥ सोरठि महला ३
 चौतुके ॥ सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै सबदि समाणी ॥ बिनु गुर
 साचे भगति न होवी होर भूली फिरै इआणी ॥ मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी ॥ १ ॥ भाई रे सदा
 रहहु सरणाई ॥ आपणी नदरि करे पति राखै हरि नामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥ पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै
 वीचारा ॥ हिरदै जगजीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अहंकारा ॥ सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ॥
 जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि
 आइआ ॥ हरि रसु चाखि सदा मनु त्रिपतिआ गुण गावै गुणी अघाइआ ॥ कमलु प्रगासि सदा रँगि राता अनहद सबदु
 वजाइआ ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी सचे सचि समाइआ ॥ ३ ॥ राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै
 समाई ॥ गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥ जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥ नानक
 नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि मः ३ दुतुके ॥ सतिगुर मिलिऐ उलटी भई भाई
 जीवत मरै ता बूझ पाइ ॥ सो गुरु सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ मन रे हरि हरि सेती

लिव लाइ ॥ मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै
 भाइ ॥ तुह कुटहि मनमुख करम करहि भाई पलै किछु न पाइ ॥ २ ॥ गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ भाई साची प्रीति पिआरि
 ॥ सदा हरि के गुण रवै भाई गुर कै हेति अपारि ॥ ३ ॥ आइआ सो परवाणु है भाई जिं गुर सेवा चितु लाइ ॥ नानक नामु
 हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ३ घरु १ ॥ तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ
 बुझाइ ॥ राम नामि लागि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ १ ॥ मन रे त्रै गुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥ हरि जीउ तैरे
 मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ ॥ रहाउ ॥ नामै ते सभि ऊपजे भाई नाइ विसरिऐ मरि जाइ ॥ अगिआनी जगतु अँधु है
 भाई सूते गए मुहाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि ॥ जग महि लाहा हरि नामु है भाई हिरदै रखिआ
 उर धारि ॥ ३ ॥ गुर सरणाई उबरे भाई राम नामि लिव लाइ ॥ नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जितु लागि पारि जन पाइ
 ॥ ४ ॥ ९ ॥ सोरठि महला ३ घरु १ ॥ सतिगुरु सुख सागरु जग अँतरि होर थै सुखु नाही ॥ हउमै जगतु दुखि रोगि
 विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही ॥ १ ॥ प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ ॥ सतिगुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा
 जनमु गवाइ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण धातु बहु करम कमावहि हरि रस सादु न आइआ ॥ सँधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे
 दुखु पाइआ ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवे सो वडभागी जिस नो आपि मिलाए ॥ हरि रसु पी जन सदा त्रिपतासे विचहु आपु गवाए
 ॥ ३ ॥ इहु जगु अँधा सभु अँधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए ॥ नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै घरै अँदरि सचु पाए ॥ ४
 ॥ १० ॥ सोरठि महला ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागु जुग चारे भरमाई ॥ हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि
 बुझाई ॥ १ ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु तुम पिआरे ॥ सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरि नामु देवहु आधारे ॥ रहाउ ॥

मनसा मारिं दुबिधा सहजिं समाणीं पाइआ नामु अपारा ॥ हरिं रसु चाखिं मनु निरमलु होआ किलबिख काटणहारा ॥
 २ ॥ सबदिं मरहु फिरि जीवहु सद ही ता फिरि मरणु न होई ॥ अँमितु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ॥ ३ ॥
 दातै दाति रखी हथि अपणै जिंसु भावै तिसु देई ॥ नानक नामि रते सुखु पाइआ दरगह जापहिं सेई ॥ ४ ॥ ११ ॥
 सोरठि महला ३ ॥ सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तद ही पाए ॥ हरि का नामु सचा मनि वसिआ नामे
 नामि समाए ॥ १ ॥ बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना ॥ मनमुखि अँधा सबदु न जाणै झूठै भरमि भुलाना ॥ रहाउ ॥
 त्रै गुण माइआ भरमि भुलाइआ हउमै बँधन कमाए ॥ जँमणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ गरभ जोनि दुखु पाए ॥ २ ॥ त्रै
 गुण वरतहि सगल सँसारा हउमै विचि पति खोई ॥ गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै राम नामि सुखु होई ॥ ३ ॥ त्रै गुण
 सभिं तेरे तू आपु करता जो तू करहि सु होई ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई ॥ ४ ॥ १२ ॥

सोरठि महला ४ घरु १ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु ॥ वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु ॥ आपे वणजु
 वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु ॥ १ ॥ जपि मन हरिं हरिं नामु सलाह ॥ गुर किरपा ते पाईऐ पिआरा अँमितु
 अगम अथाह ॥ रहाउ ॥ आपे सुणि सभ वेखदा पिआरा मुखि बोले आपि मुहाहु ॥ आपे उझड़ि पाइदा पिआरा आपि
 विखाले राहु ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे वेपरवाहु ॥ २ ॥ आपे आपि उपाइदा पिआरा सिरि आपे धँधड़ै
 लाहु ॥ आपि कराए साखती पिआरा आपि मारे मरिं जाहु ॥ आपे पतणु पातणी पिआरा आपे पारि लँघाहु ॥ ३ ॥
 आपे सागरु बोहिथा पिआरा गुरु खेवटु आपि चलाहु ॥ आपे ही चड़ि लँघदा पिआरा करि चोज वेखै पातिसाहु ॥
 आपे आपि दइआलु है पिआरा जन नानक बखसि मिलाहु ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला ४

चउथा ॥ आपे अँडज जेरज सेतज उतभुज आपे खँड आपे सभ लोइ ॥ आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु
 परोइ ॥ आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिँचे ढहि ढेरी होइ ॥ १ ॥ मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ सतिगुरु विचि
 नामु निधानु है पिआरा करि दइआ अँमितु मुखि चोइ ॥ रहाउ ॥ आपे जल थलि सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइ ॥
 सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइ ॥ आपे खेल खेलाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ २ ॥ आपे ही
 आपि निरमला पिआरा आपे निरमल सोइ ॥ आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ आपे अलखु न लखीऐ
 पिआरा आपि लखावै सोइ ॥ ३ ॥ आपे गहिर गँभीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ सभिं घट आपे भोगवै
 पिआरा विचि नारी पुरख सभु सोइ ॥ नानक गुप्त वरतदा पिआरा गुरुमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि महला ४ ॥
 आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै ॥ आपे वेखिं विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु आपै ॥ आपे वणिं
 तिणिं सभतु है पिआरा आपे गुरुमुखि जापै ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नाम रसि धापै ॥ अँमित नामु महा रसु मीठा गुरु
 सबदी चखिं जापै ॥ रहाउ ॥ आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा आपि तरै प्रभु आपै ॥ आपे जालु वताइदा पिआरा सभु जगु
 मछुली हरि आपै ॥ आपि अभुलु न भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥ २ ॥ आपे सिँडी नादु है पिआरा धुनि आपि
 वजाए आपै ॥ आपे जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै ॥ आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥ ३ ॥
 आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जपु जापै ॥ आपे अँमितु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै ॥ आपे आपि सलाहदा
 पिआरा जन नानक हरि रसि धापै ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे कँडा आपि तराजी प्रभिं आपि तोलिं तुलाइआ
 ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ ॥ आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टँकु चड़ाइआ ॥ १ ॥ मेरे मन
 हरि हरि धिआइ सुखु पाइआ ॥ हरि हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइआ ॥ रहाउ ॥ आपे धरती आपि जलु

पिआरा आपे करे कराइआ ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बँधि रखाइआ ॥ आपे ही भउ पाइदा पिआरा बँनि
 बकरी सीहु हटाइआ ॥ २ ॥ आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ ॥ आपे ही आपि वरतदा
 पिआरा भै अगनि न सकै जलाइआ ॥ आपे मारि जीवाइदा पिआरा साह लैदे सभि लवाइआ ॥ ३ ॥ आपे ताणु दीबाणु है
 पिआरा आपे कारै लाइआ ॥ जिउ आपि चलाए तिउ चलीए पिआरे जिउ हरि प्रभ मेरे भाइआ ॥ आपे जँती जँतु है
 पिआरा जन नानक वजहि वजाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे खिसटि उपाइदा पिआरा करि सूरजु चँदु
 चानाणु ॥ आपि नितानिआ ताणु है पिआरा आपि निमाणिआ माणु ॥ आपि दइआ करि रखदा पिआरा आपे सुघडु
 सुजाणु ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु नीसाणु ॥ सतसंगति मिलि धिआइ तू हरि हरि बहुडि न आवण जाणु ॥ रहाउ
 ॥ आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाणु ॥ आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सचु नीसाणु ॥ आपे हुकमि
 वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥ २ ॥ आपे भगति भँडार है पिआरा आपे देवै दाणु ॥ आपे सेव कराइदा पिआरा आपि
 दीवावै माणु ॥ आपे ताड़ी लाइदा पिआरा आपे गुणी निधानु ॥ ३ ॥ आपे वडा आपि है पिआरा आपे ही परधानु ॥
 आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे तुलु परवाणु ॥ आपे अतुलु तुलाइदा पिआरा जन नानक सद कुरबाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥
 सोरठि महला ४ ॥ आपे सेवा लाइदा पिआरा आपे भगति उमाहा ॥ आपे गुण गावाइदा पिआरा आपे सबदि समाहा ॥
 आपे लेखणि आपि लिखारी आपे लेखु लिखाहा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु ओमाहा ॥ अनदिनु अनदु होवै वडभागी
 लै गुरि पूरै हरि लाहा ॥ रहाउ ॥ आपे गोपी कानु है पिआरा बनि आपे गऊ चराहा ॥ आपे सावल सुँदरा पिआरा आपे
 वँसु वजाहा ॥ कुवलीआपीडु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥ २ ॥ आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा
 करि वेखै आपि चोजाहा ॥ करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चँडूरु कँसु केसु माराहा ॥ आपे ही बलु आपि

है पिआरा बलु भँनै मूरख मुगधाहा ॥ ३ ॥ सभु आपे जगतु उपाइदा पिआरा वसि आपे जुगति हथाहा ॥ गलिं जेवड़ी
 आपे पाइदा पिआरा जिउ प्रभु खिँचै तिउ जाहा ॥ जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥ ४ ॥ ६ ॥
 सोरठि मः ४ दुतुके ॥ अनिक जनम विछुडे दुखु पाइआ मनमुखिं करम करै अहँकारी ॥ साधू परसत ही प्रभु पाइआ
 गोबिद सरणि तुमारी ॥ १ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी ॥ जब सतसँग भए साधू जन हिरदै मिलिआ सांति मुरारी
 ॥ रहाउ ॥ तु हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बुझहि गवारी ॥ सतिगुरु पुरख मिलिआ प्रभ प्रगटिआ गुण गावै
 गुण वीचारी ॥ २ ॥ गुरुमुखिं प्रगासु भइआ साति आई दुर्मति बुधि निवारी ॥ आतम ब्रहमु चीनि सुख पाइआ
 सतसँगति पुरख तुमारी ॥ ३ ॥ पुरखे पुरखु मिलिआ गुरु पाइआ जिन कउ किरपा भई तुमारी ॥ नानक अतुलु सहज
 सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि महला ४ ॥ हरि सिउ प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु
 रहणु न जाई ॥ जिउ मछुली बिनु नीरै बिनसै तिउ नामै बिनु मरि जाई ॥ १ ॥ मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई ॥ हउ
 अंतरि नामु मंगा दिनु राती नामे ही सांति पाई ॥ रहाउ ॥ जिउ चात्रिकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस न जाई ॥
 गुरुमुखिं जलु पावै सुख सहजे रहिआ भाइ सुभाई ॥ २ ॥ मनमुख भूखे दस दिस डोलहि बिनु नावै दुखु पाई ॥ जनमि
 मरै फिरि जोनी आवै दरगहि मिलै सजाई ॥ ३ ॥ क्रिपा करहि ता हरि गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई ॥ नानक दीन
 दइआल भए है त्रिसना सबदि बुझाई ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ४ पँचपदा ॥ अचरु चरै ता सिधि होई सिधी तु बुधि
 पाई ॥ प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥ १ ॥ मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥ गुरुमति
 राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सभ आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ॥ हरि जीउ
 क्रिपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥ २ ॥ जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिस नो देइ सु पाए ॥ वसतु

अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥ ३ ॥ जिनि इह चाखी सोई जाणै गूंगे की मिठिआई ॥ रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥ ४ ॥ सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ॥ जिस नो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ॥ ५ ॥ ६ ॥

सोरठि महला ५ घरु १ तितुके १४ सतिगुर प्रसादि ॥

किसु हउ जाची किसु आराधी जा सभु को कीता होसी ॥ जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी ॥ निरभउ निरँकारु भव खँडनु सभि सुख नव निधि देसी ॥ १ ॥ हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥ माणसु बपुडा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥ जिन हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई ॥ ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कबही जाई ॥ अनदु भइआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिली ॥ २ ॥ मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी ॥ उपदेसु सुणि साध सँतन का सभ चूकी काणि जमाणी ॥ जिन कउ क्रिपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥ ३ ॥ कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सरब जीआ दइआला ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम बाल गुपाला ॥ राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जिउ पिता पूत किरपाला ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई मनि तनि हिरदै धार ॥ साचा साहिबु मनि वसै भाई एहा करणी सार ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होए छार ॥ साधसंगति कउ वारिआ भाई जिन एकँकार आधार ॥ १ ॥ सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइ ॥ गुरि पूरै जाणाइआ भाई तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ रहाउ ॥ नाम विहूणे पचि मुए भाई गणत न जाइ गणी ॥ विणु सच सोच न पाईऐ भाई साचा अगम धणी ॥ आवण जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी ॥ गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी ॥ २ ॥ सिँमिति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइ ॥ अनिक करम करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बँधन पाइ ॥ चारे कुँडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर

नाही जाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥ ३ ॥ सचु सदा है निरमला भाई निरमल साचे सोइ ॥
 नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ ॥ कोटि मधे जनु पाईऐ भाई विरला कोई कोइ ॥ नानक रता सचि नामि
 भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि महला ५ दुतुके ॥ जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु
 दूराई ॥ आन आपना करत बीचारा तउ लउ बीचु बिखाई ॥ १ ॥ माधवे ऐसी देहु बुझाई ॥ सेवउ साध गहउ ओट
 चरना नह बिसरै मुहतु चसाई ॥ रहाउ ॥ रे मन मुग्ध अचेत चंचल चित तुम ऐसी रिदै न आई ॥ प्रानपति तिआगि
 आन तूरचिआ उरझिओ सँगि बैराई ॥ २ ॥ सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसँगति बुधि पाई ॥ साकत का बकना
 इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥ ३ ॥ कोटि पराध अछादिओ इहु मनु कहणा कछू न जाई ॥ जन नानक दीन सरनि
 आइओ प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पुत्र कलत्र लोक ग्रिह बनिता माइआ सनबँधेही ॥
 अँत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥ १ ॥ रे नर काहे पपोरहु देही ॥ ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु
 भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥ तीनि सँडिआ करि देही कीनी जल कूकर भसमेही ॥ होइ आमरो ग्रिह महि बैठा करण
 कारण बिसरोही ॥ २ ॥ अनिक भाति करि मणीए साजे काचै तागि परोही ॥ तूटि जाइगो सूतु बापुरे फिरि पाछै
 पछुतोही ॥ ३ ॥ जिनि तुम सिरजे सिरजिँ सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही ॥ जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर
 ओट गहेही ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरु पूरा भेटिओ बडभागी मनहिं भइआ परगासा ॥ कोइ न पहुचनहारा
 दूजा अपुने साहिब का भरवासा ॥ १ ॥ अपुने सतिगुर कै बलिहारै ॥ आगै सुखु पाछै सुख सहजा घरि आनँदु हमारै ॥
 रहाउ ॥ अँतरजामी करणैहारा सोई खसमु हमारा ॥ निरभउ भए गुर चरणी लागे इक राम नाम आधारा ॥ २ ॥ सफल
 दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा ॥ कँठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ॥ ३ ॥ वडी

वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ रासे ॥ नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सगले दूख बिनासे ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि
 महला ५ ॥ सुखीए कउ पेखै सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी ॥ करण करावनहार सुआमी आपन हाथि सँजोगी ॥
 १ ॥ मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता ॥ तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता ॥ रहाउ ॥ सँतसँगि
 जा का मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठाँढी ॥ हउमै रोगि जा का मनु बिआपित ओहु जनमि मरै बिललाती ॥ २ ॥
 गिआन अँजनु जा की नेत्री पडिआ ता कउ सरब प्रगासा ॥ अगिआनि अँधेरै सूझसि नाही बहुडि बहुडि भरमाता ॥ ३ ॥
 सुणि बेनँती सुआमी अपुने नानकु इहु सुखु मागै ॥ जह कीरतनु तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥ ४ ॥ ६ ॥ सोरठि
 महला ५ ॥ तन सँतन का धनु सँतन का मनु सँतन का कीआ ॥ सँत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ
 ॥ १ ॥ सँतन बिनु अवरु न दाता बीआ ॥ जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध
 मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईरे ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का सँगु वडभागी पाईरे ॥ २ ॥ रसना एक
 अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीरे ॥ अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि सँतन की लहीरे ॥ ३ ॥ निरगुन
 नीच अनाथ अपराधी ओट सँतन की आही ॥ बूडत मोह ग्रिह अँध कूप महि नानक लेहु निबाही ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि
 महला ५ घरु १ ॥ जा कै हिरदै वसिआ तू करते ता की तैं आस पुजाई ॥ दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरण धूरि मनि
 भाई ॥ १ ॥ तेरी अकथ कथा कथनु न जाई ॥ गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच बडाई ॥ रहाउ ॥ सो सो करम
 करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई ॥ सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥ २ ॥ सरब निरँतरि तुमहि समाने
 जा कउ तुधु आपि बुझाई ॥ गुर परसादि मिटिओ अगिआना प्रगट भए सभ ठाई ॥ ३ ॥ सोई गिआनी सोई धिआनी सोई
 पुरखु सुभाई ॥ कहु नानक जिंसु भए दइआला ता कउ मन ते बिसरि न जाई ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सगल

समग्री मोहि विआपी कब ऊचे कब नीचे ॥ सुधु न होईऐ काहू जतना ओड़कि को न पहूचे ॥ १ ॥ मेरे मन साध सरणि छुटकारा
 ॥ बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई फिरि आवत बारो बारा ॥ रहाउ ॥ ओहु जु भरमु भुलावा कहीअत तिन महि ओरझिओ
 सगल संसारा ॥ पूरन भगतु पुरख सुआमी का सरब थोक ते निआरा ॥ २ ॥ निंदउ नाही काहू बातै एहु खसम का कीआ ॥ जा
 कउ क्रिपा करी प्रभि मेरै मिलि साधसंगति नाउ लीआ ॥ ३ ॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर सभना करत उधारा ॥ कहु नानक गुर
 बिनु नहीं तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥ ४ ॥ ९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ राम नामु ततु सारा
 ॥ किलबिख काटे निमख अराधिआ गुरमुखि पारि उतारा ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु पुरख गिआनी ॥ सुणि सुणि महा त्रिपति मनु
 पावै साधू अँमित बानी ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति सचु पाईऐ सरब सुखा का दाता ॥ अपुने दास कउ भगति दानु देवै
 पूरन पुरखु बिधाता ॥ २ ॥ श्रवनी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिआईऐ सोई ॥ करण कारण समरथ सुआमी जाते ब्रिथा न कोई
 ॥ ३ ॥ वडै भागि रतन जनमु पाइआ करहु क्रिपा किरपाला ॥ साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गोपाला ॥ ४ ॥ १० ॥
 सोरठि महला ५ ॥ करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥ कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥
 १ ॥ प्रभ बाणी सबदु सुभाइआ ॥ गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु अमिति वडाई
 भगति वछल दइआला ॥ संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥ २ ॥ हरि अँमित नामु भोजनु नित भुँचहु सरब
 वेला मुखि पावहु ॥ जरा मरा तापु सभे नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥ ३ ॥ सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई
 ॥ प्रगट भई सगले जुग अँतरि गुर नानक की वडिआई ॥ ४ ॥ ११ ॥

सोरठि महला ५ वरु २ चउपदे १४ सतिगुर प्रसादि ॥

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ सुणि मीता जीउ

हमारा बलि बलि जासी हरि दरसन देहु दिखाई ॥ १ ॥ सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥
पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तैकू देसा ॥ सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ॥ २ ॥ मानु
न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईरे ॥ सुणि मीता जीउ पिँडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसन हरि जीउ पाईरे ॥ ३ ॥
भइओ अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरि नामा है मीठा ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरँजनु डीठा ॥ ४ ॥
१ ॥ १२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे ॥ प्रतिपालै नित सारि समालै
इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥ १ ॥ हरि आराधि न जाना रे ॥ हरि हरि गुर गुर करता रे ॥ हरि जीउ नामु परिओ राम
दासु ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥ पेखत सुनत सदा हत सँगे मै मूरख जानिआ दूरी
रे ॥ २ ॥ हरि बिअँतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे
॥ ३ ॥ मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥ गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न
परिआ रे ॥ ४ ॥ २ ॥ १३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जिना बात को बहुतु अँदिसरो ते मिटे सभि गइआ ॥ सहज सैन अरु
सुखमन नारी ऊध कमल बिगसइआ ॥ १ ॥ देखहु अचरजु भइआ ॥ जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुर
दइआ ॥ रहाउ ॥ जोइ दूत मोहि बहुतु संतावत ते भइआनक भइआ ॥ करहि बेनती राखु ठाकुर ते हम तेरी सरनइआ ॥
२ ॥ जह भँडारु गोबिंद का खुलिआ जिह प्रापति तिह लइआ ॥ एकु रतनु मो कउ गुरि दीना मेरा मनु तनु सीतलु थिआ
॥ ३ ॥ एक बूँद गुरि अँमितु दीनो ता अटलु अमरु न मुआ ॥ भगति भँडार गुरि नानक कउ सउपे फिरि लेखा मूलि न
लइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ चरन कमल सिउ जा का मनु लीना से जन त्रिपति अघाई ॥ गुण अमोल
जिसु रिदै न वसिआ ते नर त्रिसन त्रिखाई ॥ १ ॥ हरि आराधे अरोग अनदाई ॥ जिस नो विसरै मेरा राम सनेही

तिसु लाख बेदन जणु आई ॥ रहाउ ॥ जिह जन ओट गही प्रभ तेरी से सुखीए प्रभ सरणे ॥ जिह नर बिसरिआ पुरखु
 बिधाता ते दुखीआ महि गनणे ॥ २ ॥ जिह गुर मानि प्रभू लिव लाई तिह महा अनँद रसु करिआ ॥ जिह प्रभू बिसारि गुर
 ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ॥ ३ ॥ जितु को लाइआ तित ही लाग़ा तैसो ही वरतारा ॥ नानक सह पकरी सँतन
 की रिदँ भए मगन चरनारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ राजन महि राजा उरझाइओ मानन महि अभिमानी
 ॥ लोभन महि लोभी लोभाइओ तित हरि रँगि रचे गिआनी ॥ १ ॥ हरि जन कउ इही सुहावै ॥ पेखि निकटि करि सेवा
 सतिगुर हरि कीरतनि ही त्रिपतावै ॥ रहाउ ॥ अमलन सिउ अमली लपटाइओ भूमन भूमि पिआरी ॥ खीर सँगि बारिकु है
 लीना प्रभ सँत ऐसे हितकारी ॥ २ ॥ बिदिआ महि बिदुअँसी रचिआ नैन देखि सुखु पावहि ॥ जैसे रसना सादि लुभानी
 तित हरि जन हरि गुण गावहि ॥ ३ ॥ जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी ॥ नानक पिआस लगी दरसन
 की प्रभु मिलिआ अँतरजामी ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुनु तू दाता ॥
 हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥ १ ॥ माधो हम ऐसे तू ऐसा ॥ हम पापी तुम पाप खँडन नीको
 ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिँडु दे प्राना ॥ निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु
 मिहरवाना ॥ २ ॥ तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥ तुम सुखदाई पुख बिधाते तुम राखहु
 अपुने बाला ॥ ३ ॥ तुम निधान अटल सुलितान जीअ जँत सभि जाचै ॥ कहु नानक हम इहै हवाला राखु सँतन कै पाछै
 ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥ सोरठि महला ५ घरु २ ॥ मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे ॥ पावक सागर
 अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥ १ ॥ माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा ॥ ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥ कीते कउ मैरै
 सँमानै करणहारु त्रिणु जानै ॥ तू दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥ २ ॥ खिन महि अवरु खिनै महि

अवरा अचरज चलत तुमारे ॥ रूढो गूढो गहिर गँभीरो ऊचौ अगम अपारे ॥ ३ ॥ साधसँगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी
 तुमारी बाणी ॥ अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥ ४ ॥ ७ ॥ १८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हम सँतन
 की रेनु पिआरे हम सँतन की सरणा ॥ सँत हमारी ओट सताणी सँत हमारा गहणा ॥ १ ॥ हम सँतन सिउ बणि आई ॥
 पूरबि लिखिआ पाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ सँतन सिउ मेरी लेवा देवी सँतन सिउ बिउहारा ॥ सँतन सिउ हम लाहा
 खाटिआ हरि भगति भरे भँडारा ॥ २ ॥ सँतन मो कउ पूँजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥ धरमराइ अब कहा करैगो
 जउ फाटिओ सगलो लेखा ॥ ३ ॥ महा अनँद भए सुखु पाइआ सँतन कै परसादे ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रँगि
 रते बिसमादे ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥ सोरठि मः ५ ॥ जेती समग्री देखह रे नर तेती ही छडि जानी ॥ राम नाम सँगि करि
 बिउहारा पावहि पदु निरबानी ॥ १ ॥ पिआरे तू मेरो सुखदाता ॥ गुरि पूरै दीआ उपदेसा तुम ही सँगि पराता ॥ रहाउ ॥
 काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नहीं पाईए ॥ २ ॥ घाल न भानै अँतर बिधि जानै ता की करि मन सेवा ॥ करि
 पूजा होमि इहु मनुआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥ ३ ॥ गोबिद दामोदर दइआल माधवे पारब्रहम निरँकारा ॥ नामु वरतणि नामो
 वालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥ ४ ॥ ९ ॥ २० ॥ सोरठि महला ५ ॥ मिरतक कउ पाइओ तनि सासा बिछुरत आनि
 मिलाइआ ॥ पसू परेत मुगध भए स्रोते हरि नामा मुखि गाइआ ॥ १ ॥ पूरे गुर की देखु वडाई ॥ ता की कीमति कहणु न
 जाई ॥ रहाउ ॥ दूख सोग का ढाहिओ डेरा अनद मँगल बिसरामा ॥ मन बाँछत फल मिले अचिँता पूरन होए कामा ॥ २ ॥
 ईहा सुखु आगै मुख ऊजल मिटि गए आवण जाणे ॥ निरभउ भए हिरदै नामु वसिआ अपुने सतिगुर कै मनि भाणे ॥ ३ ॥
 ऊठत बैठत हरि गुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा ॥ कहु नानक ता के पूर करँमा जा का गुर चरनी मनु लागा ॥

४ ॥ १० ॥ २१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ रतनु छाडि कउडी सँगि लागे जा ते कछु न पाईये ॥ पूरन पारब्रहम परमेसुर मेरे
 मन सदा धिआईये ॥ १ ॥ सिमरहु हरि हरि नामु परानी ॥ बिनसै काची देह अगिआनी ॥ रहाउ ॥ मिग त्रिसना अरु
 सुपन मनोरथ ता की कछु न वडाई ॥ राम भजन बिनु कामि न आवसि सँगि न काहू जाई ॥ २ ॥ हउ हउ करत बिहाइ
 अवरदा जीअ को कामु न कीना ॥ धावत धावत नह त्रिपतासिआ राम नामु नही चीना ॥ ३ ॥ साद बिकार बिखै रस
 मातो असँख खते करि फेरे ॥ नानक की प्रभ पाहि बिनँती काटहु अवगुण मेरे ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२ ॥ सोरठि महला ५ ॥
 गुण गावहु पूरन अबिनासी काम क्रोध बिखु जारे ॥ महा बिखमु अगनि को सागरु साधू सँगि उधारे ॥ १ ॥ पूरै गुरि
 मेटिओ भरमु अँधेरा ॥ भजु प्रेम भगति प्रभु नेरा ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु निधान रसु पीआ मन तन रहे अघाई ॥ जत
 कत पूरि रहिओ परमेसरु कत आवै कत जाई ॥ २ ॥ जप तप सँजम गिआन तत बेता जिंसु मनि वसै गोपाला ॥ नामु
 रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ता की पूरन घाला ॥ ३ ॥ कलि कलेस मिटे दुख सगले काटी जम की फासा ॥ कहु नानक
 प्रभि किरपा धारी मन तन भए बिगासा ॥ ४ ॥ १२ ॥ २३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ करण करावणहार प्रभु दाता पारब्रहम
 प्रभु सुआमी ॥ सगले जीअ कीए दइआला सो प्रभु अँतरजामी ॥ १ ॥ मेरा गुरु होआ आपि सहाई ॥ सूख सहज आनँद
 मँगल रस अचरज भई बडाई ॥ रहाउ ॥ गुर की सरणि पर भै नासे साची दरगह माने ॥ गुण गावत आराधि नामु हरि
 आए अपुनै थाने ॥ २ ॥ जै जैकारु करै सभ उसतति सँगति साध पिआरी ॥ सद बलिहारि जाउ प्रभ अपुने जिनि पूरन
 पैज सवारी ॥ ३ ॥ गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे जिनि जिनि दरसनु पाइआ ॥ भइओ क्रिपालु नानक प्रभु अपुना
 अनद सेती घरि आइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ
 ॥ दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी पूरा सतिगुरु धिआइआ ॥ १ ॥ प्रभ जीउ तुनेरो साहिबु दाता ॥ करि किरपा प्रभ

दीन दइआला गुण गावउ रँगि राता ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि नामु निधानु द्विड़इआ चिँता सगल बिनासी ॥ करि किरपा
 अपुनो करि लीना मनि वसिआ अबिनासी ॥ २ ॥ ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि अपुनै राखे ॥ चरन कमल
 बसे रिद अँतरि अँम्रित हरि रसु चाखे ॥ ३ ॥ करि सेवा सेवक प्रभ अपुने जिनि मन की इछ पुजाई ॥ नानक दास ता कै
 बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई ॥ ४ ॥ १४ ॥ २५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ माइआ मोह मगनु अँधिआरै देवनहारु न जानै
 ॥ जीउ पिँडु साजि जिनि रचिआ बलु अपुनो करि मानै ॥ १ ॥ मन मूडे देखि रहिओ प्रभ सुआमी ॥ जो किछु करहि सोई
 सोई जाणै रहै न कछूरे छानी ॥ रहाउ ॥ जिहवा सुआद लोभ मदि मातो उपजे अनिक बिकारा ॥ बहुतु जोनि भरमत दुखु
 पाइआ हउमै बँधन के भारा ॥ २ ॥ देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा सँगि फाकै ॥ चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब
 कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥ ३ ॥ दीन दइआल पूरन दुख भँजन तुम बिनु ओट न काई ॥ काठि लेहु संसार सागर महि नानक
 प्रभ सरणाई ॥ ४ ॥ १५ ॥ २६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमु होआ सहाई कथा कीरतनु सुखदाई ॥ गुर पूरे की बाणी
 जपि अनदु करहु नित प्राणी ॥ १ ॥ हरि साचा सिमरहु भाई ॥ साध सँगि सदा सुखु पाईरे हरि बिसरि न कबहू जाई ॥
 रहाउ ॥ अँम्रित नामु परमेसरु तेरा जो सिमरै सो जीवै ॥ जिस नो करमि परापति होवै सो जनु निरमलु थीवै ॥ २ ॥
 बिघन बिनासन सभि दुख नासन गुर चरणी मनु लागा ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी अनदिनु हरि रँगि जागा ॥ ३ ॥
 मन इछे सेई फल पाए हरि की कथा सुहेली ॥ आदि अँति मधि नानक कउ सो प्रभु होआ बेली ॥ ४ ॥ १६ ॥ २७ ॥
 सोरठि महला ५ पँचपदा ॥ बिनसै मोहु मेरा अरु तेरा बिनसै अपनी धारी ॥ १ ॥ संतहु इहा बतावहु कारी ॥ जितु हउमै
 गरबु निवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब भूत पारब्रहमु करि मानिआ होवां सगल रेनारी ॥ २ ॥ पेरिओ प्रभ जीओ अपुनै
 सँगे चूकै भीति भ्रमारी ॥ ३ ॥ अउखधु नामु निरमल जलु अँम्रितु पाईरे गुरु दुआरी ॥ ४ ॥ कह नानक जिसु

मसतकि लिखिआ तिसु गुर मिलि रोग बिदारी ॥ ५ ॥ १७ ॥ २८ ॥

सोरठि महला ५ वरु २ दुपदे १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥ ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥ १ ॥
संतहु घटि घटि रहिआ समाहिओ ॥ पूरन पूरि रहिओ सरब महि जलि थलि रमईआ आहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण
निधान नानकु जसु गावै सतिगुरि भरमु चुकाइओ ॥ सरब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइओ ॥ २ ॥ १ ॥
२९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि होइ अनंदा बिनसै जनम मरण भै दुखी ॥ चारि पदारथ नव निधि पावहि
बहरि न त्रिसना भुखी ॥ १ ॥ जा को नामु लैत तू सुखी ॥ सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ॥ १
॥ रहाउ ॥ सांति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी ॥ गुर नानक कउ प्रभू दिखाइआ जलि थलि
त्रिभवणि रुखी ॥ २ ॥ २ ॥ ३० ॥ सोरठि महला ५ ॥ काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इन ते आपि छडावहु ॥ इह भीतर
ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥ १ ॥ अपुनी बिधि आपि जनावहु ॥ हरि जन मंगल गावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
बिसरु नाही कबहु हीए ते इह बिधि मन महि पावहु ॥ गुरु पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु ॥ २ ॥ ३
॥ ३१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि सभु कछु पाईए बिरथी घाल न जाई ॥ तिसु प्रभ तिआगि अवर कत राचहु
जो सभ महि रहिआ समाई ॥ १ ॥ हरि हरि सिमरहु संत गोपाला । साधसंगि मिलि नामु धिआवहु पूरन होवै घाला ॥ १
॥ रहाउ ॥ सारि समालै निति प्रतिपालै प्रेम सहित गलि लावै ॥ कहु नानक प्रभ तुमरे बिसरत जगत जीवनु कैसे पावै
॥ २ ॥ ४ ॥ ३२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई ॥ गुण निधान भगतन
कउ बरनि बिरला पावै कोई ॥ १ ॥ मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ॥ जा की सरणि पइआं सुखु पाईए बाहुडि दूखु न

होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी साध सँगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई ॥ तिन की धूरि नानक दास बाछै जिन हरि नामु
 रिदै परोई ॥ २ ॥ ७ ॥ ३३ ॥ सोरठि महला ७ ॥ जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥ दरसन भेटत होत
 निहाला हरि का नामु बीचारै ॥ १ ॥ मेरा बैदु गुरु गोविंदा ॥ हरि हरि नाम अउखधु मुखि देवै काटै जम की फँधा ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणै हारा ॥ अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥ २ ॥ ६ ॥
 ३४ ॥ सोरठि महला ७ ॥ अंतर की गति तुम ही जानी तुझ ही पाहि निबेरो ॥ बखसि लैहु साहिब प्रभ अपने लाख खते
 करि फेरो ॥ १ ॥ प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो ॥ हरि चरण सरण मोहि चेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो
 गुनी गहेरो ॥ काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ नानक कहा निहोरो ॥ २ ॥ ७ ॥ ३५ ॥ सोरठि मः ७ ॥ भए क्रिपाल
 गुरु गोविंदा सगल मनोरथ पाए ॥ असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ॥ १ ॥ भलो समूरतु पूरा ॥ सांति
 सहज आनंद नामु जपि वाजे अनहद तूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई ॥ हरि नामु
 निधानु नानक जन पाइआ सगली इछ पुजाई ॥ २ ॥ ८ ॥ ३६ ॥ सोरठि महला ७ ॥ गुरु के चरन बसे रिद भीतरि सुभ
 लखण प्रभि कीने ॥ भए क्रिपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥ १ ॥ मेरो गुरु रखवारो मीत ॥ दूण चऊणी दे
 वडिआई सोभा नीता नीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत प्रभि सगल उधारे दरसनु देखणहारे ॥ गुरु पूरे की अचरज वडिआई
 नानक सद बलिहारे ॥ २ ॥ ९ ॥ ३७ ॥ सोरठि महला ७ ॥ संचनि करउ नाम धनु निरमल थाती अगम अपार ॥ बिलछि
 बिनोद आनंद सुख माणहु खाइ जीवहु सिख परवार ॥ १ ॥ हरि के चरन कमल आधार ॥ संत प्रसादि पाइओ सच बोहिथु
 चडि लँघउ बिखु संसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भए क्रिपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो
 नानक नाही सुमार ॥ २ ॥ १० ॥ ३८ ॥ सोरठि महला ७ ॥ गुरि पूरै अपनी कल धारी सभ घट उपजी दइआ ॥

आपे मेलिं वडाई कीनी कुसल खेम सभ भइआ ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा मेरै नालि ॥ पारब्रह्म जपि सदा निहाल ॥ रहाउ
 ॥ अंतरि बाहरि थान थनंतरि जत कत पेखउ सोई ॥ नानक गुरु पाइओ वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ २ ॥
 ११ ॥ ३९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सूख मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ ॥ राखनहारै राखिओ
 बारिकु सतिगुरि तापु उतारिआ ॥ १ ॥ उबरे सतिगुर की सरणाई ॥ जा की सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥ घर महि
 सूख बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भए दइआला ॥ नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला ॥ २ ॥ १२
 ॥ ४० ॥ सोरठि महला ५ ॥ साधू सँगि भइआ मनि उदमु नामु रतनु जसु गाई ॥ मिटि गई चिंता सिमरि अनंता
 सागरु तरिआ भाई ॥ १ ॥ हिरदै हरि के चरण वसाई ॥ सुखु पाइआ सहज धुनि उपजी रोगा घाणि मिटाई ॥ रहाउ
 ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई ॥ नानक भगत भए अबिनासी अपुना प्रभु भइआ सहाई ॥ २
 ॥ १३ ॥ ४१ ॥ सोरठि मः ५ ॥ गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥ आठ पहर आराधहु सुआमी
 पूरन घाल हमारी ॥ १ ॥ हरि जीउ तू सुख संपति रासि ॥ राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥ जो
 मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अँदेसा ॥ २ ॥ १४ ॥ ४२
 ॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ ॥ तापु रोग गए गुर बचनी मन इछे
 फल पाइआ ॥ १ ॥ मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥ करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ अनंद
 बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला ॥ जै जैकार भए जग भीतरि होआ पारब्रह्म रखवाला ॥ २ ॥ १५
 ॥ ४३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हमरी गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि ॥ हाथ देइ राखे करि अपुने सदा सदा
 रंगु माणि ॥ १ ॥ साचा साहिबु सद मिहरवाण ॥ बंधु पाइआ मेरै सतिगुर पूरै होई सरब कलिआण ॥ रहाउ ॥

जीउ पाइ पिँडु जिनि साजिआ दिता पैणु खाणु ॥ अपने दास की आपि पैज राखी नानक सद कुरबाणु ॥ २ ॥ १६
 ॥ ४४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ दुस्तु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभ संसारु उबारिआ ॥ पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी
 अपना बिरदु समारिआ ॥ १ ॥ होई राजे राम की रखवाली ॥ सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥
 रहाउ ॥ पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा ॥ बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की
 अरदासा ॥ २ ॥ १७ ॥ ४५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ बखसिआ पारब्रहम परमेसरि सगले रोग बिदारे ॥ गुर पूरे की
 सरणी उबरे कारज सगल सवारे ॥ १ ॥ हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि ॥ तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै अपनी किरपा
 धारि ॥ रहाउ ॥ सदा अनंद करह मेरे पिआरे हरिगोविदु गुरि राखिआ ॥ वडी वडिआई नानक करते की साचु सबदु
 सति भाखिआ ॥ २ ॥ १८ ॥ ४६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ भए क्रिपाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि ॥ सतिगुरि तापु
 गवाइआ भाई ठांठि पई संसारि ॥ अपने जीअ जंत आपे राखे जमहि कीओ हटतारि ॥ १ ॥ हरि के चरण रिदै उरि
 धारि ॥ सदा सदा प्रभु सिमरीए भाई दुख किलबिख काटणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि
 रचिआ सभु कोइ ॥ करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ ॥ नानक प्रभू धिआईए भाई मनु तनु सीतलु होइ ॥ २
 ॥ १९ ॥ ४७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ संतहु हरि हरि नामु धिआई ॥ सुख सागर प्रभु विसरउ नाही मन चिँदिअड़ा फलु
 पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ अपनी किरपा धारी ॥ पारब्रहम प्रभ भए दइआला दुखु मिटिआ सभ
 परवारी ॥ १ ॥ सब निधान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो ॥ नानक पति राखी परमेसरि उधारिआ सभु संसारो
 ॥ २ ॥ २० ॥ ४८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ मेरा सतिगुरु रखवाला होआ ॥ धारि क्रिपा प्रभ हाथ दे राखिआ हरिगोविदु
 नवा निरोआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तापु गवाइआ प्रभि आपि मिटाइआ जन की लाज रखाई ॥ साधसंगति ते सभ फल पाए

सतिगुर कै बलि जाई ॥ १ ॥ हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ अटल बचनु नानक गुर
तेरा सफल करु मसतकि धारिआ ॥ २ ॥ २१ ॥ ४९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जँत्र सभि तिस के कीए सोई सँत
सहाई ॥ अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडाई ॥ १ ॥ पारब्रह्मपूरा मेरै नालि ॥ गुरि पूरै पूरी सभ राखी होए सरब
दइआल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु नानकु नामु धिआए जीअ प्रान का दाता ॥ अपुने दास कउ कँठि लाइ राखै जिउ
बारिक पित माता ॥ २ ॥ २२ ॥ ५० ॥

सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे वरि सतिगुर प्रसादि ॥

मिलि पँचहु नही सहसा चुकाइआ ॥ सिकदारहु नह पतीआइआ ॥ उमरावहु आगै झेरा ॥ मिलि राजन राम निबेरा ॥ १
॥ अब ढूढन कतहु न जाई ॥ गोबिद भेटे गुर गोसाई ॥ रहाउ ॥ आइआ प्रभ दरबारा ॥ ता सगली मिटी पूकारा ॥
लबधि आपणी पाई ॥ ता कत आवै कत जाई ॥ २ ॥ तह साच निआइ निबेरा ॥ ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा ॥
अंतरजामी जानै ॥ बिनु बोलत आपि पछानै ॥ ३ ॥ सरब थान को राजा ॥ तह अनहद सबद अगाजा ॥ तिसु पहि
किआ चतुराई ॥ मिलु नानक आपु गवाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हिरदै नामु वसाइहु ॥ घरि बैठे गुरु
धिआइहु ॥ गुरि पूरै सचु कहिआ ॥ सो सुखु साचा लहिआ ॥ १ ॥ अपुना होइओ गुरु मिहरवाना ॥ अनद सूख
कलिआण मँगल सिउ घरि आए करि इसनाना ॥ रहाउ ॥ साची गुर वडिआई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ सिरि
साहा पातिसाहा ॥ गुर भेटत मनि ओमाहा ॥ २ ॥ सगल पराछत लाथे ॥ मिलि साधसंगति कै साथे ॥ गुण निधान
हरि नामा ॥ जपि पूरन होए कामा ॥ ३ ॥ गुरि कीनो मुकति दुआरा ॥ सभ खिसटि करै जैकारा ॥ नानक प्रभु मेरै साथे
॥ जनम मरण भै लाथे ॥ ४ ॥ २ ॥ ५२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै किरपा धारी ॥ प्रभि पूरी लोच हमारी ॥ करि

इसनानु गिहि आए ॥ अनद मंगल सुख पाए ॥ १ ॥ सँतहु राम नामि निसतरीए ॥ ऊठत बैठत हरि हरि धिआईए
 अनदिनु सुक्रितु करीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए ॥ कोटि जनम के लिकबिख
 नासे हरि चरणी चितु लाए ॥ २ ॥ उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी ॥ जीअ जँत सभि भए पवित्रा
 सतिगुर की सचु साखी ॥ ३ ॥ बिघन बिनासन सभ दुख नासन सतिगुरि नामु द्विडाइआ ॥ खोए पाप भए सभ पावन
 जन नानक सुखि घरि आइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ साहिबु गुनी गहेरा ॥ घरु लसकरु सभु तेरा ॥
 रखवाले गुर गोपाला ॥ सभि जीअ भए दइआला ॥ १ ॥ जपि अनदि रहउ गुर चरणा ॥ भउ कतहि नही प्रभ सरणा ॥
 रहाउ ॥ तेरिआ दासा रिदै मुरारी ॥ प्रभि अबिचल नीव उसारी ॥ बलु धनु तकीआ तेरा ॥ तू भारो ठाकुरु मेरा ॥ २ ॥
 जिनि जिनि साधसँगु पाइआ ॥ सो प्रभि आपि तराइआ ॥ करि किरपा नाम रसु दीआ ॥ कुसल खेम सभ थीआ ॥ ३
 ॥ होए प्रभू सहार्इ ॥ सभ उठि लागी पाई ॥ सासि सासि प्रभु धिआईए ॥ हरि मंगलु नानक गाईए ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५४ ॥
 सोरठि महला ५ ॥ सुख सहज आनँदा ॥ प्रभु मिलिओ मनि भावँदा ॥ पूरै गुरि किरपा धारी ॥ ता गति भई हमारी ॥ १
 ॥ हरि की प्रेम भगति मनु लीना ॥ नित बाजे अनहत बीना ॥ रहाउ ॥ हरि चरण की ओट सताणी ॥ सभ चूकी काणि
 लोकाणी ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥ हरि रसकि रसकि गुण गाइआ ॥ २ ॥ प्रभ काटिआ जम का फासा ॥ मन पूरन
 होई आसा ॥ जह पेखा तह सोई ॥ हरि प्रभ बिनु अवरु न कोई ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि राखे ॥ सभि जनम जनम दुख
 लाथे ॥ निरभउ नामु धिआइआ ॥ अटल सुखु नानक पाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ ठाठि पाई
 करतारे ॥ तापु छोडि गइआ परवारे ॥ गुरि पूरै है राखी ॥ सरणि सचे की ताकी ॥ १ ॥ परमेसरु आपि होआ रखवाला
 ॥ सांति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु दीओ दारु ॥ तिनि

सगला रोगु बिदारु ॥ अपणी किरपा धारी ॥ तिनि सगली बात सवारी ॥ २ ॥ प्रभि अपना बिरदु समारिआ ॥ हमरा
 गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ गुर का सबदु भइओ साखी ॥ तिनि सगली लाज राखी ॥ ३ ॥ बोलाइआ बोली तेरा ॥ तू
 साहिबु गुणी गहेरा ॥ जपि नानक नामु सचु साखी ॥ अपुने दास की पैज राखी ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७६ ॥ सोरठि महला ७
 ॥ विचि करता पुरखु खलोआ ॥ वालु न विँगा होआ ॥ मजनु गुर आंदा रासे ॥ जपि हरि हरि किलविख नासे ॥ १ ॥
 सँतह रामदास सरोवरु नीका ॥ जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जैकारु जगु गावै ॥
 मन चिँदिअडे फल पावै ॥ सही सलामति नाइ आए ॥ अपना प्रभू धिआए ॥ २ ॥ सँत सरोवर नावै ॥ सो जनु परम
 गति पावै ॥ मरै न आवै जाई ॥ हरि हरि नामु धिआई ॥ ३ ॥ इहु ब्रहम बिचारु सु जानै ॥ जिसु दइआलु होइ भगवानै
 ॥ बाबा नानक प्रभ सरणाई ॥ सभ चिँता गणत मिटाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ ७७ ॥ सोरठि महला ७ ॥ पारब्रहमि निबाही पूरी
 ॥ काई बात न रहीआ ऊरी ॥ गुरि चरन लाइ निसतारे ॥ हरि हरि नामु समाहरे ॥ १ ॥ अपने दास का सदा रखवाला
 ॥ करि किरपा अपुने करि राखे मात पिता जिउ पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ ॥ जिनि जम का पँथु
 मिटाइआ ॥ हरि भगति भाइ चितु लागा ॥ जपि जीवहि से वडभागा ॥ २ ॥ हरि अँमित बाणी गावै ॥ साधा की धूरी
 नावै ॥ अपना नामु आपे दीआ ॥ प्रभ करणहार रखि लीआ ॥ ३ ॥ हरि दरसन प्राण अधारा ॥ इहु पूरन बिमल बीचारा
 ॥ करि किरपा अँतरजामी ॥ दास नानक सरणि सुआमी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ७८ ॥ सोरठि महला ७ ॥ गुरि पूरै चरनी
 लाइआ ॥ हरि सँगि सहाई पाइआ ॥ जह जाईरे तहा सुहेले ॥ करि किरपा प्रभि मेले ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु सदा सुभाई
 ॥ मन चिँदे सगले फल पावहु जीअ कै सँगि सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाराइण प्राण अधारा ॥ हम सँत जनां रेनारा ॥
 पतित पुनीत करि लीने ॥ करि किरपा हरि जसु दीने ॥ २ ॥ पारब्रहमु करे प्रतिपाला ॥ सद जीअ सँगि रखवाला ॥

हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईये ॥ बहुड़ि न जोनी पाईये ॥ ३ ॥ जिंसु देवै पुरखु बिधाता ॥ हरि रसु तिन ही जाता ॥
जमकँकरु नेड़ि न आइआ ॥ सुखु नानक सरणी पाइआ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ५९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै कीती पूरी ॥
प्रभु रवि रहिआ भरपूरी ॥ खेम कुसल भइआ इसनाना ॥ पारब्रहम विटहु कुरबाना ॥ १ ॥ गुर के चरन कवल रिद धारे ॥
बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि साधू दुरमति खोए ॥ पतित पुनीत सभ होए ॥
रामदासि सरोवर नाते ॥ सभ लाथे पाप कमाते ॥ २ ॥ गुन गोबिंद नित गाईये ॥ साधसंगि मिलि धिआईये ॥ मन
बांछत फल पाए ॥ गुरु पूरा रिदै धिआए ॥ ३ ॥ गुर गोपाल आनँदा ॥ जपि जपि जीवै परमानँदा ॥ जन नानक नामु
धिआइआ ॥ प्रभ अपना बिरदु रखाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६० ॥ रागु सोरठि महला ५ ॥ दह दिस चत्र मेघ घटाघट दामनि
चमकि डराइओ ॥ सेज इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाएओ ॥ १ ॥ हुणि नही सँदेसरो माइओ ॥ एक कोसरो
सिधि करत लालु तब चतुर पातरो आइओ ॥ रहाउ ॥ किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुखदाइओ ॥ मँदरि चरि
कै पँथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥ २ ॥ हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ ॥ भांभीरी के पात
परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥ ३ ॥ भइओ किरपालु सरब को ठाकुरु सगरो दूखु मिटाइओ ॥ कहु नानक हउमै भीति गुरि
खोई तउ दइआरु बीठलो पाइओ ॥ ४ ॥ सभु रहिओ अँदेसरो माइओ ॥ जो चाहत सो गरु मिलाइओ ॥ सरब गुना
निधि राइओ ॥ रहाउ दूजा ॥ ११ ॥ ६१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गई बहोडु बँदी छोडु निरँकारु दुखदारी ॥ करमु न जाणा
धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ॥ नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥ १ ॥ हरि जीउ निमाणिआ तू
माणु ॥ निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥ जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध
कमावै ॥ करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ॥ पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥

हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईए ॥ कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईए ॥ अवर ओट मै सगली देखी इक तेरी ओट रहाईए ॥ ३ ॥ होइ दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती ॥ पूरा सतगुरु मेलि मिलवै सभ चूकै मन की चिंती ॥ हरि हरि नामु अवरखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए आनंदा दुख कलेस सभि नाठे ॥ गुन गावत धिआवत प्रभु अपना कारज सगले सांठे ॥ १ ॥ जगजीवन नामु तुमारा ॥ गुर पूरे दीओ उपदेसा जपि भउजलु पारि उतारा ॥ रहाउ ॥ तूहै मंत्री सुनहि प्रभ तूहै सभु किछु करणैहारा ॥ तू आपे दाता आपे भुगता किआ इहु जंतु विचारा ॥ २ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणी कीमति कहणु न जाई ॥ पेखि पेखि जीवै प्रभु अपना अचरजु तुमहि वडाई ॥ ३ ॥ धारि अनुग्रहु आपि प्रभ स्वामी पति मति कीनी पूरी ॥ सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६३ ॥ सोरठि मः ५ ॥ गुरु पूरा नमसकारे ॥ प्रभि सभे काज सवारे ॥ हरि अपणी किरपा धारी ॥ प्रभ पूरन पैज सवारी ॥ १ ॥ अपने दास को भइओ सहाई ॥ सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥ करतै पुरखि तालु दिवाइआ ॥ पिछै लागि चली माइआ ॥ तोटि न कतहु आवै ॥ मेरे पूरे सतगुरु भावै ॥ २ ॥ सिमरि सिमरि दइआला ॥ सभि जीअ भए किरपाला ॥ जै जैकारु गुसाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥ ३ ॥ तु भारो सुआमी मोरा ॥ इह पुंनु पदारथु तेरा ॥ जन नाक एकु धिआइआ ॥ सरब फला पुंनु पाइआ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६४ ॥

सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे १८ सितिगुर प्रसादि ॥

रामदास सरोवरि नाते ॥ सभि उतरे पाप कमाते ॥ निरमल होए करि इसनाना ॥ गुरि पूरे कीने दाना ॥ १ ॥ सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥ सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥ साधसंगि मलु लाथी ॥ पारब्रह्म भइओ साथी ॥ नानक नामु

धिआइआ ॥ आदि पुरख प्रभु पाइआ ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जित पारब्रह्म चिति आइआ ॥ सो घरु
 दयि वसाइआ ॥ सुख सागरु गुरु पाइआ ॥ ता सहसा सगल मिटाइआ ॥ १ ॥ हरि के नाम की वडिआई ॥ आठ पहर
 गुण गाई ॥ गुरु पूरे ते पाई ॥ रहाउ ॥ प्रभ की अकथ कहाणी ॥ जन बोलहि अँम्रित बाणी ॥ नानक दास वखाणी ॥
 गुरु पूरे ते जाणी ॥ २ ॥ २ ॥ ६६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु गुरि दीआ ॥ पाछै कुसल खेम गुरि कीआ ॥ सरब
 निधान सुख पाइआ ॥ गुरु अपुना रिदै धिआइआ ॥ १ ॥ अपने सतिगुरु की वडिआई ॥ मन इछे फल पाई ॥ सँतहु
 दिनु दिनु चडै सवाई ॥ रहाउ ॥ जीअ जँत सभि भए दइआला प्रभि अपने करि दीने ॥ सहज सुभाइ मिले गोपाला नानक
 साचि पतीने ॥ २ ॥ ३ ॥ ६७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरु का सबदु रखवारे ॥ चउकी चउगिरडद हमारे ॥ राम नामि
 मनु लागा ॥ जमु लजाइ करि भागा ॥ १ ॥ प्रभ जी तू मेरो सुखदाता ॥ बँधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु
 बिधाता ॥ रहाउ ॥ नानक प्रभु अबिनासी ॥ ता की सेव न बिरथी जासी ॥ अनद करहि तेरे दासा ॥ जपि पूरन होई
 आसा ॥ २ ॥ ४ ॥ ६८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरु अपुने बलिहारी ॥ जिनि पूरन पैज सवारी ॥ मन चिँदिआ फलु
 पाइआ ॥ प्रभु अपुना सदा धिआइआ ॥ १ ॥ सँतहु तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ करण कारण प्रभु सोई ॥ रहाउ ॥ प्रभि
 अपनै वर दीने ॥ सगल जीअ वसि कीने ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ ता सगले दूख मिटाइआ ॥ २ ॥ ५ ॥ ६९
 ॥ सोरठि महला ५ ॥ तापु गवाइआ गुरि पूरे ॥ वाजे अनहद तूरे ॥ सरब कलिआण प्रभि कीने ॥ करि किरपा आपि
 दीने ॥ १ ॥ बेदन सतिगुरि आपि गवाई ॥ सिख सँत सभि सरसे होए हरि हरि नामु धिआई ॥ रहाउ ॥ जो मँगहि सो
 लेवहि ॥ प्रभ अपणिआ सँता देवहि ॥ हरि गोविदु प्रभि राखिआ ॥ जन नानक साचु सुभाखिआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ७० ॥
 सोरठि महला ५ ॥ सोई कराइ जो तुधु भावै ॥ मोहि सिआणप कछू न आवै ॥ हम बारिक तउ सरणाई ॥ प्रभि आपे पैज

रखाई ॥ १ ॥ मेरा मात पिता हरि राइआ ॥ करि किरपा प्रतिपालण लागा करीं, तेरा कराइआ ॥ रहाउ ॥ जीअ जँत
 तेरे धारे ॥ प्रभ डोरी हाथि तुमारे ॥ जिं करावै सो करणा ॥ नानक दास तेरी सरणा ॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥ सोरठि महला
 ५ ॥ हरि नामु रिदै परोइआ ॥ सभु काजु हमारा होइआ ॥ प्रभ चरणी मनु लागा ॥ पूरन जा के भागा ॥ १ ॥ मिलि
 साधसँगि हरि धिआइआ ॥ आठ पहर अराधिओ हरि हरि मन चिँदिआ फलु पाइआ ॥ रहाउ ॥ परा पूरबला अँकुरु
 जागिआ ॥ राम नामि मनु लागिआ ॥ मनि तनि हरि दरसि समावै ॥ नानक दास सचे गुण गावै ॥ २ ॥ ८ ॥ ७२ ॥
 सोरठि महला ५ ॥ गुर मिलि प्रभू चितारिआ ॥ कारज सभिं सवारिआ ॥ मँदा को न अलाए ॥ सभ जै जैकारु सुणाए
 ॥ १ ॥ सँतहु साची सरणि सुआमी ॥ जीअ जँत सभिं हाथि तिसै कै सो प्रभु अँतरजामी ॥ रहाउ ॥ करतब सभिं
 सवारे ॥ प्रभिं अपुना बिरदु समारे ॥ पतित पावन प्रभ नामा ॥ जन नानक सद कुरबाना ॥ २ ॥ ९ ॥ ७३ ॥ सोरठि
 महला ५ ॥ पारब्रहमि साजि सवारिआ ॥ इहु लहुड़ा गुरू उबारिआ ॥ अनद करहु पित माता ॥ परमेसरु जीअ का
 दाता ॥ १ ॥ सुभ चितचनि दास तुमारे ॥ राखहि पैज दास अपुने की कारज आपि सवारे ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु
 परउपकारी ॥ पूरन कल जिनि धारी ॥ नानक सरणी आइआ ॥ मन चिँदिआ फलु पाइआ ॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥
 सोरठि महला ५ ॥ सदा सदा हरि जापे ॥ प्रभ बालक राखे आपे ॥ सीतला ठाकि रहाई ॥ बिघन गए हरि नाई ॥ १ ॥
 मेरा प्रभु होआ सदा दइआला ॥ अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइआ किरपाला ॥ रहाउ ॥ प्रभ करण
 कारण समराथा ॥ हरि सिमरत सभु दुखु लाथा ॥ अपने दास की सुणी बेनँती ॥ सभ नानक सुखि सवँती ॥ २ ॥ ११
 ॥ ७५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ अपना गुरू धिआए ॥ मिलि कुसल सेती घरि आए ॥ नामै की वडिआई ॥ तिसु कीमति
 कहणु न जाई ॥ १ ॥ सँतहु हरि हरि हरि आराधहु ॥ हरि आराधि सभो किछु पाईरे कारज सगले साधहु ॥ रहाउ ॥

प्रेम भगति प्रभ लागी ॥ सो पाए जिसु वडभागी ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ तिनि सरब सुखा फल पाइआ ॥ २ ॥
 १२ ॥ ७६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ परमेसरि दिता बँना ॥ दुख रोग का डेर भँना ॥ अनद करहि नर नारी ॥ हरि हरि प्रभि
 किरपा धारी ॥ १ ॥ सँतहु सुखु होआ सभ थाई ॥ पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ धुर की
 बाणी आई ॥ तिनि सगली चिँत मिटाई ॥ दइआल पुरख मिहरवाना ॥ हरि नानक साचु वखाना ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७
 ॥ सोरठि महला ५ ॥ ऐथै ओथै रखवाला ॥ प्रभ सतिगुर दीन दइआला ॥ दास अपने आपि राखे ॥ घटि घटि सबदु
 सुभाखे ॥ १ ॥ गुर के चरण ऊपरि बलि जाई ॥ दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूरनु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥ आपि
 सहाई होआ ॥ सचे दा सचा ढोआ ॥ तेरी भगति वडिआई ॥ पाई नानक प्रभ सरणाई ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥ सोरठि
 महला ५ ॥ सतिगुर पूरे भाणा ॥ ता जपिआ नामु रमाणा ॥ गोबिंद किरपा धारी ॥ प्रभि राखी पैज हमारी ॥ १ ॥ हरि
 के चरन सदा सुखदाई ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी आस न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा करे जिसु प्रानपति दाता
 सोई सँतु गुण गावै ॥ प्रेम भगति ता का मनु लीणा पारब्रहम मनि भावै ॥ २ ॥ आठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी
 लाथी ॥ सँगि मिलाइ लीआ मेरै करतै सँत साध भए साथी ॥ ३ ॥ करु गहि लीने सरबसु दीने आपहि आपु मिलाइआ ॥
 कहु नानक सरब थोक पूरन पूरा सतिगुरु पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ७९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गरीबी गदा हमारी ॥ खँना
 सगल रेनु छारी ॥ इसु आगै को न टिकै वेकारी ॥ गुर पूरे एह गल सारी ॥ १ ॥ हरि हरि नामु सँतन की ओटा ॥ जो
 सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँतसँगि जसु गाइआ ॥ इहु पूरन हरि धनु पाइआ ॥ कहु
 नानक आपु मिटाइआ ॥ सभु पारब्रहमु नदरी आइआ ॥ २ ॥ १६ ॥ ८० ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै पूरी कीनी ॥
 बखस अपुनी करि दीनी ॥ नित अनँद सुख पाइआ ॥ थाव सगले सुखी वसाइआ ॥ १ ॥ हरि की भगति

फल दाती ॥ गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किनही जाती ॥ रहाउ ॥ गुरबाणी गावह भाई ॥ ओह सफल सदा
 सुखदाई ॥ नानक नामु धिआइआ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ २ ॥ १७ ॥ ८१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरु पूरा
 आराधे ॥ कारज सगले साधे ॥ सगल मनोरथ पूरे ॥ बाजे अनहद तूरे ॥ १ ॥ संतहु राम जपत सुखु पाइआ ॥ संत
 असथानि बसे सुख सहजे सगले दूख मिटाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूरे की बाणी ॥ पारब्रहम मनि भाणी ॥ नानक
 दासि वखाणी ॥ निरमल अकथ कहाणी ॥ २ ॥ १८ ॥ ८२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ भूखे खावत लाज न आवै ॥ तिउ
 हरि जनु हरि गुण गावै ॥ १ ॥ अपने काज कउ किउ अलकाईरे ॥ जितु सिमरनि दरगह मुखु ऊजल सदा सदा सुखु
 पाईरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ कामी कामि लुभावै ॥ तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥ २ ॥ जिउ माता बालि लपटावै ॥
 तिउ गिआनी नामु कमावै ॥ ३ ॥ गुर पूरे ते पावै ॥ जन नानक नामु धिआवै ॥ ४ ॥ १९ ॥ ८३ ॥ सोरठि महला ५
 ॥ सुख सांदि घरि आइआ ॥ निंदक कै मुखि छाइआ ॥ पूरै गुरि पहिराइआ ॥ बिनसे दुख सबाइआ ॥ १ ॥ संतहु साचे
 की वडिआई ॥ जिनि अचरज सोभ बणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बोले साहिब कै भाणै ॥ दासु बाणी ब्रहमु वखाणै ॥ नानक
 प्रभ सुखदाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥ २ ॥ २० ॥ ८४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभु अपुना रिदै धिआए ॥ घरि सही
 सलामति आए ॥ संतोखु भइआ संसारे ॥ गुरि पूरै लै तारे ॥ १ ॥ संतहु प्रभु मेरा सदा दइआला ॥ अपने भगत की
 गणत न गणई राखै बाल गुपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि नामु रिदै उरि धारे ॥ तिनि सभे थोक सवारे ॥ गुरि पूरै तुसि
 दीआ ॥ फिरि नानक दूखु न थीआ ॥ २ ॥ २१ ॥ ८५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हरि मनि तनि वसिआ सोई ॥ जै जैकारु
 करे सभु कोई ॥ गुर पूरे की वडिआई ॥ ता की कीमति कही न जाई ॥ १ ॥ हउ कुरबानु जाई तेरे नावै ॥ जिस नो
 बखसि लैहि मेरे पिआरे सो जसु तेरा गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूँ भारो सुआमी मेरा ॥ संतां भरवासा तेरा ॥ नानक प्रभ

सरणाई ॥ मुखि निंदक कै छाई ॥ २ ॥ २२ ॥ ८६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु मेरे मीता ॥ पाछै आनदु प्रभि
 कीता ॥ परमेसुरि बगत बणाई ॥ फिरि डोलत कतहू नाहीं ॥ १ ॥ साचे साहिब सिउ मनु मानिआ ॥ हरि सरब निरंतरि
 जानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ जीअ तेरे दइआला ॥ अपने भगत करहि प्रतिपाला ॥ अचरजु तेरी वडिआई ॥ नित
 नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २३ ॥ ८७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ नालि नराइणे मेरै ॥ जमदूतु न आवै नेरै ॥ कँठि लाइ
 प्रभ राखै ॥ सतिगुर की सचु साखै ॥ १ ॥ गुरि पूरै पूरी कीती ॥ दुसमन मारि विडारे सगले दास कउ सुमति दीती ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ प्रभि सगले थान वसाए ॥ सुख सांदि फिरि आए ॥ नानक प्रभ सरणाए ॥ जिनि सगले रोग मिटाए ॥ २
 ॥ २४ ॥ ८८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सरब सुखा का दाता सतिगुरु ता की सरनी पाईए ॥ दरसनु भेटत होत अनंदा दूखु
 गइआ हरि गाईए ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु भाई ॥ नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥ तिसहि
 परापति जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई ॥ नानक की बेनंती प्रभ जी नामि रहा लिव लाई ॥ २ ॥ २५ ॥ ८९ ॥
 सोरठि महला ५ ॥ करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै ॥ जै जैकारु होतु जग भीतरि सबदु गुरू रसु चारवै
 ॥ १ ॥ प्रभ जी तेरी ओट गुसाई ॥ तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम्ह धिआई ॥ रहाउ ॥ जो जनु भजनु करे
 प्रभ तेरा तिसै अँदेसा नाहीं ॥ सतिगुर चरन लगे भउ मिटिआ हरि गुन गाए मन माहीं ॥ २ ॥ सूख सहज आनंद घनेरे
 सतिगुर दीआ दिलासा ॥ जिणि घरि आए सोभा सेती पूरन होई आसा ॥ ३ ॥ पूरा गुरु पूरी मति जा की पूरन प्रभ के
 कामा ॥ गुर चरनी लागि तरिओ भव सागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९० ॥ सोरठि महला ५ ॥
 भइओ किरपालु दीन दुख भँजनु आपे सभ बिधि थाटी ॥ खिन महि राखि लीओ जनु अपुना गुर पूरै बेड़ी काटी ॥ १ ॥
 मेरे मन गुर गोविंदु सद धिआईए ॥ सगल कलेस मिटहि इसु तन ते मन चिँदिआ फलु पाईए ॥ रहाउ ॥ जीअ जँत

जा के सभि खिने प्रभु ऊचा अगम अपारा ॥ साधसंगि नानक नामु धिआइआ मुख ऊजल भए दरबारा ॥ २ ॥ २७ ॥
 ९१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरउ अपुना साई ॥ दिनसुरैनि सद धिआई ॥ हाथ देइ जिनि राखे ॥ हरि नाम महा रस
 चाखे ॥ १ ॥ अपने गुर ऊपरु कुरबानु ॥ भए किरपाल पूरन प्रभ दाते जीअ होए मिहरवान ॥ रहाउ ॥ नानक जन
 सरनाई ॥ जिनि पूरन पैज रखाई ॥ सगले दूख मिटाई ॥ सुखु भुँचहु मेरे भाई ॥ २ ॥ २८ ॥ ९२ ॥ सोरठि महला ५
 ॥ सुनहु बिनँती ठाकुर मेरे जीअ जँत तेरे धारे ॥ राखु पैज नाम अपुने की करन करावनहारे ॥ १ ॥ प्रभ जीउ खसमाना
 करि पिआरे ॥ बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ सुणी पुकार समरथ सुआमी बँधन काटि सवारे ॥ पहिरि सिरपाउ सेवक जन
 मेले नानक प्रगट पहारे ॥ २ ॥ २९ ॥ ९३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जँत सभि वसि करि दीने सेवक सभि दरबारे ॥
 अँगीकारु कीओ प्रभ अपुने भव निधि पारि उतारे ॥ १ ॥ सँतन के कारज सगल सवारे ॥ दीन दइआल क्रिपाल क्रिपा
 निधि पूरन खसम हमारे ॥ रहाउ ॥ आउ बैठु आदरु सभ थाई ऊन न कतहूँ बाता ॥ भगति सिरपाउ दीओ जन अपुने
 प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥ २ ॥ ३० ॥ ९४ ॥

सोरठि महला ९ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥ श्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि साधसंगति सिमरु
 माधो होहि पतित पुनीत ॥ कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥ १ ॥ आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है
 समझि राखउ चीति ॥ कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥ २ ॥ १ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन की मन ही
 नाहि रही ॥ ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत रथ सँपति धन पूरन सभ मही
 ॥ अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥ १ ॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥ नानक

कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥ २ ॥ २ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥ पर दारा
 निँदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकति पँथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाड्आ ॥
 अँति सँग काहू नही दीना बिरथा आपु बँधाड्आ ॥ १ ॥ ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना
 ॥ घट ही माहि निरँजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥ २ ॥ बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥
 मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥ ३ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥ जिह
 सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अटल भइओ धूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ
 ॥ दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥ १ ॥ जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥
 महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बँधन तिह तूटा ॥ २ ॥ अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥
 नानक कहत चेत चिँतामनि तै भी उतरहि पारा ॥ ३ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ९ ॥ प्राणी कउनु उपाउ करै ॥ जा ते भगति
 राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥ कउनु नामु गुर जा
 कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥ १ ॥ कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥ अउर धरम ता कै सम नाहनि
 इह बिधि बेदु बतावै ॥ २ ॥ सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥ सो तुम ही माहि बसै निरँतरि नानक
 दरपनि निआई ॥ ३ ॥ ५ ॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥ महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु
 रहिओ उरझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥ बिखिआ सकत रहिउ
 निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥ १ ॥ साध सँगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥ जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु
 राखि लेहु सरनाई ॥ २ ॥ ६ ॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मनु मेरो बसि नाहि ॥ निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि

बिधि शेकउ ताहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै ॥ पर धन पर दारा सिउ रचिओ
 बिरथा जनमु सिरावै ॥ १ ॥ मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥ घट ही भीतरि बसत निरँजनु ता को
 मरमु न जाना ॥ २ ॥ जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥ तब नानक चेतिओ चिँतामनि काटी जम की
 फासी ॥ ३ ॥ ७ ॥ सोरठि महला ९ ॥ रे नर इह साची जीअ धारि ॥ सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ बारू भीति बनाई इचि पचि रहत नहीं दिन चारि ॥ तेसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥ १ ॥
 अजहू समझि कछु बिगसिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥ कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥ २
 ॥ ८ ॥ सोरठि महला ९ ॥ इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥ सगल जगतु अपनै लागिओ दुख मै सँगि न होई ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ दारा मीत पूत सनबँधी सगरे धन सिउ लागे ॥ जब ही निरधन देखिओ नर कउ सँगु छाडि सभ भागे ॥ १ ॥ कहंउ
 कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥ दीना नाथ सकल भै भँजन जसु ता को बिसराइओ ॥ २ ॥ सुआन पूछ
 जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥ नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥ ३ ॥ ९ ॥ सोरठि महला
 ९ ॥ मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥ कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साच छाडि कै झूठहु
 लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥ करि परपँच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥ १ ॥ राम भजन की गति
 नहीं जानी माइआ हाथि बिकाना ॥ उरझि रहिओ बिखिअन सँगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥ २ ॥ रहिओ अचेतु न
 चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥ कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥ ३ ॥ १० ॥ सोरठि महला ९ ॥
 जो नरु दुख मै दुखु नहीं मानै ॥ सुख सनेहु अरु भै नहीं जा कै कँचन माटी मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह निँदिआ नह उसतति
 जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥ हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥ १ ॥ आसा मनसा सगल तिआगै जग

ते रहै निरासा ॥ कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रह्मु निवासा ॥ २ ॥ गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥ नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी सँगि पानी ॥ ३ ॥ ११ ॥ सोरठि महला ९ ॥ प्रीतम जानि लेहु मन माहीं ॥ अपने सुख सिउ ही जगु फांथिओ को काहू को नाहीं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥ बिपति परी सभ ही सँगु छाडित कोऊ न आवत नैरै ॥ १ ॥ घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत सँग लागी ॥ जब ही हँस तजी इह कांडा प्रेत प्रेत करि भागी ॥ २ ॥ इहि बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥ अँत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥ ३ ॥ १२ ॥ १३९ ॥

सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी १८ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा न पड़उ हरि बिनु हिरु न पूजउ मडै मसाणि न जाई ॥ त्रिसना राचि न पर घरि जावा त्रिसना नामि बुझाई ॥ घर भीतरि घरु गुरु दिखाइआ सहजि रते मन भाई ॥ तू आपे दाना आपे बीना तू देवहि मति साई ॥ १ ॥ मनु बैरागि रतउ बैरागी सबदि मनु बेधिआ मेरी माई ॥ अँतरि जोति निरँतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई ॥ रहाउ ॥ असँख बैरागी कहहि बैराग सो बैरागी जि खसमै भावै ॥ हिरदै सबदि सदा भै रचिआ गुर की कार कमावै ॥ एको चेतै मनूआ न डोलै धावतु वरजि रहावै ॥ सहजे माता सदा रँगि राता साचे के गुण गावै ॥ २ ॥ मनूआ पउणु बिंदु सुखवासी नामि वसै सुख भाई ॥ जिहबा नेत्र सोत्र सचि राते जलि बूझी तुझहि बुझाई ॥ आस निरास रहै बैरागी निज घरि ताडी लाई ॥ भिखिआ नामि रजे सँतोखी अँमितु सहजि पीआई ॥ ३ ॥ दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥ सभु जगु तेरा तू एको दाता अवरु न दूजा भाई ॥ मनमुखि जँत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई ॥ अपर अपार अगँम अगोचर कहणै कीम न पाई ॥ ४ ॥ सुँन समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामँ ॥ मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु

सहामँ ॥ करम सुकरम कराए आपे आपे भगति द्विडामँ ॥ मनि मुखि जूठि लहै भै मानँ आपे गिआनु अगामँ ॥ ५ ॥
 जिन चाखिआ सेई सादु जाणनि जिउ गुँगे मिठिआई ॥ अकथै का किआ कथीऐ भाई चालउ सदा रजाई ॥ गुरु दाता
 मेले ता मति होवै निगुरे मति न काई ॥ जिउ चलाए तिउ चालह भाई होर किआ को करे चतुराई ॥ ६ ॥ इकि भरमि
 भुलाए इकि भगती राते तेरा खेलु अपारा ॥ जितु तुधु लाए तेहा फलु पाइआ तूहुकमि चलावणहारा ॥ सेवा करी जे किछु
 होवै अपणा जीउ पिँडु तुमारा ॥ सतिगुरि मिलिऐ किरपा कीनी अँमित नामु अधारा ॥ ७ ॥ गगनँतरि वासिआ गुण
 परगासिआ गुण महि गिआन धिआनँ ॥ नामु मनि भावै कहै कहावै ततो ततु वखानँ ॥ सबदु गुर पीरा गहिर गँभीरा बिनु
 सबदै जगु बउरानँ ॥ पूरा बैरागी सहजि सुभागी सचु नानक मन मानँ ॥ ८ ॥ १ ॥ सोरठि महला १ तितुकी ॥ आसा
 मनसा बँधनी भाई करम धरम बँधकारी ॥ पापि पुँनि जगु जाइआ भाई बिनसै नामु विसारी ॥ इह माइआ जगि मोहणी
 भाई करम सभे वेकारी ॥ १ ॥ सुणि पँडित करमा कारी ॥ जितु करमि सुखु ऊपजै भाई सु आतम ततु बीचारी ॥ रहाउ
 ॥ सासतु बेदु बकै खडो भाई करम करहु संसारी ॥ पारखँडि मैलु चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥ इन बिधि डूबी माकुरी
 भाई ऊंडी सिर कै भारी ॥ २ ॥ दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइ खुआई ॥ बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै
 भरमु न जाई ॥ सतिगुरु सेवे ता सुखु पाए भाई आवणु जाणु रहाई ॥ ३ ॥ साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु
 साचि समाई ॥ गुरु सेवे सो बूझै भाई गुर बिनु मगु न पाई ॥ जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई कूडु बोलि बिखु
 खाई ॥ ४ ॥ पँडित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु ॥ जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इहु जगु एहा वथु ॥ गुर बिनु
 भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥ ५ ॥ इहु जगु तागो सूत को भाई दह दिस बाधो माइ ॥ बिनु गुर गाठि न
 छूटई भाई थाके करम कमाइ ॥ इहु जगु भरमि भुलाइआ भाई कहणा किछु न जाइ ॥ ६ ॥ गुर मिलिऐ भउ

मनि वसै भाई भै मरणा सचु लेखु ॥ मजनु दानु चंगिआईआ भाई दरगह नामु विसेखु ॥ गुरु अँकसु जिनि नामु
द्रिडाइआ भाई मनि वसिआ चूका भेखु ॥ ७ ॥ इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु ॥ इहु वखरु वापारी सो
द्रिडै भाई गुरु सबदि करे वीचारु ॥ धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु ॥ ८ ॥ २ ॥ सोरठि महला १ ॥ जिन्ही
सतिगुरु सेविआ पिआरे तिन्ह के साथ तरे ॥ तिन्हा ठाक न पाईऐ पिआरे अँमित रसन हरे ॥ बूडे भारे भै बिना पिआरे
तारे नदरि करे ॥ १ ॥ भी तूहै सालाहणा पिआरे भी तेरी सालाह ॥ विणु बोहिथ भै डुबीऐ पिआरे कँधी पाइ कहाह ॥ १
॥ रहाउ ॥ सालाही सालाहणा पिआरे दूजा अवरु न कोइ ॥ मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रँगु होइ ॥
तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ॥ २ ॥ पति परवाना साच का पिआरे नामु सचा नीसाणु ॥ आइआ
लिखि लै जावणा पिआरे हुकमी हुकमु पछाणु ॥ गुरु बिनु हुकमु न बूझीऐ पिआरे साचे साचा ताणु ॥ ३ ॥ हुकमै अँदरि
निँमिआ पिआरे हुकमै उदर मझारि ॥ हुकमै अँदरि जँमिआ पिआरे ऊधउ सिर कै भारि ॥ गुरुमुखि दरगह जाणीऐ पिआरे
चलै कारज सारि ॥ ४ ॥ हुकमै अँदरि आइआ पिआरे हुकमे जादो जाइ ॥ हुकमे बँन्हि चलाईऐ पिआरे मनमुखि लहै
सजाइ ॥ हुकमे सबदि पछाणीऐ पिआरे दरगह पैथा जाइ ॥ ५ ॥ हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोइ ॥ हुकमे
भवै भवाईऐ पिआरे अवगणि मुठी रोइ ॥ हुकमु सिजापै साह का पिआरे सचु मिलै वडिआई होइ ॥ ६ ॥ आखणि अउखा
आखीऐ पिआरे किउ सुणीऐ सचु नाउ ॥ जिन्ही सो सालाहिआ पिआरे हउ तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ नाउ मिलै सँतोखीआं
पिआरे नदरी मेलि मिलाउ ॥ ७ ॥ काइआ कागदु जे थीऐ पिआरे मनु मसवाणी धारि ॥ ललता लेखणि सच की पिआरे
हरि गुण लिखहु वीचारि ॥ धनु लेखारी नानका पिआरे साचु लिखै उरि धारि ॥ ८ ॥ ३ ॥ सोरठि महला १ पहिला
दुतुकी ॥ तू गुणदातौ निरमलो भाई निरमलु ना मनु होइ ॥ जम अपराधी निरगुणे भाई तुझ ही ते गुणु सोइ ॥ १ ॥ मेरे

प्रीतमा तू करता करिं वेखु ॥ हउ पापी पाखंडीआ भाई मनि तनि नाम विसेखु ॥ रहाउ ॥ बिखु माइआ चितु मोहिआ
 भाई चतुराई पति खोइ ॥ चित महि ठाकुरु सचि वसै भाई जे गुर गिआनु समोइ ॥ २ ॥ रूढौ रूढौ आखीए भाई रूढौ
 लाल चल्लु ॥ जे मनु हरि सिउ बैरागीए भाई दरि घरि साचु अभूलु ॥ ३ ॥ पाताली आकासि तू भाई घरि घरि तू गुण
 गिआनु ॥ गुर मिलिऐ सुख पाइआ भाई चूका मनहु गुमानु ॥ ४ ॥ जलिं मलिं काइआ माजीए भाई भी मैला तनु होइ ॥
 गिआनि महा रसि नाईए भाई मनु तनु निरमलु होइ ॥ ५ ॥ देवी देवा पूजीए भाई किआ मागउ किआ देहि ॥ पाहणु नीरिं
 परखालीए भाई जल महि बूडहिं तेहिं ॥ ६ ॥ गुर बिनु अलखु न लखीए भाई जगु बूडै पति खोइ ॥ मेरे ठाकुर हाथि
 वडाईआ भाई जै भावै तै देइ ॥ ७ ॥ बईअरिं बोलै मीठुली भाई साचु कहै पिर भाइ ॥ बिरहै बेधीं सचि वसी भाई अधिक
 रही हरि नाइ ॥ ८ ॥ सभ को आखै आपणा भाई गुर ते बुझै सुजानु ॥ जो बीधे से ऊबरे भाई सबदु सचा नीसानु ॥ ९ ॥
 ईधनु अधिक सकेलीए भाई पावकु रँचक पाइ ॥ खिनु पलु नामु रिदै वसै भाई नानक मिलणु सुभाइ ॥ १० ॥ ४ ॥

सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी १४ सतिगुर प्रसादि ॥

भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ ॥ प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारिं
 पचाइआ ॥ गुरमुखानो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइआ ॥ १ ॥ हरि जी एह तेरी वडिआई ॥ भगता की
 पैज रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई ॥ रहाउ ॥ भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेडै जाई ॥ केवल राम नामु मनि
 वसिआ नामे ही मुक्ति पाई ॥ रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजिं सुभाई ॥ २ ॥ मनमुखा नो परतीति न
 आवी अंतरि लोभ सुआउ ॥ गुरमुखिं हिरदै सबदु न भेदिओ हरि नामि न लागा भाउ ॥ कूड़ कपट पाजु लहि जासी

मनमुख फीका अलाउ ॥ ३ ॥ भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता ॥ माइआ मोह सभ लोक है तेरी तू एको
पुरखु बिधाता ॥ हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥ ४ ॥ अचिँत कँम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का
नामु पिआरा ॥ गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा ॥ ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरि प्रभु है
रखवारा ॥ ५ ॥ बिनु सतिगुर सेवे किनै न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई ॥ आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि
दुखि समाई ॥ गुरमुखि होवै सु अँम्रितु पीवै सहजे साचि समाई ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै जे अनेक करम करै
अधिकई ॥ वेद पड़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई ॥ सचा सतिगुरु साची जिंसु बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई
॥ ७ ॥ जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा ॥ ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा ॥
नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥ ८ ॥ १ ॥ सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ निगुणिआ नो आपे
बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥ सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ हरि जीउ आपे
बखसि मिलाइ ॥ गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥ कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे
साचै सबदि वीचारि ॥ भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेडै चाड़ि ॥ २ ॥ मनूरै ते कँचन भए भाई गुरु पारसु मेलि
मिलाइ ॥ आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ ॥ ३ ॥ हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै
जाउ ॥ नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥ ४ ॥ गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ
॥ सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥ ५ ॥ गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु ॥ प्रेम पदारथु
पाईरे भाई सचु नामु आधारु ॥ ६ ॥ जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाइ ॥ जनमु सवारी आपणा
भाई तिन कै हउ लागउ पाइ ॥ जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥ ७ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है

भाई गुर किरपा ते होइ ॥ नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥ ८ ॥ २ ॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ ॥ सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रँगु लाइ ॥ १ ॥ हरि जी तू आपे रँगु चड़ाइ ॥ गावहु गावहु रँगि रातिहो भाई हरि सेती रँगु लाइ ॥ रहाउ ॥ गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ ॥ सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ॥ २ ॥ पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥ मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥ ३ ॥ से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइ सचै बैरागु ॥ अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ॥ ४ ॥ सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति ॥ सो किउ मनहु विसारीरे भाई जिस दि वडी है दाति ॥ ५ ॥ मनमुखि मैली डुंमणी भाई दरगह नाही थाउ ॥ गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ॥ ६ ॥ एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई लिआ मुहु देसी जाइ ॥ किडी पवँदी मुहाइओनु भाई बिखिआ नो लोभाइ ॥ ७ ॥ नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुख सांति सरीर ॥ नानक नामु समालि तु भाई अपरँपर गुणी गहीर ॥ ८ ॥ ३ ॥

सोरठि महला ५ वरु १ असटपदीआ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई करण कारण समरथु ॥ जीउ पिँडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु ॥ किनि कहीरे किउ देखीरे भाई करता एकु अकथु ॥ गुरु गोविंदु सलाहीरे भाई जिस ते जापै तथु ॥ १ ॥ मेरे मन जपीरे हरि भगवँता ॥ नाम दानु देइ जन अपने दूख दरद का हँता ॥ रहाउ ॥ जा कै घरि सभु किछु है भाई नउ निधि भरे भँडार ॥ तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार ॥ जीअ जँत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार ॥ सतिगुरु पूरा भेटिरे भाई सबदि मिलावणहार ॥ २ ॥ सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु ॥ मिलि सँत सभा मनु मांजीरे भाई हरि कै नामि निवासु ॥ मिटै अँधेरा अगिआनता भाई

कमल होवै परगासु ॥ गुर बचनी सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ॥ ३ ॥ मेरा तेरा छोडीये भाई होईये सभ की
 धूरि ॥ घटि घटि ब्रह्म पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥ जितु दिनि विसरै पारब्रह्म भाई तितु दिनि मरीये झूरि ॥ करन
 करावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि ॥ ४ ॥ प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ॥ तिसु भावै ता मेलि लए
 भाई हिरदै नाम निवासु ॥ गुरमुखि कमलु प्रगासीये भाई रिदै होवै परगासु ॥ प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ
 धरति अकासु ॥ ५ ॥ गुरि पूरै सँतोखिआ भाई अहिनि सिसि लागा भाउ ॥ रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ ॥
 करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइआ थाउ ॥ जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअडा जलि जाउ ॥ ६ ॥
 बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ ॥ ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ ॥ रिजकु सँबाहे
 सासि सासि भाई गूडा जा का नाउ ॥ जिसु गुरु साचा भेटीये भाई पूरा तिसु करमाउ ॥ ७ ॥ तिसु बिनु घडी न जीवीये
 भाई सरब कला भरपूरि ॥ सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि ॥ साधू सँगि मिलाइआ भाई सरब रहिआ
 भरपूरि ॥ जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि ॥ ८ ॥ अँचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु सँसारु
 ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अँगु अपारु ॥ मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु ॥
 नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥ ९ ॥ १ ॥ सोरठि महला ५ ॥ मात गरभ दुख सागरो पिआरे
 तह अपणा नामु जपाइआ ॥ बाहरि काठि बिखु पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ ॥ जिस नो कीतो करमु आपि
 पिआरे तिसु पूरा गुरु मिलाइआ ॥ सो आराधो सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइआ ॥ १ ॥ मनि तनि तेरी टेक
 है पिआरे मनि तनि तेरी टेक ॥ तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अँतरजामी एक ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि
 आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ ॥ साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ । जिन भेटै पूरा सतिगुरु

पिआरे से लागे साचै नाइ ॥ तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइ ॥ २ ॥ मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि
 कीता रोगु ॥ कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु ॥ भोग भुँचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु ॥
 जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइआ सँजोगु ॥ ३ ॥ माइआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि ॥ जिन
 तू विसरहि पारब्रहम सुआमी से तन होए धूड़ि ॥ बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु ॥ जो गुर मेलि सवारिआ
 पिआरे तिन का रहिआ मूलु ॥ ४ ॥ साकत सँगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइ ॥ जिंसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सो मुहि
 कालै उठि जाइ ॥ मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइ ॥ जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइ ॥ ५ ॥
 सँजम सहस सिआणपा पिआरे इक न चली नालि ॥ जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि ॥ होदी वसतु न
 जातीआ पिआरे कूडु न चली नालि ॥ सतिगुरु जिना मिलाइओनु पिआरे साचा नामु समालि ॥ ६ ॥ सतु सँतोखु गिआनु
 धिआनु पिआरे जिंस नो नदरि करे ॥ अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अँमिति पूर भरे ॥ दुख सागरु तिन लँघिआ पिआरे
 भवजलु पारि परे ॥ जिंसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे ॥ ७ ॥ सँमथ पुरखु दइआल देउ पिआरे भगता तिस का
 ताणु ॥ तिसु सरणाई ढहि पर पिआरे जि अँतरजामी जाणु ॥ हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु ॥ सो प्रभु
 कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु ॥ ८ ॥ २ ॥

सोरठि महला ७ घरु २ असटपदीआ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअँगम साधे ॥ पँच जना सिउ सँगु न छुटकिओ अधिक अहँबुधि बाधे ॥ १ ॥
 पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका ॥ हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ ॥ मोनि
 भइओ करपाती रहिओ

नगन फिरिओ बन माही ॥ तट तीरथ सभ धरती भूमिओ दुबिधा छुटकै नाही ॥ २ ॥ मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए ॥ मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए ॥ ३ ॥ कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥ अँन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलिऐ हरि दुआरा ॥ ४ ॥ पूजा अरचा बँदन डँडउत खटु करमा रतु रहता ॥ हउ हउ करत बँधन महि परिआ नह मिलिऐ इह जुगता ॥ ५ ॥ जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ ॥ वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ सँगु न गहिआ ॥ ६ ॥ राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥ सेज सोहनी चँदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥ ७ ॥ हरि कीरति साधसँगति है सिरि करमन कै करमा ॥ कहु नानक तिसु भइओ परापति जिंसु पुरब लिखे का लहना ॥ ८ ॥ तेरो सेवकु इह रँगि माता ॥ भइओ क्रिपालु दीन दुख भँजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सोरठि वार महले ४ की १३ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ ॥ दँदी मैलु न कतु मनि जीभै सचा सोइ ॥ ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुरु सेवि निसँग ॥ परहरि कपडु जे पिर मिलै खुसी रावै पिरु सँगि ॥ सदा सीगारी नाउ मनि कदे न मैलु पतँगु ॥ देवर जेठ मुए दुखि ससू का डरु किंसु ॥ जे पिर भावै नानका करम मणी सभु सचु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नामु ढँढोले ॥ गुर पुरख मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोलै ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रँगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोलै ॥ गुरि सतिगुर नामु द्विड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ जनु नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गोल गोलै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे सिसटि करता सिरजणहारिआ ॥ तुधु आपे खेलु रचाइ तुधु आपि सवारिआ ॥ दाता करता आपि आपि भोगणहारिआ ॥ सभु तेरा सबदु वरतै उपावणहारिआ ॥ हउ गुरमुखि सदा सलाही गुर कउ

वारिआ ॥ १ ॥ सलोकु मः ३ ॥ हउमै जलते मुए भ्रमि आए दूजै भाइ ॥ पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पँनै पाइ ॥ इहु
 जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ॥ सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥
 सफलओ सतिगुरु सेविआ धँनु जनमु परवाणु ॥ जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ॥ कुलु
 उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ॥ गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥ नानक मुए न
 आखीअहि जिं गुर कै सबदि समाहि ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि पुरखु निरँजनु सेवि हरि नामु धिआईए ॥ सतसंगति साधू
 लागि हरि नामि समाईए ॥ हरि तेरी वडी कार मै मूरख लाईए ॥ हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईए ॥ हउ गुरमुखि
 कार कमावा जिं गुरि समझाईए ॥ २ ॥ सलोकु मः ३ ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा जिं करतै आपि लिखिआसु ॥ मोह
 ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु ॥ मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआसु ॥ जिनी गुरमुखि नामु न चेतिओ से
 बहणि न मिलनी पासि ॥ दुखु लागा बहु अति घणा पुतु कलतु न साथि कोई जासि ॥ लोका विचि मुहु काला होआ अँदरि
 उभे सास ॥ मनमुखा नो को न विसही चुकि गइआ वेसासु ॥ नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अँतरि नाम निवासु
 ॥ १ ॥ मः ३ ॥ से सैण से सजणा जिं गुरमुखि मिलहि सुभाइ ॥ सतिगुर का भाणा अनादिनु करहि से सचि रहे समाइ ॥
 दूजै भाइ लगे सजण न आखीअहि जिं अभिमानु करहि वेकार ॥ मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि ॥
 नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥ पउडी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै आपि खेलु रचाइआ ॥ त्रै
 गुण आपि सिरजिआ माइआ मोहु वधाइआ ॥ विचि हउमै लेखा मँगीरे फिरि आवै जाइआ ॥ जिना हरि आपि क्रिपा करे
 से गुरि समझाइआ ॥ बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमाइआ ॥ ३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि
 विणु दँता जगु खाइआ ॥ मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ ॥ बिनु नावै जगु कमला फिरै

गुरमुखि नदरी आइआ ॥ धँधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुखदाता मनि न वसाइआ ॥ नानक नामु तिना कउ
 मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ घर ही महि अँमितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ॥ जिउ
 कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥ अँमितु तजि बिखु सँग्रहै करतै आपि खुआइआ ॥ गुरमुखि विरले
 सोझी पई तिना अँदरि ब्रह्म दिखाइआ ॥ तनु मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ ॥ सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे
 मेलि मिलाइआ ॥ बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ ॥ अँमितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो हरि पुरखु अगँमु है कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ तिसु रूपु न रेख अद्रिसटु कहु जन किउ धिआईऐ ॥
 निरँकारु निरँजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईऐ ॥ जिसु आपि बुझाए आपि सु हरि मारगि पाईऐ ॥ गुरि पूरै
 वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ ॥ ४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जिउ तनु कोलू पीड़ीऐ रतु न भोरी डेहि ॥ जीउ वँजै चउ खँनीऐ
 सचे सँदड़ै नेहि ॥ नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सजणु मैडा रँगुला रँगु लाए मनु लेइ ॥ जिउ
 माजीठै कपड़े रँगो भी पाहेहि ॥ नानक रँगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि आपि वरतै आपि हरि
 बुलाइदा ॥ हरि आपे खिसटि सवारि सिरि धँधै लाइदा ॥ इकना भगती लाइ इकि आपि खुआइदा ॥ इकना मारगि पाइ
 इकि उझड़ि पाइदा ॥ जनु नानकु नामु धिआए गुरमुखि गुण गाइदा ॥ ५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफलु है
 जे को करे चितु लाइ ॥ मनि चिँदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥ बँधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ ॥ इसु जग
 महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥
 मनमुख मँनु अजितु है दूजै लगै जाइ ॥ तिस नो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ ॥ घरि घरि पड़ि पड़ि पँडित थके
 सिध समाध लगाइ ॥ इहु मनु वसि आवई थके करम कमाइ ॥ भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइ ॥ मन की

सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ ॥ गुर परसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ ॥ भै पइरे मनु वसि होआ हउमै
 सबदि जलाइ ॥ सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ ॥ २ ॥ पउडी
 ॥ एह भूपति राणे रँग दिन चारि सुहावणा ॥ एहु माइआ रँगु कसुँभ खिन महि लहि जावणा ॥ चलदिआ नालि न चलै सिरि
 पाप लै जावणा ॥ जां पकड़ि चलाइआ कालि तां खरा डरावणा ॥ ओह वेला हथि न आवै फिरि पछुतावणा ॥ ६ ॥ सलोकु
 मः ३ ॥ सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि ॥ फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जँमहि तै मरि जाहि ॥ सहसा रोगु न
 छोडई दुख ही महि दुख पाहि ॥ नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना
 ठउर न ठाउ ॥ जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणिं बदनाउ ॥ नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ ॥ २ ॥
 पउडी ॥ जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइआ ॥ जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जमु छडि गइआ ॥ से दरगह पैधे
 जाहि जिना हरि जपि लइआ ॥ हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुधु मइआ ॥ गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइआ
 ॥ ७ ॥ सलोकु मः ३ ॥ थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अँमितु सारु ॥ जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु
 ॥ इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥ एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥ नानक जिंसु बुझाए सु
 बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जो धुरि मेले से मिलि रहै सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ आपि विछोडेनु से
 विछुडे दुजै भाइ खुआइ ॥ नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ बहि सखीआ जसु
 गावहि गावणहारीआ ॥ हरि नामु सलाहिहु नित हरि कउ बलिहारीआ ॥ जिनी सुणि मँनिआ हरि नाउ तिना हउ वारीआ ॥
 गुरमुखीआ हरि मेलु मिलावणहारीआ ॥ हउ बलि जावा दिनु राति गुर देखणहारीआ ॥ ८ ॥ सलोकु मः ३ ॥

विणु नावै सभिं भरमदे नित जगि तोटा सैसारिं ॥ मनमुखिं करम कमावणे हउमै अंधु गुबारु ॥ गुरुमुखिं अँमितु पीवणा
 नानक सबदु वीचारिं ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सहजे जागै सहजे सोवै ॥ गुरुमुखिं अनदिनु उसतति होवै ॥ मनमुख भरमै
 सहसा होवै ॥ अँतरिं चिँता नीद न सोवै ॥ गिआनी जागहिं सवहिं सुभाइ ॥ नानक नामि रतिआ बलिं जाउ ॥ २ ॥
 पउड़ी ॥ से हरिं नामु धिआवहिं जो हरिं रतिआ ॥ हरिं इकु धिआवहिं इकु इको हरिं सतिआ ॥ हरिं इको वरतै इकु इको
 उतपतिआ ॥ जो हरिं नामु धिआवहिं तिन डरु सटि घतिआ ॥ गुरुमती देवै आपि गुरुमुखिं हरिं जपिआ ॥ ९ ॥ सलोक
 मः ३ ॥ अँतरिं गिआनु न आइओ जितु किछु सोझी पाइ ॥ विणु डिठा किआ सालाहीरे अँधा अँधु कमाइ ॥ नानक सबदु
 पछाणीरे नामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारिं ॥ सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे
 भँडार ॥ गुरु किरपा ते पाइअनि जे देवै देवणहारु ॥ सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु ॥ विखु विचि अँमितु
 प्रगटिआ करमि पीआवणहारु ॥ नानक सचु सलाहीरे धँनु सवारणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना अँदरिं कूडु वरतै सचु न
 भावई ॥ जे को बोलै सचु कूड़ा जलिं जावई ॥ कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ॥ जिसु हरिं होइ क्रिपालु सो
 नामु धिआवई ॥ हरिं गुरुमुखिं नामु अराधि कूडु पापु लहिं जावई ॥ १० ॥ सलोक मः ३ ॥ सेखा चउ चकिआ
 चउवाइआ एहु मनु इकतु घरिं आणिं ॥ एहड़ तेहड़ छडिं तू गुरु का सबदु पछाणु ॥ सतिगुरु अगै ढहिं पउ सभिं किछु जाणै
 जाणु ॥ आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु ॥ सतिगुरु कै भाणै भी चलहिं ता दरगह पावहिं माणु ॥ नानक जिं
 नामु न चेतनी तिन धिगु पैणु धिगु खाणु ॥ मः ३ ॥ हरिं गुण तोटिं न आवई कीमति कहणु न जाइ ॥ नानक गुरुमुखिं
 हरिं गुण सवहिं गुण महिं रहै समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरिं चोली देह सवारी कढिं पैधी भगति करिं ॥ हरिं पाटु लगा
 अधिकारु बहु बहु बिधि भाति करिं ॥ कोई बूझै बूझणहारु अँतरिं बिबेकु करिं ॥ सो बूझै एहु बिबेकु जिसु बुझाए आपि

हरिं ॥ जनु नानकु कहै विचारा गुरमुखिं हरिं सति हरिं ॥ ११ ॥ सलोकु मः ३ ॥ परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझीं
सगल जहानै ॥ गुरमुखिं होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै ॥ जिन
कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुरमुखिं चितु न लाइओ अँति दुखु पहुता
आइ ॥ अँदरहु बाहरहु अँधिआं सुधि न काई पाइ ॥ पँडित तिन की बरकतीं सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ ॥ जिन गुर
कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ ॥ पँडित दूजै भाइ बरकति न होवई ना धनु पलै पाइ ॥ पडिं थके सँतोखु न
आइओ अनदिनु जलत विहाइ ॥ कूक पूकार न चुकई ना सँसा विचहु जाइ ॥ नानक नाम विहूणिआ मुहि कालै उठि जाइ
॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि सजण मेलिं पिआरे मिलिं पँथु दसाई ॥ जो हरिं दसे मितु तिसु हउ बलिं जाई ॥ गुण साझीं तिन
सिउ करी हरिं नामु धिआई ॥ हरिं सेवी पिआरा नित सेवि हरिं सुखु पाई ॥ बलिहारी सतिगुर तिसु जिनीं सोझीं पाई ॥
१२ ॥ सलोकु मः ३ ॥ पँडित मैलु न चुकई जे वेद पडै जुग चारिं ॥ त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारिं ॥
पँडित भूले दूजै लागे माइआ कै वापारिं ॥ अँतरि त्रिसना भुख है मूरख भुखिआ मुए गवार ॥ सतिगुरि सेविरे सुखु पाइआ
सचै सबदि वीचारिं ॥ अँदरहु त्रिसना भुख गई सचै नाइ पिआरिं ॥ नानक नामि रते सहजे रजे जिना हरिं रखिआ उरिं
धारिं ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुख हरिं नामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ ॥ अँतरि अगिआनु अँधेरु है सुधि न काई पाइ
॥ मनहठि सहजिं न बीजिंओ भुखा कि अगै खाइ ॥ नामु निधानु विसारिआ दुजै लगा जाइ ॥ नानक गुरमुखिं मिलाहिं
वडिआईआ जे आपे मेलिं मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरिं रसना हरिं जसु गावै खरी सुहावणी ॥ जो मनि तनि मुखिं हरिं
बोलै सा हरिं भावणी ॥ जो गुरमुखिं चखै सादु सा त्रिपतावणी ॥ गुण गावै पिआरे नित गुण गाइ गुणीं समझावणी ॥
जिसु होवै आपि दइआलु सा सतिगुरू गुरू बुलावणी ॥ १३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ हसती सिरिं जिउ अँकसु है

अहरणिं जिउ सिरु देइ ॥ मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥ इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु खिसटि का लेइ ॥
 ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरिं करेइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु ॥
 नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥ २ ॥ पउडी ॥ गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ ॥ इकि सेवक
 गुर पासि इकि गुरिं करै लाईआ ॥ जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरू देवाईआ ॥ गुर सिखा इको पिआरु
 गुर मिता पुता भाईआ ॥ गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आखि गुरू जीवाईआ ॥ १४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ नानक नामु
 न चेतनी अगिआनी अँधुले अवरै करम कमाहि ॥ जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥
 नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ॥ हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ॥ २ ॥ पउडी ॥ धनु
 सँपै माइआ सँचीऐ अँते दुखदाई ॥ घर मँदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई ॥ हर रँगी तुरे नित पालीअहि कितै
 कामि न आई ॥ जन लावहु चितु हरि नाम सिउ अँति होइ सखाई ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ॥
 १५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ बिनु करमै नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ ॥ नानक नदरिं करे जे आपणी ता गुरमति मेलिं
 मिलाइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि ॥ इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भिं फिरि हसणिं
 पाहि ॥ नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ॥ २ ॥ पउडी ॥ तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि
 हरि राते ॥ तिन के घर मँदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥ तिन
 के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हरि जिनी गुरमुखि सिख साध सँत चडि जाते ॥ तिन के करम धरम कारज सभि पवितु
 हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते ॥ जिन कै पोतै पुँनु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ॥ १६ ॥ सलोकु मः
 ३ ॥ नानक नावहु घुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ ॥ जपु तपु सँजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ ॥ जम दरि

बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सँता नालि वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु ॥ अगै पिछै सुखु
 नहीं मरि जँमहि वारो वार ॥ त्रिसना कदे न बुझई दुबिधा होइ खुआरु ॥ मुह काले तिना निँदका तितु सचै दरबारि ॥
 नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो हरि नामि धिआइदे से हरि हरि नामि रते मन माहीं ॥
 जिना मनि चिति इकु अराधिआ तिना इकस बिनु दूजा को नाही ॥ सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाहीं
 ॥ हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाहीं ॥ वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नाम समाहीं ॥ १७ ॥
 सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥
 पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ नानक गणतै
 सेवकु ना मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ महलु कुमहलु न जाणनी मूरख अपणै सुआइ ॥ सबदु चीनहि ता
 महलु लहहि जोती जोति समाइ ॥ सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ ॥ सतिगुरु अपणै घरि वरतदा आपे लए
 मिलाइ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धँनु धनु भाग तिना भगत
 जना जो हरि नामा हरि मुखि कहतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना सँत जना सो हरि जसु स्रवणी सुणतिआ ॥ धनु धनु भाग
 तिना साध जना हरि कीरतनु गाइ गुणी जन बणतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना गुरमुखा जो गुर सिख लै मुन जिणतिआ ॥
 सभ दू वडे भाग गुरसिखा के जो गुर चरणी सिख पड़तिआ ॥ १८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ ब्रहमु बिँदै तिस दा ब्रहमतु रहै एक
 सबदि लिव लाइ ॥ नव निधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ ॥ बिनु सतिगुरु नाउ न पाईऐ
 बुझहु करि वीचारु ॥ नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ किआ गभरु किआ बिरधि है
 मनमुख त्रिसना भुख न जाइ ॥ गुरमुखि सबदे रतिआ सीतलु होए आपु गवाइ ॥ अँदरु त्रिपति सँतोखिआ

फिरि भुख न लगै आइ ॥ नानक जिं गुरमुखिं करहि सो परवाणु है जो नामि रहे लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ बलिहारी
 तिन कँउ जो गुरमुखिं सिखा ॥ जो हरि नामु धिआइदे तिन दरसनु पिखा ॥ सुणि कीरतनु हरि गुण खा हरि जसु मनि
 लिखा ॥ हरि नामु सलाही रँग सिउ सभिं किलविख क्रिखा ॥ धनु धँनु सुहावा सो सरीरु थानु है जिथै मेरा गुर धरे विखा
 ॥ १९ ॥ सलोकु मः ३ ॥ गुर बिन गिआनु न होवई ना सुखु वसै मनि आइ ॥ नानक नाम विहूणे मनमुखी जासनि
 जनमु गवाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सिध साधिक नावै नो सभिं खोजदे थकि रहे लिव लाइ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ
 गुरमुखिं मिलै मिलाइ ॥ बिनु नावै पैणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति ॥ सा सिधि सा करमाति है अचिंतु
 करे जिसु दाति ॥ नानक गुरमुखिं हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हम ढाढी हरि प्रभ खसम
 के नित गावह हरि गुण छँता ॥ हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कँता ॥ हरि दाता सभु जगतु भिखारीआ
 मँगत जन जँता ॥ हरि देवहु दानु दइआल होइ विचि पाथर क्रिम जँता ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखिं धनवँता
 ॥ २० ॥ सलोकु मः ३ ॥ पड़ना गुड़ना संसार की कार है अँदरि तिसना विकारु ॥ हउमै विचि सभिं पड़ि थके दूजै भाइ
 खुआरु ॥ सो पड़िआ सो पँडितु बीना गुर सबदि करे वीचारु ॥ अँदरु खोजै ततु लहै पाए मोख दुआरु ॥ गुण निधानु
 हरि पाइआ सहजि करे वीचारु ॥ धँनु वापारी नानका जिसु गुरमुखिं नामु अधारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ विणु मनु मारे कोइ न
 सिद्धई वेखहु को लिव लाइ ॥ भेखधारी तीरथी भवि थके ना एहु मनु मारिआ जाइ ॥ गुरमुखिं एहु मनु जीवतु मरै सचि रहै
 लिव लाइ ॥ नानक इसु मन की मलु इउ उतरै हउमै सबदि जलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई हरि नामु
 दिड़ावहु इक किनका ॥ हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापडु पहिरहु खिम का ॥ ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि
 लागै पिआरा प्रिम का ॥ हरि हरि नामु बोलहु दिनु राती सभिं किलबिख काटै इक पलका ॥ हरि हरि दइआलु होवै

जिसु उपरि सो गुरमुखि हरि जपि जिणका ॥ २१ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी लाका होआ
सिआहु ॥ खँनली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥ गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥
नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ चहु जुगी कलिं लाकी कांठी इक उतम पदवी इसु जुग माहि ॥
गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईरे जिन कउ हरि लिखि पाहि ॥ नानक गुर परसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती
माहि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि मेलिं साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि ॥ हरि गुण गावा हरि नित
चवा गुरमती हरि रँगु सदा माणि ॥ हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा घाणि ॥ जिना सासि गिरासि
न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि ॥ २२ ॥ सलोकु मः ३
॥ रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ ॥ सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ ॥ सरीरु
जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥ जगतु जलँदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे सचि मनि
सबदि धिआइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सबदि रते हउमै गई सोभावँती नारि ॥ पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ सेज
सुहावी सदा पिरु रावै हरि वरु पाइआ नारि ॥ ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ नानक हरि प्रभ मेलिं
लई गुर कै हेति पिआरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥ हरि जीउ तिन का दरसनु ना
करहु पापिसट हतिआरी ॥ ओहिं घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट नारी ॥ वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी
॥ हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी ॥ २३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु उपजै फिरि दुखु न लगै
आइ ॥ जँमणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ ॥ हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ॥ नानक हउ
बलिहारी तिन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥

पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥ सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि हरि
 अपनी दइआ करि हरि बोली बैणी ॥ हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन
 हउ कुरबैणी ॥ जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी ॥ हउ वारिआ अपने गुरु कउ जिनि मेरा हरि
 सजणु मेलिआ सैणी ॥ २४ ॥ सलोकु मः ४ ॥ हरि दासन सिउ प्रीति है हरि दासन को मितु ॥ हरि दासन कै वसि है जिउ
 जँती कै वसि जँतु ॥ हरि के दास हरि धिआइदे करि प्रीतम सिउ नेहु ॥ किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥
 जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई ॥ हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई ॥ सो हरि जनु
 नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि पैज रखहु भगवान ॥ १ ॥ मः ४ ॥ नानक
 प्रीति लाई तिनि साचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥ २ ॥ पउडी ॥ रैणि
 दिनसु परभाति तूहै ही गावणा ॥ जीअ जँत सरबत नाउ तेरा धिआवणा ॥ तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥ भगत
 जना कै सँगि पाप गवावणा ॥ जन नानक सद बलिहारै बलि बलि जावणा ॥ २५ ॥ सलोकु मः ४ ॥ अँतरि अगिआनु
 भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही ॥ अँदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही ॥ सतिगुर का भाणा
 चिति न आवै आपणै सुआइ फिराही ॥ किरपा करे जे आपणी ता नानक सबदि समाही ॥ १ ॥ मः ४ ॥ मनमुख माइआ
 मोहि विआपे दूजै भाइ मनूआ थिरु नाहि ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती हउमै खपहि खपाहि ॥ अँतरि लोभु महा
 गुबारा तिन कै निकटि न कोई जाहि ॥ ओइ आपि दुखी सुखु कबहू न पावहि जनमि मरहि मरि जाहि ॥ नानक बखसि
 लए प्रभु साचा जि गुर चरनी चितु लाहि ॥ २ ॥ पउडी ॥ सँत भगत परवाणु जो प्रभि भाइआ ॥ सेई बिचखण जँत जिनी
 हरि धिआइआ ॥ अँमितु नामु निधानु भोजनु खाइआ ॥ सँत जना की धूरि मसतकि लाइआ ॥ नानक भए पुनीत हरि

तीरथि नाइआ ॥ २६ ॥ सलोकु मः ४ ॥ गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ नामो चितवै नामु पड़ै नामि
 रहै लिव लाइ ॥ नामु पदारथु पाइआ चिंता गई बिलाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ नामु ऊपजै तिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक
 नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सतिगुर पुरखि जि मारिआ भ्रमि भ्रमिआ घरु छोडि गइआ ॥ ओसु पिछै
 वजै फकड़ी मुहु काला आगै भइआ ॥ ओसु अरलु बरलु मुहहु मिलै नित इगू सुटदा मुआ ॥ किआ होवै किसै ही दै कीतै
 जां धुरि किरतु ओस दा एहो जेहा पइआ ॥ जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु झूठा कूडु बोले किसै न भावै ॥ वेखहु भाई वडिआई
 हरि संतहु सुआमी अपुने की जैसा कोई करै तैसा कोई पावै ॥ एहु ब्रहम बीचारु होवै दरि साचै अगो दे जनु नानकु आखि
 सुणावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरि सचै बधा थेहु रखवाले गुरि दिते ॥ पूरन होई आस गुर चरणी मन रते ॥ गुरि क्रिपालि
 बेअंति अबगुण सभि रते ॥ गुरि अपणी किरपा धारि अपणे करि लिते ॥ नानक सद बलिहार जिंसु गुर के गुण इते ॥ २७
 ॥ सलोकु मः १ ॥ ता की रजाइ लेखिआ पाइ अब किआ कीजै पांडे ॥ हुकमु होआ हासलु तदे होइ निबडिआ हँढहि
 जीअ कमादे ॥ १ ॥ मः २ ॥ नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥ जहा दाणे तहां खाणे नानका सचुहे ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ सभे गला आपि थाटि बहालीओनु ॥ आपे रचनु रचाइ आपे ही घालीओनु ॥ आपे जंत उपाइ आपि प्रतिपालिओनु
 ॥ दास रखे कंठि लाइ नदरि निहालिओनु ॥ नानक भगता सदा अनंदु भाउ दूजा जालिओनु ॥ २८ ॥ सलोकु मः ३ ॥
 ए मन हरि जी धिआइ तु इक मनि इक चिति भाइ ॥ हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ देइ न पछोताइ ॥ हउ हरि कै सद
 बलिहारणै जितु सेविऐ सुखु पाइ ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आपे सुवा लाइअनु
 आपे बखस करेइ ॥ सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ ॥ नानक नामु धिआइनि तिन निज घरि वासु है जुगु जुगु
 सोभा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तु करण कारण समरथु हरि करते मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ तुधु आपे सिंसति

सिरजीआ आपे फुनि गोई ॥ सभु इको सबदु वरतदा जो करे सु होई ॥ वडिआई गुरमुखि देइ प्रभु हरि पावै सोई ॥ गुरमुखि
नानक आराधिआ सभि आखहु धँनु धँनु धँनु गुरु सोई ॥ २९ ॥ १ ॥ सुधु

रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १ १४ श्रितिगुर प्रसादि ॥

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥ ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहु न पाई ॥ १ ॥ मन रे संसारु अंध
गहेरा ॥ चहु दिस पसरिओ है जम जेवरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबित पड़े पड़ि कबिता मूए कपड़ केदारै जाई ॥ जटा धारि धारि
जोगी मूए तेरी गति इनहि न पाई ॥ २ ॥ दरबु सँचि सँचि राजे मूए गडि ले कँचन भारी ॥ बेद पड़े पड़ि पँडित मूए रूपु देखि
नारी ॥ ३ ॥ राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥ हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥ ४
॥ १ ॥ जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई ॥ काची गागरि नीरु परतु है इआ तन की इहै बडाई ॥ १ ॥ काहे
भईआ फिरतौ फूलिआ फूलिआ ॥ जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मधु माखी
तिउ सठोरि रसु जोरि जोरि धनु कीआ ॥ मरती बार लेहु लेहु करीऐ भूतु रहन किउ दीआ ॥ २ ॥ देहुरी लउ बरी नारि सँगि
भई आगै सजन सुहेला ॥ मरघट लउ सभु लोगु कुटँबु भइओ आगै हँसु अकेला ॥ ३ ॥ कहतु कबीर सुनहु रे प्राणी परे काल
ग्रस कूआ ॥ झूठी माइआ आपु बँधाइआ जिउ नलनी भ्रमि सूआ ॥ ४ ॥ २ ॥ बेद पुरान सभै मत सुनि कै करी करम की
आसा ॥ काल ग्रसत सभ लोग सिआने उठि पँडित पै चले निरासा ॥ १ ॥ मन रे सरिओ न एकै काजा ॥ भजिओ न रघुपति
राजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बन खँड जाइ जोगु तपु कीनो कँद मूलु चुनि खाइआ ॥ नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइआ
॥ २ ॥ भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीना ॥ राग रागनी डिँभ होइ बैठा ओनि हरि पहि किआ लीना ॥ ३ ॥
परिओ कालु सभै जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिआनी ॥ कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥

४ ॥ ३ ॥ घरु २ ॥ दुइ दुइ लोचन पेखा ॥ हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥ नैन रहे रँगु लाई ॥ अब बे गल कहनु न जाई ॥
 ॥ १ ॥ हमरा भरमु गइआ भउ भागा ॥ जब राम नाम चितु लागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाजीगर डँक बजाई ॥ सभ खलक
 तमासे आई ॥ बाजीगर स्वांगु सकेला ॥ अपने रँग रवै अकेला ॥ २ ॥ कथनी कहि भरमु न जाई ॥ सभ कथि कथि रही
 लुकाई ॥ जा कउ गुरमुखि आपि बुझाई ॥ ता के हिरदै रहिआ समाई ॥ ३ ॥ गुर किंचत किरपा कीनी ॥ सभु तनु मनु देह
 हरि लीनी ॥ कहि कबीर रँगि राता ॥ मिलिओ जगजीवन दाता ॥ ४ ॥ ४ ॥ जा के निगम दूध के ठाटा ॥ समुँदु बिलोवन
 कउ माटा ॥ ता की होहु बिलोवनहारी ॥ किउ मैटैगो छाछि तुहारी ॥ १ ॥ चेरी तुरामु न करसि भतारा ॥ जगजीवन प्रान
 अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे गलहि तउकु पग बेरी ॥ तू घर घर रमईरे फेरी ॥ तू अजहु न चेतसि चेरी ॥ तू जमि बपुरी है
 हेरी ॥ २ ॥ प्रभ करन करावनहारी ॥ किआ चेरी हाथ बिचारी ॥ सोई सोई जागी ॥ जितु लाई तितु लागी ॥ ३ ॥ चेरी
 तै सुमति कहां ते पाई ॥ जा ते भ्रम की लीक मिटाई ॥ सुख सु कबीरै जानिआ ॥ मेरो गुर प्रसादि मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥
 जिह बाझु न जीआ जाई ॥ जउ मिलै त घाल अघाई ॥ सद जीवनु भलो कहांही ॥ मूए बिनु जीवनु नाही ॥ १ ॥ अब
 किआ कथीरे गिआनु बीचारा ॥ निज निरखत गत बिउहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घसि कुकँम चँदनु गारिआ ॥ बिनु नैनहु
 जगतु निहारिआ ॥ पूति पिता इकु जाइआ ॥ बिनु ठाहर नगरु बसाइआ ॥ २ ॥ जाचक जन दाता पाइआ ॥ सो दीआ
 न जाई खाइआ ॥ छोडिआ जाइ न मूका ॥ अउरन पहिं जाना चूका ॥ ३ ॥ जो जीवन मरना जानै ॥ सो पँच सैल सुख
 मानै ॥ कबीरै सो धनु पाइआ ॥ हरि भेटत आपु मिटाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ किआ पड़ीरे किआ गुनीरे ॥ किआ बेद पुरानां
 सुनीरे ॥ पड़े सुने किआ होई ॥ जउ सहज न मिलिओ सोई ॥ १ ॥ हरि का नामु न जपसि गवारा ॥ किआ सोचहि बारँ
 बारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँधिआरे दीपकु चहीरे ॥ इक बसतु अगोचर लहीरे ॥ बसतु अगोचर पाई ॥

घटि दीपकु रहिआ समाई ॥ २ ॥ कहि कबीर अब जानिआ ॥ जब जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ मन माने लोगु न पतीजै ॥
न पतीजै तउ किआ कीजै ॥ ३ ॥ ७ ॥ हिदै कपटु मुख गिआनी ॥ झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥ १ ॥ कांइआ मांजसि कउन
गुनां ॥ जउ घट भीतरिहै मलनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लउकी अठसठि तीरथ नहाई ॥ कउरापनु तऊ न जाई ॥ २ ॥ कहि कबीर
बीचारी ॥ भव सागरु तारि मुरारी ॥ ३ ॥ ८ ॥

सोरठि १३ सतिगुर प्रसादि ॥

बहु परपँच करि पर धनु लिआवै ॥ सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥ १ ॥ मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥ अँति निबेरा तेरे जीअ
पहि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै ॥ तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै ॥ २ ॥ कहतु कबीरु
कोई नही तेरा ॥ हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ॥ ३ ॥ ९ ॥ सँतहु मन पवनै सुखु बनिआ ॥ किछु जोगु परापति गनिआ ॥
रहाउ ॥ गुरि दिखलाई मोरी ॥ जितु मिरग पड़त है चोरी ॥ मूँदि लीए दरवाजे ॥ बाजीअले अनहद बाजे ॥ १ ॥ कुँभ कमलु
जलि भरिआ ॥ जलु मेटिआ ऊभा करिआ ॥ कहु कबीर जन जानिआ ॥ जउ जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ २ ॥ १० ॥
रागु सोरठि ॥ भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥ हउ मांगउ सँतन रेना ॥ मै नाही किसी का देना ॥ १ ॥
माधो केशी बनै तुम सँगे ॥ आपि न देहु त लेवहु मँगे ॥ रहाउ ॥ दुइ सेर मांगउ चूना ॥ पाउ घीउ सँगे लूना ॥ अथ सेरु
मांगउ दाले ॥ मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥ २ ॥ खाट मांगउ चउपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर कउ मांगउ खींधा
॥ तेरी भगति करै जनु थींधा ॥ ३ ॥ मै नाही कीता लबो ॥ इकु नाउ तेरा मै फबो ॥ कहि कबीर मनु मानिआ ॥ मनु
मानिआ तउ हरि जानिआ ॥ ४ ॥ ११ ॥

रागु सोरठि बानी भगत नामदे जी की घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

जब देखा तब गावा ॥ तउ जन धीरजु पावा ॥ १ ॥ नादि समाइलो रे

सतिगुरु भेटिले देवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह झिलि मिलि कारु दिसँता ॥ तह अनहद सबद बजँता ॥ जोती जोति
 समानी ॥ मै गुर परसादि जानी ॥ २ ॥ रतन कमल कोठरी ॥ चमकार बीजुल तही ॥ नेरै नाही दूरि ॥ निज आतमै
 रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ जह अनहत सूर उज्यारा ॥ तह दीपक जलै छँछारा ॥ गुर परसादी जानिआ ॥ जनु नामा सहज
 समानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ घरु ४ सोरठि ॥ पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥ तो पहि दुगणी मजूरी
 दैहउ मो कउ बेटी देहु बताई हो ॥ १ ॥ री बाई बेटी देनु न जाई ॥ देखु बेटी रहिओ समाई ॥ हमारै बेटी प्रान अधारा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ बेटी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥ लोग कुटँब सभहु ते तोरै तउ आपन बेटी आवै हो ॥ २
 ॥ आसो बेटी बरनि न साकउ सभ अँतर सभ ठाई हो ॥ गूँगे महा अँमित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥ ३ ॥ बेटी
 के गुण सुनि री बाई जलाधि बांधि धू थापिओ हो ॥ नामे के सुआमी सीअ बहोरी लँक भभीखण आपिओ हो ॥ ४ ॥ २ ॥
 सोरठि घरु ३ ॥ अणमडिआ मँदलु बाजै ॥ बिनु सावण घनहरु गाजै ॥ बादल बिनु बरखा होई ॥ जउ ततु बिचारै कोई
 ॥ १ ॥ मो कउ मिलिओ रामु सनेही ॥ जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि पारस कँचनु होइआ ॥ मुख
 मनसा रतनु परोइआ ॥ निज भाउ भइआ भ्रमु भागा ॥ गुर पूछे मनु पतीआगा ॥ २ ॥ जल भीतरि कुँभ समानिआ ॥
 सभ रामु एकु करि जानिआ ॥ गुर चले है मनु मानिआ ॥ जन नामै ततु पछानिआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

शगु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की १३ सतिगुर प्रसादि ॥

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥ अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदपि जल केवल जल मांही ॥ १ ॥ माधवे
 किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥ जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरपति एकु सिँघासनि सोइआ सुपने भइआ
 भिखारी ॥ अछतराज बिछुरत दुखु

पाइआ सो गति भई हमारी ॥ २ ॥ राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥ अनिक कटक जैसे भूलि परे
 अब कहते कहनु न आइआ ॥ ३ ॥ सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥ कहि रविदास हाथ पै नैरै सहजे होइ सु
 होई ॥ ४ ॥ १ ॥ जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥
 १ ॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥ अब कहा करहुगे ऐसी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि
 कीओ बहु बानी ॥ खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥ २ ॥ आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि
 राजा ॥ मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥ ३ ॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ
 कहीरे ॥ जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीरे ॥ ४ ॥ २ ॥ दुलभ जनमु पुँन फल पाइओ बिरथा जात
 अबिबेकै ॥ राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥ १ ॥ न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥ जिह
 रस अन रस बीसरि जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ इंद्रि सबल निबल
 बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥ २ ॥ कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ कहि रविदास
 उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥ सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥ चारि
 पदारथ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥ १ ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सभ तिआगि बचन रचना
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥ बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि
 नाही ॥ २ ॥ सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी
 ॥ ३ ॥ ४ ॥ जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ जउ तुम चंद्र तउ हम भए है चकोरा ॥ १ ॥ माधवे तुम न तोरहु तउ हम
 नही तोरहि ॥ तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ जउ तुम तीरथ

तउ हम जाती ॥ २ ॥ साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥ तुम सिउ जोरि अवर सँगि तोरी ॥ ३ ॥ जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥ तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥ ४ ॥ तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥ भगति हेत गावै रविदासा ॥ ५ ॥ ५ ॥ जल की भीति पवन का थँभा रक्त बूँद का गारा ॥ हाड मास नाड़ीं, को पिँजरु पँखी बसै बिचारा ॥ १ ॥ प्राणी किआ मेरा किआ तेरा ॥ जैसे तरवर पँखि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखहु कँध उसारहु नीवां ॥ साढे तिनि हाथ तेरी सीवां ॥ २ ॥ बँके बाल पाग सिरि डेरी ॥ इहु तनु होइगो भसम की डेरी ॥ ३ ॥ ऊचे मँदर सुँदर नारी ॥ राम नाम बिनु बाजी हारी ॥ ४ ॥ मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥ तुम सरनागति राजा रामचँद कहि रविदास चमारा ॥ ५ ॥ ६ ॥ चमस्टा गांठि न जनई ॥ लोगु गठावै पनही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आर नहीं जिह तोपउ ॥ नहीं शंबी ठाउ रोपउ ॥ १ ॥ लोगु गाँठि गाँठि खरा बिगूचा ॥ हउ बिनु गाँठे जाइ पहुँचा ॥ २ ॥ रविदासु जपै राम नामा ॥ मोहि जम सिउ नाही कामा ॥ ३ ॥ ७ ॥

शुगु शोरठि बाणी भगत भीखन की वरि सतिगरु प्रसादि ॥

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुधवानी ॥ रूपा कँठु सबदु नहीं उचरै अब किआ करहि परानी ॥ १ ॥ राम राइ होहि बैद बनवारी ॥ अपने सँतह लेहु उबारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥ ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही ॥ २ ॥ हरि का नामु अँम्रित जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥ गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥ ३ ॥ १ ॥ ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुँनि पदारथु पाइआ ॥ अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥ १ ॥ हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥ जैसे गूँगे की मिठिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना रमत सुनत सुखु श्रवना चित चेत सुखु होई ॥ कहु भीखन दुइ नैन सँतोखे जह देखां तह सोई ॥ २ ॥ २ ॥

धनासरी महला १ घर १ चउपदे

१ॐ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति आजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा
सदा दातारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहिबु सेवीरे अँति छडाए सोइ ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥
२ ॥ दइआल तेरै नामि तरा ॥ सद करबाणै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरबँ साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥ ता की सेवा
सो करे जा कउ नदरि करे ॥ ३ ॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां ॥ दूजा
नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवी साहिबु आपणा अवरु न जांचउ कोइ ॥ नानकु ता का
दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ ४ ॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ १ ॥
धनासरी महला १ ॥ हम आदमी हां इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा ॥ नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा
॥ १ ॥ अँधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु मासु सभु जीउ तुमारा तू मै खरा पिआरा ॥
नानकु साइरु एव कहतु है सचे परवदगारा ॥ २ ॥ जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा ॥ नानकु बिनवै
सो किछु पाईरे पुरबि लिखे कालहणा ॥ ३ ॥ नामु खसम का चिति न कीआ कपटी कपटु कमाणा ॥ जम दुआरि

जा पकड़ि चलाइआ ता चलदा पछुताणा ॥ ४ ॥ जब लगु दुनीआ रहीरे नानक किछु सुणीरे किछु कहीरे ॥ भालिं रहे हम
रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीरे ॥ ५ ॥ २ ॥

धनासरी महला १ वरु दूजा १९ सतिगुर प्रसादि ॥

किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ ॥ तपै हिआउ जीअड़ा बिललाइ ॥ सिरजि सवारे साचा सोइ ॥ तिसु विसरिरे चंगा किउ होइ
॥ १ ॥ हिकमति हुकमि न पाइआ जाइ ॥ किउ करि साचि मिलउ मेरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वखरु नामु देखण कोई जाइ ॥
ना को चाखे ना को खाइ ॥ लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ ता पति रहै राखै जा सोइ ॥ २ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥
तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जे को करे कीतै किआ होइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ ३ ॥ हुणि उठि चलना मुहति कि
तालिं ॥ किआ मुहु देसा गुण नही नालिं ॥ जैसी नदरि करे तैसा होइ ॥ विणु नदरी नानक नही कोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥
धनासरी महला १ ॥ नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥ आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥ आतमा परातमा एको करै ॥ अंतर की
दुबिधा अंतरि मरै ॥ १ ॥ गुर परसादी पाइआ जाइ ॥ हरि सिउ चितु लागै फिरि कालु न खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि सिमरिरे
होवै परगासु ॥ ता ते बिखिआ महि रहै उदासु ॥ सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥ पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ २ ॥ ऐसी सेवकु
सेवा करे ॥ जिसु का जीउ तिसु आगै धरै ॥ साहिब भावै सो परवाणु ॥ सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥ ३ ॥ सतिगुर की मूरति
हिरदै वसाए ॥ जो इछै सोई फलु पाए ॥ साचा साहिबु किरपा करै ॥ सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥ ४ ॥ भनति नानकु करे
वीचारु ॥ साची बाणी सिउ धरे पिआरु ॥ ता को पावै मोख दुआरु ॥ जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥ ५ ॥ २ ॥ ४ ॥
धनासरी महला १ ॥ जीउ तपतु है बारो बार ॥ तपि तपि खपै बहुतु बेकार ॥ जै तनि बाणी विसरि जाइ ॥ जिउ पका रोगी
विललाइ ॥ १ ॥ बहुता बोलणु इखणु होइ ॥ विणु बोले जाणै सभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कन कीते अखी

नाकु ॥ जिनि जिहवा दिती बोले तातु ॥ जिनि मनु राखिआ अगनी पाइ ॥ वाजै पवणु आखै सभ जाइ ॥ २ ॥ जेता मोहु
 परीति सुआद ॥ सभा कालख दागा दाग ॥ दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥ दरगह बैसण नाही जाइ ॥ ३ ॥ करमि मिलै
 आखणु तेरा नाउ ॥ जितु लागि तरणा होरु नही थाउ ॥ जे को डूबै फिरि होवै सार ॥ नानक साचा सरब दातार ॥ ४ ॥ ३
 ॥ ५ ॥ धनासरी महला १ ॥ चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥ जे बदी करे ता तसू न छीजै ॥ चोर की हामा भरे न कोइ ॥ चोरु
 कीआ चँगा किउ होइ ॥ १ ॥ सुणि मन अँधे कुते कूड़िआर ॥ बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चोरु सुआलिउ
 चोरु सिआणा ॥ खोटे का मुलु एकु दुगाणा ॥ जे साथि रखीऐ दीजै रलाइ ॥ जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ॥ २ ॥ जैसा करे
 सु तैसा पावै ॥ आपि बीजि आपे ही खारै ॥ जे वडिआईआ आपे खाइ ॥ जेही सुरति तेहै रहि जाइ ॥ ३ ॥ जे सउ कूड़ीआ
 कूडु कबाडु ॥ भावै सभु आखउ संसारु ॥ तुधु भावै अधी परवाणु ॥ नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥
 धनासरी महला १ ॥ काइआ कागदु मनु परवाणा ॥ सिर के लेख न पडै इआणा ॥ दरगह घड़ीअहि तीने लेख ॥ खोटा
 कामि न आवै वेखु ॥ १ ॥ नानक जे विचि रुपा होइ ॥ खरा खरा आखै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कादी कूडु बोलि मलु
 खाइ ॥ ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥ जोगी जुगति न जाणै अँधु ॥ तीने ओजाडे का बँधु ॥ २ ॥ सो जोगी जो जुगति
 पछाणै ॥ गुर परसादी एको जाणै ॥ काजी सो जो उलटी करै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ॥ सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥
 आपि तरै सगले कुल तारै ॥ ३ ॥ दानसबँदु सोई दिलि धोवै ॥ मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥ पडिआ बूझै सो परवाणु ॥
 जिंसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

धनासरी महला १ घरु ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु ॥ थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥ १ ॥ कल महि राम नामु सारु ॥
 अखी त मीटहि नाक पकडि ठगण कउ संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥

आंट सेती नामु पकड़ि सूझते तिनि लोअ ॥ मगर पाछै कछु न सूझौ एहु पदमु अलोअ ॥ २ ॥ खत्रीआ त धरमु
छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥ खिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥ ३ ॥ असट साज साजि पुराण
सोधहि करहि बेद अभिआसु ॥ बिन नाम हरि के मुक्ति नाही कहै नानकु दासु ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ ८ ॥

धनासरी महला १ आरती १४ सतिगुर प्रसादि ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत
जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव
नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव
चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस कै चानणि सभि महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति
परगटु होइ ॥ जो तिसु बावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही
पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ९ ॥

धनासरी महला ३ वरु २ चउपदे १४ सतिगुर प्रसादि ॥

इहु धनु अखुटु न निखुटै जाइ ॥ पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ गुर किरपा ते हरि
मनि वसाई ॥ १ ॥ से धनवत हरि नामि लिव लाइ ॥ गुरि पूरै हरि धनु परगासिआ हरि किरपा ते वसै मनि आइ ॥
रहाउ ॥ अवगुण काटि गुण रिदै समाइ ॥ पूरे गुर कै सहजि सुभाइ ॥ पूरे गुर की साची बाणी ॥ सुखमन अंतरि
सहजि समाणी ॥ २ ॥ एकु अचरजु जन देखहु भाई ॥ दुबिधा मारि हरि मनि वसाई ॥ नामु अमोलकु न पाइआ जाइ
॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ सभ महि वसै प्रभु एको सोइ ॥ गुरमती घटि

परगट्टु होइ ॥ सहजे जिनि प्रभु जाणि पछाणिआ ॥ नानक नामु मिलै मनु मानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला ३ ॥
 हरि नामु धनु निरमलु अति अपारा ॥ गुर कै सबदि भरे भंडारा ॥ नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु ॥ माइआ मोहि
 जलै अभिमानु ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि रसु चारखै कोइ ॥ तिसु सदा अनंदु होवै दिनु राती पूरै भाणि परापति होइ ॥ रहाउ
 ॥ सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥ जो चारखै सो निरमलु होइ ॥ निरमल नामि हउमै मलु धोइ ॥ साची भगति सदा सुखु
 होइ ॥ २ ॥ जिनि हरि रसु चारखिआ सो हरि जनु लोगु ॥ तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु ॥ आपि मुक्तु अवरा मुक्तु
 करावै ॥ हरि नामु जपै हरि ते सुखु पावै ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर सभ मुई बिललाइ ॥ अनदिनु दाइहि साति न पाइ ॥
 सतिगुरु मिलै सभु तिसन बुझाए ॥ नानक नामि सांति सुखु पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ धनासरी महला ३ ॥ सदा अनु अंतरि
 नामु समाले ॥ जीअ जंत जिनिहि प्रतिपाले ॥ मुक्ति पदारथु तिन कउ पाए ॥ हरि कै नामि रते लिव लाए ॥ १ ॥ गुर
 सेवा ते हरि नामु धनु पावै ॥ अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥ रहाउ ॥ इहु हरि रंगु गूडा धन पिर होइ ॥ सांति
 सीगारु रावे प्रभु सोइ ॥ हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए ॥ मूलहु भुला जनमु गवाए ॥ २ ॥ गुर ते साति सहज सुखु बाणी
 ॥ सेवा साची नामि समाणी ॥ सबदि मिलै प्रीतमु सदा धिआए ॥ साच नामि वडिआई पाए ॥ ३ ॥ आपे करता जुगि
 जुगि सोइ ॥ नदरि करे मेलावा होइ ॥ गुरबाणी ते हरि मनि वसाए ॥ नानक साचि रते प्रभि आपि मिलाए ॥ ४ ॥ ३ ॥
 धनासरी महला ३ तीजा ॥ जगु मैला मैलो होइ जाइ ॥ आवै जाइ दूजै लोभाइ ॥ दूजै भाइ सभ परज विगोई ॥
 मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति खोई ॥ १ ॥ गुर सेवा ते जनु निरमलु होइ ॥ अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ ॥ रहाउ
 ॥ गुरमुखि उबरे हरि सरणाई ॥ राम नामि राते भगति दिडाई ॥ भगति करे जनु वडिआई पाए ॥ साचि रते सुख सहजि
 समाए ॥ २ ॥ साचे का गाहकु विरला को जाणु ॥ गुर कै सबदि आपु पछाणु ॥ साची रासि साचा वापारु ॥ सो धनु

पुरखु जिंसु नामि पिआरु ॥ ३ ॥ तिनि प्रभि साचै इकि सचि लाए ॥ ऊतम बाणी सबदु सुणाए ॥ प्रभ साचे की साची कार
 ॥ नानक नामि सवारणहार ॥ ४ ॥ ४ ॥ धनासरी महला ३ ॥ जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ ॥ तिन हिरदै साचु सचा
 मुखे नाउ ॥ साचो साचु समालिहु दुखु जाइ ॥ साचै सबदि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥ सहजे
 हरि नामु मँनि वसाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूडु कुसतु त्रिसना अगनि बुझाए ॥ अँतरि सांति सहजि सुखु पाए ॥ गुर कै भाणै
 चलै ता आपु जाइ ॥ साचु महलु पाए हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥ मनमुखि अँधे दुखि विहाणी ॥
 सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए ॥ हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥ ३ ॥ किस नो कहीरे दाता इकु सोइ ॥ किरपा करे सबदि मिलावा
 होइ ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक साचे साचा भावा ॥ ४ ॥ ५ ॥ धनासरी महला ३ ॥ मनु मरै धातु मरि
 जाइ ॥ बिनु मन मुए कैसे हरि पाइ ॥ इहु मनु मरै दारु जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥ १ ॥ जिस नो बखसे
 हरि दे वडिआई ॥ गुर परसादि वसै मनि आई ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी पावै ॥ मनु
 मै मतु मैगल मिकदारा ॥ गुरु अँकसु मारि जीवालणहारा ॥ २ ॥ मनु असाधु साधै जनु कोई ॥ अचरु चरै ता निरमलु
 होई ॥ गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजै विकार ॥ ३ ॥ जो धुरि रखिअनु मेलि मिलाइ ॥ कदे न
 विछुड़हि सबदि समाइ ॥ आपणी कला आपे प्रभु जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ६ ॥ धनासरी महला ३
 ॥ काचा धनु सँचहि मूरख गावार ॥ मनमुख भूले अँध गावार ॥ बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ ॥ ना साथि जाइ न
 परापति होइ ॥ १ ॥ साचा धनु गुरमती पाए ॥ काचा धनु फुनि आवै जाए ॥ रहाउ ॥ मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ॥
 भवजलि डूबे न उरवारि न पारि ॥ सतिगुरु भेटे पूरै भागि ॥ साचि रते अहिनि सि बैरागि ॥ २ ॥ चहु जुग महि अमितु
 साची बाणी ॥ पूरै भागि हरि नामि समाणी ॥ सिध साधिक तरसहि सभि लोइ ॥ पूरै भागि परापति होइ ॥ ३ ॥ सभु

किछु साचा साचा है सोइ ॥ ऊतम ब्रह्म पछाणै कोइ ॥ सचु साचा सचु आपि द्विड़ाए ॥ नानक आपे वेखै आपे सचि लाए ॥ ४
 ॥ ७ ॥ धनासरी महला ३ ॥ नावै की कीमति मिति कही न जाइ ॥ से जन धँनु जिन इक नामि लिव लाइ ॥ गुरमति साची
 साचा वीचारु ॥ आपे बखसे दे वीचारु ॥ १ ॥ हरि नामु अचरजु प्रभु आपि सुणाए ॥ कली काल विचि गुरमुखि पाए ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ हम मूरख मूरख मन माहि ॥ हउमै विचि सभ कार कमाहि ॥ गुर परसादी हँउमै जाइ ॥ आपे बखसे लए मिलाइ ॥
 २ ॥ बिखिआ का धनु बहुतु अभिमानु ॥ अहँकारि डूबै न पावै मानु ॥ आपु छोडि सदा सुखु होई ॥ गुरमति सालाही सचु सोई
 ॥ ३ ॥ आपे साजे करता सोइ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ जिसु सचि लाए सोई लागै ॥ नानक नामि सदा सुखु आगै
 ॥ ४ ॥ ८ ॥

गुरु धनासरी महला ३ वरु ४ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता ॥ होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कँउ सदा कहउ रँगि राता ॥ १ ॥ हँउ बलिहारै
 जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥ करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुते फेर पए किरपन कउ अब
 किछु किरपा कीजै ॥ होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥ २ ॥ भनति नानक भरम पट खूलहे गुर परसादी
 जानिआ ॥ साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥ ३ ॥ १ ॥ ९ ॥

धनासरी महला ४ वरु १ चउपदे १४ सतिगुर प्रसादि ॥

जो हरि सेवहि सँत भगत तिन के सभि पाप निवारी ॥ हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी ॥ १ ॥ हरि
 गुण कहि न सकउ बनवारी ॥ हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के लागे बिखु
 मोरचा लागि संगति साध सवारी ॥ जिउ कँचनु बैसँतरि ताइओ मलु काटी कटित उतारी ॥ २ ॥ हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती

जपि हरि हरि हरि उरि धारी ॥ हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥ ३ ॥ हरि हरि अगम अगाधि बोधि
अपरपर पुरख अपारी ॥ जन कउ क्रिपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि के
संत जना हरि जपिओ तिन का दूखु भरमु भउ भागी ॥ अपनी सेवा आपि कराई गुरुमति अंतरि जागी ॥ १ ॥ हरि के नामि
रता बैरागी ॥ हरि हरि कथा सुणी मनि भाई गुरुमति हरि लिव लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना की जाति हरि सुआमी तुम्ह
ठाकुर हम सांगी ॥ जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ॥ २ ॥ किआ हम किरम नान्ह निक कीरे तुम्ह वड
पुरख वडागी ॥ तुम्हरी गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥ ३ ॥ हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु
हम हरि हरि सेवा लागी ॥ नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ॥ ४ ॥ २ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि का
संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी ॥ जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस के सद कुरबानी ॥ १ ॥ हरि के संत
सुनहु जसु कानी ॥ हरि हरि कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसा संतु साधु
जिन पाइआ ते वड पुरख वडानी ॥ तिन की धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ॥ २ ॥ हरि हरि सफलओ
बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिओ से त्रिपतानी ॥ हरि हरि अमितु पी त्रिपतासे सभ लार्थी भूख भुखानी ॥ ३ ॥ जिन के वडे
भाग वड ऊचे तिन हरि जपिओ जपानी ॥ तिन हरि संगति मेलि प्रभ सुआमी जन नानक दास दसानी ॥ ४ ॥ ३ ॥
धनासरी महला ४ ॥ हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली ॥ सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन
पाली ॥ १ ॥ गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥ जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि
के संत सुणह जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥ सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि कालही ॥ २ ॥ हरि
के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥ जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल कलाली ॥ ३ ॥

हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥ जन नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग शली ॥
 ४ ॥ ४ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि हरि बूँद भए हरि सुआमी हम चात्रिक बिलल बिललाती ॥ हरि हरि क्रिपा करहु प्रभ अपनी
 मुखि देवहु हरि निमखाती ॥ १ ॥ हरि बिनु रहि न सकउ इक राती ॥ जिउ बिनु अमलै अमली मरि जाई है तिउ हरि बिनु हम
 मरि जाती ॥ रहाउ ॥ तुम हरि सरवर अति अगाह हम लहि न सकहि अंतु माती ॥ तु परै परै अपरंपरु सुआमी मिति जानहु
 आपन गाती ॥ २ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ गुरु रंगि चल्लै राती ॥ हरि हरि भगति बनी अति सोभा हरि जपिओ ऊतम
 पाती ॥ ३ ॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु आपि बनावै भाती ॥ नानकु जनु तुमरी सरणाई हरि राखहु लाज भगाती ॥ ४ ॥ ५
 ॥ धनासरी महला ४ ॥ कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥ हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि
 जपिओ तरै तराकी ॥ १ ॥ हरि जी लाज रखहु हरि जन की ॥ हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ॥
 रहाउ ॥ हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिओ हरि बचनाकी ॥ लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ॥
 २ ॥ हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि लागि संगति साध जना की ॥ दिनीअरु सूरु त्रिसना अगनि बुझानी सिव चरिओ चंदु
 चँदाकी ॥ ३ ॥ तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपाकी ॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजै करि दासनि
 दास दसाकी ॥ ४ ॥ ६ ॥

धनासरी महला ४ वरु ७ दुपदे १३ सतिगुर प्रसादि ॥

उर धारि बीचारि मुरारि रमो रमु मनमोहन नामु जपीने ॥ अद्रिसटु अगोचरु अपरंपर सुआमी गुरि पूरै प्रगट करि दीने ॥ १ ॥
 राम पारस चँदन हम कासट लोसट ॥ हरि सँगि हरी सतसंगु भए हरि कँचनु चँदन कीने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नव छिअ खटु बोलहि
 मुख आगर मेरा हरि प्रभु इव न पतीने ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु इउ हरि प्रभु मेरा भीने ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥
 धनासरी महला ४ ॥

गुन कहु हरि लहु करि सेवा सतिगुर इव हरि हरि नामु धिआई ॥ हरि दरगह भावहि फिरि जनमि न आवहि हरि हरि हरि
 जोति समाई ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरी होहि सरब सुखी ॥ हरि जसु ऊच सभना ते ऊपरि हरि हरि हरि सेवि छडाई ॥
 रहाउ ॥ हरि क्रिपा निधि कीनी गुरि भगति हरि दीनी तब हरि सिउ प्रीति बनि आई ॥ बहु चिंत विसारी हरि नामु उरि
 धारी नानक हरि भए है सखाई ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि पडु हरि लिखु हरि जपि हरि गाउ हरि
 भउजलु पारि उतारी ॥ मनि बचनि रिदै धिआइ हरि होइ सँतुसटु इव भणु हरि नामु मुरारी ॥ १ ॥ मनि जपीऐ हरि
 जगदीस ॥ मिलि संगति साधू मीत ॥ सदा अनँदु होवै दिनु राती हरि कीरति करि बनवारी ॥ रहाउ ॥ हरि हरि करी
 द्रिसटि तब भइओ मनि उदमु हरि हरि नामु जपिओ गति भई हमारी ॥ जन नानक की पति राखु मेरे सुआमी हरि आइ
 परिओ है सरणि तुमारी ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥ धनासरी महला ४ ॥ चउरासीह सिध बुध तेतीस कोटि मुनि जन सभि
 चाहहि हरि जीउ तेरो नाउ ॥ गुर प्रसादि को विरला पावै जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि भाउ ॥ १ ॥ जपि मन रामै
 नामु हरि जसु ऊतम काम ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी हउ तिन कै सदि बलिहारै जाउ ॥ रहाउ ॥
 सरणागति प्रतिपालक हरि सुआमी जो तुम देहु सोई हउ पाउ ॥ दीन दइआल क्रिपा करि दीजै नानक हरि सिमरण का है
 चाउ ॥ २ ॥ ४ ॥ १० ॥ धनासरी महला ४ ॥ सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥
 गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥ १ ॥ बोलहु भाई हरि
 कीरति हरि भवजल तीरथि ॥ हरि दरि तिन की ऊतम बात है सँतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ॥ रहाउ ॥ आपे गुरु
 चेला है आपे आपे हरि प्रभु चोज विडानी ॥ जन नानक आपि मिलाए सोई हरि मिलसी अवर सभ तिआगि ओहा हरि
 भानी ॥ २ ॥ ९ ॥ ११ ॥ धनासरी महला ४ ॥ इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा के वसि है कामधेना ॥ सो रेसा

हरिं धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सब सुख पावहि मेरे मना ॥ १ ॥ जपि मन सतिनामु सदा सतिनामु ॥ हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरिं पुरखु निरँजना ॥ रहाउ ॥ जह हरिं सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरिं जपना ॥ जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरिं भवजलु तरना ॥ २ ॥ ६ ॥ १२ ॥ धनासरी महला ४ ॥ मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ ॥ हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु सचु तू मेरे साहा तेरा कीआ सचु सभु होइ ॥ झूठा किस कउ आखीऐ साहा दूजा नाही कोइ ॥ १ ॥ सभना विचि तू वरतदा साहा सभिं तुझहि धिआवहि दिनु राति ॥ सभिं तुझ ही थावहु मँगदे मेरे साहा तू सभना करहि इक दाति ॥ २ ॥ सभु को तुझ ही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ सभिं जीअ तेरे तू सभस दा मेरे साहा सभिं तुझ ही माहि समाहि ॥ ३ ॥ सभना की तू आस है मेरे पिआरे सभिं तुझहि धिआवहि मेरे साह ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू मेरे पिआरे सचु नानक के पातिसाह ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥

धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे १३ सतिगुर प्रसादि ॥

भव खँडन दुख भँजन स्वामी भगति वछल निरँकारे ॥ कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जां गुरमुखि नामु समारे ॥ १ ॥ मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥ दीन दइआलि करी प्रभिं किरपा वसि कीने पँच दूतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे ॥ सब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे ॥ २ ॥ तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥ ३ ॥ कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरखु मुरारे ॥ जिउ भावै तिउ रखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला ५ ॥ बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल सिउ हेतु बढाइओ ॥ कमल हेति बिनसिओ है भवरा उनि मारगु निकसि न पाइओ ॥ १ ॥ अब मन एकस सिउ मोहु कीना ॥

मरै न जावै सद ही सँगे सतिगुर सबदी चीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम हेति कुँचरु लै फांकिओ ओहु परवसि भइओ बिचारा ॥
 ॥ नाद हेति सिरु डारिओ कुरँका उस ही हेत बिदारा ॥ २ ॥ देखि कुटँबु लोभि मोहिओ प्रानी माइआ कउ लपटाना ॥
 अति रचिओ करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥ ३ ॥ बिनु गोबिंद अवर सँगे नेहा ओहु जाणहु सदा दुहेला ॥
 कहु नानक गुर इहै बुझाइओ प्रीति प्रभू सद केला ॥ ४ ॥ २ ॥ धनासरी मः ५ ॥ करि किरपा दीओ मोहि नामा बँधन ते
 छुटकाए ॥ मन ते बिसरिओ सगलो धँधा गुर की चरणी लाए ॥ १ ॥ साधसँगि चिँत बिरानी छाडी ॥ अहँबुधि मोह मन
 बासन दे करि गडहा गाडी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई ॥ ब्रह्मु पसारु पसारिओ
 भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥ २ ॥ सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ दूरि पराइओ मन का बिरहा
 ता मेलु कीओ मेरै राजन ॥ ३ ॥ बिनसिओ ढीठा अँमितु वूठा सबदु लगो गुर मीठा ॥ जलि थलि महीअलि सरब निवासी
 नानक रमईआ ढीठा ॥ ४ ॥ ३ ॥ धनासरी मः ५ ॥ जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ॥ महा अनँदु सदा
 करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥ १ ॥ अब मोहि राम जसो मनि गाइओ ॥ भइओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु
 पूरा पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूरु भरम भउ भागा ॥ भई परापति वसतु अगोचर राम
 नामि रँगु लागा ॥ २ ॥ चिँत अचिँता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका ॥ हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भए बिबाका
 ॥ ३ ॥ गुर की टहल गुरु की सेवा गुर की आगिआ भाणी ॥ कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै कुरबाणी ॥ ४ ॥
 ४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघडु सुजानी ॥ तिह ही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ
 बिधि नीकी खटानी ॥ १ ॥ जीअ की एकै ही पहि मानी ॥ अवरि जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥
 रहाउ ॥ अँमित नामु निरमोलकु हीरा गुरि दीनो मँतानी ॥ डिगै न डोलै द्रिडु करि रहिओ पूरन होइ त्रिपतानी ॥ २ ॥

ओइ जु बीच हम तुम कछु होते तिन की बात बिलानी ॥ अलंकार मिलि थैली होई है ता ते कनिक वखानी ॥ ३ ॥
 प्रगटिओ जोति सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी ॥ कहु नानक निहचल घरु बाधिओ गुरि कीओ बंधानी ॥ ४ ॥ ५
 ॥ धनासरी महला ५ ॥ वडे वडे राजन अरु भूमन ता कि तिसन न बूझी ॥ लपटि रहे माइआ रँग माते लोचन कछु न
 सूझी ॥ १ ॥ बिखिआ महि किन ही त्रिपति न पाई ॥ जिउ पावकु ईधनि नही धापै बिनु हरि कहा अघाई ॥ रहाउ ॥ दिनु
 दिनु करत भोजन बह बिंजन ता की मिटै न भूखा ॥ उदमु करै सुआन की निआई चारे कुँटा घोखा ॥ २ ॥ कामवँत कामी
 बहु नारी पर ग्रिह जोह न चूकै ॥ दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु अपार अमोला
 अँमितु एकु निधाना ॥ सूखु सहजु आनँदु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥ ४ ॥ ६ ॥ धनासरी मः ५ ॥ लवै न लागन
 कउ है कछूरे जा कउ फिरि इहु धावै ॥ जा कउ गुरि दीनो इहु अँमितु तिस ही कउ बनि आवै ॥ १ ॥ जा कउ आइओ एकु
 रसा ॥ खान पान आन नही खुधिआ ता कै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥ मउलिओ मनु तनु होइओ हरिआ एक बूँद जिनि पाई
 ॥ बरनि न साकउ उसतति ता की कीमति कहणु न जाई ॥ २ ॥ घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिँता
 ॥ जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मँता ॥ ३ ॥ दीन दैआल सदा किरपाला सरब जीआ प्रतिपाला ॥
 उति पोति नानक सँगि रविआ जिउ माता बाल गोपाला ॥ ४ ॥ ७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ बारि जाउ गुर अपुने ऊपरि
 जिनि हरि हरि नामु द्विड्हाया ॥ महा उदिआन अँधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाया ॥ १ ॥ हमरे प्रान गुपाल गोबिंद
 ॥ ईहा ऊहा सरब थोक की जिसहि हमारी चिँद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरनि सरब निधाना मानु महतु पति पूरी ॥
 नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ॥ २ ॥ सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै एकु निधाना ॥ पारब्रहम अपरँपर
 सुआमी सिमरत पारि पराना ॥ ३ ॥ सीतल सांति महा सुखु पाइआ संतसँगि रहिओ ओल्हा ॥ हरि धनु

संचनु हरि नामु भोजनु इहु नानक कीनो चोल्हा ॥ ४ ॥ ८ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिह करणी होवहि सरमिंदा इहा
 कमानी रीति ॥ संत की निंदा साकत की पूजा ऐसी द्विढी बिपरीति ॥ १ ॥ माइआ मोह भूलो अवरै हीत ॥ हरिचंदउरी
 बन हर पात रे इहै तुहारो बीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंदन लेप होत कउ सुखु गरधभ भसम संगीति ॥ अँमित संगि नाहि रुच
 आवत बिखै ठगउरी प्रीति ॥ २ ॥ उतम संत भले संजोगी इसु जुग महि पवित पुनीत ॥ जात अकारथ जनमु पदारथ
 काच बादरै जीत ॥ ३ ॥ जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन अँजनु नेत्र दीत ॥ साधसंगि इन दुख ते
 निकसिओ नानक एक परीत ॥ ४ ॥ ९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ पानी परखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥
 सासि सासि मनु नामु सम्हारै इहु बिश्राम निधि पाई ॥ १ ॥ तुम्ह करहु दइआ मेरे साई ॥ ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा
 सदा तुधु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइ भरमाई ॥ अनद रूपु रविओ सभ मधे जत
 कत पेखओ जाई ॥ २ ॥ तुम्ह दइआल किरपाल क्रिपा निधि पतित पावन गोसाई ॥ कोटि सूख आनंद राज पाए मुख ते
 निमख बुलाई ॥ ३ ॥ जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई ॥ नामु जपत त्रिसना सभ बुझी है नानक त्रिपति
 अघाई ॥ ४ ॥ १० ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि कीने वसि अपुनै त्रै गुण भवण चतुर संसारा ॥ जग इसनान ताप
 थान खँडे किआ इहु जँतु विचारा ॥ १ ॥ प्रभ की ओट गही तउ छूटो ॥ साध प्रसादि हरि हरि हरि गाए बिखै बिआपि तब
 हूटो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह सुणीऐ नह मुख ते बकीऐ नह मोहै उह डीठी ॥ ऐसी ठगउरी पाइ भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी
 ॥ २ ॥ माइ बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिओ दूआ ॥ किस ही वाधि घाटि किस ही पहि सगले लरि लरि मूआ
 ॥ ३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इहु चलतु दिखाइआ ॥ गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइआ ॥
 ४ ॥ संत प्रसादि महा सुखु पाइआ सगले बंधन काटे ॥ हरि हरि नामु नानक धनु पाइआ अपुनै घरि लै आइआ खाटे ॥

५ ॥ ११ ॥ धनासरी महला ५ ॥ तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥ निमख निमख तुम ही प्रतिपालहु
 हम बारिक तुमरे धारे ॥ १ ॥ जिहवा एक कवन गुन कहीरे ॥ बेसुमार बेअँत सुआमी तेरो अँतु न किन ही लहीरे ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ कोटि पराध हमारे खँडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ हम अगिआन अल्प मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥
 २ ॥ तुमरी सरणि तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले ॥ राखह राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥ ३ ॥ १२ ॥
 धनासरी महला ५ ॥ पूजा वरत तिलक इसनान पुँन दान बहु दैन ॥ कहूँ न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥ १ ॥
 प्रभ जी को नामु जपत मन चैन ॥ बहु प्रकार खोजहि सभि ता कउ बिखमु न जाई लैन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप ताप भ्रमन
 बसुधा करि उरध ताप लै गैन ॥ इह बिधि नह पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥ २ ॥ अँमित नामु निरमोलकु
 हरि जसु तिनि पाइओ जिसु किरपैन ॥ साधसँगि रँगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥ ३ ॥ १३ ॥ धनासरी महला ५
 ॥ बँधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै ॥ असथिरु करे निहचलु इहु मनूआ बहुरि न कतहू धावै ॥ १ ॥ है
 कोऊ ऐसो हमरा मीतु ॥ सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर धन पर तन पर की निँदा
 इन सिउ प्रीति न लागै ॥ संतह सँगु संत संभाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ॥ २ ॥ गुण निधान दइआल पुरख प्रभ सरख
 सूख दइआला ॥ मागै दानु नामु तेरो नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥ ३ ॥ १४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ हरि हरि लीने
 संत उबारि ॥ हरि के दास की चितवै बुरिआई तिस ही कउ फिरि मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन का आपि सहाई होआ निँदक
 भागे हारि ॥ भ्रमत भ्रमत ऊहां ही मूए बाहुडि गिहि न मँझारि ॥ १ ॥ नानक सरणि परिओ दुख भँजन गुन गावै सदा
 अपारि ॥ निँदक का मुखु काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥ २ ॥ १५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ अब हरि राखनहारु
 चितारिआ ॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु बिदारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोसटि भई साध कै

सँगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ ॥ सिमरि सिमरि पूरन नाराइन सँगी सगले तारिआ ॥ १ ॥ अउखध मँत्र मूल मन एकै मनि
बिस्वासु प्रभ धारिआ ॥ चरन रेन बाँछै नित नानकु पुनह पुनह बलिहारिआ ॥ २ ॥ १६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरा लागो
राम सिउ हेतु ॥ सतिगुरु मेरा सदा सहाई जिनि दुख का काटिआ केतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हाथ देइ राखिओ अपुना करि बिरथा
सगल मिटाई ॥ निँदक के मुख काले कीने जन का आपि सहाई ॥ १ ॥ साचा साहिबु होआ रखवाला राखि लीए कँठि लाइ ॥
निरभउ भए सदा सुख माणे नानक हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ १७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ अउखधु तेरो नामु दइआल ॥ मोहि
आतुर तेरी गति नही जानी तूँ आपि करहि प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे दुतीआ भाउ निवारि ॥ बँधन
काटि लेहु अपुने करि कबहू न आवह हारि ॥ १ ॥ तेरी सरनि पइआ हउ जीवां तूँ सँप्रथु पुरखु मिहरवानु ॥ आठ पहर प्रभ कउ
आराधी नानक सद कुरवानु ॥ २ ॥ १८ ॥

रागु धनासरी महला ५ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

हा हा प्रभ राखि लेहु ॥ हम ते किछु न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि कुटँब सागर संसार
॥ भरम मोह अगिआन अँधार ॥ १ ॥ ऊच नीच सूख दूख ॥ ध्रापसि नाही त्रिसना भूख ॥ २ ॥ मनि बासना रचि बिरखै
बिआपि ॥ पँच दूत सँगि महा असाध ॥ ३ ॥ जीअ जहानु प्रान धनु तेरा ॥ नानक जानु सदा हरि नेरा ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥
धनासरी महला ५ ॥ दीन दरद निवारि ठाकुर राखै जन की आपि ॥ तरण तारण हरि निधि दूखु न सकै बिआपि ॥ १ ॥ साधू
सँगि भजहु गुपाल ॥ आन संजम किछु न सूझै इह जतन काटि कलि काल ॥ रहाउ ॥ आदि अँति दइआल पूरन तिसु बिना
नही कोइ ॥ जनम मरण निवारि हरि जपि सिमरि सुआमी सोइ ॥ २ ॥ बेद सिँमिति कथै सासत भगत करहि बीचारु ॥ मुकति
पाईए साधसँगति बिनसि जाइ अँधारु ॥ ३ ॥ चरन कमल अधारु जन का रासि पूँजी एक ॥ ताणु माणु दीबाणु साचा नानक

की प्रभटेक ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥ धनासरी महला ५ ॥ फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइआ ॥ आन सगल
 बिधि कामि न आवै हरि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ ता ते मोहि धारी ओट गोपाल ॥ सरनि परिओ पूरन परमेसरु बिनसे
 सगल जँजाल ॥ रहाउ ॥ सुरग मिरत पइआल भू मँडल सगल बिआपे माइ ॥ जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि हरि नामु
 धिआइ ॥ २ ॥ नानक नामु निरँजनु गाईऐ पाईऐ सरब निधाना ॥ करि किरपा जिसु देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥ ३
 ॥ ३ ॥ २१ ॥

धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे १३ शितिगुर प्रसादि ॥

छोडि जाहि से करहि पराल ॥ कामि न आवहि से जँजाल ॥ सँगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥ जो बैराई सेई मीत ॥ १ ॥
 ऐसे भरमि भुले संसारा ॥ जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ रहाउ ॥ साचु धरमु नही भावै डीठा ॥ झूठ धोह सिउ रचिओ मीठा
 ॥ दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ जाणै नाही मरणु विचारा ॥ २ ॥ वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥ करम धरम सगला ई
 खोवै ॥ हुकमु न बूझै आवण जाणे ॥ पाप करै ता पछोताणे ॥ ३ ॥ जो तुधु भावै सो परवाणु ॥ तेरे भाणे नो कुरबाणु ॥
 नानकु गरीबु बँदा जनु तेरा ॥ राखि लेइ साहिबु प्रभु मेरा ॥ ४ ॥ १ ॥ २२ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मोहि मसकीन प्रभु
 नामु अधारु ॥ खाटण कउ हरि हरि रोजगारु ॥ सँचण कउ हरि एको नामु ॥ हलति पलति ता कै आवै काम ॥ १ ॥ नामि
 रते प्रभ रँगे अपार ॥ साध गावहि गुण एक निरँकार ॥ रहाउ ॥ साध की सोभा अति मसकीनी ॥ संत वडाई हरि जसु
 चीनी ॥ अनदु संतन कै भगति गोविंद ॥ सूखु संतन कै बिनसी चिंद ॥ २ ॥ जह साध संतन होवहि इकर ॥ तह हरि
 जसु गावहि नाद कवित ॥ साध सभा महि अनद बिस्वाम ॥ उन सँगु सो पाए जिसु मसतकि कराम ॥ ३ ॥ दुइ कर जोडि
 करी अरदासि ॥ चरन परवारि कहां गुण तास ॥ प्रभ दइआल किरपाल हजूरि ॥ नानकु जीवै संता धूरि ॥ ४ ॥ २ ॥ २३
 ॥

धनासरी मः ५ ॥ सो कत डरै जिं खसमु सम्हारै ॥ डरिं डरिं पचे मनमुख वेचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिर ऊपरि मात पिता
गुरुदेव ॥ सफल मूरति जा की निरमल सेव ॥ एकु निरंजनु जा की रासि ॥ मिलिं साधसंगति होवत परगास ॥ १ ॥ जीअन
का दाता पूरन सभ ठाड ॥ कोटि कलेस मिटहि हरि नाड ॥ जनम मरन सगला दुखु नासै ॥ गुरुमुखि जा कै मनि तनि बासै
॥ २ ॥ जिस नो आपि लए लडि लाड ॥ दरगह मिलै तिसै ही जाड ॥ सेई भगत जिं साचे भाणे ॥ जमकाल ते भए निकाणे
॥ ३ ॥ साचा साहिबु सचु दरबारु ॥ कीमति कउणु कहै बीचारु ॥ घटिं घटिं अंतरि सगल अधारु ॥ नानकु जाचै संत
रेणारु ॥ ४ ॥ ३ ॥ २४ ॥

धनासरी महला ५ १३ श्रितिगुर प्रसादि ॥

घरिं बाहरिं तेरा भरवासा तू जन कै है सँगि ॥ करिं किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरिं रँगि ॥ १ ॥ जन कउ प्रभ अपने
का ताणु ॥ जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु ॥ रहाउ ॥ पति परमेसरु गति नाराइणु धनु गुपाल गुण
साखी ॥ चरन सरन नानक दास हरि हरि सँती इह बिधि जाती ॥ २ ॥ १ ॥ २५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ सगल मनोरथ
प्रभ ते पाए कँठि लाड गुरि राखे ॥ संसार सागर महि जलनि न दीने किनै न दुतरु भाखे ॥ १ ॥ जिन कै मनि साचा बिस्वासु
॥ पेखिं पेखिं सुआमी की सोभा आनदु सदा उलासु ॥ रहाउ ॥ चरन सरनि पूरन परमेसुर अंतरजामी साखिओ ॥ जानि
बूझिं अपना कीओ नानक भगतन का अँकुरु राखिओ ॥ २ ॥ २ ॥ २६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जह जह पेखउ तह हजूरिं
दूरिं कतहु न जाई ॥ रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥ १ ॥ ईत ऊत नही बीछुडै सो सँगी गनीऐ ॥ बिनसि जाड जो
निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई ॥ सासि सासि संमालता मेरा प्रभु
सोई ॥ २ ॥ अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जा का रूपु ॥ जपिं जपिं करहि अनँदु जन अचरज आनूपु ॥ ३ ॥ सा मति

देहु दइआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ॥ नानकु मँगै दानु प्रभ रेन पग साधा ॥ ४ ॥ ३ ॥ २७ ॥ धनासरी महला ५ ॥
 जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ ॥ अनद मँगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥ १
 ॥ तुम घरि आवहु मेरे मीत ॥ तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत ॥ रहाउ ॥ प्रगट कीने प्रभ करनेहारे
 नासन भाजन थाके ॥ घरि मँगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे ॥ २ ॥ असाथिर रहहु डोलहु मत कबहु गुर कै
 बचनि अधारि ॥ जै जैकारु सगल भू मँडल मुख ऊजल दरबार ॥ ३ ॥ जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई ॥
 अचरजु कीआ करनेहारै नानक सचु वडिआई ॥ ४ ॥ ४ ॥ २८ ॥

धनासरी महला ५ घरु ६ १४ सितिगुर प्रसादि ॥

सुनहु सँत पिआरे बिनउ हमारे जीउ ॥ हरि बिनु मुकति न काहू जीउ ॥ रहाउ ॥ मन निरमल करम करि तारन तरन हरि
 अवरि जँजाल तेरै काहू न काम जीउ ॥ जीवन देवा पारब्रहम सेवा इहु उपदेसु मो कउ गुरि दिना जीउ ॥ १ ॥ तिसु सिउ न
 लाईरे हीतु जा को किछु नाही बीतु अँत की बार ओहु साँगि न चालै ॥ मनि तनि तू आराध हरि के प्रीतम साध जा कै साँगि
 तेरे बँधन छूटै ॥ २ ॥ गहु पारब्रहम सरन हिरदै कमल चरन अवर आस कछु पटलु न कीजै ॥ सोई भगतु गिआनी
 धिआनी तपा सोई नानक जा कउ किरपा कीजै ॥ ३ ॥ १ ॥ २९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरे लाल भलो रे भलो रे भलो
 हरि मँगना ॥ देखहु पसारि नैन सुनहु साधू के बैन प्रानपति चिति राखु सगल है मरना ॥ रहाउ ॥ चँदन चोआ रस भोग
 करत अनेकै बिखिआ बिकार देखु सगल है फीके एकै गोबिद को नामु नीको कहत है साध जन ॥ तनु धनु आपन थापिओ
 हरि जपु न निमख जापिओ अरथु द्रबु देखु कछु साँगि नाही चलना ॥ १ ॥ जा कोरे करमु भला तिनि ओट गही सँत पला

तिन नाही रे जमु सँतावै साधू की सँगना ॥ पाइओ रे परम निधानु मिटिओ है अभिमानु एकै निरँकार नानक मनु लगना ॥ २
॥ २ ॥ ३० ॥

धनासरी महला ५ वरु ७ १४ शितिगुर प्रसादि ॥

हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि पिआरे ॥ कलिं कलेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ॥ रहाउ ॥ सासि सासि निमख
निमख दिनसु रैनि चितारे ॥ साधसँग जपि निसँग मनि निधानु धारे ॥ १ ॥ चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे ॥
साध जना की रेन नानक मँगल सूख सधारे ॥ २ ॥ १ ॥ ३१

धनासरी महला ५ वरु ८ दुपदे १४ शितिगुर प्रसादि ॥

सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले ॥ इह लोकि परलोकि सँगि सहाई जत कत मोहि रखवाले ॥ १ ॥ गुर
का बचनु बसै जीअ नाले ॥ जलिं नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहिं न साकै जाले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरधन कउ धनु अँधुले
कउ टिक मात दूधु जैसे बाले ॥ सागर महिं बोहिथु पाइओ हरि नानक करी क्रिपा किरपाले ॥ २ ॥ १ ॥ ३२ ॥ धनासरी
महला ५ ॥ भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अँम्रितु रिदै सिँचाई ॥ नव निधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥ १ ॥ सँतन
कउ अनदु सगल ही जाई ॥ ग्रिहि बाहरि ठाकुरु भगतन का रवि रहिआ सब ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता कउ कोइ न
पहुचनहारा जा कै अँगि गुसाई ॥ जम की त्रास मिटै जिसु सिमरत नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥ धनासरी महला
५ ॥ दरबवँतु दरबु देखिं गरबै भूमवँतु अभिमानी ॥ राजा जानै सगल राजु हमरा तिउ हरि जन टेक सुआमी ॥ १ ॥ जे कोऊ
अपुनी ओट समारै ॥ जैसा बितु तैसा होइ वरतै अपुना बलु नाही हारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन तिआगि भए इक आसर सरणिं
सरणिं करिं आए ॥ सँत अनुग्रह भए मन निरमल नानक हरि गुन गाए ॥ २ ॥ ३ ॥ ३४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जा कउ

हरि रँगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरु ॥ आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा ॥ १ ॥ ठाकुरु
गाईऐ आतम रँगि ॥ सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन सँगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन के चरन वसहि मैरै हीअरै
सँगि पुनीता देही ॥ जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही ॥ २ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जतन
करै मानुख डहकावै ओहु अंतरजामी जानै ॥ पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥ १ ॥ जानत दूरि तुमहि प्रभ
नेरि ॥ उत ताकै उत ते उत पेखै आवै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥ जब लगु तुटै नाही मन भरमा तब लगु मुकतु न कोई ॥ कहु
नानक दइआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई ॥ २ ॥ ५ ॥ ३६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ नामु गुरि दीओ है अपनै जा कै
मसतकि करमा ॥ नामु द्विड़ावै नामु जपावै ता का जुग महि धरमा ॥ १ ॥ जन कउ नामु वडाई सोभ ॥ नामो गति नामो
पति जन की मानै जो जो होग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम धनु जिसु जन कै पालै सोई पूरा साहा ॥ नामु बिउहारा नानक
आधारा नामु परापति लाहा ॥ २ ॥ ६ ॥ ३७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ नेत्र पुनीत भए दरस पेखे माथै परउ खाल ॥
रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥ १ ॥ तुम तउ राखनहार दइआल ॥ सुंदर सुघर बेअंत पिता प्रभ
होहु प्रभू किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा अनंद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल ॥ हिरदै चरण सबदु सतिगुर को
नानक बांधिओ पाल ॥ २ ॥ ७ ॥ ३८ ॥ धनासरी महला ५ ॥ अपनी उकति खलावै भोजन अपनी उकति खेलावै ॥
सरब सुख भोग रस देवै मन ही नालि समावै ॥ १ ॥ हमरे पिता गोपाल दइआल ॥ जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे
ही प्रभ पाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीत साजन सरब गुण नाइक सदा सलामति देवा ॥ ईत ऊत जत कत तत तुम ही मिलै
नानक संत सेवा ॥ २ ॥ ८ ॥ ३९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ संत क्रिपाल दइआल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे ॥ राजु
मालु जोबनु तनु जीअरा ऊपरि लै बारे ॥ १ ॥ मनि तनि राम नाम हितकोरे ॥ सुख सहज आनंद मंगल सहित

भव निधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥ धँनि सु थानु धँनि ओइ भवना जा महि सँत बसारे ॥ जन नानक की सरधा पूरहु
 ठाकुर भगत तेरे नमसकारे ॥ २ ॥ ९ ॥ ४० ॥ धनासरी महला ५ ॥ छडाइ लीओ महा बली ते अपने चरन पराति ॥
 एकु नामु दीओ मन मँता बिनसि न कतहू जाति ॥ १ ॥ सतिगुरि पूरै कीनी दाति ॥ हरि हरि नामु दीओ कीरतन कउ
 भई हमारी गाति ॥ रहाउ ॥ अँगीकारु कीओ प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति ॥ नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु
 पाइओ दिन राति ॥ २ ॥ १० ॥ ४१ ॥ धनासरी महला ५ ॥ पर हरना लोभु झूठ निँद इव ही करत गुदारी ॥ मिग
 त्रिसना आस मिथिआ मीठी इह टेक मनहि साधारी ॥ १ ॥ साकत की आवरदा जाइ ब्रिथारी ॥ जैसे कागद के भार
 मूसा टूकि गवावत कामि नही गावारी ॥ रहाउ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी इह बँधन छुटकारी ॥ बूडत अँध नानक
 प्रभ काढत साध जना सँगारी ॥ २ ॥ ११ ॥ ४२ ॥ धनासरी महला ५ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभ अपना सीतल
 तनु मनु छाती ॥ रूप रँग सूख धनु जीअ का पारब्रहम मोरै जाती ॥ १ ॥ रसना राम रसाइनि माती ॥ रँगि रँगी राम
 अपने कै चरन कमल निधि थाती ॥ रहाउ ॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती ॥ मेलि लीओ आपे
 सुखदातै नानक हरि राखी पाती ॥ २ ॥ १२ ॥ ४३ ॥ धनासरी महला ५ ॥ दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट
 प्रतापु तुमारा ॥ जो जो तेरे भगत दुखाए ओहु ततकाल तुम मारा ॥ १ ॥ निरखउ तुमरी ओरि हरि नीत ॥ मुरारि
 सहाइ होहु दास कउ करु गहि उधरहु मीत ॥ रहाउ ॥ सुणी बेनती ठाकुरि मेरै खसमाना करि आपि ॥ नानक अनद भए
 दुख भागे सदा सदा हरि जापि ॥ २ ॥ १३ ॥ ४४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि
 करु धारिओ ॥ क्रिपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥ १ ॥ हरि जन राखे गुर गोविँद ॥ कँठि
 लाइ अवगुण सभि मेटे दइआल पुरख बखसँद ॥ रहाउ ॥ जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै ॥ नानक दासु

मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥ २ ॥ १४ ॥ ४५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु
 समाले ॥ हाथ देइ रखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥ १ ॥ प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु ॥ आदि अँति प्रभु सदा
 सहाई धँनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ मनि बिलास भए साहिब के अचरज देखि बडाई ॥ हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक
 प्रभि पूरन पैज रखाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ४६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहु अभागा ॥
 चरन कमल जा का मनु रागिओ अमिअ सरोवर पागा ॥ १ ॥ तेरा जनु राम नाम सँगि जागा ॥ आलसु छीजि गइआ सभु
 तन ते प्रीतम सिउ मनु लागा ॥ रहाउ ॥ जह जह पेखओ तह नाराइणि सगल घटा महि तागा ॥ नाम उदकु पीवत जन
 नानक तिआगे सभि अनुरागा ॥ २ ॥ १६ ॥ ४७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जन के पूरन होए काम ॥ कली काल महा
 बिखिआ महि लजा राखी राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना निकटि न आवै जाम ॥ मुकति बैकुँठ
 साध की सँगति जन पाइओ हरि का धाम ॥ १ ॥ चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम ॥ गोबिंदु दमोदर
 सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥ २ ॥ १७ ॥ ४८ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मांगउ राम ते इकु दानु ॥ सगल मनोरथ
 पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन तुम्हारे हिरदै वासहि सँतन का सँगु पावउ ॥ सोग अगनि महि मनु न
 विआपै आठ पहर गुण गावउ ॥ १ ॥ स्वसति बिवसथा हरि की सेवा मध्यँत प्रभ जापण ॥ नानक रँगु लगा परमेसर बाहुडि
 जनम न छापण ॥ २ ॥ १८ ॥ ४९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मांगउ राम ते सभि थोक ॥ मानुख कउ जाचत स्रमु पाईरे प्रभ
 कै सिमरनि मोख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोखे मुनि जन सिँमिति पुराना बेद पुकारहि घोख ॥ क्रिपा सिँधु सेवि सचु पाईरे दोवै
 सुहेले लोक ॥ १ ॥ आन अचार बिउहार है जेते बिनु हरि सिमरन फोक ॥ नानक जनम मरण भै काटे मिलि साधू बिनसे
 सोक ॥ २ ॥ १९ ॥ ५० ॥ धनासरी महला ५ ॥ त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥ महा सँतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै

पूरन धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल ॥ अपना नामु देहि जपि जीवा पूरन
 होइ दास की घाल ॥ १ ॥ सरब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम ॥ जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै
 नानक जन के पूरन काम ॥ २ ॥ २० ॥ ५१ ॥ धनासरी मः ५ ॥ जन की कीनी पारब्रहमि सार ॥ निँदक इकनु न पावनि मूले
 ऊडि गए बेकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह जह देखओ तह तह सुआमी कोइ न पहुचनहार ॥ जो जो करै अवागिआ जन की होइ
 गइआ तत छार ॥ १ ॥ करनहारु रखवाला होआ जा का अँतु न पारावार ॥ नानक दास रखे प्रभि अपुनै निँदक काढे मारि ॥
 २ ॥ २१ ॥ ५२ ॥

धनासरी महला ५ घरु ९ पड़ताल १३ श्रितिगुर प्रसादि ॥

हरि चरन सरन गोबिंद दुख भँजना दास अपुने कउ नामु देवहु ॥ द्रिसटि प्रभ धारहु क्रिपा करि तारहु भुजा गहि कूप ते काढि लेवहु
 ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध करि अँध माइआ के बँध अनिक दोखा तनि छादि पूरे ॥ प्रभ बिना आन न राखनहारा नामु सिमरावहु
 सरनि सूरे ॥ १ ॥ पतित उधारणा जीअ जँत तारणा बेद उचार नही अँतु पाइओ ॥ गुणह सुख सागरा ब्रहम रतनहारा भगति
 वछलु नानक गाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ ५३ ॥ धनासरी महला ५ ॥ हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो नामु गोबिंद का
 सदा लीजै ॥ मिटहि कमाणे पाप चिराणे साधसँगति मिलि मुआ जीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राज जोबन बिसरँत हरि माइआ महा
 दुखु एहु महांत कहै ॥ आस पिआस रमण हरि कीरतन एहु पदारथ भागवँतु लहै ॥ १ ॥ सरणि समरथ अकथ अगोचरा पतित
 उधारण नामु तेरा ॥ अँतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुरु मेरा ॥ २ ॥ २ ॥ ५४ ॥

धनासरी महला ५ घरु १२ १३ श्रितिगुर प्रसादि ॥

बँदना हरि बँदना गुण गावहु गोपाल राइ ॥ रहाउ ॥ वडै भागि

भेते गुरदेवा ॥ कोटि पराध मिटे हरि सेवा ॥ १ ॥ चरन कमल जा का मनु रापै ॥ सोग अगनि तिसु जन न बिआपै ॥ २
 ॥ सागरु तरिआ सधू सँगे ॥ निरभउ नामु जपहु हरि रँगे ॥ ३ ॥ पर धन दोख किछु पाप न फेड़े ॥ जम जँदारु न
 आवै नेड़े ॥ ४ ॥ त्रिसना अगनि प्रभि आपि बुझाई ॥ नानक उधरे प्रभ सरणाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ५५ ॥ धनासरी महला
 ५ ॥ त्रिपति भई सचु भोजनु खाइआ ॥ मनि तनि रसना नामु धिआइआ ॥ १ ॥ जीवना हरि जीवना ॥ जीवनु हरि
 जपि साधसँगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकारी बसत्र ओढाए ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुन गाए ॥ २ ॥ हसती रथ
 असु असवारी ॥ हरि का मारगु रिदै निहारी ॥ ३ ॥ मन तन अँतरि चरन धिआइआ ॥ हरि सुख निधान नानक दासि
 पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ गुर के चरन जीअ का निसतारा ॥ समुँदु सागरु जिनि खिन महि
 तारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई होआ क्रम रतु कोई तीरथ नाइआ ॥ दासीँ, हरि का नामु धिआइआ ॥ १ ॥ बँधन
 काटनहारु सुआमी ॥ जन नानक सिमरै अँतरजामी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ कितै प्रकारि न तूटउ
 प्रीति ॥ दास तेरे की निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मन धन ते पिआरा ॥ हउमै बँध हरि देवणहारा ॥ १ ॥
 चरन कमल सिउ लागउ नेहु ॥ नानक की बेनँती एह ॥ २ ॥ ४ ॥ ५८ ॥

१८ सतिगुर परसादि ॥ धनासरी महला ९ ॥

काहे रे बन खोजन जाई ॥ सब निवासी सदा अलेपा तोही सँगे समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुहप मधि जिउ बासु बसतु है
 मुकर माहि जैसे छाई ॥ तैसे ही हरि बसे निरँतरि घट ही खोजहु भाई ॥ १ ॥ बाहरि भीतरि एकि जानहु इहु गुर गिआनु
 बताई ॥ जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥ २ ॥ १ ॥ धनासरी महला ९ ॥ साधो इहु जगु भ्रम
 भुलाना ॥ राम नाम का सिमरनु

छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥ जोबनु धनु प्रभता
 कै मद मै अहिनि सिरै रहै दिवाना ॥ १ ॥ दीन दइआल सदा दुख भँजन ता सिउ मनु न लगाना ॥ जन नानक कोटन मै
 किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥ २ ॥ २ ॥ धनासरी महला ९ ॥ तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥ लोभ मोह माइआ
 ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर निँदा उसतति नह जा कै कँचन लोह समानो ॥ हरख सोग ते
 रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥ १ ॥ चँचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ कहु नानक इह बिधि
 को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ ३ ॥ धनासरी महला ९ ॥ अब मै कउनु उपाउ करउ ॥ जिह बिधि मन को
 सँसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥ मन बच क्रम हरि
 गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥ १ ॥ गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥ कहु नानक
 प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ९ ॥ १३ ॥ ५८ ॥ ४ ॥ ९३ ॥

धनासरी महला १ घरु २ असटपदीआ १९ शितिगुर प्रसादि ॥

गुरु सागरु रतनी भरपूरे ॥ अँमितु सँत चुगहि नही दूरे ॥ हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै ॥ सरवर महि हँसु प्रानपति
 पावै ॥ १ ॥ किआ बगु बपुडा छपडी नाइ ॥ कीचडि डूबै मैलु न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रखि रखि चरन धरे वीचारी ॥
 दुबिधा छोडि भए निरँकारी ॥ मुकति पदारथु हरि रस चाखे ॥ आवण जाण रहे गुरि राखे ॥ २ ॥ सरवर हँसा छोडि न
 जाइ ॥ प्रेम भगति करि सहजि समाइ ॥ सरवर महि हँसु हँस महि सागरु ॥ अकथ कथा गुर बचनी आदरु ॥ ३ ॥
 सुँन मँडल इकु जोगी बैसे ॥ नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे ॥ त्रिभवण जोति रहे लिव लाई ॥ सुरि नर नाथ सचे
 सरणाई ॥ ४ ॥ आनँद मूलु अनाथ अधारी ॥ गुरमुखि भगति सहजि बीचारी ॥ भगति वछल भै काटणहारे ॥

हउमै मारि मिले पगु धारे ॥ ५ ॥ अनिक जतन करि कालु सँताए ॥ मरणु लिखइ मँडल महि आए ॥ जनमु पदारथु दुबिधा
 खोवै ॥ आपु न चीनसि भ्रमि भ्रमि रोवै ॥ ६ ॥ कहतउ पड़तउ सुणतउ एक ॥ धीरज धरमु धरणीधर टेक ॥ जतु सतु सँजमु
 रिदैं समाए ॥ चउथे पद कउ जे मनु पतीआए ॥ ७ ॥ साचे निरमल मैलु न लागै ॥ गुरु कै सबदि भरम भउ भागै ॥ सूरति
 मूरति आदि अनूपु ॥ नानकु जाचै साचु सरूपु ॥ ८ ॥ १ ॥ धनासरी महला १ ॥ सहजि मिलै मिलिआ परवाणु ॥ ना तिसु
 मरणु न आवणु जाणु ॥ ठाकुर महि दासु दास महि सोइ ॥ जह देखा तह अवरु न कोइ ॥ १ ॥ गुरुमुखि भगति सहज घरु
 पाईरे ॥ बिन गुरु भेटे मरि आईरे जाईरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो गुरु करउ जि साचु द्विडावै ॥ अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥
 हरि के लोग अवर नही कारा ॥ साचउ ठाकुरु साचु पिआरा ॥ २ ॥ तन महि मनूआ मन महि साचा ॥ सो साचा मिलि साचे
 राचा ॥ सेवकु प्रभ कै लागै पाइ ॥ सतिगुरु पूरा मिलै मिलाइ ॥ ३ ॥ आपि दिखावै आपे देखै ॥ हठि न पतीजै ना बहु भैखै
 ॥ घडि भाडे जिनि अँमितु पाइआ ॥ प्रेम भगति प्रभि मनु पतीआइआ ॥ ४ ॥ पडि पडि भूलहि चोटा खाहि ॥ बहुतु
 सिआणप आवहि जाहि ॥ नामु जपै भउ भोजनु खाइ ॥ गुरुमुखि सेवक रहे समाइ ॥ ५ ॥ पूजि सिला तीरथ बनवासा ॥
 भरमत डोलत भए उदासा ॥ मनि मैलै सूचा किउ होइ ॥ साचि मिलै पावै पति सोइ ॥ ६ ॥ आचारा वीचारु सरीरि ॥ आदि
 जुगादि सहजि मनु धीरि ॥ पल पँकज महि कोटि उधारे ॥ करि किरपा गुरु मेलि पिआरे ॥ ७ ॥ किसु आगै प्रभ तुधु सालाही
 ॥ तुधु बिनु दूजा मै को नाही ॥ जिउ तुधु भावै तिउ राखुरजाइ ॥ नानक सहजि भाइ गुण गाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

धनासरी महला ५ घरु ६ असटपदी १८ सतिगुरु प्रसादि ॥

जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनमु सँजोगि पाइआ ॥ ता की है ओट साध राखहु दे करि हाथ करि किरपा
 मेलहु हरि राइआ ॥ १ ॥ अनिक जनम भ्रमि

थिति नही पाई ॥ करउ सेवा गुर लागउ चरन गोविंद जी का मारगु देहु जी बताई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव करउ माइआ कउ बचिति धरउ मेरी मेरी करत सद ही विहावै ॥ कोई ऐसो रे भेटै संतु मेरी लाहै सगल चिंत ठाकुर सिउ मेरा रँगु लावै ॥ २ ॥ पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पँचा ॥ कोई ऐसो रे भगतु जु माइआ ते रहतु इकु अँमितु नामु मेरै रिदै सिँचा ॥ ३ ॥ जेते रे तीरथ नाए अहँबुधि मैलु लाए घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै ॥ कदि पावउ साधसँगु हरि हरि सदा आनँदु गिआन अँजनि मेरा मनु इसनानै ॥ ४ ॥ सगल अस्रम कीने मनुआ नह पतीने बिबेकहीन देही धोए ॥ कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रहम कै रँगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोए ॥ ५ ॥ करम धरम जुगता निमख न हेतु करता गरबि गरबि पड़ै कही न लेखै ॥ जिसु भेटीऐ सफल मूरति करै सदा कीरति गुर परसादि कोऊ नेत्रहु पेशै ॥ ६ ॥ मनहठि जो कमावै तिलु न लेखै पावै बगुल जिउ धिआनु लावै माइआ रे धारी ॥ कोई ऐसो रे सुखह दाई प्रभ की कथा सुनाई तिसु भेटे गति होइ हमारी ॥ ७ ॥ सुप्रसँन गोपाल राइ काटै रे बँधन माइ गुर कै सबदि मेरा मनु राता ॥ सदा सदा आनँदु भेटिओ निरभै गोबिंदु सुख नानक लाधे हरि चरन पराता ॥ ८ ॥ सफल सफल भई सफल जात्रा ॥ आवण जाण रहे मिले साधा ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

धनासरी महला १ छँत १८ सतिगुर प्रसादि ॥

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥ तीरथु सबद बीचारु अँतरि गिआनु है ॥ गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ॥ हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ॥ संसारु रोगी नामु दारु मैलु लागै सच बिना ॥ गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥ १ ॥ साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ॥ गुणहि हारु परोइ किस कउ रोईऐ ॥

वीचारिं मारै तरै तारै उकटि जोनि न आवए ॥ आपि पारसु परम धिआनी साचु साचे भावए ॥ आनँदु अनदिनु हरखु
 साचा दूख किलविख परहरे ॥ सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ मैलु नाही सच मने ॥ २ ॥ सँगति मीत मिलापु पूरा
 नावणो ॥ गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ॥ सालाहि साचे मँनि सतिगुरु पुँनु दान दइआ मते ॥ पिर सँगि भावै
 सहजिं नावै बेणी त सँगमु सत सते ॥ आराधि एकँकारु साचा नित देइ चडै सवाइआ ॥ गति सँगि मीता सँतसँगति करि
 नदरि मेलिं मिलाइआ ॥ ३ ॥ कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीरे ॥ हउ मूरख नीचु अजाणु समझा साखीरे ॥ सचु गुरु
 की साखी अँमित भाखी तितु मनु मानिआ मेरा ॥ कूचु करहि आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ॥ आखणिं तोटि न
 भगति भँडारी भरिपुरि रहिआ सोई ॥ नानक साचु कहै बेनँती मनु मांजै सचु सोई ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला १ ॥
 जीवा तरै नाइ मनि आनँदु है जीउ ॥ साचो साचा नाउ गुण गोविँदु है जीउ ॥ गुर गिआनु अपारा सिरजणहारा जिनि
 सिरजी तिनि गोई ॥ परवाणा आइआ हुकमि पठाइआ फेरि न सकै कोई ॥ आपे करि वेखै सिरि सिरि लेखै आपे सुरति
 बुझाई ॥ नानक साहिबु अगम अगोचरु जीवा सची नाई ॥ १ ॥ तुम सरिं अवरु न कोइ आइआ जाइसी जीउ ॥
 हुकमी होइ निबेडु भरमु चुकाइसी जीउ ॥ गुरु भरमु चुकाए अकथु कहाए सच महि साचु समाणा ॥ आपि उपाए आपि
 समाए हुकमी हुकमु पछाणा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई तू मनि अँति सखाई ॥ नानक साहिबु अवरु न दूजा नामि तरै
 वडिआई ॥ २ ॥ तू सचा सिरजणहारु अलख सिँरदिआ जीउ ॥ एकु साहिबु दुइ राह वाद वधँदिआ जीउ ॥ दुइ राह
 चलाए हुकमि सबाए जनामि मुआ सँसारा ॥ नाम बिना नाही को बेली बिखु लादी सिरि भारा ॥ हुकमी आइआ हुकमु न
 बूझै हुकमि सवारणहारा ॥ नानक साहिबु सबदि सिजापै साचा सिरजणहारा ॥ ३ ॥ भगत सोहहि दरवारिं सबदि
 सुहाइआ जीउ ॥ बोलहि अँमित बाणि रसन रसाइआ जीउ ॥ रसन रसाए नामि तिसाए गुर कै सबदि विकाणे ॥

पारसि परसिरे पारसु होए जा तेरै मनि भाणे ॥ अमरा पदु पाइआ आपु गवाइआ विरला गिआन वीचारी ॥ नानक भगत
 सोहनि दरि साचै साचे के वापारी ॥ ४ ॥ भूख पिआसो आथि किउ दरि जाइसा जीउ ॥ सतिगुर पूछउ जाइ नामु
 धिआइसा जीउ ॥ सचु नाम धिआई साचु चवाई गुरमुखि साचु पछाणा ॥ दीना नाथु दइआल निरँजनु अनदिनु नामु
 वखाणा ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई आपि मुआ मनु मारी ॥ नानक नामु महा रसु मीठा त्रिसना नामि निवारी ॥ ५ ॥ २
 ॥ धनासरी छँत महला १ ॥ पिर सँगि मूठड़ीए खबरि न पाईआ जीउ ॥ मसतकि मिखिअड़ा लेखु पुरबि कमाइआ जीउ
 ॥ लेखु न मिटई पुरबि कमाइआ किआ जाणा किआ होसी ॥ गुणी अचारि नही रँगि राती अवगुण बहि बहि रोसी ॥ धनु
 जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुँनिआ ॥ नानक नाम बिना दोहागणि छूटी झूठि विछुँनिआ ॥ १ ॥ बूडी घरु
 घालिओ गुर कै भाइ चलो ॥ साचा नामु धिआइ पावहि सुखि महलो ॥ हरि नामु धिआए ता सुखु पाए पेईअडै दिन चारे
 ॥ निज घरि जाइ बहै सचु पाए अनदिनु नालि पिआरे ॥ विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाए ॥ नानक
 सरसी ता पिरु पाए राती साचै नाए ॥ २ ॥ पिरु धन भावै ता पिर भावै नारी जीउ ॥ रँगि प्रीतम राती गुर कै सबदि
 वीचारी जीउ ॥ गुर सबदि वीचारी नाह पिआरी निवि निवि भगति करेई ॥ माइआ मोहु जलाए प्रीतमु रस महि रँगु करेई
 ॥ प्रभ साचे सेती रँगि रँगोती लाल भई मनु मारी ॥ नानक साचि वसी सोहागणि पिर सिउ प्रीति पिआरी ॥ ३ ॥ पिर
 घरि सोहै नारि जे पिर भावए जीउ ॥ झूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ ॥ झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी
 ॥ अवगुणिआरी कँति विसारी छूटी विधण रैणी ॥ गुर सबदु न मानै फाही फाथी साधन महलु न पाए ॥ नानक आपे
 आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाए ॥ ४ ॥ धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ ॥ नाम बिना कूड़िआरि कूडु
 कमाणिआ जीउ ॥ हरि भगत सुहावी साचे भावी भाइ भगति प्रभ राती ॥ पिरु रलीआला जोबनि बाला तिसु

रावे रँगि राती ॥ गुर सबदि विगासी सह्रु रावासी फलु पाइआ गुणकारी ॥ नानक साचु मिलै वडिआई पिर घरि सोहै नारी ॥

७ ॥ ३ ॥

धनासरी छँत महला ४ वरु १ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ ॥ गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए ॥ अहँकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए ॥ आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ ॥ हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ १ ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै जीउ ॥ हउ तिसु सेवी दिनु राति मै कदे न वीसरै जीउ ॥ कदे न विसारी अनदिनु समाहरी जा नामु लई ता जीवा ॥ स्रवणी सुणी त इहु मनु त्रिपतै गुरमुखि अँमितु पीवा ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले अनदिनु बिबेक बुधि बिचरै ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै ॥ २ ॥ सत संगति मिलै बडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ अनदिनु रहै लिव लाइ त सहजि समावए जीउ ॥ सहजि समावै ता हरि मनि भावै सदा अतीतु बैरागी ॥ हलति पलति सोभा जग अंतरि राम नामि लिव लागी ॥ हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभु करे सु भावए ॥ सतसंगति मिलै बडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ ३ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ ॥ हाइ हाइ करे दिनु राति माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए ॥ जो प्रभु देइ तिसु चेतै पुतर कलत्र माइआ धोहिआ ॥ माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए ॥ जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही अँति गइआ पछुतावए ॥ बिनु नावै को साथि न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुखि जमि जोहिआ जीउ ॥ ४ ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पाइआ जीउ ॥ सदा रहै कर जोडि प्रभु मनि भाइआ जीउ ॥ प्रभु मनि भावै ता हुकमि समावै हुकमु मँनि सुखु पाइआ ॥ अनदिनु जपत रहै दिनु राती सहजे नामु धिआइआ ॥ नामो नामु मिली वडिआई नानक नामु मनि भावए ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पावए जीउ ॥ ७ ॥ १ ॥

धनासरी महला ७ छँत १३ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर दीन दइआल जिंसु सँगि हरि गावीरे जीउ ॥ अँम्रितु हरि का नामु साधसँगि रावीरे जीउ ॥ भजु सँगि साधू इकु अराधू
जनम मरन दुख नासए ॥ धुरि करमु लिखिआ साचु सिखिआ कटी जम की फासए ॥ भै भरम नाठे छुटी गाठे जम पँथि मूलि न
आवीरे ॥ बिनवँति नानक धारि किरपा सदा हरि गुण गावीरे ॥ १ ॥ निधरिआ धर एकु नामु निरँजनो जीउ ॥ तू दाता दातारु
सरब दुख भँजनो जीउ ॥ दुख हरत करता सुखह सुआमी सरणि साधू आइआ ॥ सँसारु सागरु महा बिखड़ा पल एक माहि
तराइआ ॥ पूरि रहिआ सरब थाई गुर गिआनु नेत्री अँजनो ॥ बिनवँति नानक सदा सिमरी सरब दुख भै भँजनो ॥ २ ॥ आपि
लीए लडि लाइ किरपा धारीआ जीउ ॥ मोहि निरगुणु नीचु अनाथु प्रभ अगम अपारीआ जीउ ॥ दइआल सद क्रिपाल सुआमी
नीच थपणहारिआ ॥ जीअ जँत सभि वसि तेरै सगल तेरी सारिआ ॥ आपि करता आपि भुगता आपि सगल बीचारीआ ॥
बिनवँत नानक गुण गाइ जीवा हरि जपु जपउ बनवारीआ ॥ ३ ॥ तेरा दरसु अपारु नामु अमोलई जीउ ॥ निति जपहि तेरे दास
पुख अतोलई जीउ ॥ सँत रसन वूठा आपि तूठा हरि रसहि सेई मातिआ ॥ गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिनु जागिआ ॥
सदा सदा सिँम्रतव्य सुआमी सासि सासि गुण बोलई ॥ बिनवँति नानक धुरि साधू नामु प्रभू अमोलई ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की १३ सतिगुर परसादि ॥

सनक सनँद महेस समानां ॥ सेखनागि तेरो मरमु न जानां ॥ १ ॥ सँत सँगति रामु रिदै बसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हनूमान सरि
गरुड़ समानां ॥ सुरपति नरपति नही गुन जानां ॥ २ ॥ चारि बेद अरु सिँम्रित पुरानां ॥ कमलापति कवला नही जानां ॥ ३
॥ कहि कबीर सो भरमै नाही ॥ पग लागि राम रहै सरनाई ॥ ४ ॥ १ ॥ दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै ॥ कालु

अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥ १ ॥ सो दिनु आवन लागा ॥ मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है
 का का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥ लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछु न
 सूझै ॥ २ ॥ कहत कबीर सुनहु रे प्राणी छोडहु मन के भरमा ॥ केवल नामु जपहु रे प्राणी परहु एक की सरनां ॥ ३ ॥ २ ॥
 जो जनु भाउ भगति कछु जानै ता कउ अचरजु काहो ॥ जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ दुरि मिलिओ जुलाहो ॥ १
 ॥ हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा ॥ जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहतु कबीर
 सुनहु रे लोई भरमि न भूलहु कोई ॥ किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई ॥ २ ॥ ३ ॥ इंद्र लोक सिव
 लोकहि जैबो ॥ ओछे तप करि बाहुरि ऐबो ॥ १ ॥ किआ मांगउ किछु थिरु नाही ॥ राम नाम रखु मन माही ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ सोभा राज बिभै बडिआई ॥ अँति न काहू सँग सहाई ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र लछमी माइआ ॥ इन ते कहु कवनै सुखु पाइआ
 ॥ ३ ॥ कहत कबीर अवर नहीं कामा ॥ हमरै मन धन राम को नामा ॥ ४ ॥ ४ ॥ राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई
 ॥ राम नाम सिमरन बिनु बूडते अधिकई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बनिता सुत देह ग्रेह संपति सुखदाई ॥ इन्ह मै कछु नाहि तेरो
 काल अवध आई ॥ १ ॥ अजामल गज गनिका पतित करम कीने ॥ तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने ॥ २ ॥ सूकर
 कूकर जोनि भ्रमे तऊ लाज न आई ॥ राम नाम छाडि अँमित काहे बिखु खाई ॥ ३ ॥ तजि भरम करम बिधि निखेध राम
 नामु लेही ॥ गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही ॥ ४ ॥ ५ ॥

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की १४ सितिगुर प्रसादि ॥

गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मँडप छाए ॥ मारकँडे ते को अधिकई जिनि त्रिण धरि मूँड बलाए ॥ १ ॥ हमरो करता रामु
 सनेही ॥ काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥ बारह
 जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन

खाई ॥ २ ॥ सरब सोइन की लँका होती रावन से अधिकार्ई ॥ कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई ॥ ३ ॥
 दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥ क्रिपा करी जन अपुने ऊपरि नामदेउ हरि गुन गाए ॥ ४ ॥ १ ॥ दस
 बैरागनि मोहि बसि कीनीह पँचहु का मिट नावउ ॥ सतरि दोइ भरे अँमित सरि बिखु कउ मारि कढावउ ॥ १ ॥ पाछै बहुरि
 न आवनु पावउ ॥ अँमित बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बजर कुठारु मोहि है छीनां करि
 मिँनति लागि पावउ ॥ सँतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डरपावउ ॥ २ ॥ इह सँसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह
 लपटावउ ॥ माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ॥ ३ ॥ इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ सगल
 चुकाईए ॥ कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह सँजम हरि पाईए ॥ ४ ॥ २ ॥ मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा
 करहला ॥ जिउ कुरँक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ १ ॥ तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रँग रूड़ो मेरो
 रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ धरणी कउ इँद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥ जिउ कोकिल कउ अँबु बालहा तिउ मेरै
 मनि रामईआ ॥ २ ॥ चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हँसुला ॥ जिउ तरुणी कउ कँतु बालहा तिउ मेरै मनि
 रामईआ ॥ ३ ॥ बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख जैसे जलधरा ॥ मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि
 रामईआ ॥ ४ ॥ साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥ सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि
 बीठुला ॥ ५ ॥ ३ ॥ पहिल पुरीए पँडरक वना ॥ ता चे हँसा सगले जनां ॥ क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचँती नाचना
 ॥ १ ॥ पहिल पुरसाबिरा ॥ अथोन पुरसादमरा ॥ असगा अस उसगा ॥ हरि का बागरा नाचै पिँधी महि सागरा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ नाचँती गोपी जँना ॥ नईआ ते बैरे कँना ॥ तरकु न चा ॥ भमीआ चा ॥ केसवा बचउनी अईए मईए एक
 आन जीउ ॥ २ ॥ पिँधी उभकले सँसारा ॥ भमि भमि आए तुम चे दुआरा ॥ तू कुनुरे ॥ मै की ॥ नामा ॥

हो जी ॥ आला ते निवारणा जम कारणा ॥ ३ ॥ ४ ॥ पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥ धँनि ते वै मुनि जन जिन
धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥ १ ॥ मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की ॥ सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥ १ ॥
रहाउ ॥ दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी ॥ चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥ २ ॥ ५ ॥

धनासरी भगत रविदास जी की १३ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥ बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥ १ ॥ हउ
बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥ कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥ बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥
कहि रविदास आस लागि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥ २ ॥ १ ॥ चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी
सुजसु पूरि राखउ ॥ मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अँम्रित राम नाम भाखउ ॥ १ ॥ मेरी प्रीति गोबिंद सिउ
जिनि घटै ॥ मै तउ मोलि महगी कई जीअ सटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसँगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही
होइ तेरी ॥ कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥ २ ॥ २ ॥ नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
नामु तेरा अँभुला नामु तेरो चँदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥ १ ॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु
ले माहि पसारे ॥ नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥ २ ॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार
अठारह सगल जूठारे ॥ तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥ ३ ॥ दस अठा अठसठे चारे
खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥ कहै रविदासु नामु तेरो आरती सतिनामु है हरि भोग तुहारे ॥ ४ ॥ ३ ॥

धनासरी बाणी भगतां की त्रिलोचन वसतिगुरु प्रसादि ॥

नाराइण निँदसि काइ भूली गवारी ॥ दुक्रितु सुक्रितु थारो करमु री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँकरा मसतकि बसता सुरसरी
इसनानरे ॥ कुल जन मधे मिलियो सारग पानरे ॥ करम करि कलँकु मफीटसि री ॥ १ ॥ बिस्व का दीपकु स्वामी ता चेरे
सुआरथी पँखी राइ गरुड ता चे बाधवा ॥ करम करि अरुण पिँगुला री ॥ २ ॥ अनिक पातिक हरता त्रिभवण नाथु री
तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥ करम करि कपालु मफीटसि री ॥ ३ ॥ अँमित ससीअ धेन लछिमी कलपतर
सिखरि सुनागर नदी चे नाथँ ॥ करम करि खारु मफीटसि री ॥ ४ ॥ दाधीले लँका गडु उपाड़ीले शवण बणु सलि बिसलि
आणि तोखीले हरी ॥ करम करि कछउटी मफीटसि री ॥ ५ ॥ पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि
जापीअले राम चे नामँ ॥ बदति त्रिलोचन राम जी ॥ ६ ॥ १ ॥ **श्री सैणु ॥** धूप दीप छित साजि आरती ॥ वारने
जाउ कमलापती ॥ १ ॥ मँगला हरि मँगला ॥ नित मँगलु राजा राम राइ को ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतमु दीअरा निरमल
बाती ॥ तुहीं, निरँजनु कमला पाती ॥ २ ॥ शमा भगति शमानँदु जानै ॥ पूरन परमानँदु बखानै ॥ ३ ॥ मदन मूरति भै
तारि गोबिँदे ॥ सैनु भणै भजु परमानँदे ॥ ४ ॥ २ ॥ **पीपा ॥** कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जँगम जाती ॥
काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥ १ ॥ काइआ बहु खँड खोजते नव निधि पाई ॥ ना कछु आइबो ना कछु
जाइबो राम की दुहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो ब्रहमँडे सोई पिँडे जो खोजै सो पावै ॥ पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ
लखावै ॥ २ ॥ ३ ॥ **धँना ॥** गोपाल तेरा आरता ॥ जो जन तुमरी भगति करँते तिन के काज सवारता ॥ १ ॥ रहाउ
॥ दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ पन्हीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मगउ सत सी का ॥ १ ॥
गऊ भैस मगउ लावैरी ॥ इक ताजनि तुरी चँगैरी ॥ घर की गीहनि चँगी ॥ जनु धँना लेवै मँगी ॥ २ ॥ ४ ॥

जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे

१ॐ मडिगार पुमरि ॥

मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा ॥
जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा ॥ गुरि पुरै हरि
नामु द्रिडाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर मूड भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा ॥ तिन साधू
चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥ २ ॥ जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा ॥ मो
कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगँनाथा ॥ ३ ॥ हम अँधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालह मारगि
पँथा ॥ हम अँधुले कउ गुर अँचलु दीजै जन नानक चलह मिलँथा ॥ ४ ॥ १ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ हीरा लालु अमोलकु
है भारी बिनु गाहक मीका काखा ॥ रतन गाहकु गुरु साधू देखिओ तब रतनु बिकानो लाखा ॥ १ ॥ मेरै मनि गुपत हीरु
हरि राखा ॥ दीन दइआलि मिलाइओ गुरु साधू गुरि मिलिऐ हीरु पराखा ॥ रहाउ ॥ मनमुख कोठी अगिआनु अँधेरा
तिन घरि रतनु न लाखा ॥ ते ऊइडि भरमि मुए गावारी माइआ भुअँग बिखु चाखा ॥ २ ॥ हरि हरि साध मेलहु जन नीके
हरि साधू सरणि हम राखा ॥ हरि अँगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा ॥ ३ ॥ जिहवा किआ गुण आखि

वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी पाखाणु डुबत हरि राखा ॥ ४ ॥ २ ॥ जैतसरी मः
 ४ ॥ हम बारिक कछुअ न जानह गति मिति तेरे मूरख मुगध इआना ॥ हरि किरपा धारि दीजै मति ऊतम करि लीजै
 मुगधु सिआना ॥ १ ॥ मेरा मनु आलसीआ उघलाना ॥ हरि हरि आनि मिलाइओ गुरु साधू मिलि साधू कपट खुलाना
 ॥ रहाउ ॥ गुर खिनु खिनु प्रीति लगावहु मेरै हीअरै मेरे प्रीतम नामु पराना ॥ बिनु नावै मरि जाईऐ मेरे ठाकुर जिउ
 अमली अमलि लुभाना ॥ २ ॥ जिन मनि प्रीति लगी हरि केरी तिन धुरि भाग पुराना ॥ तिन हम चरण सेरेवह खिनु
 खिनु जिन हरि मीठा लगाना ॥ ३ ॥ हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि जनु बिछुरिआ चिरी मिलाना ॥ धनु धनु सतिगुरु
 जिनि नामु द्रिडाइआ जनु नानक तिसु कुरबाना ॥ ४ ॥ ३ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ सतिगुरु साजनु पुरखु वड पाइआ
 हरि रसकि रसकि फल लागिबा ॥ माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी गुर बचनी बिसु हरि काढिबा ॥ १ ॥ मेरा मनु राम
 नाम रसि लागिबा ॥ हरि कीए पतित पवित्र मिलि साध गुर हरि नामै हरि रसु चाखिबा ॥ रहाउ ॥ धनु धनु वडभाग
 मिलिओ गुरु साधू मिलि साधू लिव उनमनि लागिबा ॥ तिसना अगनि बुझी सांति पाई हरि निरमल निरमल गुन गाइबा
 ॥ २ ॥ तिन के भाग खीन धुरि पाए जिन सतिगुर दरसु न पाइबा ॥ ते दूजै भाइ पवहि ग्रभ जोनी सभु बिरथा जनमु
 तिन जाइबा ॥ ३ ॥ हरि देहु बिमल मति गुर साध पग सेवह हम मीठ लगाइबा ॥ जनु नानक रेण साध पग मागै हरि
 होइ दइआलु दिवाइबा ॥ ४ ॥ ४ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ जिन हरि हिरेदैं नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बांझा ॥
 तिन सुंजी देह फिरहि बिनु नावै ओइ खपि खपि मुए करांझा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा ॥ हरि हरि
 क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा ॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतम हरि पाईऐ सतिगुर
 माझा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा ॥ २ ॥ दरसनु साध मिलिओ वडभागी सभि किलबिख

गए गवाझा ॥ सतिगुरु साहु पाइआ वड दाणा हरि कीए बहु गुण साझा ॥ ३ ॥ जिन कउ क्रिपा करी जगजीवनि हरि उरि
 धारिओ मन माझा ॥ धरमराइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा ॥ ४ ॥ ५ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ सतसंगति साध
 पाई वडभागी मनु चलतौ भइओ अरूडा ॥ अनहत धुनि वाजहि नित वाजे हरि अँमित धार रसि लीडा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि
 राम नामु हरि रूडा ॥ मेरै मनि तनि प्रीति लगाई सतिगुरि हरि मिलिओ लाइ झपीडा ॥ रहाउ ॥ साकत बँध भए है माइआ
 बिखु सँचहि लाइ जकीडा ॥ हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीडा ॥ २ ॥ जिन हरि अरथि सरीरु
 लगाइआ गुर साधू बहु सरधा लाइ मुखि धूडा ॥ हलति पलति हरि सोभा पावहि हरि रँगु लगा मनि गूडा ॥ ३ ॥ हरि हरि मेलि
 मेलि जन साधू हम साध जना का कीडा ॥ जन नानक प्रीति लगी पग साध गुर मिलि साधू पाखाणु हरिओ मनु मूडा ॥ ४ ॥
 ६ ॥

जैतसरी महला ४ वरु २ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि सिमरहु अगम अपारा ॥ जिखु सिमरत दुखु मिटै हमारा ॥ हरि हरि सतिगुरु पुरख मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई
 राम ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु मीत हमारे ॥ हरि हरि नामु रखहु उर धारे ॥ हरि हरि अँमित बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु
 होई राम ॥ २ ॥ मधुसूदन हरि माथो प्राना ॥ मेरै मनि तनि अँमित मीठ लगाना ॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु पुरखु
 निरँजनु सोई राम ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु सदा सुखदाता ॥ हरि कै रँगि मेश मनु राता ॥ हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर
 नानक नामि सुखु होई राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ जैतसरी मः ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु जपाहा ॥ गुरमुखि नामु सदा लै लाहा
 ॥ हरि हरि हरि हरि भगति दिडावहु हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि हरि नामु दइआलु थिआहा ॥ हरि कै रँगि सदा
 गुण गाहा ॥ हरि हरि हरि जसु घूमरि पावहु मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ २ ॥ आओ सखी हरि मेलि मिलाहा ॥ सुणि

हरि कथा नामु लै लाहा ॥ हरि हरि क्रिपा धारि गुर मेलहु गुरि मिलिऐ हरि ओमाहा राम ॥ ३ ॥ करि कीरति जसु अगम
 अथाहा ॥ खिनु खिनु राम नामु गावाहा ॥ मो कउ धारि क्रिपा मिलिऐ गुर दाते हरि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ २
 ॥ ८ ॥ जैतसरी मः ४ ॥ रसि रसि रामु रसालु सलाहा ॥ मनु राम नामि भीना लै लाहा ॥ खिनु खिनु भगति करह दिनु
 राती गुरमति भगति ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि हरि गुण गोविंद जपाहा ॥ मनु तनु जीति सबदु लै लाहा ॥ गुरमति पंच
 दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥ २ ॥ नामु रतनु हरि नामु जपाहा ॥ हरि गुण गाइ सदा लै लाहा ॥ दीन
 दइआल क्रिपा करि माधो हरि हरि नाम ओमाहा राम ॥ ३ ॥ जप जगदीसु जपउ मन माहा ॥ हरि हरि जगँनाथु जगि
 लाहा ॥ धनु धनु वडे ठाकुर प्रभ मेरे जपि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ आपे जोगी
 जुगति जुगाहा ॥ आपे निरभउ ताडी लाहा ॥ आपे ही आपि आपि वरतै आपे नामि ओमाहा राम ॥ १ ॥ आपे दीप लोअ
 दीपाहा ॥ आपे सतिगुरु समुँदु मथाहा ॥ आपे मथि मथि ततु कढाए जपि नामु रतनु ओमाहा राम ॥ २ ॥ सखी मिलहु
 मिलि गुण गावाहा ॥ गुरमुखि नामु जपहु हरि लाहा ॥ हरि हरि भगति द्विडी मनि भाई हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ ३ ॥
 आपे वड दाणा वड साहा ॥ गुरमुखि पूंजी नामु विसाहा ॥ हरि हरि दाति करहु प्रभ भावै गुण नानक नामु ओमाहा राम ॥
 ४ ॥ ४ ॥ १० ॥ जैतसरी महला ४ ॥ मिलि सतसंगति संगि गुराहा ॥ पूंजी नामु गुरमुखि वेसाहा ॥ हरि हरि क्रिपा
 धारि मधुसूदन मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि गुण बाणी श्रवणि सुणाहा ॥ करि किरपा सतिगुरु मिलाहा ॥
 गुण गावह गुण बोलह बाणी हरि गुण जपि ओमाहा राम ॥ २ ॥ सभि तीरथ वरत जग पुँन तोलाहा ॥ हरि हरि नाम न
 पुजहि पुजाहा ॥ हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी गुरमति जपि ओमाहा राम ॥ ३ ॥ सभि करम धरम हरि नामु जपाहा ॥
 किलविख मैलु पाप धोवाहा ॥ दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु नानक नामु ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥

जैतसरी महला ७ घर ३ १९ शितिगुर प्रसादि ॥

कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥ जिसु होइ क्रिपालु सोई बिधि बूझै ता की निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता
बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु बाई ॥ पूरब जनम के मिले सँजोगी अँतहि को न सहाई ॥ १ ॥ मुकति माल कनिक
लाल हीरा मन रँजन की माइआ ॥ हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि सँतोखु न पाइआ ॥ २ ॥ हसति रथ अरु पवन
तेज धणी भूमन चतुरांगा ॥ सँगि न चालिओ इन महि कछूरे ऊठि सिधाइओ नांगा ॥ ३ ॥ हरि के सँत प्रिअ प्रीतम प्रभ
के ता कै हरि हरि गाईऐ ॥ नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल सँगि सँतन कै पाईऐ ॥ ४ ॥ १ ॥

जैतसरी महला ७ घर ३ दुपदे १९ शितिगुर प्रसादि ॥

देहु सँदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ ॥ बिखमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागनि सहीअउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ को कहतो
सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ ॥ बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥ १ ॥ सरब
निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ ॥ नानकु कहत सुनहु रे लोगा सँत रसन को बसहीअउ ॥ २ ॥ १ ॥ २
॥ जैतसरी मः ७ ॥ धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ
नीरउ ॥ १ ॥ बेसुमार बेअँतु बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ॥ २ ॥ जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा
पूरउ जपि प्रभ कउ ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥
जैतसरी महला ७ ॥ लोड़ीदड़ा साजनु मेरा ॥ घरि घरि मँगल गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सूखि अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा ॥ नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अँधेरा ॥ १ ॥ थानि
थनँतरि सभनी जाई जो दीसै सो तेरा ॥ सँत सँगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न होई है फेरा ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

अब मै सुखु पाइओ गुर आग्यि ॥ तजी सिआनप चिंत विसारी अहँ छोडिओ है तिआग्यि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ देखउ तउ
 सगल मोहि मोहीअउ तउ सरनि परिओ गुर भागि ॥ करि किरपा टहल हरि लाइओ तउ जमि छोडी मोरी लागि ॥ १ ॥
 तरिओ सागरु पावक को जउ सँत भेटे वडभागि ॥ जन नानक सरब सुख पाए मोरो हरि चरनी चितु लागि ॥ २ ॥ १ ॥
 ५ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ मन महि सतिगुर धिआनु धरा ॥ द्विडिहओ गिआनु मँत्रु हरि नामा प्रभ जीउ मइआ करा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ काल जाल अरु महा जँजाला छुटके जमहि डरा ॥ आइओ दुख हरण सरण करुणापति गहिओ चरण आसरा
 ॥ १ ॥ नाव रूप भइओ साधसँगु भव निधि पारि परा ॥ अपिओ पीओ गतु थीओ भरमा कहु नानक अजरु जरा ॥ २
 ॥ २ ॥ ६ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ जा कउ भए गोविंद सहाई ॥ सुख सहज आनंद सगल सिउ वा कउ बिआपि न काई ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ दीसहि सभ सँगि रहहि अलेपा नह विआपै उन माई ॥ एकै रँगि तत के बेते सतिगुर ते बुधि पाई ॥ १ ॥
 दइआ मइआ किरपा ठाकुर की सेई सँत सुभाई ॥ तिन कै सँगि नानक निसतरीरे जिन रसि रसि हरि गुन गाई ॥ २ ॥ ३
 ॥ ७ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ गोबिंद जीवन प्रान धन रूप ॥ अगिआन मोह मगन महा प्रानी अँधिआरे महि दीप ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ सफल दरसनु तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप ॥ अनिक बार करउ तिह बँदन मनहि चर्हावउ धूप ॥ १ ॥
 हारि परिओ तुम्हरै प्रभ दुआरै द्विडुह करि गही तुम्हारी लूक ॥ काढि लेहु नानक अपुने कउ संसार पावक के कूप ॥ २ ॥ ४
 ॥ ८ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥ चरन गहउ बकउ सुभ रसना दिजहि प्रान अकोरि ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिँचै सुधा सँजोरि ॥ इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि
 ॥ १ ॥ आइओ सरणि दीन दुख भँजन चितवउ तुम्हरी ओरि ॥ अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक

बँधन छोरि ॥ २ ॥ ७ ॥ ९ ॥ जैतसरी महला ७ ॥ चात्रिक चितवत बरसत मेंह ॥ क्रिपा सिंधु करुणा प्रभ धारहु हरि प्रेम
 भगति को नेंह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक सूख चकवी नही चाहत अनद पूरन पेखि देंह ॥ आन उपाव न जीवत मीना बिनु
 जल मरना तेंह ॥ १ ॥ हम अनाथ नाथ हरि सरणी अपुनी क्रिपा करेंह ॥ चरण कमल नानकु आराधै तिसु बिनु आन न केंह
 ॥ २ ॥ ६ ॥ १० ॥ जैतसरी महला ७ ॥ मनि तनि बसि रहे मेरे प्रान ॥ करि किरपा साधू संगि भेटे पूरन पुरख सुजान ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ प्रेम ठगउरी जिन कउ पाई तिन रसु पीअउ भारी ॥ ता की कीमति कहणु न जाई कुदरति कवन हमूहरी ॥ १
 ॥ लाइ लए लड़ि दास जन अपुने उधरे उधरनहारे ॥ प्रभु सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइओ नानक सरणि दुआरे ॥ २ ॥ ॥
 ७ ॥ ११ ॥ जैतसरी महला ७ ॥ आए अनिक जनम भ्रमि सरणी ॥ उधरु देह अँध कूप ते लावहु अपुनी चरणी ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ गिआनु धिआनु किछु करम ना जाना नाहिन निरमल करणी ॥ साधसंगति कै अँचलि लावहु बिखम नदी जाइ
 तरणी ॥ १ ॥ सुख संपति माइआ रस मीठे इह नही मन महि धरणी ॥ हरि दरसन त्रिपति नानक दास पावत हरि नाम रँग
 आभरणी ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥ जैतसरी महला ७ ॥ हरि जन सिमरहु हिरदे राम ॥ हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन
 दास के काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि बिघन बिनसहि हरि सेवा निहचलु गोविद धाम ॥ भगवँत भगत कउ भउ किछु नाही
 आदरु देवत जाम ॥ १ ॥ तजि गोपाल आन जो करणी सोई सोई बिनसत खास ॥ चरन कमल हिरदै गहु नानक सुख
 समूह बिसराम ॥ २ ॥ ९ ॥ १३ ॥

जैतसरी महला ९ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥ जो जो करम कीओ लालच लागि तिह तिह आपु बँधाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समझ न परी
 बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥ संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनू खोजन कउ धाइओ ॥ १ ॥ रतनु रामु
 घट ही के भीतरि ता को

गिआनु न पाइओ ॥ जन नानक भगवँत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ जैतसरी महला ९ ॥ हरि जू राखि
लेहु पति मेरी ॥ जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा पतित मुगध लोभी फुनि
करत पाप अब हारा ॥ भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिँता तनु जारा ॥ १ ॥ कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि
धाइआ ॥ घट ही भीतरि बसै निरँजनु ता को मरमु न पाइआ ॥ २ ॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥
नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥ ३ ॥ २ ॥ जैतसरी महला ९ ॥ मन रे साचा गहो बिचारा ॥ राम नाम
बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥ सो सुआमी तुम
निकटि पछानो रूप ते निआरा ॥ १ ॥ पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि संभारा ॥ नानक सरनि परिओ जग बँदन
राखहु बिरदु तुहारा ॥ २ ॥ ३ ॥

जैतसरी महला ९ छँत घरु १ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक ॥ दरसन पिआसी दिनस राति चितवउ अनदिनु नीत ॥ खोलिह कपट गुरि मेलीआ नानक हरि सँगि मीत ॥ १ ॥ छँत
॥ सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनँतीआ ॥ तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजँतीआ ॥ तिसु दसि पिआरे सिरु धरी
उतारे इक भोरी दरसनु दीजै ॥ नैन हमारै प्रिअ रँग रँगारे इकु तिलु भी ना धीरीजै ॥ प्रभ सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चात्रिक
जिवै तिसँतीआ ॥ जन नानक गुर पूरा पाइआ सगली तिखा बुझँतीआ ॥ १ ॥ यार वे प्रिअ हभे सखीआ मू कही न जेहीआ ॥
यार वे हिक डूँ हिकि चाडै हउ किसु चितेहीआ ॥ हिक दूँ हिकि चाडे अनिक पिआरे नित करदे भोग बिलासा ॥ तिना देखि मनि
चाउ उठँदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥ जिनी मैडा लालु रीझाइआ हउ तिसु आगै मनु डेहीआ ॥ नानकु कहै सुण बिनउ
सुहागनणि मू दसि डिखा पिरु केहीआ ॥ १ ॥ यार वे पिरु आपण भाणा किछु नीसी छँदा ॥ यार वे तै राविआ लालनु मू दसि
दसँदा ॥ लालनु तै पाइआ

आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे ॥ बांह पकड़ि ठाकुरि हउ धिधी गुण अवगण न पछाणे ॥ गुण हारु तै पाइआ रंगु लालु
 बणाइआ तिसु हभो किछु सुहंदा ॥ जन नानक धनि सुहागणि साई जिंसु सँगि भतारु वसँदा ॥ ३ ॥ चार वे नित सुख
 सुखेदी सा मै पाई ॥ वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई ॥ महा मँगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नव रंगीआ ॥ वड भागि
 पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सतसँगीआ ॥ आसा मनसा सगल पूरी प्रिअ अँकि अँकु मिलाई ॥ बिनवँति नानकु सुख
 सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥ ४ ॥ १ ॥

जैतसरी महला ७ वरु २ छँत १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु ॥ नानक प्रभु सरणागती राखन कउ समरथु ॥ १ ॥ छँतु ॥ जिउ
 जानहु तिउ राखु हरि प्रभु तेरिआ ॥ केते गनउ असँख अवगण मेरिआ ॥ असँख अवगण खते फेरे नितप्रति सद भूलीरे ॥
 मोह मगन बिकराल माइआ तउ प्रसादी घूलीरे ॥ लूक करत बिकार बिखड़े प्रभु नेरहू ते नेरिआ ॥ बिनवँति नानक दइआ
 धारहु काढि भवजल फेरिआ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ निरति न पवै असँख गुण ऊचा प्रभु का नाउ ॥ नानक की बेनँतीआ मिलै
 निथवै थाउ ॥ २ ॥ छँतु ॥ दूसर नाही ठाउ का पहि जाईरे ॥ आठ पहर कर जोड़ि सो प्रभु धिआईरे ॥ धिआइ सो प्रभु
 सदा अपुना मनहि चिँदिआ पाईरे ॥ तजि मान मोहु विकारु दूजा एक सिउ लिव लाईरे ॥ अरपि मनु तनु प्रभु आगै आपु
 सगल मिटाईरे ॥ बिनवँति नानकु धारि किरपा साचि नामि समाईरे ॥ २ ॥ सलोकु ॥ रे मन ता कउ धिआईरे सभ बिधि जा
 कै हाथि ॥ राम नाम धनु सँचीरे नानक निबहै साथि ॥ ३ ॥ छँतु ॥ साथीअड़ा प्रभु एकु दूसर नाहि कोइ ॥ थान थनँतरि
 आपि जलि थलि पूर सोइ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ सरब दाता प्रभु धनी ॥ गोपाल गोबिंद अँतु नाही बेअँत गुण
 ता के किआ गनी ॥ भजु सरणि सुआमी सुखह गामी तिसु बिना अन नाहि कोइ ॥ बिनवँति नानक दइआ धारहु तिसु
 परापति नामु होइ ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ चिति जि चितविआ सो मै पाइआ ॥ नानक नामु

धिआइ सुख सबाइआ ॥ ४ ॥ छँतु ॥ अब मनु छूटि गइआ साधू सँगे मिले ॥ गुरुमुखि नामु लइआ जोती जोति रले ॥ हरि
 नामु सिमरत मिटे किलबिख बुझी तपति अघानिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ कीने आपने करि मानिआ ॥ लै अँकि लाए हरि
 मिलाए जनम मरणा दुख जले ॥ बिनवँति नानक दइआ धारी मेलि लीने इक पले ॥ ४ ॥ २ ॥ जैतसरी छँत मः ५ ॥
 पाधाणू सँसारु गारबि अटिआ ॥ करते पाप अनेक माइआ रँग रटिआ ॥ लोभि मोहि अभिमानि बूडे मरणु चीति न आवए ॥
 पुत्र मित्र बिउहार बनिता एह करत बिहावए ॥ पुजि दिवस आए लिखे माए दुखु धरम दूतह डिठिआ ॥ किरत करम न मिटै
 नानक हरि नाम धनु नही खटिआ ॥ १ ॥ उदम करहि अनेक हरि नामु न गावही ॥ भरमहि जोनि असँख मरि जनमहि
 आवही ॥ पसू पँखी सैल तरवर गणत कछू न आवए ॥ बीजु बोवसि भोग भोगहि कीआ अपणा पावए ॥ रतन जनमु हारँत
 जूरे प्रभू आपि न भावही ॥ बिनवँति नानक भरमहि भ्रमाए खिनु एकु टिकणु न पावही ॥ २ ॥ जोबनु गइआ बितीति जरु
 मलि बैठीआ ॥ कर कँपहि सिरु डोल नैण न डीठिआ ॥ नह नैण दीसै बिनु भजन ईसै छोडि माइआ चालिआ ॥ कहिआ न
 मानहि सिरि खाकु छानहि जिन सँगे मनु तनु जालिआ ॥ श्रीराम रँग अपार पूरन नह निमख मन महि वूठिआ ॥ बिनवँति
 नानक कोटि कागर बिनस बार न झूठिआ ॥ ३ ॥ चरन कमल सरणाइ नानकु आइआ ॥ दुतरु भै सँसारु प्रभि आपि
 तराइआ ॥ मिलि साधसँगे भजे श्रीधर करि अँगु प्रभ जी तारिआ ॥ हरि मानि लीए नाम दीए अवरु कछु न बीचारिआ ॥
 गुण निधान अपार ठाकुर मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ बिनवँति नानकु सदा त्रिपते हरि नामु भोजनु खाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

जैतसरी महला ५ वार सलोक नालि १४ शितिगुर प्रसादि ॥

सलोक ॥ आदि पूरन मधि पूरन अँति पूरन परमेसुरह ॥ सिमरँति सँत सरबत्र रमणं नानक अघ नासन जगदीसुरह ॥ १ ॥
 पेखन सुनन सुनावनो मन महि द्रडीरे साचु ॥

पूरि रहिओ सरबत्र मै नानक हरि रँगि राचु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि एकु निरँजनु गाईये सभ अंतरि सोई ॥ करण कारण
 समरथ प्रभु जो करे सु होई ॥ खिन महि थापि उथापदा तिसु बिनु नही कोई ॥ खंड ब्रहमंड पाताल दीप रविआ सभ लोई ॥
 जिसु आपि बुझाए सो बुझसी निरमल जनु सोई ॥ १ ॥ सलोक ॥ रचँति जिआ रचना मात गरभ असथापनँ ॥ सासि
 सासि सिमरँति नानक महा अगनि न बिनासनँ ॥ १ ॥ मुखु तलै पेर उपरे वसँदो कुहथडै थाइ ॥ नानक सो धणी किउ
 विसारिओ उधरहि जिस दै नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ रक्तु बिंदु करि निमिआ अगनि उदर मझारि ॥ उरध मुखु कुचील बिकलु
 नरकि घोरि गुबारि ॥ हरि सिमरत तूना जलहि मनि तनि उर धारि ॥ बिखम थानहु जिनि रखिआ तिसु तिलु न विसारि ॥
 प्रभु बिसरत सुखु कदे नाहि जासहि जनमुहारि ॥ २ ॥ सलोक ॥ मन इछा दान करणँ सरबत्र आसा पूरनह ॥ खंडणँ कलि
 कलेसह प्रभु सिमरि नानक नह दूरणह ॥ १ ॥ हभि रँग माणहि जिसु सँगि तै सिउ लाईये नेहु ॥ सो सहु बिंद न विसरउ
 नानक जिनि सुंदरु रचिआ देहु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीउ प्रान तनु धनु दीआ दीने रस भोग ॥ ग्रिह मंदर रथ असु दीए रचि
 भले सँजोग ॥ सुत बनिता साजन सेवक दीए प्रभु देवन जोग ॥ हरि सिमरत तनु मनु हरिआ लहि जाहि विजोग ॥
 साधसँगि हरि गुण रमहु बिनसे सभि रोग ॥ ३ ॥ सलोक ॥ कुटँब जतन करणँ माइआ अनेक उदमह ॥ हरि भगति भाव
 हीणँ नानक प्रभु बिसरत ते प्रेततह ॥ १ ॥ तुटडीआ सा प्रीति जो लाई बिअँत सिउ ॥ नानक सची रीति साई सेती रतिआ
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु बिसरत तनु भसम होइ कहते सभि प्रेतु ॥ खिनु ग्रिह महि बसन न देवही जिन सिउ सोई हेतु ॥
 करि अनरथ दरबु सँचिआ सो कारजि केतु ॥ जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेतु ॥ अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु
 ॥ ४ ॥ सलोक ॥ कोटि दान इसनानँ अनिक सोधन पवित्रतह ॥ उचरँति नानक हरि हरि रसना सरब पाप बिमुचते ॥ १
 ॥ ईधणु कीतोमू घणा भोरी दितीमु भाहि ॥ मनि वसँदड़ो सचु सहु नानक हभे डुखडे उलाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥

कोटि अघा सभि नाम होहि सिमरत हरि नाउ ॥ मन चिंदे फल पाईअहि हरि के गुण गाउ ॥ जनम मरण भै कटीअहि
 निहचल सचु थाउ ॥ पूरबि होवै लिखिआ हरि चरण समाउ ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक बलि जाउ ॥ ५ ॥ सलोक
 ॥ छिह रचना अपारं मनि बिलास सुआदं रसह ॥ कदांच नह सिमरति नानक ते जंत बिसटा क्रिमह ॥ १ ॥ मुचु अडंबरु
 हभु किहु मँझि मुहबति नेह ॥ सो साई जैं विसरै नानक सो तनु खेह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सुंदर सेज अनेक सुख रस भोगण पूरे
 ॥ छिह सोइन चंदन सुगंध लाइ मोती हीरे ॥ मन इछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे ॥ सो प्रभु चिति न आवई विसटा के
 कीरे ॥ बिनु हरि नाम न सांति होइ कितु बिधि मनु धीरे ॥ ६ ॥ सलोक ॥ चरन कमल बिरहँ खोजंत बैरागी दह दिसह ॥
 तिआगंत कपट रूप माइआ नानक आनंदरूप साध संगमह ॥ १ ॥ मनि साई मुखि उचरा वता हभे लोअ ॥ नानक हभि
 अडंबर कूडिआ सुणि जीवा सची सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बसता तूटी झुंपड़ी चीर सभि छिँना ॥ जाति न पति न आदरो
 उदिआन भर्मिना ॥ मित्र न इठ धन रूपहीण किछु साकु न सिँना ॥ राजा सगली खिसटि का हरि नामि मनु भिँना ॥ तिस
 की धूडि मनु उधरै प्रभु होइ सुप्रसँना ॥ ७ ॥ सलोक ॥ अनिक लीला राज रस रूपँ छत्र चमर तखत आसनँ ॥ रचति मूड
 अगिआन अंधह नानक सुपन मनोरथ माइआ ॥ १ ॥ सुपनै हभि रँग माणिआ मिठा लगड़ा मोहु ॥ नानक नाम विहूणीआ
 सुंदरि माइआ ध्रोहु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सुपने सेती चितु मूरखि लाइआ ॥ विसरे राज रस भोग जागत भखलाइआ ॥
 आरजा गई विहाइ धँधै धाइआ ॥ पूरन भर न काम मोहिआ माइआ ॥ किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइआ ॥ ८ ॥
 सलोक ॥ बसति स्वरग लोकह जितते प्रिथवी नव खंडनह ॥ बिसरंत हरि गोपालह नानक ते प्राणी उदिआन भरमणह ॥
 १ ॥ कउतक कोड तमासिआ चिति न आवसु नाउ ॥ नानक कोड़ी नरक बराबरे उजडु सोई थाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ महा
 भइआन उदिआन नगर करि मानिआ ॥ झूठ समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥ काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥

सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ ॥ बिन पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥ ९ ॥ सलोक ॥ राज कपटँ रूप कपटँ धन कपटँ
 धन कपटँ कुल गरबतह ॥ सँचँति बिखिआ छलँ छिट्रँ नानक बिनु हरि सँगि न चालते ॥ १ ॥ पेखँदड़ो की भुलु तुँमा दिसमु
 सोहणा ॥ अहु न लहँदड़ो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चलदिआ नालि न चलै सो किउ सँजीरे ॥
 तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वँजीरे ॥ हरि बिसरिरे किउ त्रिपतावै ना मनु रँजीरे ॥ प्रभू डछोडि अन लागै नरकि
 समँजीरे ॥ होहु क्रिपाल दइआल नानक भउ भँजीरे ॥ १० ॥ सलोक ॥ नच राज सुख मिसँट नच भोग रस मिसँट नच
 मिसँट सुख माइआ ॥ मिसँट साधसँगि हरि नानक दास मिसँट प्रभ दरसनँ ॥ १ ॥ लगड़ा सो नेहु मँन मझाहू रतिआ ॥
 विधड़ो सच थोकि नानक मिठड़ा सो धणी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि बिन कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥ आन सुआद सभि
 फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥ अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा ॥ चरन कमल मनु बेधिआ जिउ रँगु मजीठा ॥
 जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥ ११ ॥ सलोक ॥ तिअकत जलँ नह जीव मीनँ नह तिआगि चात्रिक मेघ मँडलह
 ॥ बाण बेधँच कुरँक नादँ अलि बँधन कुसम बासनह ॥ चरन कमल रचँति सँतह नानक आन न रुचते ॥ १ ॥ मुखु डेखाऊ
 पलक छडि आन न डेऊ चितु ॥ जीवण सँगमु तिसु धणी हरि नानक सँतां मितु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिउ मछुली बिनु पाणीरे
 किउ जीवणु पावै ॥ बूँद विहूणा चात्रिको किउ करि त्रिपतावै ॥ नाद कुरँकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥ भवरु लोभी
 कुसम बासु का मिलि आपु बँधावै ॥ तिउ सँत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥ १२ ॥ सलोक ॥ चितवँति चरन कमलँ
 सासि सासि अराधनह ॥ नह बिसरँति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥ १ ॥ सीतड़ा मँन मँझाहि पलक न थीवै
 बाहरा ॥ नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखँदो सचु धणी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आसावँती आस गुसाई पूरीरे ॥ मिलि गोपाल
 गोबिंद न कबहू झूरीरे ॥ देहु दरसु मनि चाउ लहि जाहि विसूरीरे ॥ होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीरे ॥ पारब्रहम गुरदेव

सदा हजरीये ॥ १३ ॥ सलोक ॥ रसना उचरँति नामँ श्रवणँ सुनँति सबद अँप्रितह ॥ नानक तिस सद बलिहारँ जिना
धिआनु पारब्रह्मणह ॥ १ ॥ हभि कूड़ावै कँम इकसु साई बाहरे ॥ नानक सेई धँनु जिना पिरहडी सच सिउ ॥ २ ॥ पउडी
॥ सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा ॥ पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा ॥ हरि जसु लिखहि बेअँत सोहहि से हथा
॥ चरन पूनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा ॥ सँतां सँगि उधारु सगला दुखु लथा ॥ १४ ॥ सलोक ॥ भावी उदोत करणँ
हरि रमणँ सँजोग पूरनह ॥ गोपाल दरस भेटँ सफल नानक सो महरतह ॥ १ ॥ कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे ॥
नानक सा वेलडी परवाणु जितु मिलँदडो मा पिरी ॥ २ ॥ पउडी ॥ सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई ॥ सो मूरतु
भला सँजोगु है जितु मिलै गुसाई ॥ आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई ॥ वडै भागि सतसँगु होइ निवि लागा पाई
॥ मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥ १५ ॥ सलोक ॥ पतित पुनीत गोविँदह सरब दोख निवारणह ॥
सरणि सूर भगवानह जपँति नानक हरि हरि हरे ॥ १ ॥ छडिओ हभु आपु लगडो चरणा पासि ॥ नठडो दुख तापु नानक
प्रभु पेखँदिआ ॥ २ ॥ पउडी ॥ मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥ रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥
भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥ तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥ करु गहि लेहु दइआल सागर
सँसारिआ ॥ १६ ॥ सलोक ॥ सँत उधरण दइआलँ आसरँ गोपाल कीरतनह ॥ निरमलँ सँत सँगेण ओट नानक
परमेसुरह ॥ १ ॥ चँदन चँदु न सरद रुति मूलि न मिटई घांम ॥ सीतलु थीवै नानका जपँदडो हरि नामु ॥ २ ॥ पउडी ॥
चरन कमल की ओट उधरे सगल जन ॥ सुणि परतापु गोविँद निरभउ भए मन ॥ तोटि न आवै मूलि सँचिआ नामु धन ॥
सँत जना सिउ सँगु पाईये वडै पुन ॥ आठ पहर हरि धिआइ हरि जसु नित सुन ॥ १७ ॥ सलोक ॥ दइआ करणँ दुख
हरणँ उचरणँ नाम कीरतनह ॥ दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥ १ ॥ भाहि बलँदडी बुझि गई

रखँदड़ो प्रभु आपि ॥ जिनि उपाई मेदनी नानक प्रभु जापि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जा प्रभ भए दइआल न बिआपै माइआ
 ॥ कोटि अघा गए नास हरि डकु धिआइआ ॥ निरमल भए सरीर जन धूरी नाइआ ॥ मन तन भए संतोख पूरन प्रभ
 पाइआ ॥ तरे कुटँब सँगि लोग कुल सबाइआ ॥ १८ ॥ सलोक ॥ गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह ॥ गुर
 दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥ १ ॥ भउजल बिखमु असगाहु गुरि बोहिथै तारिअमु ॥ नानक पूर
 करँम सतिगुर चरणी लागिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धँनु धँनु गुरदेव जिंसु सँगि हरि जपे ॥ गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण
 सभि छपे ॥ पारब्रहम गुरदेव नीचहु ऊच थपे ॥ काटि सिलक दुख माइआ करि लीने अप दसे ॥ गुण गाए बेअँत रसना
 हरि जसे ॥ १९ ॥ सलोक ॥ द्रिसटँत एको सुनीअँत एको वरतँत एको नरहरह ॥ नाम दानु जार्चति नानक दइआल
 पुरख क्रिपा करह ॥ १ ॥ हिकु सेवी हिकु सँमला हरि डकसु पहि अरदासि ॥ नाम वखरु धनु सँचिआ नानक सची रासि
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभ दइआल बेअँत पूरन डकु एहु ॥ सभु किछु आपे आपि दूजा कहा केहु ॥ आपि करहु प्रभ दानु
 आपे आपि लेहु ॥ आवण जाणा हुकमु सभु निहचलु तुधु थेहु ॥ नानकु मँगै दानु करि किरपा नामु देहु ॥ २० ॥ १ ॥

जैतसरी बाणी भगता की १९ सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ कछुअ न जानउ ॥ मन माइआ कै हाथि बिकानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥ हम
 कहीअत कलिजुग के कामी ॥ १ ॥ इन पँचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥ पलु पलु हरि जी ते अँतरु पारिओ ॥ २ ॥
 जत देखउ तत दुख की रासी ॥ अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥ ३ ॥ गोतम नारि उमापति स्वामी ॥ सीसु धरनि
 सहज भग गांमी ॥ ४ ॥ इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥ बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥ ५ ॥ कहि रविदास
 कहा कैसे कीजै ॥ बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥ ६ ॥ १ ॥

ॐ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥

हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा ॥ मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरै हीअरै
लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभु हेरा ॥ सतिगुरि दइआलि हरि नामु द्विडाइआ हरि पाधरु हरि प्रभु केरा ॥ १ ॥
हरि रँगी हरि नामु प्रभ पाइआ हरि गोविंद हरि प्रभ केरा ॥ १ ॥ हरि हिरदै मनि तनि मीठा लागा मुखि मसतकि भागु
चंगेरा ॥ २ ॥ लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ॥ ओइ मनमुख मूड अगिआनी कहीअहि
तिन मसतकि भागु मँदेरा ॥ ३ ॥ बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरु प्रभ केरा ॥ जन नानक नामु गुरु ते
पाइआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥ ४ ॥ १ ॥

टोडी महला ५ घरु १ दुपदे ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

सँतन अवर न काहू जानी ॥ बेपरवाह सदा रँगी हरि कै जा को पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥ ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर
न काहू तानी ॥ ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ राचि रहे रँगी गिआनी ॥ १ ॥ रोग सोग दुख जहा मरा हरि जनहि
नही निकटानी ॥ निरभउ होइ रहे लिव एकै नानक हरि मनु मानी ॥ २ ॥ १ ॥ टोडी महला ५ ॥

हरि बिसरत सदा खुआरी ॥ ता कउ धोखा कहा बिआपै जा कउ ओट तुहारी ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन जो जीवनु बलना
सरप जैसे अरजारी ॥ नव खँडन को राजु कमावै अँति चलैगो हारी ॥ १ ॥ गुण निधान गुण तिन ही गाए जा कउ किरपा
धारी ॥ सो सुखीआ धँनु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥ २ ॥ २ ॥

टोडी महला ५ घरु २ चउपदे १८ सतिगुर प्रसादि ॥

धाइओ रे मन दह दिस धाइओ ॥ माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥ रहाउ ॥ हरि कथा हरि
जस साधसँगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइओ ॥ बिगसिओ पेखि रँगु कसुँभ को पर ग्रिह जोहनि जाइओ ॥ १ ॥ चरन
कमल सिउ भाउ न कीनो नह सत पुरखु मनाइओ ॥ धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ॥ २ ॥ नाम
दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ ॥ नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ ॥ ३ ॥
परउपकार न कबहु कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ ॥ पँच दूत रचि सँगति गोसटि मतवारो मद माइओ ॥ ४ ॥ करउ
बेनती साधसँगति हरि भगत वछल सुणि आइओ ॥ नानक भगि परिओ हरि पाछै पाखु लाज अपुनाइओ ॥ ५ ॥ १ ॥ ३
॥ टोडी महला ५ ॥ मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ ॥ अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ॥ रहाउ
॥ धाइ धाइ क्रिपन स्रमु किनो इकत्र करी है माइआ ॥ दानु पुँनु नही सँतन सेवा कित ही काजि न आइआ ॥ १ ॥ करि
आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ ॥ सँगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ॥ २ ॥ सारो दिनसु
मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ ॥ खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ॥ ३ ॥ भइओ अनुग्रहु जा कउ प्रभ
को तिसु हिरदै नामु वसाइआ ॥ साधसँगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ टोडी महला ५
॥ क्रिपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ॥ तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ सँगि प्रीति ॥ रहाउ ॥ दास तुमारे की पावउ धूरा

मसतकि ले ले लावउ ॥ महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुन गावउ ॥ १ ॥ आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ
तुहारो भावउ ॥ जो तू देहि तही इहु त्रिपतै आन न कतहू धावउ ॥ २ ॥ सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ
रहीरे ॥ साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीरे ॥ ३ ॥ सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ॥ नानक
बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

टोडी महला ५ घरु २ दुपदे १ सतिगुर प्रसादि ॥

मागउ दानु ठाकुर नाम ॥ अवरु कछू मेरै सँगि न चालै मिलै क्रिपा गुण गाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु अनेक भोग रस
सगल तरवर की छाम ॥ धाइ धाइ बहु बिधि कउ धावै सगल निररथ काम ॥ १ ॥ बिनु गोविंद अवरु जे चाहउ दीसै सगल
बात है खाम ॥ कहु नानक सँत रेन मागउ मेरो मनु पावै बिस्वाम ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी को नामु
मनहि साधारै ॥ जीअ प्रान सूख इसु मन कउ बरतनि एह हमारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु जाति नामु मेरी पति है नामु मेरै
परवारै ॥ नामु सखाई सदा मेरै सँगि हरि नामु मो कउ निसतारै ॥ १ ॥ बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू सँगारै
॥ इसटु मीतु नामु नानक को हरि नामु मेरै भँडारै ॥ २ ॥ २ ॥ ७ ॥ टोडी मः ५ ॥ नीके गुण गाउ मिटही रोग ॥ मुख
ऊजल मनु निरमल होईहै तेरो रहै ईहा ऊहा लोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन परवारि करउ गुर सेवा मनहि चरावउ भोग ॥ छोडि
आपतु बादु अहँकारा मानु सोई जो होगु ॥ १ ॥ सँत टहल सोई है लागा जिसु मसतकि लिखिआ लिखोगु ॥ कहु नानक एक
बिनु दूजा अवरु न करणै जोगु ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥ टोडी महला ५ ॥ सतिगुर आइओ सरणि तुहारी ॥ मिलै सूखु नामु हरि
सोभा चिँता लाहि हमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी ॥ लेखा छोडि अलेखै छूटह हम
निरगुन लेहु उबारी ॥ १ ॥ सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी ॥ नानक दास सँत पाछै परिओ राखि लेहु इह
बारी ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥ टोडी महला ५ ॥ रसना गुण

गोपाल निधि गाइण ॥ सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मागहि सोई सोई पावहि
 सेवि हरि के चरण रसाइण ॥ जनम मरण दुहहू ते छुटहि भवजलु जगतु तराइण ॥ १ ॥ खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास
 गोविंद पराइण ॥ अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥ २ ॥ ७ ॥ १० ॥ टोडी महला ७ ॥ निंदकु गुर
 किरपा ते हाटिओ ॥ पारब्रहम प्रभ भए दइआला सिव कै बाणि सिरु काटिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै
 सच का पँथा थाटिओ ॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥ १ ॥ भसमा भूत होआ खिन भीतरि
 अपना कीआ पाइआ ॥ आगम निगमु कहै जनु नानकु सभ देखै लोकु सबाइआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ११ ॥ टोडी मः ७ ॥ किरपन
 तन मन किलविख भरे ॥ साधसँगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इकु हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक छिद्र बोहिथ के छुटकत
 थाम न जाही करे ॥ जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे सँगि खरे ॥ १ ॥ गली सैल उठावत चाहै ओइ ऊहा ही है धरे ॥
 जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥ टोडी महला ७ ॥ हरि के चरन कमल मनि धिआउ
 ॥ काढि कुठारु पित बात हँता अउखधु हरि को नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीने ताप निवारणहारा दुख हँता सुख रासि ॥ ता
 कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥ १ ॥ सँत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ॥ बाल बुधि पूरन
 सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥ २ ॥ ८ ॥ १३ ॥ टोडी महला ७ ॥ हरि हरि नामु सदा सद जापि ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहम
 सुआमी वसदी कीनी आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस के से फिरि तिन ही सम्हालेबिनसे सोग सँताप ॥ हाथ देइ राखे जन अपने
 हरि होए माई बाप ॥ १ ॥ जीअ जँत होए मिहरवाना दया धारी हरि नाथ ॥ नानक सरनि परे दुख भँजन जा का बड परताप
 ॥ २ ॥ ९ ॥ १४ ॥ टोडी महला ७ ॥ स्वामी सरनि परिओ दरबारे ॥ कोटि अपराध खँडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे ॥ साधसँगि परम गति पाईऐ माइआ रचि बँधि

हारे ॥ १ ॥ चरन कमल सँगि प्रीति मनि लागी सुरि जन मिले पिआरे ॥ नानक अनद करे हरि जपि जपि सगले रोग निवारे ॥ २ ॥ १० ॥ १५ ॥

टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे १४ सितिगुर प्रसादि ॥

हांहां लपटिओरे मूडहे कछू न थोरी ॥ तेरो नही सु जानी मोरी ॥ रहाउ ॥ आपन रामु न चीनो खिनूआ ॥ जो पराई सु अपनी मनुआ ॥ १ ॥ नाम सँगी सो मनि न बसाइओ ॥ छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ॥ २ ॥ सो सँचिओ जितु भूख तिसाइओ ॥ अँमित नामु तोसा नही पाइओ ॥ ३ ॥ काम क्रोधि मोह कूपि परिआ ॥ गुर प्रसादि नानक को तरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १६ ॥ टोडी महला ५ ॥ हमारै एकै हरी हरी ॥ आन अवर सिजाणि न करी ॥ रहाउ ॥ वडै भागि गुरु अपुना पाइओ ॥ गुरि मो कउ हरि नामु द्रिडाइओ ॥ १ ॥ हरि हरि जाप ताप ब्रत नेमा ॥ हरि हरि धिआइ कुसल सभि खेमा ॥ २ ॥ आचार बिउहार जाति हरि गुनीआ ॥ महा अनँद कीरतन हरि सुनीआ ॥ ३ ॥ कहु नानक जिनि ठाकुरु पाइआ ॥ सभु किछु तिस के ग्रिह महि आइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ १७ ॥

टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे १४ सितिगुर प्रसादि ॥

रूडो मनु हरि रँगो लोडै ॥ गाली हरि नीहु न होइ ॥ रहाउ ॥ हउ दूढेदी दरसन कारणि बीथी बीथी पेखा ॥ गुर मिलि भरमु गवाइआ हे ॥ १ ॥ इह बुधि पाई मै साधू कँनहु लेखु लिखिओ धुरि माथै ॥ इह बिधि नानक हरि नैण अलोइ ॥ २ ॥ १ ॥ १८ ॥ टोडी महला ५ ॥ गरबि गहिलडो मूडडो हीओरे ॥ हीओ महराज री माइओ ॥ डीहर निआई मोहि फाकिओरे ॥ रहाउ ॥ घणो घणो घणो सद लोडै बिनु लहणे कैठै पाइओरे ॥ महराज रो गाथु वाहू सिउ लुभडिओ निह भागडो भाहि सँजोइओरे ॥ १ ॥ सुणि मन सीख साधू जन सगलो थारे सगले प्राछत मिटिओरे ॥ जा को लहणो महराज री गाठडीओ जन नानक गरभासि न पउडिओरे ॥ २ ॥ २ ॥ १९ ॥

टोडी महला ५ घर ५ दुपदे १४ शितिगुर प्रसादि ॥

ऐसो गुनु मेरो प्रभ जी कीन ॥ पंच दोख अरु अहं रोग इह तन ते सगल दूरि कीन ॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि छोरि बिखिआ
ते गुर को सबदु मेरै ही अरै दीन ॥ रूपु अनरूपु मोरो कछु न बीचारिओ प्रेम गहिओ मोहि हरि रंग भीन ॥ १ ॥ पेखिओ
लालनु पाट बीच खोए अनद चिता हरखे पतीन ॥ तिस ही को ग्रिहु सोई प्रभु नानक सो ठाकुरु तिस ही को धीन ॥ २ ॥
१ ॥ २० ॥ टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन की प्रीति ॥ एही करम धरम जप एही राम नाम निरमल है रीति ॥ रहाउ ॥
प्राण अधार जीवन धन मोरै देखन कउ दरसन प्रभ नीति ॥ बाट घाट तोसा सँगि मोरै मन अपुने कउ मै हरि मखा कीत ॥
१ ॥ सँत प्रसादि भए मन निरमल करि किरपा अपुने करि लीत ॥ सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ आदि जुगादि
भगतन के मीत ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी मिलु मेरे प्राण ॥ बिसरु नहीं निमख ही अरे ते अपने
भगत कउ पूरन दान ॥ रहाउ ॥ खोवहु भरमु राखु मेरे प्रीतम अंतरजामी सुघड़ सुजान ॥ कोटि राज नाम धनु मेरै अँमित
दिसटि धारहु प्रभ मान ॥ १ ॥ आठ पहर रसना गुन गावै जसु पूरि अघावहि समरथ कान ॥ तेरी सरणि जीअन के दाते
सदा सदा नानक कुरबान ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ तेरे पग की धूरि ॥ दीन दइआल प्रीतम मनमोहन
करि किरपा मेरी लोचा पूरि ॥ रहाउ ॥ दह दिस रवि रहिआ जसु तुमरा अंतरजामी सदा हजूरि ॥ जो तुमरा जसु गावहि
करते से जन कबहु न मरते झूरि ॥ १ ॥ धँध बँध बिनसे माइआ के साधू संगति मिटे बिसूर ॥ सुख सँपति भोग इसु जीअ
के बिनु हरि नानक जाने कूर ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥ टोडी मः ५ ॥ माई मेरे मन की पिआस ॥ इकु खिनु रहि न सकउ बिनु
प्रीतम दरसन देखन कउ धारी मनि आस ॥ रहाउ ॥ सिमरउ नामु निरँजन करते मन तन ते सभि किलविख नास ॥
पूरन पारब्रहम सुखदाते अबिनासी बिमल जा को जास ॥ १ ॥ सँत प्रसादि मेरे पूर मनोरथ करि किरपा भेते

गुणतास ॥ सांति सहज सुख मनि उपजिओ कोटि सूर नानक परगास ॥ २ ॥ ५ ॥ २४ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि
 पतित पावन ॥ जीअ प्रान मान सुखदाता अंतरजामी मन को भावन ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघडु चतुरु सभ बेता रिद दास
 निवास भगत गुन गावन ॥ निरमल रूप अनूप सुआमी करम भूमि बीजन स खावन ॥ १ ॥ बिसमन बिसम भए
 बिसमादा आन न बीओ दूसर लावन ॥ रसना सिमरि सिमरि जसु जीवा नानक दास सदा बलि जावन ॥ २ ॥ ६ ॥ २५
 ॥ टोडी महला ५ ॥ माई माइआ छलु ॥ त्रिण की अगनि मेघ की छाइआ गोबिद भजन बिनु हड का जलु ॥ रहाउ ॥
 छोडि सिआनप बहु चतुराई दुइ कर जोडि साध मगि चलु ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी मानुख देह का इहु उतम फलु ॥ १
 ॥ बेद बखिआन करत साधू जन भागहीन समझत नही खलु ॥ प्रेम भगति राचे जन नानक हरि सिमरनि दहन भए मल
 ॥ २ ॥ ७ ॥ २६ ॥ टोडी महला ५ ॥ माई चरन गुर मीठे ॥ वडै भागि देवै परमेसरु कोटि फला दरसन गुर डीठे ॥ रहाउ
 ॥ गुन गावत अचुत अबिनासी काम क्रोध बिनसे मद डीठे ॥ असथिर भए साच रंगि राते जनम मरन बाहुरि नही पीठे ॥ १
 ॥ बिनु हरि भजन रंग रस जेते संत दइआल जाने सभि झूठे ॥ नाम रतनु पाइओ जन नानक नाम बिहून चले सभि मूठे ॥
 २ ॥ ८ ॥ २७ ॥ टोडी महला ५ ॥ साधसंगि हरि हरि नामु चितारा ॥ सहजि अनंदु होवै दिनु राती अंकुरु भलो हमारा
 ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिओ बडभागी जा को अंतु न पारावारा ॥ करु गहि काठि लीओ जनु अपुना बिखु सागर संसारा
 ॥ १ ॥ जनम मरन काटे गुर बचनी बहुडि न संकट दुआरा ॥ नानक सरनि गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा ॥ २
 ॥ ९ ॥ २८ ॥ टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन को सुखु ॥ कोटि अनंद राज सुखु भुगवै हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम के किलबिख नासहि सिमरत पावन तन मन सुख ॥ देखि सररुपु पूरनु भई आसा दरसन भेटत
 उतरी भुख ॥ १ ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥ नानक सरनि गही सुख सागर जनम

मरन फिरि गरभ न धुखु ॥ २ ॥ १० ॥ २९ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि चरन रिदै उर धारे ॥ सिमरि सुआमी सतिगुरु
 अपुना कारज सफल हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँनु दान पूजा परमेसुर हरि कीरति ततु बीचारे ॥ गुन गावत अतुल सुखु पाइआ
 ठाकुर अगम अपारे ॥ १ ॥ जो जन पारब्रहमि अपने कीने तिन का बाहुरि कछु न बीचारे ॥ नाम रतनु सुनि जपि जपि जीवा
 हरि नानक कँठ मझारे ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥

टोडी महला ९ १९ सतिगुर प्रसादि ॥

कहउ कहा अपनी अधमाई ॥ उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जग झूठे कउ साचु जानि
 कै ता सिउ रुच उपजाई ॥ दिन बँध सिमरिओ नही कबहू होत जु सँगि सहाई ॥ १ ॥ मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी
 न मन की काई ॥ कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

टोडी बाणी भगतां की १९ सतिगुर प्रसादि ॥

कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥ जल की माछुली चरै खजूरि ॥ १ ॥ कांइ रे बकबादु लाइओ ॥ जिनि हरि पाइओ तिनहि
 छपाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँडितु होइ कै बेदु बखानै ॥ मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥ २ ॥ १ ॥ कउन को कलँकु रहिओ राम
 नामु लेत ही ॥ पतित पवित भए रामु कहत ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम सँगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई ॥ एकादसी ब्रतु
 रहै काहे कउ तीरथ जाई ॥ १ ॥ भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए ॥ गुरमति रामु कहि को को न बैकुँठि गए ॥ २ ॥ २ ॥
 तिनि छँदे खेलु आछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुँभार के घर हांडी आछै राजा के घर सांडी गो ॥ बामन के घर रांडी आछै रांडी सांडी
 हांडी गो ॥ १ ॥ बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो ॥ देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥ २ ॥ तेली के
 घर तेलु आछै जँगलु मधे बेल गो ॥ माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥ ३ ॥ सँतां मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे
 सिआम गो ॥ नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंदु गो ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु बैराडी महला ४ घरु १ दुपदे

१ॐ मडिगार प्मगदि ॥

सुनि मन अकथ कथा हरि नाम ॥ रिधि बुधि सिधि सुख

पावहि भजु गुरमति हरि राम राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान जसु ऊतम खट दरसन गावहि राम ॥ सँकर क्रोडि
तेतीस धिआइओ नही जानिओ हरि मरमाम ॥ १ ॥ सुरि नर गण गँध्रब जसु गावहि सभ गावत जेत उपाम ॥ नानक क्रिपा
करी हरि जिन् कउ ते सँत भले हरि राम ॥ २ ॥ १ ॥ बैराडी महला ४ ॥ मन मिलि सँत जना जसु गाइओ ॥ हरि हरि रतनु
रतनु हरि नीको गुर सतिगुर दानु दिवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ जिनि हरि हरि नामु सुनाइओ
॥ धनु माइआ सँपै तिसु देवउ जिनि हरि मीतु मिलाइओ ॥ १ ॥ खिनु किंचित क्रिपा करी जगदीसरि तब हरि हरि हरि जसु
धिआइओ ॥ जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी दुखु हउमै रोगु गवाइओ ॥ २ ॥ २ ॥ बैराडी महला ४ ॥ हरि जनु

राम नाम गुन गावै ॥ जे कोई निँद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु करे सु आपे सुआमी हरि
 आपे कार कमावै ॥ हरि आपे ही मति देवै सुआमी हरि आपे बोलि बुलावै ॥ १ ॥ हरि आपे पँच ततु बिसथारा विचि धातू पँच
 आपि पावै ॥ जन नानक सतिगुरु मेले आपे हरि आपे झगरु चुकावै ॥ २ ॥ ३ ॥ बैराडी महला ४ ॥ जपि मन राम नामु
 निसतारा ॥ कोट कोटँतर के पाप सभि खोवै हरि भवजलु पारि उतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि बसत हरि सुआमी हरि
 निरभउ निरवैरु निरँकारा ॥ हरि निकटि बसत कछु नदरि न आवै हरि लाधा गुरु वीचारा ॥ १ ॥ हरि आपे साहु सराफु रतनु
 हीरा हरि आपि कीआ पासारा ॥ नानक जिंसु क्रिपा करे सु हरि नामु विहाझे सो साहु सचा वणजारा ॥ २ ॥ ४ ॥ बैराडी
 महला ४ ॥ जपि मन हरि निरँजनु निरँकारा ॥ सदा सदा हरि धिआईए सुखदाता जा का अँतु न पारावारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 अगनि कुँट महि उरथ लिव लागा हरि शरवै उदर मँझारा ॥ सो ऐसा हरि सेवहु मेरे मन हरि अँति छडावणहारा ॥ १ ॥ जा कै
 हिरदै बसिआ मेरा हरि हरि तिसु जन कउ करहु नमसकारा ॥ हरि किरपा ते पाईए हरि जपु नानक नामु अधारा ॥ २ ॥ ५ ॥
 बैराडी महला ४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु नित धिआइ ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि फिरि दूखु न लागै आइ ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी इक खिन महि बिसरि सभ
 जाइ ॥ १ ॥ तू बेअँतु सरब कल पूरा किछु कीमति कही न जाइ ॥ नानक सरणि तुम्हारी हरि जीउ भावै तिवै छडाइ ॥ २ ॥
 ६ ॥

रागु बैराडी महला ५ घरु १ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

संत जना मिलि हरि जसु गाइओ ॥ कोटि जनम के दूख गवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो चाहत सोई मनि पाइओ ॥ करि
 किरपा हरि नामु दिवाइओ ॥ १ ॥ सरब सूख हरि नामि वडाई ॥ गुर प्रसादि नानक मति पाई ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

शुगु तिलँग महलल १ वरु १

१ॐ सडतलनलड वरतड डुरधु नलरडुडु नलरडुडु
अकलल डुरडतल अडुनल सैडु डुर डुरडडल ॥

डक अरड डुडुतड डेसल तू दर डूस कुन करतलर ॥ हकल कडूर करलड तू डेडेड डरवरदडलर ॥ १ ॥ दुनूडल डुकलडे डलनू
तहकूक दलल दलनू ॥ डड सर डूड अडरलडल डलरडुतह दलल हेडल न दलनू ॥ १ ॥ रहलड ॥ डन डलसर डदर डलरदरलं कस नुस
दसतंगूर ॥ आखलर डलअडुतड कस न दलरद डूँ सवद तकडूर ॥ २ ॥ सब डेड डसतड दर दवल करडेड डदू खललल ॥ डलहे
न नुकी कलर करदड डड ई. डलनू अहवल ॥ ३ ॥ डदडखत हड डु डखील डलडलल डेनडर डेडलक ॥ नलनक डुडुडद डनु तुशल
तेरे डलकरलं डल खलक ॥ ॡ ॥ १ ॥

तललँग महलल १ वरु २ १ॐ सलतलडुर डुरसलदल ॥

डड तेरल डलंग खलडू डेरल डूत ॥ डै देवलनल डडल अतूतु ॥ कर कलसल दरसन कू डूरु ॥ डै दरल डलडु नूतल नूत ॥ १ ॥
तड दरसन कू करड सडलड ॥ डै दरल डलडतु डूखलल डलड ॥ १ ॥ रहलड ॥ केसरल कुसड डलरुगसै हरणल सरड सरूरी डडुहणल
॥ डंदन डुडतल डूतल डनेही सरडे डरडलु करणल ॥ २ ॥ डलअ डुड डलंडल कहे न कुड ॥ ऐसल डुडतु वरन डहल हुड ॥ तेरे नलडल
नलवे रहे ललव ललड ॥ नलनक तलन दरल डूखलल डलड ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥

तललँग महलल १ वरु ३ १ॐ सलतलडुर डुरसलदल ॥

डडु तनु डलडल डलहलल लूतडल लडल रंगल ॥ डेरै कंत न डलवै डूलडल डललरु कलड धन सेडै डल ॥ १ ॥ हंड कुरडलनै डलड
डलहरवलनल हंड कुरडलनै डलड ॥ हंड करडलनै डलड तलनल कै लूनल डू तेरल नलड ॥ लूनल डू तेरल नलड तलनल कै हंड

सद कुरबानै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कइआ रँडणि जे थीरे पिआरे पाईरे नाउ मजीठ ॥ रँडण वाला जे रँडै साहिबु ऐसा रँगु
 न डीठ ॥ २ ॥ जिन के चोले रतड़े पिआरे कँतु तिना कै पासि ॥ धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥ ३
 ॥ आपे साजे आपे रँगो आपे नदरि करेइ ॥ नानक कामणि कँतै भावै आपे ही रावेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ तिलँग मः १ ॥
 इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ आपनडै घरि हरि रँगो की न माणेहि ॥ सहु नेडै धन कँमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै
 कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीरे लागी जा सहु धरे पिआरो ॥ १ ॥ इआणी
 बाली किआ करे जा धन कँत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे साधन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईरे नाही
 बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ अहँकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाईरे नाही भई कामणि इआणी ॥ २
 ॥ जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईरे ॥ जो किछु करे सो भला करि मानीरे हिकमति हुकमु चुकाईरे ॥ जा
 कै प्रैमि पदारथु पाईरे तउ चरणी चितु लाईरे ॥ सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईरे ॥ एव कहहि
 सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईरे ॥ ३ ॥ आपु गवाईरे ता सहु पाईरे अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो
 दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कँत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ ऐसे रँगि राती सहज की
 माती अहिनिंसि भाइ समाणी ॥ सुँदरि साइ सरूप बिचखणि कहीरे सा सिआणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ तिलँग महला १ ॥
 जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ पाप की जँज लै काबलहु धाइआ जोरी मँगै दानु वे लालो ॥
 सरमु धरमु दुइ छपि खलोए कूडु फिरै परधानु वे लालो ॥ काजीआ बामणा की गल थकी अगदु पडै सैतानु वे लालो ॥
 मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥ जाति सनाती होरि हिदवाणीआ एहि भी लेखै लाइ वे
 लालो ॥ खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुँगू पाइ वे लालो ॥ १ ॥ साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि

आखु मसोला ॥ जिनि उपाई रँगि खाई बैठा वेखै वखि इकेला ॥ सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥ काइआ कपडु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥ आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥ सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥

तिलंगु महला ५ घरु १ १९ शितिगुर प्रसादि ॥

सभि आए हुकमि खसमाहु हुकमि सभ वरतनी ॥ सचु साहिबु साचा खेलु सभु हरि धनी ॥ १ ॥ सालाहिहु सचु सभ ऊपरि हरि धनी ॥ जिसु नाही कोइ सरीकु किसु लेखै हउ गनी ॥ रहाउ ॥ पउण पाणी धरती आकासु घर मंदर हरि बनी ॥ विचि वरतै नानक आपि झूठु कहु किआ गनी ॥ २ ॥ १ ॥ तिलंग महला ४ ॥ नित निहफल करम कमाइ बफावै दुरमतीआ ॥ जब आणै वलवंच करि झूठु तब जाणै जगु जितीआ ॥ १ ॥ ऐसा बाजी सैसारु न चेतै हरि नामा ॥ खिन महि बिनसै सभु झूठु मेरे मन धिआइ रामा ॥ रहाउ ॥ सा वेला चिति न आवै जितु आइ कंटकु कालु ग्रसै ॥ तिसु नानक लए छडाइ जिसु किरपा करि हिरदै वसै ॥ २ ॥ २ ॥

तिलंगु महला ५ घरु १ १९ शितिगुर प्रसादि ॥

खाक नूर करदँ आलम दुनीआइ ॥ असमान जिमी दरखत आब पैदइसि खुदाइ ॥ १ ॥ बँदे चसम दीदँ फनाइ ॥ दुनीआ मुरदार खुरदनी गाफल हवाइ ॥ रहाउ ॥ गैबान हैवान हराम कुसतनी मुरदार बखोराइ ॥ दिल कबज कबजा कादरो दोजक सजाइ ॥ २ ॥ वली निआमति बिरादरा दरबार मिलक खानाइ ॥ जब अजराईलु बसतनी तब चि कारे बिदाइ ॥ ३ ॥ हवाल मालूमु करदँ पाक अलाह ॥ बुगो नानक अरदासि पेसि दरवेस बँदाह ॥ ४ ॥ १ ॥ तिलंग घरु २ महला ५ ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ तू करतारु करहि सो होइ ॥ तेरा जोरु तेरी मनि टेक ॥ सदा सदा जपि नानक एक ॥ १ ॥ सभ ऊपरि पारब्रहमु दातारु ॥ तेरी टेक तेरा आधारु ॥ रहाउ ॥

है तूहै तू होवनहार ॥ अगम अगाधि ऊच आपार ॥ जो तुधु सेवहि तिन भउ दुखु नाहि ॥ गुर परसादि नानक गुण गाहि ॥ २
 ॥ जो दीसै सो तेरा रूप ॥ गुण निधान गोविंद अनूप ॥ सिमरि सिमरि सिमरि जन सोइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥ ३
 ॥ जिनि जपिआ तिस कउ बलिहार ॥ तिस कै सँगि तरै संसार ॥ कहु नानक प्रभ लोचा पूरि ॥ संत जना की बाछउ धूरि ॥ ४
 ॥ २ ॥ तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ मिहरवानु साहिबु मिहरवानु ॥ साहिब मेरा मिहरवानु ॥ जीअ सगल कउ देइ दानु ॥ रहाउ
 ॥ तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥ जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥ १ ॥ जिनि उपाई मेदनी
 सोई करदा सार ॥ घटि घटि मालकु दिला का सचा परवदगारु ॥ २ ॥ कुदरति कीम न जाणीरे वडा वेपरवाहु ॥ करि बँदे तू
 बँदगी जिचरु घट महि साहु ॥ ३ ॥ तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिँडु तेरी रासि ॥ रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की
 अरदासि ॥ ४ ॥ ३ ॥ तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ करते कुदरती मुसताकु ॥ दीन दुनीआ एक तूही सभ खलक ही ते पाकु ॥
 रहाउ ॥ खिन माहि थापि उथापदा आचरज तेरे रूप ॥ कउण जाणै चलत तेरे अँधिआरे महि दीप ॥ १ ॥ खुदि खसम खलक
 जहान अलह मिहरवान खुदाइ ॥ दिनसु रैणि जि तुधु अराधे सो किउ दोजकि जाइ ॥ २ ॥ अजराईलु थारु बँदे जिसु तेरा
 आधारु ॥ गुनह उस के सगल आफू तेरे जन देखहि दीदारु ॥ ३ ॥ दुनीआ चीज फिलहाल सगले सचु सुखु तेरा नाउ ॥ गुर
 मिलि नानक बूझिआ सदा एकासु गाउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ तिलंग महला ५ ॥ मीरां दानां दिल सोच ॥ मुहबते मनि तनि बसै सचु
 साह बँदी मोच ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीदने दीदार साहिब कछु नही इस का मोलु ॥ पाक परवरदगार तू खुदि खसमु वडा अतोलु ॥
 १ ॥ दस्तगीरी देहि दिलावर तूही तूही एक ॥ करतार कुदरति करण खालक नानक तेरी टेक ॥ २ ॥ ५ ॥

तिलंग महला १ घरु २ १८ शितिगुर प्रसादि ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐरे भाई ॥ आपे जाणै

करे आपि जिनि वाड़ी है लाई ॥ १ ॥ राइसा पिआरे का राइसा जितु सदा सुखु होई ॥ रहाउ ॥ जिनि रंगि कंतु न राविआ
 सा पछो रे ताणी ॥ हाथ पछोडै सिरु धुणै जब रैणि विहाणी ॥ २ ॥ पछोतावा ना मिलै जब चूकैगी सारी ॥ ता फिरि
 पिआरा रावीरे जब आवैगी वारी ॥ ३ ॥ कंतु लीआ सोहागणी मै ते वधवी एह ॥ से गुण मुझै न आवनी कै जी दोसु धरेह
 ॥ ४ ॥ जिनी सखी सहु राविआ तिन पूछउगी जाए ॥ पाइ लगउ बेनती करउ लेउगी पँथु बताए ॥ ५ ॥ हुकमु पछाणै
 नानका भउ चँदनु लावै ॥ गुण कामण कामणि करै तउ पिआरे कउ पावै ॥ ६ ॥ जो दिलि मिलिआ सु मिलि रहिआ
 मिलिआ कहीरे रे सोई ॥ जो बहुतेरा लोचीरे बाती मेलु न होई ॥ ७ ॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै ॥ गुर
 परसादी जाणीरे तउ अनभउ पावै ॥ ८ ॥ पाना वाड़ी होइ घरि खरु सार न जाणै ॥ रसीआ होवै मुसक का तब फूलु पछाणै
 ॥ ९ ॥ अपिउ पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै ॥ सहजे सहजे मिलि रहै अमरा पदु पावै ॥ १० ॥ १ ॥ तिलंग महला ४
 ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ गुर मीति सुणाईआ ॥ बलिहारी गुर आपणे गुर कउ बलि जाईआ ॥ १ ॥ आइ मिलु
 गुरसिख आइ मिलु तू मेरे गुरु के पिआरे ॥ रहाउ ॥ हरि के गुण हरि भावदे से गुरु ते पाए ॥ जिन गुर का भाणा मँनिआ
 तिन घुमि घुमि जाए ॥ २ ॥ जिन सतिगुरु पिआरा देखिआ तिन कउ हउ वारी ॥ जिन गुर की कीती चाकरी तिन सद
 बलिहारी ॥ ३ ॥ हरि हरि तेरा नामु है दुख मेटणहारा ॥ गुर सेवा ते पाईए गुरमुखि निसतारा ॥ ४ ॥ जो हरि नामु
 धिआइदे ते जन परवाना ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ सदा सदा कुरबाना ॥ ५ ॥ सा हरि तेरी उस्तति है जो हरि प्रभ भावै
 ॥ जो गुरमुखि पिआरा सेवदे तिन हरि फलु पावै ॥ ६ ॥ जिना हरि सेती पिरहड़ी तिना जीअ प्रभ नाले ॥ ओइ जपि जपि
 पिआरा जीवदे हरि नामु समाले ॥ ७ ॥ जिन गुरमुखि पिआरा सेविआ तिन कउ घुमि जाइआ ॥ ओइ आपि छुटे परवार
 सिउ सभु जगतु छडाइआ ॥ ८ ॥ गुरि पिआरै हरि सेविआ गुरु धँनु गुरु धँनो ॥ गुरि हरि मारगु दसिआ गुर पुँनु

वड पुँनो ॥ ९ ॥ जो गुरसिख गुरु सेवदे से पुँन पराणी ॥ जनु नानकु तिन कउ वारिआ सदा सदा कुरबाणी ॥ १० ॥
 गुरमुखि सखी सहेलीआ से आपि हरि भाईआ ॥ हरि दरगह पैनाईआ हरि आपि गलि लाईआ ॥ ११ ॥ जो गुरमुखि नामु
 धिआइदे तिन दरसनु दीजै ॥ हम तिन के चरण पखालदे धूड़ि घोलि घोलि पीजै ॥ १२ ॥ पान सुपारी खातीआ मुखि
 बीड़ीआ लाईआ ॥ हरि हरि कदे न चेतिओ जमि पकड़ि चलाईआ ॥ १३ ॥ जिन हरि नामा हरि चेतिआ हिरदै उरि धारे ॥
 तिन जमु नेड़ि न आवई गुरसिख गुर पिआरे ॥ १४ ॥ हरि का नामु निधानु है कोई गुरमुखि जाणै ॥ नानक जिन सतिगुरु
 भेटिआ रँगे रलीआ माणै ॥ १५ ॥ सतिगुरु दाता आखीऐ तिसु करे पसाओ ॥ हउ गुर विटहु सद वारिआ जिनि दितड़ा
 नाओ ॥ १६ ॥ सो धँनु गुरु साबासि है हरि देइ सनेहा ॥ हउ वेखि वेखि गुरु विगसिआ गुर सतिगुर देहा ॥ १७ ॥ गुर
 रसना अँम्रितु बोलदी हरि नामि सुहावी ॥ जिन सुणि सिखा गुरु मँनिआ तिना भुख सभ जावी ॥ १८ ॥ हरि का मारगु
 आखीऐ कहु कितु बिधि जाईऐ ॥ हरि हरि तेरा नामु है हरि खरचु लै जाईऐ ॥ १९ ॥ जिन गुरमुखि हरि आराधिआ से साह
 चड दाणे ॥ हउ सतिगुर कउ सद वारिआ गुर बचनि समाणे ॥ २० ॥ तू ठाकुरु तू साहिबो तूहै मेरा मीरा ॥ तुधु भावै तेरी
 बँदगी तू गुणी गहीरा ॥ २१ ॥ आपे हरि इक रँगु है आपे बहु रँगी ॥ जो तिसु भावै नानका साई गल सँगी ॥ २२ ॥ २ ॥

तिलँग महला ९ काफ़ी १९ सतिगुर प्रसादि ॥

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्राणी ॥ छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुन काहिं
 न गावही मूरख अगिआना ॥ झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥ १ ॥ अजहू कछु बिगसिओ नही जो प्रभ गुन
 गावै ॥ कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥ २ ॥ १ ॥ तिलँग महला ९ ॥ जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल
 सोइआ ॥ जो तनु उपजिआ सँग ही सो भी सँगि न होइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत बँध जन हितु जा सिउ कीना
 ॥ जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥ १ ॥

जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥ नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥ २ ॥ २ ॥ तिलंग महला ९ ॥
हरि जसुरे मना गाइ लै जो सँगी है तेरो ॥ अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँपति रथ धन राज
सिउ अति नेहु लगाइओ ॥ काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥ १ ॥ जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥ २ ॥ जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनुरे भाई ॥ नानक कहत पुकारि कै गहु
प्रभ सरनाई ॥ ३ ॥ ३ ॥

तिलंग बाणी भगता की कबीर जी १४ शितिगुर प्रसादि ॥

बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ ॥ टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाइ ॥ १ ॥ बँदे खोजु दिल हर
रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥ इह जु दुनीआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरोगु पठि पठि खुसी होइ बेखबर
बादु बकाहि ॥ हकु सचु खालकु खलक मिआने सिआम मूरति नाहि ॥ २ ॥ असमान म्थिआने लहंग दरीआ गुसल करदन बूद
॥ करि फकरु दाइम लाइ चसमे जह तहा मउजूदु ॥ ३ ॥ अलाह पाकँ पाक है सक करउ जे दूसर होइ ॥ कबीर करमु करीम का
उहु करै जानै सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ नामदेव जी ॥ मै अँधुले की टेक तेरा नामु खुँदकारा ॥ मै गरीब मसकीन तेरा नामु है अधारा
॥ १ ॥ रहाउ ॥ करीमां रहीमां अलाह तू गनीं ॥ हाजरा हजूरि दरि पेसि तू मनीं ॥ १ ॥ दरीआउ तू दिहँद तू बिसीआर तू
धनी ॥ देहि लेहि एकु तूँ दिगर को नही ॥ २ ॥ तूँ दानां तूँ बीनां मै बीचारु किआ करी ॥ नामे चे सुआमी बखसँद तूँ हरी ॥ ३
॥ १ ॥ २ ॥ हले थारां हले थारां खुसिखबरी ॥ बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥
१ ॥ रहाउ ॥ कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥ द्वारिका नगरी काहे जे मगोल ॥ २ ॥ चँदीं, हजार आलम एकल खानां
॥ हम चिनी पातिसाह सांवेले बरनां ॥ ३ ॥ असपति गजपति नरह नरिँद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकँद ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

ॐ सति नामु करता पुरुषु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

शगु सूही महला १ चउपदे घरु १ ॥

भांडा धोइ बैसि धूपु देवहु आउ दूधै कउ जावहु ॥ दूधु कर्म फुनि सुरति समाइणु होइ निरास जमावहु ॥ १ ॥ जपहु त एको नामा ॥ अवरि निराफल कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु ईटी हाथि करहु फुनि नेत्रउ नीद न आवै ॥ रसना नामु जपहु तब मथीरे इन बिधि अँमितु पावहु ॥ २ ॥ मनु सँपटु जितु सत सरि नावणु भावन पाती त्रिपति करे ॥ पूजा प्राण सेवकु जे सेवे इन्ह बिधि साहिबु खतु रहै ॥ ३ ॥ कहदे कहहि कहे कहि जावहि तुम सरि अवरु न कोई ॥ भगति हीणु नानकु जनु जँपै हउ सालाही सचा सोई ॥ ४ ॥ १ ॥

सूही महला १ घरु २ ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरि वसै न बाहरि जाइ ॥ अँमितु छोडि काहे बिख खाइ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु जपहु मन मेरे ॥ होवहु चाकर साचे केरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु सभु कोई खै ॥ बांधनि बांधिआ सभु जगु भवै ॥ २ ॥ सेवा करे सु चाकरु होइ ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ सोइ ॥ ३ ॥ हम नही चँगे बुरा नही कोइ ॥ प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

सूही महला १ घरु ६ १४ सतिगुर परसादि ॥

उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालडी मसु ॥ धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥ १ ॥ सजण सेई नालि मै चलदिआ
नालि चलँन्हि ॥ जिथै लेखा मंगीरे तिथै खडे दिसँनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोठे मंडप माडीआ पासहु चितवीआहा ॥ ढठीआ
कँमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा ॥ २ ॥ बहा बगे कपड़े तीरथ मँझि वसँन्हि ॥ घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि
॥ ३ ॥ सिँमल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलँन्हि ॥ से फल कँमि न आवन्ही ते गुण मै तनि हँन्हि ॥ ४ ॥ अँधुलै भारु
उठाइआ डूगर वाट बहुतु ॥ अखी लोडी ना लहा हउ चडि लँघा कितु ॥ ५ ॥ चाकरीआ चँगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥
नानक नामु समालि तँ छुटहि जितु ॥ ६ ॥ १ ॥ ३ ॥ सूही महला १ ॥ जप तप का बँधु बेडुला जितु लँघहि वहेला ॥ ना
सरवरु ना ऊछलै ऐसा पँथु सुहेला ॥ १ ॥ तेरा एको नामु मँजीठडा रता मेरा चोला सद रँग ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजन
चले पिआरिआ किउ मेला होई ॥ जे गुण होवहि गँठडीरे मेलेगा सोई ॥ २ ॥ मिलिआ होइ न वीछुडै जे मिलिआ होई ॥ आवा
गउणु निवारिआ है साचा सोई ॥ ३ ॥ हउमै मारि निवारिआ सीता है चोला ॥ गुर बचनी फलु पाइआ सह के अँम्रित बोला ॥
४ ॥ नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा ॥ हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा ॥ ५ ॥ २ ॥ ४ ॥ सूही महला १
॥ जिन कउ भांडै भाउ तिना सवारसी ॥ सूखी करै पसाउ दूख विसारसी ॥ सहसा मूले नाहि सरपर तारसी ॥ १ ॥ तिन्हा
मिलिआ गुर आइ जिन कउ लीखिआ ॥ अँम्रितु हरि का नाउ देवै दीखिआ ॥ चालहि सतिगुर भाइ भवहि न भीखिआ ॥ २ ॥
जा कउ महलु हजूरि दूजे निवै किसु ॥ दरि दरवाणी नाहि मूले पुछ तिसु ॥ छुटै ता कै बोलि साहिब नदरि जिसु ॥ ३ ॥ घले
आणे आपि जिसु नाही दूजा मतै कोइ ॥ ढाहि उसारे साजि जाणै सभ सोइ ॥ नाउ नानक बखसीस नदरी करमु होइ ॥ ४ ॥
३ ॥ ५ ॥ सूही महला १ ॥ भांडा हछा होइ जो तिसु भावसी ॥ भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥

गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ एतु दुआरै धोइ हछा होइसी ॥ मैले हछे का वीचारु आपि वरताइसी ॥ मत्तु को जाणै जाइ
 अगै पाइसी ॥ जेहे करम कमाइ तेहा होइसी ॥ अँम्रितु हरि का नाउ आपि वरताइसी ॥ चलिआ पति सिउ जनमु सवारि वाजा
 वाइसी ॥ माणसु किआ वेचारा तिहु लोक सुणाइसी ॥ नानक आपि निहाल सभिकुल तारसी ॥ १ ॥ ४ ॥ ६ ॥ सूही महला
 १ ॥ जोगी होवै जोगवै भोगी होवै खाइ ॥ तपीआ होवै तपु करे तीरथि मलिं मलिं नाइ ॥ १ ॥ तेरा सदड़ा सुणीजै भाई जे को
 बहै अलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसा बीजै सो लुणे जो खटे सो खाइ ॥ अगै पुछ न होवई जे सणु नीसाणै जाइ ॥ २ ॥ तैसो
 जैसा काढीरे जैसी कार कमाइ ॥ जो दमु चिति न आवई सो दमु बिरथा जाइ ॥ ३ ॥ इहु तनु वेची बै करी जे को लए विकाइ ॥
 नानक कँमि न आवई जितु तनि नाही सचा नाउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

सूही महला १ वरु ७ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

जोगु न खिँथा जोगु न डँडै जोगु न भसम चड़ाईरे ॥ जोगु न मुँदी मूँडि मुडाइरे जोगु न सिँडी वाईरे ॥ अँजन माहि निरँजनि
 रहीरे जोग जुगति इव पाईरे ॥ १ ॥ गली जोगु न होई ॥ एक द्रिसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीरे सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जोगु न बाहरि मडी मसाणी जोगु न ताडी लाईरे ॥ जोगु न देसि दिसँतरि भविरे जोगु न तीरथि नाईरे ॥ अँजन माहि निरँजनि
 रहीरे जोग जुगति इव पाईरे ॥ २ ॥ सतिगुरु भेटै ता सहसा तूटै धावतु वरजि रहाईरे ॥ निझरु झरै सहज धुनि लागै घर ही
 परचा पाईरे ॥ अँजन माहि निरँजनि रहीरे जोग जुगति इव पाईरे ॥ ३ ॥ नानक जीवतिआ मरि रहीरे ऐसा जोगु कमाईरे ॥
 वाजे बाझहु सिँडी वाजै तउ निरभउ पदु पाईरे ॥ अँजन माहि निरँजनि रहीरे जोग जुगति तउ पाईरे ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ सूही
 महला १ ॥ कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥ १
 ॥ मेरे लाल जीउ तेरा अँतु न जाणा ॥ तुँ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूँ आपे सरब समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु

ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥ २ ॥ आपे कँडा तोलु
तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥ ३ ॥ अँधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु
जावै ॥ ता की संगति नानक रहदा किउ करि मूडा पावै ॥ ४ ॥ २ ॥ ९ ॥

शुगु सूही महला ४ घरु १ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

मनि राम नामु आराधिआ गुर सबदि गुरु गुर के ॥ सभि इछा मनि तनि पूरीआ सभु चूका डरु जम के ॥ १ ॥ मेरे मन
गुण गावहु राम नाम हरि के ॥ गुरि तुठै मनु परबोधिआ हरि पीआ रसु गटके ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतसंगति ऊतम
सतिगुर केरी गुन गावै हरि प्रभ के ॥ हरि किरपा धारि मेलहु सतसंगति हम धोवह पग जन के ॥ २ ॥ राम नामु सभु है
राम नामा रसु गुरमति रसु रसके ॥ हरि अँमितु हरि जलु पाइआ सभ लार्थी तिस तिसके ॥ ३ ॥ हमरी जाति पाति गुरु
सतिगुरु हम वेचिओ सिरु गुर के ॥ जन नानक नामु परिओ गुर चेला गुर राखहु लाज जन के ॥ ४ ॥ १ ॥ सूही
महला ४ ॥ हरि हरि नामु भजिओ पुरखोतमु सभि बिनसे दालद दलघा ॥ भउ जनम मरणा मेदिओ गुर सबदी हरि
असथिरु सेवि सुखि समघा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नाम अति पिरघा ॥ मै मनु तनु अरपि धरिओ गुर आगै सिरु वेचि
लीओ मुलि महघा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरपति राजे रँग रस माणहि बिनु नावै पकड़ि खड़े सभि कलघा ॥ धरमराइ सिरि
डँडु लगाना फिरि पछुताने हथ फलघा ॥ २ ॥ हरि राखु राखु जन किरम तुमारे सरणागति पुरख प्रतिपलघा ॥ दरसनु
संत देहु सुखु पावै प्रभ लोच पूरि जनु तुमघा ॥ ३ ॥ तुम समरथ पुरख वडे प्रभ सुआमी मो कउ कीजै दानु हरि निमघा ॥
जन नानक नामु मिलै सुखु पावै हम नाम विटहु सद घुमघा ॥ ४ ॥ २ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि नाम हरि रँडु है हरि रँडु
मजीठै रँडु ॥ गुरि तुठै हरि रँगु चाड़िआ फिरि बहुड़ि न होवी भँडु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि राम नामि करि रँडु ॥ गुरि तुठै

हरि उपदेसिआ हरि भेटिआ राउ निसँडु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुँध इआणी मनमुखी फिरि आवण जाणा अँडु ॥ हरि प्रभु
चिति न आइओ मनि दूजा भाउ सहलँडु ॥ २ ॥ हम मैलु भरे दुहचारीआ हरि राखहु अँगी अँडु ॥ गुरि अँमित सरि
नवलाइआ सभि लाथे किलविख पँडु ॥ ३ ॥ हरि दीना दीन दइआल प्रभु सतसंगति मेलहु सँडु ॥ मिलि संगति हरि रँगु
पाइआ जन नानक मनि तनि रँडु ॥ ४ ॥ ३ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि हिरदा सुधु न होई
॥ अनदिनु करम करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ॥ १ ॥ गिआनी गुर बिनु भगति न होई ॥ कोरै रँगु कदे न चडै जे
लोचै सभु कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तप सँजम वरत करे पूजा मनमुख रोगु न जाई ॥ अँतरि रोगु महा अभिमाना दूजै
भाइ खूआई ॥ २ ॥ बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनूआ दह दिसि धावै ॥ हउमै बिआपिआ सबदु न चीनैह फिरि फिरि जूनी
आवै ॥ ३ ॥ नानक नदरि करे सो बूझै सो जनु नामु धिआए ॥ गुर परसादी एको बूझै एकसु माहि समाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

सूही महला ४ वरु २ १८ सतिगुर परसादि ॥

गुरमति नगरी खोजि खोजाई ॥ हरि हरि नामु पदारथु पाई ॥ १ ॥ मेरै मनि हरि हरि सांति वसाई ॥ तिसना अगनि
बुझी खिन अँतरि गुरि मिलिऐ सभ भुख गवाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावा जीवा मेरी माई ॥ सतिगुरि दइआलि
गुण नामु दिडाई ॥ २ ॥ हउ हरि प्रभु पिआरा ढूढि ढूढाई ॥ सतसंगति मिलि हरि रसु पाई ॥ ३ ॥ धुरि मसतकि लेख
लिखे हरि पाई ॥ गुरु नानकु तुठा मेलै हरि भाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि क्रिपा करे मनि हरि रँगु लाए
॥ गुरमुखि हरि हरि नामि समाए ॥ १ ॥ हरि रँगि राता मनु रँग माणे ॥ सदा अनँदि रहै दिन राती पूरे गुर कै सबदि
समाणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रँग कउ लोचै सभु कोई ॥ गुरमुखि रँगु चलूला होई ॥ २ ॥ मनमुखि मुगधु नरु कोरा होइ
॥ जे सउ लोचै रँगु न होवै कोइ ॥ ३ ॥ नदरि करे ता सतिगुर पावै ॥ नानक

हरि रसि हरि रँगि समावै ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥ सूही महला ४ ॥ जिहवा हरि रसि रही अघाइ ॥ गुरमुखि पीवै सहजि समाइ ॥ १ ॥
 ॥ हरि रसु जन चाखहु जे भाई ॥ तउ कत अनत सादि लोभाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति रसु राखहु उर धारि ॥ हरि रसि राते
 रँगि मुरारि ॥ २ ॥ मनमुखि हरि रसु चाखिआ न जाइ ॥ हउमै करै बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ नदरि करे ता हरि रसु पावै ॥
 नानक हरि रसि हरि गुण गावै ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

सूही महला ४ वरु ६ १८ शितिगुर परसादि ॥

नीच जाति हरि जपतिआ उतम पदवी पाइ ॥ पूछहु बिदर दासी सुतै किसनु उतरिआ घरि जिसु जाइ ॥ १ ॥ हरि की अकथ
 कथा सुनहु जन भाई जितु सहसा दूख भूख सभ लहि जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख
 इक गाइ ॥ पतित जाति उतम भइआ चारि वरन परे पगि आइ ॥ २ ॥ नामदेअ प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाइ ॥
 खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ॥ ३ ॥ जितने भगत हरि सेवका मुखि अठसठि तीरथ तिन तिलकु
 कढाइ ॥ जनु नानकु तिन कउ अनदिनु परसे जे क्रिपा करे हरि राइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ सूही महला ४ ॥ तिन्ही अंतरि हरि
 आराधिआ जिन कउ धुरि लिखिआ लिखतु लिलारा ॥ तिन की बखीली कोई किआ करे जिन का अँगु करे मेरा हरि करतारा ॥
 १ ॥ हरि हरि धिआइ मन मेरे मन धिआइ हरि जनम जनम के सभि दूख निवारणहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुरि भगत जना कउ
 बखसिआ हरि अँमित भगति भँडारा ॥ मूरखु होवै सु उन की रीस करे तिसु हलति पलति मुहु कारा ॥ २ ॥ से भगत से सेवका
 जिना हरि नामु पिआरा ॥ तिन की सेवा ते हरि पाईऐ सिरि निँदक कै पवै छारा ॥ ३ ॥ जिसु घरि विरती सोई जाणै जगत गुर
 नानक पूछि करहु बीचारा ॥ चहु पीड़ी आदि जुगादि बखीली किनै न पाइओ हरि सेवक भाइ निसतारा ॥ ४ ॥ २ ॥ ९ ॥
 सूही महला ४ ॥ जिथै हरि आराधीऐ तिथै हरि मितु सहाई ॥ गुर किरपा ते हरि मनि वसै होरतु बिधि लइआ न जाई ॥ १ ॥

हरि धनु सँचीरे भाई ॥ जिं हलति पलति हरि होइ सखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतसंगती संगि हरि धनु खटीरे होर थै होरतु उपाइ
 हरि धनु कितै न पाई ॥ हरि रतनै का वापारीआ हरि रतन धनु विहाइके कचै के वापारीए वाकि हरि धनु लइआ न जाई ॥ २ ॥
 हरि धनु रतनु जवेहरु माणकु हरि धणै नालि अँमित वेलै वतै हरि भगती हरि लिव लाई ॥ हरि धनु अँमित वेलै वतै का बीजिआ
 भगत खाइ खरचि रहै निखुटै नाही ॥ हलति पलति हरि धनै की भगता कउ मिली वडिआई ॥ ३ ॥ हरि धनु निरभउ सदा सदा
 असथिरु है साचा इहु हरि धनु अगनी तसकरै पाणीए जमदूतै किसै का गवाइआ न जाई ॥ हरि धन कउ उचका नेडि न आवई
 जमु जागाती डँडु न लगाई ॥ ४ ॥ साकती पाप करि कै बिखिआ धनु सँचिआ तिना इक विख नालि न जाई ॥ हलतै विचि
 साकत दुहेले भए हथहु छुड़कि गइआ अगै पलति साकतु हरि दरगह ढोई न पाई ॥ ५ ॥ इसु हरि धन का साहु हरि आपि है सँतहु
 जिस नो देइ सु हरि धनु लदि चलाई ॥ इसु हरि धनै का तोटा कदे न आवई जन नानक कउ गुरि सोझी पाई ॥ ६ ॥ ३ ॥ १०
 ॥ सूही महला ४ ॥ जिस नो हरि सुप्रसँनु होइ सो हरि गुणा रवै सो भगतु सो परवानु ॥ तिस की महिमा किआ वरनीए जिस कै
 हिरदै वसिआ हरि पुरखु भगवानु ॥ १ ॥ गोविंद गुण गाईए जीउ लाइ सतिगुरु नालि धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो सतिगुरु
 सा सेवा सतिगुर की सफल है जिस ते पाईए परम निधानु ॥ जो दूजै भाइ साकत कामना अरथि दुरगंध सरेवदे सो निहफल सभु
 अगिआनु ॥ २ ॥ जिस नो परतीति होवै तिस का गाविआ थाइ पवै सो पावै दरगह मानु ॥ जो बिनु परतीती कपटी कूड़ी कूड़ी
 अखी मीटदे उन का उतरि जाइगा झूठु गुमानु ॥ ३ ॥ जेता जीउ पिँडु सभु तेरा तूँ अंतरजामी पुरखु भगवानु ॥ दासनि दासु
 कहै जनु नानकु जेहा तूँ कराइहि तेहा हउ करी वखिआनु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥

सूही महला ४ वरु ७ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना ॥

तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूँ ठाकुर ऊच भगवाना ॥ १ ॥ मै हरि हरि नामु धर सोई ॥ जिउ भावै तिउ राखु मेरे साहिब मै
 तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै आरदासि ॥ मै होरु थाउ नाही जिसु
 पहि करउ बेनँती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥ २ ॥ विचे धरती विचे पाणी विचि कासट अगनि धरीजै ॥ बकरी सिँघु
 इकतै थाइ राखे मन हरि जपि भ्रमु भउ दूरि कीजै ॥ ३ ॥ हरि की वडिआई देखहु संतहु हरि निमाणिआ माणु देवाए ॥ जिउ
 धरती चरण तले ते ऊपरि आवै तउ नानक साध जना जगतु आणि सभु पैरी पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥ सूही महला ४ ॥ तूँ
 करता सभु किछु आपु जाणहि किआ तुधु पहि आखि सुणाईरे ॥ बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै जेहा को करे तेहा को पाईरे
 ॥ १ ॥ मेरे साहिब तूँ अंतर की बिधि जाणहि ॥ बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै तुधु भावै तिवै बुलावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 सभु मोहु माइआ सरीरु हरि कीआ विचि देही मानुख भगति कराई ॥ इकना सतिगुरु मेलि सुखु देवाहि इकि मनमुखि धंधु
 पिटाई ॥ २ ॥ सभु को तेरा तूँ सभना का मेरे करते तुधु सभना सिरि लिखिआ लेखु ॥ जेही तूँ नदरि करहि तेहा को होवै
 बिनु नदरी नाही को भेखु ॥ ३ ॥ तेरी वडिआई तूँ है जाणहि सभ तुधनो नित धिआए ॥ जिस नो तुधु भावै तिस नो तूँ
 मेलहि जन नानक सो थाइ पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ १३ ॥ सूही महला ४ ॥ जिन कै अंतरि वसिआ मेरा हरि हरि तिन के सभि
 रोग गवाए ॥ ते मुक्त भए जिन हरि नामु धिआइआ तिन पवितु परम पदु पाए ॥ १ ॥ मेरे राम हरि जन आरोग भए ॥ गुर
 बचनी जिना जपिआ मेरा हरि हरि तिन के हउमै रोग गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण रोगी विचि हउमै
 कार कमाई ॥ जिनि कीए तिसहि न चेतहि बपुडे हरि गुरमुखि सोझी पाई ॥ २ ॥ हउमै रोगि सभु जगतु बिआपिआ तिन
 कउ जनम मरण दुखु भारी ॥ गुर परसादी को विरला छूटै तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ ३ ॥ जिनि सिसटि साजी सोई हरि
 जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक आपे वेखि हरि बिगसै गुरमुखि ब्रहम बीचारो ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥ सूही महला ४ ॥

कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ॥ आपणा कीता किछु न होवै जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ॥ १ ॥ मेरे हरि
 जीउ सभु को तैरै वसि ॥ असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह जिउ भावै तिवै बखसि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु जीउ पिँडु
 दीआ तुधु आपे तुधु आपे करै लाइआ ॥ जेहा तूँ हुकमु करहि तेहे को करम कमावै जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ ॥ २ ॥ पंच
 ततु करि तुधु सिसटि सभ साजी कोई छेवा करिउ जे किछु कीता होवै ॥ इकना सतिगुरु मेलि तूँ बुझावहि इकि मनमुखि करहि
 सि रोवै ॥ ३ ॥ हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ॥ जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी
 सरणागति पइआ अजाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २४ ॥

रागु सूही महला ५ वरु १ १८ सतिगुर परसादि ॥

बाजीगरि जैसे बाजी पाई ॥ नाना रूप भेख दिखलाई ॥ सांगु उतारि थँम्हिओ पासारा ॥ तब एको एकँकारा ॥ १ ॥ कवन
 रूप द्रिसटिओ बिनसाइओ ॥ कतहि गइओ उहु कत ते आइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल ते ऊठहि अनिक तरंगा ॥ कनिक
 भूखन कीने बहु रंगा ॥ बीजु बीजि देखिओ बहु परकारा ॥ फल पाके ते एकँकारा ॥ २ ॥ सहस घटा महि एकु आकासु ॥
 घट फूटे ते ओही प्रगासु ॥ भ्रम लोभ मोह माइआ विकार ॥ भ्रम छूटे ते एकँकार ॥ ३ ॥ ओहु अबिनासी बिनसत नाही ॥
 ना को आवै ना को जाही ॥ गुरि पूरै हउमै मलु धोई ॥ कहु नानक मेरी परम गति होई ॥ ४ ॥ १ ॥ सूही महला ५ ॥ कीता
 लोड़हि सो प्रभ होइ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ जो जनु सेवे तिसु पूरन काज ॥ दास अपुने की राखहु लाज ॥ १ ॥
 तेरी सरणि पूरन दइआला ॥ तुझ बिनु कवनु करे प्रतिपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरि ॥ निकटि
 वसै नाही प्रभु दूरि ॥ लोक पतीआरै कछु न पाईऐ ॥ साचि लगै ता हउमै जाईऐ ॥ २ ॥ जिस नो लाइ लए सो लागै ॥
 गिआन रतनु अंतरि तिसु जागै ॥ दुर्मति जाइ परम पदु पाए ॥ गुर परसादी नामु धिआए ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करउ

अरदासि ॥ तुधु भावै ता आनहिं रासि ॥ करि किरपा अपनी भगती लाइ ॥ जन नानक प्रभु सदा धिआइ ॥ ४ ॥ २ ॥
 सूही महला ५ ॥ धनु सोहागनि जो प्रभू पछानै ॥ मानै हुकमु तजै आभिमानै ॥ प्रिअ सिउ राती रलीआ मानै ॥ १ ॥ सुनि
 सरखीए प्रभ मिलण नीसानी ॥ मनु तनु अरपि तजिं लाज लोकानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरखी सहेली कउ समझावै ॥ सोई
 कमावै जो प्रभ भावै ॥ सा सोहागणि अँकि समावै ॥ २ ॥ गरबि गहेली महलु न पावै ॥ फिरि पछुतावै जब रैणि बिहावै ॥
 करमहीणि मनमुखि दुखु पावै ॥ ३ ॥ बिनउ करी जे जाणा दूरि ॥ प्रभु अबिनासी रहिआ भरपूरि ॥ जनु नानकु गावै देखि
 हदूरि ॥ ४ ॥ ३ ॥ सूही महला ५ ॥ ग्रिहु वसि गुरि कीना हउ घर की नारि ॥ दस दासी करि दिनी भतारि ॥ सगल समग्री मै
 घर की जोड़ी ॥ आस पिआसी पिर कउ लोड़ी ॥ १ ॥ कवन कहा गुन कँत पिआरे ॥ सुघड़ सरूप दइआल मुरारे ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ सतु सीगारु भउ अँजनु पाइआ ॥ अँमित नामु तँबोलु मुखि खाइआ ॥ कँगन बसत्र गहने बने सुहावे ॥ धन सभ
 सुख पावै जां पिरु घरि आवै ॥ २ ॥ गुण कामण करि कँतु रीझाइआ ॥ वसि करि लीना गुरि भरमु चुकाइआ ॥ सभ ते ऊचा
 मँदरु मेरा ॥ सभ कामणि तिआगी प्रिउ प्रीतमु मेरा ॥ ३ ॥ प्रगटिआ सूरु जोति उजीआरा ॥ सेज विछाई सरथ अपारा ॥
 नव रँग लालु सेज रावण आइआ ॥ जन नानक पिर धन मिलि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सूही महला ५ ॥ उमकिओ हीउ
 मिलन प्रभ ताई ॥ खोजत रचिओ देखउ प्रिअ जाई ॥ सुनत सदेसरो प्रिअ ग्रिहि सेज विछाई ॥ भ्रमि भ्रमि आइओ तउ नदरि
 न पाई ॥ १ ॥ किन बिधि हीअरो धीरै निमानो ॥ मिलु साजन हउ तुझु कुरबानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एका सेज विछी धन कँता
 ॥ धन सूती पिरु सद जागँता ॥ पीओ मदरो धन मतवँता ॥ धन जागै जे पिरु बोलँता ॥ २ ॥ भई निरासी बहुतु दिन
 लागे ॥ देस दिसँतर मै सगले झागे ॥ खिनु रहनु न पावउ बिनु पग पागे ॥ होइ क्रिपालु प्रभ मिलह सभागे ॥ ३ ॥ भइओ
 क्रिपालु सतसँगि मिलाइआ ॥ बूझी तपति घरहिं पिरु पाइआ ॥ सगल सीगार हुणि मुझहिं सुहाइआ ॥ कहु

नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ ४ ॥ जह देखा तह पिरु है भाई ॥ खोलिहो कपाटु ता मनु ठहराई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥
 ५ ॥ सूही महला ५ ॥ किआ गुण तेरे सारि समूहली मोहि निरगुन के दातारे ॥ बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिँडु
 सभु थारे ॥ १ ॥ लाल रँगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम्ह
 सदा सदा उपकारे ॥ सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ २ ॥ किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ
 बिधि कितु पावउ दरसारे ॥ मिति नही पाईऐ अँतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ॥ ३ ॥ पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै
 सँतरेनारे ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥ ४ ॥ ६ ॥

सूही महला ५ घरु ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सेवा थोरी मागनु बहुता ॥ महलु न पावै कहतो पहुता ॥ १ ॥ जो प्रिअ माने तिन की रीसा ॥ कूड़े मूरख की हाठीसा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ भेख दिखावै सचु न कमावै ॥ कहतो महली निकटि न आवै ॥ २ ॥ अतीतु सदाए माइआ का माता ॥ मनि
 नही प्रीति कहै मुखे राता ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ कुचलु कठोरु कामी मुकतु कीजै ॥ ४ ॥ दरसन देखे
 की वडिआई ॥ तुम्ह सुखदाते पुरख सुभाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ७ ॥ सूही महला ५ ॥ बुरे काम कउ ऊठि
 खलोइआ ॥ नाम की बेला पै पै सोइआ ॥ १ ॥ अउसरु अपना बूझै न इआना ॥ माइआ मोह रँगि लपटाना ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ लोभ लहरि कउ बिगसि फूलि बैठा ॥ साध जना का दरसु न डीठा ॥ २ ॥ कबहू न समझै अगिआनु गवारा ॥
 बहुरि बहुरि लपटिओ जँजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखै नाद करन सुणि भीना ॥ हरि जसु सुनत आलसु मनि कीना ॥ ३ ॥
 द्रिसटि नाही रे पेखत अँधे ॥ छोडि जाहि झूठे सभि धँधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक प्रभ बखस करीजै ॥ करि किरपा
 मोहि साधसँगु दीजै ॥ ४ ॥ तउ किछु पाईऐ जउ होईऐ रेना ॥ जिसहि बुझाए तिसु नामु लैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २ ॥ ८
 ॥ सूही महला ५ ॥ घर महि ठाकुरु नदरि न

आवै ॥ गल महि पाहणु लै लटकावै ॥ १ ॥ भरमे भूला साकतु फिरता ॥ नीरु बिरोलै खपि खपि मरता ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता ॥ ओहु पाहणु लै उस कउ डुबता ॥ २ ॥ गुनहगार लूण हरामी ॥ पाहण नाव न पारगिरामी ॥
 ३ ॥ गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता ॥ जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥ सूही महला ५ ॥ लालनु
 राविआ कवन गती री ॥ सखी बतावहु मुझहि मति री ॥ १ ॥ सूहब सूहब सूहवी ॥ अपने प्रीतम कै रंगि रती ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ पाव मलोवउ सँगि नैन भतीरी ॥ जहा पठावहु जांड तती री ॥ २ ॥ जप तप सँजम देउ जती री ॥ इक निमख मिलावहु
 मोहि प्रानपती री ॥ ३ ॥ माणु ताणु अहँबुधि हती री ॥ सा नानक सोहागवती री ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥ सूही महला ५ ॥ तूँ
 जीवनु तूँ प्रान अधारा ॥ तुझ ही पेखि पेखि मनु साधारा ॥ १ ॥ तूँ साजनु तूँ प्रीतमु मेरा ॥ चितहि न बिसरहि काहू बेरा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ बैखरीदु हउ दासरो तेरा ॥ तूँ भारो ठाकुरु गुणी गहेरा ॥ २ ॥ कोटि दास जा कै दरबारे ॥ निमख निमख वसै
 तिन्ह नाले ॥ ३ ॥ हउ किछु नाही सभु किछु तेरा ॥ ओति पोति नानक सँगि बसेरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥ सूही महला ५ ॥
 सूख महल जा के ऊच दुआरे ॥ ता महि वासहि भगत पिआरे ॥ १ ॥ सहज कथा प्रभ की अति मीठी ॥ विरलै काहू नेत्रहु डीठी
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तह गीत नाद अखारे संगा ॥ ऊहा सँत करहि हरि रंगा ॥ २ ॥ तह मरणु न जीवणु सोगु न हरखा ॥ साच
 नाम की अँमित वरखा ॥ ३ ॥ गुहज कथा इह गुर ते जाणी ॥ नानकु बोलै हरि हरि बाणी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १२ ॥ सूही महला ५
 ॥ जा कै दरसि पाप कोटि उतारे ॥ भेटत सँगि इहु भवजलु तारे ॥ १ ॥ ओइ साजन ओइ मीत पिआरे ॥ जो हम कउ हरि नामु
 चितारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा का सबदु सुनत सुख सारे ॥ जा की टहल जमदूत बिदारे ॥ २ ॥ जा की धीरक इसु मनहि सधारे
 ॥ जा कै सिमरणि मुख उजलारे ॥ ३ ॥ प्रभ के सेवक प्रभि आपि सवारे ॥ सरणि नानक तिन्ह सद बलिहारे ॥ ४ ॥ ७ ॥
 १३ ॥ सूही महला ५ ॥ रहणु न पावहि सुरि नर देवा ॥ ऊठि सिधारे करि मुनि जन सेवा ॥ १ ॥ जीवत पेखे जिन्ही हरि हरि

धिआइआ ॥ साधसँगि तिन्ही दरसनु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बादिसाह साह वापारी मरना ॥ जो दीसै सो कालहि खरना ॥
 ॥ २ ॥ कूडै मोहि लपटि लपटाना ॥ छोडि चलिआ ता फिरि पछुताना ॥ ३ ॥ क्रिपा निधान नानक कउ करहु दाति ॥
 नामु तेरा जपी दिनु राति ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ सूही महला ५ ॥ घट घट अँतरि तुमहि बसारे ॥ सगल समग्री सूति तुमारे ॥
 ॥ १ ॥ तूँ प्रीतम तूँ प्रान अधारे ॥ तुम ही पेखि पेखि मनु बिगसारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जोनि भ्रमि भ्रमि भ्रमि हारे ॥
 ओट गही अब साध सँगारे ॥ २ ॥ अगम अगोचरु अलख अपारे ॥ नानकु सिमरै दिनु रैनारे ॥ ३ ॥ ९ ॥ १५ ॥ सूही
 महला ५ ॥ कवन काज माइआ वडिआई ॥ जा कउ बिनसत बार न काई ॥ १ ॥ इहु सुपना सोवत नही जानै ॥ अचेत
 बिवसथा महि लपटानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा मोहि मोहिओ गावारा ॥ पेखत पेखत ऊठि सिधारा ॥ २ ॥ ऊचते ऊचता
 का दरबारा ॥ कई जँत बिनाहि उपारा ॥ ३ ॥ दूसर होआ ना को होई ॥ जपि नानक प्रभ एको सोई ॥ ४ ॥ १० ॥ १६
 ॥ सूही महला ५ ॥ सिमरि सिमरि ता कउ हउ जीवा ॥ चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा ॥ १ ॥ सो हरि मेश अँतरजामी ॥
 भगत जना कै सँगि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि अँमित नामु धिआवा ॥ आठ पहर तेरे गुण गावा ॥ २ ॥ पेखि
 पेखि लीला मनि आनँदा ॥ गुण अपार प्रभ परमानँदा ॥ ३ ॥ जा कै सिमरनि कछु भउ न बिआपै ॥ सदा सदा नानक हरि
 जापै ॥ ४ ॥ ११ ॥ १७ ॥ सूही महला ५ ॥ गुर कै बचनि रिदैं धिआनु धारी ॥ रसना जापु जपउ बनवारी ॥ १ ॥
 सफल मूरति दरसन बलिहारी ॥ चरण कमल मन प्राण अधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसँगि जनम मरण निवारी ॥ अँमित
 कथा सुणि कवन अधारी ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मोह तजारी ॥ द्रिडु नाम दानु इसनानु सुचारी ॥ ३ ॥ कहु नानक इहु
 ततु बीचारी ॥ राम नाम जपि पारि उतारी ॥ ४ ॥ १२ ॥ १८ ॥ सूही महला ५ ॥ लोभि मोहि मगन अपराधी ॥
 करणहार की सेव न साधी ॥ १ ॥ पतित पावन प्रभ नाम तुमारे ॥ राखि लेहु मोहि निरगुनीआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूँ

दाता प्रभ अंतरजामी ॥ काची देह मानुख अभिमानी ॥ २ ॥ सुआद बाद ईरख मद माइआ ॥ इन सँगि लागि रतन जनमु
 गवाइआ ॥ ३ ॥ दुख भँजन जगजीवन हरि राइआ ॥ सगल तिआगि नानकु सरणाइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ १९ ॥ सूही
 महला ५ ॥ पेखत चाखत कहीअत अँधा सुनीअत सुनीऐे नाही ॥ निकटि वसतु कउ जाणै दूरे पापी पाप कमाही ॥ १ ॥ सो
 किछु करि जितु छुटहि परानी ॥ हरि हरि नामु जपि अँमित बानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोर महल सदा रँगि राता ॥ सँगि तुम्हारे
 कछु न जाता ॥ २ ॥ रखहि पोचारि माटी का भांडा ॥ अति कुचील मिलै जम डांडा ॥ ३ ॥ काम क्रोधि लोभि मोहि बाधा
 ॥ महा गरत महि निघरत जाता ॥ ४ ॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ डूबत पाहन प्रभ मेरे लीजै ॥ ५ ॥ १४ ॥ २० ॥
 सूही महला ५ ॥ जीवत मरै बूझै प्रभु सोइ ॥ तिसु जन करमि प्रापति होइ ॥ १ ॥ सुणि साजन इउ दुतरु तरीऐे ॥ मिलि
 साधु हरि नामु उचरीऐे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक बिना दूजा नहीं जानै ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु पछानै ॥ २ ॥ जो किछु करै
 सोई भल मानै ॥ आदि अँत की कीमति जानै ॥ ३ ॥ कहु नानक तिसु जन बलिहारी ॥ जा कै हिरदै वसहि मुरारी ॥ ४ ॥
 १५ ॥ २१ ॥ सूही महला ५ ॥ गुरु परमेसरु करणैहारु ॥ सगल सिंसटि कउ दे आधारु ॥ १ ॥ गुर के चरण कमल मन
 धिआइ ॥ दूखु दरदु इसु तन ते जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भवजलि डूबत सतिगुरु काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ २ ॥
 गुर की सेवा करहु दिनु राति ॥ सूख सहज मनि आवै सांति ॥ ३ ॥ सतिगुर की रेणु वडभागी पावै ॥ नानक गुर कउ सद
 बलि जावै ॥ ४ ॥ १६ ॥ २२ ॥ सूही महला ५ ॥ गुर अपुने ऊपरि बलि जाईऐे ॥ आठ पहर हरि हरि जसु गाईऐे ॥ १ ॥
 सिमरउ सो प्रभु अपना सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल सिउ लागी प्रीति ॥ साची पूरन
 निरमल रीति ॥ २ ॥ सँत प्रसादि वसै मन माही ॥ जनम जनम के किलविख जाही ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला
 ॥ नानकु मागै सँत खाला ॥ ४ ॥ १७ ॥ २३ ॥ सूही महला ५ ॥ दरसनु देखि जीवा गुर तेरा ॥ पूरन करमु

होइ प्रभ मेरा ॥ १ ॥ इह बेनँती सुणि प्रभ मेरे ॥ देहि नामु करि अपने चरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपनी सरणि राखु प्रभ दाते ॥
 गुर प्रसादि किनै विरलै जाते ॥ २ ॥ सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता ॥ चरण कमल वसहि मेरे चीता ॥ ३ ॥ नानकु एक करै
 अरदासि ॥ विसरु नाही पूरन गुणतासि ॥ ४ ॥ १८ ॥ २४ ॥ सूही महला ५ ॥ मीतु साजनु सुत बंधप भाई ॥ जत कत
 पेखउ हरि सँगि सहाई ॥ १ ॥ जति मेरी पति मेरी धनु हरि नामु ॥ सूख सहज आनँद बिसराम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहम
 जपि पहिरि सनाह ॥ कोटि आवध तिसु बेधत नाहि ॥ २ ॥ हरि चरन सरण गड़ कोट हमारै ॥ कालु कँटकु जमु तिसु न
 बिदारै ॥ ३ ॥ नानक दास सदा बलिहारी ॥ सेवक सँत राजा राम मुरारी ॥ ४ ॥ १९ ॥ २५ ॥ सूही महला ५ ॥ गुण
 गोपाल प्रभ के नित गाहा ॥ अनद बिनोद मँगल सुख ताहा ॥ १ ॥ चलु सखीए प्रभु रावण जाहा ॥ साध जना की चरणी
 पाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि बेनती जन धुरि बाछाहा ॥ जनम जनम के किलविख लाहां ॥ २ ॥ मनु तनु प्राण जीउ
 अरपाहा ॥ हरि सिमरि सिमरि मानु मोहु कटाहां ॥ ३ ॥ दीन दइआल करहु उतसाहा ॥ नानक दास हरि सरणि समाहा ॥
 ४ ॥ २० ॥ २६ ॥ सूही महला ५ ॥ बैकुँठ नगरु जहां सँत वासा ॥ प्रभ चरण कमल रिद माहि निवासा ॥ १ ॥ सुणि मन
 तन तुझु सुखु दिखलावउ ॥ हरि अनिक बिँजन तुझु भोग भुँचावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँमित नामु भुँचु मन माही ॥ अचरज
 साद ता के बरने न जाही ॥ २ ॥ लोभु मूआ त्रिसना बुझिं थाकी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥ ३ ॥ जनम जनम के
 भै मोह निवारे ॥ नानक दास प्रभ किरपा धारे ॥ ४ ॥ २१ ॥ २७ ॥ सूही महला ५ ॥ अनिक बींग दास के परहरिआ ॥
 करि किरपा प्रभि अपना करिआ ॥ १ ॥ तुमहि छडाइ लीओ जनु अपना ॥ उरझि परिओ जालु जगु सुपना ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ परबत दोख महा बिकराला ॥ खिन महि दूरि कीए दइआला ॥ २ ॥ सोग रोग बिपति अति भारी ॥ दूरि भई जपि नामु
 मुरारी ॥ ३ ॥ द्रिसटि धारि लीनो लड़ि लाइ ॥ हरि चरण गहे नानक सरणाइ ॥ ४ ॥ २२ ॥ २८ ॥ सूही महला ५ ॥ दीनु

छडाइ दुनी जो लाए ॥ दुही सराई खुनामी कहाए ॥ १ ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥ आपणी कुदरति आपे जाणु ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ सचा धरमु पुँनु भला कराए ॥ दिन कै तोसै दुनी न जाए ॥ २ ॥ सरब निरँतरि एको जागै ॥ जितु जितु लाइआ
 तितु तितु को लागै ॥ ३ ॥ अगम अगोचरु सचु साहिबु मेरा ॥ नानकु बोलै बोलाइआ तेरा ॥ ४ ॥ २३ ॥ २९ ॥ सूही
 महला ५ ॥ प्रातहकालि हरि नामु उचारी ॥ ईत ऊत की ओट सवारी ॥ १ ॥ सदा सदा जपीऐ हरि नाम ॥ पूरन होवहि मन
 के काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु अबिनासी रैणि दिनु गाउ ॥ जीवत मरत निहचलु पावहि थाउ ॥ २ ॥ सो साहु सेवि जितु
 तोटि न आवै ॥ खात खरचत सुखि अनदि विहावै ॥ ३ ॥ जगजीवन पुरखु साधसँगि पाइआ ॥ गुर प्रसादि नानक नामु
 धिआइआ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३० ॥ सूही महला ५ ॥ गुर पूरे जब भए दइआल ॥ दुख बिनसे पूरन भई घाल ॥ १ ॥ पेखि
 पेखि जीवा दरसु तुमाहरा ॥ चरण कमल जाई बलिहारा ॥ तुझ बिनु ठाकुर कवनु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसँगति सिउ
 प्रीति बणि आई ॥ पूरब करम लिखत धुरि पाई ॥ २ ॥ जपि हरि हरि नामु अचरजु परताप ॥ जालि न साकहि तीने ताप ॥
 ३ ॥ निमख न बिसरहि हरि चरण तुम्हारे ॥ नानकु मागै दानु पिआरे ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३१ ॥ सूही महला ५ ॥ से सँजोग
 करहु मेरे पिआरे ॥ जितु रसना हरि नामु उचारे ॥ १ ॥ सुणि बेनती प्रभ दीन दइआला ॥ साध गावहि गुण सदा रसाला ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ जीवन रूपु सिमरणु प्रभ तेरा ॥ जिसु क्रिपा करहि बसहि तिसु नेरा ॥ २ ॥ जन की भूख तेरा नामु अहारु
 ॥ तूँ दाता प्रभ देवणहारु ॥ ३ ॥ राम रमत सँतन सुखु माना ॥ नानक देवनहार सुजाना ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३२ ॥ सूही
 महला ५ ॥ बहती जात कदे द्रिसटि न धारत ॥ मिथिआ मोह बँधहि नित पारच ॥ १ ॥ माधवे भजु दिन नित रैणी ॥
 जनमु पदारथु जीति हरि सरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करत बिकार दोऊ कर झारत ॥ राम रतनु रिद तिलु नही धारत ॥ २ ॥
 भरण पोखण सँगि अउध बिहाणी ॥ जै जगदीस की गति नही जाणी ॥ ३ ॥ सरणि समरथ अगोचर सुआमी ॥ उधरु

नानक प्रभ अंतरजामी ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३३ ॥ सूही महला ५ ॥ साधसंगि तरै भै सागरु ॥ हरि हरि नामु सिमरि रतनागरु
 ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि जीवा नाराइण ॥ दूख रोग सोग सभि बिनसे गुर पूरे मिलि पाप तजाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवन
 पदवी हरि का नाउ ॥ मनु तनु निरमलु साचु सुआउ ॥ २ ॥ आठ पहर प्रारब्रहमु धिआईरे ॥ पूरबि लिखतु होइ ता पाईरे ॥
 ३ ॥ सरणि पर जपि दीन दइआला ॥ नानकु जाचै संत खाला ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३४ ॥ सूही महला ५ ॥ घर का काजु न
 जाणी रूडा ॥ झूठै धँधै रचिओ मूडा ॥ १ ॥ जितु तूँ लावहि तितु तितु लगना ॥ जा तूँ देहि तेरा नाउ जपना ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ हरि के दास हरि सेती राते ॥ राम रसाइणि अनदिनु माते ॥ २ ॥ बाह पकरि प्रभि आपे काढे ॥ जनम जनम के टूटे
 गाढे ॥ ३ ॥ उधरु सुआमी प्रभ किरपा धारे ॥ नानक दास हरि सरणि दुआरे ॥ ४ ॥ २९ ॥ ३५ ॥ सूही महला ५ ॥ संत
 प्रसादि निहचलु घरु पाइआ ॥ सब सूख फिरि नही डोलाइआ ॥ १ ॥ गुरु धिआइ हरि चरन मनि चीनेह ॥ ता ते करतै
 असथिरु कीन्हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी ॥ ता ते काटी जम की फासी ॥ २ ॥ करि किरपा लीने लडि
 लाए ॥ सदा अनदु नानक गुण गाए ॥ ३ ॥ ३० ॥ ३६ ॥ सूही महला ५ ॥ अँमित बचन साध की बाणी ॥ जो जो जपै
 तिस की गति होवै हरि हरि नामु नित रसन बखानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कली काल के मिटे कलेसा ॥ एको नामु मन महि
 परवेसा ॥ १ ॥ साधू धूरि मुखि मसतकि लाई ॥ नानक उधरे हरि गुर सरणाई ॥ २ ॥ ३१ ॥ ३७ ॥ सूही महला ५ ॥ घरु ३
 ॥ गोबिंदा गुण गाउ दइआला ॥ दरसन देहु पूरन किरपाला ॥ रहाउ ॥ करि किरपा तुम ही प्रतिपाला ॥ जीउ पिँडु सभु
 तुमरा माला ॥ १ ॥ अँमित नामु चलै जपि नाला ॥ नानकु जाचै संत खाला ॥ २ ॥ ३२ ॥ ३८ ॥ सूही महला ५ ॥
 तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ आपे थँमै सचा सोई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु मेरा आधारु ॥ करण कारण समरथु अपारु ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ सभ रोग मिटावे नवा निरोआ ॥ नानक रखा आपे होआ ॥ २ ॥ ३३ ॥ ३९ ॥ सूही महला ५ ॥ दरसन

कउ लोचै सभु कोई ॥ पूरै भागि परापति होई ॥ रहाउ ॥ सिआम सुँदर तजि नीद किउ आई ॥ महा मोहनी दूता लाई ॥ १ ॥
 प्रेम बिछोहा करत कसाई ॥ निरद्वै जंतु तिसु दइआ न पाई ॥ २ ॥ अनिक जनम बीतीअन भरमाई ॥ घरि वासु न देवै दुतर
 माई ॥ ३ ॥ दिनु रैनि अपना कीआ पाई ॥ किसु दोसु न दीजै किरतु भवाई ॥ ४ ॥ सुणि साजन संत जन भाई ॥ चरण
 सरण नानक गति पाई ॥ ५ ॥ ३४ ॥ ४० ॥

रागु सूही महला ५ वरु ६ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥ कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदु गरीबी
 साधसंगि जितु प्रभ चिति आए ॥ जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए ॥ १ ॥ पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु
 संतोखाए ॥ ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए ॥ २ ॥ नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए ॥ पाट पटँबर
 बिरथिआ जिह रचि लोभाए ॥ ३ ॥ सभु किछु तुम्हरै हाथि प्रभ आपि करे कराए ॥ सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए
 ॥ ४ ॥ १ ॥ ४१ ॥ सूही महला ५ ॥ हरि का संतु परान धन तिस का पनिहारा ॥ भाई मीत सुत सगल ते जीअ हूँ ते पिआरा
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केसा का करि बीजना संत चउरु ढुलावउ ॥ सीसु निहारउ चरण तलि धूरि मुखि लावउ ॥ १ ॥ मिसट
 बचन बेनती करउ दिन की निआई ॥ तजि अभिमानु सरणी परउ हरि गुण निधि पाई ॥ २ ॥ अवलोकन पुनह पुनह करउ जन
 का दरसारु ॥ अँमित बचन मन महि सँचउ बँदउ बार बार ॥ ३ ॥ चितवउ मनि आसा करउ जन का सँगु मागउ ॥ नानक कउ
 प्रभ दइआ करि दास चरणी लागउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४२ ॥ सूही महला ५ ॥ जिनि मोहे ब्रहमँड खँड ताहू महि पाउ ॥ राखि लेहु
 इहु बिखई जीउ देहु अपुना नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाते नाही को सुखी ता कै पाछै जाउ ॥ छोडि जाहि जो सगल कउ फिरि
 फिरि लपटाउ ॥ १ ॥ करहु क्रिपा करुणापते तेरे हरि गुण गाउ ॥ नानक की प्रभ बेनती साध सँगि समाउ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४३ ॥

राग सूही महला ५ वरु ५ पड़ताल १८ शितिगुर प्रसादि ॥

प्रीति प्रीति गुरीआ मोहन लालना ॥ जपि मन गोबिंद एकै अवरु नही को लेखै संत लागु मनहि छाडु दुबिधा की कुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरगुन हरीआ सरगुन धरीआ अनिक कोठरीआ भिँन भिँन भिँन भिन करीआ ॥ विचि मन कोटवरीआ ॥ निज मँदरि पिरीआ ॥ तहा आनद करीआ ॥ नह मरीआ नह जरीआ ॥ १ ॥ किरतनि जुरीआ बहु बिधि फिरीआ पर कउ हिरीआ ॥ बिखना घिरीआ ॥ अब साधू सँगि परीआ ॥ हरि दुआरै खरीआ ॥ दरसनु करीआ ॥ नानक गुर मिरीआ ॥ बहुरि न फिरीआ ॥ २ ॥ १ ॥ ४४ ॥ सूही महला ५ ॥ रासि मँडलु कीनो आखारा ॥ सगलो साजि रखिओ पासारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बिधि रूप रँग आपारा ॥ पेखै खुसी भोग नही हारा ॥ सभि रस लैत बसत निरारा ॥ १ ॥ बरनु चिहनु नाही मुखु न मासारा ॥ कहनु न जाई खेलु तुहारा ॥ नानक रेण संत चरनारा ॥ २ ॥ २ ॥ ४५ ॥ सूही महला ५ ॥ तउ मै आइआ सरनी आइआ ॥ भरोसै आइआ किरपा आइआ ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी मारगु गुरहि पठाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा दुतरु माइआ ॥ जैसे पवनु झुलाइआ ॥ १ ॥ सुनि सुनि ही डराइआ ॥ कररो धमराइआ ॥ २ ॥ गिह अँध कूपाइआ ॥ पावकु सगराइआ ॥ ३ ॥ गही ओट साधाइआ ॥ नानक हरि धिआइआ ॥ अब मै पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४६ ॥

राग सूही महला ५ वरु ६ १८ शितिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर पासि बेनँतीआ मिलै नामु आधारा ॥ तुठा सचा पातिसाहु तापु गइआ संसारा ॥ १ ॥ भगता की टेक तूँ संता की ओट तूँ सचा सिरजनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु तेरी सामगरी सचु तेरा दरबारा ॥ सचु तेरे खाजीनिआ सचु तेरा पासारा ॥ २ ॥ तेरा रूपु अगँमु है अनूपु तेरा दरसारा ॥ हउ कुरबाणी तेरिआ सेवला जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥ ३ ॥ सभे इच्छा पूरीआ जा

पाइआ अगम अपारा ॥ गुरु नानकु मिलिआ पारब्रहमु तेरिआ चरणा कउ बलिहारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४७ ॥

रागु सूही महला ५ वरु ७ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिसनो होहि दइआला ॥ साई भगति जो तुधु भावै तूँ सरब जीआ प्रतिपाला ॥ १ ॥ मेरे राम राइ
सँता टेक तुम्हारी ॥ जो तुधु भावे सो परवाणु मनि तनि तूहै अधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूँ दइआलु क्रिपालु क्रिपा निधि मनसा
पूरणहारा ॥ भगत तेरे सभि प्राणपति प्रीतम तूँ भगतन का पिआरा ॥ २ ॥ तू अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी
भाते ॥ इह अरदासि हमारी सुआमी विसरु नाही सुखदाते ॥ ३ ॥ दिनु रैणि सासि सासि गुण गावा जे सुआमी तुधु भावा
॥ नामु तेरा सुखु नानकु मागै साहिब तुठै पावा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४८ ॥ सूही महला ५ ॥ विसरहि नाही जितु तू कबहू सो थानु
तेरा केहा ॥ आठ पहर जितु तुधु धिआई निरमल होवै देहा ॥ १ ॥ मेरे राम हउ सो थानु भालण आइआ ॥ खोजत खोजत
भइआ साध सँगु तिन्ह सरणाई पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे हारे इकु तिलु नही कीमति पाई ॥ साधिक सिध
फिरहि बिललाते ते भी मोहे माई ॥ २ ॥ दस अउतार राजे होइ वरते महादेव अउधूता ॥ तिन्ह भी अँतु न पाइओ तेरा लाइ
थके बिभूता ॥ ३ ॥ सहज सुख आनँद नाम रस हरि सँती मँगलु गाइआ ॥ सफल दरसनु भेटिओ गुर नानक ता मनि तनि
हरि हरि धिआइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४९ ॥ सूही महला ५ ॥ करम धरम पारखँड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै ॥ निरबाण
कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै ॥ १ ॥ सँतहु सागरु पारि उतरीऐ ॥ जे को बचनु कमावै सँतन का सो
गुर परसादी तरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि तीरथ मजन इसनाना इसु कलि महि मैलु भरीजै ॥ साधसँगि जो हरि गुण गावै
सो निरमलु करि लीजै ॥ २ ॥ बेद कतेब सिम्रिति सभि सासत इन्ह पड़िआ मुकति न होई ॥ एकु अखरु जो गुरमुखि जापै
तिस की निरमल सोई ॥ ३ ॥ खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साइआ ॥ गुरमुखि नामु जपै

उधरै सो कलिं कलिं महि घटि घटि नानक माझा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५० ॥ सूही महला ५ ॥ जो किछु करै सोई प्रभ मानहि ओइ
 राम नाम रँगि राते ॥ तिन्ह की सोभा सभनी थाई जिन्ह प्रभ के चरण पराते ॥ १ ॥ मेरे राम हरि सँता जेवडु न कोई ॥
 भगता बणिं आई प्रभ अपने सिउ जलिं थलिं महीअलिं सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि अप्राधी सँतसँगि उधरै जमु ता कै नेडि न
 आवै ॥ जनम जनम का बिछुडिआ होवै तिन्ह हरि सिउ आणि मिलावै ॥ २ ॥ माइआ मोह भरमु भउ काटै सँत सरणिं जो
 आवै ॥ जेहा मनोरथु करि आराधे सो सँतन ते पावै ॥ ३ ॥ जन की महिमा केतक बरनउ जो प्रभ अपने भाणे ॥ कहु नानक
 जिन सतिगुरु भेटिआ से सभ ते भए निकाणे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५१ ॥ सूही महला ५ ॥ महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पर तेरी
 सरणाई ॥ तेरा माणु ताणु रिद अँतरि होर दूजी आस चुकाई ॥ १ ॥ मेरे राम राइ तुधु चिति आइए उबरे ॥ तेरी टेक भरवासा
 तुम्हरा जपिं नामु तुम्हरा उधरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँध कूप ते काठि लीए तुम्ह आपि भए किरपाला ॥ सारिं समाहलिं सरब
 सुख दीए आपि करे प्रतिपाला ॥ २ ॥ आपणी नदरिं करे परमेसरु बँधन काटि छडाए ॥ आपणी भगति प्रभिं आपि कराई
 आपे सेवा लाए ॥ ३ ॥ भरमु गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगर विसूरा ॥ नानक दइआ करी सुखदातै भेटिआ सतिगुरु
 पूरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५२ ॥ सूही महला ५ ॥ जब कछु न सीओ तब किआ करता कवन कर्म करिं आइआ ॥ अपना खेलु
 आपि करिं देखै ठाकुरिं रचनु रचाइआ ॥ १ ॥ मेरे राम राइ मुझ ते कछु न होई ॥ आपे करता आपि कराए सरब निरँतरिं सोई
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गणती गणी न छूटै कतहू काची देह इआणी ॥ क्रिपा करहु प्रभ करणैहारै तेरी बखस निराली ॥ २ ॥
 जीअ जँत सभ तेरे कीते घटि घटि तुही धिआईए ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि कुदरति कीम न पाईए ॥ ३ ॥ निरगुणु
 मुगधु अजाणु अगिआनी कर्म धरम नही जाणा ॥ दइआ करहु नानकु गुण गावै मिठा लगै तेरा भाणा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५३ ॥
 सूही महला ५ ॥ भागठडे हरि सँत तुम्हारे जिन्ह घरिं धनु हरिं नामा ॥ परवाणु गणी सेई इह आए सफल तिना के

कामा ॥ १ ॥ मेरे राम हरि जन कै हउ बलि जाई ॥ केसा का करि चवरु दुलावा चरण धूड़ि मुखि लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥ जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ २ ॥ सचा
 अमरु सची पातिसाही सचे सेती राते ॥ सचा सुखु सची वडिआई जिस के से तिनि जाते ॥ ३ ॥ पखा फेरी पाणी ढोवा
 हरि जन कै पीसणु पीसि कमावा ॥ नानक की प्रभ पासि बेनँती तेरे जन देखणु पावा ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५४ ॥ सूही महला ५
 ॥ पारब्रहम परमेसर सतिगुर आपे करणैहारा ॥ चरण धूड़ि तेरी सेवकु मागै तेरे दरसन कउ बलिहारा ॥ १ ॥ मेरे राम राइ
 जिउ राखहि तिउ रहीऐ ॥ तुधु भावै ता नामु जपावहि सुखु तेरा दिता लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति तेरी
 सेवा जिसु तूँ आपि कराइहि ॥ तहा बैकुँठु जह कीरतनु तेरा तूँ आपे सरधा लाइहि ॥ २ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि नामु जीवा
 तनु मनु होइ निहाला ॥ चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा मेरे सतिगुर दीन दइआला ॥ ३ ॥ कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी
 जितु तुमरै दुआरै आइआ ॥ नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला सतिगुरु पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५५ ॥ सूही महला ५ ॥
 तुधु चिति आए महा अनँदा जिसु विसरहि सो मरि जाए ॥ दइआलु होवहि जिसु ऊपरि करते सो तुधु सदा धिआए ॥ १ ॥
 मेरे साहिब तूँ मै माणु निमाणी ॥ अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण धूड़ि
 तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बलि जाई ॥ अँमित बचन रिदै उरि धारी तउ किरपा ते सँगु पाई ॥ २ ॥ अँतर की गति
 तुधु पहि सारी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ जिस नो लाइ लैहि सो लागै भगतु तुहारा सोई ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि मागउ इकु
 दाना साहिबि तुठै पावा ॥ सासि सासि नानकु आराधे आठ पहर गुण गावा ॥ ४ ॥ ९ ॥ ५६ ॥ सूही महला ५ ॥ जिस
 के सिर ऊपरि तूँ सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥ बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै ॥ १ ॥ मेरे राम राइ तूँ
 संता का संत तेरे ॥ तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नहीं आवै नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तेरै रँगि राते सुआमी तिन्ह का

जनम मरण दुखु नासा ॥ तेरी बखस न मैटै कोई सतिगुर का दिलासा ॥ २ ॥ नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर
 आराधहि ॥ तेरी सरणि तैरै भरवासै पँच दुसट लै साधहि ॥ ३ ॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी ॥
 सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥ ४ ॥ १० ॥ ५७ ॥ सूही महला ५ ॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइआ
 राखहु राखनहारे ॥ जितु तू लावहि तितु हम लागह किआ एहि जँत विचारे ॥ १ ॥ मेरे राम जी तूँ प्रभ अँतरजामी ॥ करि
 किरपा गुरदेव दइआला गुण गावा नित सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर प्रभु अपना धिआईये गुर प्रसादि भउ तरीये ॥ आपु
 तिआगि होईये सभ रेणा जीवतिआ इउ मरीये ॥ २ ॥ सफल जनमु तिस का जग भीतरि साधसँगि नाउ जापे ॥ सगल मनोरथ
 तिस के पूरन जिसु दइआ करे प्रभु आपे ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ सुआमी तेरी सरणि दइआला ॥ करि किरपा अपना
 नामु दीजै नानक साध रवाला ॥ ४ ॥ ११ ॥ ५८ ॥

रागु सूही असटपदीआ महला १ वरु १ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

सभि अवगण मै गुणु नही कोई ॥ किउ करि कँत मिलावा होई ॥ १ ॥ ना मै रूपु न बँके नैणा ॥ ना कुल ढँगु न मीठे बैणा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ सहजिं सीगार कामणि करि आवै ॥ ता सोहागणि जा कँतै भावै ॥ २ ॥ ना तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ अँति न
 साहिबु सिमरिआ जाई ॥ ३ ॥ सुरति मति नाही चतुराई ॥ करि किरपा प्रभ लावहु पाई ॥ ४ ॥ खरी सिआणी कँत न भाणी
 ॥ माइआ लागी भरमि भुलाणी ॥ ५ ॥ हउमै जाई ता कँत समाई ॥ तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई ॥ ६ ॥ अनिक जनम
 बिछुरत दुखु पाइआ ॥ करु गहि लेहु प्रीतम प्रभ राइआ ॥ ७ ॥ भणति नानकु सहु है भी होसी ॥ जै भावै पिआरा तै रावेसी ॥
 ८ ॥ १ ॥

सूही महला १ घरु ९ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

कचा रँगु कसुँभ का थोड़ड़िआ दिन चारि जीउ ॥ विणु नावै भ्रमि भुलीआ ठगि मुठी कूड़िआरि जीउ ॥ सचे सेती रतिआ जनमु
न दूजी वार जीउ ॥ १ ॥ रँगो का किआ रँगीऐ जो रते रँगु लाइ जीउ ॥ रँगण वाला सेविऐ सचे सिउ चितु लाइ जीउ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ चारे कुँडा जे भवहि बिनु भागा धनु नाहि जीउ ॥ अवगणि मुठी जे फिरहि बधिक थाइ न पाहि जीउ ॥ गुरि राखे से
उबरे सबदि रते मन माहि जीउ ॥ २ ॥ चिते जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥ तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर
जीउ ॥ मूलु न बूझहि आपणा से पसूआ से ढोर जीउ ॥ ३ ॥ नित नित खुसीआ मनु करे नित नित मँगै सुख जीउ ॥ करता
चिति न आवई फिरि फिरि लगहि दुख जीउ ॥ सुख दुख दाता मनि वसै तितु तनि कैसी भुख जीउ ॥ ४ ॥ बाकी वाला
तलबीऐ सिरि मारे जँदारु जीउ ॥ लेखा मँगै देवणा पुछै करि बीचारु जीउ ॥ सचे की लिव उबरै बखसे बखसणहारु जीउ ॥
५ ॥ अन को कीजै मितड़ा खाकु रलै मरि जाइ जीउ ॥ बहु रँग देखि भुलाइआ भुलि भुलि आवै जाइ जीउ ॥ नदरि प्रभू ते
छुटीऐ नदरी मेलि मिलाइ जीउ ॥ ६ ॥ गाफल गिआन विहूणिआ गुर बिनु गिआनु न भालि जीउ ॥ खिँचोताणि विगुचीऐ
बुरा भला दुइ नालि जीउ ॥ बिनु सबदै भै रतिआ सभ जोही जमकालि जीउ ॥ ७ ॥ जिनि करि कारणु धारिआ सभसै देइ
आधारु जीउ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ सदा सदा दातारु जीउ ॥ नानक नामु न वीसरै निधारा आधारु जीउ ॥ ८ ॥ १ ॥
२ ॥

सूही महला १ काफी घरु १० १४ सतिगुर प्रसादि ॥

माणस जनमु दुलँभु गुरमुखि पाइआ ॥ मनु तनु होइ चुलँभु जे सतिगुर भाइआ ॥ १ ॥ चलै जनमु सवारि वखरु सचु लै ॥
पति पाए दरबारि सतिगुर सबदि भै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि सचु सलाहि साचे मनि भाइआ ॥ लालि रता मनु मानिआ
गुरु पूरा पाइआ ॥ २ ॥ हउ

जीवा गुण सारि अंतरि तू वसै ॥ तूँ वसहि मन माहि सहजे रसि रसै ॥ ३ ॥ मूरख मन समझाइ आखउ केतड़ा ॥ गुरमुखि
 हरि गुण गाइ रँगि रँगेतड़ा ॥ ४ ॥ नित नित रिदै समालि प्रीतमु आपणा ॥ जे चलहि गुण नालि नाही दुखु संतापणा ॥ ५
 ॥ मनमुख भरमि भुलाणा ना तिसु रँगु है ॥ मरसी होइ विडाणा मनि तनि भँगु है ॥ ६ ॥ गुर की कार कमाइ लाहा घरि
 आणिआ ॥ गुरबाणी निरबाणु सबदि पछाणिआ ॥ ७ ॥ इक नानक की अरदासि जे तुधु भावसी ॥ मै दीजै नाम निवासु
 हरि गुण गावसी ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ सूही महला १ ॥ जिउ आरणि लोहा पाइ भँनि घड़ाईये ॥ तिउ साकतु जोनी पाइ भवै
 भवाईये ॥ १ ॥ बिनु बूझे सभु दुखु दुखु कमावणा ॥ हउमै आवै जाइ भरमि भुलावणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूँ गुरमुखि
 रखणहारु हरि नामु धिआईये ॥ मेलहि तुझहि रजाइ सबदु कमाईये ॥ २ ॥ तूँ करि करि वेखहि आपि देहि सु पाईये ॥ तु
 देखहि थापि उथापि दरि बीनाईये ॥ ३ ॥ देही होवगि खाकु पवणु उडाईये ॥ इहु किथै घरु अउताकु महलु न पाईये ॥ ४ ॥
 दिहु दीवी अँध घोरु घबु मुहाईये ॥ गरबि मुसै घरु चोरु किसु रूआईये ॥ ५ ॥ गुरमुखि चोरु न लागि हरि नामि जगाईये
 ॥ सबदि निवारी आगि जोति दीपाईये ॥ ६ ॥ लालु रतनु हरि नामु गुरि सुरति बुझाईये ॥ सदा रहै निहकामु जे गुरमति
 पाईये ॥ ७ ॥ राति दिहै हरि नाउ मँनि वसाईये ॥ नानक मेलि मिलाइ जे तुधु भाईये ॥ ८ ॥ २ ॥ ४ ॥ सूही महला १ ॥
 मनहु न नामु विसारि अहिनि सिसि धिआईये ॥ जिउ राखहि किरपा धारि तिवै सुखु पाईये ॥ १ ॥ मै अँधुले हरि नामु लकुटी
 टोहणी ॥ रहाउ साहिब की टेक न मोहै मोहणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ ॥ अंतरि बाहरि भालि
 सबदि निहालिआ ॥ २ ॥ सेवी सतिगुर भाइ नामु निरँजना ॥ तुधु भावै तिवै रजाइ भरमु भउ भँजना ॥ ३ ॥ जनमत ही
 दुखु लागै मरणा आइ कै ॥ जनमु मरणु परवाणु हरि गुण गाइ कै ॥ ४ ॥ हउ नाही तू होवहि तुध ही साजिआ ॥ आपे थापि
 उथापि सबदि निवाजिआ ॥ ५ ॥ देही भसम रुलाइ न जापी कह

गइआ ॥ आपे रहिआ समाइ सो विसमादु भइआ ॥ ६ ॥ तुँ नाही प्रभ दूरि जाणहि सभ तू है ॥ गुरमुखिं वेखिं हदूरि
अंतरि भी तू है ॥ ७ ॥ मै दीजै नाम निवासु सांति होइ ॥ गुण गावै नानक दासु सतिगुरु मति देइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ९ ॥

रागु सूही महला ३ घरु १ असटपदीआ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै ॥ कउडी
बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै ॥ गुरमुखिं होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै ॥ १ ॥ बलिहारी गुर अपणे
विटहु जिनि साचे सिउ लिव लाई ॥ सबदु चीनिह आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखिं
गावै गुरमुखिं बूझै गुरमुखिं सबदु बीचारे ॥ जीउ पिँडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखिं कारज सवारे ॥ मनमुखिं अँधा अँधु
कमावै बिखु खटे संसारे ॥ माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥ २ ॥ सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै
सतिगुर भाए ॥ साचा सबदु सिफति है साची साचा मँनि वसाए ॥ सची बाणी गुरमुखिं आखै हउमै विचहु जाए ॥ आपे
दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाए ॥ ३ ॥ गुरमुखिं घाले गुरमुखिं खटे गुरमुखिं नामु जपाए ॥ सदा अलिपतु साचै
रँगि राता गुर कै सहजि सुभाए ॥ मनमुखु सद ही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाए ॥ जमकालि बाधा त्रिसना दाधा बिनु
गुर कवणु छडाए ॥ ४ ॥ सचा तीरथु जितु सत सरि नावणु गुरमुखिं आपि बुझाए ॥ अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए
तितु नातै मलु जाए ॥ सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाए ॥ सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाए ॥ ५
॥ तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केश दुर्मति कहणु न जाए ॥ हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए ॥ गुर की
साखी सहजे चाखी त्रिसना अगनि बुझाए ॥ गुर कै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिआ समाए ॥ ६ ॥

हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ पिआरे ॥ सची वडिआई गुर ते पाई सचै नाइ पिआरे ॥ एको सचा सभ महि
 वरतै विरला को वीचारे ॥ आपे मेलि लए ता बखसे सची भगति सवारे ॥ ७ ॥ सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई
 जाणै ॥ जँमण मरणा हुकमो वरतै गुरमुखि आपु पछाणै ॥ नामु धिआए ता सतिगुरु भाए जो इछै सो फलु पाए ॥
 नानक तिस दा सभु किछु होवै जिं विचहु आपु गवार ॥ ८ ॥ १ ॥ सूही महला ३ ॥ काइआ कामणि अति सुआलिहउ
 पिरु वसै जिसु नाले ॥ पिर सचे ते सदा सुहागणि गुर का सबदु सम्हाले ॥ हरि की भगत सदा रँगि राता हउमै विचहु
 जाले ॥ १ ॥ वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी ॥ पूरे गुर ते उपजी साचि समाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ अँदरि सभु किछु
 वसै खँड मँडल पाताला ॥ काइआ अँदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥ काइआ कामणि सदा सुहेली
 गुरमुखि नामु समाहला ॥ २ ॥ काइआ अँदरि आपे वसै अलखु न लखिआ जाई ॥ मनमुखु मुगधु बूझै नाही बाहरि
 भालणि जाई ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए सतिगुरि अलखु दिता लखाई ॥ ३ ॥ काइआ अँदरि रतन पदारथ भगति
 भरे भँडारा ॥ इसु काइआ अँदरि नउ खँड प्रिथमी हाट पटण बाजारा ॥ इसु काइआ अँदरि नाम नउ निधि पाईऐ गुर कै
 सबदि वीचारा ॥ ४ ॥ काइआ अँदरि तोलिं तुलावै आपे तोलणहारा ॥ इहु मनु रतन जवाहर माणकु तिस का मोलु
 अफारा ॥ मोलिं कित ही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ गुर बीचारा ॥ ५ ॥ गुरमुखि होवै सु काइआ खोजै होर सभ भरमि
 भुलाई ॥ जिस नो देइ सोई जनु पावै होर किआ को करे चतुराई ॥ काइआ अँदरि भउ भाउ वसै गुर परसादी पाई ॥ ६
 ॥ काइआ अँदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा ॥ सचै आपणा खेलु रचाइआ आवा गउणु पासारा ॥
 पूरै सतिगुरि आपि दिखाइआ सचि नामि निसतारा ॥ ७ ॥ सा काइआ जो सतिगुरु सेवै सचै आपि सवारी ॥ विणु
 नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी ॥ नानक सचु वडिआई पाए जिस नो हरि किरपा धारी ॥ ८ ॥ २ ॥

रागु सूही महला ३ घरु १० १४ सतिगुर प्रसादि ॥

दुनीआ न सालाहि जो मरि वँजसी ॥ लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥ १ ॥ वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥ गुरमुखि सदा
सलाहीरे सचा वेपरवाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरँनि ॥ जम पुरि बधे मारीअहि वेला न लाहँनि
॥ २ ॥ गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगँनि ॥ आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहँनि ॥ ३ ॥ गुर का सबदु
विसारिआ दूजै भाइ रचँनि ॥ तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरँनि ॥ ४ ॥ दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु
करँनि ॥ आपि डुबे कुटँब सिउ सगले कुल डोबँनि ॥ ५ ॥ निँदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करँनि ॥ मुह काले
तिन निँदका नरके घोरि पवँनि ॥ ६ ॥ ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खावणा
कहणा किछु न जाइ ॥ ७ ॥ महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥ ओइ अँमित भरे भरपूर हरि ओना तिलु न तमाइ
॥ ८ ॥ गुणकारी गुण सँघरै अवरु उपदेसेनि ॥ से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लगनि ॥ ९ ॥ देसी रिजकु
सँबाहि जिनि उपाई मेदनी ॥ एको है दातारु सचा आपि धणी ॥ १० ॥ सो सचु तेरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि ॥
आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि ॥ ११ ॥ मनू मैला सचु निरमला किउ करि मिलिआ जाइ ॥ प्रभु मेले ता मिलि
रहै हउमै सबदि जलाइ ॥ १२ ॥ सो सहु सचा वीसरै धिगु जीवणु सँसारि ॥ नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि ॥ १३ ॥
सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उर धारि ॥ मिलिआ होइ न वीछुडै गुर कै हेति पिआरि ॥ १४ ॥ पिरु सालाही
आपणा गुर कै सबदि वीचारि ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावँती नारि ॥ १५ ॥ मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति
कठोर ॥ सपै दुधु पीआईरे अँदरि विसु निकोर ॥ १६ ॥ आपि करे किसु आखीरे आपे बखसणहारु ॥ गुर सबदी मैलु उतरै
ता सचु बणिआ सीगारु ॥ १७ ॥ सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकँनि ॥ ओना सचु न भावई दुख ही

माहि पचौनि ॥ १८ ॥ हउमै मैला जगु फिरै मरि जँमै वारो वार ॥ पइरे किरति कमावणा कोइ न मेटणहार ॥ १९ ॥ सँता
 संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ॥ सच सालाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु ॥ २० ॥ गुर पूरे पूरी मति है
 अहिनिशि नामु धिआइ ॥ हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइ ॥ २१ ॥ गुरु सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइ
 ॥ तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइ ॥ २२ ॥ खिँचोताणि विगुचीरे एकसु सिउ लिव लाइ ॥ हउमै मेरा छडि तू
 ता सचि रहै समाइ ॥ २३ ॥ सतिगुर नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लगौनि ॥ सचि मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसौनि ॥
 २४ ॥ से भाई से सजणा जो सचा सेवौनि ॥ अवगण विकणि पलहरनि गुण की साझ करँन्हि ॥ २५ ॥ गुण की साझ सुख
 ऊपजै सची भगति करेनि ॥ सचु वणँजहि गुर सबद सिउ लाहा नामु लगनि ॥ २६ ॥ सुइना रुपा पाप करि करि सँचीरे
 चलै न चलदिआ नालि ॥ विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जमकालि ॥ २७ ॥ मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु
 सम्हालि ॥ एहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि ॥ २८ ॥ ए मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ ॥ इहु जगतु मोहि
 दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइ ॥ २९ ॥ हरि की कीमति ना पवै हरि जसु लिखणु न जाइ ॥ गुर कै सबदि मनु तनु रुपै
 हरि सिउ रहै समाइ ॥ ३० ॥ सो सहु मेरा रँगुला रँगो सहजि सुभाइ ॥ कामणि रँगु ता चडै जा पिर कै आँकि समाइ ॥ ३१ ॥
 चिरी विछुँने भी मिलनि जो सतिगुरु सेवौनि ॥ अंतरि नव निधि नामु है खानि खरचनि न निखुटई हरि गुण सहजि रवौनि
 ॥ ३२ ॥ ना ओइ जनमहि ना मरहि ना ओइ दुख सहँनि ॥ गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केल करँनि ॥ ३३ ॥ सजण मिले
 न विछुड़हि जि अनदिनु मिले रहँनि ॥ इसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु लहँनि ॥ ३४ ॥ १ ॥ ३ ॥ सूही महला
 ३ ॥ हरि जी सूखमु अगमु है कितु बिधि मिलिआ जाइ ॥ गुर कै सबदि भ्रमु कटीरे अचिंतु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ गुरमुखि
 हरि हरि नामु जपौनि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै मनि हरि गुण सदा रवौनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु सरवरु

मान सरोवरु है वडभागी परख लहँन्हि ॥ सेवक गुरमुखि खोजिआ से हँसुले नामु लहँनि ॥ २ ॥ नाम धिआइन्हि रँग
सिउ गुरमुखि नामि लगँन्हि ॥ धुरि पूरबि होवै लिखिआ गुर भाणा मँनि लएन्हि ॥ ३ ॥ वडभागी घरु खोजिआ पाइआ
नामु निधानु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ प्रभु आतमरामु पछानु ॥ ४ ॥ सभना का प्रभु एकु है दुजा अवरु न कोइ ॥ गुर
परसादी मनि वसै तितु घटि परगटु होइ ॥ ५ ॥ सभु अंतरजामी ब्रहमु है ब्रहमु वसै सभ थाइ ॥ मँदा किस नो आखीरे
सबदि वेखहु लिव लाइ ॥ ६ ॥ बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहि ॥ गुरमुखि एको बुझिआ एकसु माहि समाइ
॥ ७ ॥ सेवा सा प्रभ भावसी जो प्रभु पाए थाइ ॥ जन नानक हरि आराधिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥ ८ ॥ २ ॥ ४ ॥ ९
॥

रागु सूही असटपदीआ महला ४ घरु २ १९ सतिगुर प्रसादि ॥

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥ १ ॥ दरसनु हरि देखण कै ताई ॥ क्रिपा करहि ता
सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥ २ ॥ जो
भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सुख मनाई ॥ ३ ॥ तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥ ४ ॥
परवा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥ ५ ॥ नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ ६ ॥ अखी
काढि धरी चरणा तलि सभ धरती फिरि मत पाई ॥ ७ ॥ जे पासि बहालहि ता तुजहि अराधी जे मारि कढहि भी धिआई ॥
८ ॥ जे लोकु सलाहे ता तेरी उपमा जे निँदै त छोडि न जाई ॥ ९ ॥ जे तुधु वलि रहै ता कोई किहु आखउ तुधु विसरिरे मरि
जाई ॥ १० ॥ वारि वारि जाई गुर ऊपरि पै पैरी संत मनाई ॥ ११ ॥ नानकु विचारा भइआ दिवाना हरि तउ दरसन कै
ताई ॥ १२ ॥ इखडु झागी मीहु वरसै भी गुरु देखण जाई ॥ १३ ॥ समुँदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखु लँघि गुर पहि
जाई ॥ १४ ॥ जिउ प्राणी जल बिनु है मरता तितु सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥ १५ ॥ जिउ धरती सोभ करे जलु

बरसै तितु सिखु गुर मिलि बिगसाई ॥ १६ ॥ सेवक का होइ सेवकु वरता करि करि बिनउ बुलाई ॥ १७ ॥ नानक की
 बेनंती हरि पहि गुर मिलि गुर सुखु पाई ॥ १८ ॥ तू आपे गुरु चेला है आपे गुर विचुदे तुझहि धिआई ॥ १९ ॥ जो तुधु
 सेवहि सो तूहै होवहि तुधु सेवक पैज रखाई ॥ २० ॥ भँडार भरे भगती हरि तेरे जिसु भावै तिसु देवाई ॥ २१ ॥ जिसु तूँ
 देहि सपई जनु पाए होर निहफल सभ चतुराई ॥ २२ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई ॥ २३ ॥
 इकु दानु मँगै नानकु वेचारा हरि दासनि दासु कराई ॥ २४ ॥ जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई ॥ २५
 ॥ गुरमुखि बोलहि सो थाइ पाए मनमुखि किछु थाइ न पाई ॥ २६ ॥ पाला ककरु वरफ वरसै गुरसिखु गुर देखण जाई ॥
 २७ ॥ सभु दिनसु रैणि देखउ गुरु अपुना विचि अखी गुर पैर धराई ॥ २८ ॥ अनेक उपाव करी गुर कारणि गुर भावै सो
 थाइ पाई ॥ २९ ॥ रैणि दिनसु गुर चरण अराधी दइआ करहु मेरे साई ॥ ३० ॥ नानक का जीउ पिँडु गुरू है गुर मिलि
 त्रिपति अघाई ॥ ३१ ॥ नानक का प्रभु पूरि रहिओ है जत कत तत गोसाई ॥ ३२ ॥ १ ॥

राग सूही महला ४ असटपदीआ घरु १० १४ सतिगुर प्रसादि ॥

अंदरि सचा नेहु लाइआ प्रीतम आपणै ॥ तनु मनु होइ निहालु जा गुरु देखा साम्हणे ॥ १ ॥ मै हरि हरि नामु विसाहु ॥
 गुर पूरे ते पाइआ अँम्रितु अगम अथाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ सतिगुरु वेखि विगसिआ हरि नामे लगा पिआरु ॥ किरपा
 करि कै मेलिअनु पाइआ मोख दुआरु ॥ २ ॥ सतिगुरु बिरही नाम का जे मिलै त तनु मनु देउ ॥ जे पूरबि होवै मिलिआ
 ता अँम्रितु सहजि पीरउ ॥ ३ ॥ सुतिआ गुरु सालाहीऐ उठदिआ भी गुरु आलाउ ॥ कोई ऐसा गुरमुखि जे मिलै हउ ता के
 धोवा पाउ ॥ ४ ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु मै प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ हरि पाइआ मिलिआ सहजि सुभाइ
 ॥ ५ ॥ सतिगुरु सागरु गुण नाम का मै तिसु देखण का

चाउ ॥ हउ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरि जाउ ॥ ६ ॥ जिउ मछुली विणु पाणीऐ रहै न कितै उपाइ ॥ तिउ हरि
 बिनु संतु न जीवई बिनु हरि नामै मरि जाइ ॥ ७ ॥ मै सतिगुर सेती पिरहड़ी किउ गुर बिनु जीवा माउ ॥ मै गुरबाणी आधारु
 है गुरबाणी लागि रहाउ ॥ ८ ॥ हरि हरि नामु रतँनु है गुरु तुठा देवै माइ ॥ मै धर सचे नाम की हरि नामि रहा लिव लाइ ॥
 ९ ॥ गुर गिआनु पदारथु नामु है हरि नामो देइ द्रिडाइ ॥ जिसु परापति सो लहै गुर चरणी लागै आइ ॥ १० ॥ अकथ
 कहाणी प्रेम की को प्रीतमु आखै आइ ॥ तिसु देवा मनु आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥ ११ ॥ सजणु मेरा एकु तूँ करता
 पुरखु सुजाणु ॥ सतिगुरि मीति मिलाइआ मै सदा सदा तेरा ताणु ॥ १२ ॥ सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै ना जाइ ॥
 ओहु अबिनासी पुरखु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ १३ ॥ राम नाम धनु सँचिआ साबतु पूँजी रासि ॥ नानक दरगह मँनिआ
 गुर पूरे साबासि ॥ १४ ॥ १ ॥ २ ॥ ११ ॥

रागु सूही असटपदीआ महला ५ घरु १ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

उरझि रहिओ बिखिआ कै सँगा ॥ मनहि बिआपत अनिक तरँगा ॥ १ ॥ मेरे मन अगम अगोचर ॥ कत पाईऐ पूरन
 परमेसर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह मगन महि रहिआ बिआपे ॥ अति त्रिसना कबहू नही ध्रापे ॥ २ ॥ बसइ करोधु सरीरि
 चँडारा ॥ अगिआनि न सूझै महा गुबारा ॥ ३ ॥ भ्रमत बिआपत जरे किवारा ॥ जाणु न पाईऐ प्रभ दरबारा ॥ ४ ॥ आस
 अँदेसा बँधि पराना ॥ महलु न पावै फिरत बिगाना ॥ ५ ॥ सगल बिआधि कै वसि करि दीना ॥ फिरत पिआस जिउ जल
 बिनु मीना ॥ ६ ॥ कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ एक आस ठाकुर प्रभ तोरी ॥ ७ ॥ करउ बेनती संतन पासे ॥ मेलि
 लैहु नानक अरदासे ॥ ८ ॥ भइओ क्रिपालु साधसँगु पाइआ ॥ नानक त्रिपते पूरा पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥

रागु सूही महला ७ वरु ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मिथन मोह अगनि सोक सागर ॥ करि किरपा उधरु हरि नागर ॥ १ ॥ चरण कमल सरणाइ नराइण ॥ दीना नाथ भगत पराइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथा नाथ भगत भै मेटन ॥ साधसँगि जमदूत न भेटन ॥ २ ॥ जीवन रूप अनूप दइआला ॥ खण गुणा कटीऐ जम जाला ॥ ३ ॥ अँमित नामु रसन नित जापै ॥ रोग रूप माइआ न बिआपै ॥ ४ ॥ जपि गोबिंद सँगी सभि तारे ॥ पोहत नाही पँच बटवारे ॥ ५ ॥ मन बच क्रम प्रभु एकु धिआए ॥ सरब फला सोई जनु पाए ॥ ६ ॥ धारि अनुग्रहु अपना प्रभि कीना ॥ केवल नामु भगति रसु दीना ॥ ७ ॥ आदि मधि अँति प्रभु सोई ॥ नानक तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु सूही महला ७ असटपदीआ वरु ९ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

जिन डिठिआ मनु रहसीऐ किउ पाईऐ तिन्ह सँगु जीउ ॥ सँत सजन मन मित्र से लाइनि प्रभ सिउ रँगु जीउ ॥ तिन्ह सिउ प्रीति न तुटई कबहु न होवै भँगु जीउ ॥ १ ॥ पारब्रहम प्रभ करि दइआ गुण गावा तेरे नित जीउ ॥ आइ मिलहु सँत सजणा नामु जपह मन मित जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखै सुणे न जाणई माइआ मोहिआ अँधु जीउ ॥ काची देहा विणसणी कूडु कमावै धँधु जीउ ॥ नामु धिआवहि से जिणि चले गुर पूरे सनबँधु जीउ ॥ २ ॥ हुकमे जुग महि आइआ चलणु हुकमि सँजोगि जीउ ॥ हुकमे परपँचु पसरिआ हुकमि करे रस भोग जीउ ॥ जिस नो करता विसरै तिसहि विछोड़ा सोगु जीउ ॥ ३ ॥ आपनडे प्रभ भाणिआ दरगह पैधा जाइ जीउ ॥ ऐथै सुखु मुखु उजला इको नामु धिआइ जीउ ॥ आदरु दिता पारब्रहमि गुरु सेविआ सतभाइ जीउ ॥ ४ ॥ थान थनँतरि रचि रहिआ सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ सचु खजाना सँचिआ एकु नामु धनु माल जीउ ॥ मन ते कबहु न वीसरै जा आपे होइ दइआल जीउ ॥ ५ ॥ आवणु जाणा रहि गए मनि वुठा निरँकारु

जीउ ॥ ता का अँतु न पाईऐ ऊचा अगम अपारु जीउ ॥ जिंसु प्रभु अपना विसरै सो मरि जँमै लख वार जीउ ॥ ६ ॥
साचु नेहु तिन प्रीतमा जिन मनि वुठा आपि जीउ ॥ गुण साझी तिन सँगि बसे आठ पहर प्रभ जापि जीउ ॥ रँगि रते
परमेसरै बिनसे सगल सँताप जीउ ॥ ७ ॥ तूँ करता तूँ करणहारु तूहै एकु अनेक जीउ ॥ तू समरथु तू सरब मै तूहै बुधि
बिबेक जीउ ॥ नानक नामु सदा जपी भगत जना की टेक जीउ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सूही महला ७ असटपदीआ घरु १० काफी १८ सितिगुर प्रसादि ॥

जे भुली जे चुकी साई. भी तहिँजी काढीआ ॥ जिन्हा नेहु दूजाणे लगा झूरि मरहु से वाढीआ ॥ १ ॥ हउ ना छोडउ कँत
पासरा ॥ सदा रँगीला लालु पिआरा एहु महिँजा आसरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सजणु तूहै सैणु तू मै तुझ उपरि बहु माणीआ ॥
जा तू अँदरि ता सुखे तूँ निमाणी माणीआ ॥ २ ॥ जे तू तुठा क्रिपा निधान ना दूजा वेखालि ॥ एहा पाई मू दातड़ी नित
हिरदै रखा समालि ॥ ३ ॥ पाव जुलाई पँध तउ नैणी दरसु दिखालि ॥ स्रवणी सुणी कहाणीआ जे गुरु थीवै किरपालि ॥
४ ॥ किती लख करोड़ि पिरीऐ रोम न पुजनि तेरिआ ॥ तू साही हू साहु हउ कहि न सका गुण तेरिआ ॥ ५ ॥ सहीआ
तऊ असँख मँजहु हभि वधाणीआ ॥ हिक भोरी नदरि निहालि देहि दरसु रँगु माणीआ ॥ ६ ॥ जै डिठै मनु धीरीऐ
किलविख वँजनिह दूरे ॥ सो किउ विसरै माउ मै जो रहिआ भरपूरे ॥ ७ ॥ होइ निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइ
॥ पूरबि लिखिआ पाइआ नानक सँत सहाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ सूही महला ७ ॥ सिमिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ
॥ नाम बिना सभि कूडु गालही होछीआ ॥ १ ॥ नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै ॥ जनम मरण मोहु दुखु साधू सँगि
नसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि बादि अहँकारि सरपर रँगिआ ॥ सुखु न पाइनिह मूलि नाम विछुँनिआ ॥ २ ॥ मेरी मेरी
धारि बँधनि बँधिआ ॥ नरकि सुरगि अवतार माइआ धँधिआ ॥ ३ ॥ सोधत सोधत सोधि ततु बीचारिआ ॥ नाम बिना

सुख नाहि सरपर हारिआ ॥ ४ ॥ आवहि जाहि अनेक मरि मरि जनमते ॥ बिनु बूझे सभु वादि जोनी भरमते ॥ ५ ॥ जिन्ह
 कउ भए दइआल तिन्ह साधू संगु भइआ ॥ अँमित हरि का नाम तिन्ही जनी जपि लाइआ ॥ ६ ॥ खोजहि कोटि असंख बहुतु
 अनंत के ॥ जिसु बुझाए आपि नेड़ा तिसु हे ॥ ७ ॥ विस्सरु नाही दातार आपणा नामु देहु ॥ गुण गावा दिनु राति नानक चाउ
 एहु ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥ १६ ॥

रागु सूही महला १ कुचजी १९ शितिगुर प्रसादि ॥

मँजु कुचजी अँमावणि डोसडे हउ किउ सहु रावणि जाउ जीउ ॥ इक दूइकि चडँदीआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ ॥ जिन्ही सखी
 सहु राविआ से अँबी छावड़ीएहि जीउ ॥ से गुण मँजु न आवनी हउ कै जी दोस धरेउ जीउ ॥ किआ गुण तेरे विथरा हउ किआ
 किआ घिना तेरा नाउ जीउ ॥ इकतु टोलि न अँबड़ा हउ सद कुरबाणै तेरै जाउ जीउ ॥ सुइना रुपा रँगुला मोती तै माणिकु जीउ
 ॥ से वसतू सहि दितीआ मै तिन्ह सिउ लाइआ चितु जीउ ॥ मँदर मिटी सँदडे पथर कीते रासि जीउ ॥ हउ एनी टोली भुलीअसु
 तिसु कँत न बैठी पासि जीउ ॥ अबँरि कूँजा कुरलीआ बग बहिठे आइ जीउ ॥ साधन चली साहुरै किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ
 ॥ सुती झालु थीआ भुली वाटड़ीआसु जीउ ॥ तै सह नालहु मुतीअसु दुखा कूँ धरीआसु जीउ ॥ तुधु गुण मै सभि अवगणा इक
 नानक की अरदासि जीउ ॥ सभि राती सोहागणी मै डोहागणि काई राति जीउ ॥ १ ॥ सूही महला १ सुचजी ॥ जा तू ता मै
 सभु को तू साहिबु मेरी रासि जीउ ॥ तुधु अँतरि हउ सुख वसा तूँ अँतरि साबासि जीउ ॥ भाणै तरखति वडाईआ भाणै भीख
 उदासि जीउ ॥ भाणै थल सिरि सरु वहै कमलु फुलै आकासि जीउ ॥ भाणै भवजलु लँधीरे भाणे मँझि भरीआसि जीउ ॥ भाणै
 सो सहु रँगुला सिफति रता गुणतासि जीउ ॥ भाणै सहु भीहावला हउ आवणि जाणि मुईआस जीउ ॥ तू सहु अगमु अतोल्वा
 हउ कहि कहि ढहि पईआसि जीउ ॥ किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जीउ ॥ गुर सबदी

सहु पाइआ सचु नानक की आरदासि जीउ ॥ २ ॥ **सूही महला ९ गुणवँती ॥** जो दीसै गुर सिखड़ा तिसु निव निव लागउ पाइ जीउ ॥ आखा बिरथा जीअ की गुरु सजणु देहि मिलाइ जीउ ॥ सोई दसि उपदेसड़ा मेरा मनु अनत न काहू जाइ जीउ ॥ इहु मनु तै कूँ डेवसा मै मारगु देहु बताइ जीउ ॥ हउ आइआ दूरहु चलि कै मै तकी तउ सरणाइ जीउ ॥ मै आसा रखी चिति महि मेरा सभो दुखु गवाइ जीउ ॥ इतु मारगि चले भाईअडे गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥ तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥ इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ ॥ हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ हरि भगति खजाना बखसिआ गुरि नानकि कीआ पसाउ जीउ ॥ मै बहुड़ि न त्रिसना भुखड़ी हउ रजा त्रिपति अघाइ जीउ ॥ जो गुर दीसै सिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥ ३ ॥

रागु सूही छँत महला १ वरु १ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

भरि जोबनि मै मत पेईअडै घरि पाहुणी बलि राम जीउ ॥ मैली अवगणि चिति बिनु गुर गुण न समावनी बलि राम जीउ ॥ गुण सार न जाणी भरमि भुलाई जोबनु बादि गवाइआ ॥ वरु वरु दरु दरसनु नही जाता पिर का सहजु न भाइआ ॥ सतिगुर पूछि न मारगि चाली सूती रैणि विहाणी ॥ नानक बालतणि शडेपा बिनु पिर धन कुमलानी ॥ १ ॥ बाबा मै वरु देहि मै हरि वरु भावै तिस की बलि राम जीउ ॥ रवि रहिआ जुग चारि त्रिभवण बाणी जिस की बलि राम जीउ ॥ त्रिभवण कँतु रवै सोहागणि अवगणवँती दूरे ॥ जैसी आसा तैसी मनसा पूरि रहिआ भरपूरे ॥ हरि की नारि सु सर सुहागणि शंड न मैलै वेसे ॥ नानक मै वरु साचा भावै जुगि जुगि प्रीतम तैसे ॥ २ ॥ बाबा लगनु गणाइ हँ भी वँजा साहुरै बलि राम जीउ ॥ साहा हुकमु रजाइ सो न टलै जो प्रभु करै बलि राम जीउ ॥ किरतु पइआ करतै करि पाइआ मेटि न सकै कोई ॥ जाजी नाउ नरह निहकेवलु रवि रहिआ तिहु लोई ॥ माइ निरासी शेइ विछुँनी बाली बालै हेते ॥ नानक साच सबदि सुख महली

गुर चरणी प्रभु चेतें ॥ ३ ॥ बाबुलिं दितडी दूरि ना आवै घरि पेईरे बलिं राम जीउ ॥ रहसी वेखिं हदूरिं पिरिं रावी घरिं
सोहीरे बलिं राम जीउ ॥ साचे पिर लोडी प्रीतम जोडी मति पूरी परधाने ॥ सँजोगी मेला थानि सुहेला गुणवंती गुर गिआने
॥ सतु सँतोखु सदा सचु पलै सचु बोलै पिर भाए ॥ नानक विछुडिं ना दुखु पाए गुरमति अँकि समाए ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु सूही महला १ छँतु घरु २ १८ सितिगुर प्रसादि ॥

हम घरि साजन आए ॥ साचै मेलिं मिलाए ॥ सहजि मिलाए हरिं मनि भाए पँच मिले सुखु पाइआ ॥ साई वसतु परापति
होई जिंसु सेती मनु लाइआ ॥ अनदिनु मेलु भइआ मनु मानिआ घर मँदर सोहाए ॥ पँच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरिं
साजन आए ॥ १ ॥ आवहु मीत पिआरे ॥ मँगल गावहु नारे ॥ सचु मँगलु गावहु ता प्रभ भावहु सोहिलडा जुग चारे ॥
अपनै घरिं आइआ थानि सुहाइआ कारज सबदि सवारे ॥ गिआन महा रसु नेत्री अँजनु त्रिभवण रूपु दिखाइआ ॥ सखी
मिलहु रसि मँगलु गावहु हम घरिं साजनु आइआ ॥ २ ॥ मनु तनु अँमिति भिँना ॥ अँतरिं प्रेमु रतँना ॥ अँतरिं रतनु
पदारथु मेरै परम ततु वीचारो ॥ जँत भेख तू सफलिओ दाता सिरिं सिरिं देवणहारो ॥ तू जानु गिआनी अँतरजामी आपे
कारणु कीना ॥ सुनहु सखी मनु मोहनि मोहिआ तनु मनु अँमिति भीना ॥ ३ ॥ आतमरामु सँसारा ॥ साचा खेलु तुमूहरा
॥ सचु खेलु तुमूहरा अगम अपारा तुधु बिनु कउणु बुझाए ॥ सिध साधिक सिआणे केते तुझ बिनु कवणु कहाए ॥ कालु
बिकालु भए देवाने मनु राखिआ गुरि ठाए ॥ नानक अवगण सबदि जलाए गुण सँगमि प्रभु पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु सूही महला १ घरु ३ १८ सितिगुर प्रसादि ॥

आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम ॥ घरिं आपनडै खडी तका मै मनि चाउ घनेरा राम ॥ मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ
मेरा मै तेरा भरवासा ॥ दरसनु देखिं भई निहकेवल जनम मरण

दुखु नासा ॥ सगली जोति जाता तू सोई मिलिआ भाइ सुभाए ॥ नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आए ॥
 १ ॥ घरि आइअडे साजना ता धन खरी सरसी राम ॥ हरि मोहिअडी साच सबदि ठाकुर देखि रहँसी राम ॥ गुण सँगि
 रहँसी खरी सरसी जा रावी रँगि रातै ॥ अवगण मारि गुणी घरु छाइआ पूरै पुरखि बिधातै ॥ तसकर मारि वसी पँचाइणि
 अदलु करे वीचारे ॥ नानक राम नामि निसतारा गुरमति मिलहि पिआरे ॥ २ ॥ वरु पाइअडा बालडीए आसा मनसा पूरी
 राम ॥ पिरि राविअडी सबदि रली रवि रहिआ नह दूरी राम ॥ प्रभु दूरि न होई घटि घटि सोई तिस की नारि सबाई ॥ आपे
 रसीआ आपे रावे जिउ तिस दी वडिआई ॥ अमर अडोलु अमोलु अपारा गुरि पूरै सचु पाईऐ ॥ नानक आपे जोग सजोगी
 नदरि करे लिव लाईऐ ॥ ३ ॥ पिरु उचडीऐ माइडीऐ तिहु लोआ सिरताजा राम ॥ हउ बिसम भई देखि गुणा अनहद सबद
 अगाजा राम ॥ सबदु वीचारी करणी सारी राम नामु नीसाणो ॥ नाम बिना खोटे नहीं ठाहर नामु रतनु परवाणो ॥ पति
 मति पूरी पूरा परवाना ना आवै ना जासी ॥ नानक गुरमुखि आपु पछाणै प्रभ जैसे अविनासी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

१३ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छँत महला १ घरु ४ ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धँधडै लाइआ ॥ दानि तैरै घटि चानणा तनि चँदु दीपाइआ ॥ चँदो दीपाइआ दानि हरि
 कै दुखु अँधेरा उठि गइआ ॥ गुण जँज लाडे नालि सोहै परखि मोहणीऐ लइआ ॥ वीवाहु होआ सोभ सेती पँच सबदी
 आइआ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धँधडै लाइआ ॥ १ ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ इहु तनु जिन
 सिउ गाडिआ मनु लीअडा दीता ॥ लीआ त दीआ मानु जिन्ह सिउ से सजन किउ वीसरहि ॥ जिन्ह दिसि आइआ होहि
 रलीआ जीअ सेती गहि रहहि ॥ सगल गुण अवगणु न कोई होहि नीता नीता ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥
 २ ॥ गुणा का होवै वासुला कठि वासु लईजै ॥ जे गुण होवन्हि

साजना मिलि साझ करीजै ॥ साझ करीजै गुणह केरी छोटि अवगण चलीरे ॥ पहिरे पटंबर करि अडंबर आपणा पिंडु मलीरे ॥
 ॥ जिथै जाइ बहीरे भला लहीरे झोलि अँमितु पीजै ॥ गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥ ३ ॥ आपि करे किसु
 आखीरे होरु करे न कोई ॥ आखण ता कउ जाईरे जे भूलड़ा होई ॥ जे होइ भूला जाइ कहीरे आपि करता किउ भुलै ॥ सुणे
 देखे बाझु कहिरे दानु अणमँगिआ दिवै ॥ दानु देइ दाता जगि बिधाता नानका सचु सोई ॥ आपि करे किसु आखीरे होरु करे
 न कोई ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ सूही महला १ ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ गुर की पउडी साच की साचा सुखु होई
 ॥ सुखि सहजि आवै साच भावै साच की मति किउ टलै ॥ इसनानु दानु सुगिआनु मजनु आपि अछलिओ किउ छलै ॥
 परपँच मोह बिकार थाके कूडु कपटु न दोई ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ १ ॥ साहिबु सो सालाहीरे जिनि कारणु
 कीआ ॥ मैलु लागी मनि मैलिरे किनै अँमितु पीआ ॥ मथि अँमितु पीआ इहु मनु दीआ गुर पहि मोलु कराइआ ॥ आपनड़ा
 प्रभु सहजि पछाता जा मनु साचै लाइआ ॥ तिसु नालि गुण गावा जे तिसु भावा किउ मिलै होइ पराइआ ॥ साहिबु सो
 सालाहीरे जिनि जगतु उपाइआ ॥ २ ॥ आइ गइआ की न आइओ किउ आवै जाता ॥ प्रीतम सिउ मनु मानिआ हरि सेती
 राता ॥ साहिब रँगि राता सच की बाता जिनि बिंब का कोटु उसारिआ ॥ पँच भू नाइको आपि सिरँदा जिनि सच का पिँडु
 सवारिआ ॥ हम अवगणिआरे तू सुणि पिआरे तुधु भावै सचु सोई ॥ आवण जाणा ना थीरे साची मति होई ॥ ३ ॥ अँजनु
 तैसा अँजीरे जैसा पिर भावै ॥ समझै सूझै जाणीरे जे आपि जाणावै ॥ आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ लेवर ॥ करम
 सुकरम कराए आपे कीमति कउण अभेवर ॥ तँतु मँतु पाखँडु न जाणा रामु रिदै मनु मानिआ ॥ अँजनु नामु तिसै ते सूझै गुर
 सबदी सचु जानिआ ॥ ४ ॥ साजन होवनि आपणे किउ पर घर जाही ॥ साजन राते सच के सँगे मन माही ॥ मन माहि
 साजन करहि रलीआ करम धरम सबाइआ ॥ अठसठि तीरथ पुँन पूजा नामु साचा भाइआ ॥ आपि साजे थापि वेखै तिसै

भाणा भाइआ ॥ साजन रांगि रँगीलड़े रँगु लालु बणाइआ ॥ ५ ॥ अँधा आगू जे थीरे किउ पाधरु जाणै ॥ आपि मुसै मति होछीरे किउ राहु पछाणै ॥ किउ राहि जावै महलु पावै अँध की मति अँधली ॥ विणु नाम हरि के कछु न सूझै अँधु बूडौ धँधली ॥ दिनु राति चानणु चाउ उपजै सबदु गुर का मनि वसै ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिनँती राहु पाधरु गुरु दसै ॥ ६ ॥ मनु परदेसी जे थीरे सभु देसु पराइआ ॥ किसु पहि खोलहउ गँठड़ी दूखी भरि आइआ ॥ दूखी भरि आइआ जगतु सबाइआ कउणु जाणै बिधि मेरीआ ॥ आवणे जावणे खरे डरावणे तोटि न आवै फेरीआ ॥ नाम विहूणे ऊणे झूणे ना गुरि सबदु सुणाइआ ॥ मनु परदेसी जे थीरे सभु देसु पराइआ ॥ ७ ॥ गुर महली घरि आपणै सो भरपुरि लीणा ॥ सेवकु सेवा तां करे सच सबदि पतीणा ॥ सबदे पतीजै अँकु भीजै सु महलु महला अँतरे ॥ आपि करता करे सोई प्रभु आपि अँति निरँतरे ॥ गुर सबदि मेला तां सुहेला बाजँत अनहद बीणा ॥ गुर महली घरि आपणै सो भरपुरि लीणा ॥ ८ ॥ कीता किआ सालाहीरे करि वेखै सोई ॥ ता की कीमति ना पवै जे लोचै कोई ॥ कीमति सो पावै आपि जाणावै आपि अभुलु न भुलए ॥ जै जैकारु करहि तुधु भावहि गुर कै सबदि अमुलए ॥ हीणउ नीचु करउ बेनँती साचु न छोडउ भाई ॥ नानक जिनि करि देखिआ देवै मति साई ॥ ९ ॥ २ ॥ ५ ॥

रागु सूही छँत महला ३ घरु २ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥ गुरमुखि हरि फलु पावहु ॥ गुरमुखि फलु पावहु हरि नामु धिआवहु जनम जनम के दूख निवारे ॥ बलिहारी गुर अपने विटहु जिनि कारज सभि सवारे ॥ हरि प्रभु क्रिपा करे हरि जापहु सुख फल हरि जन पावहु ॥ नानकु कहै सुणहु जन भाई सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहि ॥ १ ॥ सुणि हरि गुण भीने सहजि सुभाए ॥ गुरमति सहजे नामु धिआए ॥ जिन कउ धुरि लिखिआ तिन गुरु मिलिआ तिन जनम मरण भउ भागा ॥ अँदरहु दुरमति दूजी खोई

सो जनु हरि लिव लागा ॥ जिन कउ क्रिपा कीनी मेरै सुआमी तिन अनदिनु हरि गुण गाए ॥ सुणि मन भीने सहजि सुभाए ॥ २ ॥ जुग महि राम नामु निसतारा ॥ गुर ते उपजै सबदु वीचारा ॥ गुर सबदु वीचारा राम नामु पिआरा जिंसु किरपा करे सु पाए ॥ सहजे गुण गावे दिनु राती किलविख सभि गवाए ॥ सभु को तेरा तू सभना का हउ तेरा तू हमारा ॥ जुग महि राम नामु निसतारा ॥ ३ ॥ साजन आइ वुठे घर माही ॥ हरि गुण गावहि त्रिपति अघाही ॥ हरि गुण गाइ सदा त्रिपतासी फिरि भूख न लागै आए ॥ दह दिसि पूज होवै हरि जन की जो हरि हरि नामु धिआए ॥ नानक हरि आपे जोड़ि विछोड़े हरि बिनु को दूजा नाही ॥ साजन आइ वुठे घर माही ॥ ४ ॥ १ ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥

भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम ॥ सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ॥ हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ जिस दी साची बाणी ॥ सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ॥ भगता की चाल सची अति निरमल नामु सचा मनि भाइआ ॥ नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनी सचो सचु कमाइआ ॥ १ ॥ हरि भगता जी जाति पति है भगत हरि कै नामि समाणे राम ॥ हरि भगति करहि विचहु आपु गवावहि जिन गुण अवगण पछाणे राम ॥ गुण अउगुण पछाणै हरि नामु वखाणै भै भगति मीठी लागी ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती घर ही महि बैरागी ॥ भगती राते सदा मनु निरमलु हरि जीउ वेखहि सदा नाले ॥ नानक से भगत हरि कै दरि साचे अनदिनु नामु सम्हाले ॥ २ ॥ मनमुख भगति करहि बिनु सतिगुर विणु सतिगुर भगति न होई राम ॥ मरि जनमहि दुखु होई दूजै भाइ परज विगोई विणु गुर ततु न जानिआ ॥ भगति विहूणा सभु जगु भरमिआ अँति गइआ पछुतानिआ ॥ कोटि मधे किनै पछाणिआ हरि नाम सचु सोई ॥ नानक नामि

मिलै वडिआई दूजै भाइ पति खोई ॥ ३ ॥ भगता कै घरि कारजु साचा हरि गुण सदा वखाणे राम ॥ भगति खजाना आपे
 दीआ कालु कँटकु मारि समाणे राम ॥ कालु कँटकु मारि समाणे हरि मनि भाणे नामु निधानु सचु पाइआ ॥ सदा अखुट्टु कदे न
 निखुट्टै हरि दीआ सहजि सुभाइआ ॥ हरि जन ऊचे सद ही ऊचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ नानक आपे बखसि मिलाए जुगि
 जुगि सोभा पाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ सूही महला ३ ॥ सबदि सचै सचु सोहिला जिथै सचे का होइ वीचारो राम ॥ हउमै सभि
 किलविख काटे साचु रखिआ उरि धारे राम ॥ सचु रखिआ उर धारे दूतरु तारे फिरि भवजलु तरणु न होई ॥ सचा सतिगुरु
 सची बाणी जिनि सचु विखालिआ सोई ॥ साचे गुण गावै सचि समावै सचु वेखै सभु सोई ॥ नानक साचा साहिबु साची नाई
 सचु निसतारा होई ॥ १ ॥ साचै सतिगुरि साचु बुझाइआ पति राखै सचु सोई राम ॥ सचा भोजनु भाउ सचा है सचै नामि सुखु
 होई राम ॥ साचै नामि सुखु होई मरै न कोई गरभि न जूनी वासा ॥ जोती जोति मिलाई सचि समाई सचि नाइ परगासा ॥
 जिनी सचु जाता से सचे होए अनदिनु सचु धिआइनि ॥ नानक सचु नामु जिन हिरदै वसिआ ना वीछुडि दुखु पाइनि ॥ २ ॥
 सची बाणी सचे गुण गावहि तितु घरि सोहिला होई राम ॥ निरमल गुण साचे तनु मनु साचा विचि साचा पुरखु प्रभु सोई राम ॥
 सभु सचु वरतै सचो बोलै जो सचु करै सु होई ॥ जह देखा तह सचु पसरिआ अवरु न दूजा कोई ॥ सचे उपजै सचि समावै मरि
 जनमै दूजा होई ॥ नानक सभु किछु आपे करता आपि करावै सोई ॥ ३ ॥ सचे भगत सोहहि दरवारे सचो सचु वखाणे राम ॥
 घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम ॥ आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई ॥ सचा सबदु सची है सोभा
 साचे ही सुखु होई ॥ साचि रते भगत इक रंगी दूजा रंगु न कोई ॥ नानक जिस कउ मसतकि लिखिआ तिसु सचु परापति होई
 ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ सूही महला ३ ॥ जुग चारे धन जे भवै बिनु सतिगुर सोहागु न होई राम ॥ निहचलु राजु सदा हरि केरा
 तिसु बिनु अवरु न कोई राम ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई सदा सचु सोई गुरमुखि एको जाणिआ ॥ धन

पिर मेलावा होआ गुरमती मनु मानिआ ॥ सतिगुरु मिलिआ ता हरि पाइआ बिनु हरि नावै मुकति न होई ॥ नानक
 कामणि कँतै शवे मनि मानिऐ सुखु होई ॥ १ ॥ सतिगुरु सेवि धन बालडीए हरि वरु पावहि सोई राम ॥ सदा होवहि
 सोहागणी फिरि मैला वेसु न होई राम ॥ फिरि मैला वेसु न होई गुरमुखि बूझै कोई हउमै मारि पछाणिआ ॥ करणी कार
 कमावै सबदि समावै अंतरि एको जाणिआ ॥ गुरमुखि प्रभु शवे दिनु राती आपणा साची सोभा होई ॥ नानक कामणि
 पिरु शवे आपणा रवि रहिआ प्रभु सोई ॥ २ ॥ गुर की का करे धन बालडीए हरि वरु देइ मिलाए राम ॥ हरि कै रंगि रती
 है कामणि मिलि प्रीतम सुखु पाए राम ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाए सचि समाए सचु वरतै सभ थाई ॥ सचा सीगारु करे
 दिनु राती कामणि सचि समाई ॥ हरि सुखदाता सबदि पछाता कामणि लइआ कँठि लाए ॥ नानक महली महलु पछाणै
 गुरमती हरि पाए ॥ ३ ॥ साधन बाली धुरि मेली मेरै प्रभि आपि मिलाई राम ॥ गुरमती घटि चानणु होआ प्रभु रवि
 रहिआ सभ थाई राम ॥ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई मँनि वसाई पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ सेज सुखाली मेरे प्रभ भाणी
 सचु सीगारु बणाइआ ॥ कामणि निरमल हउमै मनु खोई गुरमति सचि समाई ॥ नानक आपि मिलाई करतै नामु नवै
 निधि पाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ सूही महला ३ ॥ हरि हरे हरि गुण गावहु हरि गुरमुखे पाए राम ॥ अनदिनो सबदि खहु
 अनहद सबद वजाए राम ॥ अनहद सबद वजाए हरि जीउ घरि आए हरि गुण गावहु नारी ॥ अनदिनु भगति करहि गुर
 आगै साधन कँत पिआरी ॥ गुर का सबदु वसिआ घट अंतरि से जन सबदि सुहाए ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला
 हरि करि किरपा घरि आए ॥ १ ॥ भगता मनि आनँदु भइआ हरि नामि रहे लिव लाए राम ॥ गुरमुखे मनु निरमलु होआ
 निरमल हरि गुण गाए राम ॥ निरमल गुण गाए नामु मँनि वसाए हरि की अँमित बाणी ॥ जिन्ह मनि वसिआ सेई जन
 निसतरे घटि घटि सबदि समाणी ॥ तेरे गुण गावहि सहजि समावहि सबदे मेलि मिलाए ॥ नानक सफल जनमु तिन

केरा जिं सतिगुर हरि मारगि पाए ॥ सँतसँगति सिउ मेलु भइआ हरि हरि नामि समाए राम ॥ गुर कै सबदि सद जीवन
 मुक्त भए हरि कै नामि लिं वलाए राम ॥ हरि नामि चितु लाए गुरि मेलिं मिलाए मनूआ रता हरि नाले ॥ सुखदाता पाइआ
 मोहु चुकाइआ अनदिनु नामु सम्हाले ॥ गुर सबदे रता सहजे माता नामु मनि वसाए ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला
 जिं सतिगुर सेवि समाए ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर जगु भरमि भुलाइआ हरि का महलु न पाइआ राम ॥ गुरमुखे इकि मेलिं
 मिलाइआ तिन के दूख गवाइआ राम ॥ तिन के दूख गवाइआ जा हरि मनि भाइआ सदा गावहि रँगि राते ॥ हरि के
 भगत सदा जन निरमल जुगि जुगि सद ही जाते ॥ साची भगति करहि दरि जापहि घरि दरि सचा सोई ॥ नानक सचा
 सोहिला सची सचु बाणी सबदे ही सुखु होई ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सूही महला ३ ॥ जो लोड़हि वरु बालडीए ता गुर चरणी
 चितु लाए राम ॥ सदा होवहि सोहागणी हरि जीउ मरै न जाए राम ॥ हरि जीउ मरै न जाए गुर कै सहजिं सुभाए साधन
 कँत पिआरी ॥ सचि सँजमि सदा है निरमल गुर कै सबदि सीगारी ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही साचा जिनि आपे आपु
 उपाइआ ॥ नानक सदा पिरु रावे आपणा जिनि गुर चरणी चितु लाइआ ॥ १ ॥ पिरु पाइअड़ा बालडीए अनदिनु
 सहजे माती राम ॥ गुरमती मनि अनदु भइआ तितु तनि मैलु न राती राम ॥ तितु तनि मैलु न राती हरि प्रभिं राती मेरा
 प्रभु मेलिं मिलाए ॥ अनदिनु रावे हरि प्रभु अपणा विचहु आपु गवाए ॥ गुरमति पाइआ सहजिं मिलाइआ अपणे प्रीतम
 राती ॥ नानक नामु मिलै वडिआई प्रभु रावे रँगि राती ॥ २ ॥ पिरु रावे रँगि रातडीए पिर का महलु तिन पाइआ राम ॥
 सो सहो अति निरमलु दाता जिनि विचहु आपु गवाइआ राम ॥ विचहु मोहु चुकाइआ जा हरि भाइआ हरि कामणि मनि
 भाणी ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे कथे अकथ कहाणी ॥ जुग चारे साचा एको वरतै बिनु गुर किनै न पाइआ ॥
 नानक रँगि रवै रँगि राती जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥ ३ ॥ कामणि मनि सोहिलड़ा साजन मिले पिआरे राम ॥

गुरमती मनु निरमलु होआ हरि राखिआ उरि धारे राम ॥ हरि राखिआ उरि धारे अपना कारजु सवारे गुरमती हरि जाता ॥
 प्रीतमि मोहि लइआ मनु मेरा पाइआ करम बिधाता ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुख पाइआ हरि वसिआ मनि मुरारे ॥ नानक मेलि
 लई गुरि अपुनै गुर कै सबदि सवारे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ सूही महला ३ ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे राम ॥ हरि
 मनु तनो गुरमुखि भीजै राम नामु पिआरे राम ॥ राम नामु पिआरे सभि कुल उधारे राम नामु मुखि बाणी ॥ आवण जाण रहे सुखु
 पाइआ घर अनहद सुरति समाणी ॥ हरि हरि एको पाइआ हरि प्रभु नानक किरपा धारे ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी
 वीचारे ॥ १ ॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥ गुरि मेली बहु किरपा धारी हरि कै सबदि सुभाए राम ॥
 मिलु सबदि सुभाए आपु गवाए रंग सिउ रलीआ माणे ॥ सेज सुखाली जा प्रभु भाइआ हरि हरि नामि समाणे ॥ नानक
 सोहागणि सा वडभागी जे चलै सतिगुर भाए ॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥ २ ॥ घटि घटे सभना
 विचि एको एको राम भतारो राम ॥ इकना प्रभु दूरि वसै इकना मनि आधारो राम ॥ इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी
 गुरु पाइआ ॥ घटि घटि हरि प्रभु एको सुआमी गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सहजे अनदु होआ मनु मानिआ नानक ब्रहम
 बीचारो ॥ घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥ ३ ॥ गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाइआ राम ॥
 हरि धूड़ि देवहु मै पूरे गुर की हम पापी मुक्तु कराइआ राम ॥ पापी मुक्तु कराए आपु गवाए निज घरि पाइआ वासा ॥ बिबेक
 बुधी सुखि रैणि विहाणी गुरमति नामि प्रगासा ॥ हरि हरि अनदु भइआ दिनु राती नानक हरि मीठ लगाए ॥ गुरु सेवनि
 सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ ॥ ७ ॥ १२ ॥

रागु सूही महला ४ छँत घरु १ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुरु पुरखु मिलाइ अवगण विकणा गुण खा बलि राम जीउ ॥

हरि हरि नामु धिआइ गुरबाणी नित नित चवा बलिं राम जीउ ॥ गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ ॥ हउमै रोगु
 गइआ भउ भागा सहजे सहजिं मिलाइआ ॥ काइआ सेज गुर सबदि सुखालीं गिआन तति करि भोगो ॥ अनदिनु सुखिं माणे
 नित रलीआ नानक धुरिं संजोगो ॥ १ ॥ सतु संतोखु करि भाउ कुडमु कुडमाई आइआ बलिं राम जीउ ॥ संत जना करि मेलु
 गुरबाणी गावाईआ बलिं राम जीउ ॥ बाणी गुर गाई परम गति पाई पंच मिले सोहाइआ ॥ गइआ करोधु ममता तनि नाठी
 पाखंडु भरमु गवाइआ ॥ हउमै पीर गई सुखु पाइआ आरोगत भए सरीरा ॥ गुर परसादी ब्रहमु पछाता नानक गुणी गहीरा ॥
 २ ॥ मनमुखिं विछुड़ी दूरि महलु न पाए बलिं गई बलिं राम जीउ ॥ अंतरि ममता कूरि कूडु विहाझे कूडिं लई बलिं राम जीउ ॥
 कूडु कपटु कमावै महा दुखु पावै विणु सतिगुरु मगु न पाइआ ॥ उझड़ पंथि भ्रमै गावारी खिनु खिनु धके खाइआ ॥ आपे दइआ
 करे प्रभु दाता सतिगुरु पुरखु मिलाए ॥ जनम जनम के विछुडे जन मेले नानक सहजिं सुभाए ॥ ३ ॥ आइआ लगनु गणाइ
 हिरदै धन ओमाहीआ बलिं राम जीउ ॥ पंडित पाथे आणि पती बहि वाचाईआ बलिं राम जीउ ॥ पती वाचाई मनि वजी वधाई
 जब साजन सुणे घरिं आए ॥ गुणी गिआनी बहि मता पकाइआ फेरे ततु दिवाए ॥ वरु पाइआ पुरखु अगंमु अगोचरु सद
 नवतनु बाल सखाई ॥ नानक किरपा करि कै मेले विछुडिं कदे न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि पहिलड़ी लाव
 परविरती करम द्विड़ाइआ बलिं राम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्विड़हु पाप तजाइआ बलिं राम जीउ ॥ धरमु द्विड़हु हरि नामु
 धिआवहु सिमिति नामु द्विड़ाइआ ॥ सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभिं किलविख पाप गवाइआ ॥ सहज अनंदु होआ वडभागी
 मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ जनु कहै नानक लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥ १ ॥ हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु
 मिलाइआ बलिं राम जीउ ॥ निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलिं राम जीउ ॥ निरमलु भउ पाइआ हरि गुण

गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ हरि आतमरामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि
जन मंगल गाए ॥ जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥ २ ॥ हरि तीजडी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ
बलि राम जीउ ॥ संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि
बोली हरि बाणी ॥ संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीए अकथ कहाणी ॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीए
मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥ ३ ॥ हरि चउथडी लाव मनि सहजु भइआ
हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥ गुरुमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ मेरे
प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु
रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥ ४ ॥ २ ॥

१८१८ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छंत महला ४ वरु २ ॥

गुरुमुखि हरि गुण गाए ॥ हिरदै रसन रसाए ॥ हरि रसन रसाए मेरे प्रभ भाए मिलिआ सहजि सुभाए ॥ अनदिनु भोग भोगे
सुखि सोवै सबदि रहै लिव लाए ॥ वडै भागि गुरु पूरा पाईए अनदिनु नामु धिआए ॥ सहजे सहजि मिलिआ जगजीवनु
नानक सुनि समाए ॥ १ ॥ संगति संत मिलाए ॥ हरि सरि निरमलि नाए ॥ निरमलि जलि नाए मैलु गवाए भए पवितु सरीरा
॥ दुरमति मैलु गई भ्रमु भागा हउमै बिनठी पीरा ॥ नदरि प्रभु सतसंगति पाई निज घरि होआ वासा ॥ हरि मंगल रसि रसन
रसाए नानक नामु प्रगासा ॥ २ ॥ अंतरि रतनु बीचारे ॥ गुरुमुखि नामु पिआरे ॥ हरि नामु पिआरे सबदि निसतारे अगिआनु
अधेरु गवाइआ ॥ गिआन प्रचंडु बलिआ घटि चानणु घर मंदर सोहाइआ ॥ तनु मनु अरपि सीगार बणाए हरि प्रभ साचे

भाइआ ॥ जो प्रभु कहै सोई परु कीजै नानक अँकि समाइआ ॥ ३ ॥ हरि प्रभि काजु रचाइआ ॥ गुरमुखि वीआहणि
 आइआ ॥ वीआहणि आइआ गुरमुखि हरि पाइआ साधन कँत पिआरी ॥ सँत जना मिलि मँगल गाए हरि जीउ आपि सवारी
 ॥ सुरि नर गण गँधरब मिलि आए अपूरब जँज बणाई ॥ नानक प्रभु पाइआ मै साचा ना कदे मरै न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

शगु सूही छँत महला ४ घरु ३ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

आवहो सँत जनहु गुण गावह गोविँद केरे राम ॥ गुरमुखि मिलि रहीरे घरि वाजहि सबद घनेरे राम ॥ सबद घनेरे हरि प्रभ तेरे
 तू कारता सभ थाई ॥ अहिनिशि जपी सदा सालाही साच सबदि लिव लाई ॥ अनदिनु सहजि रहै रँगि राता राम नामु रिद
 पूजा ॥ नानक गुरमुखि एकु पछाणै अवरु न जाणै दूजा ॥ १ ॥ सभ महि रवि रहिआ सो प्रभु अँतरजामी राम ॥ गुर सबदि
 रवै रवि रहिआ सो प्रभु अँतरजामी राम ॥ गुर सबदि रवै रवि रहिआ सो प्रभु मेरा सुआमी राम ॥ प्रभु मेरा सुआमी अँतरजामी
 घटि घटि रविआ सोई ॥ गुरमति सचु पाईरे सहजि समाईरे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ सहजे गुण गावा जे प्रभ भावा आपे
 लए मिलार ॥ नानक सप प्रभु सबदे जापै अहिनिशि नामु धिआए ॥ २ ॥ इहु जगो दुतरु मनमुखु पारि न पाई राम ॥ अँतरे
 हउमै ममता कामु क्रोधु चतुराई राम ॥ अँतरि चतुराई थाइ न पाई बिरथा जनमु गवाइआ ॥ जम मगि दुखु पावै चोटा खारै
 अँति गइआ पछुताइआ ॥ बिनु नावै को बेली नाही पुतु कुटँबु सुतु भाई ॥ नानक माइआ मोहु पसारा आगै सथि न जाई ॥
 ३ ॥ हउ पूछउ अपना सतिगुरु दाता किन बिधि दुतरु तरीरे राम ॥ सतिगुर भाइ चलहु जीवतिआ इव मरीरे राम ॥
 जीवतिआ मरीरे भउजलु तरीरे गुरमुखि नामि समावै ॥ पूरा पुरखु पाइआ वडभागी सचि नामि लिव लावै ॥ मति परगासु
 भई मनु मानिआ राम नामि वडिआई ॥ नानक प्रभु पाइआ सबदि मिलाइआ जोती जोति मिलाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

सूही महला ४ वरु ९ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

गुर सँत जनो पिआरा मै मिलिआ मेरी त्रिसना बुझि गईआसे ॥ हउ मनु तनु देवा सतिगुरै मै मेले प्रभ गुणतासे ॥ धनु धँनु गुरू वड पुरखु है मै दसे हरि साबासे ॥ वडभागी हरि पाइआ जन नानक नामि विगासे ॥ १ ॥ गुरु सजणु पिआरा मै मिलिआ हरि मारगु पँथु दसाहा ॥ घरि आवहु चिरी विछुँनिआ मिलु सबदि गुरू प्रभ नाहा ॥ हउ तुझु बाझहु खरी उडीणीआ जिउ जल बिनु मीनु मराहा ॥ वडभागी हरि धिआइआ जन नानक नामि समाहा ॥ २ ॥ मनु दह दिसि चलि चलि भरमिआ मनमुखु भरमि भुलाइआ ॥ नित आसा मनि चितवै मन त्रिसना भुख लगाइआ ॥ अनता धनु धरि दबिआ फिरि बिखु भालण गइआ ॥ जन नानक नामु सलाहि तू बिनु नावै पचि पचि मुइआ ॥ ३ ॥ गुरु सुँदरु मोहनु पाइ करे हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ ॥ मेरै हिरदै सुधि बुधि विसरि गई मन आसा चित विसारिआ ॥ मै अँतरि वेदन प्रेम की गुरु देखत मनु साधारिआ ॥ वडभागी प्रभ आइ मिलु जनु नानकु खिनु खिनु वारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ सूही छँत महला ४ ॥ मारेहिसु वे जन हउमै बिखिआ जिनि हरि प्रभ मिलण न दितीआ ॥ देह कँचन वे वँनीआ इनि हउमै मारि विगुतीआ ॥ मोहु माइआ वे सभ कालखा इनि मनमुखि मूडि सजुतीआ ॥ जन नानक गुरुमुखि उबरे गुरु सबदी हउमै छुटीआ ॥ १ ॥ वसि आणिहु वे जन इसु मन कउ मनु बासे जिउ नित भउदिआ ॥ दुखि रैणि वे विहाणीआ नित आसा आस करेदिआ ॥ गुरु पाइआ वे सँत जनो मनि आस पूरी हरि चउदिआ ॥ जन नानक प्रभ देहु मती छडि आसा नित सुख सउदिआ ॥ २ ॥ साधन आसा चिति करे राम राजिआ हरि प्रभ सेजडीरे आई ॥ मेरा ठाकुरु अगम दइआलु है राम राजिआ करि किरपा लेहु मिलाई ॥ मेरै मनि तनि लोचा गुरुमुखे राम राजिआ हरि सरधा सेज विछाई ॥ जन नानक हरि प्रभ भाणीआ राम राजिआ मिलिआ सहजि सुभाई ॥ ३ ॥ इकतु सेजै हरि प्रभो राम राजिआ गुरु दसे हरि मेलेई ॥ मै मनि तनि प्रेम

बैरागु है राम राजिआ गुरु मेले किरपा करेई ॥ हउ गुर विटहु घोलि घुमाइआ राम राजिआ जीउ सतिगुर आगै देई ॥ गुरु
तुठा जीउ राम राजिआ जन नानक हरि मेलेई ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ६ ॥ १८ ॥

रागु सूही छँत महला ५ घरु १ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सुणि बावरे तू काए देखि भुलाना ॥ सुणि बावरे नेहु कूड़ा काइओ कुसँभ रँगाना ॥ कूड़ी देखि भुलो अढु लहै न मुलो गोविद
नामु मजीठा ॥ थीवहि लाला अति गुलाला सबदु चीनि गुर मीठा ॥ मिथिआ मोहि मगनु थी रहिआ ड्रूठ सँगि लपटाना ॥
नानक दीन सरणि किरपा निधि राखु लाज भगताना ॥ १ ॥ सुणि बावरे सेवि ठाकुरु नाथु पराणा ॥ सुणि बावरे जो
आइआ तिसु जाणा ॥ निहचलु हभ वैसी सुणि परदेसी सँतसँगि मिलि रहीरे ॥ हरि पाईरे भागी सुणि बैरागी चरण प्रभू
गहि रहीरे ॥ एहु मनु दीजै सँक न कीजै गुरुमुखि तजि बहु माणा ॥ नानक दीन भगत भव तारण तेरे किआ गुण आखि
वरखाणा ॥ २ ॥ सुणि बावरे किआ कीचै कूड़ा मानो ॥ सुणि बावरे हभु वैसी गरबु गुमानो ॥ निहचलु हभ जाणा मिथिआ
माणा सँत प्रभू होइ दासा ॥ जीवत मरीरे भउजलु तरीरे जे थीवै करमि लिखिआसा ॥ गुरु सेवीजै अँमितु पीजै जिंसु
लावहि सहजि धिआनो ॥ नानक सरणि पइआ हरि दुआरै हउ बलि बलि सद कुरबानो ॥ ३ ॥ सुणि बावरे मतु जाणहि
प्रभु मै पाइआ ॥ सुणि बावरे थीउ रेणु जिनी प्रभु धिआइआ ॥ जिनि प्रभु धिआइआ तिनि सुखु पाइआ वडभागी दरसनु
पाईरे ॥ थीउ निमाणा सद कुरबाणा सगला आपु मिटाईरे ॥ ओहु धनु भाग सुधा जिनि प्रभु लधा हम तिसु पहि आपु
वेचाइआ ॥ नानक दीन सरणि सुख सागर राखु लाज अपनाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ सूही महला ५ ॥ हरि चरण कमल की
टेक सतिगुरि दिती तुसि कै बलि राम जीउ ॥ हरि अँमिति भरे भँडार सभु किछु है घरि तिस कै बलि राम जीउ ॥ बाबुलु मेरा
वड समरथा करण कारण प्रभु हारा ॥ जिंसु सिमरत दुखु कोई न लागै भउजलु पारि उतारा ॥ आदि जुगादि भगतन

का राखा उसतति करि करि जीवा ॥ नानक नामु महा रसु मीठा अनदिनु मनि तनि पीवा ॥ १ ॥ हरि आपे लए मिलाइ
 किउ वेछोड़ा थीवई बलि राम जीउ ॥ जिस नो तेरी टेक सो सदा सद जीवई बलि राम जीउ ॥ जिस नो तेरी टेक सो सदा सद
 जीवई बलि राम जीउ ॥ तेरी टेक तुझै ते पाई साचे सिरजणहारा ॥ जिस ते खाली कोई नाही ऐसा प्रभू हमारा ॥ सँत जना
 मिलि मँगलु गाइआ दिनु रैनि आस तुम्हारी ॥ सफलु दरसु भेटिआ गुरु पूरा नानक सद बलिहारी ॥ २ ॥ सँमहलिआ सचु
 थानु मानु महतु सचु पाइआ बलि राम जीउ ॥ सतिगुरु मिलिआ दइआलु गुण अबिनासी गाइआ बलि राम जीउ ॥ गुण
 गोविंद गाउ नित नित प्राण प्रीतम सुआमीआ ॥ सुभ दिवस आए गहि कँठि लाए मिले अँतरजामीआ ॥ सतु सँतोखु
 वजहि वाजे अनहदा झुणकारे ॥ सुणि भै बिनासे सगल नानक प्रभ पुरख करणैहारे ॥ ३ ॥ उपजिआ ततु गिआनु साहुरै
 पेईऐ इकु हरि बलि राम जीउ ॥ ब्रहमै ब्रहमु मिलिआ कोइ न साकै भिँन करि बलि राम जीउ ॥ बिसमु पेखै बिसमु सुणीऐ
 बिसमादु नदरी आइआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी घटि घटि रहिआ समाइआ ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि
 समाइआ कीमति कहणु न जाए ॥ जिस के चलत न जाही लखणे नानक तिसहि धिआए ॥ ४ ॥ २ ॥

रागु सूही छँत महला ५ वरु २ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

गोबिंद गुण गावण लागे ॥ हरि रँगि अनदिनु जागे ॥ हरि रँगि जागे पाप भागे मिले सँत पिआरिआ ॥ गुर चरण लागे
 भरम भागे काज सगल सवारिआ ॥ सुणि श्रवण बाणी सहजि जाणी हरि नामु जपि वडभागै ॥ बिनवँति नानक सरणि
 सुआमी जीउ पिँडु प्रभ आगै ॥ १ ॥ अनहत सबदु सुहावा ॥ सचु मँगलु हरि जसु गावा ॥ गुण गाइ हरि हरि दूख नासे
 रहसु उपजै मनि घणा ॥ मनु तँनु निरमलु देखि दरसनु नामु प्रभ का मुखि भणा ॥ होइ रेण साधू प्रभ अराधू आपणे प्रभ
 भावा ॥ बिनवँति नानक दइआ धारहु सदा हरि गुण गावा ॥ २ ॥ गुर मिलि सागरु तरिआ ॥

हरि चरण जपत निसतरिआ ॥ हरि चरन धिआए सभि फल पाए मिटे आवण जाणा ॥ भाइ भगति सुभाइ हरि जपि
 आपणे प्रभ भावा ॥ जपि एकु अलख अपार पूरन तिसु बिना नही कोई ॥ बिनवँति नानक गुरि भरमु खोइआ जत देखा
 तत सोई ॥ ३ ॥ पतित पावन हरि नामा ॥ पूरन सँत जना के कामा ॥ गुरु सँतु पाइआ प्रभु धिआइआ सगल इच्छा
 पुँनीआ ॥ हउ ताप बिनसे सदा सरसे प्रभ मिले चिरी विछुँनिआ ॥ मनि साति आई वजी वधाई मनहु कदे न वीसरै ॥
 बिनवँति नानक सतिगुरि दिडाइआ सदा भजु जगदीसरै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सूही छँत महला ७ घरु २ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

तू ठाकुरो बैरागरो मै जेही घण चेरी राम ॥ तूँ सागरो रतनागरो हउ सार न जाणा तेरी राम ॥ सार न जाणा तू वड दाणा
 करि मिहरँमति साई ॥ किरपा कीजै सा मति दीजै आठ पहर तुधु धिआई ॥ गरबु न कीजै रेण होवीजै ता गति जीअरे
 तेरी ॥ सभ ऊपरि नानक का ठाकुरु मै जेही घण चेरी राम ॥ १ ॥ तुम्ह गउहर अति गहिर गँभीरा तुम पिर हम बहुरीआ
 राम ॥ तुम वडे वडे वड ऊचे हउ ईतनीक लहुरीआ राम ॥ हउ किछु नाही एको तूहै आपु आपि सुजाना ॥ अँमित द्रिसटि
 निमख प्रभ जीवा सरब रँग रस माना ॥ चरणह सरनी दासह दासी मनि मउलै तनु हरीआ ॥ नानक ठाकुरु सरब समाणा
 आपन भावन करीआ ॥ २ ॥ तुझ ऊपरि मेश है माणा तूहै मेश ताणा राम ॥ सुरति मति चतुराई तेरी तू जाणाइहि जाणा
 राम ॥ सोई जाणै सोई पछाणै जा कउ नदरि सिरँदै ॥ मनमुखि भूली बहुती राही फाथी माइआ फँदे ॥ ठाकुर भाणी सा
 गुणवँती तिन ही सभ रँग माणा ॥ नानक की धर तूहै ठाकुर तू नानक का माणा ॥ ३ ॥ हउ वारी वँआ घोली वँआ तू
 परबतु मेश ओलहा राम ॥ हउ बलि जाई लख लख लख बरीआ जिनि भ्रमु परदा खोलहा राम ॥ मिटे अँधारे तजे बिकारे
 ठाकुर सिउ मनु माना ॥ प्रभ जी भाणी भई निकाणी सफल जनमु परवाना ॥ भई अमोली भारा तोली

मुकति जुगति दरु खोलहा ॥ कहु नानक हउ निरभउ होई सो प्रभु मेरा ओलहा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ सूही महला ५ ॥
 साजनु पुरखु सतिगुरु मेरा पूरा तिसु बिनु अवरु न जाणा राम ॥ मात पिता भाई सुत बँधप जीअ प्राण मनि भाणा राम
 ॥ जीउ पिँडु सभु तिस का दीआ सरब गुणा भरपूरे ॥ अंतरजामी सो प्रभु मेरा सरब रहिआ भरपूरे ॥ ता की सरणि सरब
 सुख पाए होए सरब कलिआणा ॥ सदा सदा प्रभ कउ बलिहारै नानक सद कुरबाणा ॥ १ ॥ ऐसा गुरु वडभागी पाईए
 जितु मिलिऐ प्रभु जापै राम ॥ जनम जनम के किलविख उतरहि हरि संत धूडी नित नापै राम ॥ हरि धूडी नाईए प्रभु
 धिआईए बाहुडि जोनि न आईए ॥ गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे मनि चिँदिआ फलु पाईए ॥ हरि गुण नित गाए नामु
 धिआए फिरि सोगु नाही संतापै ॥ नानक सो प्रभु जीअ का दाता पूरा जिंसु परतापै ॥ २ ॥ हरि हरे हरि गुण निधे हरि
 संतन कै वसि आए राम ॥ संत चरण गुर सेवा लागे तिनी परम पद पाए राम ॥ परम पदु पाइआ आपु मिटाइआ हरि पूरन
 किरपा धारी ॥ सफल जनमु होआ भउ भागा हरि भेटिआ एकु मुरारी ॥ जिस का सा तिन ही मेलि लीआ जोती जोति
 समाइआ ॥ नानक नामु निरँजन जपीऐ मिलि सतिगुर सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ गाउ मँगलो नित हरि जनहु पुँनी इछ सबाई
 राम ॥ रँगे रते अपुने सुआमी सेती मरै न आवै जाई राम ॥ अबिनासी पाइआ नामु धिआइआ सगल मनोरथ पाए ॥
 सांति सहज आनँद घनेरे गुर चरणी मनु लाए ॥ पूरि रहिआ घटि घटि अबिनासी थन थनंतरि साई ॥ कहु नानक कारज
 सगले पूरे गुर चरणी मनु लाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ सूही महला ५ ॥ करि किरपा मेरे प्रीतम सुआमी नेत्र देखहि दरसु तेरा
 राम ॥ लाख जिहवा देहु मेरे पिआरे मुखु हरि आराधे मेरा राम ॥ हरि आराधे जम पँथु साधे दूखु न विआपै कोई ॥ जलि
 थलि महीअलि पूरन सुआमी जत देखा तत सोई ॥ भरम मोह बिकार नाठे प्रभु नेरहु ते नेरा ॥ नानक कउ प्रभ किरपा
 कीझै नेत्र देखहि दरसु तेरा ॥ १ ॥ कोटि करन दिजहि प्रभ प्रीतम हरि गुण सुणीअहि अबिनासी राम ॥ सुणि सुणि

इहु मनु निरमलु होवै कटीरे काल की फासी राम ॥ कटीरे जम की फासी सिमरि अबिनासी सगल मंगल सुगिआना ॥
 हरि हरि जपु जपीरे दिनु राती लागै सहजि धिआना ॥ कलमल दुख जारे प्रभू चितारे मन की दुर्मति नासी ॥ कहु नानक
 प्रभ किरपा कीजै हरि गुण सुणीअहि अविनासी ॥ २ ॥ करोड़ि हसत तेरी टहल कमावहि चरण चलहि प्रभ मारगि राम
 ॥ भव सागर नाव हरि सेवा जो चढ़ै तिसु तारगि राम ॥ भवजलु तरिआ हरि हरि सिमरिआ सगल मनोरथ पूरे ॥ महा
 बिकार गए सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ मन बांछत फल पाए सगले कुदरति कीम अपारगि ॥ कहु नानक प्रभ किरपा
 कीजै मनु सदा चलै तेरै मारगि ॥ ३ ॥ एहो वरु एहा वडिआई इहु धनु होइ वडभागा राम ॥ एहो रँगु एहो रस भोगा हरि
 चरणी मनु लागा राम ॥ मनु लागा चरणे प्रभ की सरणे करण कारण गोपाला ॥ सभ किछु तेरा तू प्रभु मेरा मेरे ठाकुर दीन
 दइआला ॥ मोहि निरगुण प्रीतम सुख सागर सँतसँगि मनु जागा ॥ कहु नानक प्रभि किरपा कीनीह चरण कमल मनु
 लागा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ सूही महला ७ ॥ हरि जपे हरि मँदरु साजिआ सँत भगत गुण गावहि राम ॥ सिमरि सिमरि
 सुआमी प्रभु अपना सगले पाप तजावहि राम ॥ हरि गुण गाइ परम पदु पाइआ प्रभ की ऊतम बाणी ॥ सहज कथा प्रभ
 की अति मीठी कथी अकथ कहाणी ॥ भला सँजोगु मूरतु पलु साचा अबिचल नीव रखाई ॥ जन नानक प्रभ भए
 दइआला सरब कला बणि आई ॥ १ ॥ आनँदा वजहि नित वाजे पारब्रह्म मुनि वूठा राम ॥ गुरमुखे सचु करणी सारी
 बिनसे भ्रम भै झूठा राम ॥ अनहद बाणी गुरमुखि वखाणी जसु सुणि सुणि मनु तनु हरिआ ॥ सरब सुखा तिस ही बणि
 आए जो प्रभि अपना करिआ ॥ घर महि नव निधि भरे भँडारा राम नामि रँगु लागा ॥ नानक जन प्रभु कदे न विसरै पूरन
 जा के भागा ॥ २ ॥ छाइआ प्रभि छत्रपति कीनीह सगली तपति बिनासी राम ॥ दूख पाप का डेरा ढाठा कारजु आइआ
 रासी राम ॥ हरि प्रभि फुरमाइआ मिटी बलाइआ साचु धरमु पुँनु फलिआ ॥ सो प्रभु अपुना सदा धिआईरे सोवत बैसत

खलिआ ॥ गुण निधान सुख सागर सुआमी जलि थलि महीअलि सोई ॥ जन नानक प्रभ की सरणाई तिसु बिनु अवरु न
 कोई ॥ ३ ॥ मेरा घरु बनिआ बनु तालु बनिआ प्रभ परसे हरि राइआ राम ॥ मेरा मनु सोहिआ मीत साजन सरसे गुण
 मंगल हरि गाइआ राम ॥ गुण गाइ प्रभू धिआइ साचा सगल इछा पाईआ ॥ गुरु चरण लागे सदा जागे मनि वजीआ
 वाधाईआ ॥ करी नदरि सुआमी सुखहु गामी हलतु पलतु सवारिआ ॥ बिनवति नानक नित नामु जपीरे जीउ पिँडु जिनि
 धारिआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सूही महला ५ ॥ भै सागरो भै सागरु तरिआ हरि हरि नामु धिआए राम ॥ बोहिथड़ा हरि
 चरण अराधे मिलि सतिगुरु पारि लघाए राम ॥ गुरु सबदी तरीरे बहुडि न मरीरे चूकै आवण जाणा ॥ जो किछु करै सोई
 भल मानउ ता मनु सहजि समाणा ॥ दूख न भूख न रोगु न बिआपै सुख सागर सरणी पाए ॥ हरि सिमरि सिमरि नानक
 रँगि राता मन की चिँत मिटाए ॥ १ ॥ संत जना हरि मँत्रु द्विड़ाइआ हरि साजन वसगति कीने राम ॥ आपनड़ा मनु आगै
 धरिआ सरबसु ठाकुरि दीने राम ॥ करि अपुनी दासी मिटी उदासी हरि मँदरि थिति पाई ॥ अनद बिनोद सिमरहु प्रभु साचा
 विछुडि कबहू न जाई ॥ सा वडभागणि सदा सोहागणि राम नाम गुण चीनेह ॥ कहु नानक खहि रँगि राते प्रेम महा रसि
 भीने ॥ २ ॥ अनद बिनोद भए नित सखीए मंगल सदा हमारै राम ॥ आपनडै प्रभि आपि सीगारी सोबावँती नारे राम ॥
 सहज सुभाइ भए किरपाला गुण अवगण न बीचारिआ ॥ कँठि लगाइ लीए जन अपुने राम नाम उरि धारिआ ॥ मान मोह
 मद सगल बिआपी करि किरपा आपि निवारे ॥ कहु नानक भै सागरु तरिआ पूरन काज हमारे ॥ ३ ॥ गुण गोपाल
 गावहु नित सखीहो सगल मनोरथ पाए राम ॥ सफल जनमु होआ मिलि साधू एककारु धिआए राम ॥ जपि एक प्रभू
 अनेक रविआ सरब मँडलि छाइआ ॥ ब्रहमो पसारा ब्रहमु पसरिआ सभु ब्रहमु द्विसटी आइआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि
 पूरन तिसु बिना नही जाए ॥ पेखि दरसनु नानक बिगसे आपि लए मिलाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥ सूही महला ५ ॥

अबिचल नगरु गोबिंद गुरु का नामु जपत सुख पाइआ राम ॥ मन इछे सेई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥
 करतै आपि वसाइआ सब सुख पाइआ पुत भाई सिख बिगासे ॥ गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु आइआ रासे ॥ प्रभु
 आपि सुआमी आपे रखा आपि पिता आपि माइआ ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥ १ ॥
 घर मंदर हटनाले सोहे जिसु विचि नामु निवासी राम ॥ संत भगत हरि नामु अराधहि कटीरे जम की फासी राम ॥ काटी
 जम की फासी प्रभि अबिनासी हरि हरि नामु धिआए ॥ सगल समग्री पूरन होई मन इछे फल पाए ॥ संत सजन सुखि
 माणहि रलीआ दूख दरद भ्रम नासी ॥ सबदि सवारे सतिगुरि पूरै नानक सद बलि जासी ॥ २ ॥ दाति खसम की पूरी
 होई नित नित चडै सवाई राम ॥ पारब्रहमि खसमाना कीआ जिस दी वडी वडिआई राम ॥ आदि जुगादि भगतन का
 राखा सो प्रभु भइआ दइआला ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाए प्रभि आपे करि प्रतिपाला ॥ दह दिस पूरि रहिआ जसु
 सुआमी कीमति कहणु न जाई ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि अबिचल नीव रखाई ॥ ३ ॥ गिआन धिआन
 पूरन परमेसरु हरि हरि कथा नित सुणीरे राम ॥ अनहद चोज जगत भव भँजन अनहद वाजे धुनीरे राम ॥ अनहद
 झुणकारे ततु बीचारे संत गोसटि नित होवै ॥ हरि नामु अराधहि मैलु सभ काटहि किलविख सगले खोवै ॥ तह जनम न
 मरणा आवण जाणा बहुडि न पाईरे जोनीरे ॥ नानक गुरु परमेसरु पाइआ जिसु प्रसादि इछ पुनीरे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९
 ॥ सूही महला ७ ॥ संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कँमु करावणि आइआ राम ॥ धरति सुहावी तालु सुहावा विचि
 अँमित जलु छाइआ राम ॥ अँमित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥ जै जैकारु भइआ जग अंतरि
 लाथे सगल विसूरे ॥ पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥ अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक
 नामु धिआइआ ॥ १ ॥ नव निधि सिधि रिधि दिने करते तोटि न आवै काई राम ॥ खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ

करते की दाति सवाई राम ॥ दाति सवाई निखुटि न जाई अंतरजामी पाइआ ॥ कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेडै
आइआ ॥ सांति सहज आनंद घनेरे बिनसी भूख सवाई ॥ नानक गुण गावहि सुआमी के अचरजु जिसु वडिआई राम ॥ २ ॥
जिस का कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम ॥ भगत सोहनि हरि के गुण गावहि सदा करहि जैकारा राम ॥ गुण
गाइ गोबिंद अनद उपजे साधसंगति संगि बनी ॥ जिनि उदमु कीआ ताल केरा तिस की उपमा किआ गनी ॥ अठसठि तीरथ
पुंन किरिआ महा निरमल चारा ॥ पतित पावनु बिरदु सुआमी नानक सबद अधारा ॥ ३ ॥ गुण निधान मेरा प्रभु करता
उसतति कउनु करीजै राम ॥ सँता की बेनँती सुआमी नामु महा रसु दीजै राम ॥ नामु दीजै दानु कीजै बिसरु नाही इक खिनो
॥ गुण गोपाल उचरु रसना सदा गाईऐ अनदिनो ॥ जिसु प्रीति लागी नाम सेती मनु तनु अँमित भीजै ॥ बिनवँति नानक इछ
पुंनी पेखि दरसनु जीजै ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥

राग सूही महला ९ छँत १९ सतिगुर प्रसादि ॥

मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा ॥ हउ संमलिं थकी जी ओहु कदे न बोलै कउरा ॥ कउड़ा बोलिं न जानै पूरन भगवानै
अउगणु को न चितारे ॥ पतित पावनु हरि बिरदु सदाए इकु तिलु नही भँनै घाले ॥ घट घट वासी सरब निवासी नेरै ही ते नेरा ॥
नानक दासु सदा सरणागति हरि अँमित सजणु मेरा ॥ १ ॥ हउ बिसमु भई जी हरि दरसनु देखि अपारा ॥ मेरा सुंदरु सुआमी
जी हउ चरन कमल पग छारा ॥ प्रभ पेखत जीवा ठँठी थीवा तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ आदि अँति मधि प्रभु रविआ जलिं
थलिं महीअलिं सोई ॥ चरन कमल जपि सागरु तरिआ भवजल उतरे पारा ॥ नानक सरणिं पूरन परमेसुर तेरा अँतु न पारावारा
॥ २ ॥ हउ निमख न छोडा जी हरि प्रीतम प्रान अधारो ॥ गुरि सतिगुर कहिआ जी साचा अगम बीचारो ॥ मिलिं साधू दीना
ता नामु लीना जनम मरण दुख नाठे ॥ सहज सूख आनंद घनेरे हउमै बिनठी गाठे ॥ सभ कै मधि सभ हू ते बाहरि राग

दोख ते निआरो ॥ नानक दास गोबिंद सरणाई हरि प्रीतमु मनहि सधारो ॥ ३ ॥ मै खोजत खोजत जी हरि निहचलु सु
घरु पाइआ ॥ सभि अध्रुव डिठे जीउ ता चरन कमल चितु लाइआ ॥ प्रभु अबिनासी हउ तिस की दासी मरै न आवै जाए
॥ धरम अरथ काम सभि पूरन मनि चिंदी इछ पुजाए ॥ श्रुति सिम्रिति गुन गावहि करते सिध साधिक मुनि जन धिआइआ
॥ नानक सरनि क्रिपा निधि सुआमी वडभागी हरि हरि गाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥

१३ सतिगुर प्रसादि ॥ वार सूही की सलोका नालि महला ३ ॥

सलोकु मः ३ ॥ सूहै वेसि दोहागणी पर पिरु रावण जाइ ॥ पिरु छोडिआ घरि आपणै मोही दूजै भाइ ॥ मिठा करि कै
खाइआ बहु सादहु वधिआ रोगु ॥ सुधु भतारु हरि छोडिआ फिरि लगा जाइ विजोगु ॥ गुरुमुखि होवै सु पलटिआ हरि
राती साजि सीगारि ॥ सहजि सचु पिरु राविआ हरि नामा उर धारि ॥ आगिआकारी सदा सोहागणि आपि मेली करतारि
॥ नानक पिरु पाइआ हरि साचा सदा सोहागणि नारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सूहवीए निमाणीए सो सहु सदा सम्हालि ॥
नानक जनमु सवारहि आपणा कुलु भी छुटी नालि ॥ २ ॥ पउडी ॥ आपे तखतु रचाइओनु आकास पताला ॥ हुकमे
धरती साजीअनु सची धरमसाला ॥ आपि उपाइ खपाइदा सचे दीन दइआला ॥ सभना रिजकु सँबाहिदा तेरा हुकमु
निराला ॥ आपे आपि वरतदा आपे प्रतिपाला ॥ १ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहब ता सोहागणी जा मँनि लैहि सचु नाउ ॥
सतिगुरु अपणा मनाइ लै रूपु चडी ता अगला दूजा नाही थाउ ॥ ऐसा सीगारु बणाइ तू मैला कदे न होवई अहिनिसि
लागै भाउ ॥ नानक सोहागणि का किआ चिहनु है अँदरि सचु मुखु उजला खसमै माहि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ लोका वे
हउ सूहवी सूहा वेसु करी ॥ वेसी सहु न पाईऐ करि करि वेस रही ॥ नानक तिनी सहु पाइआ जिनी

गुर की सिख सुणी ॥ जो तिसु भावै सो थीरे इन बिधि कँत मिली ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हुकमी खिसटि साजीअनु बहु भिति
 संसारा ॥ तेरा हुकमु न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा ॥ इकना नो तू मेलि लैहि गुर सबदि बीचारा ॥ सचि रते से निरमले
 हउमै तजि विकारा ॥ जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलै सोई सचिआरा ॥ २ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहवीए सूहा सभु संसारु है जिन
 दुर्मति दूजा भाउ ॥ खिन महि झूठ सभु बिनसि जाइ जिउ टिकै न बिरख की छाउ ॥ गुरमुखि लालो लालु है जिउ रँगि मजीठ
 सचड़ाउ ॥ उलटी सकति सिवै घरि आई मनि वसिआ हरि अँमित नाउ ॥ नानक बलिहारी गुर आपणे जितु मिलिऐ हरि गुण
 गाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सूहा रँगु विकारु है कँतु न पाइआ जाइ ॥ इसु लहदे बिलम न होवई रँड बैठी दूजै भाइ ॥ मुँध इआणी
 दुँमणी सूहै वेसि लोभाइ ॥ सबदि सचै रँगु लालु करि भै भाइ सीगारु बणाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जि चलनि सतिगुर भाइ
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे आपि उपाइअनु आपि कीमति पाई ॥ तिस दा अँतु न जापई गुर सबदि बुझाई ॥ माइआ मोहु गुबारु
 है दूजै भरमाई ॥ मनमुख ठउर न पाइन्ही फिरि आवै जाई ॥ जो तिसु भावै सो थीरे सभ चलै रजाई ॥ ३ ॥ सलोकु मः ३ ॥
 सूहै वेसि कामणि कुलखणी जो प्रभ छोडि पर पुरख धरे पिआरु ॥ ओसु सीलु न संजमु सदा झूठु बोलै मनमुखि करम खुआरु
 ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै भतारु ॥ सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥ पेईरे साहुरै
 बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥ ओह रलाई किसै दि ना रलै जिसु रावे सिरजनहारु ॥ नानक गुरमुखि सदा
 सुहागणी जिसु अविनासी पुरखु भरतारु ॥ १ ॥ मः १ ॥ सूहा रँगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु ॥ सचा रँगु मजीठ का
 गुरमुखि ब्रहम बीचारु ॥ नानक प्रेम महा रसी सभि बुरिआईआ छारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इहु जगु आपि उपाइओनु करि चोज
 विडानु ॥ पँच धातु विचि पाईअनु मोहु झूठु गुमानु ॥ आवै जाइ भवाईरे मनमुखु अगिआनु ॥ इकना आपि बुझाइओनु
 गुरमुखि हरि गिआनु ॥ भगति खजाना बखसिओनु हरि नामु निधानु ॥ ४ ॥

सलोकु मः ३ ॥ सूहवीए सूहा वेसु छडि तू ता पिर लगी पिआरु ॥ सूहै वेसि पिरु किनै न पाइओ मनमुखि दडि मुई गावारि ॥
 ॥ सतिगुरि मिलिऐ सूहा वेसु गइआ हउमै विचहु मारि ॥ मनु तनु रता लालु होआ रसना रती गुण सारि ॥ सदा सोहागणि
 सबदु मनि भै भाइ करे सीगारु ॥ नानक करमी महलु पाइआ पिरु राखिआ उर धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मुँधे सूहा परहरहु लालु
 करहु सीगारु ॥ आवण जाणा वीसरै गुर सबदी वीचारु ॥ मुँध सुहावी सोहणी जिसु घरि सहजि भतारु ॥ नानक साधन
 रावीऐ रावे रावणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मोहु कूडु कुटँबु है मनमुखु मुगधु रता ॥ हउमै मेरा करि मुए किछु साथि न लिता ॥
 सिर उपरि जमकालु न सुझई दूजै भरमिता ॥ फिरि वेला हथि न आवई जमकालि वसि किता ॥ जेहा धुरि लिखि पाइओनु से
 करम कमिता ॥ ७ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतीआ एहि न आखीअनि जो मडिआ लगि जलँन्हि ॥ नानक सतीआ जाणीअन्हि
 जि बिरहे चोट मरँन्हि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ भी सो सतीआ जाणीअनि सील सँतोखि रहँन्हि ॥ सेवनि साई आपणा नित उठि
 सँहालँन्हि ॥ २ ॥ मः ३ ॥ कँता नालिं महेलीआ सेती अगि जलाहि ॥ जे जाणहि पिरु आपणा ता तनि दुख सहाहि ॥
 नानक कँत न जाणनी से किउ अगि जलाहि ॥ भावै जीवउ कै मरउ दूरहु ही भजि जाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तुधु दुखु सुखु नालिं
 उपाइआ लेखु करतै लिखिआ ॥ नावै जेवड होर दाति नाही तिसु रूपु न रिखिआ ॥ नामु अखुटु निधानु है गुरमुखि मनि
 वसिआ ॥ करि किरपा नामु देवसी फिरि लेखु न लिखिआ ॥ सेवक भाइ से जन मिले जिन हरि जपु जपिआ ॥ ६ ॥ सलोकु
 मः २ ॥ जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥ चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥ १ ॥ मः २ ॥ राति
 कारणि धनु सँचीऐ भलके चलणु होइ ॥ नानक नालिं न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥ २ ॥ मः २ ॥ बधा चटी जो भरे ना गुणु
 ना उपकारु ॥ सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥ ३ ॥ मः २ ॥ मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥ तरफ
 जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ करतै कारणु जिनि कीआ सो जाणै सोई ॥ आपे सिंसटि
 उपाईअनु

आपे फुनि गोई ॥ जुग चारे सभ भवि थकी किनि कीमति होई ॥ सतिगुरि एकु विखालिआ मनि तनि सुखु होई ॥
 गुरमुखि सदा सलाहीऐ करता करे सु होई ॥ ७ ॥ सलोक महला २ ॥ जिना भउ तिन्ह नाहि भउ मुचु भउ निभविआह ॥
 नानक एहु पटंतरा तितु दीबाणि गाइआह ॥ १ ॥ मः २ ॥ तुरदे कउ तुरदा मिलै उडते कउ उडता ॥ जीवते कउ जीवता
 मिलै मूए कउ मूआ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचु धिआइनि से सचे गुर सबदि
 वीचारी ॥ हउमै मारि मनु निरमला हरि नामु उरि धारी ॥ कोठे मँडप माड़ीआ लागि पए गावारी ॥ जिन्हि कीए तिसहि न
 जाणनी मनमुखि गुबारी ॥ जिसु बुझाइहि सो बुझसी सचिआ किआ जँत विचारी ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ कामणि तउ
 सीगारु करि जा पहिलां कँतु मनाइ ॥ मतु सेजै कँतु न आवई एवै बिरथा जाइ ॥ कामणि पिर मनु मानिआ तउ बणिआ
 सीगारु ॥ कीआ तउ परवाणु है जा सहु धरे पिआरु ॥ भउ सीगारु तबोल रसु भोजनु भाउ करेइ ॥ तनु मनु सउपे कँत
 कउ तउ नानक भोगु करेइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ काजल फूल तँबोल रसु ले धन कीआ सीगारु ॥ सेजै कँतु न आइओ एवै
 भइआ विकारु ॥ २ ॥ मः ३ ॥ धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥ एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ
 सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइ रँगु सवारि
 ॥ तनु मनु रता रँग सिउ हउमै तिसना मारि ॥ मनु तनु निरमलु अति सोहणा भेटिआ क्रिसन मुरारि ॥ भउ भाउ सभु
 तिस दा सो सचु वरतै संसारि ॥ ९ ॥ सलोक मः १ ॥ वाहु खसम तू वाह जिनि रचि रचना हम कीए ॥ सागर लहरि
 समुँद सर वेलि वरस वराहु ॥ आपि खडोवहि आपि करि आपीणै आपाहु ॥ गुरमुखि सेवा थाइ पवै उनमनि ततु कमाहु
 ॥ मसकति लहहु मजूरीआ मँगि मँगि खसम दराहु ॥ नानक पुर दर वेपरवाह तउ दरि ऊणा नाहि को सचा वेपरवाहु ॥ १
 ॥ महला १ ॥ उजल मोती सोहणे रतना नालि जुडँनि ॥ तिन जरु वैरी नानका जि बुढे थीइ मरँनि ॥ २ ॥

पउड़ी ॥ हरि सालाही सदा सदा तनु मनु सउपि सरीरु ॥ गुर सबदी सचु पाइआ सचा गहिर गँभीरु ॥ मनि तनि हिरदै
 रवि रहिआ हरि हीरा हीरु ॥ जनम मरण का दुखु गइआ फिरि पवै न फीरु ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि गुणी गहीरु ॥
 १० ॥ सलोक मः १ ॥ नानक इहु तनु जालि जिनि जलिऐ नामु विसारिआ ॥ पउदी जाइ परालि पिछै हथु न अँबडै तितु
 निवँधै तालि ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक मन के कँम फिटिआ गणत न आवही ॥ किती लहा सहँम जा बखसे ता धका नही
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा अमरु चलाइओनु करि सचु फुरमाणु ॥ सदा निहचलु रवि रहिआ सो पुरखु सुजाणु ॥ गुर
 परसदी सेवीऐ सचु सबदि नीसाणु ॥ पूरा थाटु बणाइआ रँगु गुरमति माणु ॥ अगम अगोचरु अलखु है गुरमुखि हरि
 जाणु ॥ ११ ॥ सलोक मः १ ॥ नानक बदरा माल का भीतरि धरिआ आणि ॥ खोटे खरे परखीअनि साहिब कै दीबाणि
 ॥ १ ॥ मः १ ॥ नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर ॥ इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर ॥ बाहरि
 धोती तूमड़ी अँदरि विसु निकोर ॥ साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे हुकमु चलाइदा
 जगु धँधै लाइआ ॥ इकि आपे ही आपि लाइअनु गुर ते सुखु पाइआ ॥ दह दिस इहु मनु धावदा गुरि ठाकि रहाइआ ॥
 नावै नो सभ लोचदी गुरमती पाइआ ॥ धुरि लिखिआ मेटि न सकीऐ जो हरि लिखि पाइआ ॥ १२ ॥ सलोक मः १ ॥
 दुइ दीवे चउदह हटनाले ॥ जेते जीअ तेते वणजारे ॥ खुलेह हट होआ वापारु ॥ जो पहुचै सो चलणहार ॥ धरमु
 दलालु पाए नीसाणु ॥ नानक नामु लाहा परवाणु ॥ घरि आए वजी वाधाई ॥ सच नाम की मिली वडिआई ॥ १ ॥ मः
 १ ॥ राती रोवनि कालीआ सुपेदा से वँन ॥ दिहु बगा तपै घणा कालिआ काले वँन ॥ अँधे अकली बाहरे मूरख अँध
 गिआनु ॥ नानक नदरी बाहरे कबहि न पावहि मानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु रचाइआ हरि सचै आपे ॥ इकि दुजै
 भाइ खुआइअनु हउमै विचि विआपे ॥ इहु मानस जनमु दुलँभु सा मनमुख सँतापे ॥ जिंसु आपि बुझाए सो बुझसी

जिसु सतिगुरु थापे ॥ सभु जगु खेलु रचाइओनु सभ वरतै आपे ॥ १३ ॥ सलोक मः १ ॥ चोरा जारा रँडीआ कुटणीआ
दीबाणु ॥ वेदीना की दोसती वेदीना का खाणु ॥ सिफती सार न जाणनी सदा वसै सैतानु ॥ गदहु चँदनि खउलीरे भी
साहू सिउ पाणु ॥ नानक कूड़ै कतिरे कूड़ा तणीरे ताणु ॥ कूड़ा कपडु कछीरे कूड़ा पैणु माणु ॥ १ ॥ मः १ ॥ बांगा
बुरगू सिँडीआ नाले मिली कलाण ॥ इकि दाते इकि मँगते नामु तेरा परवाणु ॥ नानक जिन्ही सुणि कै मँनिआ हउ तिना
विटहु कुरबाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु सभु कूडु है कूडो होइ गइआ ॥ हउमै झगड़ा पाइओनु झगड़ै जगु मुइआ ॥
गुरमुखि झगडु चुकाइओनु इको रवि रहिआ ॥ सभु आतमरामु पछाणिआ भउजलु तरि गइआ ॥ जोति समाणी जोति
विचि हरि नामि समाइआ ॥ १४ ॥ सलोक मः १ ॥ सतिगुर भीखिआ देहि मै तूँ सँप्रथु दातारु ॥ हउमै गरबु निवारीरे
कामु क्रोधु अहँकारु ॥ लबु लोभु परजालीरे नामु मिलै आधारु ॥ अहिनि सि नवतन निरमला मैला कबहूँ न होइ ॥ नानक
इह बिधि छुटीरे नदरि तेरी सुखु होइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ इको कँतु सबाईआ जिती दरि खडीआह ॥ नानक कँतै रतीआ
पुछहि बातडीआह ॥ २ ॥ मः १ ॥ सभे कँतै रतीआ मै दोहागणि कितु ॥ मै तनि अवगण एतडे खसमु न फेरे चितु ॥ ३
॥ मः १ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिना दै वाति ॥ सभि राती सोहागणी इक मै दोहागणि राति ॥ ४ ॥ पउड़ी
॥ दरि मँगतु जाचै दानु हरि दीजै क्रिपा करि ॥ गुरमुखि लेहु मिलाइ जनु पावै नामु हरि ॥ अनहद सबदु वजाइ जोती
जोति धरि ॥ हिरदै हरि गुण गाइ जै जै सबदु हरि ॥ जग महि वरतै आपि हरि सेती प्रीति करि ॥ १५ ॥ सलोक मः १ ॥
जिनी न पाइओ प्रेम रसु कँत न पाइओ साउ ॥ सुँजे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥ १ ॥ मः १ ॥ सउ ओलामे
दिनै के राती मिलन्हि सहँस ॥ सिफति सलाहणु छडि कै करँगी लगा हँसु ॥ फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ वधाइआ पेटु
॥ नानक सचे नाम विणु सभो दुसमनु हेतु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ढाढी गुण गावै नित जनमु सवारिआ ॥ गुरमुखि सेवि

सलाहि सचा उर धारिआ ॥ घरु दरु पावै महलु नामु पिआरिआ ॥ गुरमुखि पाइआ नामु हउ गुर कउ वारिआ ॥ तू आपि
 सवारहि आपि सिरजनहारिआ ॥ १६ ॥ सलोक मः १ ॥ दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥ बेद पाठ पति पापा खाइ ॥ उगवै सूरु न
 जापै चंदु ॥ जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥ बेद पाठ संसार की कार ॥ पडहि पडिह पंडित करहि बीचार ॥ बिनु बूझे
 सभ होइ खुआर ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारि ॥ १ ॥ मः १ ॥ सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ रसना
 फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ नानक पड़े किरति कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जि प्रभु सालाहे
 आपणा सो सोभा पाए ॥ हउमै विचहु दूरि करि सचु मँनि वसाए ॥ सचु बाणी गुण उचरै सचा सुखु पाए ॥ मेलु भइआ चिरी
 विछुँनिआ गुर पुरखि मिलाए ॥ मनु मैला इव सुधु है हरि नामु धिआए ॥ १७ ॥ सलोक मः १ ॥ काइआ कूमल फुल गुण
 नानक गुपसि माल ॥ एनी फुली रउ करे अवर कि चुणिअहि डाल ॥ १ ॥ महला २ ॥ नानक तिना बसँते है जिन्ह घरि
 वसिआ कंतु ॥ जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिशि फिरहि जलंत ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे बखसे दइआ करि गुर सतिगुर
 बचनी ॥ अनदिनु सेवी गुण रवा मनु सचै रचनी ॥ प्रभु मेश बेअंतु है अंतु किनै न लखनी ॥ सतिगुर चरणी लागिआ हरि नामु
 नित जपनी ॥ जो इछै सो फलु पाइसी सभि घरै विचि जचनी ॥ १८ ॥ सलोक मः १ ॥ पहिल बसँते आगमनि पहिला
 मउलिओ सोइ ॥ जितु मउलिरे सभ मउलीरे तिसहि न मउलिहु कोइ ॥ १ ॥ मः २ ॥ पहिल बसँते आगमनि तिस का करहु
 बीचारु ॥ नानक सो सालाहीरे जि सभसै दे आधारु ॥ २ ॥ मः २ ॥ मिलिरे मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥
 अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीरे सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि नामु सलाहीरे सचु कार कमावै ॥ दूजी कारै लागिआ
 फिरि जोनी पावै ॥ नामि रतिआ नामु पाईरे नामे गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सलाहीरे हरि नामि समावै ॥ सतिगुर सेवा सफल
 है सेविरे फल पावै ॥ १९ ॥ सलोक मः २ ॥ किस ही कोई कोइ मँजु निमाणी इकु तू ॥

किउ न मरीजै रोइ जा लगु चिति न आवही ॥ १ ॥ मः २ ॥ जां सुखु ता सहु राविओ दुखि भी सँमूहलिओइ ॥
 नानकु कहै सिआणीए इउ कँत मिलावा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ किआ सालाही किरम जँतु वडी तेरी वडिआई ॥ तू
 अगम दइआलु अगँमु है आपि लैहि मिलाई ॥ मै तुझ बिनु बेली को नही तू अँति सखाई ॥ जो तेरी सरणागती तिन
 लैहि छडाई ॥ नानक वेपरवाहु है तिसु तिलु न तमाई ॥ २० ॥ १ ॥

रागु सूही बाणी श्री कबीर जीउ तथा सभना भगता की ॥ कबीर के १८ शितिगुर प्रसादि ॥

अवतरि आइ कहा तुम कीना ॥ राम को नामु न कबहू लीना ॥ १ ॥ राम न जपहु कवन मति लागे ॥ मरि जइबे कउ
 किआ करहु अभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुख सुख करि कै कुटँबु जीवाइआ ॥ मरती बार इकसर दुखु पाइआ ॥ २ ॥
 कँठ गहन तब करन पुकारा ॥ कहि कबीर आगे ते न सँम्हारा ॥ ३ ॥ १ ॥ सूही कबीर जी ॥ थरहर कँपै बाला जीउ
 ॥ ना जानउ किआ करसी पीउ ॥ १ ॥ रैनि गई मत दिनु भी जाइ ॥ भवर गए बग बैठे आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काचै
 करवै रहै न पानी ॥ हँसु चलिआ काइआ कुमलानी ॥ २ ॥ कुआर कँनिआ जैसे करत सीगारा ॥ किउ रलीआ मानै
 बाझु भतारा ॥ ३ ॥ काग उडावत भुजा पिरानी ॥ कहि कबीर इह कथा सिरानी ॥ ४ ॥ २ ॥ सूही कबीर जीउ ॥
 अमलु सिरानो लेखा देना ॥ आए कठिन दूत जम लेना ॥ किआ तै खटिआ कहा गवाइआ ॥ चलहु सिताब दीबानि
 बुलाइआ ॥ १ ॥ चलु दरहालु दीवानि बुलाइआ ॥ हरि फुरमानु दरगह का आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करउ अरदासि
 गाव किछु बाकी ॥ लेउ निबेरि आजु की राती ॥ किछु भी खरचु तुमूहरा सारउ ॥ सुबह निवाज सराइ गुजारउ ॥ २
 ॥ साधसँगि जा कउ हरि रँगु लागा ॥ धनु धनु सो जनु पुरखु सभागा ॥ ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ जनमु पदारथु
 जीति अमोले ॥ ३ ॥ जागतु सोइआ जनमु गवाइआ ॥ मालु धनु जोरिआ भइआ पराइआ ॥ कहु कबीर

तेई नर भूले ॥ खसमु बिसारि माटी सँगि रूले ॥ ४ ॥ ३ ॥ सूही कबीर जीउ ललित ॥ थाके नैन स्रवन सुनि थाके
 थाकी सुँदरि काइआ ॥ जरा हाक दी सभ मति थाकी एक न थाकसि माइआ ॥ १ ॥ बावरे तै गिआन बीचारु न पाइआ
 ॥ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तब लगु प्राणी तिसै सरेवहु जब लगु घट महि सासा ॥ जे घटु जाइ त भाउ न
 जासी हरि के चरन निवासा ॥ २ ॥ जिस कउ सबदु बसावै अंतरि चूकै तिसहि पिआसा ॥ हुकमै बूझै चउपड़ि खेलै मनि
 जिणि ढाले पासा ॥ ३ ॥ जो जन जानि भजहि अबिगत कउ तिन का कछु न नासा ॥ कहु कबीर ते जन कबहु न हारहि
 ढालि जु जानहि पासा ॥ ४ ॥ ४ ॥ सूही ललित कबीर जीउ ॥ एकु कोटु पँच सिकदारा पँचे मागहि हाला ॥ जिमी नाही
 मै किसी की बोई ऐसा देनु दुखाला ॥ १ ॥ हरि के लोगा मो कउ नीति डसै पटवारी ॥ ऊपरि भुजा करि मै गुरु पहि
 पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नउ डाडी दस मुँसफ धावहि रईअति बसन न देही ॥ डोरी पूरी मापहि
 नाही बहु बिसटाला लेही ॥ २ ॥ बहतारि घर इकु पुरखु समाइआ उनि दीआ नामु लिखाई ॥ धरमराइ का दफतरु
 सोधिआ बाकी रिजम न काई ॥ ३ ॥ सँता कउ मति कोई निँदहु सँत रामु है एको ॥ कह कबीर मै सो गुरु पाइआ जा का
 नाउ बिबेको ॥ ४ ॥ ५ ॥

शगु सूही बाणी श्री रविदास जीउ की १८ शितिगुर प्रसादि ॥

सह की सार सुहागनि जानै ॥ तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥ तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥ अवरा देखि न सुनै
 अभाखै ॥ १ ॥ सो कत जानै पीर पराई ॥ जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखी दुहागनि दुइ परख हीनी ॥
 जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥ पुर सलात का पँथु दुहेला ॥ सँगि न साथी गवनु इकेला ॥ २ ॥ दुखीआ दरदवँदु
 दरि आइआ ॥ बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥ कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥ जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥ ३
 ॥ १ ॥ सूही ॥ जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥ करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ सँगु चलत है हम भी चलना ॥ दूरि

गवनु सिर ऊपरि मरना ॥ १ ॥ किआ तू सोइआ जागु इआना ॥ तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि
 जीउ दीआ सु रिजकु अँबरवै ॥ सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥ करि बँदगी छाडि मै मेरा ॥ हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥ २
 ॥ जनमु सिरानो पँथु न सवारा ॥ सांझ परी दह दिस अँधिआरा ॥ कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ चैतसि नाही दुनीआ
 फन खाने ॥ ३ ॥ २ ॥ सूही ॥ ऊचे मँदर साल रसोई ॥ एक घरी फुनि रहनु न होई ॥ १ ॥ इहु तनु ऐसा जैसे घास की
 टाटी ॥ जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भाई बँध कुटँब सहेरा ॥ ओइ भी लागे काटु सवेरा ॥ २ ॥
 घर की नारि उरहि तन लागी ॥ उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥ ३ ॥ कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥ हम तउ एक रामु
 कहि छूटिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥

१८ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही बाणी सेख फरीद जी की ॥

तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥ बावलि होई सो सहु लोरउ ॥ तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥ मुझु अवगन सह नाही दोसु
 ॥ १ ॥ तै साहिब की मै सार न जानी ॥ जोबनु खोइ पाछे पछुतानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काली कोइल तू कित गुन काली ॥
 अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥ पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ॥ जा होइ क्रिपालु ता प्रभू मिलाए ॥ २ ॥ विधण खूही
 मुँध अकेली ॥ ना को साथी ना को बेली ॥ करि किरपा प्रभि साधसँगि मेली ॥ जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥ ३ ॥
 वाट हमारी खरी उडीणी ॥ खँनिअहु तिखी बहतु पिईणी ॥ उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥ सेख फरीदा पँथु समाहरि सवेरा ॥
 ४ ॥ १ ॥ सूही ललित ॥ बेड़ा बँधि न सकिओ बँधन की वेला ॥ भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥ १ ॥ हथु न
 लाइ कसुँभडै जलि जासी ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक आपीन्है पतली सह केरे बोला ॥ दुधा थणी न आवई फिरि होइ न
 मेला ॥ २ ॥ कहै फरीदु सहेलीहो सहु अलाएसी ॥ हँसु चलसी डुँमणा अहि तनु ढेरी थीसी ॥ ३ ॥ २ ॥

१ॐ शक्तिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥ १ ॥ तेरे गुण गावा
देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा
अँतु न जाणा मेरे साहिब मै अँधुले किआ चतुराई ॥ २ ॥ किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥ जो
तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ भगति हीणु नानकु जे
होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला १ ॥ मनु मँदरु तनु वेस कलँदरु घट ही तीरथि नावा ॥
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुडि जनमि न आवा ॥ १ ॥ मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई
॥ हम नाही चिँत पराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिँता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि
भरपुरि लीणा घटि घटि जोटि तुमूहरी ॥ २ ॥ सिख मति सभ बुधि तुमूहरी मँदिर छावा तेरे ॥ तुझ बिनु अवरु न
जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥ ३ ॥ जीअ जँत सभि सरणि तुमूहरी सरब चिँत तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई
चँगा इक नानक की अरदासे ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु महला १ ॥ आपे सबदु आपे नीसानु ॥ आपे सुरता आपे

जानु ॥ आपे करि करि वेखै ताणु ॥ तू दाता नामु परवाणु ॥ १ ॥ ऐसा नामु निरँजनु देउ ॥ हउ जाचिकु तू अलख
 अभेउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु धरकटी नारि ॥ भूँडी कामणि कामणिआरि ॥ राजु रूपु झूठा दिन चारि ॥ नामु
 मिलै चानणु अँधिआरि ॥ २ ॥ चखि छोडी सहसा नही कोइ ॥ बापु दिसै वेजाति न होइ ॥ एको कउ नाही भउ कोइ ॥
 करता करे करावै सोइ ॥ ३ ॥ सबदि मुए मनु मन ते मारिआ ॥ ठाकि रहे मनु साचै धारिआ ॥ अवरु न सूझै गुर कउ
 वारिआ ॥ नानक नामि रते निसतारिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिलावलु महला १ ॥ गुर बचनी मनु सहज धिआने ॥ हरि कै
 रँगि रता मनु माने ॥ मनमुख भरमि भुले बउराने ॥ हरि बिनु किउ रहीरे गुर सबदि पछाने ॥ १ ॥ बिनु दरसन कैसे
 जीवउ मेरी माई ॥ हरि बिनु जीअरा रहि न सकै खिनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु बिसरै हउ मरउ
 दुखाली ॥ सासि गिरासि जपउ अपुने हरि भाली ॥ सद बैरागनि हरि नामु निहाली ॥ अब जाने गुरमुखि हरि नाली ॥
 २ ॥ अकथ कथा कहीरे गुर भाइ ॥ प्रभु अगम अगोचरु देइ दिखाइ ॥ बिनु गुर करणी किआ कार कमाइ ॥ हउमै मेटि
 चलै गुर सबदि समाइ ॥ ३ ॥ मनमुखु विछुडै खोटी रासि ॥ गुरमुखि नामि मिलै साबासि ॥ हरि किरपा धारी दासनि
 दास ॥ जन नानक हरि नाम धनु रासि ॥ ४ ॥ ४ ॥

बिलावलु महला ३ वरु १ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

धिगु धिगु खाइआ धिगु धिगु सोइआ ॥ धिगु धिगु कापडु अँगि चड़ाइआ ॥ धिगु सरीरु कुटँब सहित सिउ जितु हुणि
 खसमु न पाइआ ॥ पउडी छुडकी फिरि हाथि न आवै अहिला जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ दूजा भाउ न देई लिव लागणि
 जिनि हरि के चरण विसारे ॥ जगजीवन दाता जन सेवक तेरे तिन के तै दूख निवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू दइआलु
 दइआपति दाता किआ एहि जँत विचारे ॥ मुक्त बँध सभि तुझ ते होए ऐसा आखि वखाणे ॥ गुरमुखि होवै सो मुक्तु
 कहीरे मनमुख बँध विचारे ॥ २ ॥ सो जनु मुक्तु जिसु एक लिव लागी सदा रहै हरि नाले ॥ तिन की गहण गति

कही न जाई सचै आपि सवारे ॥ भरमि भुलाणे सि मनमुख कहीअहि ना उरवारि न पारे ॥ ३ ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु
 पाए गुर का सबदु समाहले ॥ हरि जन माइआ माहि निसतारे ॥ नानक भागु होवै जिसु मसतकि कालहि मारि बिदारे ॥ ४ ॥
 १ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ अतुलु किउ तोलिआ जाइ ॥ दूजा होइ त सोइरी पाइ ॥ तिस ते दूजा नाही कोइ ॥ तिस दी
 कीमति किक्को होइ ॥ १ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ ता को जाणै दुबिधा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि सराफु कसवटी
 लाए ॥ आपे परखे आपि चलाए ॥ आपे तोले पूरा होइ ॥ आपे जाणै एको सोइ ॥ २ ॥ माइआ का रूपु सभु तिस ते होइ ॥
 जिस नो मेले सु निरमलु होइ ॥ जिस नो लाए लगै तिसु आइ ॥ सभु सचु दिखाले ता सचि समाइ ॥ ३ ॥ आपे लिव धातु है
 आपे ॥ आपि बुझाए आपे जापे ॥ आपे सतिगुरु सबदु है आपे ॥ नानक आखि सुणाए आपे ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु महला
 ३ ॥ साहिब ते सेवकु सेव साहिब ते किआ को कहै बहाना ॥ ऐसा इकु तेरा खेलु बनिआ है सभ महि एकु समाना ॥ १ ॥
 सतिगुरि परचै हरि नामि समाना ॥ जिसु करमु होवै सो सतिगुरु पाए अनदिनु लागै सहज धिआना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ
 कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना ॥ जब अपुनी जोति खिँचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना ॥ २ ॥
 आपे गुरु चेला है आपे आपे गुणी निधाना ॥ जिउ आपि चलाए तिवै कोई चालै जिउ हरि भावै भगवाना ॥ ३ ॥ कहत नानकु
 तू साचा साहिबु कउणु जाणै तेरे कामां ॥ इकना घर महि दे वडिआई इकि भरमि भवहि अभिमाना ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिलावलु
 महला ३ ॥ पूरा थाटु बणाइआ पूरै वेखहु एक समाना ॥ इसु परपँच महि साचे नाम की वडिआई मतु को धरहु गुमाना ॥ १ ॥
 सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि समाना ॥ इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ चहु जुगा का हुणि निबेड़ा नर मनुरा नो एकु निधाना ॥ जतु संजम तीरथ ओना जुगा का धरमु है कलि महि कीरति
 हरि नामा ॥ २ ॥ जुगि जुगि आपो आपणा धरमु है सोधि देखहु बेद पुराना ॥ गुरमुखि जिनी धिआइआ हरि हरि जगि

ते पूरे परवाना ॥ ३ ॥ कहत नानक सचे सिउ प्रीति लाए चूकै मनि अभिमाना ॥ कहत सुणत सबे सुख पावहि मानत पाहि
 निधाना ॥ ४ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ गुरमुखि प्रीति जिस नो आपे लाए ॥ तितु घरि बिलावलु गुर सबदि सुहाए ॥
 मंगलु नारी गावहि आए ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पाए ॥ १ ॥ हउ तिन बलिहारै जिन्ह हरि मनि वसाए ॥ हरि जन कउ
 मिलिआ सुखु पाईऐ हरि गुण गावै सहजि सुभाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा रंगि राते तेरै चाए ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आए ॥
 आपे सोभा सद ही पाए ॥ गुरमुखि मेलै मेलि मिलाए ॥ २ ॥ गुरमुखि राते सबदि रंगाए ॥ निज घरि वासा हरि गुण गाए ॥
 रंगि चललौ हरि रसि भाए ॥ इहु रंगु कदे न ऊतरै साचि समाए ॥ ३ ॥ अंतरि सबदु मिटिआ अगिआनु अंधेरा ॥ सतिगुर
 गिआनु मिलिआ प्रीतमु मेरा ॥ जो सचि राते तिन बहुडि न फेरा ॥ नानक नामु द्विडाए पूरा गुरु मेरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ बिलावलु
 महला ३ ॥ पूरे गुर ते वडिआई पाई ॥ अचिंत नामु वसिआ मनि आई ॥ हउमै माइआ सबदि जलाई ॥ दरि साचै गुर ते सोभा
 पाई ॥ १ ॥ जगदीस सेवउ मै अवरु न काजा ॥ अनदिनु अनदु होवै मनि मेरै गुरमुखि मागउ तेरा नामु निवाजा ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ मन की परतीति मन ते पाई ॥ पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥ जीवण मरणु के समसरि वेखै ॥ बहुडि न मरै ना जमु पेखै ॥ २ ॥
 घर ही महि सभि कोट निधान ॥ सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥ सद ही लागा सहजि धिआन ॥ अनदिनु गावै एको नाम
 ॥ ३ ॥ इसु जुग महि वडिआई पाई ॥ पूरे गुर ते नामु धिआई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥ सदा सुखदाता कीमति नही
 पाई ॥ ४ ॥ पूरे भागि गुरु पूरा पाइआ ॥ अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ॥ गुर का सबदु अति मीठा लाइआ ॥ नानक तिसन
 बुझी मनि तनि सुखु पाइआ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १० ॥

रागु बिलावलु महला ४ घरु ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

उदम मति प्रभ अंतरजामी जिउ प्रेरे तिउ करना ॥ जिउ नटूआ

तँत वजाए तँती तिउ वाजहि जँत जना ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु रसना ॥ मसतकि लिखत लिखे गुरु पाइआ हरि हिरदै
 हरि बसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ गिरसति भ्रमतु है प्रानी रखि लेवहु जनु अपना ॥ जिउ प्रहिलादु हरणाखसि गसिओ
 हरि राखिओ हरि सरना ॥ २ ॥ कवन कवन की गति मिति कहीऐ हरि कीए पतित पवँना ॥ ओहु ढोवै ढोर हाथि चमु चमरे
 हरि उधरिओ परिओ सरना ॥ ३ ॥ प्रभ दीन दइआल भगत भव तारन हम पापी राखु पपना ॥ हरि दासन दास दास हम
 करीअहु जन नानक दास दासँना ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख
 अजनमा ॥ करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नामै रामा ॥ गुरमति हरि
 रसु पाईऐ होरि तिआगहु निहफल कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन सेवक से हरि तारे हम निरगनु राखु उपमा ॥ तुझ बिनु
 अवरु न कोई मेरे ठाकुर हरि जपीऐ वडे करँमा ॥ २ ॥ नाम हीन धिगु जीवते तिन वड दूख सहँमा ॥ ओइ फिरि फिरि
 जोनि भवाईअहि मँदभागी मूड अकरमा ॥ ३ ॥ हरि जन नामु अधारु है धुरि पूरबि लिखे वड करमा ॥ गुरि सतिगुरि नामु
 दिड़ाइआ जन नानक सफलु जनँमा ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ हमरा चितु लुभत मोहि बिखिआ बहु दुरमति मैलु
 भरा ॥ तुम्हरी सेवा करि न सकह प्रभ हम किउ करि मुगध तरा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि नरहर नामु नरहरा ॥ जन ऊपरि
 किरपा प्रभि धारी मिलि सतिगुर पारि परा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरे पिता ठाकुर प्रभ सुआमी हरि देहु मती जसु करा ॥ तुम्हरे
 सँगि लगे से उधरे जिउ सँगि कासट लोह तरा ॥ २ ॥ साकत नर होछी मति मधिम जिन्ह हरि हरि सेव न करा ॥ ते नर
 भागहीन दुहचारी ओइ जनमि मुए फिरि मरा ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम्ह हरि मेलहु सुआमी ते न्हाए सँतोख गुर सरा ॥ दुरमति
 मैलु गई हरि भजिआ जन नानक पारि परा ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ आवहु सँत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि
 कथा करहु ॥ हरि हरि नामु बोहिथु है कलजुगि खेवटु गुर सबदि तरहु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि गुण हरि

उचरहु ॥ मसतकि लिखत लिखे गुन गाए मिलि संगति पारि परहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगर महि राम रसु ऊतमु किउ
 पाईऐ उपदेसु जन करहु ॥ सतिगुरु सेवि सफल हरि दरसनु मिलि अँमितु हरि रसु पीअहु ॥ २ ॥ हरि हरि नामु अँमितु हरि
 मीठा हरि संतहु चाखि दिखहु ॥ गुरमति हरि रसु मीठा लागा तिन बिसरे सभि बिख रसहु ॥ ३ ॥ राम नामु रसु राम रसाइणि
 हरि सेवहु संत जनहु ॥ चारि पदारथ चारे पाए गुरमति नानक हरि भजहु ॥ ४ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ खत्री ब्राहमणु
 सूदु वैसु को जापै हरि मंत्रु जपैनी ॥ गुरु सतिगुरु पारब्रह्म करि पूजहु नित सेवहु दिनसु सभ रैनी ॥ १ ॥ हरि जन देखहु
 सतिगुरु नैनी ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु हरि बोलहु गुरमती बैनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव चितवीअहि बहुतेरे सा
 होवै जि बात होवैनी ॥ अपना भला सभु कोई बाझै सो करे जि मेरै चिति न चितैनी ॥ २ ॥ मन की मति तिआगहु हरि जन
 एहा बात कठैनी ॥ अनदिनु हरि हरि नामु धिआवहु गुर सतिगुर की मति लैनी ॥ ३ ॥ मति सुमति तेरै वसि सुआमी हम जंत
 तू पुरखु जंतैनी ॥ जन नानक के प्रभ करते सुआमी जिउ भावै तिवै बुलैनी ॥ ४ ॥ ५ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ अनद मूलु
 धिआइओ पुरखोतमु अनदिनु अनद अनँदे ॥ धरमराइ की काणि चुकाई सभि चूके जम के छँदे ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नामु
 गोविंदे ॥ वडभागी गुरु सतिगुरु पाइआ गुण गाए परमानँदे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत मूड माइआ के बधिक विचि माइआ
 फिरहि फिरँदे ॥ त्रिसना जलत किरत के बाधे जिउ तेली बलद भवँदे ॥ २ ॥ गुरमुखि सेव लगे से उधरे वडभागी सेव करँदे ॥
 जिन हरि जपिआ तिन फलु पाइआ सभि तूटे माइआ फँदे ॥ ३ ॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु सभु आपे आपि गोविंदे ॥ जन
 नानक आपे आपि सभु वरतै जिउ राखै तिवै रहँदे ॥ ४ ॥ ६ ॥

१३ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिलावलु महला ४ पडताल घरु १३ ॥

बोलहु भईआ

राम नामु पतित पावनो ॥ हरि संत भगत तारनो ॥ हरि भरिपुरे रहिआ ॥ जलि थले राम नामु ॥ नित गाईरे हरि दूख
बिसारनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीआ है सफल जनमु हमारा ॥ हरि जपिआ हरि दूख बिसारनहारा ॥ गुरु भेटिआ है
मुक्ति दाता ॥ हरि कीई हमारी सफल जाता ॥ मिलि संगती गुन गावनो ॥ १ ॥ मन राम नाम करि आसा ॥ भाउ
दूजा बिनसि बिनासा ॥ विचि आसा होइ निरासी ॥ सो जनु मिलिआ हरि पासि ॥ कोई राम नाम गुन गावनो ॥ जनु
नानकु तिसु पगि लावनो ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ १७ ॥

रागु बिलावलु महाला ५ चउपदे घरु १ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

नदरी आवै तिसु सिउ मोहु ॥ किउ मिलीरे प्रभ अबिनासी तोहि ॥ करि किरपा मोहि मारगि पावहु ॥ साधसंगति कै
अंचलि लावहु ॥ १ ॥ किउ तरीरे बिखिआ संसारु ॥ सतिगुरु बोहिथु पावै पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पवन झुलारे
माइआ देइ ॥ हरि के भगत सदा थिरु सेइ ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा ॥ सिर ऊपरि आपि गुरु रखवारा ॥ २ ॥
पाइआ वेडु माइआ सरब भुइअंगा ॥ हउमै पचे दिपक देखि पतंगा ॥ सगल सीगार करे नही पावै ॥ जा होइ क्रिपालु
ता गुरु मिलावै ॥ ३ ॥ हउ फिरउ उदासी मै इकु रतनु दसाइआ ॥ निरमोलकु हीरा मिलै न उपाइआ ॥ हरि का मंदरु
तिसु महि लालु ॥ गुरि खोलिआ पड़दा देखि भई निहालु ॥ ४ ॥ जिनि चाखिआ तिसु आइआ सादु ॥ जिउ गूंगा
मन महि बिसमादु ॥ आनद रूपु सभु नदरी आइआ ॥ जन नानक हरि गुण आखि समाइआ ॥ ५ ॥ १ ॥ बिलावलु
महाल ५ ॥ सरब कलिआण कीए गुरदेव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ बिघनु न लागै जपि अलख अभेव ॥ १ ॥
धरति पुनीत भई गुन गाए ॥ दुरतु गइआ हरि नामु धिआए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभनी थाई रविआ आपि ॥ आदि
जुगादि जा का वड परतापु ॥ गुर परसादि न होइ संतापु ॥ २ ॥ गुर के चरन लगे मनि मीठे ॥ निरबिघन होइ सभ
थाई वूठै ॥ सभि सुख पाए सतिगुर तूठे ॥ ३ ॥ पारब्रहमु प्रभ भए रखवाले ॥ जिथै किथै दिसहि नाले ॥ नानक दास

खसमि प्रतिपाले ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुख निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे ॥
मोहि अनाथ तुमरी सरणाई ॥ करि किरपा हरि चरन धिआई ॥ १ ॥ दइआ करहु बसहु मनि आइ ॥ मोहि निरगुन लीजै
लड़ि लाइ ॥ रहाउ ॥ प्रभु चिति आवै ता कैसी भीड़ ॥ हरि सेवक नाही जम पीड़ ॥ सरब दूख हरि सिमरत नसे ॥ जा
कै सँगि सदा प्रभु बसै ॥ २ ॥ प्रभ का नामु मनि तनि आधारु ॥ बिसरत नामु होवत तनु छारु ॥ प्रभ चिति आए पूरन
सभ काज ॥ हरि बिसरत सभ का मुहताज ॥ ३ ॥ चरन कमल सँगि लगी प्रीति ॥ बिसरि गई सभ दुर्मति रीति ॥ मन
तन अँतरि हरि हरि मँत ॥ नानक भगतन कै घरि सदा अनँद ॥ ४ ॥ ३ ॥

शुगु बिलावलु महला ५ घरु २ थानडीए कै घरि गावणा १४ सतिगुरु प्रसादि ॥

मै मनि तेरी टेक मेरे पिआरे मै मनि तेरी टेक ॥ अवर सिआणपा बिरथीआ पिआरे राखन कउ तुम एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सतिगुरु पूरा जे मिलै पिआरे सो जनु होत निहाला ॥ गुरु की सेवा सो करे पिआरे जिस नो होइ दइआला ॥ सफल मूरति
गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे ॥ नानक गुरु पारब्रह्मु परमेसरु सदा सदा हजूरै ॥ १ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तिना
की जिन्ह अपुना प्रभु जाता ॥ हरि नामु अराधहि नामु वखाणहि हरि नामे ही मनु राता ॥ सेवकु जन की सेवा मागै पूरै
करमि कमावा ॥ नानक की बेनँती सुआमी तेरे जन देखणु पावा ॥ २ ॥ वडभागी से काढीअहि पिआरे सँतसँगति जिना
वासो ॥ अँमित नामु अराधीरे निरमलु मनै होवै परगासो ॥ जनम मरण दुखु काटीरे पिआरे चूकै जम की काणे ॥ तिना
परापति दरसनु नानक जो प्रभु अपणे भाणे ॥ ३ ॥ ऊच अपार बेअँत सुआमी कउणु जाणै गुण तेरे ॥ गावते उधरहि
सुणते उधरहि बिनसहि पाप घनेरे ॥ पसू परेत मुगध कउ तारे पाहन पारि उतारै ॥ नानक दास तेरी सरणाई सदा सदा
बलिहारै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिखै बनु फीका तिआगिरी सखीए नामु महा रसु पीओ ॥ बिनु

रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ ॥ मानु महतु न सकति ही काई साधा दासी थीओ ॥ नानक से दरि
सोभावते जो प्रभि अपुनै कीओ ॥ १ ॥ हरिचंदउरी चित भ्रमु सखीए मिग त्रिसना द्रुम छाइआ ॥ चंचलि सँगि न चालती
सखीए अँति तजि जावत माइआ ॥ रसि भोगण अति रूप रस माते इन सँगि सूख न पाइआ ॥ धँनि धँनि हरि साथ जन
सखीए नानक जिनी नामु धिआइआ ॥ २ ॥ जाइ बसहु वडभागणी सखीए सँता सँगि समाईरे ॥ तह दूख न भूख न रोगु
बिआपै चरन कमल लिव लाईरे ॥ तह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु सरणी पाईरे ॥ प्रेम बिछोहु न मोहु बिआपै
नानक हरि एकु धिआईरे ॥ ३ ॥ द्रिसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रतडे सहजि सुभाए ॥ सेज सुहावी सँगि मिलि प्रीतम
अनद मँगल गुण गाए ॥ सखी सहेली राम रँगि राती मन तन इछ पुजाए ॥ नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा
कछू न जाए ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥

रागु बिलावलु महला ७ वरु ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

क रूप सगलो पासारा ॥ आपे बनजु आपि बिउहारा ॥ १ ॥ ऐसो गिआनु बिरलो ई पाए ॥ जत जत जाईरे तत द्रिसटाए
॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक रँग निरगुन इक रँगा ॥ आपे जलु आप ही तरँगा ॥ २ ॥ आप ही मँदरु आपहि सेवा ॥ आप ही
पूजारी आप ही देवा ॥ ३ ॥ आपहि जोग आप ही जुगता ॥ नानक के प्रभ सद ही मुक्ता ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ बिलावलु
महला ७ ॥ आपि उपावन आपि सधरना ॥ आपि करावन दोसु न लैना ॥ १ ॥ आपन बचनु आप ही करना ॥ आपन
बिभउ आप ही जरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आप ही मसटि आप ही बूलना ॥ आप ही अछलु न जाई छलना ॥ २ ॥ आप ही
गुप्त आपि परगटना ॥ आप ही घटि घटि आपि अलिपना ॥ ३ ॥ आपे अविगतु आप सँगि रचना ॥ कहु नानक प्रभ के
सभि जचना ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥ बिलावलु महला ७ ॥ भूले मारगु जिनिहि बताइआ ॥ ऐसा गुरु वडभागी पाइआ ॥ १ ॥
सिमरि मना राम नामु चितारे ॥

बसि रहे हिरदै गुर चरन पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीना ॥ बँधन काटि मुकति गुरि कीना ॥
 २ ॥ दुख सुख करत जनमि फुनि मूआ ॥ चरन कमल गुरि आस्रमु दीआ ॥ ३ ॥ अगनि सागर बूडत संसार ॥ नानक
 बाह पकरि सतिगुरि निसतारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ तनु मनु धनु अरपउ सभु अपना ॥ कवन सुमति
 जितु हरि हरि जपना ॥ १ ॥ करि आसा आइओ प्रभ मागनि ॥ तुम्ह पेखत सोभा मेरै आगनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक
 जुगति करि बहुतु बीचारउ ॥ साधसँगि इसु मनहि उधारउ ॥ २ ॥ मति बुधि सुरति नाही चतुराई ॥ ता मिलीरे जा लए
 मिलाई ॥ ३ ॥ नैन संतोखे प्रभ दरसन पाइआ ॥ कहु नानक सफलु सो आइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९ ॥ बिलावलु महला ५
 ॥ मात पिता सुत साथि न माइआ ॥ साधसँगि सभु दूखु मिटाइआ ॥ १ ॥ रवि रहिआ प्रभु सभ महि आपे ॥ हरि जपु
 रसना दुखु न विआपे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिखा भूख बहु तपति विआपिआ ॥ सीतल भए हरि हरि जसु जापिआ ॥ २ ॥
 कोटि जतन संतोखु न पाइआ ॥ मनु तिपताना हरि गुण गाइआ ॥ ३ ॥ देहु भगति प्रभ अंतरजामी ॥ नानक की बेनँती
 सुआमी ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरु पूरा वडभागी पाईरे ॥ मिलि साधू हरि नामु धिआईरे ॥ १ ॥
 पारब्रहम प्रभ तेरी सरना ॥ किलबिख काटै भजु गुर के चरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवरि करम सभि लोकाचार ॥ मिलि साधू
 सँगि होइ उधार ॥ २ ॥ सिँमिति सासत बेद बीचारे ॥ जपीरे नामु जितु पारि उतारे ॥ ३ ॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा
 करीरे ॥ साधू धूरि मिलै निसतरीरे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ११ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुर का सबदु रिदै महि चीना ॥ सगल
 मनोरथ पूरन आसीना ॥ १ ॥ संत जना का मुखु ऊजलु कीना ॥ करि किरपा अपुना नामु दीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँध
 कूप ते करु गहि लीना ॥ जै जैकारु जगति प्रगटीना ॥ २ ॥ नीचा ते ऊच ऊन पूरीना ॥ अँमित नामु महा रसु लीना ॥
 ३ ॥ मन तन निरमल पाप जलि खीना ॥ कहु नानक प्रभ भए प्रसीना ॥ ४ ॥ ७ ॥ १२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥

सगल मनोरथ पाईअहि मीता ॥ चरन कमल सिउ लाईऐ चीता ॥ १ ॥ हउ बलिहारी जो प्रभू धिआवत ॥ जलनि बुझै हरि
 हरि गुन गावत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल जनमु होवत वडभागी ॥ साधसँगि रामहि लिव लागी ॥ २ ॥ मति पति धनु सुख
 सहज अनँदा ॥ इक निमख न विसरहु परमानँदा ॥ ३ ॥ हरि दरसन की मनि पिआस घनेरी ॥ भनति नानक सरणि प्रभ
 तेरी ॥ ४ ॥ ८ ॥ १३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मोहि निरगुन सभ गुणहु बिहूना ॥ दइआ धारि अपुना करि लीना ॥ १
 ॥ मेरा मनु तनु हरि गोपालि सुहाइआ ॥ करि किरपा प्रभु घर महि आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति वछल भै काटनहारे ॥
 संसार सागर अब उतरे पारे ॥ २ ॥ पतित पावन प्रभु बिरदु बेदि लेखिआ ॥ पारब्रहमु सो नैनहु पेखिआ ॥ ३ ॥ साधसँगि
 प्रगटे नाराइण ॥ नानक दास सभि दूख पलाइण ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ कवनु जानै प्रभु तुम्हरी सेवा
 ॥ प्रभु अविनासी अलख अभेवा ॥ १ ॥ गुण बेअँत प्रभु गहिर गँभीरे ॥ ऊच महल सुआमी प्रभु मेरे ॥ तू अपरँपर ठाकुर
 मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकस बिनु नाही को दूजा ॥ तुम्ह ही जानहु अपनी पूजा ॥ २ ॥ आपहु कछु न होवत भाई ॥ जिंसु
 प्रभु देवै सो नामु पाई ॥ ३ ॥ कहु नानक जो जनु प्रभु भाइआ ॥ गुण निधान प्रभु तिन ही पाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ १५ ॥
 बिलावलु महला ५ ॥ मात गरभ महि हाथ दे राखिआ ॥ हरि रसु छोडि बिखिआ फलु चाखिआ ॥ १ ॥ भजु गोबिद सभ
 छोडि जँजाल ॥ जब जमु आइ संघारै मूडे तब तनु बिनसि जाइ बेहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु धनु अपना करि थापिआ
 ॥ करनहारु इक निमख न जापिआ ॥ २ ॥ महा मोह अँध कूप परिआ ॥ पारब्रहमु माइआ पटलि बिसरिआ ॥ ३ ॥ वडै
 भागि प्रभु कीरतनु गाइआ ॥ संत सँगि नानक प्रभु पाइआ ॥ ४ ॥ ११ ॥ १६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मात पिता सुत
 बंधप भाई ॥ नानक होआ पारब्रहमु सहाई ॥ १ ॥ सूख सहज आनँद घणे ॥ गुरु पूरा पूरी जा की बाणी अनिक गुणा जा
 के जाहि न गणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल सरँजाम करे प्रभु आपे ॥ भए मनोरथ सो प्रभु जापे ॥ २ ॥

अरथ धरम काम मोख का दाता ॥ पूरी भई सिमरि सिमरि बिधाता ॥ ३ ॥ साधसंगि नानकि रंगु माणिआ ॥ घरि
 आइआ पूरै गुरि आणिआ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सब निधान पूरन गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि
 हरि नामु जपत नर जीवे ॥ मरि खुआरु साकत नर थीवे ॥ १ ॥ राम नामु होआ रखवारा ॥ झख मारउ साकतु वेचारा
 ॥ २ ॥ निंदा करि करि पचहि घनेरे ॥ मिरतक फास गलै सिरि पैरे ॥ ३ ॥ कहु नानक जपहि जन नाम ॥ ता के
 निकटि न आवै जाम ॥ ४ ॥ १३ ॥ १८ ॥

शगु बिलावलु महला ५ वरु ४ दुपदे १९ सतिगुर प्रसादि ॥

कवन संजोग मिलउ प्रभ अपने ॥ पलु पलु निमख सदा हरि जपने ॥ १ ॥ चरन कमल प्रभ के नित धिआवउ ॥ कवन
 सुमति जितु प्रीतमु पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी क्रिपा करहु प्रभ मेरे ॥ हरि नानक बिसरु न काहू बेरे ॥ २ ॥ १ ॥
 १९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ हिरदै धिआए ॥ रोग गए सगले सुख पाए ॥ १ ॥ गुरि दुखु काटिआ
 दीनो दानु ॥ सफल जनमु जीवन परवानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अकथ कथा अमित प्रभ बानी ॥ कहु नानक जपि जीवे
 गिआनी ॥ २ ॥ २ ॥ २० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सांति पाई गुरि सतिगुरि पूरे ॥ सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ ताप पाप संताप बिनासे ॥ हरि सिमरत किलविख सभि नासे ॥ १ ॥ अनदु करहु मिलि सुंदर नारी ॥ गुरि
 नानकि मेरी पैज सवारी ॥ २ ॥ ३ ॥ २१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ममता मोह धोह मदि माता बंधनि बाधिआ अति
 बिकराल ॥ दिनु दिनु छिजत बिकार करत अउध फाही फाथा कम कै जाल ॥ १ ॥ तेरी सरणि प्रभ दीन दइआला ॥
 महा बिखम सागरु अति भारी उधरहु साधू संगि खाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ सुखदाते समरथ सुआमी जीउ पिंडु सभु
 तुमरा माल ॥ भ्रम के बंधन काटहु परमेसर नानक के प्रभ सदा क्रिपाल ॥ २ ॥ ४ ॥ २२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥
 सगल अनंदु कीआ परमेसरि अपना बिरदु सम्हारिआ ॥ साध जना होए किरपाला बिगसे सभि परिवारिआ ॥ १ ॥

कारजु सतिगुरि आपि सवारिआ ॥ वडी आरजा हरि गोबिंद की सूख मंगल कलिआण बीचारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वण
 त्रिण त्रिभवण हरिआ होए सगले जीअ साधारिआ ॥ मन इछे नानक फल पाए पूरन इछ पुजारिआ ॥ २ ॥ ७ ॥ २३ ॥
 बिलावलु महला ७ ॥ जिंसु ऊपरि होवत दइआलु ॥ हरि सिमरत काटै सो कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसँगि भजीऐ
 गोपालु ॥ गुन गावत तूटै जम जालु ॥ १ ॥ आपे सतिगुरु आपे प्रतिपाल ॥ नानकु जाचै साध खाल ॥ २ ॥ ६ ॥
 २४ ॥ बिलावलु महला ७ ॥ मन महि सिँचहु हरि हरि नाम ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुण गाम ॥ १ ॥ ऐसी प्रीति करहु
 मन मेरे ॥ आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के निरमल भाग ॥ हरि चरणी ता का मनु लाग ॥
 २ ॥ ७ ॥ २५ ॥ बिलावलु महला ७ ॥ रोगु गइआ प्रभि आपि गवाइआ ॥ नीद पई सुख सहज घरु आइआ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ रजिं रजिं भोजनु खावहु मेरे भाई ॥ अँमित नामु रिद माहि धिआई ॥ १ ॥ नानक गुर पूरे सरनाई ॥ जिनि
 अपने नाम की पैज रखाई ॥ २ ॥ ८ ॥ २६ ॥ बिलावलु महला ७ ॥ सतिगुर करि दीने असथिर घर बार ॥ रहाउ ॥ जो
 जो निंद करै इन ग्रिहन की तिसु आगै ही मारै करतार ॥ १ ॥ नानक दास ता की सरनाई जा को सबदु अखंड अपार ॥ २
 ॥ ९ ॥ २७ ॥ बिलावलु महला ७ ॥ ताप सँताप सगले गए बिनसे ते रोग ॥ पारब्रहमि तू बखसिआ सँतन रस भोग ॥
 रहाउ ॥ सरब सुखा तेरी मँडली तेरा मनु तनु आरोग ॥ गुन गावहु नित राम के इह अवखद जोग ॥ १ ॥ आइ बसहु घर
 देस महि इह भले सँजोग ॥ नानक प्रभ सुप्रसँन भए लहि गए बिओग ॥ २ ॥ १० ॥ २८ ॥ बिलावलु महला ७ ॥ काहु
 सँगि न चालही माइआ जँजाल ॥ ऊठि सिधारे छत्रपति सँतन कै खिआल ॥ रहाउ ॥ अहँबुधि कउ बिनसना इह धुर की
 ढाल ॥ बहु जोनी जनमहि मरहि बिखिआ बिकराल ॥ १ ॥ सति बचन साधू कहहि नित जपहि गुपाल ॥ सिमरि सिमरि
 नानक तेरे हरि के रँग लाल ॥ २ ॥ ११ ॥ २९ ॥ बिलावलु महला ७ ॥ सहज समाधि अनंद सूख पूरे गुरि दीन ॥

सदा सहाई सँगि प्रभ अँमित गुण चीन ॥ रहाउ ॥ जै जैकारु जगत्र महि लोचहि सभि जीआ ॥ सुप्रसँन भए सतिगुर प्रभू कछु
 बिघनु न थीआ ॥ १ ॥ जा का अँगु दइआल प्रभ ता के सभ दास ॥ सदा सदा वडिआईआ नानक गुर पासि ॥ २ ॥ १२ ॥
 ३० ॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ५ चउपदे १८ सतिगुर प्रसादि ॥

मित मँडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार ॥ बिनसत बार न लागई जिउ कागद बँदार ॥ १ ॥ सुनि मेरी मनसा मनै माहि
 सति देखु बीचारि ॥ सिध साधिक गिरही जोगी तजि गए घर बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ॥
 द्रिसटिमान सभ बिनसीरे किआ लगहि गवार ॥ २ ॥ कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि ॥ इकि चाले इकि चालसहि सभि
 अपनी वार ॥ ३ ॥ जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिरु हरि दुआरि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है राखु पैज मुरारि ॥ ४
 ॥ १ ॥ ३१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ लोकन कीआ वडिआईआ बैसँतरि पागउ ॥ जिउ मिलै पिआरा आपना ते बोल करागउ
 ॥ १ ॥ जउ प्रभ जीउ दइआल होइ तउ भगती लागउ ॥ लपटि रहिओ मनु बासना गुर मिलि इह तिआगउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 करउ बेनती अति घनी इहु जीउ होमागउ ॥ अरथ आन सभि वारिआ प्रिअ निमख सोहागउ ॥ २ ॥ पँच सँगु गुर ते छुटे दोख
 अरु रागउ ॥ रिदै प्रगासु प्रगट भइआ निसि बासुर जागउ ॥ ३ ॥ सरणि सोहागनि आइआ जिसु मसतकि भागउ ॥ कहु
 नानक तिनि पाइआ तनु मनु सीतलागउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ लाल रँगु तिस कउ लगा जिस के
 वडभागा ॥ मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥ १ ॥ प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ ॥ सहजि समाना भीतरे
 छोडिआ नह जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जरा मरा नह विआपई फिरि दूखु न पाइआ ॥ पी अमितु आघानिआ गुरि अमरु कराइआ
 ॥ २ ॥ सो जानै जिनि चाखिआ हरि नामु अमोला ॥ कीमति कही न जाईरे किआ कहि मुखि बोला ॥ ३ ॥ सफल दरसु

तेरा पारब्रह्म गुण निधि तेरी बाणी ॥ पावउ धूरि तेरे दास की नानक कुरबाणी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३३ ॥ बिलावलु महला ५
 ॥ राखहु अपनी सरणि प्रभ मोहि किरपा धारे ॥ सेवा कछु न जानऊ नीचु मूरखारे ॥ १ ॥ मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम
 पिआरे ॥ हम अपराधी सद भूलदे तुम्ह बखसनहारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम अवगन करह असँख नीति तुम्ह निरगुन दातारे
 ॥ दासी सँगति प्रभू तिआगि ए करम हमारे ॥ २ ॥ तुम्ह देवहु सभ किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥ लागि परे तेरे
 दान सिउ नह चिति खसमारे ॥ ३ ॥ तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे ॥ कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध
 उधारे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दोसु न काहू दीजीऐ प्रभु अपना धिआईऐ ॥ जितु सेविऐ सुखु होइ घना
 मन सोई गाईऐ ॥ १ ॥ कहीऐ काइ पिआरे तुझु बिना ॥ तुम्ह दइआल सुआमी सभ अवगन हमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ
 तुम्ह राखहु तिउ रहा अवरु नही चारा ॥ नीधरिआ धर तेरीआ इक नाम अधारा ॥ २ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भला मनि
 लेता मुकता ॥ सगल समग्री तेरीआ सभ तेरी जुगता ॥ ३ ॥ चरन परवारउ करि सेवा जे ठाकुर भावै ॥ होहु क्रिपाल
 दइआल प्रभ नानकु गुण गावै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मिरतु हसै सिर ऊपरै पसूआ नही बूझै ॥ बाद
 साद अहँकार महि मरणा नही सूझै ॥ १ ॥ सतिगुरु सेवहु आपना काहे फिरहु अभागे ॥ देखि कसुँभा रँगुला काहे भूलि
 लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि करि पाप दरबु कीआ वरतण कै ताई ॥ माटी सिउ माटी रली नागा उठि जाई ॥ २ ॥ जा कै
 कीऐ श्रमु करै ते बैर बिरोधी ॥ अँत कालि भजि जाहिगे काहे जलहु करोधी ॥ ३ ॥ दास रेणु सोई होआ जिसु मसतकि
 करमा ॥ कहु नानक बँधन छुटे सतिगुर की सरना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ३६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पिँगुल परबत पारि परे
 खल चतुर बकीता ॥ अँधुले त्रिभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥ १ ॥ महिमा साधू सँग की सुनहु मेरे मीता ॥ मैलु खोई
 कोटि अघ रहे निरमल भए चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी भगति गोविँदु की कीटि हसती जीता ॥ जो जो कीनो आपनो

तिसु अमै दानु दीता ॥ २ ॥ सिँघु बिलाई होइ गइओ त्रिणु मेरु दिखीता ॥ अमु करते दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥ ३
 ॥ कवन वडाई कहि सकउ बेअँत गुनीता ॥ करि किरपा मोहि नामु देहु नानक दरसरीता ॥ ४ ॥ ७ ॥ ३७ ॥ बिलावलु
 महला ५ ॥ अहँबुधि परबाद नीत लोभ रसना सादि ॥ लपटि कपटि छिहि बेधिया मिथिया बिखियादि ॥ १ ॥ ऐसी
 पेखी नेत्र महि पूरे गुर परसादि ॥ राज मिलख धन जोबना नामै बिनु बादि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप धूप सोगँधता कापर
 भोगादि ॥ मिलत साँगि पापिसट तन होए दुरगादि ॥ २ ॥ फिरत फिरत मानुखु भइआ खिन भँगन देहादि ॥ इह अउसर
 ते चूकिया बहु जोनि भ्रमादि ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते गुर मिले हरि हरि बिसमाद ॥ सूख सहज नानक अनँद ता कै पूरन
 नाद ॥ ४ ॥ ८ ॥ ३८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरन भए संत बोहिथा तरे सागरु जेत ॥ मारग पाए उदिआन महि गुरि
 दसे भेत ॥ १ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरे हरि हरि हरि हेत ॥ ऊठत बैठत सोवते हरि हरि हरि चेत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँच
 चोर आगै भगे जब साधसँगेत ॥ पूँजी साबतु घणो लाभु छिहि सोभा सेत ॥ २ ॥ निहचल आसणु मिटी चिँत नाही
 डोलेत ॥ भरमु भुलावा मिटि गइआ प्रभ पेखत नेत ॥ ३ ॥ गुण गभीर गुण नाइका गुण कहीअहि केत ॥ नानक पाइआ
 साधसाँगि हरि हरि अँमेत ॥ ४ ॥ ९ ॥ ३९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु साधू जो जीवना तेतो बिरथारी ॥ मिलत साँगि
 सभि भ्रम मिटे गति भई हमारी ॥ १ ॥ जा दिन भेटे साध मोहि उआ दिन बलिहारी ॥ तनु मनु अपनो जीअरा फिरि फिरि
 हउ वारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एत छडाई मोहि ते इतनी द्रिड़तारी ॥ सगल रेन इहु मनु भइआ बिनसी अपधारी ॥ २ ॥ निँद
 चिँद पर दूखना ए खिन महि जारी ॥ दइआ मइआ अरु निकटि पेखु नाही दूरारी ॥ ३ ॥ तन मन सीतल भए अब मुकते
 संसारी ॥ हीत चीत सभ प्रान धन नानक दरसारी ॥ ४ ॥ १० ॥ ४० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ टहल करउ तेरे दास की
 पग झारउ बाल ॥ मसतकु अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल ॥ १ ॥ तुम्ह मिलते मेश मनु जीओ तुम्ह मिलहु

दइआल ॥ निसि बासुर मनि अनदु होत चितवत किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत उधारन साध प्रभ तिन्ह लागहु पाल ॥ मो
 कउ दीजै दानु प्रभ सँतन पग राल ॥ २ ॥ उकति सिआनप कछु नही नाही कछु घाल ॥ भ्रम भै राखहु मोह ते काटहु जमजाल
 ॥ ३ ॥ बिनउ करउ करणापते पिता प्रतिपाल ॥ गुण गावउ तेरे साधसँगि नानक सुख साल ॥ ४ ॥ ११ ॥ ४१ ॥
 बिलावलु महला ५ ॥ कीता लोड़हि सो करहि तुझ बिनु कछु नाहि ॥ परतापु तुम्हारा देखि कै जमदूत छडि जाहि ॥ १ ॥
 तुम्हरी क्रिपा ते छूटीऐ बिनसै अहँमेव ॥ सरब कला समरथ प्रभ पूरे गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजिआ नामै
 बिनु कूरु ॥ जीवन सुखु सभु साधसँगि प्रभ मनसा पूरु ॥ २ ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि सिआनप सभ जाली ॥
 जत कत तुम्ह भरपूर हहु मेरे दीन दइआली ॥ ३ ॥ सभ किछु तुम ते मागना वडभागी पाए ॥ नानक की अरदासि प्रभ जीवा
 गुन गाए ॥ ४ ॥ १२ ॥ ४२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ साधसँगति कै बासबै कलमल सभि नसना ॥ प्रभ सेती रँगि रातिआ
 ता ते गरभि न ग्रसना ॥ १ ॥ नामु कहत गोविँद का सूची भई रसना ॥ मन तन निरमल होई है गुर का जपु जपना ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ हरि रसु चाखत धापिआ मनि रसु लै हसना ॥ बुधि प्रगास प्रगट भई उलटि कमलु बिगसना ॥ २ ॥ सीतल सांति
 सँतोखु होइ सभ बूझी तिसना ॥ दह दिस धावत मिटि गए निरमल थानि बसना ॥ ३ ॥ राखनहारै राखिआ भए भ्रम भसना
 ॥ नामु निधान नानक सुखी पेखि साध दरसना ॥ ४ ॥ १३ ॥ ४३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पाणी परवा पीसु दास कै तब
 होहि निहालु ॥ राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु ॥ १ ॥ सँत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि ॥ माइआधारी
 छत्रपति तिन्ह छोडउ तिआगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँतन का दाना रूखा सो सरब निधान ॥ छिहि साकत छतीह प्रकार ते
 बिखू समान ॥ २ ॥ भगत जना का लूगरा ओढि नगन न होई ॥ साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई ॥ ३ ॥ साकत
 सिउ मुखे जोरिऐ अध विचहु टूटै ॥ हरि जन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै ॥ ४ ॥ सभ किछु तुम्ह ही

ते होआ आपि बणत बणाई ॥ दरसन भेटत साध का नानक गुण गाई ॥ ५ ॥ १४ ॥ ४४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥
 स्रवनी सुनउ हरि हरि हरे ठाकुर जसु गावउ ॥ संत चरण कर सीसु धरि हरि नामु धिआवउ ॥ १ ॥ करि किरपा दइआल
 प्रभ इह निधि सिधि पावउ ॥ संत जना की रेणुका लै माथै लावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीच ते नीचु अति नीचु होइ करि बिनउ
 बुलावउ ॥ पाव मोवा आपु तिआगि संतसँगि समावउ ॥ २ ॥ सासि सासि नह वीसरै अन कतहि न धावउ ॥ सफल
 दरसन गुरु भेटीरे मानु मोहु निटावउ ॥ ३ ॥ सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥ सफल सुहागणि नानका अपुने
 प्रभ भावउ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ४५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अटल बचन साधू जना सभ महि प्रगटाइआ ॥ जिंसु जन होआ
 साधसँगु तिसु भेटै हरि राइआ ॥ १ ॥ इह परतीति गोविंद की जपि हरि सुखु पाइआ ॥ अनिक बाता सभिं करि रहे गुरु
 घरि लै आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि परे की राखता नाही सहसाइआ ॥ करम भूमि हरि नामु बोइ अउसरु दुलभाइआ
 ॥ २ ॥ अंतरजामी आपि प्रभु सभ करे कराइआ ॥ पतित पुनीत घणे करे ठाकुर बिरदाइआ ॥ ३ ॥ मत भूलहु मानुख
 जन माइआ भरमाइआ ॥ नानक तिसु पति राखसी जो प्रभिं पहिराइआ ॥ ४ ॥ १६ ॥ ४६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥
 माटी ते जिनि साजिआ करि दुरलभ देह ॥ अनिक छिद्र मन महि ढके निरमल दिसटेह ॥ १ ॥ किउ बिसरै प्रभु मनै ते जिस
 के गुण एह ॥ प्रभ तजि रचे जि आन सिउ सो रलीरे खेह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरहु सिमरहु सासि सासि मत बिलम करेह
 ॥ छोडि प्रपंचु प्रभ सिउ रचहु तजि कूडे नेह ॥ २ ॥ जिनि अनिक एक बहु रँग कीए है होसी एह ॥ करि सेवा तिसु
 पाख्रहम गुर ते मति लेह ॥ ३ ॥ ऊचे ते ऊचा वडा सभ सँगि बरनेह ॥ दास दास को दासरा नानक करि लेह ॥ ४ ॥ १७
 ॥ ४७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ एक टेक गोविंद की तिआगी अन आस ॥ सभ ऊपरि समरथ प्रभ पूरन गुणतास ॥ १ ॥
 जन का नामु अधारु है प्रभ सरणी पाहि ॥ परमेसर का आसारा संतन मन माहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि रखै आपि देवसी

आपे प्रतिपारै ॥ दीन दइआल क्रिपा निधे सासि सासि सम्हारै ॥ २ ॥ करणहारु जो करि रहिआ साई वडिआई ॥ गुरि
 पूरै उपदेसिआ सुखु खसम रजाई ॥ ३ ॥ चिंत अँदसा गणत तजि जनि हुकमु पछाता ॥ नह बिनसै नह छोडि जाइ
 नानक रँगि रता ॥ ४ ॥ १८ ॥ ४८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ महा तपति ते भई सांति परसत पाप नाठे ॥ अँध कूप महि
 गलत थे काढे दे हाथे ॥ १ ॥ ओइ हमारे साजना हम उन की रेन ॥ जिन भेटत होवत सुखी जीअ दानु देन ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ परा पूरबला लीखिआ मिलिआ अब आइ ॥ बसत सँगि हरि साध कै पूरन आसाइ ॥ २ ॥ भै बिनसे तिहु लोक के पाए
 सुख थान ॥ दइआ करी समरथ गुरि बसिआ मनि नाम ॥ ३ ॥ नानक की तुटेक प्रभ तेरा आधार ॥ करण कारण समरथ
 प्रभ हरि अगम अपार ॥ ४ ॥ १९ ॥ ४९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सोई मलीनु दीनु हीनु जिसु प्रभु बिसराना ॥
 करनैहारु न बूझई आपु गनै बिगाना ॥ १ ॥ दूखु तदे जदि वीसरै सुखु प्रभ चिति आए ॥ संतन कै आनँदु एहु नित हरि
 गुण गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचे ते नीचा करै नीच खिन महि थापै ॥ कीमति कही न जाईऐ ठाकुर परतापै ॥ २ ॥ पेरवत
 लीला रँग रूप चलनै दिनु आइआ ॥ सुपने का सुपना भइआ सँगि चलिआ कमाइआ ॥ ३ ॥ करण कारण समरथ प्रभ
 तेरी सरणाई ॥ हरि दिनसु रैणि नानकु जपै सद सद बलि जाई ॥ ४ ॥ २० ॥ ५० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जलु ढोवउ
 इह सीस करि कर पग परवलावउ ॥ बारि जाउ लख बेरीआ दरसु पेखि जीवावउ ॥ १ ॥ करउ मनोरथ मनै माहि अपने प्रभ
 ते पावउ ॥ देउ सूहनी साध कै बीजनु ढोलावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँमित गुण संत बोलते सुणि मनहि पीलावउ ॥ उआ
 रस महि सांति त्रिपति होइ बिखै जलनि बुझावउ ॥ २ ॥ जब भगति करहि संत मँडली तिन्ह मिलि हरि गावउ ॥ करउ
 नमसकार भगत जन धूरि मुखि लावउ ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत जपउ नामु इहु करमु कमावउ ॥ नानक की प्रभ बेनती हरि
 सरनि समावउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ५१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥ साधसंगति कै सँगि

वसै वडभागी पाए ॥ १ ॥ सुणि सुणि जीवै दासु तुम्ह बाणी जन आखी ॥ प्रगट भई सभ लोअ महि सेवक की राखी ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ अगनि सागर ते काटिआ प्रभि जलनि बुझाई ॥ अँम्रित नामु जलु सँचिआ गुर भए सहाई ॥ २ ॥ जनम
 मरण दुख काटिआ सुख ला थानु पाइआ ॥ काटी सिलक भ्रम मोह की अपने प्रभ भाइआ ॥ ३ ॥ मत कोई जाणहु अवरु
 कछु सभ प्रभ कै हाथि ॥ सरब सूख नानक पाए सँगि सँतन साथि ॥ ४ ॥ २२ ॥ ५२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बँधन
 काटे आपि प्रभ होआ किरपाल ॥ दीन दइआल प्रभ पारब्रहम ता की नदरि निहाल ॥ १ ॥ गुरि पूरै किरपा करी काटिआ
 दुखु रोगु ॥ मनु तनु सीतलु सुखी भइआ प्रभ धिआवन जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउखधु हरि का नामु है जितु रोगु न
 विआपै ॥ साधसँगि मनि तनि हितै फिरि दूखु न जापै ॥ २ ॥ हरि हरि हरि हरि जापीरे अँतरि लिव लाई ॥ किलविख
 उतरहि सुधु होइ साधू सरणाई ॥ ३ ॥ सुनत जपत हरि नास जसु ता की दूरि बलाई ॥ महा मँत्रु नानकु कथै हरि के गुण
 गाई ॥ ४ ॥ २३ ॥ ५३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ भै ते उपजै भगति प्रभ अँतरि होइ सांति ॥ नामु जपत गोविंद का
 बिनसै भ्रम भ्रांति ॥ १ ॥ गुरु पूरा जिसु भेटिआ ता कै सुखि परवेसु ॥ मन की मति तिआगीरे सुणीरे उपदेसु ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ सिमरत सिमरत सिमरीरे सो पुरखु दातारु ॥ मन ते कबहु न वीसरै सो पुरखु अपारु ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ
 रँगु लगा अचरज गुरदेव ॥ जा कउ किरपा करहु प्रभ ता कउ लावहु सेव ॥ ३ ॥ निधि निधान अँमितु पीआ मनि तनि
 आनँद ॥ नानक कबहु न वीसरै प्रभ परमानँद ॥ ४ ॥ २४ ॥ ५४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ त्रिसन बुझी ममता गई नाठे
 भै भरमा ॥ थिति पाई आनदु भइआ गुरि कीने धरमा ॥ १ ॥ गुरु पूरा आराधिआ बिनसी मेरी पीर ॥ तनु मनु सभु
 सीतल भइआ पाइआ सुखु बीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोवत हरि जपि जागिआ पेखिआ बिसमादु ॥ पी अँमितु त्रिपतासिआ
 ता का अचरज सुआदु ॥ २ ॥ आपि मुकतु सँगी तरे कुल कुटँब उधारे ॥ सफल सेवा गुरदेव की निरमल दरबारे ॥

३ ॥ नीचु अनाथु अजानु मै निरगुनु गुणहीनु ॥ नानक कउ किरपा भई दासु अपना कीनु ॥ ४ ॥ २५ ॥ ५५ ॥
 बिलावलु महला ५ ॥ हरि भगता का आसरा अन नाही ठाउ ॥ ताणु दीबाणु परवार धनु प्रभ तेरा नाउ ॥ १ ॥ करि किरपा
 प्रभि आपणी अपने दास रखि लीए ॥ निंदक निंदा करि पचे जमकालिं ग्रसीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संता एकु धिआवना दूसर
 को नाहि ॥ एकसु आगै बेनती रविआ श्रब थाइ ॥ २ ॥ कथा पुरातन इउ सुणी भगतन की बानी ॥ सगल दुसट खंड खंड
 कीए जन लीए मानी ॥ ३ ॥ सति बचन नानकु कहै परगट सभ माहि ॥ प्रभ के सेवक सरणिं प्रभ तिन कउ भउ नाहि ॥ ४
 ॥ २६ ॥ ५६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बंधन काटै सो प्रभू जा कै कल हाथ ॥ अवर करम नहीं छूटीए राखहु हरि नाथ ॥
 १ ॥ तउ सरणागति माधवे पूरन दइआल ॥ छूटि जाइ संसार ते राखै गोपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आसा भरम बिकार मोह
 इन महि लोभाना ॥ झूठु समग्री मनि वसी पारब्रहमु न जाना ॥ २ ॥ परम जोति पूरन पुरख सभि जीअ तुम्हारे ॥ जिउ तु
 राखहि तिउ रहा प्रभ अगम अपारे ॥ ३ ॥ करण कारण समरथ प्रभ देहि अपना नाउ ॥ नानक तरीए साधसंगि हरि हरि
 गुण गाउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ५७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ कवनु कवनु नहीं पतरिआ तुम्हरी परतीति ॥ महा मोहनी मोहिआ
 नरक की रीति ॥ १ ॥ मन खुटहर तेरा नहीं बिसासु तु महा उदमादा ॥ खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ जप तप संजम तुम्ह खंडे जम के दुख डांड ॥ सिमरहि नाही जोनि दुख निरलजे भांड ॥ २ ॥ हरि संगि सहाई
 महा मीतु तिस सिउ तेरा भेदु ॥ बीधा पंच बटवारई उपजिओ महा खेदु ॥ ३ ॥ नानक तिन संतन सरणागती जिन मनु
 वसि कीना ॥ तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीन्हा ॥ ४ ॥ २८ ॥ ५८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ उदमु करत
 आनदु भइआ सिमरत सुख सारु ॥ जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥ १ ॥ चरन कमल गुर के जपत हरि जपि
 हउ जीवा ॥ पारब्रहमु आराधते मुखिं अँप्रितु पीवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि सुखि बसे सभ कै मनि लोच ॥

परउपकारु नित चितवते नाही कछु पोच ॥ २ ॥ धँनु सुथानु बसँत धँनु जह जपीरे नामु ॥ कथा कीरतनु हरि अति घना
 सुख सहस बिस्वामु ॥ ३ ॥ मन ते कदे न वीसरै अनाथ को नाथ ॥ नानक प्रभ सरणागती जा कै सभु किछु हाथ ॥ ४ ॥
 २९ ॥ ५९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिनि तु बँधि करि छोडिआ फुनि सुख महि पाइआ ॥ सदा सिमरि चरणारबिंद सीतल
 होताइआ ॥ १ ॥ जीवतिआ अथवा मुइआ किछु कामि न आवै ॥ जिनि एहु रचनु रचाइआ कोऊ तिस सिउ रँगु लावै ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ रे प्राणी उसन सीत करता करै घाम ते काढै ॥ कीरी ते हसती करै टूटा ले गाढै ॥ २ ॥ अँडज जेरज सेतज
 उतभुजा प्रभ की इह किरति ॥ किरत कमावन सब फल रवीरे हरि निरति ॥ ३ ॥ हम ते कछु न होवना सरणि प्रभ साध
 ॥ मोह मगन कूप अँध ते नानक गुर काढ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ खोजत खोजत मै फिरा खोजउ
 बन थान ॥ अछल अछेद अभेद प्रभ ऐसे भगवान ॥ १ ॥ कब देखउ प्रभु आपना आत्म कै रँगि ॥ जागन ते सुपना भला
 बसीरे प्रभ सँगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरन आस्रम सासत्र सुनउ दरसन की पिआस ॥ रूपु न रेख न पँच तत ठाकुर अबिनास
 ॥ २ ॥ ओहु सरूपु संतन कहहि विरले जोगीसुर ॥ करि किरपा जा कउ मिले धनि धनि ते ईसुर ॥ ३ ॥ सो अँतरि सो
 बाहरे बिनसे तह भरमा ॥ नानक तिसु प्रभु भेटिआ जा के पूरन करमा ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ६१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीअ
 जँत सुप्रसँन भए देखि प्रभ परताप ॥ करजु उतारिआ सतिगुरू करि आहरु आप ॥ १ ॥ खात खरचत निबहत रहै गुर
 सबदु अखूट ॥ पूरन भई समगरी कबहू नही तूट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसँगि आराधना हरि निधि आपार ॥ धरम अरथ
 अरु काम मोख देते नही बार ॥ २ ॥ भगत अराधहि एक रँगि गोबिंद गुपाल ॥ राम नाम धनु सँचिआ जा का नही सुमारु
 ॥ ३ ॥ सरनि परे प्रभ तेरीआ प्रभ की वडिआई ॥ नानक अँतु न पाईरे बेअँत गुसाई ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ६२ ॥ बिलावलु
 महला ५ ॥ सिमरि सिमरि पूरन प्रभु कारज भए रासि ॥ करतार पुरि करता वसै संतन कै पासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥

बिघनु न कोऊ लागता गुरु पहि आरदासि ॥ रखवाला गोबिंद राइ भगतन की रासि ॥ १ ॥ तोटि न आवै कदे मूलि पूरन भंडार ॥ चरन कमल मनि तनि बसे प्रभ अगम अपार ॥ २ ॥ बसत कमावत सभि सुखी किछु ऊन न दीसै ॥ सँत प्रसादि भेटे प्रभू पूरन जगदीसै ॥ ३ ॥ जै जैकारु सभै करहि सचु थानु सुहाइआ ॥ जपि नानक नामु निधान सुख पूरा गुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ६३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि हरि आराधीरे होईरे आरोग ॥ रामचंद की लसटिका जिनि मारिआ रोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा हरि जापीरे नित कीचै भोगु ॥ साधसंगति कै वारणै मिलिआ संजोगु ॥ १ ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईरे बिनसै बिओगु ॥ नानक प्रभ सरणागती करण कारण जोगु ॥ २ ॥ ३४ ॥ ६४ ॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ५ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारु नामु लइआ ॥ ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइआ ॥ १ ॥ गुरु पूरा आराधिआ सगला दुखु गइआ ॥ रखनहारै रखिआ अपनी करि मइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाह पकड़ि प्रभि काठिआ कीना अपनइआ ॥ सिमरि सिमरि मन तन सुखी नानक निरभइआ ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ करु धरि मसतकि थापिआ नामु दीनो दानि ॥ सफल सेवा पारब्रहम की ता की नही हानि ॥ १ ॥ आपे ही प्रभु रखता भगतन की आनि ॥ जो जो चितवहि साध जन सो लेता मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि परे चरणारबिंद जन प्रभ के प्रान ॥ सहजि सुभाइ नानक मिले जोती जोति समान ॥ २ ॥ २ ॥ ६६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरण कमल का आसरा दीनो प्रभि आपि ॥ प्रभ सरणागति जन परे ता का सद परतापु ॥ १ ॥ रखनहार अपार प्रभ ता की निरमल सेव ॥ राम राज रामदासपुरि कीन्हे गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सदा हरि धिआईरे किछु बिघनु न लागै ॥ नानक नामु सलाहीरे भइ दुसमन भागै ॥ २ ॥ ३ ॥ ६७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मनि तनि प्रभु आराधीरे मिलि साध समागै ॥ उचरत गुन गोपाल जसु दूर ते जमु भागै ॥ १ ॥ राम नामु जो जनु जपै

अनदिनु सद जागै ॥ तँतु मँतु नह जोहई तितु चाखु न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध मद मान मोह बिनसे अनरागै ॥
 आनँद मगन रसि राम रँगि नानक सरनागै ॥ २ ॥ ४ ॥ ६८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीअ जुगति वसि प्रभूकै जो कहै सु
 करना ॥ भए प्रसनु गोपालराइ भउ किछु नही करना ॥ १ ॥ दूखु न लागै कदे तुधु पारब्रहमु चितारे ॥ जमकँकरु नेड़ि न
 आवई गुरसिख पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथु है तिसु बिनु नही होरु ॥ नानक प्रभ सरणागती साचा मनि
 जोरु ॥ २ ॥ ५ ॥ ६९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभु आपना नाठा दुख ठाउ ॥ बिस्वाम पाए मिलि
 साधसँगि ताते बहुड़ि न धाउ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपने चरनन्ह बलि जाउ ॥ अनद सूख मँगल बने पेखत गुन गाउ ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ कथा कीरतनु राग नाद धुनि इह बनिओ सुआउ ॥ नानक प्रभ सुप्रसँन भए बाँछत फल पाउ ॥ २ ॥ ६ ॥
 ७० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥ तुम्हरी क्रिपा ते पारब्रहम दोखन को नासु ॥ १ ॥
 चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतासु ॥ कीरतन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता
 बँधप तूहै तू सरब निवासु ॥ नानक प्रभ सरणागती जा कि निरमल जासु ॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सरब
 सिधि हरि गाईऐ सभि भला मनावहि ॥ साधु साधु मुख ते कहहि सुणि दास मिलावहि ॥ १ ॥ सूख सहज कलिआण रस पूरै
 गुरि कीन्ह ॥ जीअ सगल दइआल भए हरि हरि नामु चीन्ह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरि रहिओ सरबत्र महि प्रभ गुणी गहीर ॥
 नानक भगत आनँदमै पेखि प्रभ की धीर ॥ २ ॥ ८ ॥ ७२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अरदासि सुणी दातारि प्रभि होए
 किरपाल ॥ राखि लीआ अपना सेवको मिखि निँदक छारु ॥ १ ॥ तुझहि न जोहै को मीत जन तूँ गुर का दास ॥ पारब्रहमि
 तू राखिआ दे अपने हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअन का दाता एकु है बीआ नही होरु ॥ नानक की बेनँतीआ मै तेरा जोरु ॥
 २ ॥ ९ ॥ ७३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मीत हमारे साजना राखे गोविँद ॥ निँदक मिरतक होइ गए तुम्ह होहु निचिँद ॥

१ ॥ रहाउ ॥ सगल मनोरथ प्रभि कीए भेटे गुरदेव ॥ जै जैकारु जगत महि सफल जा की सेव ॥ १ ॥ ऊच अपार
 अगनत हरि सभि जीअ जिसु हाथि ॥ नानक प्रभ सरणागती जत कत मेरै साथि ॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥ बिलावलु महला
 ५ ॥ गुरु पूरा आराधिया होए किरपाल ॥ मारगु संति बताइआ तूटे जम जाल ॥ १ ॥ दूख भूख संसा मिटिआ गावत प्रभ
 नाम ॥ सहज सूख आनंद रस पूरन सभि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलनि बुझी सीतल भए राखे प्रभि आप ॥ नानक प्रभ
 सरणागती जा का वड परताप ॥ २ ॥ ११ ॥ ७५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ धरति सुहावी सफल थानु पूरन भए काम ॥
 भउ नाठा भ्रमु मिटि गइआ रविआ नित राम ॥ १ ॥ साध जना कै संगि बसत सुख सहज बिस्राम ॥ साई घड़ी सुलखणी
 निमरत हरि नाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रगट भए संसार महि फिरते पहनाम ॥ नानक तिसु सरणागती घट घट सभ जान ॥ २
 ॥ १२ ॥ ७६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ रोगु मिटाइआ आपि प्रभि उपजिआ सुख सांति ॥ वड परतापु अचरज रूपु हरि
 कीन्ही दाति ॥ १ ॥ गुरि गोविंदि क्रिपा करी राखिआ मेरा भाई ॥ हम तिस की सरणागती जो सदा सहाई ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ बिरथी कदे न होवई जन की आरदासि ॥ नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७ ॥ बिलावलु
 महला ५ ॥ मरि मरि जनमे जिन बिसरिआ जीवन का दाता ॥ पारब्रहमु जनि सेविआ अनदिनु रंगि राता ॥ १ ॥ सांति
 सहजु आनदु घना पूरन भई आस ॥ सुखु पाइआ हरि साधसंगि सिमरत गुणतास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुआमी अरदासि
 जन तुम्ह अंतरजामी ॥ थान थनंतरि रवि रहे नानक के सुआमी ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताती वाउ न
 लगई पारब्रहम सरनाई ॥ चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥
 राम नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥ कहु नानक
 किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ७९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अपने बालक आपि रखिअनु पारब्रहम गुरदेव ॥

सुख सांति सहज आनद भए पूरन भई सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जना की बेनती सुणी प्रभि आपि ॥ रोग मिटाइ
जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥ १ ॥ दोख हमारे बखसिअनु अपणी कल धारी ॥ मन बांछत फल दितिअनु नानक बलिहारी
॥ २ ॥ १६ ॥ ८० ॥

शगु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे वरु ६ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए ॥ साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवत सेवि सेवि साथ
सेवउ सदा करउ किरताए ॥ अभै दानु पावउ पुरख दाते मिलि संगति हरि गुण गाए ॥ १ ॥ रसना अगह अगह गुन राती नैन
दरस रँगु लाए ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भँजन मोहि चरण रिदै वसाए ॥ २ ॥ सभहू तलै तलै सभ ऊपरि एह दिसटि दिसटाए ॥
अभिमानु खोइ खोइ खोइ खोई हउ मो कउ सतिगुर मँत्रु द्रिडाए ॥ ३ ॥ अतुलु अतुलु अतुलु नह तुलीए भगति वछलु किरपाए
॥ जो जो सरणि परिओ गुर नानक अभै दानु सुख पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ ८१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै
॥ नमसकार डँडउति बँदना अनिक बार जाउ बारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत इहु मनु तुझहि चितारै ॥ सूख
दूख इसु मन की बिरथा तुझ ही आगै सारै ॥ १ ॥ तू मेरी ओट बल बुधि धनु तुम ही तुमहि मेरै परवारै ॥ जो तुम करहु सोई भल
हमरै पेखि नानक सुख चरनारै ॥ २ ॥ २ ॥ ८२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुनीअत प्रभ तउ सगल उधारन ॥ मोह मगन
पतित संगि प्रानी ऐसे मनहि बिसारन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँचि बिखिआ ले ग्राहजु कीनी अँमितु मन ते डारन ॥ काम क्रोध लोभ
रतु निँदा सतु सँतोखु बिदारन ॥ १ ॥ इन ते काढि लेहु मेरे सुआमी हारि परे तुम्ह सारन ॥ नानक की बेनँती प्रभ पहि साधसंगि
रँक तारन ॥ २ ॥ ३ ॥ ८३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सँतन कै सुनीअत प्रभ की बात ॥ कथा कीरतनु आनँद मँगल धुनि पूरि
रही दिनसु अरु राति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा अपने प्रभि कीने नाम अपने की कीनी दाति ॥ आठ पहर

गुन गावत प्रभ के काम क्रोध इसु तन ते जात ॥ १ ॥ त्रिपति अघाए पेखि प्रभ दरसनू अँमित हरि रसु भोजनु खात ॥ चरन सरन नानक प्रभ तेरी किरपा सँतसँगि मिलात ॥ २ ॥ ४ ॥ ८४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीए अपने जन आप ॥ करि किरपा हरि हरि नामु दीनो बिनसि गए सभ सोग सँताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गोविँद गावहु सभि हरि जन राग रतन रसना आलाप ॥ कोटि जनम की त्रिसना निवरी राम रसाइणि आतम ध्राप ॥ १ ॥ चरण गहे सरणि सुखदाते गुर कै बचनि जपे हरि जाप ॥ सागर तरे भरम भै बिनसे कहु नानक ठाकुर परताप ॥ २ ॥ ५ ॥ ८५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ तापु लाहिआ गुर सिरजनहारि ॥ सतिगुर अपने कउ बलि जाई जिनि पैज रबी सारै सँसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारि बालिकु रखि लीनो ॥ प्रभि अँमित नामु महा रसु दीनो ॥ १ ॥ दास की लाज रखै मिहरवानु ॥ गुरु नानकु बोलै दरगह परवानु ॥ २ ॥ ६ ॥ ८६ ॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ७ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर सबदि उजारो दीपा ॥ बिनसिओ अँधकार तिह मँदरि रतन कोठडी खुल्ही अनूपा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसमन बिसम भए जउ पेखिओ कहनु न जाइ वडिआई ॥ मगन भए ऊहा सँगि माते ओति पोति लपटाई ॥ १ ॥ आल जाल नही कछू जँजारा अहुँबुधि नही भोरा ॥ ऊचन ऊचा बीचु न खीचा हउ तेरा तूँ मेरा ॥ २ ॥ एकँकारु एकु पासारा एकै अपर अपारा ॥ एकु बिसथीरनु एकु सँपूरनु एकै प्रान अधारा ॥ ३ ॥ निरमल निरमल सूचा सूचो सूचा सूचो सूचा ॥ अँत न अँता सदा बेअँता कहु नानक ऊचो ऊचा ॥ ४ ॥ १ ॥ ८७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु हरि कामि न आवत हे ॥ जा सिउ राचि माचि तुम्ह लागे ओह मोहनी मोहावत हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक कामनी सेज सोहनी छोडि खिनै महि जावत हे ॥ उरझि रहिओ डँद्री रस प्रेरिओ बिखै ठगउरी खावत हे ॥ १ ॥ त्रिण को मँदरु साजि सवारिओ पावकु तलै जरावत हे ॥ ऐसे गड़ महि ऐठि हठीले फूलि फूलि किआ पावत हे ॥ २ ॥ पँच दूत मूड

परि ठाढे केस गहे फेरवत हे ॥ द्रिसटि न आवहि अँध अगिआनी सोइ रहिओ मद मावत हे ॥ ३ ॥ जालु पसारि चोग
 बिसथारी पँखी जिउ फाहावत हे ॥ कहु नानक बँधन काटन कउ मै सतिगुरु पुरखु धिआवत हे ॥ ४ ॥ २ ॥ ८८ ॥
 बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि नामु अपार अमोली ॥ प्रान पिआरो मनहि अधारो चीति चितवउ जैसे पान तँबोली ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ सहजि समाइओ गुरहि बताइओ रँगि रँगी मेरे तन की चोली ॥ प्रिअ मुखि लागो जउ वडभागो सुहागु हमारो कतहु
 न डोली ॥ १ ॥ रूप न धूप न गँध न दीपा ओति पोति अँग अँग सँगि मउली ॥ कहु नानक प्रिअ रवी सुहागनि अति
 नीकी मेरी बनी खटोली ॥ २ ॥ ३ ॥ ८९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद मई ॥ जब ते भेटे साध
 दइआरा तब ते दुस्मति दूरि भई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन पूरि रहिओ सँपूरन सीतल सांति दइआल दई ॥ काम क्रोध त्रिसना
 अहँकारा तन ते होए सगल खई ॥ १ ॥ सतु सँतोखु दइआ धरमु सुचि सँतन ते इहु मँतु लई ॥ कहु नानक जिनि मनहु
 पछानिआ तिन कउ सगली सोझ पई ॥ २ ॥ ४ ॥ ९० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ किआ हम जीअ जँत बेचारे बरनि न
 साकह एक रोमाई ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा बेअँत ठाकुर तेरी गति नही पाई ॥ १ ॥ किआ कथीरे किछु कथनु न जाई
 ॥ जह जह देखा तह रहिआ समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह महा भइआन दूख जम सुनीरे तह मेरे प्रभ तूहै सहाई ॥ सरनि
 परिओ हरि चरन गहे प्रभ गुरि नानक कउ बूझ बुझाई ॥ २ ॥ ५ ॥ ९१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अगम रूप अबिनासी
 करता पतित पवित इक निमख जपाईरे ॥ अचरजु सुनिओ परापति भेटुले सँत चरन चरन मनु लाईरे ॥ १ ॥ कितु बिधीरे
 कितु सँजमि पाईरे ॥ कहु सुरजन कितु जुगती धिआईरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मानुखु मानुख की सेवा ओहु तिस की लई
 लई फुनि जाईरे ॥ नानक सरनि सरणि सुख सागर मोहि टेक तेरो इक नाईरे ॥ २ ॥ ६ ॥ ९२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥
 सँत सरणि सँत टहल करी ॥ धँधु बँधु अरु सगल जँजारो अवर काज ते छूटि परी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख सहज

अरु घनो अनँदा गुर ते पाइओ नामु हरी ॥ ऐसो हरि रसु बरनि न साकउ गुरि पूरै मेरी उलटि धरी ॥ १ ॥ पेखिओ मोहनु
 सभ कै सँगे ऊन न काहू सगल भरी ॥ पूरन पूरि रहिओ किरपा निधि कहु नानक मेरी पूरी परी ॥ २ ॥ ७ ॥ ९३ ॥
 बिलावलु महला ५ ॥ मन किआ कहता हउ किआ कहता ॥ जान प्रबीन ठाकुर प्रभ मेरे तिसु आगै किआ कहता ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ अनबोले कउ तुही पछानहि जो जीअन महि होता ॥ रे मन काइ कहा लउ डहकहि जउ पेखत ही सँगे सुनता ॥
 १ ॥ ऐसो जानि भए मनि आनद आन न बीओ करता ॥ कहु नानक गुर भए दइआरा हरि रँगु न कबहू लहता ॥ २ ॥ ८
 ॥ ९४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ निँदकु ऐसे ही झरि परीरे ॥ इह नीसानी सुनहु तुम भाई जिउ कालर भीति गिरीरे ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ जउ देखै छिद्रु तउ निँदकु उमाहै भलो देखि दुख भरीरे ॥ आठ पहर चितवै नही पहुचै बुरा चितवत चितवत
 मरीरे ॥ १ ॥ निँदकु प्रभू भुलाइआ कालु नैरै आइआ हरि जन सिउ बादु उठरीरे ॥ नानक का राखा आपि प्रभु सुआमी
 किआ मानस बपुरे करीरे ॥ २ ॥ ९ ॥ ९५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसे काहे भूलि परे ॥ करहि करावहि मूकरि पावहि
 पेखत सुनत सदा सँगे हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काच बिहाइन कँचन छाडन बैरी सँगे हेतु साजन तिआगि खरे ॥ होवनु
 कउरा अनहोवनु मीठा बिखिआ महि लपटाइ जरे ॥ १ ॥ अँध कूप महि परिओ परानी भरम गुबार मोह बाँधि परे ॥ कहु
 नानक प्रभ होत दइआरा गुरु भेटै काटै बाह फरे ॥ २ ॥ १० ॥ ९६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन तन रसना हरि चीन्हा
 ॥ भए अनँदा मिटे अँदेसे सरब सूख मो कउ गुरि दीन्हा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इआनप ते सभ भई सिआनप प्रभु मेरा दाना
 बीना ॥ हाथ देइ राखै अपने कउ काहू न करते कछु खीना ॥ १ ॥ बलि जावउ दरसन साधू कै जिह प्रसादि हरि नामु
 लीना ॥ कहु नानक ठाकुर भारोसै कहू न मानिओ मनि छीना ॥ २ ॥ ११ ॥ ९७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरि पूरै मेरी
 राखि लई ॥ अँमित नामु रिंदे मनि दीनो जनम जनम की मैलु गई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निवरे दूत दुसट बैराई गुर पूरे

का जपिआ जापु ॥ कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड परतापु ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुख पाइआ चरन कमल
 रखु मन माहीं ॥ ता की सरनि परिओ नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥ २ ॥ १२ ॥ ९८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥
 सदा सदा जपीरे प्रभ नाम ॥ जरा मरा कछु दूखु न बिआपै आगै दरगह पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि परीरे
 नित सरनी गुर ते पाईरे एहु निधानु ॥ जनम मरण की कटीरे फासी साची दरगह का नीसानु ॥ १ ॥ जो तुम्ह करहु सोई
 भल मानउ मन ते छूटै सगल गुमानु ॥ कहु नानक ता की सरणाई जा का कीआ सगल जहानु ॥ २ ॥ १३ ॥ ९९ ॥
 बिलावलु महला ५ ॥ मन तन अंतरि प्रभु आही ॥ हरि गुन गावत परउपकार नित तिसु रसना का मोलु किछु नाही ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ कुल समूह उधरे खिन भीतरि जनम जनम की मलु लाही ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना अनद सेती बिखिआ
 बनु गाही ॥ १ ॥ चरन प्रभू के बोहिथु पाए भव सागरु पारि पराही ॥ संत सेवक भगत हरि ता के नानक मनु लागा है ताही
 ॥ २ ॥ १४ ॥ १०० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ धीरउ देखि तुम्हारे रंगा ॥ तुही सुआमी अंतरजामी तूही वसहि साध कै
 संगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि निवाजे ठाकुर नीच कीट ते करहि राजंगा ॥ १ ॥ कबहु न बिसरै हीए मोरे ते
 नानक दास इही दानु मंगा ॥ २ ॥ १५ ॥ १०१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अचुत पूजा जोग गोपाल ॥ मनु तनु अरपि
 रखउ हरि आगै सरब जीआ का है प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरनि समथ अकथ सुखदाता किरपा सिंधु बडो दइआल ॥
 कँठि लाइ राखै अपने कउ तिस नो लगै न ताती बाल ॥ १ ॥ दामोदर दइअल सुआमी सरबसु संत जना धन माल ॥
 नानक जाचिक दरसु प्रभ मागै संत जना की मिलै खाल ॥ २ ॥ १६ ॥ १०२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरत नामु कोटि
 जतन भए ॥ साधसंगि मिलि हरि गुन गाए जमदूतन कउ त्रास अहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते पुनहचरन से कीन्हे मनि तनि
 प्रभ के चरण गहे ॥ आवण जाणु भरमु भउ नाठा जनम जनम के किलविख दहे ॥ १ ॥ निरभउ होइ भजहु जगदीसै एहु

पदारथु बडभागि लहे ॥ करि किरपा पूरन प्रभ दाते निरमल जसु नानक दास कहे ॥ २ ॥ १७ ॥ १०३ ॥ बिलावलु महला
 ५ ॥ सुलही ते नाराइण राखु ॥ सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काढि कुठारु
 खसमि सिरु काटिआ खिन महि होइ गइआ है खाकु ॥ मँदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि दीना धाकु ॥ १
 ॥ पुत्र मीत धनु किछु न रहिओ सु छोडि गइआ सभ भाई साकु ॥ कहु नानक तिसु प्रभ बलिहारी जिनि जन का कीनो पूरन
 वाकु ॥ २ ॥ १८ ॥ १०४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पूरे गुर की पूरी सेव ॥ आपे आपि वरतै सुआमी कारजु रासि कीआ
 गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि मधि प्रभु अँति सुआमी अपना थाटु बनाइओ आपि ॥ अपने सेवक की आपे राखे प्रभ मेरे को
 वड परतापु ॥ १ ॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर वसि कीन्हे जिनि सगले जँत ॥ चरन कमल नानक सरणाई राम नाम जपि
 निरमल मँत ॥ २ ॥ १९ ॥ १०५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताप पाप ते राखे आप ॥ सीतल भए गुर चरनी लागे राम नाम
 हिरदे महि जाप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा हसत प्रभि दीने जगत उधार नव खँड प्रताप ॥ दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा
 त्रिसन बुझी मन तन सचु धाप ॥ १ ॥ अनाथ को नाथु सरणि समरथा सगल खिसटि को माई बापु ॥ भगति वछल भै
 भँजन सुआमी गुण गावत नानक आलाप ॥ २ ॥ २० ॥ १०६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिस ते उपजिआ तिसहि पछानु
 ॥ पारब्रहमु परमेसरु धिआइआ कुसल खेम होए कलिआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिओ बड भागी अँतरजामी सुघडु
 सुजानु ॥ हाथ देइ राखे करि अपने बड समरथु निमाणिआ को मानु ॥ १ ॥ भ्रम भै बिनसि गए खिन भीतरि अँधकार प्रगटे
 चानाणु ॥ सासि सासि आराधै नानकु सदा सदा जाईऐ कुरबाणु ॥ २ ॥ २१ ॥ १०७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दोवै थाव
 राखे गुर सूरे ॥ हलत पलत पारब्रहमि सवारे कारज होए सगले पूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपत सुख सहजे मजनु
 होवत साधू धूरे ॥ आवणु जाण रहे थिति पाई जनम मरण के मिटे बिसूरे ॥ १ ॥ भ्रम भै तरे छुटे भै जम के

घटि घटि एकु रहिआ भरपूरे ॥ नानक सरणि परिओ दुख भँजन अंतरि बाहरि पेखि हजुरे ॥ २ ॥ २२ ॥ १०८ ॥
 बिलावलु महला ५ ॥ दरसनु देखत दोख नसे ॥ कबहु न होवहु द्रिसटि अगोचर जीअ कै सँगि बसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 प्रीतम प्रान अधार सुआमी ॥ पूरि रहे प्रभ अंतरजामी ॥ १ ॥ किआ गुण तेरे सारि सम्हारी ॥ सासि सासि प्रभ तुझहि
 चितारी ॥ २ ॥ किरपा निधि प्रभ दीन दइआला ॥ जीअ जंत की करहु प्रतिपाला ॥ ३ ॥ आठ पहर तेरा नामु जनु जापे
 ॥ नानक प्रीति लाई प्रभि आपे ॥ ४ ॥ २३ ॥ १०९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ तनु धनु जोबनु चलत गइआ ॥ राम
 नाम का भजनु न कीनो करत बिकार निसि भोरु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन नित खाते मुख दँता घसि
 खीन खइआ ॥ मेरी मेरी करि करि मूठउ पाप करत नह परी दइआ ॥ १ ॥ महा बिकार घोर दुख सागर तिसु महि प्राणी
 गलतु पइआ ॥ सरनि परे नानक सुआमी की बाह पकरि प्रभि काठि लइआ ॥ २ ॥ २४ ॥ ११० ॥ बिलावलु महला ५
 ॥ आपना प्रभु आइआ चीति ॥ दुसमन दुसट रहे इख मारत कुसलु भइआ मेरे भाई मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गई बिआधि
 उपाधि सभ नासी अँगीकारु कीओ करतारि ॥ सांति सूख अरु अनद घनेरे प्रीतम नामु रिदै उर हारि ॥ १ ॥ जीउ पिँडु
 धनु रासि प्रभ तेरी तूँ समरथु सुआमी मेरा ॥ दास अपुने कउ राखनहारा नानक दास सदा है चेरा ॥ २ ॥ २५ ॥ १११ ॥
 बिलावलु महला ५ ॥ गोबिदु सिमरि होआ कलिआणु ॥ मिटी उपाधि भइआ सुखु साचा अंतरजामी सिमरिआ जाणु ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ जिस के जीअ तिनि कीए सुखाले भगत जना कउ साचा ताणु ॥ दास अपुने की आपे राखी भै भँजन
 ऊपरि करते माणु ॥ १ ॥ भई मित्राई मिटी बुराई द्रुसट दूत हरि काठे छाणि ॥ सूख सहज आनँद घनेरे नानक जीवै हरि
 गुणह वखाणि ॥ २ ॥ २६ ॥ ११२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पारब्रहम प्रभ भए क्रिपाल ॥ कारज सगल सवारे सतिगुर
 जपि जपि साधू भए निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँगीकारु कीआ प्रभि अपनै दोखी सगले भए खाल ॥ कँठे

लाइ राखे जन अपने उधरि लीए लाइ अपने पाल ॥ १ ॥ सही सलामति मिलि घरि आए निंदक के मुख होए काल ॥ कहु नानक
 मेरा सतिगुरु पूरा गुरु प्रसादि प्रभ भए निहाल ॥ २ ॥ २७ ॥ ११३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मूलालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ
 ॥ तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिँचतनी ॥ १ ॥ दिसनु रैनि मन माहि बसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी ॥ २ ॥ बलि
 बलि जाउ सिआम सुँदर कउ अकथ कथा जा की बात सुनी ॥ ३ ॥ जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु क्रिपा ठाकुर
 अपनी ॥ ४ ॥ २८ ॥ ११४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि के चरन जपि जाउ कुरबानु ॥ गुरु मेरा पारब्रह्म परमेसुरु ता का
 हिरदै धरि मन धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखदाता जा का कीआ सगल जहानु ॥ रसना रवहु एकु नाराइणु
 साची दरगह पावहु मानु ॥ १ ॥ साधू सुँगु परापति जा कउ तिन ही पाइआ एहु निधानु ॥ गावउ गुण कीरतनु नित सुआमी करि
 किरपा नानक दीजै दानु ॥ २ ॥ २९ ॥ ११५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीए सतिगुरु की सरण ॥ जै जैकारु होआ जग
 अँतरि पारब्रह्म मेरे तारण तरण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिस्वँभर पूरन सुखदाता सगल समग्री पोखण भरण ॥ थान थनँतरि सरब
 निरँतरि बलि बलि जाई हरि के चरण ॥ १ ॥ जीअ जुगति वसि मेरे सुआमी सरब सिधि तुम कारण करण ॥ आदि जुगादि प्रभु
 रखदा आइआ हरि सिमरत नानक नही डरण ॥ २ ॥ ३० ॥ ११६ ॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ८ ११६ सतिगुरु प्रसादि ॥

मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा ॥ ईघै निरगुन ऊघै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नगर महि आपि बाहरि
 फुनि आपन प्रभ मेरे को सगल बसेरा ॥ आपे ही राजनु आपे ही राइआ कह कह ठाकुरु कह कह चेरा ॥ १ ॥ का कउ दुराउ का
 सिउ बलबँचा जह जह पेखउ तह तह नेरा ॥ साध मूरति गुरु भेटिओ नानक मिलि सागर बूँद नही अन हेरा ॥ २ ॥ १ ॥ ११७
 ॥

बिलावलु महला ५ ॥ तुम्ह समरथा कारन करन ॥ ढाकन ढाकि गोबिद गुर मेरे मोहि अपराधी सरन चरन ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ जो जो कीनो सो तुम्ह जानिओ पेखिओ ठउर नाही कछु ढीठ मुकरन ॥ बड परतापु सुनिओ प्रभ तुम्हरो कोटि अघा
 तेरो नाम हरन ॥ १ ॥ हमरो सहाउ सदा सदा भूलन तुम्हरो बिरदु पतित उधरन ॥ करुणा मै किरपाल क्रिपा निधि जीवन
 पद नानक हरि दरसन ॥ २ ॥ २ ॥ ११८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसी किरपा मोहि करहु ॥ संतह चरन हमारो माथा
 नैन दरसु तनि धूरि परहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर को सबदु मेरै हीअरै बासै हरि नामा मन संगि धरहु ॥ तसकर पंच निवारहु
 ठाकुर सगलो भरमा होमि जरहु ॥ १ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भल मानै भावनु दुबिधा दूरि टरहु ॥ नानक के प्रभ तुम ही दाते
 संतसंगि ले मोहि उधरहु ॥ २ ॥ ३ ॥ ११९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा ॥ तुम्हरो धिआनु
 तुम्हरो रंगा ॥ तुम्हरी सेवा तुम्हारे अंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन की टहल संभाखनु जन सिउ ऊठनु बैठनु जन कै संगा
 ॥ जन चर रज मुखि माथै लागी आसा पूरन अनंत तरंगा ॥ १ ॥ जन पारब्रहम जा की निरमल महिमा जन के चरन
 तीरथ कोटि गंगा ॥ जन की धूरि कीओ मजनु नानक जनम जनम के हरे कलंगा ॥ २ ॥ ४ ॥ १२० ॥ बिलावलु महला
 ५ ॥ जिउ भावै तिउ मोहि प्रतिपाल ॥ पारब्रहम परमेसर सतिगुर हम बारिक तुम्ह पिता किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि
 निरगुण गुणु नाही कोई पहुचि न साकउ तुम्हरी घाल ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानहु जीउ पिंडु सभु तुमरो माल ॥ १
 ॥ अंतरजामी पुरख सुआमी अनबोलत ही जानहु हाल ॥ तनु मनु सीतलु होइ हमारो नानक प्रभ जीउ नदरि निहाल ॥
 २ ॥ ५ ॥ १२१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखु सदा प्रभ अपनै साथ ॥ तू हमरो प्रीतमु मनमोहनु तुझ बिनु जीवनु सगल
 अकाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रंक ते राउ करत खिन भीतरि प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ जलत अगनि महि जन आपि उधारे
 करि अपुने दे राखे हाथ ॥ १ ॥ सीतल सुखु पाइओ मन त्रिपते हरि सिमरत स्रम सगले लाथ ॥ निधि निधान

नानक हरि सेवा अवर सिआनप सगल अकाथ ॥ २ ॥ ६ ॥ १२२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अपने सेवक कउ कबहु न
 बिसारहु ॥ उरि लागहु सुआमी प्रभ मेरे पूरब प्रीति गोबिंद बीचारहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुमाहरो हमरे
 दोख रिदै मत धारहु ॥ जीवन प्रान हरि धनु सुखु तुम ही हउमै पटलु क्रिपा करि जारहु ॥ १ ॥ जल बिहून मीन कत जीवन दूध
 बिना रहनु कत बारो ॥ जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेखि दरसु सुआमी सुख सारो ॥ २ ॥ ७ ॥ १२३ ॥
 बिलावलु महला ५ ॥ आगै पाछै कुसलु भइआ ॥ गुरि पूरै पूरी सभ राखी पारब्रहमि प्रभि कीनी मइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि
 तनि रवि रहिआ हरि प्रीतमु दूख दरद सगला मिटि गइआ ॥ सांति सहज आनद गुण गाए दूत दुसट सभि होए खइआ ॥ १
 ॥ गुनु अवगुनु प्रभि कछु न बीचारिओ करि किरपा अपुना करि लइआ ॥ अतुल बडाई अचुत अबिनासी नानकु उचरै हरि की
 जइआ ॥ २ ॥ ८ ॥ १२४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु भै भगती तरनु कैसे ॥ करहु अनुग्रहु पतित उधारन राखु सुआमी
 आप भरोसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरनु नही आवत फिरत मद मावत बिखिआ राता सुआन जैसे ॥ अउध बिहावत अधिक
 मोहावत पाप कमावत बुडे ऐसे ॥ १ ॥ सरनि दुख भँजन पुरख निरँजन साधू संगति खणु जैसे ॥ केसव कलेस नास अघ
 खँडन नानक जीवत दरस दिसे ॥ २ ॥ ९ ॥ १२५ ॥

शगु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ९ १४ सितिगुर प्रसादि ॥

आपहि मेलि लए ॥ जब ते सरनि तुमारी आए तब ते दोख गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि अभिमामु अरु चिंत बिरानी साधह
 सरन पए ॥ जपि जपि नामु तुमाहरो प्रीतम तन ते रोग खए ॥ १ ॥ महा मुगध अजान अगिआनी राखे धारि दए ॥ कहु
 नानक गुरु पूरा भेटिओ आवन जान रहे ॥ २ ॥ १ ॥ १२६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीवउ नामु सुनी ॥ जउ सुप्रसँन भए
 गुर पूरे तब मेरी आस पुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीर गई बाधी मनि धीरा मोहिओ अनद धुनी ॥ उपजिओ चाउ मिलन प्रभ प्रीतम

रहनु न जाइ खिनी ॥ १ ॥ अनिक भगत अनिक जन तारे सिमरहि अनिक मुनी ॥ अँधुले टिक निरधन धनु पाइओ प्रभ
नानक अनिक गुनी ॥ २ ॥ २ ॥ १२७ ॥

रागु बिलावलु महला ७ घरु १३ पडताल १८ सितिगुर प्रसादि ॥

मोहन नीद न आवै हावै हार कजर बसत्र अभरन कीने ॥ उडीनी उडीनी उडीनी ॥ कब घरि आवै री ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सरनि सुहागनि चरन सीसु धरि ॥ लालनु मोहि मिलावहु ॥ कब घरि आवै री ॥ १ ॥ सुनह सहेरी मिलन बात कहउ सगरो
अहँ मिटावहु तउ घर ही लालनु पावहु ॥ तब रस मँगल गुन गावहु ॥ आनद रूप धिआवहु ॥ नानकु दुआरै आइओ ॥ तउ
मै लालनु पाइओ री ॥ २ ॥ मोहन रूपु दिखावै ॥ अब मोहि नीद सुहावै ॥ सभ मेरी तिखा बुझानी ॥ अब मै सहजिं
समानी ॥ मीठी परहि कहानी ॥ मोहन लालनु पाइओ री ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२८ ॥ बिलावलु महला ७ ॥ मोरी अहँ
जाइ दरसन पावत हे ॥ राचहु नाथ ही सहाई संतना ॥ अब चरन गहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आहे मन अवरु न भावै चरनावै
चरनावै उलझिओ अलि मकरंद कमल जिउ ॥ अन रस नही चाहै एकै हरि लाहै ॥ १ ॥ अन ते टूटीऐ रिख ते छूटीऐ ॥ मन
हरि रस घूटीऐ सँगि साधु उलटीऐ ॥ अन नाही नाहीरे ॥ नानक प्रीति चरन चरन हे ॥ २ ॥ २ ॥ १२९ ॥

रागु बिलावलु महला ९ दुपदे १८ सितिगुर प्रसादि ॥

दुख हरता हरि नामु पछानो ॥ अजामलु गनिका जिह सिमरत मुक्त भए जीअ जानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गज की त्रास मिटी
छिनहु महि जब ही रागु बखानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रुअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥ १ ॥ अचल अमर निरभै पदु
पाइओ जगत जाहि हैरानो ॥ नानक कहत भगत रखक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ९ ॥
हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥ भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहा भइओ तीरथ ब्रत

कीए राम सरनि नहीं आवै ॥ जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥ १ ॥ मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के
गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥ २ ॥ २ ॥ बिलावलु महला ९ ॥ जा मै भजनु राम को नाही
॥ तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥
निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥ १ ॥ जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥ तैसे ही तुम
ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥ २ ॥ कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥ कहु नानक सोई नरु गरुआ
जो प्रभ के गुन गावै ॥ ३ ॥ ३ ॥

बिलावलु असटपदीआ महला १ घरु १० १४ शितिगुर प्रसादि ॥

निकटि वसै देखै सभु सोई ॥ गुरुमुखि विरला बूझै कोई ॥ विणु भै पड़े भगति न होई ॥ सबदि रते सदा सुखु होई ॥ १ ॥ ऐसा
गिआनु पदारथु नामु ॥ गुरुमुखि पावसि रसि रसि मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु गिआनु कथै सभु कोई ॥ कथि कथि बादु करे
दुखु होई ॥ कथि कहणै ते रहै न कोई ॥ बिनु रस रते मुकति न होई ॥ २ ॥ गिआनु धिआनु सभु गुर ते होई ॥ साची रहत
साचा मनि सोई ॥ मनमुख कथनी है परु रहत न होई ॥ नावहु भूले थाउ न कोई ॥ ३ ॥ मनु माइआ बाँधिओ सर जालि ॥
घटि घटि बिआपि रहिओ बिखु नालि ॥ जो आंजै सो दीसै कालि ॥ कारजु सीधो रिदै समाहलि ॥ ४ ॥ सो गिआनी जिनि
सबदि लिव लाई ॥ मनमुखि हउमै पति गवाई ॥ आपे करतै भगति कराई ॥ गुरुमुखि आपे दे वडिआई ॥ ५ ॥ शैणि अंधारी
निरमल जोति ॥ नाम बिना झूठे कुचल कछोति ॥ बेदु पुकारै भगति सरोति ॥ सुणि सुणि मानै वेखै जोति ॥ ६ ॥ सासत्र
सिमिति नाम द्विडामँ ॥ गुरुमुखि सांति ऊतम करामँ ॥ मनमुखि जोनी दूख सहामँ ॥ बंधन तुटे इकु नामु वसामँ ॥ ७ ॥

मँने नामु सची पति पूजा ॥ किसु वेखा नाही को दूजा ॥ देखि कहउ भावै मनि सोइ ॥ नानकु कहै अवरु नही कोइ ॥ ८
 ॥ १ ॥ बिलावलु महला १ ॥ मन का कहिआ मनसा करै ॥ इहु मनु पुँनु पापु उचरै ॥ माइआ मदि माते त्रिपति न आवै ॥
 त्रिपति मुकति मनि साचा भावै ॥ १ ॥ तनु धनु कलतु सभु देखु अभिमाना ॥ बिनु नावै किछु सँगि न जाना ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ कीचहि रस भोग खुसीआ मन केरी ॥ धनु लोकां तनु भसमै ढेरी ॥ खाकू खाकु रलै सभु फैलु ॥ बिनु सबदै नही उतरै
 मैलु ॥ २ ॥ गीत राग घन ताल सि कूरे ॥ त्रिहु गुण उपजै बिनसै दूरे ॥ दूजी दुरमति दरदु न जाइ ॥ छूटै गुरमुखिं दारु
 गुण गाइ ॥ ३ ॥ धोती ऊजल तिलकु गलिं माला ॥ अंतरिं क्रोधु पड़हि नाट साला ॥ नामु विसार माइआ मदु पीआ ॥
 बिनु गुर भगति नाही सुखु थीआ ॥ ४ ॥ सूकर सुआन गरधभ मँजारा ॥ पसू मलेछ नीच चँडाला ॥ गुर ते मुहु फेरै तिन्ह
 जोनि भवाईरे ॥ बँधनि बाधिआ आईरे जाईरे ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते लहै पदारथु ॥ हिरदै नामु सदा किरतारथु ॥ साची
 दरगह पूछ न होइ ॥ माने हुकमु सीझै दरि सोइ ॥ ६ ॥ सतिगुरु मिलै त तिस कउ जाणै ॥ रहै रजाई हुकमु पछाणै ॥
 हुकमु पछाणि सचै दरि वासु ॥ काल बिकाल सबदि भए नासु ॥ ७ ॥ रहै अतीतु जाणै सभु तिस का ॥ तनु मनु अरपै है इहु
 जिस का ॥ ना ओहु आवै ना ओहु जाइ ॥ नानक साचे साचि समाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

बिलावलु महला ३ अष्टपदी घरु १० १३ सतिगुर प्रसादि ॥

नजगु कऊआ मुखिं चुँच गिआनु ॥ अंतरिं लोभु झूठु अभिमानु ॥ बिनु नावै पाजु लहगु निदानि ॥ १ ॥ सतिगुर सेवि
 नामु वसै मनि चीति ॥ गुरु भेटे हरि नामु चेतावै बिनु नावै होर झूठु परीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु
 ॥ सबदु चीन्हि सहज घरि आवहु ॥ साचै नाइ वडाई पावहु ॥ २ ॥ आपि न बूझै लोक बुझावै ॥ मन का अँधा अँधु कमावै
 ॥ दरु घरु महलु ठउरु कैसे पावै ॥ ३ ॥ हरि जीउ सेवीरे अंतरजामी ॥ घट घट अंतरि जिस की जोति समानी ॥ तिसु

नालिं लिआ चलै पहनामी ॥ ४ ॥ साचा नामु साचै सबदि जानै ॥ आपै आपु मिलै चूकै अभिमानै ॥ गुरमुखि नामु सदा सदा
 वखानै ॥ ५ ॥ सतिगुरि सेविरे दूजी दुरमति जाई ॥ अउगण काटि पापा मति खाई ॥ कँचन काइआ जोती जोति समाई ॥
 ६ ॥ सतिगुरि मिलिरे वडी वडिआई ॥ दुखु काटै हिरदै नामु वसाई ॥ नामि रते सदा सुखु पाई ॥ ७ ॥ गुरमति मानिआ
 करणी सारु ॥ गुरमति मानिआ मोख दुआरु ॥ नानक गुरमति मानिआ परवारै साधारु ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

बिलावलु महला ४ असापदीआ घरु ११ ११ सतिगुर प्रसादि ॥

आपै आपु खाइ हउ मेटै अनदिनु हरि रस गीत गवईआ ॥ गुरमुखि परचै कँचन काइआ निरभऊ जोती जोति मिलईआ ॥ १ ॥
 मै हरि हरि नामु अधारु रमईआ ॥ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु नावै गुरमुखि हरि हरि पाठ पढ़ईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकु गिरहु
 दस दुआर है जा के अहिनि सितसकर पँच चोर लगईआ ॥ धरमु अरथु सभु हिरि ले जावहि मनमुख अँधुले खबरि न पईआ ॥ २
 ॥ कँचन कोटु बहु माणकि भरिआ जागे गिआन तति लिव लईआ ॥ तसकर हेरु आइ लिंकाने गुर कै सबदि पकड़ि बँधि पईआ
 ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु पोतु बोहिथा खेवटु सबदु गुरु पारि लँघईआ ॥ जमु जागाती नेडि न आवै ना को तसकरु चोरु लगईआ
 ॥ ४ ॥ हरि गुण गावै सदा दिनु राती मै हरि जसु कहते अँत न लहीआ ॥ गुरमुखि मनूआ इकतु घरि आवै मिलओ गोपाल
 नीसानु बजईआ ॥ ५ ॥ नैनी देखिं दरसु मनु त्रिपतै स्रवन बाणी गुर सबदु सुणईआ ॥ सुनि सुनि आतम देव है भीने रसि रसि
 राम गोपाल खईआ ॥ ६ ॥ त्रै गुण माइआ मोहि विआपे तुरीआ गुणु है गुरमुखि लहीआ ॥ एक द्रिसटि सभ सम करि जाणै
 नदरी आवै सभु ब्रहमु पसरईआ ॥ ७ ॥ राम नामु है जोति सबाई गुरमुखि आपे अलखु लखईआ ॥ नानक दीन दइआल भए है
 भगति भाइ हरि नामि समईआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ हरि हरि नामु सीतल जलु धिआवहु हरि

चंदन वासु सुगंध गंधईआ ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ मै हिरड पलास संगि हरि बुहीआ ॥ १ ॥ जपि जगंनथ
 जगदीस गुसईआ ॥ सरणि परे सोई जन उबरे जिउ प्रहिलाद उधारि समईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भार अठारह महि चंदनु ऊतम
 चंदन निकटि सभ चंदनु हुईआ ॥ साकत कूडे ऊभ सुक हूरे मनि अभिमानु विछुडि दूरि गईआ ॥ २ ॥ हरि गति मिति करता
 आपे जाणै सभ बिधि हरि हरि आपि बनईआ ॥ जिंसु सतिगुरु भेटे सु कंचनु होवै जो धुरि लिखिआ सु मिटै न मिटईआ ॥ ३
 ॥ रतन पदारथ गुरमति पावै सागर भगति भंडार खुलहईआ ॥ गुर चरणी इक सरधा उपजी मै हरि गुण कहते त्रिपति न भईआ
 ॥ ४ ॥ परम बैरागु नित नित हरि धिआए मै हरि गुण कहते भावनी कहीआ ॥ बार बार खिनु खिनु पलु कहीए हरि पारु न पावै
 परै परईआ ॥ ५ ॥ सासत बेद पुराण पुकारहि धरमु करहु खटु करम द्विड़ईआ ॥ मनमुख पाखंडि भरमि विगूते लोभ लहरि नाव
 भारि बुडईआ ॥ ६ ॥ नामु जपहु नामे गति पावहु सिमिति सासत्र नामु द्विड़ईआ ॥ हउमै जाइ त निरमलु होवै गुरमुखि परचै
 परम पदु पईआ ॥ ७ ॥ इहु जगु वरनु रूपु सभु तेरा जितु लावहि से करम कमईआ ॥ नानक जंत वजाए वाजहि जितु भावै
 तितु राहि चलईआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ गुरमुखि अगम अगोचरु धिआइआ हउ बलि बलि सतिगुर सति
 पुरखईआ ॥ राम नामु मेरै प्राणि वसाए सतिगुर परसि हरि नामि समईआ ॥ १ ॥ जन की टेक हरि नामु टिकईआ ॥ सतिगुर
 की धर लागा जावा गुर किरपा ते हरि दरु लहीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु सरीरु करम की धरती गुरमुखि मथि मथि ततु कढईआ
 ॥ लालु जवेहर नामु प्रगासिआ भांडै भाउ पवै तितु अईआ ॥ २ ॥ दासनि दास दास होइ रहीरे जो जन राम भगत निज भईआ
 ॥ मनु बुधि अरपि धरउ गुर आगै गुर परसादी मै अकथु कथईआ ॥ ३ ॥ मनमुख माइआ मोहि विआपे इहु मनु त्रिसना जलत
 तिखईआ ॥ गुरमति नामु अंमि त जलु पाइआ अगनि बुझी गुर सबदि बुझईआ ॥ ४ ॥ इहु मनु नाचै सतिगुर आगै

अनहद सबद धुनि तूर वजईआ ॥ हरि हरि उस्तति करै दिनु राती रखि रखि चरण हरि ताल पूरईआ ॥ ५ ॥ हरि कै रंगि
 रता मनु गावै रसि रसाल रसि सबदु खईआ ॥ निज घरि धार चुरे अति निरमल जिनि पीआ तिन ही सुखु लहीआ ॥ ६
 ॥ मनहठि करम करै अभिमानी जिउ बालक बालू घर उसरईआ ॥ आवै लहरि समुंद सागर की खिन महि भिन भिन ढहि
 पईआ ॥ ७ ॥ हरि सरु सागरु हरि है आपे इहु जगु है सभु खेलु खेलईआ ॥ जिउ जल तरंग जलु जलहि समावहि
 नानक आपे आपि रमईआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ सतिगुरु परचै मनि मुँद्रा पाई गुर का सबदु तनि
 भसम द्रिडईआ ॥ अमर पिँड भए साधू सँगि जनम मरण दोऊ मिटि गईआ ॥ १ ॥ मेरे मन साधसंगति मिलि रहीआ ॥
 क्रिपा करहु मधसूदन माधउ मै खिनु खिनु साधू चरण पखीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजै गिरसतु भइआ बनवासी इकु खिनु
 मनुआ टिकै न टिकईआ ॥ धावतु धाइ तदे घरि आवै हरि हरि साधू सरणि पवईआ ॥ २ ॥ धीआ पूत छोडि सँनिआसी
 आसा आस मनि बहुतु करईआ ॥ आसा आस करै नही बूझै गुर कै सबदि निरास सुखु लहीआ ॥ ३ ॥ उपजी तरक
 दिगंबरु होआ मनु दह दिस चलि चलि गवनु करईआ ॥ प्रभवनु करै बूझै नही तिसना मिलि सँगि साध दइआ घरु लहीआ
 ॥ ४ ॥ आसण सिध सिखाहि बहुतेरे मनि मागहि रिधि सिधि चेटक चेटकईआ ॥ त्रिपति सँतोखु मनि सांति न आवै
 मिलि साधू त्रिपति हरि नामि सिधि पईआ ॥ ५ ॥ अँडज जेरज सेतज उतभुज सभि वरन रूप जीअ जँत उपईआ ॥
 साधू सरणि परै सो उबरै खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु चँडालु चँडईआ ॥ ६ ॥ नामा जैदेउ कँबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु
 चमिआरु चमईआ ॥ जो जो मिलै साधू जन संगति धन धँना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥ ७ ॥ सँत जना की हरि
 पैज रखाई भगति वछलु अँगीकारु करईआ ॥ नानक सरणि परे जगजीवन हरि हरि किरपा धारि रखीआ ॥ ८ ॥ ४ ॥
 ७ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ अँतरि पिआस उठी प्रभ केरी सुणि गुर बचन मनि तिर लगईआ ॥ मन की बिरथा मन

ही जाणै अवरु कि जाणै को पीर परईआ ॥ १ ॥ राम गुरि मोहनि मोहि मनु लईआ ॥ हउ आकल बिकल भई गुर देखे हउ
 लोट पोट होइ परईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ निरखत फिरउ सभि देस दिसंतर मै प्रभ देखन को बहुतु मनि चईआ ॥ मनु तनु
 काटि देउ गुर आगै जिनि हरि प्रभ मारगु पँथु दिखईआ ॥ २ ॥ कोई आणि सदेसा देइ प्रभ केरा रिद अंतरि मनि तनि मीठ
 लगईआ ॥ मसतकु काटि देउ चरणा तलि जो हरि प्रभु मेले मेलि मिलईआ ॥ ३ ॥ चलु चलु सखी हम प्रभु परबोधह गुण
 कामण करि हरि प्रभु लहीआ ॥ भगति वछलु उआ को नामु कहीअतु है सरणि प्रभू तिसु पाछै परईआ ॥ ४ ॥ खिमा सीगार करे
 प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ रसि रसि भोग करे प्रभु मेरा हम तिसु आगै जीउ कटि कटि परईआ ॥ ५ ॥
 हरि हरि हारु कँठि है बनिआ मनु मोतीचूरु वड गहन गहनईआ ॥ हरि हरि सरधा सेज विछाई प्रभु छोडि न सकै बहुतु मनि
 भईआ ॥ ६ ॥ कहै प्रभु अवरु अवरु किछु कीजै सभु बादि सीगारु फोकट फोकटईआ ॥ कीओ सीगारु मिलण कै ताई प्रभु
 लीओ सुहागनि थूक मुखि परईआ ॥ ७ ॥ हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै परईआ ॥ ७ ॥ हम चेरी तू अगम
 गुसाई किआ हम करह तेरै वसि परईआ ॥ दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥ ८ ॥ ७ ॥ ८ ॥
 बिलावलु महला ४ ॥ मै मनि तनि प्रेम अगम ठाकुर का खिनु खिनु सरधा मनि बहुतु उठईआ ॥ गुर देखे सरधा मन पूरी जिउ
 चात्रिक प्रिउ प्रिउ बूँद मुख परईआ ॥ १ ॥ मिलु मिलु सखी हरि कथा सुनईआ ॥ सतिगुरु दइआ करे प्रभु मेले मै तिसु आगै
 सिरु कटि कटि परईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन मै प्रभ देखे बिनु नीद न परईआ ॥ बैदक नाटिक देखि
 भुलाने मै हिरदै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ ॥ २ ॥ हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम जिउ बिनु अमलै अमली मरि गईआ
 ॥ जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी तिन्ह अवरु न भावै बिनु हरि को दुईआ ॥ ३ ॥ कोई आनि आनि मेरा प्रभू मिलावै हउ
 तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ ॥ अनेक जनम के विछुडे जन मेले जा सति सति सतिगुर सरणि पवईआ ॥ ४ ॥ सेज एक

एको प्रभु ठाकुरु महलु न पावै मनमुख भरमईआ ॥ गुरु गुरु करत सरणि जे आवै प्रभु आइ मिलै खिनु ढील न पईआ ॥ ५ ॥
 करि करि किरिआचार वधाए मनि पाखँड करमु कपट लोभईआ ॥ बेसुआ कै घरि बेटा जनमिआ पिता ताहि किआ नामु
 सदईआ ॥ ६ ॥ पूरब जनमि भगति करि आए गुरि हरि हरि हरि हरि भगति जमईआ ॥ भगति भगति करते हरि पाइआ जा
 हरि हरि हरि हरि नामि समईआ ॥ ७ ॥ प्रभि आणी आणि महिंदी पीसाई आपे घोलि घोलि अंगि लईआ ॥ जिन कउ ठाकुरि
 किरपा धारी बाह पकरि नानक कठि लईआ ॥ ८ ॥ ६ ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ ९ ॥

रागु बिलावलु महला ५ असटपदी वरु १२ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

उपमा जात न कही मेरे प्रभ की उपमा जात न कही ॥ तजि आन सरणि गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ चरन कमल अपार ॥ हउ
 जाउ सद बलिहार ॥ मनि प्रीति लागी ताहि ॥ तजि आन कतहि न जाहि ॥ १ ॥ हरि नाम रसना कहन ॥ मल पाप
 कलमल दहन ॥ चडि नाव सँत उधारि ॥ भै तरे सागर पारि ॥ २ ॥ मनि डोरि प्रेम परीति ॥ इह सँत निरमल रीति ॥ तजि
 गए पाप बिकार ॥ हरि मिले प्रभ निरँकार ॥ ३ ॥ प्रभ पेखीरे बिसमाद ॥ चखि अनद पूरन साद ॥ नह डोलीरे इत ऊत ॥
 प्रभ बसे हरि हरि चीत ॥ ४ ॥ तिन्ह नाहि नरक निवासु ॥ नित सिमरि प्रभ गुणतासु ॥ ते कमु न पेखहि नैन ॥ सुनि मोहे
 अनहत बैन ॥ ५ ॥ हरि सरणि सूर गुपाल ॥ प्रभ भगत वसि दइआल ॥ हरि निगम लहहि न भेव ॥ नित करहि मुनि जन
 सेव ॥ ६ ॥ दुख दीन दरद निवार ॥ जा की महा बिखड़ी कार ॥ ता की मिति न जानै कोइ ॥ जलि थलि महीअलि सोइ ॥
 ७ ॥ करि बँदना लख बार ॥ थकि परिओ प्रभ दरबार ॥ प्रभ करहु साधू धूरि ॥ नानक मनसा पूरि ॥ ८ ॥ १ ॥ बिलावलु
 महला ५ ॥ प्रभ जनम मरन निवारि ॥ हारि परिओ दुआरि ॥ गहि चरन साधू सँग ॥ मन मिसट हरि हरि रँग ॥

करि दइआ लेहु लड़ि लाइ ॥ नानका नामु धिआइ ॥ १ ॥ दीना नाथ दइआल मेरे सुआमी दीना नाथ दइआल ॥ जाचउ
 सँत खाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँसारु बिखिआ कूप ॥ तम अगिआन मोहत घूप ॥ गहि भुजा प्रभ जी लेहु ॥ हरि नामु
 अपुना देहु ॥ प्रभ तुझ बिना नही ठाउ ॥ नानका बलि बलि जाउ ॥ २ ॥ लोभि मोहि बाधी देह ॥ बिनु भजन होवत
 खेह ॥ जमदूत महा भइआन ॥ चित गुप्त करमहि जान ॥ दिनु रैनि साखि सुनाइ ॥ नानका हरि सरनाइ ॥ ३ ॥ भै
 भँजना मुरारि ॥ करि दइआ पतित उधारि ॥ मेरे दोख गने न जाहि ॥ हरि बिना कतहि समाहि ॥ गहि ओट चितवी
 नाथ ॥ नानका दे रखु हाथ ॥ ४ ॥ हरि गुण निधे गोपाल ॥ सरब घट प्रतिपाल ॥ मनि प्रीति दरसन पिआस ॥
 गोबिंद पूरन आस ॥ इक निमख रहनु न जाइ ॥ वड भागि नानक पाइ ॥ ५ ॥ प्रभ तुझ बिना नही होर ॥ मनि प्रीति
 चँद चकोर ॥ जिउ मीन जल सिउ हेतु ॥ अलि कमल भिँनु न भेतु ॥ जिउ चकवी सूरज आस ॥ नानक चरन पिआस ॥
 ६ ॥ जिउ तरुनि भरत परान ॥ जिउ लोभीरे धनु दानु ॥ जिउ दूध जलहि सँजोगु ॥ जिउ महा खुधिआरथ भोगु ॥
 जिउ मात पूतहि हेतु ॥ हरि सिमरि नानक नेत ॥ ७ ॥ जिउ दीप पतन पतंग ॥ जिउ चोरु हिरत निसंग ॥ मैगलहि
 कामै बंधु ॥ जिउ ग्रसत बिखई धंधु ॥ जिउ जूआर बिसनु न जाइ ॥ हरि नानक इहु मनि लाइ ॥ ८ ॥ कुरँक नादै नेहु ॥
 चात्रिकु चाहत मेहु ॥ जन जीवना सतसंगि ॥ गोबिंदु भजना रँगि ॥ रसना बखानै नामु ॥ नानक दरसन दानु ॥ ९ ॥
 गुन गाइ सुनि लिखि देइ ॥ सो सरब फल हरि लेइ ॥ कुल समूह करत उधारु ॥ सँसारु उतरसि पारि ॥ हरि चरन
 बोहिथ ताहि ॥ मिलि साधसंगि जसु गाहि ॥ हरि पैज रखै मुरारि ॥ हरि नानक सरनि दुआरि ॥ १० ॥ २ ॥

बिलावतु महला १ थिती घरु १० जाति १८ सतिगुर प्रसादि ॥

एकम एकँकारु निराला ॥ अमरु अजोनी जाति न जाला ॥ अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥ खोजत खोजत घटि
 घटि देखिआ ॥ जो देखि दिखावै तिस कउ बलि जाई ॥ गुर परसादि

परम पदु पाई ॥ १ ॥ किआ जपु जापउ बिनु जगदीसै ॥ गुर कै सबदि महलु घरु दीसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजै भाइ लगे
 पछुताणे ॥ जम दरि बाधे आवण जाणे ॥ किआ लै आवहि किआ ले जाहि ॥ सिरि जमकालु सि चोटा खाहि ॥ बिनु गुर
 सबद न छूटसि कोइ ॥ पाखँडि कीनैह मुकति न होइ ॥ २ ॥ आपे सचु कीआ कर जोड़ि ॥ अँडज फोड़ि जोड़ि विछोड़ि ॥
 धरति अकासु कीए बैसण कउ थाउ ॥ राति दिनँतु कीए भउ भाउ ॥ जिनि कीए करि वेखणहारा ॥ अवरु न दूजा
 सिरजणहारा ॥ ३ ॥ त्रितीआ ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ देवी देव उपाए वेसा ॥ जोती जाती गणत न आवै ॥ जिनि साजी
 सो कीमति पावै ॥ कीमति पाइ रहिआ भरपूरि ॥ किसु नेडै किसु आखा दूरि ॥ ४ ॥ चउथि उपाए चारे बेदा ॥ खाणी चारे
 बाणी भेदा ॥ असट दसा खटु तीनि उपाए ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ तीनि समावै सउथै वासा ॥ प्रणवति नानक
 हम ता के दासा ॥ ५ ॥ पँचमी पँच भूत बेताला ॥ आपि अगोचरु पुरखु निराला ॥ इकि भ्रमि भूखे मोह पिआसे ॥ इकि
 रसु चाखि सबदि त्रिपतासे ॥ इकि रँगे राते इकि मरि धूरि ॥ इकि दरि घरि साचै देखि हदूरि ॥ ६ ॥ झूठे कउ नाही पति
 नाउ ॥ कबहु न सूचा काला काउ ॥ पिँजरि पँखी बँधिआ कोइ ॥ छेरीं भरमै मुकति न होइ ॥ तउ छूटै जा खसमु छडाए ॥
 गुरमति मेले भगति दिडाए ॥ ७ ॥ खसटी खटु दरसन प्रभ साजे ॥ अनहद सबदु निराला वाजे ॥ जे प्रभ भावै ता महलि
 बुलावै ॥ सबदे भेदे तउ पति पावै ॥ करि करि वेस खपहि जलि जावहि ॥ साचै साचे साचि समावहि ॥ ८ ॥ सपतमी सतु
 सँतोखु सरीरि ॥ सात समुँद भरे निरमल नीरि ॥ मजनु सीलु सचु रिदै वीचारि ॥ गुर कै सबदि पावै सभि पारि ॥ मनि
 साचा मुखि साचउ भाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥ ९ ॥ असटमी असट सिधि बुधि साधै ॥ सचु निहकेवलु करमि
 अराधै ॥ पउण पाणी अगनी बिसराउ ॥ तही निरँजनु साचो नाउ ॥ तिसु महि मनूआ रहिआ लिव लाइ ॥ प्रणवति नानकु
 कालु न खाइ ॥ १० ॥ नाउ नउमी नवे नाथ नव खँडा ॥ घटि घटि नाथु महा बलवँडा ॥ आई पूता इहु जगु सारा ॥

प्रभ आदेसु आदि रखवारा ॥ आदि जुगादी है भी होगु ॥ ओहु अपरंपरु करणै जोगु ॥ ११ ॥ दसमी नामु दानु इसनानु ॥
 अनदिनु मजनु सचा गुण गिआनु ॥ सचि मैलु न लागै भ्रमु भउ भागै ॥ बिलमु न तूटसि काचै तागै ॥ जिउ तागा जगु एवै
 जाणहु ॥ असथिरु चीतु साचि रँगु माणहु ॥ १२ ॥ एकादसी इकु रिदै वसावै ॥ हिंसा ममता मोहु चुकावै ॥ फलु पावै ब्रतु
 आतम चीनै ॥ पाखंडि राचि ततु नही बीनै ॥ निरमलु निराहारु निहकेवलु ॥ सूचै साचे ना लागै मलु ॥ १३ ॥ जह देखउ तह
 एको एका ॥ होरि जीअ उपाए वेको वेका ॥ फलोहार कीए फलु जाइ ॥ रसु कस खाए सादु गवाइ ॥ कूडै लालचि लपटै लपटाइ
 ॥ छूटै गुरुमुखि साचु कमाइ ॥ १४ ॥ दुआदसि मुद्रा मनु अउधूता ॥ अहिनिशि जागहि कबहि न सूता ॥ जागतु जागि रहै
 लिव लाइ ॥ गुर परचै तिसु कालु न खाइ ॥ अतीत भए मारे बैराई ॥ प्रणवति नानक तह लिव लाई ॥ १५ ॥ दुआदसी दइआ
 दानु करि जाणै ॥ बाहरि जातो भीतरि आणै ॥ बरती बरत रहै निहकाम ॥ अजपा जापु जपै मुखि नाम ॥ तीनि भवण महि
 एको जाणै ॥ सभि सुचि संजम साचु पछाणै ॥ १६ ॥ तेरसि तरवर समुद कनारै ॥ अंम्रितु मूलु सिखरि लिव तारै ॥ डर डरि मरै
 न बूडै कोइ ॥ निडरु बूडि मरै पति खोइ ॥ डर महि घरु घर महि डरु जाणै ॥ तखति निवासु सचु मनि भाणै ॥ १७ ॥
 चउदसि चउथे थावहि लहि पावै ॥ राजस तामस सत काल समावै ॥ ससीअर कै घरि सूरु समावै ॥ जोग जुगति की कीमति
 पावै ॥ चउदसि भवन पाताल समाए ॥ खंड ब्रहमंड रहिआ लिव लाए ॥ १८ ॥ अमावसिआ चंदु गुपतु गैणारि ॥ बूझहु
 गिआनी सबदु बीचारि ॥ ससीअरु गगनि जोति तिहु लोई ॥ करि करि वेखै करता सोई ॥ गुर ते दीसै सो तिह ही माहि ॥
 मनमुखि भूले आवहि जाहि ॥ १९ ॥ घरु दरु थापि थिरु थानि सुहावै ॥ आपु पछाणै जा सतिगुरु पावै ॥ जह आसा तह
 बिनसि बिनासा ॥ फूटै खपरु दुबिधा मनसा ॥ ममता जाल ते रहै उदासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥ २० ॥ १ ॥

बिलावलु महला ३ वार सत घरु १० १० सतिगुर प्रसादि ॥

आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥ आपे वरतै अवरु न कोई ॥ ओति पोति जगु रहिआ परोई ॥ आपे करता करै सु होई ॥
नामि रते सदा सुखु होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ १ ॥ हिरेदै जपनी जपउ गुणतासा ॥ हरि अगम अगोचरु
अपरंपर सुआमी जन पगि लागि धिआवउ होइ दासनि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोमवारि सचि रहिआ समाइ ॥ तिस की
कीमति कही न जाइ ॥ आखि आखि रहे सभि लिव लाइ ॥ जिसु देवै तिसु पलै पाइ ॥ अगम अगोचरु लखिआ न जाइ
॥ गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ ॥ २ ॥ मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ॥ आपे सिरि सिरि धँधै लाइआ ॥ आपि बुझाए
सोई बूझै ॥ गुर कै सबदि दरु घरु सूझै ॥ प्रेम भगति करे लिव लाइ ॥ हउमै ममता सबदि जलाइ ॥ ३ ॥ बुधवारि आपे
बुधि सारु ॥ गुरमुखि करणी सबदु वीचारु ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ हरि गुण गावै हउमै मलु खोइ ॥ दरि सचै सद
सोभा पाए ॥ नामि रते गुर सबदि सुहाए ॥ ४ ॥ लाहा नामु पाए गुर दुआरि ॥ आपे देवै देवणहारु ॥ जो देवै तिस कउ
बलि जाईरे ॥ गुर परसादी आपु गवाईरे ॥ नानक नामु रखहु उर धारि ॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥ ५ ॥ वीरवारि वीर
भरमि भुलाए ॥ प्रेत भूत सभि दूजै लाए ॥ आपि उपाए करि वेखै वेका ॥ सभना करते तेरी टेका ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई
सो मिलै जिसु लैहि मिलाई ॥ ६ ॥ सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ॥ आपि उपाइ सभ कीमति पाई ॥ गुरमुखि होवै सु करै
बीचारु ॥ सचु संजमु करणी है कार ॥ वरतु नेमु निताप्रति पूजा ॥ बिनु बूझे सभु भाउ है दूजा ॥ ७ ॥ छनिछरवारि
सउण सासत बीचारु ॥ हउमै मेरा भसमै संसारु ॥ मनमुखु अंधा दूजै भाइ ॥ जम दरि बाधा चोटा खाइ ॥ गुर परसादी
सदा सुखु पाए ॥ सचु करणी साचि लिव लाए ॥ ८ ॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ हउमै मारि सचि लिव लागी ॥ तैरै
रंगि राते सहजि सुभाइ ॥ तू सुखदाता लैहि मिलाइ ॥ एकस ते दूजा नाही कोइ ॥ गुरमुखि बूझै सोझी होइ ॥ ९ ॥

पंद्रह थितीं, तै सत वार ॥ माहा रुती आवहि वार वार ॥ दिनसु रैणि तिवै संसारु ॥ आवा गउणु कीआ करतारि ॥
 निहचलु साचु रहिआ कल धारि ॥ नानक गुरुमुखि बूझै को सबदु वीचारि ॥ १० ॥ १ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ आदि
 पुरखु आपे खिसटि साजे ॥ जीअ जंत माइआ मोहि पाजे ॥ दूजै भाइ परपंचि लागे ॥ आवहि जावहि मरहि अभागे ॥
 सतिगुरि भेटिऐ सोझी पाइ ॥ परपंचु चूकै सचि समाइ ॥ १ ॥ जा कै मसतकि लिखिआ लेखु ॥ ता कै मनि चसिआ प्रभु
 एकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥ कोइ न मेटै तैरै लेखै ॥ सिध साधिक जे को कहै कहाए ॥ भरमे भूला
 आवै जाए ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु बूझै ॥ हउमै मारे ता दरु सूझै ॥ २ ॥ एकसु ते सभु दूजा हूआ ॥ एको वरतै अवरु न
 बीआ ॥ दूजै ते जे एको जाणै ॥ गुरु कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ सतिगुरु भेटे ता एको पाए ॥ विचहु दूजा ठाकि रहाए ॥
 ३ ॥ जिस दा साहिबु डाढा होइ ॥ तिस नो मारि न साकै कोइ ॥ साहिब की सेवकु रहै सरणाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई
 ॥ तिस ते ऊपरि नाही कोइ ॥ कउणु डरै डरु किस का होइ ॥ ४ ॥ गुरुमती सांति वसै सरीर ॥ सबदु चीनिह फिरि लगै न
 पीर ॥ आवै न जाइ ना दुखु पाए ॥ नामे राते सहजिं समाए ॥ नानक गुरुमुखि वेखै हदूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि
 ॥ ५ ॥ इकि सेवक इकि भरमि भुलाए ॥ आपे करे हरि आपि कराए ॥ एको वरतै अवरु न कोइ ॥ मनि रोसु कीजै जे दूजा
 होइ ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ दरि साचै साचे वीचारी ॥ ६ ॥ थिती वार सभिं सबदि सुहाए ॥ सतिगुरु सेवे ता फलु
 पाए ॥ थिती वार सभिं आवहि जाहि ॥ गुरु सबदु निहचलु सदा सचि समाहि ॥ थिती वार ता जा सचि राते ॥ बिनु नावै
 सभिं भरमहि काचे ॥ ७ ॥ मनमुख मरहि मरि बिगती जाहि ॥ एकु न चेतहि दूजै लोभाहि ॥ अचेत पिंडी अगिआन
 अंधारु ॥ बिनु सबदै किउ पाए पारु ॥ आपि उपाए उपावणहारु ॥ आपि कीतोनु गुरु वीचारु ॥ ८ ॥ बहुते भेख करहि
 भेखधारी ॥ भवि भवि भरमहि काची सारी ॥ ऐथै सुखु न आगै होइ ॥ मनमुख मुए अपना जनमु खोइ ॥ सतिगुरु

सेवे भरमु चुकाए ॥ घर ही अंदरि सचु महलु पाए ॥ ९ ॥ आपे पूरा करे सु होइ ॥ एहि थिती वार दूजा दोइ ॥ सतिगुर बाइहु
 अंधु गुबारु ॥ थिती वार सेवहि मुग्ध गवार ॥ नानक गुरमुखि बूझै सोझी पाइ ॥ इकतु नामि सदा रहिआ समाइ ॥ १०
 ॥ २ ॥

बिलावलु महला १ छँत देखणी १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मुँध नवेलड़ीआ गोइलि आई राम ॥ मटुकी डारि धरी हरि लिव लाई राम ॥ लिव लाइ हरि सिउ रही गोइलि सहजि सबदि
 सीगारीआ ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती मिलहु साचि पिआरीआ ॥ धन भाइ भगती देखि प्रीतम काम क्रोधु निवारिआ
 ॥ नानक मुँध नवेल सुँदरि देखि पिरु साधारिआ ॥ १ ॥ सचि नवेलड़ीए जोबनि बाली राम ॥ अउ न जाउ कही अपने सह
 नाली राम ॥ नाह अपने सँगि दासी मै भगति हरि की भावए ॥ अगाधि बोधि अकथु कथीए सहजि प्रभ गुण गावए ॥ राम
 नाम रसाल रसीआ रवै साचि पिआरीआ ॥ गुरि सबदु दीआ दानु कीआ नानका वीचारीआ ॥ २ ॥ स्त्रीधर मोहिअड़ी पिर
 सँगि सूती राम ॥ गुर कै भाइ चलो साचि सँगूती राम ॥ धन साचि सँगूती हरि सँगि सूती सँगि सखी सहेलीआ ॥ इक भाइ
 इक मनि नामु वसिआ सतिगुरू हम मेलीआ ॥ दिनु रैणि घड़ी न चसा विसरै सासि सासि निरँजनो ॥ सबदि जोति जगाइ
 दीपकु नानका भउ भँजनो ॥ ३ ॥ जोति सबाइड़ीए त्रिभवण सारे राम ॥ घटि घटि रवि रहिआ अलख अपारे राम ॥ अलख
 अपार अपारु साचा आपु मारि मिलाईए ॥ हउमै ममता लोभु जालहु सबदि मैलु चुकाईए ॥ दरि जाइ दरसनु करी भाणै तारि
 तारणहारिआ ॥ हरि नामु अँम्रितु चाखि त्रिपती नानका उर धारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला १ ॥ मै मनि चाउ घणा
 साचि विगासी राम ॥ मोही प्रेम पिरै प्रभि अबिनासी राम ॥ अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीरे ॥ किरपालु सदा
 दइआलु दाता जीआ अंदरि तूँ जीरे ॥ मै अवरु गिआनु न थिआनु पूजा हरि नामु अँतरि वसि रहे ॥ भेरु भवनी

हठु न जाना नानका सचु गहि रहे ॥ १ ॥ भिँनड़ी रैणि भली दिनस सुहाए राम ॥ निज घरि सूतड़ीए पिरमु
जगाए राम ॥ नव हाणि नव धन सबदि जागी आपणे पिर भाणीआ ॥ तजि कूडु कपटु सुभाउ दूजा चाकरी
लोकाणीआ ॥ मै नामु हरि का हारु कँठे साच सबदु नीसाणिआ ॥ कर जोड़ि नानकु साचु मागै नदरि करि तुधु
भाणिआ ॥ २ ॥ जागु सलोनड़ीए बोलै गुरबाणी राम ॥ जिनि सुणि मँनिअड़ी अकथ कहाणी राम ॥ अकथ
कहाणी पदु निरबाणी को विरला गुरमुखि बूझए ॥ ओहु सबदि समाए आपु गवाए त्रिभवण सोझी सूझए ॥ रहै
अतीतु अपरँपरि रता साचु मनि गुण सारिआ ॥ ओहु पूरि रहिआ सरब ठाई नानका उरि धारिआ ॥ ३ ॥ महलि
बुलाइड़ीए भगति सनेही राम ॥ गुरमति मनि रहसी सीझसि देही राम ॥ मनु मारि रीझै सबदि सीझै त्रै लोक नाथु
पछाणए ॥ मनु डीगि डोलि न जाइ कत ही आपणा पिरु जाणए ॥ मै आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु
तकीआ तेरओ ॥ साचि सूचा सदा नानक गुर सबदि झगरु निबेरओ ॥ ४ ॥ २ ॥

छँत बिलावलु महला ४ मँगल १९ शितिगुर प्रसादि ॥

मेरा हरि प्रभु सेजै आइआ मनु सुखि समाणा राम ॥ गुरि तुठै हरि प्रभु पाइआ रँगि रलीआ माणा राम ॥
वडभागीआ सोहागणी हरि मसतकि माणा राम ॥ हरि प्रभु हरि सोहागु है नानक मनि भाणा राम ॥ १ ॥
निँमाणिआ हरि माणु है हरि प्रभु हरि आपै राम ॥ गुरमुखि आपु गवाइआ नित हरि हरि जापै राम ॥ मेरे हरि प्रभु
भावै सो करै हरि रँगि हरि रापै राम ॥ जनु नानकु सहजि मिलाइआ हरि रसि हरि ध्रापै राम ॥ २ ॥ माणस
जनमि हरि पाईए हरि शवण वेरा राम ॥ गुरमुखि मिलु सोहागणी रँगु होइ घणेश राम ॥ जिन माणस जनमि न
पाइआ तिन्ह भागु मँदेश राम ॥ हरि हरि हरि हरि राखु प्रभु नानकु जनु तेरा राम ॥ ३ ॥ गुरि हरि प्रभु अगमु
द्रिडाइआ मनु तनु रँगि भीना राम ॥ भगति वछलु हरि नामु है गुरमुखि हरि लीना राम ॥ बिनु हरि नाम न जीवदे

जिउ जल बिनु मीना राम ॥ सफल जनमु हरि पाइआ नानक प्रभि कीना राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ बिलावलु महला
 ४ सलोकु ॥ हरि प्रभु सजणु लोडि लहु मनि वसै वडभागु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ नानक हरि लिव लागु ॥ १ ॥
 छँत ॥ मेश हरि प्रभु शवणि आईआ हउमै बिखु द्यागे राम ॥ गुरमति आपु मिटाइआ हरि हरि लिव लागे राम ॥
 अँतरि कमलु परगासिआ गुर गिआनी जागे राम ॥ जन नानक हरि प्रभु पाइआ पूरै वडभागे राम ॥ १ ॥ हरि प्रभु
 हरि मन भाइआ हरि नामि वधाई राम ॥ गुरि पूरै प्रभु पाइआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ अगिआनु अँधेर कटिआ
 जोति परगटिआई राम ॥ जन नानक नामु अधारु है हरि नामि समाई राम ॥ २ ॥ धन हरि प्रभि पिआरै शवीआ
 जां हरि प्रभ भाई राम ॥ अखी प्रेम कसाईआ जिउ बिलक मसाई राम ॥ गुरि पूरै हरि मेलिआ हरि रसि आघाई राम
 ॥ जन नानक नामि विगसिआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ ३ ॥ हम मूरख मुगध मिलाइआ हरि किरपा धारी राम
 ॥ धनु धँनु गुरू साबासि है जिनि हउमै मारी राम ॥ जिन्ह वडभागीआ वडभागु है हरि हरि उर धारी राम ॥ जन
 नानक नामु सलाहि तू नामे बलिहारी राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

बिलावलु महला ५ छँत १३ शितिगुर प्रसादि ॥

मँगल साजु भइआ प्रभु अपना गाइआ राम ॥ अविनासी वरु सुणिआ मनि उपजिआ चाइआ राम ॥ मनि प्रीति
 लागै वडै भागै कब मिलिऐ पूरन पते ॥ सहजे समाईऐ गोविंदु पाईऐ देहु सखीए मोहि मते ॥ दिनु रैनि ठाढी करउ
 सेवा प्रभु कवन जुगती पाइआ ॥ बिनवँति नानक करहु किरपा लैहु मोहि लडि लाइआ ॥ १ ॥ भइआ समाहडा
 हरि रतनु विसाहा राम ॥ खोजी खोजि लधा हरि संतन पाहा राम ॥ मिले संत पिआरे दइआ धारे कथहि अकथ
 बीचारो ॥ इक चित इक मनि धिआइ सुआमी लाइ प्रीति पिआरो ॥ कर जोडि प्रभ पहि करि बिनँती मिलै हरि जसु
 लाहा ॥ बिनवँति नानक दासु तेरा मेश प्रभु अगम अथाहा ॥ २ ॥ साहा अटलु गणिआ पूरन संजोगो राम ॥

सुखह समूह भइआ गइआ विजोगो राम ॥ मिलि सँत आए प्रभ धिआए बणे अचरज जाजीआं ॥ मिलि इकर होए
 सहजि ढोए मनि प्रीति उपजी माजीआ ॥ मिलि जोति जोती ओति पोती हरि नामु सभि रस भोगो ॥ बिनवँति नानक
 सभ सँति मेली प्रभु करण कारण जोगो ॥ ३ ॥ भवनु सुहावडा धरति सभागी राम ॥ प्रभु घरि आइअडा गुर चरणी
 लागी राम ॥ गुर चरण लागी सहजि जागी सगल इछा पुँनीआ ॥ मेरी आस पूरी सँत धूरी हरि मिले कँत विछुँनिआ ॥
 आनँद अनदिनु वजहि वाजे अहँ मति मन की तिआगी ॥ बिनवँति नानक सरणि सुआमी सँतसँगि लिव लागी ॥ ४
 ॥ १ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ भाग सुलखणा हरि कँतु हमारा राम ॥ अनहद बाजित्रा तिसु धुनि दरबारा राम ॥
 आनँद अनदिनु वजहि वाजे दिनसु रैणि उमाहा ॥ तह रोग सोग न दूखु बिआपै जनम मरणु न ताहा ॥ रिधि सिधि
 सुधा रसु अँप्रितु भगति भरे भँडारा ॥ बिनवँति नानक बलिहारि वँजा पारब्रहम प्रान अधारा ॥ १ ॥ सुणि सखीअ
 सहेलडीहो मिलि मँगलु गावह राम ॥ मनि तनि प्रेमु करे तिसु प्रभ कउ रावह राम ॥ करि प्रेमु रावह तिसै भावह इक
 निमख पलक न तिआगीरे ॥ गहि कँठि लाईरे नह लजाईरे चरन रज मनु पागीरे ॥ भगति ठगउरी पाइ मोहह अनत
 कतहू न धावह ॥ बिनवँति नानक मिलि सँगि साजन अमर पदवी पावह ॥ २ ॥ बिसमन बिसम भई पेखि गुण
 अबिनासी राम ॥ करु गहि भुजा गही कटि जम की फासी राम ॥ गहि भुजा लीन्ही दासि कीन्ही अँकुरि उदोतु
 जणाइआ ॥ मलन मोह बिकार नाठे दिवस निरमल आइआ ॥ द्रिसटि धारी मनि पिआरी महा दुर्मति नासी ॥
 बिनवँति नानक भई निरमल प्रभ मिले अबिनासी ॥ ३ ॥ सूरज किरणि मेले जल का जलु हूआ राम ॥ जोती जोति
 रली सँपूरनु थीआ राम ॥ ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीरे एकु एकु वखाणीरे ॥ आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीरे
 ॥ आपि करता आपि भुगता आपि कारणु कीआ ॥ बिनवँति नानक सेई जाणहि जिन्ही हरि रसु पीआ ॥ ४ ॥ २ ॥

बिलावलु महला ५ छँत १३ सतिगुर प्रसादि ॥

सखी आउ सखी वसि आउ सखी असी पिर का मँगलु गावह ॥ तजि मानु सखी तजि मानु सखी मत्तु आपणे प्रीतम भावह ॥
तजि मान मोहु बिकारु दूजा सेवि एकु निरँजनो ॥ लगु चरण सरण दइआल प्रीतम सगल दुस्त बिखँडनो ॥ होइ दास दासी
तजि उदासी बहुड़ि बिधी न धावा ॥ नानकु पइअँपै करहु किरपा तामि मँगलु गावा ॥ १ ॥ अँप्रितु प्रिअ का नामु मै अँधुले
टोहनी ॥ ओह जोहै बहु परकार सँदरि मोहनी ॥ मोहनी महा बचित्रि चँचलि अनिक भाव दिखावए ॥ होइ ढीठ मीठी मनहि
लागै नामु लैण न आवए ॥ ग्रिह बनहि तीरै बरत पूजा बाट घाटै जोहनी ॥ नानकु पइअँपै दइआ धारहु मै नामु अँधुले टोहनी ॥
२ ॥ मोहि अनाथ प्रिअ नाथ जिउ जानहु तितु रखहु ॥ चतुराई मोहि नाहि रीझावउ कहि मुखहु ॥ नह चतुरि सुघरि सुजान
बेती मोहि निरगुनि गुनु नही ॥ नह रूप धूप न नैण बँके जह भावै तह रखु तुही ॥ जै जै जइअँपहि सगल जा कउ करुणापति
गति किनि लखहु ॥ नानकु पइअँपै सेव सेवकु जिउ जानहु तितु मोहि रखहु ॥ ३ ॥ मोहि मछुली तुम नीर तुझ बिनु किउ सरै
॥ मोहि चात्रिक तुम्ह बूँद त्रिपतउ मुखि परै ॥ मुखि परै हरै पिआस मेरी जीअ हीआ प्रानपतै ॥ लाडिले लाड लडाइ सभ महि
मिलु हमारी होइ गते ॥ चीति चितवउ मिटु अँधारे जिउ आस चकवी दिनु चरै ॥ नानकु पइअँपै प्रिअ सँगि मेली मछुली नीरु न
वीसरै ॥ ४ ॥ धनि धँनि हमारे भाग घरि आइआ पिरु मेरा ॥ सोहे बँक दुआर सगला बनु हरा ॥ हर हरा सुआमी सुखह गामी
अनद मँगल रसु घणा ॥ नवल नवतन नाहु बाला कवन रसना गुन भणा ॥ मेरी सेज सोही देखि मोही सगल सहसा दुखु हरा
॥ नानकु पइअँपै मेरी आस पूरी मिले सुआमी अपरँपरा ॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

बिलावलु महला ५ छँत मँगल १३ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ सुँदर सांति दइआल प्रभ सरब सुखा निधि पीउ ॥ सुख सागर प्रभ

भेटिरे नानक सुखी होत इहु जीउ ॥ १ ॥ छँत ॥ सुख सागर प्रभु पाईरे जब होवै भागो राम ॥ मान निमानु वजाईरे हरि
 चरणी लागो राम ॥ छोडि सिआनप चातुरी दुर्मति बुधि तिआगो राम ॥ नानक पउ सरणाई राम राइ थिरु होइ सुहागो
 राम ॥ १ ॥ सो प्रभु तजि कत लागीरे जिसु बिनु मरि जाईरे राम ॥ लाज न आवै अगिआन मती दुर्जन बिरमाईरे राम ॥
 पतित पावन प्रभु तिआगि करे कहु कत ठहराईरे राम ॥ नानक भगति भाउ करि दइआल की जीवन पदु पाईरे राम ॥ २ ॥
 श्री गोपालु न उचरहि बलि गईए दुहचारणि रसना राम ॥ प्रभु भगति वछलु नह सेवही काइआ काक ग्रसना राम ॥ भ्रमि
 मोही दूख न जाणही कोटि जोनी बसना राम ॥ नानक बिनु हरि अवरु जि चाहना बिसटा क्रिम भसमा राम ॥ ३ ॥ लाइ
 बिरहु भगवँत सँगे होइ मिलु बैरागनि राम ॥ चँदन चीर सुगँध रसा हउमै बिखु तिआगनि राम ॥ ईत ऊत नह डोलीरे हरि
 सेवा जागनि राम ॥ नानक जिनि प्रभु पाइआ आपणा सा अटल सुहागनि राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥
 हरि खोजहु वडभागीहो मिलि साधू सँगे राम ॥ गुन गोविंद सद गाईअहि पारब्रहम कै रँगे राम ॥ सो प्रभ सद ही सेवीरे
 पाईअहि फल मँगे राम ॥ नानक प्रभ सरणागती जपि अनत तरँगे राम ॥ १ ॥ इकु तिलु प्रभू न वीसरै जिनि सभ किछु
 दीना राम ॥ वडभागी मेलावडा गुरमुखि पिरु चीन्हा राम ॥ बाह पकड़ि तम ते काढिआ करि अपुना लीना राम ॥ नामु
 जपत नानक जीवै सीतलु मनु सीना राम ॥ २ ॥ किआ गुण तेरे कहि सकउ प्रभ अँतरजामी राम ॥ सिमरि सिमरि
 नाराइणै भए पारगरामी राम ॥ गुन गावत गोविँद के सभ इछ पुजामी राम ॥ नानक उधरे जपि हरे सभहू का सुआमी राम
 ॥ ३ ॥ रस भिँनिअडे अपुने राम सँगे से लोइण नीके राम ॥ प्रभ पेखत इछा पुँनीआ मिलि साजन जी के राम ॥ अँमित
 रसु हरि पाइआ बिखिआ रस फीके राम ॥ नानक जलु जलहि समाइआ जोती जोति मीके राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ ६ ॥

बिलावलु की वार महला ४ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ हरि उतमु हरि प्रभु गाविआ करि नादु बिलावलु रागु ॥ उपदेसु गुरू सुणि मँनिआ धुरि मसतकि पूरा
भागु ॥ सभ दिनसु रैणि गुण उचरै हरि हरि हरि उरि लिव लागु ॥ सभु तनु मनु हरिआ होइआ मनु खिड़िआ हरिआ बागु
॥ अगिआनु अँधेरा मिटि गइआ गुर चानणु गिआनु चरागु ॥ जनु नानकु जीवै देखि हरि इक निमख घड़ी मुखि लागु
॥ १ ॥ मः ३ ॥ बिलावलु तब ही कीजीऐ जब मुखि होवै नामु ॥ राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥
राग नाद छोडि हरि सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मानु ॥ नानक गुरमुखि ब्रह्मु बीचारीऐ चूकै मनि अभिमानु ॥ २ ॥ पउड़ी
॥ तु हरि प्रभि आपि अगँमु है सभि तुधु उपाइआ ॥ तू आपे आपि वरतदा सभु जगतु सबाइआ ॥ तुधु आपे ताड़ी लाईऐ
आपे गुण गाइआ ॥ हरि धिआवहु भगतहु दिनसु राति अँति लए छडाइआ ॥ जिनि सेविआ तिनि सुखु पाइआ हरि
नामु समाइआ ॥ १ ॥ सलोक मः ३ ॥ दूजै भाइ बिलावलु न होवई मनमुखि थाइ न पाइ ॥ पारखँडि भगति न होवई
पारब्रह्मु न पाइआ जाइ ॥ मनहठि करम कमावणे थाइ न कोई पाइ ॥ नानक गुरमुखि आपु बीचारीऐ विचहु आपु गवाइ
॥ आपे आपि पारब्रह्मु है पारब्रह्मु वसिआ मनि आइ ॥ जँमणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥
बिलावलु करिहु तुम्ह पिआरिहो एकसु सिउ लिव लाइ ॥ जनम मरण दुखु कटीऐ सचे रहै समाइ ॥ सदा बिलावलु अनँदु
है जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सतसंगती बहि भाउ करि सदा हरि के गुण गाइ ॥ नानक से जन सोहणे जि गुरमुखि मेलि
मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभना जीअ विचि हरि आपि सो भगता का मितु हरि ॥ सभु कोई हरि कै वसि भगता कै
अनँदु घरि ॥ हरि भगता का मेली सरबत सउ निसुल जन टँग धरि ॥ हरि सभना का है खसमु सो भगत जन चिति करि
॥ तुधु अपडि कोइ न सकै सभ झखि झखि पवै झडि ॥ २ ॥ सलोक मः ३ ॥ ब्रह्मु बिंदहि ते ब्राहमणा जे चलहि

सतिगुर भाइ ॥ जिन कै हिरदै हरि वसै हउमै रोगु गवाइ ॥ गुण खहि गुण सँग्रहहि जोती जोति मिलाइ ॥ इसु जुग महि
 विरले ब्राहमण ब्रह्म बिंदहि चितु लाइ ॥ नानक जिन्ह कउ नदरि करे हरि सचा से नामि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥
 सतिगुर की सेव न कीतीआ सबदि न लगो भाउ ॥ हउमै रोगु कमावणा अति दीरघु बहु सुआउ ॥ मनहठि करम कमावणे
 फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ गुरमुखि जनमु सफलु है जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ नानक नदरी नदरि करे ता नामु धनु पलै
 पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ वडिआईआ हरि नाम विचि हरि गुरमुखि धिआईए ॥ जि वसतु मँगीए साई पाईए जे नामि चितु
 लाईए ॥ गुहज गल जीअ की कीचै सतिगुरु पासि ता सरब सुखु पाईए ॥ गुरु पूरा हरि उपदेसु देइ सभ भुख लहि जाईए
 ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो हरि गुण गाईए ॥ ३ ॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुर ते खाली को नही मेरै प्रभि मेलि मिलाए
 ॥ सतिगुर का दरसनु सफलु है जेहा को इछे तेहा फलु पाए ॥ गुर का सबदु अँम्रितु है सभ त्रिसना भुख गवाए ॥ हरि रसु
 पी सँतोखु होआ सचु वसिआ मनि आए ॥ सचु धिआइ अमरा पदु पाइआ अनहद सबद वजाए ॥ सचो दह दिसि पसरिआ
 गुर कै सहजि सुभाए ॥ नानक जिन अँदरि सचु है से जन छपहि न किसै दे छपाए ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईए
 जा कउ नदरि करेइ ॥ मानस ते देवते भए सची भगति जिसु देइ । हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि सुचेइ ॥ नानक
 सहजे मिलि रहे नामु वडिआई देइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुर सतिगुर विचि नावै की वडी वडिआई हरि करतै आपि वधाई ॥
 सेवक सिख सभि वेखि वेखि जीवन्हि ओन्हा अँदरि हिरदै भाई ॥ निँदक दुसट वडिआई वेखि न सकनि ओन्हा पराइआ
 भला न सुखाई ॥ किआ होवै किस ही की झख मारी जा सचे सिउ बणि आई ॥ जि गल करते भावै सा नित नित चडै
 सवाई सभ झखि झखि मरै लोकाई ॥ ४ ॥ सलोक मः ३ ॥ धिग रह आसा दूजे भाव की जो मोहि माइआ चितु लाए ॥
 हरि सुखु पलहरि तिआगिआ नामु विसारि दुखु पाए ॥ मनमुख अगिआनी अँधुले जनमि मरहि फिरि आवै जाए ॥ कारज

सिधि न होवनी अँति गइआ पछुताए ॥ जिसु करमु होवै तिसु सतिगुरु मिलै सो हरि हरि नामु धिआए ॥ नामि रते जन
 सदा सुखु पाइनिह जन नानक तिन बलि जाए ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आसा मनसा जगि मोहणी जिनि मोहिआ संसारु ॥ सभु
 को जम के चीरे विचि है जेता सभु आकारु ॥ हुकमी ही जमु लगदा सो उबरै जिसु बखसै करतारु ॥ नानक गुर परसादी
 एहु मनु तां तरै जा छोडै अहँकारु ॥ आसा मनसा मारे निरासु होइ गुर सबदी वीचारु ॥ २ ॥ पउडी ॥ जिथै जाईरे
 जगत महि तिथै हरि साई ॥ अगै सभु आपे वरतदा हरि सचा निआई ॥ कूड़िआरा के मुह फिटकीअहि सचु भगति वडिआई
 ॥ सचु साहिबु सचा निआउ है सिरि निंदक छाई ॥ जन नानक सचु अराधिआ गुरमुखि सुखु पाई ॥ ५ ॥ सलोक मः ३
 ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाईरे जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ ओपावा सिरि ओपाउ है नाउ परापति होइ ॥ अँदरु सीतलु सांति
 है हिरदै सदा सुखु होइ ॥ अँमितु खाणा पैन्हणा नानक नाइ वडिआई होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ए मन गुर की सिख सुणि
 पाइहि गुणी निधानु ॥ सुखदाता तरै मनि वसै हउमै जाइ अभिमानु ॥ नानक नदरी पाईरे अँमितु गुणी निधानु ॥ २ ॥
 पउडी ॥ जितने पातिसाह साह राजे खान उमराव सिकदार हरि तितने सभि हरि के कीए ॥ जि किछु हरि करावै सु ओइ
 करहि सभि हरि के अरथीए ॥ सो ऐसा हरि सभना का प्रभु सतिगुर कै वलि है तिनि सभि वरन चारे खाणी सभ खिसटि गोले
 करि सतिगुर अगै कार कमावण कउ दीए ॥ हरि सेवे की ऐसी वडिआई देखहु हरि संतहु जिनि विचहु काइआ नगरी दुसमन
 दूत सभि मारि कठीए ॥ हरि हरि किरपालु होआ भगत जना उपरि हरि आपणी किरपा करि हरि आपि रखि लीए ॥ ६ ॥
 सलोक मः ३ ॥ अँदरि कपटु सदा दुखु है मनमुख धिआनु न लागै ॥ दुख विचि कार कमावणी दुखु वरतै दुखु आगै ॥
 करमी सतिगुरु भेटीरे ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक सहजे सुखु होइ अँदरहु भ्रमु भउ भागै ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुरमुखि
 सदा हरि रँगु है हरि का नाउ मनि भाइआ ॥ गुरमुखि वेखणु बोलणा नामु जपत सुख पाइआ ॥ नानक गुरमुखि

गिआनु प्रगासिआ तिमर अगिआनु अँधेरु चुकाइआ ॥ २ ॥ मः ३ ॥ मनमुख मैले मरहि गवार ॥ गुरमुखि निरमल हरि
 राखिआ उर धारि ॥ भनति नानकु सुणहु जन भाई ॥ सतिगुरु सेविहु हउमै मलु जाई ॥ अँदरि संसा दूख विआपे सिरि
 धँधा नित मार ॥ दूजै भाइ सूते कबहु न जागहि माइआ मोह पिआर ॥ नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का
 बीचार ॥ हरि नामु न भाइआ बिरथा जनमु गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआरु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जिस नो हरि भगति
 सचु बखसीअनु सो सचा साहु ॥ तिस की मुहताजी लोकु कढता होरतु हटि न वथु न वेसाहु ॥ भगत जना कउ मनमुखु होवै
 सु हरि रासि लए वेमुख भसु पाहु ॥ हरि के नाम के वापारी हरि भगत हहि जमु जागाती तिना नेडि न जाहु ॥ जन नानकि
 हरि नाम धनु लदिआ सदा वेपरवाहु ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ इसु जुग महि भगती हरि धनु खटिआ होरु सभु जगतु भरमि
 भुलाइआ ॥ गुर परसादी नामु मनि वसिआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ बिखिआ माहि उदास है हउमै सबदि जलाइआ ॥
 आपि तरिआ कुल उधरे धँनु जणेदी माइआ ॥ सदा सहजु सुखु मनि वसिआ सचे सिउ लिव लाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ
 त्रै गुण भुले हउमै मोहु वधाइआ ॥ पँडित पडि पडि मोनी भुले दूजै भाइ चितु लाइआ ॥ जोगी जँगम सँनिआसी भुले विणु
 गुर ततु न पाइआ ॥ मनमुख दुखीए सदा भ्रमि भुले तिन्ही बिरथा जनमु गवाइआ ॥ नानक नामि रते सेई जन समथे जिं
 आपे बखसि मिलाइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक सो सालाहीए जिसु वसि सभ किछु होइ ॥ तिसहि सरेवहु प्राणीहो तिसु
 बिनु अवरु न कोइ ॥ गुरमुखि अँतरि मनि वसै सदा सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनी गुरमुखि हरि नाम धनु न
 खटिओ से देवालीए जुग माहि ॥ ओइ मँगदे फिरहि सभ जगत महि कोई मुहि थुक न तिन कउ पाहि ॥ पराई बखीली करहि
 आपणी परतीति खोवनि सगवा भी आपु लखाहि ॥ जिसु धन कारणे चुगली करहि सो धनु चुगली हथि न आवै ओइ भावै
 तिथै जाहि ॥ गुरमुखि सेवक भाइ हरि धनु मिलै तिथहु कर्महीण लै न सकहि होर थै देस दिसँतरि हरि धनु नाहि ॥

सलोक मः ३ ॥ गुरुमुखिँ संसा मूलिँ न होवई चिँता विचहु जाइ ॥ जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछु न जाइ ॥
 नानक तिन का आखिँआ आपिँ सुणे जिँ लइअनु पँनै पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ कालु मारिँ मनसा मनहिँ समाणी अँतरिँ
 निरमलु नाउ ॥ अनदिनु जागैँ कदे न सोवैँ सहजे अँम्रितु पिआउ ॥ मीठा बोले अँम्रित बाणी अनदिनु हरिँ गुण गाउ ॥
 निज घरिँ वासा सदा सोहदे नानक तिन मिलिँआ सुखु पाउ ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरिँ धनु रतन जवेहरीँ सो गुरिँ हरिँ धनु हरिँ
 पासहु देवाइआ ॥ जे किसैँ किहु दिसिँ आवैँ ता कोईँ किहु मँगिँ लए अकैँ कोईँ किहु देवाए एहु हरिँ धनु जोरिँ कीतैँ किसैँ नालिँ
 न जाइ वँडाइआ ॥ जिस नो सतिगुर नालिँ हरिँ सरधा लए तिसु हरिँ धन कीँ वँड हथिँ आवैँ जिस नो करतैँ धुरिँ लिखिँ
 पाइआ ॥ इसु हरिँ धन का कोईँ सरीकु नाहीँ किसैँ का खतु नाहीँ किसैँ कैँ सीव बँनैँ रेलु नाहीँ जे को हरिँ धन कीँ बखीलीँ
 करे तिस का मुहु हरिँ चहु कुँडा विचिँ काला कराइआ ॥ हरिँ के दिते नालिँ किसैँ जोरु बखीलीँ न चलईँ दिहु दिहु नित नित
 चडैँ सवाइआ ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ जगतु जलँदा रखिँ लैँ आपणीँ किरपा धारिँ ॥ जिँतु दुआरैँ उबरैँ तितैँ लैँहु उबारिँ
 ॥ सतिगुरिँ सुखु वेखालिँआ सचा सबदु बीचारिँ ॥ नानक अवरु न सुझईँ हरिँ बिनु बखसणहारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हउमैँ
 माइआ मोहणीँ दूजैँ लगैँ जाइ ॥ ना इह मारीँ न मरैँ ना इह हटिँ विकाइ ॥ गुर कैँ सबदिँ परजालीँए ता इह विचहु जाइ ॥
 तनु मनु होवैँ उजला नामु वसैँ मनिँ आइ ॥ नानक माइआ का मारणु सबदु हैँ गुरुमुखिँ पाइआ जाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥
 सतिगुर कीँ वडिँआईँ सतिगुरिँ दितीँ धुरहु हुकमु बुझिँ नीसाणु ॥ पुतीँ भातीँईँ जावाईँ सकीँ अगहु पिछहु टोलिँ डिठा
 लाहिँओनु सभना का अभिँमानु ॥ जिँथैँ को वेखैँ तिँथैँ मेरा सतिगुरू हरिँ बखसिँओसु सभु जहानु ॥ जिँ सतिगुर नो
 मिलिँ मँनेँ सु हलतिँ पलतिँ सिँझैँ जिँ वेमुखु होवैँ सु फिरैँ भरिसट थानु ॥ जन नानक कैँ वलिँ होआ मेरा सुआमीँ हरिँ सजण
 पुरखु सुजानु ॥ पउदीँ भितिँ देखिँ कैँ सभिँ आइँ पए सतिगुर कीँ पैरीँ लाहिँओनु सभना किँअहु मनहु गुमानु ॥ १० ॥

सलोक मः १ ॥ कोई वाहे को लुगै को पाए खलिहानि ॥ नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि ॥ १ ॥ मः १ ॥ जिसु
 मनि वसिआ तरिआ सोइ ॥ नानक जो भावै सो होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पारब्रहमि दइआलि सागरु तारिआ ॥ गुरि पूरै
 मिहरवानि भरमु भउ मारिआ ॥ काम क्रोधु बिकरालु दूत सभि हारिआ ॥ अँमित नामु निधानु कँठि उरि धारिआ ॥ नानक
 साधु सँगि जनमु मरणु सवारिआ ॥ ११ ॥ सलोक मः ३ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ कूड़े कहण कहँन्हि ॥ पँच चोर तिना
 घरु मुहँन्हि हउमै अँदरि सँन्हि ॥ साकत मुठे दुर्मती हरि रसु न जाणँन्हि ॥ जिन्ही अँमितु भरमि लुटाइआ बिखु सिउ
 रचहि रचँन्हि ॥ दुसटा सेती पिरहड़ी जन सिउ वादु करँन्हि ॥ नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सहँन्हि ॥ पइरे
 किरति कमावदे जिव राखहि तिवै रहँन्हि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जिन्ही सतिगुरु सेविआ ताणु निताणे तिसु ॥ सासि गिरासि
 सदा मनि वसै जमु जोहि न सकै तिसु ॥ हिरदै हरि हरि नाम रसु कवला सेवकि तिसु ॥ हरि दासा जा दासु होइ परम पदारथु
 तिसु ॥ नानक मनि तनि जिसु प्रभु वसै हउ सद कुरबाणै तिसु ॥ किन्ह कउ पूरबि लिखिआ रसु सँत जना सिउ तिसु ॥ २
 ॥ पउड़ी ॥ जो बोले पूरा सतिगुरु सो परमेसरि सुणिआ ॥ सोई वरतिआ जगत महि घटि घटि मुखि भणिआ ॥ बहुतु
 वडिआईआ साहिबै नह जाही गणीआ ॥ सचु सहजु अनदु सतिगुरु पासि सची गुर मणीआ ॥ नानक सँत सवारे
 पारब्रहमि सचु सिउ बणिआ ॥ १२ ॥ सलोक मः ३ ॥ अपना आपु न पछाणई हरि प्रभु जाता दूरि ॥ गुर की सेवा विसरी
 किउ मनु रहै हजूरि ॥ मनमुखि जनमु गवाइआ झूठै लालचि कूरि ॥ नानक बखसि मिलाइअनु सचै सबदि हदूरि ॥ १ ॥
 मः ३ ॥ हरि प्रभु सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविँदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनँदु ॥ वडभागी हरि
 पाइआ पूरनु परमानँदु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुडि न मनि तनि भँगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कोई निँदकु होवै सतिगुरु
 का फिरि सरणि गुर आवै ॥ पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लए सतसँगति नालि रलावै ॥ जिउ मीहि वुठै गलीआ

नालिआ टोभिआ का जलु जाइ पवै विचि सुरसरी सुरसरी मिलत पवित्रु पावनु होइ जावै ॥ एह वडिआई सतिगुर निरवैर विचि
जितु मिलिऐ तिसना भुख उतरै हरि सांति तड़ आवै ॥ नानक इहु अचरजु देखहु मेरे हरि सचे साह का जिं सतिगुरू नो मँनै सु
सभनां भावै ॥ १३ ॥ १ ॥ सुधु ॥

बिलावलु बाणी भगता की कबीर जीउ की १३ शिंति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे ॥ सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवईहै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारे बूढे
तरुने भईआ सभहू जमु लै जईहै रे ॥ मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे ॥ १ ॥ धनवँता अरु निरधन मनई ता
की कछू न कानी रे ॥ राजा परजा सम करि मारै ऐसो कालु बडानी रे ॥ २ ॥ हरि के सेवक जो हरि भाए तिन्ह की कथा निरारी
रे ॥ आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे ॥ ३ ॥ पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहै तजहु जीअ जानी रे ॥ कहत
कबीरु सुनहु रे संतहु मिलिहै सारिगपानी रे ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु ॥ बिदिआ न परउ बादु नही जानउ ॥ हरि गुन कथत
सुनत बउरानो ॥ १ ॥ मेरे बाबा मै बउरा सभ खलक सैआनी मै बउरा ॥ मै बिगरेओ बिगरै मति अउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
आपि न बउरा राम कीओ बउरा ॥ सतिगुरु जारि गइओ भ्रमु मोरा ॥ २ ॥ मै बिगरे अपनी मति खोई ॥ मेरे भरमि भूलउ
मति कोई ॥ ३ ॥ सो बउरा जो आपु न पछानै ॥ आपु पछानै त एकै जानै ॥ ४ ॥ अबहि न माता सु कबहु न माता ॥ कहि
कबीर रामै रँगि रता ॥ ५ ॥ २ ॥ बिलावलु ॥ गिहु तजि बन खँड जाईऐ चुनि खाईऐ कँदा ॥ अजहु बिकार न छोडई पापी
मनु मँदा ॥ १ ॥ किउ छूटउ कैसे तरउ भव जलनिधि भारी ॥ राखु राखु मेरे बीठुला जनु सरनि तुम्हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
बिखै बिखै की बासना तजीअ नह जाई ॥ अनिक जतन करि राखीऐ फिरि फिरि लपटाई ॥ २ ॥ जरा जीवन जोबनु

गइआ लिछु कीआ न नीका ॥ इहु जीअरा निरमोलको कउडी लणि मीका ॥ ३ ॥ कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी
 ॥ तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिलावलु ॥ नित उठि कोरी गागरि आनै लीपत जीउ
 गइओ ॥ ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रसि लपटिओ ॥ १ ॥ हमारे कुल कउने रामु कहिओ ॥ जब की माला लई
 निपूते तब ते सुखु न भइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरजु एकु भइओ ॥ सात सूत इनि मुडींए
 खोए इहु मुडीआ किउ न मुइओ ॥ २ ॥ सरब सुखा का एकु हरि सुआमी सो गुरि नामु दइओ ॥ सँत प्रहलाद की पैज जिनि
 राखी हरनारखसु नख बिदरिओ ॥ ३ ॥ घर के देव पितर की छोडी गुर को सबदु लइओ ॥ कहत कबीरु सगल पाप खँडनु
 सँतह लै उधरिओ ॥ ४ ॥ ४ ॥ बिलावलु ॥ कोऊ हरि समानि नही राजा ॥ ए भुपति सभ दिवस चारि के झूठे करत
 दिवाजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरो जनु होइ सोइ कत डोलै तीनि भवन पर छाजा ॥ हाथु पसारि सकै को जन कउ बोलि सकै न
 अँदाजा ॥ १ ॥ चेति अचेत मूड मन मेरे बाजे अनहद बाजा ॥ कहि कबीर सँसा भ्रमु चूको ध्रु प्रहिलाद निवाजा ॥ २ ॥ ५
 ॥ बिलावलु ॥ राखि लेहु हम ते बिगरी ॥ सीलु धरमु जपु भगति न कीनी हउ अभिमान टेढ पगरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अमर
 जानि सँची इह काइआ इह काइआ इह मिथिआ काची गगरी ॥ जिनिहि निवाजि साजि हम कीए तिसहि बिसारि अवर
 लगरी ॥ १ ॥ सँधिक तोहि साध नही कहीअउ सरनि परे तुमरी पगरी ॥ कहि कबीर इह बिनती सुनीअहु मत घालहु जम
 की खबरी ॥ २ ॥ ६ ॥ बिलावलु ॥ दरमादे ठाढे दरबारि ॥ तुझ बिनु सुरति करै को मेरी दरसनु दीजै खोलिह किवार ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ तुम धन धनी उदार तिआगी श्रवनन्ह सुनीअतु सुजमु तुम्हार ॥ मागउ काहि रँक सभ देखउ तुम्ह ही ते मेरो
 निसतारु ॥ १ ॥ जैदेउ नामा बिप सुदामा तिन कउ क्रिपा भई है अपार ॥ कहि कबीर तुम सँम्रथ दाते चारि पदारथ देत न
 बार ॥ २ ॥ ७ ॥ बिलावलु ॥ डँडा मुँद्रा खिँथा आधारी ॥ भ्रम कै भाइ भवै भेखधारी ॥ १ ॥ आसनु पवन दूरि

करि बवरे ॥ छोडि कपटु नित हरि भजु बवरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह तू जाचहि सो त्रिभवन भोगी ॥ कहि कबीर केसौ
 जगि जोगी ॥ २ ॥ ८ ॥ बिलावलु ॥ इन्हि माइआ जगदीस गुसाई तुम्हरे चरन बिसारे ॥ किंचत प्रीति न उपजै जन कउ
 जन कहा करहि बेचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धिगु तनु धिगु धनु धिगु इह माइआ धिगु धिगु मति बुधि फँनी ॥ इस माइआ कउ
 द्रिडु करि राखहु बांधे आप बचँनी ॥ १ ॥ किआ खेती किआ लेवा देई परपंच झूठु गुमाना ॥ कहि कबीर ते अँति बिगूते
 आइआ कालु निदाना ॥ २ ॥ ९ ॥ बिलावलु ॥ सरीर सरोवर भीतरे आछै कमल अनूप ॥ परम कोति पुरखोतमो जा कै
 रेख न रूप ॥ १ ॥ रे मन हरि भजु भ्रमु तजहु जगजीवन राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत कछू न दीसई नह दीसै जात ॥
 जह उपजै बिनसै तही जैसे पुरिवन पात ॥ २ ॥ मिथिआ करि माइआ तजी सुख सहज बीचारि ॥ कहि कबीर सेवा करहु
 मन मँझि मुरारि ॥ ३ ॥ १० ॥ बिलावलु ॥ जनम मरन का भ्रमु गइआ गोबिद लिव लागी ॥ जीवत सुँनि समानिआ गुर
 साखी जागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कासी ते धुनि ऊपजै धुनि कासी जाई ॥ कासी फूटी पँडिता धुनि कहां समाई ॥ १ ॥
 त्रिकुटी सँधि मै पेखिआ घट हू घट जागी ॥ ऐसी बुधि समाचरी घट माहि तिआगी ॥ २ ॥ आपु आप ते जानिआ तेज तेजु
 समाना ॥ कहु कबीर अब जानिआ गोबिद मनु माना ॥ ३ ॥ ११ ॥ बिलावलु ॥ चरन कमल जा कै रिदै बसहि सो जनु
 किउ डोलै देव ॥ मानौ सभ सुख नाउ निधि ता कै सहजि सहजि जसु बोलै देव ॥ रहाउ ॥ तब इह मति जउ सभ महि पेखै
 कुटिल गांठि जब खोलै देव ॥ बारँ बार माइआ ते अटकै लै नरजा मनु तोलै देव ॥ १ ॥ जह उहु जाइ तही सुखु पावै
 माइआ तासु न झोलै देव ॥ कहि कबीर मेरा मानु मानिआ राम प्रीति कीओ लै देव ॥ २ ॥ १२ ॥

बिलावलु बाणी भगता नामदेव जी की १४ शितिगुर प्रसादि ॥

सफल जनमु मो कउ गुर कीना ॥ दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥ १ ॥

गिआन अँजनु मो कउ गुरि दीना ॥ राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामदेइ सिमरनु करि जानां ॥
जगजीवन सिउ जीउ समानां ॥ २ ॥ १ ॥

बिलावलु बाणी रविदास भगत की १४ शितिगुर प्रसादि ॥

दारिद्रु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥ असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥ १ ॥ तू जानत मै किछु नहीं
भव खँडन राम ॥ सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥ ऊच
नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥ २ ॥ कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै
॥ ३ ॥ १ ॥ बिलावलु ॥ जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥ बरन अबरन रँकु नहीं ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥ १
॥ रहाउ ॥ ब्रहमन बैस सूद अर ख्यत्री डोम चँडार मलेछ मन सोइ ॥ होइ पुनीत भगवँत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ
॥ १ ॥ धँनि सु गाउ धँनि सो ठाउ धँनि पुनीत कुटँब सभ लोइ ॥ जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे
बिखु खोइ ॥ २ ॥ पँडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास
जनमे जगि ओइ ॥ ३ ॥ २ ॥

बाणी सधने की रागु बिलावलु १४ शितिगुर प्रसादि ॥

द्विप कँनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥ कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी ॥ १ ॥ तव गुन कहा जगत गुरा
जउ करमु न नासै ॥ सिँघ सरन कत जाईऐ जउ जँबुकु ग्रासै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक बूँद जल कारने चात्रिकु दुखु पावै ॥
प्राण गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥ २ ॥ प्राण जु थाके थिरु नहीं कैसे बिरमावउ ॥ बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि
चढावउ ॥ ३ ॥ मै नाही कछु हउ नहीं किछु आहि न मोरा ॥ अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥ ४ ॥ १ ॥

१ॐ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

शगु गोंड चउपदे महला ४ घरु १ ॥

जे मनि चिति आस रखहि ऊपरि ता मन चिँदे अनेक अनेक फल
पाई ॥ हरि जाणै सभु किछु जो जीइ वरतै प्रभु घालिआ किसै का इकु तिलु न गवाई ॥ हरि तिस की आस कीजै मन मेरे
जो सभ महि सुआमी रहिआ समाई ॥ १ ॥ मेरे मन आसा करि जगदीस गुसाई ॥ जो बिनु हरि आस अवर काहू की कीजै
सा निहफल आस सभ बिरथी जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो दीसै माइआ मोह कुटंबु सभु मत तिस की आस लागि जनमु गवाई
॥ इन्ह कै किछु हाथि नही कहा करहि इहि बपुडे इन्ह का वाहिआ कछु न वसाई ॥ मेरे मन आस करि हरि प्रीतम अपुने की
जो तुझु तारै तेरा कुटंबु सभु छडाई ॥ २ ॥ जे किछु आस अवर करहि पर मित्री मत तूँ जाणहि तेरै कितै कंमि आई ॥ इह

आस पर मित्री भाउ दूजा है खिन महि झूठु बिनसि सभ जाई ॥ मेरे मन आसा करि हरि प्रीतम साचे की जो तेरा घालिआ सभु
 थाइ पाई ॥ ३ ॥ आसा मनसा सभ तेरी मेरे सुआमी जैसी तू आस करावहि तैसी को आस कराई ॥ किछु किसी के हथि
 नाही मेरे सुआमी ऐसी मेरे सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ जन नानक की आस तू जाणहि हरि दरसन देखि हरि दरसनि त्रिपताई ॥
 ४ ॥ १ ॥ गोंड महला ४ ॥ ऐसा हरि सेविऐ नित धिआईऐ जो खिन महि किलविख सभि करे बिनासा ॥ जे हरि तिआगि
 अवर की आस कीजै ता हरि निहफल सभ घाल गवासा ॥ मेरे मन हरि सेविहु सुखदाता सुआमी जिसु सेविऐ सभ भुख
 लहासा ॥ १ ॥ मेरे मन हरि ऊपरि कीजै भरवासा ॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी हरि अपनी पैज रखै जन दासा ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ जे अपनी बिरथा कहहु अवरा पहि ता आगै अपनी बिरथा बहु बहुतु कटासा ॥ अपनी बिरथा कहहु हरि अपुने
 सुआमी पहि जो तुम्हरे दूख ततकाल कटासा ॥ सो ऐसा प्रभु छोडि अपनी बिरथा अवरा पहि कहीऐ अवरा पहि कहि मन
 लाज मरासा ॥ २ ॥ जो संसारै के कुटंब मित्र भाई दीसहि मन मेरे ते सभि अपनै सुआइ मिलासा ॥ जितु दिनि उन्ह का
 सुआउ होइ न आवै तितु दिनि नेडै को न ढुकासा ॥ मन मेरे अपना हरि सेवि दिनु राती जो तुधु उपकरै दूखि सुखासा ॥ ३
 ॥ तिस का भरवासा किउ कीजै मन मेरे जो अँती अउसरि रखि न सकासा ॥ हरि जपु मँतु गुर उपदेसु लै जापहु तिन्ह अँति
 छडाए जिन्ह हरि प्रीति चितासा ॥ जन नानक अनदिनु नामु जपहु हरि संतहु इहु छूटण का साचा भरवासा ॥ ४ ॥ २ ॥
 गोंड महला ४ ॥ हरि सिमरत सदा होइ अनँदु सुखु अँतरि सांति सीतल मनु अपना ॥ जैसे सकति सूरु बहु जलता गुर ससि
 देखे लहि जाइ सभ तपना ॥ १ ॥ मेरे मन अनदिनु धिआइ नामु हरि जपना ॥ जहा कहा तुझु राखै सभ ठाई सो ऐसा प्रभु
 सेवि सदा तू अपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा महि सभि निधान सो हरि जपि मन मेरे गुरमुखि खोजि लहहु हरि रतना ॥ जिन
 हरि धिआइआ तिन हरि पाइआ मेरा सुआमी तिन के चरण मलहु हरि दसना ॥ २ ॥ सबदु पछाणि राम रसु पावहु ओहु

ऊतमु संतु भइओ बड बडना ॥ तिसु जन की वडिआई हरि आपि वधाई ओहु घटै न किसै की घटाई इकु तिलु तिलु तिलना
 ॥ ३ ॥ जिस ते सुख पावहि मन मेरे सो सदा धिआइ नित कर जुर्ना ॥ जन नानक कउ हरि दानु इकु दीजै नित बसहि
 रिदै हरी मोहि चरना ॥ ४ ॥ ३ ॥ गोंड महला ४ ॥ जितने साह पातिसाह उमराव सिकदार चउधरी सभि मिथिआ झूठु
 भाउ दूजा जाणु ॥ हरि अबिनासी सदा थिरु निहचलु तिसु मेरे मन भजु परवाणु ॥ १ ॥ मेरे मन नामु हरी भजु सदा
 दीबाणु ॥ जो हरि महलु पावै गुर बचनी तिसु जेवडु अवरु नाही किसै दा ताणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितने धनवंत कुलवंत
 मिलखवंत दीसहि मन मेरे सभि बिनसि जाहि जिउ रँगु कसुंभ कचाणु ॥ हरि सति निरँजनु सदा सेवि मन मेरे जितु हरि
 दरगह पावहि तू माणु ॥ २ ॥ ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधानु ॥ जिउ
 चंदन निकटि वसै हिरडु बपुड़ा तिउ सतसंगति मिलि पतित परवाणु ॥ ३ ॥ ओहु सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जा कै हिरदै
 वसिआ भगवानु ॥ जन नानकु तिस के चरन परवालै जो हरि जनु नीचु जाति सेवकाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ गोंड महला ४ ॥
 हरि अंतरजामी सभ तै वरतै जेहा हरि कराए तेहा को करईए ॥ सो ऐसा हरि सेवि सदा मन मेरे जो तुधनो सभदू रखि लईए
 ॥ १ ॥ मेरे मन हरि जपि हरि नित पड़ईए ॥ हरि बिनु को मारि जीवालिन साकै ता मेरे मन काइतु कड़ईए ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ हरि परपंचु कीआ सभु करतै विचि आपे आपणी जोति धरईए ॥ हरि एको बोलै हरि एकु बुलाए गुरि पूरै हरि एकु दिखईए
 ॥ २ ॥ हरि अंतरि नाले बाहरि नाले कहु तिसु पासहु मन किआ चोरईए ॥ निहकपट सेवा कीजै हरि केरी तां मेरे मन सरब
 सुख पईए ॥ ३ ॥ जिस दै वसि सभु किछु सो सभदू वडा सो मेरे मन सदा धिअईए ॥ जन नानक सो हरि नालि है तेरै हरि
 सदा धिआइ तू तुधु लए छडईए ॥ ४ ॥ ५ ॥ गोंड महला ४ ॥ हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ त्रिखावंतु बिनु
 नीर ॥ १ ॥ मेरे मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥ हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥

मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ॥ २ ॥ मिलु मिलु सरखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति
धीर ॥ ३ ॥ जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि सांति सरीर ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

रागु गोंड महला ७ चउपदे घरु १ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

सभु करता सभु भुगता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनतो करता पेखत करता ॥ अद्रिसटो करता द्रिसटो करता ॥ ओपति करता
परलउ करता ॥ बिआपत करता अलिपतो करता ॥ १ ॥ बकतो करता बूझत करता ॥ आवतु करता जातु भी करता
॥ निरगुन करता सरगुन करता ॥ गुर प्रसादि नानक समद्रिसटा ॥ २ ॥ १ ॥ गोंड महला ७ ॥ फाकिओ मीन कपिक
की निआई तू उरझि रहिओ कुसँभाइले ॥ पग धारहि सासु लेखै लै तउ उधरहि हरि गुण गाइले ॥ १ ॥ मनु समझु छोडि
आवाइले ॥ अपने रहन कउ ठउरु न पावहि काए पर कै जाइले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मैगलु इँद्री रसि प्रेरिओ तू लागि
परिओ कुटँबाइले ॥ जिउ पँखी इकत्र होइ फिरि बिछुरै थिरु संगति हरि हरि धिआइले ॥ २ ॥ जैसे मीनु रसन सादि
बिनसिओ ओहु मूठौ मूड़ लोभाइले ॥ तू होआ पँच वासि वैरी कै छूटहि परु सरनाइले ॥ ३ ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख
भँजन सभि तुम्हरे जीअ जँताइले ॥ पावउ दानु सदा दरसु पेखा मिलु नानक दास दसाइले ॥ ४ ॥ २ ॥

रागु गोंड महला ७ चउपदे घरु २ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

जीअ प्रान कीए जिनि साजि ॥ माटी महि जोति रखी निवाजि ॥ बरतन कउ सभु किछु भोजन भोगाइ ॥ सो प्रभु तजि
मूडे कत जाइ ॥ १ ॥ पारब्रहम की लागउ सेव ॥ गुर ते सूझै निरँजन देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीए रँग अनिक
परकार ॥ ओपति परलउ निमख

मझार ॥ जा की गति मिति कही न जाइ ॥ सो प्रभु मन मेरे सदा धिआइ ॥ २ ॥ आइ न जावै निहचलु धनी ॥ बेअँत गुना
 ता के केतक गनी ॥ लाल नाम जा कै भरे भँडार ॥ सगल घटा देवै आधार ॥ ३ ॥ सति पुरखु जा को है नाउ ॥ मिटहि कोटि
 अघ निमख जसु गाउ ॥ बाल सखाई भगतन को मीत ॥ प्रान अधार नानक हित चीत ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ गोंड महला ५ ॥
 नाम सँगि कीनो बिउहारु ॥ नामो ही इसु मन का अधारु ॥ नामो ही चिति कीनी ओट ॥ नामु जपत मिटहि पाप कोटि ॥ १
 ॥ रासि दीई हरि एको नामु ॥ मन का इसटु गुर सँगि धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु हमारे जीअ की रासि ॥ नामो सँगी जत
 कत जात ॥ नामो ही मनि लाग़ा मीठा ॥ जलि थलि सभ महि नामो डीठा ॥ २ ॥ नामे दरगह मुख उजले ॥ नामे सगले
 कुल उधरे ॥ नामि हमारे कारज सीध ॥ नामि सँगि इहु मनुआ गीध ॥ ३ ॥ नामे ही हम निरभउ भए ॥ नामे आवन जावन
 रहे ॥ गुरि पूरै मेले गुणतास ॥ कहु नानक सुखि सहजि निवासु ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ गोंड महला ५ ॥ निमाने कउ जो देतो
 मानु ॥ सगल भूखे कउ करता दानु ॥ गरभ घोर महि राखनहारु ॥ तिसु ठाकुर कउ सदा नमसकारु ॥ १ ॥ ऐसो प्रभु मन
 माहि धिआइ ॥ घटि अवघटि जत कतहि सहाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रँकु राउ जा कै एक समानि ॥ कीट हसति सगल पूरान ॥
 बीओ पूछि न मसलति धरै ॥ जो किछु करै सु आपहि करै ॥ २ ॥ जा का अँतु न जानसि कोइ ॥ आपे आपि निरँजनु सोइ
 ॥ आपि अकारु आपि निरँकारु ॥ घट घट घटि सभ घट आधारु ॥ ३ ॥ नाम रँगि भगत भए लाल ॥ जसु करते सँत सदा
 निहाल ॥ नाम रँगि जन रहे अघाइ ॥ नानक तिन जन लागै पाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ गोंड महला ५ ॥ जा कै सँगि इहु मनु
 निरमलु ॥ जा कै सँगि हरि हरि सिमरनु ॥ जा कै सँगि किलबिख होहि नास ॥ जा कै सँगि रिदै परगास ॥ १ ॥ से सँतन
 हरि के मेरे मीत ॥ केवल नामु गाईए जा कै नीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै मँत्रि हरि हरि मनि वसै ॥ जा कै उपदेसि भरमु भउ
 नसै ॥ जा कै कीरति निरमल सार ॥ जा की रेनु बाँछै संसार ॥ २ ॥ कोटि पतित जा कै सँगि

उधार ॥ एक निरंकारु जा कै नाम अधार ॥ सरब जीआं का जानै भेउ ॥ क्रिपा निधान निरंजन देउ ॥ ३ ॥ पारब्रहम जब
 भए क्रिपाल ॥ तब भेटे गुर साध दइआल ॥ दिनु रैणि नानकु नामु धिआए ॥ सूख सहज आनंद हरि नाए ॥ ४ ॥ ४ ॥
 ६ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥ गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान ॥ गुर के चरन रिदै लै धारउ ॥ गुरु
 पारब्रहमु सदा नमसकारउ ॥ १ ॥ मत को भरमि भुलै संसारि ॥ गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूले कउ
 गुरि मारगि पाइआ ॥ अवर तिआगि हरि भगती लाइआ ॥ जनम मरन की त्रास मिटाई ॥ गुर पूरे की बेअंत वडाई ॥ २
 ॥ गुर प्रसादि ऊरध कमल बिगास ॥ अंधकार महि भइआ प्रगास ॥ जिनि कीआ सो गुर ते जानिआ ॥ गुर किरपा ते
 मुगध मनु मानिआ ॥ ३ ॥ गुरु करता गुरु करणै जोगु ॥ गुरु परमेसरु है भी होगु ॥ कहु नानक प्रभि इहै जनाई ॥
 बिनु गुर मुकति न पाईये भाई ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुरू गुरू गुर करि मन मोर ॥ गुरू बिना मै नाही होर
 ॥ गुर की टेक रहहु दिनु राति ॥ जा की कोइ न मेटै दाति ॥ १ ॥ गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर चरणी जा का मनु लागै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ गुर की सेवा पाए मानु ॥ गुर ऊपरि सदा
 कुरबानु ॥ २ ॥ गुर का दरसन देखि निहाल ॥ गुर के सेवक की पूरन घाल ॥ गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै ॥ गुर का
 सेवकु दह दिसि जापै ॥ ३ ॥ गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ ॥ कहु नानक जा के पूरे भाग
 ॥ गुर चरणी ता का मनु लाग ॥ ४ ॥ ६ ॥ ८ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिंदु ॥ गुरु मेरा पारब्रहमु गुरु
 भगवतु ॥ गुरु मेरा देउ अलख अभेउ ॥ सरब पूज चरन गुर सेउ ॥ १ ॥ गुर बिनु अवरु नाही मै थाउ ॥ अनदिनु जपउ
 गुरू गुर नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु मेरा गिआनु गुरु रिदै धिआनु ॥ गुरु गोपालु पुरखु भगवानु ॥ गुर की सरणि रहउ
 कर जोरि ॥ गुरू बिना मै नाही होरु ॥ २ ॥ गुरु बोहिथु तारे भव पारि ॥ गुर सेवा जम ते छुटकारि ॥ अंधकार महि

गुर मंत्रु उजारा ॥ गुर कै सँगि सगल निसतारा ॥ ३ ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी ॥ गुर की सेवा दूरु न लागी ॥ गुर का
 सबदु न मैटै कोइ ॥ गुरु नानकु नानकु हरि सोइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ९ ॥ गोंड महला ५ ॥ राम राम सँगि करि बिउहार ॥ राम
 राम राम प्रान अधार ॥ राम राम राम कीरतनु गाइ ॥ रमत रामु सभ रहिओ समाइ ॥ १ ॥ सँत जना मिलि बोलहु राम ॥
 सभ ते निरमल पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम राम धनु सँचि भँडार ॥ राम राम राम करि आहार ॥ राम राम वीसरि नही
 जाइ ॥ करि किरपा गुरि दीआ बताइ ॥ २ ॥ राम राम राम सदा सहाइ ॥ राम राम राम लिव लाइ ॥ राम राम जपि निरमल
 भए ॥ जनम जनम के किलबिख गए ॥ ३ ॥ रमत राम जनम मरणु निवारै ॥ उचरत राम भै पारि उतारै ॥ सभ ते ऊच
 राम परगास ॥ निसि बासुर जपि नानक दास ॥ ४ ॥ ८ ॥ १० ॥ गोंड महला ५ ॥ उन कउ खसमि कीनी ठाकहारे ॥
 दास सँग ते मारि बिदारे ॥ गोबिंद भगत का महलु न पाइआ ॥ राम जना मिलि मँगलु गाइआ ॥ १ ॥ सगल खिसटि के
 पँच सिक्दार ॥ राम भगत के पानीहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत पास ते लेते दानु ॥ गोबिंद भगत कउ करहि सलामु ॥
 लूटि लेहि साकत पति खोवहि ॥ साध जना पग मलि मलि धोवहि ॥ २ ॥ पँच पूत जणे इक माइ ॥ उतभुज खेलु करि
 जगत विआइ ॥ तीनि गुणा कै सँगि रचि रसे ॥ इन कउ छोडि ऊपरि जन बसे ॥ ३ ॥ करि किरपा जन लीए छडाइ ॥
 जिस के से तिनि रखे हटाइ ॥ कहु नानक भगति प्रभ सारु ॥ बिनु भगती सभ होइ खुआरु ॥ ४ ॥ ९ ॥ ११ ॥ गोंड
 महला ५ ॥ कलि कलेस मिटे हरि नाइ ॥ दुख बिनसे सुख कीनो ठाउ ॥ जपि जपि अँमित नामु अघाए ॥ सँत प्रसादि
 सगल फल पाए ॥ १ ॥ राम जपत जन पारि परे ॥ जनम जनम के पाप हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरन रिदै उरि धारे ॥
 अगनि सागर ते उतरे पारे ॥ जनम मरण सभ मिटी उपाधि ॥ प्रभ सिउ लागी सहजि समाधि ॥ २ ॥ थान थनंतरि एको
 सुआमी ॥ सगल घटा का अँतरजामी ॥ करि किरपा जा कउ मति देइ ॥ आठ पहर प्रभ का नाउ लेइ ॥ ३ ॥

जा कै अंतरि वसै प्रभु आपि ॥ ता कै हिरदै होइ प्रगासु ॥ भगति भाइ हरि कीरतनु करीये ॥ जपि पारब्रह्म नानक
निसतरीये ॥ ४ ॥ १० ॥ १२ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुर के चरन कमल नमसकारि ॥ कामु क्रोधु इसु तन ते मारि ॥ होइ
रहीये सगल की रीना ॥ घटि घटि रमईआ सभ महि चीना ॥ १ ॥ इन बिधि रमहु गोपाल गोबिंदु ॥ तनु धनु प्रभ का प्रभ
की जिंदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ जीअ प्रान को इहै सुआउ ॥ तजि अभिमानु जानु प्रभु सँगि ॥
साध प्रसादि हरि सिउ मनु रँगि ॥ २ ॥ जिनि तूँ कीआ तिस कउ जानु ॥ आगै दरगह पावै मानु ॥ मनु तनु निरमल होइ
निहालु ॥ रसना नामु जपत गोपाल ॥ ३ ॥ करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ साधू की मनु मँगै खाला ॥ होहु दइआल
देहु प्रभ दानु ॥ नानक जपि जीवै प्रभ नामु ॥ ४ ॥ ११ ॥ १३ ॥ गोंड महला ५ ॥ धूप दीप सेवा गोपाल ॥ अनिक
बार बँदन करतार ॥ प्रभ की सरणि गही सभ तिआगि ॥ गुर सुप्रसँन भए वडभागि ॥ १ ॥ आठ पहर गाईये गोबिंदु ॥
तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण रमत भए आनँद ॥ पारब्रह्म पूरन बखसँद ॥ करि किरपा जन
सेवा लाए ॥ जनम मरण दुख मेटि मिलाए ॥ २ ॥ करम धरम इहु ततु गिआनु ॥ साधसँगि जपीये हरि नामु ॥ सागर
तरि बोहिथ प्रभ चरण ॥ अंतरजामी प्रभ कारण करण ॥ ३ ॥ राखि लीए अपनी किरपा धारि ॥ पंच दूत भागे बिकराल
॥ जूरे जनमु न कबहू हारि ॥ नानक का अँगु कीआ करतारि ॥ ४ ॥ १२ ॥ १४ ॥ गोंड महला ५ ॥ करि किरपा सुख
अनद करेइ ॥ बालक राखि लीए गुरदेवि ॥ प्रभ किरपाल दइआल गोबिंद ॥ जीअ जँत सगले बखसँद ॥ १ ॥ तेरी
सरणि प्रभ दीन दइआल ॥ पारब्रह्म जपि सदा निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ दइआल दूसर कोई नाही ॥ घट घट अंतरि
सरब समाही ॥ अपने दास का हलतु पलतु सवारै ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुमूह्रै ॥ २ ॥ अउखध कोटि सिमरि
गोबिंद ॥ तँतु मँतु भजीये भगवँत ॥ रोग सोग मिटे प्रभ धिआए ॥ मन बाँछत पूरन फल पाए ॥ ३ ॥ करन

कारन समरथ दइआर ॥ सरब निधान महा बीचार ॥ नानक बखसि लीए प्रभि आपि ॥ सदा सदा एको हरि जापि ॥ ४ ॥
१३ ॥ १५ ॥ गोंड महला ५ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे मीत ॥ निरमल होइ तुम्हारा चीत ॥ मन तन की सभ मिटै बलाइ
॥ दूखु अँधेरा सगला जाइ ॥ १ ॥ हरि गुण गावत तरीए संसारु ॥ वडभागी पाईए पुरखु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो
जनु करै कीरतनु गोपाल ॥ तिस कउ पोहि न सकै जमकालु ॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥ गुरमुखि अपना खसमु
पछाणु ॥ २ ॥ हरि गुण गावै संत प्रासदि ॥ काम क्रोध मिटहि उनमाद ॥ सदा हजूरि जाणु भगवँत ॥ पूरे गुर का पूरन
मँत ॥ ३ ॥ हरि धनु खाटि कीए भँडार ॥ मिलि सतिगुर सभि काज सवार ॥ हरि के नाम रँग सँगि जागा ॥ हरि चरणी
नानक मनु लाग़ा ॥ ४ ॥ १४ ॥ १६ ॥ गोंड महला ५ ॥ भव सागर बोहिथ हरि चरण ॥ सिमरत नामु नाही फिरि मरण
॥ हरि गुण रमत नाही जम पँथ ॥ महा बीचार पँच दूतह मँथ ॥ १ ॥ तउ सरणाई पूरन नाथ ॥ जँत अपने कउ दीजहि
हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमिति सासत्र बेद पुराण ॥ पारब्रहम का करहि वखिआण ॥ जोगी जती बैसनो रामदास ॥
मिति नाही ब्रहम अबिनास ॥ २ ॥ करण पलाह करहि सिव देव ॥ तिलु नही बूझहि अलख अभेव ॥ प्रेम भगति जिसु
आपे देइ ॥ जग महि विरले केई केइ ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण गुणु किछहू नाहि ॥ सरब निधान तेरी दिसटी माहि ॥ नानकु
दीनु जाचै तेरी सेव ॥ करि किरपा दीजै गुरदेव ॥ ४ ॥ १५ ॥ १७ ॥ गोंड महला ५ ॥ संत का लीआ धरति बिदारउ ॥
संत का निँदकु अकास ते टारउ ॥ संत कउ राखहु अपने जीअ नालि ॥ संत उधारउ ततखिण तालि ॥ १ ॥ सोई संतु जि
भावै राम ॥ संत गोबिंद कै एकै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत कै ऊपरि देइ प्रभु हाथ ॥ संत कै सँगि बसै दिनु राति ॥ सासि
सासि संतह प्रतिपालि ॥ संत का दोखी राज ते टालि ॥ २ ॥ संत की निँदा करहु न कोइ ॥ जो निँदै तिस का पतनु होइ
॥ जिस कउ राखै सिरजनहारु ॥ इख मारउ सगल संसारु ॥ ३ ॥ प्रभ अपने का भइआ बिसासु ॥ जीउ पिँडु सभु

तिस की रासि ॥ नानक कउ उपजी परतीति ॥ मनमुख हार गुरमुख सद जीति ॥ ४ ॥ १६ ॥ १८ ॥ गोंड महला ५ ॥
 नामु निरँजनु नीरि नराइण ॥ रसना सिमरत पाप बिलाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाराइण सभ माहि निवास ॥ नाराइण घटि
 घटि परगास ॥ नाराइण कहते नरकि न जाहि ॥ नाराइण सेवि सगल फल पाहि ॥ १ ॥ नाराइण मन माहि अधार ॥
 नाराइण बोहिथ संसार ॥ नाराइण कहत जमु भागि पलाइण ॥ नाराइण दँत भाने डाइण ॥ २ ॥ नाराइण सद सद
 बखसिँद ॥ नाराइण कीने सूख अनँद ॥ नाराइण प्रगट कीनो परताप ॥ नाराइण संत को माई बाप ॥ ३ ॥ नाराइण
 साधसँगि नराइण ॥ बारँ बार नराइण गाइण ॥ बसतु अगोचर गुर मिलि लही ॥ नाराइण ओट नानक दास गही ॥ ४ ॥
 १७ ॥ १९ ॥ गोंड महला ५ ॥ जा कउ रखै रखणहारु ॥ तिस का अँगु करे निरँकारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात गरभ महि
 अगनि न जोहै ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु न पोहै ॥ साधसँगि जपै निरँकारु ॥ ॥ निँदक कै मुहि लागै छारु ॥ १ ॥ राम
 कवचु दास का संनाहु ॥ दूत दुसट तिसु पोहत नाहि ॥ जो जो गरबु करे सो जाइ ॥ गरीब दास की प्रभु सरणाइ ॥ २ ॥
 जो जो सरणि पइआ हरि राइ ॥ सो दासु रखिआ अपणै कँठि लाइ ॥ जे को बहुतु करे अहँकारु ॥ ओहु खिन महि रुलता
 खाकू नालि ॥ ३ ॥ है भी साचा होवणहारु ॥ सदा सदा जाई बलिहार ॥ अपणे दास रखे किरपा धारि ॥ नानक के प्रभ
 प्राण अधार ॥ ४ ॥ १८ ॥ २० ॥ गोंड महला ५ ॥ अचरज कथा महा अनूप ॥ प्रातमा पारब्रहम का रूपु ॥ रहाउ ॥
 ना इहु बूढा ना इहु बाला ॥ ना इसु दूखु नही जम जाला ॥ ना इसु बिनसै ना इहु जाइ ॥ आदि जुगादी रहिआ समाइ ॥
 १ ॥ ना इसु उसनु नही इसु सीतु ॥ ना इसु दुसमनु ना इसु मीतु ॥ ना इसु हरखु नही इसु सोगु ॥ सभु किछु इस का इहु
 करनै जोगु ॥ २ ॥ ना इसु बापु नही इसु माइआ ॥ इहु अपरँपरु होता आइआ ॥ पाप पुँन का इसु लेपु न लागै ॥ घट
 घट अंतरि सद ही जागै ॥ ३ ॥ तीनि गुणा इक सकति उपाइआ ॥ महा माइआ ता की है छाइआ ॥ अछल

अछेद अभेद दइआल ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ ता की गति मिति कछू न पाइ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाइ ॥ ४ ॥ १९ ॥ २१ ॥ गोंड महला ५ ॥ संतन कै बलिहारै जाउ ॥ संतन कै सँगि राम गुन गाउ ॥ संत प्रसादि किलविख सभि गए ॥ संत सरणि वडभागी पर ॥ १ ॥ रामु जपत कछु बिघनु न विआपै ॥ गुर प्रसादि अपुना प्रभु जापै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु जब होइ दइआल ॥ साधू जन की करै खाल ॥ कामु क्रोधु इसु तन ते जाइ ॥ राम रतनु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ सफलु जनमु तां का परवाणु ॥ पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥ भाइ भगति प्रभ कीरतनि लागै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥ ३ ॥ चरन कमल जन का आधारु ॥ गुण गोविंद रउं सचु वापारु ॥ दास जना की मनसा पूरि ॥ नानक सुखु पावै जन धूरि ॥ ४ ॥ २० ॥ २२ ॥ ६ ॥ २८ ॥

शगु गोंड असटपदीआ महला ५ वरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

करि नमस्कार पूरे गुरदेव ॥ सफल मूरति सफल जा की सेव ॥ अंतरजामी पुरखु बिधाता ॥ आठ पहर नाम रँगि राता ॥ १ ॥ गुर गोविंद गुरू गोपाल ॥ अपने दास कउ राखनहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पातिसाह साह उमराउ पतीआए ॥ दुसट अहँकारी मारि पचाए ॥ निंदक कै मुखि कीनो रोगु ॥ जै जैकारु करै सभु लोगु ॥ २ ॥ संतन कै मनि महा अनंदु ॥ संत जपहि गुरदेउ भगवँतु ॥ संगति के मुख ऊजल भए ॥ सगल थान निंदक के गए ॥ ३ ॥ सासि सासि जनु सदा सलाहे ॥ पारब्रहम गुर बेपरवाहे ॥ सगल भै मिटे जा की सरनि ॥ निंदक मारि पाए सभि धरनि ॥ ४ ॥ जन की निंदा करै न कोइ ॥ जो करै सो दुखीआ होइ ॥ आठ पहर जनु एकु धिआए ॥ जमूआ ता कै निकटि न जाए ॥ ५ ॥ जन निरवैर निंदक अहँकारी ॥ जन भल मानहि निंदक वेकारी ॥ गुर कै सिखि सतिगुरू धिआइआ ॥ जन उबरे निंदक नरकि पाइआ ॥ ६ ॥ सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ सति बचन

वरतहि हरि दुआरे ॥ जैसा करे सु तैसा पाए ॥ अभिमानी की जड़ सरपर जाए ॥ ७ ॥ नीधरिआ सतिगुर धर तेरी ॥ करि
किरपा राखहु जन केरी ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ जा कै सिमरनि पैज सवारी ॥ ८ ॥ १ ॥ २९ ॥

रागु गोंड बाणी भगता की ॥ कबीर जी घरु १ ॥ १४३ सतिगुर प्रसादि ॥

संतु मिलै किछु सुनीरे कहीरे ॥ मिलै असंतु मसटि करि रहीरे ॥ १ ॥ बाबा बोलना किआ कहीरे ॥ जैसे राम नाम रवि
रहीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतन सिउ बोले उपकारी ॥ मूरख सिउ बोले झख मारी ॥ २ ॥ बोलत बोलत बढहि बिकारा ॥
बिनु बोले किआ करहि बीचारा ॥ ३ ॥ कहु कबीर छूछा घटु बोलै ॥ भरिआ होइ सु कबहु न डोलै ॥ ४ ॥ १ ॥ गोंड ॥
नरु मरै नरु कामि न आवै ॥ पसू मरै दस काज सवारै ॥ १ ॥ अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥ मै किआ जानउ
बाबारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केस जले जैसे घास का पूला ॥ २ ॥ कहु कबीर तब ही नरु
जागै ॥ जम का डंडु मूँड महि लागै ॥ ३ ॥ २ ॥ गोंड ॥ आकासि गगनु पातालि गगनु है चहु दिसि गगनु रहाइले ॥
आनद मूलु सदा पुरखोतमु घटु बिनसै गगनु न जाइले ॥ १ ॥ मोहि बैरागु भइओ ॥ इहु जीउ आइ कहा गइओ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ पंच ततु मिलि काइआ कीनीह ततु कहा ते कीनुरे ॥ करम बध तुम जीउ कहत हौ करमहि किनि जीउ दीनुरे ॥ २
॥ हरि महि तनु है तन महि हरि है सरब निरंतरि सोइरे ॥ कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होइ सु होइरे ॥ ३ ॥ ३ ॥

रागु गोंड बाणी कबीर जीउ की घरु २ ॥ १४३ सतिगुर प्रसादि ॥

भुजा बांधि भिला करि डारिओ ॥ हसती क्रोपि मूँड महि मारिओ ॥ हसति भागि कै चीसा मारै ॥ इआ मूरति कै हउ बलिहारै
॥ १ ॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु ॥ काजी बकिबो

हसती तोरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे महावत तुझु डारउ काटि ॥ इसहिं तुरावहु घालहु साटि ॥ हसति न तोरै धरै धिआनु ॥ वा
कै रिदै बसै भगवानु ॥ २ ॥ किआ अपराधु संत है कीनाह ॥ बांधि पोट कुंकर कउ दीनाह ॥ कुंकरु पोट लै लै नमसकारै ॥
बूझी नही काजी अंधिआरै ॥ ३ ॥ तीनि बार पतीआ भरि लीना ॥ मन कठोरु अजहू न पतीना ॥ कहिं कबीर हमरा
गोबिंदु ॥ चउथे पद महि जन की जिंदु ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ गोंड ॥ ना इहु मानसु ना इहु देउ ॥ ना इहु जती कहावै सेउ ॥
ना इहु जोगी ना अवधूता ॥ ना इसु माइ न काहू पूता ॥ १ ॥ इआ मंदर महि कौन बसाई ॥ ता का अंतु न कोऊ पाई ॥ १
॥ रहाउ ॥ ना इहु गिरही ना ओदासी ॥ ना इहु राज न भीख मंगासी ॥ ना इसु पिंडु न रक्तू राती ॥ ना इहु ब्रहमनु ना इहु
खाती ॥ २ ॥ ना इहु तपा कहावै सेखु ॥ ना इहु जीवै न मरता देखु ॥ इसु मरते कउ जे कोऊ रोवै ॥ जो रोवै सोई पति
खोवै ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि मै डगरो पाइआ ॥ जीवन मरनु दोऊ मिटवाइआ ॥ कहु कबीर इहु राम की अंसु ॥ जस कागद पर
मितै न मंसु ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ गोंड ॥ तुटै तागे निखुटी पानि ॥ दुआर ऊपरि झिलकावहि कान ॥ कूच बिचारे पूए फाल
॥ इआ मुंडीआ सिरि चढिबो काल ॥ १ ॥ इहु मुंडीआ सगलो द्रबु खोई ॥ आवत जात नाक सर होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
तुरी नारि की छोडी बाता ॥ राम नाम वा का मनु राता ॥ लरिकी लरिकन खैबो नाहि ॥ मुंडीआ अनदिनु धापे जाहि ॥ २
॥ इक दुइ मंदरि इक दुइ बाट ॥ हम कउ साथरु उम कउ खाट ॥ मूड पलोसि कमर बधि पोथी ॥ हम कउ चाबनु उन कउ
रोटी ॥ ३ ॥ मुंडीआ मुंडीआ हूए एक ॥ ए मुंडीआ बूडत की टेक ॥ सुनि अंधली लोई बेपीरि ॥ इन्ह मुंडीअन भजि सरनि
कबीर ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ गोंड ॥ खसमु मरै तउ नारि न रोवै ॥ उसु रखवारा अउरो होवै ॥ रखवारे का होइ बिनास ॥
आगै नरकु ईहा भोग बिलास ॥ १ ॥ एक सुहागनि जगत पिआरी ॥ सगले जीध जंत की नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सोहागनि गलि सोहै हारु ॥ संत कउ बिखु बिगसै संसारु ॥ करि सीगारु बहै पखिआरी ॥ संत की ठिठकी फिरै बिचारी
॥ २ ॥

सँत भागि ओह पाछै परै ॥ गुर परसादी मारहु डरै ॥ साकत की ओह पिँड पराइणि ॥ हम कउ द्रिसटि परै त्रखि डाइणि ॥
 ३ ॥ हम तिस का बहु जानिआ भेउ ॥ जब हूरु क्रिपाल मेले गुरदेउ ॥ कहु कबीर अब बाहरि परी ॥ संसारै कै अँचलि लरी
 ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥ गोंड ॥ गिहि सोभा जा कै रे नाहि ॥ आवत पहीआ खूधे जाहि ॥ वा कै अँतरि नही संतोखु ॥ बिनु
 सोहागनि लागै दोखु ॥ १ ॥ धनु सोहागनि महा पवीत ॥ तपे तपीसर डोलै चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागनि किरपन की
 पूती ॥ सेवक तजि जगत सिउ सूती ॥ साधू कै ठाढी दरबारि ॥ सरनि तेरी मो कउ निसतारि ॥ २ ॥ सोहागनि है अति
 सुंदरी ॥ पग नेवर छनक छनहरी ॥ जउ लगु प्रान तऊ लगु सँगे ॥ नाहि त चली बेगि उठि नँगे ॥ ३ ॥ सोहागनि भवन
 त्रै लीआ ॥ दस अठ पुराण तीरथ रस कीआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेशर बेधे ॥ बडे भूपति राजे है छेधे ॥ ४ ॥ सोहागनि
 उरवारि न पारि ॥ पांच नारद कै सँगि बिधवारि ॥ पांच नारद के मिटवे फूटे ॥ कहु कबीर गुर किरपा छूटे ॥ ५ ॥ ५ ॥ ८
 ॥ गोंड ॥ जैसे मँदर महि बलहर ना ठाहरै ॥ नाम बिना कैसे पारि उतरै ॥ कुँभ बिना जलु ना टीकावै ॥ साधू बिनु ऐसे
 अबगतु जावै ॥ १ ॥ जारउ तिसै जु रामु न चेतै ॥ तन मन रमत रहै महि खेतै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे हलहर बिना जिमी
 नही बोईऐ ॥ सूत बिना कैसे मणी परोइऐ ॥ घुँडी बिनु किआ गँठि चढाईऐ ॥ साधू बिनु तैसे अबगतु जाईऐ ॥ २ ॥ जैसे
 मात पिता बिनु बाल न होई ॥ बिंब बिना कैसे कपरे धोई ॥ घोर बिना कैसे असवार ॥ साधू बिनु नाही दरवार ॥ ३ ॥
 जैसे बाजे बिनु नही लीजै फेरी ॥ खसमि दुहागनि तजि अउहेरी ॥ कहै कबीरु एकै करि करना ॥ गुरमुखि होइ नही मरना
 ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥ गोंड ॥ कूटनु सोइ जु मन कउ कूटै ॥ मन कूटै तउ जम ते छूटै ॥ कुटि कुटि मनु कसवटी लावै ॥ सो
 कूटनु मुकति बहु पावै ॥ १ ॥ कूटनु किसै कहहु संसार ॥ सगल बोलन के माहि बीचार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाचनु सोइ जु
 मन सिउ नाचै ॥ झूठि न पतीऐ परचै साचै ॥ इसु मन आगे पूरै ताल ॥ इसु नाचन के मन रखवाल ॥ २ ॥

बजारी सो जु बजारहि सोधै ॥ पांच पलीतह कउ परबोधै ॥ नउ नाइक की भगति पछानै ॥ सो बाजारी हम गुर
माने ॥ ३ ॥ तसकरु सोइ जिं ताति न करै ॥ इंद्री कै जतनि नामु उचरै ॥ कहु कबीर हम ऐसे लखन ॥ धँनु
गुरदेव अति रूप बिचखन ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ गोंड ॥ धँनु गुपाल धँनु गुरदेव ॥ धँनु अनादि भूखे कवलु
टहकेव ॥ धनु ओइ संत जिन ऐसी जानी ॥ तिन कउ मिलिबो सारिंगपानी ॥ १ ॥ आदि पुरख ते होइ अनादि
॥ जपीरे नामु अँनु कै सादि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपीरे नामु जपीरे अँनु ॥ अँभै कै संगि नीका वँनु ॥ अँनै बाहरि
जो नर होवहि ॥ तिनि भवन महि अपनी खोवहि ॥ २ ॥ छोडहि अँनु करहि पाखंड ॥ ना सोहागनि ना ओहि
रँड ॥ जग महि बकते दूधाधारी ॥ गुपती खावहि वटिका सारी ॥ ३ ॥ अँनै बिना न होइ सुकालु ॥ तजिरे अँनि
न मिलै गुपालु ॥ कहु कबीर हम ऐसे जानिआ ॥ धँनु अनादि ठाकुर मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ११ ॥

शगु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु १ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

असुमेध जगने ॥ तुला पुरख दाने ॥ प्राग इसनाने ॥ १ ॥ तउ न पुजहि हरि कीरति नामा ॥ अपुने रामहि भजु
रे मन आलसीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गइआ पिँडु भरता ॥ बनारसि असि बसता ॥ मुखि बेद चतुर पड़ता ॥ २
॥ सगल धरम अछिता ॥ गुर गिआन इंद्री दिड़ता ॥ खटु करम सहित रहता ॥ ३ ॥ सिवा सकति संबादँ ॥
मन छोडि छोडि सगल भेदँ ॥ सिमरि सिमरि गोबिंदँ ॥ भजु नामा तरसि भव सिंधँ ॥ ४ ॥ १ ॥ गोंड ॥ नाद
भ्रमे जैसे मिरगाए ॥ प्रान तजे वा को धिआनु न जाए ॥ १ ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरउ ॥ रामु छोडि चितु अनत न
फेरउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥ सोना गढते हिरै सुनारा ॥ २ ॥ जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥
कउडा डारत हिरै जुआरी ॥ ३ ॥ जह जह देखउ तह तह रामा ॥ हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥ ४ ॥ २ ॥
गोंड ॥ मो कउ तारि ले राम तारि ले ॥ मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥ १ ॥ रहाउ ॥

नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥ नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ सो अवरध मै पाई ॥ १ ॥ जहा
जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥ तेरे नाम अविलंबि बहुतु जन उधरे नामे की निज मति एह ॥ २ ॥ ३ ॥ गोंड ॥
मोहि लागती तालाबेली ॥ बछरे बिनु गाइ अकेली ॥ १ ॥ पानीआ बिनु मीनु तलफै ॥ ऐसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥
१ ॥ रहाउ ॥ जैसे गाइ का बाछा छूटला ॥ थन चोखता माखनु घूटला ॥ २ ॥ नामदेउ नाराइनु पाइआ ॥ गुरु भेटत
अलखु लखाइआ ॥ ३ ॥ जैसे बिखै हेत पर नारी ॥ ऐसे नामे प्रीति मुरारी ॥ ४ ॥ जैसे तापते निरमल घामा ॥ तैसे राम
नामा बिनु बापुरो नामा ॥ ५ ॥ ४ ॥

रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥ हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥ हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ सो हरि अंधुले की लाकरी
॥ १ ॥ हरए नमसते हरए नमह ॥ हरि हरि करत नहीं दुखु जमह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरनाकस हरे परान ॥ अजैमल
कीओ बैकुंठहि थान ॥ सूआ पड़ावत गनिका तरी ॥ सो हरि नैनहु की पूतरी ॥ २ ॥ हरि हरि करत पूतना तरी ॥ बाल
घातनी कपटहि भरी ॥ सिमरन द्रोपद सुत उधरी ॥ गऊतम सती सिला निसतरी ॥ ३ ॥ केसी कंस मथनु जिनि कीआ ॥
जीअ दानु काली कउ दीआ ॥ प्रणवै नामा एसो हरी ॥ जासु जपत भै अपदा तरी ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ गोंड ॥ भैरउ भूत
सीतला धावै ॥ खर बाहन उहु छारु उडावै ॥ १ ॥ हउ तउ एक रमईआ लैहउ ॥ आन देव बदलावनि दैहउ ॥ १ ॥ रहाउ
॥ सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥ बरद चढे डउरु ढमकावै ॥ २ ॥ महा माई की पूजा करै ॥ नर से नारि होइ अउतरै
॥ ३ ॥ तू कहीअत ही आदि भवानी ॥ मुक्ति की बरीआ कहा छपानी ॥ ४ ॥ गुरुमति राम नाम गहु मीता ॥ प्रणवै नामा
इउ कहै गीता ॥ ५ ॥ २ ॥ ६ ॥ बिलावलु गोंड ॥ आजु नामे बीठल देखिआ मूरख को समझाऊरे ॥ रहाउ ॥ पांडे तुमरी

गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी ॥ लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी ॥ १ ॥ पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद
चड़िआ आवतु देखिआ था ॥ मोदी के घर खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था ॥ २ ॥ पांडे तुमरा रामचंद्रु सो भी आवतु
देखिआ था ॥ रावन सेती सरबर होई घर की जोड़ गवाई थी ॥ ३ ॥ हिंदू अँन्हा तुरकू काणा ॥ दुहां ते गिआनी सिआणा
॥ हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥ नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

रागु गोंड बाणि रविदास जीउ की वरु २ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥ सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥ सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥ १
॥ जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥ ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥ जपि मुकंद
मसतकि नीसानं ॥ सेव मुकंद करै बैरागी ॥ सोई मुकंदु दुखबल धनु लाधी ॥ २ ॥ एकु मुकंदु करै उपकारु ॥ हमरा कहा करै
संसारु ॥ मेटी जाति हूए दरबारि ॥ तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥ ३ ॥ उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥ करि किरपा
लीने कीट दास ॥ कहु रविदास अब त्रिसना चूकी ॥ जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥ ४ ॥ १ ॥ गोंड ॥ जे ओहु अठसठि
तीरथु नाहवै ॥ जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥ जे ओहु कूप तटा देवावै ॥ करै निंद सभ बिरथा जावै ॥ १ ॥ साध का
निंदकु कैसे तरै ॥ सरपर जानहु नरक ही परै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥ अरपै नारि सीगार समेति ॥
सगली सिम्रिति श्रवनी सुनै ॥ करै निंद कवनै नही गुनै ॥ २ ॥ जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥ भूमि दान सोभा मंडपि
पावै ॥ अपना बिगारि बिरांना साठै ॥ करै निंद बहु जोनी हाठै ॥ ३ ॥ निंदा कहा करहु संसारा ॥ निंदक का परगटि
पाहारा ॥ निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥ कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ ७ ॥ २ ॥ ४९ ॥
जोडु ॥

शमकली महला १ घरु १ चउपदे

१ॐ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

कोई पड़ता सहसाकिरता कोई पड़ै पुराना ॥ कोई नामु जपै जपमाली लागै तिसै
धिआना ॥ अबही कबही किछु न जाना तेरा एको नामु पछाना ॥ १ ॥ न जाणा हरे मेरी कवन गते ॥ हम मूरख अगिआन
सरनि प्रभ तेरी करि किरपा राखहु मेरी लाज पते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबहू जीअड़ा ऊभिं चड़तु है कबहू जाइ पइआले ॥ लोभी
जीअड़ा थिरु न रहतु है चारे कुंडा भाले ॥ २ ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए जीवणु साजहि माई ॥ एकि चले हम देखहु
सुआमी भाहि बलँती आई ॥ ३ ॥ न किसी का मीतु न किसी का भाई ना किसै बापु न माई ॥ प्रणवति नानक जे तू देवहि अँते
होइ सरवाई ॥ ४ ॥ १ ॥ शमकली महला १ ॥ सरब जोति तेरी पसरि रही ॥ जह जह देखा तह नरहरी ॥ १ ॥ जीवन
तलब निवारि सुआमी ॥ अँध कूपि माइआ मनु गाडिआ किउ करि उतरउ पारि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह भीतरि घट
भीतरि बसिआ बाहरि कोहे नाही ॥ तिन की सार करे नित साहिबु सदा चिँत मन माही ॥ २ ॥ आपे नेडै आपे दूरि ॥ आपे

सरब रहिआ भरपूरि ॥ सतगुरु मिलै अँधेरा जाइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ अँतरि सहसा बाहरि माइआ नैणी
 लागसि बाणी ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा परतापहिगा प्राणी ॥ ४ ॥ २ ॥ रामकली महला १ ॥ जितु दरि वसहि
 कवनु दरु कहीऐ दरा भीतरि दरु कवनु लहै ॥ जिसु दर कारणि फिरा उदासी सौं दरु कोई आइ कहै ॥ १ ॥ किन बिधि
 सागरु तरीऐ ॥ जीवतिआ नह मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु दरवाजा रोहु रखवाला आसा अँदेसा दुइ पट जड़े ॥ माइआ
 जलु खाई पाणी घरु बाधिआ सत कै आसणि पुरखु रहै ॥ २ ॥ किँते नामा अँतु न जाणिआ तुम सरि नाही अवरु रहे ॥
 ऊचा नहीं कहणा मन महि रहणा आपे जाणै आपि करे ॥ ३ ॥ जब आसा अँदेसा तब ही किउ करि एकु कहै ॥ आसा भीतरि
 रहै निरासा तउ नानक एकु मिलै ॥ ४ ॥ इन बिधि सागरु तरीऐ ॥ जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ३ ॥
 रामकली महला १ ॥ सुरति सबदु साखी मेरी सिँडी बाजै लोकु सुणे ॥ पतु झोली मँगण कै ताई भीखिआ नामु पड़े ॥ १ ॥
 बाबा गोरखु जागै ॥ गोरखु सो जिनि गोइ उठाली करते बार न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाणी प्राण पवणि बाँधि राखे चँदु
 सूरजु मुखि दीए ॥ मरण जीवण कउ धरती दीनी एते गुण विसरे ॥ २ ॥ सिध साधिक अरु जोगी जँगम पीर पुरस बहुतेरे
 ॥ जे तिन मिला त कीरति आखा ता मनु सेव करे ॥ ३ ॥ कागदु लूणु रहै घित सँगे पाणी कमलु रहै ॥ ऐसे भगत मिलाहि
 जन नानक तिन जमु किआ करै ॥ ४ ॥ ४ ॥ रामकली महला १ ॥ सुणि माछिँद्रा नानकु बोलै ॥ वसगति पँच करे नह
 डोलै ॥ ऐसी जुगति जोग कउ पाले ॥ आपि तरै सगले कुल तारे ॥ १ ॥ सो अउधूतु ऐसी मति पावै ॥ अहिनिशि सुँनि
 समाधि समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भिखिआ भाइ भगति भै चलै ॥ होवै सु त्रिपति संतोखि अमुलै ॥ धिआन रूपि होइ
 आसणु पावै ॥ सचि नामि ताड़ी चितु लावै ॥ २ ॥ नानकु बोलै अँम्रित बाणी ॥ सुणि माछिँद्रा अउधू नीसाणी ॥ आसा
 माहि निरासु वलाए ॥ निहचउ नानक करते पाए ॥ ३ ॥ प्रणवति नानकु अगमु सुणाए ॥ गुर चले की सँधि मिलाए ॥

दीखिआ दारु भोजनु खाइ ॥ छिअ दरसन की सोझी पाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ रामकली महला १ ॥ हम डोलत बेड़ी पाप भरी है
 पवणु लगै मतु जाई ॥ सनमुख सिध भेटण कउ आए निहचउ देहि वडिआई ॥ १ ॥ गुर तारि तारणहारिआ ॥ देहि भगति
 पूरन अविनासी हउ तुझ कउ बलिहारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिध साधिक जोगी अरु जंगम एकु सिधु जिनी धिआइआ ॥
 परसत पैर सिद्धत ते सुआमी अखरु जिन कउ आइआ ॥ २ ॥ जप तप संजम करम न जाना नामु जपी प्रभ तेश ॥ गुरु
 परमेसरु नानक भेटिओ साचै सबदि निबेरा ॥ ३ ॥ ६ ॥ रामकली महला १ ॥ सुरती सुरति रलाईरे एतु ॥ तनु करि
 तुलहा लँघहि जेतु ॥ अंतरि भाहि तिसै तूरखु ॥ अहिनिशि दीवा बलै अथकु ॥ १ ॥ ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥ जितु दीवै
 सभ सोझी पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हछी मिटी सोझी होइ ॥ ता का कीआ मानै सोइ ॥ करणी ते करि चकहु ढालि ॥ ऐथै
 ओथै निबही नालि ॥ २ ॥ आपे नदरि करे जा सोइ ॥ गुरुमुखि विरला बूझै कोइ ॥ तितु घटि दीवा निहचलु होइ ॥ पाणी
 मरै न बुझाइआ जाइ ॥ ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥ ३ ॥ डोलै वाउ न वडा होइ ॥ जापै जिउ संघासणि लोइ ॥ खत्री
 ब्राहमणु सूदु कि वैसु ॥ निरति न पाईआ गणी सहँस ॥ ऐसा दीवा बाले कोइ ॥ नानक सो पारंगति होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥
 रामकली महला १ ॥ तुधनो निवणु मँनणु तेश नाउ ॥ साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥ सत संतोखु होवै अरदासि ॥ ता सुणि
 सदि बहाले पासि ॥ १ ॥ नानक बिरथा कोइ न होइ ॥ ऐसी दरगह साचा सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रापति पोता करमु पसाउ
 ॥ तू देवहि मँगत जन चाउ ॥ भाडै भाउ पवै तितु आइ ॥ धुरि तै छोडी कीमति पाइ ॥ २ ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु
 करै ॥ अपनी कीमति आपे धरै ॥ गुरुमुखि परगटु होआ हरि राइ ॥ ना को आवै ना को जाइ ॥ ३ ॥ लोकु धिकारु कहै
 मँगत जन मागत मानु न पाइआ ॥ सह कीआ गला दर कीआ बाता तै ता कहणु कहाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ रामकली महला १
 ॥ सागर महि बूँद बूँद महि सागरु कवणु बुझै बिधि जाणै ॥ उतभुज चलत आपि करि चीनै आपे ततु पछाणै ॥ १ ॥

ऐसा गिआनु बीचारै कोई ॥ तुस ते मुकति परम गति होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिन महि रैणि रैणि महि दिनीअरु उसन
 सीत बिधि सोई ॥ ता की गति मिति अवरु न जाणै गुर बिनु समझ न होई ॥ २ ॥ पुरख महि नारि नारि महि पुरखा
 बूझहु ब्रहम गिआनी ॥ धुनि महि धिआनु धिआन महि जानिआ गुरमुखि अकथ कहानी ॥ ३ ॥ मन महि जोति जोति
 महि मनूआ पँच मिले गुर भाई ॥ नानक तिन कै सद बलिहारी जिन एक सबदि लिव लाई ॥ ४ ॥ ९ ॥ रामकली महला
 १ ॥ जा हरि प्रबि किरपा धारी ॥ ता हउमै विचहु मारी ॥ सो सेवकि राम पिआरी ॥ जो गुर सबदी बीचारी ॥ १ ॥ सो
 हरि जनु हरि प्रभ भावै ॥ अहिनिशि भगति करे दिनु राती लाज छोडि हरि के गुण गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुनि वाजे
 अनहद घोरा ॥ मनु मानिआ हरि रसि मोरा ॥ गुर पूरै सचु समाइआ ॥ गुर आदि पुरखु हरि पाइआ ॥ २ ॥ सभि नाद
 बेद गुरबाणी ॥ मनु राता सारिगपाणी ॥ तह तीरथ वरत तप सारे ॥ गुर मिलिआ हरि निसतारे ॥ ३ ॥ जह आपु
 गइआ भउ भागा ॥ गुर चरणी सेवकु लागा ॥ गुरि सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥ कहु नानक सबदि मिलाइआ ॥ ४ ॥
 १० ॥ रामकली महला १ ॥ छादनु भोजनु मागतु भागै ॥ खुधिआ दुसट जलै दुखु आगै ॥ गुरमति नही लीनी दुर्मति
 पति खोई ॥ गुरमति भगति पावै जनु कोई ॥ १ ॥ जोगी जुगति सहज घरि वासै ॥ एक द्रिसटि एको करि देखिआ
 भीखिआ भाइ सबदि त्रिपतासै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँच बेल गडीआ देह धारी ॥ राम कला निबहै पति सारी ॥ धर तूटी
 गाडो सिर भारि ॥ लकरी बिखरि जरी मँझ भारि ॥ २ ॥ गुर का सबदु विचारि जोगी ॥ दुखु सुखु सम करणा सोग
 बिओगी ॥ भुगति नामु गुर सबदि बीचारी ॥ असथिरु कँधु जपै निरँकारी ॥ ३ ॥ सहज जगोटा बँधन ते छूटा ॥
 कामु क्रोधु गुर सबदी लूटा ॥ मन महि मुँद्रा हरि गुर सरणा ॥ नानक राम भगति जन तरणा ॥ ४ ॥ ११ ॥

१ॐ शितिगुर प्रसादि ॥ रामकली महला ३ घरु १ ॥

सतजुगि सचु कहै सभु कोई ॥ घरि घरि भगति गुरमुखि होई ॥ सतजुगि धरमु पैर है चारि ॥ गुरमुखि बूझै को
बीचारि ॥ १ ॥ जुग चारे नामि वडिआई होई ॥ जिं नामि लागै सो मुकति होवै गुर बिनु नामु न पावै कोई ॥ १ ॥
रहाउ ॥ त्रैतै इक कल कीनी दूरि ॥ पाखंडु वरतिआ हरि जाणनि दूरि ॥ गुरमुखि बूझै सोझी होई ॥ अंतरि नामु वसै
सुखु होई ॥ २ ॥ दुआपुरि दूजै दुबिधा होइ ॥ भरमि भुलाने जाणहि दोइ ॥ दुआपुरि धरमि दुइ पैर रखाए ॥
गुरमुखि होवै त नामु द्विड़ाए ॥ ३ ॥ कलजुगि धरम कला इक रहाए ॥ इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए ॥ माइआ
मोहु अति गुबारु ॥ सतगुरु भेटै नामि उधारु ॥ ४ ॥ सभ जुग महि साचा एको सोई ॥ सभ महि सचु दूजा नही
कोई ॥ साची कीरति सचु सुखु होई ॥ गुरमुखि नामु वखाणै कोई ॥ ५ ॥ सभ जुग महि नामु ऊतमु होई ॥
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ हरि नामु धिआए भगतु जनु सोई ॥ नानक जुगि जुगि नामि वडिआई होई ॥ ६ ॥ १
॥

रामकली महला ४ घरु १ १ॐ शितिगुर प्रसादि ॥

जे वडभाग होवहि वडबागी ता हरि हरि नामु धिआवै । नामु जपत नामे सुखु पावै हरि नामे नामि समावै ॥ १ ॥
गुरमुखि भगति करहु सद प्राणी ॥ हिरदै प्रगासु होवै लिव लागै गुरमति हरि हरि नामि समाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हीरा
रतन जवेहर माणक बहु सागर भरपूरु कीआ ॥ जिसु वडभागु होवै वड मसतकि तिनि गुरमति कढि कढि लीआ ॥ २
॥ रतनु जवेहरु लालु हरि नामा गुरि कढि तली दिखलाइआ ॥ भागहीण मनमुखि नही लीआ त्रिण ओलै लाखु
छपाइआ ॥ ३ ॥ मसतकि भागु होवै धुरि लिखिआ ता सतगुरु सेवा लाए ॥ नानक रतन जवेहर पावै धनु धनु
गुरमति हरि पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ रामकली महला ४ ॥ राम जना मिलि भइआ अनंदा हरि नीकी कथा सुनाइ ॥

दुरमति मैलु गई सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइ ॥ १ ॥ राम जन गुरमति रामु बोलाइ ॥ जो जो सुणै कहै सो
 मुक्ता राम जपत सोहाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे वडभाग होवहि मुखि मसतकि हरि राम जना भेटाइ ॥ दरसनु संत देहु करि
 किरपा सभ दालदु दुखु लहि जाइ ॥ २ ॥ हरि के लोग राम जन नीके भागहीण न सुखाइ ॥ जिउ जिउ राम कहहि जन
 ऊचे नर निंदक डंसु लगाइ ॥ ३ ॥ धिगु धिगु नर निंदक जिन जन नहीं भाए हरि के सखा सखाइ ॥ से हरि के चोर वेमुख
 मुख काले जिन गुर की पैज न भाइ ॥ ४ ॥ दइआ दइआ करि राखहु हरि जीउ हम दीन तेरी सरणाइ ॥ हम बारिक तुम
 पिता प्रभ मेरे जन नानक बखसि मिलाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ रामकली महला ४ ॥ हरि के सखा साध जन नीके तिन ऊपरि हाथु
 वतावै ॥ गुरमुखि साध सेई प्रभ भाए करि किरपा आपि मिलावै ॥ १ ॥ राम मो कउ हरि जन मेलि मनि भावै ॥ अमिउ
 अमिउ हरि रसु है मीठा मिलि संत जना मुखि पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के लोग राम जन ऊतम मिलि ऊतम पदवी पावै ॥
 हम होवत चरी दास दासन की मेरा ठाकुरु खुसी करावै ॥ २ ॥ सेवक जन सेवहि से वडभागी रिद मनि तनि प्रीति लगावै
 ॥ बिनु प्रीती करहि बहु बाता कूडु बोलि कूडो फलु पावै ॥ ३ ॥ मो कउ धारि क्रिपा जगजीवन दाते हरि संत पगी ले पावै
 ॥ ३ ॥ हउ काटउ काटि बाढि सिरु राखउ जितु नानक संतु चड़ि आवै ॥ ४ ॥ ३ ॥ रामकली महला ४ ॥ जे वडभाग
 होवहि वड मेरे जन मिलिआ ढिल न लाईरे ॥ हरि जन अमितु कुंठ सर नीके वडभागी तितु नावाईरे ॥ १ ॥ राम मो कउ
 हरि जन कारै लाईरे ॥ हउ पाणी परवा पीसउ संत आगै पग मलि मलि धूरि मुखि लाईरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन वडे वडे
 वड ऊचे जो सतगुर मेलि मिलाईरे ॥ सतगुर जेवडु अवरु न कोई मिलि सतगुर पुरख धिआईरे ॥ २ ॥ सतगुर सरणि परे
 तिन पाइआ मेरे ठाकुर लाज रखाईरे ॥ इकि अपणै सुआइ आइ बहहि गुर आगै जिउ बगुल समाधि लगाईरे ॥ ३ ॥
 बगुला काग नीच की संगति जाइ करंग बिखू मुखि लाईरे ॥ नानक मेलि मेलि प्रभ संगति मिलि संगति हंसु

कराईये ॥ ४ ॥ ४ ॥ रामकली महला ४ ॥ सतगुरु दइआ करहु हरि मेलहु मेरे प्रीतम प्राण हरि राइआ ॥ हम चेरी होइ
 लगह गुरु चरणी जिनि हरि प्रभ मारगु पँथु दिखाइआ ॥ १ ॥ राम मै हरि हरि नामु मनि भाइआ ॥ मै हरि बिनु अवरु
 न कोई बेली मेरा पिता माता हरि सखाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे डकु खिनु प्राण न रहहि बिनु प्रीतम बिनु देखे मरहि
 मेरी माइआ ॥ धनु धनु वडभाग गुरु सरणी आए हरि गुरु मिलि दरसनु पाइआ ॥ २ ॥ मै अवरु न कोई सूझै बूझै मनि
 हरि जपु जपउ जपाइआ ॥ नामहीण फिरहि से नकटे तिस घसि घसि नक वढाइआ ॥ ३ ॥ मो कउ जगजीवन
 जीवालिन लै सुआमी रिद अंतरि नामु वसाइआ ॥ नानक गुरु गुरु है पूरा मिलि सतिगुरु नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ ५
 ॥ रामकली महला ४ ॥ सतगुरु दाता वडा वड पुरखु है जितु मिलिरे हरि उरधारे ॥ जीअ दानु गुरु पूरै दीआ हरि
 अमितु नामु समारे ॥ १ ॥ राम गुरि हरि हरि नामु कँठि धारे ॥ गुरुमुखि कथा सुणी मनि भाई धनु धनु वडभाग हमारे
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि कोटि तेतीस धिआवहि ता का अंतु न पावहि पारे ॥ हिरदै काम कामनी मागहि रिधि मागहि
 हाथु पसारै ॥ २ ॥ हरि जसु जपि जपु वडा वडेश गुरुमुखि रखउ उरि धारे ॥ जे वडभाग होवहि ता जपीरे हरि
 भउजलु पारि उतारे ॥ ३ ॥ हरि जन निकटि निकटि हरि जन है हरि राखै कँठि जन धारे ॥ नानक पिता माता है हरि
 प्रभु हम बारिक हरि प्रतिपारे ॥ ४ ॥ ६ ॥ १८ ॥

रागु रामकली महला ५ घरु १ १८ सतिगुरु प्रसादि ॥

किरपा करहु दिन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई ॥ माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥ १
 ॥ मेरे मन सतिगुरु सेवि सुखु होई ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि दूखु न विआपै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काचे
 भाडे साजि निवाजे अंतरि

जोति समाई ॥ जैसा लिखतु लिखिआ धुरि करतै हम तैसी किरति कमाई ॥ २ ॥ मनु तनु थापि कीआ सभु अपना एहो
आवण जाणा ॥ जिनि दीआ सो चिति न आवै मोहि अँधु लपटाणा ॥ ३ ॥ जिनि कीआ सोई प्रभु जाणै हरि का महलु
अपारा ॥ भगति करी हरि के गुण गावा नानक दासु तुमारा ॥ ४ ॥ १ ॥ रामकली महला ५ ॥ पवहु चरणा तलि ऊपरि
आवहु ऐसी सेव कमावहु ॥ आपस ते ऊपरि सभ जाणहु तउ दरगह सुखु पावहु ॥ १ ॥ सँतहु ऐसी कथहु कहाणी ॥ सुर
पवित्र नर देव पवित्रा खिनु बोलहु गुरमुखि बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परपँचु छोडि सहज घरि बैसहु झूठा कहहु न कोई ॥
सतिगुर मिलहु नवै निधि पावहु इन बिधि ततु बिलोई ॥ २ ॥ भरमु चुकावहु गुरमुखि लिव लावहु आतमु चीनहु भाई ॥
निकटि करि जाणहु सदा प्रभु हाजरु किसु सिउ करहु बुराई ॥ ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ मारगु मुकता सहजे मिले सुआमी ॥
धनु धनु से जन जिनी कलि महि हरि पाइआ जन नानक सद कुरबानी ॥ ४ ॥ २ ॥ रामकली महला ५ ॥ आवत हरख न
जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी ॥ सदा अनँदु गुरु पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिओगनी ॥ १ ॥ इह बिधि है मनु
जोगनी ॥ मोहु सोगु रोगु लोगु न बिआपै तह हरि हरि हरि रस भोगनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग पवित्रा मिरत पवित्रा पइआल
पवित्र अलोगनी ॥ आगिआकारी सदा सुखु भुँचै जत कत पेखउ हरि गुनी ॥ २ ॥ नह सिव सकती जलु नही पवना तह
अकारु नही मेदनी ॥ सतिगुर जोग का तहा निवासा जह अविगत नाथु अगम धनी ॥ ३ ॥ तनु मनु हरि का धनु सभु हरि
का हरि के गुण हउ किआ गनी ॥ कहु नानक हम तुम गुरि खोई है अँभै अँभु मिलोगनी ॥ ४ ॥ ३ ॥ रामकली महला ५ ॥
त्रै गुण रहत रहै निरारी साधिक सिध न जानै ॥ रतन कोठड़ी अँमित संपूरन सतिगुर कै खजानै ॥ १ ॥ अचरजु किछु कहणु
न जाई ॥ बसतु अगोचर भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोलु नाही कछु करणै जोगा किआ को कहै सुणावै ॥ कथन कहण कउ
सोझी नाही जो पेखै तिसु बणि आवै ॥ २ ॥ सोई जाणै करणै हारा कीता किआ बेचारा ॥ आपणी गति मिति आपे जाणै

हरि आपे पूर भँडारा ॥ ३ ॥ ऐसा रसु अँमितु मनि चाखिआ त्रिपति रहे आघाई ॥ कहु नानक मेरी आसा पूरी सतिगुर की
सरणाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ रामकली महला ५ ॥ अँगीकारु कीआ प्रभि आपनै बैरी सगले साथे ॥ जिनि बैरी है इहु जगु
लूटिआ ते बैरी लै बाधे ॥ १ ॥ सतिगुरु परमेसरु मेरा ॥ अनिक राज भोग रस माणी नाउ जपी भरवासा तेरा ॥ १ ॥
रहाउ ॥ चीति न आवसि दूजी बाता सिर ऊपरि रखवारा ॥ बेपरवाहु रहत है सुआमी इक नाम कै आधार ॥ २ ॥ पुरन
होइ मिलिओ सुखदाई ऊन न काई बाता ॥ ततु सारु परम पदु पाइआ छोडि न कतहू जाता ॥ ३ ॥ बरनि न साकउ
जैसा तू है साचे अलख अपारा ॥ अतुल अथाहु अडोल सुआमी नानक खसमु हमारा ॥ ४ ॥ ५ ॥ रामकली महला ५ ॥
तू दाना तू अबिचलु तूही तू जाति मेरी पाती ॥ तू अडोलु कदे डोलहि नाही ता हम कैसी ताती ॥ १ ॥ एकै एकै एक तूही
॥ एकै एकै तू राइआ ॥ तउ किरपा ते सुख पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू सागरु हम हँस तुमारे तुम महि माणक लाला ॥
तुम देवहु तिलु सँक न मानहु हम भुँचह सदा निहाला ॥ २ ॥ हम बारिक तुम पिता हमारे तुम मुखि देवहु खीरा ॥ हम
खेलह सभि लाड लडावह तुम सद गुणी गहीरा ॥ ३ ॥ तुम पूरन पूरि रहे सँपूरन हम भी सँगि अघाए ॥ मिलत मिलत
मिलत मिलि रहिआ नानक कहणु न जाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ रामकली महला ५ ॥ कर करि ताल परवावजु नैनहु माथै वजहि
खाबा ॥ करनहु मधु बासुरी बाजै जिहवा धुनि आगाजा ॥ निरति करे करि मनूआ नाचै आणे घूघर साजा ॥ १ ॥ राम
को निरतिकारी ॥ पेखै पेखनहारु दइआला जेता साजु सीगारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आखार मँडली धरणि सबाई ऊपरि
गगनु चँदोआ ॥ पवनु विचोला करत इकेला जल ते ओपति होआ ॥ पँच ततु करि पुतरा कीना किरत मिलावा होआ ॥
२ ॥ चँदु सूरजु दुइ जरे चरागा चहु कुँट भीतरि राखे ॥ दस पातउ पँच सँगीता एकै भीतरि साथे ॥ भिँन भिँन होइ भाव
दिखावहि सभहु निरारी भाखे ॥ ३ ॥ घरि गरि निरति होवै दिनु राती घटि घटि वाजै तूरा ॥ एकि नचावहि एकि

भवावहिं इक आइ जाइ होइ धूरा ॥ कहु नानक सो बहुरि न नाचै जिसु गुरु भेटै पूरा ॥ ४ ॥ ७ ॥ रामकली महला ५ ॥
 ओअंकारि एक धुनि एकै एकै रागु अलापै ॥ एका देसी एकु दिखावै एको रहिआ बिआपै ॥ एका सुरति एका ही सेवा एको
 गुर ते जापै ॥ १ ॥ भलो भलोरे कीरतनीआ ॥ राम रमा रमा गुन गाउ ॥ छोडि माइआ के धंध सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 पंच बजित्र करे संतोखा सात सुरा लै चालै ॥ बाजा माणु ताणु तजि ताना पाउ न बीगा घालै ॥ फेरी फेरु न होवै कबही
 एकु सबदु बंधि पालै ॥ २ ॥ नारदी नरहर जाणि हदूरे ॥ घूंघर खड़कु तिआगि विसूरे ॥ सहज अनंद दिखावै भावै ॥ एहु
 निरतिकारी जनमि न आवै ॥ ३ ॥ जे को अपने ठाकुर भावै ॥ कोटि मधि एहु कीरतनु गावै ॥ साधसंगति की जावउ टेक
 ॥ कहु नानक तिसु कीरतनु एक ॥ ४ ॥ ८ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥ कोई सेवै गुसईआ
 कोई अलाहि ॥ १ ॥ कारण करण करीम ॥ किरपा धारि रहीम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ॥ कोई
 करै पूजा कोई सिरु निवाइ ॥ २ ॥ कोई पडै बेद कोई कतेब ॥ कोई ओढै नील कोई सुपेद ॥ ३ ॥ कोई कहै तुरकु कोई
 कहै हिंदू ॥ कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू ॥ ४ ॥ कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥ प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥
 ५ ॥ ९ ॥ रामकली महला ५ ॥ पवनै महि पवनु समाइआ ॥ जोती महि जोति रलि जाइआ ॥ माटी माटी होई एक ॥
 शेवनहारे की कवन टेक ॥ १ ॥ कउनु मूआरे कउनु मूआ ॥ ब्रहम गिआनी मिलि करहु बीचारा इहु तउ चलतु भइआ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ अगली किछु खबरि न पाई ॥ शेवनहारु भि ऊठि सिधाई ॥ भरम मोह के बांधे बंध ॥ सुपनु भइआ भखलाए
 अंध ॥ २ ॥ इहु तउ रचनु रचिआ करतारि ॥ आवत जावत हुकमि अपारि ॥ नह को मूआ न मरणै जोगु ॥ नह बिनसै
 अबिनासी होगु ॥ ३ ॥ जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ॥ जानणहारे कउ बलि जाउ ॥ कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥
 ना कोई मरै न आवै जाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ रामकली महला ५ ॥ जपि गोबिंदु गोपाल लालु ॥ राम नाम

सिमरि तू जीवहि फिरि न खाई महा कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भ्रमि आइओ ॥ बडै भागि साधसँगु पाइओ ॥ १ ॥ बिनु गुर पूरे नाही उधारु ॥ बाबा नानक आखै एहु बीचारु ॥ २ ॥ ११ ॥

रागु रामकली महला ७ घरु २ १८ शितिगुर प्रसादि ॥

चारि पुकारहि ना तू मानहि ॥ खटु भी एका बात वखानहि ॥ दस असटी मिलि एको कहिआ ॥ ता भी जोगी भेदु न लहिआ ॥ १ ॥ किंकुरी अनूप वाजै ॥ जोगीआ मतवारो रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे वसिआ सत का खेड़ा ॥ त्रितीरे महि किछु भइआ दुतेड़ा ॥ दुतीआ अरधो अरधि समाइआ ॥ एकु रहिआ ता एकु दिखाइआ ॥ २ ॥ एकै सूति परोए मणीए ॥ गाठी भिनि भिनि भिनि भिनि तणीए ॥ फिरती माला बहु बिधि भाइ ॥ खिँचिआ सूतु त आई थाइ ॥ ३ ॥ चहु महि एकै मटु है कीआ ॥ तह बिखड़े थान अनिक खिड़कीआ ॥ खोजत खोजत दुआरे आइआ ॥ ता नानक जोगी महलु घरु पाइआ ॥ ४ ॥ इउ किंकुरी आनूप वाजै ॥ सुणि जोगी कै मनि मीठी लागै ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२ ॥ रामकली महला ७ ॥ तागा करि कै लाई थिगली ॥ लउ नाड़ी सूआ है असती ॥ अँभै का करि डंडा धरिआ ॥ किआ तू जोगी गरबहि परिआ ॥ १ ॥ जपि नाथु दिनु रैनाई ॥ तेरी खिँथा दो दिहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गहरी बिभूत लाइ बैठा ताड़ी ॥ मेरु तेरी मुँद्रा धारी ॥ मागहि टूका त्रिपति न पावै ॥ नाथु छोडि जाचहि लाज न आवै ॥ २ ॥ चलचित जोगी आसणु तेरा ॥ सिँडी वाजै नित उदासेरा ॥ गुर गोरख की तै बूझ न पाई ॥ फिरि फिरि जोगी आवै जाई ॥ ३ ॥ जिस नो होआ नाथु क्रिपाला ॥ रहरासि हमारी गुर गोपाला ॥ नामै खिँथा नामै बसतरु ॥ जन नानक जोगी होआ असथिरु ॥ ४ ॥ इउ जपिआ नाथु दिनु रैनाई ॥ हुणि पाइआ गुरु गोसाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ २ ॥ १३ ॥ रामकली महला ७ ॥ करन करावन सोई ॥ आन न दीसै कोई ॥ ठाकुरु मेरा सुघडु सुजाना ॥ गुरमुखि मिलिआ रँगु माना ॥ १ ॥ ऐसो रे हरि रसु मीठा ॥ गुरमुखि किनै विरलै डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल

जोति अँमितु हरि नाम ॥ पीवत अमर भए निहकाम ॥ तनु मनु सीतलु अगनि निवारी ॥ अनद रूप प्रगटे संसारी ॥ २
॥ किआ देवउ जा सभु किछु तेरा ॥ सद बलिहारि जाउ लख बेरा ॥ तनु मनु जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ गुर किरपा ते नीचु
निवाजिआ ॥ ३ ॥ खोलि किवारा महलि बुलाइआ ॥ जैसा सा तैसा दिखलाइआ ॥ कहु नानक सभु पड़दा तूटा ॥ हउ
तेरा तू मै मनि वूठा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥ रामकली महला ५ ॥ सेवकु लाइओ अपुनी सेव ॥ अँमितु नामु दीओ मुखि देव
॥ सगली चिंता आपि निवारी ॥ तिसु गुर कउ हउ सद बलिहारी ॥ १ ॥ काज हमारे पूरे सतगुर ॥ बाजे अनहद तूरे
सतगुरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महिमा जा की गहिर गँभीर ॥ होइ निहालु देइ जिसु धीर ॥ जा के बँधन काटे राइ ॥ सो नरु
बहुरि न जोनी पाइ ॥ २ ॥ जा कै अंतरि प्रगटिओ आप ॥ ता कउ नाही दूख संताप ॥ लालु रतनु तिसु पालै परिआ ॥
सगल कुटंब ओहु जनु लै तरिआ ॥ ३ ॥ ना किछु भरमु न दुबिधा दूजा ॥ ॥ एको एकु निरँजन पूजा ॥ जत कत देखउ
आपि दइआल ॥ कहु नानक प्रभ मिले रसाल ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ रामकली महला ५ ॥ तन ते छुटकी अपनी धारी ॥
प्रभ की आगिआ लगी पिआरी ॥ जो किछु करै सु मनि मेरै मीठा ॥ ता इहु अचरजु नैनहु डीठा ॥ १ ॥ अब मोहि जानी रे
मेरी गई बलाइ ॥ बुझि गई तिसन निवारी ममता गुरि पूरै लीओ समझाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा राखिओ गुरि सरना
॥ गुरि पकराए हरि के चरना ॥ बीस बिसुए जा मन ठहराने ॥ गुर पाख्रहम एकै ही जानै ॥ २ ॥ जो जो कीनो हम तिस
के दास ॥ प्रभ मेरे को सगल निवास ॥ ना को दूतु नही बैराई ॥ गलि मिलि चाले एकै भाई ॥ ३ ॥ जा कउ गुरि हरि दीए
सूखा ॥ ता कउ बहुरि न लागहि दूखा ॥ आपे आपि सरब प्रतिपाल ॥ नानक रातउ रँगि गोपाल ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥
रामकली महला ५ ॥ मुख ते पड़ता टीका सहित ॥ हिरदै रामु नही पूरन रहत ॥ उपदेसु करे करि लोक द्विड़ावै ॥ अपना
कहिआ आपि न कमावै ॥ १ ॥ पंडित बेदु बीचारि पंडित ॥ मन का क्रोधु निवारि पंडित ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगै

राखिओ सालगिरामु ॥ मनु कीनो दह दिस बिस्वामु ॥ तिलकु चरावै पाई पाइ ॥ लोम पचारा अंधु कमाइ ॥ २ ॥ खटु
 करमा अरु आसणु धोती ॥ भागठि छिहि पड़ै नित पोथी ॥ माला फेरै मँगै बिभूत ॥ इह बिधि कोइ न तरिओ मीत ॥ ३ ॥
 सो पँडितु गुर सबदु कमाइ ॥ त्रै गुण की ओसु उतरी माइ ॥ चतुर बेद पूरन हरि नाइ ॥ नानक तिस की सरणी पाइ ॥ ४ ॥
 ६ ॥ १७ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि बिघन नहीं आवहि नेरि ॥ अनिक माइआ है ता की चेरि ॥ अनिक पाप ता के
 पानीहार ॥ जा कउ मइआ भई करतार ॥ १ ॥ जिसहि सहाई होइ भगवान ॥ अनिक जतन उआ कै सरँजाम ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ करता राखै कीता कउनु ॥ कीरी जीतो सगला भवनु ॥ बेअँत महिमा ता की केतक बरन ॥ बलि बलि जाईरे ता के
 चरन ॥ २ ॥ तिन ही कीआ जपु तपु धिआनु ॥ अनिक प्रकार कीआ तिनि दानु ॥ भगतु सोई कलि महि परवानु ॥ जा
 कउ ठाकुरि दीआ मानु ॥ ३ ॥ साधसँगि मिलि भए प्रगास ॥ सहज सूख आस निवास ॥ पूरै सतिगुरि दीआ बिसास ॥
 नानक होए दासनि दास ॥ ४ ॥ ७ ॥ १८ ॥ रामकली महला ५ ॥ दोसु न दीजै काहू लोग ॥ जो कमावनु सोई भोग ॥
 आपन करम आपे ही बँध ॥ आवनु जावनु माइआ धँध ॥ १ ॥ ऐसी जानी संत जनी ॥ परगासु भइआ पूरे गुर बचनी ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ तनु धनु कलतु मिथिआ बिसथार ॥ हैवर गेवर चालनहार ॥ राज रँग रूप सभि कूर ॥ नाम बिना होइ
 जासी धूर ॥ २ ॥ भरमि भूले बादि अहँकारी ॥ सँगि नाही रे सगल पसारी ॥ सोग हरख महि देह बिरधानी ॥ साकत इव
 ही करत बिहानी ॥ ३ ॥ हरि का नामु अँमितु कलि माहि ॥ एहु निधाना साधू पाहि ॥ नानक गुरु गोविदु जिस तूठा ॥
 घटि घटि रमईआ तिन ही डीठा ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥ रामकली महला ५ ॥ पँच सबद तह पूरन नाद ॥ अनहद बाजे
 अचरज बिसमाद ॥ केल करहि संत हरि लोग ॥ पारब्रहम पूरन निरजोग ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद भवन ॥ साधसँगि
 बैसि गुण गावहि तह रोग सोग नहीं जनम मरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊहा सिमरहि केवल नामु ॥ बिरले पावहि ओहु

बिस्राम ॥ भोजनु भाउ कीरतन आधारु ॥ निहचल आसनु बेसुमारु ॥ २ ॥ डिगि न डोलै कतहू न धावै ॥ गुर परसादि
 को इहु महलु पावै ॥ भ्रम भै मोह न माइआ जाल ॥ सुँन समाधि प्रभू किरपाल ॥ ३ ॥ ता का अँतु न पारावारु ॥ आपे
 गुपतु आपे पासारु ॥ जा कै अँतरि हरि हरि सुआदु ॥ कहनु न जाई नानक बिसमादु ॥ ४ ॥ ९ ॥ २० ॥ रामकली महला
 ५ ॥ भेटत सँगि पारब्रह्म चिति आइआ ॥ संगति करत सँतोखु मनि पाइआ ॥ सँतह चरन माथा मेरो पउत ॥ अनिक बार
 सँतह डँडउत ॥ १ ॥ इहु मनु सँतन कै बलिहारी ॥ जा की ओट गही सुखु पाइआ राखे किरपा धारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँतह
 चरण धोइ धोइ पीवा ॥ सँतह दरसु पेखि पेखि जीवा ॥ सँतह की मेरै मनि आस ॥ सँत हमारी निरमल रासि ॥ २ ॥ सँत
 हमारा राखिआ पड़दा ॥ सँत प्रसादि मोहि कबहू न कड़दा ॥ सँतह सँगु दीआ किरपाल ॥ सँत सहाई भए दइआल ॥ ३ ॥
 सुरति मटि बुधि परगासु ॥ गहिर गँभीर अपार गुणतासु ॥ जीअ जँत सगले प्रतिपाल ॥ नानक सँतह देखि निहाल ॥ ४
 ॥ १० ॥ २१ ॥ रामकली महला ५ ॥ तेरै काजि न छिहु राजु मालु ॥ तेरै काजि न बिखै जँजालु ॥ इसट मीत जाणु सभ
 छलै ॥ हरि हरि नामु सँगि तेरै चलै ॥ १ ॥ राम नाम गुण गाइ ले मीता हरि सिमरत तेरी लाज रहै ॥ हरि सिमरत जमु कछु
 न कहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु हरि सगल निररथ काम ॥ सुइना रुपा माटी दाम ॥ गुर का सबदु जापि मन सुखा ॥ ईहा
 ऊहा तेरो ऊजल मुखा ॥ २ ॥ करि करि थाके वडे वडेरे ॥ किनही न कीए काज माइआ पूरे ॥ हरि हरि नामु जपै जनु कोइ
 ॥ ता की आसा पूरन होइ ॥ ३ ॥ हरि भगतन को नामु अधारु ॥ सँती जीता जनमु अपारु ॥ हरि सँतु करे सोई परवाणु
 ॥ नानक दासु ता कै कुरबाणु ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२ ॥ रामकली महला ५ ॥ सिँचहि दरबु देहि दुखु लोग ॥ तेरै काजि न
 अवरा जोग ॥ करि अहँकारु होइ वरतहि अँध ॥ जम की जेवड़ी तू आगै बँध ॥ १ ॥ छाडि विडाणी ताति मूडे ॥ ईहा
 बसना राति मूडे ॥ माइआ के माते तै उठि चलना ॥ राचि रहिओ तू सँगि सुपना ॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा बारिकु अँध ॥

भरि जोबनि लागा दुर्गंध ॥ त्रितीअ बिबसथा सिंचे माइ ॥ बिरधि बइआ छोडि चलिओ पछुताइ ॥ २ ॥ चिरँकाल पाई द्रुलभ
 देह ॥ नाम बिहूणी होई खेह ॥ पसू परेत मुगध ते बुरी ॥ तिसहि न बूझै जिनि एह सिरी ॥ ३ ॥ सुणि करतार गोविंद गोपाल
 ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ तुमहि छडावहु छुटकहि बंध ॥ बखसि मिलावहु नानक जग अंध ॥ ४ ॥ १२ ॥ २३ ॥
 रामकली महला ५ ॥ करि संजोगु बनाई काछि ॥ तिसु सँगि रहिओ इआना राचि ॥ प्रतिपारै नित सारि समारै ॥ अंत की बार
 ऊठि सिधारै ॥ १ ॥ नाम बिना सभ झूठु परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथ नाइ न उतरसि मैलु ॥ कर्म धरम सभि हउमै फैलु ॥
 लोक पचारै गति नही होइ ॥ नाम बिहूणे चलसहि रोइ ॥ २ ॥ बिनु हरि नाम न टूटसि पटल ॥ सोधे सासत्र सिमिति सगल
 ॥ सो नामु जपै जिंसु आपि जपाए ॥ सगल फला से सुखि समाए ॥ ३ ॥ राखनहारे राखहु आपि ॥ सगल सुखा प्रभ तुमरै
 हाथि ॥ जितु लावहि तितु लागह सुआमी ॥ नानक साहिबु अंतरजामी ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥ रामकली महला ५ ॥ जो
 किछु करै सोई सुखु जाना ॥ मनु असमझु साधसँगि पतीआना ॥ डोलन ते चूका ठहराइआ ॥ सति माहि ले सति समाइआ ॥
 १ ॥ दूखु गइआ सभु रोगु गइआ ॥ प्रभ की आगिआ मन महि मानी महा पुरख का संगु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल पवित्र
 सरब निरमला ॥ जो वरताए सोई भला ॥ जह राखै सोई मुकति थानु ॥ जो जपाए सोई नामु ॥ २ ॥ अठसठि तीरथ जह
 साध पग धरहि ॥ तह बैकुंठु जह नाम उचरहि ॥ सरब अनंद जब दरसनु पाईए ॥ राम गुणा नित नित हरि गाईए ॥ ३ ॥
 आपे घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ दइआल पुरख परगट परताप ॥ कपट खुलाने भ्रम नाठे दूरे ॥ नानक कउ गुर भेटे पूरे ॥
 ४ ॥ १४ ॥ २५ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि जाप ताप बिस्वाम ॥ रिधि बुधि सिधि सुर गिआन ॥ अनिक रूप रँग भोग रसै
 ॥ गुरमुखि नामु निमख रिदै वसै ॥ १ ॥ हरि के नाम की वडिआई ॥ कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूरबीर धीरज

मति पूरा ॥ सहज समाधि धुनि गहिर गँभीरा ॥ सदा मुक्तु ता के पूरे काम ॥ जा कै रिदै वसै हरि नाम ॥ २ ॥ सगल
सूख आनँद अरोग ॥ समदरसी पूरन निरजोग ॥ आइ न जाइ डोलै कत नाही ॥ जा कै नामु बसै मन माही ॥ ३ ॥ दीन
दइआल गोपाल गोविंद ॥ गुरुमुखि जपीरे उतरै चिंद ॥ नानक कउ गुरि दीआ नामु संतन की टहल संत का कामु ॥ ४ ॥
१५ ॥ २६ ॥ रामकली महला ५ ॥ बीज मंत्रु हरि कीरतनु गाउ ॥ आगै मिली निथावै थाउ ॥ गुरु पूरे की चरणी लागु ॥
जनम जनम का सोइआ जागु ॥ १ ॥ हरि हरि जापु जपला ॥ गुरु किरपा ते हिरदै वासै भउजलु पारि परला ॥ १ ॥
रहाउ ॥ नामु निधानु धिआइ मन अटल ॥ ता छूटहि माइआ के पटल ॥ गुरु का सबदु अम्रित रस पीउ ॥ ता तेरा होइ
निरमल जीउ ॥ २ ॥ सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ बिनु हरि भगति नही छुटकारा ॥ सो हरि भजनु साध कै सँगि ॥
मनु तनु रापै हरि कै रँगि ॥ ३ ॥ छोडि सिआणप बहु चतुराई ॥ मन बिनु हरि नावै जाइ न काई ॥ दइआ धारी गोविंद
गोसाई ॥ हरि हरि नानक टेक टिकाई ॥ ४ ॥ १६ ॥ २७ ॥ रामकली महला ५ ॥ संत कै सँगि राम रँग केल ॥ आगै
जम सिउ होइ न मेल ॥ अहँबुधि का भइआ बिनास ॥ दुरमति होई सगली नास ॥ १ ॥ राम नाम गुण गाइ पँडित ॥
करम काड अहँकारु न काजै कुसल सेती घरि जाहि पँडित ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का जसु निधि लीआ लाभ ॥ पूरन भए
मनोरथ साभ ॥ दुखु नाठा सुखु घर महि आइआ ॥ संत प्रसादि कमलु बिगसाइआ ॥ २ ॥ नाम रतनु जिनि पाइआ दानु
॥ तिसु जन होए सगल निधान ॥ संतोखु आइआ मनि पूरा पाइ ॥ फिरि फिरि मागन काहे जाइ ॥ ३ ॥ हरि की कथा
सुनत पवित ॥ जिहवा बकत पाई गति मति ॥ सो परवाणु जिसु रिदै वसाई ॥ नानक ते जन ऊतम भाई ॥ ४ ॥ १७ ॥
२८ ॥ रामकली महला ५ ॥ गहु करि पकरी न आई हाथि ॥ प्रीति करी चाली नही साथि ॥ कहु नानक जउ तिआगि दर्ई
॥ तब ओह चरणी आइ पई ॥ १ ॥ सुणि संतहु निरमल बीचार ॥ राम नाम बिनु गति नही काई गुरु पूरा भेटत उधार ॥

१ ॥ रहाउ ॥ जब उस कउ कोई देवै मानु ॥ तब आपस ऊपरि रखै गुमानु ॥ जब उस कउ कोई मनि परहरै ॥ तब उह
 सेवकि सेवा करै ॥ २ ॥ मुखि बेरावै अँति ठगावै ॥ इकतु ठउर ओह कही न समावै ॥ उनि मोहे बहुते ब्रहमँड ॥ राम जनी
 कीनी खँड खँड ॥ ३ ॥ जो मागै सो भूखा रहै ॥ इसु सँगि राचै सु कछू न लहै ॥ इसहि तिआगि सतसँगति करै ॥
 वडभागी नानक ओहु तरै ॥ ४ ॥ १८ ॥ २९ ॥ रामकली महला ५ ॥ आतमरामु सरब महि पेखु ॥ पूरन पूरि रहिआ प्रभ
 एकु ॥ रतनु अमोलु रिदे महि जानु ॥ अपनी वसतु तू आपि पछानु ॥ १ ॥ पी अँमितु संतन परसादि ॥ वडे भाग होवहि
 तउ पाईरे बिनु जिहवा किआ जाणै सुआदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अठ दस बेद सुने कह डोरा ॥ कोटि प्रगास न दिसै अंधेरा ॥
 पसू परीति घास सँगि रचै ॥ जिसु नही बुझावै सो कितु बिधि बुझै ॥ २ ॥ जानणहारु रहिआ प्रभु जानि ॥ ओति पोति
 भगतन सँगानि ॥ बिगसि बिगसि अपुना प्रभु गावहि ॥ नानक तिन जम नेडि न आवहि ॥ ३ ॥ १९ ॥ ३० ॥
 रामकली महला ५ ॥ दीनो नामु कीओ पवितु ॥ हरि धनु रासि निरास इह बितु ॥ काटी बाँधि हरि सेवा लाए ॥ हरि हरि
 भगति राम गुण गाए ॥ १ ॥ बाजे अनहद बाजा ॥ रसकि रसकि गुण गावहि हरि जन अपनै गुरदेवि निवाजा ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ आइ बनिओ पूरबला भागु ॥ जनम जनम का सोइआ जागु ॥ गई गिलानि साध कै सँगि ॥ मनु तनु रातो हरि कै
 रँगे ॥ २ ॥ राखे राखनहार दइआल ॥ ना किछु सेवा ना किछु घाल ॥ करि किरपा प्रभि कीनी दइआ ॥ बूडत दुख महि
 काढि लइआ ॥ ३ ॥ सुणि सुणि उपजिओ मन महि चाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ गावत गावत परम गति पाई
 ॥ गुर प्रसादि नानक लिव लाई ॥ ४ ॥ २० ॥ ३१ ॥ रामकली महला ५ ॥ कउडी बदलै तिआगै रतनु ॥ छोडि जाइ
 ताहू का जतनु ॥ सो सँचै जो होछी बात ॥ माइआ मोहिआ टेढउ जात ॥ १ ॥ अभागे तै लाज नाही ॥ सुख सागर पूरन
 परमेसरु हरि न चेतिओ मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँमितु कउरा बिखिआ मीठी ॥ साकत की बिधि नैनहु डीठी ॥ कूडि
 कपटि अहँकारि

रीझाना ॥ नामु सुनत जनु बिछूअ डमाना ॥ २ ॥ माइआ कारणि सद ही झूरै ॥ मनि मुखि कबहि न उसतति करै ॥
 निरभउ निरँकार दातारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ ३ ॥ सभ साहा सिरि साचा साहु ॥ वेमुहताजु पूरा पातिसाहु
 ॥ मोह मगन लपटिओ भ्रम गिरह ॥ नानक तरीऐ तेरी मिहर ॥ ४ ॥ २१ ॥ ३२ ॥ रामकली महला ५ ॥ रैणि दिनसु
 जपउ हरि नाउ ॥ आगै दरगह पावउ थाउ ॥ सदा अनँदु न होवी सोगु ॥ कबहु न बिआपै हउमै रोगु ॥ १ ॥ खोजहु संतहु
 हरि ब्रहम गिआनी ॥ बिसमन बिसम भए बिसमादा परम गति पावहि हरि सिमरि परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गनि मिनि
 देखहु सगल बीचारि ॥ नाम बिना को सकै न तारि ॥ सगल उपाव न चालहि सँगि ॥ भवजलु तरीऐ प्रभ कै रँगि ॥ २ ॥
 देही धोइ न उतरै मैलु ॥ हउमै बिआपै दुबिधा फैलु ॥ हरि हरि अउखधु जो जनु खाइ ॥ ता का रोगु सगल मिटि जाइ ॥ ३
 ॥ करि किरपा पारब्रहम दइआल ॥ मन ते कबहु न बिसरु गोपाल ॥ तेरे दास की होवा धूरि ॥ नानक की प्रभ सरधा पूरे
 ॥ ४ ॥ २२ ॥ ३३ ॥ रामकली महला ५ ॥ तेरी सरणि पूरे गुरदेव ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ तू समरथु पूरन
 पारब्रहमु ॥ सो धिआए पूरा जिसु करमु ॥ १ ॥ तरण तारण प्रभ तेरो नाउ ॥ एका सरणि गही मन मेरै तुधु बिनु दूजा नाही
 ठाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपि जपि जीवा तेरा नाउ ॥ आगै दरगह पावउ ठाउ ॥ दूखु अँधेरा मन ते जाइ ॥ दुरमति बिनसै
 राचै हरि नाइ ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ गुर पूरे की निरमल रीति ॥ भउ भागा निरभउ मनि बसै ॥ अम्रित
 नामु रसना नित जपै ॥ ३ ॥ कोटि जनम के काटे फाहे ॥ पाइआ लाभु सचा धनु लाहे ॥ तोटि न आवै अखुट भँडार ॥
 नानक भगत सोहहि हरि दुआर ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३४ ॥ रामकली महला ५ ॥ रतन जवेहर नाम ॥ सतु संतोखु गिआन
 ॥ सूख सहज दइआ का पोता ॥ हरि भगता हवालै होता ॥ १ ॥ मेरे राम को भँडारु ॥ खात खरचि कछु तोटि न आवै
 अँत नही हरि पारावारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीरतनु निरमोल हीरा ॥ आनँद गुणी गहीरा ॥ अनहद बाणी पूँजी ॥ संतन

हथि राखी कूँजी ॥ २ ॥ सुँन समाधि गुफा तह आसनु ॥ केवल ब्रहम पूरन तह बासनु ॥ भगत सँगि प्रभु गोसटि करत ॥
 तह हरख न सोग न जनम न मरत ॥ ३ ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाइआ ॥ साधसँगि तिनि हरि धनु पाइआ ॥
 दइआल पुरख नानक अरदासि ॥ हरि मेरी वरतणि हरि मेरी रासि ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३५ ॥ रामकली महला ५ ॥ महिमा न
 जानहि बेद ॥ ब्रहमे नही जानहि भेद ॥ अवतार न जानहि अँतु ॥ परमेसरु पारब्रहम बेअँतु ॥ १ ॥ अपनी गति आपि
 जानै ॥ सुणि सुणि अवर वखानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरा नही जानहि भेव ॥ खोजत हारे देव ॥ देवीआ नही जानै मरम
 ॥ सभ ऊपरि अलख पारब्रहम ॥ २ ॥ अपनै रँगि करता केल ॥ आपि बिछोरै आपे मेल ॥ इकि भरमे इकि भगती लार ॥
 अपना कीआ आपि जणार ॥ ३ ॥ सँतन की सुणि साची साखी ॥ सो बोलहि जो पेखहि आखी ॥ नही लेपु तिसु पुँनि न
 पापि ॥ नानक का प्रभु आपे आपि ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३६ ॥ रामकली महला ५ ॥ किछहू काजु न कीओ जानि ॥ सुरति
 मति नाही किछु गिआनि ॥ जाप ताप सील नही धरम ॥ किछु न जानउ कैसा करम ॥ १ ॥ ठाकुर प्रीतम प्रभ मेरे ॥ तुझ
 बिनु दूजा अवरु न कोई भूलह चूकह प्रभ तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रिधि न बुधि न सिधि प्रगासु ॥ बिखै बिआपि के गाव महि
 बासु ॥ करणहार मेरे प्रभ एक ॥ नाम तेरे की मन महि टेक ॥ २ ॥ सुणि सुणि जीवउ मनि इह बिश्रामु ॥ पाप खँडन प्रभ
 तेरो नामु ॥ तू अगनतु जीअ का दाता ॥ जिसहि जणावहि तिनि तू जाता ॥ ३ ॥ जो उपाइओ तिसु तेरी आस ॥ सगल
 अराधहि प्रभ गुणतास ॥ नानक दास तेरै कुरबाणु ॥ बेअँत साहिबु मेरा मिहरवाणु ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३७ ॥ रामकली महला
 ५ ॥ राखनहार दइआल ॥ कोटि भव खँडे निमख खिआल ॥ सगल अराधहि जँत ॥ मिलीरे प्रभ गुर मिलि मँत ॥ १ ॥
 जीअन को दाता मेरा प्रभु ॥ पूरन परमेसरु सुआमी घटि घटि राता मेरा प्रभु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता की गही मन ओट ॥ बँधन
 ते होई छोट ॥ हिरदै जपि परमानँद ॥ मन माहि भए अनँद ॥ २ ॥ तारण तरण हरि सरण ॥ जीवन रूप

हरि चरण ॥ सँतन के प्राण अधार ॥ ऊचे ते ऊच अपार ॥ ३ ॥ सुमति सारु जित हरि सिमरीजै ॥ करि किरपा जिसु
 आपे दीजै ॥ सूख सहज आनँद हरि नाउ ॥ नानक जपिआ गुर मिलि नाउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३८ ॥ रामकली महला ५ ॥
 सगल सिआनप छाडि ॥ करि सेवा सेवक साजि ॥ अपना आपु सगल मिटाइ ॥ मन चिँदे सेई फल पाइ ॥ १ ॥ होहु
 सावधान अपुने गुर सिउ ॥ आसा मनसा पूरन होवै पावहि सगल निधान गुर सिउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा नही जानै कोइ
 ॥ सतगुरु निरँजनु सोइ ॥ मानुख का करि रूपु न जानु ॥ मिली निमाने मानु ॥ २ ॥ गुर की हरि टेक टिकाइ ॥ अवर
 आसा सभ लाहि ॥ हरि का नामु मागु निधानु ॥ ता दरगह पावहि मानु ॥ ३ ॥ गुर का बचनु जपि मँतु ॥ एहा भगति
 सार ततु ॥ सतिगुर भए दइआल ॥ नानक दास निहाल ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३९ ॥ रामकली महला ५ ॥ होवै सोई भल मानु
 ॥ आपना तजि अभिमानु ॥ दिनु रैनि सदा गुन गाउ ॥ पूरन एही सुआउ ॥ १ ॥ आनँद करि सँत हरि जपि ॥ छाडि
 सिआनप बहु चतुराई गुर का जपि मँतु निरमल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक की करि आस भीतरि ॥ निरमल जपि नामु हरि हरि
 ॥ गुर के चरन नमसकारि ॥ भवजलु उतरहि पारि ॥ २ ॥ देवनहार दातार ॥ अँतु न पारावार ॥ जा कै घरि सरब
 निधान ॥ राखनहार निदान ॥ ३ ॥ नानक पाइआ एहु निधान ॥ हरे हरि निरमल नाम ॥ जो जपै तिस की गति होइ ॥
 नानक करमि परापति होइ ॥ ४ ॥ २९ ॥ ४० ॥ रामकली महला ५ ॥ दुलभ देह सवारि ॥ जाहि न दरगह हारि ॥
 हलति पलति तुधु होइ वडिआई ॥ अँत की बेला लओ छडाई ॥ १ ॥ राम के गुन गाउ ॥ हलतु पलतु होहि दोवै सुहेले
 अचरज पुरखु धिआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठत बैठत हरि जापु ॥ बिनसै सगल सँतापु ॥ बैरी सभि होवहि मीत ॥
 निरमलु तेरा होवै चीत ॥ २ ॥ सभ ते ऊतम इहु करमु ॥ सगल धरम महि खेसट धरमु ॥ हरि सिमरनि तेरा होइ उधारु ॥
 जनम जनम का उतरै भारु ॥ ३ ॥ पूरन तेरी होवै आस ॥ जम की कटीरे तेरी फास ॥ गुर का उपदेसु सुनीजै ॥ नानक

सुखि सहजि समीजै ॥ ४ ॥ ३० ॥ ४१ ॥ रामकली महला ५ ॥ जिस की तिस की करि मानु ॥ आपन लाहि गुमानु ॥
 जिस का तू तिस का सभु कोइ ॥ तिसहि अराधि सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ काहे भ्रमि भ्रमहि बिगाने ॥ नाम बिना किछु कामि न
 आवै मेश मेश करि बहुतु पछुताने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो करै सोई मानि लेहु ॥ बिनु माने रलि होवहि खेह ॥ तिस का भाना
 लागै मीठा ॥ गुर प्रसादि विरले मनि वूठा ॥ २ ॥ वेपरवाहु अगोचरु आपि ॥ आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ जिसु चिति
 आए बिनसहि दुखा ॥ हलति पलति तेरा ऊजल मुखा ॥ ३ ॥ कउन कउन उधरे गुन गाइ ॥ गनणु न जाई कीम न पाइ ॥
 बूडत लोह साधसँगि तरै ॥ नानक जिसहि परापति करै ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ४२ ॥ रामकली महला ५ ॥ मन माहि जापि भगवँतु
 ॥ गुरि पूरै इहु दिनो मँतु ॥ मिटे सगल भै त्रास ॥ पूरन होई आस ॥ १ ॥ सफल सेवा गुरदेवा ॥ कीमति किछु कहणु न जाई
 साचे सचु अलख अभेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करन करावन आपि ॥ तिस कउ सदा मन जापि ॥ तिस की सेवा करि नीत ॥
 सचु सहजु सुखु पावहि मीत ॥ २ ॥ साहिबु मेश अति भारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥
 जन का शखा सोई ॥ ३ ॥ करि किरपा अरदासि सुणीजै ॥ अपने सेवक कउ दरसनु दीजै ॥ नानक जापी जपु जापु ॥ सभ
 ते ऊच जा का परतापु ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ४३ ॥ रामकली महला ५ ॥ बिरथा भरवासा लोक ॥ ठाकुर प्रभ तेरी टेक ॥ अवर
 छूटी सभ आस ॥ अचिंत ठाकुर भेटे गुणतास ॥ १ ॥ एको नामु धिआइ मन मेरे ॥ कारजु तेरा होवै पूरा हरि हरि हरि गुण
 गाइ मन मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही कारन करन ॥ चरन कमल हरि सरन ॥ मनि तनि हरि ओही धिआइआ ॥ आनँद हरि
 रूप दिआखइआ ॥ २ ॥ तिस ही की ओट सदीव ॥ जा के कीने है जीव ॥ सिमरत हरि करत निधान ॥ राखनहार निदान
 ॥ ३ ॥ सरब की रेण होवीजै ॥ आपु मिटाइ मिलीजै ॥ अनदिनु धिआईऐ नामु ॥ सफल नानक इहु कामु ॥ ४ ॥ ३३ ॥
 ४४ ॥ रामकली महला ५ ॥ कारन करन करीम ॥ सरब प्रतिपाल रहीम ॥ अलह अलख अपार ॥ खुदि

खुदाइ वड बेसुमार ॥ १ ॥ ओं नमो भगवंत गुसाई ॥ खालकु रवि रहिआ सरब ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगँनाथ
 जगजीवन माधो ॥ भउ भँजन रिद माहि अराधो ॥ रिखीकेस गोपाल गोविंद ॥ पूरन सरबत्र मुकँद ॥ २ ॥ मिहरवान
 मउला तूही एक ॥ पीर पैकांबर सेख ॥ दिला का मालकु करे हाकु ॥ कुरान कतेब ते पाकु ॥ ३ ॥ नाराइण नरहर दइआल
 ॥ रमत राम घट घट आधार ॥ बासुदेव बसत सभ ठाइ ॥ लीला किछु लखी न जाइ ॥ ४ ॥ मिहर दइआ करि करनैहार
 ॥ भगति बँदगी देहि सिरजणहार ॥ कहु नानक गुरि खोए भरम ॥ एको अलहु पारब्रहम ॥ ५ ॥ ३४ ॥ ४५ ॥ रामकली
 महला ५ ॥ कोटि जनम के बिनसे पाप ॥ हरि हरि जपत नाही सँताप ॥ गुर के चरन कमल मनि वसे ॥ महा बिकार तन
 ते सभि नसे ॥ १ ॥ गोपाल को जसु गाउ प्राणी ॥ अकथ कथा साची प्रभ पूरन जोती जोति समाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 त्रिसना भूख सभ नासी ॥ सँत प्रसादि जपिआ अबिनासी ॥ रैनि दिनसु प्रभ सेव कमानी ॥ हरि मिलणै की एह नीसानी
 ॥ २ ॥ मिटे जँजाल होए प्रभ दइआल ॥ गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ परा पूरबला करमु बणि आइआ ॥ हरि के गुण
 नित रसना गाइआ ॥ ३ ॥ हरि के सँत सदा परवाणु ॥ सँत जना मसतकि नीसाणु ॥ दास की रेणु पाए जे कोइ ॥ नानक
 तिस की परम गति होइ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४६ ॥ रामकली महला ५ ॥ दरसन कउ जाईए कुरबानु ॥ चरन कमल हिरदै धरि
 धिआनु ॥ धूरि सँतन की मसतकि लाइ ॥ जनम जनम की दुर्मति मलु जाइ ॥ १ ॥ जिसु भेटत मिटै अभिमानु ॥
 पारब्रहमु सभु नदरी आवै करि किरपा पूरन भगवान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर की कीरति जपीए हरि नाउ ॥ गुर की भगति सदा
 गुण गाउ ॥ गुर की सुरति निकटि करि जानु ॥ गुर का सबदु सति करि मानु ॥ २ ॥ गुर बचनी समसरि सुख दूख ॥ कदे
 न बिआपे त्रिसना भूख ॥ मनि सँतोखु सबदि गुर राजे ॥ जपि गोबिंदु पड़दे सभि काजे ॥ ३ ॥ गुरु परमेसरु गुरु
 गोविंदु ॥ गुरु दाता दइआल बखसिंदु ॥ गुर चरनी जा का मनु लागा ॥ नानक दास तिसु पूरन भागा ॥ ४ ॥

३६ ॥ ४७ ॥ रामकली महला ५ ॥ किसु भरवासै बिचरहि भवन ॥ मूड़ मुगध तेरा सँगी कवन ॥ रामु सँगी तिसु गति नही
 जानहि ॥ पँच बटवारे से मीत करि मानहि ॥ १ ॥ सो घरु सेवि जितु उधरहि मीत ॥ गुण गोविंद रवीअहि दिनु राती
 साधसँगि करि मन की प्रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु बिहानो अहँकारि अरु वादि ॥ त्रिपति न आवै बिखिआ सादि ॥ भरमत
 भरमत महा दुखु पाइआ ॥ तरी न जाई दूतर माइआ ॥ २ ॥ कामि न आवै सु कार कमावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥
 राखन कउ दूसर नही कोइ ॥ तउ निसतरै जउ किरपा होइ ॥ ३ ॥ पतित पुनीत प्रभ तेरो नामु ॥ अपने दास कउ कीजै दानु
 ॥ करि किरपा प्रभ गति करि मेरी ॥ सरणि गही नानक प्रभ तेरी ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ४८ ॥ रामकली महला ५ ॥ इह लोके सुखु
 पाइआ ॥ नही भेटत धरमराइआ ॥ हरि दरगह सोभावँत ॥ फुनि गरभि नाही बसँत ॥ १ ॥ जानी सँत की मित्राई ॥ करि
 किरपा दीनो हरि नामा पूरबि सँजोगि मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँत की धूरि लागी मेरै माथे ॥ किलविख दुख सगले मेरे लाथे
 ॥ २ ॥ साध की सचु टहल कमानिं ॥ तब होए मन सुध परानी ॥ जन का सफल दरसु डीठा ॥ नामु प्रभू का घटि घटि वूठा
 ॥ ३ ॥ मिटाने सभि कलि कलेस ॥ जिस ते उपजे तिसु महि परवेस ॥ प्रगटे आनूप गोविंद ॥ प्रभ पूरे नानक बखसिंद ॥
 ४ ॥ ३८ ॥ ४९ ॥ रामकली महला ५ ॥ गऊ कउ चारे सारदूलु ॥ कउडी का लख हूआ मूलु ॥ बकरी कउ हसती प्रतिपाले
 ॥ अपना प्रभु नदरि निहाले ॥ १ ॥ क्रिपा निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ बरनि न साकउ बहु गुन तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीसत
 मासु न खाइ बिलाई ॥ महा कसाबि छुरी सटि पाई ॥ करणहार प्रभु हिरदै वूठा ॥ फाथी मछुली का जाला तूटा ॥ २ ॥ सूके
 कासट हरे चलूल ॥ ऊचै थलि फूले कमल अनूप ॥ अगनि निवारी सतिगुर देव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ ३ ॥
 अकिरतघणा का करे उधारु ॥ प्रभु मेरा है सदा दइआरु ॥ सँत जना का सदा सहार्इ ॥ चरन कमल नानक सरणाई ॥ ४ ॥

३९ ॥ ५० ॥ रामकली महला ५ ॥ पँच सिँघ राखे प्रभि मारि ॥ दस बिघिआड़ी लई निवारि ॥ तीनि आवरत जकी चूकी
 घेर ॥ साधसँगि चूके भै फेर ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि जीवा गोविंद ॥ करि किरपा राखिओ दासु अपना सदा सदा साचा
 बखसिँद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दाझि गए त्रिण पाप सुमेर ॥ जपि जपि नामु पूजे प्रभ पैर ॥ अनद रूप प्रगटिओ सभ थानि
 ॥ प्रेम भगति जोरी सुख मानि ॥ २ ॥ सागरु तरिओ बाछर खोज ॥ खेदु न पाइओ नह फुनि रोज ॥ सिँधु समाइओ
 घटुके माहि ॥ करणहार कउ किछु अचरजु नाहि ॥ ३ ॥ जउ छूटउ तउ जाइ पइआल ॥ जउ काढिओ तउ नदरि निहाल
 ॥ पाप पुँन हमरै वसि नाहि ॥ रसकि रसकि नानक गुण गाहि ॥ ४ ॥ ४० ॥ ५१ ॥ रामकली महला ५ ॥ ना तनु तेरा
 ना मनु तोहि ॥ माइआ मोहि बिआपिआ धोहि ॥ कुदम करै गाडर जिउ छेल ॥ अचिँतु जालु कालु चक्रु पेल ॥ १ ॥ हरि
 चरन कमल सरनाइ मना ॥ राम नामु जपि सँगि सहाई गुरमुखि पावहि साचु धना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊने काज न होवत पूरे
 ॥ कामि क्रोधि मदि सद ही डूरे ॥ करै बिकार जीअरे कै ताई ॥ गाफल सँगि न तसूआ जाई ॥ २ ॥ धरत धोह अनिक
 छल जानै ॥ कउडी कउडी कउ खाकु सिरि छानै ॥ जिनि दीआ तिसै न चेतै मूलि ॥ मिथिआ लोभु न उतरै सूनु ॥ ३ ॥
 पारब्रहमु जब भए दइआल ॥ इहु मनु होआ साध खाल ॥ हसत कमल लडि लीनो लाइ ॥ नानक साचे साचि समाइ ॥ ४
 ॥ ४१ ॥ ५२ ॥ रामकली महला ५ ॥ राजा राम की सरणाइ ॥ निरभउ भए गोविंद गुन गावत साधसँगि दुखु जाइ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ जा कै रामु बसै मन माही ॥ सो जनु दुतरु पेखत नाही ॥ सगले काज सवारे अपने ॥ हरि हरि नामु रसन
 नित जपने ॥ १ ॥ जिस कै मसतकि हाथु गुरु धरै ॥ सो दासु अदेसा काहे करै ॥ जनम मरण की चूकी काणि ॥ पूरे गुरु
 ऊपरि कुरबाण ॥ २ ॥ गुरु परमेसरु भेति निहाल ॥ सो दरसनु पाए जिसु होइ दइआलु ॥ पारब्रहमु जिसु किरपा करै ॥
 साधसँगि सो भवजलु तरै ॥ ३ ॥ अँम्रितु पीवहु साध पिआरे ॥ मुख ऊजल साचै दरवारे ॥ अनद करहु तजि

सगल बिकार ॥ नानक हरि जपि उतरहु पारि ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ५३ ॥ रामकली महला ५ ॥ ई.धन ते बैसंतरु भागै ॥
 माटी कउ जलु दह दिस तिआगै ॥ ऊपरि चरन तलै आकासु ॥ घट महि संधु कीओ परगासु ॥ १ ॥ ऐसा संधु हरि जीउ
 आपि ॥ निमख न बिसरै जीअ भगतन कै आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे माखनु पाछै दूधु ॥ मैलू
 कीनो साबुनु सूधु ॥ भै ते निरभउ डरता फिरै ॥ होंदी कउ अणहोंदी हिरै ॥ २ ॥ देही गुपत बिदेही दीसै ॥ सगले साजि
 करत जगदीसै ॥ ठगणहार अणठगदा ठागै ॥ बिनु वखर फिरि फिरि उठि लागै ॥ ३ ॥ संत सभा मिलि करहु बखिआण
 ॥ सिंमिति सासत बेद पुराण ॥ ब्रहम बीचारु बीचारे कोइ ॥ नानक ता की परम गति होइ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५४ ॥
 रामकली महला ५ ॥ जो तिसु भावै सो थीआ ॥ सदा सदा हरि की सरणाई प्रभ बिनु नाही आन बीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 पुतु कलत्रु लखिमी दीसै इन महि किछू न सँगि लीआ ॥ बिखै ठगउरी खाइ भुलाना माइआ मँदरु तिआगि गइआ ॥ १
 ॥ निँदा करि करि बहुतु विगूता गरभ जोनि महि किरति पइआ ॥ पुरब कमाणे छोडहि नाही जमदूति ग्रासिओ महा भइआ
 ॥ २ ॥ बोलै झूठु कमावै अवरा त्रिसन न बूझै बहुतु हइआ ॥ असाध रोगु उपजिआ संत दूखनि देह बिनासी महा खइआ
 ॥ ३ ॥ जिनिहि निवाजे तिन ही साजे आपे कीने संत जइआ ॥ नानक दास कँठि लाइ राखे करि किरपा पारब्रहम मइआ
 ॥ ४ ॥ ४४ ॥ ५५ ॥ रामकली महला ५ ॥ ऐसा पूरा गुरदेउ सह्राई ॥ जा का सिमरनु बिरथा न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 दरसनु पेखत होइ निहालु ॥ जा की धूरि काटै जम जालु ॥ चरन कमल बसे मेरे मन के ॥ कारज सवारे सगले तन के ॥
 १ ॥ जा कै मसतकि राखै हाथु ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथु ॥ पतित उधारणु क्रिपा निधानु ॥ सदा सदा जाईऐ कुरबानु
 ॥ २ ॥ निरमल मँतु देइ जिंसु दानु ॥ तजहि बिकार बिनसै अभिमानु ॥ एकु धिआईऐ साध कै सँगि ॥ पाप बिनासे नाम
 कै रँगि ॥ ३ ॥ गुर परमेसुर सगल निवास ॥ घटि घटि रवि रहिआ गुणतास ॥ दरसु देहि धारउ प्रभ आस ॥ नित

नानक चितवै सचु अरदासि ॥ ४ ॥ ४५ ॥ ५६ ॥

शगु रामकली महला ५ घरु २ दुपदे १ॐ शितिगुर प्रसादि ॥

गावहु राम के गुण गीत ॥ नामु जपत परम सुखु पाईरे आवा गउणु मिटै मेरे मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गावत होवत परगासु ॥ चरन कमल महि होइ निवासु ॥ १ ॥ संतसंगति महि होइ उधारु ॥ नानक भवजलु उतरसि पारि ॥ २ ॥ १ ॥ ५७ ॥
रामकली महला ५ ॥ गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा ॥ राम नामु जपि सदा सुहेले सगल बिनासे रोग कूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकु अराधहु साचा सोइ ॥ जा की सरनि सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ नीद सुहेली नाम की लागी भूख ॥ हरि सिमरत बिनसे सभ दूख ॥ २ ॥ सहजि अनंद करहु मेरे भाई ॥ गुरि पूरे सभ चिंत मिटाई ॥ ३ ॥ आठ पहर प्रभ का जपु जापि ॥ नानक राखा होआ आपि ॥ ४ ॥ २ ॥ ५८ ॥

शगु रामकली महला ५ पडताल घरु ३ १ॐ शितिगुर प्रसादि ॥

नरनरह नमसकारै ॥ जलन थलन बसुध गगन एक एककारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरन धरन पुन पुनह करन ॥ नह गिरह निरंहारै ॥ १ ॥ गंभीर धीर नाम हीर ऊच मूच अपारै ॥ करन केल गुण अमोल नानक बलिहारै ॥ २ ॥ १ ॥ ५९ ॥ रामकली महला ५ ॥ रूप रंग सुगंध भोग तिआगि चले माइआ छले कनिक कामिनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भंडार दरब अरब खरब पेखि लीला मनु सधारै ॥ नह सँगि गामनी ॥ १ ॥ सुत कलत्र भ्रात मीत उरझि परिओ भरमि मोहिओ इह बिरख छामनी ॥ चरन कमल सरन नानक सुखु संत भावनी ॥ २ ॥ २ ॥ ६० ॥

१ॐ शितिगुर प्रसादि ॥ शगु रामकली महला ५ तिपदे ॥

रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥ जा कै सिमरनि दुर्मति नासै पावहि पदु निरबाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बडभागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै ॥ जनम जनम के पाप

खोइ कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥ १ ॥ अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥ जां गति कउ जोगीसुर बाछत
 सो गति छिन महि पाई ॥ २ ॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥ नानक बिरदु राम का देखहु
 अभे दानु तिह दीना ॥ ३ ॥ १ ॥ रामकली महला ९ ॥ साधो कउन जुगति अब कीजै ॥ जा ते दुरमति सगल बिनासै
 राम भगति मनु भीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु माइआ महि उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥ कउनु नामु जगु जा कै
 सिमरै पावै पदु निरबाना ॥ १ ॥ भए दइआल क्रिपाल सँत जन तब इह बात बताई ॥ सरब धरम मानो तिह कीए जिह
 प्रभ कीरति गाई ॥ २ ॥ राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै ॥ जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो
 जनमु सवारै ॥ ३ ॥ २ ॥ रामकली महला ९ ॥ प्राणी नाराइन सुधि लेहि ॥ छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर बिथा
 जातु है देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तरनापो बिखिन सिओ खोइओ बालपनु अगिआना ॥ बिरधि भइओ अजहू नही समझै
 कउन कुमति उरझाना ॥ १ ॥ मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥ मुक्तु होत नर जा कै सिमरै
 निमख न ता कउ गाइओ ॥ २ ॥ माइआ को मदु कहा करतु है सँगि न काहू जाई ॥ नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है
 अँति सहाई ॥ ३ ॥ ३ ॥ ८१ ॥

रामकली महला १ असटपदीआ १८ सितिगुर प्रसादि ॥

सोई चंदु चड़हि से तारे सोई दिनीअरु तपत रहै ॥ सा धरती सो पउणु झुलारे जुग जीअ खेले थाव कैसे ॥ १ ॥ जीवन
 तलब निवारि ॥ होवै परवाना करहि धिडाणा कलि लखण वीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कितै देसि न आइआ सुणीए तीरथ
 पासि न बैठा ॥ दाता दानु करे तह नाही महल उसारि न बैठा ॥ २ ॥ जे को सतु करे सो छीजै तप घरि तपु न होई ॥ जे
 को नाउ लए बदनावी कलि के लखण एई ॥ ३ ॥ जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा ॥ जा सिकदारै

पवै जँजीरी ता चाकर हथहु मरणा ॥ ४ ॥ आखु गुणा कलि आईरे ॥ तिहु जुग केरा रहिआ तपावसु जे गुण देहि त पाईरे ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी क्रिसना होआ ॥ बाणी ब्रहमा बेदु अथरबणु करणी कीरति लहिआ ॥ ५ ॥
 पति विणु पूजा सत विणु सँजमु जत विणु काहे जनेऊ ॥ नावहु धोवहु तिलकु चड़ावहु सुच विणु सोच न होई ॥ ६ ॥ कलि
 परवाणु कतेब कुराणु ॥ पोथी पँडित रहे पुराण ॥ नानक नाउ भइआ रहमाणु ॥ करि करता तू एको जाणु ॥ ७ ॥ नानक
 नामु मिलै वडिआई एदू उपरि करमु नही ॥ जे घरि होदैं मँगणि जाईरे फिरि ओलामा मिलै तही ॥ ८ ॥ १ ॥ रामकली महला
 १ ॥ जगु परबोधहि मड़ी बधावहि ॥ आसणु तिआगि काहे सचु पावहि ॥ ममता मोहु कामणि हितकारी ॥ ना अउधूती ना
 सँसारी ॥ १ ॥ जोगी बैसि रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥ घरि घरि मागत लाज न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावहि गीत न चीनहि
 आपु ॥ किउ लागी निवरै परतापु ॥ गुर कै सबदि रचै मन भाइ ॥ भिखिआ सहज वीचारी खाइ ॥ २ ॥ भसम चड़ाइ करहि
 पाखँडु ॥ माइआ मोहि सहहि जम डँडु ॥ फूटै खापरु भीख न भाइ ॥ बँधनि बाधिआ आवै जाइ ॥ ३ ॥ बिंदु न राखहि
 जती कहावहि ॥ माई मागत त्रै लोभावहि ॥ निरदइआ नही जोति उजाला ॥ बूडत बूडे सरब जँजाला ॥ ४ ॥ भेख करहि
 खिँथा बहु थटूआ ॥ झूठो खेलु खेलै बहु नटूआ ॥ अंतरि अगनि चिँता बहु जारे ॥ विणु करमा कैसे उतरसि पारे ॥ ५ ॥
 मुँद्रा फटक बनाई कानि ॥ मुकति नही बिदिआ बिगिआनि ॥ जिहवा इंद्री सादि लोभाना ॥ पसू भए नही मिटै नीसाना ॥
 ६ ॥ त्रिबिधि लोगा त्रिबिधि जोगा ॥ सबदु वीचारै चूकसि सोगा ॥ ऊजलु साचु सु सबदु होइ ॥ जोगी जुगति वीचारे सोइ
 ॥ ७ ॥ तुझ पहि नउ निधि तू करणै जोगु ॥ थापि उथापे करे सु होगु ॥ जतु सतु सँजमु सचु सुचीतु ॥ नानक जोगी
 त्रिभवण मीतु ॥ ८ ॥ २ ॥ रामकली महला १ ॥ खटु मटु देही मनु बैरागी ॥ सुरति सबदु धुनि अंतरि जागी ॥ वाजै
 अनहदु मेरा मनु लीणा ॥ गुर बचनी सचि नामि पतीणा ॥ १ ॥ प्राणी राम भगति सुखु पाईरे ॥ गुरमुखि हरि हरि मीठा

लागै हरि हरि नामि समाईये ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु बिबरजि समाए ॥ सतिगुरु भेटै मेलि मिलाए ॥ नामु रतनु
 निरमोलकु हीरा ॥ तितु राता मेरा मनु धीरा ॥ २ ॥ हउमै ममता रोगु न लागै ॥ राम भगति जम का भउ भागै ॥ जमु
 जँदारु न लागै मोहि ॥ निरमल नामु रिदै हरि सोहि ॥ ३ ॥ सबदु बीचारि भए निरँकारी ॥ गुरमति जागे दुरमति परहारी
 ॥ अनदिनु जागि रहे किव लाई ॥ जीवन मुकति गति अंतरि पाई ॥ ४ ॥ अलिपत गुफा महि रहहि निशारे ॥ तसकर पंच
 सबदि सँघारे ॥ पर घर जाइ न मनु डोलाए ॥ सहज निरंतरि रहउ समाए ॥ ५ ॥ गुरमुखि जागि रहे अउधूता ॥ सद
 बैरागी ततु परोता ॥ जगु सूता मरि आवै जाइ ॥ बिनु गुर सबद न सोझी पाइ ॥ ६ ॥ अनहद सबदु वजै दिनु राती ॥
 अविगत की गति गुरमुखि जाती ॥ तउ जानी जा सबदि पछानी ॥ एको रवि रहिआ निरबानी ॥ ७ ॥ सुँन समाधि
 सहजि मनु राता ॥ तजि हउ लोभा एको जाता ॥ गुर चले अपना मनु मानिआ ॥ नानक दूजा मेटि समानिआ ॥ ८ ॥ ३
 ॥ रामकली महला १ ॥ साहा गणहि न करहि बीचारु ॥ साहे ऊपरि एकँकारु ॥ जिसु गुरु मिलै सोई बिधि जाणै ॥
 गुरमति होइ तहुकमु पछाणै ॥ १ ॥ झूठु न बोलि पाडे सचु कहीरे ॥ हउमै जाइ सबदि घरु लहीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गणि
 गणि जोतकु कांडी कीनी ॥ पडै सुणावै ततु न चीनी ॥ सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥ होर कथनी बदउ न सगली
 छारु ॥ २ ॥ नावहि धोवहि पूजहि सैला ॥ बिनु हरि राते मैलो मैला ॥ गरबु निवारि मिलै प्रभु सारथि ॥ मुकति प्रान
 जपि हरि किरतारथि ॥ ३ ॥ वाचै वादु न बेदु बीचारै ॥ आपि डुबै किउ पितरा तारै ॥ घटि घटि ब्रहमु चीनै जनु कोइ ॥
 सतिगुरु मिलै त सोझी होइ ॥ ४ ॥ गणत गणीरे सहसा दुखु जीरे ॥ गुर की सरणि पवै सुखु थीरे ॥ करि अपराध सरणि
 हम आइआ ॥ गुर हरि भेटे पुरबि कमाइआ ॥ ५ ॥ गुर सरणि न आईरे ब्रहमु न पाईरे ॥ भरमि भुलाईरे जनमि मरि आईरे
 ॥ जम दरि बाधउ मरै बिकारु ॥ नारिदै नामु न सबदु अचारु ॥ ६ ॥ इकि पाथे पंडित मिसर कहावहि ॥ दुबिधा राते

महलु न पावहि ॥ जिंसु गुर परसादी नामु अधारु ॥ कोटि मधे को जनु आपारु ॥ ७ ॥ एकु बुरा भला सचु एकै ॥ बूझु
गिअनी सतगुर की टेकै ॥ गुरमुखि विरली एको जाणिआ ॥ आवणु जाणा मेटि समाणिआ ॥ ८ ॥ जिन कै हिरदै
एकंकारु ॥ सरब गुणी साचा बीचारु ॥ गुर कै भाणै करम कमावै ॥ नानक साचे साचि समावै ॥ ९ ॥ ४ ॥ रामकली
महला १ ॥ हठु निग्रहु करि काइआ छीजै ॥ वस्तु तपनु करि मनु नहीं भीजै ॥ राम नाम सरि अवरु न पूजै ॥ १ ॥ गुरु
सेवि मना हरि जन संगु कीजै ॥ जमु जंदारु जोहि नहीं साकै सरपनि डसि न सकै हरि का रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वादु
पडै रागी जगु भीजै ॥ त्रै गुण बिखिआ जनमि मरीझै ॥ राम नाम बिनु दूखु सहीजै ॥ २ ॥ चाड़सि पवनु सिंघासनु भीजै
॥ निउली करम खटु करम करीजै ॥ राम नाम बिनु बिरथा सासु लीजै ॥ ३ ॥ अंतरि पंच अगनि किउ धीरजु धीजै ॥
अंतरि चोरु किउ सादु लहीजै ॥ गुरमुखि होइ काइआ गडु लीजै ॥ ४ ॥ अंतरि मैलु तीरथ भरमीजै ॥ मनु नहीं सूचा
किआ सोच करीजै ॥ किरतु पइआ दोसु का कउ दीजै ॥ ५ ॥ अंनु न खाहि देही दुखु दीजै ॥ बिनु गुर गिआन त्रिपति
नहीं थीजै ॥ मनमुखि जनमै जनमि मरीजै ॥ ६ ॥ सतिगुर पूछि संगति जन कीजै ॥ मनु रहि राचै नहीं जनमि मरीजै
॥ राम नाम बिनु किआ करमु कीजै ॥ ७ ॥ ऊंदर दूंदर पासि धरीजै ॥ धुर की सेवा रामु रवीजै ॥ नानक नामु मिलै
किरपा प्रभ कीजै ॥ ८ ॥ ५ ॥ रामकली महला १ ॥ अंतरि उतभुजु अवरु न कोई ॥ जो कहीऐ सो प्रभ ते होई ॥ जुगह
जुगंतरि साहिबु सचु सोई ॥ उतपति परलउ अवरु न कोई ॥ १ ॥ ऐसा मेरा ठाकुरु गहिर गंभीरु ॥ जिनि जपिआ तिन
ही सुखु पाइआ हरि कै नामि न लगै जम तीरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु रतनु हीरा निरमोलु ॥ साचा साहिबु अमरु अतोलु
॥ जिहवा सूची साचा बोलु ॥ घरि दरि साचा नाही रेलु ॥ २ ॥ इकि बन महि बैसहि डूगरि असथानु ॥ नामु बिसारि
पचहि अभिमानु ॥ नाम बिना किआ गिआन धिआनु ॥ गुरमुखि पावहि दरगहि मानु ॥ ३ ॥ हठु अहंकारु करै नहीं पावै
॥

पाठ पढ़ै ले लोक सुणावै ॥ तीरथि भरमसि बिआपि न जावै ॥ नाम बिना कैसे सुखु पावै ॥ ४ ॥ जतन करै बिंदु किवै न
 रहाई ॥ मनूआ डोलै नरके पाई ॥ जम पुरि बाधो लहै सजाई ॥ बिनु नावै जीउ जलि बलि जाई ॥ ५ ॥ सिध साधिक
 केते मनि देवा ॥ हठि निग्रहि न त्रिपतावहि भेवा ॥ सबदु वीचारि गहहि गुर सेवा ॥ मनि तनि निरमल अभिमान अभेवा
 ॥ ६ ॥ करमि मिलै पावै सचु नाउ ॥ तुम सरणागति रहउ सुभाउ ॥ तुम ते उपजिओ भगती भाउ ॥ जपु जापउ
 गुरमुखि हरि नाउ ॥ ७ ॥ हउमै गरबु जाइ मन भीनै ॥ झूठि न पावसि पाखंडि कीनै ॥ बिनु गुर सबद नही घरु बारु
 ॥ नानक गुरमुखि ततु बीचारु ॥ ८ ॥ ६ ॥ रामकली महला १ ॥ जिउ आइआ तिउ जावहि बउरै जिउ जनमे तिउ
 मरणु भइआ ॥ जिउ रस भोग कीए तेता दुखु लागै नामु विसारि भवजलि पइआ ॥ १ ॥ तनु धनु देखत गरबि गइआ
 ॥ कनिक कामनी सिउ हेतु वधाइहि की नामु विसारहि भरमि गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जतु सतु संजमु सीलु न राखिआ
 प्रेत पिंजर महि कासटु भइआ ॥ पुंनु दानु इसनानु न संजमु साधसंगति बिनु बादि जाइआ ॥ २ ॥ लालचि लागै नामु
 बिसारिओ आवत जावत जनमु गइआ ॥ जा जमु धाइ केस गहि मारै सुरति नही मुखि काल गइआ ॥ ३ ॥ अहिनिंसि
 निंदा ताति पराई हिरदै नामु न सरब दइआ ॥ बिनु गुर सबद न गति पति पावहि राम नाम बिनु नरकि गइआ ॥ ४ ॥
 खिन महि वेस करहि नटूआ जिउ मोह पाप महि गलतु गइआ ॥ इत उत माइआ देखि पसारी मोह माइआ कै मगनु भइआ
 ॥ ५ ॥ करहि बिकार विथार घनेरे सुरति सबद बिनु भरमि पइआ ॥ हउमै रोगु महा दुखु लागु गुरमति लेवहु रोगु गइआ
 ॥ ६ ॥ सुख संपति कउ आवत देखै साकत मनि अभिमानु भइआ ॥ जिस का इहु तनु धनु सो फिरि लेवै अंतरि सहसा
 दूखु पइआ ॥ ७ ॥ अंति कालि किछु साथि न चालै जो दीसै सभु तिसहि मइआ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु सो प्रभु हरि
 नामु रिदै लै पारि पइआ ॥ ८ ॥ मूए कउ रोवहि किसहि सुणावहि भै सागर असरालि पइआ ॥ देखि

कुटंबु माइआ गिह मंदरु साकतु जंजालि परालि पइआ ॥ ९ ॥ जा आए ता तिनहि पठाए चाले तिनै बुलाइ लइआ ॥
 जो किछु करणा सो करि रहिआ बखसणहारै बखसि लइआ ॥ १० ॥ जिनि एहु चाखिआ राम रसाइणु तिन की संगति
 खोजु भइआ ॥ रिधि सिधि बुधि गिआनु गुरू ते पाइआ मुकति पदारथु सरणि पइआ ॥ ११ ॥ दुख सुख गुरुमुखि सम
 करि जाणा हरख सोग ते बिरकतु भइआ ॥ आपु मारि गुरुमुखि हरि पाए नानक सहजि समाइ लइआ ॥ १२ ॥ ७ ॥
 रामकली देखणी महला १ ॥ जतु सतु संजमु साचु दिडाइआ साच सबदि रसि लीणा ॥ १ ॥ मेरा गुरु दइआलु सदा
 रंगि लीणा ॥ अहिनि सिरै एक लिव लागी साचे देखि पतीणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रहै गगन पुरि दिसति समैसरि अनहत
 सबदि रंगीणा ॥ २ ॥ सतु बंधि कुपीन भरिपुरि लीणा जिहवा रंगि रसीणा ॥ ३ ॥ मिलै गुरु साचे जिनि रचु राचे किरतु
 वीचारि पतीणा ॥ ४ ॥ एक महि सरब सरब महि एका एह सतिगुरि देखि दिखाई ॥ ५ ॥ जिनि कीए खंड मंडल
 ब्रहमंडा सो प्रभु लखनु न जाई ॥ ६ ॥ दीपक ते दीपकु परगासिआ त्रिभवण जोति दिखाई ॥ ७ ॥ सचै तखति सच
 महली बैठे निरभउ ताडी लाई ॥ ८ ॥ मोहि गइआ बैरागी जोगी घटि घटि किंगुरी वाई ॥ ९ ॥ नानक सरणि प्रभू की
 छूटे सतिगुर सचु सखाई ॥ १० ॥ ८ ॥ रामकली महला १ ॥ अउहठि हसत मडी घरु छाइआ धरणि गगन कल धारी
 ॥ १ ॥ गुरुमुखि केती सबदि उधारी संतहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ममता मारि हउमै सोखै त्रिभवणि जोति तुमारी ॥ २ ॥
 मनसा मारि मनै महि राखै सतिगुर सबदि वीचारी ॥ ३ ॥ सिंडी सुरति अनाहदि वाजै घटि घटि जोति तुमारी ॥ ४ ॥
 परपंच बेणु तही मनु राखिआ ब्रहम अगनि परजारी ॥ ५ ॥ पंच ततु मिलि अहिनि सिरै दीपकु निरमल जोति अपारी ॥
 ६ ॥ रवि ससि लउके इहु तनु किंगुरी वाजै सबदु निरारी ॥ ७ ॥ सिव नगरी महि आसणु अउधू अलखु अगंमु अपारी
 ॥ ८ ॥ काइआ नगरी इहु मनु राजा पंच वसहि वीचारी ॥ ९ ॥ सबदि रवै आसणि घरि राजा अदलु करे गुणकारी ॥

१० ॥

कालु बिकालु कहे कहि बपुरे जीवत मूआ मनु मारी ॥ ११ ॥ ब्रहमा बिसनु महेस इक मूरति आपे करता कारी ॥ १२ ॥
 काइआ सोधि तरै भव सागरु आतम ततु वीचारी ॥ १३ ॥ गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ अंतरि सबदु रविआ गुणकारी ॥ १४ ॥
 आपे मेलिं लए गुणदाता हउमै त्रिसना मारी ॥ १५ ॥ त्रै गुण मेटे चउथै वरतै एहा भगति निरारी ॥ १६ ॥
 गुरमुखि जोग सबदि आतमु चीनै हिरदै एकु मुरारी ॥ १७ ॥ मनूआ असथिरु सबदे राता एहा करणी सारी ॥ १८ ॥ बेदु
 बादु न पाखंडु अउधू गुरमुखि सबदि बीचारी ॥ १९ ॥ गुरमुखि जोगु कमावै अउधू जतु सतु सबदि वीचारी ॥ २० ॥
 सबदि मरै मनु मारे अउधू जोग जुगति वीचारी ॥ २१ ॥ माइआ मोहु भवजलु है अवधू सबदि तरै कुल तारी ॥ २२ ॥
 सबदि सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी ॥ २३ ॥ एहु मनु माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबदि वीचारी ॥ २४ ॥
 आपे बखसे मेलिं मिलाए नानक सरणिं तुमारी ॥ २५ ॥ ९ ॥

रामकली महला ३ असटपदीआ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

सरसै दीआ मुँद्रा कँनी पाइ जोगी खिँथा करि तू दइआ ॥ आवणु जाणु बिभूति लाइ जोगी ता तीनि भवण जिणिं लइआ
 ॥ १ ॥ ऐसी किंगुरी वजाइ जोगी ॥ जितु किंगुरी अनहदु वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु
 पतु करि झोली जोगी अँमित नामु भुगति पाई ॥ धिआन का करि डँडा जोगी सिँडी सुरति वजाई ॥ २ ॥ मनु द्विडु करि
 आसणि बैसु जोगी ता तेरी कलपणा जाई ॥ काइआ नगरी महि मँगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई ॥ ३ ॥ इतु
 किंगुरी धिआनु न लागै जोगी ना सचु पलै पाइ ॥ इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी ना सचु पलै पाइ ॥ इतु किंगुरी
 सांति न आवै जोगी अभिमानु न विचहु जाइ ॥ ४ ॥ भउ भाउ दुइ पत लाइ जोगी इहु सरीरु कर डँडी ॥ गुरमुखि होवहि
 ता तँती वाजै इन बिधि त्रिसना खँडी ॥ ५ ॥ हुकमु बुझै सो जोगी कहीरे एकस सिउ चितु लाए ॥ सहसा तूटै निरमलु
 होवै जोग जुगति इव पाए ॥ ६ ॥ नदरी आवदा सभु किछु बिनसै हरि सेती चितु लाइ ॥ सतिगुर नालि

तेरी भावनी लागै ता इह सोझी पाइ ॥ ७ ॥ एहु जोगु न होवै जोगी जिं कुटंबु छोडि परभवणु करहि ॥ ग्रिह सरीर महि हरि
 हरि नामु गुर परसादी अपणा हरि प्रभु लहहि ॥ ८ ॥ इहु जगतु मिटी का पुतला जोगी इसु महि रोगु वडा त्रिसना माइआ
 ॥ अनेक जतन भेख करे जोगी रोगु न जाइ गवाइआ ॥ ९ ॥ हर का नामु अउखधु है जोगी जिस नो मँनि वसाए ॥
 गुरमुखि होवै सोई बूझै जोग जुगति सो पाए ॥ १० ॥ जोगै का मारगु बिखमु है जोगी जिस नो नदरि करे सो पाए ॥
 अंतरि बाहरि एको वेखै विचहु भरमु चुकाए ॥ ११ ॥ विणु वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाइ ॥ कहै नानकु
 मुकति होवहि जोगी साचे रहहि समाइ ॥ १२ ॥ १ ॥ १० ॥ रामकली महला ३ ॥ भगति खजाना गुरमुखि जाता
 सतिगुरि बूझि बुझाई ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि देइ वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि रहहु सदा सहजु सुखु उपजै कामु क्रोधु
 विचहु जाई ॥ २ ॥ आपु छोडि नाम लिव लागी ममता सबदि जलाई ॥ ३ ॥ जिस ते उपजै तिस ते बिनसै अँते नामु
 सखाई ॥ ४ ॥ सदा हजूरि दूरि नह देखहु रचना जिनि रचाई ॥ ५ ॥ सचा सबदु रवै घट अंतरि सचे सिउ लिव लाई ॥ ६
 ॥ सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि पाइआ जाई ॥ ७ ॥ भरमि न भूलहु सतिगुरु सेवहु मनु राखहु इक ठाई ॥
 ८ ॥ बिनु नावै सभ भूली फिरदी बिरथा जनमु गवाई ॥ ९ ॥ जोगी जुगति गवाई हँडै पाखँडि जोगु न पाई ॥ १० ॥
 सिव नगरी महि आसणि बैसे गुर सबदी जोगु पाई ॥ ११ ॥ धातुरबाजी सबदि निवारे नामु वसै मनि आई ॥ १२ ॥ एहु
 सरीरु सरवरु है संतहु इसनानु करे लिव लाई ॥ १३ ॥ नामि इसनानु करहि से जन निरमल सबदे मैलु गवाई ॥ १४ ॥ त्रै
 गुण अचेत नामु चेतहि नाही बिनु नावै बिनसि जाई ॥ १५ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै मूरति त्रिगुणि भरमि भुलाई ॥ १६
 ॥ गुर परसादी त्रिकुटी छूटै चउथै पदि लिव लाई ॥ १७ ॥ पँडित पड़हि पड़ि वादु वखाणहि तिँना बूझ न पाई ॥ १८ ॥
 बिखिआ माते भरमि भुलाए उपदेसु करहि किसु भाई ॥ १९ ॥ भगत जना की ऊतम बाणी जुगि जुगि रही समाई ॥ २०

॥

बाणी लागै सो गति पाए सबदे सचि समाई ॥ २१ ॥ काइआ नगरी सबदे खोजे नामु नवँ निधि पाई ॥ २२ ॥ मनसा मारि
 मनु सहजि समाणा बिनु रसना उसतति कराई ॥ २३ ॥ लोइण देखि रहे बिसमादी चितु अदिसटि लगाई ॥ २४ ॥
 अदिसटु सदा रहै निरालमु जोती जोति मिलाई ॥ २५ ॥ हउ गुरु सालाही सदा आपणा जिनि साची बूझ बुझाई ॥ २६ ॥
 नानकु एक कहै बेनँती नावहु गति पति पाई ॥ २७ ॥ २ ॥ ११ ॥ रामकली महला ३ ॥ हरि की पूजा दुलँभ है संतहु कहणा
 कछु न जाई ॥ १ ॥ संतहु गुरुमुखि पूरा पाई ॥ नामो पूज कराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु किआ
 हउ पूज चड़ाई ॥ २ ॥ हरि साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मनि वसाई ॥ ३ ॥ पूजा करै सभु लोकु संतहु मनमुखि थाइ न
 पाई ॥ ४ ॥ सबदि मरै मनु निरमलु संतहु एह पूजा थाइ पाई ॥ ५ ॥ पवित पावन से जन साचे एक सबदि लिव लाई ॥ ६
 ॥ बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई ॥ ७ ॥ गुरुमुखि आपु पछाणै संतहु राम नामि लिव लाई ॥ ८ ॥ आपे
 निरमलु पूज कराए गुरु सबदी थाइ पाई ॥ ९ ॥ पूजा करहि परु बिधि नही जाणहि दूजै भाइ मलु लाई ॥ १० ॥ गुरुमुखि
 होवै सु पूजा जाणै भाणा मनि वसाई ॥ ११ ॥ भाणे ते सभि सुख पावै संतहु अँते नामु सखाई ॥ १२ ॥ अपणा आपु न
 पछाणहि संतहु कूड़ि करहि वडिआई ॥ १३ ॥ पाखँडि कीनै जमु नही छोडै लै जासी पति गवाई ॥ १४ ॥ जिन अँतरि
 सबदु आपु पछाणहि गति मिति तिन ही पाई ॥ १५ ॥ एहु मनूआ सुँन समाधि लगावै जोती जोति मिलाई ॥ १६ ॥ सुणि
 सुणि गुरुमुखि नामु वखाणहि सतसंगति मेलाई ॥ १७ ॥ गुरुमुखि गावै आपु गवावै दरि साचै सोभा पाई ॥ १८ ॥ साची
 बाणी सचु वखाणै सचि नामि लिव लाई ॥ १९ ॥ भै भँजनु अति पाप निखँजनु मेरा प्रभु अँति सखाई ॥ २० ॥ सभु किछु
 आपे आपि वरतै नानक नामि वडिआई ॥ २१ ॥ ३ ॥ १२ ॥ रामकली महला ३ ॥ हम कुचल कुचील अति अभिमानी
 मिलि सबदे मैलु उतारी ॥ १ ॥ संतहु गुरुमुखि नामि निसतारी ॥ सचा नामु वसिआ घट अँतरि करतै आपि सवारी ॥

१ ॥ रहाउ ॥ पारस परसे फिरि पारसु होए हरि जीउ अपनी किरपा धारी ॥ २ ॥ इकि भेख करहि फिरहि अभिमानी तिन
 जूरे बाजी हारी ॥ ३ ॥ इकि अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु उरि धारी ॥ ४ ॥ अनदिनु राते सहजे माते सहजे
 हउमै मारी ॥ ५ ॥ भै बिनु भगति न होई कब ही भै भाइ भगति सवारी ॥ ६ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ गिआनि
 तति बीचारी ॥ ७ ॥ आपे आपि कराए करता आपे बखसि भँडारी ॥ ८ ॥ तिस किआ गुणा का अँतु न पाइआ हउ गावा
 सबदि वीचारी ॥ ९ ॥ हरि जीउ जपी हरि जीउ सालही विचहु आपु निवारी ॥ १० ॥ नामु पदारथु गुर ते पाइआ अखुट
 सचे भँडारी ॥ ११ ॥ अपणिआ भगता नो आपे तुठा अपनी किरपा करि कल धारी ॥ १२ ॥ तिन साचे नाम की सदा
 भुख लागी गावनि सबदि वीचारी ॥ १३ ॥ जीउ पिँडु सभु किछु है तिस का आखणु बिखमु बीचारी ॥ १४ ॥ सबदि लगे
 सेई जन निसतरे भउजलु पारि उतारी ॥ १५ ॥ बिनु हरि साचे को पारि न पावै बूझै को वीचारी ॥ १६ ॥ जो धुरि
 लिखिआ सोई पाइआ मिलि हरि सबदि सवारी ॥ १७ ॥ काइआ कँचनु सबदे राती साचै नाइ पिआरी ॥ १८ ॥ काइआ
 अँमिति रही भरपूरे पाईरे सबदि वीचारी ॥ १९ ॥ जो प्रभु खोजहि सेई पावहि होरि फूटि मूए अहँकारी ॥ २० ॥ बादी
 बिनसहि सेवक सेवहि गुर कै हेति पिआरी ॥ २१ ॥ सो जोगी ततु गिआनु बीचारे हउमै तिसना मारी ॥ २२ ॥ सतिगुरु
 दाता तिनै पछाता जिस नो क्रिपा तुमारी ॥ २३ ॥ सतिगुरु न सेवहि माइआ लागे डूबि मूए अहँकारी ॥ २४ ॥ जिचरु
 अँदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइ मिलीरे राम मुरारी ॥ २५ ॥ अनदिनु जागत रहै दिनु राती अपने प्रिअ प्रीति पिआरी
 ॥ २६ ॥ तनु मनु वारी वारि घुमाई अपने गुर विटहु बलिहारी ॥ २७ ॥ माइआ मोहु बिनसि जाइगा उबरे सबदि वीचारी
 ॥ २८ ॥ आपि जगाए सेई जागे गुर कै सबदि वीचारी ॥ २९ ॥ नानक सेई मूए जि नामु न चेतहि भगत जीवे वीचारी ॥
 ३० ॥ ४ ॥ १३ ॥ रामकली महला ३ ॥ नामु खजाना गुर ते पाइआ त्रिपति रहे आघाई ॥ १ ॥ सँतहु गुरमुखि

मुक्ति गति पाई ॥ एकु नामु वसिआ घट अंतरि पूरे की वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे करता आपे भुगता देदा रिजकु सबाई ॥ २ ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥ ३ ॥ आपे साजे खिसटि उपाए सिरि सिरि धँधै लाई ॥ ४ ॥ तिसहि सरेवहु ता सुखु पावहु सतिगुरि मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ आपणा आपु आपि उपाए अलखु न लखणा जाई ॥ ६ ॥ आपे मारि जीवाले आपे तिस नो तिलु न तमाई ॥ ७ ॥ इकि दाते इकि मँगते कीते आपे भगति कराई ॥ ८ ॥ से वडभागी जिनी एको जाता सचे रहे समाई ॥ ९ ॥ आपि सरूपु सिआणा आपे कीमति कहणु न जाई ॥ १० ॥ आपे दुख सुखु पाए अंतरि आपे भरमि भुलाई ॥ ११ ॥ वडा दाता गुरुमुखि जाता निगुरी अंध फिरै लोकाई ॥ १२ ॥ जिनी चाखिआ तिना सादु आइआ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ १३ ॥ इकना नावहु आपि भुलाए इकना गुरुमुखि देइ बुझाई ॥ १४ ॥ सदा सदा सालाहिहु संतहु तिस दी वडी वडिआई ॥ १५ ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई राजा करि तपावसु बणत बणाई ॥ १६ ॥ निआउ तिसै का है सद साचा विरले हुकमु मनाई ॥ १७ ॥ तिस नो प्राणी सदा धिआवहु जिनि गुरुमुखि बणत बणाई ॥ १८ ॥ सतिगुर भेटै सो जनु सीझै जिंसु हिरदै नामु वसाई ॥ १९ ॥ सचा आपि सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई ॥ २० ॥ नानक सुणि वेखि रहिआ विसमादु मेरा प्रभु रविआ सब थाई ॥ २१ ॥ ५ ॥ १४ ॥

रामकली महला ५ असटपदीआ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

किन ही कीआ परविरति पसारा ॥ किनही कीआ पूजा बिसथारा ॥ किनही निवल भुइअंगम साधे ॥ मोहि दीन हरि हरि आराधे ॥ १ ॥ तेरा भरोसा पिआरे ॥ आन न जाना वेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किनही छिहु तजि वणखँडि पाइआ ॥ किनही मोनि अउधूतु सदाइआ ॥ कोई कहतउ अनँनि भगउती ॥ मोहि दीन हरि हरि ओट लीती ॥ २ ॥ किनही कहिआ हउ तीरथ वासी ॥ कोई अँनु तजि भइआ उदासी ॥ किनही भवनु सभ धरती करिआ ॥ मोहि दिन हरि हरि दरि परिआ ॥ ३ ॥

किन ही कहिआ मै कुलहि वडिआई ॥ किनही कहिआ बाह बहु भाई ॥ कोई कहै मै धनहि पसारा ॥ मोहि दीन हरि हरि
 आधारा ॥ ४ ॥ किनही घूघर निरति कराई ॥ किनहू वरत नेम माला पाई ॥ किनही तिलकु गोपी चंदन लाइआ ॥ मोहि
 दीन हरि हरि हरि धिआइआ ॥ ५ ॥ किनही सिध बहु चेटक लाए ॥ किनही भेख बहु थाट बनाए ॥ किनही तंत मंत बहु
 खेवा ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि सेवा ॥ ६ ॥ कोई चतुरु कहावै पंडित ॥ को खटु करम सहित सिउ मंडित ॥ कोई करै
 आचार सुकरणी ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि सरणी ॥ ७ ॥ सगले करम धरम जुग सोधे ॥ बिनु नावै इहु मनु न प्रबोधे ॥ कहु
 नानक जउ साधसंगु पाइआ ॥ बूझी त्रिसना महा सीतलाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ रामकली महला ५ ॥ इसु पानी ते जिनि तू
 घरिआ ॥ माटी का ले देहुरा करिआ ॥ उकति कोति लै सुरति परीखिआ ॥ मात गरभ महि जिनि तू राखिआ ॥ १ ॥
 राखनहारु सम्हारि जना ॥ सगले छोडि बीचार मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि दीए तुधु बाप महतारी ॥ जिनि दीए भात पुत
 हारी ॥ जिनि दीए तुधु बनिता अरु मीता ॥ तिसु ठाकुर कउ रखि लेहु चीता ॥ २ ॥ जिनि दीआ तुधु पवनु अमोला ॥
 जिनि दीआ तुधु नीरु निरमोला ॥ जिनि दीआ तुधु पावकु बलना ॥ तिसु ठाकुर की रहु मन सरना ॥ ३ ॥ छतीह अंम्रित
 जिनि भोजन दीए ॥ अंतरि थान ठहरावन कउ कीए ॥ बसुधा दीओ बरतनि बलना ॥ तिसु ठाकुर के चिति रखु चरना ॥ ४
 ॥ पेखन कउ नेत्र सुनन कउ करना ॥ हसत कमावन बासन रसना ॥ चरन चकन कउ सिरु कीनो मेरा ॥ मन तिसु ठाकुर
 के पूजहु पैरा ॥ ५ ॥ अपवित्र पवित्रु जिनि तू करिआ ॥ सगल जोनि महि तू सिरि धरिआ ॥ अब तू सीझु भावै नही सीझै
 ॥ कारजु सवरै मन प्रभु धिआईजै ॥ ६ ॥ ईहा ऊहा एकै ओही ॥ जत कत देखीऐ तत तत तोही ॥ तिसु सेवत मनि
 आलसु करै ॥ तिसु विसरिऐ इक निमख न सरै ॥ ७ ॥ हम अपराधी निरगुनीआरे ॥ ना किछु सेवा ना करमारे ॥ गुरु
 बोहिथु वडभागी मिलिआ ॥ नानक दास सँगि पाथर तरिआ ॥ ८ ॥ २ ॥ रामकली महला ५ ॥ काहू बिहावै रंग

रस रूप ॥ काहू बिहावै माइ बाप पूत ॥ काहू बिहावै राज मिलख वापारा ॥ संत बिहावै हरि नाम अधारा ॥ १ ॥ रचना
 साचु बनी ॥ सभ का एकु धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहू बिहावै बेद अरु बादि ॥ काहू बिहावै रसना सादि ॥ काहू बिहावै
 लपटि सँगि नारी ॥ संत रचे केवल नाम मुरारी ॥ २ ॥ काहू बिहावै खेलत जूआ ॥ काहू बिहावै अमली हूआ ॥ काहू
 बिहावै पर दरब चोराए ॥ हरि जनि बिहावै नाम धिआए ॥ ३ ॥ काहू बिहावै जोग तप पूजा ॥ काहू रोग सोग भरमीजा ॥
 काहू पवन धार जात बिहाए ॥ संत बिहावै कीरतनु गाए ॥ ४ ॥ काहू बिहावै दिनु रैनि चालत ॥ काहू बिहावै सो पिडु
 मालत ॥ काहू बिहावै बाल पड़ावत ॥ संत बिहावै हरि जसु गावत ॥ ५ ॥ काहू बिहावै नट नाटिक निरते ॥ काहू बिहावै
 जीआइह हिरते ॥ काहू बिहावै राज महि डरते ॥ संत बिहावै हरि जसु करते ॥ ६ ॥ काहू बिहावै मता मसूरति ॥ काहू
 बिहावै सेवा जरूरति ॥ काहू बिहावै सोधत जीवत ॥ संत बिहावै हरि रसु पीवत ॥ ७ ॥ जितु को लाइआ तित ही लगाना
 ॥ ना को मूडु नही को सिआना ॥ करि किरपा जिसु देवै नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥ ८ ॥ ३ ॥ रामकली
 महला ५ ॥ दावा अगनि रहे हरि बूट ॥ मात गरभ संकट ते छूट ॥ जा का नामु सिमरत भउ जाइ ॥ तैसे संत जना राखै
 हरि राइ ॥ १ ॥ ऐसे राखनहार दइआल ॥ जत कत देखउ तुम प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलु पीवत जिउ तिखा मिटंत
 ॥ धन बिगसै छिहि आवत कंत ॥ लोभी का धनु प्राण अधारु ॥ तिउ हरि जन हरि हरि नाम पिआरु ॥ २ ॥ किरसानी
 जिउ राखै रखवाला ॥ मात पिता दइआ जिउ बाला ॥ प्रीतमु देखि प्रीतमु मिलि जाइ ॥ तिउ हरि जन राखै कंठि लाइ ॥ ३
 ॥ जिउ अंधुले पेखत होइ अनंद ॥ गूंगा बकत गावै बहु छंद ॥ पिंगुल परबत परते पारि ॥ हरि कै नामि सगल उधारि ॥
 ४ ॥ जिउ पावक सँगि सीत को नास ॥ ऐसे प्राछत संतसँगि बिनास ॥ जिउ साबुनि कापर ऊजल होत ॥ नाम जपत सभु
 भ्रमु भउ खोत ॥ ५ ॥ जिउ चकवी सूरज की आस ॥ जिउ चात्रिक बूंद की पिआस ॥ जिउ कुरँक नाद करन समाने ॥

तिउ हरि नाम हरि जन मनहि सुखाने ॥ ६ ॥ तुमरी क्रिपा ते लागी प्रीति ॥ दइआल भए ता आए चीति ॥ दइआ धारी तिनि
 धारणहार ॥ बँधन ते होई छुटकार ॥ ७ ॥ सभि थान देखे नैण अलोइ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ भ्रम भै छूटे गुर
 परसाद ॥ नानक पेखिओ सभु बिसमाद ॥ ८ ॥ ४ ॥ रामकली महला ५ ॥ जीअ जँत सभि पेखीअहि प्रभ सगल तुमारी
 धारना ॥ १ ॥ इहु मनु हरि कै नामि उधारना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि उथापे कुदरति सभि करते के कारना ॥ २ ॥
 कामु क्रोधु लोभु झूठु निँदा साधु सँगि बिदारना ॥ ३ ॥ नामु जपत मनु निरमल होवै सूखे सूखि गुदारना ॥ ४ ॥ भगत सरणि
 जो आवै प्राणी तिसु ईहा ऊहा न हारना ॥ ५ ॥ सूख दूख इसु मन की बिरथा तुम ही आगै सारना ॥ ६ ॥ तू दाता सभना
 जीआ का आपन कीआ पालना ॥ ७ ॥ अनिक बार कोटि जन ऊपरि नानकु वँजै वारना ॥ ८ ॥ ५ ॥

रामकली महला ५ असटपदी १८ शितिगुर प्रसादि ॥

दरसन भेटत पाप सभि नासहि हरि सिउ देइ मिलार्इ ॥ १ ॥ मेरा गुरु परमेसरु सुखदाई ॥ पारब्रहम का नामु द्विड़ाए अँते होइ
 सखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल दूख का डेश भँना सँत धूरि मुखि लाई ॥ २ ॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि अगिआनु
 अँधेर वँजाई ॥ ३ ॥ करण कारण समरथु सुआमी नानक तिसु सरणाई ॥ ४ ॥ बँधन तोड़ि चरन कमल द्विड़ाए एक सबदि
 लिव लाई ॥ ५ ॥ अँध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबदि बणि आई ॥ ६ ॥ जनम मरण का सहसा चूका बाहुडि कतहु न
 धाई ॥ ७ ॥ नाम रसाइणि इहु मनु राता अँमितु पी त्रिपताई ॥ ८ ॥ सँतसँगि मिलि कीरतनु गाइआ निहचल वसिआ जाई ॥
 ९ ॥ पूरै गुर पूरी मति दीनी हरि बिनु आन न भाई ॥ १० ॥ नामु निधानु पाइआ वडभागी नानक नरकि न जाई ॥ ११ ॥
 घाल सिआणप उकति न मेरी पूरै गुरु कमाई ॥ १२ ॥ जप तप सँजम सुचि है सोई आपे करे कराई ॥ १३ ॥ पुत्र

कलत्र महा बिखिआ महि गुरि साचै लाइ तराई ॥ १४ ॥ अपने जीअ तै आपि संहाले आपि लीए लडि लाई ॥ १५ ॥
 साच धरम का बेड़ा बांधिआ भवजलु पारि पवाई ॥ १६ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी नानक बलि बलि जाई ॥ १७ ॥ अकाल
 मूरति अजूनी सँभउ कलि अँधकार दीपाई ॥ १८ ॥ अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपति अघाई ॥ १९ ॥ एकँकारु
 निरँजनु निरभउ सभ जलि थलि रहिआ समाई ॥ २० ॥ भगति दानु भगता कउ दीना हरि नानकु जाचै माई ॥ २१ ॥ १
 ॥ ६ ॥ रामकली महला ५ ॥ सलोकु ॥ सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ मुखु ऊजलु सदा सुखी नानक
 सिमरत एक ॥ १ ॥ मनु तनु राता राम पिआरे हरि प्रेम भगति बणि आई सँतहु ॥ १ ॥ सतिगुरि खेप निबाही सँतहु ॥
 हरि नामु लाहा दास कउ दीआ सगली त्रिसन उलाही सँतहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत लालु इकु पाइआ हरि कीमति
 कहणु न जाई सँतहु ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागो धिआना साचै दरसि समाई सँतहु ॥ ३ ॥ गुण गावत गावत भए
 निहाला हरि सिमरत त्रिपति अघाई सँतहु ॥ ४ ॥ आतमरामु रविआ सभ अंतरि कत आवै कत जाई सँतहु ॥ ५ ॥ आदि
 जुगादी है भी होसी सभ जीआ का सुखदाई सँतहु ॥ ६ ॥ आपि बेअंतु अंतु नही पाईए पूरि रहिआ सभ ठाई सँतहु ॥ ७ ॥
 मीत साजन मालु जोबनु सुत हरि नानक बापु मेरी माई सँतहु ॥ ८ ॥ २ ॥ ७ ॥ रामकली महला ५ ॥ मन बच क्रमि राम
 नामु चितारी ॥ घूमन घेरि महा अति बिखड़ी गुरुमुखि नानक पारि उतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि सूखा बाहरि सूखा हरि
 जपि मलन भए दुसटारी ॥ १ ॥ जिस ते लागे तिनहि निवारे प्रभ जीउ अपनी किरपा धारी ॥ २ ॥ उधरे सँत परे हरि
 सरनी पचि बिनसे महा अहँकारी ॥ ३ ॥ साधू संगति इहु फलु पाइआ इकु केवल नामु अधारी ॥ ४ ॥ न कोई सूरु न कोई
 हीणा सभ प्रगटी जोति तुम्हरी ॥ ५ ॥ तुम्ह समरथ अकथ अगोचर रविआ एकु मुरारी ॥ ६ ॥ कीमति कउणु करे तेरी
 करते प्रभ अंतु न पारावारी ॥ ७ ॥ नाम दानु नानक वडिआई तेरिआ सँत जनारेणारी ॥ ८ ॥ ३ ॥ ८ ॥ २२ ॥

रामकली महला ३ अनंद १४ सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरू त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंद होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मँन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अँगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मँन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥ २ ॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥ ३ ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इच्छा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ ४ ॥ वाजे पँच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पँच दूत तुधु वसि कीते कालु कँटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥ ५ ॥ साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ ॥ एस नउ होर थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ ६ ॥ आनँदु आनँदु सभु को कहै आनँदु गुरू ते जाणिआ ॥ जाणिआ आनँदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अँजनु सारिआ ॥ अँदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै नानकु एहु अनँदु है आनँदु गुर ते जाणिआ ॥ ७ ॥ बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु

देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुर परसादी
 मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥ ८ ॥ आवहु संत पिआरिहो
 अकथ की करह कहाणी ॥ करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईए ॥ तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मँनिऐ
 पाईए ॥ हुकमु मँनिहु गुरु केरा गावहु सची बाणी ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥ ९ ॥ ए मन चंचला
 चतुराई किनै न पाइआ ॥ चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मँन मेरिआ ॥ एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ
 ॥ माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ कहै
 नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥ १० ॥ ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ एह कुटंबु तू जि देखदा चलै
 नाही तेरै नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईए ॥ ऐसा कँमु मूले न कीचै जितु अँति पछोताईए ॥
 सतिगुरु का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥ ११ ॥ अगम अगोचरा तेरा
 अँतु न पाइआ ॥ अँतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तु जाणहे ॥ जीअ जँत सभि खेलु तेरा किआ को आखि
 वखाणए ॥ आखहि तु वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥ कहै नानकु तू सदा अगँमु है तेरा अँतु न पाइआ ॥ १२
 ॥ सुरि नर मुनि जन अम्रितु खोजदे सु अम्रितु गुर ते पाइआ ॥ पाइआ अँम्रितु गुरि क्रिपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥
 जीअ जँत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अहँकारु चूका सतिगुरु भला भाइआ ॥ कहै नानकु
 जिस नो आपि तुठा तिनि अँम्रितु गुर ते पाइआ ॥ १३ ॥ भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम
 मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहँकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खँनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा
 ॥ गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥

४ ॥ जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे
 ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि दुखुआरै सुखु पावहे
 ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥ १५ ॥ एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा सदा सोहिला
 सतिगुरु सुणाइआ ॥ एहु तिन कै मनि वसिआ जिन धुरुहु लिखिआ आइआ ॥ इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै
 न पाइआ ॥ कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरु सुणाइआ ॥ १६ ॥ पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ हरि
 धिआइआ पवितु होए गुरुमुखि जिनी धिआइआ ॥ पवितु माता पिता कुटुंब सहित सिउ पवितु संगति सर्बाईआ ॥ कहदे
 पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मँनि वसाइआ ॥ कहै नानकु से पवितु जिनी गुरुमुखि हरि हरि धिआइआ ॥ १७ ॥
 करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है
 कितु संजमि धोता जाए ॥ मँनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ कहै नानकु गुरु परसादी सहजु उपजै इहु
 सहसा इव जाइ ॥ १८ ॥ जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूरे हारिआ ॥ एह
 तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै
 नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूरे हारिआ ॥ १९ ॥ जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु त
 निरमल जीअहु निरमल सतिगुरु ते करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी
 खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मँनु निरमलु सदा रहहि गुरु नाले ॥ २० ॥ जे को सिखु गुरु सेती सनमुखु
 होवै ॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुरु नाले ॥ गुरु के चरन हिरदे धिआए अंतर आतमै समाले ॥ आपु छडि
 सदा रहै परणै गुरु बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥ २१ ॥

जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी
 भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु वीचारि
 देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ २२ ॥ आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू
 केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदे तिना समाणी ॥ पीवहु अँमितु सदा रहहु हरि रँगि जपिहु
 सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥ २३ ॥ सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची
 सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कचीं, आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू
 न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए खाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ २४ ॥
 गुर का सबदु रतनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मँनु लागा एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै
 लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥ २५ ॥ सिव
 सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ तोडे बंधन होवै मुकतु
 सबदु मँनि वसाए ॥ गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए
 ॥ २६ ॥ सिमिति सासत्र पुँन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही
 गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अमित बाणी ॥
 कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥ २७ ॥ माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो
 किउ मनहु विसारीरे ॥ मनहु किउ विसारीरे एवहु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ ओस नो किहु पोहि न सकी
 जिस नउ आपणी लिव लावए ॥ आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीरे ॥ कहै नानकु एवहु दाता सो किउ

मनहु विसारीऐ ॥ २८ ॥ जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥ माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु
रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जँमिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव छुड़की लगी तिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥
एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ
पाइआ ॥ २९ ॥ हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥ जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥ हरि
आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥ ३० ॥ हरि रास मेरी मनु वणजारा ॥ हरि रासि मेरी मनु
वणजारा सतिगुरु ते रासि जाणी ॥ हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि
आपे भाणा ॥ कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥ ३१ ॥ ए रसना तू अन रासि राचि रही तेरी पिआस न
जाइ ॥ पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥ हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न तिसना लागै
आइ ॥ एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ
॥ ३२ ॥ ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जह महि
आइआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु
नदरी आइआ ॥ कहै नानकु खिसटि का मूलु रचिआ जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ ३३ ॥ मनि चाउ भइआ प्रभ
आगमु सुणिआ ॥ हरि मँगलु गाउ सखी छिहु मँदरु बणिआ ॥ हरि गाउ मँगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ गुर
चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥ कहै नानकु प्रभु
आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥ ३४ ॥ ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥

किं करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ गुर
 परसादी हरि मनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु
 लाइआ ॥ ३५ ॥ ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई
 नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ
 जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब दिसटि होई ॥ ३६ ॥
 ए श्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ साचै सुननै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु
 हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ कहै नानकु अँप्रित नामु सुणहु
 पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥ ३७ ॥ हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ वजाइआ वाजा
 पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ गुर दुआरै लाइ भवनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ तह
 अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अँत न जाई पाईआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु
 वजाइआ ॥ ३८ ॥ एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥
 सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥
 कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥ ३९ ॥ अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु पभु पाइआ
 उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत
 कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवँति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

शमकली सद्गुरु सतिगुरु प्रसादि ॥

जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ ॥ गुरु सबदि समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ ॥ अवरो न जाणहि सबदि गुरु कै एकु नामु धिआवहे ॥ परसादि नानक गुरु अंगद परम पदवी पावहे ॥ आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ ॥ जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ ॥ १ ॥ हरि भाणा गुरु भाइआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ पैज रखहु हरि जनह केरी हरि देहु निरँजनो ॥ अँति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखँजनो ॥ सतिगुरु की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥ २ ॥ मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ हरि भाणा गुरु भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ आनँद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥ तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥ मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए ॥ तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरु पैनावए ॥ सतिगुरु परतखि होदैं बहि राजु आपि टिकाइआ ॥ सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ ॥ ४ ॥ अँते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो गोपाल पँडित सदिअहु हरि हरि कथा पढ़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रँगु गुरु भावए ॥ पिँडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए ॥ हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ रामदास सोढी तिलकु दीआ गुरु सबद सचु नीसाणु जीउ ॥ ५ ॥ सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरुसिखा मँनि लई रजाइ जीउ ॥

मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ ॥ सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥ कोई करि
बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ ॥ हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ
॥ कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ ॥ ६ ॥ १ ॥

रामकली महला ७ छँत १८ सतिगुर प्रसादि ॥

साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकटि खलोइअड़ा मेरा साजनड़ा ॥ जानीअड़ा हरि जानीअड़ा नैण अलोइअड़ा हरि
जानीआड़ा ॥ नैण अलोइआ घटि घटि सोइआ अति अँमित प्रिअ गूड़ा ॥ नालिं होवँदा लहि न सकँदा सुआउ न जाणै
मूड़ा ॥ माइआ मदि माता होछीं बाता मिलणु न जाई भरम धड़ा ॥ कहु नानक गुर बिनु नाही सूझै हरि साजनु सभ कै
निकटि खड़ा ॥ १ ॥ गोबिँदा मेरे गोबिँदा प्राण अधारा मेरे गोबिँदा ॥ किरपाला मेरे किरपाला दान दातारा मेरे
किरपाला ॥ दान दातारा अपर अपारा घट घट अँतरि सोहनिआ ॥ इक दासी धारी सबल पसारी जीअ जँत लै
मोहनिआ ॥ जिस नो रखै सो सचु भाखै गुर का सबदु बीचारा ॥ कहु नानक जो प्रभ कउ भाणा तिस ही कउ प्रभु
पिआरा ॥ २ ॥ माणो प्रभ माणो मेरे प्रभ का माणो ॥ जाणो प्रभु जाणो सुआमी सुघडु सुजाणो ॥ सुघड सुजाना सद
परधाना अँमितु हरि का नामा ॥ चाखि अघाणे सारिगपाणे जिन कै भाग मथाना ॥ तिन ही पाइआ तिनहि धिआइआ
सगल तिसै का माणो ॥ कहु नानक थिरु तखति निवासी सचु तिसै दीबाणो ॥ ३ ॥ मँगला हरि मँगला मेरे प्रभ कै
सुणीरे मँगला ॥ सोहिलड़ा प्रभ सोहिलड़ा अनहद धुनीरे सोहिलड़ा ॥ अनहद वाजे सबद अगाजे नित नित जिसहि
वधाई ॥ सो प्रभु धिआईरे सबु किछु पाईरे मरै न आवै जाई ॥ चूकी पिआसा पूरन आसा गुरमुखि मिलु निरगुनीरे ॥
कहु नानक घरि प्रभ मेरे कै नित नित मँगलु सुनीरे ॥ ४ ॥ १ ॥ रामकली महला ७ ॥ हरि हरि धिआइ मना खिनु

न विसारीये ॥ राम रामा राम रमा कँठि उर धारीये ॥ उर धारि हरि हरि पुरखु पूरनु पारब्रह्मु निरँजनो ॥ भै दूरि करता पाप
 हरता दुसह दुख भव खँडनो ॥ जगदीस ईस गोपाल माधो गुण गोविंद वीचारीये ॥ बिनवँति नानक मिलि सँगि साधू
 दिनसुरैणि चितारीये ॥ १ ॥ चरन कमल आधारु जन का आसरा ॥ मालु मिलख भँडार नामु अनंत धरा ॥ नामु नरहर
 निधानु जिन कै रस भोग एक नराइणा ॥ रस रूप रंग अनंत बीठल सासि सासि धिआइणा ॥ किलविख हरणा नाम
 पुनहचरणा नामु जम की त्रास हरा ॥ बिनवँति नानक रासि जन की चरन कमलह आसरा ॥ २ ॥ गुण बेअंत सुआमी
 तेरे कोइ न जानई ॥ देखि चलत दइआल सुणि भगत वखानई ॥ जीअ जंत सभि तुझु धिआवहि पुरख पति परमेसरा
 ॥ सब जाचिक एकु दाता करुणा मै जगदीसरा ॥ साधू सँतु सुजाणु सोई जिसहि प्रभ जी मानई ॥ बिनवँति नानक
 करहु किरपा सोइ तुझहि पछानई ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण अनाथु सरणी आइआ ॥ बलि बलि बलि गुरदेव जिनि नामु
 द्रिडाइआ ॥ गुरि नामु दीआ कुसलु थीआ सब इछा पुँनीआ ॥ जलने बुझाई सांति आई मिले चिरी विछुँनिआ ॥
 आनंद हरख सहज साचे महा मंगल गुण गाइआ ॥ बिनवँति नानक नामु प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥
 रामकली महला ५ ॥ रुणझुणो सबदु अनाहदु नित उठि गईये सँतन कै ॥ किलविख सभि दोख बिनासनु हरि नामु
 जपीये गुर मँतन कै ॥ हरि नामु लीजै अमिउ पीजै रैणि दिनसु अराधीये ॥ जोग दान अनेक किरिआ लागि चरण कमलह
 साधीये ॥ भाउ भगति दइआल मोहन दूख सगले परहरै ॥ बिनवँति नानक तरै सागरु धिआइ सुआमी नरहरै ॥ १ ॥
 सुख सागर गोबिंद सिमरणु भगत गावहि गुण तेरे राम ॥ अनद मंगल गुर चरनी लागे पाए सूख घनेरे राम ॥ सुख
 निधानु मिलिआ दूख हरिआ क्रिपा करि प्रभि राखिआ ॥ हरि चरण लागा भ्रमु भउ भागा हरि नामु रसना भाखिआ ॥
 हरि एकु चितवै प्रभु एकु गावै हरि एकु द्रिसटी आइआ ॥ बिनवँति नानक प्रभि करी किरपा पूरा सतिगुरु पाइआ ॥

२ ॥ मिलिं रहीं प्रभ साध जना मिलिं हरिं कीरतनु सुनीये राम ॥ दइआल प्रभू दामोदर माधो अँतु न पाईये गुनीये राम
 ॥ दइआल दुख हर सरणि दाता सगल दोख निवारणो ॥ मोह सोग विकार बिखड़े जपत नाम उधारणो ॥ सभि जीअ
 तेरे प्रभू मेरे करि किरपा सभ रेण थीवा ॥ बिनवँति नानक प्रभ मइआ कीजै नामु तेरा जपि जीवा ॥ ३ ॥ राखि लीए
 प्रभि भगत जना अपणी चरणी लाए राम ॥ आठ पहर अपना प्रभु सिमरह एको नामु धिआए राम ॥ धिआइ सो प्रभु तेरे
 भवजल रहे आवण जाणा ॥ सदा सुखु कलिआण कीरतनु प्रभ लगा मीठा भाणा ॥ सभ इछु पुँनी आस पूरी मिले
 सतिगुर पूरिआ ॥ बिनवँति नानक प्रभि आपि मेले फिरि नाही दूख विसूरिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ रामकली महला ५ छँत ॥
 सलोकु ॥ चरन कमल सरणागती अनद मँगल गुण गाम ॥ नानक प्रभु आराधीये बिपति निवारण राम ॥ १ ॥ छँतु ॥
 प्रभ बिपति निवारणो तिसु बिनु अवरु न कोइ जीउ ॥ सदा सदा हरि सिमरीये जलि थलि महीअलि सोइ जीउ ॥ जलि
 थलि महीअलि पूरि रहिआ इक निमख मनु न वीसरै ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे सरब गुण जगदीसरै ॥ करि सेव
 सेवक दिनसुरैणी तिसु भावै सो होइ जीउ ॥ बलि जाइ नानकु सुखह दाते परगासु मनि तनि होइ जीउ ॥ १ ॥ सलोकु
 ॥ हरि सिमरत मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥ नानक टेक गोपाल की गोविंद संकट मोच ॥ १ ॥ छँतु ॥ भै
 संकट काटे नाराइण दइआल जीउ ॥ हरि गुण आनँद गाए प्रभ दीना नाथ प्रतिपाल जीउ ॥ प्रतिपाल अचुत पुरखु एको
 तिसहि सिउ रँगु लागा ॥ कर चरन मसतकु मेलि लीने सदा अनदिनु जागा ॥ जीउ पिँडु छिहु थानु तिस का तनु जोबनु
 धनु मालु जीउ ॥ सद सदा बलि जाइ नानकु सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ २ ॥ सलोकु ॥ रसना उचरै हरि हरे गुण
 गोविंद वखिआन ॥ नानक पकड़ी टेक एक परमेसरु रखै निदान ॥ १ ॥ छँतु ॥ सो सुआमी प्रभु रखको अँचलि ता कै
 लागु जीउ ॥ भजु साधू सँगि दइआल देव मन की मति तिआगु जीउ ॥ इक ओट कीजै जीउ दीजै आस इक धरणीधरै
 ॥

साधसँगे हरि नाम रँगे सँसारु सागरु सभु तरै ॥ जनम मरण बिकार छुटे फिरि न लागै दागु जीउ ॥ बलिं जाइ
नानकु पुरख पूरन थिरु जा का सोहागु जीउ ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ धरम अरथ अरु काम मोख मुकति पदारथ नाथ
॥ सगल मनोरथ पूरिआ नानक लिखिआ माथ ॥ १ ॥ छँतु ॥ सगल इछ मेरी पुँनीआ मिलिआ निरँजन राइ
जीउ ॥ अनदु भइआ वडभागीहो गिहि प्रगटे प्रभ आइ जीउ ॥ गिहि लाल आए पुरबि कमाए ता की उपमा किआ
गणा ॥ बेअँत पूरन सुख सहज दाता कवन रसना गुण भणा ॥ आपे मिलाए गहि कँठि लाए तिसु बिना नही
जाइ जीउ ॥ बलिं जाइ नानकु सदा करते सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ रागु रामकली महला ५ ॥
रणझुँझनडा गाउ सखी हरि एकु धिआवहु ॥ सतिगुर तुम सेवि सखी मनि चिँदिअड़ा फलु पावहु ॥

रामकली महला ५ रुती सलोकु १४ सतिगुर प्रसादि ॥

करि बँदन प्रभ पारब्रहम बाछउ साधह धूरि ॥ आपु निवारि हरि हरि भजउ नानक प्रभ भरपूरि ॥ १ ॥ किलविख
काटण भै हरण सुख सागर हरि राइ ॥ दीन दइआल दुख भँजनो नानक नीत धिआइ ॥ २ ॥ छँतु ॥ जसु
गावहु वडभागीहो करि किरपा भगवँत जीउ ॥ रुती माह मूरत घड़ी गुण उचरत सोभावँत जीउ ॥ गुण रँगे राते
धँनि ते जन जिनी इक मनि धिआइआ ॥ सफल जनमु भइआ तिन का जिनी सो प्रभु पाइआ ॥ पुँन दान न तुलि
किरिआ हरि सरब पापा हँत जीउ ॥ बिनवँति नानक सिमरि जीवा जनम मरण रहँत जीउ ॥ १ ॥ सलोक ॥
उदमु अगमु अगोचरो चरन कमल नमसकार ॥ कथनी सा तुधु भावसी नानक नाम अधार ॥ १ ॥ सँत सरणिं
साजन परहु सुआमी सिमरि अनँत ॥ सूके ते हरिआ थीआ नानक जपि भगवँत ॥ २ ॥ छँतु ॥ रुति सरस
बसँत माह चेतु वैसाख सुख मासु जीउ ॥ हरि जीउ नाहु मिलिआ मउलिआ मनु तनु सासु जीउ ॥

घरि नाहु निहचलु अनदु सखीए चरन कमल प्रफुलिआ ॥ सुंदरु सुघडु सुजाणु बेता गुण गोविंद अमुलिआ ॥ वडभागि
 पाइआ दुखु गवाइआ भई पूरन आस जीउ ॥ बिनवति नानक सरणि तेरी मिटी जम की त्रास जीउ ॥ २ ॥ सलोक ॥
 साधसंगति बिनु भ्रमि मुई करती करम अनेक ॥ कोमल बंधन बाधीआ नानक करमहि लेख ॥ १ ॥ जो भाणे से मेलिआ
 विछोडे भी आपि ॥ नानक प्रभ सरणागती जा का वड परतापु ॥ २ ॥ छंतु ॥ ग्रीखम रुति अति गाखडी जेठ अखाडै
 घाम जीउ ॥ प्रेम बिछोहु दुहागणी दिसटि न करी राम जीउ ॥ नह दिसटि आवै मरत हावै महा गारबि मुठीआ ॥ जल
 बाझु मछुली तडफड़वै सँगि माइआ रुठीआ ॥ करि पाप जोनी भै भीत होई देइ सासन जाम जीउ ॥ बिनवति नानक
 ओट तेरी राखु पूरन काम जीउ ॥ ३ ॥ सलोक ॥ सरधा लागी सँगि प्रीतमै इकु तिलु रहणु न जाइ ॥ मन तन अंतरि
 रवि रहे नानक सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ करु गहि लीनी साजनहि जनम जनम के मीत ॥ चरनह दासी करि लई नानक
 प्रभ हित चीत ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति बरसु सुहेलीआ सावण भादवो आनंद जीउ ॥ घण उनवि वुठे जल थल पूरिआ
 मकरंद जीउ ॥ प्रभु पूरि रहिआ सरब ठाई हरि नाम नव निधि ग्रिह भरे ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी कुल समूहा सभि तरे
 ॥ प्रिअ रँगि जागे नह छिद्र लागे क्रिपालु सद बखसिंदु जीउ ॥ बिनवति नानक हरि कंतु पाइआ सदा मनि भावंदु जीउ
 ॥ ४ ॥ सलोक ॥ आस पिआसी मै फिरउ कब पेखउ गोपाल ॥ है कोई साजनु संत जनु नानक प्रभ मेलणहार ॥ १ ॥
 बिनु मिलबे सांति न ऊपजै तिलु पलु रहणु न जाइ ॥ हरि साधह सरणागती नानक आस पुजाइ ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति
 सरद अडंबरो असू कतके हरि पिआस जीउ ॥ खोजंती दरसनु फिरत कब मिलिऐ गुणतास जीउ ॥ बिनु कंत पिआरे नह
 सूख सारे हार कंडण श्रिगु बना ॥ सुंदरि सुजाणि चतुरि बेती सास बिनु जैसे तना ॥ ईत उत दह दिस अलोकन मनि
 मिलन की प्रभ पिआस जीउ ॥ बिनवति नानक धारि किरपा मेलहु प्रभ गुणतास जीउ ॥ ५ ॥ सलोक ॥

जलणि बुझी सीतल भए मनि तनि उपजी सांति ॥ नानक प्रभ पूरन मिले दूतीआ बिनसी भ्रांति ॥ १ ॥ साध पठाए आपि
 हरिं हम तुम ते नाही दूरि ॥ नानक भ्रम भै मिटि गए रमण राम भरपूरि ॥ २ ॥ छँतु ॥ रुति सिसीअर सीतल हरिं प्रगटे
 मँघर पोहि जीउ ॥ जलनि बुझी दरसु पाइआ बिनसे माइआ धोह जीउ ॥ सभिं काम पूरे मिलिं हजुरे हरिं चरण सेवकि
 सेविआ ॥ हार डोर सीगार सभिं रस गुण गाउ अलख अभेविआ ॥ भाउ भगति गोविंद बांछत जमु न साकै जोहि जीउ ॥
 बिनवँति नानक प्रभिं आपि मेली तह न प्रेम बिछोह जीउ ॥ ६ ॥ सलोक ॥ हरि धनु पाइआ सोहागणी डोलत नाही चीत
 ॥ सँत सँजोगी नानका छिहि प्रगटे प्रभ मीत ॥ १ ॥ नाद बिनोद अनँद कोड प्रिअ प्रीतम सँगि बने ॥ मन बांछत फल
 पाइआ हरि नानक नाम भने ॥ २ ॥ छँतु ॥ हिमकर रुति मनि भावती माघु फगणु गुणवँत जीउ ॥ सखी सहेली गाउ
 मँगलो छिहि आए हरि कँत जीउ ॥ छिहि लाल आए मनि धिआए सेज सुँदरि सोहीआ ॥ वणु त्रिणु त्रिभवण भए हरिआ
 देखिं दरसन मोहीआ ॥ मिले सुआमी इछ पुँनी मनि जपिआ निरमल मँत जीउ ॥ बिनवँति नानक नित करहु रलीआ हरिं
 मिले स्त्रीधर कँत जीउ ॥ ७ ॥ सलोक ॥ सँत सहाई जीअ के भवजल तारणहार ॥ सभ ते ऊचे जाणीअहि नानक नाम
 पिआर ॥ १ ॥ जिनि जानिआ सेई तरे से सूरै से बीर ॥ नानक तिन बलिहारणै हरि जपि उतरे तीर ॥ २ ॥ छँतु ॥ चरण
 बिराजित सभ ऊपरे मिटिआ सगल कलेसु जीउ ॥ आवण जावण दुख हरे हरि भगति कीआ परवेसु जीउ ॥ हरि रँगि राते
 सहजिं माते तिलु न मन ते बीसरै ॥ तजिं आपु सरणी परे चरनी सरब गुण जगदीसरै ॥ गोविंद गुण निधि स्त्रीरँग सुआमी
 आदि कउ आदेसु जीउ ॥ बिनवँति नानक मइआ धारहु जुगु जुगो इक वेसु जीउ ॥ ८ ॥ १ ॥ ६ ॥ ८ ॥

रामकली महला १ दखणी ओअँकारु १९ सितिगुर प्रसादि ॥

ओअँकारि ब्रहमा उतपति ॥ ओअँकारु कीआ जिनि चिति ॥ ओअँकारि सैल जुग भए ॥ ओअँकारि बेद

निरमए ॥ ओअँकारि सबदि उधरे ॥ ओअँकारि गुरमुखि तरे ॥ ओनम अखर सुणहु बीचारु ॥ ओनम अखरु त्रिभवण
 सारु ॥ १ ॥ सुणि पाडे किआ लिखहु जँजाला ॥ लिखु राम नाम गुरमुखि गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ससै सभु जगु
 सहजि उपाइआ तिनि भवन इक जोती ॥ गुरमुखि वसतु परापति होवै चुणि लै माणक मोती ॥ समझै सूझै पड़ि पड़ि बूझै
 अँति निरँतरि साचा ॥ गुरमुखि देखै साचु समाले बिनु साचे जगु काचा ॥ २ ॥ धधै धरमु धरे धरमापुरि गुणकारी मनु
 धीरा ॥ धधै धूलि पड़ै मुखि मसतकि कँचन भए मनूरा ॥ धनु धरणीधरु आपि अजोनी तोलि बोलि सचु पूरा ॥ करते की
 मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सूरा ॥ ३ ॥ डिआनु गवाइआ दूजा भाइआ गरबि गले बिखु खाइआ ॥ गुर रसु गीत
 बाद नही भावै सुणीरे गहिर गँभीरु गवाइआ ॥ गुरि सचु कहिआ अँमितु लहिआ मनि तनि साचु सुखाइआ ॥ आपे
 गुरमुखि आपे देवै आपे अँमितु पीआइआ ॥ ४ ॥ एको एकु कहै सभु कोई हउमै गरबु विआपै ॥ अँतरि बाहरि एकु पछाणै
 इउ घरु महलु सिजापै ॥ प्रभु नेडै हरि दुरि न जाणहु एको सिंसटि सबाई ॥ एकँकारु अवरु नही दूजा नानक एकु समाई
 ॥ ५ ॥ इसु करते कउ किउ गहि राखउ अफरिओ तुलिओ न जाई ॥ माइआ के देवाने प्राणी झूठि ठगउरी पाई ॥ लबि
 लोभि मुहताजि विगूते इब तब फिरि पछुताई ॥ एकु सरेवै ता गति मिति पावै आवणु जाणु रहाई ॥ ६ ॥ एकु अचारु रँगु
 इकु रूपु ॥ पउण पाणी अगनी असरूपु ॥ एको भवरु भवै तिहु लोइ ॥ एको बूझै सूझै पति होइ ॥ गिआनु धिआनु ले
 समसरि रहै ॥ गुरमुखि एकु विरला को लहै ॥ जिस नो देइ किरपा ते सुखु पाए ॥ गुरू दूआरै आखि सुणाए ॥ ७ ॥
 ऊरम धूरम जोति उजाला ॥ तीनि भवण महि गुर गोपाला ॥ ऊगविआ असरूपु दिखावै ॥ करि किरपा अपुनै घरि
 आवै ॥ ऊनवि बरसै नीझर धारा ॥ ऊतम सबदि सवारणहारा ॥ इसु एके का जाणै भेउ ॥ आपे करता आपे देउ ॥ ८
 ॥ उगवै सूरु असुर सँघारै ॥ ऊचउ देखि सबदि बीचारै ॥ ऊपरि आदि अँति तिहु लोइ ॥ आपे करै कथै सुणै

सोइ ॥ ओहु बिधाता मनु तनु देइ ॥ ओहु बिधाता मनि मुखि सोइ ॥ प्रभु जगजीवनु अवरु न कोइ ॥ नानक नामि रते
 पति होइ ॥ ९ ॥ राजन राम रवै हितकारि ॥ रण महि लूझै मनुआ मारि ॥ राति दिनति रहै रंगि राता ॥ तीनि भवन
 जुग चारे जाता ॥ जिनि जाता सो तिस ही जेहा ॥ अति निर्माइलु सीझसि देहा ॥ रहसी रामु रिदै इक भाइ ॥ अंतरि
 सबदु साचि लिव लाइ ॥ १० ॥ रोसु न कीजै अँप्रितु पीजै रहणु नही संसारे ॥ राजे राइ रँक नही रहणा आइ जाइ जुग
 चारे ॥ रहण कहण ते रहै न कोई किसु पहि करउ बिनँती ॥ एकु सबदु राम नाम निरोधरु गुर देवै पति मती ॥ ११ ॥
 लाज मरँती मरि गई घूघटु खोलि चली ॥ सासु दिवानी बावरी सिर ते संक टली ॥ प्रेमि बुलाई रली सिउ मन महि सबदु
 अनँदु ॥ लालि रती लाली भई गुरमुखि भई निचिँदु ॥ १२ ॥ लाहा नामु रतनु जपि सारु ॥ लबु लोभु बुरा अहँकारु ॥
 लाड़ी चाड़ी लाइतबारु ॥ मनमुखु अँधा मुगधु गवारु ॥ लाहे कारणि आइआ जगि ॥ होइ मजरु गइआ ठगाइ ठगि ॥
 लाहा नामु पूँजी वेसाहु ॥ नानक सची पति सचा पातिसाहु ॥ १३ ॥ आइ विगूता जगु जम पँथु ॥ आई न मेटण को
 समरथु ॥ आथि सैल नीच घरि होइ ॥ आथि देखि निवै जिसु दोइ ॥ आथि होइ ता मुगधु सिआना ॥ भगति बिहूना
 जगु बउराना ॥ सभ महि वरतै एको सोइ ॥ जिस नो किरपा करे तिसु परगटु होइ ॥ १४ ॥ जुगि जुगि थापि सदा
 निरवैरु ॥ जनमि मरणि नही धँधा धैरु ॥ जो दीसै सो आपे आपि ॥ आपि उपाइ आपे घट थापि ॥ आपि अगोचरु
 धँधै लोई ॥ जोग जुगति जगजीवनु सोई ॥ करि आचारु सचु सुखु होई ॥ नाम विहूणा मुकति किव होई ॥ १५ ॥
 विणु नावै वेरोधु सरीर ॥ किउ न मिलहि काटहि मन पीर ॥ वाट वटाऊ आवे जाइ ॥ किआ ले आइआ किआ पलै पाइ
 ॥ विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥ लाहा मिलै जा देइ बुझाइ ॥ वणजु वापारु वणजै वापारी ॥ विणु नावै कैसी पति सारी
 ॥ १६ ॥ गुण वीचारे गिआनी सोइ ॥ गुण महि गिआनु परापति होइ ॥ गुणदाता विरला संसारि ॥ साची करणी गुर

वीचारि ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाइ ॥ ता मिलीरे जा लए मिलाइ ॥ गुणवँती गुण सारे नीत ॥ नानक गुरमति
 मिलिरे मीत ॥ १७ ॥ कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥ जिउ कँचन सोहागा ढालै ॥ कसि कसवटी सहै सु ताउ ॥ नदरि सराफ
 वँनी सचड़ाउ ॥ जगतु पसू अहँ कालु कसाई ॥ करि करतै करणी करि पाई ॥ जिनि कीती तिनि कीमति पाई ॥ होर किआ
 कहीरे किछु कहणु न जाई ॥ १८ ॥ खोजत खोजत अँम्रितु पीआ ॥ खिमा गही मनु सतिगुरि दीआ ॥ खरा खरा आखै सभु
 कोइ ॥ खरा रतनु जुग चारे होइ ॥ खात पीअँत मूए नही जानिआ ॥ खिन महि मूए जा सबदु पछानिआ ॥ असथिरु चीतु
 मरनि मनु मानिआ ॥ गुर किरपा ते नामु पछानिआ ॥ १९ ॥ गगन गँभीरु गगनंतरि वासु ॥ गुण गावै सुख सहजि निवासु
 ॥ गइआ न आवै आइ न जाइ ॥ गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥ गगनु अगँमु अनाथु अजोनी ॥ असथिरु चीतु समाधि
 सगोनी ॥ हरि नामु चेति फिरि पवहि न जूनी ॥ गुरमति सारु होर नाम बिहूनी ॥ २० ॥ घर दर फिरि थाकी बहुतेरे ॥
 जाति असँख अँत नही मेरे ॥ केते मात पिता सुत धीआ ॥ केते गुर चले फुनि हूआ ॥ काचे गुर ते मुकति न हूआ ॥ केती
 नारि वरु एकु समालि ॥ गुरमुखि मरणु जीवणु प्रभ नालि ॥ दह दिस ढूढि घरै महि पाइआ ॥ मेलु भइआ सतिगुरु
 मिलाइआ ॥ २१ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि बोलै ॥ गुरमुखि तोलि तोलावै तोलै ॥ गुरमुखि आवै जाइ निसँगु ॥ परहरि
 मैलु जलाइ कलँकु ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ गुरमुखि मजनु चजु अचारु ॥ गुरमुखि सबदु अँम्रितु हत सारु ॥ नानक
 गुरमुखि पावै पारु ॥ २२ ॥ चँचलु चीतु न रहई ठाइ ॥ चोरी मिरगु अँगूरी खाइ ॥ चरन कमल उर धारे चीत ॥ चिरु
 जीवनु चेतनु नित नीत ॥ चिँतत ही दीसै सभु कोइ ॥ चेतहि एकु तही सुखु होइ ॥ चिति वसै राचै हरि नाइ ॥ मुकति भइआ
 पति सिउ घरि जाइ ॥ २३ ॥ छीजै देह खुलै इक गँढि ॥ छेआनित देखहु जगि हँढि ॥ धूप छाव जे सम करि जाणै ॥ बँधन
 काटि मुकति घरि आणै ॥ छाइआ छूछी जगतु भुलाना ॥ लिखिआ किरतु धुरे परवाना ॥ छीजै जोबनु जरुआ

सिरि कालु ॥ काइआ छीजै भई सिबालु ॥ २४ ॥ जापै आपि प्रभू तिहु लोइ ॥ जुगि जुगि दाता अवरु न कोइ ॥ जिउ
 भावै तिउ राखहि राखु ॥ जसु जाचउ देवै पति साखु ॥ जागतु जागि रहा तुधु भावा ॥ जा तू मेलहि ता तुझै समावा ॥
 जै जैकारु जपउ जगदीस ॥ गुरुमति मिलिऐ बीस इकीस ॥ २५ ॥ झखि बोलणु किआ जग सिउ वादु ॥ झूरि मरै देखै
 परमादु ॥ जनमि मूरु नहीं जीवण आसा ॥ आइ चले भए आस निरासा ॥ झुरि झुरि झखि माटी रलिं जाइ ॥ कालु न
 चापै हरि गुण गाइ ॥ पाई नव निधि हरि कै नाइ ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ २६ ॥ जिआनो बोलै आपे बूझै ॥ आपे
 समझै आपे सूझै ॥ गुरु का कहिआ अँकि समावै ॥ निरमल सूछे साचो भावै ॥ गुरु सागरु रतनी नहीं तोट ॥ लाल
 पदारथु साचु अखोट ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ गुरु की करणी काहे धावहु ॥ नानक गुरुमुखि साचि समावहु ॥
 २७ ॥ टूटै नेहु कि बोलहि सही ॥ टूटै बाह दुहु दिस गही ॥ टूटि परीति गई बुर बोलि ॥ दुर्मति परहरि छाडी ढोलि ॥
 टूटै गँठि पड़ै वीचारि ॥ गुरु सबदी घरि कारजु सारि ॥ लाहा साचु न आवै तोटा ॥ त्रिभवण ठाकुरु प्रीतमु मोटा ॥ २८
 ॥ ठाकहु मनूआ राखहु ठाइ ॥ ठहकि मुई अवगुणि पछुताइ ॥ ठाकुरु एकु सबाई नारि ॥ बहुते वेस करे कूड़िआरि ॥
 पर घरि जाती ठाकि रहाई ॥ महलि बुलाई ठाक न पाई ॥ सबदि सवारी साचि पिआरी ॥ साई सोहागणि ठाकुरि धारी
 ॥ २९ ॥ डोलत डोलत हे सखी फाटे चीर सीगार ॥ डाहपणि तनि सुखु नहीं बिनु डर बिणठी डार ॥ डरपि मुई घरि
 आपणै डीठी कँति सुजाणि ॥ डरु राखिआ गुरि आपणै निरभउ नामु वखाणि ॥ डूगरि वासु तिखा घणी जब देखा नहीं
 दूरि ॥ तिखा निवारी सबदु मँनि अँमितु पीआ भरपूरि ॥ देहि देहि आखै सभु कोई जै भावै तै देइ ॥ गुरु दुआरै देवसी
 तिखा निवारै सोइ ॥ ३० ॥ ढँढोलत ढूढत हउ फिरी ढहि ढहि पवनि करारि ॥ भारे ढहते ढहि पए हउले निकसे पारि ॥
 अमर अजाची हरि मिले तिन कै हउ बलिं जाउ ॥ तिन की धूड़ि अघुलीऐ संगति मेलिं मिलाउ ॥ मनु दीआ गुरि आपणै

पाइआ निरमल नाउ ॥ जिनि नामु दीआ तिसु सेवसा तिसु बलिहरै जाउ ॥ जो उसारे सो ढाहसी तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥
 ॥ गुर परसादी तिसु सँमहला ता तनि दूकु न होइ ॥ ३१ ॥ णा को मेरा किसु गही णा को होआ न होगु ॥ आवणि जाणि
 विगुचीरे दुबिधा विआपै रोगु ॥ णाम विहूणे आदमी कलर कँध गिरँति ॥ विणु नावै किउ छूटीरे जाइ रसातलि अँति ॥
 गणत गणावै अखरी अगणतु साचा सोइ ॥ अगिआनी मतिहीणु है गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ तूटी तँतु खाब की वाजै
 नही विजोगि ॥ विछुड़िआ मेलै प्रभू नानक करि सँजोग ॥ ३२ ॥ तरवरु काइआ पँखि मनु तरवरि पँखी पँच ॥ ततु
 चुगहि मिलि एकसे तिन कउ फास न रँच ॥ उडहि त बेगुल बेगुले ताकहि चोग घणी ॥ पँख तुटे फाही पड़ी अवगुणि भीड़
 बणी ॥ बिनु साचे किउ छूटीरे हरि गुण करमि मणी ॥ आपि छडाए छूटीरे वडा आपि धणी ॥ गुर परसादी छूटीरे किरपा
 आपि करेइ ॥ अपणै हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ ३३ ॥ थर थर कँपै जीअड़ा थान विहूणा होइ ॥ थानि मानि सचु
 एकु है काजु न फीटै कोइ ॥ थिरु नाराइणु थिरु गुरू थिरु साचा बीचारु ॥ सुरि नर नाथह नाथु तू निधारा आधारु ॥
 सरबे थान थनँतरी तू दाता दातारु ॥ जह देखा तह एकु तू अँतु न पारावारु ॥ थान थनँतरि रवि रहिआ गुर सबदी
 वीचारि ॥ अणमँगिआ दानु देवसी वडा अगम अपारु ॥ ३४ ॥ दइआ दानु दइआलु तू करि करि देखणहारु ॥ दइआ
 करहि प्रभ मेलि लैहि खिन महि ढाहि उसारि ॥ दाना तू बीना तुही दाना कै सिरि दानु ॥ दालद भँजन दुख दलण गुरमुखि
 गिआनु धिआनु ॥ ३५ ॥ धनि गइरे बहि झूरीरे धन महि चीतु गवार ॥ धनु विरली सचु सँचिआ निरमलु नामु पिआरि
 ॥ धनु गइआ ता जाण देहि जे राचहि रँगि एक ॥ मनु दीजै सिरु सउपीरे भी करते की टेक ॥ धँधा धावत रहि गए मन
 महि सबदु अनँदु ॥ दुरजन ते साजन भए भेटे गुर गोविँद ॥ बनु बनु फिरती दूढती बसतु रही घरि बारि ॥ सतिगुरि मेली
 मिलि रही जनम मरण दुखु निवारि ॥ ३६ ॥ नाना करत न छूटीरे विणु गुण जम पुरि जाहि ॥ ना तिसु एहु

न ओहु है अवगुणि फिरि पछुताहि ॥ ना तिसु गिआनु न धिआनु है ना तिसु धरमु धिआनु ॥ विणु नावै निरभउ कहा
 किआ जाणा अभिमानु ॥ थाकि रही किव अपड़ा हाथ नही ना पारु ॥ ना साजन से रँगुले किसु पहि करी पुकार ॥
 नानक प्रिउ प्रिउ जे करी मेले मेलणहारु ॥ जिनि विछोडी सो मेलसी गुर कै हेति अपारि ॥ ३७ ॥ पापु बुरा पापी कउ
 पिआरा ॥ पापि लदे पापे पासारा ॥ परहरि पापु पछाणै आपु ॥ ना तिसु सोगु विजोगु संतापु ॥ नरकि पड़ंतउ किउ रहै
 किउ बँचै जमकालु ॥ किउ आवण जाणा वीसरै झूठु बुरा खैकालु ॥ मनु जँजाली वेड़िआ भी जँजाला माहि ॥ विणु नावै
 किउ छूटीरे पापे पचहि पचाहि ॥ ३८ ॥ फिरि फिरि फाही फासै कऊआ ॥ फिरि पछुताना अब किआ हूआ ॥ फाथा
 चोग चुगै नही बूझै ॥ सतगुरु मिलै त आखी सूझै ॥ जिउ मछुली फाथी जम जालि ॥ विणु गुर दाते मुकति न भालि ॥
 फिरि फिरि आवै फिरि फिरि जाइ ॥ इक रँगि रचै रहै लिव लाइ ॥ इव छूटै फिरि फास न पाइ ॥ ३९ ॥ बीरा बीरा करि
 रही बीर भए बैराइ ॥ बीर चले घरि आपणै बहिण बिरहि जलि जाइ ॥ बाबुल कै घरि बेटडी बाली बालै नेहि ॥ जे लोड़हि
 वरु कामणी सतिगुरु सेवहि तेहि ॥ बिरलो गिआनी बूझणउ सतिगुरु साचि मिलेइ ॥ ठाकुर हाथि वडाईआ जै भावै तै
 देइ ॥ बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥ इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥ ४० ॥ भनि भनि
 घड़ीरे घड़ि घड़ि भजै ढाहि उसारै उसरे ढाहै ॥ सर भरि सोखै भी भरि पोखै समरथ वेपरवाहै ॥ भरमि भुलाने भए दिवाने
 विणु भागा किआ पाईरे ॥ गुरमुखि गिआनु डोरी प्रभि पकड़ी जिनि खिँचै तिन जाईरे ॥ हरि गुण गाइ सदा रँगि राते
 बहुड़ि न पछोताईरे ॥ भभै भालहि गुरमुखि बूझहि ता निज घरि वासा पाईरे ॥ भभै भउजलु मारगु विखड़ा आस
 निरासा तरीरे ॥ गुर परसादी आपो चीनैह जीवतिआ इव मरीरे ॥ ४१ ॥ माइआ माइआ करि मुए माइआ किसै न साथि
 ॥ हँसु चलै उठि डुमणो माइआ भूली आथि ॥ मनु झूठा जमि जोहिआ अवगुण चलहि नालि ॥ मन महि मनु उलटो

मरै जे गुण होवहि नालिं ॥ मेरी मेरी करि मुए विणु नावै दुखु भालिं ॥ गड़ मँदर महला कहा जिउ बाजी दीबाणु ॥ नानक
 सचे नाम विणु झूठा आवण जाणु ॥ आपे चतुरु सरूपु है आपे जाणु सुजाणु ॥ ४२ ॥ जो आवहि से जाहि फुनि आइ
 गए पछुताहि ॥ लख चउरासीह मेदनी घटै न वधै उताहि ॥ से जन उबरे जिन हरि भाइआ ॥ धँधा मुआ विगूती माइआ
 ॥ जो दीसै सो चालसी किस कउ मीतु करेउ ॥ जीउ समपउ आपणा तनु मनु आगै देउ ॥ असथिरु करता तू धणी तिस
 ही की मै ओट ॥ गुण की मारी हउ मुई सबदि रती मनि चोट ॥ ४३ ॥ राणा राउ न को रहै रँगु न तुँगु फकीरु ॥ वारी
 आपो आपणी कोइ न बँधै धीर ॥ राहु बुरा भीहावला सर डूगर असगाह ॥ मै तनि अवगण झुरिं मुई विणु गुण किउ घरि
 जाह ॥ गुणीआ गुण ले प्रभ मिले किउ तिन मिलउ पिआरि ॥ तिन ही जैसी थी रहा जपि जपि रिदै मुरारि ॥ अवगुणी
 भरपूर है गुण भी वसहि नालिं ॥ विणु सतगुर गुण न जापनी जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ ४४ ॥ लसकरीआ घर
 सँमले आए वजहु लिखाइ ॥ कार कमावहि सिरि धणी लाहा पलै पाइ ॥ लबु लोभु बुरिआईआ छोडे मनहु विसारि ॥ गड़ि
 दोही पातिसाह की कदे न आवै हारि ॥ चाकरु कहीऐ खसम का सउहे उतर देइ ॥ वजहु गवाए आपणा तखति न बैसहि
 सेइ ॥ प्रीतम हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ आपि करे किसु आखीऐ अवरु न कोइ करेइ ॥ ४५ ॥ बीजउ सूझै को
 नही बहै दुलीचा पाइ ॥ नरक निवारणु नरह नरु साचउ साचै नाइ ॥ वणु त्रिणु दूढत फिरि रही मन महि करउ बीचारु ॥
 लाल रतन बहु माणकी सतिगुर हाथि भँडारु ॥ ऊतमु होवा प्रभु मिलै इक मनि एकै भाइ ॥ नानक प्रीतम रसि मिले लाहा
 लै परथाइ ॥ रचना राचि जिनि रची जिनि सिरिआ आकारु ॥ गुरमुखिं बेअँतु धिआईऐ अँतु न पारावारु ॥ ४६ ॥ ड़ाँडै
 रूड़ा हरि जीउ सोई ॥ तिसु बिनु राजा अवरु न कोई ॥ ड़ाँडै गारुडु तुम सुणहु हरि वसै मन माहि ॥ गुर परसादी हरि
 पाईऐ मतु को भरमि भुलाहि ॥ सो साहु साचा जिसु हरि धनु रासि ॥ गुरमुखि पूरा तिसु साबासि ॥ रूड़ी बाणी

हरि पाइआ गुर सबदी बीचारि ॥ आपु गइआ दुखु कटिआ हरि वरु पाइआ नारि ॥ ४७ ॥ सुइना रुपा सँचीरे धनु काचा
 बिखु छारु ॥ साहु सदाए सँचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥ सचिआरी सचु सँचिआ साचउ नामु अमोलु ॥ हरि निरमाइलु
 ऊजलो पति साची सचु बोलु ॥ साजनु मीतु सुजाणु तू तू सरवरु तू हँसु ॥ साचउ ठाकुरु मनि वसै हउ बलिहारी तिसु ॥
 माइआ ममता मोहणी जिनि कीती सो जाणु ॥ बिखिआ अँमितु एकु है बूझै पुरखु सुजाणु ॥ ४८ ॥ खिमा विहूण खपि
 गए खूहणि लख असँख ॥ गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसँख ॥ खसमु पछाणै आपणा खूलै बँधु न पाइ ॥
 सबदि महली खरा तू खिमा सचु सुख भाइ ॥ खरचु खरा धनु धिआनु तू आपे वसहि सरीरि ॥ मनि तनि मुखि जापै सदा
 गुण अँतरि मनि धीर ॥ हउमै खपै खपाइसी बीजउ वथु विकारु ॥ जँत उपाइ विचि पाइअनु करता अलगु अपारु ॥ ४९
 ॥ खिसटे भेउ न जाणै कोइ ॥ खिसटा करै सु निहचउ होइ ॥ सँपै कउ ईसरु धिआईरे ॥ सँपै पुरबि लिखे की पाईरे ॥
 सँपै कारणे चाकर चोर ॥ सँपै साथि न चालै होर ॥ बिनु साचे नही दरगह मानु ॥ हरि रसु पीवै छुटै निदानि ॥ ५० ॥
 हेरत हेरत हे सखी होइ रही हैरानु ॥ हउ हउ करती मै मुई सबदि रवै मनि गिआनु ॥ हार डोर कँकन घणे करि थाकी
 सीगारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सगल गुणा गलि हारु ॥ नानक गुरमुखि पाईरे हरि सिउ प्रीति पिआरु ॥ हरि
 बिनु किनि सुखु पाइआ देखहु मनि बीचारि ॥ हरि पड़ना हरि बुझना हरि सिउ रखहु पिआरु ॥ हरि जपीरे हरि धिआईरे
 हरि का नामु अधारु ॥ ५१ ॥ लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि ॥ आपे कारणु जिनि कीआ करि किरपा पगु
 धारि ॥ करते हथि वडिआईआ बूझहु गुर बीचारि ॥ लिखिआ फेरि न सकीरे जिउ भावी तिउ सारि ॥ नदरि तेरी सुखु
 पाइआ नानक सबदु वीचारि ॥ मनमुख भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥ जि पुरखु नदरि न आवई तिस का किआ
 कहिआ जाइ ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि हिरदै दिता दिखाइ ॥ ५२ ॥ पाथा पड़िआ आखीरे बिदिआ

बिचरै सहजि सुभाइ ॥ बिदिआ सोधै ततु लहै राम नाम लिव लाइ ॥ मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥
 मूरख सबदु न चीनई सूझ बूझ नह काइ ॥ ५३ ॥ पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥ नामु समालहु नामु
 सँगरहु लाहा जग महि लेइ ॥ सची पटी सचु मनि पड़ीऐ सबदु सु सारु ॥ नानक सो पड़िआ सो पँडितु बीना जिसु राम
 नामु गलिहारु ॥ ५४ ॥ १ ॥

रामकली महला १ सिध गोसति १८ सतिगुर प्रसादि ॥

सिध सभा करि आसणि बैठे सँत सभा जैकारो ॥ तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥ मसतकु काटि धरी
 तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥ नानक सँत मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥ १ ॥ किआ भवीऐ सचि सूचा होइ
 ॥ साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन तुमे किआ नाउ तुमारा कउनु मारगु कउनु सुआओ ॥ साचु
 कहउ अरदासि हमारी हउ सँत जना बलि जाओ ॥ कह बैसहु कह रहीऐ बाले कह आवहु कह जाहो ॥ नानकु बोलै सुणि
 बैरागी किआ तुमारा राहो ॥ २ ॥ घटि घटि बैसि निरँतरि रहीऐ चालहि सतिगुर भाए ॥ सहजे आए हुकमि सिधाए
 नानक सदा रजाए ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु ऐसी गुरमति पाए ॥ गुरमुखि बूझै आपु पछाणै सचे सचि समाए ॥
 ३ ॥ दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो ॥ चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ॥ आपे आखै
 आपे समझै तिसु किआ उतरु दीजै ॥ साचु कहहु तुम पारगरामी तुझ किआ बैसणु दीजै ॥ ४ ॥ जैसे जल महि कमलु
 निरालमु मुरगाई नै साणे ॥ सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ रहहि इकांति एको मनि वसिआ
 आसा माहि निरासो ॥ अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानकु ता का दासो ॥ ५ ॥ सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ
 साचु बीचारो ॥ रोसु न कीजै उतरु दीजै किउ पाईऐ गुर दुआरो ॥ इहु मनु चलतउ सच घरि बैसे नानक नामु अधारो ॥
 आपे मेलि मिलाए करता लागै साचि पिआरो ॥ ६ ॥ हाटी बाटी रहहि निरालो रूखि बिरखि उदिआने ॥ कँद मूलु

अहारो खाईरे अउधू बोलै गिआने ॥ तीरथि नाईरे सुखु फलु पाईरे मैलु न लागै काई ॥ गोरख पूतु लोहारीपा बोलै जोग
 जुगति बिधि साई ॥ ७ ॥ हाटी बाटी नीद न आवै पर घरि चितु न डोलाई ॥ बिनु नावै मनु टेक न टिकई नानक भूख न
 जाई ॥ हाटु पटणु घरु गुरू दिखाइआ सहजे सचु वापारो ॥ खँडित निद्रा अल्प अहारँ नानक ततु बीचारो ॥ ८ ॥
 दरसन भेख करहु जोगिंद्रा मुँद्रा झोली खिँथा ॥ बाहर अंतरि एकु सरेवहु खटु दरसन इक पँथा ॥ इन बिधि मनु समझाईरे
 पुरखा बाहुडि चोट न खाईरे ॥ नानकु बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इव पाईरे ॥ ९ ॥ अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै
 ममता दूरि करी ॥ कामु क्रोधु अहंकार निवारै गुर कै सबदि सु समझ परी ॥ खिँथा झोली भरिपुरि रहिआ नानक तारै एकु
 हरी ॥ साचा साहिबु साची नाई परखै गुर की बात खरी ॥ १० ॥ ऊंधउ खपरु पंच भू टोपी ॥ कांइआ कड़ासणु मनु
 जागोटी ॥ सतु संतोखु संजमु है नालि ॥ नानक गुरमुखि नामु समालि ॥ ११ ॥ कवनु सु गुपता कवनु सु मुकता ॥
 कवनु सु अंतरि बाहरि जुगता ॥ कवनु सु आवै कवनु सु जाइ ॥ कवनु सु त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥ १२ ॥ घटि घटि
 गुपता गुरमुखि मुकता ॥ अंतरि बाहरि सबदि सु जुगता ॥ मनमुखि बिनसै आवै जाइ ॥ नानक गुरमुखि साचि समाइ ॥
 १३ ॥ किउ करि बाधा सरपनि खाधा ॥ किउ करि खोइआ किउ करि लाधा ॥ किउ करि निरमलु किउ करि अँधिआरा ॥
 इहु ततु बीचारै सु गुरू हमारा ॥ १४ ॥ दुस्मति बाधा सरपनि खाधा ॥ मनमुखि खोइआ गुरमुखि लाधा ॥ सतिगुरु मिलै
 अँधेरा जाइ ॥ नानक हउमै मेटि समाइ ॥ १५ ॥ सुँन निरंतरि दीजै बँधु ॥ उडै न हँसा पडै न कँधु ॥ सहज गुफा घरु
 जाणै साचा ॥ नानक साचे भावै साचा ॥ १६ ॥ किसु कारणि गिहु तजिओ उदासी ॥ किसु कारणि इहु भेखु निवासी ॥
 किसु वखर के तुम वणजारे ॥ किउ करि साथु लँघावहु पारे ॥ १७ ॥ गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥ दरसन कै ताई भेख
 निवासी ॥ साच वखर के हम वणजारे ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥ १८ ॥ कितु बिधि पुरखा जनमु वटाइआ ॥

काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ ॥ किंतु बिधि आसा मनसा खाई ॥ किंतु बिधि जोति निरंतरि पाई ॥ बिनु दंता किउ
 खाईऐ सारु ॥ नानक साचा करहु बीचारु ॥ १९ ॥ सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ ॥ अनहति राते इहु मनु लाइआ
 ॥ मनसा आसा सबदि जलाई ॥ गुरमुखि जोति निरंतरि पाई ॥ त्रै गुण मेटे खाईऐ सारु ॥ नानक तारे तारणहारु ॥
 २० ॥ आदि कउ कवनु बीचारु कथीअले सुंन कहा घर वासो ॥ गिआन की मुद्रा कवन कथीअले घटि घटि कवन
 निवासो ॥ काल का ठीगा किउ जलाईअले किउ निरभउ घरि जाईऐ ॥ सहज संतोख का आसणु जाणै किउ छेदे बैराईऐ
 ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निज घरि होवै वासो ॥ जिनि रचि रचिआ तिसु सबदि पछाणै नानकु ता का दासो ॥
 २१ ॥ कहा ते आवै कहा इहु जावै कहा इहु रहै समाई ॥ एसु सबद कउ जो अरथावै तिसु गुर तिलु न तमाई ॥ किउ ततै
 अविगतै पावै गुरमुखि लगै पिआरो ॥ आपे सुरता आपे करता कहु नानक बीचारो ॥ हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै
 समाई ॥ पूरे गुर ते साचु कमावै गति मिति सबदे पाई ॥ २२ ॥ आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले सुंन निरंतरि वासु
 लीआ ॥ अकलपत मुद्रा गुर गिआनु बीचारीअले घटि घटि साचा सरब जीआ ॥ गुर बचनी अविगति समाईऐ ततु
 निरंजनु सहजि लहै ॥ नानक दूजी कार न करणी सेवै सिखु सु खोजि लहै ॥ हुकमु बिसमादु हुकमि पछाणै जीअ जुगति
 सचु जाणै सोई ॥ आपु मेटि निरालमु होवै अंतरि साचु जोगी कहीऐ सोई ॥ २३ ॥ अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण
 ते सरगुण थीआ ॥ सतिगुर परचै परम पदु पाईऐ साचै सबदि समाइ लीआ ॥ एके कउ सचु एका जाणै हउमै दूजा दूरि
 कीआ ॥ सो जोगी गुर सबदु पछाणै अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ॥ जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै अंतरि जाणै सरब
 दइआ ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई आपु पछाणै सरब जीआ ॥ २४ ॥ साचौ उपजै साचि समावै साचे सूचे एक मइआ
 ॥ झूठे आवहि ठवर न पावहि दूजै आवा गउणु भइआ ॥ आवा गउणु मिटै गुर सबदी आपे परखै बखसि लइआ ॥

एका बेदन दूजै बिआपी नामु रसाइणु वीसरिआ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए गुर कै सबदि सु मुकतु भइआ ॥ नानक तारे
 तारणहारा हउमै दूजा परहरिआ ॥ २५ ॥ मनमुखि भूलै जम की काणि ॥ पर घरु जोहै हाणे हाणि ॥ मनमुखि भरमि
 भवै बेबाणि ॥ वेमारगि मूसै मंत्रि मसाणि ॥ सबदु न चीनै लवै कुबाणि ॥ नानक साचि रते सुखु जाणि ॥ २६ ॥
 गुरमुखि साचे का भउ पावै ॥ गुरमुखि बाणी अघडु घड़ावै ॥ गुरमुखि निरमल हरि गुण गावै ॥ गुरमुखि पवित्रु परम पदु
 पावै ॥ गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि साचि समावै ॥ २७ ॥ गुरमुखि परचै बेद बीचारी ॥ गुरमुखि
 परचै तरीऐ तारी ॥ गुरमुखि परचै सु सबदि गिआनी ॥ गुरमुखि परचै अंतर बिधि जानी ॥ गुरमुखि पाईऐ अलख
 अपारु ॥ नानक गुरमुखि मुकति दुआरु ॥ २८ ॥ गुरमुखि अकथु कथै बीचारि ॥ गुरमुखि निबहै सपरवारि ॥
 गुरमुखि जपीऐ अंतरि पिआरि ॥ गुरमुखि पाईऐ सबदि अचारि ॥ सबदि भेदि जाणै जाणाई ॥ नानक हउमै जालि समाई
 ॥ २९ ॥ गुरमुखि धरती साचै साजी ॥ तिस महि ओपति खपति सु बाजी ॥ गुर कै सबदि रपै रंगु लाइ ॥ साचि रतउ
 पति सिउ घरि जाइ ॥ साच सबदु बिनु पति नही पावै ॥ नानक बिनु नावै किउ साचि समावै ॥ ३० ॥ गुरमुखि असट
 सिधी सभि बुधी ॥ गुरमुखि भवजलु तरीऐ सच सुधी ॥ गुरमुखि सर अपसर बिधि जाणै ॥ गुरमुखि परविरति नरविरति
 पछाणै ॥ गुरमुखि तारे पारि उतारे ॥ नानक गुरमुखि सबदि निसतारे ॥ ३१ ॥ नामे रते हउमै जाइ ॥ नामि रते सचि
 रहे समाइ ॥ नामि रते जोग जुगति बीचारु ॥ नामि रते पावहि मोख दुआरु ॥ नाम रते त्रिभवण सोझी होइ ॥ नानक
 नामि रते सदा सुखु होइ ॥ ३२ ॥ नामि रते सिध गोसटि होइ ॥ नामि रते सदा तपु होइ ॥ नामि रते सचु करणी सारु
 ॥ नामि रते गुण गिआन बीचारु ॥ बिनु नावै बोलै सभु वेकारु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥ ३३ ॥ पूरे गुर
 ते नामु पाइआ जाइ ॥ जोग जुगति सचि रहै समाइ ॥ बाहर महि जोगी भरमाए सनिआसी छिअ चारि ॥ गुर

कै सबदि जो मरि जीवै सो पाए मोख दुआरु ॥ बिनु सबदै सभि दूजै लागे देखहु रिदै बीचारि ॥ नानक वडे से वडभागी
 जिनी सचु रखिआ उर धारि ॥ ३४ ॥ गुरमुखि रतनु लहै लिव लाइ ॥ गुरमुखि परखै रतनु सुभाइ ॥ गुरमुखि साची
 कार कमाइ ॥ गुरमुखि साचे मनु पतीआइ ॥ गुरमुखि अलखु लखाए तिसु भावै ॥ नानक गुरमुखि चोट न खावै ॥
 ३५ ॥ गुरमुखि नामु दानु इसनानु ॥ गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ गुरमुखि पावै दरगह मानु ॥ गुरमुखि भउ
 भँजनु परधानु ॥ गुरमुखि करणी कार कराए ॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाइ ॥ ३६ ॥ गुरमुखि सासत्र सिमिति बेद
 ॥ गुरमुखि पावै घटि घटि भेद ॥ गुरमुखि वैर विरोध गवावै ॥ गुरमुखि सगली गणत मिटावै ॥ गुरमुखि राम नाम
 रँगि राता ॥ नानक गुरमुखि खसमु पछाता ॥ ३७ ॥ बिनु गुर भरमै आवै जाइ ॥ बिनु गुर घाल न पवई थाइ ॥ बिनु
 गुर मनूआ अति डोलाइ ॥ बिनु गुर त्रिपति नही बिखु खाइ ॥ बिनु गुर बिसीअरु डसै मरि वाट ॥ नानक गुर बिनु घाटे
 घाट ॥ ३८ ॥ जिंसु गुरु मिलै तिसु पारि उतारै ॥ अवगण मेटै गुणि निसतारै ॥ मुकति महा सुख गुर सबदु बीचारि ॥
 गुरमुखि कदे न आवै हारि ॥ तनु हटडी इहु मनु वणजारा ॥ नानक सहजे सचु वापारा ॥ ३९ ॥ गुरमुखि बांधिओ सेतु
 बिधातै ॥ लँका लूटी दैत संतापै ॥ रामचँदि मारिओ अहि रावणु ॥ भेद बभीखण गुरमुखि परचाइणु ॥ गुरमुखि साइरि
 पाहण तारे ॥ गुरमुखि कोटि तेतीस उधारे ॥ ४० ॥ गुरमुखि चूकै आवण जाणु ॥ गुरमुखि दरगह पावै माणु ॥
 गुरमुखि खोटे खरे पछाणु ॥ गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ गुरमुखि दरगह सिफति समाइ ॥ नानक गुरमुखि बँधु न
 पाइ ॥ ४१ ॥ गुरमुखि नामु निरँजन पाए ॥ गुरमुखि हउमै सबदि जलाए ॥ गुरमुखि साचे के गुण गाए गुरमुखि साचै
 रहै समाए ॥ गुरमुखि साचि नामि पति ऊतम होइ ॥ नानक गुरमुखि सगल भवण की सोझी होइ ॥ ४२ ॥ कवण मूलु
 कवण मते वेला ॥ तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ॥ कवण कथा ले रहहु निराले ॥ बोलै नानक सुणहु तुम

बाले ॥ एसु कथा का देइ बीचारु ॥ भवजलु सबदि लँघावणहारु ॥ ४३ ॥ पवन अरँभु सतिगुर मति वेला ॥ सबदु गुरु
 सुरति धुनि चेला ॥ अकथ कथा ले रहउ निराला ॥ नानक जुगि जुगि गुर गोपाला ॥ एकु सबदु जितु कथा वीचारी ॥
 गुरमुखि हउमै अगनि निवारी ॥ ४४ ॥ मैण के दँत किउ खाईरे सारु ॥ जितु गरबु जाइ सु कवणु आहारु ॥ हिवै का घरु
 मँदरु अगनि पिराहनु ॥ कवन गुफा जितु रहै अवाहनु ॥ इत उत किस कउ जाणिं समावै ॥ कवन धिआनु मनु मनहि समावै
 ॥ ४५ ॥ हउ हउ मै मै विचहु खोवै ॥ दूजा मैटै एको होवै ॥ जगु करड़ा मनमुखु गावारु ॥ सबदु कमाईरे खाईरे सारु ॥
 अँतरिं बाहरिं एको जाणै ॥ नानक अगनि मरै सतिगुर कै भाणै ॥ ४६ ॥ सच भै राता गरबु निवारै ॥ एको जाता सबदु
 वीचारै ॥ सबदु वसै सचु अँतरिं हीआ ॥ तनु मनु सीतलु रँगि रँगीआ ॥ कामु क्रोधु बिखु अगनि निवारै ॥ नानक नदरी
 नदरिं पिआरे ॥ ४७ ॥ कवन मुखि चँदु हिवै घरु छाइआ ॥ कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ ॥ कवन मुखि कालु जोहत नित
 रहै ॥ कवन बुधि गुरमुखि पति रहै ॥ कवनु जोधु जो कालु सँघारै ॥ बोलै बाणी नानकु बीचारै ॥ ४८ ॥ सबदु भाखत ससि
 जोति अपारा ॥ ससि घरि सूरु वसै मिटै अँधिआरा ॥ सुखु दुखु सम करि नामु अधारा ॥ आपे पारि उतारणहारा ॥ गुर परचै
 मनु साचि समाइ ॥ प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥ ४९ ॥ नाम ततु सभ ही सिरि जापै ॥ बिनु नावै दुखु कालु सँतापै ॥
 ततो ततु मिलै मनु मानै ॥ दूजा जाइ इकतु घरि आनै ॥ बोलै पवना गगनु गरजै ॥ नानक निहचलु मिलणु सहजै ॥ ५० ॥
 अँतरिं सुँनं बाहरिं सुँनं त्रिभवण सुँनमसुँनं ॥ चउथे सुँनै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुँनं ॥ घटि घटि सुँन का जाणै भेउ ॥
 आदि पुरखु निरँजन देउ ॥ जो जनु नामु निरँजन राता ॥ नानक सोई पुरखु बिधाता ॥ ५१ ॥ सुँनो सुँनु कहै सभु कोई ॥
 अनहत सुँनु कहा ते होई ॥ अनहत सुँनि रते से कैसे ॥ जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥ ओइ जनमि न मरहि न आवहि जाहि
 ॥ नानक गुरमुखि मनु समझाहि ॥ ५२ ॥ नउ सर सुभर दसवै पूरे ॥ तह अनहत सुँन वजावहि तूरे ॥ साचै राचे देखि

हजुरे ॥ घटि घटि साचु रहिआ भरपूरे ॥ गुपती बाणी परगटु होइ ॥ नानक परखि लए सचु सोइ ॥ ५३ ॥ सहज भाइ
 मिलीरे सुखु होवै ॥ गुरमुखि जागै नीद न सोवै ॥ सुँन सबदु अपरंपरि धारै ॥ कहते मुकतु सबदि निसतारै ॥ गुर की
 दीखिआ से सचि राते ॥ नानक आपु गवाइ मिलण नही भ्राते ॥ ५४ ॥ कुबुधि चवावै सो कितु ठाइ ॥ किउ ततु न बूझै
 चोटा खाइ ॥ जन दरि बाधे कोइ न राखै ॥ बिनु सबदै नाही पति साखै ॥ किउ करि बूझै पावै पारु ॥ नानक मनमुखि न
 बूझै गवारु ॥ ५५ ॥ कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥ सतिगुरु भेटै मोख दुआर ॥ ततु न चीनै मनमुखु जलि जाइ ॥
 दुर्मति विछुडि चोटा खाइ ॥ मानै हुकमु सभे गुण गिआन ॥ नानक दरगह पावै मानु ॥ ५६ ॥ साचु वखरु धनु पलै होइ
 ॥ आपि तरै तारे भी सोइ ॥ सहजि रता बूझै पति होइ ॥ ता की कीमति करै न कोइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥
 नानक पारि परै सच भाइ ॥ ५७ ॥ सु सबद का कहा वासु कथीअले जितु तरीरे भवजलु संसारो ॥ त्रै सत अँगुल वाई कहीरे
 तिसु कहु कवनु अधारो ॥ बोलै खेलै असथिरु होवै किउ करि अलखु लखाए ॥ सुणि सुआमी सचु नानकु प्रणवै अपने मन
 समझाए ॥ गुरमुखि सबदे सचि लिव लागै करि नदरी मेलि मिलाए ॥ आपे दाना आपे बीना पूरे भागि समाए ॥ ५८ ॥ सु
 सबद कउ निरंतरि वासु अलखं जह देखा तह सोई ॥ पवन का वासा संनु निवासा अकल कला धर सोई ॥ नदरि करे सबदु
 घट महि वसै विचहु भरमु गवाए ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी नामो मँनि वसाए ॥ सबदि गुरु भव सागरु तरीरे इत उत
 एको जाणै ॥ चिहनु वरनु नही छाइआ माइआ नानक सबदु पछाणै ॥ ५९ ॥ त्रै सत अँगुल वाई अउधू संन सचु आहारो ॥
 गुरमुखि बोलै ततु बिरोलै चीनै अलख अपारो ॥ त्रै गुण भेटै सबदु वसाए ता मनि चूकै अहंकारो ॥ अंतरि बाहरि एको जाणै
 ता हरि नामि लगै पिआरो ॥ सुखमना इडा पिँगुला बूझै जा आपे अलखु लखाए ॥ नानक तिहु ते ऊपरि साचा सतिगुर
 सबदि समाए ॥ ६० ॥ मन का जीउ पवनु कथीअले पवनु कहा रसु खाई ॥ गिआन की मुद्रा कवन अउधू सिध की कवन

कमाई ॥ बिनु सबदै रसु न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई ॥ सबदि रते अँमित रसु पाइआ साचे रहे अघाई ॥ कवन बुधि
 जितु असथिरु रहीरे कितु भोजनि त्रिपतासै ॥ नानक दुखु सुखु सम करि जापै सतिगुर ते कालु न ग्रासै ॥ ६१ ॥ रँगि न
 राता रसि नही माता ॥ बिनु गुर सबदै जलि बलि ताता ॥ बिंदु न राखिआ सबदु न भाखिआ ॥ पवनु न साधिआ सचु न
 अराधिआ ॥ अकथ कथा ले सम करि रहै ॥ तउ नानक आतमराम कउ लहै ॥ ६२ ॥ गुर परसादी रँगो राता ॥ अमितु
 पीआ साचे माता ॥ गुर वीचारी अगनि निवारी ॥ अपिउ पीओ आतम सुखु धारी ॥ सचु अराधिआ गुरमुखि तरु तारी ॥
 नानक बूझै को वीचारी ॥ ६३ ॥ इहु मनु मैगलु कहा बसीअले कहा बसै इहु पवना ॥ कहा बसै सु सबदु अउधू ता कउ चूकै
 मन का भवना ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले ता निज घरि वासा इहु मनु पाए ॥ आपै आपु खाइ ता निरमलु होवै धावतु
 वरजिं रहाए ॥ किउ मूलु पछाणै आतमु जाणै किउ ससि घरि सूरु समावै ॥ गुरमुखि हउमै विचहु खोवै तउ नानक सहजिं
 समावै ॥ ६४ ॥ इहु मनु निहचलु हिरदे वसीअले गुरमुखि मूलु पछाणि रहै ॥ नाभि पवनु घरि आसणि बैसे गुरमुखि
 खोजत ततु लहै ॥ सु सबदु निरँतरि निज घरि आछै त्रिभवण जोति सु सबदि लहै ॥ खावै दूख भूख साचे की साचे ही
 त्रिपतासि रहै ॥ अनहद बाणी गुरमुखि जाणी बिरलो को अरथावै ॥ नानकु आखै सचु सुभाखै सचि रपै रँगु कबहू न जावै
 ॥ ६५ ॥ जा इहु हिरदा देह न होती तउ मनु कैठै रहता ॥ नाभि कमल असथँभु न होतो ता पवनु कवन घरि सहता ॥ रूपु
 न होतो रेख न काई ता सबदि कहा लिव लाई ॥ रकतु बिंदु की मड़ी न होती मिति कीमति नही पाई ॥ वरनु भेखु असरूपु न
 जापी किउ करि जापसि साचा ॥ नानक नामि रते बैरागी इब तब साचो साचा ॥ ६६ ॥ हिरदा देह न होती अउधू तउ मनु
 सुँनि रहै बैरागी ॥ नाभि कमलु असथँभु न होतो ता निज घरि बसतउ पवनु अनरागी ॥ रूपु न रेखिआ जाति न होती तउ
 अकुलीणि रहतउ सबदु सु सारु ॥ गउनु गगनु जब तबहि न होतउ त्रिभवण जोति आपे निरँकारु ॥ वरनु

भेखु असरूपु सु एको एको सबदु विडाणी ॥ साच बिना सूचा को नाही नानक अकथ कहाणी ॥ ६७ ॥ कितु कितु
 बिधि जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखि बिनसि जाई ॥ हउमै विचि जगु उपजै पुरखा नामि विसरिऐ दुखु पाई ॥
 गुरुमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए ॥ नामि
 नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे ॥ नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे ॥ ६८ ॥ गुरुमुखि साच
 सबदु बीचारै कोइ ॥ गुरुमुखि सचु बाणी परगटु होइ ॥ गुरुमुखि मनु भीजै विरला बूझै कोइ ॥ गुरुमुखि निज घरि वासा
 होइ ॥ गुरुमुखि जोगी जुगति पछाणै ॥ गुरुमुखि नानक एको जाणै ॥ ६९ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥ बिनु
 सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे नामु पाइआ न जाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइ ॥ बिनु सतिगुर
 भेटे महा गरबि गुबारि ॥ नानक बिनु गुरु मुआ जनमु हारि ॥ ७० ॥ गुरुमुखि मनु जीता हउमै मारि ॥ गुरुमुखि साचु
 रखिआ उर धारि ॥ गुरुमुखि जगु जीता जमकालु मारि बिदारि ॥ गुरुमुखि दरगह न आवै हारि ॥ गुरुमुखि मेलि मिलाए
 सो जाणै ॥ नानक गुरुमुखि सबदि पछाणै ॥ ७१ ॥ सबदै का निबेड़ा सुणि तू अउधू बिनु नावै जोगु न होई ॥ नामे
 राते अनदिनु माते नामै ते सुखु होई ॥ नामै ही ते सभु परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥ बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै
 आपि खुआई ॥ सतिगुर ते नामु पाईऐ अउधू जोग जुगति ता होई ॥ करि बीचारु मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति
 न होई ॥ ७२ ॥ तेरी गति मिति तुहै जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥ तू आपे गुपता आपे परगटु आपे सभि रंग
 माणै ॥ साधिक सिध गुरु बहु चले खोजत फिरहि फुरमाणै ॥ मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै
 ॥ अबिनासी प्रणि खेलु रचाइआ गुरुमुखि सोझी होई ॥ नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥ ७३ ॥ १
 ॥

१ॐ सतिगुरु प्रसादि ॥ रामकली की वार महला ३ ॥ जोधै वीरै पूरवाणी की धुनी ॥

सलोक मः ३ ॥ सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिस नो लाए भाउ ॥ नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइ ॥ हउमै एहो बीजु है सहसा गइआ विलाइ ॥ ना किछु बीजै न उगवै जो बखसे सो खाइ ॥ अँभै सेती अँभु रलिआ बहुडि न निकसिआ जाइ ॥ नानक गुरुमुखि चलतु है वेखहु लोका आइ ॥ लोकु कि वेखै बपुड़ा जिस नो सोझी नाहि ॥ जिसु वेखाले सो वेखै जिसु वसिआ मन माहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुखु दुख का खेतु है दुखु बीजै दुखु खाइ ॥ दुख विचि जँमै दुखि मरै हउमै करत विहाइ ॥ आवणु जाणु न सुझई अँधा अँधु कमाइ ॥ जो देवै तिसै न जाणई दिते कउ लपटाइ ॥ नानक पुरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥ २ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सदा सुखु जिस नो आपे मेले सोइ ॥ सुखै एहु बिबेकु है अँतरु निरमलु होइ ॥ अगिआन का भ्रमु कटीऐ गिआनु परापति होइ ॥ नानक एको नदरी आइआ जह देखा तह सोइ ॥ ३ ॥ पउडी ॥ सचै तखतु रचाइआ बैसण कउ जाई ॥ सभु किछु आपे आपि है गुर सबदि सुणाई ॥ आपे कुदरति साजीअनु करि महल सराई ॥ चँदु सूरजु दुइ चानणे पूरी बणत बणाई ॥ आपे वेखै सुणे आपि गुर सबदि धिआई ॥ १ ॥ वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ कबीर महिदी करि कै घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ तै सह बात न पुछीआ कबहू न लाई पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक महिदी करि कै रखिआ सो सहु नदरि करेइ ॥ आपे पीसै आपे घसै आपे ही लाइ लएइ ॥ इहु पिरम पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ वेकी खिसटि उपाईअनु सभ हुकमि आवै जाइ समाही ॥ आपे वेखि विगसदा दूजा को नाही ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू गुर सबदि बुझाही ॥ सभना तेरा जोरु है जिउ भवै तिवै चलाही ॥ तुधु जेवड मै नाहि को किसु आखि सुणाई ॥ २ ॥ सलोकु मः ३ ॥ भरमि भुलाई सभु जगु फिरी फावी होई भालि ॥ सो सहु सांति न देवई किआ चलै तिसु नालि ॥ गुर परसादी हरि

धिआईए अंतरि रखीए उर धारि ॥ नानक धरि बैठिआ सहु पाइआ जा किरपा कीती करतारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ धँधा धावत
 दिनु गइआ रैणि गवाई सोइ ॥ कूडु बोलि बिखु खाइआ मनमुखि चलिआ रोइ ॥ सिरै उपरि जम डँडु है दूजै भाइ पटि खोइ
 ॥ हरि नामु कदे न चेतिओ फिरि आवण जाणा होइ ॥ गुर परसादी हरि मनि वसै जम डँडु न लागै कोइ ॥ नानक सहजे
 मिलि रहै करमि परापति होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि आपणी सिफती लाइअनु दे सतिगुर मती ॥ इकना नो नाउ
 बखसिओनु असथिरु हरि सती ॥ पउणु पाणी बैसँतरो हुकमि करहि भगती ॥ एना नो भउ अगला पूरी बणत बणती ॥
 सभु इको हुकमु वरतदा मँनिरे सुखु पाई ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ राम कसउटी सो
 सहै जो मरजीवा होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ किउ करि इहु मनु मारीए किउ करि मिरतकु होइ ॥ कहिआ सबदु न मानई हउमै छडै
 न कोइ ॥ गुर परसादी हउमै छुटै जीवन मुकतु सो होइ ॥ नानक जिस नो बखसे तिसु मिलै तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥ २
 ॥ मः ३ ॥ जीवत मरणा सभु को कहै जीवन मुकति किउ होइ ॥ भै का संजमु जे करे दारु भाउ लाएइ ॥ अनदिनु गुण
 गावै सुख सहजे बिखु भवजलु नामि तरेइ ॥ नानक गुरमुखि पाईए जा कउ नदरि करेइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ दूजा भाउ
 रचाइओनु त्रै गुण वरतारा ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइअनु हुकमि कमावनि कारा ॥ पँडित पड़दे जोतकी ना बूझहि बीचारा
 ॥ सभु किछु तेरा खेलु है सचु सिरजणहारा ॥ जिसु भावै तिसु बखसि लैहि सचि सबदि समाई ॥ ४ ॥ सलोकु मः ३ ॥
 मन का झूठा झूठु कमावै ॥ माइआ नो फिरै तपा सदावै ॥ भरमे भूला सभि तीरथ गहै ॥ ओहु तपा कैसे परम गति लहै ॥
 गुर परसादी को सचु कमावै ॥ नानक सो तपा मोखँतरु पावै ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सो तपा जि इहु तपु घाले ॥ सतिगुर नो
 मिलै सबदु समाले ॥ सतिगुर की सेवा इहु तपु परवाणु ॥ नानक सो तपा दरगहि पावै माणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ राति दिनसु
 उपाइअनु संसार की वरतणि ॥ गुरमती घटि चानणा आनेरु बिनासणि ॥ हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ सभ वणि त्रिणि
 ॥

सभु किछु आपे आपि है गुरुमुखि सदा हरि भणि ॥ सबदे ही सोझी पई सचै आपि बुझाई ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥
 अभिआगत एहि न आखीअनि जिन के चित महि भरमु ॥ तिस दै दितै नानका तेहो जेहा धरमु ॥ अभै निरँजनु परम पदु
 ता का भूखा होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर
 घरि भोजनु करेनि ॥ उदरै कारणि आपणे बहले भेख करेनि ॥ अभिआगत सेई नानका जि आतम गउणु करेनि ॥
 भालि लहनि सहु आपणा निज घरि रहणु करेनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अँबरु धरति विछोडिअनु विचि सचा असराउ ॥ घरु
 दरु सभो सचु है जिसु विचि सचा नाउ ॥ सभु सचा हुकमु वरतदा गुरुमुखि सचि समाउ ॥ सचा आपि तरवतु सचा बहि
 सचा करे निआउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा गुरुमुखि अलखु लखाई ॥ ६ ॥ सलोक मः ३ ॥ रैणाइर माहि अनँतु है कूडी
 आवै जाइ ॥ भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ॥ रैणाइर महि सभु किछु है करमी पलै पाइ ॥ नानक नउ निधि पाईऐ
 जे चलै तिसै रजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सहजे सतिगुरु न सेविओ विचि हउमै जनमि बिनासु ॥ रसना हरि रसु न चखिओ
 कमलु न होइओ परगासु ॥ बिखु खाधी मनमुखु मुआ माइआ मोहि विणासु ॥ इकसु हरि के नाम विणु धिगु जीवणु धिगु
 वासु ॥ जा आपे नदरि करे प्रभु ता होवै दासनि दासु ॥ ता अनदिनु सेवा करे सतिगुरु की कबहि न छोडै पासु ॥ जिउ
 जल महि कमलु अलिपतो वरतै तिउ विचे गिरह उदासु ॥ जन नानक करे कराइआ सभु को जिउ भावै तिव हरि गुणतासु
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ छतीह जुग गुबारु सा आपे गणत कीनी ॥ आपे सिसटि सभ साजीअनु आपि मति दीनी ॥ सिम्रिति
 सासत साजिअनु पाप पुँन गणत गणीनी ॥ जिसु बुझाए सो बुझसी सचै सबदि पतीनी ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे
 बखसि मिलाई ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तँनु न होइ ॥ जो सहि रते आपणै तिन तनि लोभ
 रतु न होइ ॥ भै पइरे तनु खीणु होइ लोभ रतु विचहु जाइ ॥ जिउ बैसँतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु

गवाइ ॥ नानक ते जन सोहणे जो रते हरि रँगु लाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ॥
 गुर कै सबदि कमलु बिगसिआ ता सउपिआ भगति भँडारु ॥ भरमु गइआ ता जागिआ चूका अगिआन अँधारु ॥ तिस नो
 रूपु अति अगला जिंसु हरि नालि पिआरु ॥ सदा रवै पिरु आपणा सोभावँती नारि ॥ मनमुखि सीगारु न जाणनी
 जासनि जनमु सभु हारि ॥ बिनु हरि भगती सीगारु करहि नित जँमहि होइ खुआरु ॥ सैसारै विचि सोभ न पाइनी अगै
 जि करे सु जाणै करतारु ॥ नानक सचा एकु है दुहु विचि है संसारु ॥ चँगै मँदै आपि लाइअनु सो करनि जि आपि कराए
 करतारु ॥ २ ॥ मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवु सांति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ जे बहुतेरा लोचीए विणु करमा पाइआ न
 जाइ ॥ अँतरि लोभु विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ तिन जँमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ जिनी सतिगुर सिउ
 चितु लाइआ सो खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि
 समाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपि अलिपतु सदा रहै होरि धँधै सभि धावहि ॥ आपि निहचलु अचलु है होरि आवहि जावहि
 ॥ सदा सदा हरि धिआईए गुरमुखि सुख पावहि ॥ निज घरि वासा पाईए सचि सिफति समावहि ॥ सचा गहिर गँभीरु है
 गुर सबदि बुझाई ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ सचा नामु धिआइ तू सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमै जो बुझै सो फलु पाए सचु
 ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमु न बूझै सचु ॥ नानक हरि का भाणा मँने सो भगतु होइ विणु मँने कचु निकचु ॥ १ ॥ मः
 ३ ॥ मनमुख बोलि न जाणनी ओना अँदरि कामु क्रोधु अहँकारु ॥ ओइ थाउ कुथाउ न जाणनी उन अँतरि लोभु विकारु
 ॥ ओइ आपणै सुआइ आइ बहि गला करहि ओना मारे जमु जँदारु ॥ अगै दरगह लेखै मँगिरे मारि खुआरु कीचहि
 कूड़िआर ॥ एह कूड़ै की मलु किउ उतरै कोई कढह इहु वीचारु ॥ सतिगुरु मिलै ता नामु दिड़ाए सभि किलविख कटणहारु
 ॥ नामु जपे नामो आराधे तिसु जन कउ करहु सभि नमसकारु ॥ मलु कूड़ी नामि उतारीअनु जपि नामु होआ सचिआरु
 ॥

जन नानक जिस दे एहि चलत हहि सो जीवउ देवणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु जेवडु दाता नाहिं किसु आखि सुणाईरे ॥
 गुर परसादी पाइ जिथहु हउमै जाईरे ॥ रस कस सादा बाहरा सची वडिआईरे ॥ जिस नो बखसे तिसु देइ आपि लए
 मिलाईरे ॥ घट अंतरि अँमितु रखिओनु गुरमुखि किसै पिआई ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत
 करेनि ॥ जि सतिगुर भावै सु मँनि लैनि सेई करम करेनि ॥ जाइ पुछहु सिम्रिति सासत बिआस सुक नारद बचन सभ
 खिसटि करेनि ॥ सचै लए सचि लगे सदा सचु समालेनि ॥ नानक आए से परवाणु भए जि सगले कुल तारेनि ॥ १ ॥
 मः ३ ॥ गुरू जिना का अँधुला सिख भी अँधे करम करेनि ॥ ओइ भाणै चलनि आपणै नित झूठो झूठु बोलेनि ॥ कूडु
 कुसतु कमावदे पर निँदा सदा करेनि ॥ ओइ आपि डुबे पर निँदका सगले कुल डोबेनि ॥ नानक जितु ओइ लए तितु लगे
 उइ बपुडे किआ करेनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ नदरी अँदरि रखदा जेती सिसटि सभ कीती ॥ इकि कूडि कुसति लाइअनु
 मनमुख विगूती ॥ गुरमुखि सदा धिआईरे अँदरि हरि प्रीती ॥ जिन कउ पोतै पुँनु है तिन्ह वाति सिपीती ॥ नानक नामु
 धिआईरे सचु सिफति सनाई ॥ १० ॥ सलोक मः १ ॥ सती पापु करि सतु कमाहि ॥ गुर दीखिआ घरि देवण जाहि ॥
 इसतरी पुरखै खटिरे भाउ ॥ भावै आवउ भावै जाउ ॥ सासतु बेदु न मानै कोइ ॥ आपो आपै पूजा होइ ॥ काजी होइ कै
 बहै निआइ ॥ फेरे तसबी करे खुदाइ ॥ वढी लै कै हकु गवाए ॥ जे को पुछै ता पडि सुणाए ॥ तुरक मँत्रु कनि रिदँ समाहि
 ॥ लोक मुहावहि चाडी खाहि ॥ चउका दे कै सुचा होइ ॥ ऐसा हिंदू वेखहु कोइ ॥ जोगी गिरही जटा बिभूत ॥ आगै
 पाछै रोवहि पूत ॥ जोगु न पाइआ जुगति गवाई ॥ कितु कारणि सिरि छाई पाई ॥ नानक कलि का एहु परवाणु ॥ आपे
 आखणु आपु जाणु ॥ १ ॥ मः १ ॥ हिंदू कै घरि हिंदू आवै ॥ सूतु जनेऊ पडि गलि पावै ॥ सूतु पाइ करे बुरिआई ॥
 नाता धोता थाइ न पाई ॥ मुसलमानु करे वडिआई ॥ विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥ राहु दसाइ ओथै को जाइ ॥

करणी बाझहु भिसति न पाइ ॥ जोगी कै घरि जुगति दसाई ॥ तितु कारणि कनि मुँद्रा पाई ॥ मुँद्रा पाइ फिरै संसारि ॥
 जिथै किथै सिरजणहारु ॥ जेते जीअ तेते वाटाऊ ॥ चीरी आई ढिल न काऊ ॥ एथै जाणै सु जाइ सिजाणै ॥ होरु फकडु
 हिंदू मुसलमाणै ॥ सभना का दरि लेखा होइ ॥ करणी बाझहु तरै न कोइ ॥ सचो सचु वखाणै कोइ ॥ नानक अगै पुछ न
 होइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि का मँदरु आखीरे काइआ कोटु गडु ॥ अँदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पडु ॥ हरि का
 मँदरु सरीरु अति सोहणा हरि हरि नामु दिडु ॥ मनमुख आपि खुआइअनु माइआ मोह नित कडु ॥ सभना साहिबु एकु है
 पूरै भागि पाइआ जाई ॥ ११ ॥ सलोक मः १ ॥ ना सति दुखीआ ना सति सुखीआ ना सति पाणी जँत फिरहि ॥ ना सति
 मूँड मुडाई केसी ना सति पड़िआ देस फिरहि ॥ ना सति रुखी बिरखी पथर आपु तछावहि दुख सहहि ॥ ना सति हसती बधे
 संगल ना सति गाई घाहु चरहि ॥ जिसु हथि सिधि देवै जे सोई जिस नो देइ तिसु आइ मिलै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई
 जिसु घट भीतरि सबदु खै ॥ सभि घट मेरे हउ सभना अँदरि जिसहि खुआई तिसु कउणु कहै ॥ जिसहि दिखाला वाटडी
 तिसहि भुलावै कउणु ॥ जिसहि भुलाई पँध सिरि तिसहि दिखावै कउणु ॥ १ ॥ मः १ ॥ सो गिरही जो निग्रहु करै ॥ जपु
 तपु संजमु भीखिआ करै ॥ पुँन दान का करे सरीरु ॥ सो गरही गँगा का नीरु ॥ बोलै ईसरु सति सरूपु ॥ परम तँत महि
 रेख न रूपु ॥ २ ॥ मः १ ॥ सो अउधूती जो धूपै आपु ॥ भिखिआ भोजनु करै संतापु ॥ अउहठ पटण महि भीखिआ करै
 ॥ सो अउधूती सिव पुरि चडै ॥ बोलै गोरखु सति सरूपु ॥ परम तँत महि रेख न रूपु ॥ ३ ॥ मः १ ॥ सो उदासी जिं
 पाले उदासु ॥ अरध उरध करे निरँजन वासु ॥ चँद सूरज की पाए गँढि ॥ तिसु उदासी का पडै न कँधु ॥ बोलै गोपी चँदु
 सति सरूपु ॥ परम तँत महि रेख न रूपु ॥ ४ ॥ मः १ ॥ सो पाखँडी जिं काइआ पखाले ॥ काइआ की अगनि ब्रहमु
 परजाले ॥ सुपनै बिँदु न देई झरणा ॥ तिसु पाखँडी जरा न मरणा ॥ बोलै चरपटु सति सरूपु ॥ परम तँत महि रेख न रूपु
 ॥

७ ॥ मः १ ॥ सो बैरागी जि उलटे ब्रह्म ॥ गगन मंडल महि रोपै थँमु ॥ अहिनिंसि अंतरि रहै धिआनि ॥ ते बैरागी सत
 समानि ॥ बोलै भरथरि सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ६ ॥ मः १ ॥ किउ मरै मँदा किउ जीवै जुगति ॥
 कँन पड़ाइ किआ खाजै भुगति ॥ आसति नासति एको नाउ ॥ कउणु सु अखरु जितु रहै हिआउ ॥ धूप छाव जे सम
 करि सहै ॥ ता नानकु आखै गुरु को कहै ॥ छिअ वरतारे वरतहि पूत ॥ ना संसारी ना अउधूत ॥ निरँकारि जो रहै
 समाइ ॥ काहे भीखिआ मँगणि जाइ ॥ ७ ॥ पउडी ॥ हरि मँदरु सोई आखीऐ जिथहु हरि जाता ॥ मानस देह गुरु
 बचनी पाइआ सभु आतमरामु पछाता ॥ बाहरि मूलि न खोजीऐ घर माहि बिधाता ॥ मनमुख हरि मँदर की सार न
 जाणनी तिनी जनमु गवाता ॥ सभ महि इकु वरतदा गुरु सबदी पाइआ जाई ॥ १२ ॥ सलोक मः ३ ॥ मूरखु होवै सो
 सुणै मूरख का कहणा ॥ मूरख के किआ लखण है किआ मूरख का करणा ॥ मूरखु ओहु जि मुगधु है अहँकारे मरणा ॥
 एतु कमाणै सदा दुखु दुख ही महि रहणा ॥ अति पिआरा पवै खूहि किहु संजमु करणा ॥ गरमुखि होइ सु करे वीचारु
 ओसु अलिपतो रहणा ॥ हरि नामु जपै आपि उधरै ओसु पिछै डुबदे भी तरणा ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जो देइ सु
 सहणा ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानकु आखैरे मना सुणीऐ सिख सही ॥ लेखा खु मँगोसीआ बैठा कढि वही ॥ तलवा पउसनि
 आकीआ बाकी जिना रही ॥ अजरईलु फरेसता होसी आइ तई ॥ आवणु जाणु न सुझई भीड़ी गली फही ॥ कूड़ निखुटे
 नानका ओड़कि सचि रही ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि का सभु सरीरु है हरि रवि रहिआ सभु आपै ॥ हरि की कीमति ना पवै
 किछु कहणु न जापै ॥ गुरु परसादी सालाहीऐ हरि भगती रापै ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ अहँकारु गवापै ॥ सभु
 किछु हरि का खेलु है गुरुमुखि किसै बुझाई ॥ १३ ॥ सलोकु मः १ ॥ सहँसर दान दे इँद्रु रोआइआ ॥ परस रामु रोवै घरि
 आइआ ॥ अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥ ऐसी दरगह मिलै सजाइ ॥ रोवै रामु निकाला भइआ ॥ सीता लखमणु

विछुड़ि गइआ ॥ रोवै दहसिरु लँक गवाइ ॥ जिनि सीता आदी डउरू वाइ ॥ रोवहि पांडव भए मजूर ॥ जिन कै सुआमी
 रहत हदूरि ॥ रोवै जनमेजा खुइ गइआ ॥ एकी कारणि पापी भइआ ॥ रोवहि सेख समाइक पीर ॥ अंत काल मत्तु लागै
 भीड़ ॥ रोवहि राजे कँन पड़ाइ ॥ घरि घरि मागहि भीखिआ जाइ ॥ रोवहि किरपन सँचहि धनु जाइ ॥ पँडित रोवहि
 गिआनु गवाइ ॥ बाली रोवै नाहि भतारु ॥ नानक दुखीआ सभ संसारु ॥ मँने नाउ सोई जिणि जाइ ॥ अउरी करम न
 लेखै लाइ ॥ १ ॥ मः २ ॥ जपु तपु सभु किछु मँनिरे अवरि कारा सभि बादि ॥ नानक मँनिआ मँनीरे बुझीरे गुर परसादि
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ काइआ हँस धुरि मेलु करतै लिखि पाइआ ॥ सभ महि गुपतु वरतदा गुरमुखि प्रगटाइआ ॥ गुण गावै
 गुण उचरै गुण माहि समाइआ ॥ सची बाणी सचु है सचु मेलि मिलाइआ ॥ सभु किछु आपे आपि है आपे देइ वडिआई ॥
 १४ ॥ सलोक मः २ ॥ नानक अँधा होइ कै रतना परखण जाइ ॥ रतना सार न जाणई आवै आपु लखाइ ॥ १ ॥ मः २
 ॥ रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥ वखरतै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥ जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि
 सेइ ॥ रतना सार न जाणनी अँधे वतहि लोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥ बजर
 कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ॥ अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥ तितु घट अंतरि चानणा करि भगति
 मिलीजै ॥ सभ महि एकु वरतदा जिनि आपे रचन रचाई ॥ १५ ॥ सलोक मः २ ॥ अँधे कै राहि दसीरे अँधा होइ सु जाइ
 ॥ होइ सुजाखा नानका सो किउ उझड़ि पाइ ॥ अँधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥ अँधे सेई नानका
 खसमहु घुथे जाहि ॥ १ ॥ मः २ ॥ साहिबि अँधा जो कीआ करे सुजाखा होइ ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै जे सउ आखै कोइ
 ॥ जिथै सु वसतु न जापई आपे वरतउ जाणि ॥ नानक गाहकु किउ लए सकै न वसतु पछाणि ॥ २ ॥ मः २ ॥ सो किउ
 अँधा आखीरे जि हुकमहु अँधा होइ ॥ नानक हुकमु न बुझई अँधा कहीरे सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ काइआ अँदरि गडु कोटु

है सभि दिसंतर देसा ॥ आपे ताड़ी लाईअनु सभ महि परवेसा ॥ आपे खिसटि साजीआनु आपि गुपतु रखेसा ॥ गुर सेवा
 ते जाणिआ सचु परगटीएसा ॥ सभु किछु सचो सचु है गुरि सोझी पाई ॥ १६ ॥ सलोक मः १ ॥ सावणु राति अहाडु दिहु
 कामु क्रोधु दुइ खेत ॥ लबु वत्र दरोगु बीउ हाली राहकु हेत ॥ हलु बीचारु विकार मण हुकमी खटे खाइ ॥ नानक लेखै
 मंगिरे अउतु जणेदा जाइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ भउ भुइ पवितु पाणी सतु संतोखु बलेद ॥ हलु हलेमी हाली चितु चेता वत्र
 वखत संजोगु ॥ नाउ बीजु बखसीस बोहल दुनीआ सगल दरोग ॥ नानक नदरी करमु होइ जावहि सगल विजोग ॥ २
 ॥ पउड़ी ॥ मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ बोलै ॥ दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विशेलै ॥ गुरमुखि नामु धिआईरे
 मथि ततु कढेलै ॥ अंतरि परगासु घटि चानणा हरि लधा टोलै ॥ आपे भरमि भुलाइदा किछु कहणु न जाई ॥ १७ ॥
 सलोक मः २ ॥ नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥ ओथै हटु न
 चलई ना को किरस करेइ ॥ सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥ जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ ॥ विचि
 उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥ नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक इहु जीउ मछुली
 झीवरु तिसना कालु ॥ मनूआ अंधु न चेतई पडै अचिंता जालु ॥ नानक चितु अचेतु है चिंता बधा जाइ ॥ नदरि करे जे
 आपणी ता आपे लए मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ से जन साचे सदा सदा जिनी हरि रसु पीता ॥ गुरमुखि सचा मनि वसै सचु
 सउदा कीता ॥ सभ किछु घर ही माहि है वडभागी लीता ॥ अंतरि तिसना मरि गई हरि गुण गावीता ॥ आपे मेलि
 मिलाइअनु आपे देइ बुझाई ॥ १८ ॥ सलोक मः १ ॥ वेलि पिंजाइआ कति वुणाइआ ॥ कटि कुटि करि खूबि चड़ाइआ
 ॥ लोहा वढे दरजी पाडे सूई धागा सीवै ॥ इउ पति पाटी सिफती सीपै नानक जीवत जीवै ॥ होइ पुराणा कपडु पाटै सूई
 धागा गँटै ॥ माहु परखु किहु चलै नाही घड़ी मुहतु किछु हँटै ॥ सचु पुराणा होवै नाही सीता कदे न पाटै ॥ नानक साहिबु

सचो सचा तिचरु जापी जापै ॥ १ ॥ मः १ ॥ सच की काती सचु सभु सारु ॥ घाड़त तिस की अपर अपार ॥ सबदे साण
 रखाई लाइ ॥ गुण की थैकै विचि समाइ ॥ तिस दा कुठा होवै सेखु ॥ लोहू लबु निकथा वेखु ॥ होइ हलालु लगै हकि जाइ
 ॥ नानक दरि दीदारि समाइ ॥ २ ॥ मः १ ॥ कमरि कटारा बँकुड़ा बँके का असवारु ॥ गरबु न कीजै नानका मतु सिरि
 आवै भारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सो सतसँगति सबदि मिलै जो गुरुमुखि चलै ॥ सचु धिआइनि से सचे जिन हरि खरचु धनु पलै
 ॥ भगत सोहनि गुण गावदे गुरुमति अचलै ॥ रतन बीचारु मनि वसिआ गुर कै सबदि भलै ॥ आपे मेलि मिलाइआदा आपे
 देइ वडिआई ॥ १९ ॥ सलोक मः ३ ॥ आसा अँदरि सभु को कोइ निरासा होइ ॥ नानक जो मरि जीविआ सहिला आइआ
 सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ना किछु आसा हथि है केउ निरासा होइ ॥ किआ करे एह बपुड़ी जां भोलाए सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
 ध्रिगु जीवणु संसार सचे नाम बिनु ॥ प्रभु दाता दातार निहचलु एहु धनु ॥ सासि सासि आराधे निरमलु सोइ जनु ॥
 अँतरजामी अगमु रसना एकु भनु ॥ रवि रहिआ सरबति नानकु बलि जाई ॥ २० ॥ सलोकु मः १ ॥ सरवर हँस धुरे ही मेला
 खसमै एवै भाणा ॥ सरवर अँदरि हीरा मोती सो हँसा का खाणा ॥ बगुला कागु न रहई सरवरि जे होवै अति सिआणा ॥
 ओना रिजकु न पइओ ओथै ओनाह होरो खाणा ॥ सचि कमाणै सचो पाईऐ कुडै कूड़ा माणा ॥ नानक तिन कौ सतिगुरु
 मिलिआ जिना धुरे पैया परवाणा ॥ १ ॥ मः १ ॥ साहिबु मेरा उजला जे को चिति करेइ ॥ नानक सोई सेवीऐ सदा सदा जो
 देइ ॥ नानक सोई सेवीऐ जितु सेवीऐ दुखु जाइ ॥ अवगुण वँजनि गुण रवहि मनि सुखु वसै आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे
 आपि वरतदा आपि ताड़ी लाईअनु ॥ आपे ही उपदेसदा गुरुमुखि पतीआईअनु ॥ इकि आपे उझड़ि पाइअनु इकि भगती
 लाइअनु ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी आपे नाइ लाईअनु ॥ नानक नामु धिआईऐ सची वडिआई ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु
 ॥

शमकली की वार महला ७ १४ सतिगुरु प्रसादि ॥

सलोक मः ७ ॥ जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु ॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ हरि नामो मँत्रु
द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाईआ जिना धुरे पइआ सँजोगु ॥ १ ॥ मः ७ ॥ इकु सजणु सभि
सजणा इकु वैरी सभि वादि ॥ गुरि पूरै देखालिआ विणु नावै सभ बादि ॥ साकत दुरजन भरमिआ जो लगे दूजै सादि ॥
जन नानकि हरि प्रभु बुझिआ गुर सतिगुरु कै परसादि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ थटणहारै थाटु आपे ही थटिआ ॥ आपे पूरा साहु
आपे ही खटिआ ॥ आपे करि पासारु आपे रँग रटिआ ॥ कुदरति कीम न पाइ अलख ब्रहमटिआ ॥ अगम अथाह बेअँत
परै परटिआ ॥ आपे वड पातिसाहु आपि वजीरटिआ ॥ कोइ न जाणै कीम केवडु मटिआ ॥ सचा साहिबु आपि गुरुमुखि
परगटिआ ॥ १ ॥ सलोक मः ७ ॥ सुणि सजण प्रीतम मेरिआ मै सतिगुरु देहु दिखालि ॥ हउ तिसु देवा मनु आपणा
नित हिरदै रखा समालि ॥ इकसु सतिगुरु बाहरा धिगु जीवणु सँसारि ॥ जन नानक सतिगुरु तिना मिलाइओनु जिना
सद ही वरतै नालि ॥ १ ॥ मः ७ ॥ मेरै अँतरि लोचा मिलण की किओ पावा प्रभ तोहि ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु जो
मेले प्रीतमु मोहि ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जत देखा तत सोइ ॥ जन नानक सो प्रभु सेविआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ २
॥ पउड़ी ॥ देवणहारु दातारु कितु मुखि सालाहीरे ॥ जिसु रखै किरपा धारि रिजकु समाहीरे ॥ कोइ न किस ही वसि
सभना इक धर ॥ पाले बालक वागिदे कै आपि कर ॥ करदा अनद बिनोद किछू न जाणीरे ॥ सरब धार समरथ हउ तिसु
कुरबाणीरे ॥ गाईरे राति दिनँतु गावण जोगिआ ॥ जो गुर की पैरी पाहि तिनी हरि रसु भोगिआ ॥ २ ॥ सलोक मः ७
॥ भीड़हु मोकलाई कीतिअनु सभ रखे कुटँबै नालि ॥ कारज आपि सवारिअनु सो प्रभ सदा सभालि ॥ प्रभु मात पिता
कँठि लाइदा लहुडे बालक पालि ॥ दइआल होए सभ जीअ जँत्र हरि नानक नदरि निहाल ॥ १ ॥ मः ७ ॥

विणु तुधु होरु जि मँगणा सिरि दुखा कै दुख ॥ देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥ गुरि वणु तिणु हरिआ कीतिआ
 नानक किआ मनुख ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो ऐसा दातारु मनहु न वीसरै ॥ घड़ी न मुहतु चसा तिसु बिनु ना सरै ॥ अंतरि
 बाहरि सँगि किआ को लुकि करै ॥ जिसु पति रखै आपि सो भवजलु तरै ॥ भगतु गिआनी तपा जिसु किरपा करै ॥ सो
 पूरा परधानु जिस नो बलु धरै ॥ जिसहि जराए आपि सोई अजरु जरै ॥ तिस ही मिलिआ सचु मंत्रु गुर मनि धरै ॥ ३ ॥
 सलोकु मः ५ ॥ धँनु सुराग सुरँगडे आलापत सभ तिख जाइ ॥ धँनु सु जंत सुहावडे जो गुरमुखि जपदे नाउ ॥ जिनी इक
 मनि इकु अराधिआ तिन सद बलिहारै जाउ ॥ तिन की धूड़ि हम बाछदे करमी पलै पाइ ॥ जो स्ते रँगि गोविद कै हउ तिन
 बलिहारै जाउ ॥ आखा बिरथा जीअ की हरि सजणु मेलहु राइ ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जनम मरण दुखु जाइ ॥ जन नानक
 पाइआ अगम रूपु अनत न काहू जाइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ धँनु सु वेला घड़ी धँनु धनु मूरतु पलु सारु ॥ धँनु सु दिनसु
 संजोगड़ा जितु डिठा गुर दरसारु ॥ मन कीआ इछा पूरीआ हरि पाइआ अगम अपारु ॥ हउमै तुटा मोहड़ा इकु सचु नामु
 आधारु ॥ जनु नानकु लगा सेव हरि उधरिआ सगल संसारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिफति सलाहणु भगति विरले दितीअनु
 ॥ सउपे जिसु भँडार फिरि पुछ न लीतीअनु ॥ जिस नो लगा रँगु से रँगि रतिआ ॥ ओना इको नामु अधारु इका उन
 भतिआ ॥ ओना पिछै जगु भुँचै भोगई ॥ ओना पिआरा खु ओनाहा जोगई ॥ जिसु मिलिआ गुरु आइ तिनि प्रभु
 जाणिआ ॥ हउ बलिहारी तिन जि खसमै भाणिआ ॥ ४ ॥ सलोक मः ५ ॥ हरि इकसै नालि मै दोसती हरि इकसै नालि मै
 रँगु ॥ हरि इको मेरा सजणो हरि इकसै नालि मै सँगु ॥ हरि इकसै नालि मै गोसटे मुहु मैला करै न भँगु ॥ जाणै बिरथा
 जीअ की कदे न मोड़ै रँगु ॥ हरि इको मेरा मसलती भँनण घड़न समरथु ॥ हरि इको मेरा दातारु है सिरि दातिआ जग हथु
 ॥ हरि इकसै दी मै टेक है जो सिरि सभना समरथु ॥ सतिगुरि संतु मिलाइआ मसतकि धरि कै हथु ॥ वडा साहिबु गुरु

मिलाइआ जिनि तारिआ सगल जगतु ॥ मन कीआ इच्छा पूरीआ पाइआ धुरि संजोग ॥ नानक पाइआ सचु नामु सद ही
भोगो भोग ॥ १ ॥ मः ५ ॥ मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु ॥ वेखदिआ ही भजिं जानि कदे न पाइनि बंधु ॥
जिचरु पैनि खावनेह तिचरु रखनि गँठु ॥ जितु दिनि किछु न होवई तितु दिनि बोलनि गँधु ॥ जीअ की सार न जाणनी
मनमुख अगिआनी अंधु ॥ कूड़ा गँठु न चलई चिकड़ि पथर बंधु ॥ अंधे आपु न जाणनी फकडु पिटनि धंधु ॥ झूठै मोहि
लपटाइआ हउ हउ करत बिहंधु ॥ क्रिपा करे जिसु आपणी धुरि पूरा करमु करेइ ॥ जन नानक से जन उबरे जो सतिगुरु
सरणि परे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो रते दीदार सेई सचु हाकु ॥ जिनी जाता खसमु किउ लभै तिना खाकु ॥ मनु मैला वेकारु
होवै सँगि पाकु ॥ दिसै सचा महलु खुलै भरम ताकु ॥ जिसहि दिखाले महलु तिसु न मिलै धाकु ॥ मनु तनु होइ निहालु
बिंदक नदरि झाकु ॥ नउ निधि नामु निधानु गुरु कै सबदि लागु ॥ तिसै मिलै संत खाकु मसतकि जिसै भागु ॥ ५ ॥
सलोक मः ५ ॥ हरणाखी कू सचु वैणु सुणाई जो तउ करे उधारणु ॥ सुंदर बचन तुम सुणहु छबीली पिरु तैडा मन साधारणु
॥ दुरजन सेती नेहु रचाइओ दसि विखा मै कारणु ॥ ऊणी नाही झूणी नाही नाही किसै विहूणी ॥ पिरु छैलु छबीला छडि
गवाइओ दुरमति करमि विहूणी ॥ ना हउ भुली ना हउ चुकी ना मै नाही दोसा ॥ जितु हउ लाई तितु हउ लगी तू सुणि सचु
सँदेसा ॥ साई सुहागणि साई भागणि जै पिरि किरपा धारी ॥ पिरि अउगण तिस के सभि गवाए गल सेती लाइ सवारी ॥
करमहीण धन करै बिनँती कदि नानक आवै वारी ॥ सभि सुहागणि माणहि रलीआ इक देवहु राति मुरारी ॥ १ ॥ मः ५ ॥
काहे मन तू डोलता हरि मनसा पूरणहारु ॥ सतिगुरु पुरख धिआइ तू सभि दुख विसारणहारु ॥ हरि नामा आराधि मन
सभि किलविख जाहि विकार ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन रँगु लगा निरँकार ॥ ओनी छडिआ माइआ सुआवड़ा धनु
सँचिआ नामु अपारु ॥ अठे पहर इकतै लिवै मँनेनि हुकमु अपारु ॥ जनु नानकु मँगै दानु इकु देहु दरसु मनि

पिआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु तू आवहि चिति तिस नो सदा सुख ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसु जम नाहि दुख ॥ जिसु
 तू आवहि चिति तिसु कि काड़िआ ॥ जिस दा करता मित्रु सभि काज सवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति सो परवाणु जनु ॥
 जिसु तू आवहि चिति बहुता तिसु धनु ॥ जिसु तू आवहि चिति सो वड परवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति तिनि कुल
 उधारिआ ॥ ६ ॥ सलोक मः ५ ॥ अँदरहु अँना बारहु अँना कूड़ी कूड़ी गावै ॥ देही धोवै चक्र बणाए माइआ नो बहु धावै ॥
 अँदरि मैलु न उतरै हउमै फिरि फिरि आवै जावै ॥ नींद विआपिआ जामि संतापिआ मुखहु हरि हरि कहावै ॥ बैसनो नामु
 करम हउ जुगता तुह कुटे किआ फलु पावै ॥ हँसा विचि बैठा बगु न बणई नित बैठा मछी नो तार लावै ॥ जा हँस सभा
 वीचारु करि देखनि ता बगा नालि जोडु कदे न आवै ॥ हँसा हीरा मोती चुगणा बगु डडा भालण जावै ॥ उडरिआ वेचारा
 बगुला मतु होवै मँजु लखावै ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा किसु दोसु दिचै जा हरि एवै भावै ॥ सतिगुरु सरवरु रतनी
 भरपूरे जिसु प्रापति सो पावै ॥ सिख हँस सरवरि इकठे होए सतिगुर कै हुकमावै ॥ रतन पदारथ माणक सरवरि भरपूरे खाइ
 खरचि रहे तोटि न आवै ॥ सरवर हँसु दूरि न होई करते एवै भावै ॥ जन नानक जिस दै मसतकि भागु धुरि लिखिआ सो
 सिखु गुरु पहि आवै ॥ आपि तरिआ कुटँब सभि तारे सभा सिंसटि छडावै ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पँडितु आखाए बहुती राही
 कोरड़ मोठ जिनेहा ॥ अँदरि मोहु नित भरमि विआपिआ तिसटसि नाही देहा ॥ कूड़ी आवै कूड़ी जावै माइआ की नित जोहा
 ॥ सचु कहै ता छोहै आवै अँतरि बहुता रोहा ॥ विआपिआ दुरमति कुबुधि कुमूड़ा मनि लागा तिसु मोहा ॥ ठगै सेती ठगु रलि
 आइआ साथु भि इको जेहा ॥ सतिगुरु सराफु नदरी विचदो कठै तां उघड़ि आइआ लोहा ॥ बहुतेरी थाई रलाइ रलाइ दिता
 उघड़िआ पड़दा अगै आइ खलोहा ॥ सतिगुरु की जे सरणी आवै फिरि मनूरहु कँचनु होहा ॥ सतिगुरु निरवैरु पुत्र सत्र समाने
 अउगण कटे करे सुधु देहा ॥ नानक जिसु धुरि मसतकि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु नालि सनेहा ॥ अँम्रित बाणी सतिगुरु

पूरे की जिसु किरपालु होवै तिसु रिदै वसेहा ॥ आवण जाणा तिस का कटीरे सदा सदा सुखु होहा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो
 तुधु भाणा जंतु सो तुधु बुझई ॥ जो तुधु भाणा जंतु सु दरगह सिझई । जिस नो तेरी नदरि हउमै तिसु गई ॥ जिस नो तू
 संतुसटु कलमल तिसु खई ॥ जिस कै सुआमी वलिं निरभउ सो भई ॥ जिस नो तू किरपालु सचा सो थिअई ॥ जिस नो
 तेरी मइआ न पोहै अगनई ॥ तिस नो सदा दइआलु जिनि गुर ते मति लई ॥ ७ ॥ सलोक मः ५ ॥ करि किरपा किरपाल
 आपे बखसि लै ॥ सदा सदा जपी तेरा नामु सतिगुर पाइ पै ॥ मन तन अंतरि वसु दूखा नासु होइ ॥ हथ देइ आपि रखु
 विआपै भउ न कोइ ॥ गुण गावा दिनु रैणि एतै कंमि लाइ ॥ संत जना कै संगि हउमै रोगु जाइ ॥ सरब निरंतरि खसमु
 एको रवि रहिआ ॥ गुर परसादी सचु सचो सचु लहिआ ॥ दइआ करहु दइआल अपणी सिफति देहु ॥ दरसनु देखिं
 निहाल नानक प्रीति एह ॥ १ ॥ मः ५ ॥ एको जपीरे मनै माहि इकस की सरणाइ ॥ इकसु सिउ करि पिरहड़ी दूजी नाही
 जाइ ॥ इको दाता मंगीरे सभु किछु पलै पाइ ॥ मनि तनि सासि गिरासि प्रभु इको इकु थिआइ ॥ अंमि तु नामु निधानु सचु
 गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ वडभागी ते संत जन जिन मनि वुठा आइ ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ दूजा कोई नाहि ॥
 नामु थिआई नामु उचरा नानक खसम रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस नो तू रखवाला मारे तिसु कउणु ॥ जिस नो तू
 रखवाला जिता तिनै भैणु ॥ जिस नो तेरा अंगु तिसु मुखु उजला ॥ जिस नो तेरा अंगु सु निरमली हूँ निरमला ॥ जिस
 नो तेरी नदरि न लेखा पुछीरे ॥ जिस नो तेरी खुसी तिनि नउ निधि भुंचीरे ॥ जिस नो तू प्रभ वलिं तिसु किआ मुहछंदगी
 ॥ जिस नो तेरी मिहर सु तेरी बंदिगी ॥ ८ ॥ सलोक महला ५ ॥ होहु क्रिपाल सुआमी मेरे संतां संगि विहावे ॥ तुधहु
 भुले सि जमि जमि मरदे तिन कदे न चुकनि हावे ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सतिगुरु सिमरहु आपणा घटि अबघटि घट घाट ॥ हरि
 हरि नामु जपतिआ कोइ न बँधै वाट ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥ ओथै तेरी रख अगनी

उदर माहि ॥ सुणि कै जम के दूत नाइ तेरै छडि जाहि ॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुर सबदी पारि पारि ॥ जिन कउ लगी
 पिआस अँमितु सेइ खाहि ॥ कलि महि एहो पुँनु गुण गोविंदु गाहि ॥ सभसै नो किरपालु समाहले साहि साहि ॥ बिरथा कोइ
 न जाइ जि आवै तुधु आहि ॥ ९ ॥ सलोक मः ५ ॥ दूजा तिसु न बुझाइहु पारब्रहम नामु देहु आधारु ॥ अगमु अगोचरु
 साहिबो समरथु सचु दातारु ॥ तू निहचलु निरवैरु सचु सचा तुधु दरबारु ॥ कीमति कहणु न जाईये अँतु न पारावारु ॥
 प्रभु छोडि होरु जि मँगणा सभु बिखिआ रस छारु ॥ से सुखीए सचु साह से जिन सचा बिउहारु ॥ जिना लगी प्रीति प्रभ
 नाम सहज सुख सारु ॥ नानक इकु आराधे सँतन रेणारु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ अनद सूख बिस्त्राम नित हरि का कीरतनु गाइ
 ॥ अवर सिआणप छाडि देहि नानक उधरसि नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे ॥ ना तू आवहि
 वसि बेद पड़ावणे ॥ ना तू आवहि वसि तीरथि नाईये ॥ ना तू आवहि वसि धरती धाईये ॥ ना तू आवहि वसि कितै
 सिआणपै ॥ ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥ सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥ तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥
 १० ॥ सलोक मः ५ ॥ आपे वैदु आपि नाराइणु ॥ एहि वैद जीअ का दुखु लाइण ॥ गुर का सबदु अँमित रसु खाइणु ॥
 नानक जिसु मनि वसै तिस के सभि दूख मिटाइण ॥ १ ॥ मः ५ ॥ हुकमि उछलै हुकमे रहै ॥ हुकमे दुखु सुखु सम करि सहे
 ॥ हुकमे नामु जपै दिनु राति ॥ नानक जिस नो होवै दाति ॥ हुकमि मरै हुकमे ही जीवे ॥ हुकमे नानाह वडा थीवै ॥ हुकमे
 सोग हरख आनँद ॥ हुकमे जपै निरोधर गुर मँत ॥ हुकमे आवणु जाणु रहाए ॥ नानक जा कउ भगती लाए ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ हउ तिसे ढाढी कुरबाणु जि तेरा सेवदारु ॥ हउ तिसु ढाढी बलिहार जि गावै गुण अपार ॥ सो ढाढी धनु धँनु जिसु लोडे
 निरँकारु ॥ सो ढाढी भागठु जिस सचा दुआर बारु ॥ ओहु ढाढी तुधु धिआइ कलाणे दिनु रेणार ॥ मँगै अँमित नामु न
 आवै कदे हारि ॥ कपडु भोजनु सचु रहदा लिवै धार ॥ सो ढाढी गुणवंतु जिस नो प्रभ पिआरु ॥ ११ ॥ सलोक मः ५ ॥

अँम्रित बाणी अमिउ रसु अँम्रितु हरि का नाउ ॥ मनि तनि हिरदै सिमरि हरि आठ पहर गुण गाउ ॥ उपदेसु सुणहु तुम
 गुरसिखहु सचा इहै सुआउ ॥ जनमु पदारथु सफलु होइ मन महि लाइहु भाउ ॥ सूख सहज आनदु घणा प्रभ जपतिआ दुखु
 जाइ ॥ नानक नामु जपत सुखु ऊपजै दरगह पाईरे थाउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक नामु धिआईरे गुरु पूरा मति देइ ॥ भाणै
 जप तप सँजमो भाणै ही कढि लेइ ॥ भाणै जोनि भवाईरे भाणै बखस करेइ ॥ भाणै दुखु सुखु भोगीरे भानै करम करेइ ॥
 भानै मिटी साजि कै भाणै जोति धरेइ ॥ भाणै भोग भोगाइदा भाणै मनहि करेइ ॥ भाणै नरकि सुरगि अउतारे भाणै धरणि
 परेइ ॥ भाणै ही जिसु भगती लाए नानक विरले हे ॥ २ ॥ पउडी ॥ वडिआई सचे नाम की हउ जीवा सुणि सुणे ॥ पसू
 परेत अगिआन उधारे इक खणे ॥ दिनसु रैणि तेरा नाउ सदा सद जापीरे ॥ त्रिसना भुख विकराल नाइ तेरै धापीरे ॥ रोगु
 सोगु दुखु वँजै जिसु नाउ मनि वसै ॥ तिसहि परापति लालु जो गुर सबदी रसै ॥ खँड ब्रहमँड बेअँत उधारणहारिआ ॥ तेरी
 सोभा तुधु सचे मेरे पिआरिआ ॥ १२ ॥ सलोक मः ५ ॥ मित्रु पिआरा नानक जी मै छडि गवाइआ रँगि कसुँभै भुली ॥ तउ
 सजण की मै कीम न पउदी हउ तुधु बिनु अढु न लहदी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ ससु विराइणि नानक जीउ ससुरा वादी जेठे पउ पउ
 लूहै ॥ हभे भसु पुणेदे वतनु जा मै सजणु तूहै ॥ २ ॥ पउडी ॥ जिसु तू वुठा चीति तिसु दरदु निवारणो ॥ जिसु तू वुठा
 चिति तिसु कदे न हारणो ॥ जिसु मिलिआ पूरा गुरु सु सरपर तारणो ॥ जिस नो लाए सचि तिसु सचु समाहलणो ॥ जिसु
 आइआ हथि निधान सु रहिआ भालणो ॥ जिस नो इको रँगु भगतु सो जाणनो ॥ ओहु सभना की रेणु बिरही चारणो ॥
 सभि तेरे चोज विडाण सभु तेरा कारणो ॥ १३ ॥ सलोक मः ५ ॥ उसतति निँदा नानक जी मै हभ वजाई छोड़िआ हभु किड्डु
 तिआगी ॥ हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ फिरदी फिरदी नानक जीउ हउ फावी थीई बहुतु
 दिसावर पँधा ॥ ता हउ सुखि सुखाली सुती जा गुर मिलि सजणु मै लधा ॥ २ ॥ पउडी ॥ सभे दुख सँताप जां तुधहु भुलीरे
 ॥

जे कीचनि लख उपाव तां कहीं न घुलीऐ ॥ जिस नो विसरै नाउ सु निरधनु कांठीऐ ॥ जिस नो विसरै नाउ सु जोनी हांठीऐ
 ॥ जिसु खसमु न आवै चिति तिसु जमु डँडु दे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति रोगी से गणे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति सु
 खरो अहँकारीआ ॥ सोई दुहेला जगि जिनि नाउ विसारीआ ॥ १४ ॥ सलोक मः ५ ॥ तैडी बँदसि मै कोइ न डिठा तू नानक
 मनि भाणा ॥ घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कँतु पछाणा ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पाव सुहावे जां तउ धिरि जुलदे सीसु
 सुहावा चरणी ॥ मुखु सुहावा जां तउ जसु गावै जीउ पइआ तउ सरणी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मिलि नारी सतसंगि मंगलु
 गावीआ ॥ घर का होआ बँधानु बहुड़ि न धावीआ ॥ बिनठी दुरमति दुरतु सोइ कूड़ावीआ ॥ सीलवँत परधानि रिदै
 सचावीआ ॥ अंतरि बाहरि इकु इक रीतावीआ ॥ मनि दरसन की पिआस चरण दासावीआ ॥ सोभा बणी सीगारु खसमि
 जां रावीआ ॥ मिलीआ आइ सँजोगि जां तिसु भावीआ ॥ १५ ॥ सलोक मः ५ ॥ हभि गुण तैडे नानक जीउ मै कू थीए मै
 निरगुण ते किया होवै ॥ तउ जेवडु दातारु न कोई जाचकु सदा जाचोवै ॥ १ ॥ मः ५ ॥ देह छिजँदड़ी उणम झूणा गुरि
 सजाणि जीउ धराइआ ॥ हभे सुख सुहेलड़ा सुता जिता जगु सबाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडा तेरा दरबारु सचा तुधु तखतु
 ॥ सिरि साहा पातिसाहु निहचलु चउरु छतु ॥ जो भावै पारब्रहमु सोई सचु निआउ ॥ जे भावै पारब्रहम निथावे मिलै थाउ
 ॥ जो कीन्ही करतारि साई भली गल ॥ जिन्ही पछाता खसमु से दरगाह मल ॥ सही तेरा फुरमानु किनै न फेरीऐ ॥ कारण
 करण करीम कुदरति तेरीऐ ॥ १६ ॥ सलोक मः ५ ॥ सोइ सुणँदड़ी मेरा तनु मनु मउला नामु जपँदड़ी लाली ॥ पँधि जुलँदड़ी
 मेरा अँदरु ठँटा गुर दरसनु देखि निहाली ॥ १ ॥ मः ५ ॥ हठ मँझाहू मै माणकु लधा ॥ मुलि न घिधा मैकू सतिगुरि दिता ॥
 ढूँढ वजाई थीआ थिता ॥ जनमु पदारथु नानक जिता ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस कै मसतकि करमु होइ सो सेवा लागा ॥ जिसु
 गुर मिलि कमलु प्रगासिआ सो अनदिनु जागा ॥ लगा रँगु चरणारबिंद सभु भ्रमु भउ भागा ॥ आतमु जिता गुरमती आगँजत

पागा ॥ जिसहि धिआइआ पारब्रह्म सो कलि महि तागा ॥ साधू संगति निरमला अठसठि मजनागा ॥ जिसु प्रभु
 मिलिआ आपणा सो पुरखु सभागा ॥ नानक तिसु बलिहारणै जिसु एवड भागा ॥ १७ ॥ सलोक मः ५ ॥ जा पिरु अँदरि
 तां धन बाहरि ॥ जां पिरु बाहरि तां धन माहरि ॥ बिनु नावै बहु फेर फिराहरि ॥ सतिगुरि सँगि दिखाइआ जाहरि ॥ जन
 नानक सचे साचि समाहरि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ आहर सभि करदा फिरै आहरु इकु न होइ ॥ नानक जितु आहरि जहु उधरै
 विरला बूझै कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडी हू वडा अपारु तेरा मरतबा ॥ रँग परँग अनेक न जापन्हि करतबा ॥ जीआ अँदरि
 जीउ सभि किछु जाणला ॥ सभु किछु तेरै वसि तेरा घरु भला ॥ तेरै घरि आनँदु वधाई तुधु घरि ॥ माणु महता तेजु आपणा
 आपि जरि ॥ सरब कला भरपूरु दिसै जत कता ॥ नानक दासनि दासु तुधु आगै बिनवता ॥ १८ ॥ सलोक मः ५ ॥
 छतड़े बाजार सोहनि विचि वपारीए ॥ वखरु हिकु अपारु नानक खटे सो धणी ॥ १ ॥ महला ५ ॥ कबीरा हमरा को नही
 हम किसहू के नाहि ॥ जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सफलितु बिरखु सुहावडा हरि सफल
 अँमिता ॥ मनु लोचै उन्ह मिलण कउ किउ वँजै घिता ॥ वरना चिहना बाहरा ओहु अगमु अजिता ॥ ओहु पिआरा जीअ का
 जो खोलहै भिता ॥ सेवा करी तुसाड़ीआ मै दसिहु मिता ॥ कुरबाणी वँजा वारणै बले बलि किता ॥ दसनि सँत पिआरिआ
 सुणहु लाइ चिता ॥ जिसु लिखिआ नानक दास तिसु नाउ अँमितु सतिगुरि दिता ॥ १९ ॥ सलोक महला ५ ॥ कबीर
 धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥ १ ॥ महला ५ ॥ कबीर चावल कारणे
 तुख कउ मुहली लाइ ॥ सँगि कुसँगी बैसते तब पूछे धरमराइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे ही वड परवारु आपि इकातीआ ॥
 आपणी कीमति आपि आपे ही जातीआ ॥ सभु किछु आपे आपि आपि उर्पनिआ ॥ आपणा कीता आपि आपि वरँनिआ ॥
 धँनु सु तेरा थानु जिथै तू वुठा ॥ धँनु सु तेरे भगत जिन्ही सचु तूँ डिठा ॥ जिस नो तेरी दसिआ सलाहे सोइ

तुधु ॥ जिसु गुर भेटे नानक निरमल सोई सुधु ॥ २० ॥ सलोक मः ५ ॥ फरीदा भूमि रंगावली मँझि विसूला बागु ॥
 जो नर पीरि निवाजिआ तिनाह अँच न लाग ॥ १ ॥ मः ५ ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी सँगि सुवँनड़ी देह ॥ विरले कोई
 पाईअन्ह जिनाह पिआरे नेह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जपु तपु सँजमु दइआ धरमु जिसु देहि सु पाए ॥ जिसु बुझाइहि
 अगनि आपि सो नामु धिआए ॥ अँतरजामी अगम पुरखु इक दिसटि दिखाए ॥ साधसँगति कै आसरै प्रभ सिउ रँगु
 लाए ॥ अउगण कटि मुखु उजला हरि नामि तराए ॥ जनम मरण णउ कटिओनु फिरि जोनि न पाए ॥ अँध कूप ते
 काढिअनु लडु आपि फड़ाए ॥ नानक बखसि मिलाइअनु रखे गलिं लाए ॥ २१ ॥ सलोक मः ५ ॥ मुहबति जिसु
 खुदाइ दी रता रँगि चलूलिं ॥ नानक विरले पाईअहि तिसु जन कीम न मूलिं ॥ १ ॥ मः ५ ॥ अँदरु विधा सचि नाइ
 बाहरि भी सचु डिठोमि ॥ नानक रविआ हभ थाइ वणिं त्रिणिं त्रिभवणिं रोमि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे कीतो रचनु
 आपे ही रतिआ ॥ आपे होइओ इकु आपे बहु भतिआ ॥ आपे सभना मँझि आपे बाहरा ॥ आपे जाणहि दूरि आपे ही
 जाहरा ॥ आपे होवहि गुपतु आपे परगटीरे ॥ कीमति किसै न पाइ तेरी थटीरे ॥ गहिर गँभीरु अथाहु अपारु
 अगणतुतूँ ॥ नानक वरतै इकु इको इकु तूँ ॥ २२ ॥ १ ॥ २ ॥ सुधु ॥

रामकली की वार शङ्क बलवाँडि तथा सतै डूमि आखी १४ सतिगुर प्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ दे गुना सति भैण भराव है पारँगति दाने पड़ीवदै ॥ नानकि राजु
 चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अँमितु पीवदै ॥ मति गुर आतम देव दी
 खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दे ॥ गुरि चले रहसि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ १
 ॥ लहणे दी फेरईरे नानका दोही खटीरे ॥ जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीरे ॥ झुलै सु छतु
 निरँजनी मलिं तखतु बैठा गुर हटीरे ॥ करहि जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीरे ॥ लँगरु चलै

गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीरे ॥ खरचे दिति खसँम दी आप खहदी खैरि दबटीरे ॥ होवै सिफति खसँम दी नूरु
 अरसहु कुरसहु इटीरे ॥ तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीरे ॥ सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलह
 हटीरे ॥ पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कँन्ह मुरटीरे ॥ दिलि खोटै आकी फिरनिह बँनिह भारु उचाइनिह छटीरे ॥
 जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीरे ॥ कउणु हारे जिनि उवटीरे ॥ २ ॥ जिनि कीती सो मँनणा को सालु
 जिवाहे साली ॥ धरमराइ है देवता लै गला करे दलाली ॥ सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ गुर अँगद दी
 दोही फिरी सचु करतै बँधि बहाली ॥ नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै
 होइ जँगाली ॥ दरि दरवेसु खसँम दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ बलवँड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ लँगरि
 दउलति वँडीरे रसु अमितु खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ पर कबूलु खसँम नालि जां
 घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥ ३ ॥ होरिओ गँग वहाईरे दुनिआवी आखै कि किओनु ॥
 नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिओनु ॥ माधाणा परबतु करि नेत्रि बासकु सबदि रिड़किओनु ॥ चउदह रतन
 निकालिअनु करि आवा गउणु चिलकिओनु ॥ कुदरति अहि वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥ लहणे धरिओनु
 छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥ जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ सिखां पुत्रां घोखि कै
 सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥ जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु ॥ ४ ॥ फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥
 जपु तपु सँजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥ लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ वहिरे दरगह गुरु की कुदरती नूरु
 ॥ जितु सु हाथ न लभई तूँ ओहु ठरूरु ॥ नउ निधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥ निँदा तेरी जो करै सो वँजै चूरु
 ॥ नेडै दिसै मात लोक तुधु सुड्रै दूरु ॥ फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ ५ ॥ सो टिका सो बैहणा

सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ जिनि समुंदु विरोलिआ करि मेरु
 मधाणु ॥ चउदहु रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ धणखु चड़ाओ सत दा
 जस हँदा बाणु ॥ कलि विचि धू अंधारु सा चड़िआरै भाणु ॥ सतहु खेतु जमाइओ सतहु छावाणु ॥ नित रसोई तेरीरे घिउ मैदा
 खाणु ॥ चारे कुँडां सुझीओसु मन महि सबदु परवाणु ॥ आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥ अउतरिआ अउतारु लै
 सो पुरख सुजाणु ॥ झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ किआ सालाही सचे
 पातिसाह जां तू सुघडु सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ नानक हँदा छत्रु सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका सो
 बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥ ६ ॥ धँनु धँनु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी होई
 करमाति आपि सिरजणहारे धारिआ ॥ सिखी अतै संगती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥ अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु न
 पारावारिआ ॥ जिन्ही तूँ सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥
 धँनु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ गुरु डिठा तां मनु साधारिआ ॥ ७
 ॥ चारे जागे चहु जुगी पँचाइणु आपे होआ ॥ आपीन्है आपु साजिओनु आपे ही थँन्हि खलोआ ॥ आपे पटी कलम आपि
 आपि लिखणहारा होआ ॥ सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ ॥ तखति बैठा अरजन गुरु सतिगुर का खिवै
 चँदोआ ॥ उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥ जिन्ही गुरु न सेविओ मनमुखा पइआ मोआ ॥ दूणी चउणी
 करमाति सचे का सचा ढोआ ॥ चारे जागे चहु जुगी पँचाइणु आपे होआ ॥ ८ ॥ १ ॥

रामकली बाणी भगता की कबीर जीउ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

काइआ कलालनि लाहनि मेलउ गुर का सबदु गुडु कीनुरे ॥

त्रिसना कामु क्रोधु मद मतसर काटि काटि कसु दीनु रे ॥ १ ॥ कोई है रे संतु सहज सुख अंतरि जा कउ जपु तपु देउ दलाली
 रे ॥ एक बूँद भरि तनु मनु देवउ जो मदु देइ कलाली रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भवन चतुर दस भाठी कीनीह ब्रहम अगनि तनि
 जारी रे ॥ मुद्रा मदक सहज धुनि लागी सुखमन पोचनहारी रे ॥ २ ॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम ख ससि गहनै देउ रे
 ॥ सुरति पिआल सुधा रसु अम्रितु एहु महा रसु पेउ रे ॥ ३ ॥ निझर धार चुरे अति निरमल इह रस मनूआ रातो रे ॥ कहि
 कबीर सगले मद छूछे इहै महा रसु साचो रे ॥ ४ ॥ १ ॥ गुडु करि गिआनु धिआनु करि महुआ भउ भाठी मन धारा ॥
 सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा ॥ १ ॥ अउधू मेरा मनु मतवारा ॥ उनमद चढा मदन रसु चाखिआ त्रिभवन
 भइआ उजिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुइ पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महा रसु भारी ॥ कामु क्रोधु दुइ कीए जलेता छूटि गई
 संसारी ॥ २ ॥ प्रगट प्रगास गिआन गुर गंमित सतिगुर ते सुधि पाई ॥ दासु कबीरु तासु मद माता उचकि न कबहू जाई
 ॥ ३ ॥ २ ॥ तूँ मेरो मेरु परबतु सुआमी ओट गही मै तेरी ॥ ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि लीनी हरि मेरी ॥ १ ॥
 अब तब जब कब तुही तुही ॥ हम तुअ परसादि सुखी सद ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोरे भरोसे मगहर बसिओ मेरे तन की
 तपति बुझाई ॥ पहिले दरसनु मगहर पाइओ फुनि कासी बसै आई ॥ २ ॥ जैसा मगहरु तैसी कासी हम इकै कर जानी
 ॥ हम निरधन जिउ इहु धनु पाइआ मरते फूटि गुमानी ॥ ३ ॥ करै गुमानु चुभहि तिसु सूला को काढन कउ नाही ॥ अजै
 सु चोभ कउ बिलल बिलाते नरके घोर पचाही ॥ ४ ॥ कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥ हम काहू की
 काणि न कढते अपने गुर परसादे ॥ ५ ॥ अब तउ जाइ चढे सिँघासनि मिले है सारिँगपानी ॥ राम कबीरा एक भए है कोइ
 न सकै पछानी ॥ ६ ॥ ३ ॥ संता मानउ दूता डानउ इह कुटवारी मेरी ॥ दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी
 ॥ १ ॥ हम कूकर तेरे दरबारि ॥ भउकहि आगै बदनु पसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक

अब तउ मिटिआ न जाई ॥ तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई ॥ २ ॥ दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि
 जाई ॥ साधू होइ सु भगति पछानै हरि लए खजानै पाई ॥ ३ ॥ कोठरे महि कोठरी परम कोठी बीचारि ॥ गुरि दीनी
 बसतु कबीर कउ लेवहु बसतु सम्हारि ॥ ४ ॥ कबीरि दीई संसार कउ लीनी किसु मसतकि भागु ॥ अँमित रसु जिनि
 पाइआ थिरु ता का सोहागु ॥ ५ ॥ ४ ॥ जिह सुख बेदु गाइत्री निकसै सो किउ ब्रहमनु बिसरु करै ॥ जा कै पाइ जगतु
 सभु लागै सो किउ पँडितु हरि न कहै ॥ १ ॥ काहे मेरे बामहन हरि न कहहि ॥ रामु न बोलहि पाडे दोजकु भरहि ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ आपन ऊच नीच घरि भोजनु हठे करम करि उदरु भरहि ॥ चउदस अमावस रचि रचि मांगहि कर दीपकु लै कूपि
 परहि ॥ २ ॥ तूँ ब्रहमनु मै कासीक जुलहा मुहि तोहि बराबरी कैसे कै बनहि ॥ हमरे राम नाम कहि उबरे बेद भरोसे पांडे
 डूबि मरहि ॥ ३ ॥ ५ ॥ तरवरु एकु अनंत डार साखा पुहप पत्र रस भरीआ ॥ इह अँमित की बाड़ी है रे तिनि हरि पूरै
 करीआ ॥ १ ॥ जानी जानी रे राजा राम की कहानी ॥ अंतरि जोति राम परगासा गुरमुखि बिरलै जानी ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ भवरु एकु पुहप रस बीधा बारह ले उर धरिआ ॥ सोरह मधे पवनु झकोरिआ आकासे फरुफरिआ ॥ २ ॥ सहज सुनि
 इकु बिरवा उपजिआ धरती जलहरु सोखिआ ॥ कहि कबीर हउ ता का सेवकु जिनि इहु बिरवा देखिआ ॥ ३ ॥ ६ ॥ मुँद्रा
 मोनि दइआ करि झोली पत्रका करहु बीचारु रे ॥ खिँथा इहु तनु सीअउ अपना नामु करउ आधारु रे ॥ १ ॥ ऐसा जोगु
 कमावहु जोगी ॥ जप तप संजमु गुरमुखि भोगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुधि बिभूति चढावउ अपुनी सिंगी सुरति मिलाई ॥
 करि बैरागु फिरउ तनि नगरी मन की किंगुरी बजाई ॥ २ ॥ पँचु ततु लै हिरदै राखहु रहै निरालम ताड़ी ॥ कहतु कबीरु
 सुनहु रे संतहु धरमु दइआ करि बाड़ी ॥ ३ ॥ ७ ॥ कवन काज सिरजे जग भीतरि जनमि कवन फलु पाइआ ॥ भवनिधि
 तरन तारन चिँतामनि इक निमख न इहु मनु लाइआ ॥ १ ॥ गोबिंद हम ऐसे अपराधी ॥ जिनि प्रभि जीउ पिँडु था दीआ

तिस की भाउ भगति नही साधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर धन पर तन पर ती निँदा पर अपबादु न छूटै ॥ आवा गवनु होतु है फुनि
 फुनि इहु परसँगु न तूटै ॥ २ ॥ जिह घरि कथा होत हरि संतन इक निमख न कीनोह मै फेर ॥ लँपट चोर दूत मतवारे तिन सँगि
 सदा बसेरा ॥ ३ ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर ए सँपै मो माही ॥ दइआ धरमु अरु गुर की सेवा ए सुपनंतरि नाही ॥ ४ ॥
 दीन दइआल क्रिपाल दमोदर भगति बछल मै हारी ॥ कहत कबीर भीर जन राखहु हरि सेवा करउ तुमाहरी ॥ ५ ॥ ८ ॥ जिह
 सिमरनि होइ मुकति दुआरु ॥ जाहि बैकुंठि नही संसारि ॥ निरभउ कै घरि बजावहि तूर ॥ अनहद बजहि सदा भरपूरि ॥ १ ॥
 ऐसा सिमरनु करि मनि माहि ॥ बिनु सिमरन मुकति कत नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह सिमरनि नाही ननकारु ॥ मुकति करै
 उतरै बहु भारु ॥ नमसकारु करि हिरदै माहि ॥ फिरि फिरि तेरा आवनु नाहि ॥ २ ॥ जिह सिमरनि करहि तूकेल ॥ दीपक
 बांधि धरिओ बिनु तेल ॥ सो दीपकु अमरकु संसारि ॥ काम क्रोध बिखु काढीले मारि ॥ ३ ॥ जिह सिमरनि तेरी गति होइ ॥
 सो सिमरनु रखु कंठि परोइ ॥ सो सिमरनु करि नही राखु उतारि ॥ गुर परसादी उतरहि पारि ॥ ४ ॥ जिह सिमरनि नाही तुहि
 कानि ॥ मंदरि सोवहि पटंबर तानि ॥ सेज सुखाली बिगसै जीउ ॥ सो सिमरनु तू अनदिनु पीउ ॥ ५ ॥ जिह सिमरनि तेरी
 जाइ बलाइ ॥ जिह सिमरनि तुझु पोहै न माइ ॥ सिमरि सिमरि हरि हरि मनि गाईये ॥ इहु सिमरनु सतिगुर ते पाईये ॥ ६ ॥
 सदा सदा सिमरि दिनु राति ॥ ऊठत बैठत सासि गिरासि ॥ जागु सोइ सिमरनि रसु भोग ॥ हरि सिमरनु पाईये संजोग ॥ ७
 ॥ जिह सिमरनि नाही तुझु भार ॥ सो सिमरनु राम नाम अधारु ॥ कहि कबीर जा का नही अंतु ॥ तिस के आगे तंतु न मंतु ॥
 ८ ॥ ९ ॥

रामकली घरु २ बाणी कबीर जी की १८ सतिगुर प्रसादि ॥

बँधचि बँधनु पाइआ ॥ मुकतै गुरि अनलु बुझाइआ ॥ जब नख

सिख इहु मनु चीन्हा ॥ तब अंतरि मजनु कीन्हा ॥ १ ॥ पवनपति उनमनि रहनु खरा ॥ नहीं मिरतु न जनमु जरा ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ उलटी ले सकति सहारँ ॥ पैसीले गगन मझारँ ॥ बेधीअले चक्र भुअँगा ॥ भेटीअले राइ निसँगा ॥ २ ॥
 चूकीअले मोह मझासा ॥ ससि कीनो सूर गिरासा ॥ जब कुँभकु भरपुरि लीणा ॥ तह बाजे अनहद बीणा ॥ ३ ॥ बकतै
 बकि सबदु सुनाइआ ॥ सुनतै सुनि मँनि बसाइआ ॥ करि करता उतरसि पारँ ॥ कहै कबीरा सारँ ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥
 चँदु सूरजु दुइ जोति सरूपु ॥ जोती अंतरि ब्रहम अन्नूपु ॥ १ ॥ करु रे गिआनी ब्रहम बीचारु ॥ जोती अंतरि धरिआ
 पसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हीरा देखि हीरे करउ आदेसु ॥ कहै कबीरु निरँजन अलेखु ॥ २ ॥ २ ॥ ११ ॥ दुनीआ
 हुसीआर बेदार जागत मुसीअत हउ रे भाई ॥ निगम हुसीआर पहरुआ देखत जमु ले जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीँबु भइओ
 आंबु आंबु भइओ नीँबा केला पाका झारि ॥ नालीएर फलु सेबरि पाका मूरख मुग्ध गवार ॥ १ ॥ हरि भइओ खांडु रेतु
 महि बिखरिओ हसतीँ, चुनिओ न जाई ॥ कहि कमीर कुल जाति पांति तजि चीटी होइ चुनि खाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १२ ॥

बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १ ॥ १८३१ ॥

आनीले कागदु काटीले गूडी आकास मधे भरमीअले ॥ पँच जना सिउ बात बतऊआ चीतु सु डोरी राखीअले ॥ १ ॥ मनु
 राम नामा बेधीअले ॥ जैसे जनिक कला चितु मांडीअले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनीले कुँभु भराईले ऊदक राज कुआरि
 पूरँदरीए ॥ हसत बिनोद बीचार करती है चीतु सु गागरि राखीअले ॥ २ ॥ मँदरु एकु दुआर दस जा के गऊ चरावन
 छाडीअले ॥ पांच कोस पर गऊ चरावत चीतु सु बछरा राखीअले ॥ ३ ॥ कहत नामदेओ सुनहु तिलोचन बालकु पालन
 पउढीअले ॥ अंतरि बाहरि काज बिरूपी चीतु सु बारिक राखीअले ॥ ४ ॥ १ ॥ बेद पुरान सासत्र आनँता गीत कबित न
 गावउगो ॥ अखँड मँडल निरँकार महि अनहद बेनु बजावउगो ॥ १ ॥ बैरागी

रामहि गावउगो ॥ सबदि अतीत अनाहदि राता आकुल कै घरि जाउगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इडा पिँगुला अउर सुखमना
 पउनै बाँधि रहाउगो ॥ चँदु सूरजु दुइ सम करि राखउ ब्रहम जोति मिलि जाउगो ॥ २ ॥ तीरथ देखि न जल महि पैसउ
 जीअ जँत न सतावउगो ॥ अठसठि तीरथ गुरू दिखाए घट ही भीतरि न्हाउगो ॥ ३ ॥ पँच सहाई जन की सोभा भलो
 भलो न कहावउगो ॥ नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुँन समाधि समाउगो ॥ ४ ॥ २ ॥ माइ न होती बापु न होता करमु न
 होती काइआ ॥ हम नही होते तुम नही होते कवनु कहां ते आइआ ॥ १ ॥ राम कोइ न किस ही केरा ॥ जैसे तरवरि पँखि
 बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चँदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइआ ॥ सासतु न होता बेदु न होता करमु कहां ते
 आइआ ॥ २ ॥ खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ ॥ नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ ॥ ३ ॥
 ३ ॥ रामकली घरु २ ॥ बनारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥ असुमेध जगु कीजै सोना
 गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ १ ॥ छोडि छोडि रे पाखँडी मन कपटु न कीजै ॥ हरि का नामु नित नितहि
 लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गँगा जउ गोदावरि जाईरे कुँभि जउ केदार न्हाहीरे गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥ कोटि जउ
 तीरथ करै तन जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ २ ॥ असु दान गज दान सिंहजा नारी भुमि दान ऐसो दानु
 नित नितहि कीजै ॥ आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कँचनु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ ३ ॥ मनहि न
 कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै ॥ जमरथ राइ नँदु राजा मेरा रामचँदु प्रणवै नामा ततु रसु
 अँप्रितु पीजै ॥ ४ ॥ ४ ॥

रामकली बाणी शविदास जी की १४ सतिगुर प्रसादि ॥

पड़ीरे गुनीरे नामु सभु सुनीरे अनभउ भाउ न दरसै ॥ लोहा कँचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ॥ १ ॥ देव सँसै
 गांठि न छूटै ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पँचहु मिलि

लूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी सँनिआसी ॥ गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न
नासी ॥ २ ॥ कहु रविदास सभै नही समझसि भूलि परे जैसे बउरे ॥ मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥ ३
॥ १ ॥

शमकली बाणी बेणी जीउ की १४ शितिगुर प्रसादि ॥

इडा पिँगुला अउर सुखमना तिनि बसहि इक ठाई ॥ बेणी सँगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई ॥ १ ॥ सँतहु तहा
निरँजन शमु है ॥ गुर गमि चीनै बिरला कोइ ॥ तहां निरँजनु रमईआ होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देव सथानै किआ नीसाणी ॥
तह बाजे सबद अनाहद बाणी ॥ तह चँदु न सूरजु पउणु न पाणी ॥ साखी जागी गुरमुखि जाणी ॥ २ ॥ उपजै गिआनु
दुसति छीजै ॥ अँमित रसि गगनँतरि भीजै ॥ एसु कला जो जाणै भेउ ॥ भेटै तासु परम गुरदेउ ॥ ३ ॥ दसम दुआरा
अगन अपारा परम पुरख की घाटी ॥ ऊपरि हाटु हाट परि आला आले भीतरि थाती ॥ ४ ॥ जागतु रहै सु कबहु न सोवै ॥
तीनि तिलोक समाधि पलोवै ॥ बीज मंत्रु लै हिरदै रहै ॥ मनूआ उलटि सँन महि गहै ॥ ५ ॥ जागतु रहै न अलीआ भाखै
॥ पाचउ इँद्री बसि करि राखै ॥ गुर की साखी राखै चीति ॥ मनु तनु अरपै क्रिसन परीति ॥ ६ ॥ कर पलव साखा
बीचारे ॥ अपना जनमु न जूरे हारे ॥ असुर नदी का बँधै मूलु ॥ पछिम फेरि चड़ावै सूरु ॥ अजरु जरै सु निझरु झरै ॥
जगँनाथ सिउ गोसटि करै ॥ ७ ॥ चउमुख दीवा जोति दुआर ॥ पलू अनत मूलु बिचकारि ॥ सब कला ले आपे रहै ॥
मनु माणकु रतना महि गुहै ॥ ८ ॥ मसतकि पदमु दुआलै मणी ॥ माहि निरँजनु त्रिभवण धणी ॥ पँच सबद निरमाइल
बाजे ॥ ढुलके चवर सँख घन गाजे ॥ दलि मलि दैतहु गुरमुखि गिआनु ॥ बेणी जाचै तेरा नामु ॥ ९ ॥ १ ॥

१ॐ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

मेरे मन जपि अहिनिशि नामु हरे ॥ कोटि कोटि दोख बहु कीने सभ परहरि पासि धरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहि
आराधहि सेवक भाइ खरे ॥ किलबिख दोख गए सभ नीकरि जिउ पानी मैलु हरे ॥ १ ॥ खिनु खिनु नरु नाराइनु गावहि
मुखि बोलहि नर नरहरे ॥ पँच दोख असाध नगर महि डकु खिनु पलु दूरि करे ॥ २ ॥ वडभागी हरि नामु धिआवहि हरि के
भगत हरे ॥ तिन की संगति देहि प्रभ जाचउ मै मूड मुगध निसतरे ॥ ३ ॥ क्रिपा क्रिपा धारि जगजीवन रखि लेवहु सरनि परे
॥ नानकु जनु तुमरी सरनाई हरि राखहु लाज हरे ॥ ४ ॥ १ ॥ नट महला ४ ॥ राम जपि जन रामै नामि रले ॥ राम नामु
जपिओ गुर बचनी हरि धारी हरि क्रिपले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि अगम अगोचरु सुआमी जन जपि मिलि सलल सलले ॥
हरि के संत मिलि राम रसु पाइआ हम जन कै बलि बलले ॥ १ ॥ पुरखोतमु हरि नामु जनि गाइओ सभि दालद दुख दलले ॥
विचि देही दोख असाध पँच धातू हरि कीए खिन परले ॥ २ ॥ हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ॥ उनवै
घनु घन घनिहरु गरजै मनि बिगसै मोर मुरले ॥ ३ ॥ हमरै सुआमी लोच हम लाई हम जीवह देखि हरि मिले ॥ जन नानक

हरि अमल हरि लाए हरि मेलहु अनद भले ॥ ४ ॥ २ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि नामु सखे ॥ गुर परसादी
 हरि नामु धिआइओ हम सतिगुर चरन परखे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतम जगँनाथ जगदीसुर हम पापी सरनि रखे ॥ तुम वड
 पुरख दीन दुख भँजन हरि दीओ नामु मुखे ॥ १ ॥ हरि गुन ऊच नीच हम गाए गुर सतिगुर सँगि सखे ॥ जिउ चँदन सँगि
 बसै निँमु बिरखा गुन चँदन के बसखे ॥ २ ॥ हमरे अवगन बिरिआ बिरिबै के बहु बार बार निमखे ॥ अवगनिआरे पाथर
 भारे हरि तारे सँगि जनखे ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम हरि राखहु सुआमी सभ तिन के पाप क्रिखे ॥ जन नानक के दइआल प्रभ
 सुआमी तुम दुसट तारे हरणखे ॥ ४ ॥ ३ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि राम रँगे ॥ हरि हरि क्रिपा करी
 जगदीसुरि हरि धिआइओ जन पगि लगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के भूल चूक हम अब आए प्रभ सरनगे ॥ तुम
 सरणागति प्रतिपालक सुआमी हम राखहु वड पापगे ॥ १ ॥ तुमरी संगति हरि को को न उधरिओ प्रभ कीए पतित पवगे
 ॥ गुन गावत छीपा दुसटारिओ प्रभि राखी पैज जनगे ॥ २ ॥ जो तुमरे गुन गावहि सुआमी हउ बलि बलि बलि तिनगे
 ॥ भवन भवन पवित्र सभि कीए जह धूरि परी जन पगे ॥ ३ ॥ तुमरे गुन प्रभ कहि न सकहि हम तुम वड वड पुरख वडगे
 ॥ जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु हम सेवह तुम जन पगे ॥ ४ ॥ ४ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि नाम मने
 ॥ जगँनाथि किरपा प्रभि धारी मति गुरमति नाम बने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन हरि जसु हरि हरि गाइओ उपदेसि गुरू
 गुर सुने ॥ किलबिख पाप नाम हरि काटे जिव खेत क्रिसानि लुने ॥ १ ॥ तुमरी उपमा तुम ही प्रभ जानहु हम कहि न
 सकहि हरि गुने ॥ जैसे तुम तैसे प्रभ तुम ही गुन जानहु प्रभ अपुने ॥ २ ॥ माइआ फास बँध बहु बँधे हरि जपिओ खुल
 खुलने ॥ जिउ जल कुँचरु तदूरे बांधिओ हरि चेतिओ मोख मुखने ॥ ३ ॥ सुआमी पारब्रहम परमेसरु तुम खोजहु जुग
 जुगने ॥ तुमरी थाह पाई नही पावै जन नानक के प्रभ वडने ॥ ४ ॥ ५ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन कलि कीरति

हरि प्रवणे ॥ हरि हरि दइआलिं दइआ प्रभ धारी लागि सतिगुर हरि जपणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि तुम वड अगम अगोचर
सुआमी सभि धिआवहिं हरि रुडणे ॥ जिंन कउ तुम्हरे वड कटाख है ते गुरमुखिं हरि सिमरणे ॥ १ ॥ इहु परपंचु कीआ प्रभ
सुआमी सभु जगजीवनु जुगणे ॥ जिउ सललै सलल उठहि बहु लहरी मिलिं सललै सलल समणे ॥ २ ॥ जो प्रभ कीआ सु
तुम ही जानहु हम नह जाणीं हरि गहणे ॥ हम बारिक कउ रिद उसताति धारहु हम करह प्रभू सिमरणे ॥ ३ ॥ तुम जल निधि
हरि मान सरोवर जो सेवै सभ फलणे ॥ जनु नानकु हरि हरि हरि हरि बाँछै हरि देवहु करि क्रिपणे ॥ ४ ॥ ६ ॥

नट नाराइन महला ४ पड़ताल १३ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन सेव सफल हरि घाल ॥ ले गुर पग रेन खाल ॥ सभिं दालिंद भँजि दुख दाल ॥ हरि हो हो हो नदरिं निहाल ॥ १
॥ रहाउ ॥ हरि का छिहु हरि आपि सवारिओ हरि रँग रँग महल बेअँत लाल लाल हरि लाल ॥ हरि आपनी क्रिपा करी आपि
छिहि आइओ हम हरि जी गुर की कीई है बसीठी हम हरि देखे भई निहाल निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ हरि आवते की
खबरिं गुरि पाई मनि तनि आनदो आनँद भए हरि आवते सुने मेरे लाल हरि लाल ॥ जनु नानकु हरि हरि मेले भए गलतान
हाल निहाल निहाल ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥ नट महला ४ ॥ मन मिलु संतसंगति सुभवँती ॥ सुनि अकथ कथा सुखवँती ॥
सभ किलबिख पाप लहँती ॥ हरि हो हो हो लिखतु लिखँती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुग विचि ऊतम मति
गुरमति कथा भजँती ॥ जिनि जनि सुणी मनी है जिनि जनि तिसु जन कै हउ कुरबानँती ॥ १ ॥ हरि अकथ कथा का
जिनि रसु चाखिआ तिसु जन सभ भूख लहँती ॥ नानक जन हरि कथा सुणिं त्रिपते जापिं हरि हरि हरि होवँती ॥ २ ॥ २
॥ ८ ॥ नट महला ४ ॥ कोई आनि सुनावै हरि की हरि गाल ॥ तिस कउ हउ बलिं बलिं बाल ॥ सो हरि जनु है भल भाल
॥

हरि हो हो हो मेलि निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का मारगु गुर सँति बताइओ गुरि चाल दिखाई हरि चाल ॥ अंतरि कपटु
 चुकावहु मेरे गुरसिखहु निहकपट कमावहु हरि की हरि घाल निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ ते गुर के सिख मेरे हरि प्रभि भाए
 जिना हरि प्रभु जानिओ मेरा नालि ॥ जन नानक कउ मीत हरि प्रभि दीनी हरि देखि निकटि हदूरि निहाल निहाल निहाल
 निहाल ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥

रागु नट नाराइन महला ७ १८ शितिगुर प्रसादि ॥

राम हउ किआ जाना किआ भावै ॥ मनि पिआस बहुतु दरसावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी सोई जनु तेरा जिसु ऊपरि
 रुच आवै ॥ क्रिपा करहु जिसु पुरख बिधाते सो सदा सदा तुधु धिआवै ॥ १ ॥ कवन जोग कवन गिआन धिआना कवन
 गुनी रीझावै ॥ सोई जनु सोई निज भगता जिसु ऊपरि रँगु लावै ॥ २ ॥ साई मति साई बुधि सिआनप जितु निमख न प्रभु
 बिसरावै ॥ सँतसँगि लागि एहु सुखु पाइओ हरि गुन सद ही गावै ॥ ३ ॥ देखिओ अचरजु महा मँगल रूप किछु आन नही
 दिसटावै ॥ कहु नानक मोरचा गुरि लाहिओ तह गरभ जोनि कह आवै ॥ ४ ॥ १ ॥

नट नाराइन महला ७ दुपदे १८ शितिगुर प्रसादि ॥

उलाहनो मै काहू न दीओ ॥ मन मीठ तुहारो कीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगिआ मानि जानि सुखु पाइआ सुनि सुनि नामु
 तुहारो जीओ ॥ ईहां ऊहा हरि तुम ही तुम ही इहु गुर ते मँत्रु द्विडीओ ॥ १ ॥ जब ते जानि पाई एह बाता तब कुसल खेम सभ
 थीओ ॥ साधसँगि नानक परगासिओ आन नाही रे बीओ ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥ नट महला ७ ॥ जा कउ भई तुमारी धीर ॥
 जम की त्रास मिटी सुखु पाइआ निकसी हउमै पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपति बुझानी अँमित बानी त्रिपते जिउ बारिक खीर ॥
 मात पिता साजन

सँत मेरे सँत सहाई बीर ॥ १ ॥ खुले भ्रम भीति मिले गोपाला हीरै बेधे हीर ॥ बिसम भए नानक जसु गावत ठाकुर गुनी
 गहीर ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ नट महला ५ ॥ अपना जनु आपहि आपि उधारिओ ॥ आठ पहर जन कै सँगि बसिओ मन ते
 नाहि बिसारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरनु चिहनु नाही किछु पेखिओ दास का कुलु न बिचारिओ ॥ करि किरपा नामु हरि दीओ
 सहजि सुभाइ सवारिओ ॥ १ ॥ महा बिखमु अगनि का सागरु तिस ते पारि उतारिओ ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो
 पुनह पुनह बलिहारिओ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ नट महला ५ ॥ हरि हरि मनि महि नामु कहिओ ॥ कोटि अप्राध मिटहि खिन
 भीतरि ता का दुखु न रहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइओ बैरागी साधू सँगि लहिओ ॥ सगल तिआगि एक लिव
 लागी हरि हरि चरन गहिओ ॥ १ ॥ कहत मुक्त सुनते निसतारे जो जो सरनि पइओ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना
 कहु नानक अनदु भइओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥ नट महला ५ ॥ चरन कमल सँगि लागी डोरी ॥ सुख सागर करि परम गति
 मोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँचला गहाइओ जन अपुने कउ मनु बीधो प्रेम की खोरी ॥ जसु गावत भगति रसु उपजिओ माइआ
 की जाली तोरी ॥ १ ॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि आन न पेखउ होरी ॥ नानक मेलि लीओ दासु अपुना प्रीति न कबहू थोरी
 ॥ २ ॥ ५ ॥ ६ ॥ नट महला ५ ॥ मेरे मन जपु जपि हरि नाराइण ॥ कबहू न बिसरहु मन मेरे ते आठ पहर गुन गाइण ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ साधू धूरि करउ नित मजनु सभ किलबिख पाप गवाइण ॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि घटि घटि दिसटि
 समाइणु ॥ १ ॥ जाप ताप कोटि लख पूजा हरि सिमरण तुलि न लाइण ॥ दुइ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै तेरे दासनि दास
 दसाइणु ॥ २ ॥ ६ ॥ ७ ॥ नट महला ५ ॥ मेरै सरबसु नामु निधानु ॥ करि किरपा साधू सँगि मिलिओ सतिगुर दीनो दानु
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखदाता दुख भँजनहारा गाउ कीरतनु पूरनु गिआनु ॥ कामु क्रोधु लोभु खँड खँड कीन्हे बिनसिओ मूड
 अभिमानु ॥ १ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा प्रभ अँतरजामी जानु ॥ चरन कमल सरनि सुख सागर

नानकु सद कुरबानु ॥ २ ॥ ७ ॥ ८ ॥ नट महला ७ ॥ हउ वारि वारि जाउ गुर गोपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहिं निरगुन तुम
पूरन दाते दिना नाथ दइआल ॥ १ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत जीअ प्रान धन माल ॥ २ ॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै
नानक दरस निहाल ॥ ३ ॥ ८ ॥ ९ ॥

नट पड़ताल महला ७ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

कोऊ है मेरो साजनु मीतु ॥ हरि नामु सुनावै नीत ॥ बिनसै दुखु बिपरीति ॥ सभु अरपउ मनु तनु चीतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कोई विरला आपन कीत ॥ साँगे चरन कमल मनु सीत ॥ करि किरपा हरि जसु दीत ॥ १ ॥ हरिं भजिं जनमु पदारथु जीत
॥ कोटि पतित होहिं पुनीत ॥ नानक दास बलिं बलिं कीत ॥ २ ॥ १ ॥ १० ॥ १९ ॥

नट असटपदीआ महला ४ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

राम मेरे मनि तनि नामु अधारे ॥ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु सेवा मै गुरमति नामु सम्हारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिं हरिं हरिं हरिं
हरिं मनि धिआवहु मै हरिं हरिं नामु पिआरे ॥ दीन दइआल भए प्रभ ठाकुर गुर कै सबदि सवारे ॥ १ ॥ मधसूदन जगजीवन
माधो मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ इक बिनुउ बेनती करउ गुर आगै मै साधू चरन पखारे ॥ २ ॥ सहस नेत्र नेत्र है प्रभ कउ प्रभु
एको पुरखु निशारे ॥ सहस मूरति एको प्रभु ठाकुरु प्रभु एको गुरमति तारे ॥ ३ ॥ गुरमति नामु दमोदरु पाइआ हरिं हरिं नामु
उरिं धारे ॥ हरिं हरिं कथा बनी अति मीठी जिउ गूँगा गटक सम्हारे ॥ ४ ॥ रसना साद चखै भाइ दूजै अति फीके लोभ बिकारे
॥ जो गुरमुखि साद चखहि राम नामा सभ अन रस साद बिसारे ॥ ५ ॥ गुरमति राम नामु धनु पाइआ सुणिं कहतिआ पाप
निवारे ॥

धरमराइ जमु नेड़ि न आवै मेरे ठाकुर के जन पिआरे ॥ ६ ॥ सास सास सास है जेते मै गुरमति नामु समाहरे ॥ सासु सासु
 जाइ नामै बिनु सो बिरथा सासु बिकारे ॥ ७ ॥ क्रिपा क्रिपा करि दीन प्रभ सरनी मो कउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ नानक
 दासनि दासु कहतु है हम दासन के पनिहारे ॥ ८ ॥ १ ॥ नट महला ४ ॥ राम हम पाथर निरगुनीआरे ॥ क्रिपा क्रिपा करि
 गुरू मिलाए हम पाहन सबदि गुर तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर नामु दिड़ाए अति मीठा मैलागरु मलगारे ॥ नामै सुरति
 वजी है दह दिसि हरि मुसकी मुसक गंधारे ॥ १ ॥ तेरी निरगुण कथा कथा है मीठी गुरि नीके बचन समारे ॥ गावत गावत
 हरि गुन गाए गुन गावत गुरि निसतारे ॥ २ ॥ बिबेकु गुरू गुरू समदरसी तिसु मिलिऐ सँक उतारे ॥ सतिगुर मिलिऐ
 परम पदु पाइआ हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥ ३ ॥ पाखंड पाखंड करि करि भरमे लोभु पाखंडु जगि बुरिआरे ॥ हलति
 पलति दुखदाई होवहि जमकालु खड़ा सिरि मारे ॥ ४ ॥ उगवै दिनसु आलु जालु सम्हालै बिखु माइआ के बिसथारे ॥
 आई रैनि भइआ सुपनंतरु बिखु सुपनै भी दुख सारे ॥ ५ ॥ कलरु खेतु लै कूडु जमाइआ सभ कूडै के खलवारे ॥ साकत
 नर सभि भूख भुखाने दरि ठाढे जम जँदारे ॥ ६ ॥ मनमुख करजु चड़िआ बिखु भारी उतरै सबदि वीचारे ॥ जितने करज
 करज के मँगीए करि सेवक पगि लगि वारे ॥ ७ ॥ जगँनाथ सभि जँत्र उपाए नकि खीनी सभ नथहारे ॥ नानक प्रभु खिँचै
 तिव चलीऐ जिउ भावै राम पिआरे ॥ ८ ॥ २ ॥ नट महला ४ ॥ राम हरि अमित सरि नावारे ॥ सतिगुर गिआनु मजनु है
 नीको मिलि कलमल पाप उतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगति का गुनु बहुतु अधिकार्ई पड़ि सूआ गनक उधारे ॥ परसन परस
 भए कुबिजा कउ लै बैकुंठि सिधारे ॥ १ ॥ अजामल प्रीति पुत्र प्रति कीनी नाराइण बोलारो ॥ मेरे ठाकुर कै मनि भाइ
 भावनी जमकँकर मारि बिदारे ॥ २ ॥ मानुखु कथै कथि लोक सुनावै जो बोलै सो न बीचारे ॥ सतसंगति मिलै त दिड़ता
 आवै हरि नामि निसतारे ॥ ३ ॥ जब लगु जीउ पिँडु है साबतु तब लगि किछु न समारे ॥ जब घर मँदरि

आगि लगानी कढि कूपु कढै पनिहारे ॥ ४ ॥ साकत सिउ मन मेलु न करीअहु जिनि हरि हरि नामु बिसारे ॥ साकत बचन
 बिछूआ जिउ डसीए तजि साकत परै परारे ॥ ५ ॥ लगि लगि प्रीति बहु प्रीति लगाई लगि साधू संगि सवारे ॥ गुर के बचन
 सति सति करि माने मेरे ठाकुर बहुतु पिआरे ॥ ६ ॥ पूरबि जनमि परचून कमाए हरि हरि हरि नाम पिआरे ॥ गुर प्रसादि
 अँम्रित रसु पाइआ रसु गावै रसु वीचारे ॥ ७ ॥ हरि हरि रूप रँग सभि तेरे मेरे लालन लाल गुलारे ॥ जैसा रँगु देहि सो होवै
 किआ नानक जँत विचारे ॥ ८ ॥ ३ ॥ नट महला ४ ॥ राम गुर सरनि प्रभू रखवारे ॥ जिउ कुँचहु तदूरे पकरि चलाइओ
 करि ऊपरु कढि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ के सेवक बहुतु अति नीके मनि सरधा करि हरि धारे ॥ मेरे प्रभि सरधा
 भगति मनि भावै जन की पैज सवारे ॥ १ ॥ हरि हरि सेवकु सेवा लागै सभु देखै ब्रहम पसारे ॥ एकु पुरखु इकु नदरी आवै
 सभ एका नदरि निहारे ॥ २ ॥ हरि प्रभु ठाकुरु रविआ सभ ठाई सभु चेरी जगतु समारे ॥ आपि दइआलु दइआ दानु देवै
 विचि पाथर कीरे कारे ॥ ३ ॥ अँतरि वासु बहुतु मुसकाई भरमि भूला मिरगु सिँड्हारे ॥ बनु बनु दूढि दूढि फिरि थाकी गुरि
 पूरै घरि निसतारे ॥ ४ ॥ बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अँम्रितु सारे ॥ गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै पर तखि
 गुरू निसतारे ॥ ५ ॥ सभु है ब्रहमु ब्रहमु है पसरिआ मनि बीजिआ खावारे ॥ जिउ जन चँद्रहांसु दुखिआ धिसटबुधी अपुना
 घरु लूकी जारे ॥ ६ ॥ प्रभ कउ जनु अँतरि रिद लोचै प्रभ जन के सास निहारे ॥ क्रिपा क्रिपा करि भगति द्रिड़ाए जन पीछै
 जगु निसतारे ॥ ७ ॥ आपन आपि आपि ठाकुरु प्रभु आपे खिसटि सवारे ॥ जन नानक आपे आपि सभु वरतै करि क्रिपा
 आपि निसतारे ॥ ८ ॥ ४ ॥ नट महला ४ ॥ राम करि किरपा लेहु उबारे ॥ जिउ पकरि द्रोपती दुसटां आनी हरि हरि लाज
 निवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा जाचिक जन तेरे इकु मागउ दानु पिआरे ॥ सतिगुर की नित सरधा लागी मो कउ हरि
 गुरु मेलि सवारे ॥ १ ॥ साकत करम पाणी जिउ मथीए नित पाणी झोल झुलारे ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ कढि

माखन के गटकारे ॥ २ ॥ नित नित काइआ मजनु कीआ नित मलि मलि देह सवारे ॥ मेरे सतिगुर के मनि बचन न भाए
 सभ फोकट चार सीगारे ॥ ३ ॥ मटकि मटकि चलु सखी सहेली मेरे ठाकुर के गुन सारे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भाई मै
 सतिगुर अलखु लखारे ॥ ४ ॥ नारी पुरखु पुरखु सभ नारी सभ एको पुरखु मुरारे ॥ संत जना की रेनु मनि भाई मिलि हरि
 जन हरि निसतारे ॥ ५ ॥ ग्राम ग्राम नगर सभ फिरिआ रिद अंतरि हरि जन भारे ॥ सरधा सरधा उपाइ मिलाए मो कउ हरि
 गुर गुरि निसतारे ॥ ६ ॥ पवन सूतु सभु नीका करिआ सतिगुरि सबदु वीचारे ॥ निज घरि जाइ अमित रसु पीआ बिनु नैना
 जगतु निहारे ॥ ७ ॥ तउ गुन ईस बरनि नही साकउ तुम मँदर हम निक कीरे ॥ नानक क्रिपा करहु गुर मेलहु मै रामु जपत
 मनु धीरे ॥ ८ ॥ ५ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन भजु ठाकुर अगम अपारे ॥ हम पापी बहु निरगुणीआरे करि किरपा गुरि
 निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू पुरख साध जन पाए इक बिनउ करउ गुर पिआरे ॥ राम नामु धनु पूजी देवहु सभु तिसना
 भूख निवारे ॥ १ ॥ पचै पतंगु म्रिग भ्रिग कुँचर मीन इक इंद्री पकरि सघारे ॥ पंच भूत सबल है देही गुरु सतिगुरु पाप निवारे
 ॥ २ ॥ सासत्र बेद सोधि सोधि देखे मुनि नारद बचन पुकारे ॥ राम नामु पड़हु गति पावहु सतसंगति गुरि निसतारे ॥ ३ ॥
 प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी जिव सूरजु कमलु निहारे ॥ मेर सुमेर मोरु बहु नाचै जब उनवै घन घनहारे ॥ ४ ॥ साकत कउ
 अमित बहु सिँचहु सभ डाल फूल बिसुकारे ॥ जिउ जिउ निवहि साकत नर सेती छेड़ि छेड़ि कटै बिखु खारे ॥ ५ ॥ संतन
 संत साध मिलि रहीरे गुण बोलहि परउपकारे ॥ संतै संतु मिलै मनु बिगसै जिउ जल मिलि कमल सवारे ॥ ६ ॥ लोभ लहरि
 सभु सुआनु हलकु है हलकिओ सभहि बिगारे ॥ मेरे ठाकुर कै दीबानि खबरि होई गुरि गिआनु खड़गु लै मारे ॥ ७ ॥ राखु
 राखु राखु प्रभ मेरे मै राखहु किरपा धारे ॥ नानक मै धर अवर न काई मै सतिगुरु गुरु निसतारे ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

शगु माली गउडा महला ४

१ॐ सिति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति

अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

अनिक जतन करि रहे हरि अँतु नाही पाइआ ॥ हरि अगम अगम

अगाधि बोधि आदेसु हरि प्रभ राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोध लोभु मोहु नित झगरते झगराइआ ॥ हम राखु राखु दीन
तेरे हरि सरनि हरि प्रभ आइआ ॥ १ ॥ सरणागती प्रभ पालते हरि भगति वछलु नाइआ ॥ प्रहिलादु जन हरनाखि
पकरिआ हरि राखि लीओ तराइआ ॥ २ ॥ हरि चेतिरे मन महलु पावण सभ दूख भँजनु राइआ ॥ भउ जनम मरन निवारि
ठाकुर हरि गुरमती प्रभु पाइआ ॥ ३ ॥ हरि पतित पावन नामु सुआमी भउ भगत भँजनु गाइआ ॥ हरि हारु हरि उरि
धारिओ जन नानक नामि समाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ माली गउडा महला ४ ॥ जपि मन राम नामु सुखदाता ॥ सतसंगति
मिलि हरि सादु आइआ गुरमुखि ब्रहमु पछाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ गुरि मिलिरे हरि प्रभु जाता ॥
दुरमति मैलु गई सभ नीकरि हरि अँमिति हरि सरि नाता ॥ १ ॥ धनु धनु साध जिन्ही हरि प्रभु पाइआ तिन्ह पूछउ हरि की
बाता ॥ पाइ लगउ नित करउ जुदरीआ हरि मेलहु करमि बिधाता ॥ २ ॥ लिलाट लिखे पाइआ गुरु साधू गुर बचनी मनु
तनु राता ॥ हरि प्रभ आइ मिले सुखु पाइआ सभ किलविख पाप गवाता ॥ ३ ॥ राम रसाइणु जिन्ह गुरमति पाइआ तिन्ह
की ऊतम बाता ॥ तिन की पँक पाइरे वडभागी जन नानकु चरनि पराता ॥ ४ ॥ २ ॥ माली गउडा महला ४ ॥

सभिं सिध साधिक मुनि जना मनि भावनी हरि धिआइओ ॥ अपरँपरो पारब्रह्म सुआमी हरि अलखु गुरु लखाइओ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ हम नीच मधिम करम कीए नही चेतिओ हरि राइओ ॥ हरि आन मेलिओ सतिगुरु खिनु बंध मुकति
 कराइओ ॥ १ ॥ प्रभिं मसतके धुरि लीखिआ गुरमती हरि लिंव लाइओ ॥ पँच सबद दरगह बाजिआ हरि मिलिओ मँगलु
 गाइओ ॥ २ ॥ पतित पावनु नामु नरहरि मँदभागीआं नही भाइओ ॥ ते गरभ जोनी गालीअहि जिउ लोनु जलहि
 गलाइओ ॥ ३ ॥ मति देहि हरि प्रभ अगम ठाकुर गुर चरन मनु मै लाइओ ॥ हरि राम नामै रहउ लागो जन नानक नामि
 समाइओ ॥ ४ ॥ ३ ॥ माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि रसि लागा ॥ कमल प्रगासु भइआ गुरु पाइआ हरि
 जपिओ भ्रमु भउ भागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै भाइ भगति लागो मेरा हीअरा मनु सोइओ गुरमति जागा ॥ किलबिख खिन
 भए सांति आई हरि उर धारिओ वडभागा ॥ १ ॥ मनमुखु रँगु कसुँभु है कचूआ जिउ कुसम चारि दिन चागा ॥ खिन महि
 बिनसि जाइ परतापै डँडु धरमराइ का लागा ॥ २ ॥ सतसंगति प्रीति साध अति गूडी जिउ रँगु मजीठ बहु लागा ॥
 काइआ कापरु चीर बहु फारे हरि रँगु न लहै सभागा ॥ ३ ॥ हरि चारिओ रँगु मिलै गुरु सोभा हरि रँगि चललै रांगा ॥
 जन नानकु तिन के चरन परवारै जो हरि चरनी जनु लागा ॥ ४ ॥ ४ ॥ माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरे मन भजु हरि हरि
 नामु गुपाला ॥ मेरा मनु तनु लीनु भइआ राम नामै मति गुरमति राम रसाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति नामु धिआईए
 हरि हरि मनि जपीए हरि जपमाला ॥ जिन्ह कै मसतके लीखिआ हरि मिलिआ हरि बनमाला ॥ १ ॥ जिन्ह हरि नामु
 धिआइआ तिन्ह चूके सरब जँजाला ॥ तिन्ह जमु नेड़ि न आवई गुरि राखे हरि रखवाला ॥ २ ॥ हम बारिक किछू न
 जाणहू हरि मात पिता प्रतिपाला ॥ करु माइआ अगनि नित मेलते गुरि राखे दीन दइआला ॥ ३ ॥ बहु मैले निरमल
 होइआ सभ किलबिख हरि जसि जाला ॥ मनि अनदु भइआ गुरु पाइआ जन नानक सबदि निहाला ॥ ४ ॥ ५ ॥

माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरे मन हरि भजु सभ किलबिख काट ॥ हरि हरि उर धारिओ गुरि पूरै मेरा सीसु कीजै गुर वाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे हरि प्रभ की मै बात सुनावै तिसु मनु देवउ कटि काट ॥ हरि साजनु मेलिओ गुरि पूरै गुर बचनि बिकानो हटि हाट ॥ १ ॥ मकर प्राणि दानु बहु कीआ सरीरु दीओ अध काटि ॥ बिनु हरि नाम को मुकति न पावै बहु कंचनु दीजै कटि काट ॥ २ ॥ हरि कीरति गुरमति जसु गाइओ मनि उघरे कपट कपाट ॥ त्रिकुटी फोरि भरमु भउ भागा लज भानी मटुकी माट ॥ ३ ॥ कलजुगि गुरु पूरा तिन पाइआ जिन धुरि मसतकि लिखे लिलाट ॥ जन नानक रसु अँम्रितु पीआ सभ लाथी भूख तिखाट ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

माली गउड़ा महला ५ ॥ १४३॥ सितिगुर प्रसादि ॥

रे मन टहल हरि सुख सार ॥ अवर टहला झूठीआ नित करै जमु सिरि मार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिना मसतकि लीखिआ ते मिले संगार ॥ संसारु भउजलु तारिआ हरि संत पुरख अपार ॥ १ ॥ नित चरन सेवहु साध के तजि लोभ मोह बिकार ॥ सभ तजहु दूजी आसड़ी रखु आस इक निरँकार ॥ २ ॥ इकि भरमि भूले साकता बिनु गुर अँध अँधार ॥ धुरि होवना सु होइआ को न मेटणहार ॥ ३ ॥ अगम रूपु गोबिंद का अनिक नाम अपार ॥ धनु धँनु ते जन नानका जिन हरि नामा उरि धार ॥ ४ ॥ १ ॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ राम नाम कउ नमसकार ॥ जासु जपत होवत उधार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरनि मिटहि धँध ॥ जा कै सिमरनि छुटहि बँध ॥ जा कै सिमरनि मूरख चतुर ॥ जा कै सिमरनि कुलह उधर ॥ १ ॥ जा कै सिमरनि भउ दुख हरै ॥ जा कै सिमरनि अपदा टरै ॥ जा कै सिमरनि मुचत पाप ॥ जा कै सिमरनि नही संताप ॥ २ ॥ जा कै सिमरनि रिद बिगास ॥ जा कै सिमरनि कवला दासि ॥ जा कै सिमरनि निधि निधान ॥ जा कै सिमरनि तरे निदान ॥ ३ ॥ पतित पावनु नामु हरी ॥ कोटि भगत उधारु करी ॥ हरि दास दासा दीनु सरन ॥ नानक माथा संत चरन ॥ ४ ॥ २ ॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ ऐसो सहार्ई हरि को नाम ॥ साधसंगति भजु पूरन काम

॥ रहाउ ॥ बूडत कउ जैसे बेड़ी मिलत ॥ बूडत दीपक मिलत तिलत ॥ जलत अगनी मिलत नीर ॥ जैसे बारिक मुखहि खीर
 ॥ १ ॥ जैसे रण महि सखा भ्रात ॥ जैसे भूखे भोजन मात ॥ जैसे किरखहि बरस मेघ ॥ जैसे पालन सरनि सेंघ ॥ २ ॥
 गरुड़ मुखि नहीं सरप त्रास ॥ सूआ पिँजरि नहीं खाइ बिलासु ॥ जैसे आंडो हिरदे माहि ॥ जैसे दानो चकी दराहि ॥ ३ ॥
 बहुतु ओपमा थोर कही ॥ हरि अगम अगम अगाधि तुही ॥ ऊच मूचौ बहु अपार ॥ सिमरत नानक तरे सार ॥ ४ ॥ ३ ॥
 माली गउड़ा महला ५ ॥ इही हमारै सफल काज ॥ अपुने दास कउ लेहु निवाजि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन संतह माथ मोर ॥
 नैनि दरसु पेखउ निसि भोर ॥ हसत हमरे संत टहल ॥ प्रान मनु धनु संत बहल ॥ १ ॥ संतसँगि मेरे मन की प्रीति ॥ संत
 गुन बसहि मेरै चीति ॥ संत आगिआ मनहि मीठ ॥ मेरा कमलु बिगसै संत डीठ ॥ २ ॥ संतसँगि मेरा होइ निवासु ॥ संतन
 की मोहि बहुतु पिआस ॥ संत बचन मेरे मनहि मँत ॥ संत प्रसादि मेरे बिखै हँत ॥ ३ ॥ मुकति जुगति एहा निधान ॥ प्रभ
 दइआल मोहि देवहु दान ॥ नानक कउ प्रभ दइआ धारि ॥ चरन संतन के मेरे रिंदे मझारि ॥ ४ ॥ ४ ॥ माली गउड़ा महला ५
 ॥ सभ कै सँगी नाही दूरि ॥ करन करावन हाजरा हजूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनत जीओ जासु नामु ॥ दुख बिनसे सुख कीओ
 बिश्रामु ॥ सगल निधि हरि हरि हरे ॥ मुनि जनता की सेव करे ॥ १ ॥ जा कै घरि सगले समाहि ॥ जिस ते बिरथा कोइ नाहि
 ॥ जीअ जँत्र करे प्रतिपाल ॥ सदा सदा सेवहु किरपाल ॥ २ ॥ सदा धरमु जा कै दीबाणि ॥ बेमुहताज नहीं किछु काणि ॥
 सभ किछु करना आपन आपि ॥ रे मन मेरे तू ता कउ जापि ॥ ३ ॥ साधसँगति कउ हउ बलिहार ॥ जासु मिलि होवै उधारु
 ॥ नाम सँगि मन तनहि रात ॥ नानक कउ प्रभि करी दाति ॥ ४ ॥ ५ ॥

माली गउड़ा महला ५ दुपदे १८ शितिगुर प्रसादि ॥

हरि समरथ की सरना ॥ जीउ पिँडु धनु रासि मेरी प्रभ एक कारन करना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुखु पाईरे
 जीवणै का मूलु ॥ रवि रहिआ सरबत ठाई सुखमो असथूल ॥ १ ॥

आल जाल बिकार तजिं सभि हरि गुना निति गाउ ॥ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै देहु अपना नाउ ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ माली
गउड़ा महला ५ ॥ प्रभ समरथ देव अपार ॥ कउनु जानै चलित तेरे किछु अँतु नाही पार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक खिनहि थापि
उथापदा घड़ि भँनि करनैहारु ॥ जेत कीन उपारजना प्रभु दानु देइ दातार ॥ १ ॥ हरि सरनि आइओ दासु तेरा प्रभ ऊच
अगम मुरार ॥ कढि लेहु भउजलु बिखम ते जनु नानकु सद बलिहार ॥ २ ॥ २ ॥ ७ ॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ मनि तनि
बसि रहे गोपाल ॥ दीन बांधव भगति वछल सदा सदा क्रिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि अँते मधि तूहै प्रभ बिना नाही कोइ ॥
पूरि रहिआ सगल मँडल एकु सुआमी सोइ ॥ १ ॥ करनि हरि जसु नेत्र दरसनु रसनि हरि गुन गाउ ॥ बलिहारि जाए सदा
नानकु देहु अपना नाउ ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥ ६ ॥ १४ ॥

माली गउड़ा बाणी नामदेव जी की १४ शितिगुर प्रसादि ॥

धनि धँनि ओ राम बेनु बाजै ॥ मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धनि धनि मेघा रोमावली ॥ धनि धनि
क्रिसन ओढै कांबली ॥ १ ॥ धनि धनि तू माता देवकी ॥ जिह छिग रमईआ कवलापती ॥ २ ॥ धनि धनि बन खँड
बिंद्राबना ॥ जह खेलै स्त्री नाराइना ॥ ३ ॥ बेनु बजावै गोधनु चरै ॥ नामे का सुआमी आनद करै ॥ ४ ॥ १ ॥ मेरो बापु
माधउ तू धनु केसौ सांवलीओ बीठुलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर धरे चक्र बैकुँठ ते आए गज हसती के प्रान उधारीअले ॥
दुहसासन की सभा द्रोपती अँबर लेत उबारीअले ॥ १ ॥ गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले ॥ ऐसा अधमु
अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले ॥ २ ॥ २ ॥ सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥ राम बिना को बोलैरे ॥ १ ॥ रहाउ
॥ एकल माटी कुँजर चीटी भाजन हैं बहु नानारे ॥ असथावर जँगम कीट पतँगम घटि घटि रामु समानारे ॥ १ ॥ एकल
चिँता राखु अनँता अउर तजहु सभ आसारे ॥ प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासारे ॥ २ ॥ ३ ॥

रागु मारु महला १ घरु १ चउपदे

१४ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥

साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥ १ ॥ सबद ॥ पिछहु राती सदड़ा नामु
खसमु का लेहि ॥ खेमे छत्र सराइचे दिसनि रथ पीड़े ॥ जिनी तेरा नामु धिआइआ तिन कउ सदि मिले ॥ १ ॥ बाबा मै
करमहीण कूड़िआर ॥ नामु न पाइआ तेरा अँधा भरमि भूला मनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साद कीते दुख परफुड़े पूरबि लिखे माइ
॥ सुख थोड़े दुख अगले दूखे दूखे विहाइ ॥ २ ॥ विछुड़िआ का किआ वीछुड़ै मिलिआ का किआ मेलु ॥ साहिबु सो
सालाहीरे जिन करि देखिआ खेलु ॥ ३ ॥ सँजोगी मेलावड़ा इनि तनि कीते भोग ॥ विजोगी मिलि विछुड़े नानक भी सँजोग
॥ ४ ॥ १ ॥ मारु महला १ ॥ मिलि मात पिता पिँडु कमाइआ ॥ तिनि करतै लेखु लिखाइआ ॥ लिखु दाति जोति
वडिआई ॥ मिलि माइआ सुरति गवाई ॥ १ ॥ मूरख मन काहे करसहि माणा ॥ उठि चलणा खसमै भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
तजि साद सहज सुखु होई ॥ घर छडणे रहै न कोई ॥ किछु खाजै किछु धरि जाईरे ॥ जे बाहुड़ि दुनीआ आईरे ॥ २ ॥ सजु
काइआ पटु हटाए ॥ फुरमाइसि बहुतु चलाए ॥ करि सेज सुखाली सोवै ॥ हथी पउदी काहे रोवै ॥ ३ ॥ घर घुँमणवाणी

भाई ॥ पाप पथर तरणु न जाई ॥ भउ बेड़ा जीउ चड़ाऊ ॥ कहु नानक देवै काहू ॥ ४ ॥ २ ॥ मारू महला १ घरु १ ॥
 करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पाए ॥ जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अँतु हरे ॥ १ ॥
 चित चेतसि की नहीं बावरिआ ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी
 फाही तेती ॥ रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥ २ ॥ काइआ आरणु मनु विचि लोहा पँच
 अगनि तितु लागि रही ॥ कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ सँन्ही चिँत भई ॥ ३ ॥ भइआ मनूरु कँचनु फिरि होवै
 जे गुरु मिलै तिनेहा ॥ एकु नामु अँमितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥ ४ ॥ ३ ॥ मारू महला १ ॥ बिमल मझारि
 बससि निरमल जल पदमनि जावल रे ॥ पदमनि जावल जल रस सँगति सँगि दोख नहीं रे ॥ १ ॥ दादर तू कबहि न
 जानसि रे ॥ भखसि सिबालु बससि निरमल जल अँमितु न लखसि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसु जल नित न वसत अलीअल
 मेर चचा गुन रे ॥ चँद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे ॥ २ ॥ अँमित खँडु दूधि मधु सँचसि तू बन चातुर रे ॥
 अपना आपु तू कबहु न छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे ॥ ३ ॥ पँडित सँगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने ॥ अपना
 आपु तू कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिउ रे ॥ ४ ॥ इकि पारखँडी नामि न राचहि इकि हरि हरि चरणी रे ॥ पूरबि
 लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जापि रे ॥ ५ ॥ ४ ॥ मारू महला १ ॥ सलोकु ॥ पतित पुनीत असँख होहि हरि
 चरनी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ नानक जिसु मसतकि भाग ॥ १ ॥ सबदु ॥ सखी सहेली गरबि गहेली ॥
 सुणि सह की इक बात सुहेली ॥ १ ॥ जो मै बेदन सा किसु आखा माई ॥ हरि बिनु जीउ न रहै कैसे राखा माई ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ हउ दोहागणि खरी रँजाणी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुताणी ॥ २ ॥ तू दाना साहिबु सिरि मेरा ॥ खिजमति
 करी जनु बँदा तेरा ॥ ३ ॥ भणति नानकु अँदेसा एही ॥ बिनु दरसन कैसे खउ सनेही ॥ ४ ॥ ५ ॥ मारू महला १ ॥

मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा ॥ गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लाग़ा ॥ १ ॥ तेरे लाले
 किआ चतुराई ॥ साहिब का हुकमु न करणा जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मा लाली पिउ लाला मेरा हउ लाले का जाइआ ॥
 लाली नाचै लाला गावै भगति करउ तेरी राइआ ॥ २ ॥ पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ ॥ परवा फेरी
 पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ ॥ ३ ॥ लूण हरामी नानकु लाला बखसिहि तुधु वडिआई ॥ आदि जुगादि दइआ पति
 दाता तुधु विणु मुकति न पाई ॥ ४ ॥ ६ ॥ मारु महला १ ॥ कोई आखै भूतना को कहै बेताला ॥ कोई आखै आदमी
 नानकु वेचारा ॥ १ ॥ भइआ दिवाना साह का नानकु बउराना ॥ हउ हरि बिनु अवरु न जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तउ
 देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ ॥ एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ ॥ २ ॥ तउ देवाना जाणीऐ जा एका
 कार कमाइ ॥ हुकमु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ ॥ ३ ॥ तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु ॥
 मँदा जाणै आप कउ अवरु भला सँसारु ॥ ४ ॥ ७ ॥ मारु महला १ ॥ इहु धनु सरब रहिआ भरपूरि ॥ मनमुख फिरहि
 सि जाणहि दूरि ॥ १ ॥ सो धनु वखरु नामु रिदै हमारै ॥ जिंसु तू देहि तिसै निसतारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ न इहु धनु जलै
 न तसकरु लै जाइ ॥ न इहु धनु डूबै न इसु धन कउ मिलै सजाइ ॥ २ ॥ इसु धन की देखहु वडिआई ॥ सहजे माते
 अनदिनु जाई ॥ ३ ॥ इक बात अनूप सुनहु नर भाई ॥ इसु धनु बिनु कहहु किनै परम गति पाई ॥ ४ ॥ भणति नानकु
 अकथ की कथा सुणाए ॥ सतिगुरु मिलै त इहु धनु पाए ॥ ५ ॥ ८ ॥ मारु महला १ ॥ सूर सरु सोसि लै सोम सरु
 पेखि लै जुगति करि मरतु सु सनबंधु कीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हँसु नह कँधु छीजै ॥ १ ॥
 मूडे काइचे भरमि भुला ॥ नह चीनिआ परमानंदु बैरागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अजर गहु जारि लै अमर गहु मारि लै भ्राति
 तजि छोडि तउ अपिउ पीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हँसु नह कँधु छीजै ॥ २ ॥ भणति नानकु
 जनो खै जे हरि मनो मन पवन

सिउ अँम्रितु पीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हँसु नह कँधु छीजै ॥ ३ ॥ ९ ॥ मारु महला १ ॥
 माइआ मुई न मनु मुआ सरु लहरी मै मतु ॥ बोहिथु जल सिरि तरि टिकै साचा वखरु जितु ॥ माणकु मन महि मनु
 मारसी सचि न लागै कतु ॥ राजा तरति टिकै गुणी भै पँचाइण रतु ॥ १ ॥ बाबा साचा साहिबु दूरि न देखु ॥ सरब
 जोति जगजीवना सिरि सिरि साचा लेखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमा बिसनु रिखी मुनी सँकरु इँदु तपै भेखारी ॥ मानै हुकमु
 सोहै दरि साचै आकी मरहि अफारी ॥ जँगम जोध जती सँनिआसी गुरि पूरै वीचारी ॥ बिनु सेवा फलु कबहु न पावसि
 सेवा करणी सारी ॥ २ ॥ निधनिआ धनु निगुरिआ गुरु निँमाणिआ तू माणु ॥ अँधुलै माणकु गुरु पकड़िआ
 निताणिआ तू ताणु ॥ होम जपा नही जाणिआ गुरुमती साचु पछाणु ॥ नाम बिना नाही दरि ढोई झूठा आवण जाणु ॥
 ३ ॥ साचा नामु सलाहीऐ साचे ते त्रिपति होइ ॥ गिआन रतनि मनु माजीऐ बहुड़ि न मैला होइ ॥ जब लगु साहिबु मनि
 वसै तब लगु बिघनु न होइ ॥ नानक सिरु दे छुटीऐ मनि तनि साचा सोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ मारु महला १ ॥ जोगी
 जुगति नामु निरमाइलु ता कै मैलु न राती ॥ प्रीतम नाथु सदा सचु सँगे जनम मरण गति बीती ॥ १ ॥ गुसाई तेरा कहा
 नामु कैसे जाती ॥ जा तउ भीतरि महलि बुलावहि पूछउ बात निरँती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमणु ब्रहम गिआन इसनानी
 हरि गुण पूजे पाती ॥ एको नामु एकु नाराइणु त्रिभवण एका जोती ॥ २ ॥ जिहवा डँडी इहु घटु छाबा तोलउ नामु
 अजाची ॥ एको हाटु साहु सभना सिरि वणजारे इक भाती ॥ ३ ॥ दोवै सिरे सतिगुरु निबेडे सो बूझै जिसु एक लिव
 लागी जीअहु रहै निभराती ॥ सबदु वसाए भरमु चुकाए सदा सेवकु दिनु राती ॥ ४ ॥ ऊपरि गगनु गगन परि गोरखु ता
 का अगमु गुरु पुनि वासी ॥ गुर बचहनी बारि घरि एको नानकु भइआ उदासी ॥ ५ ॥ ११ ॥

रागु मारु महला १ घरु ७ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

अहिनिंसि जागै नीद न सोवै ॥ सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥ प्रेम के कान लगे तन भीतरि वैदु कि जाणै कारी जीउ ॥ १ ॥
॥ जिस नो साचा सिफती लाए ॥ गुरमुखि विरले किसै बुझाए ॥ अँमित की सार सोई जाणै जिं अमित का वापारी
जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिर सेती धन प्रेमो रचाए ॥ गुर कै सबदि तथा चितु लाए ॥ सहज सेती धन खरी सुहेली
त्रिसना तिरवा निवारी जीउ ॥ २ ॥ सहसा तोड़े भरमु चुकाए ॥ सहजे सिफती धणखु चड़ाए ॥ गुर कै सबदि मरै मनु
मारे सुँदरि जोगाधारी जीउ ॥ ३ ॥ हउमै जलिआ मनहु विसारे ॥ जम पुरि वजहि खड़ग करारे ॥ अब कै कहिरे नामु
न मिलई तू सहु जीअडे भारी जीउ ॥ ४ ॥ माइआ ममता पवहि खिआली ॥ जम पुरि फासहिगा जम जाली ॥ हेत के
बँधन तोड़ि न साकहि ता जमु करे खुआरी जीउ ॥ ५ ॥ ना हउ करता ना मै कीआ ॥ अँमितु नामु सतिगुरि दीआ ॥
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा नानक सरणि तुमारी जीउ ॥ ६ ॥ १ ॥ १२ ॥

मारु महला ३ घरु १ १८ सतिगुर परसादि ॥

जह बैसालहि तह बैसा सुआमी जह भेजहि तह जावा ॥ सभ नगरी महि एको राजा सभे पवितु हहि थावा ॥ १ ॥
बाबा देहि वसा सच गावा ॥ जा ते सहजे सहजि समावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुरा भला किछु आपस ते जानिआ एई
सगल विकारा ॥ इहु फुरमाइआ खसम का होआ वरतै इहु संसारा ॥ २ ॥ इँद्री धातु सबल कहीअत है इँद्री किस ते होई
॥ आपे खेल करै सभि करता ऐसा बूझै कोई ॥ ३ ॥ गुर परसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी ॥ जो तिसु
भाणा सो सति करि मानिआ काटी जम की फासी ॥ ४ ॥ भणति नानकु लेखा मागै कवना जा चूका मनि अभिमाना
॥ तासु तासु धरमराइ जपतु है पए सचे की सरना ॥ ५ ॥ १ ॥ मारु महला ३ ॥ आवण जाणा ना थीरे निज घरि
वासा होइ ॥ सचु खजाना बखसिआ आपे जाणै सोइ ॥ १ ॥ ए मन हरि जीउ चेति तू मनहु तजि विकार ॥

गुर कै सबदि धिआइ तू सचि लगी पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐथै नावहु भुलिआ फिरि हथु किथाऊ न पाइ ॥ जोनी सभि
 भवाईअनि बिसटा माहि समाइ ॥ २ ॥ वडभागी गुरु पाइआ पूरबि लिखिआ माइ ॥ अनदिनु सची भगति करि सचा
 लए मिलाइ ॥ ३ ॥ आपे खिसटि सभ साजीअनु आपे नदरि करेइ ॥ नानक नामि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ ४ ॥ २
 ॥ मारू महला ३ ॥ पिछले गुनह बखसाइ जीउ अब तू मारगि पाइ ॥ हरि की चरणी लागि रहा विचहु आपु गवाइ ॥ १
 ॥ मेरे मन गुरुमुखि नामु हरि धिआइ ॥ सदा हरि चरणी लागि रहा इक मनि एकै भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना मै जाति न
 पति है ना मै थेहु न थाउ ॥ सबदि भेदि भ्रमु कटिआ गुरि नामु दीआ समझाइ ॥ २ ॥ इहु मनु लालच करदा फिरै लालचि
 लागा जाइ ॥ धँधै कूड़ि विआपिआ जमपुरि चोटा खाइ ॥ ३ ॥ नानक सभु किछु आपे आपि है दूजा नाही कोइ ॥
 भगति खजाना बखसिओनु गुरुमुखा सुखु होइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ मारू महला ३ ॥ सचि रते से टोलि लहु से विरले संसारि
 ॥ तिन मिलिआ मुखु उजला जपि नामु मुरारि ॥ १ ॥ बाबा साचा साहिबु रिदै समालि ॥ सतिगुरु अपना पुछि देखु
 लेहु वखरु भालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु सचा सभ सेवदी धुरि भागि मिलावा होइ ॥ गुरुमुखि मिले से न विछुड़हि पावहि
 सचु सोइ ॥ २ ॥ इकि भगती सार न जाणनी मनमुख भरमि भुलाइ ॥ ओना विचि आपि वरतदा करणा किछु न जाइ ॥
 ३ ॥ जिसु नालि जोरु न चलई खले कीचै अरदासि ॥ नानक गुरुमुखि नामु मनि वसै ता सुणि करे साबासि ॥ ४ ॥ ४
 ॥ मारू महला ३ ॥ मारू ते सीतलु करे मनूरहु कँचनु होइ ॥ सो साचा सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ १ ॥ मेरे
 मन अनदिनु धिआइ हरि नाउ ॥ सतिगुरु कै बचनि अराधि तू अनदिनु गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरुमुखि एको जाणीऐ
 जा सतिगुरु देइ बुझाइ ॥ सो सतिगुरु सालाहीऐ जिंदू एह सोझी पाइ ॥ २ ॥ सतिगुरु छोडि दूजै लगे किआ करनि
 अगै जाइ ॥ जमपुरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ मेरा प्रभु वेपरवाहु है ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ नानक

तिसु सरणाई भजि पउ आपे बखसि मिलाइ ॥ ४ ॥ ७ ॥

मारु महला ४ घरु २ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

जपिओ नामु सुक जनक गुर बचनी हरि हरि सरणि परे ॥ दालदु भँजि सुदामे मिलिओ भगती भाइ तरे ॥ भगति वछलु हरि
नामु क्रितारथु गुरमुखि क्रिपा करे ॥ १ ॥ मेरे मन नामु जपत उधरे ॥ ध्रू प्रहिलादु बिदरु दासी सुतु गुरमुखि नामि तरे ॥ १
॥ रहाउ ॥ कलजुगि नामु प्रधानु पदारथु भगत जना उधरे ॥ नामा जैदेउ कबीरु त्रिलोचनु सभि दोख गए चमरे ॥ गुरमुखि
नामि लगे से उधरे सभि किलबिख पाप टरे ॥ २ ॥ जो जो नामु जपै अपराधी सभि तिन के दोख परहरे ॥ बेसुआ खत
अजामलु उधरिओ मुखि बोलै नाराइणु नरहरे ॥ नामु जपत उग्रसैणि गति पाई तोडि बँधन मुकति करे ॥ ३ ॥ जन कउ
आपि अनुग्रहु कीआ हरि अँगीकारु करे ॥ सेवक पैज रखै मेश गोविदु सरणि परे उधरे ॥ जन नानक हरि किरपा धारी उर
धरिओ नामु हरे ॥ ४ ॥ १ ॥ मारु महला ४ ॥ सिध समाधि जपिओ लिव लाई साधिक मुनि जपिआ ॥ जती सती
सँतोखी धिआइआ मुखि इँद्रादिक रविआ ॥ सरणि परे जपिओ ते भाए गुरमुखि पारि पइआ ॥ १ ॥ मेरे मन नामु जपत
तरिआ ॥ धँना जटु बालमीकु बटवारा गुरमुखि पारि पइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरि नर गण गँधरवे जपिओ रिखि बपुरै हरि
गाइआ ॥ सँकरि ब्रहमै देवी जपिओ मुखि हरि हरि नामु जपिआ ॥ हरि हरि नामि जिना मनु भीना ते गुरमुखि पारि पइआ ॥
२ ॥ कोटि कोटि तेतीस धिआइओ हरि जपतिआ अँतु न पाइआ ॥ बेद पुराण सिमिति हरि जपिआ मुखि पँडित हरि गाइआ
॥ नामु रसालु जिना मनि वसिआ ते गुरमुखि पारि पइआ ॥ ३ ॥ अनत तरँगी नामु जिन जपिआ मै गणत न करि सकिआ
॥ गोबिदु क्रिपा करे थाइ पाए जो हरि प्रभ मनि भाइआ ॥ गुरि धारि क्रिपा हरि नामु द्रीडाइओ जन नानक नामु लइआ ॥ ४
॥ २ ॥

मारू महला ४ वरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि नामु निधानु लै गुरमति हरि पति पाइ ॥ हलति पलति नालि चलदा हरि अँते लए छडाइ ॥ जिथै अवघट
गलीआ भीड़ीआ तिथै हरि हरि मुकति कराइ ॥ १ ॥ मेरे सतिगुरा मै हरि हरि नामु द्विडाइ ॥ मेरा मात पिता सुत बंधपो
मै हरि बिनु अवरु न माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै हरि बिरही हरि नामु है कोई आणि मिलावै माइ ॥ तिसु आगै मै जोदड़ी
मेरा प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ सतिगुरु पुरखु दइआल प्रभु हरि मेले ढिल न पाइ ॥ २ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ से
भागहीण मरि जाइ ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मरि जँमहि आवै जाइ ॥ ओइ जम दरि बधे मारीअहि हरि दरगह
मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ तू प्रभु हम सरणागती मो कउ मेलि लैहु हरि राइ ॥ हरि धारि क्रिपा जगजीवना गुर सतिगुर की
सरणाइ ॥ हरि जीउ आपि दइआलु होइ जन नानक हरि मेलाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ मारू महला ४ ॥ हउ पूँजी नामु
दसाइदा को दसे हरि धनु रासि ॥ हउ तिसु विटहु खन खँनीरे मै मेले हरि प्रभ पासि ॥ मै अँतरि प्रेमु पिरँम का किउ सजणु
मिलै मिलासि ॥ १ ॥ मन पिआरिआ मित्रा मै हरि हरि नामु धनु रासि ॥ गुरि पूरै नामु द्विडाइआ हरि धीरक हरि साबासि
॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि आपि मिलाइ गुरु मै दसे हरि धनु रासि ॥ बिनु गुर प्रेमु न लभई जन वेखहु मनि निरजासि ॥
हरि गुर विचि आपु रखिआ हरि मेले गुर साबासि ॥ २ ॥ सागर भगति भँडार हरि पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुरु तुठा
खोलि देइ मुखे गुरमुखे हरि परगासि ॥ मनमुखे भाग विहूणिआ तिख मुईआ कँधी पासि ॥ ३ ॥ गुरु दाता दातारु
है हउ मागउ दानु गुर पासि ॥ चिरी विछुँना मेलि प्रभ मै मनि तनि वडड़ी आस ॥ गुर भावै सुणि बेनती जन नानक की
अरदासि ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ मारू महला ४ ॥ हरि हरि कथा सुणाइ प्रभ गुरमति हरि रिदै समाणी ॥ जपि हरि हरि
कथा वडभागीआ हरि उतम पदु निरबाणी ॥ गुरमुखा मनि परतीति है गुरि पूरै नामि समाणी ॥ १ ॥ मन मेरे

मै हरि हरि कथा मनि भाणी ॥ हरि हरि कथा नित सदा करि गुरुमुखि अकथ कहाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै मनु तनु खोजि
 ढँढोलिआ किउ पाईऐ अकथ कहाणी ॥ संत जना मिलि पाइआ सुणि अकथ कथा मनि भाणी ॥ मेरै मनि तनि नामु अधारु
 हरि मै मेले पुरखु सुजाणी ॥ २ ॥ गुर पुरखै पुरखु मिलाइ प्रभ मिलि सुरती सुरति समाणी ॥ वडभागी गुरु सेविआ हरि
 पाइआ सुघड़ सुजाणी ॥ मनमुख भाग विहूणिआ तिन दुखी रैणि विहाणी ॥ ३ ॥ हम जाचिक दीन प्रभ तेरिआ मुखि
 दीजै अँमित बाणी ॥ सतिगुरु मेरा मित्रु प्रभ हरि मेलहु सुघड़ सुजाणी ॥ जन नानक सरणागती करि किरपा नामि समाणी
 ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ मारु महला ४ ॥ हरि भाउ लगा बैरागीआ वडभागी हरि मनि राखु ॥ मिलि संगति सरधा ऊपजै गुरु
 सबदी हरि रसु चाखु ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ गुरबाणी हरि गुण भाखु ॥ १ ॥ मन पिआरिआ मित्रा हरि हरि नाम
 रसु चाखु ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हलति पलति पति राखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हरि कीरति गुरुमुखि
 चाखु ॥ तनु धरती हरि बीजीऐ विचि संगति हरि प्रभ राखु ॥ अमितु हरि हरि नामु है गुरि पूरै हरि रसु चाखु ॥ २ ॥
 मनमुख तिसना भरि रहे मनि आसा दह दिस बहु लाखु ॥ बिनु नावै धिगु जीवदे विचि बिसटा मनमुख राखु ॥ ओइ आवहि
 जाहि भवाईअहि बहु जोनी दुरगँध भाखु ॥ ३ ॥ त्राहि त्राहि सरणागती हरि दइआ धारि प्रभ राखु ॥ संतसंगति मेलापु
 करि हरि नामु मिलै पति साखु ॥ हरि हरि नामु धनु पाइआ जन नानक गुरुमति भाखु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

मारु महला ४ घरु ५ वरि सतिगुरु प्रसादि ॥

हरि हरि भगति भरे भँडारा ॥ गुरुमुखि रामु करे निसतारा ॥ जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी सो हरि के गुण गावै जीउ ॥ १
 ॥ हरि हरि क्रिपा करे बनवाली ॥ हरि हिरदै सदा सदा समाली ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे जीअड़े जपि हरि हरि नामु छडावै
 जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सुख सागरु अँमितु हरि नाउ ॥ मँगत जनु जाचै हरि देहु पसाउ ॥ हरि सति सति सदा हरि सति हरि सति मेरै मनि भावै जीउ
 ॥ २ ॥ नवे छिद्र स्रवहि अपवित्रा ॥ बोलि हरि नाम पवित्र सभि किता ॥ जे हरि सुप्रसँनु होवै मेरा सुआमी हरि सिमरत मलु
 लहि जावै जीउ ॥ ३ ॥ माइआ मोहु बिखमु है भारी ॥ किउ तरीरे दुतरु सँसारी ॥ सतिगुरु बोहिथु देइ प्रभु साचा जपि हरि
 हरि पारि लँघावै जीउ ॥ ४ ॥ तू सरबत्र तेरा सभु कोई ॥ जो तू करहि सोई प्रभ होई ॥ जनु नानकु गुण गावै बेचारा हरि भावै
 हरि थाइ पावै जीउ ॥ ५ ॥ १ ॥ ७ ॥ मारु महला ४ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे ॥ सभि किलबिख काटै हरि तेरे ॥ हरि
 धनु राखहु हरि धनु सँचहु हरि चलदिआ नालि सखाई जीउ ॥ १ ॥ जिस नो क्रिपा करे सो धिआवै ॥ नित हरि जपु जापै
 जपि हरि सुखु पावै ॥ गुरु परसादी हरि रसु आवै जपि हरि हरि पारि लँघाई जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ निरँकार सति नामु
 ॥ जग महि स्रैसटु ऊतम कामु ॥ दुसमन दूत जमकालु ठेह मारउ हरि सेवक नेडि न जाई जीउ ॥ २ ॥ जिसु उपरि हरि का
 मनु मानिआ ॥ सो सेवकु चहु जुग चहु कुँट जानिआ ॥ जे उस का बुरा कहै कोई पापी तिसु जम कँकरु खाई जीउ ॥ ३ ॥
 सभ महि एकु निरँजन करता ॥ सभि करि करि वेश्वै अपणे चलता ॥ जिसु हरि राखै तिसु कउणु मारै जिसु करता आपि छडाई
 जीउ ॥ ४ ॥ हउ अनदिनु नामु लई करतारे ॥ जिनि सेवक भगत सभे निसतारे ॥ दस अठ चारि वेद सभि पूछहु जन नानक
 नामु छडाई जीउ ॥ ५ ॥ २ ॥ ८ ॥

मारु महला ५ घरु २ १४ सतिगुरु प्रसादि ॥

डरपै धरति अकासु नख्यत्रा सिर ऊपरि अमरु करारा ॥ पउणु पाणी बैसँतरु डरपै डरपै इँद्रु बिचारा ॥ १ ॥ एका निरभउ बात
 सुनी ॥ सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो गुरु मिलि गाइ गुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देहधार अरु देवा डरपहि सिध साधिक डरि
 मुइआ ॥ लख चउरासीह मरि मरि जनमे फिरि फिरि जोनी जोइआ ॥ २ ॥ राजसु सातकु तामसु डरपहि केते रूप

उपाइआ ॥ छल बपुरी इह कउला डरपै अति डरपै धरम राइआ ॥ ३ ॥ सगल समग्री डरहि बिआपी बिनु डर करणैहारा ॥
 कहु नानक भगतन का सँगी भगत सोहहि दरबारा ॥ ४ ॥ १ ॥ मारू महला ५ ॥ पांच बरख को अनाथु धू बारिकु हरि
 सिमरत अमर अटारे ॥ पुत्र हेति नाराइणु कजिओ जम कँकर मारि बिदारे ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥ मोहि
 दीन अल्प मति निरगुण परिओ सरणि दुआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बालमीकु सुपचारो तरिओ बधिक तरे बिचारे ॥ एक
 निमख मन माहि अराधिओ गजपति पारि उतारे ॥ २ ॥ कीनी रखिआ भगत प्रहिलादै हरनाखस नखहि बिदारे ॥ बिदरु
 दासी सुतु भरओ पुनीता सगले कुल उजारे ॥ ३ ॥ कवन पराध बतावउ अपुने मिथिआ मोह मगनारे ॥ आइओ सास
 नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारै ॥ ४ ॥ २ ॥ मारू महला ५ ॥ वित नवित भ्रमिओ बहु भाती अनिक जतन करि
 धाए ॥ जो जो करम कीए हउ हउमै ते ते भए अजाए ॥ १ ॥ अवर दिन काहू काज न लाए ॥ सो दिनु मो कउ दीजै प्रभ
 जीउ जा दिन हरि जसु गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुत्र कलत्र ग्रिह देखि पसारा इस ही महि उरझाए ॥ माइआ मद चाखि भए
 उदमाते हरि हरि कबहु न गाए ॥ २ ॥ इह बिधि खोजी बहु परकारा बिनु सँतन नहीं पाए ॥ तुम दातार वडे प्रभ सँमथ
 मागन कउ दानु आए ॥ ३ ॥ तिआगिओ सगला मानु महता दास रेण सरणाए ॥ कहु नानक हरि मिलि भए एकै महा
 अनँद सुख पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ मारू महला ५ ॥ कवण थान धीरिओ है नामा कवन बसतु अहँकारा ॥ कवन चिहन सुनि
 ऊपरि छोहिओ मुख ते सुनि गारा ॥ १ ॥ सुनहु रे तू कउनु कहा ते आइओ ॥ एती न जानउ केतीक मुदति चलते खबरि न
 पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहन सील पवन अरु पाणी बसुधा खिमा निभराते ॥ पँच तत मिलि भइओ सँजोगा इन महि
 कवन दुराते ॥ २ ॥ जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥ जनम मरणु उस ही कउ हैरे ओहा आवै जाई ॥ ३
 ॥ बरनु चिहनु नाही किछु रचना मिथिआ सगल पसारा ॥ भणति नानकु जब खेलु उझारै तब एकै एकँकारा ॥ ४ ॥ ४ ॥

मारू महला ५ ॥ मान मोह अरु लोभ विकारा बीओ चीति न घालिओ ॥ नाम रतनु गुणा हरि बणजे लादि वखरु लै
 चालिओ ॥ १ ॥ सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥ जीवत साहिबु सेविओ अपना चलते राखिओ चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिस ते मुखु नही मोरिओ ॥ सहजु अनंदु राखिओ ग्रिह भीतरि उठि उआहू कउ दउरिओ ॥ २
 ॥ आगिआ महि भूख सोई करि सूखा सोग हरख नही जानिओ ॥ जो जो हुकमु भइओ साहिब का सो माथै ले मानिओ ॥
 ३ ॥ भइओ क्रिपालु ठाकुरु सेवक कउ सवरे हलत पलाता ॥ धँनु सेवकु सफलु ओहु आइआ जिनि नानक खसमु पछाता
 ॥ ४ ॥ ५ ॥ मारू महला ५ ॥ खुलिआ करमु क्रिपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गार्इ ॥ स्रमु थाका पाए बिस्वामा मिटि गई
 सगली धार्इ ॥ १ ॥ अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥ चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणार्इ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल बैराई ॥ सद हजूरि हाजरु है नाजरु कतहि न भइओ दूरार्इ ॥ २ ॥ सुख सीतल
 सरधा सभ पूरी होए संत सहार्इ ॥ पावन पतित कीए खिन भीतरि महिमा कथनु न जाई ॥ ३ ॥ निरभउ भए सगल भै खोए
 गोबिद चरण ओटाई ॥ नानकु जसु गावै ठाकुर कारैणि दिनसु लिव लाई ॥ ४ ॥ ६ ॥ मारू महला ५ ॥ जो समरथु सरब
 गुण नाइकु तिस कउ कबहु न गावसिरे ॥ छोडि जाइ खिन भीतरि ता कउ उआ कउ फिरि फिरि धावसिरे ॥ १ ॥ अपुने
 प्रभ कउ किउ न समारसिरे ॥ बैरी साँगि रँग रसि रचिआ तिसु सिउ जीअरा जारसिरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै नामि सुनिरे
 जमु छोडै ता की सरणि न पावसिरे ॥ काढि देइ सिआल बपुरे कउ ता की ओट टिकावसिरे ॥ २ ॥ जिस का जासु सुनत
 भव तरीए ता सिउ रँगु न लावसिरे ॥ थोरी बात अल्प सुपने की बहुरि बहुरि अटकावसिरे ॥ ३ ॥ भइओ प्रसादु क्रिपा
 निधि ठाकुरु संतसाँगि पति पाई ॥ कहु नानक त्रै गुण भ्रमु छूटा जउ प्रभ भए सहार्इ ॥ ४ ॥ ७ ॥ मारू महला ५ ॥
 अंतरजामी सभ बिधि जानै तिस ते कहा दुलारिओ ॥ हसत पाव इरे खिन भीतरि अगनि साँगि लै जारिओ ॥ १ ॥

मूड़े तै मन ते रामु बिसारिओ ॥ लूणु खाइ करहि हरामखोरी पेखत नैन बिदारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असाध रोगु
उपजिओ तन भीतरि टरत न काहू टारिओ ॥ प्रभ बिसरत महा दुखु पाइओ इहु नानक ततु बीचारिओ ॥ २ ॥ ८ ॥
मारु महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ राखे चीति ॥ हरि गुण गावह नीता नीत ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोऊ ॥
आदि मधि अँति है सोऊ ॥ १ ॥ सँतन की ओट आपे आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै वसि है सगल सँसारु ॥ आपे
आपि आपि निरँकारु ॥ नानक गहिओ साचा सोइ ॥ सुखु पाइआ फिरि दूखु न होइ ॥ २ ॥ ९ ॥

मारु महला ५ घरु ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

पान सुखदाता जीअ सुखदाता तुम कोहे बिसारिओ अगिआनथ ॥ होछा मद्दु चाखि होए तुम बावर दुलभ जनमु
अकारथु ॥ १ ॥ रे नर ऐसी करहि इआनथ ॥ तजि सारँगधर भ्रमि तू भूला मोहि लपटिउ दासी सँगि सानथ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ धरणीधरु तिआगि नीच कुल सेवहि हउ हउ करत बिहावथ ॥ फोकट करम करहि अगिआनी मनमुखि अँध
कहावथ ॥ २ ॥ सति होता असति करि मानिआ जो बिनसत सो निहचलु जानथ ॥ पर की कउ अपनी करि पकरी
ऐसे भूल भुलानथ ॥ ३ ॥ खत्री ब्राहमण सूद वैस सभ एकै नामि तरानथ ॥ गुरु नानकु उपदेसु कहतु है जो सुनै सो
पारि परानथ ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥ मारु महला ५ ॥ गुप्तु करता सँगि सो प्रभु डहकावए मनुखाइ ॥ बिसारि हरि
जीउ बिखै भोगहि तपत थँम गलि लाइ ॥ १ ॥ रे नर काइ पर छिहि जाइ ॥ कुचल कठोर कामि गरधभ तुम नहीं
सुनिओ धरमराइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिकार पाथर गलहि बाधे निँद पोट सिराइ ॥ महा सागरु समुदु लँघना पारि न
परना जाइ ॥ २ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि बिआपिओ नेत्र रखे फिराइ ॥ सीसु उठावन न कबहू मिलई महा दुतर माइ
॥ ३ ॥ सूरु मुकता ससी मुकता ब्रहम गिआनी अलिपाइ ॥ सुभावत जैसे बैसँतर अलिपत सदा निरमलाइ ॥

४ ॥ जिसु करमु खुलिआ तिसु लहिआ पड़दा जिनि गुर पहि मँनिआ सुभाइ ॥ गुरि मँत्रु अवरखथु नामु दीना जन नानक
 सँजट जोनि न पाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ रे नर इन बिधि पारि पराइ ॥ धिआइ हरि जीउ होइ मिरतकु तिआगि दूजा भाउ ॥
 रहाउ दूजा ॥ २ ॥ ११ ॥ मारु महला ५ ॥ बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था ॥ अनभउ अचरज
 रूपु प्रभ पेखिआ मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ॥ १ ॥ मानकु पाइओ रे पाइओ हरि पूरा पाइआ था ॥ मोलि
 अमोलु न पाइआ जाई करि किरपा गुरु दिवाइआ था ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अदिसटु अगोचरु पारब्रहमु मिलि साधू अकथु
 कथाइआ था ॥ अनहद सबदु दसम दुआरि वजिओ तह अँमित नामु चुआइआ था ॥ २ ॥ तोटि नाही मनि तिसना बूझी
 अखुट भँडार समाइआ था ॥ चरण चरण चरण गुर सेवे अघडु घडिओ रसु पाइआ था ॥ ३ ॥ सहजे आवा सहजे जावा
 सहजे मनु खेलाइआ था ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइआ ता हरि महली महलु पाइआ था ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥ मारु
 महला ५ ॥ जिसहि साजि निवाजिआ तिसहि सिउ रुच नाहि ॥ आन रूती आन बोईऐ फलु न फूलै ताहि ॥ १ ॥ रे मन
 वत्र बीजण नाउ ॥ बोइ खेती लाइ मनुआ भलो समउ सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोइ खहड़ा भरमु मन का सतिगुर सरणी
 जाइ ॥ करमु जिस कउ धुरहु लिखिआ सोई कार कमाइ ॥ २ ॥ भाउ लागा गोबिद सिउ घाल पाई थाइ ॥ खेति मेरै
 जँमिआ निखुटि न कबहू जाइ ॥ ३ ॥ पाइआ अमोलु पदारथो छोडि न कतहू जाइ ॥ कहु नानक सुखु पाइआ त्रिपति रहे
 आघाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥ मारु महला ५ ॥ फुटो आंडा भरम का मनहि भइओ परगासु ॥ काटी बेरी पगह ते गुरि
 कीनी बँदि खलासु ॥ १ ॥ आवण जाणु रहिओ ॥ तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि सीतल नामु दीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जब ते साधू सँगु भइआ तउ छोडि गए निगहार ॥ जिस की अटक तिस ते छुटी तउ कहा करै कोटवार ॥ २ ॥ चूका भारा
 करम का होए निहकरमा ॥ सागर ते कँठै चड़े गुरि कीने धरमा ॥ ३ ॥ सचु थानु सचु बैठका सचु सुआउ बणाइआ ॥

सचु पूँजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४ ॥ मारू महला ५ ॥ बेदु पुकारै मुख ते पँडत कामामन का
 माठा ॥ मोनी होइ बैठा इकांती हिरदै कलपन गाठा ॥ होइ उदासी छिहु तजिं चलिंओ छुटकै नाहीं नाठा ॥ १ ॥ जीअ
 कीकै पहिं बात कहा ॥ आपि मुकतु मो कउ प्रभु मेले ऐसो कहा लहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपसी करिं कै देही साधी मनूआ
 दह दिस धाना ॥ ब्रहमचारि ब्रहमचजु कीना हिरदै भइआ गुमाना ॥ सँनिआसी होइ कै तीरथि भ्रमिओ उसु महि क्रोधु
 बिगाना ॥ २ ॥ घूँघर बाधि भए रामदासा रोटीअन के ओपावा ॥ बरत नेम करम खट कीने बाहरिं भेख दिखावा ॥
 गीत नाद मुखिं राग अलापे मनि नही हरिं हरिं गावा ॥ ३ ॥ हरख सोग लोभ मोह रहत हहिं निरमल हरिं के सँता ॥
 तिन की धूँडिं पाए मनु मेश जा दइआ करे भगवँता ॥ कहु नानक गुरु पूरा मिलिआ तां उतरीं मन की चिँता ॥ ४ ॥
 मेश अँतरजामी हरिं राइआ ॥ सभु किछु जाणै मेरे जीअ का प्रीतमु बिसरिं गए बकबाइआ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ६ ॥
 १५ ॥ मारू महला ५ ॥ कोटि लाख सब को राजा जिंसु हिरदै नामु तुमारा ॥ जा कउ नामु न दीआ मेरै सतिगुरिं से
 मरिं जनमहि गावारा ॥ १ ॥ मेरे सतिगुर ही पति राखु ॥ चीति आवहिं तब ही पति पूरी बिसरत रलीऐ खाकु ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ रूप रँग खुसीआ मन भोगण ते ते छिद्र विकारा ॥ हरिं का नामु निधानु कलिआणा सूख सहजु इहु सारा ॥ २
 ॥ माइआ रँग बिरँग खिनै महिं जिउ बादर की छाइआ ॥ से लाल भए गूँडै रँगि राते जिन गुर मिलिं हरिं हरिं गाइआ ॥
 ३ ॥ ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा ॥ नामो वडिआई सोभा नानक खसमु पिआरा ॥ ४ ॥ ७ ॥ १६ ॥

मारू महला ५ घरु ४ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

ओअँकारि उतपाती ॥ कीआ दिनसु सभ राती ॥ वणु त्रिणु त्रिभवण पाणी ॥ चारिं बेद चारे खाणी ॥ खँड दीप सभिं
 लोआ ॥ एक कवावै ते सभिं होआ ॥ १ ॥ करणैहारा बूझहु रे ॥ सतिगुरु मिलै त सूझै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण
 कीआ पसारा ॥ नरक सुरग अवतारा ॥ हउमै आवै जाई ॥ मनु टिकणु न पावै

राई ॥ बाझु गुरू गुबारा ॥ मिलि सतिगुर निसतारा ॥ २ ॥ हउ हउ करम कमाणे ॥ तेते बँध गलाणे ॥ मेरी मेरी धारी ॥
 ओहा पैरि लोहारी ॥ सो गुर मिलि एकु पछाणै ॥ जिसु होवै भागु मथाणै ॥ ३ ॥ सो मिलिआ जि हरि मनि भाइआ ॥ सो
 भूला जि प्रभू भूलाइआ ॥ नह आपहु मूरखु गिआनी ॥ जि करावै सु नामु वखानी ॥ तेरा अँतु न पारावारा ॥ जन नानक
 सद बलिहारा ॥ ४ ॥ १ ॥ १७ ॥ मारु महला ५ ॥ मोहनी मोहि लीए त्रै गुनीआ ॥ लोभि विआपी झूठी दुनीआ ॥ मेरी
 मेरी करि कै सँची अँत की बार सगल ले छलीआ ॥ १ ॥ निरभउ निरँकारु दइअलीआ ॥ जीअ जँत सगले प्रतिपलीआ ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ एकै स्रमु करि गाडी गडहै ॥ एकहि सुपनै दासु न छडहै ॥ राजु कमाइ करी जिनि थैली ता कै सँगि न चँचलि
 चलीआ ॥ २ ॥ एकहि प्राण पिँड ते पिआरी ॥ एक सँची तजि बाप महतारी ॥ सुत मीत भ्रात ते गुहजी ता कै निकटि न
 होई खलीआ ॥ ३ ॥ होइ अउधूत बैठे लाइ तारी ॥ जोगी जती पँडित बीचारी ॥ ग्रिहि मड़ी मसाणी बन महि बसते ऊठि
 तिना कै लागी पलीआ ॥ ४ ॥ काटे बँधन ठाकरि जा के ॥ हरि हरि नामु बसिओ जीअ ता कै ॥ साधसँगि भए जन मुकते
 गति पाई नानक नदरि निहलीआ ॥ ५ ॥ २ ॥ १८ ॥ मारु महला ५ ॥ सिमरहु एकु निरँजन सोऊ ॥ जाते बिरथा जात
 न कोऊ ॥ मात गरभ महि जिनि प्रतिपारिआ ॥ जीउ पिँडु दे साजि सवारिआ ॥ सोई बिधाता खिनु खिनु जपीरे ॥ जिसु
 सिमरत अवगुण सभि ढकीरे ॥ चरण कमल उर अँतरि धारहु ॥ बिखिआ बन ते जीउ उधारहु ॥ करण पलाह मिटहि
 बिललाटा ॥ जपि गोविद भरमु भउ फाटा ॥ साधसँगि विरला को पाए ॥ नानकु ता कै बलि बलि जाए ॥ १ ॥ राम नामु
 मनि तनि आधार ॥ जो सिमरै तिस का निसतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ वसतु सति करि मानी ॥ हितु लाइओ सठ
 मूड अगिआनी ॥ काम क्रोध लोभ मद माता ॥ कउडी बदलै जनमु गवाता ॥ अपना छोडि पराइरे राता ॥ माइआ मद मन
 तन सँगि जाता ॥ त्रिसन न बूझै करत कलोला ॥ ऊणी आस मिथिआ सभि बोला ॥ आवत

इकेला जात इकेला ॥ हम तुम सँगि झूठे सबि बोला ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ ॥ नानक किरतु न जाइ मिटाइओ ॥
 ॥ २ ॥ पसु पँखी भूत अरु प्रेता ॥ बहु बिधि जोनी फिरत अनेता ॥ जह जानो तह रहनु न पावै ॥ थान बिहून उठि
 उठि फिरि धावै ॥ मनि तनि बासना बहुतु बिसथारा ॥ अहँमेव मूठो बेचारा ॥ अनिक दोख अरु बहुतु सजाई ॥ ता की
 कीमति कहणु न जाई ॥ प्रभ बिसरत नरक महि पाइआ ॥ तह मात न बँधु न मीत न जाइआ ॥ जिस कउ होत क्रिपाल
 सुआमी ॥ सो जनु नानक पारगरामी ॥ ३ ॥ भ्रमत भ्रमत प्रभ सरनी आइआ ॥ दीना नाथ जगत पित माइआ ॥ प्रभ
 दइआल दुख दरद बिदारण ॥ जिसु भावै तिस ही निसतारण ॥ अँध कूप ते काढनहारा ॥ प्रेम भगति होवत निसतारा ॥
 साथ रूप अपना तनु धारिआ ॥ महा अगनि ते आपि उबारिआ ॥ जप तप सँजम इस ते किछु नाही ॥ आदि अँति प्रभ
 अगम अगाही ॥ नामु देहि मागै दासु तेरा ॥ हरि जीवन पदु नानक प्रभु मेरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १९ ॥ मारु महला ५ ॥ कत
 कउ डहकावहु लोगा मोहन दीन किरपाई ॥ १ ॥ ऐसी जानि पाई ॥ सरणि सूरु गुरु दाता राखै आपि वडाई ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ भगता का आगिआकारी सदा सदा सुखदाई ॥ २ ॥ अपने कउ किरपा करीअहु इकु नामु धिआई ॥ ३ ॥
 नानकु दीनु नामु मागै दुतीआ भरमु चुकाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ २० ॥ मारु महला ५ ॥ मेरा ठाकुरु अति भारा ॥ मोहि सेवकु
 बेचारा ॥ १ ॥ मोहनु लालु मेरा प्रीतम मन प्राना ॥ मो कउ देहु दाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगले मै देखे जोई ॥ बीजउ
 अवरु न कोई ॥ २ ॥ जीअन प्रतिपालि समाहै ॥ है होसी आहे ॥ ३ ॥ दइआ मोहि कीजै देवा ॥ नानक लागो सेवा
 ॥ ४ ॥ ५ ॥ २१ ॥ मारु महला ५ ॥ पतित उधारन तारन बलि बलि बले बलि जाईऐ ॥ ऐसा कोई भेटै सँतु जितु हरि
 हरे हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ मो कउ कोई न जानत कहीअत दासु तुमारा ॥ एहा ओट आधार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब धारन
 प्रतिपारन इक बिनउ दीना ॥ तुमरी बिधि तुम ही जानहु तुम जल हम मीना ॥ २ ॥ पूरन बिसथीरन सुआमी आहि

आइओ पाछै ॥ सगलो भू मँडल खँडल प्रभ तुम ही आछै ॥ ३ ॥ अटल अखिओ देवा मोहन अलख अपारा ॥ दानु पावउ
सँता सँगु नानक रेनु दासारा ॥ ४ ॥ ६ ॥ २२ ॥ मारू महला ५ ॥ त्रिपति आघाए सँता ॥ गुर जाने जिन मँता ॥ ता की
किछु कहनु न जाई ॥ जा कउ नाम बडाई ॥ १ ॥ लालु अमोला लालो ॥ अगह अतोला नामो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अविगत
सिउ मानिआ मानो ॥ गुरमुखि ततु गिआनो ॥ पेखत सगल धिआनो ॥ तजिओ मन ते अभिमानो ॥ २ ॥ निहचलु तिन
का ठाणा ॥ गुर ते महलु पछाणा ॥ अनदिनु गुर मिलि जागे ॥ हरि की सेवा लागे ॥ ३ ॥ पूरन त्रिपति अघाए ॥ सहज
समाधि सुभाए ॥ हरि भँडारु हाथि आइआ ॥ नानक गुर ते पाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ २३ ॥

मारू महला ५ घरु ६ दुपदे १३ शितिगुर परसादि ॥

छोडि सगल सिआणपा मिलि साध तिआगि गुमानु ॥ अवरु सभु किछु मिथिआ रसना राम राम वखानु ॥ १ ॥ मेरे मन
करन सुणि हरि नामु ॥ मिटहि अघ तेरे जनम जनम के कवनु बपुरो जामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूख दीन न भउ बिआपै मिलै सुख
बिस्वामु ॥ गुर प्रसादि नानकु बखानै हरि भजनु ततु गिआनु ॥ २ ॥ १ ॥ २४ ॥ मारू महला ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ
से होत देखे खेह ॥ पुत्र मित्र बिलास बनिता तूटते ए नेह ॥ १ ॥ मेरे मन नामु नित नित लेह ॥ जलत नाही अगनि सागर
सूखु मनि तनि देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिख छाइआ जैसे बिनसत पवन झूलत मेह ॥ हरि भगति द्रिडु मिलु साध नानक तेरे
कामि अवत एह ॥ २ ॥ २ ॥ २५ ॥ मारू महला ५ ॥ पुरखु पूरन सुखह दाता सँगि बसतो नीत ॥ मरै न आवै न जाइ
बिनसै बिआपत उसन न सीत ॥ १ ॥ मेरे मन नाम सिउ करि प्रीति ॥ चेति मन महि हरि हरि निधाना एह निरमल शीति ॥
१ ॥ रहाउ ॥ क्रिपाल दइआल गोपाल गोबिद जो जपै तिसु सीधि ॥ नवल नवतन चतुर सुँदर मनु नानक तिसु सँगि बीधि
॥ २ ॥ ३ ॥ २६ ॥ मारू महला ५ ॥ चलत बैसत सोवत जागत गुर मँत्रु रिदै चितारि ॥ चरण सरण भजु सँगि

साधू भव सागर उतरहि पारि ॥ १ ॥ मेरे मन नामु हिरदै धारि ॥ करि प्रीति मनु तनु लाइ हरि सिउ अवर सगल विसारि ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ जीउ मनु तनु प्राण प्रभ के तू आपन आपु निवारि ॥ गोविद भजु सभि सुआरथ पूरे नानक कबहु न हारि ॥ २ ॥
 ४ ॥ २७ ॥ मारू महला ५ ॥ तजि आपु बिनसी तापुरेण साधू थीउ ॥ तिसहि परापति नामु तेरा करि क्रिपा जिसु दीउ ॥ १
 ॥ मेरे मन नामु अँमितु पीउ ॥ आन साद बिसारि होछे अमरु जुगु जुगु जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु इक रस रँग नामा नामि
 लागी लीउ ॥ मीतु साजनु सखा बँधपु हरि एकु नानक कीउ ॥ २ ॥ ५ ॥ २८ ॥ मारू महला ५ ॥ पत्रिपालि माता उदरि
 राखै लगनि देत न सेक ॥ सोई सुआमी ईहा राखै बूझु बुधि बिबेक ॥ १ ॥ मेरे मन नाम की करि टेक ॥ तिसहि बूझु जिनि तू
 कीआ प्रभु करण कारण एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चेति मन महि तजि सिआणप छोडि सगले भेख ॥ सिमरि हरि हरि सदा नानक
 तरे कई अनेक ॥ २ ॥ ६ ॥ २९ ॥ मारू महला ५ ॥ पतित पावन नामु जा को अनाथ को है नाथु ॥ महा भउजलु माहि
 तुलहो जा को लिखिओ माथ ॥ १ ॥ डूबे नाम बिनु घन साथ ॥ करण कारणु चिति न आवै दे करि राखै हाथ ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ साधसंगति गुण उचारण हरि नाम अँमित पाथ ॥ करहु क्रिपा मुरारि माधउ सुणि नानक जीवै गाथ ॥ २ ॥ ७ ॥ ३० ॥

मारू अँजुली महला ५ घरु ७ १८ शितिगुर प्रसादि ॥

सँजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ॥ पँच धातु करि पुतला कीआ ॥ साहै कै फुरमाइअडै जी देही विचि जीउ आइ पइआ ॥ १ ॥
 जिथै अगनि भखै भइहारे ॥ ऊरध मुख महा गुबारे ॥ सासि सासि समाले सोई ओथै खसमि छडाइ लइआ ॥ २ ॥ विचहि
 गरभै निकलि आइआ ॥ खसमु विसारि दुनी चितु लाइआ ॥ आवै जाइ भवाईरे जोनी रहणु न कितही थाइ भइआ ॥ ३ ॥
 मिहरवानि रखि लइअनु आपे ॥ जीअ जँत सभि तिस के थापे ॥ जनमु पदारथु जिनि चलिआ नानक आइआ सो

परवाणु थिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥ मारू महला ५ ॥ वैदो न वाई भैणो न भाई एको सहाई रामु हे ॥ १ ॥ कीता जिसो होवै पापां मलो धोवै सो सिमरहु परधानु हे ॥ २ ॥ घटि घटे वासी सरब निवासी असथिरु जा का थानु हे ॥ ३ ॥ आवै न जावै सँगे समावै पूरन जा का कामु हे ॥ ४ ॥ भगत जना का राखणहारा ॥ सँत जीवहि जपि प्रान अधारा ॥ करन कारन समरथु सुआमी नानकु तिसु कुरबानु हे ॥ ५ ॥ २ ॥ ३२ ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ मारू महला ९ ॥

हरि को नामु सदा सुखदाई ॥ जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई ॥ ता को दूखु हरिए करुणामै अपनी पैज बढाई ॥ १ ॥ जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई ॥ कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥ मारू महला ९ ॥ अब मै कहा करउ री माई ॥ सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कनाहई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काल फास जब गर महि मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥ राम नाम बिनु या सँकट महि को अब होत सहाई ॥ १ ॥ जो सँपति अपनी जरि मानी छिन महि भई पराई ॥ कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥ २ ॥ २ ॥ मारू महला ९ ॥ माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥ माइआ के मदि जनमु सिराइओ राम भजनि नही लागिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जम को डँडु परिओ सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिओ ॥ कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहिन भागिओ ॥ १ ॥ इह चिँता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिओ ॥ सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिओ ॥ २ ॥ ३ ॥

मारू असटपदीआ महला १ घरु १ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

बेद पुराण कथे सुणे हारे मुनी अनेका ॥ अठसठि तीरठ बहु घणा भ्रमि

थाके भेखा ॥ साचो साहिबु निरमलो मनि मानै एका ॥ १ ॥ तू अजरावहु अमरु तू सभ चालणहारी ॥ नामु रसाइणु भाइ
 लै परहरि दुखु भारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि पडीऐ हरि बुझीऐ गुरमती नामि उधारा ॥ गुरि पूरै पूरी मति है पूरै सबदि बीचारा
 ॥ अठसठि तीरथ हरि नामु है किलविख काटणहारा ॥ २ ॥ जलु बिलोवै जलु मथै ततु लोडै अंधु अगिआना ॥ गुरमती
 दधि मथीऐ अँमितु पाईऐ नामु निधाना ॥ मनमुख ततु न जाणनी पसू माहि समाना ॥ ३ ॥ हउमै मेरा मरी मरु मरि जँमै
 वारो वार ॥ गुर कै सबदे जे मरै फिरि मरै न दूजी वार ॥ गुरमती जगजीवनु मनि वसै सभि कुल उधारणहार ॥ ४ ॥ सचा
 वखरु नामु है सचा वापारा ॥ लाहा नामु संसारि है गुरमती वीचारा ॥ दूजै भाइ कार कमावणी नित तोटा सैसारा ॥ ५ ॥
 साची संगति थानु सचु सचे घर बारा ॥ सचा भोजनु भाउ सचु सचु नामु अधारा ॥ सची बाणी संतोखिआ सचा सबदु
 विचारा ॥ ६ ॥ रस भोगण पातिसाहीआ दुख सुख संघारा ॥ मोटा नाउ धराईऐ गलि अउगण भारा ॥ माणस दाति न
 होवई तू दाता सारा ॥ ७ ॥ अगम अगोचरु तू धणी अविगतु अपारा ॥ गुर सबदी दरु जोईऐ मुकते भँडारा ॥ नानक मेलु
 न चूकई साचे वापारा ॥ ८ ॥ १ ॥ मारु महला १ ॥ बिखु बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मँझारि ॥ कँधी दिसि न आवई ना
 उरवारु न पारु ॥ वँझी हाथि न खेवटू जलु सागरु असरालु ॥ १ ॥ बाबा जगु फाथा महा जालि ॥ गुर परसादी उबरे सचा
 नामु समालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु है बोहिथा सबदि लँघवणहारु ॥ तिथै पवणु न पावको ना जलु ना आकारु ॥
 तिथै सचा सचि नाइ भवजल तारणहारु ॥ २ ॥ गुरमुखि लँघे से पारि पर सचे सिउ लिव लाइ ॥ आवा गउणु निवारिआ
 जोती जोति मिलाइ ॥ गुरमती सहजु ऊपजै सचे रहै समाइ ॥ ३ ॥ सपु पिडाई पाईऐ बिखु अंतरि मनि रोसु ॥ पूरबि
 लिखिआ पाईऐ किस नो दीजै दोसु ॥ गुरमुखि गारडु जे सुणे मँने नाउ संतोसु ॥ ४ ॥ मागरमछु फहाईऐ कुँडी जालु वताइ
 ॥ दुरमति फाथा फाहीऐ फिरि फिरि पछोताइ ॥ जँमण मरणु न सुझई किरतु न मेटिआ जाइ ॥ ५ ॥ हउमै बिखु पाइ जगतु

उपाइआ सबदु वसै बिखु जाइ ॥ जरा जोहि न सकई सचि रहै लिव लाइ ॥ जीवन मुकतु सो आखीरे जिस्सु विचहु हउमै जाइ
 ॥ ६ ॥ धँधै धावत जगु बाधिआ ना बूझै वीचारु ॥ जँमण मरणु विसारिआ मनमुख मुगधु गवारु ॥ गुरि राखे से उबरे सचा
 सबदु वीचारि ॥ ७ ॥ सूहटु पिँजरि प्रेम कै बोलै बोलणहारु ॥ सचु चुगै अँमितु पीरे उडै त एका वार ॥ गुरि मिलिऐ खसमु
 पछाणीऐ कहु नानक मोख दुआरु ॥ ८ ॥ २ ॥ मारु महला १ ॥ सबदि मरै ता मारि मरु भागो किसु पहि जाउ ॥ जिस्स कै
 डरि भै भागीऐ अँमितु ता को नाउ ॥ मारहि राखहि एकु तू बीजउ नाही थाउ ॥ १ ॥ बाबा मै कुचीलु काचउ मतिहीन ॥ नाम
 बिना को कछु नहीं गुरि पूरै पूरी मति कीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवगणि सुभर गुण नहीं बिनु गुण किउ घरि जाउ ॥ सहजिं
 सबदि सुखु ऊपजै बिनु बागा धनु नाहि ॥ जिन् कै नामु न मनि वसे से बाधे दूख सहाहि ॥ २ ॥ जिनी नामु विसारिआ से
 कितु आए संसारि ॥ आगै पाछै सुखु नहीं गाडे लादे छारु ॥ विछुडिआ मेला नहीं दूखु घणो जम दुआरि ॥ ३ ॥ अगै किआ
 जाणा नाहि मै भूले तू समझाइ ॥ भूले मारगु जो दसे तिस्र कै लागउ पाइ ॥ गुर बिनु दाता को नहीं कीमति कहणु न जाइ ॥ ४
 ॥ साजनु देखा ता गलि मिला साचु पठाइओ लेखु ॥ मुखि धिमाणै धन खड़ी गुरमुखि आखी देखु ॥ तुधु भावै तू मनि वसहि
 नदरी करमि विसेखु ॥ ५ ॥ भूख पिआसो जे भवै किआ तिसु मागउ देइ ॥ बीजउ सूझै को नहीं मनि तनि पूरनु देइ ॥ जिनि
 कीआ तिनि देखिआ आपि वडाई देइ ॥ ६ ॥ नगरी नाइकु नवतनो बालकु लील अनूपु ॥ नारि न पुरकु न पँखणू साचउ
 चतुरु सरूपु ॥ जो तिसु भावै सो थीरे तू दीपकु तू धूपु ॥ ७ ॥ गीत साद चाके सुणे बाद साद तनि रोगु ॥ सचु भावै साचउ
 चवै छूटै सोग विजोगु ॥ नानक नामु न वीसरै जो तिसु भावै सु होगु ॥ ८ ॥ ३ ॥ मारु महला १ ॥ साची कार कमावणी
 होरि लालच बादि ॥ इहु मनु साचै मोहिआ जिहवा सचि सादि ॥ बिनु नावै को रसु नहीं होरि चलहि बिखु लादि ॥ १ ॥ ऐसा
 लाला मेरे लाल को सुणि खसम हमारे ॥ जिउ फुरमावहि तिउ चला सचु लाल पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु लाले

चाकरी गोले सिरि मीरा ॥ गुर बचनी मनु वेचिआ सबदि मनु धीरा ॥ गुर पूरे साबासि है काटे मन पीरा ॥ २ ॥ लाला गोला
 धणी को किआ कहउ वडिआईऐ ॥ भाणै बखसे पूरा धणी सचु कार कमाईऐ ॥ विछुडिआ कउ मेलि लए गुर कउ बलि जाईऐ
 ॥ ३ ॥ लाले गोले मति खरी गुर की मति नीकी ॥ साची सुरति सुहावणी मनमुख मति फीकी ॥ मनु तनु तेरा तू प्रभू सचु
 धीरक धुर की ॥ ४ ॥ साचै बैसणु उठणा सचु भोजनु भाखिआ ॥ चिति सचै वितो सचा साचा रसु चाखिआ ॥ साचै घरि
 साचै रखे गुर बचनि सुभाखिआ ॥ ५ ॥ मनमुख कउ आलसु घणो फाथे ओजाडी ॥ फाथा चुगै नित चोगडी लागि बंधु
 विगाडी ॥ गुर परसादी मुकटु होइ साचे निज ताडी ॥ ६ ॥ अनहति लाला बेधिआ प्रभ हेति पिआरी ॥ बिनु साचे जीउ
 जलि बलउ झूठे वेकारी ॥ बादि कारा सभि छोडीआ साची तरु तारी ॥ ७ ॥ जिनी नामु विसारिआ तिना ठउर न ठाउ ॥
 लालै लालचु तिआगिआ पाइआ हरि नाउ ॥ तू बखसहि ता मेलि लैहि नानक बलि जाउ ॥ ८ ॥ ४ ॥ मारु महला १ ॥
 लालै गारबु छोडिआ गुर कै भै सहजि सुभाई ॥ लालै खसमु पछाणिआ वडी वडिआई ॥ खसमि मिलिऐ सुखु पाइआ
 कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ लाला गोला खसम का खसमै वडिआई ॥ गुर परसादी उबरे हरि की सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ लाले नो सिरि कार है धुरि खसमि फुरमाई ॥ लालै हुकम पछाणिआ सदा रहै रजाई ॥ आपे मीरा बखसि लए वडी
 वडिआई ॥ २ ॥ आपि सचा सभु सचु है गुर सबदी बुझाई ॥ तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ॥ बिनु सेवा किनै न
 पाइआ दूजै भरमि खुआई ॥ ३ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ नित देवै चडै सवाइआ ॥ जीउ पिँडु सभु तिस दा साहु तिनै विचि
 पाइआ ॥ जा क्रिपा करे ता सेवीऐ सेवि सचि समाइआ ॥ ४ ॥ लाला सो जीवतु मरै मरि विचहु आपु गवाए ॥ बंधन तूटहि
 मुकति होइ तिसना अगनि बुझाए ॥ सभ महि नामु निधानु है गुरमुखि को पाए ॥ ५ ॥ लाले विचि गुणु किछु नही लाला
 अवगणिआरु ॥ तुधु जेवडु दाता को नही तू बखसणहारु ॥ तेरा हुकमु लाला मँने एह करणी सारु ॥ ६ ॥ गुरु सागरु

अँमितसरु जो इछे सो फलु पाए ॥ नामु पदारथु अमरु है हिरदै मँनि वसाए ॥ गुर सेवा सदा सुखु है जिस नो हुकमु मनाए
 ॥ ७ ॥ सुइना रुपा सभ धातु है माटी रलि जाई ॥ बिनु नावै नालि न चलई सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ नानक नामि रते से
 निरमले साचै रहे समाई ॥ ८ ॥ ९ ॥ मारु महला १ ॥ हुकमु भइआ रहना नही धुरि फाटे चीरै ॥ एहु मनु अवगणिं
 बाधिआ सहु देह सरैरै ॥ पूरै गुरि बखसाईअहि सभि गुनह फकीरै ॥ १ ॥ किउ रहीऐ उठि चलणा बुझु सबद बीचारा ॥
 जिसु तू मेलहि सो मिलै धुरि हुकमु अपारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तूरखहि तिउ रहा जो देहि सुखाउ ॥ जिउ तू चलावहि
 तिउ चला मुखि अँमित नाउ ॥ मेरे ठाकुर हथि वडिआईआ मेलहि मनि चाउ ॥ २ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करि देखै
 सोई ॥ जिनि कीआ सो मनि वसै मै अवरु न कोई ॥ सो साचा सालाहीऐ साची पति होई ॥ ३ ॥ पँडितु पडि न पहुचई
 बहु आल जँजाला ॥ पाप पुँन दुइ संगमे खुधिआ जमकाला ॥ विछोड़ा भउ वीसरै पूरा रखवाला ॥ ४ ॥ जिन की लेखै
 पति पवै से पूरे भाई ॥ पूरे पूरी मति है सची वडिआई ॥ देदे तोटि न आवई लै लै थकि पाई ॥ ५ ॥ खार समुद्रु ढँढोलीऐ
 इकु मणीआ पावै ॥ दुइ दिन चारि सुहावणा माटी तिसु खावै ॥ गुरु सागरु सति सेवीऐ दे तोटि न आवै ॥ ६ ॥ मेरे प्रभ
 भावनि से ऊजले सभ मैलु भरीजै ॥ मैला ऊजलु ता थीऐ पारस साँगि भीजै ॥ वँनी साचे लाल की किनि कीमती कीजै ॥
 ७ ॥ भेखी हाथ न लभई तीरथि नही दाने ॥ पूछउ बेद पडँतिआ मूठी विणु माने ॥ नानक कीमति सो करे पूरा गुर
 गिआने ॥ ८ ॥ ६ ॥ मारु महला १ ॥ मनमुखु लहरि घरु तजि विगूचै अवरा के गर हैरै ॥ ग्रिह धरमु गवाए सतिगुरु
 न भेटै दुरमति घूमन घेरै ॥ दिसँतरु भवै पाठ पडि थाका त्रिसना होइ वधेरै ॥ काची पिँडी सबदु न चीनै उदरु भरै जैसे
 ढोरै ॥ १ ॥ बाबा ऐसी खत खै सँनिआसी ॥ गुर कै सबदि एक लिव लागी तेरै नामि रते त्रिपतासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 घोली गेरु रँगु चड़ाइआ वसतर भेख भेखारी ॥ कापड़ फारि बनाई खिँथा झोली माइआधारी ॥ घरि घरि मार्गै जगु

परबोधै मनि अँधै पति हारी ॥ भरमि भुलाणा सबदु न चीनै जूरे बाजी हारी ॥ २ ॥ अँतरि अगनि न गुर बिनु बूझै बाहरि
 पूअर तापै ॥ गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउ करि चीनसि आपै ॥ निँदा करि करि नरक निवासी अँतरि आतम जापै ॥
 अठसठि तीरथ भरमि विगूचहि किउ मलु धोपै पापै ॥ ३ ॥ छाणी खाकु बिभूत चड़ाई माइआ का मगु जोहै ॥ अँतरि
 बाहरि एकु न जाणै साचु कहे ते छोहै ॥ पाठु पडै मुखि झूठो बोलै निगुरे की मति ओहै ॥ नामु न जपई किउ सुखु पावै बिनु
 नावै किउ सोहै ॥ ४ ॥ मँडु मुडाइ जटा सिख बाधी मोनि रहै अभिमाना ॥ मनूआ डोलै दह दिस धावै बिनु रत आतम
 गिआना ॥ अँम्रितु छोडि महा बिखु पीवै माइआ का देवाना ॥ किरतु न मिटई हुकमु न बूझै पसूआ माहि समाना ॥ ५ ॥
 हाथ कमँडलु कापड़ीआ मनि त्रिसना उपजी भारी ॥ इसत्री तजिं करि कामि विआपिआ चितु लाइआ पर नारी ॥ सिख करे
 करि सबदि न चीनै लँपटु है बाजारी ॥ अँतरि बिखु बाहरि निभराती ता जमु करे खुआरी ॥ ६ ॥ सो सँनिआसी जो
 सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाए ॥ छादन भोजन की आस न करई अचिँतु मिलै सो पाए ॥ बकै न बोलै खिमा धनु संग्रहै
 तामसु नामि जलाए ॥ धनु गिरही सँनिआसी जोगी जि हरि चरणी चितु लाए ॥ ७ ॥ आस निरास रहै सँनिआसी कसु
 सिउ लिव लाए ॥ हरि रसु पीवै ता साति आवै निज घरि ताड़ी लाए ॥ मनूआ न डोलै गुरमुखि बूझै धावतु वरजिं रहाए ॥
 ग्रिहु सरीरु गुरमती खोजे नामु पदारथु पाए ॥ ८ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु सरेसट नामि रते वीचारी ॥ खाणी बाणी गगन
 पताली जँता जोति तुमारी ॥ सभि सुख मुकति नाम धुनि बाणी सचु नामु उर धारी ॥ नाम बिना नही छूटसि नानक साची
 तरु तू तारी ॥ ९ ॥ ७ ॥ मारु महला १ ॥ मात पिता सँजोगि उपाए रकतु बिँदु मिलि पिँडु करे ॥ अँतरि गरभ उरधि
 लिव लागी सो प्रभु सारे दाति करे ॥ १ ॥ सँसारु भवजलु किउ तरै ॥ गुरमुखि नामु निरँजनु पाईए अफरिओ बारु अफारु
 टरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ते गुण विसरि गए अपराधी मै बउरा किआ करउ हरे ॥ तू दाता दइआलु सभै सिरि अहिनिसि

दाति समारि करे ॥ २ ॥ चारि पदारथ लै जगि जनमिआ सिव सकती घरि वासु धरे ॥ लागी भूख माइआ मगु जोहै
 मुकति पदारथु मोहि खरे ॥ ३ ॥ करण पलाव करे नही पावै इत उत ढूढत थाकि परे ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विआपे
 कूड़ कुटंब सिउ प्रीति करे ॥ ४ ॥ खावै भोगै सुणि सुणि देखै पहिरि दिखावै काल घरे ॥ बिनु गुर सबद न आपु पछाणै
 बिनु हरि नामु न कालु टरे ॥ ५ ॥ जेता मोहु हउमै करि भूले मेरी मेरी करते छीनि खरे ॥ तनु धनु बिनसै सहसै सहसा
 फिरि पछुतावै मुखि धुरि परे ॥ ६ ॥ बिरधि भइआ जोबनु तनु खिसिआ कफु कँठु बिरुधो नैनहु नीरु ढरे ॥ चरण रहे
 कर कँपण लागे साकत रामु न रिदै हरे ॥ ७ ॥ सुरति गई काली हू धउले किसै न भावै रखिओ घरे ॥ बिसरत नाम ऐसे
 दोख लागहि जमु मारि समारे नरकि खरे ॥ ८ ॥ पूरब जनम को लेखु न मिटई जनमि मरै का कउ दोसु धरे ॥ बिनु गुर
 बादि जीवणु होरु मरणा बिनु गुर सबदै जनमु जरे ॥ ९ ॥ खुसी खुआर भए रस भोगण फोकट करम विकार करे ॥ नामु
 बिसारि लोभि मूलु खोइओ सिरि धरमराइ का डँडु परे ॥ १० ॥ गुरमुखि राम नाम गुण गावहि जा कउ हरि प्रभु नदरि करे
 ॥ ते निरमल पुरख अपरंपर पूरे ते जग महि गुर गोविंदु हरे ॥ ११ ॥ हरि सिमरहु गुर बचन समारहु संगति हरि जन
 भाउ करे ॥ हरि जन गुरु परधानु दुआरै नानक तिन जन कीरेणु हरे ॥ १२ ॥ ८ ॥

१३ सतिगुर परसादि ॥ मारु काफी महला १ घरु २ ॥

आवउ वँजउ डुंमणी किती मित्र करेउ ॥ साधन ढोई न लहै वाढी किउ धीरेउ ॥ १ ॥ मैडा मनु रता आपनडे पिर नालि
 ॥ हउ घोलि घुमाई खँनीरे कीती हिक भोरी नदरि निहालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पेईअडै डोहागणी साहुरडै किउ जाउ ॥ मै
 गलि अउगण मुठडी बिनु पिर झूरि मराउ ॥ २ ॥ पेईअडै पिरु संमला साहुरडै घरि वासु ॥ सुखि सर्वधि सोहागणी पिरु
 पाइआ गुणतासु ॥ ३ ॥ लेफु निहाली पट की कापडु अँगि बणाइ ॥ पिरु मुती डोहागणी तिन दुखी

रैणि विहाइ ॥ ४ ॥ किती चखउ साडडे किती वेस करेउ ॥ पिर बिनु जोबनु बादि गइअमु वाढी झूरेदी झूरेउ ॥ ५ ॥ सचे
 सँदा सदडा सुणीरे गुर वीचारि ॥ सचे सछा बैहणा नदरी नदरि पिआरि ॥ ६ ॥ गिआनी अँजनु सच का डेखै डेखणहारु
 ॥ गुरमुखि बूझै जाणीरे हउमै गरबु निवारि ॥ ७ ॥ तउ बावनि तउ जेहीआ मू जेहीआ कितीआह ॥ नानक नाहु न
 वीछुडै तिन सचै रतडीआहु ॥ ८ ॥ १ ॥ ९ ॥ मारु महला १ ॥ ना भैणा भरजाईआ ना से ससुडीआह ॥ सचा साकु
 न तुटई गुरु मेले सहीआह ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ गुर बिनु एता भवि थकी गुरि पिरु मेलिमु
 दितमु मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फुफी नानी मासीआ देर जेठानडीआह ॥ आवनि वँजनि ना रहनि पूर बरे पहीआह ॥ १
 ॥ मामे ते मामाणीआ भाइर बाप न माउ ॥ साथ लडे तिन नाठीआ भीड़ घणी दरीआउ ॥ ३ ॥ साचउ रँगि रँगावलो
 सखी हमारो कँतु ॥ सचि विछोड़ा ना थीरे सो सहु रँगि रवंतु ॥ ४ ॥ सभे रुती चँगीआ जितु सचे सिउ नेहु ॥ साधन
 कँतु पछाणिआ सुखि सुती निसि डेहु ॥ ५ ॥ पतणि कूके पातणी वँजहु ध्रुकि विलाडि ॥ पारि पवँदडे डिठु मै सतिगुर
 बोहिथि चाडि ॥ ६ ॥ हिकनी लदिआ हिकि लदि गए हिकि भारे भर नालि ॥ जिनी सचु वणँजिआ से सचे प्रभ नालि ॥
 ७ ॥ ना हम चँगे आखीअह बुरा न दिसै कोइ ॥ नानक हउमै मारीरे सचे जेहड़ा सोइ ॥ ८ ॥ २ ॥ १० ॥ मारु महला
 १ ॥ ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥ सदा साहिब कै रँगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥ १ ॥ बाबा मूरखु
 हा नावै बलि जाउ ॥ तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूरखु सिआणा एकु है एक जोति दुइ नाउ
 ॥ मूरखा सिरि मूरखु है जि मँने नाही नाउ ॥ २ ॥ गुर दुआरै नाउ पाईरे बिनु सतिगुर पलै न पाइ ॥ सतिगुर कै भाणै
 मनि वसै ता अहनिसि रहै लिव लाइ ॥ ३ ॥ राजँ रँगँ रोपँ मालँ जोबनु ते जूआरी ॥ हुकमी बाधे पासै खेलहि चउपडि
 एका सारी ॥ ४ ॥ जगि चतुरु सिआणा बरमि भुलाणा नाउ पँडित पड़हि गावारी ॥ नाउ विसारहि बेदु समालहि

बिखु भूले लेखारी ॥ ५ ॥ कलर खेती तरवर कँठे बागा पहिरहि कजलु झरै ॥ एहु संसारु तिसै की कोठी जो पैसै सो
 गरबि जरै ॥ ६ ॥ रयति राजे कहा सबाए दुहु अंतरि सो जासी ॥ कहत नानकु गुर सचे की पउडी रहसी अलखु
 निवासी ॥ ७ ॥ ३ ॥ ११ ॥

मारु महला ३ घरु ५ असटपदी १४ सतिगुर परसादि ॥

जिस नो प्रेमू मनि वसाए ॥ साचै सबदि सहजि सुभाए ॥ एहा वेदन सोई जाणै अवरु कि जाणै कारी जीउ ॥ १ ॥
 आपे मेले आपि मिलाए ॥ आपणा पिआरु आपे लाए ॥ प्रेम की सार सोई जाणै जिस नो नदरि तुमारी जीउ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ दिब द्रिसटि जाणै भरमु चुकाए ॥ गुर परसादि परम पदु पाए ॥ सो जोगी इह जुगति पछाणै गुर कै सबदि
 बीचारी जीउ ॥ २ ॥ संजोगी धन पिर मेला होवै ॥ गुरमति विचहु दुर्मति खोवै ॥ रँग सिउ नित रलीआ माणै अपणे
 कंत पिआरी जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर बाझहु वैदु न कोई ॥ आपे आपि निरँजनु सोई ॥ सतिगुर मिलिऐ मरै मँदा होवै
 गिआन बीचारी जीउ ॥ ४ ॥ एहु सबदु सारु जिस नो लाए ॥ गुरमुखि त्रिसना भुख गवाए ॥ आपण लीआ किछु न
 पाईऐ करि किरपा कल धारी जीउ ॥ ५ ॥ अगम निगमु सतिगुरु दिखाइआ ॥ करि किरपा अपनै घरि आइआ ॥
 अँजन माहि निरँजनु जाता जिन कउ नदरि तुमारी जीउ ॥ ६ ॥ गुरमुखि होवै सो ततु पाए ॥ आपणा आपु विचहु
 गवाए ॥ सतिगुर बाझहु सभु धँधु कमावै वेखहु मनि वीचारी जीउ ॥ ७ ॥ इकि भ्रमि भूले फिरहि अहँकारी ॥ इकना
 गुरमुखि हउमै मारी ॥ सचै सबदि रते बेरगी होरि भरमि भूले गावारी जीउ ॥ ८ ॥ गुरमुखि जिनी नामु न पाइआ ॥
 मनमुखि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ अगै विणु नावै को बेली नाही बूझै गुर बीचारी जीउ ॥ ९ ॥ अँमित नामु सदा
 सुखदाता ॥ गुरि पूरै जुग चारे जाता ॥ जिसु तू देवहि सोई पाए नानक ततु बीचारी जीउ ॥ १० ॥ १ ॥

मारु महला ५ घर ३ असटपदीआ १८ सतिगुर प्रसादि ॥ लख चउरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पाइओ ॥ १ ॥ रे मूडे
 तू होछै रसि लपटाइओ ॥ अँमितु सँगि बसतु है तेरै बिखिआ सिउ उरझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन जवेहर बनजनि आइओ
 कालरु लादि चलाइओ ॥ २ ॥ जिह घर महि तुधु रहना बसना सो घरु चीति न आइओ ॥ ३ ॥ अटल अखँड प्राण सुखदाई
 इक निमख नही तुझु गाइओ ॥ ४ ॥ जहा जाणा सो थानु विसारओ इक निमख नही मनु लाइओ ॥ ५ ॥ पुत्र कलत्र ग्रिह
 देखि समग्री इस ही महि उरझाइओ ॥ ६ ॥ जितु को लाइओ तित ही लागा तैसे करम कमाइओ ॥ ७ ॥ जउ भइओ क्रिपालु
 ता साधसँगु पाइआ जन नानक ब्रहमु धिआइओ ॥ ८ ॥ १ ॥ मारु महला ५ ॥ करि अनुग्रहु राखि लीनो भइओ साधू सँगु
 ॥ हरि नाम रसु रसना उचारै मिसट गूडा रँगु ॥ मेरे मान को असथानु ॥ मीत साजन सखा बँधपु अँतरजामी जानु ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ संसार सागरु जिनि उपाइओ सरणि प्रभ की गही ॥ गुर प्रसादी प्रभु अराधे जम कँकरु किछु न कही ॥ २ ॥ मोख
 मुकति दुआरि जा कै संत रिदा भँडारु ॥ जीअ जुगति सुजाणु सुआमी सदा राखणहारु ॥ ३ ॥ दूख दरद कलेस बिनसहि
 जिंसु बसै मन माहि ॥ मिरतु नरकु असथान बिखडे बिखु न पोहै ताहि ॥ ४ ॥ रिधि सिधि नव निधि जा कै अँमिता परवाह ॥
 आदि अँते मधि पूरन ऊच अगम अगाह ॥ ५ ॥ सिध साधिक देव मुनि जन बेद करहि उचारु ॥ सिमरि सुआमी सुख सहजि
 भुँचहि नही अँतु पारावारु ॥ ६ ॥ अनिक प्राछत मिटहि खिन महि रिदै जपि भगवान ॥ पावना ते महा पावन कोटि दान
 इसनान ॥ ७ ॥ बल बुधि सुधि पराण सरबसु संतना की रासि ॥ बिसरु नाही निमख मन ते नानक की अरदासि ॥ ८ ॥ २
 ॥ मारु महला ५ ॥ ससत्रि तीखणि काटि डारिओ मनि न कीनो रोसु ॥ काजु उआ को ले सवारिओ तिलु न दीनो दोसु ॥ १
 ॥ मनु मेरे राम रउ नित नीति ॥ दइआल देव क्रिपाल गोबिंद सुनि संतना की रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण तलै उगाहि बेसिओ

स्रमु न रहिओ सरीरि ॥ महा सागरु नह विआपै खिनहि उतरिओ तीरि ॥ २ ॥ चंदन अगर कपूर लेपन तिस सँगे नही प्रीति ॥
 ॥ बिसटा मूत्र खोदि तिलु तिलु मनि न मनी बिपरीति ॥ ३ ॥ ऊच नीच बिकार सुकृत सँलगन सभ सुख छत्र ॥ मित्र सत्रु न
 कछु जानै सरब जीअ समत ॥ ४ ॥ करि प्रगासु प्रचँड प्रगटिओ अँधकार बिनास ॥ पवित्र अपवित्रह किरण लागे मनि न
 भइओ बिखादु ॥ ५ ॥ सीत मँद सुगँध चलिओ सरब थान समान ॥ जहा सा किछु तहा लागिओ तिलु न सँका मान ॥ ६ ॥
 सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ ॥ आप पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ ॥ ७ ॥ चरण सरण सनाथ
 इहु मनु रँगि राते लाल ॥ गोपाल गुण नित गाउ नानक भए प्रभ किरपाल ॥ ८ ॥ ३ ॥

मारु महला ५ घरु ४ असटपदीआ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

चादना चादनु आंगनि प्रभ जीउ अँतरि चादना ॥ १ ॥ आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु अराधना ॥ २ ॥ तिआगना
 तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥ ३ ॥ मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥ ४ ॥ जागना जागनु
 नीका हरि कीरतन महि जागना ॥ ५ ॥ लागना लागनु नीका गुर चरणी मनु लागना ॥ ६ ॥ इह बिधि तिसहि परापते जा कै
 मसतकि भागना ॥ ७ ॥ कहु नानक तिस सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ मारु महला ५ ॥
 आउ जी तू आउ हमारै हरि जसु स्रवन सुनावना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु आवत मेरा मनु तनु हरिआ हरि जसु तुम सँगे गावना
 ॥ १ ॥ सँत क्रिपा ते हिरदै वासै दूजा भाउ मिटावना ॥ २ ॥ भगत दइआ ते बुधि परगासै दुरमति दूर तजावना ॥ ३ ॥
 दरसनु भेटत होत पुनीता पुनरपि गरभि न पावना ॥ ४ ॥ नउ निधि रिधि सिधि पाई जो तुमरै मनि भावना ॥ ५ ॥ सँत
 बिना मै थाउ न कोई अवर न सूझै जावना ॥ ६ ॥ मोहि निरगुन कउ कोइ न राखै सँता सँगे समावना ॥ ७ ॥ कहु नानक
 गुरि चलतु दिखाइआ मन मधे हरि हरि रावना ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥ मारु महला ५ ॥ जीवना सफल जीवन सुनि हरि जपि

जपि सद जीवना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीवना जितु मनु आघावै नामु अँमित रसु पीवना ॥ १ ॥ खावना जितु भूख न लागै
सँतोखि सदा त्रिपतीवना ॥ २ ॥ पैनणा रखु पति परमेसुर फिरि नागे नही थीवना ॥ ३ ॥ भोगना मन मध्ये हरि रसु
सँतसँगति महि लीवना ॥ ४ ॥ बिनु तागे बिनु सूई आनी मनु हरि भगती सँगि सीवना ॥ ५ ॥ मातिआ हरि रस महि राते
तिसु बहुडि न कबहू अउखीवना ॥ ६ ॥ मिलिओ तिसु सरब निधाना प्रभि क्रिपालि जिंसु दीवना ॥ ७ ॥ सुखु नानक सँतन
की सेवा चरण सँत धोइ पीवना ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥

मारु महला ५ घरु ८ अँजुलीआ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

जिसु छिहि बहुतु तिसै छिहि चिँता ॥ जिसु छिहि थोरी सु फिरै भ्रमँता ॥ दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई सुहेला भालीऐ ॥ १
॥ छिह राज महि नरकु उदास करोधा ॥ बहु बिधि बेद पाठ सभि सोधा ॥ देही महि जो रहै अलिपता तिसु जन की पूरन
घालीऐ ॥ २ ॥ जागत सूता भरमि विगूता ॥ बिनु गुर मुकति न होईऐ मीता ॥ साधसँगि तुटहि हउ बँधन एको एकु
निहालीऐ ॥ ३ ॥ करम करै त बँधा नह करै त निँदा ॥ मोह मगन मनु विआपिआ चिँदा ॥ गुर प्रसादि सुखु दुखु सम जाणै
घटि घटि रामु हिआलीऐ ॥ ४ ॥ संसारै महि सहसा बिआपै ॥ अकथ कथा अगोचर नही जापै ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै
ओहु बालक वागी पालीऐ ॥ ५ ॥ छोडि बहै तउ छूटै नाही ॥ जउ सँचै तउ भउ मन माही ॥ इस ही महि जिस की पति राखै
तिसु साधू चउरु ढालीऐ ॥ ६ ॥ जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥ जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥ जो वरताए सोई भल मानै
बुझि हुकमै दुस्मति जालीऐ ॥ ७ ॥ जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ करि करि वेखै अपने जचना ॥ नानक के पूरन
सुखदाते तू देहि त नामु समालीऐ ॥ ८ ॥ १ ॥ ७ ॥ मारु महला ५ ॥ बिरखै हेठि सभि जँत इकठे ॥ इकि तते इकि
बोलनि मिठे ॥ असटु उदोतु भइआ उठि चले जिउ जिउ अउध विहाणीआ ॥ १ ॥ पाप करेदइ सरपर मुठे ॥ अजराईलि फडे

फड़ि कुठे ॥ दोजकि पाए सिरजणहारै लेखा मँगै बाणीआ ॥ २ ॥ सँगि न कोई भईआ बेबा ॥ मालु जोबनु धनु
 छोडि वजेसा ॥ करण करीम न जातो करता तिल पीडे जिउ घाणीआ ॥ ३ ॥ खुसि खुसि लैदा वसतु पराई ॥
 वेखै सुणे तेरै नालि खुदाई ॥ दुनीआ लबि पइआ खात अँदरि अगली गल न जाणीआ ॥ ४ ॥ जमि जमि मरै मरै
 फिरि जँमै ॥ बहुतु सजाइ पइआ देसि लँमै ॥ जिनि कीता तिसै न जाणी अँधा ता दुखु सहै पराणीआ ॥ ५ ॥
 खालक थावहु भुला मुठा ॥ दुनीआ खेलु बुरा रुठ तुठा ॥ सिदकु सबूरी सँतु न मिलिओ वतै आपण भाणीआ ॥
 ६ ॥ मउला खेल करे सभि आपे ॥ इकि कढे इकि लहरि विआपे ॥ जिउ नचाए तिउ तिउ नचनि सिरि सिरि किरत
 विहाणीआ ॥ ७ ॥ मिहर करे ता खसमु धिआई ॥ सँता सँगति नरकि न पाई ॥ अँमित नाम दानु नानक कउ
 गुण गीता नित वखाणीआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥ २० ॥

मारु सोलहे महला १ १४ सितिगुर परसादि ॥

साचा सचु सोई अवरु न कोई ॥ जिनि सिरजी तिन ही फुनि गोई ॥ जिउ भावै तिउ राखहु रहणा तुम सिउ किआ
 मुकराई हे ॥ १ ॥ आपे उपाए आपे खपाए ॥ आपे सिरि सिरि धँधै लाए ॥ आपे वीचारी गुणकारी आपे मारगि
 लाई हे ॥ २ ॥ आपे दाना आपे बीना ॥ आपे आपु उपाइ पतीना ॥ आपे पउणु पाणी बैसँतरु आपे मेलि मिली
 हे ॥ ३ ॥ आपे ससि सूरु पूरो पूरा ॥ आपे गिआनि धिआनि गुर सूरु ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै साचे
 सिउ लिव लाई हे ॥ ४ ॥ आपे पुरखु आपे ही नारी ॥ आपे पासा आपे सारी ॥ आपे पिड़ बाधी जगु खेलै आपे
 कीमति पाई हे ॥ ५ ॥ आपे भवरु फुलु फलु तरवरु ॥ आपे जलु थलु सागरु सरवरु ॥ आपे मछु कछु
 करणीकरु तेरा रूपु न लखणा जाई हे ॥ ६ ॥ आपे दिनसु आपे ही रैणी ॥ आपे पतीजै गुर की बैणी ॥ आदि
 जुगादि अनाहदि अनदिनु घटि घटि सबदु रजाई हे ॥ ७ ॥ आपे रतनु अनूपु अमोलो ॥ आपे परखे पूरा तोलो ॥

आपे किस ही किसि बखसे आपे दे लै भाई हे ॥ ८ ॥ आपे धनखु आपे सरबाणा ॥ आपे सुघडु सरूपु सिआणा ॥ कहता
 बकता सुणता सोई आपे बणत बणाई हे ॥ ९ ॥ पउणु गुरु पाणी पित जाता ॥ उदर संजोगी धरती माता ॥ रैणि दिनसु
 दुइ दाई दाइआ जगु खेलै खेलाई हे ॥ १० ॥ आपे मछुली आपे जाला ॥ आपे गऊ आपे रखवाला ॥ सरब जीआ जगि
 जोति तुमारी जैसी प्रभि फुरमाई हे ॥ ११ ॥ आपे जोगी आपे भोगी ॥ आपे रसीआ परम संजोगी ॥ आपे वेबाणी निरंकारी
 निरभउ ताड़ी लाई हे ॥ १२ ॥ खाणी बाणी तुझहि समाणी ॥ जो दीसै सभ आवण जाणी ॥ सेई साह सचे वापारी
 सतिगुरि बूझ बुझाई हे ॥ १३ ॥ सबदु बुझाए सतिगुरु पूरा ॥ सरबु कला साचे भरपूरा ॥ अफरिओ वेपरवाहु सदा तू ना
 तिसु तिलु न तमाई हे ॥ १४ ॥ कालु बिकालु भए देवाने ॥ सबदु सहज रसु अंतरि माने ॥ आपे मुकति त्रिपति वरदाता
 भगति भाइ मनि भाई रे ॥ १५ ॥ आपि निरालमु गुरु गम गिआना ॥ जो दीसै तुझ माहि समाना ॥ नानकु नीचु भिखिआ
 दरि जाचै मै दीजै नामु वडाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥ मारु महला १ ॥ आपे धरती धउलु अकासं ॥ आपे साचे गुण परगासं ॥
 जती सती संतोखी आपे आपे कार कमाई हे ॥ १ ॥ जिंसु करणा सो करि करि वेखै ॥ कोइ न मेटै साचे लेखै ॥ आपे करे
 कराए आपे आपे दे वडिआई हे ॥ २ ॥ पंच चोर चंचलु चित चालहि ॥ पर घर जोहहि घरु नहीं भालहि ॥ काइआ नगरु
 ढहै ढहि ढेरी बिनु सबदै पति जाई हे ॥ ३ ॥ गुरु ते बूझै त्रिभवणु सूझै ॥ मनसा मारि मनै सिउ लूझै ॥ जो तुधु सेवहि से तुधु
 ही जेहे निरभउ बाल सखाई हे ॥ ४ ॥ आपे सुरगु मछु पइआला ॥ आपे जोति सरूपी बाला ॥ जटा बिकट बिकराल
 सरूपी रूपु न रेखिआ काई हे ॥ ५ ॥ बेद कतेबी भेदु न जाता ॥ ना तिसु मात पिता सुत भ्राता ॥ सगले सैल उपाइ समाए
 अलखु न लखणा जाई हे ॥ ६ ॥ करि करि थाकी मीत घनेरे ॥ कोइ न काटै अवगुण मेरे ॥ सुरि नर नाथु साहिबु सभना
 सिरि भाइ मिलै भउ जाई हे ॥ ७ ॥ भूले चूके मारगि पावहि ॥ आपि भुलाइ तूहै समजावहि ॥ बिनु नावै मै अवरु न

दीसै नावहु गति मिति पाई हे ॥ ८ ॥ गंगा जमुना केल केदारा ॥ कासी कांती पुरी दुआरा ॥ गंगा सागरु बेणी संगु
 अठसठि अँकि समाई हे ॥ ९ ॥ आपे सिध साधिकु वीचारी ॥ आपे राजनु पंचा कारी ॥ तखति बहै अदली प्रभु आपे
 भरमु भेदु भउ जाई हे ॥ १० ॥ आपे काजी आपे मुला ॥ आपि अभुलु न कबहू भुला ॥ आपे मिहर दइआ पति दाता
 ना किसै को बैराई हे ॥ ११ ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ सभसै दाता तिलु न तमाई ॥ भरपुरि धारि रहिआ
 सालाही अगम अपारै ॥ साचे सिरजणहार मुरारै ॥ जिस नो नदरि करे तिसु मेले मेलि मिलै मेलाई हे ॥ १३ ॥ ब्रहमा
 बिसनु महेसु दुआरै ॥ ऊभे सेवहि अलख अपारै ॥ होर केती दरि दीसै बिललादी मै गणत न आवै काई हे ॥ १४ ॥
 साची कीरति साची बाणी ॥ होर न दीसै बेद पुराणी ॥ पूँजी साचु सचे गुण गावा मै धर होर न काई हे ॥ १५ ॥ जुगु
 जुगु साचा है भी होसी ॥ कउणु न मूआ कउणु न मरसी ॥ नानकु नीचु कहै बेनँती दरि देखहु लिव लाई हे ॥ १६ ॥ २
 ॥ मारु महला १ ॥ दूजी दुरमति अँनी बोली ॥ काम क्रोध की कची चोली ॥ घरि वरु सहजु न जाणै छोहरि बिनु
 पिर नीद न पाई हे ॥ १ ॥ अँतरि अगनि जलै भडकारे ॥ मनमुखु तके कुँडा चारे ॥ बिनु सतिगुर सेवे किउ सुखु पाईए
 साचे हाथि वडाई हे ॥ २ ॥ काम क्रोधु अहँकारु निवारे ॥ तसकर पंच सबदि सँघारे ॥ गिआन खडगु लै मन सिउ
 लूझै मनसा मनहि समाई हे ॥ ३ ॥ मा की रक्तु पिता बिदु धारा ॥ मूरति सूरति करि आपारा ॥ जोति दाति जेती
 सभ तेरी तू करता सभ ठाई हे ॥ ४ ॥ तुझ ही कीआ जँमण मरणा ॥ गुर ते समझ पड़ी किआ डरणा ॥ तू दइआलु
 दइआ करि देखहि दुखु दरदु सरीरहु जाई हे ॥ ५ ॥ निज घरि बैसि रहे भउ खाइआ ॥ धावत राखे ठाकि रहाइआ ॥
 कमल बिगास हरे सर सुभर आतमरामु सखाई हे ॥ ६ ॥ मरणु लिखाइ मँडल महि आए ॥ किउ रहीं चलणा परथाए
 ॥ सचा अमरु सचे अमरापुरि सो सचु मिलै वडाई हे ॥ ७ ॥ आपि उपाइआ जगतु सबाइआ ॥ जिनि सिरिआ

तिनि धँधै लाइआ ॥ सचै ऊपरि अवर न दीसै साचे कीमति पाई हे ॥ ८ ॥ ऐथै गोइलडा दिन चारे ॥ खेलु तमासा धुँधूकारे ॥
॥ बाजी खेलि गए बाजीगर जिउ निसि सुपनै भखलाई हे ॥ ९ ॥ तिन कउ तखति मिली वडिआई ॥ निरभउ मनि
वसिआ लिव लाई ॥ खँडी ब्रहमँडी पाताली पुरीई त्रिभवण ताडी लाई हे ॥ १० ॥ साची नगरी तखतु सवाचा ॥ गुरमुखि
साचु मिलै सुखु पावा ॥ साचे साचै तखति वडाई हउमै गणत गवाई हे ॥ ११ ॥ गणत गणीऐ सहसा जीऐ ॥ किउ सुखु
पावै दूरे तीऐ ॥ निरमलु एकु निरँजनु दाता गुर पूरे ते पति पाई हे ॥ १२ ॥ ॥ जुगि जुगि विरली गुरमुखि जाता ॥ साचा
रवि रहिआ मनु राता ॥ तिस की ओट गही सुखु पाइआ मनि तनि मैलु न काई हे ॥ १३ ॥ जीभ रसाइणि साचै राती ॥
हरि प्रभु सँगी भउ न भराती ॥ स्रवण स्रोत रजे गुरबाणी जोती जोति मिली हे ॥ १४ ॥ रखि रखि पेर धरे पउ धरणा ॥
जत कत देखउ तेरी सरणा ॥ दुखु सुखु देहि तूहै मनि भावहि तुझ ही सिउ बणि आई हे ॥ १५ ॥ अँत कालि को बेली नाही
॥ गुरमुखि जाता तुधु सालाही ॥ नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताडी लाई हे ॥ १६ ॥ ३ ॥ मारु महला १ ॥ आदि
जुगादि अपर अपारे ॥ आदि निरँजन खसम हमारे ॥ साचे जोग जुगति वीचारी साचे ताडी लाई हे ॥ १ ॥ केतडिआ
जुग धुँधूकारै ॥ ताडी लाई सिरजणहारै ॥ सचु नामु सची वडिआई साचै तखति वडाई हे ॥ २ ॥ सतजुगि सतु सँतोखु
सरीरा ॥ सति सति वरतै गहिर गँभीरा ॥ सचा साहिबु सचु परखै साचै हुकमि चलाई हे ॥ ३ ॥ सत सँतोखी सतिगुरु
पूरा ॥ गुर का सबदु मने सो सूरु ॥ साची दरगह साचु निवासा मानै हुकमु रजाई हे ॥ ४ ॥ सतजुगि साचु कहै सभु कोई
॥ सचि वरतै साचा सोई ॥ मनि मुखि साचु भरम भउ भँजनु गुरमुखि साचु सखाई हे ॥ ५ ॥ त्रैतै धरम कला इक चूकी ॥
तीनि चरण इक दुबिधा सूकी ॥ गुरमुखि होवे सु साचु वखाणै मनमुखि पचै अवाई हे ॥ ६ ॥ मनमुखि कदे न दरगह सीझै
॥ बिनु सबदै किउ अँतरु रीझै ॥ बाधे आवहि बाधे जावहि सोझी बूझ न काई हे ॥ ७ ॥ दइआ दुआपुरि अधी होई ॥

गुरमुखि विरला चीनै कोई ॥ दुइ पग धरमु धरे धरणीधर गुरमुखि साचु तिथाई हे ॥ ८ ॥ राजे धरमु करहि परथाए ॥
 आसा बंधे दानु कराए ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई थाके करम कमाई हे ॥ ९ ॥ करम धरम करि मुकति मंगाही ॥ मुकति
 पदारथु सबदि सलाही ॥ बिनु गुर सबदै मुकति न होई परपंचु करि भरमाई हे ॥ १० ॥ माइआ ममता छोडी न जाई ॥ से
 छूटे सचु कार कमाई ॥ अहिनिशि भगति रते वीचारी ठाकुर सिउ बणि आई हे ॥ ११ ॥ इकि जप तप करि करि तीरथ
 नावहि ॥ जिउ तुधु भवै तिवै चलावहि ॥ हठि निग्रहि अपतीजु न भीजै बिनु हरि गुर किनि पति पाई हे ॥ १२ ॥ कली
 काल महि इक कल राखी ॥ बिनु गुर पूरे किनै न भाखी ॥ मनमुखि कूडु वरतै वरतारा बिनु सतिगुर भरमु न जाई हे ॥ १३
 ॥ सतिगुरु वेपरवाहु सिरँदा ॥ ना जम काणि न छँदा बँदा ॥ जो तिसु सेवे सो अबिनासी ना तिसु कालु सँताई हे ॥ १४
 ॥ गुर महि आपु रखिआ करतारे ॥ गुरमुखि कोटि असँख उधारे ॥ सरब जीआ जगजीवनु दाता निरभउ मैलु न काई हे ॥
 १५ ॥ सगले जाचहि गुर भँडारी ॥ आपि निरँजनु अलखु अपारी ॥ नानकु साच कहै प्रभ जाचै मै दीजै साचु रजाई हे ॥
 १६ ॥ ४ ॥ मारु महला १ ॥ साचै मेले सबदि मुलाए ॥ जा तिसु भाणा सहजि समाए ॥ त्रिभवण जोति धरी परमेसरि
 अवरु न दूजा भाई हे ॥ १ ॥ जिस के चाकर तिस की सेवा ॥ सबदि पतीजै अलख अभेवा ॥ भगता का गुणकारी करता
 बकसि लए वडिआई हे ॥ २ ॥ देदे तोटि न आवै साचे ॥ लै लै मुकरि पउदे काचे ॥ मूलु न बूझहि साचि न रीझहि दूजै
 भरमि भुलाई हे ॥ ३ ॥ गुरमुखि जागि रहे दिन राती ॥ साचे की लिव गुरमति जाती ॥ मनमुख सोइ रहे से लूटे गुरमुखि
 साबतु भाई हे ॥ ४ ॥ कूडे आवै कूडे जावै ॥ कूडे राती कूडु कमावै ॥ सबदि मिले से दरगह पैधे गुरमुखि सुरति समाई हे
 ॥ ५ ॥ कूडि मुठी ठगी ठगवाड़ी ॥ जिउ वाड़ी ओजाडि उजाड़ी ॥ नाम बिना किछु सादि न लागै हरि बिसरिऐ दुखु पाई हे
 ॥ ६ ॥ भोजनु साचु मिलै आघाई ॥ नाम रतनु साची वडिआई ॥ चीनै आपु पछाणै सोई जोती जोति

मिलार्हे हे ॥ ७ ॥ नावहु भुली चोटा खाए ॥ बहुतु सिआणप भरमु न जाए ॥ पचि पचि मुए अचेत न चेटहि अजगरि
 भारि लदाई हे ॥ ८ ॥ बिनु बाद बिरोधहि कोई नाही ॥ मै देखालिहु तिसु सालाही ॥ मनु तनु अरपि मिलै जगजीवनु
 हरु सिउ बणत बणाई हे ॥ ९ ॥ प्रभ की गति मिति कोई न पावै ॥ जे को वडा कहाइ वडाई खावै ॥ साचे साहिब
 तोटि न दाती सगली तिनहि उपाई हे ॥ १० ॥ वडी वडिआई वेपरवाहे ॥ आपि उपाए दानु समाहे ॥ आपि दइआलु
 दुरि नहीं दाता मिलिआ सहजि रजाई हे ॥ ११ ॥ इकि सोगी इकि रोगि विआपे ॥ जो किछु करे सु आपे आपे ॥
 भगति भाउ गुर की मति पूरी अनहदि सबदि लखाई हे ॥ १२ ॥ इकि नागे भूखे भवहि भवाए ॥ इकि हठु करि मरहि न
 कीमति पाए ॥ गति अविगत की सार न जाणै बूझै सबदु कमाई हे ॥ १३ ॥ इकि तीरथि नावहि अँनु न खावहि ॥
 इकि अगनि जलावहि देह खपावहि ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई कितु बिधि पारि लँघाई हे ॥ १४ ॥ गुरमति छोडहि
 उझड़ि जाई ॥ मनमुखि रामु न जपै अवाई ॥ पचि पचि बूडहि कूडु कमावहि कूडि कालु बैराई हे ॥ १५ ॥ हुकमे आवै
 हुकमे जावै ॥ बूझै हुकमु सो साचि समावै ॥ नानक साचु मिलै मनि भावै गुरमुखि कार कमाई हे ॥ १६ ॥ ५ ॥ मारु
 महला १ ॥ आपे करता पुरखु बिधाता ॥ जिनि आपे आपि उपाइ पछाता ॥ आपे सतिगुरु आपे सेवकु आपे खिसटि
 उपाई हे ॥ १ ॥ आपे नेडै नाही दूरे ॥ बूझहि गुरमुखि से जन पूरे ॥ तिन की संगति अहिनि सिलाहा गुर संगति एह
 वडाई हे ॥ २ ॥ जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे ॥ हरि गुण गावहि रसन रसेरे ॥ उसतति करहि परहरि दुखु दालदु जिन
 नाही चिंत पराई हे ॥ ३ ॥ ओइ जागत रहहि न सूते दीसहि ॥ संगति कुल तारे साचु परीसहि ॥ कलिमल मैलु नाही
 ते निरमल ओइ रहहि भगति लिव लाई हे ॥ ४ ॥ बूझहु हरि जन सतिगुर बाणी ॥ एहु जोबनु सासु है देह पुराणी ॥
 आजु कालि मरि जाईरे प्राणी हरि जपु जपि रिदै धिआई हे ॥ ५ ॥ छोडहु प्राणी कूड कबाड़ा ॥ कूडु मारे कालु

उछाहाडा ॥ साकत कूड़ि पचहि मनि हउमै दुहु मारगि पचै पचाई हे ॥ ६ ॥ छोडिहु निँदा ताति पराई ॥ पड़ि पड़ि
 दझहि साति न आई ॥ मिलि सतसँगति नामु सलाहहु आतमरामु सखाई हे ॥ ७ ॥ छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥ हउमै
 धँधु छोडहु लँपटाई ॥ सतिगुर सरणि परहु ता उबरहु इउ तरीरे भवजलु भाई हे ॥ ८ ॥ आगै बिमल नदी अगनि बिखु
 झेला ॥ तिथै अवरु न कोई जीउ इकेला ॥ भड़ भड़ अगनि सागरु दे लहरी पड़ि दझहि मनमुख ताई हे ॥ ९ ॥ गुर
 पहि मुकति दानु दे भाणै ॥ जिनि पाइआ सोई बिधि जाणै ॥ जिनि पाइआ तिन पूछहु भाई सुखु सतिगुर सेव कमाई हे
 ॥ १० ॥ गुर बिनु उरझि मरहि बेकारा ॥ जमु सिरि मारे करे खुआरा ॥ बाधे मुकति नाही नर निँदक डूबहि निँद पराई हे
 ॥ ११ ॥ बोलहु साचु पचाणहु अँदरि ॥ दूरि नाही देखहु करि नँदरि ॥ बिघनु नाही गुरमुखि तरु तारी इउ भवजलु
 पारि लँघाई हे ॥ १२ ॥ देही अँदरि नामु निवासी ॥ आपे करता है अबिनासी ॥ ना जीउ मरै न मारिआ जाई करि देखै
 सबदि रजाई हे ॥ १३ ॥ ओहु निरमलु है नाही अँधिआरा ॥ ओहु आपे तरुति बहै सचिआरा ॥ साकत कूड़े बाँधि
 भवाईअहि मरि जनमहि आई जाई हे ॥ १४ ॥ गुर के सेवक सतिगुर पिआरे ॥ ओइ बैसहि तरुति सु सबदु विचारे ॥
 ततु लहहि अँतरगति जाणहि सतसँगति साचु वडाई हे ॥ १५ ॥ आपि तरै जनु पितरा तारे ॥ सँगति मुकति सु पारि
 उतारे ॥ नानकु तिस का लाला गोला जिनि गुरमुखि हरि लिव लाई हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ मारु महला १ ॥ केते जुग वरते
 गुबारै ॥ ताड़ी लाई अपर अपारै ॥ धुँधुकारि निरालमु बैठा ना तदि धँधु पसारा हे ॥ १ ॥ जुग छतीह तिनै वरताए ॥
 जिउ तिसु भाणा तिवै चलाए ॥ तिसहि सरीकु न दीसै कोई आपे अपर अपारा हे ॥ २ ॥ गुपते बूझहु जुग चतुआरे ॥
 घटि घटि वरतै उदर मझारे ॥ जुगु जुगु एका एकी वरतै कोई बूझै गुर वीचारा हे ॥ ३ ॥ बिँदु रक्तु मिलि पिँडु सरीआ ॥
 पउणु पाणी अगनी मिलि जीआ ॥ आपे चोज करे रँग महली होर माइआ मोह पसारा हे ॥ ४ ॥ गरभ कुँडल महि

उरध धिआनी ॥ आपे जणै अंतरजामी ॥ सासि सासि सचु नामु समाले अंतरि उदर मझारा हे ॥ ५ ॥ चारि पदारथ लै
 जगि आइआ ॥ सिव सकती घरि वासा पाइआ ॥ एकु विसारे ता पिड़ हारे अंधुलै नामु विसारा हे ॥ ६ ॥ बालकु मरै
 बालक की लीला ॥ कहि कहि रोवहि बालु रंगीला ॥ जिस का सा सो तिन ही लीआ भूला रोवणहारा हे ॥ ७ ॥ भरि
 जोबनि मरि जाहि कि कीजै ॥ मेरा मेरा करि रोवीजै ॥ माइआ कारणे रोइ विगूचहि धिगु जीवणु संसारा हे ॥ ८ ॥ काली
 हू फुनि धउले आए ॥ विणु नावै गथु गइआ गवाए ॥ दुर्मति अंधुला बिनसि बिनासै मूठे रोइ पूकारा हे ॥ ९ ॥ आपु
 वीचारि न रोवै कोई ॥ सतिगुरु मिलै त सोझी होई ॥ बिनु गुर बजर कपाट न खूलहि सबदि मिलै निसतारा हे ॥ १० ॥
 बिरधि भइआ तनु छीजै देही ॥ रामु न जपई अंति सनेही ॥ नामु विसारि चलै मुहि कालै दरगह झूठु खुआरा हे ॥ ११ ॥
 नामु विसारि चलै कूड़िआरो ॥ आवत जात पड़ै सिरि छारो ॥ साहुरडे घरि वासु न पाए पेईअडे सिरि मारा हे ॥ १२ ॥
 खाजे पैझै रली करीजै ॥ बिनु अभ भगती बादि मरीजै ॥ सर अपसर की सार न जाणै जमु मारे किआ चारा हे ॥ १३ ॥
 परविरती नरविरति पछाणै ॥ गुर कै सँगि सबदि घरु जाणै ॥ किस ही मँदा आखि न चलै सचि खरा सचिआरा हे ॥ १४
 ॥ साच बिना दरि सिझै न कोई ॥ साच सबदि पैझै पति होई ॥ आपे बखसि लए तिसु भावै हउमै गरबु निवारा हे ॥ १५
 ॥ गुर किरपा ते हुकमु पछाणै ॥ जुगह जुगंतर की बिधि जाणै ॥ नानक नामु जपहु तरु तारी सचु तारे तारणहारा हे ॥
 १६ ॥ १ ॥ ७ ॥ मारु महला १ ॥ हरि सा मीतु नाही मै कोई ॥ जिनि तनु मनु दीआ सुरति समोई ॥ सरब जीआ
 प्रतिपालि समाले सो अंतरि दाना बीना हे ॥ १ ॥ गुरु सरवरु हम हँस पिआरे ॥ सागर महि रतन लाल बहु सारे ॥ मोती
 माणक हीरा हरि कसु गावत मनु तनु भीना हे ॥ २ ॥ हरि अगम अगाहु अगाधि निराला ॥ हरि अंतु न पाईए गुर गोपाला
 ॥ सतिगुर मति तारे तारणहारा मिलि लए रँगि लीना हे ॥ ३ ॥ सतिगुर बाझहु मुकति किनेही ॥ ओहु आदि जुगादी

राम सनेही ॥ दरगह मुकति करे करि किरपा बखसे अवगुण कीना हे ॥ ४ ॥ सतिगुरु दाता मुकति कराए ॥ सभि रोग
 गवाए अँमित रसु पाए ॥ जम जागाति नाही करु लागै जिस्सु अगनि बुझी ठरु सीना हे ॥ ५ ॥ काइआ हँस प्रीति बहु धारी
 ॥ ओहु जोगी पुरखु ओह सुँदरि नारी ॥ अहिनिस्सि भोगै चोज बिनोदी उठि चलतै मता न कीना हे ॥ ६ ॥ खिसटि उपाइ
 रहे प्रभ छाजै ॥ पउण पाणी बैसँतरु गाजै ॥ मनूआ डोलै दूत सँगाति मिलि सो पाए जो किछु कीना हे ॥ ७ ॥ नामु
 विसारि दोख दुख सहीरे ॥ हुकमु भइआ चलणा किउ रहीरे ॥ नरक कूप महि गोते खावै जिउ जल ते बाहरि मीना हे ॥ ८
 ॥ चउरासीह नरक साकतु भोगाईरे ॥ जैसा कीचै तैसो पाईरे ॥ सतिगुर बाजहु मुकति न होई किरति बाधा ग्रसि दीना हे
 ॥ ९ ॥ खँडे धार गली अति भीड़ी ॥ लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी ॥ मात पिता कलत्र सुत बेली नाही बिनु हरि रस मुकति
 न कीना हे ॥ १० ॥ मीत सखे केते जग माही ॥ बिनु गुर परमेसर कोई नाही ॥ गुर की सेवा मुकति पराइणि अनदिनु
 कीरतनु कीना हे ॥ ११ ॥ कूडु छोडि साचे कउ धावहु ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु ॥ साच वखर के वापारी विरले लै लाहा
 सउदा कीना हे ॥ १२ ॥ हरि हरि नामु वखरु लै चलहु ॥ दरसनु पावहु सहजि महलहु ॥ गुरमुखि खोजि लहहि जन पूरे
 इउ समदरसी चीना हे ॥ १३ ॥ प्रभ बेअँत गुरमति को पावहि ॥ गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥ सतिगुर की बाणी
 सति सति करि मानहु इउ आतम रामै लीना हे ॥ १४ ॥ नारद सारद सेवक तेरे ॥ त्रिभवणि सेवक वडहु वडेरे ॥ सभ तेरी
 कुदरति तू सिरि सिरि दाता सभु तेरो कारणु कीना हे ॥ १५ ॥ इकि दरि सेवहि दरदु वजाए ॥ ओइ दरगह पैधे सतिगुरु
 छडाए ॥ हउमै बँधन सतिगुरि तोड़े चितु चँचलु चलणि न दीना हे ॥ १६ ॥ सतिगुर मिलहु चीनहु बिधि साई ॥ जितु प्रभु
 पावहु गणत न काई ॥ हउमै मारि करहु गुर सेवा जन नानक हरि रँगि भीना हे ॥ १७ ॥ २ ॥ ८ ॥ मारु महला १ ॥
 असुर सघारण रामु हमारा ॥ घटि घटि रमईआ रामु पिआरा ॥ नाले अलखु न लखीरे मूले गुरमुखि लिखु वीचारा हे ॥ १

॥

गुरुमुखिं साधू सरणिं तुमारी ॥ करिं किरपा प्रभिं पारिं उतारी ॥ अगनि पाणी सागरु अति गहरा गुरु सतिगुरु पारिं
 उतारा हे ॥ २ ॥ मनमुख अँधुले सोझी नाही ॥ आवहिं जाहिं मरहिं मरिं जाही ॥ पूरबिं लिखिआ लेखु न मिटई जम
 दरिं अँधु खुआरा हे ॥ ३ ॥ इकि आवहिं जावहिं घरिं वासु न पावहिं ॥ किरत के बाधे पाप कमावहिं ॥ अँधुले सोझी बूझ
 न काई लोभु बुरा अहंकारा हे ॥ ४ ॥ पिर बिनु किआ तिसु धन सीगारा ॥ पर पिर राती खसमु विसारा ॥ जिउ बेसुआ
 पूत बापु को कहीऐ तिउ फोकट कार विकारा हे ॥ ५ ॥ प्रेत पिँजर महि दूख घनेरे ॥ नरकि पचहिं अगिआन अँधेरे ॥
 धरमराइ की बाकी लीजै जिनि हरि का नामु विसारा हे ॥ ६ ॥ सूरजु तपै अगनि बिखु झाला ॥ अपतु पसू मनमुखु
 बेताला ॥ आसा मनसा कूडु कमाचहिं रोगु बुरा बुरिआरा हे ॥ ७ ॥ मसतकि भारु कलर सिरिं भारा ॥ किउ करिं
 भवजलु लँघसि पारा ॥ सतिगुरु बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा हे ॥ ८ ॥ पुत्र कलत्र जगि हेतु पिआरा ॥
 माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ जम के फाहे सतिगुरिं तोड़े गुरुमुखिं ततु बीचारा हे ॥ ९ ॥ कूडिं मुठी चालै बहु राही ॥
 मनमुखु दाझै पडिं पडिं भाही ॥ अँमित नामु गुरु वड दाणा नामु जपहु सुख सारा हे ॥ १० ॥ सतिगुरु तुठा सचु द्विड़ाए
 ॥ सभिं दुख मेटे मारगि पाए ॥ कँडा पाइ न गडई मूले जिंसु सतिगुरु राखणहारा हे ॥ ११ ॥ खेहू खेह चलै तनु छीजै
 ॥ मनमुखु पाथरु सैलु न भीजै ॥ करण पलाव करे बहुतेरे नरकि सुरगि अवतारा हे ॥ १२ ॥ माइआ बिखु भुइँगम नाले
 ॥ इनि दुबिधा घर बहुते गाले ॥ सतिगुरु बाझहु प्रीति न उपजै भगति रते पतीआरा हे ॥ १३ ॥ साकत माइआ कउ बहु
 धावहिं ॥ नामु विसारिं कहा सुखु पावहिं ॥ त्रिहु गुण अँतरिं खपहिं खपावहिं नाही पारिं उतारा हे ॥ १४ ॥ कूकर सूकर
 कहीअहिं कूडिंआरा ॥ भउकि मरहिं भउ भउ भउहारा ॥ मनि तनि झूठे कूडु कमावहिं दुरमति दरगह हारा हे ॥ १५ ॥
 सतिगुरु मिलै त मनूआ टेकै ॥ राम नामु दे सरणिं परेकै ॥ हरि धनु नामु अमोलकु देवै हरिं जसु दरगह पिआरा हे ॥ १६

॥

राम नामु साधू सरणाई ॥ सतिगुर बचनी गति मिति पाई ॥ नानक हरि जपि हरि मन मेरे हरि मेले मेलणहारा हे ॥ १७ ॥
 ३ ॥ ९ ॥ मारु महला १ ॥ घरि रहु रे मन मुगध इआने ॥ राम जपहु अंतरगति धिआने ॥ लालच छोडि रचहु अपरपरि
 इउ पावहु मुकति दुआरा हे ॥ १ ॥ जिंसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै ॥ सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै ॥ राम नामु जपि
 गुरमुखि जीअडे एहु परम ततु वीचारा हे ॥ २ ॥ हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा ॥ गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा ॥
 अहिनिंसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे ॥ ३ ॥ राम नामु गुर बचनी बोलहु ॥ संत सभा महि इहु रसु टोलहु
 ॥ गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुडि न गरभ मझारा हे ॥ ४ ॥ सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहि ॥ ततु वीचारहु
 हरि लिव लावहु ॥ अंत कालि जम जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा ॥
 जिंसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा ॥ जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु चूका जम भै भारा हे ॥ ६ ॥ पंच ततु मिलि
 काइआ कीनी ॥ तिस महि राम रतनु लै चीनी ॥ आतमरामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे ॥ ७ ॥ सत संतोखि
 रहहु जन भाई ॥ खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥ आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे ॥ ८ ॥ साकत
 कूड़ कपट महि टेका ॥ अहिनिंसि निँदा करहि अनेका ॥ बिनु सिमरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे ॥ ९
 ॥ साकत जम की काणि न चूकै ॥ जम का डँडु न कबहु मूकै ॥ बाकी धरमराइ की लीजै सिरि अफरिओ भारु अफारा हे ॥
 १० ॥ बिन गुर साकतु कहहु को तरिआ ॥ हउमै करता भवजलि परिआ ॥ बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि
 उतारा हे ॥ ११ ॥ गुर की दाति न मेटै कोई ॥ जिंसु बखसे तिसु तारे सोई ॥ जनम मरण दुखु नेडि न आवै मनि सो प्रभु
 अपर अपारा हे ॥ १२ ॥ गुर ते भूले आवहु जावहु ॥ जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु ॥ साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु
 लागै ता रामु पुकारा हे ॥ १३ ॥ सुखु दुखु पुरब जनम के कीए ॥ सो जाणै जिनि दातै दीए ॥ किस कउ दोसु देहि तू प्राणी

सह्यु अपणा कीआ करारा हे ॥ १४ ॥ हउमै ममता करदा आइआ ॥ आसा मनसा बँधि चलाइआ ॥ मेरी मेरी करत किआ
 ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे ॥ १५ ॥ हरि की भगति करहु जन भाई ॥ अकथु कथहु मनु मनहि समाई ॥ उठि
 चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे ॥ १६ ॥ हरि गुर पूरे की ओट पराती ॥ गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि
 जाती ॥ नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे ॥ १७ ॥ ४ ॥ १० ॥ मारू महला १ ॥ सरणि परे
 गुरदेव तुमारी ॥ तू समरथु दइआलु मुरारी ॥ तेरे चोज न जाणै कोई तू पूरा पुरखु बिधाता हे ॥ १ ॥ तू आदि जुगादि
 करहि प्रतिपाला ॥ घटि घटि रूपु अनूपु दइआला ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि सभु तेरो कीआ कमाता हे ॥ २ ॥
 अंतरि जोति भली जगजीवन ॥ सभि घट भोगै हरि रसु पीवन ॥ आपे लेवै आपे देवै तिहु लोई जगत पित दाता हे ॥ ३ ॥
 जगत उपाइ खेलु रचाइआ ॥ पवणै पाणी अगनी जीउ पाइआ ॥ देही नगरी नउ दरवाजे सो दसवा गुपटु रहाता हे ॥ ४ ॥
 चारि नदी अगनी असराला ॥ कोई गुरमुखि बूझै सबदि निराला ॥ साकत दुरमति डूबहि दाइहि गुरि राखे हरि लिव राता हे
 ॥ ५ ॥ अपु तेजु वाइ प्रिथमी आकासा ॥ तिन महि पँच ततु घरि वासा ॥ सतिगुर सबदि रहहि रँगि राता तजि माइआ
 हउमै भ्राता हे ॥ ६ ॥ इहु मनु भीजै सबदि पतीजै ॥ बिनु नावै किआ टेक टिकीजै ॥ अंतरि चोरु मुहै घरु मँदरु इनि
 साकति दूतु न जाता हे ॥ ७ ॥ दुँदर दूत भूत भीहाले ॥ खिँचोताणि करहि बेताले ॥ सबद सुरति बिनु आवै जावै पति
 खोई आवत जाता हे ॥ ८ ॥ कूडु कलरु तनु भसमै ढेरी ॥ बिनु नावै कैसी पति तेरी ॥ बाधे मुकति नाही जुग चारे जम
 कँकरि कालि पराता हे ॥ ९ ॥ जम दरि बाधे मिलहि सजाई ॥ तिसु अपराधी गति नहीं काई ॥ करण पलाव करे बिललावै
 जिउ कुँडी मीनु पराता हे ॥ १० ॥ साकतु फासी पडै इकेला ॥ जम वसि कीआ अँधु दुहेला ॥ राम नाम बिनु मुकति न सूझै
 आजु कालि पचि जाता हे ॥ ११ ॥ सतिगुर बाझु न बेली कोई ॥ ऐथै ओथै राखा प्रभु सोई ॥ राम नामु देवै करि किरपा

इउ सललै सलल मिलाता हे ॥ १२ ॥ भूले सिख गुरू समझाए ॥ उझड़ि जादे मारगि पाए ॥ तिसु गुर सेवि सदा दिनु राती
 दुख भँजन सँगि सखाता हे ॥ १३ ॥ गुर की भगति करहि किआ प्राणी ॥ ब्रहमै इंद्रि महेसि न जाणी ॥ सतिगुरु अलखु
 कहहु किउ लखीऐ जिसु बखसे तिसहि पछाता हे ॥ १४ ॥ अंतरि प्रेम पुरापति दरसनु ॥ गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ॥
 अहिनिशि निरमल जोति सबाई घटि दीपकु गुरमुखि जाता हे ॥ १५ ॥ भोजन गिआनु महा रसु मीठा ॥ जिनि चाखिआ
 तिनि दरसनु डीठा ॥ दरसनु देखि मिले बैरागी मनु मनसा मारि समाता हे ॥ १६ ॥ सतिगुरु सेवहि से परधाना ॥ तिन
 घट घट अंतरि ब्रहमु पछाना ॥ नानक हरि जसु हरि जन की सँगति दीजै जिन सतिगुरु हरि प्रभु जाता हे ॥ १७ ॥ ५ ॥
 ११ ॥ मारु महला १ ॥ साचे साहिब सिरजणहारे ॥ जिनि धर चक्र धरे वीचारे ॥ आपे करता करि करि वेखै साचा
 वेपरवाहा हे ॥ १ ॥ वेकी वेकी जंत उपाए ॥ दुइ पँदी दुइ राह चलाए ॥ गुर पूरे विणु मुकति न होई सचु नामु जपि लाहा हे
 ॥ २ ॥ पड़हि मनमुख परु बिधि नही जाना ॥ नामु न बूझहि भरमि भुलाना ॥ लै कै वढी देनि उगाही दुर्मति का गलि
 फाहा हे ॥ ३ ॥ सिम्रिति सासत्र पड़हि पुराणा ॥ वादु वखाणहि ततु न जाणा ॥ विणु गुर पूरे ततु न पाईऐ सच सूचे सचु
 राहा हे ॥ ४ ॥ सभ सालाहे सुणि सुणि आखै ॥ आपे दाना सचु पराखै ॥ जिन कउ नदरि करे प्रभु अपनी गुरमुखि सबदु
 सलाहा हे ॥ ५ ॥ सुणि सुणि आखै केती बाणी ॥ सुणि कहीऐ को अंतु न जाणी ॥ जा कउ अलखु लखाए आपे अकथ
 कथा बुधि ताहा हे ॥ ६ ॥ जनमे कउ वाजहि वाधाए ॥ सोहिलडे अगिआनी गाए ॥ जो जनमै तिसु सरपर मरणा किरतु
 पड़आ सिरि साहा हे ॥ ७ ॥ संजोगु विजोगु मेरै प्रभि कीए ॥ स्त्रिसटि उपाइ दुखा सुख दीए ॥ दुख सुख ही ते भए निराले
 गुरमुखि सीलु सनाहा हे ॥ ८ ॥ नीके साचे के वापारी ॥ सचु सउदा लै गुर वीचारी ॥ सचा वखरु जिसु धनु पलै सबदि
 सचै ओमाहा हे ॥ ९ ॥ काची सउदी तोटा आवै ॥ गुरमुखि वणजु करे प्रभ भावै ॥ पूंजी साबतु रासि सलामति चूका

जम का फाहा हे ॥ १० ॥ सभु को बोलै आपण भाणै ॥ मनमुखु दूजै बोलि न जाणै ॥ अँधुले की मति अँधली बोली आइ
गइआ दुखु ताहा हे ॥ ११ ॥ दुख महि जनमै दुख महि मरणा ॥ दूखु न मिटै बिनु गुर की सरणा ॥ दूखी उपजै दूखी
बिनसै किआ लै आइआ किआ लै जाहा हे ॥ १२ ॥ सची करणी गुर की सिरकारा ॥ आवणु जाणु नहीं जम धारा ॥ डाल
छोडि ततु मूलु पराता मनि साचा ओमाहा हे ॥ १३ ॥ हरि के लोग नहीं जमु मारै ॥ ना दुखु देखहि पँथि करारै ॥ राम नामु
घट अँतरि पूजा अवरु न दूजा काहा हे ॥ १४ ॥ ओडु न कथनै सिफति सजाई ॥ जिउ तुधु भावहि रहहि रजाई ॥ दरगह
पैधे जानि सुहेले हुकमि सचे पातिसाहा हे ॥ १५ ॥ किआ कहीरे गुण कथहि घनेरे ॥ अँतु न पावहि वडे वडेरे ॥ नानक
साचु मिलै पति राखहु तू सिरि साहा पातिसाहा हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ १२ ॥ मारु महला १ दरवणी ॥ काइआ नगरु नगर
गड़ अँदरि ॥ साचा वासा पुरि गगनँदरि ॥ असथिरु थानु सदा निरमाइलु आपे आपु उपाइदा ॥ १ ॥ अँदरि कोट छजे
हटनाले ॥ आपे लेवै वसतु समाले ॥ बजर कपाट जडे जडि जाणै गुर सबदी खोलाइदा ॥ २ ॥ भीतरि कोट गुफा घर
जाई ॥ नउ घर थापे हुकमि रजाई ॥ दसवै पुरखु अलेखु अपारी आपे अलखु लखाइदा ॥ ३ ॥ पउण पाणी अगनी इक
वासा ॥ आपे कीतो खेलु तमासा ॥ बलदी जलि निवरै किरपा ते आपे जलनिधि पाइदा ॥ ४ ॥ धरति उपाइ धरी
धरमसाला ॥ उतपति परलउ आपि निराला ॥ पवणै खेलु कीआ सभ थाई कला खिँचि ढाहाइदा ॥ ५ ॥ भार अठारह
मालणि तेरी ॥ चउरु ढुलै पवणै लै फेरी ॥ चँद सूरजु दुइ दीपक राखे ससि घरि सूरु समाइदा ॥ ६ ॥ पँखी पँच उडरि नहीं
धावहि ॥ सफलिओ बिरखु अँमित फलु पावहि ॥ गुरमुखि सहजि रवै गुण गावै हरि रसु चोग चुगाइदा ॥ ७ ॥ झिलमिलि
झिलकै चँदु न तारा ॥ सूरज किरणि न बिजुलि गैणारा ॥ अकथी कथउ चिहनु नहीं कोई पूरि रहिआ मनि भाइदा ॥ ८ ॥
पसरी किरणि जोति उजिआला ॥ करि करि देखै आपि दइआला ॥ अनहद रुणझुणकारु सदा धुनि निरभउ कै घरि

वाइदा ॥ ९ ॥ अनहदु वाजै भ्रमु भउ भाजै ॥ सगल बिआपि रहिआ प्रभु छाजै ॥ सभ तेरी तू गुरमुखि जाता दरि सोहै गुण
 गाइदा ॥ १० ॥ आदि निरँजनु निरमलु सोई ॥ अवरु न जाणा दूजा कोई ॥ एकँकारु वसै मनि भावै हउमै गरब गवाइदा
 ॥ ११ ॥ अँमितु पीआ सतिगुर दीआ ॥ अवरु न जाणा दूआ तीआ ॥ एको एकु सु अपर परँपरु परखि खजानै पाइदा
 ॥ १२ ॥ गिआनु धिआनु सचु गहिर गँभीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा चीरा ॥ जेती है तेती तुधु जाचै करमि मिलै सो पाइदा
 ॥ १३ ॥ करमु धरमु सचु हाथि तुमारै ॥ वेपरवाह अखुट भँडारै ॥ तू दइआलु किरपालु सदा प्रभु आपे मेलि मिलाइदा ॥
 १४ ॥ आपे देखि दिखावै आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ आपे जोड़ि विछोड़े करता आपे मारि जीवाइदा ॥ १५ ॥
 जेती है तेती तुधु अँदरि ॥ देखहि आपि बैसि बिज मँदरि ॥ नानकु साचु कहै बेनँती हरि दरसनि सुखु पाइदा ॥ १६ ॥ १
 ॥ १३ ॥ मारु महला १ ॥ दरसनु पावा जे तुधु भावा ॥ भाइ भगति साचे गुण गावा ॥ तुधु भाणे तू भावहि करते आपे
 रसन रसाइदा ॥ १ ॥ सोहनि भगत प्रभू दरबारे ॥ मुकतु भए हरि दास तुमारे ॥ आपु गवाइ तेरै रँगि राते अनदिनु नामु
 धिआइदा ॥ २ ॥ ईसरु ब्रहमा देवी देवा ॥ इँद्र तपे मुनि तेरी सेवा ॥ जती सती केते बनवासी अँतु न कोई पाइदा ॥ ३ ॥
 विणु जाणाए कोइ न जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ लख चउरासीह जीअ उपाए भाणै साह लवाइदा ॥ ४ ॥ जो
 तिसु भावै सो निहचउ होवै ॥ मनमुखु आपु गणाए रोवै ॥ नावहु भुला ठउर न पाए आइ जाइ दुखु पाइदा ॥ ५ ॥ निरमल
 काइआ ऊजल हँसा ॥ तिसु विचि नामु निरँजन अँसा ॥ सगले दूख अँमितु करि पीवै बाहुड़ि दूखु न पाइदा ॥ ६ ॥ बहु
 सादहु दूखु परापति होवै ॥ भोगहु रोग सु अँति विगोवै ॥ हरखहु सोगु न मिटई कबहु विणु भाणे भरमाइदा ॥ ७ ॥
 गिआन विहूणी भवै सबाई ॥ साचा रवि रहिआ लिव लाई ॥ निरभउ सबदु गुरू सचु जाता जोती जोति मिलाइदा ॥ ८
 ॥ अटलु अडोलु अतोलु मुरारे ॥ खिन महि ढाहे फेरि उसारे ॥ रूपु न रेखिआ मिति नही कीमति सबदि

भेदि पतीआइदा ॥ ९ ॥ हम दासन के दास पिआरे ॥ साधिक साच भले वीचारे ॥ मँने नाउ सोई जिणि जासी आपे साचु
 द्विडाइदा ॥ १० ॥ पलै साचु सचे सचिआरा ॥ साचे भावै सबदु पिआरा ॥ त्रिभवणि साचु कलाधरि थापी साचे ही
 पतीआइदा ॥ ११ ॥ वडा वडा आखै सभु कोई ॥ गुर बिनु सोझी किनै न होई ॥ साचि मिलै सो साचे भाए ना विछुडि दुखु
 पाइदा ॥ १२ ॥ धुरहु विछुँने धाही रँने ॥ मरि मरि जनमहि मुहलति पुँने ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई मेलि न पछोताइदा
 ॥ १३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ आपे त्रिपता आपे मुकता ॥ आपे मुकति दानु मुकतीसरु ममता मोहु चुकाइदा ॥ १४
 ॥ दाना कै सिरि दानु वीचारा ॥ करण कारण समरथु अपारा ॥ करि करि वेखै कीता अपणा करणी कार कराइदा ॥ १५ ॥ से
 गुण गावहि साचे भावहि ॥ तुझ ते उपजहि तुझ माहि समावहि ॥ नानकु साचु कहै बेनँती मिलि साचे सुखु पाइदा ॥ १६ ॥
 २ ॥ १४ ॥ मारु महला १ ॥ अरबद नरबद धुँधूकारा ॥ धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥ ना दिनु रैनि न चँदु न सूरजु सुँन
 समाधि लगाइदा ॥ १ ॥ खाणी न बाणी पउण न पाणी ॥ ओपति खपति न आवण जाणी ॥ खँड पताल सपत नही सागर
 नदी न नीरु वहाइदा ॥ २ ॥ ना तदि सुरगु मछु पइआला ॥ दोजकु भिसतु नही खै काला ॥ नरकु सुरगु नही जँमणु मरणा
 ना को आइ न जाइदा ॥ ३ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु न कोई ॥ अवरु न दीसै एको सोई ॥ नारि पुरखु नही जाति न जनमा ना
 को दुखु सुखु पाइदा ॥ ४ ॥ ना तदि जती सती बनवासी ॥ ना तदि सिध साधिक सुख वासी ॥ जोगी जँगम भेरु न कोई ना
 को नाथु कहाइदा ॥ ५ ॥ जप तप सँजम ना ब्रत पूजा ॥ ना को आखि वखाणै दूजा ॥ आपे आपि उपाइ विगसै आपे कीमति
 पाइदा ॥ ६ ॥ ना सुचि सँजमु तुलसी माला ॥ गोपी कानु न गऊ गुआला ॥ तँतु मँतु पाखँडु न कोई ना को वँसु वजाइदा
 ॥ ७ ॥ कर्म धरम नही माइआ माखी ॥ जाति जनमु नही दीसै आखी ॥ ममता जालु कालु नही माथै ना को किसै धिआइदा
 ॥ ८ ॥ निँदु बिँदु नही जीउ न जिँदो ॥ ना तदि गोरखु ना माछिँदो ॥ ना तदि गिआनु धिआनु कुल ओपति

ना को गणत गणाइदा ॥ ९ ॥ वरन भेख नही ब्रहमण खत्री ॥ देउ न देहुरा गऊ गाइत्री ॥ होम जग नही तीरथि नावणु
ना को पूजा लाइदा ॥ १० ॥ ना को मुला ना को काजी ॥ ना को सेखु मसाइकु हाजी ॥ रईअति राउ न हउमै दुनीआ ना
को कहणु कहाइदा ॥ ११ ॥ भाउ न भगती ना सिव सकती ॥ साजनु मीतु बिंदु नही रकती ॥ आपे साहु आपे वणजारा
साचे एहो भाइदा ॥ १२ ॥ बेद कतेब न सिंमिति सासत ॥ पाठ पुराण उदै नही आसत ॥ कहता बकता आपि अगोचरु
आपे अलखु लखाइदा ॥ १३ ॥ जा तिसु भाणा ता जगतु उपाइआ ॥ बाझु कला आडाणु रहाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु
उपाए माइआ मोहु वधाइदा ॥ १४ ॥ विरले कउ गुरि सबदु सूणाइआ ॥ करि करि देखै हुकमु सबाइआ ॥ खँड ब्रहमँड
पाता अरँभे गुपतहु परगटी आइदा ॥ १५ ॥ ता का अँतु न जाणै कोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ नानक साचि रते
बिसमादि बिसम भए गुण गाइदा ॥ १६ ॥ ३ ॥ १५ ॥ मारु महला १ ॥ आपे आपु उपाइ निराला ॥ साचा थानु कीओ
दइआला ॥ पउण पाणी अगनी का बँधनु काइआ कोटु रचाइदा ॥ १ ॥ नउ घर थापे थापणहारै ॥ दसवै वासा अलख
अपारै ॥ साइर सपत भरे जलिं निरमलिं गुरमुखिं मैलु न लाइदा ॥ २ ॥ रवि ससि दीपक जोति सबाई ॥ आपे करिं वेखै
वडिआई ॥ जोति सरूप सदा सुखदाता सचे सोभा पाइदा ॥ ३ ॥ गड़ महि हाट पटण वापारा ॥ पूरै तोलिं तोलै वणजारा
॥ आपे रतनु विसाहे लेवै आपे कीमति पाइदा ॥ ४ ॥ कीमति पाई पावणहारै ॥ वेपरवाह पूरे भँडारै ॥ सरब कला ले आपु
रहिआ गुरमुखिं किसै बुझाइदा ॥ ५ ॥ नदरि करे पूरा गुरु भेटै ॥ जम जँदारु न मारै फेटै ॥ जिउ जल अँतरि कमलु
बिगासी आपे बिगसि धिआइदा ॥ ६ ॥ आपे वरखै अँमित धारा ॥ रतन जवेहर लाल अपारा ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा
पाईए प्रेम पदारथु पाइदा ॥ ७ ॥ प्रेम पदारथु लहै अमोलो ॥ कबही न घाटसि पूरा तोलो ॥ सचे का वापारी होवै सचो
सउदा पइदा ॥ ८ ॥ सचा सउदा विरला को पाए ॥ पूरा सतिगुरु मिलै मिलाए ॥ गुरमुखिं होइ सु हुकमु पछाणै मानै हुकमु

समाइदा ॥ ९ ॥ हुकमे आइआ हुकमि समाइआ ॥ हुकमे दीसै जगतु उपाइआ ॥ हुकमे सुरगु मछु पइआला हुकमे कला
रहाइदा ॥ १० ॥ हुकमे धरती धउल सिरिं भारँ ॥ हुकमे पउण पाणी गैणारँ ॥ हुकमे सिव सकती घरिं वासा हुकमे खेल
खेलाइदा ॥ ११ ॥ हुकमे आडाणे आगासी ॥ हुकमे जल थल त्रिभवण वासी ॥ हुकमे सास गिरास सदा फुनि हुकमे देखिं
दिखाइदा ॥ १२ ॥ हुकमि उपाए दस अउतारा ॥ देव दानव अगणत अपारा ॥ मानै हुकमु सु दरगह पैड्रै साचि मिलाइ
समाइदा ॥ १३ ॥ हुकमे जुग छतीह गुदारे ॥ हुकमे सिध साधिक वीचारे ॥ आपि नाथु नथीं, सभ जा की बखसे मुकति
कराइदा ॥ १४ ॥ काइआ कोटु गडै महि राजा ॥ नेब खवास भला दरवाजा ॥ मिथिआ लोभु नाही घरिं वासा लबि पापि
पछुताइदा ॥ १५ ॥ सतु सँतोखु नगर महि कारी ॥ जतु सतु सँजमु सरणिं मुरारी ॥ नानक सहजिं मिलै जगजीवनु गुर
सबदी पति पाइदा ॥ १६ ॥ ४ ॥ १६ ॥ मारु महला १ ॥ सुँन कला अपरँपरि धारी ॥ आपि निरालमु अपर अपारी ॥
आपे कुदरति करिं करिं देखै सुँनहु सुँनु उपाइदा ॥ १ ॥ पउणु पाणी सुँनै ते साजे ॥ खिसटि उपाइ काइआ गड राजे ॥
अगनि पाणी जीउ जोति तुमारी सुँने कला रहाइदा ॥ २ ॥ सुँनहु ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए ॥ सुँने वरते जुग सबाए ॥
इसु पद वीचारे सो जनु पूरा तिसु मिलीऐ भरमु चुकाइदा ॥ ३ ॥ सुँनहु सपत सरोवर थापे ॥ जिनि साजे वीचारे आपे ॥
तितु सत सरिं मनूआ गुरमुखिं नावै फिरिं बाहुडिं जोनि न पाइदा ॥ ४ ॥ सुँनहु चँदु सूरजु गैणारे ॥ तिस की जोति
त्रिभवण सारे ॥ सुँने अलख अपार निरालमु सुँने ताडी लाइदा ॥ ५ ॥ सुँनहु धरति अकासु उपाए बिनु थँमा राखे सचु कल
पाए ॥ त्रिभवण साजिं मेखुली माइआ आपि उपाइ खपाइदा ॥ ६ ॥ सुँनहु खाणी सुँनहु बाणी ॥ सुँनहु उपजी सुँनि
समाणी ॥ उतभुजु चलतु कीआ सिरिं करतै बिसमादु सबदिं देखाइदा ॥ ७ ॥ सुँनहु राति दिनसु दुइ कीए ॥ ओपति
खपति सुखा दुख दीए ॥ सुख दुख ही ते अमरु अतीता गुरमुखिं निज घरु पाइदा ॥ ८ ॥ साम वेदु रिगु जुजरु अथरबणु
॥

ब्रह्मे मुखि माइआ है त्रै गुण ॥ ता की कीमति कहि न सकै को तितु बोले जिउ बोलाइदा ॥ ९ ॥ सुँनहु सपत पाताल
 उपाए ॥ सुँनहु भवण रखे लिव लाए ॥ आपे कारणु कीआ अपरँपरि सभु तेरो कीआ कमाइदा ॥ १० ॥ रज तम सत
 कल तेरी छाइआ ॥ जनम मरण हउमै दुखु पाइआ ॥ जिस नो क्रिपा करे हरि गुरुमुखि गुणिं चउथै मुकति कराइदा ॥ ११
 ॥ सुँनहु उपजे दस अवतारा ॥ खिसटि उपाइ कीआ पासारा ॥ देव दानव गण गँधरब साजे सभि लिखिआ करम
 कमाइदा ॥ १२ ॥ गुरुमुखि समझै रोगु न होई ॥ इह गुरु की पउडी जाणै जनु कोई ॥ जुगह जुगँतरि मुकति पराइण सो
 मुकति भइआ पति पाइदा ॥ १३ ॥ पँच ततु सुँनहु परगासा ॥ देह सँजोगी करम अभिआसा ॥ बुरा भला दुइ मसतकि
 लीखे पापु पुँनु बीजाइदा ॥ १४ ॥ ऊतम सतिगुरु पुरख निराले ॥ सबदि रते हरि रसि मतवाले ॥ रिधि बुधि सिधि
 गिआनु गुरू ते पाईऐ पूरै भागि मिलाइदा ॥ १५ ॥ इसु मन माइआ कउ नेहु घनेरा ॥ कोई बूझहु गिआनी करहु निबेरा
 ॥ आसा मनसा हउमै सहसा नरु लोभी कूडु कमाइदा ॥ १६ ॥ सतिगुरु ते पाए वीचारा ॥ सुँन समाधि सचे घर बारा ॥
 नानक निरमल नादु सबद धुनि रामै नामि समाइदा ॥ १७ ॥ ५ ॥ १७ ॥ मारु महला १ ॥ जह देखा तह दीन
 दइआला ॥ आइ न जाई प्रभु किरपाला ॥ जीआ अँदरि जुगति समाई रहिओ निरालमु राइआ ॥ १ ॥ जगु तिस की
 छाइआ जिसु बापु न माइआ ॥ ना तिसु भैण न भराउ कमाइआ ॥ ना तिसु ओपति खपति कुल जाती ओहु अजरावहु
 मनि भाइआ ॥ २ ॥ तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला ॥ तू पुरखु अलेख अगँम निराला ॥ सत सँतोखि सबदि अति
 सीतलु सहज भाइ लिव लाइआ ॥ ३ ॥ त्रै वरताइ चउथै घरि वासा ॥ काल बिकाल कीए इक ग्रासा ॥ निरमल जोति
 सरब जगजीवनु गुरि अनहद सबदि दिखाइआ ॥ ४ ॥ ऊतम जन सँत भले हरि पिआरे ॥ हरि रस माते पारि उतारे ॥
 नानक रेण सँत जन सँगति हरि गुरु परसादी पाइआ ॥ ५ ॥ तू अँतरजामी जीअ सभि तेरे ॥ तू दाता हम सेवक तेरे ॥

अँमित नामु क्रिपा करि दीजै गुरि गिआन रतनु दीपाइआ ॥ ६ ॥ पँच ततु मिलिं इहु तनु कीआ ॥ आतमराम पाए सुखु
 थीआ ॥ करम करतूति अँमित फलु लाग़ा हरिं नाम रतनु मनि पाइआ ॥ ७ ॥ ना तिसु भूख पिआस मनु मानिआ ॥
 सरब निरँजनु घटि घटि जानिआ ॥ अँमित रसि रता केवल बैरागी गुरमति भाइ सुभाइआ ॥ ८ ॥ अधिआतम करम करे
 दिनु राती ॥ निरमल जोति निरँतरि जाती ॥ सबदु रसालु रसन रसि रसना बेणु रसाल वजाइआ ॥ ९ ॥ बेणु रसालु
 वजावै सोई ॥ जा की त्रिभवण सोझी होई ॥ नानक बूझहु इह बिधि गुरमति हरिं राम नामि लिव लाइआ ॥ १० ॥ ऐसे
 जन विरले संसारे ॥ गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे ॥ आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइआ
 ॥ ११ ॥ घरु दरु मँदरु जाणै सोई ॥ जिंसु पूरे गुर ते सोझी होई ॥ काइआ गड़ महल महली प्रभु साचा सचु साचा
 तखतु रचाइआ ॥ १२ ॥ चतुर दस हाट दीवै दुइ साखी ॥ सेवक पँच नाही बिखु चाखी ॥ अँतरि वसतु अनूप
 निरमोलक गुरि मिलिऐ हरिं धनु पाइआ ॥ १३ ॥ तखति बहै तखतै की लाइक ॥ पँच समाए गुरमति पाइक ॥ आदिं
 जुगादी है भी होसी सहसा भरमु चुकाइआ ॥ १४ ॥ तखति सलामु होवै दिनु राती ॥ इहु साचु वडाई गुरमति लिव जाती
 ॥ नानक रामु जपहु तरु तारी हरि अँति सखाई पाइआ ॥ १५ ॥ १ ॥ १८ ॥ मारु महला १ ॥ हरिं धनु सँचहु रे जन
 भाई ॥ सतिगुर सेवि रहहु सरणाई ॥ तसकरु चोरु न लागै ता कउ धुनि उपजै सबदि जगाइआ ॥ १ ॥ तू एकँकारु
 निरालमु राजा ॥ तू आपि सवारहि जन के काजा ॥ अमरु अडोलु अपारु अमोलकु हरिं असथिर थानि सुहाइआ ॥ २
 ॥ देही नगरी ऊतम थाना ॥ पँच लोक वसहि परधाना ॥ ऊपरि ओकँकारु निरालमु सँनु समाधि लगाइआ ॥ ३ ॥
 देही नगरी नउ दरवाजे ॥ सिरिं सिरिं करणैहारै साजे ॥ दसवै पुरखु अतीतु निराला आपे अलखु लखाइआ ॥ ४ ॥
 पुरखु अलेखु सचे दीवाना ॥ हुकमि चलाए सचु नीसाना ॥ नानक खोजिं लहहु घरु अपना हरिं आतमराम नामु

पाइआ ॥ ५ ॥ सरब निरँज पुरखु सुजाना ॥ अदलु करे गुर गिआन समाना ॥ कामु क्रोधु लै गरदनि मारे हउमै लोभु
 चुकाइआ ॥ ६ ॥ सचै थानि वसै निरँकारा ॥ आपि पछणै सबदु वीचारा ॥ सचै महलिं निवासु निरँतरि आवण जाणु
 चुकाइआ ॥ ७ ॥ ना मनु चलै न पउणु उडावै ॥ जोगी सबदु अनाहदु वावै ॥ पँच सबदु झुणकारु निरालमु प्रभिं आपे वाइ
 सुणाइआ ॥ ८ ॥ भउ बैरागा सहजिं समाता ॥ हउमै तिआगी अनहदि राता ॥ अँजनु सारिं निरँजनु जाणै सरब निरँजनु
 राइआ ॥ ९ ॥ दुख भै भँजनु प्रभु अबिनासी ॥ रोग कटे काटी जम फासी ॥ नानक हरि प्रभु सो भउ भँजनु गुरि मिलिऐ
 हरि प्रभु पाइआ ॥ १० ॥ कालै कवलु निरँजनु जाणै ॥ बूझै करमु सु सबदु पछाणै ॥ आपे जाणै आपि पछाणै सभु तिस
 का चोजु सबाइआ ॥ ११ ॥ आपे साहु आपे वणजारा ॥ आपे परखे परखणहारा ॥ आपे कसिं कसवटीं लाए आपे
 कीमति पाइआ ॥ १२ ॥ आपि दइआल दइआ प्रभिं धारी ॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ पुरखु अतीतु वसै
 निहकेवलु गुर पुरखै पुरखु मिलाइआ ॥ १३ ॥ प्रभु दाना बीना गरबु गवाए ॥ दूजा मेटै एकु दिखाए ॥ आसा माहि
 निरालमु जोनी अकुल निरँजनु गाइआ ॥ १४ ॥ हउमै मेटि सबदि सुखु होई ॥ आपु वीचारे गिआनी सोई ॥ नानक हरि
 जसु हरि गुण लाहा सतसंगति सचु फलु पाइआ ॥ १५ ॥ २ ॥ १९ ॥ मारु महला १ ॥ सचु कहहु सचै घरि रहणा ॥
 जीवत मरहु भवजलु जगु तरणा ॥ गुरु बोहिथु गुरु बेड़ी तुलहा मन हरि जापि पारि लँघाइआ ॥ १ ॥ हउमै ममता लोभ
 बिनासनु ॥ नउ दर मुकते दसवै आसनु ॥ ऊपरि परै परै अपरँपरु जिनि आपे आपु उपाइआ ॥ २ ॥ गुरमति लेवहु हरि
 लिव तरीऐ ॥ अकलु गाइ जम ते किआ डरीऐ ॥ जत जत देखउ तत तत तुम ही अवरु न दुतीआ गाइआ ॥ ३ ॥ सचु
 हरि नामु सचु है सरणा ॥ सचु गुर सबदु जितै लागि तरणा ॥ अकथु कथै देखै अपरँपरु फुनि गरभिं न जोनी जाइआ ॥ ४
 ॥ सच बिनु सतु संतोखु न पावै ॥ बिनु गुर मुकति न आवै जावै ॥ मूल मँत्रु हरि नामु रसाइणु कहु नानक पूरा पाइआ ॥

५ ॥

सच बिनु भवजलु जाइ न तरिआ ॥ एहु समुंदु अथाहु महा बिखु भरिआ ॥ रहै अतीतु गुरमति ले ऊपरि हरि निरभउ कै
 घरि पाइआ ॥ ६ ॥ झूठी जग हित की चतुराई ॥ बिलम न लागै आवै जाई ॥ नामु विसारि चलहि अभिमानी उपजै
 बिनसि खपाइआ ॥ ७ ॥ उपजहि बिनसहि बंधन बंधे ॥ हउमै माइआ के गलि फँधे ॥ जिंसु राम नामु नाही मति
 गुरमति सो जमपुरि बंधि चलाइआ ॥ ८ ॥ गुर बिनु मोख मुकति किउ पाईऐ ॥ बिनु गुर राम नामु किउ धिआईऐ ॥
 गुरमति लेहु तरहु भव दुतरु मुकति भए सुखु पाइआ ॥ ९ ॥ गुरमति क्रिसनि गोवरधन धारे ॥ गुरमति साइरि पाहण
 तारे ॥ गुरमति लेहु परम पदु पाईऐ नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ १० ॥ गुरमति लेहु तरहु सचु तारी ॥ आतम चीनहु
 रिंदे मुरारी ॥ जम के फाहे काटहि हरि जपि अकुल निरँजनु पाइआ ॥ ११ ॥ गुरमति पँच सखे गुर भाई ॥ गुरमति
 अगनि निवारि समाई ॥ मनि मुखे नामु जपहु जगजीवन रिद अंतरि अलखु लखाइआ ॥ १२ ॥ गुरमुखे बूझै सबदि
 पतीजै ॥ उसतति निँदा किस की कीजै ॥ चीनहु आपु जपहु जगदीसरु हरि जगँनाथु मनि भाइआ ॥ १३ ॥ जो
 ब्रहमँडि खँडि सो जाणहु ॥ गुरमुखे बूझहु सबदि पछाणहु ॥ घटि घटि भोगे भोगणहारा रहै अतीतु सबाइआ ॥ १४
 ॥ गुरमति बोलहु हरि जसु सूचा ॥ गुरमति आखी देखहि ऊचा ॥ श्रवणी नामु सुणै हरि बाणी नानक हरि रँगि
 रँगाइआ ॥ १५ ॥ ३ ॥ २० ॥ मारु महला १ ॥ कामु क्रोधु परहरु पर निँदा ॥ लबु लोभु तजि होहु निचिँदा ॥ भ्रम
 का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइआ ॥ १ ॥ निसि दामनि जिउ चमकि चँदाइणु देखै ॥ अहिनिसि
 जोति निरंतरि पेखै ॥ आनँद रूपु अनूपु सरुपा गुरि पूरै देखाइआ ॥ २ ॥ सतिगुर मिलहु आपे प्रभु तारे ॥ ससि
 घरि सूरु दीपकु गैणारे ॥ देखि अदिसटु रहहु लिव लागी सभु त्रिभवणि ब्रहमु सबाइआ ॥ ३ ॥ अँमित रसु पाए
 त्रिसना भउ जाए ॥ अनभउ पदु पावै आपु गवाए ॥ ऊची पदवी ऊचो ऊचा निरमल सबदु कमाइआ ॥ ४ ॥ अदिसट

अगोचरु नामु अपारा ॥ अति रसु मीठा नामु पिआरा ॥ नानक कउ जुगि जुगि हरि जसु दीजै हरि जपीऐ अंतु न
 पाइआ ॥ ५ ॥ अंतरि नामु परापति हीरा ॥ हरि जपते मनु मन ते धीरा ॥ दुघट घट भउ भँजनु पाईऐ बाहुडि जनमि न
 जाइआ ॥ ६ ॥ भगति हेति गुर सबदि तरंगा ॥ हरि जसु नामु पदारथु मंगा ॥ हरि भावै गुर मेलि मिलाए हरि तारे
 जगतु सबाइआ ॥ ७ ॥ जिनि जपु जपिओ सतिगुर मति वा के ॥ जम कँकर कालु सेवक पग ता के ॥ ऊतम संगति
 गति मिति ऊतम जगु भउजलु पारि तराइआ ॥ ८ ॥ इहु भवजलु जगतु सबदि गुर तरीऐ ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि
 जरीऐ ॥ पँच बाण ले जम कउ मारै गगनंतरि धणखु चड़ाइआ ॥ ९ ॥ साकत नरि सबद सुरति किउ पाईऐ ॥ सबद
 सुरति बिनु आईऐ जाईऐ ॥ नानक गुरमुखि मुकति पराइणु हरि पूरै भागि मिलाइआ ॥ १० ॥ निरभउ सतिगुरु है
 रखवाला ॥ भगति परापति गुर गोपाला ॥ धुनि अनंद अनाहदु वाजै गुर सबदि निरँजनु पाइआ ॥ ११ ॥ निरभउ सो
 सिरि नाही लेखा ॥ आपि अलेखु कुदरति है देखा ॥ आपि अतीतु अजोनी संभउ नानक गुरमति सो पाइआ ॥ १२ ॥
 अंतर की गति सतिगुरु जाणै ॥ सो निरभउ गुर सबदि पछाणै ॥ अंतरु देखि निरंतरि बूझै अनत न मनु डोलाइआ ॥
 १३ ॥ निरभउ सो अभ अंतरि वसिआ ॥ अहिनि सिसि नामि निरँजन रसिआ ॥ नानक हरि जसु संगति पाईऐ हरि सहजे
 सहजि मिलाइआ ॥ १४ ॥ अंतरि बाहरि सो प्रभु जाणै ॥ रहै अलिपतु चलते घरि आणै ॥ ऊपरि आदि सरब तिहु
 लोई सचु नानक अमित रसु पाइआ ॥ १५ ॥ ४ ॥ २१ ॥ मारु महला १ ॥ कुदरति करनैहार अपारा ॥ कीते का
 नाही किहु चारा ॥ जीअ उपाइ रिजकु दे आपे सिरि सिरि हुकमु चलाइआ ॥ १ ॥ हुकमु चलाइ रहिआ भरपूरे ॥ किसु
 नेडै किसु आखां दूरे ॥ गुपत प्रगट हरि घटि घटि देखहु वरतै ताकु सबाइआ ॥ २ ॥ जिस कउ मेले सुरति समाए ॥
 गुर सबदी हरि नामु धिआए ॥ आनद रूप अनूप अगोचर गुर मिलिऐ भरमु जाइआ ॥ ३ ॥ मन तन धन ते नामु

पिआरा ॥ अँति सखाई चलणहारा ॥ मोह पसार नही सँगि बेली बिनु हरि गुर किनि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ जिस कउ नदरि
 करे गुरु पूरा ॥ सबदि मिलाए गुरमति सूरा ॥ नानक गुर के चरन सेरेवहु जिनि भूला मारगि पाइआ ॥ ५ ॥ सँत जनां हरि
 धनु जसु पिआरा ॥ गुरमति पाइआ नामु तुमारा ॥ जाचिकु सेव करे दरि हरि कै हरि दरगह जसु गाइआ ॥ ६ ॥ सतिगुरु
 मिलै त महलि बुलाए ॥ साची दरगह गति पति पाए ॥ साकत ठउर नाही हरि मँदर जनम मरै दुखु पाइआ ॥ ७ ॥ सेवहु
 सतिगुर समुँदु अथाहा ॥ पावहु नामु रतनु धनु लाहा ॥ बिखिआ मलु जाइ अँम्रितसरि नावहु गुर सर सँतोखु पाइआ ॥ ८ ॥
 सतिगुर सेवहु सँक न कीजै ॥ आसा माहि निरासु रहीजै ॥ सँसा दूख बिनासनु सेवहु फिरि बाहुडि रोगु न लाइआ ॥ ९ ॥
 साचे भावै तिसु वडीआए ॥ कउनु सु दूजा तिसु समझाए ॥ हरि गुर मूरति एका वरतै नानक हरि गुर भाइआ ॥ १० ॥ वाचहि
 पुसतक वेद पुरानां ॥ इक बहि सुनहि सुनावहि कानां ॥ अजगर कपटु कहहु किउ खुलहै बिनु सतिगुर ततु न पाइआ ॥ ११
 ॥ करहि बिभूति लगावहि भसमै ॥ अँतरि क्रोधु चँडालु सु हउमै ॥ पाखँडु कीने जोगु न पाईए बिनु सतिगुर अलखु न पाइआ
 ॥ १२ ॥ तीरथ वरत नेम करहि उदिआना ॥ जतु सतु सँजमु कथहि गिआना ॥ राम नाम बिनु किउ सुखु पाईए बिनु
 सतिगुर भरमु न जाइआ ॥ १३ ॥ निउली करम भुइअँगम भाठी ॥ रेचक कुँभक पूरक मन हाठी ॥ पाखँड धरमु प्रीति नही
 हरि सउ गुर सबद महा रसु पाइआ ॥ १४ ॥ कुदरति देखि रहे मनु मानिआ ॥ गुर सबदी सभु ब्रहमु पछानिआ ॥ नानक
 आतमरामु सबाइआ गुर सतिगुर अलखु लखाइआ ॥ १५ ॥ ५ ॥ २२ ॥

मारु सोलहे महला ३ १९ सतिगुर प्रसादि ॥

हुकमी सहजे खिसटि उपाई ॥ करि करि वेखै अपणी वडिआई ॥ आपे करे कराए आपे हुकमे रहिआ समाई हे ॥ १ ॥ माइआ
 मोहु जगतु गुबारा ॥ गुरमुखि बूझै को वीचारा ॥ आपे नदरि करे

सो पाए आपे मेलिं मिली है ॥ २ ॥ आपे मेले दे वडि आई ॥ गुर परसादी कीमति पाई ॥ मनमुखि बहुतु फिरै बिललादी
 दूजै भाइ खुआई है ॥ ३ ॥ हउमै माइआ विचे पाई ॥ मनमुख भूले पति गवाई ॥ गुरमुखि होवै सो नाइ राचै साचै
 रहिआ समाई है ॥ ४ ॥ गुर ते गिआनु नाम रतनु पाइआ ॥ मनसा मारि मन माहि समाइआ ॥ आपे खेल करे सभिं
 करता आपे देइ बुझाई है ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवे आपु गवाए ॥ मिलि प्रीतम सबदि सुखु पाए ॥ अंतरि पिआरु भगती
 राता सहजिं मते बणिं आई है ॥ ६ ॥ दूख निवारणु गुर ते जाता ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ जिस नो लाए
 सोई बूझै भउ भरमु सरीरहु जाई है ॥ ७ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै ॥ सचै सबदि सतिगुरु सेवै ॥ जरा जमु तिसु जोहि
 न साकै साचे सिउ बणिं आई है ॥ ८ ॥ त्रिसना अगनि जलै संसारा ॥ जलिं जलिं खपै बहुतु विकारा ॥ मनमुखु ठउर
 न पाए कबहू सतिगुर बूझ बुझाई है ॥ ९ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ साचै नामि सदा लिव लागी ॥ अंतरि नामु
 रविआ निहकेवलु त्रिसना सबदि बुझाई है ॥ १० ॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ॥ सचै
 सबदि रते बैरागी आवणु जाणु रहाई है ॥ ११ ॥ सबदु बूझै सो मैलु चुकाए ॥ निरमल नामु वसै मनि आए ॥ सतिगुरु
 अपना सदा ही सेवहि हउमै विचहु जाई है ॥ १२ ॥ गुर ते बूझै ता दरु सूझै ॥ नाम विहूणा कथि कथि लूझै ॥ सतिगुरु
 सेवे की वडिआई त्रिसना भूख गवाई है ॥ १३ ॥ आपे आपि मिलै ता बूझै ॥ गिआन विहूणा किछू न सूझै ॥ गुर की
 दाति सदा मन अंतरि बाणी सबदि वजाई है ॥ १४ ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ कोइ न मेटै धुरि फुरमाइआ
 ॥ सतसंगति महि तिन ही वासा जिन कउ धुरि लिखि पाई है ॥ १५ ॥ अपना नदरि करे सो पाए ॥ सचै सबदि ताडी
 चितु लाए ॥ नानक दासु कहै बेनंती भीखिआ नामु दरि पाई है ॥ १६ ॥ १ ॥ मारु महला ३ ॥ एको एकु वरतै सभु
 सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ एक रवि रहिआ सभ अंतरि तिसु बिनु अवरु न कोई है ॥ १ ॥ लख चउरासीह

जीअ उपाए ॥ गिआनी धिआनी आखि सुणाए ॥ सभना रिजकु समाहे आपे कीमति होर न होई हे ॥ २ ॥ माइआ मोहु
 अँधु अँधारा ॥ हउमै मेरा परसिआ पासारा ॥ अनदिनु जलत रहै दिनु राती गुर बिनु सांति न होई हे ॥ ३ ॥ आपे जोड़ि
 विछोड़े आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ सचा हुकमु सचा पासारा होरनि हुकमु न होई हे ॥ ४ ॥ आपे लाइ लए सो लागै
 ॥ गुर परसादी जम का भउ भागै ॥ अँतरि सबदु सदा सुखदाता गुरमुखि बूझै कोई हे ॥ ५ ॥ आपे मेले मेलि मिलिए ॥
 पुरबि लिखिआ सो मेटणा न जाए ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती गुरमुखि सेवा होई हे ॥ ६ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु
 जाता ॥ आपे आइ मिलिआ सभना का दाता ॥ हउमै मारि त्रिसना अगनि निवारी सबदु चीनि सुखु होई हे ॥ ७ ॥
 काइआ कुटँबु मोहु न बूझै ॥ गुरमुखि होवै त आखी सूझै ॥ अनदिनु नामु रवै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु होई हे ॥ ८ ॥
 मनमुख धातु दूजै है लागे ॥ जनमत की न मूओ आभागा ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ बिनु गुर मुकति न होई हे
 ॥ ९ ॥ काइआ कुसुध हउमै मलु लाई ॥ जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ॥ सबदि धोपै ता हछी होवै फिरि मैली मूलि न होई
 हे ॥ १० ॥ पँच दूत काइआ सँघारहि ॥ मरि मरि जँमहि सबदु न वीचारहि ॥ अँतरि माइआ मोह गुबारा जिउ सुपनै सुधि
 न होई हे ॥ ११ ॥ इकि पँचा मारि सबदि है लागे ॥ सतिगुरु आइ मिलिआ वडभागे ॥ अँतरि साचु रवहि रँगि राते सहजि
 समावै सोई हे ॥ १२ ॥ गुर की चाल गुरु ते जापै ॥ पूरा सेवकु सबदि सिजापै ॥ सदा सबदु रवै घट अँतरि रसना रसु
 चाखै सचु सोई हे ॥ १३ ॥ हउमै मारे सबदि निवारे ॥ हरि का नामु रवै उरि धारे ॥ एकसु बिनु हउ होरु न जाणा सहजे
 होइ सु होई हे ॥ १४ ॥ बिनु सतिगुर सहजु किनै नही पाइआ ॥ गुरमुखि बूझै सचि समाइआ ॥ सचा सेवि सबदि सच
 राते हउमै सबदे खोई हे ॥ १५ ॥ आपे गुणदाता बीचारी ॥ गुरमुखि देवहि पकी सारी ॥ नानक नामि समावहि साचै साचे
 त पति होई हे ॥ १६ ॥ २ ॥ मारु महला ३ ॥ जगजीवनु साचा एको दाता ॥ गुर सेवा ते सबदि पछाता ॥ एको

अमरु एका पतिसाही जुगु जुगु सिरि कार बणाई हे ॥ १ ॥ सो जनु निरमलु जिनि आपु पछाता ॥ आपे आइ मिलिआ
 सुखदाता ॥ रसना सबदि रती गुण गावै दरि साचै पति पाई हे ॥ २ ॥ गुरुमुखि नामि मिलै वडिआई ॥ मनमुखि
 निँदकि पति गवाई ॥ नामि रते परम हँस बैरागी निज घरि ताडी लाई हे ॥ ३ ॥ सबदि मरै सोई जनु पूरा ॥ सतिगुरु
 आखि सुणाए सूरा ॥ काइआ अँदरि अँम्रित सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे ॥ ४ ॥ पडि पँडितु अवरा समझाए ॥
 घर जलते की खबरि न पाए ॥ बिनु सतिगुरु सेवे नामु न पाईरे पडि थाके सांति न आई हे ॥ ५ ॥ इकि भस्म लगाइ
 फिरहि भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनि मारी ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती भरमि भेखि भरमाई हे ॥ ६ ॥ इकि
 ग्रिह कुटँब महि सदा उदासी ॥ सबदि मुए हरि नामि निवासी ॥ अनदिनु सदा रहहि रँगी राते भै भाइ भगति चितु लाई हे
 ॥ ७ ॥ मनमुखु निँदा करि करि विगुता ॥ अँतरि लोभु भउकै जिस्सु कुता ॥ जमकालु तिसु कदे न छोडै अँति गइआ
 पछिताई हे ॥ ८ ॥ सचै सबदि सची पति होई ॥ बिनु नावै मुकति न पावै कोई ॥ बिनु सतिगुरु को नाउ न पाए प्रभि
 ऐसी बणत बणाई हे ॥ ९ ॥ इकि सिध साधिक बहुतु वीचारी ॥ इकि अहिनिशि नामि रते निरँकारी ॥ जिस नो आपि
 मिलाए सो बूझै भगति भाइ भउ जाई हे ॥ १० ॥ इसनानु दानु करहि नही बूझहि ॥ इकि मनूआ मारि मनै सिउ लूझहि
 ॥ साचै सबदि रते इक रँगी साचै सबदि मिली हे ॥ ११ ॥ आपे सिरजे दे वडिआई ॥ आपे भाणै देइ मिली हे ॥ आपे
 नदरि करे मनि वसिआ मरै प्रभि इउ फुरमाई हे ॥ १२ ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ मनमुख सेवि न जाणनि काचे
 ॥ आपे करता करि करि वेखै जिउ भावै तिउ लाई हे ॥ १३ ॥ जुगि जुगि साचा एको दाता ॥ पूरै भागि गुरु सबदु
 पछाता ॥ सबदि मिले से विछुडे नाही नदरी सहजि मिली हे ॥ १४ ॥ हउमै माइआ मैलु कमाइआ ॥ मरि मरि जँमहि
 दूजा भाइआ ॥ बिनु सतिगुरु सेवे मकति न होई मनि देखहु लिव लाई हे ॥ १५ ॥ जो तिसु भावै सोई करसी ॥ आपहु

होआ ना किछु होसी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई दरि साचै पति पाई हे ॥ १६ ॥ ३ ॥ मारु महला ३ ॥ जो आइआ सो
 सभु को जासी ॥ दूजै भाइ बाधा जम फासी ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे साचे साचि समाई हे ॥ १ ॥ आपे करता करि
 करि वेखै ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ गुरमुखि गिआनु तिसु सभु किछु सूझै अगिआनी अँधु कमाई हे ॥ २ ॥
 मनमुख सहसा बूझ न पाई ॥ मरि मरि जँमै जनमु गवाई ॥ गुरमुखि नामि रते सुखु पाइआ सहजे साचि समाई हे ॥ ३ ॥
 धँधै धावत मनु भइआ मनूरा ॥ फिरि होवै कँचनु भेटै गुरु पूरा ॥ आपे बखसि लए सुखु पाए पूरै सबदि मिलाई हे ॥ ४ ॥
 दुरमति झूठी बुरी बिरिआरि ॥ अउगणिआरी अउगणिआरि ॥ कची मति फीका मुखि बोलै दुरमति नामु न पाई हे ॥ ५ ॥
 अउगुणिआरी कँत न भावै ॥ मन की जूठी जूठु कमावै ॥ पिर का साउ न जाणै मूरखि बिनु गुर बूझ न पाई हे ॥ ६ ॥
 दुरमति खोटी खोटु कमावै ॥ सीगारु करे पिर खसम न भावै ॥ गुणवँती सदा पिरु रावै सतिगुर मेलि मिलाई हे ॥ ७ ॥
 आपे हुकमु करे सभ वेखै ॥ इकना बखसि लए धुरि लेखै ॥ अनदिनु नामि रते सचु पाइआ आपे मेलि मिलाई हे ॥ ८ ॥
 हउमै धातु मोह रसि लाई ॥ गुरमुखि लिव साची सहजि समाई ॥ आपे मेलै आपे करि वेखै बिनु सतिगुर बूझ न पाई हे ॥ ९ ॥
 ॥ इकि सबदु वीचारि सदा जन जागे ॥ इकि माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ आपे करे कराए आपे होरु करणा किछु न
 जाई हे ॥ १० ॥ कालु मारि गुर सबदि निवारे ॥ हरि का नामु रखै उर धारे ॥ सतिगुर सेवा ते सुखु पाइआ हरि कै नामि
 समाई हे ॥ ११ ॥ दुजै भाइ फिरै देवानी ॥ माइआ मोहि दुख माहि समानी ॥ बहुते भेख करै नह पाए बिनु सतिगुर सुखु
 न पाई हे ॥ १२ ॥ किस नो कहीए जा आपि कराए ॥ जितु भावै तितु राहि चलाए ॥ आपे मिहरवानु सुखदाता जिउ भावै
 तिवै चलाई हे ॥ १३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ आपे सँजमु आपे जुगता ॥ आपे निरमलु मिहरवानु मधुसूदनु जिस
 दा हुकमु न मेटिआ जाई हे ॥ १४ ॥ से वडभागी जिनी एको जाता ॥ घटि घटि वसि रहिआ जगजीवनु दाता ॥ इक थै

गुपतु परगटु है आपे गुरुमुखि भ्रमु भउ जाई हे ॥ १५ ॥ गुरुमुखि हरि जीउ एको जाता ॥ अंतरि नामु सबदि पछाता ॥ जिसु
 तूदेहि सोई जनु पाए नानक नामि वडाई हे ॥ १६ ॥ ४ ॥ मारु महला ३ ॥ सचु सालाही गहिर गंभीरै ॥ सभु जगु है तिस
 ही कै चीरै ॥ सभिं घट भोगवै सदा दिनु राती आपे सूख निवासी हे ॥ १ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुरु परसादी मँनि
 वसाई ॥ आपे आइ वसिआ घट अंतरि तूटी जम की फासी हे ॥ २ ॥ किसु सेवी तै किसु सालाही ॥ सतिगुरु सेवी सबदि
 सालाही ॥ सचै सबदि सदा मति ऊतम अंतरि कमलु प्रगासी हे ॥ ३ ॥ देही काची कागद मिकदारा ॥ बूँद पवै बिनसै ढहत
 न लागै बारा ॥ कँचन काइआ गुरुमुखि बूझै जिसु अंतरि नामु निवासी हे ॥ ४ ॥ सचा चउका सुरति की कारा ॥ हरि नामु
 भोजनु सचु आधार ॥ सदा त्रिपति पवित्रु है पावनु जितु घटि हरि नामु निवासी हे ॥ ५ ॥ हउ तिन बलिहारी जो साचै लागे
 ॥ हरि गुण गाचहि अनदिनु जागे ॥ साचा सूखु सदा तिन अंतरि रसना हरि रसि रासी हे ॥ ६ ॥ हरि नामु चेता अवरु न
 पूजा ॥ एको सेवी अवरु न दूजा ॥ पूरै गुरि सभु सचु दिखाइआ चै नामि निवासी हे ॥ ७ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनी फिरि फिरि
 आइआ ॥ आपि भूला जा खसमि भुलाइआ ॥ हरि जीउ मिलै ता गुरुमुखि बूझै चीनै सबदु अबिनासी हे ॥ ८ ॥ कामि
 क्रोधि भरे हम अपराधी ॥ किआ मुहु लै बोलह ना हम गुण न सेवा साधी ॥ डुबदे पाथर मेलिं लैहु तुम आपे साचु नामु
 अबिनासी हे ॥ ९ ॥ ना कोई करे न करणै जोगा ॥ आपे करहि करावहि स होइगा ॥ आपे बखसि लैहि सुखु पाए सद ही
 नामि निवासी हे ॥ १० ॥ इहु तनु धरती सबदु बीजि अपारा ॥ हरि साचे सेती वणजु वापारा ॥ सचु धनु जँमिआ तोटि न
 आवै अंतरि नामु निवासी हे ॥ ११ ॥ हरि जीउ अवगणिआरे नो गुणु कीजै ॥ आपे बखसि लैहि नामु दीजै ॥ गुरुमुखि होवै
 सो पति पाए इकतु नामि निवासी हे ॥ १२ ॥ अंतरि हरि धनु समझ न होई ॥ गुरु परसादी बूझै कोई ॥ गुरुमुखि होवै सो
 धनु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥ १३ ॥ अनल वाउ भरमि भुलाई ॥ माइआ मोहि सुधि न काई ॥ मनमुख अँधे किछू

न सूझै गुरमति नामु प्रगासी हे ॥ १४ ॥ मनमुख हउमै माइआ सूते ॥ अपणा घरु न समलाहि अँति विगूते ॥ पर निँदा
 करहि बहु चिँता जालै दुखे दुखि निवासी हे ॥ १५ ॥ आपे करतै कार कराई ॥ आपे गुरमुखि देइ बुझाई ॥ नानक नामि
 रते मनु निरमलु नामे नामि निवासी हे ॥ १६ ॥ ५ ॥ मारु महला ३ ॥ एको सेवी सदा थिरु साचा ॥ दूजै लागा सभु
 जगु काचा ॥ गुरमती सदा सचु सालाही साचे ही साचि पतीजै हे ॥ १ ॥ तेरे गुण बहुते मै एकु न जाता ॥ आपे लाइ लए
 जगजीवनु दाता ॥ आपे बखसे दे वडिआई गुरमति इहु मनु भीजै हे ॥ २ ॥ माइआ लहरि सबदि निवारी ॥ इहु मनु
 निरमलु हउमै मारी ॥ सहजे गुण गावै रँगि राता रसना रामु रवीजै हे ॥ ३ ॥ मेरी मेरी करत विहाणी ॥ मनमुखि न बूझै
 फिरै इआणी ॥ जमकालु घड़ी मुहतु निहाले अनदिनु आरजा छीजै हे ॥ ४ ॥ अँतरि लोभु करै नही बूझै ॥ सिर ऊपरि
 जमकालु न सूझै ॥ ऐथै कमाणु सु अगै आइआ अँत कालि क्किया कीजै हे ॥ ५ ॥ जो सचि लागे तिन साची सोइ ॥
 दूजै लागे मनमुखि रोइ ॥ दुहा सिरिआ का खसमु है आपे आपे गुण महि भीजै हे ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि सदा जनु सोहै ॥
 नाम रसाइणि इहु मनु मोहै ॥ माइआ मोह मैलु पतँगु न लागै गुरमती हरि नामि भीजै हे ॥ ७ ॥ सभना विचि वरतै इकु
 सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइआ नाइ साचै अँप्रितु पीजै हे ॥ ८ ॥ किलबिख दूख
 निवारणहारा ॥ गुरमुखि सेविआ सबदि वीचारा ॥ सभु किछु आपे आपि वरतै गुरमुखि तनु मनु भीजै हे ॥ ९ ॥ माइआ
 अगनि जलै संसारे ॥ गुरमुखि निवारै सबदि वीचारे ॥ अँतरि सांति सदा सुखु पाइआ गुरमती नामु लीजै हे ॥ १० ॥
 इंद्र इंद्रासणि बैठे जम का भउ पावहि ॥ जमु न छोडै बहु करम कमावहि ॥ सतिगुरु भेटै ता मुकति पाईए हरि हरि रसना
 पीजै हे ॥ ११ ॥ मनमुखि अँतरि भगति न होई ॥ गुरमुखि भगति सांति सुखु होई ॥ पवित्र पावन सदा हे बाणी गुरमति
 अँतरु भीजै हे ॥ १२ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु वीचारी ॥ त्रै गुण बधक मुकति निरारी ॥ गुरमुखि गिआनु एको है जाता

अनदिनु नाम् रवीजै हे ॥ १३ ॥ बेद पड़हि हरि नामु न बूझहि ॥ माइआ कारणे पड़ि पड़ि लूझहि ॥ अंतरि मैलु अगिआनी
 अंधा किउ करि दुतरु तरीजै हे ॥ १४ ॥ बेद बाद सभि आखि वखाणहि ॥ न अंतरु भीजै न सबदु पछाणहि ॥ पुंनु पापु
 सभु बेदि दिडाइआ गुरमुखि अमितु पीजै हे ॥ १५ ॥ आपे साचा एको सोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक
 नामि रते मनु साचा सचो सचु रवीजै हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ मारु महला ३ ॥ सचै सचा तखतु रचाइआ ॥ निज घरि वसिआ
 तिथै मोहु न माइआ ॥ सद ही साच वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी सारी हे ॥ १ ॥ सचा सउदा सचु वापारा ॥ न तिथै
 भरमु न दूजा पसारा ॥ सचा धनु खटिआ कदे तोटि न आवै बूझै को वीचारी हे ॥ २ ॥ सचै लाए से जन लागे ॥ अंतरि
 सबदु मसतकि वडभागे ॥ सचै सबदि सदा गुण गावहि सबदि रते वीचारी हे ॥ ३ ॥ सचो सचा सचु सालाही ॥ एको वेखा
 दूजा नाही ॥ गुरमति ऊचो ऊची पउडी गिआनि रतनि हउमै मारी हे ॥ ४ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ सचु मनि
 वसिआ जा तुधु भाइआ ॥ सचे की सभ सची करणी हउमै तिखा निवारी हे ॥ ५ ॥ माइआ मोहु सभु आपे कीना ॥
 गुरमुखि विरलै किनही चीना ॥ गुरमुखि होवै सु सचु कमावै साची करणी सारी हे ॥ ६ ॥ कार कमाई जो मेरे प्रभ भाई ॥
 हउमै तिसना सबदि बुझाई ॥ गुरमति सद ही अंतरु सीतलु हउमै मारि निवारी हे ॥ ७ ॥ सचि लगे तिन सभु किछु भावै ॥
 सचै सबदे सचि सुहावै ॥ ऐथै साचे से दरि साचे नदरी नदरि सवारी हे ॥ ८ ॥ बिनु साचे जो दूजै लाइआ ॥ माइआ मोह
 दुख सबाइआ ॥ बिनु गुर दुखु सुखु जापै नाही माइआ मोह दुखु भारी हे ॥ ९ ॥ साचा सबदु जिना मनि भाइआ ॥ पूरबि
 लिखिआ तिनी कमाइआ ॥ सचो सेवहि सचि धिआवहि सचि रते वीचारी हे ॥ १० ॥ गुर की सेवा मीठी लागी ॥ अनदिनु
 सूख सहज समाधी ॥ हरि हरि करतिआ मनु निरमलु होआ गुर की सेव पिआरी हे ॥ ११ ॥ से जन सुखीए सतिगुरि सचे
 लाए ॥ आपे भाणे आपि मिलाए ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे होर माइआ मोह खुआरी हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि

साचा सबदि पछाता ॥ ना तिसु कुटंबु ना तिसु माता ॥ एको एकु रविआ सभ अंतरि सभना जीआ का आधारी हे ॥ १३ ॥
 हउमै मेरा दूजा भाइआ ॥ किछु न चलै धुरि खसमि लिखि पाइआ ॥ गुर साचे ते साचु कमावहि साचै दूख निवारी हे ॥ १४
 ॥ जा तू देहि सदा सुखु पाए ॥ साचै सबदै साचु कमाए ॥ अंदरु साचा मनु तनु साचा भगति भरे भंडारी हे ॥ १५ ॥ आपे
 वेखै हुकमि चलाए ॥ अपणा भाणा आपि कराए ॥ नानक नामि रते बैरागी मनु तनु रसना नामि सवारी हे ॥ १६ ॥ ७ ॥
 मारू महला ३ ॥ आपे आपु उपाइ उपाँना ॥ सभ महि वरतै एकु परछँना ॥ सभना सार करे जगजीवनु जिनि अपणा आपु
 पछाता हे ॥ १ ॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए ॥ सिरि सिरि धँधै आपे लाए ॥ जिसु भावै तिसु आपे मेले जिनि गुरमुखि
 एको जाता हे ॥ २ ॥ आवा गउणु है संसारा ॥ माइआ मोहु बहु चितै बिकारा ॥ थिरु साचा सालाही सद ही जिनि गुर का
 सबदु पछाता हे ॥ ३ ॥ इकि मूलि लगे ओनी सुखु पाइआ ॥ डाली लागे तिनी जनमु गवाइआ ॥ अँमित फल तिन जन कउ
 लागे जो बोलहि अँमित बाता हे ॥ ४ ॥ हम गुण नाही किआ बोलह बोल ॥ तू सभना देखहि तोलहि तोल ॥ जिउ भावै तिउ
 राखहि रहणा गुरमुखि एको जाता हे ॥ ५ ॥ जा तुधु भाणा ता सची करै लाए ॥ अवगण छोडि गुण माहि समाए ॥ गुण
 महि एको निरमलु साचा गुर कै सबदि पछाता हे ॥ ६ ॥ जह देखा तह एको सोई ॥ दूजी दुर्मति सबदे खोई ॥ एकसु महि
 प्रभु एकु समाणा अपणै रँगि सद राता हे ॥ ७ ॥ काइआ कमलु है कुमलाणा ॥ मनमुखु सबदु न बुझै इआणा ॥ गुर परसादी
 काइआ खोजे पाए जगजीवनु दाता हे ॥ ८ ॥ कोट गही के पाप निवारे ॥ सदा हरि जीउ राखै उर धारे ॥ जो इछै सोई फलु
 पाए जिउ पाए जिउ रँगु मजीठै राता हे ॥ ९ ॥ मनमुखु गिआनु कथे न होई ॥ फिरि फिरि आवै ठउर न कोई ॥ गुरमुखि
 गिआनु सदा सालाहे जुगि जुगि एको जाता हे ॥ १० ॥ मनमुखु कार करे सभि दुख सबाए ॥ अंतरि सबदु नाही किउ दरि
 जाए ॥ गुरमुखि सबदु वसै मनि साचा सद सेवे सुखदाता हे ॥ ११ ॥ जह देखा तू सभनी थाई ॥ पूरै गुरि सभ सोझी

पाई ॥ नामो नामु धिआईए सदा सद इहु मनु नामे राता हे ॥ १२ ॥ नामे राता पवितु सरीरा ॥ बिनु नावै डूबि मुए बिनु नीरा
 ॥ आवहि जावहि नामु नही बूझहि इकना गुरमुखि सबदु पछाता हे ॥ १३ ॥ पूरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ विणु नावै मुकति
 किनै न पाई ॥ नामे नामि मिलै वडिआई सहजि रहै रँगि राता हे ॥ १४ ॥ काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी ॥ बिनु सबदै चूकै
 नही फेरी ॥ साचु सलाहे साचि समावै जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥ १५ ॥ जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ साचा सबदु वसै
 मनि आए ॥ नानक नामि रते निरँकारी दरि साचै साचु पछाता हे ॥ १६ ॥ ८ ॥ मारु सोलहे ३ ॥ आपे करता सभु जिसु
 करणा ॥ जीअ जँत सभि तेरी सरणा ॥ आपे गुपतु वरतै सभ अँतरि गुर कै सबदि पछाता हे ॥ १ ॥ हरि के भगति भरे
 भँडारा ॥ आपे बखसे सबदि वीचारा ॥ जो तुधु भावै सोई करसहि सचे सिउ मनु राता हे ॥ २ ॥ आपे हीरा रतनु अमोलो ॥
 आपे नदरी तोले तोलो ॥ जीअ जँत सभि सरणि तुमारी करि किरपा आपि पछाता हे ॥ ३ ॥ जिस नो नदरि होवै धुरि तेरी ॥
 मरै न जँमै चूकै फेरी ॥ साचे गुण गावै दिनु राती जुगि जुगि एको जाता हे ॥ ४ ॥ माइआ मोहि सभु जगतु उपाइआ ॥
 ब्रहमा बिसनु देव सबाइआ ॥ जो तुधु भाणे से नामि लागे गिआन मती पछाता हे ॥ ५ ॥ पाप पुँन वरतै संसारा ॥ हरखु
 सोगु सभु दुखु है भारा ॥ गुरमुखि होवै सो सुखु पाए जिनि गुरमुखि नामु पछाता हे ॥ ६ ॥ किरतु न कोई मेटणहारा ॥ गुर
 कै सबदे मोख दुआरा ॥ पूरबि लिखिआ सो फलु पाइआ जिनि आपु मारि पछाता हे ॥ ७ ॥ माइआ मोहि हरि सिउ चितु न
 लागै ॥ दूजै भाइ घणा दुखु आगै ॥ मनमुख भरमि भुले भेखधारी अँत कालि पभुताता हे ॥ ८ ॥ हरि कै भाणै हरि गुण गाए
 ॥ सभि किलबिख काटे दूख सबाए ॥ हरि निरमलु निरमलु है बाणी हरि सेती मनु राता हे ॥ ९ ॥ जिस नो नदरि करे सो गुण
 निधि पाए ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाए ॥ गुण अवगण का एको दाता गुरमुखि विरली जाता हे ॥ १० ॥ मेरा प्रभु निरमलु अति
 अपारा ॥ आपे मेलै गुर सबदि वीचारा ॥ आपे बखसे सचु दिइए मनु तनु साचै राता हे ॥ ११ ॥ मनु तनु मैला विचि जोति

अपारा ॥ गुरमति बूझै करि वीचारा ॥ हउमै मारि सदा मनु निरमलु रसना सेवि सुखदाता हे ॥ १२ ॥ गड़ काइआ अँदरि
 बहु हट बाजारा ॥ तिसु विचि नामु है अति अपारा ॥ गुर कै सबदि सदा दरि सोहै हउमै मारि पछाता हे ॥ १३ ॥ रतनु
 अमोलकु अगम अपारा ॥ कीमति कवणु करे वेचारा ॥ गुर कै सबदे तोलि तोलाए अँतरि सबदि पछाता हे ॥ १४ ॥ सिम्रिति
 सासत्र बहुतु बिसथारा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ मूरख पड़हि सबदु न बूझहि गुरमुखि विरलै जाता हे ॥ १५ ॥
 आपे करता करे कराए ॥ सची बाणी सचु द्विड़ाए ॥ नानक नामु मिलै वसिआई जुगि जुगि एको जाता हे ॥ १६ ॥ ९ ॥
 मारु महला ३ ॥ सो सचु सेविहु सिरजणहारा ॥ सबदे दूख निवारणहारा ॥ अगमु अगोचरु कीमति नही पाई आपे अगम
 अथाहा हे ॥ १ ॥ आपे सचा सचु वरताए ॥ इकि जन साचै आपे लाए ॥ साचो सेवहि साचु कमावहि नामे सचि समाहा हे
 ॥ २ ॥ धुरि भगता मेले आपि मिलाए ॥ सची भगती आपे लाए ॥ साची बाणी सदा गुण गावै इसु जनमै का लाहा हे ॥ ३
 ॥ गुरमुखि वणजु करहि परु आपु पछाणहि ॥ एकस बिनु को अवरु न जाणहि ॥ सचा साहु सचे वणजारे पूँजी नामु
 विसाहा हे ॥ ४ ॥ आपे साजे खिसटि उपाए ॥ विरले कउ गुर सबदु बुझाए ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे काटे कम का
 फाहा हे ॥ ५ ॥ भँनै घड़े सवारे साजे ॥ माइआ मोहि दूजै जँत पाजे ॥ मनमुख फिरहि सदा अँधु कमावहि जम का जेवड़ा
 गलि फाहा हे ॥ ६ ॥ आपे बखसे गुर सेवा लाए ॥ गुरमती नामु मँनि वसाए ॥ अनदिनु नामु धिआए साचा इसु जग महि
 नामो लाहा हे ॥ ७ ॥ आपे सचा सची सची नाई ॥ गुरमुखि देवै मँनि वसाई ॥ जिन मनि वसिआ से जन सोहहि तिन सिरि
 चूका काहा हे ॥ ८ ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ गुर परसादी मँनि वसाई ॥ सदा सबदि सालाही गुणदाता लेखा
 कोइ न मँगै ताहा हे ॥ ९ ॥ ब्रहमा बिसनु रुद्रु तिस की सेवा ॥ अँतु न पावहि अलख अभेवा ॥ जिन कउ नदरि करहि तू
 अपणी गुरमुखि अलखु लखाहा हे ॥ १० ॥ पूरै सतिगुरि सोझी पाई ॥ एको नामु मँनि वसाई ॥ नामु जपी तै नामु धिआई

महलु पाइ गुण गाहा हे ॥ ११ ॥ सेवक सेवहि मँनि हुकमु अपारा ॥ मनमुख हुकम न जाणहि सारा ॥ हुकमे मँने हुकमे
 वडिआई हुकमे वेपरवाहा हे ॥ १२ ॥ गुर परसादी हुकमु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ नामे राता सदा बैरागी
 नामु रतनु मनि ताहा हे ॥ १३ ॥ सभ जग महि वरतै एको सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सबदु सलाहहि से जन
 निरमल निज घरि वासा ताहा हे ॥ १४ ॥ सदा भगत तेरी सरणाई ॥ अगम अगोचर कीमति नही पाई ॥ जिउ तुधु भावहि
 तिउ तू राखहि गुरमुखि नामु धिआहा हे ॥ १५ ॥ सदा सदा तेरे गुण गावा ॥ सचे साहिब तेरै मनि भावा ॥ नानकु साचु
 कहै बेनँती सचु देवहु सचु समाहा हे ॥ १६ ॥ १ ॥ १० ॥ मारु महला ३ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ अनदिनु
 साचि नामि लिवा लागी ॥ सदा सुखदाता रविआ घट अंतरि सबदि सचै ओमाहा हे ॥ १ ॥ नदरि करे ता गुरु मिलाए ॥
 हरि का नामु मँनि वसाए ॥ हरि मनि वसिआ सदा सुखदाता सबदे मनि ओमाहा हे ॥ २ ॥ क्रिपा करै ता मेलि मिलाए ॥
 हउमै ममता सबदि जलाए ॥ सदा मुक्तु रहै इक रँगी नाही किसै नालि काहा हे ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे घोर अंधारा ॥
 बिनु सबदै कोइ न पावै पारा ॥ जो सबदि राते महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा हे ॥ ४ ॥ दुखु सुखु करतै धुरि लिखि
 पाइआ ॥ दूजा भाउ आपि वरताइआ ॥ गुरमुखि होवै सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा हे ॥ ५ ॥ से मनमुख
 जो सबदु न पछाणहि ॥ गुर के भै की सार न जाणहि ॥ भै बिनु किउ निरभउ सचु पाईऐ जमु काढि लगगा साहा हे ॥ ६ ॥
 अफरिओ जमु मारिआ न जाई ॥ गुर कै सबदे नेडि न आई ॥ सबदु सुणे ता दूरहु भागै मतु मारे हरि जीउ वेपरवाहा हे ॥ ७
 ॥ हरि जीउ की है सभ सिरकारा ॥ एहु जमु किआ करे विचारा ॥ हुकमी बँदा हुकमु कमावै हुकमे कढता साहा हे ॥ ८ ॥
 गुरमुखि साचै कीआ अकारा ॥ गुरमुखि पसरिआ सभु पासारा ॥ गुरमुखि होवै सो सचु बूझै सबदि सचै सुखु ताहा हे ॥ ९
 ॥ गुरमुखि जाता करमि बिधाता ॥ जुग चारे गुर सबदि पछाता ॥ गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि गुरमुखि सबदि

समाहा हे ॥ १० ॥ गुरुमुखिं नामिं सबदिं सालाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ एक नामिं जुग चारि उधारे सबदे नाम
विसाहा हे ॥ ११ ॥ गुरुमुखिं सांति सदा सुखु पाए ॥ गुरुमुखिं हिरदै नामु वसाए ॥ गुरुमुखिं होवै सो नामु बूझै काटे
दुस्मति फाहा हे ॥ १२ ॥ गुरुमुखिं उपजै साचि समावै ॥ ना मरिं जँमै न जूनी पावै ॥ गुरुमुखिं सदा रहहि रँगि राते
अनदिनु लैदे लाहा हे ॥ १३ ॥ गुरुमुखिं भगत सोहहिं दरबारे ॥ सची बाणी सबदिं सवारे ॥ अनदिनु गुण गावै दिनु राती
सहज सेती घरिं जाहा हे ॥ १४ ॥ सतिगुरु पूरा सबदु सुणाए ॥ अनदिनु भगति करहु लिव लाए ॥ हरि गुण गावहिं सद
ही निरमल निरमल गुण पातिसाहा हे ॥ १५ ॥ गुण का दाता सचा सोई ॥ गुरुमुखिं विरला बूझै कोई ॥ नानक जनु नामु
सलाहे बिगसै सो नामु बेपरवाहा हे ॥ १६ ॥ २ ॥ ११ ॥ मारु महला ३ ॥ हरि जीउ सेविहु अगम अपारा ॥ तिस दा
अँतु न पाईए पारावारा ॥ गुरु परसादि रविआ घट अँतरिं तितु घटि मति अगाहा हे ॥ १ ॥ सभ महि वरतै एको सोई ॥ गुरु
परसादी परगटु होई ॥ सभना प्रतिपाल करे जगजीवनु देदा रिजकु सँबाहा हे ॥ २ ॥ पूरै सतिगुरिं बूझिं बुझाइआ ॥ हुकमे
ही सभु जगतु उपाइआ ॥ हुकमु मँने सोई सुखु पाए हुकमु सिरिं साहा पातिसाहा हे ॥ ३ ॥ सचा सतिगुरु सबदु अपारा ॥
तिसु दै सबदिं निसतरै सँसारा ॥ आपे करता करिं करिं वेखै देदा सास गिराहा हे ॥ ४ ॥ कोटि मधे किसहिं बुझाए ॥ गुरु
कै सबदिं रते रँगु लाए ॥ हरि सालाहहिं सदा सुखदाता हरि बखसे भगति सलाहा हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवहिं से जन साचे
॥ जो मरिं जँमहिं काच निकाचे ॥ अगम अगोचरु वेपरवाहा भगति वछलु अथाहा हे ॥ ६ ॥ सतिगुरु पूरा साचु द्विड़ाए
॥ सचै सबदिं सदा गुण गाए ॥ गुणदाता वरतै सभ अँतरिं सिरिं सिरिं लिखदा साहा हे ॥ ७ ॥ सदा हदूरिं गुरुमुखिं जापै
॥ सबदे सेवै सो जनु ध्रापै ॥ अनदिनु सेवहिं सची बाणी सबदिं सचै ओनाहा हे ॥ ८ ॥ अगिआनी अँधा बहु करम द्विड़ाए
॥ मनहठिं करम फिरिं जोनी पाए ॥ बिखिंआ कारणे लबु लोभु कमावहिं दुस्मति का दोराहा हे ॥ ९ ॥ पूरा

सतिगुरु भगति दिडाए ॥ गुर कै सबदि हरि नामि चितु लाए ॥ मनि तनि हरि रविआ घट अंतरि मनि भीनै भगति सलाहा
 हे ॥ १० ॥ मेरा प्रभु साचा असुर संघारणु ॥ गुर कै सबदि भगति निसतारणु ॥ मेरा प्रभु साचा सदु ही साचा सिरि साहा
 पातिसाहा हे ॥ ११ ॥ से भगत सचे तेरै मनि भाए ॥ दरि कीरतनु करहि गुर सबदि सुहाए ॥ साची बाणी अनदिनु
 गावहि निरधन का नामु वेसाहा हे ॥ १२ ॥ जिन आपे मेलि विछोड़हि नाही ॥ गुर कै सबदि सदा सालाही ॥ सभना
 सिरि तू एको साहिबु सबदे नामु सलाहा हे ॥ १३ ॥ बिनु सबदै तुधु नो कोई न जाणी ॥ तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ॥
 आपे सबदु सदा गुरु दाता हरि नामु जपि संबाहा हे ॥ १४ ॥ तू आपे करता सिरजणहारा ॥ तेरा लिखिआ कोइ न
 मेटणहारा ॥ गुरमुखि नामु देवहि तू आपे सहसा गणत न ताहा हे ॥ १५ ॥ भगत सचे तेरै दरवारे ॥ सबदे सेवनि भाइ
 पिआरे ॥ नानक नामि रते बैरागी नामे कारजु सोहा हे ॥ १६ ॥ ३ ॥ १२ ॥ मारु महला ३ ॥ मेरै प्रभि साचै इकु खेलु
 रचाइआ ॥ कोइ न किस ही जेहा उपाइआ ॥ आपे फरकु करे वेखि विगसै सभि रस देही माहा हे ॥ १ ॥ वाजै पउणु तै
 आपि वजाए ॥ सिव सकती देही महि पाए ॥ गुर परसादी उलटी होवै गिआन रतनु सबदु ताहा हे ॥ २ ॥ अंधेरा चानणु
 आपे कीआ ॥ एको वरतै अवरु न बीआ ॥ गुर परसादी आपु पछाणै कमलु बिगसै बुधि ताहा हे ॥ ३ ॥ अपणी गहण
 गति आपे जाणै ॥ होरु लोकु सुणि सुणि आखि वखाणै ॥ गिआनी होवै सु गुरमुखि बूझै साची सिफति सलाहा हे ॥ ४
 ॥ देही अंदरि वसतु अपारा ॥ आपे कपट खुलावणहारा ॥ गुरमुखि सहजे अँमितु पीवै तिसना अगनि बुझाहा हे ॥ ५ ॥
 सभि रस देही अंदरि पाए ॥ विरले कउ गुरु सबदु बुझाए ॥ अंदरु खोजे सबदु सालाहे बाहरि कोहे जाहा हे ॥ ६ ॥ विणु
 चाखे सादु किसै न आइआ ॥ गुर कै सबदि अँमितु पीआइआ ॥ अँमितु पी अमरा पदु होए गुर कै सबदि रसु ताहा हे ॥ ७
 ॥ आपु पछाणै सो सभि गुण जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै ॥ अनदिनु नामि रता दिनु राती माइआ मोहु

चुकाहा हे ॥ ८ ॥ गुर सेवा ते सभु किछु पाए ॥ हउमै मेरा आपु गवाए ॥ आपे क्रिपा करे सुखदाता गुर कै सबदे सोहा हे ॥
 ९ ॥ गुर का सबदु अँम्रित है बाणी ॥ अनदिनु हरि का नामु वखाणी ॥ हरि हरि सचा वसै घट अँतरि सो घटु निरमलु ताहा
 हे ॥ १० ॥ सेवक सेवहि सबदि सलाहहि ॥ सदा रँगि राते हरि गुण गावहि ॥ आपे बखसे सबदि मिलाए परमल वासु मनि
 ताहा हे ॥ ११ ॥ सबदे अकथु कथे सालाहे ॥ मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे ॥ आपे गुण दाता सबदि मिलाए सबदै का रसु ताहा
 हे ॥ १२ ॥ मनमुखु भूला ठउर न पाए ॥ जो धुरि लिखिआ सु कर्म कमाए ॥ बिखिआ राते बिखिआ खोजै मरि जनमै
 दुखु ताहा हे ॥ १३ ॥ आपे आपि आपि सालाहे ॥ तेरे गुण प्रभ तुझ ही माहे ॥ तू आपि सचा तेरी बाणी सची आपे
 अलखु अथाहा हे ॥ १४ ॥ बिनु गुर दाते कोइ न पाए ॥ लख कोटी जे कर्म कमाए ॥ गुर किरपा ते घट अँतरि वसिआ
 सबदे सचु सालाहा हे ॥ १५ ॥ से जन मिले धुरि आपि मिलाए ॥ साची बाणी सबदि सुहाए ॥ नानक जनु गुण गावै नित
 साचे गुण गावह गुणी समाहा हे ॥ १६ ॥ ४ ॥ १३ ॥ मारु महला ३ ॥ निहचलु एकु सदा सचु सोई ॥ पूरे गुर ते सोझी
 होई ॥ हरि रसि भीने सदा धिआइनि गुरमति सीलु सँनाहा हे ॥ १ ॥ अँदरि रँगु सदा सचिआरा ॥ गुर कै सबदि हरि नामि
 पिआरा ॥ नउ निधि नामु वसिआ घट अँतरि छोडिआ माइआ का लाहा हे ॥ २ ॥ रईअति राजे दुरमति दोई ॥ बिनु
 सतिगुर सेवे एकु न होई ॥ एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि निहचलु राजु तिनाहा हे ॥ ३ ॥ आवणु जाणा रखै न कोई ॥
 जँमणु मरणु तिसै ते होई ॥ गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते पाहा हे ॥ ४ ॥ सचु सँजम सतिगुरु दुआरै
 ॥ हउमै क्रोधु सबदि निवारै ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइरे सीलु सँतोखु सभु ताहा हे ॥ ५ ॥ हउमै मोहु उपजै संसारा
 ॥ सभु जगु बिनसै नामु विसारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाइरे नामु सचा जगि लाहा हे ॥ ६ ॥ सचा अमरु सबदि
 सुहाइआ ॥ पँच सबद मिलि वाजा वाइआ ॥ सदा कारजु सचि नामि सुहेला बिनु सबदै कारजु केहा हे ॥ ७ ॥ खिन

महि हसै खिन महि रोवै ॥ दूजी दुरमति कारजु न होवै ॥ सँजोगु विजोगु करतै लिखि पाए ॥ किरतु न चलै चलाहा हे ॥ ८
 ॥ जीवन मुकति गुर सबदु कमाए ॥ हरि सिउ सद ही रहै समाए ॥ गुर किरपा ते मिलै वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे ॥ ९
 ॥ रस कस खाए पिँडु वधाए ॥ भेख करै गुर सबदु न कमाए ॥ अँतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि समाहा हे ॥ १० ॥
 बेद पड़हि पड़ि बादु वखाणहि ॥ घट महि ब्रहमु तिसु सबदि न पछाणहि ॥ गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु ताहा
 हे ॥ ११ ॥ घरि वथु छोडहि बाहरि धावहि ॥ मनमुख अँधे सादु न पावहि ॥ अन रस राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि
 न ताहा हे ॥ १२ ॥ मनमुख देही भरमु भतारो ॥ दुरमति मरै नित होइ खुआरो ॥ कामि क्रोधि मनु दूजै लाइआ सुपनै सुखु
 न ताहा हे ॥ १३ ॥ कँचन देही सबदु भतारो ॥ अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो ॥ महला अँदरि गैर महलु पाए भाणा
 बुझि समाहा हे ॥ १४ ॥ आपे देवै देवणहारा ॥ तिसु आगै नही किसै का चारा ॥ आपे बखसे सबदि मिलाए तिस दा सबदु
 अथाहा हे ॥ १५ ॥ जीउ पिँडु सभु है तिसु केरा ॥ सचा साहिबु ठाकुरु मेरा ॥ नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि
 समाहा हे ॥ १६ ॥ ५ ॥ १४ ॥ मारु महला ३ ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ गुरमुखि गिआनु धिआनु आपारु ॥
 गुरमुखि कार करे प्रभ भावै गुरमुखि पूरा पाइदा ॥ १ ॥ गुरमुखि मनुआ उलटि परावै ॥ गुरमुखि बाणी नादु वजावै ॥
 गुरमुखि सचि रते बैरागी निज घरि वासा पाइदा ॥ २ ॥ गुर की सारखी अँमित भारखी ॥ सचै सबदे सचु सुभारखी ॥ सदा
 सचि रँगि राता मनु मेरा सचे सचि समाइदा ॥ ३ ॥ गुरमुखि मनु निरमलु सत सरि नावै ॥ मैलु न लागै सचि समावै ॥
 सचो सचु कमावै सद ही सची भगति द्रिडाइदा ॥ ४ ॥ गुरमुखि सचु बैणी गुरमुखि सचु नैणी ॥ गुरमुखि सचु कमावै
 करणी ॥ सद ही सचु कहै दिनु राती अवरस सचु कहाइदा ॥ ५ ॥ गुरमुखि सची ऊतम बाणी ॥ गुरमुखि सचो सचु वखाणी
 ॥ गुरमुखि सद सेवाहि सचो सचा गुरमुखि सबदु सुणाइदा ॥ ६ ॥ गुरमुखि होवै सु सोझी पाए ॥ हउमै माइआ

भरमु गवाए ॥ गुर की पउड़ी ऊतम ऊची दरि सचै हरि गुण गाइदा ॥ ७ ॥ गुरमुखि सचु सँजमु करणी सारु ॥ गुरमुखि
 पाए मोख दुआरु ॥ भाइ भगति सदा रँगि राता आपु गवाइ समाइदा ॥ ८ ॥ गुरमुखि होवै मनु खोजि सुणाए ॥ सचै
 नामि सदा लिव लाए ॥ जो तिसु भावै सोई करसी जो सचे मनि भाइदा ॥ ९ ॥ जा तिसु भावै सतिगुरु मिलाए ॥ जा
 तिसु भावै ता मँनि वसाए ॥ आपणै भाणै सदा रँगि राता भाणै मँनि वसाइदा ॥ १० ॥ मनहठि करम करे सो छीजै ॥ बहुते
 भेख करे नहीं भीजै ॥ बिखिआ राते दुखु कमावहि दुखे दुखि समाइदा ॥ ११ ॥ गुरमुखि होवै सु सुखु कमाए ॥ मरण
 जीवण की सोझी पाए ॥ मरणु जीवणु जो सम करि जाणै सो मेरे प्रभ भाइदा ॥ १२ ॥ गुरमुखि मरहि सु हहि परवाणु ॥
 आवण जाणा सबदु पछाणु ॥ मरै न जँमै ना दुखु पाए मन ही मनहि समाइदा ॥ १३ ॥ से वडभागी जिनी सतिगुरु पाइआ
 ॥ हउमै विचहु मोहु चुकाइआ ॥ मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै दरि सचै सोभा पाइदा ॥ १४ ॥ आपे करे कराए आपे ॥
 आपे वेखै थापि उथापे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भावै सचु सुणि लेखै पाइदा ॥ १५ ॥ गुरमुखि सचो सचु कमावै ॥
 गुरमुखि निरमलु मैलु न लावै ॥ नानक नामि रते वीचारी नामे नामि समाइदा ॥ १६ ॥ १ ॥ १५ ॥ मारु महला ३ ॥
 आपे खिसटि हुकमि सभ साजी ॥ आपे थापि उथापि निवाजी ॥ आपे निआउ करे सभु साचा साचे साचि मिलाइदा ॥ १
 ॥ काइआ कोटु है आकारा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ बिनु सबदै भसमै की ढेरी खेहू खेह रलाइदा ॥ २ ॥
 काइआ कँचन कोटु अपारा ॥ जिसु विचि रविआ सबदु अपारा ॥ गुरमुखि गावै सदा गुण साचु मिलि प्रीतम सुखु पाइदा ॥
 ३ ॥ काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ तिसु विचि हरि जीउ वसै मुरारे ॥ गुर कै सबदि वणजनि वापारी नदरी आपि
 मिलाइदा ॥ ४ ॥ सो सूचा जि करोधु निवारे ॥ सबदे बूझै आपु सवारे ॥ आपे करे कराए करता आपे मँनि वसाइदा ॥ ५
 ॥ निरमल भगति है निराली ॥ मनु तनु धोवहि सबदि वीचारी ॥ अनदिनु सदा रहै रँगि राता करि किरपा भगति कराइदा
 ॥ ६ ॥

इसु मन मँदर महि मनूआ धावै ॥ सुखु पलरि तिआगि महा दुखु पावै ॥ बिनु सतिगुर भेटे ठउर न पावै आपे खेलु
 कराइदा ॥ ७ ॥ आपि अपरँपरु आपि वीचारी ॥ आपे मेले करणी सारी ॥ किआ को कार करे वेचारा आपे बखसि
 मिलाइदा ॥ ८ ॥ आपे सतिगुरु मेले पूरा ॥ सचै सबदि महाबल सूरु ॥ आपे मेले दे वडिआई सचे सिउ चितु लाइदा
 ॥ ९ ॥ घर ही अँदरि साचा सोई ॥ गुरुमुखि बिरला बूझै कोई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अँतरि रसना नामु धिआइदा
 ॥ १० ॥ दिसँतरु भवै अँतरु नहीं भाले ॥ माइआ मोहि बधा जमकाले ॥ जम की फासी कबहू न तूटै दूजै भाइ
 भरमाइदा ॥ ११ ॥ जपु तपु सँजमु होरु कोई नाही ॥ जब लगु गुरु का सबदु न कमाही ॥ गुरु कै सबदि मिलिआ सचु
 पाइआ सचे सचि समाइदा ॥ १२ ॥ काम करोधु सबल सँसारा ॥ बहु करम कमावहि सभु दुख का पसारा ॥ सतिगुरु
 सेवहि से सुखु पावहि सचै सबदि मिलाइदा ॥ १३ ॥ पउणु पाणी है बैसँतरु ॥ माइआ मोहु वरतै सभ अँतरि ॥ जिनि
 कीते जा तिसै पछाणहि माइआ मोहु चुकाइदा ॥ १४ ॥ इकि माइआ मोहि गरबि विआपे ॥ हउमै होइ रहै है आपे ॥
 जमकालै की खबरि न पाई अँति गइआ पछुताइदा ॥ १५ ॥ जिनि उपाए सो बिधि जाणै ॥ गुरुमुखि देवै सबदु पछाणै
 ॥ नानक दासु कहै बेनँती सचि नामि चितु लाइदा ॥ १६ ॥ २ ॥ १६ ॥ मारु महला ३ ॥ आदि जुगादि दइआपति
 दाता ॥ पूरे गुरु कै सबदि पछाता ॥ तुधु नो सेवहि से तुइहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा ॥ १ ॥ अगम अगोचरु
 कीमति नहीं पाई ॥ जीअ जँत तेरी सरणाई ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि तू आपे मारगि पाइदा ॥ २ ॥ है भी साचा
 होसी सोई ॥ आपे साजे अवरु न कोई ॥ सभना सार करे सुखदाता आपे रिजकु पहुचाइदा ॥ ३ ॥ अगम अगोचरु
 अलख अपारा ॥ कोइ न जाणै तेरा परवारा ॥ आपणा आपु पछाणहि आपे गुरुमती आपि बुझाइदा ॥ ४ ॥ पाताल
 पुरीआ लोअ आकारा ॥ तिसु विचि वरतै हुकमु करारा ॥ हुकमे साजे हुकमे ढाहे हुकमे मेलि मिलाइदा ॥ ५ ॥

हुकमै बूझौ सु हुकमु सलाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ जेही मति देहि सो होवै तू आपे सबदि बुझाइदा ॥ ६ ॥ अनदिनु
 आरजा छिजदी जाए ॥ रैणि दिनसु दुइ साखी आए ॥ मनमुखु अंधु न चेतै मूडा सिर ऊपरि कालु रूआइदा ॥ ७ ॥ मनु
 तनु सीतलु गुर चरणी लागा ॥ अंतरि भरमु गइआ भउ भागा ॥ सदा अनंदु सचे गुण गावहि सचु बाणी बोलाइदा ॥ ८
 ॥ जिनि तू जाता करम बिधाता ॥ पूरै भागि गुर सबदि पछाता ॥ जति पति सचु सचा सचु सोई हउमै मारि मिलाइदा ॥
 ९ ॥ मनु कठोरु दूजै भाइ लागा ॥ भरमे भूला फिरै अभागा ॥ करमु होवै ता सतिगुरु सेवे सहजे ही सुखु पाइदा ॥ १०
 ॥ लख चउरासीह आपि उपाए ॥ मानस जनमि गुर भगति दिडाए ॥ बिनु भगती बिसटा विचि वासा बिसटा विचि फिरि
 पाइदा ॥ ११ ॥ करमु होवै गुरु भगति दिडाए ॥ विणु करमा किउ पाइआ जाए ॥ आपे करे कराए करता जिउ भावै तिवै
 चलाइदा ॥ १२ ॥ सिमिति सासत अंतु न जाणै ॥ मूरखु अंधा ततु न पछाणै ॥ आपे करे कराए करता आपे भरमि
 भुलाइदा ॥ १३ ॥ सभु किछु आपे आपि कराए ॥ आपे सिरि सिरि धँधै लाए ॥ आपे थापि उथापे वेखै गुरमुखि आपि
 बुझाइदा ॥ १४ ॥ सचा साहिबु गहिर गँभीरा ॥ सदा सलाही ता मनु धीरा ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई गुरमुखि
 मँनि वसाइदा ॥ १५ ॥ आपि निरालमु होर धँधै लोई ॥ गुर परसादी बूझै कोई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमती
 मेलि मिलाइदा ॥ १६ ॥ ३ ॥ १७ ॥ मारु महला ३ ॥ जुग छतीह कीओ गुबारा ॥ तू आपे जाणहि सिरजणहारा ॥
 होर किआ को कहै कि आखि वखाणै तू आपे कीमति पाइदा ॥ १ ॥ ओअँकारि सभ स्रिसटि उपाई ॥ सभु खेलु तमासा
 तेरी वडिआई ॥ आपे वेक करे सभि साचा आपे भँनि घडाइदा ॥ २ ॥ बाजीगरि इक बाजी पाई ॥ पूरे गुर ते नदरी आई
 ॥ सदा अलिपतु रहै गुर सबदी साचे सिउ चितु लाइदा ॥ ३ ॥ बाजहि बाजे धुनि आकारा ॥ आपि वजाए वजावणहारा
 ॥ घटि घटि पउणु वहै इक रँगी मिलि पवणै सभ वजाइदा ॥ ४ ॥ करता करे सु निहचउ होवै ॥ गुर कै सबदे

हउमै खोवै ॥ गुर परसादी किसै दे वडिआई नामो नामु धिआइदा ॥ ५ ॥ गुर सेवे जेवडु होरु लाहा नाही ॥ नामु मँनि
वसै नामो सालाही ॥ नामो नामु सदा सुखदाता नामो लाहा पाइदा ॥ ६ ॥ बिनु नावै सभ दुखु संसारा ॥ बहु करम
कमावहि वधाहि विकारा ॥ नामु न सेवहि किउ सुखु पाईए बिनु नावै दुखु पाइदा ॥ ७ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ गुर
परसादी किसै बुझाए ॥ गुरमुखि होवहि से बँधन तोड़हि मुकती कै घरि पाइदा ॥ ८ ॥ गणत गणै सो जलै संसारा ॥
सहसा मूलि न चुकै विकारा ॥ गुरमुखि होवै सु गणत चुकाए सचे सचि समाइदा ॥ ९ ॥ जे सचु देइ त पाए कोई ॥ गुर
परसादी परगटु होई ॥ सचु नामु सालाहे रँगि राता गुर किरपा ते सुखु पाइदा ॥ १० ॥ जपु तपु संजमु नामु पिआरा ॥
किलविख काटे काटणहारा ॥ हरि कै नामि तनु मनु सीतलु होआ सहजे सहजि समाइदा ॥ ११ ॥ अंतरि लोभु मनि
मैलै मलु लाए ॥ मैले करम करे दुखु पाए ॥ कूड़ो कूडु करे वापारा कूडु बोलि दुखु पाइदा ॥ १२ ॥ निरमल बाणी को
मँनि वसाए ॥ गुर परसादी सहसा जाए ॥ गुर कै भाणै चलै दिनु राती नामु चेति सुखु पाइदा ॥ १३ ॥ आपि सिरँदा
सचा सोई ॥ आपि उपाइ खपाए सोई ॥ गुरमुखि होवै सु सदा सलाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥ १४ ॥ अनेक जतन
करे इँद्री वसि न होई ॥ कामि करोधि जलै सभु कोई ॥ सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि समाइदा ॥ १५ ॥
मेरा तेरा तुधु आपे कीआ ॥ सभि तेरे जँत तेरे सभि जीआ ॥ नानक नामु समालि सदा तू गुरमती मँनि वसाइदा ॥ १६
॥ ४ ॥ १८ ॥ मारु महला ३ ॥ हरि जीउ दाता अगम अथाहा ॥ ओसु तिलु न तमाइ वेपरवाहा ॥ तिस नो अपडि न
सकै कोई आपे मेलि मिलाइदा ॥ १ ॥ जो किछु करै सु निहचउ होई ॥ तिसु बिनु दाता अवरु न कोई ॥ जिस नो नाम
दानु करे सो पाए गुर सबदी मेलाइदा ॥ २ ॥ चउदह भवण तेरे हटनाले ॥ सतिगुरि दिखाए अंतरि नाले ॥ नावै का
वापारी होवै गुर सबदी को पाइदा ॥ ३ ॥ सतिगुरि सेविरे सहज अनँदा ॥ हिरदै आइ वुठा गोविँदा ॥ सहजे भगति करे

३ ॥ जा तिसु भावै ता गुरु मिलाए ॥ गुरुमुखि नामु पदारथु पाए ॥ तुधु आपणै भाणै सभ खिसटि उपाई जिस नो भाणा
 देहि तिसु भाइदा ॥ ४ ॥ मनमुखु अँधु करे चतुराई ॥ भाणा न मँने बहुतु दुखु पाई ॥ भरमे भूला आवै जाए घरु महलु न
 कबहू पाइदा ॥ ५ ॥ सतिगुरु मेले दे वडिआई ॥ सतिगुरु की सेवा धुरि फुरमाई ॥ सतिगुरु सेवा ता नामु पाए नामे ही
 सुखु पाइदा ॥ ६ ॥ सभ नावहु उपजै नावहु छीजै ॥ गुरु किरपा ते मनु तनु भीजै ॥ रसना नामु धिआए रसि भीजै रस
 ही ते रसु पाइदा ॥ ७ ॥ महलै अँदरि महलु को पाए ॥ गुरु कै सबदि सचि चितु लाए ॥ जिस नो सचु देइ सोई सचु पाए
 सचे सचि मिलाइदा ॥ ८ ॥ नामु विसारि मनि तनि दुखु पाइआ ॥ माइआ मोहु सभु रोगु कमाइआ ॥ बिनु नावै मनु
 तनु है कुसटी नरके वासा पाइदा ॥ ९ ॥ नामि रते तिन निरमल देहा ॥ निरमल हँसा सदा सुखु नेहा ॥ नामु सलाहि
 सदा सुखु पाइआ निज घरि वासा पाइदा ॥ १० ॥ सभु को वणजु करे वापारा ॥ विणु नावै सभु तोटा संसारा ॥ नागो
 आइआ नागो जासी विणु नावै दुखु पाइदा ॥ ११ ॥ जिस नो नामु देइ सो पाए ॥ गुरु कै सबदि हरि मँनि वसाए ॥ गुरु
 किरपा ते नामु वसिआ घट अँतरि नामो नामु धिआइदा ॥ १२ ॥ नावै नो लोचै जेती सभ आई ॥ नाउ तिना मिलै धुरि
 पुरबि कमाई ॥ जिनी नाउ पाइआ से वडभागी गुरु कै सबदि मिलाइदा ॥ १३ ॥ काइआ कोटु अति अपारा ॥ तिसु
 विचि बहि प्रभु करे वीचारा ॥ सचा निआउ सचो वापारा निहचलु वासा पाइदा ॥ १४ ॥ अँतर घर बँके थानु सुहाइआ
 ॥ गुरुमुखि विरलै किनै थानु पाइआ ॥ इतु साथि निबहै सालाहे सचे हरि सचा मँनि वसाइदा ॥ १५ ॥ मेरै करतै इक
 बणत बणाई ॥ इसु देही विचि सभ वथु पाई ॥ नानक नामु वणजहि रँगि राते गुरुमुखि को नामु पाइदा ॥ १६ ॥ ६ ॥
 २० ॥ मारु महला ३ ॥ काइआ कँचनु सबदु वीचारा ॥ तिथै हरि वसै जिस दा अँतु न पारावारा ॥ अनदिनु हरि सेविह
 सची बाणी हरि जीउ सबदि मिलाइदा ॥ १ ॥ हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ ॥ गुरु कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥

३ ॥ जा तिसु भावै ता गुरू मिलाए ॥ गुरुमुखि नामु पदारथु पाए ॥ तुधु आपणै भाणै सभ खिसटि उपाई जिस नो भाणा
 देहि तिसु भाइदा ॥ ४ ॥ मनमुखु अँधु करे चतुराई ॥ भाणा न मँने बहुतु दुखु पाई ॥ भरमे भूला आवै जाए घरु महलु न
 कबहू पाइदा ॥ ५ ॥ सतिगुरु मेले दे वडिआई ॥ सतिगुरु की सेवा धुरि फुरमाई ॥ सतिगुरु सेवा ता नामु पाए नामे ही
 सुखु पाइदा ॥ ६ ॥ सभ नावहु उपजै नावहु छीजै ॥ गुरु किरपा ते मनु तनु भीजै ॥ रसना नामु धिआए रसि भीजै रस
 ही ते रसु पाइदा ॥ ७ ॥ महलै अँदरि महलु को पाए ॥ गुरु कै सबदि सचि चितु लाए ॥ जिस नो सचु देइ सोई सचु पाए
 सचे सचि मिलाइदा ॥ ८ ॥ नामु विसारि मनि तनि दुखु पाइआ ॥ माइआ मोहु सभु रोगु कमाइआ ॥ बिनु नावै मनु तनु
 है कुसटी नरके वासा पाइदा ॥ ९ ॥ नामि रते तिन निरमल देहा ॥ निरमल हँसा सदा सुखु नेहा ॥ नामु सलाहि सदा
 सुखु पाइआ निज घरि वासा पाइदा ॥ १० ॥ सभु को वणजु करे वापारा ॥ विणु नावै सभु तोटा संसारा ॥ नागो
 आइआ नागो जासी विणु नावै दुखु पाइदा ॥ ११ ॥ जिस नो नामु देइ सो पाए ॥ गुरु कै सबदि हरि मँनि वसाए ॥ गुरु
 किरपा ते नामु वसिआ घट अँतरि नामो नामु धिआइदा ॥ १२ ॥ नावै नो लोचै जेती सभ आई ॥ नाउ तिना मिलै धुरि
 पुरबि कमाई ॥ जिनी नाउ पाइआ से वडभागी गुरु कै सबदि मिलाइदा ॥ १३ ॥ काइआ कोटु अति अपारा ॥ तिसु
 विचि बहि प्रभु करे वीचारा ॥ सचा निआउ सचो वापारा निहचलु वासा पाइदा ॥ १४ ॥ अँतर घर बँके थानु सुहाइआ ॥
 गुरुमुखि विरलै किनै थानु पाइआ ॥ इतु साथि निबहै सालाहे सचे हरि सचा मँनि वसाइदा ॥ १५ ॥ मेरै करतै इक बणत
 बणाई ॥ इसु देही विचि सभ वथु पाई ॥ नानक नामु वणजहि रँगि राते गुरुमुखि को नामु पाइदा ॥ १६ ॥ ६ ॥ २० ॥
 मारु महला ३ ॥ काइआ कँचनु सबदु वीचारा ॥ तिथै हरि वसै जिस दा अँतु न पारावारा ॥ अनदिनु हरि सेविह सची
 बाणी हरि जीउ सबदि मिलाइदा ॥ १ ॥ हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ ॥ गुरु कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥

तिन की धूरि लाई मुखि मसतकि सतसंगति बहि गुण गाइदा ॥ २ ॥ हरि के गुण गावा जे हरि प्रभ भावा ॥ अंतरि हरि
 नामु सबदि सुहावा ॥ गुरबाणी चहु कुँडी सुणीये साचै नामि समाइदा ॥ ३ ॥ सो जनु साचा जिं अंतरु भाले ॥ गुर कै
 सबदि हरि नदरि निहाले ॥ गिआनु अँजनु पाए गुर सबदी नदरी नदरि मिलाइदा ॥ ४ ॥ वडै भागि इहु सरीरु पाइआ ॥
 माणस जनमि सबदि चितु लाइआ ॥ बिनु सबदै सभु अँध अँधेरा गुरमुखि किसहि बुझाइदा ॥ ५ ॥ इकि कितु आए
 जनमु गवाए ॥ मनमुख लागे दूजै भाए ॥ एह वेला फिरि हाथि न आवै पगि खिसिरे पछुताइदा ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि
 पवित्रु सरीरा ॥ तिसु विचि वसै सचु गुणी गहीरा ॥ सचो सचु वेखै सभ थाई सचु सुणि मँनि वसाइदा ॥ ७ ॥ हउमै
 गणत गुर सबदि निवारे ॥ हरि जीउ हिरदै रखहु उर धारे ॥ गुर कै सबदि सदा सालाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥ ८ ॥
 सो चेतै जिसु आपि चेटाए ॥ गुर कै सबदि वसै मनि आए ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपै आपु समाइदा ॥ ९ ॥ जिनि मनि
 विचि वथु पाई सोई जाणै ॥ गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ आपु पछाणै सोई जनु निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा ॥ १० ॥
 एह काइआ पवितु है सरीरु ॥ गुर सबदी चेतै गुणी गहीरु ॥ अनादिनु गुण गावै रँगि राता गुण कहि गुणी समाइदा ॥
 ११ ॥ एहु सरीरु सभ मूलु है माइआ ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाइआ ॥ हरि न चेतै सदा दुखु पाए बिनु हरि चेतै दुखु पाइदा
 ॥ १२ ॥ जिं सतिगुरु सेवे सो परवाणु ॥ काइआ हँसु निरमलु दरि सचै जाणु ॥ हरि सेवे हरि मँनि वसाए सोहै हरि गुण
 गाइदा ॥ १३ ॥ बिनु भागा गुरु सेविआ न जाइ ॥ मनमुख भूले मुए बिललाइ ॥ जिन कउ नदरि होवै गुर केरी हरि
 जीउ आपि मिलाइदा ॥ १४ ॥ काइआ कोटु पके हटनाले ॥ गुरमुखि लेवै वसतु समाले ॥ हरि का नामु धिआइ दिनु
 राती ऊतम पदवी पाइदा ॥ १५ ॥ आपे सचा है सुखदाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ नानक नामु सलाहे साचा पूरे
 भागि को पाइदा ॥ १६ ॥ ७ ॥ २१ ॥ मारु महला ३ ॥ निरँकारि आकारु उपाइआ ॥ माइआ मोहु हुकमि बणाइआ
 ॥

आपे खेल करे सभि करता सुणि साचा मँनि वसाइदा ॥ १ ॥ माइआ माई त्रै गुण परसूति जमाइआ ॥ चारे बेद ब्रहमे
 नो फुरमाइआ ॥ वहेँ माह वार थिती करि इसु जग महि सोझी पाइदा ॥ २ ॥ गुर सेवा ते करणी सार ॥ राम नामु
 राखहु उरि धार ॥ गुरबाणी वरती जग अंतरि इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा ॥ ३ ॥ वेदु पडै अनदिनु वाद समाले ॥
 नामु न चेतै बध जमकाले ॥ दूजै भाइ सदा दुखु पाए त्रै गुण भरमि भुलाइदा ॥ ४ ॥ गुरमुखि एकसु सिउ लिव लाए ॥
 त्रिबिधि मनसा मनहि समाए ॥ साचै सबदि सदा है मुकता माइआ मोहु चुकाइदा ॥ ५ ॥ जो धुरि राते से हुणि राते ॥
 गुर परसादी सहजे माते ॥ सतिगुरु सेवि सदा प्रभु पाइआ आपै आपु मिलाइदा ॥ ६ ॥ माइआ मोहि भरमि न पाए ॥
 दूजै भाइ लगा दुखु पाए ॥ सूहा रँगु दिन थोडे होवै इसु जादे बिलम न लाइदा ॥ ७ ॥ एहु मनु भै भाइ रँगार ॥ इतु रँगि
 साचे माहि समाए ॥ पूरै भागि को इहु रँगु पाए गुरमती रँगु चडाइदा ॥ ८ ॥ मनमुखु बहुतु करे अभिमानु ॥ दरगह कब
 ही न पावै मानु ॥ दूजै लागे जनमु गवाइआ बिनु बूझै दुखु पाइदा ॥ ९ ॥ मेरै प्रभि अंदरि आपु लुकाइआ ॥ गुर
 परसादी हरि मिलै मिलाइआ ॥ सचा प्रभु सचा वापारा नामु अमोलकु पाइदा ॥ १० ॥ इसु काइआ की कीमति किनै न
 पाई ॥ मेरै ठाकुरि इह बणत बणाई ॥ गुरमुखि होवै सु काइआ सोधै आपहि आपु मिलाइदा ॥ ११ ॥ काइआ विचि
 तोटा काइआ विचि लाहा ॥ गुरमुखि खोजे वेपरवाहा ॥ गुरमुखि वणजि सदा सुखु पाए सहजे सहजि मिलाइदा ॥
 १२ ॥ सचा महलु सचे भँडारा ॥ आपे देवै देवणहारा ॥ गुरमुखि सालाहे सुखदाते मनि मेलै कीमति पाइदा ॥ १३ ॥
 काइआ विचि वसतु कीमति नही पाई ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ जिस दा हटु सोई वथु जाणै गुरमुखि देइ न
 पछोताइदा ॥ १४ ॥ हरि जीउ सभ महि रहिआ समाई ॥ गुर परसादी पाइआ जाई ॥ आपे मेलि मिलाए आपे सबदे
 सहजि समाइआ ॥ १५ ॥ आपे सचा सबदि मिलाए ॥ सबदे विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई

नामे ही सुखु पाइदा ॥ १६ ॥ ८ ॥ २२ ॥ मारु महला ३ ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ आपे मिहरवान अगम अथाहे
॥ अपडि कोइ न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ ॥ १ ॥ तुधु नो सेवहि जो तुधु भावहि ॥ गुर के सबदे सचि
समावहि ॥ अनदिनु गुण रवहि दिनु राती रसना हरि रसु भाइआ ॥ २ ॥ सबदि मरहि से मरणु सवारहि ॥ हरि के गुण
हिरदै उर धारहि ॥ जनमु सफलु हरि चरणी लागे दूजा भाउ चुकाइआ ॥ ३ ॥ अनदिनु सदा हरि भगती राते इसु जग
महि लाहा पाइआ ॥ ४ ॥ तेरे गुण कहा मै कहणु न जाई ॥ अँतु न पारा कीमति नही पाई ॥ आपे दइआ करै सुखदाता
गुण महि गुणी समाइआ ॥ ५ ॥ इसु जगु महि मोहु है पासारा ॥ मनमुखु अगिआनी अँधु अँधारा ॥ धँधै धावतु जनमु
गवाइआ बिनु नावै दुखु पाइआ ॥ ६ ॥ करमु होवै ता सतिगुरु पाए ॥ हउमै मैलु सबदि जलाए ॥ मनु निरमलु गिआनु
रतनु चानणु अगिआनु अँधेरु गवाइआ ॥ ७ ॥ तेरे नाम अनेक कीमति नही पाई ॥ सचु नामु हरि हिरदै वसाई ॥
कीमति कउणु करे प्रभ तेरी तू आपे सहजि समाइआ ॥ ८ ॥ नामु अमोलकु अगम अपारा ॥ ना को होआ तोलणहारा
॥ आपे तोले तोलि तोलाए गुर सबदी मेलि तोलाइआ ॥ ९ ॥ सेवक सेवहि करहि अरदासि ॥ तू आपे मेलि बहालहि
पासि ॥ सभना जीआ का सुखदाता पूरै करमि धिआइआ ॥ १० ॥ जतु सतु सँजमु जि सचु कमावै ॥ इहु मनु निरमलु
जि हरि गुण गावै ॥ इसु बिखु महि अँमितु परापति होवै हरि जीउ मेरे भाइआ ॥ ११ ॥ जिस नो बुझाए सोई बूझै ॥
हरि गुण गावै अँदरु सूझै ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाए सहजे ही सचु पाइआ ॥ १२ ॥ बिनु करमा होर फिरै घनेरी ॥ मरि
मरि जँमै चुकै न फेरी ॥ बिखु का राता बिखु कमावै सुखु न कबहू पाइआ ॥ १३ ॥ बहुते भेख भेखधारी ॥ बिनु सबदै
हउमै किनै न मारी ॥ जीवतु मरै ता मुकति पाए सचै नाइ समाइआ ॥ १४ ॥ अगिआनु तिसना इसु तनहि जलाए ॥
तिस दी बूझै जि गुर सबदु कमाए ॥ तनु मनु सीतलु क्रोधु निवारे हउमै मारि समाइआ ॥ १५ ॥ सचा साहिबु

सची वडिआई ॥ गुर परसादी विरलै पाई ॥ नानकु एक कहै बेनँती नामे नामि समाइआ ॥ १६ ॥ १ ॥ २३ ॥ मारु
 महला ३ ॥ नदरी भगता लैहु मिलाए ॥ भगत सलाहनि सदा लिव लाए ॥ तउ सरणाई उबरहि करते आपे मेलि मिलाइआ ॥
 १ ॥ पूरै सबदि भगति सुहाई ॥ अंतरि सुखु तेरै मनि भाई ॥ मनु तनु सची भगती राता सचे सिउ चितु लाइआ ॥ २
 ॥ हउमै विचि सद जलै सरीरा ॥ करमु होवै भेटे गुरु पूरा ॥ अंतरि अगिआनु सबदि बुझाए सतिगुर ते सुखु पाइआ ॥ ३
 ॥ मनमुखु अँधा अँधु कमाए ॥ बहु संकट जोनी भरमाए ॥ जम का जेवड़ा कदे न काटै अँते बहु दुखु पाइआ ॥ ४ ॥
 आवण जाणा सबदि निवारे ॥ सचु नामु रखै उर धारे ॥ गुर कै सबदि मरै मनु मारे हउमै जाइ समाइआ ॥ ५ ॥ आवण
 जाणै परज विगोई ॥ बिनु सतिगुर थिरु कोइ न होई ॥ अंतरि जोति सबदि सुखु वसिआ जोती जोति मिलाइआ ॥ ६ ॥
 पँच दूत चितवहि विकारा ॥ माइआ मोह का एहु पसारा ॥ सतिगुरु सेवे ता मुकतु होवै पँच दूत वसि आइआ ॥ ७ ॥ बाझ
 गुरु है मोहु गुबारा ॥ फिरि फिरि डुबै वारो वारा ॥ सतिगुर भेटे सचु दिड़ाए सचु नामु मनि भाइआ ॥ ८ ॥ साचा दरु
 साचा दरवारा ॥ सचे सेवहि सबदि पिआरा ॥ सची धुनि सचे गुण गावा सचे माहि समाइआ ॥ ९ ॥ घरै अँदरि को घर
 पाए ॥ गुर कै सबदे सहजि सुभाए ॥ ओथै सोगु विजोगु न विआपै सहजे सहजि समाइआ ॥ १० ॥ दूजै भाइ दुसटा का
 वासा ॥ भउदे फिरहि बहु मोह पिआसा ॥ कुसंगति बहहि सदा दुखु पावहि दुखो दुखु कमाइआ ॥ ११ ॥ सतिगुर बाझहु
 संगति न होई ॥ बिनु सबदे पारु न पाए कोई ॥ सहजे गुण रवहि दिनु राती जोती जोति मिलाइआ ॥ १२ ॥ काइआ
 बिरखु पँखी विचि वासा ॥ अँमितु चुगहि गुर सबदि निवासा ॥ उडहि न मूले न आवहि न जाही निज घरि वासा पाइआ ॥
 १३ ॥ काइआ सोधहि सबदु वीचारहि ॥ मोह ठगउरी भरमु निवारहि ॥ आपे क्रिपा करे सुखदाता आपे मेलि मिलाइआ ॥
 १४ ॥ सद ही नेडै दूरि न जाणहु ॥ गुर कै सबदि नजीकि पछाणहु ॥ बिगसै कमलु किरणि परगासै परगटु करि

देखाइआ ॥ १५ ॥ आपे करता सचा सोई ॥ आपे मारि जीवाले अवरु न कोई ॥ नानक नामु मिलै वडिआई आपु गवाइ
सुखु पाइआ ॥ १६ ॥ २ ॥ २४ ॥

मारु सोलहे महला ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

साचा आपि सवारणहारा ॥ अवर न सूझसि बीजी कारा ॥ गुरमुखि सचु वसै घट अंतरि सहजे सचि समाई हे ॥ १ ॥
सभना सचु वसै मन माही ॥ गुर परसादी सहजि समाही ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ गुर चरणी चितु लाई हे ॥ २ ॥
सतिगुरु है गिआनु सतिगुरु है पूजा ॥ सतिगुरु सेवी अवरु न दूजा ॥ सतिगुर ते नामु रतनु धनु पाइआ सतिगुर की सेवा
भाई हे ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर जो दूजै लागे ॥ आवहि जाहि भ्रमि मरहि अभागे ॥ नानक तिन की फिरि गति होवै जि
गुरमुखि रहहि सरणाई हे ॥ ४ ॥ गुरमुखि प्रीति सदा है साची ॥ सतिगुर ते मागउ नामु अजाची ॥ होहु दइआलु क्रिपा करि
हरि जीउ रखि लेवहु गुर सरणाई हे ॥ ५ ॥ अमित रसु सतिगुरु चुआइआ ॥ दसवै दुआरि प्रगटु होइ आइआ ॥ तह
अनहद सबद वजहि धुनि बाणी सहजे सहजि समाही हे ॥ ६ ॥ जिन कउ करतै धुरि लिखि पाई ॥ अनादिनु गुरु गुरु करत
विहाई ॥ बिनु सतिगुर को सीझै नाही गुर चरणी चितु लाई हे ॥ ७ ॥ जिंसु भावै तिसु आपे देइ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लेइ
॥ आपे क्रिपा करे नामु देवे नानक नामि समाई हे ॥ ८ ॥ गिआन रतनु मनि परगटु भइआ ॥ नामु पदारथु सहजे लइआ ॥
एह वडिआई गुर ते पाई सतिगुर कउ सद बलि जाई हे ॥ ९ ॥ प्रगटिआ सूरु निसि मिटिआ अंधिआरा ॥ अगिआनु मिटिआ
गुर रतनि अपारा ॥ सतिगुर गिआनु रतनु अति भारी करमि मिलै सुखु पाई हे ॥ १० ॥ गुरमुखि नामु प्रगटी है सोइ ॥ चहु
जुगि निरमलु हछा लोइ ॥ नामे नामि रते सुखु पाइआ नामि रहिआ लिव लाई हे ॥ ११ ॥ गुरमुखि नामु परापति होवै ॥
सहजे जागै सहजे सोवै ॥ गुरमुखि नामि समाइ समावै नानक नामु धिआई हे ॥ १२ ॥ भगता मुखि अमित है बाणी ॥

गुरुमुखि हरि नामु आखि वखाणी ॥ हरि हरि करत सदा मनु बिगसै हरि चरणी मनु लाई हे ॥ १३ ॥ हम मूरख अगिआन
 गिआनु किछु नाही ॥ सतिगुर ते समझ पडी मन माही ॥ होहु दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ सतिगुर की सेवा लाई हे ॥ १४
 ॥ जिनि सतिगुरु जाता तिनि एकु पछाता ॥ सरबे रवि रहिआ सुखदाता ॥ आतमु चीनि परम पदु पाइआ सेवा सुरति
 समाई हे ॥ १५ ॥ जिन कउ आदि मिली वडीआई ॥ सतिगुरु मनि वसिआ लिव लाई ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता
 नानक अँकि समाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥ मारू महला ४ ॥ हरि अगम अगोचरु सदा अबिनासी ॥ सरबे रवि रहिआ घट वासी
 ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई दाता हरि तिसहि सरेवहु प्राणी हे ॥ १ ॥ जा कउ राखै हरि राखणहारा ॥ ता कउ कोइ न
 साकसि मारा ॥ सो ऐसा हरि सेवहु संतहु जा की ऊतम बाणी हे ॥ २ ॥ जा जापै किछु किथाऊ नाही ॥ ता करता भरपूरि
 समाही ॥ सूके ते फुनि हरिआ कीतोनु हरि धिआवहु चोज विडाणी हे ॥ ३ ॥ जो जीआ की वेदन जाणै ॥ तिसु साहिब कै
 हउ कुरबाणै ॥ तिसु आगै जन करि बेनँती जो सरब सुखा का दाणी हे ॥ ४ ॥ जो जीरे की सार न जाणै ॥ तिसु सिउ किछु
 न कहीरे अजाणै ॥ मूरख सिउ मह लूझु पराणी हरि जपीरे पदु निरबाणी हे ॥ ५ ॥ ना करि चिँत चिँता है करते ॥ हरि देवै
 जलि थलि जँता सभतै ॥ अचिँत दानु देइ प्रभु मेरा विचि पाथर कीट परबाणी हे ॥ ६ ॥ ना करि आस मीत सुत भाई ॥ ना
 करि आस किसै साह बिउहार की पराई ॥ बिनु हरि नावै को बेली नाही हरि जपीरे साँरगपाणी हे ॥ ७ ॥ अनदिनु नामु जपहु
 बनवारी ॥ सभ आसा मनसा पूरै थारी ॥ जन नानक नामु जपहु भव खँडनु सुखि सहजे रैणि विहाणी हे ॥ ८ ॥ जिनि हरि
 सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ जो सरणि परै तिस की पति राखै जाइ पूछहु वेद पुराणी हे ॥
 ९ ॥ जिसु हरि सेवा लाए सोई जनु लागै ॥ गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि
 पाणी हे ॥ १० ॥ विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ सो तपु पूरा साई सेवा जो हरि मेरे मनि

भाणी हे ॥ ११ ॥ हउ किआ गुण तेरे आखा सुआमी ॥ तू सरब जीा का अंतरजामी ॥ हउ मागउ दानु तुझै पहि करते हरि
 अनदिनु नामु वखाणी हे ॥ १२ ॥ किस ही जोरु अहंकार बोलण का ॥ किस ही जोरु दीवान माइआ का ॥ मै हरि बिनु
 टेक धर अवर न काई तू करते राखु मै निमाणी हे ॥ १३ ॥ निमाणे माणु करहि तुधु भावै ॥ होर केती झखि झखि आवै जावै
 ॥ जिन का पखु करहि तू सुआमी तिन की ऊपरि गल तुधु आणी हे ॥ १४ ॥ हरि हरि नामु जिनी सदा धिआइआ ॥ तिनी
 गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ बिनु सेवा पछोताणी हे ॥ १५ ॥ तू सभ महि वरताहि
 हरि जगंनाथु ॥ सो हरि जपै जिंसु गुर मसतकि हाथु ॥ हरि की सरणि पइआ हरि जापी जनु नानकु दासु दसाणी हे ॥ १६
 ॥ २ ॥

माखु सोलहे महला ७ १४ श्रितिगुर प्रसादि ॥

कला उपाइ धरी जिनि धरणा ॥ गगनु रहाइआ हुकमे चरणा ॥ अगनि उपाइ ईधन महि बाधी सो प्रभु राखै भाई हे ॥ १ ॥
 जीअ जंत कउ रिजकु संबाहे ॥ करण कारणु समरथ आपाहे ॥ खिन महि थापि उथापनहारा सोई तेरा सहाई हे ॥ २ ॥
 मात गरभ महि जिनि प्रतिपालिआ ॥ सासि ग्रासि होइ सँगि समालिआ ॥ सदा सदा जपीरे सो प्रीतमु वडी जिंसु वडिआई
 हे ॥ ३ ॥ सुलतान खान करे खिन कीरे ॥ गरीब निवाजि करे प्रभु मीरे ॥ गरब निवारण सरब सधारण किछु कीमति कही
 न जाई हे ॥ ४ ॥ सो पतिवँता सो धनवँता ॥ जिंसु मनि वसिआ हरि भगवँता ॥ मात पिता सुत बंधप भाई जिनि इहि
 खिसटि उपाई हे ॥ ५ ॥ प्रभ आए सरणा भउ नहीं करणा ॥ साधसँगति निहचउ है तरणा ॥ मन बच करम अराधे करता
 तिसु नाही कदे सजाई हे ॥ ६ ॥ गुण निधान मन तन महि रविआ ॥ जनम मरण की जोनि न भविआ ॥ दूख बिनास
 कीआ सुखि डेरा जा त्रिपति रहे आघाई हे ॥ ७ ॥ मीतु हमारा सोई सुआमी ॥ थान धनंतरि अंतरजामी ॥ सिमरि सिमरि

पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे ॥ ८ ॥ हरि का नामु कोटि लख बाहा ॥ हरि जसु कीरतनु सँगि धनु ताहा ॥
 गिआन खडगु करि किरपा दीना दूत मारे करि धाई हे ॥ ९ ॥ हरि का जापु जपहु जपु जपने ॥ जीति आवहु वसहु
 घरि अपने ॥ लख चउरासीह नरक न देखहु रसकि रसकि गुण गाई हे ॥ १० ॥ खँड ब्रहमँड उधारणहारा ॥ ऊच
 अथाह अगँम अपारा ॥ जिस नो क्रिपा करे प्रभु अपनी सो जनु तिसहि धिआई हे ॥ ११ ॥ बँधन तोड़ि लीए प्रभि
 मोले ॥ करि किरपा कीने घर गोले ॥ अनहद रुणझुणकारु सहज धुनि साची कार कमाई हे ॥ १२ ॥ मनि परतीति
 बनी प्रभ तेरी ॥ बिनसि गई हउमै मति मेरी ॥ अँगीकारु कीआ प्रभि अपनै जग महि सोभ सुहाई हे ॥ १३ ॥ जै
 जैकारु जपहु जगदीसै ॥ बलि बलि जाई प्रभ अपने ईसै ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न दीसै एका जगति सबाई हे ॥
 १४ ॥ सति सति सति प्रभु जाता ॥ गुर परसादि सदा मनु राता ॥ सिमरि सिमरि जीवहि जन तेरे एककारि समाई हे
 ॥ १५ ॥ भगत जना का प्रीतमु पिआरा ॥ सभै उधारणु खसमु हमारा ॥ सिमरि नामु पुँनी सभ इछा जन नानक पैज
 रखाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥

मारु शोलहे महला ७ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

सँगी जोगी नारि लपटाणी ॥ उरझि रही रँग रस माणी ॥ किरत सँजोगी भए इकत्रा करते भोह बिलासा हे ॥ १ ॥
 जो पिरु करै सु धन ततु मानै ॥ पिरु धनहि सीगारि रखै सँगानै ॥ मिलि एकत्र वसहि दिनु राती प्रिउ दे धनहि
 दिलासा हे ॥ २ ॥ धन मागै प्रिउ बहु बिधि धावै ॥ जो पावै सो आणि दिखावै ॥ एक वसतु कउ पहुचि न साकै धन
 रहती भूख पिआसा हे ॥ ३ ॥ धन करै बिनउ दोऊ कर जोरै ॥ प्रिअ परदेसि न जाहु वसहु घरि मोरै ॥ ऐसा बणजु
 करहु ग्रिह भीतरि जितु उतरै भूख पिआसा हे ॥ ४ ॥ सगले करम धरम जुग साधा ॥ बिनु हरि रस सुखु तिलु नही
 लाधा ॥ भई क्रिपा नानक सतसँगे तउ धन पिर अनँद उलासा हे ॥ ५ ॥ धन अँधी पिरु चपलु सिआना ॥

पंच ततु का रचनु रचाना ॥ जिसु वखर कउ तुम आए हहु सो पाइओ सतिगुर पासा हे ॥ ६ ॥ धन कहै तू वसु मै नाले ॥
 प्रिअ सुखवासी बाल गुपाले ॥ तुझै बिना हउ कितही न लेखै वचनु देहि छोडि न जासा हे ॥ ७ ॥ पिरि कहिआ हउ हुकमी
 बँदा ॥ ओहु भारो ठाकुरु जिसु काणि न छँदा ॥ जिचरु राखै तिचरु तुम सँगि रहणा जा सदे त ऊठि सिधासा हे ॥ ८ ॥
 जउ प्रिअ बचन कहे धन साचे ॥ धन कछू न समझै चँचलि काचे ॥ बहुरि बहुरि पिर ही सँगु मागै ओहु बात जानै करि हासा
 हे ॥ ९ ॥ आई आगिआ पिरहु बुलाइआ ॥ ना धन पुछी न मता पकाइआ ॥ ऊठि सिधाइओ छूटरि माटी देखु नानक
 मिथन मोहासा हे ॥ १० ॥ रे मन लोभी सुणि मन मेरे ॥ सतिगुरु सेवि दिनु राति सदेरे ॥ बिनु सतिगुर पचि मूए साकत
 निगुरे गलि हम फासा हे ॥ ११ ॥ मनमुखि आवै मनमुखि जावै ॥ मनमुखि फिरि फिरि चोटा खावै ॥ जितने नरक से
 मनमुखि भोगै गुरमुखि लेपु न मासा हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि सोइ जि हरि जीउ भाइआ ॥ तिसु कउणु मिटावै जि प्रभ
 पहिराइआ ॥ सदा अनँदु करे आनँदी जिसु सिरपाउ पइआ गलि खासा हे ॥ १३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ सरणि के
 दाते बचन के सूरै ॥ ऐसा प्रभु मिलिआ सुखदाता विछुडि न कत ही जासा हे ॥ १४ ॥ गुण निधान किछु कीम न पाई ॥
 घटि घटि पूरे रहिओ सभ ठाई ॥ नानक सरणि दीन दुख भँजन हउ रेण तेरे जो दासा हे ॥ १५ ॥ १ ॥ २ ॥

मारु सोलहे महला ७ १४ सतिगुरि प्रसादि ॥

करै अनँदु अनँदी मेरा ॥ घटि घटि पूरनु सिर सिरहि निबेरा ॥ सिरि साहा कै सचा साहिबु अवरु नाही को दूजा हे ॥ १ ॥
 हरखवंत आनँत दइआला ॥ प्रगटि रहिओ प्रभु सरब उजाला ॥ रूप करे करि वेखै विगसै आपे ही आपि पूजा हे ॥ २ ॥
 आपे कुदरति करे वीचारा ॥ आपे ही सचु करे पसारा ॥ आपे खेल खिलावै दिनु राती आपे सुणि सुणि भीजा हे ॥ ३ ॥
 साचा तखतु सची पातिसाही ॥ सचु खजीना साचा साही ॥ आपे सचु धारिओ सभु साचा सचे सचि

वरतीजा हे ॥ ४ ॥ सचु तपावसु सचे केरा ॥ साचा थानु सदा प्रभ तेरा ॥ सची कुदरति सची बाणी सचु साहिब सुखु कीजा हे
 ॥ ५ ॥ एको आपि तूहै वड राजा ॥ हुकमि सचे कै पूरे काजा ॥ अंतरि बाहरि सभु किछु जाणै आपे ही आपि पतीजा हे ॥ ६
 ॥ तू वड रसीआ तू वड भोगी ॥ तू निरबाणु तूहै ही जोगी ॥ सरब सूख सहज घरि तेरै अमिउ तेरी दिसटीजा हे ॥ ७ ॥ तेरी
 दाति तुझै ते होवै ॥ देहि दानु सभसै जंत लोरे ॥ तोटि न आवै पूर भंडरै त्रिपति रहे आघीजा हे ॥ ८ ॥ जाचहि सिध साधिक
 बनवासी ॥ जाचहि जती सती सुखवासी ॥ इकु दातारु सगल है जाचिक देहि दानु सिसटीजा हे ॥ ९ ॥ करहि भगति अरु
 रंग अपारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ भारो तोलु बेअंत सुआमी हुकमु मनि भगतीजा हे ॥ १० ॥ जिसु देहि दरसु
 सोई तुधु जाणै ॥ ओहु गुर कै सबदि सदा रंगि माणै ॥ चतुरु सरूपु सिआणा सोई जो मनि तेरै भावीजा हे ॥ ११ ॥ जिसु
 चीति आवहि सो वेपरवाहा ॥ जिसु चीति आवहि सो साचा साहा ॥ जिस चीति आवहि तिसु भउ केहा अवरु कहा किछु कीजा
 हे ॥ १२ ॥ त्रिसना बूझी अंतरु ठंढा ॥ गुरि पूरै लै तूटा गंढा ॥ सुरति सबदु रिद अंतरि जागी अमिउ झोलि झोलि पीजा हे ॥
 १३ ॥ मरै नाही सद सद ही जीवै ॥ अमरु भइआ अबिनासी थीवै ॥ ना को आवै ना को जावै गुरि दूरि कीआ भरमीजा हे ॥
 १४ ॥ पूरे गुर की पूरी बाणी ॥ पूरे लागा पूरे माहि समाणी ॥ चडै सवाइआ नित नित रंगा घटै नाही तोलीजा हे ॥ १५ ॥
 बाहरा कंचनु सुधु कराइआ ॥ नदरि सराफ वंणी सचड़ाइआ ॥ परखि खजानै पाइआ सराफी फिरि नाही ताईजा हे ॥ १६ ॥
 अमित नामु तुमारा सुआमी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥ संतसंगि महा सुखु पाइआ देखि दरसनु इहु मन भीजा हे ॥ १७
 ॥ १ ॥ ३ ॥

मारु महला ५ सोलहे १३ शितिगुर प्रसादि ॥

गुरु गोपालु गुरु गोविंदा ॥ गुर दइअलु सदा बखसिंदा ॥ गुरु सासत सिमिति खटु करमा गुरु पवित्रु असथाना हे ॥ १ ॥
 गुरु सिमरत सभि किलविख नासहि ॥ गुर सिमरत

जम सँगि न फासहि ॥ गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे ॥ २ ॥ गुर का सेवकु नरकि न जाए
 ॥ गुर का सेवकु पारब्रह्मु धिआए ॥ गुर का सेवकु साधसँगु पाए गुरु करदा नित जीअ दाना हे ॥ ३ ॥ गुरदुआरै
 हरि कीरतनु सुणीऐ ॥ सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ ॥ कलि कलेस मिटाए सतिगुरु हरि दरगह देवै मानां हे
 ॥ ४ ॥ अगमु अगोचरु गुरु दिखाइआ ॥ भूला मारगि सतिगुरि पाइआ ॥ गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि
 पूर दिडाहइआ गिआनां हे ॥ ५ ॥ गुरि दिसटाइआ सभनी ठाई ॥ जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥ ऊच ऊन सभ
 एक समानां मनि लागे सहजि धिआना हे ॥ ६ ॥ गुरि मिलिऐ सभ तिसन बुझाई ॥ गुरि मिलिऐ नह जोहै माई ॥
 सतु सँतोखु दीआ गुरि पूरै नामु अँप्रितु पी पानां हे ॥ ७ ॥ गुर की बाणी सभ माहि समाणी ॥ आपि सुणी तै आपि
 वखाणी ॥ जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे ॥ ८ ॥ सतिगुर की महिमा सतिगुरु
 जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ साधू धूरि जाचहि जन तेरे नानक सदा कुरबानां हे ॥ ९ ॥ १ ॥ ४ ॥

माख सोलहे महला ५ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

आदि निरँजनु प्रभु निरँकारा ॥ सभ महि वरतै आपि निरारा ॥ वरनु जाति चिहनु नही कोई सभ हुकमे खिसटि
 उपाइदा ॥ १ ॥ लख चउरासीह जोनि सबाई ॥ माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥ इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो
 आइ जाइ दुखु पाइदा ॥ २ ॥ कीता होवै तिसु किआ कहीऐ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लहीऐ ॥ जिसु आपि भुलाए
 सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा ॥ ३ ॥ हरख सोग का नगरु इहु कीआ ॥ से उबरे जो सतिगुर सरणीआ ॥
 त्रिहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा ॥ ४ ॥ अनिक करम कीए बहुतेरे ॥ जो कीजै सो बँधनु पँरे ॥
 कुरुता बीजु बीजे नही जँमै सभु लाहा मूलु गवाइदा ॥ ५ ॥ कलजुग नहि कीरतनु परधाना ॥ गुरमुखि

जपीऐ लाइ धिआना ॥ आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥ ६ ॥ खँड पताल दीप सभि लोआ ॥
 सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ ॥ निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा ॥ ७ ॥ हरि का
 सेवकु सो हरि जेहा ॥ भेदु न जाणहु माणस देहा ॥ जिउ जल तरँग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा ॥ ८ ॥
 इकु जाचिकु मँगै दानु दुआरै ॥ जा प्रभ भावै ता किरपा धारै ॥ देहु दरसु जितु मनु त्रिपतासे हरि कीरतनि मनु ठहराइदा ॥
 ९ ॥ रूडो ठाकुरु कितै वसि न आवै ॥ हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै ॥ कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु
 न कोई पाइदा ॥ १० ॥ जिथै अउघटु आइ बनतु है प्राणी ॥ तिथै हरि धिआइऐ सारिँगपाणी ॥ जिथै पुत्रु कलत्रु न बेली
 कोई तिथै हरि आपि छडाइदा ॥ ११ ॥ वडा साहिबु अगम अथाहा ॥ किउ मिलीऐ प्रभ वेपरवाहा ॥ काटि सिलक जिसु
 मारगि पाए सो विचि संगति वासा पाइदा ॥ १२ ॥ हुकमु बूझै सो सेवकु कहीऐ ॥ बुरा भला दुइ समसरि सहीऐ ॥ हउमै
 जाइ त एको बूझै सो गुरुमुखि सहजि समाइदा ॥ १३ ॥ हरि के भगत सदा सुखवासी ॥ बाल सुभाइ अतीत उदासी ॥
 अनिक रँग करहि बहु भाती जिउ पिता पूतु लाडाइदा ॥ १४ ॥ अगम अगोचरु कीमति नहीं पाई ॥ ता मिलीऐ जा लए
 मिलार्इ ॥ गुरुमुखि प्रगटु भइआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाइदा ॥ १५ ॥ तू आपे करता कारण करणा
 ॥ खिसटि उपाइ धरी सभ धरणा ॥ जन नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा ॥ १६ ॥ १ ॥ ७ ॥

मारु सोलहे महला ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

जो दीसै सो एको तूहै ॥ बाणी तेरी श्रवणि सुणीऐ ॥ दूजी अवर न जापसि काई सगल तुमारी धारणा ॥ १ ॥ आपि
 चितारे अपणा कीआ ॥ आपे आपि आपि प्रभु थीआ ॥ आपि उपाइ रचिओनु पसारा आपे घटि घटि सारणा ॥ २ ॥ इकि
 उपाए वड दरवारी ॥

इकि उदासी इकि घरबारी ॥ इकि भूखे इकि त्रिपति अघाए सभसै तेरा पारणा ॥ ३ ॥ आपे सति सति सति साचा ॥ ओति
 पोति भगतन साँगे राचा ॥ आपे गुपतु आपे है परगटु अपणा आपु पसारणा ॥ ४ ॥ सदा सदा सद होवणहारा ॥ ऊचा अगमु
 अथाहु अपारा ॥ ऊणे भरे भरे भरि ऊणे एहि चलत सुआमी के कारणा ॥ ५ ॥ मुखि सालाही सचे साहा ॥ नैणी पेखा अगम
 अथाहा ॥ करनी सुणि सुणि मनु तनु हरिआ मेरे साहिब सगल उधारणा ॥ ६ ॥ करि करि वेखहि कीता अपणा ॥ जीअ जँत
 सोई है जपणा ॥ अपणी कुदरति आपे जाणै नदरी नदरि निहालणा ॥ ७ ॥ सँत सभा जह बैसहि प्रभ पासे ॥ अनँद मँगल
 हरि चलत तमासे ॥ गुण गावहि अनहद धुनि बाणी तह नानक दासु चितारणा ॥ ८ ॥ आवणु जाणा सभु चलतु तुमारा ॥
 करि करि देखै खेलु अपारा ॥ आपि उपाए उपावणहारा अपणा कीआ पालणा ॥ ९ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ सदा
 सद जाई बलिहारी ॥ दुइ कर जोड़ि सिमरउ दिनु राती मेरे सुआमी अगम अपारणा ॥ १० ॥ तुधु बिनु दूजे किसु सालाही ॥
 एको एकु जपी मन माही ॥ हुकमु बूझि जन भए निहाला इह भगता की घालणा ॥ ११ ॥ गुर उपदेसि जपीरे मनि साचा ॥
 गुर उपदेसि राम रँगे राचा ॥ गुर उपदेसि जपीरे मनि साचा ॥ गुर उपदेसि तुटहि सभि बँधन इहु भरमु मोहु परजालणा ॥ १२
 ॥ जह राखै सोई सुख थाना ॥ सहजे होइ सोई भल माना ॥ बिनसे बैर नाही को बैरी सभु एको है भालणा ॥ १३ ॥ डर चूके
 बिनसे अँधिआरे ॥ प्रगट भए प्रभ पुरख निरारे ॥ आपु छोडि पर सरणाई जिस का सा तिसु घालणा ॥ १४ ॥ ऐसा को
 वडभागी आइआ ॥ आठ पहर जिनि खसमु धिआइआ ॥ तिसु जन कै साँगे तरै सभु कोई सो परवार सधारणा ॥ १५ ॥ इह
 बरखसीस खसम ते पावा ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवा ॥ नामु जपी नामि सहजि समावा नामु नानक मिलै उचारणा ॥ १६
 ॥ १ ॥ ६ ॥ मारु महला ५ ॥ सूरति देखि न भूलु गवारा ॥ मिथन मोहारा झूठु पसारा ॥ जग महि कोई रहणु न पाए
 निहचलु एकु नाराइणा ॥ १ ॥ गुर पूरे की पउ सरणाई ॥ मोहु सोगु सभु भरमु मिटाई ॥ एको मँत्रु दिडाए

अउखधु सचु नामु रिद गाइणा ॥ २ ॥ जिंसु नामै कउ तरसहि बहु देवा ॥ सगल भगत जा की करदे सेवा ॥ अनाथा नाथु दीन
 दुख भँजनु सो गुर पूरे ते पाइणा ॥ ३ ॥ होरु दुआरा कोइ न सूझै ॥ त्रिभवण धावै ता किछू न बूझै ॥ सतिगुरु साहु भँडारु
 नाम जिंसु इहु रतनु तिसै ते पाइणा ॥ ४ ॥ जा की धूरि करे पुनीता ॥ सुरि नर देव न पावहि मीता ॥ सति पुरखु सतिगुरु
 परमेसरु जिंसु भेटत पारि पराइणा ॥ ५ ॥ पारजातु लोडहि मन पिआरे ॥ कामधेनु सोही दरबारे ॥ त्रिपति संतोखु सेवा गुर
 पूरे नामु कमाइ रसाइणा ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि मरहि पँच धातू ॥ भै पारब्रहम होवहि निरमला तू ॥ पारसु जब भेटै गुरु पूरा ता
 पारसु परसि दिखाइणा ॥ ७ ॥ कई बैकुँठ नाही लवै लागे ॥ मुकति बपुड़ी भी गिआनी तिआगे ॥ एकंकारु सतिगुर ते पाईये
 हउ बलि बलि गुर दरसाइणा ॥ ८ ॥ गुर की सेव न जाणै कोई ॥ गुरु पारब्रहमु अगोचरु सोई ॥ जिस नो लाइ लए सो सेवकु
 जिंसु वडभाग मथाइणा ॥ ९ ॥ गुर की महिमा बेद न जाणहि ॥ तुछ मात सुणि सुणि वखाणहि ॥ पारब्रहम अपरँपर सतिगुर
 जिंसु सिमरत मनु सीतलाइणा ॥ १० ॥ जा की सोइ सुणी मनु जीवै ॥ रिदै वसै ता ठँढा थीवै ॥ गुरुमुखहु अलाए ता सोभा
 पाए तिसु जम कै पँथि न पाइणा ॥ ११ ॥ संतन की सरणाई पड़िआ ॥ जीउ प्राण धनु आगै धरिआ ॥ सेवा सुरति न जाणा
 काई तुम करहु दइआ किरमाइणा ॥ १२ ॥ निरगुण कउ सँगि लेहु रलाए ॥ करि किरपा मोहिं टहलै लाए ॥ पखा फेरउ पीसउ
 संत आगै चरण धोइ सुखु पाइणा ॥ १३ ॥ बहुतु दूआरे भमि भमि आइआ ॥ तुमरी क्रिपा ते तुम सरणाइआ ॥ सदा सदा
 संतहु सँगि राखहु एहु नाम दानु देवाइणा ॥ १४ ॥ भए क्रिपाल गुसाई मेरे ॥ दरसनु पाइआ सतिगुर पूरे ॥ सूख सहज सदा
 आनँदा नानक दास दसाइणा ॥ १५ ॥ २ ॥ ७ ॥

मारु सोलहे महला ७ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सिमरै धरती अरु आकासा ॥ सिमरहि चँद सूरज गुणतासा ॥ पउण

पाणी बैसंतर सिमरहि सिमरै सगल उपारजना ॥ १ ॥ सिमरहि खंड दीप सभिलोआ ॥ सिमरहि पाताल पुरीआ सचुहोआ ॥
॥ सिमरहि खाणी सिमरहि बाणी सिमरहि सगले हरि जना ॥ २ ॥ सिमरहि ब्रहमे बिसन महेसा ॥ सिमरहि देवते कोडि
तेतीसा ॥ सिमरहि जखिय दैत सभि सिमरहि अगनतु न जाई जसु गना ॥ ३ ॥ सिमरहि पसु पंखी सभि भूता ॥ सिमरहि
बन परबत अउधूता ॥ लता बली साख सभ सिमरहि रवि रहिआ सुआमी सभ मना ॥ ४ ॥ सिमरहि थूल सूखम सभि जंता
॥ सिमरहि सिध साधिक हरि मंता ॥ गुप्त प्रगट सिमरहि प्रभ मेरे सगल भवन का प्रभ धना ॥ ५ ॥ सिमरहि नर नारी
आसरमा ॥ सिमरहि जाति जोति सभि वरना ॥ सिमरहि गुणी चतुर सभु बेते सिमरहि रैणी अरु दिना ॥ ६ ॥ सिमरहि
घड़ी मूरत पल निमखा ॥ सिमरै कालु अकालु सुचि सोचा ॥ सिमरहि सउण सासत्र सँजोगा अलखु न लखीरे इकु खिना
॥ ७ ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा जिसु भगती लावहु जनमु पदारथु सो जिना
॥ ८ ॥ जा कै मनि वूठा प्रभु अपना ॥ पूरै करमि गुर का जपु जपना ॥ सरब निरंतरि सो प्रभु जाता बहुडि न जोनी भरमि
रुना ॥ ९ ॥ गुर का सबदु वसै मनि जा कै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ सूख सहज आनंद नाम रसु अनहद बाणी
सहज धुना ॥ १० ॥ सो धनवंता जिनि प्रभु धिआइआ ॥ सो पतिवंता जिनि साधसंगु पाइआ ॥ पारब्रहमु जा कै मनि
वूठा सो पूर करमा ना छिना ॥ ११ ॥ जलि थलि महीअलि सुआमी सोई ॥ अवरु न कहीरे दूजा कोई ॥ गुर गिआन
अँजनि काटिओ भ्रमु सगला अवरु न दीसै एक बिना ॥ १२ ॥ ऊचो ते ऊचा दरबारा ॥ कहणु न जाई अँतु न पारा ॥
गहिर गँभीर अथाह सुआमी अतुलु न जाई किआ मिना ॥ १३ ॥ तू करता तेरा सभु कीआ ॥ तुझु बिनु अवरु न कोई
बीआ ॥ आदि मधि अँति प्रभु तूहै सगल पसारा तुम तना ॥ १४ ॥ जमदूतु तिसु निकटि न आवै ॥ साधसंगि हरि कीरतनु
गावै ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन जो श्रवणी प्रभ का जसु सुना ॥ १५ ॥ तू सभना का सभु को तेरा ॥ साचे साहिब गहिर

गँभीरा ॥ कहू नानक सेई जन ऊतम जो भावहि सुआमी तुम मना ॥ १६ ॥ १ ॥ ८ ॥ मारु महला ९ ॥ प्रभ समरथ
 सरब सुख दाना ॥ सिमरउ नामु होहु मिहरवाना ॥ हरि दाता जीअ जँत भेखारी जनु बाँछै जाचँगना ॥ १ ॥ मागउ जन
 धूरि परम गति पावउ ॥ जनम जनम की मैलु मिटावउ ॥ दीरघ रोग मिटहु हरि अउखधि हरि निरमलि रापै मँगना ॥ २
 ॥ श्रवणी सुणउ बिमल जसु सुआमी ॥ एका ओट तजउ बिखु कामी ॥ निवि निवि पाइ लगउ दास तेरे करि सुक्रितु नाही
 सँगना ॥ ३ ॥ रसना गुण गावै हरि तेरे ॥ मिटहि कमाते अवगुण मेरे ॥ सिमरि सिमरि सुआमी मनु जीवै पँच दूत तजि
 तँगना ॥ ४ ॥ चरन कमल जपि बोहिथि चरीरे ॥ सँतसँगि मिलि सागरु तरीरे ॥ अरचा बँदन हरि समत निवासी
 बाहुडि जोनि न नँगना ॥ ५ ॥ दास दासन को करि लेहु गोपाला ॥ क्रिपा निधान दीन दइआला ॥ सरबा सहाई पूरन
 परमेसरु मिलु कदे न होवी भँगना ॥ ६ ॥ मनु तनु अरपि धरी हरि आगै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥ जिस का सा
 सोई प्रतिपालकु हति तिआगी हउमै हँतना ॥ ७ ॥ जलि थलि पूरन अंतरजामी ॥ घटि घटि रविआ अछल सुआमी ॥
 भरम भीति खोई गुरि पूरे एकु रविआ सरबँगना ॥ ८ ॥ जत कत पेखउ प्रभ सुख सागर ॥ हरि तोटि भँडार नाही
 रतनागर ॥ अगह अगाह किछु मिति नहीं पाईरे सो बूझै जिसु किरपँगना ॥ ९ ॥ छाती सीतल मनु तनु ठँढा ॥ जनम
 मरण की मिटवी डँड्रा ॥ करु गहि काढि लीए प्रभि अपुनै अमिओ धारि दिसटँगना ॥ १० ॥ एको एकु रविआ सभ ठाई
 ॥ तिसु बिनु दूजा कोई नाही ॥ आदि मधि अँति प्रभु रविआ तिसन बुझी भरमँगना ॥ ११ ॥ गुरु परमेसरु गुरु गोबिंदु
 ॥ गुरु करता गुरु सद बखसँदु ॥ गुरु जपु जापि जपत फलु पाइआ गिआन दीपकु सँत सँगना ॥ १२ ॥ जो पेखा सो
 सभु किछु सुआमी ॥ जो सुनणा सो प्रभ की बानी ॥ जो कीनो सो तुमहि कराइओ सरणि सहाई सँतह तना ॥ १३ ॥
 जाचकु जाचै तुमहि अराधै ॥ पतित पावन पूरन प्रभ साधै ॥ एको दानु सरब सुख गुण निधि आन मँगन निहकिँचना ॥

१४ ॥ काइआ पात्रु प्रभु करनैहारा ॥ लगी लागि संत सँगारा ॥ निरमल सोइ बणी हरि बाणी मनु नामि मजीठै रँगना ॥ १५ ॥ सोलह कला संपूरन फलिआ ॥ अनत कला होइ ठाकुरु चड़िआ ॥ अनद बिनोद हरि नामु सुख नानक अमित रसु हरि भुँचना ॥ १६ ॥ २ ॥ ९ ॥

मारु सोलहे महला ९ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

तू साहिबु हउ सेवकु कीता ॥ जीउ पिँडु सभु तेरा दीता ॥ करन करावन सभु तूहै तूहै है नाही किछु असाड़ा ॥ १ ॥ तुमहि पढाए ता जग महि आए ॥ जो तुधु भाणा से करम कमाए ॥ तुझ ते बाहरि किछु न होआ ता भी नाही किछु काड़ा ॥ २ ॥ ऊहा हुकमु तुमारा सुणीरे ॥ ईहा हरि जसु तेरा भणीरे ॥ आपे लेख अलेखै आपे तुम सिउ नाही किछु झाड़ा ॥ ३ ॥ तू पिता सभिं बारिक थारे ॥ जिउ खेलावहिं तिउ खेलणहारे ॥ उझड़ मारगु सभु तुम ही कीना चलै नाही को वेपाड़ा ॥ ४ ॥ इकि बैसाइ रखे ग्रिह अंतरिं ॥ इकि पढाए देस दिसंतरिं ॥ इक ही कउ घासु इक ही कउ राजा इन महि कहीरे किआ कूड़ा ॥ ५ ॥ कवन सु मुकती कवन सु नरका ॥ कवनु सैसारी कवनु सु भगता ॥ कवन सु दाना कवनु सु होछा कवन सु सुरता कवनु जड़ा ॥ ६ ॥ हुकमे मुकती हुकमे नरका ॥ हुकमि सैसारी हुकमे भगता ॥ हुकमे होछा हुकमे दाना दूजा नाही अवरु धड़ा ॥ ७ ॥ सागरु कीना अति तुम भारा ॥ इकि खड़े रसातलिं करिं मनमुख गावारा ॥ इकना पारि लँघावहिं आपे सतिगुरु जिन का सचु बेड़ा ॥ ८ ॥ कउतकु कालु इहु हुकमि पढाइआ ॥ जीअ जँत ओपाइ समाइआ ॥ वेखै विगसै सभिं रँग माणे रचनु कीना इकु आखाड़ा ॥ ९ ॥ वडा साहिबु वडी नाई ॥ वड दातारु वडी जिंसु जाई ॥ अगम अगोचरु बेअँत अतोला है नाही किछु आहाड़ा ॥ १० ॥ कीमति कोइ न जाणै दूजा ॥ आपे आपि निरँजन पूजा ॥ आपि सु गिआनी आपि धिआनी आपि सतवँता अति गाड़ा ॥ ११ ॥ केतड़िआ

दिन गुप्तु कहाइआ ॥ केतड़िआ दिन सुँनि समाइआ ॥ केतड़िआ दिन धँधूकारा आपे करता परगटड़ा ॥ १२ ॥ आपे
 सकती सबलु कहाइआ ॥ आपे सूरु अमरु चलाइआ ॥ आपे सिव वरताईअनु अँतरि आपे सीतलु ठारु गड़ा ॥ १३ ॥
 जिसहि निवाजे गुरमुखि साजे ॥ नामु वसै तिसु अनहद वाजे ॥ तिस ही सुखु तिस ही ठकुराई तिसहि न आवै जमु नेड़ा ॥
 १४ ॥ कीमति कागद कही न जाई ॥ कहु नानक बेअँत गुसाई ॥ आदि मधि अँत प्रभु सोई हाथि तिसै कै नेबेड़ा ॥ १५ ॥
 तिसहि सरीकु नाही रे कोई ॥ किस ही बुतै जबाबु न होई ॥ नानक का प्रभु आपे आपे करि करि वेखै चोज खड़ा ॥ १६ ॥ १
 ॥ १० ॥ मारु महला ५ ॥ अचुत पारब्रहम परमेसुर अँतरजामी ॥ मधुसूदन दामोदर सुआमी ॥ रिखीकेस गोवरधनधारी
 मुरली मनोहर हरि रँगा ॥ १ ॥ मोहन माधव क्रिस्न मुरारे ॥ जगदीसुर हरि जीउ असुर सँघारे ॥ जगजीवन अबिनासी
 ठाकुर घट घट वासी है सँगा ॥ २ ॥ धरणीधर ईस नरसिँघ नाराइण ॥ दाड़ा अगे प्रिथमि धराइण ॥ बावन रूपु कीआ तुधु
 करते सभ ही सेती है चँगा ॥ ३ ॥ श्री रामचँद जिसु रूपु न रेखिआ ॥ बनवाली चक्रपाणि दरसि अनूपिआ ॥ सहस नेत्र
 मूरति है सहसा इकु दाता सभ है मँगा ॥ ४ ॥ भगति वछलु अनाथह नाथे ॥ गोपी नाथु सगल है साथे ॥ बासुदेव निरँजन
 दाते बरनि न साकउ गुण अँगा ॥ ५ ॥ मुकँद मनोहर लखमी नाराइण ॥ द्रोपती लजा निवारि उधारण ॥ कमलाकँत करहि
 कँतूहल अनद बिनोदी निहसँगा ॥ ६ ॥ अमोघ दरसन आजूनी सँभउ ॥ अकाल मूरति जिसु जदे नाही खउ ॥ अबिनासी
 अबिगत अगोचर सभु किछु तुझ ही है लगा ॥ ७ ॥ श्रीरँग बैकुँठ के वासी ॥ मछु कछु कूरमु आगिआ अउतरासी ॥ केसव
 चलत करहि निराले कीता लोड़हि सो होइगा ॥ ८ ॥ निराहारी निरवैरु समाइआ ॥ धारि खेलु चतुरभुजु कहाइआ ॥
 सावल सुँदर रूपु बणावहि बेणु सुनत सभ मोहैगा ॥ ९ ॥ बनमाला बिभूखन कमल नैन ॥ सुँदर कुँडल मुकट बैन ॥ सँख
 चक्र गदा है धारी महा सारथी सतसँगा ॥ १० ॥ पीत पीतँबर त्रिभवण धणी ॥ जगँनाथु गोपालु मुखि

भणी ॥ सारिँगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबँगा ॥ ११ ॥ निहकँटकु निहकेवलु कहीरे ॥ धनँजै जलिं थलिं
 है महीरे ॥ मिरत लोक पइआल समीपत असथिर थानु जिसु है अभगा ॥ १२ ॥ पतित पावन दुख भै भँजनु ॥ अहँकार
 निवारणु है भव खँडनु ॥ भगती तोखित दीन क्रिपाला गुणे न कित ही है भिंगा ॥ १३ ॥ निरँकारु अछल अडोले ॥
 जोति सरूपी सभु जगु मउलो ॥ सो मिलै जिसु आपि मिलार आपहु कोइ न पावैगा ॥ १४ ॥ आपे गोपी आपे काना ॥
 आपे गऊ चरावै बाना ॥ आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु नही इकु तिलु रँगा ॥ १५ ॥ एक जीह गुण कवन बखानै
 ॥ सहस फनी सेख अँतु न जानै ॥ नवतन नाम जपै दिनु राती इकु गुणु नाही प्रभ कहि सँगा ॥ १६ ॥ ओट गही जगत
 पित सरणाइआ ॥ भै भइआनक जमदूत दुतर है माइआ ॥ होहु क्रिपाल इछा करि राखहु साध सँतन कै सँगि सँगा ॥ १७
 ॥ द्रिसटिमान है सगल मिथेना ॥ इकु मागउ दानु गोबिद सँत रेना ॥ मसतकि लाइ परम पदु पावउ जिसु प्रापति सो
 पावैगा ॥ १८ ॥ जिंन कउ क्रिपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै रिदै पराते ॥ सगल नाम निधानु तिन पाइआ
 अनहद सबद मनि वाजँगा ॥ १९ ॥ किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ॥ सति नामु तेरा परा पूरबला ॥ कहु नानक भगत पर
 सरणाई देहु दरसु मनि रँगु लगा ॥ २० ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि ॥ तू आपे कथहि तै आपि वखाणहि ॥ नानक दासु
 दासन को करीअहु हरि भावै दास राखु सँगा ॥ २१ ॥ २ ॥ ११ ॥ मारु महला ५ ॥ अलह अगम खुदाई बँदे ॥ छोडि
 खिआल दुनीआ के धँधे ॥ होइ पै खाक फकीर मुसाफरु इहु दरवेसु कबूलु दरा ॥ १ ॥ सचु निवाज थकीन मुसला ॥
 मनसा मारि निवारिहु आसा ॥ देह मसीति मनु मउलाणा कलम खुदाई पाकु खरा ॥ २ ॥ सरा सरीअत ले कँमावहु ॥
 तरीकति तरक खोजि टोलावहु ॥ मारफति मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जितु फिरि न मरा ॥ ३ ॥ कुराणु कतेब
 दिल माहि कमाही ॥ दस अउरात रखहु बद राही ॥ पँच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा ॥ ४ ॥ मका

मिहर रोजा पै खाका ॥ भिसतु पीर लफज कमाइ अँदाजा ॥ हूर नूर मुसकु खुदाइआ बँदगी अलह आला हुजरा ॥ ५ ॥
 सचु कमावै सोई काजी ॥ जो दिलु सोधै सोई हाजी ॥ सो मुला मलऊन निवारै सो दरवेसु जिसु सिफति धरा ॥ ६ ॥ सभे
 वखत सभे करि वेला ॥ खालकु यादि दिलै महि मउला ॥ तसबी यादि करहु दस मरदनु सुँनति सीलु बँधानि बरा ॥ ७ ॥
 दिल महि जानहु सभ फिलहाला ॥ खिलखाना बिरादर हमू जँजाला ॥ मीर मलक उमरे फानाइआ एक मुकाम खुदाइ दरा
 ॥ ८ ॥ अवलि सिफति दूजी साबूरी ॥ तीजै हलेमी चउथै खैरी ॥ पँजवै पँजे इकतु मुकामै एहि पँजि वखत तेरे अपरपारा
 ॥ ९ ॥ सगली जानि करहु मउदीफा ॥ बद अमल छोडि करहु हथि कूजा ॥ खुदाइ एकु बुद्धि देवहु बांगां बुरगू बरखुरदार
 खरा ॥ १० ॥ हकु हलालु बखोरहु खाणा ॥ दिल दरिआउ धोवहु मैलाणा ॥ पीरु पछाणै भिसती सोई अजरार्दिलु न
 दोज ठरा ॥ ११ ॥ काइआ किरदार अउरत यकीना ॥ रँग तमासे माणि हकीना ॥ नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत
 सूरत दसतार सिरा ॥ १२ ॥ मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ अँतर की मलु दिल ते धोवै ॥ दुनीआ रँग न आवै नेडै जिउ
 कुसम पाटु घिउ पाकु हरा ॥ १३ ॥ जा कउ मिहर मिहर मिहरावाना ॥ सोई मरदु मरदु मरदाना ॥ सोई सेखु मसाइकु
 हाजी सो बँदा जिसु नजरि नरा ॥ १४ ॥ कुदरति कादर करण करीमा ॥ सिफति मुहबति अथाह रहीमा ॥ हकु हुकमु सचु
 खुदाइआ बुद्धि नानक बँदि खलास तरा ॥ १५ ॥ ३ ॥ १२ ॥ मारु महला ५ ॥ पारब्रहम सभ ऊच बिराजे ॥ आपे
 थापि उथापे साजे ॥ प्रभ की सरणि गहत सुखु पाईऐ किछु भउ न विआपै बाल का ॥ १ ॥ गरभ अगनि महि जिनिहि
 उबारिआ ॥ रक्त किरम महि नही सँघारिआ ॥ अपना सिमरनु दे प्रतिपालिआ ओहु सगल घटा का मालका ॥ २ ॥
 चरण कमल सरणार्ई आइआ ॥ साधसँगि है हरि जसु गाइआ ॥ जनम मरण सभि दूख निवारे जपि हरि हरि भउ नही
 काल का ॥ ३ ॥ समरथ अकथ अगोचर देवा ॥ जीअ जँत सभि ता की सेवा ॥ अँडज जेरज सेतज उतभुज बहु परकारी

पालका ॥ ४ ॥ तिसहि परापति होइ निधाना ॥ राम नाम रसु अंतरि माना ॥ करु गहि लीने अंध कूप ते विरले केई
 सालका ॥ ५ ॥ आदि अति मधि प्रभु सोई ॥ आपे करता करे सु होई ॥ भ्रमु भउ मिटिआ साधसंग ते दालिद न कोई
 घालका ॥ ६ ॥ ऊतम बाणी गाउ गोपाला ॥ साधसंगति की मंगहु खाला ॥ बासन मेटि निबासन होईये कलमल सगले
 जालका ॥ ७ ॥ सँता की इह रीति निराली ॥ पारब्रह्मु करि देखहि नाली ॥ सासि सासि आराधनि हरि हरि किउ सिमरत
 कीजै आलका ॥ ८ ॥ जह देखा तह अंतरजामी ॥ निमख न विसरहु प्रभ मेरे सुआमी ॥ सिमरि सिमरि जीवहि तेरे दासा
 बनि जलि पूरन थालका ॥ ९ ॥ तती वाउ न ता कउ लागै ॥ सिमरत नामु अनदिनु जागै ॥ अनद बिनोद करे हरि
 सिमरनु तिसु माइआ सँगि न तालका ॥ १० ॥ रोग सोग दूख तिसु नाही ॥ साधसँगि हरि कीरतनु गाही ॥ आपणा नामु
 देहि प्रभ प्रीतम सुणि बेनँती खालका ॥ ११ ॥ नाम रतनु तेरा है पिआरे ॥ रँगि रते तेरै दास अपारे ॥ तेरै रँगि रते तुधु जेहे
 विरले केई भालका ॥ १२ ॥ तिन की धूड़ि मांगै मनु मेरा ॥ जिन विसरहि नाही काहू बेरा ॥ तिन कै सँगि परम पदु पाई
 सदा सँगि हरि नालका ॥ १३ ॥ साजनु मीतु पिआरा सोई ॥ एकु द्विड़ाए दुर्मति खोई ॥ कामु क्रोधु अहँकारु तजाए
 तिसु जन कउ उपदेसु निरमालका ॥ १४ ॥ तुधु विणु नाही कोई मेरा ॥ गुरि पकड़ाए प्रभ के पैरा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर
 पूरे जिनि खँडिआ भरमु अनालका ॥ १५ ॥ सासि सासि प्रभु बिसरै नाही ॥ आठ पहर हरि हरि कउ धिआई ॥ नानक
 सँत तेरै रँगि रते तू समरथु वडालका ॥ १६ ॥ ४ ॥ १३ ॥

मारु महला ५ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

चरन कमल हिरदै नित धारी ॥ गुरु पूरा खिनु खिनु नमसकारी ॥ तनु मनु अरपि धरी सभु आगै जग महि नामु सुहावणा
 ॥ १ ॥ सो ठाकुरु किउ मनहु विसारे ॥ जीउ पिँडु दे साजि सवारे ॥ सासि गरासि समाले करता कीता अपणा पावणा ॥
 २ ॥ जाते बिरथा

कोऊ नाही ॥ आठ पहर हरि रखु मन माही ॥ साधसंगि भजु अचुत सुआमी दरगह सोभा पावणा ॥ ३ ॥ चारि पदारथ
 असट दसा सिधि ॥ नामु निधानु सहज सुखु नउ निधि ॥ सरब कलिआण जे मन महि चाहहि मिलि साधु सुआमी रावणा
 ॥ ४ ॥ सासत सिँमिति बेद वखाणी ॥ जनमु पदारथु जीत पराणी ॥ कामु क्रोधु निँदा परहरीरे हरि रसना नानक गावणा
 ॥ ५ ॥ जिंसु रूप न रेखिआ कुलु नही जाती ॥ पूरन पूरि रहिआ दिनु राती ॥ जो जो जपै सोई वडभागी बहुडि न जोनी
 पावणा ॥ ६ ॥ जिस नो बिसरै पुरखु बिधाता ॥ जलता फिरै रहै नित ताता ॥ अकिरतघणै कउ रखै न कोई नरक घोर महि
 पावणा ॥ ७ ॥ जीउ प्राण तनु धनु जिनि साजिआ ॥ मात गरभ महि राखि निवाजिआ ॥ तिस सिउ प्रीति छाडि अन
 राता काहू सिरै न लावणा ॥ ८ ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे ॥ घटि घटि वसहि सभन कै नेरे ॥ हाथि हमारै कछूरे नाही
 जिंसु जणाइहि तिसै जणावणा ॥ ९ ॥ जा कै मसतकि धुरि लिखि पाइआ ॥ तिस ही पुरख न विआपै माइआ ॥ नानक
 दास सदा सरणाई दूसर लवै न लावणा ॥ १० ॥ आगिआ दूख सूख सभि कीने ॥ अँमित नामु बिरलै ही चीने ॥ ता की
 कीमति कहणु न जाई जत कत ओही समावणा ॥ ११ ॥ सोई भगतु सोई वड दाता ॥ सोई पूरन पुरखु बिधाता ॥ बाल
 सहाई सोई तेरा जो तेरै मनि भावणा ॥ १२ ॥ मिरतु दूख सूख लिखि पाए ॥ तिलु नही बधहि घटहि न घटाए ॥ सोई होइ
 जिं करते भावै कहि कै आपु वजावणा ॥ १३ ॥ अँध कूप ते सेई काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥ किरपा धारि रखे करि
 अपुने मिलि साधु गोबिंदु धिआवणा ॥ १४ ॥ तेरी कीमति कहणु न जाई ॥ अचरज रूपु वडी वडिआई ॥ भगति दानु मँगै
 जनु तेरा नानक बले बलि जावणा ॥ १५ ॥ १ ॥ १४ ॥ २२ ॥ २४ ॥ २ ॥ १४ ॥ ६२ ॥

मारु वार महला ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ विणु गाहक गुणु वेचीरे तउ गुणु सहघो जाइ ॥ गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु

लाख विकाइ ॥ गुण ते गुण मिलि पाईऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ मोलि अमोलु न पाईऐ वणजि न लीजै हाटि ॥
 नानक पूरा तोलु है कबहु न होवै घाटि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ नाम विहूणे भरमसहि आवहि जावहि नीत ॥ इकि बांधे इकि
 ढीलिआ इकि सुखीए हरि प्रीति ॥ नानक सचा मनि लै सचु करणी सचु रीति ॥ २ ॥ पउडी ॥ गुर ते गिआनु पाइआ
 अति खड़गु करारा ॥ दूजा भ्रमु गडु कटिआ मोहु लोभु अहंकारा ॥ हरि जा नामु मनि वसिआ गुर सबदि वीचारा ॥ सच
 संजमि मति ऊतमा हरि लगा पिआरा ॥ सभु सचो सचु वरतदा सचु सिरजणहारा ॥ १ ॥ सलोकु मः ३ ॥ केदारा रागा
 विचि जाणीऐ भाई सबदे करे पिआरु ॥ सतसंगति सिउ मिलदो रहै सचे धरे पिआरु ॥ विचहु मलु कटे आपणी कुला
 काकरे उधारु ॥ गुणा की रासि संग्रहै अवगण कढै विडारि ॥ नानक मिलिआ सो जाणीऐ गुरु न छोडै आपणा दूजै न
 धरे पिआरु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सागरु देखउ डरि मरउ भै तैरै डरु नाहि ॥ गुर कै सबदि संतोखीआ नानक बिगसा नाइ
 ॥ २ ॥ मः ४ ॥ चडि बोहिथै चालसउ सागरु लहरी देइ ॥ ठाक न सचै बोहिथै जे गुरु धीरक देइ ॥ तितु दरि जाइ
 उतारीआ गुरु दिसै सावधानु ॥ नानक नदरी पाईऐ दरगह चलै मानु ॥ ३ ॥ पउडी ॥ निहकंटक राजु भुँचि तू गुरमुखि
 सचु कमाई ॥ सचै तखति बैठा निआउ करि सतसंगति मेलि मिली ॥ सचा उपदेसु हरि जापणा हरि सिउ बणि आई ॥
 ऐथै सुखदाता मनि वसै अति होइ सखाई ॥ हरि सिउ प्रीति ऊपजी गुरि सोझी पाई ॥ २ ॥ सलोकु मः १ ॥ भूली भूली
 मै फिरी पाधरु कहै न कोइ ॥ पूछहु जाइ सिआणिआ दुखु कटै मेरा कोइ ॥ सतिगुरु साचा मनि वसै साजनु उत ही ठाइ
 ॥ नानक मनु त्रिपतासीऐ सिफती साचै नाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आपे करणी कार आपि आपे करे रजाइ ॥ आपे किस ही
 बखसि लए आपे कार कमाइ ॥ नानक चानणु गुर मिले दुख बिखु जाली नाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ माइआ वेखि न भुलु तू
 मनमुख मूरखा ॥ चलदिआ नालि न चलई सभु झूठु दरबु लखा ॥ अगिआनी अंधु न बूझई सिर ऊपरि जम खड़गु

कलखा ॥ गुर परसादी उबरे जिन हरि रसु चखा ॥ आपि कराए करे आपि आपे रखा ॥ ३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जिना
 गुरु नही भेटिआ भै की नाही बिंद ॥ आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चुकै चिंद ॥ कापड़ जिवै पछोड़ीरे घड़ी मुहत
 घड़ीआलु ॥ नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जँजालु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ त्रिभवण ढूढी सजणा हउमै बुरी जगति ॥ ना
 झुरु हीअडे सचु चउ नानक सचो सचु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि आपे बखसिओनु हरि नामि समाणे ॥ आपे भगती
 लाइओनु गुर सबदि नीसाणे ॥ मनमुख सदा सोहणे सचै दरि जाणे ॥ ऐथै ओथै मुकति है जिन राम पछाणे ॥ धँनु धँनु से
 जन जिन हरि सेविआ तिन हउ कुरबाणे ॥ ४ ॥ सलोकु मः १ ॥ महल कुचजी मड़वड़ी काली मनहु कसुध ॥ जे गुण
 होवनि ता पिरु रवै नानक अवगुण मुँध ॥ १ ॥ मः १ ॥ साचु सील सचु सँजमी सा पूरी परवारि ॥ नानक अहिनिशि
 सदा भली पिर कै हेति पिआरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइआ ॥ किरपा करि कै आपणी
 गुर सबदि मिलाइआ ॥ गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइआ ॥ हरि रसु जिनी चाखिआ अन रस ठाकि रहाइआ ॥
 हरि रसु पी सदा त्रिपति भए फिरि त्रिसना भुख गवाइआ ॥ ५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ पिर खुसीए धन रावीए धन उरि नामु
 सीगारु ॥ नानक धन आगै खड़ी सोभावँती नारि ॥ १ ॥ मः १ ॥ ससुरै पेईरे कँत की कँतु अगँमु अथाहु ॥ नानक धँनु
 सोहागणी जो भावहि वेपरवाह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तखति राजा सो बहै जिं तखतै लाइक होई ॥ जिनी सचु पछाणिआ
 सचु राजे सेई ॥ एहिं भूपति राजे न आखीअहिं दूजै भाइ दुखु होई ॥ कीता किआ सालाहीरे जिंसु जादे बिलम न होई ॥
 निहचलु सचा एकु है गुरमुखि बूझै सु निहचलु होई ॥ ६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहिं
 ॥ नानक से सोहागणी जिं सतिगुर माहिं समाहिं ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मन के अधिक तरँग किउ दरि साहिब छुटीरे ॥ जे राचै
 सच रँगि गूडै रँगि अपार कै ॥ नानक गुर परसादी छुटीरे जे चितु लगै सचि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि का नामु अमोलु है

किउ कीमति कीजै ॥ आपे खिसाटि सभ साजीअनु आपे वरतीजै ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचु कीमति कीजै ॥ गुर सबदी
 कमलु बिगासिआ इव हरि रसु पीजै ॥ आवण जाणा ठाकिआ सुखि सहजिं सर्वीजै ॥ ७ ॥ सलोकु मः १ ॥ ना मैला ना
 धुंधला ना भगवा ना कचु ॥ नानक लालो लालु है सचै रता सचु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सहजि वणसपति फुलु फलु भवरु वसै भै
 खंडि ॥ नानक तरवरु एकु है एको फुलु भिरंगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो जन लूझहि मनै सिउ से सूरै परधाना ॥ हरि सेती सदा
 मिलि रहे जिनी आपु पछाना ॥ गिआनीआ का इहु महतु है मन माहि समाना ॥ हरि जीउ का महलु पाइआ सचु लाइ
 धिआना ॥ जिन गुर परसादी मनु जीतिआ जगु तिनहि जिताना ॥ ८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जोगी होवा जगि भवा घरि घरि
 भीखीआ लेउ ॥ दरगह लेखा मंगीऐ किसु किसु उतरु देउ ॥ भिखिआ नामु संतोखु मडी सदा सचु है नालि ॥ भेखी हाथ न
 लधीआ सभ बधी जमकालि ॥ नानक गला झूठीआ सचा नामु समालि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जितु दरि लेखा मंगीऐ सो दरु
 सेविहु न कोइ ॥ ऐसा सतिगुरु लोडि लहु जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ तिसु सरणाई छूटीऐ लेखा मंगै न कोइ ॥ सचु द्रिडाए
 सचु द्रिडु सचा ओहु सबदु देइ ॥ हिरदै जिसु दै सचु है तनु मनु भी सचा होइ ॥ नानक सचै हुकमि मॉनिऐ सची वडिआई देइ ॥
 सचे माहि समावसी जिस नो नदरि करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सूरै एहि न आखीअहि अहंकारि मरहि दुखु पावहि ॥ अंधे आपु न
 पछाणनी दूजै पचि जावहि ॥ अति करोध सिउ लूझदे अगै पिछै दुखु पावहि ॥ हरि जीउ अहंकारु न भावई वेद कूकि
 सुणावहि ॥ अहंकारि मुए से विगती गए मरि जनमहि फिरि आवहि ॥ ९ ॥ सलोकु मः ३ ॥ कागउ होइ न ऊजला लोहे
 नाव न पारु ॥ पिरम पदारथु मॉनि लै धंनु सवारणहारु ॥ हुकमु पछाणै ऊजला सिरि कासट लोहा पारि ॥ त्रिसना छोडै भै
 वसै नानक करणी सारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मारु मारण जो गए मारि न सकहि गवार ॥ नानक जे इहु मारीऐ गुर सबदी
 वीचारि ॥ एहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै सभु कोइ ॥ नानक मन ही कउ मनु मारसी जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥

दोवै तरफा उपाईओनु विचि सकति सिव वासा ॥ सकती किनै न पाइओ फिरि जनामि बिनासा ॥ गुरि सेविरे साति पाईरे
 जपि सास गिरास ॥ सिमिति सासत सोधि देखु ऊतम हरि दासा ॥ नानक नाम बिना को थिरु नही नामे बलि जासा ॥ १०
 ॥ सलोकु मः ३ ॥ होवा पँडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नव खँड मधे पूजीआ अपणै चजि वीचारि ॥ मतु मचा
 अखरु भुलि जाइ चउकै भिटै न कोइ ॥ झूठे चउके नानका सचा एको सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आपि उपाए करे आपि आपे
 नदरि करेइ ॥ आपे दे वडिआईआ कहु नानक सचा सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कँटकु कालु एकु है होरु कँटकु न सूझै ॥ अफरिओ
 जग महि वरतदा पापी सिउ लूझै ॥ गुर सबदी हरि भेदीरे हरि जपि हरि बूझै ॥ सो हरि सरणाई छुटीरे जो मन सिउ जूझै ॥
 मनि वीचारि हरि जपु करे हरि दरगह सीझै ॥ ११ ॥ सलोक मः १ ॥ हुकमि रजाई साखती दरगह सचु कबूलु ॥ साहिबु
 लेखा मँगसी दुनीआ देखि न भूलु ॥ दिल दरवानी जो करे दरवेसी दिलु रासि ॥ इसक मुहबति नानका लेखा करते पासि ॥ १
 ॥ मः १ ॥ अलगउ जोइ मधूकड़उ सारँगपाणि सबाइ ॥ हीरै हीरा बेधिआ नानक कँठि सुभाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनमुख
 कालु विआपदा मोहि माइआ लागे ॥ खिन महि मारि पछाड़सी भाइ दूजै ठागे ॥ फिरि वेला हथि न आवई जम का डँडु लागे
 ॥ तिन जम डँडु न लगई जो हरि लिव जागे ॥ सभ तेरी तुधु छडावणी सभ तुधै लागे ॥ १२ ॥ सलोकु मः १ ॥ सरबे जोइ
 अगछमी दूरु घनेरो आथि ॥ कालरु लादसि सरु लाघणउ लाभु न पूँजी साथि ॥ १ ॥ मः १ ॥ पूँजी साचउ नामु तू
 अखुटउ दरबु अपारु ॥ नानक वखरु निरमलउ धँनु साहु वापारु ॥ २ ॥ मः १ ॥ पुरब प्रीति पिराणि लै मोटउ ठाकुरु माणि
 ॥ माथै ऊभै जमु मारसी नानक मेलणु नामि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपे पिँडु सवारिओनु विचि नव निधि नामु ॥ इकि आपे
 भरमि भुलाइअनु तिन निहफल कामु ॥ इकनी गुरमुखि बुझिआ हरि आतमरामु ॥ इकनी सुणि कै मँनिआ हरि ऊतम कामु ॥
 अँतरि हरि रँगु उपजिआ गाइआ हरि गुण नामु ॥ १३ ॥ सलोकु मः १ ॥ भोलतणि भै मनि वसै हेकै पाधर हीडु ॥

अति ड़ाहपणि दुखु घणो तीने थाव भरीडु ॥ १ ॥ मः १ ॥ मांदलु बेदि सि बाजणो घणो धडीऐ जोइ ॥ नानक नामु
 समालि तू बीजउ अवरु न कोइ ॥ २ ॥ मः १ ॥ सागरु गुणी अथाहु किनि हाथाला देखीऐ ॥ वडा वेपरवाहु सतिगुरु
 मिलै त पारि पवा ॥ मझ भरि दुख बदुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ ३ ॥ पउडी ॥ जिनी अंदरु
 भालिआ गुर सबदि सुहावै ॥ जो इछनि सो पाइदे हरि नामु धिआवै ॥ जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै सो हरि गुण गावै
 ॥ धरमराइ तिन का मितु है जम मगि न पावै ॥ हरि नामु धिआवहि दिनसु राति हरि नामि समावै ॥ १४ ॥ सलोकु मः १
 ॥ सुणीऐ एकु वखाणीऐ सुरगि मिरति पइआलि ॥ हुकमु न जाई मेटिआ जो लिखिआ सो नालि ॥ कउणु मूआ कउणु
 मारसी कउणु आवै कउणु जाइ ॥ कउणु रहसी नानका किस की सुरति समाइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ हउ मुआ मै मारिआ पउणु
 वहै दरीआउ ॥ त्रिसना थकी नानका जा मनु रता नाइ ॥ लोइण रते लोइणी कँनी सुरति समाइ ॥ जीभ रसाइणि चूनडी
 रती लाल लवाइ ॥ अंदरु मुसकि इकोलिआ कीमति कही न जाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ इसु जुग महि नामु निधानु है नामो
 नालि चलै ॥ एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥ हरि जन नेडि न आवई जमकँकर जमकलै ॥ से साह सचे
 वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥ हरि किरपा ते हरि पाईऐ जा आपि हरि घलै ॥ १५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ मनमुख वापारै
 सार न जाणनी बिखु विहाइहि बिखु संग्रहहि बिखु सिउ धरहि पिआरु ॥ बाहरहु पँडित सदाइदे मनहु मूरख गावार ॥ हरि
 सिउ चितु न लाइनी वादी धरनि पिआरु ॥ वादा कीआ करनि कहाणीआ कूडु बोलि करहि आहारु ॥ जह महि राम नामु
 हरि निरमला होरु मैला सभु आकारु ॥ नानक नामु न चेतनी होइ मैले मरहि गवार ॥ १ ॥ मः ३ ॥ दुखु लगा बिनु
 सेविऐ हुकमु मँने दुखु जाइ ॥ आपे दाता सुखै दा आपे देइ सजाइ ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु किछु तिसै रजाइ ॥ २ ॥
 पउडी ॥ हरि नाम बिना जगतु है निरधनु बिनु नावै त्रिपति नाही ॥ दूजै भरमि भुलाइआ हउमै दुखु पाही ॥ बिनु करमा

किछु न पाईये जे बहुतु लोचाही ॥ आवै जाइ जँमै मरै गुर सबदि छुटाही ॥ आपि करै किसु आखीरे दूजा को नाही ॥ १६
 ॥ सलोकु मः ३ ॥ इसु जग महि सँती धनु खटिआ जिना सतिगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ सतिगुरि सचु द्विड़ाइआ इसु धन
 की कीमति कही न जाइ ॥ इतु धनि पाइये भुख लथी सुखु वसिआ मनि आइ ॥ जिँहा कउ धुरि लिखिआ तिनी पाइआ
 आइ ॥ मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ ॥ अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ॥ सांति न कदे आवई
 नह सुखु वसै मनि आइ ॥ सदा चिँत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ ॥ नानक विणु सतिगुर मति भवी सतिगुर नो मिलै ता
 सबदु कमाइ ॥ सदा सदा सुख महि रहै सचे माहि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जिनि उपाई मेदनी सोई सार करेइ ॥ एको
 सिमरहु भाइरहु तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ खाणा सबदु चँगिआईआ जितु खाधै सदा त्रिपति होइ ॥ पैणु सिफति सनाइ
 है सदा सदा ओहु ऊजला मैला कदे न होइ ॥ सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ॥ देही नो सबदु सीगारु है जितु
 सदा सदा सुखु होइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीये जिस नो आपि विखाले सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अँतरि जपु तपु सँजमो गुर
 सबदी जापै ॥ हरि हरि नामु धिआईये हउमै अगिआनु गवापै ॥ अँदरु अँम्रिति भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ॥ जिन
 चाखिआ से निरभउ भए से हरि रसि धापै ॥ हरि किरपा धारि पीआइआ फिरि कालु न विआपै ॥ १७ ॥ सलोकु मः ३ ॥
 लोकु अवगणा की बँनैह गँठड़ी गुण न विहाइँ कोइ ॥ गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ॥ गुर परसादी गुण
 पाईअनिह जिस नो नदरि करेइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुण अवगुण समानि हहि जि आपि कीते करतारि ॥ नानक हुकमि मँनिरे
 सुखु पाईये गुर सबदी वीचारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अँदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥ गुर सबदी दरु जाणीये अँदरि
 महलु असराउ ॥ खरे परखि खजानै पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा सदा सचु निआउ ॥ अँम्रित
 का रसु आइआ मनि वसिआ नाउ ॥ १८ ॥ सलोक मः १ ॥ हउमै करी तां तू नाही तू नाही तू होवहि हउ नाहि ॥ बूझहु

गिआनी बूझणा एह अकथ कथा मन माहि ॥ बिनु गुर ततु न पाईऐ अलखु वसै सभ माहि ॥ सतिगुरु मिलै त जाणीऐ जां
 सबदु वसै मन माहि ॥ आपु गइआ भ्रमु भउ गइआ जनम मरन दुख जाहि ॥ गुरमति अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि ॥
 नानक सोहँ हँसा जपु जापहु त्रिभवण तिसै समाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनु माणकु जिनि परखिआ गुर सबदी वीचारि ॥ से
 जन विरले जाणीअहि कलजुग विचि संसारि ॥ आपै नो आपु मिलि रहिआ हउमै दुबिधा मारि ॥ नानक नामि रते दूतरु तरे
 भउजलु बिखमु संसारु ॥ २ ॥ पउडी ॥ मनमुख अँदरु न भालनी मुठे अहँमते ॥ चारे कुँडां भवि थके अँदरि तिख तते ॥
 सिमिति सासत न सोधनी मनमुख विगुते ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ हरि नामु हरि सते ॥ ततु गिअनु वीचारिआ हरि जपि
 गते ॥ १९ ॥ सलोक मः २ ॥ आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥ तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥ १ ॥
 मः १ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ आपे जाणै सोइ ॥ किस नो कहीऐ नानका जा घरि वरतै सभु कोइ ॥ २ ॥ पउडी ॥
 सभे थोक विसारि इको मितु करि ॥ मनु तनु होइ निहालु पापा दहै हरि ॥ आवण जाणा चुकै जनमि न जाहि मरि ॥ सचु
 नामु आधारु सोगि न मोहि जरि ॥ नानक नामु निधानु मन माहि सँजि धरि ॥ २० ॥ सलोक मः ५ ॥ माइआ मनहु न
 वीसरै मांगै दँमा दँम ॥ सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करँम ॥ १ ॥ मः ५ ॥ माइआ साथि न चलई किआ लपटावहि
 अँध ॥ गुर के चरण धिआइ तू तूटहि माइआ बँध ॥ २ ॥ पउडी ॥ भाणै हुकमु मनाइओनु भाणै सुखु पाइआ ॥ भाणे
 सतिगुरु मेलिओनु भाणै सचु धिआइआ ॥ भाणे जेवड होर दाति नाही सचि आखि सुणाइआ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ
 तिन सचु कमाइआ ॥ नानक तिसु सरणागती जिनि जगतु उपाइआ ॥ २१ ॥ सलोक मः ३ ॥ जिन कउ अँदरि गिआनु
 नही भै की नाही बिँद ॥ नानक मुइआ का किआ मारणा जि आपि मारे गोविँद ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मन की पत्री वाचणी सुखी हू
 सुखु सारु ॥ सो ब्राहमणु भला आखीऐ जि बूझै ब्रहमु वीचारु ॥ हरि सालाहे हरि पडै गुर कै सबदि वीचारि ॥ आइआ

ओहु परवाणु है जिं कुल का करे उधारु ॥ अगै जाति न पुछीऐ करणी सबदु है सारु ॥ होरु कूडु पड़णा कूडु कमावणा
 बिखिआ नालि पिआरु ॥ अँदरिं सुखु न होवई मनमुख जनमु खुआरु ॥ नानक नामि रते से उबरे गुर कै हेति अपारि ॥
 २ ॥ पउड़ी ॥ आपे करिं करिं वेखदा आपे सभु सचा ॥ जो हुकमु न बूझै खसमा का सोई नरु कचा ॥ जितु भावै तितु
 लाइदा गुरमुखि हरि सचा ॥ सभना का साहिबु एकु है गुर सबदी रचा ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सभिं तिस दे जचा ॥
 जिउ नानक आपि नचाइदा तिव ही को नचा ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु ॥

मारु वार महला ५ डखणे मः ५ वृत्तिगुर प्रसादि ॥

तू चउ सजण मैडिआ डेई सिंसु उतारि ॥ नैण महिँजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नीहु महिँजा तऊ नालि
 बिआ नेह कूड़ावै डेखु ॥ कपड़ भोग डरावणे जिचरु पिरी न डेखु ॥ २ ॥ मः ५ ॥ उठी झालू कँतडे हउ पसी तउ दीदारु
 ॥ काजलु हारु तमोल रसु बिनु पसे हभिं रस छारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु सचु सभु धारिआ ॥ गुरमुखि
 कीतो थाटु सिरजि संसारिआ ॥ हरि आगिआ होए बेद पापु पुँनु वीचारिआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण बिसथारिआ ॥
 नव खँड प्रिथमी साजिं हरि रँग सवारिआ ॥ वेकी जँत उपाइ अँतरि कल धारिआ ॥ तेरा अँतु न जाणै कोइ सचु
 सिरजणहारिआ ॥ तू जाणहि सभ बिधि आपि गुरमुखि निसतारिआ ॥ १ ॥ डखणे मः ५ ॥ जे तू मित्रु असाडड़ा हिक
 भोरी ना वेछोडे ॥ जीउ महिँजा तउ मोहिआ कदि पसी जानी तोहि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ दुरजन तू जलु भाहड़ी विछोडे मरि
 जाहि ॥ कँता तू सउ सेजड़ी मैडा हभो दुखु उलाहि ॥ २ ॥ मः ५ ॥ दुरजनु दूजा भाउ है वेछोड़ा हउमै रोगु ॥ सजणु
 सचा पातिसाहु जिंसु मिलिं कीचै भोगु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू अगम दइआलु बेअँतु तेरी कीमति कहै कउणु ॥ तुधु
 सिरजिआ सभु संसारु तू नाइकु सगल भउणु ॥ तेरी कुदरति कोइ न जाणै मेरे ठाकुर सगल रउण ॥ तुधु अपडिं कोइ न

सकै तू अबिनासी जग उधरण ॥ तुधु थापे चारे जुग तू करता सगल धरण ॥ तुधु आवण जाणा कीआ तुधु लेपु न लगै त्रिण
 ॥ जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु लावहि सतिगुर चरण ॥ तू होरतु उपाइ न लभही अबिनासी खिसटि करण ॥ २ ॥
 डखणे मः ५ ॥ जे तू वतहि अँडणे हभ धरति सुहावी होइ ॥ हिकसु कँतै बाहरी मैडी वात न पुछै कोइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ हभे
 टोल सुहावणे सहु बैठा अँडणु मलि ॥ पही न वँजै बिरथड़ा जो घरि आवै चलि ॥ २ ॥ मः ५ ॥ सेज विछाई कँत कू कीआ
 हभु सीगारु ॥ इती मँझि न समावई जे गलि पहिरा हारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू पारब्रहमु परमेसरु जोनि न आवही ॥ तू
 हुकमी साजहि खिसटि साजि समावही ॥ तेरा रूपु न जाई लखिआ किउ तुझहि धिआवही ॥ तू सभ महि वरतहि आपि
 कुदरति देखावही ॥ तेरी भगति भरे भँडार तोटि न आवही ॥ एहि रतन जवेहर लाल कीम न पावही ॥ जिसु होवहि आपि
 दइआलु तिसु सतिगुर सेवा लावही ॥ तिसु कदे न आवै तोटि जो हरि गुण गावही ॥ ३ ॥ डखणे मः ५ ॥ जा मू पसी हठ
 मै पिरी महिजै नालि ॥ हभे डुख उलाहिअमु नानक नदरि निहालि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक बैठा भखे वाउ लँमे सेवहि दरु
 खड़ा ॥ पिरीए तू जाणु महिजा साउ जोई साई मुहु खड़ा ॥ २ ॥ मः ५ ॥ किआ गालाइओ भूछ पर वेलि न जोहे कँत तू
 ॥ नानक फुला सँदी वाड़ि खिड़िआ हभु सँसारु जिउ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सुघडु सुजाणु सरूपु तू सभ महि वरतँता ॥ तू
 आपे ठाकुरु सेवको आपे पूजँता ॥ दाना बीना आपि तू आपे सतवँता ॥ जती सती प्रभु निरमला मेरे हरि भगवँता ॥ सभु
 ब्रहम पसारु पसारिओ आपे खेलँता ॥ इहु आवा गवणु रचाइओ करि चोज देखँता ॥ तिसु बाहुड़ि गरभि न पावही जिसु
 देवहि गुर मँता ॥ जिउ आपि चलावहि तिउ चलदे किछु वसि न जँता ॥ ४ ॥ डखणे मः ५ ॥ कुरीए कुरीए वैदिआ तलि
 गाड़ा महरेरु ॥ वेखे छिटड़ि थीवदो जामि खिसँदो पेरु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सचु जाणै कचु वैदिओ तू आघू आघे सलवे ॥
 नानक आतसड़ी मँझि नैणू बिआ ढलि पबणि जिउ जँमिओ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ भोरे भोरे रूहडे सेवेदे आलकु ॥ मुदति

पई चिराणीआ फिरि कडू आवै रुति ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तुधु रूपु न रेखिआ जाति तू वरना बाहरा ॥ ए माणस जाणहि दूरि
 तू वरतहि जाहरा ॥ तू सभि घट भोगहि आपि तुधु लेपु न लाहरा ॥ तू पुरखु अनंदी अनंत सभ जोति समाहरा ॥ तू सभ
 देवा महि देव बिधाते नरहरा ॥ किआ आराधे जिहवा इक तू अबिनासी अपरपरा ॥ जिसु मेलहि सतिगुरु आपि तिस जे
 सभि कुल तरा ॥ सेवक सभि करदे सेव दरि नानकु जनु तेरा ॥ ५ ॥ डखणे मः ५ ॥ गहडडड़ा त्रिणि छाइआ गाफल
 जलिओहु भाहि ॥ जिना भाग मथाहडै तिन उसताद पनाहि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक पीठा पका साजिआ धरिआ आणि
 मउजूदु ॥ बाझहु सतिगुर आपणे बैठा झाकु दरूद ॥ २ ॥ मः ५ ॥ नानक भुसरीआ पकाईआ पाईआ थालै माहि ॥
 जिनी गुरु मनाइआ रजि रजि सेई खाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तुधु जग महि खेलु रचाइआ विचि हउमै पाईआ ॥ एकु मंदरु
 पंच चोर हहि नित करहि बुरिआईआ ॥ दस नारी इकु पुरखु करि दसे सादि लोभाइआ ॥ एनि माइआ मोहणी मोहीआ नित
 फिरहि भरमाईआ ॥ हाठा दोवै कीतीओ सिव सकति वरताईआ ॥ सिव अगै सकती हारिआ एवै हरि भाईआ ॥ इकि विचहु
 ही तुधु रखिआ जो सतसंगि मिलाईआ ॥ जल विचहु बिंबु उठालिओ जल माहि समाईआ ॥ ६ ॥ डखणे मः ५ ॥ आगाहा
 कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥ नानक सिद्धि इवेहा वार बहुडि न होवी जनमड़ा ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सजणु मैडा चाईआ हभ
 कही दा मितु ॥ हभे जाणनि आपणा कही न ठाहे चितु ॥ २ ॥ मः ५ ॥ गुझड़ा लधमु लालु मथै ही परगटु थिआ ॥ सोई
 सुहावा थानु जिथै पिरीए नानक जी तू वुठिआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जा तू मेरे वल है ता किआ मुहछँदा ॥ तुधु सभु किछु मैनो
 सउपिआ जा तेरा बँदा ॥ लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रहँदा ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करँदा ॥ एह वैरी
 मित्र सभि कीतिआ नह मँगहि मँदा ॥ लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसँदा ॥ अनँदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविँदा
 ॥ सभे काज सवारिऐ जा तुधु भावँदा ॥ ७ ॥ डखणे मः ५ ॥ डेखण कू मुसताकु मुखु किजेहा तउ धणी ॥ फिरदा

कितै हालि जा डिठमु ता मनु ध्रापिआ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ दुखीआ दरद घणे वेदन जाणे तू धणी ॥ जाणा लख भवे पिरी
 डिखँदो ता जीवसा ॥ २ ॥ मः ५ ॥ ढहदी जाइ करारि वहणि वहँदे मै डिठिआ ॥ सेई रहे अमाण जिना सतिगुरु भेटिआ ॥
 ३ ॥ पउड़ी ॥ जिसु जन तेरी भुख है तिसु दुखु न विआपै ॥ जिनि जनि गुरुमुखि बुझिआ सु चहु कुँडी जापै ॥ जो नरु उस
 की सरणी परै तिसु कँबहि पापै ॥ जनम जनम की मलु उतरै गुरु धूडी नापै ॥ जिनि हरि भाणा मँनिआ तिसु सोगु न सँतापै ॥
 हरि जीउ तू सभना का मितु है सभि जाणहि आपै ॥ ऐसी सोभा जनै की जेवडु हरि परतापै ॥ सभ अँतरि जन वरताइआ हरि
 जन ते जापै ॥ ८ ॥ डखणे मः ५ ॥ जिना पिछै हउ गई से मै पिछै भी रविआसु ॥ जिना की मै आसडी तिना महिजी आस
 ॥ १ ॥ मः ५ ॥ गिली गिली रोडडी भउदी भवि भवि आइ ॥ जो बैठे से फाथिआ उबरे भाग मथाइ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ डिठा
 हभ मझाहि खाली कोइ न जाणीरे ॥ तै सखी भाग मथाहि जिनी मेरा सजणु राविआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी दरि गुण
 गावदा जे हरि प्रभ भावै ॥ प्रभु मेरा थिर थावरी होर आवै जावै ॥ सो मँगा दानु गोसाईआ जितु भुख लहि जावै ॥ प्रभ जीउ
 देवहु दरसनु आपणा जितु ढाढी त्रिपतावै ॥ अरदासि सुणी दातारि प्रभि ढाढी कउ महलि बुलावै ॥ प्रभ देखदिआ दुख भुख
 गई ढाढी कउ मँगणु चिति न आवै ॥ सभे इछा पूरीआ लागि प्रभ कै पावै ॥ हउ निरगुणु ढाढी बखसिओनु प्रभि पुरखि वेदावै
 ॥ ९ ॥ डखणे मः ५ ॥ जा छुटे ता खाकु तू सुँजी कँतु न जाणही ॥ दुरजन सेती नेहु तू कै गुणि हरि रँगु माणही ॥ १ ॥ मः
 ५ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सिउ किउ मन रूसीरे जिसहि हमारी चिँद ॥ २ ॥ मः ५ ॥
 रते रँगि पारब्रहम कै मनु तनु अति गुलालु ॥ नानक विणु नावै आलूदिआ जिती होरु खिआलु ॥ ३ ॥ पवड़ी ॥ हरि जीउ
 जा तू मेरा मित्रु है ता किआ मै काड़ा ॥ जिनी ठगी जगु ठगिआ से तुधु मारि निवाड़ा ॥ गुरि भउजलु पारि लँघाइआ जिता
 पावाड़ा ॥ गुरुमती सभि रस भोगदा वडा आखाड़ा ॥ सभि इँद्रीआ वसि करि दितीओ सतवँता साड़ा ॥ जितु लाईअनि

तितै लगदीआ नह खिँजोताड़ा ॥ जो इछी सो फलु पाइदा गुरि अंदरि वाड़ा ॥ गुरु नानकु तुठा भाइरहु हरि वसदा नेड़ा ॥
 १० ॥ डखणे मः ५ ॥ जा मूँ आवहि चिति तू ता हभे सुख लहाउ ॥ नानक मन ही मँझि रँगावला पिरी तहिजा नाउ ॥ १
 ॥ मः ५ ॥ कपड़ भोग विकार ए हभे ही छार ॥ खाकु लोडेदा तँनि खे जो रते दीदार ॥ २ ॥ मः ५ ॥ किआ तकहि बिआ
 पास कर हीअडे हिकु अधारु ॥ थीउ सँतन की रेणु जितु लभी सुख दातारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ विण करमा हरि जीउ न
 पाईऐ बिनु सतिगुर मनूआ न लगै ॥ धरमु धीरा कलि अंदरे इहु पापी मूलि न तगै ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाए इक
 घड़ी मुहतु न लगै ॥ चारे जुग मै सोधिआ विणु संगति अहँकारु न भगै ॥ हउमै मूलि न छुटई विणु साधू सतसँगै ॥ तिचरु
 थाह न पावई जिचरु साहिब सिउ मन भंगै ॥ जिनि जनि गुरुमुखि सेविआ तिसु घरि दीबाणु अभगै ॥ हरि किरपा ते सुखु
 पाइआ गुरु सतिगुरु चरणी लगै ॥ ११ ॥ डखणे मः ५ ॥ लोड़ीदे हभ जाइ सो मीरा मीरँन सिरि ॥ हठ मँझाहू सो धणी
 चउदो मुखि अलाइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ माणिकू मोहि माउ डिँना धणी अपाहि ॥ हिआउ महिजा ठँढड़ा मुखहु सचु अलाइ ॥
 २ ॥ मः ५ ॥ मूथीआऊ सेज नैणा पिरी विछावणा ॥ जे देखै हिक वार ता सुख कीमाहू बाहरे ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ मनु लोचै
 हरि मिलण कउ किउ दरसनु पाईआ ॥ मै लख विड़ते साहिबा जे बिँद बोलाइआ ॥ मै चारे कुँडा भालीआ तुधु जेवडु न
 साईआ ॥ मै दसिहु मारगु सँतहो किउ प्रभू मिलईआ ॥ मनु अरपिहु हउमै तजहु इतु पँखि जुलाईआ ॥ नित सेविहु साहिबु
 आपणा सतसँगि मिलईआ ॥ सभे आसा पूरीआ गुरु महलि बुलाईआ ॥ तुधु जेवडु होरु न सुझई मेरे मित्र गोसाईआ ॥
 १२ ॥ डखणे मः ५ ॥ मूथीआऊ तखतु पिरी महिँजे पातिसाह ॥ पाव मिलावे कोलि कवल जिवै बिगसावदो ॥ १ ॥ मः
 ५ ॥ पिरीआ सँदड़ी भुख मू लावण थी विथरा ॥ जाणु मिठाई इख बेई पीडे ना हुटै ॥ २ ॥ मः ५ ॥ ठगा नीहुम त्रोडि
 जाणु गँधबा नगरी ॥ सुख घटाऊ डूइ इसु पँधाणु घर घणे ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ अकल कला नह पाईऐ प्रभु अलख

अलेखँ ॥ खट्टु दरसन भ्रमते फिरहि नह मिलीरे भेखँ ॥ वरत करहि चंद्राइणा से कितै न लेखँ ॥ बेद पड़हि संपूरना ततु सार
 न पेखँ ॥ तिलकु कढहि इसनानु करि अंतरि कालेखँ ॥ भेखी प्रभू न लभई विणु सची सिखँ ॥ भूला मारगि सो पवै जिसु
 धुरि मसतकि लेखँ ॥ तिनि जनमु सवारिआ आपणा जिनि गुरु अखी देखँ ॥ १३ ॥ डखणे मः ५ ॥ सो निवाहू गडि जो
 चलाऊ न थीरे ॥ कार कूड़ावी छडि संमलु सचु धणी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ हभ समाणी जोति जिउ जल घटाऊ चंद्रमा ॥ परगटु
 थीआ आपि नानक मसतकि लिखिआ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ मुख सुहावे नामु चउ आठ पहर गुण गाउ ॥ नानक दरगह
 मँनीअहि मिली निथावे थाउ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ बाहर भेखि न पाईरे पभु अंतरजामी ॥ इकसु हरि जीउ बाहरी सभ फिरै
 निकासी ॥ मनु रता कुटंब सिउ नित गरबि फिरामी ॥ फिरहि गुमानी जग महि किआ गरबहि दामी ॥ चलदिआ नालि न
 चलई खिन जाइ बिलामी ॥ बिचरदे फिरहि संसार महि हरि जी हुकामी ॥ करमु खुला गुरु पाइआ हरि मिलिआ सुआमी ॥
 जो जनु हरि का सेवको रि तिस की कामी ॥ १४ ॥ डखणे मः ५ ॥ मुखहु अलाए हभ मरणु पछाणँदो कोइ ॥ नानक तिना
 खाकु जिना यकीना हिक सिउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जाणु वसँदो मँझि पछाणू को हेकडो ॥ तै तनि पड़दा नाहि नानक जै गुरु
 भेटिआ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ मतड़ी कांढकु आह पाव धोवँदो पीवसा ॥ मू तनि प्रेमू अथाह पसण कू सचा धणी ॥ ३ ॥ पउड़ी
 ॥ निरभउ नामु विसारिआ नालि माइआ रचा ॥ आवै जाइ भवाईरे बहु जोनी नचा ॥ बचनु करे तै खिसकि जाइ बोले सभु
 कचा ॥ अँदरहु थोथा कूड़िआरु कूड़ी सभ खचा ॥ वैरु करै निरवैर नालि झूठे लालचा ॥ मारिआ सचै पातिसाहि वेखि धुरि
 करमचा ॥ जमदूती है हेरिआ दुख ही महि पचा ॥ होआ तपावसु धरम का नानक दरि सचा ॥ १५ ॥ डखणे मः ५ ॥
 परभाते प्रभ नामु जपि गुर के चरण धिआइ ॥ जनम मरण मलु उतरै सचे के गुण गाइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ देह अंधारी अंधु सुँजी
 नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जनँमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥ २ ॥ मः ५ ॥ लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥

नानक से अखड़ीआ बिअँनि जिनी डिसँदो मा पिरी ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जिनि जनि गरमुखि सेविआ तिनि सभि सुख पाई ॥
 ओहु आपि तरिआ कुटँब सिउ सभु जगतु तराई ॥ ओनि हरि नामा धनु सँचिआ सभ तिखा बुझाई ॥ ओनि छडे लालच दुनी
 के अँतरि लिव लाई ॥ ओसु सदा सदा घर अनँदु है हरि सखा सहाई ॥ ओनि वैरी मित्र सम कीतिआ सभ नालि सुभाई ॥
 होआ ओही अलु जग महि गुर गिआनु जपाई ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ हरि सिउ बणि आई ॥ १६ ॥ डखणे मः ५ ॥ सचु
 सुहावा काढीरे कूडै कूडी सोइ ॥ नानक विरले जाणीअहि जिन सचु पलै होइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सजण मुखु अनूपु अठे पहर
 निहालसा ॥ सुतड़ी सो सहु डिठु तै सपने हउ खँनीरे ॥ २ ॥ मः ५ ॥ सजण सचु परखि मुखि अलावणु थोथरा ॥ मँन
 मझाहू लखि तुधहु दूरि न सुपिरी ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ धरति आकासु पातालु है चँदु सूरु बिनासी ॥ बादिसाह साह उमराव खान
 ढाहि सेरे जासी ॥ रँग तुँग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥ काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥ पीर पैकाबर अउलीए
 को थिरु न रहासी ॥ शेजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ आवै जासी ॥ निहचलु
 सचु खुदाइ एकु खुदाइ बँदा अबिनासी ॥ १७ ॥ डखणे मः ५ ॥ डिठी हभ ढँढोलि हिकसु बाझु न कोइ ॥ आउ सजण तू मुखि
 लगु मेरा तनु मनु ठँढा होइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ आसकु आसा बाहरा मू मनि वडी आस ॥ आस निरासा हिकु तू हउ बलि बलि
 बलि गईआस ॥ २ ॥ मः ५ ॥ विछोड़ा सुणे दुखु विणु डिठे मरिओदि ॥ बाझु पिआरे आपणे बिरही ना धीरोदि ॥ ३ ॥
 पउड़ी ॥ तट तीरथ देव देवालिआ केदारु मथुरा कासी ॥ कोटि तेतीसा देवते सणु ईँद्रे जासी ॥ सिम्रिति सासत्र बेद चारि खटु
 दरस समासी ॥ पोथी पँडित गीत कवित कवते भी जासी ॥ जती सती सँनिआसीआ सबि कालै वासी ॥ मुनि जोगी दिगँबरा
 जमै सणु जासी ॥ जो दीसै सो विणसणा सभ बिनसि बिनासी ॥ थिरु पारब्रहमु परमेसरो सेवकु थिरु होसी ॥ १८ ॥
 सलोक डखणे मः ५ ॥ सै नँगो नह नँग भुखे लख न भुखिआ ॥ दुखे कोड़ि न दुख नानक पिरी पिखँदो सुभ दिसटि ॥

१ ॥ मः ५ ॥ सुख समूहा भोग भूमि सर्बाई को धणी ॥ नानक हभो रोगु मिरतक नाम विहूणिआ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ हिकस
 कूँ तू आहि पछाणू भी हिकु करि ॥ नानक आसड़ी निबाहि मानुख परथाई लजीवदो ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ निहचलु एकु नराइणो
 हरि अगम अगाथा ॥ निहचलु नामु निधानु है जिसु सिमरत हरि लाथा ॥ निहचलु कीरतनु गुण गोबिंद गुरुमुखि गावाथा ॥
 सचु धरमु तपु निहचलो दिनु रैनि अराथा ॥ दइआ धरमु तपु निहचलो जिसु करमि लिखाथा ॥ निहचलु मसतकि लेखु
 लिखिआ सो टलै न टलाथा ॥ निहचल संगति साध जन बचन निहचलु गुरु साथा ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सदा
 सदा आराथा ॥ १९ ॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ जो डबंदो आपि सो तराए किन्ह खे ॥ तारेदडो भी तारि नानक पिर सिउ
 रतिआ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जिथै कोइ कथँनि नाउ सुणँदो मा पिरि ॥ मूँ जुलाऊं तथि नानक पिरि पसँदो हरिओ थीओसि ॥ २
 ॥ मः ५ ॥ मेरी मेरी किआ करहि पुत्र कलत्र सनेह ॥ नानक नाम विहूणीआ निमुणीआदी देह ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ नैनी देखउ
 गुरु दरसनो गुरु चरणी मथा ॥ पैरी मारगि गुरु चलदा परवा फेरी हथा ॥ अकाल मूरति रिदै धिआइदा दिनु रैनि जपँथा ॥ मै
 छडिआ सगल अपाइणो भरवासै गुरु समरथा ॥ गुरि बखसिआ नामु निधानु सभो दुखु लथा ॥ भोगहु भुँचहु भाईहो पलै
 नामु अगथा ॥ नामु दानु इसनानु दिडु सदा करहु गुरु कथा ॥ सहजु भइआ प्रभु पाइआ जम का भउ लथा ॥ २० ॥ सलोक
 डखणे मः ५ ॥ लगड़ीआ पिरिअँनि पेखँदीआ ना तिपीआ ॥ हभ मझाहू सो धणी बिआ न डिठे कोइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥
 कथड़ीआ सँताह ते सुखाऊ पँधीआ ॥ नानक लधड़ीआ तिँनाह जिना भागु मथाहडै ॥ २ ॥ मः ५ ॥ डूंगरि जला थला
 भूमि बना फल कँदरा ॥ पाताला आकास पूरनु हभ घटा ॥ नानक पेखि जीओ इकतु सूति परोतीआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ हरि
 जी माता हरि जी पिता हरि जीउ प्रतिपालक ॥ हरि जी मेरी सार करे हम हरि के बालक ॥ सहजे सहजि खिलाइदा नही
 करदा आलक ॥ अउगणु को न चितारदा गल सेती लाइक ॥ मुहि मँगां सोई देवदा हरि पिता

सुखदाइक ॥ गिआनु रासि नामु धनु सउपिओनु इसु सउदे लाइक ॥ साइगी गुर नालि बहालिआ सरब सुख पाइक ॥ मै नालहु
 कदे न विछुडै हरि पिता सभना गला लाइक ॥ २१ ॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ठूठि सजण सँत
 पकिआ ॥ ओइ जीवँदे विछुडहि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक बिजुलीआ चमकँनि घुरनिह घटा अति
 कालीआ ॥ बरसनि मेघ अपार नानक संगमि पिरी सुहँदीआ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ जल थल नीरि भरे सीतल पवण झुलारदे ॥
 सेजड़ीआ सोइँन हीरे लाल जडँदीआ ॥ सुभर कपड़ भोग नानक पिरी विहूणी ततीआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ कारणु करतै जो
 कीआ सोई है करणा ॥ जे सउ धावहि प्राणीआ पावहि धुरि लहणा ॥ बिनु करमा किछु न लभई जे फिरहि सभ धरणा ॥ गुर
 मिलि भउ गोविँद का भै डरु दूरि करणा ॥ भै ते बैरागु ऊपजै हरि खोजत फिरणा ॥ खोजत खोजत सहजु उपजिआ फिरि
 जनमि न मरणा ॥ हिआइ कमाइ धिआइआ पाइआ साध सरणा ॥ बोहिथु नानक देउ गुरु जिंसु हरि चड़ाए तिसु भउजलु
 तरणा ॥ २२ ॥ सलोक मः ५ ॥ पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥ होहु सभाना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि
 ॥ १ ॥ मः ५ ॥ मूआ जीवँदा पेखु जीवँदे मरि जानि ॥ जिनाह मुहबति इक सिउ ते माणस परधान ॥ २ ॥ मः ५ ॥ जिंसु
 मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर ॥ भुख तिख तिसु न विआपई जमु नही आवै नीर ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ कीमति कहणु न
 जाईए सचु साह अडोलै ॥ सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउणु तुधुनो तोलै ॥ भँनण घड़ण समरथु है ओपति सभ परलै
 ॥ करण कारण समरथु है घटि घटि सभ बोलै ॥ रिजकु समाहे सभसै किआ माणसु डोलै ॥ गहिर गभीरु अथाहु तू गुण
 गिआन अमोलै ॥ सोई कँमु कमावणा कीआ धुरि मउलै ॥ तुधहु बाहरि किछु नही नानकु गुण बोलै ॥ २३ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु मारु बाणी कबीर जीउ की १८ शितिगुर प्रसादि ॥

पडीआ कवन कुमति तुम लागे ॥ बूडहुगे परवार सकल सिउ

रामु न जपहु अभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चँदन जस भारा ॥ राम नाम की गति नही जानी
 कैसे उतरसि पारा ॥ १ ॥ जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥ आपस कउ मुनिवर करि थापहु का
 कउ कहहु कसाई ॥ २ ॥ मन के अँधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥ माइआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा
 जाई ॥ ३ ॥ नारद बचन बिआसु कहत है सुक कउ पूछहु जाई ॥ कहि कबीर रामै रमि छूटहु नाहि त बूडे भाई ॥ ४ ॥ १
 ॥ बनहि बसे किउ पाईऐ जउ लउ मनहु न तजहि बिकार ॥ जिह घरु बनु समसरि कीआ ते पूरे संसार ॥ १ ॥ सार सुखु
 पाईऐ रामा ॥ रँगे खहु आतमै राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जटा भसम लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु ॥ मनु जीते जगु
 जीतिआ जां ते बिखिआ ते होइ उदासु ॥ २ ॥ अँजनु देइ सभै कोई टुकु चाहन नाहि बिडानु ॥ गिआन अँजनु जिह
 पाइआ ते लोइन परवानु ॥ ३ ॥ कहि कबीर अब जानिआ गुरि गिआनु दीआ समझाइ ॥ अँतरगति हरि भेटिआ अब
 मेश मनु कतहू न जाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ रिधि सिधि जा कउ फुरी तब काहू सिउ किआ काज ॥ तेरे कहने की गति किआ
 कहउ मै बोलत ही बड लाज ॥ १ ॥ रामु जिह पाइआ राम ॥ ते भवहि न बारै बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ झूठा जगु डहकै घना
 दिन दुइ बरतन की आस ॥ राम उदकु जिह जन पीआ तिहि बहुरि न भई पिआस ॥ २ ॥ गुर प्रसादि जिह बूझिआ आसा
 ते भइआ निरासु ॥ सभु सचु नदरी आइआ जउ आतम भइआ उदासु ॥ ३ ॥ राम नाम रसु चाखिआ हरि नामा हर तारि
 ॥ कहु कबीर कँचनु भइआ भ्रमु गइआ समुद्रै पारि ॥ ४ ॥ ३ ॥ उदक समुँद सलल की साखिआ नदी तरँग समावहिंगे
 ॥ सुँनहि सुँनु मिलिआ समदरसी पवन रूप होइ जावहिंगे ॥ १ ॥ बहुरि हम काहे आवहिंगे ॥ आवन जाना हुकमु तिसै
 का हुकमै बुझि समावहिंगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब चूकै पँच धातु की रचना ऐसे भरमु चुकावहिंगे ॥ दरसनु छोडि भए
 समदरसी एको नामु धिआवहिंगे ॥ २ ॥ जित हम लाए तित ही लागे तैसे करम कमावहिंगे ॥ हरि जी क्रिपा करे जउ

अपनी तौ गुर के सबदि समावहिगे ॥ ३ ॥ जीवत मरहु मरहु फुनि जीवहु पुनरपि जनमु न होई ॥ कहु कबीर जो नामि
समाने सुँन रहिआ लिव सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ जउ तुम्ह मो कउ दूरि करत हउ तउ तुम मुकति बतावहु ॥ एक अनेक होइ
रहिओ सगल महि अब कैसे भरमावहु ॥ १ ॥ राम मो कउ तारि कहां लै जई है ॥ सोधउ मुकति कहा देउ कैसी करि
प्रसादु मोहि पाई है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तारन तरनु तबै लगु कहीऐ जब लगु ततु न जानिआ ॥ अब तउ बिमल भए घट ही
महि कहि कबीर मनु मानिआ ॥ २ ॥ ५ ॥ जिनि गड़ कोट कीए कँचन के छोडि गइआ सो रावनु ॥ १ ॥ काहे कीजतु
है मनि भावनु ॥ जब जमु आइ केस ते पकरै तह हरि को नामु छडावन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालु अकालु खसम का कीनूह
इहु परपँचु बधावनु ॥ कहि कबीर ते अँते मुकते जिन्ह हिरदै राम रसाइनु ॥ २ ॥ ६ ॥ देही गावा जीउ धर महतउ बसहि
पँच किरसाना ॥ नैनू नकटू खवनू रसपति इँद्री कहिआ न माना ॥ १ ॥ बाबा अब न बसउ इह गाउ ॥ घरी घरी का
लेखा मागै काइथु चेतू नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरमराइ जब लेखा मागै बाकी निकसी भारी ॥ पँच क्रिसानवा भागि गए
लै बाधिओ जीउ दरबारी ॥ २ ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु खेत ही करहु निबेरा ॥ अब की बार बखसि बँदे कउ बहुरि न
भउजलि फेरा ॥ ३ ॥ ७ ॥

रागु मारु बाणी कबीर जीउ की १४ सतिगुर प्रसादि ॥

अनभउ किनै न देखिआ बैरागीअडे ॥ बिनु भै अनभउ होइ वणाहँबै ॥ १ ॥ सहु हदूरि देखै तां भउ पवै बैरागीअडे ॥
हुकमै बूझै त निरभउ होइ वणाहँबै ॥ २ ॥ हरि पाखँडु न कीजई बैरागीअडे ॥ पाखँडि रता सभु लोकु वणाहँबै ॥ ३ ॥
त्रिसना पासु न छोडई बैरागीअडे ॥ ममता जालिआ पिँडु वणाहँबै ॥ ४ ॥ चिँता जालि तनु जालिआ बैरागीअडे ॥ जे
मनु मिरतकु होइ वणाहँबै ॥ ५ ॥ सतिगुर बिनु बैरागु न होवई बैरागीअडे ॥ जे लोचै सभु कोइ वणाहँबै ॥ ६ ॥ करमु
होवै सतिगुरु मिलै बैरागीअडे ॥ सहजे पावै सोइ वणाहँबै ॥ ७ ॥ कहु कबीर इक बेनती बैरागीअडे ॥

मो कउ भउजलु पारि उतारि वणाहँबै ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥ राजन कउन तुमारै आवै ॥ ऐसो भाउ बिदर को देखिओ ओहु
 गरीबु मोहि भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हसती देखि भरम ते भूला स्त्री भगवानु न जानिआ ॥ तुमरो दूधु बिदर को पानोह अँमितु
 करि मै मानिआ ॥ १ ॥ खीर समानि सागु मै पाइआ गुन गावत रैनि बिहानी ॥ कबीर को ठाकुरु अनद बिनोदी जाति न
 काहू की मानी ॥ २ ॥ ९ ॥ सलोक कबीर ॥ गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥ खेतु जु मांडिओ सूरमा अब
 जूझन को दाउ ॥ १ ॥ सूरसो पहिचानीरे जु लरै दीन के हेत ॥ पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥ २ ॥ २ ॥
 कबीर का सबदु

रागु मारु बाणी नामदेउ जी की १४ सितिगुर प्रसादि ॥

चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ ॥ मुकति भइओ चउहँ जुग जानिओ जसु कीरति माथे छत्रु
 धरिओ ॥ १ ॥ राजा राम जपत को को न तरिओ ॥ गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ सँख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ ॥ निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन सँताप
 हिरिओ ॥ २ ॥ अँबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ ॥ नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रुअ अटलु
 अजहू न टरिओ ॥ ३ ॥ भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिँघ रूप होइ देह धरिओ ॥ नामा कहै भगति बसि केसव
 अजहँ बलि के दुआर खरो ॥ ४ ॥ १ ॥ मारु कबीर जीउ ॥ दीनु बिसारिओ रे दिवाने दीनु बिसारिओ रे ॥ पेटु भरिओ
 पसूआ जिउ सोइओ मनुखु जनमु है हारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगति कबहू नही कीनी रचिओ धँधै झूठ ॥ सुआन
 सूकर बाइस जिवै भटकतु चालिओ ऊठि ॥ १ ॥ आपस कउ दीरघु करि जानै अउरन कउ लगमात ॥ मनसा बाचा
 करमना मै देखे दोजक जात ॥ २ ॥ कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ निँदा करते जनमु सिरानो कबहू न सिमरिओ
 रामु ॥ ३ ॥ कहि कबीर चेतै नही मूरख मुगधु गवारु ॥ राम नामु जानिओ नही कैसे उतरसि पारि ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु मारु बाणी जैदेउ जीउ की १०८ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

चँद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥ अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघडु घड़िआ तहा
अपिउ पीआ ॥ १ ॥ मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥ तेरी दुबिधा दिसटि सँमानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अरधि कउ अरधिआ
अरपि कउ सरपिआ सलल कउ सललि सँमानि आइआ ॥ बदति जैदेउ जैदेव कउ रँमिआ ब्रहमु निरबाणु लिव लीणु पाइआ ॥ २
॥ १ ॥ कबीरु ॥ मारु ॥ रामु सिमरु पछुताहिगा मन ॥ पापी जीअरा लोभु करतु है आजु कालि उठि जाहिगा ॥ १ ॥
रहाउ ॥ लालच लागे जनमु गवाइआ माइआ भरम भुलाहिगा ॥ धन जोबन का गरबु न कीजै कागद जिउ गलि जाहिगा ॥ १
॥ जउ जमु आइ केस गहि पटकै ता दिन किछु न बसाहिगा ॥ सिमरनु भजनु दइआ नही कीनी तउ मुखि चोटा खाहिगा ॥ २
॥ धरमराइ जब लेखा मागै किआ मुखु ले के जाहिगा ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे सँतहु साधसंगति तरि जाहिगा ॥ ३ ॥ १ ॥

रागु मारु बाणी रविदास जीउ की १०८ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता
पर तुहीं, ढरै ॥ नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥ १ ॥ नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥ कहि रविदासु
सुनहु रे सँतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥ २ ॥ १ ॥ मारु ॥ सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥ चारि पदारथ
असट महा सिधि नव निधि करतल ता कै ॥ १ ॥ हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥ अवर सभ छाडि बचन रचना ॥ १ ॥ रहाउ
॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥ बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ २ ॥ सहज
समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥ ३ ॥ २ ॥ १७ ॥

तुखारी छँत महला १ बारह माहा

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

तू सुणि किरत करँमा पुरबि कमाइआ ॥ सिरि सिरि सुख सहँमा देहि सु तू भला ॥ हरि रचना तेरी किआ गति मेरी हरि बिनु
घड़ी न जीवा ॥ प्रिअ बाझु दुहेली कोइ न बेली गुरमुखि अँमितु पीवां ॥ रचना राचि रहे निरँकारी प्रभ मनि करम सुकरमा ॥
नानक पँथु निहाले साधन तू सुणि आतमरामा ॥ १ ॥ बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ ॥ साधन सभि रसु चोलै अँकि
समाणीआ ॥ हरि अँकि समाणी जा प्रभ भाणी सा सोहागणि नारे ॥ नव घर थापि महला घरु ऊचउ निज घरि वासु मुरारे ॥
सब तेरी तू मेरा प्रीतमु निसि बासुर रँगि रावै ॥ नानक प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा कोकिल सबदि सुहावै ॥ २ ॥ तू सुणि हरि रस
भिँने प्रीतम आपणे ॥ मनि तनि रवत रवँने घड़ी न बीसरै ॥ किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए ॥ ना कोई
मेरा हउ किसु केरा हरि बिनु रहणु न जाए ॥ ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥ नानक द्रिसटि दीरघ सुखु पावै
गुर सबदी मनु धीरा ॥ ३ ॥ बरसै अँमित धार बूँद सुहावणी ॥ साजन मिले सहजि सुभाइ हरि सिउ प्रीति बणी ॥ हरि मँदरि
आवै जा प्रभ भावै धन ऊभी गुण सारी ॥ घरि घरि कँतु रवै सोहागणि हउ किउ कँति विसारी ॥ उनवि घन छाए बरसु सुभाए
मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥ नानक वरसै अँमित बाणी करि किरपा घरि आवै ॥

४ ॥ चेत बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥ बन फूले मँझ बारिं मै पिरु घरिं बाहुडै ॥ पिरु घरिं नही आवै धन किउ सुखु पावै
 बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥ कोकिल अँबि सुहावी बोलै किउ दुखु अँकि सहीजै ॥ भवरु भवँता फूली डाली किउ जीवा मरु
 माए ॥ नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरिं धन पाए ॥ ५ ॥ वैसाखु भला साखा वेस करे ॥ धन देखै हरिं
 दुआरि आवहु दइआ करे ॥ घरिं आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥ कीमति कउण करे तुधु भावां देखि
 दिखावै ढोलो ॥ दूरि न जाना अँतरि माना हरि का महलु पछाना ॥ नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥ ६
 ॥ माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥ थल तापहि सर भार साधन बिनउ करै ॥ धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी
 प्रभ भावा ॥ साचै महलिं रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥ निमाणी नितानी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥ नानक
 जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥ ७ ॥ आसाडु भला सूरजु गगनि तपै ॥ धरती दूख सहै सोखै अगनि
 भरवै ॥ अगनि रसु सोखै मरीरे धोखै भी सो किरतु न हारे ॥ रथु फिरै छाडिआ धन ताकै टीडु लवै मँझिं बारे ॥ अवगण
 बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु साचु समाले ॥ नानक जिस नो इह मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥ ८ ॥ सावणिं
 सरस मना घण वरसहि रुति आए ॥ मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥ पिरु घरिं मही आवै मरीरे हावै दामनि
 चमकि डराए ॥ सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥ हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापडु तनि न सुखावए ॥
 नानक सा सोहागणि कँती पिर कै अँकि समावए ॥ ९ ॥ भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥ जल थल नीरि भरे
 बरस रुते रँगु माणी ॥ बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवँते ॥ प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअँगम फिरहि
 डसँते ॥ मछर डँग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईरे ॥ नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईरे ॥
 १० ॥ असुनि आउ पिरा साधन झूरिं मुई ॥ ता मिलिरे प्रभ मेले दुजै भाइ खुई ॥ झूठि विगुती ता पिर मुती

कुकहु काह सि फुले ॥ आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि चलत मनु डोले ॥ दह दिशि साख हरी हरीआवल सहजि पकै सो
 मीठा ॥ नानक असुनि मिलहु पिआरे सतिगुर भए बसीठा ॥ ११ ॥ कतकि किरतु पइआ जो प्रभ भाइआ ॥ दीपकु सहजि
 बलै तति जलाइआ ॥ दीपक रस तेलो धन पिर मेलो धन ओमाहै सरसी ॥ अवगण मारी मरै न सीझै गुणि मारी ता मरसी ॥
 नामु भगति दे निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी आसा ॥ नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥ १२ ॥ मँघर
 माहु भला हरि गुण अँकि समावए ॥ गुणवँती गुण रवै मै पिरु निहचलु भावए ॥ निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता चँचलु
 जगतु सबाइआ ॥ गिआनु धिआनु गुण अँकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥ गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु
 भागै ॥ नानक साधन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥ १३ ॥ पोखि तुखारु पडै वणु त्रिणु रसु सोखै ॥ आवत की
 नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु गुर सबदी रँगु माणी ॥ अँडज जेरज सेतज उतभुज घटि
 घटि जोति समाणी ॥ दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावउ मति देहो ॥ नानक रँगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो
 ॥ १४ ॥ माघि पुनीत भई तीरथु अँतरि जानिआ ॥ साजन सहजि मिले गुण गहि अँकि समानिआ ॥ प्रीतम गुण अँके
 सुणि प्रभ बँके तुधु भावा सरि नावा ॥ गँग जमुन तह बेणी सँगम सात समुँद समावा ॥ पुँन दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि
 एको जाता ॥ नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता ॥ १५ ॥ फलगुनि मनि रहसी प्रेमु सुभाइआ ॥
 अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥ मन मोहु चुकाइआ जा तिसु भाइआ करि किरपा घरि आउ ॥ बहुते वेस करी पिर
 बाइहु महली लहा न थाओ ॥ हार डोर रस पाट पटँबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥ नानक मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ
 नारी ॥ १६ ॥ बे दस माह रुती थिती वार भले ॥ घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥ प्रभ मिले पिआरे कारज सारे
 करता सभ बिधि जाणै ॥ जिनि सीगारी तिसहि पिआरी मेलु भइआ रँगु माणै ॥ घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी गुरमुखि

मसतकि भागो ॥ नानक अहिनिंसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥ १७ ॥ १ ॥ तुखारी महला १ ॥ पहिलै पहरै
 नैण सलोनडीए रैणि अँधिआरी राम ॥ वखरु राखु मुईए आवै वारी राम ॥ वारी आवै कवणु जगावै सूती जम रसु चूसए
 ॥ रैणि अँधेरी किआ पति तेरी चोरु पडै घरु मूसए ॥ राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनँती मेरीआ ॥ नानक मूरखु
 कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अँधेरीआ ॥ १ ॥ दुजा पहरु भइआ जागु अचेती राम ॥ वखरु राखु मुईए खाजै खेती राम
 ॥ राखहु खेती हरि गुर हेती जागत चोरु न लागै ॥ जम मणि न जावहु ना दुखु पावहु जम का डरु भउ भागै ॥ रवि ससि
 दीपक गुरमति दुआरै मनि साचा मुखि धिआवए ॥ नानक मूरखु अजहु न चेतै किव दूजै सुखु पावए ॥ २ ॥ तीजा पहरु
 भइआ नीद विआपी राम ॥ माइआ सुत दारा दूखि संतापी राम ॥ माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै ॥
 नामु धिआवै ता सुखु पावै गुरमति कालु न ग्रासै ॥ जँमणु मरणु कालु नही छोडै विणु नावै संतापी ॥ नानक तीजै त्रिबिधि
 लोका माइआ मोहि विआपी ॥ ३ ॥ चउथा पहरु भइआ दउतु बिहागै राम ॥ तिन घरु राखिअडा जो अनदिनु जागै राम
 ॥ गुर पूछि जागे नामि लागे तिना रैणि सुहेलीआ ॥ गुर सबदु कमावहि जनमि न आवहि तिना हरि प्रभु बेलीआ ॥ कर
 कँपि चरण सरीरु कँपै नैण अँधुले तनु भसम से ॥ नानक दुखीआ जुग चारे बिनु नाम हरि के मनि वसे ॥ ४ ॥ खूली गँठि
 उठो लिखिआ आइआ राम ॥ रस कस सुख ठाके बाँधि चलाइआ राम ॥ बाँधि चलाइआ जा प्रभ भाइआ ना दीसै ना सुणीरे
 ॥ आपण वारी सबसै आवै पकी खेती लुणीरे ॥ घड़ी चसे का लेखा लीजै बुरा भला सहु जीआ ॥ नानक सुरि नर सबदि
 मिलाए तिनि प्रभि कारणु कीआ ॥ ५ ॥ २ ॥ तुखारी महला १ ॥ तारा चडिआ लँमा किउ नदरि निहालिआ राम ॥
 सेवक पूर करँमा सतिगुर सबदि दिखालिआ राम ॥ गुर सबदि दिखालिआ सचु समालिआ अहिनिंसि देखि बीचारिआ ॥
 धावत पँच रहे घरु जाणिआ कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ अँतरि जोति भई गुर साखी चीने राम करँमा ॥ नानक

हउमै मारि पतीणे तारा चडिआ लँमा ॥ १ ॥ गुरुमुखि जागि रहे चूकी अभिमानी राम ॥ अनदिनु भोरु भइआ सचि
 समानी राम ॥ साचि समानी गुरुमुखि मनि भानी गुरुमुखि साबतु जागे ॥ साचु नामु अँम्रितु गुरि दीआ हरि चरनी लिव
 लागे ॥ प्रगटी जोति जोति महि जाता मनमुखि भरमि भुलाणी ॥ नानक भोरु भइआ मनु मानिआ जागत रैणि विहाणी
 ॥ २ ॥ अउगण वीसरिआ गुणी घरु कीआ राम ॥ एको रवि रहिआ अवरु न बीआ राम ॥ रवि रहिआ सोई अवरु न
 कोई मन ही ते मनु मानिआ ॥ जिनि जल थल त्रिभवण घटु घटु थापिआ सो प्रभु गुरुमुखि जानिआ ॥ करण कारण
 समरथ अपारा त्रिबिधि मेटि समाई ॥ नानक अवगण गुणह समाणे ऐसी गुरुमति पाई ॥ ३ ॥ आवण जाण रहे चूका
 भोला राम ॥ हउमै मारि मिले साचा चोला राम ॥ हउमै गुरि खोई परगटु होई चूके सोग सँतापै ॥ जोती अँदरि जोति
 समाणी आपु पछाता आपै ॥ पेईअडै घरि सबदि पतीणी साहुरडै पिर भाणी ॥ नानक सतिगुरि मेलि मिली चूकी काणि
 लोकाणी ॥ ४ ॥ ३ ॥ तुखारी महला १ ॥ भोलावडै भुली भुलि भुलि पछोताणी ॥ पिरि छोडिअडी सुती पिर की सार
 न जाणी ॥ पिरि छोडी सुती अवगणि मुती तिसु धन विधण राते ॥ कामि क्रोधि अहँकारि विगुती हउमै लगी ताते ॥
 उडरि हँसु चलिआ फुरमाइआ भसमै भसम समाणी ॥ नानक सचे नाम विहूणी भुलि भुलि पछोताणी ॥ १ ॥ सुणि नाह
 पिआरे इक बेनँती मेरी ॥ तू निज घरि वसिअडा हउ रुलि भसमै ढेरी ॥ बिनु अपने नाहै कोइ न चाहै किआ कहीरे किआ
 कीजै ॥ अँम्रित नामु रसन रसु रसना गुर सबदी रसु पीजै ॥ विणु नावै को सँगि न साथी आवै जाइ घनेरी ॥ नानक
 लाहा लै घरि जाईरे साची सचु मति तेरी ॥ २ ॥ साजन देसि विदेसीअडे सानेहडे देदी ॥ सारि समाले तिन सजणा मँध
 नैण भरेदी ॥ मँध नैण भरेदी गुण सारेदी किउ प्रभ मिला पिआरे ॥ मारगु पँथु न जाणउ विखडा किउ पाईरे पिरु पारे ॥
 सतिगुर सबदी मिलै विछुँनी तनु मनु आगै राखै ॥ नानक अँम्रित बिरखु महा रस फलिआ मिलि प्रीतम रसु चारखै ॥ ३
 ॥

महलिं बुलाइडीए बिलमु न कीजै ॥ अनदिनु रतडीए सहजिं मिलीजै ॥ सुखिं सहजिं मिलीजै रोसु न कीजै गरबु निवारिं
 समाणी ॥ साचै राती मिलै मिलीजै मनमुखिं आवण जाणी ॥ जब नाची तब घूघटु कैसा मटुकी फोड़ि निरारी ॥ नानक
 आपै आपु पछाणै गुरुमुखिं ततु बीचारी ॥ ४ ॥ ४ ॥ तुखारी महला १ ॥ मेरे लाल रंगीले हम लालन के लाले ॥ गुरिं
 अलखु लखाइआ अवरु न दूजा भाले ॥ गुरिं अलखु लखाइआ जा तिसु भाइआ जा प्रभिं किरपा धारी ॥ जगजीवनु दाता
 पुरखु बिधाता सहजिं मिले बनवारी ॥ नदरिं करहिं तू तारहिं तरीरे सचु देवहु दीन दइआला ॥ प्रणवति नानक दासनि दासा
 तू सरब जीआ प्रतिपाला ॥ १ ॥ भरिपुरिं धारिं रहे अति पिआरे ॥ सबदे रवि रहिआ गुर रूपिं मुरारे ॥ गुर रूप मुरारे
 तिभवण धारे ता का अंतु न पाइआ ॥ रंगी जिनसी जंत उपाए नित देवै चडै सवाइआ ॥ अपरंपरु आपे थापि उथापे तिसु
 भावै सो होवै ॥ नानक हीरा हीरै बेधिआ गुण कै हारिं परोवै ॥ २ ॥ गुण गुणहिं समाणे मसतकिं नाम नीसाणो ॥ सचिं
 साचिं समाइआ चूका आवण जाणो ॥ सचु साचिं पछाता साचै राता साचु मिलै मनि भावै ॥ साचे ऊपरिं अवरु न दीसै
 साचे साचिं समावै ॥ मोहनि मोहिं लीआ मनु मेरा बंधन खोलिं निरारे ॥ नानक जोती जोति समाणी जा मिलिंआ अति
 पिआरे ॥ ३ ॥ सच घरु खोजिं लहे साचा गुर थानो ॥ मनमुखिं नह पाईए गुरुमुखिं गिआनो ॥ देवै सचु दानो सो परवानो
 सद दाता वड दाणा ॥ अमरु अजोनी असथिरु जापै साचा महलु चिराणा ॥ दोति उचापति लेखु न लिखीए प्रगटी जोति
 मुरारी ॥ नानक साचा साचै राचा गुरुमुखिं तरीरे तारी ॥ ४ ॥ ५ ॥ तुखारी महला १ ॥ ए मन मेरिआ तू समझु अचेत
 इआणिआ राम ॥ ए मन मेरिआ छडिं अवगण गुणी समाणिआ राम ॥ बहु साद लुभाणे किरत कमाणे विछुड़िआ नही मेला
 ॥ किउ दुतरु तरीरे जम डरिं मरीरे जम का पंथु दुहेला ॥ मनि रामु नही जाता साझ प्रभाता अवघटिं रुधा किआ करे ॥
 बंधनि बाधिआ इन बिधि छूटै गुरुमुखिं सेवै नरहरे ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ तू छोड़ि आल जँजाला राम ॥ ए मन

मेरिआ हरि सेवहु पुरखु निराला राम ॥ हरि सिमरि एकंकारु साचा सभु जगतु जिनि उपाइआ ॥ पउणु पाणी अगनि बाधे
खेलु जगति दिखाइआ ॥ आचारि तू विचारि आपे हरि नामु संजम जप तपो ॥ सखा सैनु पिआरु प्रीतमु नामु हरि का जपु
जपो ॥ २ ॥ ए मन मेरिआ तू थिरु रहु चोट न खावही राम ॥ ए मन मेरिआ गुण गावहि सहजि समावही राम ॥ गुण गाइ
राम रसाइ रसीअहि गुर गिआन अंजनु सारहे ॥ त्रै कोल दीपकु सबदि चानणु पंच दूत संघारहे ॥ भै काटि निरभउ तरहि
दुतरु गुरि मिलिऐ कारज सारए ॥ रूपु रंगु पिआरु हरि सिउ हरि आपि किरपा धारए ॥ ३ ॥ ए मन मेरिआ तू किया लै
आइआ किया लै जाइसी राम ॥ ए मन मेरिआ ता छुटसी जा भरमु चुकाइसी राम ॥ धनु संचि हरि हरि नाम वखरु गुर सबदि
भाउ पछाणहे ॥ मैलु परहरि सबदि निरमलु महलु घरु सचु जाणहे ॥ पति नामु पावहि घरि सिधावहि झोलि अंम्रितु पी रसो
॥ हरि नामु धिआईऐ सबदि रसु पाईऐ वडभागि जपीऐ हरि जसो ॥ ४ ॥ ए मन मेरिआ बिनु पउडीआ मंदरि किउ चडै राम
॥ ए मन मेरिआ बिनु बेडी पारि न अंबडै राम ॥ पारि साजनु अपारु प्रीतमु गुर सबद सुरति लंघावए ॥ मिलि साधसंगति
करहि रलीआ फिरि न पछोतावए ॥ करि दइआ दानु दइआल साचा हरि नाम संगति पावओ ॥ नानकु पइअपै सुणहु प्रीतम
गुर सबदि मनु समझावउ ॥ ५ ॥ ६ ॥

तुखारी छँत महला ४ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरि पिरी पिआरु किउ पिर बिनु जीवीऐ राम ॥ जब लगु दरसु न होइ किउ अंम्रितु पीवीऐ राम ॥ किउ अंम्रितु पीवीऐ हरि
बिनु जीवीऐ तिसु बिनु रहनु न जाए ॥ अनदिनु प्रिउ प्रिउ करे दिनु राती पिर बिनु पिआस न जाए ॥ अपणी क्रिपा करहु हरि
पिआरे हरि हरि नामु सद सारिआ ॥ गुर कै सबदि मिलिआ मै प्रीतमु हउ सतिगुर विटहु वारिआ ॥ १ ॥ जब देखां

पिरु पिआरा हरि गुण रसि रवा राम ॥ मेरै अंतरि होइ विगासु प्रिउ प्रिउ सचु नित चवा राम ॥ प्रिउ चवा पिआरे सबदि
 निसतारे बिनु देखे त्रिपति न आवए ॥ सबदि सीगरु होवै नित कामणि हरि हरि नामु धिआवए ॥ दइआ दानु मंगत
 जन दीजै मै प्रीतमु देहु मिलाए ॥ अनदिनु गुरु गोपालु धिआई हम सतिगुर विटहु घुमाए ॥ २ ॥ हम पाथर गुरु नाव
 बिखु भवजलु तारीए राम ॥ गुर देवहु सबदु सुभाइ मै मूड निसतारीए राम ॥ हम मूड मुगध किछु मिति नही पाई तू
 अगंमु वड जाणिआ ॥ तू आपि दइआलु दइआ करि मेलहिं हम निरगुणी निमाणिआ ॥ अनेक जनम पाप करि भरमे
 हुणि तउ सरणागति आए ॥ दइआ करहु रखि लेवहु हरि जीउ हम लागह सतिगुर पाए ॥ ३ ॥ गुर पारस हम लोह
 मिलि कंचनु होइआ राम ॥ जोति जोति मिलाइ काइआ गडु सोहिआ राम ॥ काइआ गडु सोहिआ मेरै प्रभि मोहिआ
 किउ सासि गिरासि विसारीए ॥ अद्रिसटु अगोचरु पकड़िआ गुर सबदी हउ सतिगुर कै बलिहारीए ॥ सतिगुर आगै
 सीसु भेट देउ जे सतिगुर साचे भावै ॥ आपे दइआ करहु प्रभ दाते नानक अँकि समावै ॥ ४ ॥ १ ॥ तुखारी महला ४
 ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥ जो तुम धिआवहि जगदीस ते जन भउ बिखमु तरा ॥ बिखम भउ तिन
 तरिआ सुहेला जिन हरि हरि नामु धिआइआ ॥ गुर वाकि सतिगुर जो भाइ चले तिन हरि हरि आपि मिलइआ ॥ जोती
 जोति मिलि जोति समाणी हरि क्रिपा करि धरणीधरा ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥ १ ॥ तुम सुआमी
 अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ तू अलख अभेउ अगंमु गुर सतिगुर बचनि लहिआ ॥ धनु धँनु ते जन पुरख पूरे
 जिन गुर संतसंगति मिलि गुण रवे ॥ बिबेक बुधि बीचारि गुरमुखि गुर सबदि खिनु खिनु हरि नित चवे ॥ जा बहहि
 गुरमुखि हरि नामु बोलहि जा खडे गुरमुखि हरि हरि कहिआ ॥ तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ २
 ॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ तिन के कोटि सभि पाप खिनु परहरि हरि दूरि करे ॥

तिन के पाप दोख सभि बिनसे जिन मनि चिति इकु अराधिया ॥ तिन का जनमु सफलियो सभु कीआ करतै जिन गुर
 बचनी सचु भाखिआ ॥ ते धँनु जन वड पुरख पूरे जो गुरमति हरि जपि भउ बिखमु तरे ॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु
 जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ ३ ॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ हमरै हाथि किछु
 नाहि जा तू मेलहि ता हउ आइ मिला ॥ जिन कउ तू हरि मेलहि सुआमी सभु तिन का लेखा छुटकि गइआ ॥ तिन की
 गणत न करिअहु को भाई जो गुर बचनी हरि मेलि लइआ ॥ नानक दइआलु होआ तिन ऊपरि जिन गुर का भाणा मँनिआ
 भला ॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ ४ ॥ २ ॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता
 खिसटि नाथु ॥ तिन तू धिआइआ मेरा रामु जिन कै धुरि लेखु माथु ॥ जिन कउ धुरि हरि लिखिआ सुआमी तिन हरि हरि
 नामु अराधिया ॥ तिन के पाप इक निमख सभि लाथे जिन गुर बचनी हरि जापिआ ॥ धनु धँनु ते जन जिन हरि नामु
 जपिआ तिन देखे हउ भइआ सनाथु ॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता खिसटि नाथु ॥ १ ॥ तू जलि थलि महीअलि
 भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ जिन जपिआ हरि मनि चीति हरि जपि जपि मुकतु घणी ॥ जिन जपिआ हरि ते मुकति
 प्राणी तिन के ऊजल मुख हरि दुआरि ॥ ओइ हलति पलति जन भए सुहेले हरि राखि लीए रखनहारि ॥ हरि संतसंगति
 जन सुणहु भाई गुरमुखि हरि सेवा सफल बणी ॥ तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ २ ॥ तू थान
 थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ वणि त्रिणि त्रिभवणि सभ खिसटि मुखि हरि हरि नामु चविआ ॥ सभि चवहि हरि
 हरि नामु करते असंख अगणत हरि धिआवर ॥ सो धँनु धनु हरि संतु साधू जो हरि प्रभ करते भावर ॥ सो सफलु दरसनु
 देहु करते जिसु हरि हिरदे नामु सद चविआ ॥ तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ ३ ॥ तेरी भगति भँडार
 असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलाहि ॥ जिस कै मसतकि गुर हाथु तिसु हिरदै हरि गुण टिकहि ॥ हरि गुण

हिरदै टिकहि तिस कै जिसु अंतरि भउ भावनी होई ॥ बिनु भै किनै न प्रेमु पाइआ बिनु भै पारि न उतरिआ कोई ॥ भउ
 भाउ प्रीति नानक तिसहि लागै जिसु तू आपणी किरपा करहि ॥ तेरी भगति भंडार असँख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी
 तिसु मिलहि ॥ ४ ॥ ३ ॥ तुखारी महला ४ ॥ नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ दुरमति मैलु हरी
 अगिआनु अँधेरु गइआ ॥ गुर दरसु पाइआ अगिआनु गवाइआ अंतरि जोति प्रगासी ॥ जनम मरण दुख खिन महि
 बिनसे हरि पाइआ प्रभु अबिनासी ॥ हरि आपि करतै पुरबु कीआ सतिगुरु कुलखेति नावणि गइआ ॥ नावणु पुरबु
 अभीचु गुर सतिगुर दरस भइआ ॥ १ ॥ मारगि पँथि चले गुर सतिगुर सँगि सिखा ॥ अनदिनु भगति बणी खिनु
 खिनु निमख विखा ॥ हरि हरि भगति बणी प्रभ केरी सभु लोकु वेखणि आइआ ॥ जिन दरसु सतिगुर गुरु कीआ
 तिन आपि हरि मेलाइआ ॥ तीरथ उदमु सतिगुरु कीआ सभ लोक उधरण अरथा ॥ मारगि पँथि चले गुर सतिगुर
 सँगि सिखा ॥ २ ॥ प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ खबरि भई सँसारि आए त्रै लोआ ॥ देखणि आए
 तिनि लोक सुरि नर मुनि जन सभि आइआ ॥ जिन परसिआ गुरु सतिगुरु पूरा तिन के किलविख नास गवाइआ ॥
 जोगी दिगंबर सँनिआसी खटु दरसन करि गए गोसटि ढोआ ॥ प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ ३ ॥
 दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥ जागाती मिले दे भेट गुर पिछै लँघाइ दीआ ॥ सभ छुटी सतिगुरु पिछै
 जिनि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ गुर बचनि मारगि जो पँथि चाले तिन जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ सभ गुरु
 गुरु जगतु बोलै गुर कै नाइ लइए सभि छुटकि गइआ ॥ दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥ ४ ॥
 त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ सभ मोही देखि दरसन गुर सँत किनै आढु न दामु लइआ ॥ आढु
 दामु किछु पइआ न बोलक जागातीआ मोहण मुँदणि पई ॥ भाई हम करह किआ किसु पासि मांगह सभ भागि

सतिगुर पिछै पई ॥ जागातीआ उपाव सिआणप करि वीचारु डिठा भँनि बोलका सभि उठि गइआ ॥ त्रितीआ आए
सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ ५ ॥ मिलिं आए नगर महाजना गुर सतिगुर ओट गही ॥ गुरु सतिगुरु गुरु
गोविदु पुछि सिमिति कीता सही ॥ सिमिति सासत्र सभनी सही कीता सुकि प्रहिलादि श्रीरामि करि गुर गोविदु
धिआइआ ॥ देही नगरि कोटि पँच होर वटवारे तिन का थाउ थेहु गवाइआ ॥ कीरतन पुराण नित पँनु होवहि गुर
बचनि नानक हरे भगति लही ॥ मिलिं आए नगर महाजना गुर सतिगुर ओट गही ॥ ६ ॥ ४ ॥ १० ॥

तुखारी छँत महला ५ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

घोलिं घुमाई लालना गुरिं मनु दीना ॥ सुणिं सबदु तुमारा मेरा मनु भीना ॥ इहु मनु भीना जिउ जल मीना लागा रँगु
मुरारा ॥ कीमति कही न जाई ठाकुर तेरा महलु अपारा ॥ सगल गुणा के दाते सुआमी बिनउ सुनह इक दीना ॥ देहु
दरसु नानक बलिहारी जीअड़ा बलिं बलिं कीना ॥ १ ॥ इहु तनु मनु तेरा सभि गुण तेरे ॥ खँनीरे वँजा दरसन तेरे ॥
दरसन तेरे सुणिं प्रभ मेरे निमख दिसटि पेखि जीवा ॥ अँमित नामु सुनीजै तेरा किरपा करहि त पीवा ॥ आस
पिआसी पिर कै ताई जिउ चात्रिकु बूँदरे ॥ कहु नानक जीआड़ा बलिहारी देहु दरसु प्रभ मेरे ॥ २ ॥ तू साचा साहिबु
साहु अमिता ॥ तू प्रीतमु पिआरा प्रान हित चिता ॥ प्रान सुखदाता गुरमुखि जाता सगल रँग बनि आए ॥ सोई करमु
कमावै प्राणी जेहा तू फुरमाए ॥ जा कउ क्रिपा करी जगदीसुरि तिनि साधसँगि मनु जिता ॥ कहु नानक जीअड़ा
बलिहारी जीउ पिँडु तउ दिता ॥ ३ ॥ निरगुणु राखि लीआ सँतन का सदका ॥ सतिगुरिं ढाकि लीआ मोहि पापी
पड़दा ॥ ढाकनहारे प्रभू हमारे जीअ प्रान सुखदाते ॥ अबिनासी अबिगत सुआमी पूरन पुरख बिधाते ॥ उसतति
कहनु न जाइ तुमारी कउणु कहै तू कद का ॥ नानक दासु ता कै बलिहारी मिलै नामु हरि निमका ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥

केदारा महला ४ घरु १

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन राम नाम नित गावीऐ रे ॥ अगम अगोचरु न जाई हरि लिखिआ गुरु पूरा मिलै लखावीऐ रे ॥ रहाउ ॥ जिसु आपे किरपा करे मेरा सुआमी तिसु जन कउ हरि लिव लावीऐ रे ॥ सभु को भगति करे हरि केरी हरि भावै सो थाइ पावीऐ रे ॥ १ ॥ हरि हरि नामु अमोलकु हरि पहि हरि देवै ता नामु धिआवीऐ रे ॥ जिस नो नामु देइ मेरा सुआमी तिसु लेखा सभु छडावीऐ रे ॥ २ ॥ हरि नामु अराधहि से धँनु जन कहीअहि तिन मसतकि भागु धुरि लिखि पावीऐ रे ॥ तिन देखे मेरा मनु बिगसै जिउ सुतु मिलि मात गलि लावीऐ रे ॥ ३ ॥ हम बारिक हरि पिता प्रभ मेरे मो कउ देहु मती जितु हरि पावीऐ रे ॥ जिउ बछुरा देखि गऊ सुखु मानै तितु नानक हरि गलि लावीऐ रे ॥ ४ ॥ १ ॥

केदारा महला ४ घरु १ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन हरि हरि गुन कहु रे ॥ सतिगुरु के चरन धोइ धोइ पूजहु इन बिधि मेरा हरि प्रभु लहु रे ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु बिखै रस इन संगति ते तूरहु रे ॥

मिलि सतसंगति कीजै हरि गोसटि साधू सिउ गोसटि हरि प्रेम रसाइणि राम नामु रसाइणु हरि राम नाम राम रमहु रे ॥ १ ॥
अंतर का अभिमानु जोरु तू किछु किछु किछु जानता इहु दूरि करहु आपन गहु रे ॥ जन नानक कउ हरि दइआल होहु सुआमी
हरि सतन की धूरि करि रहे ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥

केदारा महला ७ वरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

माई सतसंगि जागी ॥ प्रिअ रंग देखै जपती नामु निधानी ॥ रहाउ ॥ दरसन पिआस लोचन तार लागी ॥ बिसरी तिआस
बिडानी ॥ १ ॥ अब गुरु पाइओ है सहज सुखदाइक दरसनु पेखत मनु लपटानी ॥ देखि दमोदर रहसु मनि उपजिओ
नानक प्रिअ अमित बानी ॥ २ ॥ १ ॥

केदारा महला ७ वरु ३ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

दीन बिनउ सुनु दइआल ॥ पंच दास तीनि दोखी एक मनु अनाथ नाथ ॥ राखु हो किरपाल ॥ रहाउ ॥ अनिक जतन गवनु
करउ ॥ खटु करम जुगति धिआनु धरउ ॥ उपाव सगल करि हरिओ नह नह हुटहि बिकराल ॥ १ ॥ सरणि बंदन करुणा
पते ॥ भव हरण हरि हरि हरि हरे ॥ एक तूही दीन दइआल ॥ प्रभ चरन नानक आसरो ॥ उधरे भ्रम मोह सागर ॥ लगे
सतना पग पाल ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥

केदारा महला ७ वरु ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

सरनी आइओ नाथ निधान ॥ नाम प्रीति लागी मन भीतरि मागन कउ हरि दान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखदाई पूरन परमेसुर
करि किरपा राखहु मान ॥ देहु प्रीटि साधू संगि सुआमी हरि गुन रसन बखान ॥ १ ॥ गोपाल दइआल गोबिद दमोदर
निरमल कथा गिआन ॥ नानक कउ हरि कै रंगि रागहु चरन कमल संगि धिआन ॥ २ ॥ १ ॥ ३ ॥ केदारा महला ७ ॥

हरि के दरसन को मनि चाउ ॥ करि किरपा सतसँगि मिलावहु तुम देवहु अपनो नाउ ॥ रहाउ ॥ करउ सेवा सत पुरख
पिआरे जत सुनीऐ तत मनि रहसाउ ॥ वारी फेरी सदा घुमाई कवनु अनूपु तेरो ठाउ ॥ १ ॥ सरब प्रतिपालहि सगल
समालहि सगलिआ तेरी छाउ ॥ नानक के प्रभ पुरख बिधाते घटि घटि तुझहि दिखाउ ॥ २ ॥ २ ॥ ४ ॥ केदारा
महला ५ ॥ प्रिअ की प्रीति पिआरी ॥ मगन मनै महि चितवउ आसा नैनहु तार तुहारी ॥ रहाउ ॥ ओइ दिन पहर मूरत
पल कैसे ओइ पल घरी किहारी ॥ खूले कपट धपट बुझि त्रिसना जीवउ पेखि दरसारी ॥ १ ॥ कउनु सु जतनु उपाउ
किनेहा सेवा कउन बीचारी ॥ मानु अभिमानु मोहु तजि नानक सँतह सँगि उधारी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥ केदारा महला ५
॥ हरि हरि हरि गुन गावहु ॥ करहु क्रिपा गोपाल गोबिदे अपना नामु जपावहु ॥ रहाउ ॥ काढि लीए प्रभ आन बिखै ते
साधसँगि मनु लावहु ॥ भ्रमु भउ मोहु कटिओ गुर बचनी अपना दरसु दिखावहु ॥ १ ॥ सभ की रेन होइ मनु मेरा
अहुँबुधि तजावहु ॥ अपनी भगति देहि दइआला वडभागी नानक हरि पावहु ॥ २ ॥ ४ ॥ ६ ॥ केदारा महला ५ ॥
हरि बिनु जनमु अकारथ जात ॥ तजि गोपाल आन रँगि राचत मिथिआ पहिरत खात ॥ रहाउ ॥ धनु जोबनु सँपै सुख
भोगवै सँगि न निबहत मात ॥ म्रिग त्रिसना देखि रचिओ बावर द्रुम छाइआ रँगि रात ॥ १ ॥ मान मोह महा मद मोहत
काम क्रोध कै खात ॥ करु गहि लेहु दास नानक कउ प्रभ जीउ होइ सहात ॥ २ ॥ ५ ॥ ७ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि
बिनु कोइ न चालसि साथ ॥ दीनानाथ करुणापति सुआमी अनाथा के नाथ ॥ रहाउ ॥ सुत सँपति बिखिआ रस
भोगवत नह निबहत जम कै पाथ ॥ नामु निधानु गाउ गुन गोबिंद उधरु सागर के खात ॥ १ ॥ सरनि समरथ अकथ
अगोचर हरि सिमरत दुख लाथ ॥ नानक दीन धूरि जन बाँछत मिलै लिखत धुरि माथ ॥ २ ॥ ६ ॥ ८ ॥

केदारा महला ७ घरु ७ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

बिसरत नाहि मन ते हरी ॥ अब इह प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी ॥ रहाउ ॥ बूँद कहा तिआगि चात्रिक मीन
रहत न घरी ॥ गुन गोपाल उचारु रसना टेव एह परी ॥ १ ॥ महा नाद कुरँक मोहिओ बेधि तीखन सरी ॥ प्रभ चरन
कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी ॥ २ ॥ १ ॥ ९ ॥ केदारा महला ७ ॥ प्रीतम बसत रिद महि खोर ॥ भरम
भीति निवारि ठाकुर गहि लेहु अपनी ओर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अधिक गरत संसार सागर करि दइआ चारहु धोर ॥
संतसंगि हरि चइन बोहिथ उधरते लै मोर ॥ १ ॥ गरभ कुँट महि जिनहि धारिओ नही बिखै बन महि होर ॥ हरि सकत
सरन समरथ नानक आन नही निहोर ॥ २ ॥ २ ॥ १० ॥ केदारा महला ७ ॥ रसना राम नाम बखानु ॥ गुन गोपाल
उचारु दिन रैनि भए कलमल हान ॥ रहाउ ॥ तिआगि चलना सगल संपत कालु सिर परि जानु ॥ मिथन नोह दुरंत
आसा झूठु सरपर मानु ॥ १ ॥ सति पुरख अकाल मूरति रिदै धारहु धिआनु ॥ नामु निधानु लाभु नानक बसतु इह
परवानु ॥ २ ॥ ३ ॥ ११ ॥ केदारा महला ७ ॥ हरि के नाम को आधारु ॥ कलि कलेस न कछु बिआपै संतसंगि
बिउहारु ॥ रहाउ ॥ करि अनुग्रहु आपि राखिओ नह उपजतउ बेकारु ॥ जिसु परापति होइ सिमरै तिसु दहत नह
संसारु ॥ १ ॥ सुख मंगल आनंद हरि हरि प्रभ चरन अँमित सारु ॥ नानक दास सरनागती तेरे संतना की छारु ॥
२ ॥ ४ ॥ १२ ॥ केदारा महला ७ ॥ हरि के नाम बिनु धिगु स्रोत ॥ जीवन रूप बिसारि जीवहि तिह कत जीवन
होत ॥ रहाउ ॥ खात पीत अनेक बिँजन जैसे भार बाहक खोत ॥ आठ पहर महा श्रमु पाइआ जैसे बिरख जँती जोत
॥ १ ॥ तजि गोपाल जि आन लागे से बहु प्रकारी रोत ॥ कर जोरि नानक दानु मागै हरि रखउ कँठि परोत ॥ २ ॥
७ ॥ १३ ॥ केदारा महला ७ ॥ संतह धूरि ले मुखि मली ॥ गुणा अचुत सदा पूरन नह दोख बिआपहि कली ॥

रहाउ ॥ गुर बचनि कारज सरब पूरन ईत ऊत न हली ॥ प्रभ एक अनिक सरबत पूरन बिखै अगनि न जली ॥ १ ॥
 गहि भुजा लीनो दासु अपनो जोति जोती रली ॥ प्रभ चरन सरन अनाथु आइओ नानक हरि सँगि चली ॥ २ ॥ ६ ॥
 १४ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम की मन रुचै ॥ कोटि सांति अनँद पूरन जलत छाती बुझै ॥ रहाउ ॥ सँत मारगि
 चलत प्राणी पतित उधरे मुचै ॥ रेनु जन की लगी मसतकि अनिक तीरथ सुचै ॥ १ ॥ चरन कमल धिआन भीतरि घटि
 घटहि सुआमी सुझै ॥ सरनि देव अपार नानक बहुरि जमु नही लुझै ॥ २ ॥ ७ ॥ १५ ॥

केदारा छँत महला ५ १४ श्रितिगुर प्रसादि ॥

मिलु मेरे प्रीतम पिआरिआ ॥ रहाउ ॥ पूरि रहिआ सरबत्र मै सो पुरखु बिधाता ॥ मारगु प्रभ का हरि कीआ सँतन सँगि
 जाता ॥ सँतन सँगि जाता पुरखु बिधाता घटि घटि नदरि निहालिआ ॥ जो सरनी आवै सरब सुख पावै तिलु नही भँनै
 घालिआ ॥ हरि गुण निधि गाए सहज सुभाए प्रेम महा रस माता ॥ नानक दास तेरी सरणाई तू पूरन पुरखु बिधाता ॥ १
 ॥ हरि प्रेम भगति जन बेधिआ से आन कत जाही ॥ मीनु बिछोहा ना सहै जल बिनु महि पाही ॥ हरि बिनु किउ रहीरे
 दूख किनि सहीरे चात्रिक बूँद पिआसिआ ॥ कबरैनि बिहावै चकवी सुखु पावै सूरज किरणि प्रगासिआ ॥ हरि दरसि मनु
 लागा दिनसु सभागा अनदिनु हरि गुण गाही ॥ नानक दासु कहै बेनँती कत हरि बिनु प्राण टिकाही ॥ २ ॥ सास बिना
 जिउ देहुरी कत सोभा पावै ॥ दरस बिहूना साध जनु खिनु टिकणु न आवै ॥ हरि बिनु जो रहणा नरकु सो सहणा चरन
 कमल मनु बेधिआ ॥ हरि रसिक बैरागी नामि लिव लागी कतहु न जाइ निखेधिआ ॥ हरि सिउ जाइ मिलणा साधसँगि
 रहणा सो सुखु अँकि न मावै ॥ होहु क्रिपाल नानक के सुआमी हरि चरनह सँगि समावै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत प्रभ मिले
 हरि करुणा धारे ॥ निरगुणु नीचु अनाथु मै नही दोख बीचारे ॥ नही दोख बीचारे पूरन सुख सारे पावन बिरदु

बखानिआ ॥ भगति वछलु सुनि अँचलो गहिआ घटि घटि पूर समानिआ ॥ सुख सागरो पाइआ सहज सुभाइआ जनम
मरन दुख हारे ॥ करु गहि लीने नानक दास अपने राम नाम उरि हारे ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु केदारा बाणी कबीर जीउ की वरि शक्तिगुर प्रसादि ॥

उसतति निँदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥ लोहा कँचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥ १ ॥ तेरा जनु
एकु आधु कोई ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीन्है सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह
तेरी सभ माइआ ॥ चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिन्ह ही परम पदु पाइआ ॥ २ ॥ तीरथ बरत नेम सुचि सँजम सदा रहै
निहकामा ॥ त्रिसना अरु माइआ भ्रमु चूका चितवत आतमरामा ॥ ३ ॥ जिह मँदरि दीपकु परगासिआ अँधकारु तह नासा
॥ निरभउ पूरि रहे भ्रमु भागा कहि कबीर जन दासा ॥ ४ ॥ १ ॥ किनही बनजिआ कांसी तांबा किनही लउग सुपारी ॥
सँतहु बनजिआ नामु गोविद का ऐसी खेप हमारी ॥ १ ॥ हरि के नाम के बिआपारी ॥ हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि
गई सँसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे लाए तउ सच लागे साचे के बिउहारी ॥ साची बसतु के भार चलाए पहुचे जाइ भँडारी ॥
२ ॥ आपहि रतन जवाहर मानिक आपै है पासारी ॥ आपै दह दिस आप चलावै निहचलु है बिआपारी ॥ ३ ॥ मनु करि
बैलु सुरति करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे सँतहु निबही खेप हमारी ॥ ४ ॥ २ ॥ री कलवारि
गवारि मूढ मति उलटो पवनु फिरावउ ॥ मनु मतवार मेर सर भाठी अँमित धार चुआवउ ॥ १ ॥ बोलहु भईआ राम की दुहाई
॥ पीवहु सँत सदा मति दुरलभ सहजे पिआस बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै बिचि भाउ भाइ कोऊ बूझहि हरि रसु पावै भाई ॥
जेते घट अँमितु सभ ही महि भावै तिसहि पीआई ॥ २ ॥ नगरी एकै नउ दरवाजे धावतु बरजि रहाई ॥ त्रिकुटी छूटै दसवा
दरु खूलहै ता मनु खीवा भाई ॥ ३ ॥ अभै पद पूरि ताप तह नासे कहि कबीर बीचारी ॥ उबट चलँते इहु मदु

पाइआ जैसे खोंद खुमारी ॥ ४ ॥ ३ ॥ काम क्रोधु त्रिसना के लीने गति नही एकै जानी ॥ फूटी आखै कछु न सूझै बूडि मूए बिनु पानी ॥ १ ॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ असति चरम बिसटा के मूँदे दुखगँध ही के बेढे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुम ते कालु न दूरे ॥ अनिक जतन करि इहु तनु राखहु रहै अवसथा पूरे ॥ २ ॥ आपन कीआ कछु न होवै किआ को करै परानी ॥ जा तिसु भावै सतिगुरु भेटै एको नामु बखानी ॥ ३ ॥ बलूआ के घरुआ महि बसते फुलवत देह अइआने ॥ कहु कबीर जिह रामु न चेतिओ बूडे बहुतु सिआने ॥ ४ ॥ ४ ॥ टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ भाउ भगति सिउ काजु न कछूरे मेरो कामु दीवान ॥ १ ॥ रामु बिसारिओ है अभिमानि ॥ कनिक कामनी महा सुँदरी पेखि पेखि सचु मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लालच झूठ बिकार महा मद इह बिधि अउध बिहानि ॥ कहि कबीर अँत की बेर आइ लागो कालु निदानि ॥ २ ॥ ५ ॥ चारि दिन अपनी नउबति चले बजाइ ॥ इतनकु खटीआ गठीआ मटीआ सँगि न कछु लै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिहरी बैठी मिहरी रोवै दूआरै लउ सँगि माइ ॥ मरहट लागि सभु लोगु कुटँबु मिलि हँसु इकेला जाइ ॥ १ ॥ वै सुत वै बित वै पुर पाटन बहुरि न देखै आइ ॥ कहतु कबीरु रामु की न सिमरहु जनमु अकारथु जाइ ॥ २ ॥ ६ ॥

रामु केदारा बाणी रविदास जीउ की १४ सतिगुरु प्रसादि ॥

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥ चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥ १ ॥ रे चित चेति चेत अचेत ॥ काहे न बालमीकहि देख ॥ किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु ॥ लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥ २ ॥ अजामलु पिँगुला लुभतु कुँचरु गए हरि कै पासि ॥ ऐसे दुर्मति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥ ३ ॥ १ ॥

शगु भैरउ महला १ घरु १ चउपदे

१ॐ सति नामु करता पुरुखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

तुझ ते बाहरि किछु न होइ ॥ तू करि करि देखहि जाणहि सोइ ॥ १ ॥ किआ कहीरे किछु कही न जाइ ॥ जो किछु अहै सभ
तेरी रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु करणा सु तेरै पासि ॥ किसु आगै कीचै अरदासि ॥ २ ॥ आखणु सुणना तेरी बाणी
॥ तू आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ ३ ॥ करे कराए जाणै आपि ॥ नानक देखै थापि उथापि ॥ ४ ॥ १ ॥

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥ शगु भैरउ महला १ घरु २ ॥

गुर कै सबदि तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रहमादि तरे ॥ सनक सनंदन तपसी जन केते गुर परसादी पारि परे ॥ १ ॥ भवजलु बिनु
सबदै किउ तरीरे ॥ नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ दुबिधा डुबि डुबि मरीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु देवा गुरु अलख अभेवा
त्रिभवण सोझी गुर की सेवा ॥ आपे दाति करी गुरि दातै पाइआ अलख अभेवा ॥ २ ॥ मनु रजा मनु मन ते मानिआ मनसा
मनहि समाई ॥ मनु जोगी मनु बिनसि बिओगी मनु समझै गुण गाई ॥ ३ ॥ गुर ते मनु मारिआ सबदु वीचारिआ ते विरले
सँसारा ॥ नानक साहिबु भरपुरि लीणा साच सबदि निसतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ भैरउ महला १ ॥ नैनी दिसटि नही तनु
हीना जरि जीतिआ

सिरिं कालो ॥ रूपु रँगु रहसु नही साचा किउ छोडै जम जालो ॥ १ ॥ प्राणी हरिं जपि जनमु गइओ ॥ साच सबद बिनु
 कबहु न छूटसि बिरथा जनमु भइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तन महिं कामु क्रोधु हउ ममता कठिन पीर अति भारी ॥ गुरमुखिं राम
 जपहु रसु रसना इन बिधि तरु तू तारी ॥ २ ॥ बहरे करन अकलिं भई होछी सबद सहजु नही बूझिआ ॥ जनमु पदारथु
 मनमुखिं हारिआ बिनु गुर अँधु न सूझिआ ॥ ३ ॥ रहै उदासु आस निरासा सहज धिआनि बैरागी ॥ प्रणवति नानक
 गुरमुखिं छूटसि राम नामिं लिव लागी ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ भैरउ महला १ ॥ भूँडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी
 ॥ नेत्री धुँधि करन भए बहरे मनमुखिं नामु न जानी ॥ १ ॥ अँधुले किआ पाइआ जग आइ ॥ रामु रिदै नही गुर की सेवा
 चाले मूलु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा रँगि नही हरि राती जब बोलै तब फीके ॥ संत जना की निँदा विआपसि पसू भए
 कदे होहि न नीके ॥ २ ॥ अँम्रित का रसु विरली पाइआ सतिगुर मेलिं मिलार ॥ जब लगु सबद भेदु नही आइआ तब लगु
 कालु संतार ॥ ३ ॥ अन को दरु घरु कबहु न जानसि एको दरु सचिआरा ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ नानकु कहै
 विचारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ भैरउ महला १ ॥ सगलीं रैणिं सोवत गलिं फाही दिनसु जँजालिं गवाइआ ॥ खिनु पलु घड़ी
 नही प्रभु जानिआ जिनि इहु जगतु उपाइआ ॥ १ ॥ मनरे किउ छूटसि दुखु भारी ॥ किआ ले आवसि किआ ले जावसि
 राम जपहु गुणकारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊँधउ कवलु मनमुख मति होछी मनि अँधै सिरिं धँधा ॥ कालु बिकालु सदा सिरिं तैरै
 बिनु नावै गलिं फँधा ॥ २ ॥ डगरी चाल नेत्र फुनि अँधुले सबद सुरति नही भाई ॥ सासत्र बेद त्रै गुण है माइआ अँधुलउ
 धँधु कमाई ॥ ३ ॥ खोइओ मूलु लाभु कह पावसि दुर्मति गिआन विहूणे ॥ सबदु बीचारिं राम रसु चाखिआ नानक साची
 पतीणे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥ भैरउ महला १ ॥ गुर कै सँगि रहै दिनु राती रामु रसनि रँगि राता ॥ अवरु न जाणसि सबदु
 पछाणसि अँतरिं जाणिं पछाता ॥ १ ॥ सो जनु रेसा मै मनि भावै ॥ आपु मारिं अपरँपरिं राता गुर की

कार कमावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि पुरखु निरँजनु आदि पुरखु आदेशो ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि रवि
 रहिआ सचु वेसो ॥ २ ॥ साचि रते सचु अँमितु जिहवा मिथिआ मैलु न राई ॥ निरमल नामु अँमित रसु चाखिआ सबदि
 रते पति पाई ॥ ३ ॥ गुणी गुणी मिलि लाहा पावसि गुरमुखि नामि वडाई ॥ सगले दूख मिटहि गुर सेवा नानक नामु
 सखाई ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ भैरउ महला १ ॥ हिरदै नामु सरब धनु धारणु गुर परसादी पाईऐ ॥ अमर पदारथ ते
 किरतारथ सहज धिआनि लिव लाईऐ ॥ १ ॥ मन रे राम भगति चितु लाईऐ ॥ गुरमुखि राम नामु जपि हिरदै सहज
 सेती घरि जाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमु भेदु भउ कबहु न छूटसि आवत जात न जानी ॥ बिनु हरि नाम को मुकति न
 पावसि डूबि मुए बिनु पानी ॥ २ ॥ धँधा करत सगली पति खोवसि भरमु न मिटसि गवारा ॥ बिनु गुर सबद मुकति
 नही कब ही अँधुले धँधु पासारा ॥ ३ ॥ अकुल निरँजन सिउ मनु मानिआ मन ही ते मनु मूआ ॥ अंतरि बाहरि एको
 जानिआ नानक अवरु न दूआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ भैरउ महला १ ॥ जगन होम पुँन तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै
 ॥ राम नाम बिनु मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै ॥ १ ॥ राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ॥ बिखु खावै
 बिखु बोली बोलै बिनु नावै निहफलु मरि भ्रमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुसतक पाठ बिआकरण वखाणै सँधिआ करम तिकाल
 करै ॥ बिनु गुर सबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु उरझि मरै ॥ २ ॥ डँड कमंडल सिखा सूतु धोती तीरथि गवनु
 अति भ्रमनु करै ॥ राम नाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि नामु सु पारि परै ॥ ३ ॥ जटा मुकटु तनि भसम लगाई
 बसत्र छोडि तनि नगनु भइआ ॥ राम नाम बिनु त्रिपति न आवै किरत कै बांधै भेखु भइआ ॥ ४ ॥ जेते जीअ जंत
 जलि थलि महीअलि जत्र कत्र तू सरब जीआ ॥ गुर परसादि राखि ले जन कउ हरि रसु नानक झोलि पीआ ॥ ५ ॥ ७
 ॥ ८ ॥

रागु भैरउ महला ३ चउपदे घरु १ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥ ब्रह्मु बिंदे सो ब्राह्मणु होई ॥ जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥ इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारे वरन आखे सभु कोई ॥ ब्रह्मु बिंद ते सभ ओपति होई ॥ २ ॥ माटी एक सगल संसारा ॥ बहु बिधि भांडे घडै कुमाहरा ॥ ३ ॥ पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥ घटि वधि को करै बीचारा ॥ ४ ॥ कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुक्ति न होई ॥ ५ ॥ १ ॥ भैरउ महला ३ ॥ जोगी ग्रिही पंडित भेखधारी ॥ ए सूते अपणै अहंकारी ॥ १ ॥ माइआ मदि माता रहिआ सोइ ॥ जागतु रहै न मूसै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो जागै जिंसु सतिगुरु मिलै ॥ पंच दूत ओहु वसगति करै ॥ २ ॥ सो जागै जो ततु बीचारै ॥ आपि मरै अवरा नह मारै ॥ ३ ॥ सो जागै जो एको जाणै ॥ परकिरति छोटै ततु पछाणै ॥ ४ ॥ चहु वरना विचि जागै कोइ ॥ जमै कालै ते छूटै सोइ ॥ ५ ॥ कहत नानक जनु जागै सोइ ॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री होइ ॥ ६ ॥ २ ॥ भैरउ महला ३ ॥ जा कउ राखै अपणी सरणाई ॥ साचे लागै साचा फलु पाई ॥ १ ॥ रे जन कै सिउ करहु पुकारा ॥ हुकमे होआ हुकमे वरतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एहु आकारु तेरा है धारा ॥ खिन महि बिनसै करत न लागै बारा ॥ २ ॥ करि प्रसादु इकु खेलु दिखाइआ ॥ गुर किरपा ते परम पदु पाइआ ॥ ३ ॥ कहत नानकु मारि जीवाले सोइ ॥ ऐसा बूझहु भरमि न भूलहु कोइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मै कामणि मेरा कंतु करतारु ॥ जेहा कराए तेहा करी सीगारु ॥ १ ॥ जां तिसु भावै तां करे भोगु ॥ तनु मनु साचे साहिब जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उसतति निंदा करे किआ कोइ ॥ जां आपे वरतै एको सोई ॥ २ ॥ गुर परसादी पिरम कसाई ॥ मिलउगी दइआल पंच सबद वजाई ॥ ३ ॥ भनति नानकु करे किआ कोइ ॥ जिस नो आपि मिलावै सोइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ भैरउ महला ३ ॥ सो मुनि जि मन की दुबिधा मारे ॥ दुबिधा मारि ब्रह्मु बीचारे ॥ १ ॥ इसु मन

कउ कोई खोजहु भाई ॥ मनु खोजत नामु नउ निधि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूलु मोहु करि करतै जगतु उपाइआ ॥ ममता
 लाइ भरमि भोलाइआ ॥ २ ॥ इसु मन ते सभ पिँड पराणा ॥ मन कै वीचारि हुकमु बुझि समाणा ॥ ३ ॥ करमु होवै गुरु
 किरपा करै ॥ इहु मनु जागै इसु मन की दुबिधा मरै ॥ ४ ॥ मन का सुभाउ सदा बैरागी ॥ सभ महि वसै अतीतु अनरागी
 ॥ ५ ॥ कहत नानकु जो जाणै भेउ ॥ आदि पुरखु निरँजन देउ ॥ ६ ॥ ५ ॥ भैरउ महला ३ ॥ राम नामु जगत
 निसतारा ॥ भवजलु पारि उतारणहारा ॥ १ ॥ गुर परसादी हरि नामु समाहलि ॥ सद ही निबहै तेरै नालि ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ नामु न चेतहि मनमुख गावारा ॥ बिनु नावै कैसे पावहि पारा ॥ २ ॥ आपे दाति करै दातारु ॥ देवणहारे कउ जैकारु
 ॥ ३ ॥ नदरि करे सतिगुरु मिलाए ॥ नानक हिरदै नामु वसाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ भैरउ महला ३ ॥ नामे उधरे सभि जितने
 लोअ ॥ गुरुमुखि जिना परापति होइ ॥ १ ॥ हरि जीउ अपणी क्रिपा करेइ ॥ गुरुमुखि नामु वडिआई देइ ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ राम नामि जिन प्रीति पिआरु ॥ आपि उधरे सभि कुल उधारणहारु ॥ २ ॥ बिनु नावै मनमुख जम पुरि जाहि ॥
 अउखे होवहि चोटा खाहि ॥ ३ ॥ आपे करता देवै सोइ ॥ नानक नामु परापति होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ भैरउ महला ३ ॥
 गोविंद प्रीति सनकादिक उधारे ॥ राम नाम सबदि बीचारे ॥ १ ॥ हरि जीउ अपणी किरपा धारु ॥ गुरुमुखि नामे लगै
 पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि प्रीति भगति साची होइ ॥ पूरै गुरि मेलावा होइ ॥ २ ॥ निज घरि वसै सहजि सुभाइ ॥
 गुरुमुखि नामु वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ आपे वेखै वेखणहारु ॥ नानक नामु रखहु उर धारि ॥ ४ ॥ ८ ॥ भैरउ महला ३ ॥
 कलजुग महि राम नामु उर धारु ॥ बिनु नावै माथै छारु ॥ १ ॥ राम नामु दुलभु है भाई ॥ गुर परसादि वसै मनि आई ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु जन भालहि सोइ ॥ पूरे गुर ते प्रापति होइ ॥ २ ॥ हरि का भाणा मँनहि से जन परवाणु ॥ गुर कै
 सबदि नाम नीसाणु ॥ ३ ॥ सो सेवहु जो कल रहिआ धारि ॥ नानक गुरुमुखि नामु पिआरि ॥ ४ ॥ ९ ॥

भैरउ महला ३ ॥ कलजुग महि राम नामु है सारुबहु करम कमाहि ॥ ना रुति न करम थाइ पाहि ॥ १ ॥ कलजुग महि राम नामु है सारु ॥ गुरमुखि साचा लगै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजि घरै महि पाइआ ॥ गुरमुखि राम नामि चितु लाइआ ॥ २ ॥ गिआन अँजनु सतिगुर ते होइ ॥ राम नामु रवि रहिआ तिहु लोइ ॥ ३ ॥ कलजुग महि हरि जीउ एकु होर रुति न काई ॥ नानक गुरमुखि हिरदै राम नामु लेहु जमाई ॥ ४ ॥ १० ॥

भैरउ महला ३ वरु २ रसितिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा मनमुख रोगि विआपे त्रिसना जलहि अधिकार्ई ॥ मरि मरि जँमहि ठउर न पावहि बिरथा जनमु गवाई ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम करि किरपा देहु बुझाई ॥ हउमै रोगी जगतु उपाइआ बिनु सबदै रोगु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिँमिति सासत्र पड़हि मुनि केते बिनु सबदै सुरति न पाई ॥ त्रै गुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई ॥ २ ॥ इकि आपे काढि लए प्रभि आपे गुर सेवा प्रभि लाए ॥ हरि का नामु निधानो पाइआ सुखु वसिआ मनि आए ॥ ३ ॥ चउथी पदवी गुरमुखि वरताहि तिन निज घरि वासा पाइआ ॥ पूरे सतिगुरि किरपा कीनी विचहु आपु गवाइआ ॥ ४ ॥ एकसु की सिरि कार एक जिनि ब्रहमा बिसनु रुद्रु उपाइआ ॥ नानक निहचलु साचा एको ना ओहु मरै न जाइआ ॥ ५ ॥ १ ॥ ११ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगला सँसारा ॥ गुरमुखि बूझहि रोगु गवावहि गुर सबदी वीचारा ॥ १ ॥ हरि जीउ सतसंगति मेलाइ ॥ नानक तिस नो देइ वडिआई जो राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ममता कालि सभि रोगि विआपे तिन जम की है सिरि कारा ॥ गुरमुखि प्राणी जमु नेडि न आवै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥ २ ॥ जिन हरि का नामु न गुरमुखि जाता से जग महि काहे आइआ ॥ गुर की सेवा कदे न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ नानक से पूरे वडभागी सतिगुर सेवा लाए ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि गुरबाणी सुखु पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ १२ ॥ भैरउ महला ३ ॥ दुख विचि जँमै

दुखिं मरै दुख विचि कार कमाइ ॥ गरभ जोनी विचि कदे न निकलै बिसता माहि समाइ ॥ १ ॥ धिगु धिगु मनमुखिं
 जनमु गवाइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का नामु न भाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का सबदु सभि रोग गवाए जिस
 नो हरि जीउ लाए ॥ नामे नामि मिलै वडिआई जिस नो मँनि वसाए ॥ २ ॥ सतिगुरु भेटै ता फलु पाए सचु करणी सुख
 सारु ॥ से जन निरमल जो हरि लागे हरि नामे धरहि पिआरु ॥ ३ ॥ तिन की रेणु मिलै तां मसतकि लाई जिन सतिगुरु
 पूरा धिआइआ ॥ नानक तिन की रेणु पूरै भागि पाईऐ जिनी राम नामि चितु लाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३ ॥ भैरउ महला ३
 ॥ सबदु बीचारे सो जनु साचा जिन कै हिरदै साचा सोई ॥ साची भगति करहि दिनु राती तां तनि दूखु न होई ॥ १ ॥
 भगतु भगतु कहै सभु कोई ॥ बिनु सतिगुरु सेवे भगति न पाईऐ पूरै भागि मिलै प्रभु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख मैलु
 गवावहि लाभु मागहि लाहा लाभु किदू होई ॥ जमकालु सदा है सिर ऊपरि दूजै भाइ पति खोई ॥ २ ॥ बहले भेख भवहि
 दिनु राती हउमै रोगु न जाई ॥ पड़ि पड़ि लूझहि बादु वखाणहि मिलि माइआ सुरति गवाई ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवहि परम
 गति पावहि नामि मिलै वडिआई ॥ नानक नामु जिना मनि वसिआ दरि साचै पति पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ १४ ॥ भैरउ
 महला ३ ॥ मनमुख आसा नहीं उतरै दूजै भाइ खुआए ॥ उदरु नै साणु न भरीऐ कबहू तिसना अगनि पचाए ॥ १ ॥
 सदा अनंदु राम रसि राते ॥ हिरदै नामु दुबिधा मनि भागी हरि हरि अँम्रितु पी त्रिपताते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे पारब्रहमु
 खिसटि जिनि साजी सिरि सिरि धँधै लाए ॥ माइआ मोहु कीआ जिनि आपे आपे दूजै लाए ॥ २ ॥ तिस नो किहु कहीऐ
 जे दूजा होवै सभि तुधै माहि समाए ॥ गुरमुखिं गिआनु ततु बीचारा जोती जोति मिलाए ॥ ३ ॥ सो प्रभु साचा सद ही
 साचा साचा सभु आकारा ॥ नानक सतिगुरि सोझी पाई सचि नामि निसतारा ॥ ४ ॥ ५ ॥ १५ ॥ भैरउ महला ३ ॥
 कलिं महि प्रेत जिन्ही रामु न पछाता सतजुगि परम हँस बीचारी ॥ दुआपुरि त्रैतै माणस वरतहि विरलै हउमै मारी ॥ १ ॥

कलिं महिं राम नामि वडिआई ॥ जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता विणु नावै मुकति न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै नामु
 लखै जनु साचा गुरमुखि मँनि वसाई ॥ आपि तरे सगले कुल तारे जिनीं राम नामि लिव लाई ॥ २ ॥ मेरा प्रभु है गुण
 का दाता अवगण सबदि जलाए ॥ जिन मनि वसिआ से जन सोहे हिरदै नामु वसाए ॥ ३ ॥ घरु दरु महलु सतिगुरु
 दिखाइआ रँग सिउ रलीआ माणै ॥ जो किछु कहै सु भला करि मानै नानक नामु वखाणै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६ ॥ भैरउ
 महला ३ ॥ मनसा मनहि समाइ लै गुर सबदी वीचार ॥ गुर पूरे ते सोझी पवै फिरि मरै न वारो वार ॥ १ ॥ मन मेरे राम
 नामु आधारु ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सभ इछु पुजावणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ महि एको रवि रहिआ गुर
 बिनु बूझ न पाइ ॥ गुरमुखि प्रगटु होआ मेरा हरि प्रभु अनदिनु हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ सुखदाता हरि एकु है होर थै सुखु न
 पाहि ॥ सतिगुरु जिनीं न सेविआ दाता से अँति गए पछुताहि ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ फिरि दुखु न
 लागै धाइ ॥ नानक हरि भगति परापति होई जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १७ ॥ भैरउ महला ३ ॥ बाझु गुरु
 जगतु बउराना भूला चोटा खाई ॥ मरि मरि जँमै सदा दुखु पाए दर की खबरि न पाई ॥ १ ॥ मेरे मन सदा रहहु सतिगुर
 की सरणा ॥ हिरदै हरि नामु मीठा सद लागु गुर सबदे भवजलु तरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भेख करै बहुतु चितु डोलै अँतरि
 कामु क्रोधु अहँकारु ॥ अँतरि तिसा भूख अति बहुती भउकत फिरै दर बारु ॥ २ ॥ गुर कै सबदि मरहि फिरि जीवहि
 तिन कउ मुकति दुआरि ॥ अँतरि सांति सदा सुखु होवै हरि राखिआ उर धारि ॥ ३ ॥ जिउ तिसु भावै तिवै चलावै
 करणा किछु न जाई ॥ नानक गुरमुखि सबदु समाहलै राम नामि वडिआई ॥ ४ ॥ ८ ॥ १८ ॥ भैरउ महला ३ ॥ हउमै
 माइआ मोहि खुआइआ दुखु खटे दुख खाइ ॥ अँतरि लोभ हलकु दुखु भारी बिनु बिबेक भरमाइ ॥ १ ॥ मनमुखि धिगु
 जीवणु सैसारि ॥ राम नामु सुपनै नहीं चेतिआ हरि सिउ कदे न लागै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पसूआ करम

करै नही बूझै कूडु कमावै कूडो होइ ॥ सतिगुरु मिलै त उलटी होवै खोजि लहै जनु कोइ ॥ २ ॥ हरि हरि नामु रिदै सद
 वसिआ पाइआ गुणी निधानु ॥ गुर परसादी पूरा पाइआ चूका मन अभिमानु ॥ ३ ॥ आपे करता करे कराए आपे मारगि
 पाए ॥ आपे गुरमुखिं दे वडिआई नानक नामि समाए ॥ ४ ॥ ९ ॥ १९ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मेरी पटीआ लिखहु हरि
 गोविंद गोपाला ॥ दूजै भाइ फाथे जम जाला ॥ सतिगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरै नाला ॥ १ ॥ गुर
 उपदेसि प्रहिलादु हरि उचरै ॥ सासना ते बालकु गमु न करै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माता उपदेसै प्रहिलाद पिआरे ॥ पुत्र राम नामु
 छोडहु जीउ लेहु उबारे ॥ प्रहिलादु कहै सुनहु मेरी माइ ॥ राम नामु न छोडा गुरि दीआ बुझाइ ॥ २ ॥ सँडा मरका सभि जाइ
 पुकारे ॥ प्रहलादु आपि विगडिआ सभि चाटडे विगाडे ॥ दुसट सभा महि मँत्रु पकाइआ ॥ प्रहलाद का राखा होइ रघुराइआ
 ॥ ३ ॥ हाथि खडगु करि धाइआ अति अहँकारि ॥ हरि तेरा कहा तुझु लए उबारि ॥ खिन महि भैआन रूपु निकसिआ
 थँम्ह उपाडि ॥ हरणाखसु नखी बिदारिआ प्रहलादु लीआ उबारि ॥ ४ ॥ सँत जना के हरि जीउ कारज सवारे ॥ प्रहलाद
 जन के इकीह कुल उधारे ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारे ॥ नानक राम नामि सँत निसतारे ॥ ५ ॥ १० ॥ २० ॥ भैरउ
 महला ३ ॥ आपे दैत लाइ दिते सँत जना कउ आपे राखा सोई ॥ जो तेरी सदा सरणाई तिन मनि दुखु न होई ॥ १ ॥ जुगि
 जुगि भगता की रखदा आइआ ॥ दैत पुत्रु प्रहलादु गाइत्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 अनदिनु भगति करहि दिन राती दुबिधा सबदे खोई ॥ सदा निरमल है जो सचि राते सचु वसिआ मनि सोई ॥ २ ॥ मूरख
 दुबिधा पढ़हि मूलु न पछाणहि विरथा जनमु गवाइआ ॥ सँत जना की निँदा करहि दुसटु दैतु चिड़ाइआ ॥ ३ ॥ प्रहलादु
 दुबिधा न पड़ै हरि नामु न छोडै डरै न किसै दा डराइआ ॥ सँत जना का हरि जीउ राखा दैतै कालु नेडा आइआ ॥ ४ ॥
 आपणी पैज राखै भगतां देइ वडिआई ॥ नानक हरणाखसु नखी बिदारिआ अँधै दर की खबरि न पाई ॥ ५ ॥ ११ ॥ २१

॥

रागु भैरउ महला ४ चउपदे घरु १ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

हरि जन संत करि किरपा पगि लाइणु ॥ गुर सबदी हरि भजु सुरति समाइणु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु नामु नराइणु ॥ हरि
हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि भवजलु हरि नामि तराइणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगति साध मेलि हरि गाइणु ॥ गुरमती ले
राम रसाइणु ॥ २ ॥ गुर साधू अंमि त गिआन सरि नाइणु ॥ सभि किलविख पाप गए गवाइणु ॥ ३ ॥ तू आपे करता
स्त्रिसति धराइणु ॥ जनु नानकु मेलि तेरा दास दसाइणु ॥ ४ ॥ १ ॥ भैरउ महला ४ ॥ बोलि हरि नामु सफल सा घरी ॥ गुर
उपदेसि सभि दुख परहरी ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु नामु नरहरी ॥ करि किरपा मेलहु गुरु पूरा सतसंगति संगि सिंधु भउ तरी
॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगजीवनु धिआइ मनि हरि सिमरी ॥ कोट कोटंतर तेरे पाप परहरी ॥ २ ॥ सतसंगति साध धूरि मुखि
परी ॥ इसनानु कीओ अठसठि सुरसरी ॥ ३ ॥ हम मूरख कउ हरि किरपा करी ॥ जनु नानकु तारिओ तारण हरी ॥ ४ ॥
२ ॥ भैरउ महला ४ ॥ सुक्रितु करणी सारु जपमाली ॥ हिरदै फेरि चलै तुधु नाली ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु बनवाली ॥
करि किरपा मेलहु सतसंगति तूटि गई माइआ जम जाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सेवा घाल जिनि घाली ॥ तिसु घड़ीरे
सबदु सची टकसाली ॥ २ ॥ हरि अगम अगोचरु गुरि अगम दिखाली ॥ विचि काइआ नगर लधा हरि भाली ॥ ३ ॥ हम
बारिक हरि पिता प्रतिपाली ॥ जन नानक तारहु नदरि निहाली ॥ ४ ॥ ३ ॥ भैरउ महला ४ ॥ सभि घट तेरे तू सभना माहि
॥ तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ १ ॥ हरि सुखदाता मेरे मन जापु ॥ हउ तुधु सालाही तू मेरा हरि प्रभु बापु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जह जह देखा तह हरि प्रभु सोइ ॥ सभ तेरै वसि दूजा अवरु न कोइ ॥ २ ॥ जिस कउ तुम हरि राखिआ भावै ॥ तिस कै नेडै
कोइ न जावै ॥ ३ ॥ तू जलि थलि महीअलि सभ तै भरपूरि ॥ जन नानक हरि जपि हाजरा हजूरि ॥ ४ ॥ ४ ॥

भैरउ महला ४ वरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का संतु हरि की हरि मूरति जिसु हिरदै हरि नामु मुरारि ॥ मसतकि भागु होवै जिसु लिखिआ सो गुरमति हिरदै हरि नामु
समाहरि ॥ मधुसूदनु जपीरे उर धारि ॥ देही नगरि तसकर पंच धातू गुर सबदी हरि काटे मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन का
हरि सेती मनु मानिआ तिन कारज हरि आपि सवारि ॥ तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि अंगीकारु कीआ करतारि ॥ २
॥ मता मसूरति तां किछु कीजै जे किछु होवै हरि बाहरि ॥ जो किछु करे सोई भल होसी हरि धिआवहु अनदिनु नामु मुरारि
॥ ३ ॥ हरि जो किछु करे सु आपे आपे ओहु पूछि न किसै करे बीचारि ॥ नानक सो प्रभु सदा धिआईरे जिनि मेलिआ
सतिगुरु किरपा धारि ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ भैरउ महला ४ ॥ ते साधु हरि मेलहु सुआमी जिन जपिआ गति होइ हमारी ॥
तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ बलिहारी ॥ १ ॥ हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥ क्रिपा क्रिपा करि
जगत पित सुआमी हम दासनि दास कीजै पनिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिन मति ऊतम तिन पति ऊतम जिन हिरदै वसिआ
बनवारी ॥ तिन की सेवा लाइ हरि सुआमी तिन सिमरत गति होइ हमारी ॥ २ ॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते
हरि दरगह काटे मारी ॥ ते नर निंदक सोभ न पावहि तिन नक काटे सिरजनहारी ॥ ३ ॥ हरि आपि बुलावै आपे बोलै हरि
आपि निरंजनु निरंकारु निराहारी ॥ हरि जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलसी जन नानक किआ एहि जंत विचारी ॥ ४ ॥ २
॥ ६ ॥ भैरउ महला ४ ॥ सतसंगति साई हरि तेरी जितु हरि कीरति हरि सुनणे ॥ जिन हरि नामु सुणिआ मनु भीना तिन
हम श्रेवह नित चरणे ॥ १ ॥ जगजीवनु हरि धिआइ तरणे ॥ अनेक असंख नाम हरि तेरे न जाही जिहवा इतु गनणे ॥ १
॥ रहाउ ॥ गुरसिख हरि बोलहु हरि गावहु ले गुरमति हरि जपणे ॥ जो उपदेसु सुणे गुर केरा सो जनु पावै हरि सुख घणे
॥ २ ॥ धंनु सु वंसु धंनु सु पिता धंनु सु माता जिनि जन जणे ॥ जिन सासि गिरासि धिआइआ

मेरा हरि हरि से साची दरगह हरि जन बणे ॥ ३ ॥ हरि हरि अगम नाम हरि तेरे विचि भगता हरि धरणे ॥ नानक जनि पाइआ
मति गुरमति जपि हरि हरि पारि पवणे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

भैरउ महला ५ वरु १ १४ शितिगुर प्रसादि ॥

सगली थीति पासि डारि राखी ॥ असटम थीति गोविंद जनमासी ॥ १ ॥ भरमि भूले नर करत कचराइण ॥ जनम मरण ते
रहत नाराइणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि पंजीरु खवाइओ चोर ॥ ओहु जनमि न मरै रे साकत ढोर ॥ २ ॥ सगल पराध देहि
लोरोनी ॥ सो मुखु जलओ जितु कहहि ठाकुरु जोनी ॥ ३ ॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ नानक का प्रभु रहिओ समाइ
॥ ४ ॥ १ ॥ भैरउ महला ५ ॥ ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥ भउ नही लागै जां ऐसे बुझीआ ॥ १ ॥ राखा एकु हमारा
सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥ जहा कहां प्रभु तूं वरतंता ॥ २ ॥ घरि
सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु दिडाइआ ॥ ३ ॥ २ ॥ भैरउ महला ५ ॥ वरत न रहउ न मह
रमदाना ॥ तिसु सेवी जो रखै निदाना ॥ १ ॥ एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ हिंदू तुरक दुहां नेबेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हज काबै
जाउ न तीरथ पूजा ॥ एको सेवी अवरु न दूजा ॥ २ ॥ पूजा करउ न निवाज गुजारउ ॥ एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥
३ ॥ ना हम हिंदू न मुसलमान ॥ अलह राम के पिंडु परान ॥ ४ ॥ कहु कबीर इहु कीआ वखाना ॥ गुर पीर मिलि खुदि खसमु
पछाना ॥ ५ ॥ ३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ दस मिरगी सहजे बांधि आनी ॥ पांच मिरग बेधे सिव की बानी ॥ १ ॥ संतसंगि ले
चडिओ सिकार ॥ म्रिग पकरे बिनु घोर हथीआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आखेर बिरति बाहरि आइओ धाइ ॥ अहेरा पाइओ घर कै
गांइ ॥ २ ॥ म्रिग पकरे घरि आणे हाटि ॥ चुख चुख ले गए बांढे बाटि ॥ ३ ॥ एहु अहेरा कीनो दानु ॥ नानक कै घरि केवल
नामु ॥ ४ ॥ ४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ जे सउ लोचि लोचि खावाइआ ॥ साकत हरि हरि चीति न आइआ ॥ १ ॥

सँत जना की लेहु मते ॥ साधसँगि पावहु परम गते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाथर कउ बहु नीरु पवाइआ ॥ नह भीगै अधिक
 सूकाइआ ॥ २ ॥ खटु सासत्र मूरखै सुनाइआ ॥ जैसे दह दिस पचनु झुलाइआ ॥ ३ ॥ बिनु कण खलहानु जैसे गाहन
 पाइआ ॥ तिउ साकत ते को न बरासाइआ ॥ ४ ॥ तित ही लाग़ा जितु को लाइआ ॥ कहु नानक प्रभि बणत बणाइआ
 ॥ ५ ॥ ५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ जीउ प्राण जिनि रचिओ सरीर ॥ जिनिहि उपाए तिस कउ पीर ॥ १ ॥ गुरु गोबिंदु
 जीअ कै काम ॥ हलति पलति जा की सद छाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु आराधन निरमल रीति ॥ साधसँगि बिनसी
 बिपरीति ॥ २ ॥ मीत हीत धनु नह पारणा ॥ धँनि धँनि मेरे नाराइणा ॥ ३ ॥ नानकु बोलै अँमित बाणी ॥ एक बिना
 दूजा नही जाणी ॥ ४ ॥ ६ ॥ भैरउ महला ५ ॥ आगै द्यु पाछै नाराइण ॥ मधि भागि हरि प्रेम रसाइण ॥ १ ॥ प्रभु
 हमारै सासत्र सउण ॥ सूख सहज आनँद ग्रिह भउण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना नामु करन सुणि जीवे ॥ प्रभु सिमरि सिमरि
 अमर थिरु थीवे ॥ २ ॥ जनम जनम के दूख निवारे ॥ अनहद सबद वजे दरबारे ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि लीए मिलाए
 ॥ नानक प्रभ सरणागति आए ॥ ४ ॥ ७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ कोटि मनोरथ आवहि हाथ ॥ जम मारग कै सँगी पांथ
 ॥ १ ॥ गँगा जलु गुरु गोबिंद नाम ॥ जो सिमरै तिस की गति होवै पीवत बहुड़ि न जोनि भ्रमाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा
 जाप ताप इसनान ॥ सिमरत नाम भए निहकाम ॥ २ ॥ राज माल सादन दरबार ॥ सिमरत नाम पूरन आचार ॥ ३ ॥
 नानक दास इहु कीआ बीचारु ॥ बिनु हरि नाम मिथिआ सभ छारु ॥ ४ ॥ ८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ लेपु न लागो तिल
 का मूलि ॥ दुसटु ब्राहमणु मूआ होइ कै सूल ॥ १ ॥ हरि जन राखे पारब्रहमि आपि ॥ पापी मूआ गुरु परतापि ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ अपना खसमु जनि आपि धिआइआ ॥ इआणा पापी ओहु आपि पचाइआ ॥ २ ॥ प्रभ मात पिता अपने दास
 का रखवाला ॥ निँदक का माथा ईहां ऊहा काला ॥ ३ ॥ जन नानक की परमेसरि सुणी अरदासि ॥ मलेछु पापी

पचिआ भइआ निरासु ॥ ४ ॥ ९ ॥ भैरउ महला ५ ॥ खूबु खूबु खूबु खूबु खूबु तेरो नामु ॥ झूठ झूठ झूठ झूठ दुनी गुमानु ॥
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नगज तेरे बँदे दीदारु अपारु ॥ नाम बिना सभ दुनीआ छारु ॥ १ ॥ अचरजु तेरी कुदरति तेरे कदम
 सलाह ॥ गनीव तेरी सिफति सचे पातिसाह ॥ २ ॥ नीधरिआ धर पनह खुदाइ ॥ गरीब निवाजु दिनु रैणि धिआइ ॥ ३
 ॥ नानक कउ खुदि खसम मिहरवान ॥ अलहु न विसरै दिल जीअ परान ॥ ४ ॥ १० ॥ भैरउ महला ५ ॥ साच पदारथु
 गुरुमुखि लहहु ॥ प्रभ का भाणा सति करि सहहु ॥ १ ॥ जीवत जीवत जीवत रहहु ॥ राम रसाइणु नित उठि पीवहु ॥
 हरि हरि हरि हरि रसना कहहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलिजुग महि इक नामि उधारु ॥ नानकु बोलै ब्रहम बीचारु ॥ २ ॥ ११
 ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु सेवि सरब फल पाए ॥ जनम जनम की मैलु मिटाए ॥ १ ॥ पतित पावन प्रभ तेरो नाउ ॥
 पूरबि करम लिखे गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू सँगि होवै उधारु ॥ सोभा पावै प्रभ कै दुआर ॥ २ ॥ सरब कलिआण
 चरण प्रभ सेवा ॥ धूरि बाछहि सभि सुरि नर देवा ॥ ३ ॥ नानक पाइआ नाम निधानु ॥ हरि जपि जपि उधरिआ सगल
 जहानु ॥ ४ ॥ १२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ अपने दास कउ कँठि लगावै ॥ निँदक कउ अगनि महि पावै ॥ १ ॥ पापी ते
 राखे नाराइण ॥ पापी की गति कतहू नाही पापी पचिआ आप कमाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दास राम जीउ लागी प्रीति ॥
 निँदक की होई बिपरीति ॥ २ ॥ पारब्रहमि अपना बिरदु प्रगटाइआ ॥ दोखी अपना कीता पाइआ ॥ ३ ॥ आइ न जाई
 रहिआ समाई ॥ नानक दास हरि की सरणाई ॥ ४ ॥ १३ ॥

रागु भैरउ महला ५ चउपदे वरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

श्रीधर मोहन सगल उपावन निरँकार सुखदाता ॥ ऐसा प्रभु छोडि करहि अन सेवा कवन बिखिआ रस माता ॥ १ ॥ रे मन
 मेरे तू गोविद भाजु ॥ अवर उपाव सगल मै देखे जो चितवीरे तितु बिगरसि काजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ठाकुरु छोडि दासी
 कउ सिमरहि मनमुख अँध

अगिआना ॥ हरि की भगति करहि तिन निँदहि निगुरे पसू समाना ॥ २ ॥ जीउ पिँडु तनु धनु सभु प्रभ का साकत कहते मेरा
 ॥ अहँबुधि दुरमति है मैली बिनु गुर भवजलि फेरा ॥ ३ ॥ होम जग जप तप सभिँ सँजम तटि तीरथि नही पाइआ ॥
 मिटिआ आपु पर सरणाई गुरमुखि नानक जगतु तराइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ बन महिँ पेखिओ त्रिण
 महिँ पेखिओ छिहिँ पेखिओ उदासाए ॥ दँडधार जटधारैँ पेखिओ वरत नेम तीरथाए ॥ १ ॥ सँतसँगिँ पेखिओ मन माँए ॥
 ऊभ पइआल सरब महिँ पूरन रसिँ मँगल गुण गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोग भैख सँनिआसैँ पेखिओ जतिँ जँगम कापड़ाए ॥
 तपी तपीसुर मुनि महिँ पेखिओ नट नाटिक निरताए ॥ २ ॥ चहुँ महिँ पेखिओ खट महिँ पेखिओ दस असटी सिँमिताए ॥
 सभ मिलिँ एको एकु वखानहिँ तउ किस ते कहउ दुराए ॥ ३ ॥ अगह अगह बेअँत सुआमी नह कीम कीम कीमाए ॥ जन
 नानक तिन कै बलिँ बलिँ जाईरे जिह घटिँ परगटीआए ॥ ४ ॥ २ ॥ १५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निकटिँ बुझैँ सो बुरा जिउ करैँ
 ॥ बिखु सँचैँ नित डरता फिरैँ ॥ है निकटे अरु भेदु न पाइआ ॥ बिनु सतिगुर सभ मोही माइआ ॥ १ ॥ नेडैँ नेडैँ सभु को
 कहैँ ॥ गुरमुखिँ भेदु विरला को लहैँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटिँ न देखैँ पर छिहिँ जाइ ॥ दरबु हिरैँ मिथिआ करिँ खाइ ॥ पई
 ठगउरी हरिँ सँगिँ न जानिआ ॥ बाझु गुरू हैँ भरमिँ भुलानिआ ॥ २ ॥ निकटिँ न जानैँ बोलैँ कूडु ॥ माइआ मोहिँ मूठा हैँ
 मूडु ॥ अँतरिँ वसतुँ दिसँतरिँ जाइ ॥ बाझु गुरू हैँ भरमिँ भुलाइ ॥ ३ ॥ जिंसुँ मसतकिँ करमुँ लिखिआ लिलाट ॥ सतिगुरु
 सेवेँ खुलेह कपाट ॥ अँतरिँ बाहरिँ निकटे सोइ ॥ जन नानक आवैँ न जावैँ कोइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६ ॥ भैरउ महला ५ ॥
 जिंसुँ तू राखहिँ तिसुँ कउनुँ मारैँ ॥ सभ तुझ हीँ अँतरिँ सगल सँसारैँ ॥ कोटिँ उपाव चितवत हैँ प्राणी ॥ सो होवैँ जिँ करैँ चोज
 विडाणी ॥ १ ॥ राखहुँ राखहुँ किरपा धारिँ ॥ तेरीँ सरणिँ तेरैँ दरवारिँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनिँ सेविआ निरभउ सुखदाता ॥
 तिनिँ भउ दूरिँ कीआ एकु पराता ॥ जो तू करहिँ सोईँ फुनिँ होइ ॥ मारैँ न राखैँ दूजा कोइ ॥ २ ॥ किआ तू सोचहिँ माणस

बाणिं ॥ अंतरजामी पुरखु सुजाणु ॥ एक टेक एको आधारु ॥ सभ किछु जाणै सिरजणहारु ॥ ३ ॥ जिसु ऊपरि नदरिं करे
 करतारु ॥ तिसु जन के सभिं काज सवारिं ॥ तिस का राखा एको सोइ ॥ जन नानक अपडिं न साकै कोइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १७
 ॥ भैरउ महला ५ ॥ तउ कडीऐ जे होवै बाहरिं ॥ तउ कडीऐ जे विसरै नरहरिं ॥ तउ कडीऐ जे दूजा भाए ॥ किआ कडीऐ जां
 रहिआ समाए ॥ १ ॥ माइआ मोह कडे कडि पचिआ ॥ बिनु नावै भ्रमि भ्रमि भ्रमि खपिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तउ कडीऐ जे
 दूजा करता ॥ तउ कडीऐ जे अनिआइ को मरता ॥ तउ कडीऐ जे किछु जाणै नाही ॥ किआ कडीऐ जां भरपूरि समाही ॥ २
 ॥ तउ कडीऐ जे किछु होइ धिडाणै ॥ तउ कडीऐ जे भूलिं रंजाणै ॥ गुरिं कहिआ जो होइ सभ प्रभ ते ॥ तब काड़ा छोडि
 अचिंत हम सोते ॥ ३ ॥ प्रभ तूहै ठाकुरु सभु को तेरा ॥ जिउ भावै तितु करहि निबेरा ॥ दुतीआ नासति इकु रहिआ समाइ ॥
 राखहु पैज नानक सरणाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ बिन बाजे कैसे निरतिकारी ॥ बिनु कंठै कैसे गावनहारी
 ॥ जील बिना कैसे बजै रबाब ॥ नाम बिना बिरथे सभिं काज ॥ १ ॥ नाम बिना करहु को तरिआ ॥ बिनु सतिगुर कैसे पारिं
 परिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु जिहवा कहा को बकता ॥ बिनु श्रवना कहा को सुनता ॥ बिनु नेत्रा कहा को पेरवै ॥ नाम बिना
 नरु कही न लेखवै ॥ २ ॥ बिनु बिदिआ कहा कोई पंडित ॥ बिनु अमरै कैसे राज मंडित ॥ बिनु बूझे कहा मनु ठहराना ॥ नाम
 बिना सभु जगु बउराना ॥ ३ ॥ बिनु बैराग कहा बैरागी ॥ बिनु हउ तिआगि कहा कोऊ तिआगी ॥ बिनु बसि पंच कहा मन
 चूरे ॥ नाम बिना सद सद ही झूरे ॥ ४ ॥ बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु ॥ बिनु पेखे कहु कैसे धिआनु ॥ बिनु भै कथनी
 सब विकार ॥ कहु नानक दर का बीचार ॥ ५ ॥ ६ ॥ १९ ॥ भैरउ महला ५ ॥ हउमै रोगु मानुख कउ दीना ॥ काम रोगि
 मैगलु बसि लीना ॥ द्रिसटि रोगि पचि मुए पतंगा ॥ नाद रोगि खपि गए कुरंगा ॥ १ ॥ जो जो दीसै सो सो रोगी ॥ रोग
 रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥ बासन रोगि भवरु बिनसानो ॥ हेत रोग का

सगल संसारा ॥ त्रिबिधि रोग महि बधे बिकारा ॥ २ ॥ रोगे मरता रोगे जनमै ॥ रोगे फिरि फिरि जोनी भरमै ॥ रोग बंध
 रहनु रती न पावै ॥ बिनु सतिगुर रोगु कतहि न जावै ॥ ३ ॥ पारब्रहमि जिंसु कीनी दइआ ॥ बाह पकड़ि रोगहु कढि लइआ
 ॥ तूटे बंधन साधसंगु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि रोगु मिटाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ २० ॥ भैरउ महला ७ ॥ चीति आवै तां महा
 अनंद ॥ चीति आवै तां सभि दुख भँज ॥ चीति आवै तां सरधा पूरी ॥ चीति आवै तां कबहि न झूरी ॥ १ ॥ अंतरि राम राइ
 प्रगटे आइ ॥ गुरि पूरै दीओ रँगु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चीति आवै तां सरब को राजा ॥ चीति आवै ताण पूरे काजा ॥ चीति
 आवै तां रँगि गुलाल ॥ चीति आवै तां सदा निहाल ॥ २ ॥ चीति आवै तां सद धनवंता ॥ चीति आवै तां सद निभरँता ॥
 चीति आवै तां सभि रँग माणे ॥ चीति आवै तां चूकी काणे ॥ ३ ॥ चीति आवै तां सहज घरु पाइआ ॥ चीति आवै तां सुनि
 समाइआ ॥ चीति आवै सद कीरतनु करता ॥ मनु मानिआ नानक भगवंता ॥ ४ ॥ ८ ॥ २१ ॥ भैरउ महला ७ ॥ बापु
 हमारा सद चरँजीवी ॥ भाई हमारे सद ही जीवी ॥ मीत हमारे सदा अबिनासी ॥ कुटँबु हमारा निज घरि वासी ॥ १ ॥ हम
 सुखु पाइआ तां सभहि सुहेले ॥ गुरि पूरै पिता सँगि मेले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मँदर मेरे सभ ते ऊचे ॥ देस मेरे बेअँत अपूछे ॥
 राजु हमारा सद ही निहचलु ॥ मालु हमारा अखटु अवेचलु ॥ २ ॥ सोभा मेरी सभ जुग अंतरि ॥ बाज हमारी थान थनंतरि
 ॥ कीरति हमरी घरि घरि होई ॥ भगति हमारी सभनी लोई ॥ ३ ॥ पिता हमारे प्रगटे माइ ॥ पिता पूत रलि कीनी सांझ ॥
 कहु नानक जउ पता पतीने ॥ पिता पूत एकै रँगि लीने ॥ ४ ॥ ९ ॥ २२ ॥ भैरउ महला ७ ॥ निरवैर पुरख सतिगुर प्रभ
 दाते ॥ हम अपराधी तुम्ह बखसाते ॥ जिंसु पापी कउ मिले न ढोई ॥ सरणि आवै तां निरमलु होई ॥ १ ॥ सुखु पाइआ
 सतिगुरू मनाइ ॥ सभ फल पाए गुरू धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु सतिगुर आदेसु ॥ मनु तनु तेरा सभु तेरा देसु ॥
 चूका पड़दा तां नदरी आइआ ॥ खसमु तूहै सभना के राइआ ॥ २ ॥ तिसु भाणा सूके कासट हरिआ ॥ तिसु भाणा तां

थल सिरि सरिआ ॥ तिसु भाणा तां सभि फल पाए ॥ चिंत गई लागि सतिगुर पाए ॥ ३ ॥ हरामखोर निरगुण कउ तूठा
 ॥ मनु तनु सीतलु मनि अँमितु वूठा ॥ पारब्रहम गुर भए दइआला ॥ नानक दास देखि भए निहाला ॥ ४ ॥ १० ॥ २३
 ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु मेरा बेमुहताजु ॥ सतिगुर मेरे सचा साजु ॥ सतिगुरु मेरा सभस का दाता ॥ सतिगुरु मेरा
 पुरखु बिधाता ॥ गुर जैसा नाही को देव ॥ जिसु मसतकि भागु सु लागा सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मेरा सरब
 प्रतिपालै ॥ सतिगुरु मेरा मारि जीवालै ॥ सतिगुर मेरे की वडिआई ॥ प्रगटु भई है सभनी थाई ॥ २ ॥ सतिगुरु मेरा
 ताणु निताणु ॥ सतिगुरु मेरा घरि दीबाणु ॥ सतिगुरु कै हउ सद बलि जाइआ ॥ प्रगटु मारगु जिनि करि दिखलाइआ ॥
 ३ ॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु भउ न बिआपै ॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु दुखु न संतापै ॥ नानक सोधे सिँमिति बेद ॥
 पारब्रहम गुर नाही भेद ॥ ४ ॥ ११ ॥ २४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु लैत मनु परगटु भइआ ॥ नामु लैत पापु तन ते
 गइआ ॥ नामु लैत सगल पुरबाइआ ॥ नामु लैत अठसठि मजनाइआ ॥ १ ॥ तीरथु हमरा हरि को नामु ॥ गुरि
 उपदेसिआ ततु गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु लैत दुखु दूरि पराना ॥ नामु लैत अति मूड सुगिआना ॥ नामु लैत परगटि
 उजीआरा ॥ नामु लैत छुटे जँजारा ॥ २ ॥ नामु लैत जमु नेडि न आवै ॥ नामि लैत दरगह सुखु पावै ॥ नामु लैत प्रभु
 कहै साबासि ॥ नामु हमारी साची रासि ॥ ३ ॥ गुरि उपदेसु करिओ इहु सारु ॥ हरि कीरति मन नामु अधारु ॥ नानक
 उधरे नाम पुनहचार ॥ अवरि करम लोकह पतीआर ॥ ४ ॥ १२ ॥ २५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नमसकार ता कउ लख बार
 ॥ इहु मनु दीजै ता कउ वारि ॥ सिमरनि ता कै मिटहि संताप ॥ होइ अनँदु न विआपहि ताप ॥ १ ॥ ऐसो हीरा निरमल
 नाम ॥ जासु जपत पूरन सभि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा की द्रिसटि दुख डेरा ढहै ॥ अँमित नामु सीतलु मनि गहै ॥
 अनिक भगत जा के चरन पूजारी ॥ सगल मनोरथ पूरनहारी ॥ २ ॥ खिन महि ऊणे सुभर भरिआ ॥ खिन महि

सूके कीने हरिआ ॥ खिन महि निथावे कउ दीनो थानु ॥ खिन महि निमाणे कउ दीनो मानु ॥ ३ ॥ सभ महि एकु रहिआ
 भरपूरा ॥ सो जापै जिंसु सतिगुरु पूरा ॥ हरि कीरतनु ता को आधारु ॥ कहु नानक जिंसु आपि दइआरु ॥ ४ ॥ १३ ॥
 २६ ॥ भैरउ महला ५ ॥ मोहि दुहागनि आपि सीगारी ॥ रूप रंग दे नामि सवारी ॥ मिटिओ दुखु अरु सगल सँताप ॥
 गुर होए मेरे माई बाप ॥ १ ॥ सखी सहेरी मेरे ग्रसति अनंद ॥ करि किरपा भेटे मोहि कंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपति बुझी
 पूरन सभ आसा ॥ मिटे अँधेर भए परगासा ॥ अनहद सबद अचरज बिसमाद ॥ गुरु पूरा पूरा परसाद ॥ २ ॥ जा कउ
 प्रगट भए गोपाल ॥ ता कै दरसनि सदा निहाल ॥ सरब गुणा ता कै बहुतु निधान ॥ जा कउ सतिगुरि दीओ नामि ॥ ३ ॥
 जा कउ भेटिओ ठाकुरु अपना ॥ मनु तनु सीतलु हरि हरि जपना ॥ कहु नानक जो जन प्रभ भाए ॥ ता की रेनु बिरला को
 पाए ॥ ४ ॥ १४ ॥ २७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ चितवत पाप न आलकु आवै ॥ बेसुआ भजत किछु नह सरमावै ॥ सारो
 दिनसु मजूरी करै ॥ हरि सिमरन की वेला बजर सिरि परै ॥ १ ॥ माइआ लागि भूलो संसारु ॥ आपि भुलाइआ
 भुलावणहारै राचि रहिआ बिरथा बिउहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पेखत माइआ रंग बिहाइ ॥ गड़बड़ करै कउडी रंगु लाइ ॥ अँध
 बिउहार बँध मनु धावै ॥ करणैहारु न जीअ महि आवै ॥ २ ॥ करत करत इव ही दुखु पाइआ ॥ पूरन होत न कारज माइआ
 ॥ कामि क्रोधि लोभि मनु लीना ॥ तड़फि मूआ जिउ जल बिनु मीना ॥ ३ ॥ जिसके राखे होए हरि आपि ॥ हरि हरि नामु
 सदा जपु जापि ॥ साधसँगि हरि के गुण गाइआ ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २८ ॥ भैरउ महला ५ ॥
 अपणी दइआ करे सो पाए ॥ हरि का नामु मँनि वसाए ॥ साच सबदु हिरदे मन माहि ॥ जनम जनम के किलविख जाहि ॥
 १ ॥ राम नामु जीअ को आधारु ॥ गुर परसादि जपहु नित भाई तारि लए सागर संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ
 लिखिआ हरि एहु निधानु ॥ से जन दरगह पावहि मानु ॥ सूख सहज आनंद गुण गाउ ॥ आगै मिलै निथावे थाउ ॥ २ ॥

जुगह जुगंतरि इहु ततु सारु ॥ हरि सिमरणु साचा बीचारु ॥ जिखु लड़ि लाइ लए सो लागै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै
 ॥ ३ ॥ तेरे भगत भगतन का आपि ॥ अपणी महिमा आपे जापि ॥ जीअ जँत सभि तेरै हाथि ॥ नानक के प्रभ सद ही
 साथि ॥ ४ ॥ १६ ॥ २९ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै अंतरजामी ॥ नामु हमारै आवै कामी ॥ रोमि रोमि रविआ हरि
 नामु ॥ सतिगुर पूरै कीनो दानु ॥ १ ॥ नामु रतनु मेरै भँडार ॥ अगम अमोला अपर अपार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु हमारै
 निहचल धनी ॥ नाम की महिमा सभ महि बनी ॥ नामु हमारै पूरा साहु ॥ नामु हमारै बेपरवाहु ॥ २ ॥ नामु हमारै भोजन
 भाउ ॥ नामु हमारै मन का सुआउ ॥ नामु न विसरै संत प्रसादि ॥ नामु लैत अनहद पूरे नाद ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते नामु नउ
 निधि पाई ॥ गुर किरपा ते नाम सिउ बनि आई ॥ धनवँते सेई परधान ॥ नानक जा कै नामु निधान ॥ ४ ॥ १७ ॥ ३० ॥
 भैरउ महला ५ ॥ तू मेरा पिता तूहै मेरा माता ॥ तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता ॥ तू मेरा ठाकुरु हउ दासु तेरा ॥ तुझ बिनु
 अवरु नही को मेरा ॥ १ ॥ करि किरपा करहु प्रभ दाति ॥ तुम्हरी उसतति करउ दिन राति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम तेरे जँत तू
 बजावनहारा ॥ हम तेरे भिखारी दानु देहि दातारा ॥ तउ परसादि रँग रस माणे ॥ घट घट अंतरि तुमहि समाणे ॥ २ ॥
 तुम्हरी क्रिपा ते जपीरे नाउ ॥ साधसँगि तुमरे गुण गाउ ॥ तुम्हरी दइआ ते होइ दरद बिनासु ॥ तुमरी मइआ ते कमल
 बिगासु ॥ ३ ॥ हउ बलिहारि जाउ गुरदेव ॥ सफल दरसनु जा की निरमल सेव ॥ दइआ करहु ठाकुर प्रभ मेरे ॥ गुण गावै
 नानकु नित तेरे ॥ ४ ॥ १८ ॥ ३१ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सदा सदा ता जकउ जोहारु ॥ ऊचे
 ते ऊचा जा का थान ॥ कोटि अघा मिटहि हरि नाम ॥ १ ॥ तिस सरणाई सदा सुखु होइ ॥ करि किरपा जा कउ मेलै सोइ ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ जा के करतब लखे न जाहि ॥ जा का भरवासा सभ घटि माहि ॥ प्रगट भइआ साधू कै सँगि ॥ भगत
 अराधहि अनदिनु रँगि ॥ २ ॥ देदे तोटि नही भँडार ॥ खिन महि थापि उथापनहार ॥ जा का हुकमु न मेटै कोइ ॥ सिरि

पातिसाहा साचा सोइ ॥ ३ ॥ जिस की ओट तिसै की आसा ॥ दुखु सुखु हमरा तिस ही पासा ॥ राखि लीनो सभु जन का
 पड़दा ॥ नानकु तिस की उसतति करदा ॥ ४ ॥ १९ ॥ ३२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ शेवनहारी शेजु बनाइआ ॥ बलन बरतन
 कउ सनबंधु चिति आइआ ॥ बूझि बैरागु करे जे कोइ ॥ जनम मरण फिरि सोगु न होइ ॥ १ ॥ बिखिआ का सभु धंधु पसारु
 ॥ विरलै कीनो नाम अधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिबिधि माइआ रही बिआपि ॥ जो लपटानो तिसु दूख संताप ॥ सुखु नाही
 बिनु नाम धिआए ॥ नाम निधानु बडभागी पाए ॥ २ ॥ स्वांगी सिउ जो मनु रीझावै ॥ स्वागि उतारिरे फिरि पछुतावै ॥
 मेघ की छाइआ जैसे बरतनहार ॥ तैसो परपंचु मोह बिकार ॥ ३ ॥ एक वस्तु जे पावै कोइ ॥ पूरन काजु ताही का होइ ॥
 गुर प्रसादि जिनि पाइआ नामु ॥ नानक आइआ सो परवानु ॥ ४ ॥ २० ॥ ३३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ संत की निँदा जोनी
 भवना ॥ संत की निँदा रोगी करना ॥ संत की की निँदा दूख सहाम ॥ डानु दैत निँदक कउ जाम ॥ १ ॥ संतसंगि करहि जो
 बादु ॥ तिन निँदक नाही किछु सादु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत की निँदा कंधु छेदावै ॥ भगत की निँदा नरकु भुँचावै ॥ भगत
 की निँदा गरभ महि गलै ॥ भगत की निँदा राज ते टलै ॥ २ ॥ निँदक की गति कतहू नाहि ॥ आपि बीजि आपे ही खाहि ॥
 चोर जार जूआर ते बुरा ॥ अणहोदा भारु निँदकि सिरि धरा ॥ ३ ॥ पारब्रहम के भगत निरवैर ॥ सो निसतरै जो पूजै पैर ॥
 आदि पुरखि निँदकु भोलाइआ ॥ नानक किरतु न जाइ मिटाइआ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ३४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै बेद
 अरु नाद ॥ नामु हमारै पूरे काज ॥ नामु हमारै पूजा देव ॥ नामु हमारै गुर की सेव ॥ १ ॥ गुरि पूरै द्विडिओ हरि नामु ॥
 सभ ते ऊतमु हरि हरि कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु हमारै मजन इसनानु ॥ नामु हमारै पूरन दानु ॥ नामु लैत ते सगल पवीत
 ॥ नामु जपत मेरे भाई मीत ॥ २ ॥ नामु हमारै सउण संजोग ॥ नामु हमारै त्रिपति सुभोग ॥ नामु हमारै सगल आचार ॥
 नामु हमारै निरमल बिउहार ॥ ३ ॥ जा कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ सगल जना की हरि हरि टेक ॥ मनि तनि

नानक हरि गुण गाउ ॥ साधसँगि जिंसु देवै नाउ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ३५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निरधन कउ तुम देवहु धना ॥
 अनिक पाप जाहि निरमल मना ॥ सगल मनोरथ पूरन काम ॥ भगत अपुने कउ देवहु नाम ॥ १ ॥ सफल सेवा गोपाल राइ
 ॥ करन करावनहार सुआमी ता ते बिरथा कोइ न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोगी का प्रभ खँडहु रोगु ॥ दूखीए का मिटावहु प्रभ
 सोगु ॥ निथावे कउ तूमह थानि बैठावहु ॥ दास अपने कउ भगती लावहु ॥ २ ॥ निमाणे कउ प्रभ देतो मानु ॥ मूड मुगधु
 होइ चतुर सुगिआनु ॥ सगल भइआन का भउ नसै ॥ जन अपने कै हरि मनि बसै ॥ ३ ॥ पारब्रहम प्रभ सूख निधान ॥
 ततु गिआनु हरि अँमित नाम ॥ करि किरपा संत टहलै लाए ॥ नानक साधू सँगि समाए ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३६ ॥ भैरउ महला
 ५ ॥ संत मँडल महि हरि मनि वसै ॥ संत मँडल महि दुरतु सभु नसै ॥ संत मँडल महि निरमल रीति ॥ संतसँगि होइ एक
 परीति ॥ १ ॥ संत मँडलु तहा का नाउ ॥ पारब्रहम केवल गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत मँडलु महि जनम मरणु रहै ॥
 संत मँडल महि जमु किछु न कहै ॥ संतसँगि होइ निरमल बाणी ॥ संत मँडल महि नामु वखाणी ॥ २ ॥ संत मँडल का
 निहचल आसनु ॥ संत मँडल महि पाप बिनासनु ॥ संत मँडल महि निरमल कथा ॥ संतसँगि हउमै दुख नसा ॥ ३ ॥ संत
 मँडल का नही बिनासु ॥ संत मँडल महि हरि गुणतासु ॥ संत मँडल ठाकुर बिश्रामु ॥ नानक ओति पोति भगवानु ॥ ४ ॥
 २४ ॥ ३७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ रोगु कवनु जां राखै आपि ॥ तिसु जन होइ न दूखु संतापु ॥ जिंसु ऊपरि प्रभ किरपा करै
 ॥ तिसु ऊपर ते कालु परहरै ॥ १ ॥ सदा सखाई हरि हरि नामु ॥ जिंसु चीति आवै तिसु सदा सुखु होवै निकटि न आवै ता
 कै जामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब इहु न सो तन किनहि उपाइआ ॥ कवन मूल ते किआ प्रगटाइआ ॥ आपहि मारि आपि
 जीवालै ॥ अपने भगत कउ सदा प्रतिपालै ॥ २ ॥ सभ किछु जाणहु तिस कै हाथ ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ दुख
 भँजनु ता काहै नाउ ॥ सुख पावहि तिस के गुण गाउ ॥ ३ ॥ सुणि सुआमी संतन अरदासि ॥ जीउ प्रान धनु तुमहरै

पासि ॥ इहु जगु तेरा सभ तुझहि धिआए ॥ करि किरपा नानक सुखु पाए ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ तेरी
 टेक रहा कलि माहि ॥ तेरी टेक तेरे गुण गाहि ॥ तेरी टेक न पोहै कालु ॥ तेरी टेक बिनसै जँजालु ॥ १ ॥ दीन दुनीआ
 तेरी टेक ॥ सभ महि रविआ साहिबु एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी टेक करउ आनँद ॥ तेरी टेक जपउ गुर मँत ॥ तेरी टेक
 तरीऐ भउ सागरु ॥ राखणहारु पूरा सुख सागरु ॥ २ ॥ तेरी टेक नाही भउ कोइ ॥ अंतरजामी साचा सोइ ॥ तेरी
 टक तेरा मनि ताणु ॥ ईहां ऊहां तू दीबाणु ॥ ३ ॥ तेरी टेक तेरा भरवासा ॥ सगल धिआवहि प्रभ गुणतासा ॥ जपि
 जपि अनदु करहि तेरै दासा ॥ सिमरि नानक साचे गुणतासा ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३९ ॥ भैरउ महला ५ ॥ पथमे छोडी पराई
 निँदा ॥ उतरि गई सभ मन की चिँदा ॥ लोभु मोहु सभु कीनो दूरि ॥ परम बैसनो प्रभ पेखि हजूरि ॥ १ ॥ ऐसो तिआगी
 विरला कोइ ॥ हरि हरि नामु जपै जनु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहँबुधि का छोडिआ सँगु ॥ काम क्रोध का उतरिआ रँगु
 ॥ नाम धिआए हरि हरि हरे ॥ साध जना कै सँगि निसतरे ॥ २ ॥ बैरी मीत होए सँमान ॥ सरब महि पूरन भगवान ॥
 प्रभ की आगिआ मनि सुखु पाइआ ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्विड़ाइआ ॥ ३ ॥ करि किरपा जिसु राखै आपि ॥ सोई भगतु
 जपै नाम जाप ॥ मनि प्रगासु गुर ते मति लई ॥ कहु नानक ता की पूरी पई ॥ ४ ॥ २७ ॥ ४० ॥ भैरउ महला ५ ॥
 सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥ सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥ सुखु नाही बहु देस कमाए ॥ सरब सुखा हरि हरि गुण गाए
 ॥ १ ॥ सूख सहज आनँद लहहु ॥ साधसँगति पाईऐ वडभागी गुरमुखि हरि हरि नामु कहहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बँधन
 मात पिता सुत बनिता ॥ बँधन करम धरम हउ करता ॥ बँधन काटनहारु मनि वसै ॥ तउ सुखु पावै निज घरि बसै ॥
 २ ॥ सभि जाचिक प्रभ देवणहार ॥ गुण निधान बेअँत अपार ॥ जिस नो करमु करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नामु तिनै
 जनि जपना ॥ ३ ॥ गुर अपने आगत अरदासि ॥ करि किरपा पुरख गुणतासि ॥ कहु नानक तुमरी सरणाई ॥ जिउ

भावै तितु रखहु गुसाई ॥ ४ ॥ २८ ॥ ४१ ॥ भैरउ महला ५ ॥ गुर मिलिं तिआगिओ दूजा भाउ ॥ गुरमुखि जपिउ हरि
 का नाउ ॥ बिसरी चिंत नामि रँगु लागा ॥ जनम जनम का सोइआ जागा ॥ १ ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाए ॥ साधू
 सँगि सरब सुख पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोग दोख गुर सबदि निवारे ॥ नाम अउखधु मन भीतरि सारे ॥ गुर भेटत मनि
 भइआ अनंद ॥ सरब निधान नाम भगवँत ॥ २ ॥ जनम मरण की मिटी जम त्रास ॥ साधसँगति ऊंध कमल बिगास ॥
 गुण गावत निहचलु बिश्राम ॥ पूरन होए सगले काम ॥ ३ ॥ दुलभ देह आई परवानु ॥ सफल होई जपि हरि हरि नामु ॥
 कहु नानक प्रभि किरपा करी ॥ सासि गिरासि जपउ हरि हरी ॥ ४ ॥ २९ ॥ ४२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊचा जा
 का नाउ ॥ सदा सदा ता के गुण गाउ ॥ जिसु सिमरत सगला दुखु जाइ ॥ सरब सुख वसहि मनि आइ ॥ १ ॥ सिमरि
 मना तू साचा सोइ ॥ हलति पलति तुमरी गति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुरख निरँजन सिरजनहार ॥ जीअ जँत देवै
 आहार ॥ कोटि खते खिन बखसनहार ॥ भगति भाइ सदा निसतार ॥ २ ॥ साचा धनु साची वडिआई ॥ गुर पूरे ते
 निहचल मति पाई ॥ करि किरपा जिसु राखनहार ॥ ता का सगल मिटै अँधिआरा ॥ ३ ॥ पारब्रहम सिउ लागो धिआन
 ॥ पूरन पूरि रहिओ निरवान ॥ भ्रम भउ मेटि मिले गोपाल ॥ नानक कउ गुर भए दइआल ॥ ४ ॥ ३० ॥ ४३ ॥ भैरउ
 महला ५ ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासु ॥ मिटहि कलेस सुख सहजि निवासु ॥ तिसहि परापति जिसु प्रभु देइ ॥ पूरे
 गुर की पाए सेव ॥ १ ॥ सरब सुखा प्रभ तेरो नाउ ॥ आठ पहर मेरे मन गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो इछै सोई फलु पाए ॥
 हरि का नामु मँनि वसाए ॥ आवण जाण रहे हरि धिआइ ॥ भगति भाइ प्रभ की लिव लाइ ॥ २ ॥ बिनसे काम क्रोधु
 अहँकार ॥ तुटे माइआ मोह पिआर ॥ प्रभ की टेक रहै दिनु राति ॥ पारब्रहमु करे जिसु दाति ॥ ३ ॥ करन करावनहार
 सुआमी ॥ सगल घटा के अँतरजामी ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाइ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ४४
 ॥

भैरउ महला ५ ॥ लाज मरै जो नामु न लेवै ॥ नाम बिहून सुखी किउ सोवै ॥ हरि सिमरनु छाडि परम गति चाहै ॥ मूल
 बिना साखा कत आवै ॥ १ ॥ गुरु गोविंदु मेरे मन धिआइ ॥ जनम जनम की मैलु उतारै बंधन काटि हरि सँगि मिलाइ ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ तीरथि नाइ कहा सुचि मैलु ॥ मन कउ विआपै हउमै मैलु ॥ कोटि करम बंधन का मूलु ॥ हरि के भजन बिनु
 बिरथा पूलु ॥ २ ॥ बिनु खाए बूझै नही भूख ॥ रोगु जाइ तां उतरहि दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोहि बिआपिआ ॥ जिनि
 प्रभि कीना सो प्रभु नही जापिआ ॥ ३ ॥ धनु धनु साध धँनु हरि नाउ ॥ आठ पहर कीरतनु गुण गाउ ॥ धनु हरि भगति
 धनु करणैहार ॥ सरणि नानक प्रभु पूरख अपार ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ४५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ गुरु सुप्रसँन होए भउ गए ॥ नाम
 निरँजन मन महि लए ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ बिनसि गए सगले जँजाल ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद घने ॥
 साधसँगि मिटे भै भरमा अँमितु हरि हरि रसन भने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल सिउ लागो हेतु ॥ खिन महि बिनसिओ
 महा परेतु ॥ आठ पहर हरि हरि जपु जापि ॥ राखनहार गोविंद गुरु आपि ॥ २ ॥ अपने सेवक कउ सदा प्रतिपारै ॥
 भगत जना के सास निहारै ॥ मानस की कहु केतक बात ॥ जम ते राखै दे करि हाथ ॥ ३ ॥ निरमल सोभा निरमल रीति
 ॥ पारब्रह्मु आइआ मनि चीति ॥ करि किरपा गुरि दीनो दानु ॥ नानक पाइआ नामु निधानु ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४६ ॥ भैरउ
 महला ५ ॥ करण कारण समरथु गुरु मेरा ॥ जीअ प्राण सुखदाता नेरा ॥ भै भँजन अबिनासी राइ ॥ दरसनि देखिऐ सभु
 दुखु जाइ ॥ १ ॥ जत कत पेखउ तेरी सरना ॥ बलिं बलिं जाई सतिगुरु चरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन काम मिले गुरुदेव
 ॥ सभि फलदाता निरमल सेव ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ राम नामु रिद दीओ निवास ॥ २ ॥ सदा अनंदु नाही
 किछु सोगु ॥ दूखु दरदु नह बिआपै रोगु ॥ सभु किछु तेरा तू करणैहारु ॥ पारब्रह्म गुरु अगम अपार ॥ ३ ॥ निरमल
 सोभा अचरज बाणी ॥ पारब्रह्म पूरन मनि भाणी ॥ जलिं थलिं महीअलिं रविआ सोइ ॥ नानक सभ किछु प्रभ ते

होइ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ४७ ॥ भैरु महला ५ ॥ मनु तनु राता राम रँगि चरणे ॥ सरब मनोरथ पूरन करणे ॥ आठ पहर
 गावत भगवँतु ॥ सतिगुरि दीनो पूरा मँतु ॥ १ ॥ सो वडभागी जिसु नामि पिआरु ॥ तिसु कै सँगि तरै संसारु ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ सोई गिआनी जि सिमरै एक ॥ सो धनवँता जिसु बुधि बिबेक ॥ सो कुलवँता जि सिमरै सुआमी ॥ सो पतिवँता
 जि आपु पछानी ॥ २ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ गुण गुपाल दिनु रैनि धिआइआ ॥ तूटे बँधन पूरन आसा ॥
 हरि के चरण रिद माहि निवासा ॥ ३ ॥ कहु नानक जा के पूरन करमा ॥ सो जनु आइआ प्रभ की सरना ॥ आपि पवितु
 पावन सभि कीने ॥ राम रसाइणु रसना चीनेह ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४८ ॥ भैरु महला ५ ॥ नामु लैत किछु बिघनु न लागै ॥
 नामु सुणत जमु दूरहु भागै ॥ नामु लैत सभ दूखहु नासु ॥ नामु जपत हरि चरण निवासु ॥ १ ॥ निरबिघन भगति भजु
 हरि हरि नाउ ॥ रसकि रसकि हरि के गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि सिमरत किछु चाखु न जोहै ॥ हरि सिमरत दैत देउ न
 पोहै ॥ हरि सिमरत मोहु मानु न बधै ॥ हरि सिमरत गरभ जोनि न रुधै ॥ २ ॥ हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि
 सिमरनु बहु माहि इकेला ॥ जाति अजाति जपै जनु कोइ ॥ जो जापै तिस की गति होइ ॥ ३ ॥ हरि का नामु जपीरे
 साधसँगि ॥ हरि के नाम का पूरन रँगु ॥ नानक कउ प्रभ किरपा धारि ॥ सासि सासि हरि देहु चितारि ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४९
 ॥ भैरु महला ५ ॥ आपे सासतु आपे बेदु ॥ आपे घटि घटि जाणै भेदु ॥ जोति सरूप जा की सभ वथु ॥ करण कारण
 पूरन समरथु ॥ १ ॥ प्रभ की ओट गहहु मन मेरे ॥ चरन कमल गुरमुखि आराधहु दुसमन दूखु न आवै नेरे ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ आपे वणु त्रिणु त्रिभवण सारु ॥ जा कै सूति परोइआ संसारु ॥ आपे सिव सकती संजोगी ॥ आपि निरबाणी आपे
 भोगी ॥ २ ॥ जत कत पेखउ तत तत सोइ ॥ तिसु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सागरु तरीरे नाम कै रँगि ॥ गुण गावै नानक
 साधसँगि ॥ ३ ॥ मुकति भुगति जुगति वसि जा कै ॥ ऊणा नाही किछु जन ता कै ॥ करि किरपा जिसु होइ सुप्रसँन ॥

नानक दास सेई जन धँनु ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ५० ॥ भैरउ महला ५ ॥ भगता मनि आनँदु गोबिंद ॥ असथिति भए बिनसी
 सभ चिँद ॥ भै भ्रम बिनसि गए खिन माहि ॥ पारब्रह्मु वसिआ मनि आइ ॥ १ ॥ राम राम सँत सदा सहाइ ॥ घरि बाहरि
 नाले परमेसरु रवि रहिआ पूरन सभ ठाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धनु मालु जोबनु जुगति गोपाल ॥ जीअ प्राण नित सुख
 प्रतिपाल ॥ अपने दास कउ दे राखै हाथ ॥ निमख न छोडै सद ही साथ ॥ २ ॥ हरि सा प्रीतमु अवरु न कोइ ॥ सारि
 समूहले साचा सोइ ॥ मात पिता सुत बँधु नराइणु ॥ आदि जुगादि भगत गुण गाइणु ॥ ३ ॥ तिस की धर प्रभ का मनि
 जोरु ॥ एक बिना दूजा नहीं होरु ॥ नानक कै मनि इहु परखारथु ॥ प्रभू हमारा सारे सुआरथु ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ५१ ॥
 भैरउ महला ५ ॥ भै कउ भउ पड़िआ सिमरत हरि नाम ॥ सगल बिआपि मिटी त्रिहु गुण की दास के होए पूरन काम ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ हरि के लोक सदा गुण गावहि तिन कउ मिलिआ पूरन धाम ॥ जन का दरसु बाँछै दिन राती होइ पुनीत धरम राइ
 जाम ॥ १ ॥ काम क्रोध लोभ मद निँदा साधसँगि मिटिआ अभिमान ॥ ऐसे सँत भेटहि वडभागी नानक तिन कै सद
 कुरबान ॥ २ ॥ ३९ ॥ ५२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ पँच मजमी जो पँचन राखै ॥ मिथिआ रसना नित उठि भाखै ॥ चक्र
 बणाइ करै पाखँड ॥ झुरि झुरि पचै जैसे त्रिअ रँड ॥ १ ॥ हरि के नाम बिना सभ झूठु ॥ बिनु गुर पूरे मुकति न पाईरे साची
 दरगहि साकत मूठु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई कुचीलु कुदरति नहीं जानै ॥ लीपिरे थाइ न सुचि हरि मानै ॥ अँतरु मैला बाहरु
 नित धोवै ॥ साची दरगहि अपनी पति खोवै ॥ २ ॥ माइआ कारणि करै उपाउ ॥ कबहि न घालै सीधा पाउ ॥ जिनि
 कीआ तिसु चीति न आणै ॥ कूड़ी कूड़ी मुखहु वखाणै ॥ ३ ॥ जिस नो करमु करे करतारु ॥ साधसँगि होइ तिसु बिउहारु
 ॥ हरि नाम भगति सिउ लागा रँगु ॥ कहु नानक तिसु जन नहीं भँगु ॥ ४ ॥ ४० ॥ ५३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निँदक कउ
 फिटके सँसारु ॥ निँदक का झूठा बिउहारु ॥ निँदक का मैला आचारु ॥ दास अपुने कउ राखनहारु ॥ १ ॥ निँदक मुआ

निँदक कै नालि ॥ पारब्रह्मि परमेसरि जन राखे निँदक कै सिरि कड़किओ कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निँदक का कहिआ कोइ न
 मानै ॥ निँदक झूठु बोलि पछुताने ॥ हाथ पछोरहि सिरु धरनि लगाहि ॥ निँदक कउ दर्ई छोडै नाहि ॥ २ ॥ हरि का दासु
 किछु बुरा ना मागै ॥ निँदक कउ लगै दुख सांगै ॥ बगुले जिउ रहिआ पँख पसारि ॥ मुख ते बोलिआ तां कढिआ बीचारि ॥
 ३ ॥ अँतरजामी करता सोइ ॥ हरि जनु करै सु निहचल होइ ॥ हरि का दासु साचा दरबारि ॥ जन नानक कहिआ ततु
 बीचारि ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ५४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ दुइ कर जोरि करउ अरदासि ॥ जीउ पिँडु धनु तिस की रासि ॥ सोई मेरा
 सुआमी करनैहारु ॥ कोटि बार जाई बलिहार ॥ १ ॥ साधू धूरि पुनीत करी ॥ मन के बिकार मिटहि प्रभ सिमरत जनम
 जनम की मैलु हरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै गिह महि सगल निधान ॥ जा की सेवा पाईऐ मानु ॥ सगल मनोरथ पूरनहार ॥
 जीअ प्राण भगतन आधार ॥ २ ॥ घट घट अँतरि सगल प्रगास ॥ जपि जपि जीवहि भगत गुणतास ॥ जा की सेव न
 बिरथी जाइ ॥ मन तन अँतरि एकु धिआइ ॥ ३ ॥ गुर उपदेसि दइआ सँतोखु ॥ नामु निधानु निरमलु इक थोकु ॥ करि
 किरपा लीजै लडि लाइ ॥ चरन कमल नानक नित धिआइ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ५५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुर अपनी सुनी
 अरदासि ॥ कारजु आइआ सगला रासि ॥ मन तन अँतरि प्रभू धिआइआ ॥ गुर पूरे डरु सगल चुकाइआ ॥ १ ॥ सभ ते
 वड समरथ गुरदेव ॥ सभि सुख पाई तिस की सेव ॥ रहाउ ॥ जा का कीआ सभ किछु होइ ॥ तिस का अमरु न मेटै कोइ ॥
 पारब्रह्मु परमेसरु अनूपु ॥ सफल मूरति गुरु तिस का रूपु ॥ २ ॥ जा कै अँतरि बसै हरि नामु ॥ जो जो पेखै सु ब्रह्म
 गिआनु ॥ बीस बिसुए जा कै मनि परगासु ॥ तिसु जन कै पारब्रह्म का निवासु ॥ ३ ॥ तिसु गुर कउ सद करी नमसकार ॥
 तिसु गुर कउ सद जाउ बलिहार ॥ सतिगुर के चरन धोइ धोइ पीवा ॥ गुर नानक जपि जपि सद जीवा ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५६
 ॥

रागु भैरउ महला ७ पडताल घरु ३ १३ सितिगुर प्रसादि ॥

परतिपाल प्रभ क्रिपाल कवन गुन गनी ॥ अनिक रँग बहु तरँग सरब को धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक गिआन अनिक धिआन अनिक जाप जाप ताप ॥ अनिक गुनित धुनित ललित अनिक धार मुनी ॥ १ ॥ अनिक नाद अनिक बाज निमख निमख अनिक स्वाद अनिक दोख अनिक रोग मिटहि जस सुनी ॥ नानक सेव अपार देव तटह खटह बरत पूजा गवन भवन जात्र करन सगल फल पुनी ॥ २ ॥ १ ॥ ७७ ॥ ८ ॥ २१ ॥ ७ ॥ ७७ ॥ ९३ ॥

भैरउ असटपदीआ महला १ घरु २ १३ सितिगुर प्रसादि ॥

आतम महि रामु राम महि आतमु चीनसि गुर बीचारा ॥ अँमित बाणी सबदि पछाणी दुख काटै हउ मारा ॥ १ ॥ नानक हउमै रोग बुरे ॥ जह देखां तह एका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे परखे परखणहारै बहुरि सूलाकु न होई ॥ जिंन कउ नदरि भई गुरि मेले प्रभ भाणा सचु सोई ॥ २ ॥ पउणु पाणी बैसँतरु रोगी रोगी धरति सभोगी ॥ मात पिता माइआ देह सि रोगी रोगी कुटँब सँजोगी ॥ ३ ॥ रोगी ब्रहमा बिसनु सरुद्रा रोगी सगल सँसारा ॥ हरि पदु चीनि भए से मुकते गुर का सबदु वीचारा ॥ ४ ॥ रोगी सात समुँद सनदीआ खँड पताल सि रोगि भरे ॥ हरि के लोक सि साचि सुहेले सरबी थाई नदरि करे ॥ ५ ॥ रोगी खट दरसन भेखधारी नाना हठी अनेका ॥ बेद कतेब करहि कह बपुरे नह बूझहि इक एका ॥ ६ ॥ मिठ रसु खाइ सु रोगि भरीजै कँद मूलि सुखु नाही ॥ नामु विसारि चलहि अन मारगि अँत कालि पछुताही ॥ ७ ॥ तीरथि भरमै रोगु न छूटसि पडिआ बादु बिबादु भइआ ॥ दुबिधा रोगु सु अधिक वडेरा माइआ का मुहताजु भइआ ॥ ८ ॥ गुरमुखि साचा सबदि सलाहै मनि साचा तिसु रोगु गइआ ॥ नानक हरि जन अनदिनु निरमल जिंन कउ करमि नीसाणु पइआ ॥ ९ ॥ १ ॥

भैरव महला ३ वरु २ वरि शितिगुर प्रसादि ॥

तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ ॥ अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ॥ मनमुखि भूले गुरमुखि बुझाइआ ॥ कारणु करता करदा
आइआ ॥ १ ॥ गुर का सबदु मेरै अंतरि धिआनु ॥ हउ कबहु न छोडउ हरि का नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिता प्रहलादु पड़ण
पठाइआ ॥ लै पाटी पाथे कै आइआ ॥ नाम बिना नह पड़उ अचार ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिंद मुरारि ॥ २ ॥ पुत्र
प्रहिलाद सिउ कहिआ माइ ॥ परविरति न पड़हु रही समझाइ ॥ निरभउ दाता हरि जीउ मेरै नालि ॥ जे हरि छोडउ तउ कुलि
लागै गालि ॥ ३ ॥ प्रहलादि सभि चाटडे विगारे ॥ हमारा कहिआ न सुणै आपणे कारज सवारे ॥ सभ नगरी महि भगति
द्रिड़ाई ॥ दुसट सभा का किछु न वसाई ॥ ४ ॥ सँडै मरकै कीई पूकार ॥ सभे दैत रहे झख मारि ॥ भगत जना की पति राखै
सोई ॥ कीते कै कहिरे किआ होई ॥ ५ ॥ किरत सँजोगी दैति राजु चलाइआ ॥ हरि न बूझै तिनि आपि भुलाइआ ॥ पुत्र
प्रहलाद सिउ वादु रचाइआ ॥ अंधा न बूझै कालु नेडै आइआ ॥ ६ ॥ प्रहलादु कोठे विचि राखिआ बारि दीआ ताला ॥
निरभउ बालकु मूलि न डरई मेरै अंतरि गुर गोपला ॥ कीता होवै सरीकी करै अनहोदा नाउ धराइआ ॥ जो धुरि लिखिआ सो
आइ पहुता जन सिउ वादु रचाइआ ॥ ७ ॥ पिता प्रहलाद सिउ गुरज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीस गुसाई ॥ जगजीवनु
दाता अँति सखाई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥ ८ ॥ थँम्हु उपाडि हरि आपु दिखाइआ ॥ अहँकारी दैतु मारि पचाइआ ॥
भगता मनि आनँदु वजी वधाई ॥ अपने सेवक कउ दे वडिआई ॥ ९ ॥ जँमणु मरणा मोहु उपाइआ ॥ आवणु जाणा करतै
लिखि पाइआ ॥ प्रहलाद कै कारजि हरि आपु दिखाइआ ॥ भगता का बोलु आगै आइआ ॥ १० ॥ देव कुली लखिमी कउ
करहि जैकारु ॥ माता नरसिँघ का रूपु निवारु ॥ लखिमी भउ करै न साकै जाइ ॥ प्रहलादु जनु चरणी लागा आइ ॥ ११
॥

सतिगुरि नामु निधानु द्विडाइआ ॥ राजु मालु झूठी सभ माइआ ॥ लोभी नर रहे लपटाइ ॥ हरि के नाम बिनु दरगह मिलै सजाइ ॥ १२ ॥ कहै नानकु सभु को करे कराइआ ॥ से परवाणु जिनी हरि सिउ चितु लाइआ ॥ भगता का अंगीकारु करदा आइआ ॥ करतै अपना रूपु दिखाइआ ॥ १३ ॥ १ ॥ २ ॥ भैरउ महला ३ ॥ गुर सेवा ते अमित फलु पाइआ हउमै त्रिसन बुझाई ॥ हरि जा नामु हिदै मनि वसिआ मनसा मनहि समाई ॥ १ ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु मेरे पिआरे ॥ अनदिनु हरि गुण दीन जनु मांगै गुर कै सबदि उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना कउ जमु जोहि न साकै रती अंच दूख न लाई ॥ आपि तरहि सगले कुल तारहि जो तेरी सरणाई ॥ २ ॥ भगता की पैज रखाहि तू आपे एह तेरी वडिआई ॥ जनम जनम के किलविख दुख काटहि दुबिधा रती न राई ॥ ३ ॥ हम मूड मुग्ध किछु बूझहि नाही तू आपे देहि बुझाई ॥ जो तुधु भावै सोई करसी अवरु न करणा जाई ॥ ४ ॥ जगतु उपाइ तुधु धँधै लाइआ भूँडी कार कमाई ॥ जनमु पदारथु जुए हारिआ सबदै सुरति न पाई ॥ ५ ॥ मनमुखि मरहि तिन कछु न सूझै दुरमति अगिआन अंधारा ॥ भवजलु पारि न पावहि कब ही डूबि मुए बिनु गुर सिरि भारा ॥ ६ ॥ साचै सबदि रते जन साचे हरि प्रभि आपि मिलाए ॥ गुर की बाणी सबदि पछाती साचि रहे लिव लाए ॥ ७ ॥ तू आपि निरमलु तेरे जन है निरमल गुर कै सबदि वीचारे ॥ नानकु तिन कै सद बलिहारै राम नामु उरि धारे ॥ ८ ॥ २ ॥ ३ ॥

भैरउ महला ७ असटपदीआ घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

जिसु नामु रिदै सोई वड राजा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु पूरे काजा ॥ जिसु नामु रिदै तिनि कोटि धन पाए ॥ नाम बिना जनमु बिरथा जाए ॥ १ ॥ तिसु सालाही जिसु हरि धनु रासि ॥ सो वडभागी जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु कोट कई सैना ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सहज सुखैना ॥ जिसु नामु रिदै सो सीतलु हूआ ॥ नाम बिना धिगु जीवणु मूआ ॥ २ ॥

जिसु नामु रिदै सो जीवन मुक्ता ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सभ ही जुगता ॥ जिसु नामु रिदै तिनि नउ निधि पाई ॥ नाम बिना
भ्रमि आवै जाई ॥ ३ ॥ जिसु नामु रिदै सो वेपरवाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सद ही लाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु वड परवारा
॥ नाम बिना मनमुख गावारा ॥ ४ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु निहचल आसनु ॥ जिसु नामु रिदै तिसु तखति निवासनु ॥
जिसु नामु रिदै सो साचा साहु ॥ नामहीण नाही पति वेसाहु ॥ ५ ॥ जिसु नामु रिदै सो सभ महि जाता ॥ जिसु नामु रिदै सो
पुरखु बिधाता ॥ जिसु नामु रिदै सो सभ ते ऊचा ॥ नाम बिना भ्रमि जोनी मूचा ॥ ६ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु प्रगटि पहारा
॥ जिसु नामु रिदै तिसु मिटिआ अंधारा ॥ जिसु नामु रिदै सो पुरखु परवाणु ॥ नाम बिना फिरि आवण जाणु ॥ ७ ॥ तिनि
नामु पाइआ जिसु भइओ क्रिपाल ॥ साधसंगति महि लखे गोपाल ॥ आवण जाण रहे सुखु पाइआ ॥ कहु नानक ततै ततु
मिलाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ कोटि बिसन कीने अवतार ॥ कोटि ब्रहमंड जा के धमसाल ॥ कोटि महेस
उपाइ समाए ॥ कोटि ब्रहमे जगु साजण लाए ॥ १ ॥ ऐसो धणी गुर्विंदु हमार ॥ बरनि न साकउ गुण बिसथारा ॥ १ ॥
रहाउ ॥ कोटि माइआ जा कै सेवकाइ ॥ कोटि जीअ जा की सिहजाइ ॥ कोटि उपारजना तेरै अंगि ॥ कोटि भगत बसत हरि
संगि ॥ २ ॥ कोटि छत्रपति करत नमसकार ॥ कोटि इंद्र ठाढे है दुआर ॥ कोटि बैकुंठ जा की द्रिसटी माहि ॥ कोटि नाम जा
की कीमति नाहि ॥ ३ ॥ कोटि पूरीअत है जा कै नाद ॥ कोटि अखारे चलित बिसमाद ॥ कोटि सकति सिव आगिआकार
॥ कोटि जीअ देवे आधार ॥ ४ ॥ कोटि तीरथ जा के चरन मझार ॥ कोटि पवित्र जपत नाम चार ॥ कोटि पूजारी करते
पूजा ॥ कोटि बिसथारनु अवरु न दूजा ॥ ५ ॥ कोटि महिमा जा की निरमल हंस ॥ कोटि उसतति जा की करत ब्रहमंस ॥
कोटि परलउ ओपति निमख माहि ॥ कोटि गुणा तेरे गणे न जाहि ॥ ६ ॥ कोटि गिआनी कथहि गिआनु ॥ कोटि धिआनी
धरत धिआनु ॥ कोटि तपीसर तप ही करते ॥ कोटि मुनीसर मुनि महि रहते ॥ ७ ॥ अविगत नाथु अगोचर

सुआमी ॥ पूरि रहिआ घट अंतरजामी ॥ जत कत देखउ तेरा वासा ॥ नानक कउ गुरि कीओ प्रगासा ॥ ८ ॥ २ ॥ ५
 ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरि मो कउ कीनो दानु ॥ अमोल रतनु हरि दीनो नामु ॥ सहज बिनोद चोज आनँता ॥ नानक
 कउ प्रभु मिलिओ अचिँता ॥ १ ॥ कहु नानक कीरति हरि साची ॥ बहुरि बहुरि तिसु सँगि मनु राची ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 अचिँत हमारै भोजन भाउ ॥ अचिँत हमारै लीचै नाउ ॥ अचिँत हमारै सबदि उधार ॥ अचिँत हमारै भरे भँडार ॥ २ ॥
 अचिँत हमारै कारज पूरे ॥ अचिँत हमारै लथे विसूरे ॥ अचिँत हमारै बैरी मीता ॥ अचिँतो ही इहु मनु वसि कीता ॥ ३ ॥
 अचिँत प्रभु हम कीआ दिलासा ॥ अचिँत हमारी पूरन आसा ॥ अचिँत हमहा कउ सगल सिधांतु ॥ अचिँतु हम कउ गुरि
 दिनो मँतु ॥ ४ ॥ अचिँत हमारे बिनसे बैर ॥ अचिँत हमारे मिटे अँधेर ॥ अचिँतो ही मनि कीरतनु मीठा ॥ अचिँतो ही
 प्रभु घटि घटि डीठा ॥ ५ ॥ अचिँत मिटिओ है सगलो भरमा ॥ अचिँत वसिओ मनि सुख बिस्वामा ॥ अचिँत हमारै
 अनहत वाजै ॥ अचिँत हमारै गोबिँदु गाजै ॥ ६ ॥ अचिँत हमारै मनु पतीआना ॥ निहचल धनी अचिँतु पछाना ॥
 अचिँतो उपजिँओ सगल बिबेका ॥ अचिँत चरी हथि हरि हरि टेका ॥ ७ ॥ अचिँत प्रभु धुरि लिखिआ लेखु ॥ अचिँत
 मिलिओ प्रभु ठाकुरु एकु ॥ चिँत अचिँता सगली गई ॥ प्रभु नानक नानक नानक मई ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥

भैरउ बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ घरु १ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

इह धनु मेरे हरि को नाउ ॥ गांठि न बाधउ बेचि न खाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाउ मेरे खेती नाउ मेरे बारी ॥ भगति करउ
 जनु सरनि तुम्हारी ॥ १ ॥ नाउ मेरे माइआ नाउ मेरे पूँजी ॥ तुमहि छोडि जानउ नही दूजी ॥ २ ॥ नाउ मेरे बाँधिप नाउ
 मेरे भाई ॥ नाउ मेरे सँगि अँति होइ सखाई ॥ ३ ॥ माइआ महि जिसु रखै उदासु ॥ कहि कबीर हउ ता को दासु ॥ ४ ॥
 १ ॥ नांगे आवनु नांगे जाना ॥ कोइ न रहिहै राजा राना ॥ १ ॥ रामु राजा नउ निधि मेरै ॥ सँपै हेतु कलतु धनु तेरै ॥

१ ॥ रहाउ ॥ आवत सँग न जात सँगाती ॥ कहा भइओ दरि बांधे हाथी ॥ २ ॥ लँका गढु सोने का भइआ ॥ मूरखु
 रावनु किआ ले गइआ ॥ ३ ॥ कहि कबीर किछु गुनु बीचारि ॥ चले जुआरी दुइ हथ झारि ॥ ४ ॥ २ ॥ मैला ब्रहमा मैला
 इंदु ॥ रवि मैला मैला है चँदु ॥ १ ॥ मैला मलता इहु संसारु ॥ इकु हरि निरमलु जा का अँतु न पारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 मैले ब्रहमंडाइ कै ईस ॥ मैले निसि बासुर दिन तीस ॥ २ ॥ मैला मोती मैला हीरु ॥ मैला पउनु पावकु अरु नीरु ॥ ३ ॥
 मैले सिव सँकरा महेस ॥ मैले सिध साधिक अरु भेख ॥ ४ ॥ मैले जोगी जँगम जटा सहेति ॥ मैली काइआ हँस समेति
 ॥ ५ ॥ कहि कबीर ते जन परवान ॥ निरमल ते जो रामहि जान ॥ ६ ॥ ३ ॥ मनु करि मका किवला करि देही ॥
 बोलनहारु परम गुरु एही ॥ १ ॥ कहु रे मुलां बांग निवाज ॥ एक मसीति दसै दरवाज ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिसिमिलि
 तामसु भरमु कदूरी ॥ भाखि ले पँचै होइ सबूरी ॥ २ ॥ हिंदू तुरक का साहिबु एक ॥ कह करै मुलां कह करै सेख ॥ ३ ॥
 कहि कबीर हउ भइआ दिवाना ॥ मुसि मुसि मनूआ सहजि समाना ॥ ४ ॥ ४ ॥ गँगा कै सँगि सलिता बिगरी ॥ सो
 सलिता गँगा होइ निबरी ॥ १ ॥ बिगरिओ कबीरा राम दुहाई ॥ साचु भइओ अन कतहि न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चँदन
 कै सँगि तरवरु बिगरिओ ॥ सो तरवरु चँदनु होइ निबरिओ ॥ २ ॥ पारस कै सँगि तांबा बिगरिओ ॥ सो तांबा कँचनु
 होइ निबरिओ ॥ ३ ॥ सँतन सँगि कबीरा बिगरिओ ॥ सो कबीरु रामै होइ निबरिओ ॥ ४ ॥ ५ ॥ माथे तिलकु हथि
 माला बानां ॥ लोगन रामु खिलउना जानां ॥ १ ॥ जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ॥ लोगु मरमु कह जानै मोरा ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥ राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥ २ ॥ सतिगुरु पूजउ सदा सदा मनावउ ॥ ऐसी
 सेव दरगह सुखु पावउ ॥ ३ ॥ लोगु कहै कबीरु बउराना ॥ कबीर का मरमु राम पहिचानां ॥ ४ ॥ ६ ॥ उलटि जाति
 कुल दोऊ बिसारी ॥ सुँन सहज महि बुनत हमारी ॥ १ ॥ हमरा इगारा रहान कोऊ ॥ पँडित मुलां छाडे दोऊ ॥ १ ॥

रहाउ ॥ बुनि बुनि आप आपु पहिरावउ ॥ जह नही आपु तहा होइ गावउ ॥ २ ॥ पंडित मुलां जो लिखि दीआ ॥ छाडि
 चले हम कछु न लीआ ॥ ३ ॥ रिदै इखलासु निरखि ले मीरा ॥ आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥ ४ ॥ ७ ॥ निरधन
 आदरु कोई न देइ ॥ लाख जतन करै ओहु चिति न धरेइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥ आगे बैठा पीठि
 फिराइ ॥ १ ॥ जउ सरधनु निरधन कै जाइ ॥ दीआ आदरु लीआ बुलाइ ॥ २ ॥ निरधनु सरधनु दोनउ भाई ॥ प्रभ की
 कला न मेटी जाई ॥ ३ ॥ कहि कबीर निरधनु है सोई ॥ जा के हिरदै नामु स होई ॥ ४ ॥ ८ ॥ गुर सेवा ते भगति कमाई
 ॥ तब इह मानस देही पाई ॥ इस देही कउ सिमरहि देव ॥ सो देही भजु हरि की सेव ॥ १ ॥ भजहु गोबिंद भूलि मत जाहु
 ॥ मानस जनम का एही लाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु जरा रोगु नही आइआ ॥ जब लगु कालिं गरी नही काइआ ॥
 जब लगु बिकल भई नही बानी ॥ भजि लेहि रे मन सारिगपानी ॥ २ ॥ अब न भजसि भजसि कब भाई ॥ आवै अंतु न
 भजिआ जाई ॥ जो किछु करहि सोई अब सारु ॥ फिरि पछुताहु न पावहु पारु ॥ ३ ॥ सो सेवकु जो लाइआ सेव ॥ तिन
 ही पाए निरंजन देव ॥ गुर मिलि ता के खुलेह कपाट ॥ बहरि न आवै जोनी बाट ॥ ४ ॥ इही तेरा अउसरु इह तेरी बार ॥
 घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥ कहत कबीरु जीति कै हारि ॥ बहु बिधि कहिओ पुकारि पुकारि ॥ ५ ॥ १ ॥ ६ ॥ सिव की
 पुरी बसै बुधि सारु ॥ तह तुम्ह मिलि कै करहु बिचारु ॥ ईत ऊत की सोझी परै ॥ कउनु करम मेरा करि करि मरै ॥ १ ॥
 जिस पद ऊपरि लागो धिआनु ॥ राजा राम नामु मोरा ब्रहम गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूल दूआरै बंधिआ बंधु ॥ रवि ऊपरि
 गहि शखिआ चंद्रु ॥ पछम दूआरै सूरजु तपै ॥ मेर डंड सिर ऊपरि बसै ॥ २ ॥ पसचम दूआरे की सिल ओड़ ॥ तिह सिल
 ऊपरि खिड़की अउर ॥ खिड़की ऊपरि दसवा दूआरु ॥ कहि कबीर ता का अंतु न पारु ॥ ३ ॥ २ ॥ १० ॥ सो मुलां जो
 मन सिउ लरै ॥ गुर उपदेसि काल सिउ जरै ॥ काल पुरख का मरदै मानु ॥ तिसु मुला कउ सदा सलामु ॥ १ ॥ है

हजरि कत दूरि बतावहु ॥ दुँदर बाधहु सुँदर पावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काजी सो जु काइआ बीचारै ॥ काइआ की अगनि
 ब्रह्मु परजारै ॥ सुपनै बिँदु न देई झरना ॥ तिसु काजी कउ जरा न मरना ॥ २ ॥ सो सुरतानुहु दुइ सर तानै ॥ बाहरि
 जाता भीतरि आनै ॥ गगन मँडल महि लसकरु करै ॥ सो सुरतानु छत्रु सिरि धरै ॥ ३ ॥ जोगी गोरखु गोरखु करै ॥
 हिँदू राम नामु उचरै ॥ मुसलमानु का एकु खुदाइ ॥ कबीर का सुआमी रहिआ समाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११ ॥ महला ७ ॥
 जो पाथर कउ कहते देव ॥ ता की बिरथा होवै सेव ॥ जो पाथर की पाँई पाइ ॥ तिस की घाल अजाई जाइ ॥ १ ॥
 ठाकुरु हमारा सद बोलँता ॥ सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँतरि देउ न जानै अँधु ॥ भ्रम का मोहिआ
 पावै फँधु ॥ न पाथरु बोलै ना किछु देइ ॥ फोकट करम निहफल है सेव ॥ २ ॥ जे मिरतक कउ चँदनु चड़ावै ॥ उस ते
 कहहु कवन फल पावै ॥ जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई ॥ तां मिरतक का किआ घटि जाई ॥ ३ ॥ कहत कबीर हउ
 कहउ पुकारि ॥ समझि देखु साकत गावार ॥ दूजै भाइ बहुतु घर गाले ॥ राम भगत है सदा सुखाले ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२
 ॥ जल महि मीन माइआ के बेधे ॥ दीपक पतँग माइआ के छेदे ॥ काम माइआ कुँचर कउ बिआपै ॥ भुइअँगम भ्रिँग
 माइआ महि खापे ॥ १ ॥ माइआ ऐसी मोहनी भाई ॥ जेते जीअ तेते डहकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँखी भ्रिग माइआ महि
 राते ॥ साकर माखी अधिक सँतापे ॥ तुरे उसट माइआ महि भेला ॥ सिध चउरासीह माइआ महि खेला ॥ २ ॥ छिअ
 जती माइआ के बँदा ॥ नवै नाथ सूरज अरु चँदा ॥ तपे रखीसर माइआ महि सूता ॥ माइआ महि कालु अरु पँच दूता ॥
 ३ ॥ सुआन सिआल माइआ महि राता ॥ बँतर चीते अरु सिँघाता ॥ मांजार गाडर अरु लूबरा ॥ बिरख मूल माइआ
 महि परा ॥ ४ ॥ माइआ अँतरि भीने देव ॥ सागर इँद्रा अरु धरतेव ॥ कहि कबीर जिंसु उदरु तिसु माइआ ॥ तब छूटे
 जब साधू पाइआ ॥ ७ ॥ ७ ॥ १३ ॥ जब लगु मेरी मेरी करै ॥ तब लगु काजु एकु नही सरै ॥ जब मेरी मेरी मिटि जाइ
 ॥

तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु बिचारु मना ॥ हरि की न सिमरहु दुख भँजना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब
 लगु सिँघु रहै बन माहि ॥ तब लगु बनु फूलै ही नाहि ॥ जब ही सिआरु सिँघ कउ खाइ ॥ फूलिं रही सगली बनराइ ॥ २
 ॥ जीतो बूडै हारो तिरै ॥ गुर परसादी पारि उतरै ॥ दासु कबीरु कहै समझाइ ॥ केवल राम रहहु लिव लाइ ॥ ३ ॥ ६ ॥
 १४ ॥ सतरि सैइ सलार है जा के ॥ सवा लाखु पैकाबर ता के ॥ सेख जु कहीअहि कोटि अठासी ॥ छपन कोटि जा के खेल
 खासी ॥ १ ॥ मो गरीब की को गुजरवै ॥ मजलसि दूरि महलु को पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी है खेल खाना ॥
 चउरासी लख फिरै दिवानां ॥ बाबा आदम कउ किछु नदरि दिखाई ॥ उनि भी भिसति घनेरी पाई ॥ २ ॥ दिल खलहलु जा
 कै जरद रू बानी ॥ छोडि कतेब करै सैतानी ॥ दुनीआ दोसु रोसु है लोई ॥ अपना कीआ पावै सोई ॥ ३ ॥ तुम दाते हम
 सदा भिखारी ॥ देउ जबाबु होइ बजगारी ॥ दासु कबीरु तेरी पनह समानां ॥ भिसतु नजीकि राखु रहमाना ॥ ४ ॥ ७ ॥
 १५ ॥ सभ कोई चलत कहत है ऊहां ॥ ना जानउ बैकुंठु है कहां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आप आप का मरमु न जानां ॥ बातन ही
 बैकुंठु बखानां ॥ १ ॥ जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥ तब लगु नाही चरन निवास ॥ २ ॥ खाई कोटु न परल पगारा ॥
 ना जानउ बैकुंठ दुआरा ॥ ३ ॥ कहि कमीर अब कहीरे काहि ॥ साधसंगति बैकुंठे आहि ॥ ४ ॥ ८ ॥ १६ ॥ किउ लीजै
 गढु बँका भाई ॥ दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पांच पचीस मोह मद मतसर आडी परबल माइआ ॥ जन
 गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ ॥ १ ॥ कामु कवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुँनु दरवाजा ॥ क्रोधु प्रधानु महा
 बड दुँदर तह मनु मावासी राजा ॥ २ ॥ स्वाद सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढाई ॥ तिसना तीर रहे घट भीतरि इउ
 गढु लीओ न जाई ॥ ३ ॥ प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ ॥ ब्रहम अगनि सहजे परजाली एकहि चोट
 सिझाइआ ॥ ४ ॥ सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा ॥ साधसंगति अरु गुर की क्रिपा ते पकरिओ

गढ़ को राजा ॥ ५ ॥ भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी ॥ दासु कमीरु चडढिओ गढ़ ऊपरि राजु
लीओ अबिनासी ॥ ६ ॥ ९ ॥ १७ ॥ गंग गुसाइनि गहिर गंभीर ॥ जंजीर बांधि करि खरे कबीर ॥ १ ॥ मनु न डिगै
तनु काहे कउ डराइ ॥ चरन कमल चितु रहिउ समाइ ॥ रहाउ ॥ गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥ मिगछाला पर बैठे
कबीर ॥ २ ॥ कहि कंबीर कोऊ संग न साथ ॥ जल थल राखन है रघुनाथ ॥ ३ ॥ १० ॥ १८ ॥

भैरउ कबीर जी असटपदी घरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

अगम द्रुगम गडि रचिओ बास ॥ जा महि जोति करे परगास ॥ बिजुली चमकै होइ अनंदु ॥ जिह पउडे प्रभ बाल गोबिंद
॥ १ ॥ इहु जीउ राम नाम लिंव लागै ॥ जरा मरनु छूटै भ्रमु भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अबरन बरन सिउ मन ही प्रीति ॥
हउमै गावनि गावहि गीत ॥ अनहद सबद होत झुनकार ॥ जिह पउडे प्रभ श्री गोपाल ॥ २ ॥ खंडल मंडल मंडल मंडा
॥ त्रिअ असथान तीनि त्रिअ खंडा ॥ अगम अगोचरु रहिआ अभ अंत ॥ पारु न पावै को धरनीधर मंत ॥ ३ ॥
कदली पुहप धूप परगास ॥ रज पंकज महि लीओ निवास ॥ दुआदस दल अभ अंतरि मंत ॥ जह पउडे श्री कमला कंत
॥ ४ ॥ अरध उधर मुखि लागो कासु ॥ सुंन मंडल महि करि परगासु ॥ ऊहां सूरज नाही चंद ॥ आदि निरंजनु करै
अनंद ॥ ५ ॥ सो ब्रहमंडि पिंडि सो जानु ॥ मान सोरिवरि करि इसनानु ॥ सोहं सो जा कउ है जाप ॥ जा कउ लिपत न
होइ पुंन अरु पाप ॥ ६ ॥ अबरन बरन घाम नही छाम ॥ अवर न पाईऐ गुर की साम ॥ टारी न टरै आवै न जाइ ॥ सुंन
सहज महि रहिओ समाइ ॥ ७ ॥ मन मधे जानै जे कोइ ॥ जो बोलै सो आपै होइ ॥ जोति मंत्रि मनि असथिरु करै ॥
कहि कबीर सो प्राणी तरै ॥ ८ ॥ १ ॥ कोटि सूर जा कै परगास ॥ कोटि महादेव अरु कबिलास ॥ दुर्गा कोटि जा कै
मरदनु करै ॥ ब्रहमा कोटि बेद उचरै ॥ १ ॥ जउ जाचउ तउ केवल राम ॥ आन देव सिउ नाही काम ॥ १ ॥

रहाउ ॥ कोटि चंद्रमे करहि चराक ॥ सुर तेतीसउ जेवहि पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दरबार ॥ धरम कोटि जा कै प्रतिहार ॥ २
 ॥ पवन कोटि चउबारे फिरहि ॥ बासक कोटि सेज बिसथरहि ॥ समुंद कोटि जा के पानीहार ॥ रोमावलि कोटि अठारह भार
 ॥ ३ ॥ कोटि कमेर भरहि भंडार ॥ कोटिक लखिमी करै सीगार ॥ कोटिक पाप पुंन बहु हिरहि ॥ इंद्र कोटि जा के सेवा करहि
 ॥ ४ ॥ छपन कोटि जा कै प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खिअत अपार ॥ लट छूटी वरतै बिकराल ॥ कोटि कला खेलै गोपाल ॥
 ५ ॥ कोटि जग जा कै दरबार ॥ गंधब कोटि करहि जैकार ॥ बिदिआ कोटि सभे गुन कहै ॥ तऊ पारब्रहम का अंतु न लहै ॥
 ६ ॥ बावन कोटि जा कै रोमावली ॥ शवन सैना जह ते छली ॥ सहस कोटि बहु कहत पुरान ॥ दुरजोधन का मथिआ मानु ॥
 ७ ॥ कंद्रप कोटि जा कै लवै न धरहि ॥ अंतर अंतरि मनसा हरहि ॥ कहि कबीर सुनि सारिगपान ॥ देहि अभै पदु मांगउ दान
 ॥ ८ ॥ २ ॥ १८ ॥ २० ॥

भैरव बानी नामदेउ जीउ की घरु १ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

रे जिहबा करउ सत खंड ॥ जामिन उचरसि श्री गोबिंद ॥ १ ॥ रंगी ले जिहबा हरि कै नाइ ॥ सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ जिहबा अवरें काम ॥ निरबाण पदु इकु हरि को नामु ॥ २ ॥ असंख कोटि अन पूजा करी ॥ एक न
 पूजसि नामै हरी ॥ ३ ॥ प्रणवै नामदेउ इह करणा ॥ अनंत रूप तेरे नाराइणा ॥ ४ ॥ १ ॥ पर धन पर दारा परहरी ॥ ता कै
 निकटि बसै नरहरी ॥ १ ॥ जो न भजते नाराइणा ॥ तिन का मै न करउ दरसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कै भीतरि है अंतरा
 ॥ जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥ २ ॥ प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना ॥ ना सोहै बतीस लखना ॥ ३ ॥ २ ॥ दूधु कटोरै गडवै
 पानी ॥ कपल गाइ नामै दुहि आनी ॥ १ ॥ दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥ दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥ नाही त घर को बापु रिसाइ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोइन कटोरी अमित भरी ॥ लै नामै हरि आगै धरी ॥ २ ॥ एकु भगतु मेरे हिरदै बसै ॥ नामे देखि नराइनु

हसै ॥ ३ ॥ दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥ नामे हरि का दरसनु भइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ मै बउरी मेरा रामु भतारु ॥
 रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ॥ १ ॥ भले निँदउ भले निँदउ भले निँदउ लोगु ॥ तनु मनु राम पिआरे जोगु ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥ रसना राम रसाइनु पीजै ॥ २ ॥ अब जीअ जानि ऐसी बनि आई ॥ मिलउ
 गुपाल नीसानु बजाई ॥ ३ ॥ उसतति निँदा करै नरु कोई ॥ नामे श्रीरँगु भेटल सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ कबहू खीरि खाड
 घीउ न भावै ॥ कबहू घर घर टूक मगावै ॥ कबहू कूरनु चने बिनावै ॥ १ ॥ जिउ रामु राखै तिउ रहीऐरे भाई ॥ हरि की
 महिमा किछु कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबहू तुरे तुरँग नचावै ॥ कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥ २ ॥ कबहू खाट
 सुपेदी सुवावै ॥ कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥ ३ ॥ भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥ जिह गुरु मिलै तिह पारि
 उतारै ॥ ४ ॥ ५ ॥ हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥ भगति करत नाम पकरि उठाइआ ॥ १ ॥ हीनड़ी जाति मेरी
 जादिम राइआ ॥ छीपे के जनमि काहे कउ आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लै कमली चलिओ पलटाइ ॥ देहुरै पाछै बैठा जाइ
 ॥ २ ॥ जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥ भगत जनां कउ देहुरा फिरै ॥ ३ ॥ ६ ॥

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २ १४ श्रितिगुर प्रसादि ॥

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥ त्रिखावँत जल सेती काज ॥ जैसी मूड कुटँब पराइण ॥ ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥ १ ॥
 नामे प्रीति नाराइण लागी ॥ सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी पर पुरखा रत नारी ॥ लोभी नरु धन
 का हितकारी ॥ कामी पुरख कामनी पीआरी ॥ ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥ २ ॥ साई प्रीति जिं आपे लाए ॥ गुर
 परसादी दुबिधा जाए ॥ कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥ नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥ ३ ॥ जैसी प्रीति बारिक अरु
 माता ॥ ऐसा हरि सेती मनु राता ॥ प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥ गोबिदु बसै हमारै चीति ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

घर की नारि तिआगै अँधा ॥ पर नारी सिउ घालै धँधा ॥ जैसे सिँबलु देखिँ सूआ बिगसाना ॥ अँत की बार मूआ लपटाना ॥ १ ॥ पापी का घरु अगने माहि ॥ जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की भगति न देखै जाइ ॥ मारगु छोडि अमारगि पाइ ॥ मूलहु भूला आवै जाइ ॥ अँमितु डारि लादि बिखु खाइ ॥ २ ॥ जिउ बेस्वा के परै अखारा ॥ कापरु पहिरि करहि सीं, गारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वा के गले जम का है फास ॥ ३ ॥ जा के मसतकि लिखिओ करमा ॥ सो भजिं परि है गुर की सरना ॥ कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥ इन बिधि सँतहु उतरहु पारिं ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥ सँडा मरका जाइ पुकारे ॥ पडै नही हम ही पचि हारे ॥ रामु कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे ॥ १ ॥ राम नामा जपिबो करै ॥ हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥ पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥ २ ॥ दुसट सभा मिलि मँतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥ गिरिं तर जल जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥ ३ ॥ काटि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥ पीत पीतांबर त्रिभवण धणी थँभ माहि हरि भाखै ॥ ४ ॥ हरणाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥ कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अँभै पद दाता ॥ ५ ॥ ३ ॥ ९ ॥ सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥ देखउ राम तुम्हारे कामा ॥ १ ॥ नामा सुलताने बाधिला ॥ देखउ तेरा हरि बीठुला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसमिलिं गऊ देहु जीवाइ ॥ नातरु गरदनि मारउ ठाँइ ॥ २ ॥ बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥ बिसमिलिं कीआ न जीवै कोइ ॥ ३ ॥ मेरा कीआ कछु न होइ ॥ करि है रामु होइ है सोइ ॥ ४ ॥ बादिसाहु चढिओ अहँकारिं ॥ गज हसती दीनो चमकारिं ॥ ५ ॥ रुदनु करै नामे कि माइ ॥ छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥ ६ ॥ नहउ तेरा पूँगड़ा न तू मेरी माइ ॥ पिँडु पडै तउ हरि गुन गाइ ॥ ७ ॥ करै गजिँदु सुँड की चोट ॥ नामा उबरै हरि की ओट ॥ ८ ॥ काजी मुलां करहि सलामु ॥ इनि हिँदू मेरा मलिंआ मानु ॥ ९ ॥ बादिसाह बेनती सुनेहु ॥

नामे सर भरि सोना लेहु ॥ १० ॥ मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥ दीनु छोटि दुनीआ कउ भरउ ॥ ११ ॥ पावहु बेड़ी
हाथहु ताल ॥ नामा गावै गुन गोपाल ॥ १२ ॥ गँग जमुन जउ उलटी बहै ॥ तउ नामा हरि करता रहै ॥ १३ ॥ सात
घड़ी जब बीती सुणी ॥ अजहु न आइओ त्रिभवण धणी ॥ १४ ॥ पाखँतण बाज बजाइला ॥ गरुड चढे गोबिंद आइला
॥ १५ ॥ अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ गुरुड चढे आए गोपाल ॥ १६ ॥ कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥ कहहि त
ले करि ऊपरि धरउ ॥ १७ ॥ कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥ सभु कोई देखै पतीआइ ॥ १८ ॥ नामा प्रणवै सेलमसेल
॥ गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥ १९ ॥ दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादिसाह के आगे धरी ॥ २० ॥ बादिसाहु महल
महि जाइ ॥ अउघट की घट लागी आइ ॥ २१ ॥ काजी मुलां बिनती फुरमाइ ॥ बखसी हिंदू मै तेरी गाइ ॥ २२ ॥
नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥ इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ ॥ २३ ॥ इस पतीआ का इहै परवानु ॥ साचि सीलि चालहु
सुलितान ॥ २४ ॥ नामदेउ सभ रहिआ समाइ ॥ मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि ॥ २५ ॥ जउ अब की बार न जीवै
गाइ ॥ त नामदेव का पतीआ जाइ ॥ २६ ॥ नामे की कीरति रही संसारि ॥ भगत जनां ले उधरिआ पारि ॥ २७ ॥
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥ नामे नाराइन नाही भेदु ॥ २८ ॥ १ ॥ १० ॥ घरु २ ॥ जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि
॥ जउ गुरदेउ त उतरै पारि ॥ जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै ॥ जउ गुरदेउ त जीवत मरै ॥ १ ॥ सति सति सति सति सति
गुरदेव ॥ झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ गुरदेउ त नामु द्विड़ावै ॥ जउ गुरदेउ न दह दिस धावै ॥
जउ गुरदेउ पंच ते दूरि ॥ जउ गुरदेउ न मरिबो झूरि ॥ २ ॥ जउ गुरदेउ त अमित बानी ॥ जउ गुरदेउ त अकथ कहानी
॥ जउ गुरदेउ त अमित देह ॥ जउ गुरदेउ नामु जपि लेहि ॥ ३ ॥ जउ गुरदेउ भवन त्रै सूझै ॥ जउ गुरदेउ ऊच पद बूझै
॥ जउ गुरदेउ त सीसु अकासि ॥ जउ गुरदेउ सदा साबासि ॥ ४ ॥ जउ गुरदेउ सदा बैरागी ॥ जउ

गुरदेउ पर निँदा तिआगी ॥ जउ गुरदेउ बुरा भला एक ॥ जउ गुरदेउ लिलाटहि लेख ॥ ५ ॥ जउ गुरदेउ कँधु नहीं हिरै ॥ जउ गुरदेउ देहुरा फिरै ॥ जउ गुरदेउ त छापरि छाई ॥ जउ गुरदेउ सिंहज निकसाई ॥ ६ ॥ जउ गुरदेउ त अठसठि नाइआ ॥ जउ गुरदेउ तनि चक्र लगाइआ ॥ जउ गुरदेउ त दुआदस सेवा ॥ जउ गुरदेउ सभै बिखु मेवा ॥ ७ ॥ जउ गुरदेउ त संसा टूटै ॥ जउ गुरदेउ त जम ते छूटै ॥ जउ गुरदेउ त भउजल तरै ॥ जउ गुरदेउ त जनमि न मरै ॥ ८ ॥ जउ गुरदेउ अठदस बिउहार ॥ जउ गुरदेउ अठारह भार ॥ बिनु गुरदेउ अवर नहीं जाई ॥ नामदेउ गुर की सरणाई ॥ ९ ॥ १ ॥ २ ॥ ११ ॥

भैरउ बाणी रविदास जीउ की वरु २ ११ शितिगुर प्रसादि ॥

बिनु देखे उपजै नहीं आसा ॥ जो दीसै सो होइ बिनासा ॥ बरन सहित जो जापै नामु ॥ सो जोगी केवल निहकामु ॥ १ ॥ परचै रामु रवै जउ कोई ॥ पारसु परसै दुबिधा न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥ बिनु दुआरै त्रै लोक समाइ ॥ मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥ करता होइ सु अनभै रहै ॥ २ ॥ फल कारन फूली बनराइ ॥ फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥ गिआनै कारन करम अभिआसु ॥ गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥ ३ ॥ छित कारन दधि मथै सइआन ॥ जीवत मुकत सदा निरबान ॥ कहि रविदास परम बैराग ॥ रिदै राम की न जपसि अभाग ॥ ४ ॥ १ ॥ नामदेव ॥ आउ कलँदर केसवा ॥ करि अबदाली भेसवा ॥ रहाउ ॥ जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला ॥ चमर पोस का मँदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला ॥ १ ॥ छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा ॥ भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥ २ ॥ देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥ बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरँकार आकारै ॥ ३ ॥ भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥ नामे का सुआमी अंतरजामी फिरै सगल बेदेसवा ॥ ४ ॥ १ ॥

शुगु बसंतु महला १ घरु १ चउपदे दुतुके

वडि सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

माहा माह मुमारखी चडिआ सदा बसंतु ॥ परफडु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥ १ ॥ भोलिआ हउमै सुरति विसारि
॥ हउमै मारि बीचारि मन गुण विचि गुणु लै सारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥ पत
परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥ २ ॥ अखी कुदरति कँनी बाणी मुखि आखणु सचु नामु ॥ पति का धनु पूरा होआ
लागा सहजि धिआनु ॥ ३ ॥ माता रुती आवणा वेखहु करम कमाइ ॥ नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ ॥ ४ ॥ १
॥ महला १ बसंतु ॥ रुति आईले सरस बसंत माहि ॥ रँगि राते खहि सि तेरै चाइ ॥ किसु पूज चडावउ लगउ पाइ ॥ १ ॥
तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥ जगजीवन जुगति न मिलै काइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी मूरति एका बहुतु रूप ॥ किसु पूज
चडावउ देउ धूप ॥ तेरा अंतु न पाइआ कहा पाइ ॥ तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥ २ ॥ तेरे सठि संबत सभि तीरथा ॥ तेरा
सचु नामु परमेसरा ॥ तेरी गति अविगति नही जाणीरे ॥ अणजाणत नामु वखाणीरे ॥ ३ ॥ नानकु वेचारा किआ कहै ॥
सभु लोकु सलाहे एकसै ॥ सिरु नानक लोका पाव है ॥ बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥ ४ ॥ २ ॥ बसंतु महला १ ॥

सुइने का चउका कंचन कुआर ॥ रुपे कीआ कारा बहुतु बिसथारु ॥ गंगा का उदकु करंते की आगि ॥ गरुड़ा खाणा दुध
 सिउ गाडि ॥ १ ॥ रे मन लेखै कबहू न पाइ ॥ जामि न भीजै साच नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दस अठ लीखे होवहि पासि ॥
 चारे बेद मुखागर पाठि ॥ पुरबी नावै वरनां की दाति ॥ वरत नेम करे दिन राति ॥ २ ॥ काजी मुलां होवहि सेख ॥ जोगी
 जंगम भगवे भेख ॥ को गिरही करमा की संधि ॥ बिनु बूझे सभ पड़ीअसि बांधि ॥ ३ ॥ जेते जीअ लिखी सिरि कार ॥
 करणी उपरि होवगि सार ॥ हुकमु करहि मूरख गावार ॥ नानक साचे के सिफति भंडार ॥ ४ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ३ तीजा
 ॥ बसत्र उतारि दिगंबरु होगु ॥ जटाधारि किआ कमावै जोगु ॥ मनु निरमलु नही दसवै दुआर ॥ भ्रमि भ्रमि आवै मूढ़ा
 वारो वार ॥ १ ॥ एकु धिआवहु मूढ़ मना ॥ पारि उतरि जाहि इक खिनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिम्रिति सासत्र करहि
 वखिआण ॥ नादी बेदी पडहहि पुराण ॥ पाखंड दिसटि मनि कपटु कमाहि ॥ तिन कै रमईआ नेडि नाहि ॥ २ ॥ जे को
 ऐसा सँजमी होइ ॥ क्रिआ विसेख पूजा करेइ ॥ अंतरि लोभु मनु बिखिआ माहि ॥ ओइ निरँजनु कैसे पाहि ॥ ३ ॥ कीता
 होआ करे किआ होइ ॥ जिस नो आपि चलाए सोइ ॥ नदरि करे तां भरमु चुकाए ॥ हुकमै बूझै तां साचा पाए ॥ ४ ॥ जिसु
 जीउ अंतरु मैला होइ ॥ तीरथ भवै दिसंतर लोइ ॥ नानक मिलीऐ सतिगुर संग ॥ तउ भवजल के तूटसि बंध ॥ ५ ॥ ४
 ॥ बसंतु महला १ ॥ सगल भवन तेरी माइआ मोह ॥ मै अवरु न दीसै सरब तोह ॥ तू सुरि नाथा देवा देव ॥ हरि नामु
 मिलै गुर चरन सेव ॥ १ ॥ मेरे सुंदर गहिर गंभीर लाल ॥ गुरमुखि राम नाम गुन गाए तू अपरंपरु सरब पाल ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ॥ बिनु गुर मैल मलीन अंगु ॥ बिनु हरि नाम न सुधु होइ ॥ गुर सबदि सलाहे साचु सोइ
 ॥ २ ॥ जा कउ तू राखहि रखनहार ॥ सतिगुरु मिलावहि करहि सार ॥ बिखु हउमै ममता परहराइ ॥ सभि दूख बिनासे
 राम राइ ॥ ३ ॥ ऊतम गति मिति हरि गुन सरीर ॥ गुरमति प्रगटे राम नाम हीर ॥ लिव लागी नामि तजि दूजा भाउ ॥

जन नानक हरिं गुरु गुरु मिलाउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ बसंतु महला १ ॥ मेरी सखी सहेली सुनहु भाइ ॥ मेरा पिरु रीसालू सँगि
साइ ॥ ओहु अलखु न लखीऐ कहहु काइ ॥ गुरि सँगि दिखाइओ राम राइ ॥ १ ॥ मिलु सखी सहेली हरि गुन बने ॥ हरि
प्रभ सँगि खेलहि वर कामनि गुरमुखि खोजत मन मने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखी दुहागणि नाहि भेउ ॥ ओहु घटि घटि रावै
सरब प्रेउ ॥ गुरमुखि थिरु चीनै सँगि देउ ॥ गुरि नामु द्रिडाइआ जपु जपेउ ॥ २ ॥ बिनु गुर भगति न भाउ होइ ॥ बिनु
गुर संत न सँगु देइ ॥ बिनु गुर अंधुले धंधु रोइ ॥ मनु गुरमुखि निरमलु मलु सबदि खोइ ॥ ३ ॥ गुरि नु मारिओ करि
सँजोगु ॥ अहिनिशि रावे भगति जोगु ॥ गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु ॥ जन नानक हरिं वरु सहस जोगु ॥ ४ ॥ ६ ॥
बसंतु महला १ ॥ आपे कुदरति करे साजिं ॥ सचु आपि निबेडे राजु राजिं ॥ गुरमति ऊतम सँगि साथि ॥ हरि नामु
रसाइणु सहजिं साथि ॥ १ ॥ मत बिसरसिरे मन राम बोलिं ॥ अपरंपरु अगम अगोचरु गुरमुखि हरि आपि तुलाए अतुलु
तोलिं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर चरन सरेवाहि गुरसिख तोर ॥ गुर सेव तरे तजिं मेर तोर ॥ नर निंदक लोभी मनि कठोर ॥ गुर
सेव न भाई सि चोर चोर ॥ २ ॥ गुरु तुठा बखसे भगति भाउ ॥ गुरि तुठै पाईऐ हरि महलिं ठाउ ॥ परहरिं निंदा हरि भगति
जागु ॥ हरि भगति सुहावी करमि भागु ॥ ३ ॥ गुरु मेलिं मिलावै करे दाति ॥ गुरसिख पिआरे दिनसु राति ॥ फलु नामु
परापति गुरु तुसिं देइ ॥ कहु नानक पावहि विरले केइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बसंतु महला ३ इक तुका ॥ साहिब भावै सेवकु सेवा
करै ॥ जीवतु मरै सभि कुल उधरै ॥ १ ॥ तेरी भगति न छोडउ किआ को हसै ॥ साचु नामु मेरै हिरदै वसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जैसे माइआ मोहि प्राणी गलतु रहै ॥ तैसे संत जन राम नाम रवत रहै ॥ २ ॥ मै मूरख मुगध ऊपरि करहु दइआ ॥ तउ
सरणागति रहउ पइआ ॥ ३ ॥ कहतु नानकु संसार के निहफल कामा ॥ गुर प्रसादि को पावै अँमित नामा ॥ ४ ॥ ८ ॥

महला १ बसंतु हिंडोल घरु २ वरि शितिगुर प्रसादि ॥

सालग्राम बिप पूजि मनावहु सुक्रितु तुलसी माला ॥ राम नामु जपि बेडा बांधहु दइआ करहु दइआला ॥ १ ॥ काहे कलरा
सिँचहु जनमु गवावहु ॥ काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर हरिहट माल टिंड परोवहु तिसु भीतरि मनु
जोवहु ॥ अँप्रितु सिँचहु भरहु किआरे तउ माली के होवहु ॥ २ ॥ कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई ॥ जिउ गोडहु
तिउ तुम्ह सुख पावहु किरतु न मेटिआ जाई ॥ ३ ॥ बगुले ते फुनि हँसुला होवै जे तू करहि दइआला ॥ ४ ॥ १ ॥ ९ ॥
बसंतु महला १ हिंडोल ॥ साहुरडी वथु सभु किछु साझी पेवकडै धन वखे ॥ आपि कुचजी दोसु न देऊ जाणा नाही रखे ॥ १
॥ मेरे साहिबा हउ आपे भरमि भुलाणी ॥ अखर लिखे सेई गावा अवर न जाणा बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कठि कसीदा
पहिरहि चोली तां तुम्ह जाणहु नारी ॥ जे घरु राखहि बुरा न चाखहि होवहि कँत पिआरी ॥ २ ॥ जे तूँ पडिआ पँडितु बीना
दुइ अखर दुइ नावा ॥ प्रणवति नानकु एकु लँघाए जे करि सचि समावां ॥ ३ ॥ २ ॥ १० ॥ बसंतु हिंडोल महला १ ॥ राजा
बालकु नगरी काची दुसटा नालि पिआरो ॥ दुइ माई दुइ बापा पडीअहि पँडित करहु बीचारो ॥ १ ॥ सुआमी पँडिता तुम्ह देहु
मती ॥ किन बिधि पावउ प्रानपती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भीतरि अगनि बनासपति मउली सागरु पँडै पाइआ ॥ चँदु सूरजु दुइ
घर ही भीतरि ऐसा गिआनु न पाइआ ॥ २ ॥ राम रवंता जाणीरे इक माई भोगु करेइ ॥ ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु
सँग्रहेइ ॥ ३ ॥ कहिआ सुणहि न खाइआ मानहि तिनाह ही सेती वासा ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा खिनु तोला खिनु
मासा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११ ॥ बसंतु हिंडोल महला १ ॥ साचा साहु गुरु सुखदाता हरि मेले भुख गवाए ॥ करि किरपा हरि
भगति दिडाए अनदिनु हरि गुण गाए ॥ १ ॥ मत भूलहि रे मन चेति हरी ॥ बिनु गुरु मुकति नाही त्रै लोई गुरुमुखि पाईरे

नामु हरी ॥ रहाउ ॥ बिनु भगती नही सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति हरी ॥ बिनु भागा सतसंगु न पाईऐ करमि मिलै
हरि नामु हरी ॥ २ ॥ घटि घटि गुपतु उपाए वेखै परगटु गुरुमुखि संत जना ॥ हरि हरि करहि सु हरि रंगि भीने हरि जलु अँमित
नामु मना ॥ ३ ॥ जिन कउ तखति मिलै वडिआई गुरुमुखि से परधान कीए ॥ पारसु भेटि भए से पारस नानक हरि गुरु साँगे
थीए ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२ ॥

बसँतु महला ३ घरु १ दूतुके १४ सतिगुरु प्रसादि ॥

माहा रूती महि सद बसँतु ॥ जित हरिआ सभु जीअ जँतु ॥ किआ हउ आखा किरम जँतु ॥ तेरा किनै न पाइआ आदि अँतु ॥
१ ॥ तै साहिब की करहि सेव ॥ परम सुख पावहि आतम देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करमु होवै तां सेवा करै ॥ गुरु परसादी जीवत
मरै ॥ अनदिनु साचु नामु उचरै ॥ इन बिधि प्राणी दुतरु तरै ॥ २ ॥ बिखु अँमितु करतारि उपाए ॥ संसार बिख कउ दुइ फल
लाए ॥ आपे करता करे कराए ॥ जो तिसु भावै तिसै खवाए ॥ ३ ॥ नानक जिस नो नदरि करेइ ॥ अँमित नामु आपे देइ ॥
बिखिआ की बासना मनहि करेइ ॥ अपणा भाणा आपि करेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ बसँतु महला ३ ॥ राते साचि हरि नामि निहाला
॥ दइआ करहु प्रभ दीन दइआला ॥ तिसु बिनु अवरु नही मै कोइ ॥ जिउ भावै तिउ राखै सोइ ॥ १ ॥ गुरु गोपाल मरै मनि
भाए ॥ रहि न सकउ दरसन देखे बिनु सहजि मिलउ गुरु मेलि मिलाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु लोभी लोभि लुभाना ॥ राम
बिसारि बहुरि पछुताना ॥ बिछुरत मिलाइ गुरु सेव रांगे ॥ हरि नामु दीओ मसतकि वडभागे ॥ २ ॥ पउण पाणी की इह देह
सरीरा ॥ हउमै रोगु कठिन तनि पीरा ॥ गुरुमुखि राम नाम दारु गुण गाइआ ॥ करि किरपा गुरि रोगु गवाइआ ॥ ३ ॥ चारि
नदीआ अगनी तनि चारे ॥ तिसना जलत जले अहँकारे ॥ गुरि राखे वडभागी तारे ॥ जन नानक उरि हरि अँमितु धारे ॥ ४
॥ २ ॥ बसँतु महला ३ ॥ हरि सेवे सो हरि का लोगु ॥ साच सहजु कदे न होवै सोगु ॥ मनमुख मुए नाही हरि मन माहि ॥

मरि मरि जँमहि भी मरि जाहि ॥ १ ॥ से जन जीवे जिन हरि मन माहि ॥ साचु सम्हालहि साचि समाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 हरि न सेवहि ते हरि ते दूरि ॥ दिसँतरु भवहि सिरि पावहि धूरि ॥ हरि आपे जन लीए लाइ ॥ तिन सदा सुखु है तिलु न
 तमाइ ॥ २ ॥ नदरि करे चूकै अभिमानु ॥ साची दरगह पावै मानु ॥ हरि जीउ वेखै सद हजूरि ॥ गुर कै सबदि रहिआ
 भरपूरि ॥ ३ ॥ जीअ जँत की करे प्रतिपाल ॥ गुर परसादि सद समाहल ॥ दरि साचै पति सिउ घरि जाइ ॥ नानक नामि
 वडाई पाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ बसँतु महला ३ ॥ अँतरि पूजा मन ते होइ ॥ एको वेखै अउरु न कोइ ॥ दूजै लोकी बहुतु दुखु
 पाइआ ॥ सतिगुरि मैनो एकु दिखाइआ ॥ १ ॥ मेरा प्रभु मउलिआ सद बसँतु ॥ इहु मनु मउलिआ गाइ गुण गोबिंद ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ गुर पूछहु तुम्ह करहु बीचारु ॥ तां प्रभ साचे लगै पिआरु ॥ आपु छोडि होहि दासत भाइ ॥ तउ जगजीवनु
 वसै मनि आइ ॥ २ ॥ भगति करे सद वेखै हजूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ इसु भगती का कोई जाणै भेउ ॥ सभु
 मेरा प्रभु आतम देउ ॥ ३ ॥ आपे सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ जगजीवन सिउ आपि चितु लाए ॥ मनु तनु हरिआ सहजि
 सुभाए ॥ नानक नामि रहे लिव लाए ॥ ४ ॥ ४ ॥ बसँतु महला ३ ॥ भगति वछलु हरि वसै मनि आइ ॥ गुर किरपा ते
 सहज सुभाइ ॥ भगति करे विचहु आपु खोइ ॥ तद ही साचि मिलावा होइ ॥ १ ॥ भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि ॥
 गुर कै हेति साचै प्रेम पिआरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति करे सो जनु निरमलु होइ ॥ गुर सबदी विचहु हउमै खोइ ॥ हरि
 जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ सदा सांति सुखि सहजि समाइ ॥ २ ॥ साचि रते तिन सद बसँत ॥ मनु तनु हरिआ रवि
 गुण गुविंद ॥ बिनु नावै सूका संसारु ॥ अगनि त्रिसना जलै वारो वार ॥ ३ ॥ सोई करे जि हरि जीउ भावै ॥ सदा सुखु
 सरीरि भाणै चितु लावै ॥ अपना प्रभु सेवे सहजि सुभाइ ॥ नानक नामु वसै मनि आइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ बसँतु महला ३ ॥
 माइआ मोहु सबदि जलाए ॥ मनु तनु हरिआ सतिगुर भाए ॥ सफलिओ विरखु हरि कै दुआरि ॥ साची बाणी नाम

पिआरिं ॥ १ ॥ ए मन हरिआ सहज सुभाइ ॥ सच फलु लागै सतिगुर भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे नेडै आपे दूरिं ॥ गुर
 कै सबदि वेखै सद हजूरिं ॥ छाव घणी फूली बनराइ ॥ गुरमुखिं बिगसै सहजिं सुभाइ ॥ २ ॥ अनदिनु कीरतनु करहिं दिन
 राति ॥ सतिगुरिं गवाई विचहु जूठि भरांति ॥ परपंच वेखिं रहिआ विसमादु ॥ गुरमुखिं पाईऐ नाम प्रसादु ॥ ३ ॥ आपे
 करता सभिं रस भोग ॥ जो किछु करे सोई परु होग ॥ वडा दाता तिलु न तामइ ॥ नानक मिलीऐ सबदु कमाइ ॥ ४ ॥ ६
 ॥ बसंतु महला ३ ॥ पूरै भागि सचु कार कमावै ॥ एको चेतै फिरिं जोनि न आवै ॥ सफल जनमु इसु जग महि आइआ ॥
 साचि नामि सहजि समाइआ ॥ १ ॥ गुरमुखिं कार करहु लिव लाइ ॥ हरिं नामु सेवहु विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 तिसु जन की है साची बाणी ॥ गुर कै सबदि जग माहि समाणी ॥ चहु जुग पसरीं साची सोइ ॥ नामि रता जनु परगटु होइ
 ॥ २ ॥ इकि साचै सबदि रहे लिव लाइ ॥ से जन साचे साचै भाइ ॥ साचु धिआइनि देखिं हजूरिं ॥ संत जना की पग
 पंकज धूरिं ॥ ३ ॥ एको करता अवरु न कोइ ॥ गुर सबदी मेलावा होइ ॥ जिनि सचु सेविआ तिनि रसु पाइआ ॥ नानक
 सहजे नामि समाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बसंतु महला ३ ॥ भगति करहिं जन देखिं हजूरिं ॥ संत जना की पग पंकज धूरिं ॥
 हरिं सेती सद रहहिं लिव लाइ ॥ पूरै सतिगुरिं दीआ बुझाइ ॥ १ ॥ दासा का दासु बिरला कोई होइ ॥ ऊतम पदवीं पावै
 सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एको सेवहु अवरु न कोइ ॥ जितु सेविऐ सदा सुखु होइ ॥ ना ओहु मरै न आवै जाइ ॥ तिसु बिनु
 अवरु सेवी किउ माइ ॥ २ ॥ से जन साचे जिनी साचु पछाणिआ ॥ आपु मारिं सहजे नामि समाणिआ ॥ गुरमुखिं नामु
 परापति होइ ॥ मनु निरमलु निरमल सचु सोइ ॥ ३ ॥ जिनि गिआनु कीआ तिसु हरिं तू जाणु ॥ साच सबदि प्रभु एकु
 सिआणु ॥ हरिं रसु चाखै तां सुधि होइ ॥ नानक नामि रते सचु सोइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ बसंतु महला ३ ॥ नामि रते कुलां का
 करहिं उधारु ॥ साची बाणी नाम पिआरु ॥ मनमुख भूले कोहे आए ॥ नामहु भूले जनमु गवाए ॥ १ ॥ जीवत मरै

मरि मरणु सवारै ॥ गुर कै सबदि साचु उर धारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सचु भोजनु पवितु सरीरा ॥ मनु निरमलु सद गुणी
 गहीरा ॥ जँमै मरै न आवै जाइ ॥ गुर परसादी साचि समाइ ॥ २ ॥ साचा सेवहु साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि हरि दरि
 नीसाणै ॥ दरि साचै सचु सोभा होइ ॥ निज घरि वासा पावै सोइ ॥ ३ ॥ आपि अभुलु सचा सचु सोइ ॥ होरि सभि भूलहि
 दूजै पति खोइ ॥ साचा सेवहु साची बाणी ॥ नानक नामे साचि समाणी ॥ ४ ॥ ९ ॥ बसँतु महला ३ ॥ बिनु करमा सभ
 भरमि भुलाई ॥ माइआ मोहि बहुतु दुखु पाई ॥ मनमुख अँधे ठउर न पाई ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि समाई ॥ १ ॥
 हुकमु मँने सो जनु परवाणु ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचि रते जिनाह धुरि लिखि पाइआ ॥ हरि का
 नामु सदा मनि भाइआ ॥ सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ॥ जोती जोति मिलाए सोइ ॥ २ ॥ एकु नामु तारे संसारु ॥
 गुर परसादि नाम पिआरु ॥ बिनु नामै मुकति किनै न पाई ॥ पूरे गुर ते नामु पलै पाई ॥ ३ ॥ सो बूझै जिंसु आपि बुझाए
 ॥ सतिगुर सेवा नामु दिदाए ॥ जिन इकु जाता से जन परवाणु ॥ नानक नामि रते दरि नीसाणु ॥ ४ ॥ १० ॥ बसँत
 महला ३ ॥ क्रिपा करे सतिगुरु मिलाए ॥ आपे आपि वसै मनि आए ॥ निहचल मति सदा मन धीर ॥ हरि गुण गावै गुणी
 गहीर ॥ १ ॥ नामहु भूले मरहि बिखु खाइ ॥ ब्रिथा जनमु फिरि आवहि जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु भेख करहि मनि सांति
 न होइ ॥ बहु अभिमनि अपणी पति खोइ ॥ से वडभागी जिन सबदु पछाणिआ ॥ बाहरि जादा घर महि आणिआ ॥ २ ॥
 घर महि वसतु अगम अपारा ॥ गुरमति खोजहि सबदि बीचारा ॥ नामु नव निधि पाई घर ही माहि ॥ सदा रँगि रते सचि
 समाहि ॥ ३ ॥ आपि करे किछु करणु न जाइ ॥ आपे भावै लए मिलाइ ॥ तिस ते नेडै नाही को दूरि ॥ नानक नामि रहिआ
 भरपूरि ॥ ४ ॥ ११ ॥ बसँत महला ३ ॥ गुर सबदी हरि चेति सुभाइ ॥ राम नाम रसि रहै अघाइ ॥ कोट कोटँतर के पाप
 जलि जाहि ॥ जीवत मरहि हरि नामि समाहि ॥ १ ॥ हरि की दाति हरि जीउ जाणै ॥ गुर कै सबदि इहु मनु

मउलिआ हरि गुण दाता नामु वखाणै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगवै वेसि भरमि मुकति न होइ ॥ बह सँजमि सांति न पावै कोइ ॥
 गुरमति नामु परापति होइ ॥ वडभागी हरि पावै सोइ ॥ २ ॥ कलि महि राम नामि वडिआई ॥ गुर पूरे ते पाइआ जाई ॥
 नामि रते सदा सुखु पाई ॥ बिनु नामै हउमै जलि जाई ॥ ३ ॥ वडभागी हरि नामु बीचारा ॥ छुटै राम नामि दुखु सारा ॥
 हिरदे वसिआ सु बाहरि पासारा ॥ नानक जाणै सभु उपावणहारा ॥ ४ ॥ १२ ॥ बसँतु महला ३ इक तुके ॥ तेरा कीआ
 किरम जँतु ॥ देहि त जापी आदि मँतु ॥ १ ॥ गुण आखि वीचारी मेरी माइ ॥ हरि जपि हरि कै लगउ पाइ ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ गुर प्रसादि लागे नाम सुआदि ॥ काहे जनमु गवावहु वैरि वादि ॥ २ ॥ गुरि किरपा कीन्ही चूका अभिमानु ॥ सहज
 भाइ पाइआ हरि नामु ॥ ३ ॥ ऊतमु ऊचा सबद कामु ॥ नानकु वखाणै साचु नामि ॥ ४ ॥ १ ॥ १३ ॥ बसँतु महला ३
 ॥ बनसपति मउली चडिआ बसँतु ॥ इहु मनु मउलिआ सतिगुरु सँगि ॥ १ ॥ तुम्ह साचु धिआवहु मुगध मना ॥ तां सुखु
 पावहु मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इतु मनि मउलिऐ भइआ अनँदु ॥ अँमित फलु पाइआ नामु गोबिंद ॥ २ ॥ एको एकु सभु
 आखि वखाणै ॥ हुकमु बूझै तां एको जाणै ॥ ३ ॥ कहत नानकु हउमै कहै न कोइ ॥ आखणु वेखणु सभु साहिब ते होइ ॥
 ४ ॥ २ ॥ १४ ॥ बसँत महला ३ ॥ सभि जुग तेरे कीते होए ॥ सतिगुरु भेटै मति बुधि होए ॥ १ ॥ हरि जीउ आपे लैहु
 मिलाइ ॥ गुर कै सबदि सच नामि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि बसँतु हरे सभि लोइ ॥ फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु
 होइ ॥ २ ॥ सदा बसँतु गुर सबदु वीचारे ॥ राम नामु राखै उर धारे ॥ ३ ॥ मनि बसँतु तनु मनु हरिआ होइ ॥ नानक इहु
 तनु बिरखु राम नामु फलु पाए सोइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १५ ॥ बसँतु महला ३ ॥ तिन्ह बसँतु जो हरि गुण गाइ ॥ पूरै भागि हरि
 भगति कराइ ॥ १ ॥ इसु मन कउ बसँत की लगै न सोइ ॥ इहु मनु जलिआ दुजै दोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु धँधै बांधा
 करम कमाइ ॥ माइआ मूठा सदा बिललाइ ॥ २ ॥ इहु मनु छूटै जां सतिगुरु भेटै ॥ जमकाल की फिरि

आवै न फेटै ॥ ३ ॥ इहु मनु छूटा गुरि लीआ छडाइ ॥ नानक माइआ मोहु सबदि जलाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १६ ॥ बसंतु महला
 ३ ॥ बसंत चड़िआ फूली बनराइ ॥ एहि जीअ जंत फूलहि हरि चित लाइ ॥ १ ॥ इन बिधि इहु मनु हरिआ होइ ॥ हरि हरि
 नामु जपै दिनु राती गुरमुखि हउमै कढै धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर बाणी सबदु सुणाए ॥ इहु जगु हरिआ सतिगुर भाए ॥
 २ ॥ फल फूल लागे जां आपे लाए ॥ मूलिं लगै तां सतिगुरु पाए ॥ ३ ॥ आपि बसंतु जगतु सभु वाड़ी ॥ नानक पूरै भागि
 भगति निराली ॥ ४ ॥ ५ ॥ १७ ॥

बसंतु हिंडोल महला ३ वरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर की बाणी विटहु वारिआ भाई गुर सबद विटहु बलिं जाई ॥ गुरु सालाही सद अपणा भाई गुर चरणी चितु लाई ॥ १ ॥ मेरे
 मन राम नामि चितु लाइ ॥ मनु तनु तेरा हरिआ होवै इकु हरि नामा फलु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि राखे से उबरे भाई हरि रसु
 अँम्रितु पीआइ ॥ विचहु हउमै दुखु उठि गइआ भाई सुखु वुठा मनि आइ ॥ २ ॥ धुरि आपे जिन्हा नो बखसिओनु भाई सबदे
 लइअनु मिलाइ ॥ धूड़ि तिन्हा की अघुलीए भाई सतसंगति मेलि मिलाइ ॥ ३ ॥ आपि कराए करे आपि भाई जिनि हरिआ
 कीआ सभु कोइ ॥ नानक मनि तनि सुखु सद वसै भाई सबदि मिलावा होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ १८ ॥ १२ ॥ १८ ॥ ३० ॥

रागु बसंतु महला ४ वरु १ इक तुके १३ सतिगुर प्रसादि ॥

जिउ पसरि सूरज किरणि जोति ॥ तिउ घट घटि रमईआ ओति पोति ॥ १ ॥ एको हरि रविआ सब थाइ ॥ गुर सबदी
 मिलीए मेरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि अंतरि एको हरि सोइ ॥ गुरि मिलिऐ इकु प्रगटु होइ ॥ २ ॥ एको एकु रहिआ
 भरपूरि ॥ साकत नर लोभी जाणहि दूरि ॥ ३ ॥ एको एकु वरतै हरि लोइ ॥ नानक हरि एको करे सु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ बसंतु
 महला ४ ॥ रैणि दिनसु दुइ सदे पए ॥ मन हरि सिमरहु अँति सदा रखि लए ॥ १ ॥ हरि हरि चेति सदा मन मेरे ॥ सभु

आलसु दूख भँजि प्रभु पाइआ गुरमति गावहु गुण प्रभ केरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख फिरि फिरि हउमै मुर ॥ कालि दैति
सँघारे जम पुरि गए ॥ २ ॥ गुरमुखि हरि हरि हरि लिव लागे ॥ जनम मरण दोऊ दुख भागे ॥ ३ ॥ भगत जना कउ हरि
किरपा धारी ॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ बनवारी ॥ ४ ॥ २ ॥

बसंत हिंडोल महला ४ वरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

राम नामु रतन कोठडी गड़ मँदरि एक लुकानी ॥ सतिगुरु मिलै त खोजीरे मिलि जोती जोति समानी ॥ १ ॥ माधो साधू
जन देहु मिलाइ ॥ देखत दरसु पाप सभि नासहि पवित्र परम पदु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँच चोर मिलि लागे नगरीआ राम
नाम धनु हिरिआ ॥ गुरमति खोज परे तब पकरे धनु साबतु रासि उबरिआ ॥ २ ॥ पाखँड भरम उपाव करि थाके रिद अंतरि
माइआ माइआ ॥ साधू पुरखु पुरखपति पाइआ अगिआन अँधरु गवाइआ ॥ ३ ॥ जगँनाथ जगदीस गुसाई करि किरपा
साधु मिलावै ॥ नानक सांति होवै मन अंतरि नित हिरदै हरि गुण गावै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ४ हिंडोल ॥ तुम्ह
वड पुरख वड अगम गुसाई हम कीरे किरम तुमनछे ॥ हरि दीन दइआल करहु प्रभ किरपा गुर सतिगुर चरण हम बनछे ॥
१ ॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि करि क्रिपछे ॥ जनम जनम के किलविख मलु भरिआ मिलि संगति करि प्रभ हनछे ॥ १
॥ रहाउ ॥ तुम्हरा जनु जाति अविजाता हरि जपिओ पतित पवीछे ॥ हरि कीओ सगल भवन ते ऊपरि हरि सोभा हरि प्रभ
दिनछे ॥ २ ॥ जाति अजाति कोई प्रभ धिआवै सभि पूरे मानस तिनछे ॥ से धँनि वडे वड पूरे हरि जन जिन्ह हरि धारिओ
हरि उरछे ॥ ३ ॥ हम ढींढे ढीम बहुतु अति भारी हरि धारि क्रिपा प्रभ मिलछे ॥ जन नानक गुरु पाइआ हरि तूठे हम कीरे
पतित पवीछे ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ मेरा इकु खिनु मनूआ रहि न सकै नित हरि हरि नाम रसि गीधे
॥ जिउ बारिकु रसकि परिओ थनि माता थनि काढे बिलल बिलीधे ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ मेरे मन तन नाम हरि बीधे ॥

वडै भागि गुरु सतिगुरु पाइआ विचि काइआ नगर हरि सीधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन के सास सास है जेते हरि बिरहि
 प्रभु हरि बीधे ॥ जिउ जल कमल प्रीति अति भारी बिनु जल देखे सुकलीधे ॥ २ ॥ जन जपिओ नामु निरँजनु नरहरि
 उपदेसि गुरु हरि प्रीधे ॥ जनम जनम की हउमै मलु निकसी हरि अँप्रिति हरि जलि नीधे ॥ ३ ॥ हमरे करम न बिचरहु
 ठाकुर तुम्ह पैज रखहु अपनीधे ॥ हरि भावै सुणि बिनु बेनती जन नानक सरणि पवीधे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ बसँतु
 हिँडोल महला ४ ॥ मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही वासा पाईये ॥ गुरि अँकसु सबदु दारु सिरि
 धारिओ घरि मँदरि आणि वसाईये ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईये ॥ हउमै रोगु गइआ सुखु
 पाइआ हरि सहजि समाधि लगाईये ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न सकाईये ॥
 जिउ ओडा कूपु गुहज खिन काढै तिउ सतिगुरि वसतु लहाईये ॥ २ ॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते धिगु
 धिगु नर जीवाईये ॥ जनमु पदारथु पुँनि फलु पाइआ कउडी बदलै जाईये ॥ ३ ॥ मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि
 किरपा गुरु मिलाईये ॥ जन नानक निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईये ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥ बसँतु
 हिँडोल महला ४ ॥ आवण जाणु भइआ दुखु बिखिआ देह मनमुखु सुँजी सुँजु ॥ राम नामु खिनु पलु नही चेतिआ
 जमि पकरे कालि सलुँजु ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ बिखु हउमै ममता मुँजु ॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी मिलि संगति
 हरि रसु भुँजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतसंगति साध दइआ करि मेलहु सरणागति साधू पँजु ॥ हम डुबदे पाथर काढि लेहु
 प्रभ तुम्ह दीन दइआल दुख भँजु ॥ २ ॥ हरि उसतति धारहु रिद अँतरि सुआमी सतसंगति मिलि बुधि लँजु ॥ हरि
 नामै हम प्रीति लगानी हम हरि विटहु घुमि वँजु ॥ ३ ॥ जन के पूरि मनोरथ हरि प्रभ हरि नामु देवहु हरि लँजु ॥ जन
 नानक मनि तनि अनदु भइआ है गुरि मँत्रु दीओ हरि भँजु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ १२ ॥ १८ ॥ ७ ॥ ३७ ॥

बसंत महला ७ वरु १ दुतुके १८ शितिगुर प्रसादि ॥

गुरु सेवउ करि नमसकार ॥ आजु हमारै मंगलचार ॥ आजु हमारै महा अनंद ॥ चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥ १ ॥ आजु
हमारै ग्रिहि बसंत ॥ गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आजु हमारै बने फाग ॥ प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥
होली कीनी संत सेव ॥ रंगु लागा अति लाल देव ॥ २ ॥ मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥ सुकै नाही छाव धूप ॥ सगली
रूती हरिआ होइ ॥ सद बसंत गुर मिले देव ॥ ३ ॥ बिरखु जमिओ है पारजात ॥ फूल लगे फल रतन भांति ॥ त्रिपति
अघाने हरि गुणह गाइ ॥ जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥ ४ ॥ १ ॥ बसंत महला ७ ॥ हटवाणी धन माल हाटु कीतु
॥ जूअरी जूए माही चीतु ॥ अमली जीवै अमलु खाइ ॥ तिउ हरि जनु जीवै हरि धिआइ ॥ १ ॥ अपनै रंगि सभु को रचै
॥ जितु प्रभि लाइआ तितु तितु लगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेघ समै मोर निरतिकार ॥ चंद देखि बिगसहि कउलार ॥ माता
बारिक देखि अनंद ॥ तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिंद ॥ २ ॥ सिंघ रुचै सद भोजनु मास ॥ रणु देखि सूरै चित उलास
॥ किरपन कउ अति धन पिआरु ॥ हरि जन कउ हरि हरि आधारु ॥ ३ ॥ सरब रंग इक रंग माहि ॥ सरब सुखा सुख
हरि कै नाइ ॥ तिसहि परापति इहु निधानु ॥ नानक गुरु जिसु करे दानु ॥ ४ ॥ २ ॥ बसंतु महला ७ ॥ तिसु बसंतु
जिसु प्रभु क्रिपालु ॥ तिसु बसंतु जिसु गुरु दइआल ॥ मंगलु तिसु कै जिसु एकु कामु ॥ तिसु सद बसंतु जिसु रिदै नामु ॥
१ ॥ ग्रिहि ता के बसंतु गनी ॥ जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीति पारब्रहम मउलि मना ॥ गिआनु कमाईए
पूछि जनां ॥ सो तपसी जिसु साधसंगु ॥ सद धिआनी जिसु गुरहि रंगु ॥ २ ॥ सो निरभउ जिन्ह भउ पइआ ॥ सो
सुखीआ जिसु भ्रमु गइआ ॥ सो इकांती जिसु रिदा थाइ ॥ सोई निहचलु साच ठाइ ॥ ३ ॥ एका खोजै एक प्रीति ॥
दरसन परसन हीत चीति ॥ हरि रंग रंगा सहजि माणु ॥ नानक दास तिसु जन कुरबाणु ॥ ४ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ७ ॥

जीअ प्राण तुम्ह पिंड दीन्ह ॥ मुग्ध सुंदर धारि जोति कीन्ह ॥ सभि जाचिक प्रभ तुम्ह दइआल ॥ नामु जपत होवत निहाल ॥
 ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम कारण करण जोग ॥ हउ पावउ तुम ते सगल थोक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु जपत होवत उधार ॥ नामु
 जपत सुख सहज सार ॥ नामु जपत पति सोभा होइ ॥ नामु जपत बिघनु नाही कोइ ॥ २ ॥ जा कारणि इह दुलभ देह ॥
 सो बोलु मेरे प्रभू देहि ॥ साधसंगति महि इहु बिस्रामु ॥ सदा रिदै जपी प्रभ तेरो नामु ॥ ३ ॥ तुझ बिनु दूजा कोइ नाहि ॥
 सभु तेरो खेलु तुझ महि समाहि ॥ जिउ भावै तिउ राखि ले ॥ सुखु नानक पूरा गुरु मिले ॥ ४ ॥ ४ ॥ बसंत महला ५ ॥
 प्रभ प्रीतम मेरै सँगि राइ ॥ जिसहि देखि हउ जीवा माइ ॥ जा कै सिमरनि दुखु न होइ ॥ करि दइआ मिलावहु तिसहि मोहि
 ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम प्राण अधार मन ॥ जीउ प्राण सभु तेरो धन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ खोजहि सुरि नर देव ॥ मुनि जन
 सेख न लहहि भेव ॥ जा की गति मिति कही न जाइ ॥ घटि घटि घटि घटि रहिआ समाइ ॥ २ ॥ जा के भगत आनंद मै ॥
 जा के भगत कउ नाही खै ॥ जा के भगत कउ नाही भै ॥ जा के भगत कउ सदा जै ॥ ३ ॥ कउन उपमा तेरी कही जाइ ॥
 सुखदाता प्रभु रहिओ समाइ ॥ नानकु जाचै एकु दानु ॥ करि किरपा मोहि देहु नामु ॥ ४ ॥ ५ ॥ बसंतु महला ५ ॥ मिलि
 पाणी जिउ हरे बूट ॥ साधसंगति तिउ हउमै छूट ॥ जैसी दासे धीर मीर ॥ तेसो उधारन गुरुह पीर ॥ १ ॥ तुम दाते प्रभ
 देनहार ॥ निमख निमख तिसु नमसकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसहि परापति साधसंगु ॥ तिसु जन लागा पारब्रहम रंगु ॥
 ते बंधन ते भए मुक्ति ॥ भगत अराधहि जोग जुगति ॥ २ ॥ नेत्र संतोखे दरसु पेखि ॥ रसना गाए गुण अनेक ॥
 तिसना बूझी गुरु प्रसादि ॥ मनु आघाना हरि रसहि सुआदि ॥ ३ ॥ सेवकु लागो चरण सेव ॥ आदि पुरख अपरंपर देव ॥
 सगल उधारण तेरो नामु ॥ नानक पाइओ इहु निधानु ॥ ४ ॥ ६ ॥ बसंतु महला ५ ॥ तुम बड दाते दे रहे ॥ जीअ प्राण
 महि रवि रहे ॥ दीने सगले भोजन खान ॥ मोहि निरगुन इकु गुनु न जान ॥ १ ॥ हउ कछु न जानउ तेरी सार ॥ तू

करि गति मेरी प्रभ दइ आर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप न ताप न करम कीति ॥ आवै नाही कछु रीति ॥ मन महि राखउ आस
 एक ॥ नाम तेरे की तरउ टेक ॥ २ ॥ सरब कला प्रभ तुम्ह प्रबीन ॥ अंतु न पावहि जलहि मीन ॥ अगम अगम ऊचह ते
 ऊच ॥ हम थोरे तुम बहुत मूच ॥ ३ ॥ जिन तू धिआइ आसे गनी ॥ जिन तू पाइ आसे धनी ॥ जिनि तू सेविआ सुखी से
 ॥ संत सरणि नानक परे ॥ ४ ॥ ७ ॥ बसंतु महला ५ ॥ तिसु तू सेवि जिनि तू कीआ ॥ तिसु अराधि जिनि जीउ दीआ
 ॥ तिस का चाकरु होहि फिरि डानु न लागै ॥ तिस की करि पोतदारी फिरि दूखु न लागै ॥ १ ॥ एवड भाग होहि जिसु
 प्राणी ॥ सो पाए इहु पदु निरबाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजी सेवा जीवनु बिरथा ॥ कछु न होई है पूरन अरथा ॥ माणस
 सेवा खरी दुहेली ॥ साध की सेवा सदा सुहेली ॥ २ ॥ जे लोड़हि सदा सुखु भाई ॥ साधू संगति गुरहि बताई ॥ ऊहा
 जपीरे केवल नाम ॥ साधू संगति पारगराम ॥ ३ ॥ सगल तत महि ततु गिआनु ॥ सरब धिआन महि एकु धिआनु ॥
 हरि कीरतन महि ऊतम धुना ॥ नानक गुर मिलि गाइ गुना ॥ ४ ॥ ८ ॥ बसंतु महला ५ ॥ जिसु बोलत मुखु पवितु होइ
 ॥ जिसु सिमरत निरमल है सोइ ॥ जिसु अराधे जमु किछु न कहै ॥ जिस की सेवा सभु किछु लहै ॥ १ ॥ राम राम बोलि
 राम राम ॥ तिआगहु मन के सगल काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस के धारे धरणि अकासु ॥ घट घटि जिस का है प्रगासु ॥
 जिसु सिमरत पतित पुनीत होइ ॥ अंत कालि फिरि फिरि न रोइ ॥ २ ॥ सगल धरम महि ऊतम धरम ॥ करम करतूति कै
 ऊपरि करम ॥ जिस कउ चाहहि सुरि नर देव ॥ संत सभा की लगहु सेव ॥ ३ ॥ आदि पुरखि जिसु कीआ दानु ॥ तिस
 कउ मिलिआ हरि निधानु ॥ तिस की गति मिति कही न जाइ ॥ नानक जन हरि हरि धिआइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ बसंतु महला
 ५ ॥ मन तन भीतरि लागी पिआस ॥ गुरि दइआलि पूरी मेरी आस ॥ किलविख काटे साधसंगि ॥ नामु जपिओ हरि
 नाम रंगि ॥ १ ॥ गुर परसादि बसंतु बना ॥ चरन कमल हिरदै उरि धारे सदा सदा हरि जसु सुना ॥ १ ॥ रहाउ ॥

समरथ सुआमी कारण करण ॥ मोहि अनाथ प्रभ तेरी सरण ॥ जीअ जंत तेरे आधारि ॥ करि किरपा प्रभ लेहि निसतारि
 ॥ २ ॥ भव खंडन दुख नास देव ॥ सुरि नर मुनि जन ता की सेव ॥ धरणि अकासु जा की कला माहि ॥ तेरा दीआ
 सभि जंत खाहि ॥ ३ ॥ अंतरजामी प्रभ दइआल ॥ अपने दास कउ नदरि निहालि ॥ करि किरपा मोहि देहु दानु ॥
 जपि जीवै नानकु तेरो नामु ॥ ४ ॥ १० ॥ बसंतु महला ५ ॥ राम रंगि सभ गए पाप ॥ राम जपत कछु नहीं संताप ॥
 गोबिंद जपत सभि मिटे अंधेर ॥ हरि सिमरत कछु नाहि फेर ॥ १ ॥ बसंतु हमारै राम रंगु ॥ संत जना सिउ सदा संगु ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ संत जनी कीआ उपदेसु ॥ जह गोबिंद भगतु सो धनि देसु ॥ हरि भगतिहीन उदिआन थानु ॥ गुर
 प्रसादि घटि घटि पछानु ॥ २ ॥ हरि कीरतन रस भोग रंगु ॥ मन पाप करत तू सदा संगु ॥ निकटि पेखु प्रभु करणहार
 ॥ ईत ऊत प्रभ कारज सार ॥ ३ ॥ चरन कमल सिउ लगो धिआनु ॥ कर किरपा प्रभि कीनो दानु ॥ तेरिआ संत जना
 की बाछउ धूरि ॥ जपि नानक सुआमी सद हजूरि ॥ ४ ॥ ११ ॥ बसंतु महला ५ ॥ सचु परमेसरु नित नवा ॥ गुर
 किरपा ते नित चवा ॥ प्रभ रखवाले माई बाप ॥ जा कै सिमरणि नहीं संताप ॥ १ ॥ खसमु धिआई इक मनि इक भाइ
 ॥ गुर पूरे की सदा सरणाई साचै साहिबि रखिआ कँठि लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपने जन प्रभि आपि रखे ॥ दुसट दूत
 सभि भ्रमि थके ॥ बिनु गुर साचे नहीं जाइ ॥ दुखु देस दिसंतरि रहे धाइ ॥ २ ॥ किरतु ओन्हा का मिटसि नाहि ॥ ओइ
 अपना बीजिआ आपि खाहि ॥ जन का रखवाला आपि सोइ ॥ जन कउ पहुचि न सकसि कोइ ॥ ३ ॥ प्रभि दास रखे
 करि जतनु आपि ॥ अखंड पूरन जा को प्रतापु ॥ गुण गोबिंद नित रसन गाइ ॥ नानकु जीवै हरि चरण धिआइ ॥ ४
 ॥ १२ ॥ बसंतु महला ५ ॥ गुर चरण सेरेवत दुखु गइआ ॥ पारब्रहमि प्रभि करी मइआ ॥ सब मनोरथ पूरन काम ॥
 जपि जीवै नानकु राम नाम ॥ १ ॥ सा रुति सुहावी जितु हरि चिति आवै ॥ बिनु सतिगुर दीसै बिललांती साकतु फिरि

फिरि आवै जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ से धँनवँत जिन हरि प्रभु रासि ॥ काम क्रोध गुर सबदि नासि ॥ भै बिनसे निरभै पदु पाइआ ॥ गुर मिलि नानकि खसमु धिआइआ ॥ २ ॥ साधसँगति प्रभि कीओ निवास ॥ हरि जपि जपि होई पूरन आस ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ ॥ गुर मिलि नानकि हरि हरि कहिआ ॥ ३ ॥ असट सिधि नव निधि एह ॥ करमि परापति जिंसु नामु देह ॥ प्रभ जपि जपि जीवहि तेरे दास ॥ गुर मिलि नानक कमल प्रगास ॥ ४ ॥ १३ ॥

बसँतु महला ५ घरु १ इक तुके १८ सतिगुर प्रसादि ॥

सगल इछा जपि पुँनीआ ॥ प्रभि मेले चिरी विछुँनिआ ॥ १ ॥ तुम खहु गोबिंदै खण जोगु ॥ जितु रविरे सुख सहज भोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ ॥ अपना दासु आपि सम्हालिआ ॥ २ ॥ सेज सुहावी रसि बनी ॥ आइ मिले प्रभ सुख धनी ॥ ३ ॥ मेरा गुणु अवगणु न बीचारिआ ॥ प्रभ नानक चरण पूजारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥ बसँतु महला ५ ॥ किलबिख बिनसे गाइ गुना ॥ अनदिनु उपजी सहज धुना ॥ १ ॥ मनु मउलिओ हरि चरन सँगि ॥ करि किरपा साधू जन भेटे नित शतौ हरि नाम रँगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा प्रगटे गोपाल ॥ लडि लाइ उधारे दीन दइआल ॥ २ ॥ इहु मनु होआ साध धूरि ॥ नित देखै सुआमी हजूरि ॥ ३ ॥ काम क्रोध त्रिसना गई ॥ नानक प्रभ किरपा भई ॥ ४ ॥ २ ॥ १५ ॥ बसँतु महला ५ ॥ रोग मिटाए प्रभू आपि ॥ बालक राखे अपने कर थापि ॥ १ ॥ सांति सहज छिहि सद बसँतु ॥ गुर पूरे की सरणी आए कलिआण रूप जपि हरि हरि मँतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोग सँताप कटे प्रभि आपि ॥ गुर अपने कउ नित नित जापि ॥ २ ॥ जो जनु तेरा जपे नाउ ॥ सभि फल पाए निहचल गुण गाउ ॥ ३ ॥ नानक भगता भली शीति ॥ सुखदाता जपदे नीत नीति ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६ ॥ बसँतु महला ५ ॥ हुकमु करि कीन्हे निहाल ॥ अपने सेवक कउ भइआ दइआलु ॥ १ ॥ गुरि पूरै सभु पूरा कीआ ॥ अँमित नामु

रिंद महि दीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करमु धरमु मेरा कछु न बीचारिओ ॥ बाह पकरि भवजलु निसतारिओ ॥ २ ॥ प्रभिं काटि मैलु
निरमल करे ॥ गुर पूरे की सरणी परे ॥ ३ ॥ आपि करहि आपि करणैहारे ॥ करि किरपा नानक उधारे ॥ ४ ॥ ४ ॥ १७ ॥

बसंतु महला ७ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

देखु फूल फूल फूले ॥ अहँ तिआगि तिआगे ॥ सरन कमल पागे ॥ तुम मिलहु प्रभ सभागे ॥ हरिं चेति मन मेरे ॥ रहाउ ॥
सघन बासु कूले ॥ इकि रहे सूकि कठूले ॥ बसंत रुति आई ॥ परफूलता रहे ॥ १ ॥ अब कलू आइओरे ॥ इकु नामु बोवहु
बोवहु ॥ अन रुति नाही नाही ॥ मतु भरमि भूलहु भूलहु ॥ गुर मिले हरि पाए ॥ जिसु मसतकि है लेखा ॥ मन रुति नाम रे
॥ गुन कहे नानक हरि हरे हरि हरे ॥ २ ॥ १८ ॥

बसंतु महला ७ घरु २ हिंडोल १३ शितिगुर प्रसादि ॥

होइ इकर मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥ हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ ॥ १ ॥ इन्ह बिधि
पासा ढालहु बीर ॥ गुरमुखि नामु जपहु दिनु राती अंत कालिं नह लागै पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम अरम तुम्ह चउपड़िं साजहु
सतु करहु तुम्ह सारी ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु जीतहु ऐसी खेल हरि पिआरी ॥ २ ॥ उठि इसनानु करहु परभाते सोए हरि आराधे
॥ बिखड़े दाउ लँघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते ॥ ३ ॥ हरि आपे खेलै आपे देखै हरि आपे रचनु रचाइआ ॥
जन नानक गुरमुखि जो नरु खेलै सो जिणि बाजी घरि आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥ बसंतु महला ७ हिंडोल ॥ तेरी कुदरति
तूहै जाणहि अउरु न दूजा जाणै ॥ जिस नो क्रिपा करहि मेरे पिआरे सोई तुझै पछाणै ॥ १ ॥ तेरिआ भगता कउ बलिहारा ॥
थानु सुहावा सदा प्रभ तेरा रँग तेरे आपारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी सेवा तुझ ते होवै अउरु न दूजा करता ॥ भगतु तेरा सोई तुधु
भावै

जिस नो तू रँगु धरता ॥ २ ॥ तू वड दाता तू वड दाना अउरु नहीं को दूजा ॥ तू समरथु सुआमी मेरा हउ किआ जाणा
तेरी पूजा ॥ ३ ॥ तेरा महलु अगोचरु मेरे पिआरे बिखमु तेरा है भाणा ॥ कहु नानक ढहि पइआ दुआरै रखि लेवहु मुगध
अजाणा ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥ बसंत हिंडोल महला ५ ॥ मूलु न बूझै आपु न सूझै भरमि बिआपी अहँ मनी ॥ १ ॥ पिता
पारब्रहम प्रभ धनी ॥ मोहि निसतारहु निरगुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ओपति परलउ प्रभ ते होवै इह बीचारी हरि जनी ॥ २
॥ नाम प्रभू के जो रँगि राते कलि महि सुखीए से गनी ॥ ३ ॥ अवरु उपाउ न कोई सूझै नानक तरीए गुर बचनी ॥ ४ ॥
३ ॥ २१ ॥

१४ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बसंतु हिंडोल महला ९ ॥

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥ या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु है संपति सुपने
की देखि कहा ऐडानो ॥ सँगि तिहारै कछु न चालै ताहि कहा लपटानो ॥ १ ॥ उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि
आनो ॥ जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥ २ ॥ १ ॥ बसंतु महला ९ ॥ पापी हीरे मै कामु बसाइ ॥
मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी जंगम अरु सनिआस ॥ सभ ही परि डारी इह फास ॥ १ ॥
जिहि जिहि हरि को नामु समाहरि ॥ ते भव सागर उतरे पारि ॥ २ ॥ जन नानक हरि की सरनाइ ॥ दीजै नामु रहै गुन
गाइ ॥ ३ ॥ २ ॥ बसंतु महला ९ ॥ माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥ मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥ १
॥ रहाउ ॥ माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥ लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान
॥ १ ॥ जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥ त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥
२ ॥ जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि की सँपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥ ३ ॥
३ ॥ बसंतु महला ९ ॥ मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥ तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥

इहु जगु धूए का पहार ॥ तै साचा मानिआ किह बिचारिं ॥ १ ॥ धनु दारा संपति गेह ॥ कछु सँगि न चालै समझ लेह
 ॥ २ ॥ इक भगति नाराइन होइ सँगि ॥ कहु नानक भजु तिह एक रँगि ॥ ३ ॥ ४ ॥ बसंतु महला ९ ॥ कहा भूलिओ
 रे झूठे लोभ लाग ॥ कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥ बिनसै छिन मै
 साची मानु ॥ १ ॥ सँगि तेरै हरि बसत नीत ॥ निस बासुर भजु ताहि मीत ॥ २ ॥ बार अंत की होइ सहाइ ॥ कहु
 नानक गुन ताके गाइ ॥ ३ ॥ ५ ॥

बसंतु महला १ असटपदीआ घरु १ दूतुकीआ १ उरिसतिगुर प्रसादि ॥

जहु कऊआ नामु नही चीती ॥ नामु बिसारि गिरै देखु भीति ॥ मनूआ डोलै चीति अनीति ॥ जग सिउ तूटी झूठ परीति
 ॥ १ ॥ कामु क्रोधु बिखु बजरु भारु ॥ नाम बिना कैसे गुन चारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरु बालू का घूमन घेरिं ॥
 बरखसि बाणी बुदबुदा हेरिं ॥ मात्र बूंद ते धरि चकु फेरिं ॥ सरब जोति नामै की चेरिं ॥ २ ॥ सरब उपाइ गुरु सिरिं
 मोरु ॥ भगति करउ पग लागउ तोर ॥ नामि रतो चाहउ तुझ ओरु ॥ नामु दुराइ चलै सो चोरु ॥ ३ ॥ पति खोई
 बिखु अंचलि पाइ ॥ साच नामि रतो पति सिउ घरि जाइ ॥ जो किछु कीन्हसि प्रभुरजाइ ॥ भै मानै निरभउ मेरी माइ ॥
 ४ ॥ कामनि चाहै सुंदरि भोगु ॥ पान फूल मीठे रस रोग ॥ खीलै बिगसै तेतो सोग ॥ प्रभ सरणागति कीन्हसि होग ॥
 ५ ॥ कापडु पहिरसि अधिकु सीगारु ॥ माटी फूली रूपु बिकारु ॥ आसा मनसा बांधो बारु ॥ नाम बिना सूना घरु
 बारु ॥ ६ ॥ गाछहु पुत्री राजकुआरि ॥ नामु भणहु सचु दोतु सवारि ॥ प्रिउ सेवहु प्रभ प्रेम अधारि ॥ गुर सबदी बिखु
 तिआस निवारि ॥ ७ ॥ मोहनि मोहि लीआ मन मोहि ॥ गुर कै सबदि पछाना तोहि ॥ नानक ठाढे चाहहि प्रभू दुआरि
 ॥ तेरे नामि संतोखे किरपा धारि ॥ ८ ॥ १ ॥ बसंतु महला १ ॥ मनु भूलउ भरमसि आइ जाइ ॥ अति लुबध लुभावउ
 बिखम माइ ॥ नह असथिरु दीसै एक भाइ ॥ जिउ मीन कुंडलीआ कंठि पाइ ॥ १ ॥ मनु भूलउ समझसि साच नाइ ॥

गुर सबदु बीचारे सहज भइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु भूलउ भरमसि भवर तार ॥ बिल बिरथे चाहै बहु बिकार ॥ मैगल जिउ
 फाससि कामहार ॥ कड़ि बँधनि बाधिओ सीस मार ॥ २ ॥ मनु मुगधौ दादरु भगतिहीनु ॥ दरि भ्रसट सरापी नाम बीनु
 ॥ ता कै जाति न पाती नाम लीन ॥ सभि दूख सखाई गुणह बीन ॥ ३ ॥ मनु चलै न जाई ठाकि राखु ॥ बिनु हरि रस
 राते पति न साखु ॥ तू आपे सुरता आपि राखु ॥ धरि धारणु देखै जाणै आपि ॥ ४ ॥ आपि भुलाए किसु कहउ जाइ ॥
 गुरु मेले बिरथा कहउ माइ ॥ अवगण छौडउ गुण कमाइ ॥ गुर सबदी राता सचि समाइ ॥ ५ ॥ सतिगुर मिलिऐ मति
 ऊतम होइ ॥ मनु निरमलु हउमै कढै धोइ ॥ सदा मुक्तु बँधि न सकै कोइ ॥ सदा नामु वखाणै अउरु न कोइ ॥ ६ ॥ मनु
 हरि कै भाणै आवै जाइ ॥ सभ महि एको किछु कहणु न जाइ ॥ सभु हुकमो वरतै हुकमि समाइ ॥ दूख सूख सभ तिसु रजाइ
 ॥ ७ ॥ तू अभुलु न भूलौ कदे नाहि ॥ गुर सबदु सुणाए मति अगाहि ॥ तू मोटउ ठाकुरु सबद माहि ॥ मनु नानक
 मानिआ सचु सलाहि ॥ ८ ॥ २ ॥ बसंतु महला १ ॥ दरसन की पिआस जिसु नर होइ ॥ एकतु राचै परहरि दोइ ॥ दूरि
 दरदु मथि अँमितु खाइ ॥ गुरमुखि बूझै एक समाइ ॥ १ ॥ तेरे दरसन कउ केती बिललाइ ॥ विरला को चीनसि गुर सबदि
 मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद वखाणि कहहि इकु कहीऐ ॥ ओहु बेअंतु अंतु किनि लहीऐ ॥ एको करता जिनि जगु कीआ
 ॥ बाझु कला धरि गगनु धरीआ ॥ २ ॥ एको गिआनु धिआनु धुनि बाणी ॥ एकु निरालमु अकथ कहाणी ॥ एको सबदु
 सचा नीसाणु ॥ पूरे गुर ते जाणै जाणु ॥ ३ ॥ एको धरमु द्विडै सचु कोई ॥ गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ अनहदि राता
 एक लिव तार ॥ ओहु गुरमुखि पावै अलख अपार ॥ ४ ॥ एको तखतु एको पातिसाहु ॥ सरबी थाई वेपरवाहु ॥ तिस का
 कीआ त्रिभवन सारु ॥ ओहु अगमु अगोचरु एकँकारु ॥ ५ ॥ एका मूरति साचा नाउ ॥ तिथै निबडै साचु निआउ ॥
 साची करणी पति परवाणु ॥ साची दरगह पावै माणु ॥ ६ ॥ एका भगति एको है भाउ ॥ बिनु भै भगती आवउ जाउ ॥

गुर ते समझि रहै मिहमाणु ॥ हरि रसि राता जनु परवाणु ॥ ७ ॥ इत उत देखउ सहजे रावउ ॥ तुझ बिनु ठाकुर किसै न
 भावउ ॥ नानक हउमै सबदि जलाइआ ॥ सतिगुरि साचा दरसु दिखाइआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ बसंतु महला १ ॥ चंचलु चीतु
 न पावै पारा ॥ आवत जात न लागै बारा ॥ दूखु घणो मरीरे करतारा ॥ बिनु प्रीतम को करै न सारा ॥ १ ॥ सभ ऊतम
 किसु आखउ हीना ॥ हरि भगती सचि नामि पतीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउखध करि थाकी बहुतेरे ॥ किउ दुखु चूकै बिनु
 गुर मेरे ॥ बिनु हरि भगती दूख घणरे ॥ दुख सुख दाते ठाकुर मेरे ॥ २ ॥ रोगु वडो किउ बांधउ धीरा ॥ रोगु बुझै सो
 काटै पीरा ॥ मै अवगण मन माहि सरीरा ॥ दूढत खोजत गुरि मेले बीरा ॥ ३ ॥ गुर का सबदु दाखु हरि नाउ ॥ जिउ तू
 राखहि तिवै रहाउ ॥ जगु रोगी कह देखि दिखाउ ॥ हरि निरमाइलु निरमल नाउ ॥ ४ ॥ घर महि घरु जो देखि दिखावै
 ॥ गुर महली सो महलि बुलावै ॥ मन महि मनूआ चित महि चीता ॥ ऐसे हरि के लोग अतीता ॥ ५ ॥ हरख सोग ते
 रहहि निरासा ॥ अँम्रितु चाखि हरि नामि निवासा ॥ आपु पछाणि रहै लिव लागा ॥ जनमु जीति गुरमति दुखु भागा ॥
 ६ ॥ गुरि दीआ सचु अँम्रितु पीवउ ॥ सहजि मरउ जीवत ही जीवउ ॥ अपणो करि राखहु गुर भावै ॥ तुमरो होइ सु
 तुझहि समावै ॥ ७ ॥ भोगी कउ दुखु रोग विआपै ॥ घटि घटि रवि रहिआ प्रभु जापै ॥ सुख दुख ही ते गुर सबदि
 अतीता ॥ नानक रामु रवै हित चीता ॥ ८ ॥ ४ ॥ बसंतु महला १ इक तुकीआ ॥ मतु भसम अँधूले गरबि जाहि ॥ इन
 बिधि नागे जोगु नाहि ॥ १ ॥ मूडेह काहे बिसारओ तै राम नाम ॥ अँत कालि तेरै आवै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूछि
 तुम करहु बीचारु ॥ जह देखउ तह सारिगपाणि ॥ २ ॥ किआ हउ आखा जां कछू नाहि ॥ जाति पति सभ तेरै नाइ ॥
 ३ ॥ काहे मालु दरबु देखि गरबि जाहि ॥ चलती बार तेरो कछू नाहि ॥ ४ ॥ पँच मारि चितु रखहु थाइ ॥ जोग जुगति
 की इहै पाइ ॥ ५ ॥ हउमै पैखडु तेरे मनै माहि ॥ हरि न चेतहि मूडे मुकति जाहि ॥ ६ ॥ मत हरि विसरिरे जम वसि

पाहि ॥ अंत कालिं मूड़े चोट खाहि ॥ ७ ॥ गुर सबदु बीचारहि आपु जाइ ॥ साच जोगु मनि वसै आइ ॥ ८ ॥ जिनि जीउ
 पिंडु दिता तिसु चेतहि नाहि ॥ मड़ी मसाणी मूड़े जोगु नाहि ॥ ९ ॥ गुण नानकु बोलै भली बाणि ॥ तुम होहु सुजाखे लेहु
 पछाणि ॥ १० ॥ ७ ॥ बसंतु महला १ ॥ दुबिधा दुरमति अधुली कार ॥ मनमुखि भरमै मझिं गुबार ॥ १ ॥ मनु अंधुला
 अंधुली मति लागै ॥ गुर करणी बिनु भरमु न भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि अंधुले गुरमति न भाई ॥ पसू भए अभिमानु न
 जाई ॥ २ ॥ लख चउरासीह जंत उपाए ॥ मेरे ठाकुरु भाणे सिरजिं समाए ॥ ३ ॥ सगली भूलै नही सबदु अचारु ॥ सो
 समझै जिसु गुरु करतारु ॥ ४ ॥ गुर के चाकर ठाकुरु भाणे ॥ बखसि लीए नाही जम काणे ॥ ५ ॥ जिन कै हिरदै एको
 भाइआ ॥ आपे मेले भरमु चुकाइआ ॥ ६ ॥ बेमुहताजु बेअंतु अपारा ॥ सचि पतीजै करणै हारा ॥ ७ ॥ नानक भूले गुरु
 समझावै ॥ एकु दिखावै साचि टिकावै ॥ ८ ॥ ६ ॥ बसंतु महला १ ॥ आपे भवरा फूल बेलि ॥ आपे संगति मीत मेलि ॥
 १ ॥ ऐसी भवरा बासु ले ॥ तरवर फूले बन रहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे कवला कंतु आपि ॥ आपे रावे सबदि थापि ॥ २ ॥
 आपे बछरु गऊ खीरु ॥ आपे मंदरु थंमह सरीरु ॥ ३ ॥ आपे करणी करणहारु ॥ आपे गुरमुखि करि बीचारु ॥ ४ ॥
 तू करि करि देखहि करणहारु ॥ जोति जीअ असंख देइ अधारु ॥ ५ ॥ तू सरु सागरु गुण गहीरु ॥ तू अकुल निरंजनु
 परम हीरु ॥ ६ ॥ तू आपे करता करण जोगु ॥ निहकेवलु राजन सुखी लोगु ॥ ७ ॥ नानक धापे हरि नाम सुआदि ॥ बिनु
 हरि गुर प्रीतम जनमु बादि ॥ ८ ॥ ७ ॥

बसंतु हिंडोलु महला १ घरु २ १३ सितिगुर प्रसादि ॥

नउ सत चउदह तीनि चारि करि महलति चारि बहाली ॥ चारे दिवे चहु हथि दीए एका एका वारी ॥ १ ॥ मिहरवान मधुसूदन
 माधौ ऐसी सकति तुम्हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि घरि लसकरु पावकु तेरा धरमु करे सिकदारी ॥ धरती देग मिलै इक वेरा
 भागु तेरा भंडारी ॥ २ ॥

ना साबूरु होवै फिरि मँगै नारदु करे खुआरी ॥ लबु अधेरा बँदीखाना अउगण पैरि लुहारी ॥ ३ ॥ पूँजी मार पवै नित मुदगर
पापु करे कोटवारी ॥ भावै चँगा भावै मँदा जैसी नदरि तुम्हारी ॥ ४ ॥ आदि पुरख कउ अलहु कहीरे सेखां आई वारी ॥ देवल
देवतिआ करु लाग़ा ऐसी कीरति चाली ॥ ५ ॥ कूजा बांग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥ घरि घरि मीआ सभनां जीआं
बोली अवर तुमारी ॥ ६ ॥ जे तू मीर महीपति साहिबु कुदरति कउण हमारी ॥ चारे कुँट सलामु करहिगे घरि घरि सिफति
तुम्हारी ॥ ७ ॥ तीरथ सिँमिति पुँन दान किछु लाहा मिलै दिहाड़ी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई मेका घड़ी सम्हाली ॥ ८ ॥ १
॥ ८ ॥

बसंतु हिंडोलु घरु २ महला ४ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

कांडा नगरि इकु बालकु वसिआ खिनु पलु थिरु न रहाई ॥ अनिक उपाव जतन करिं थाके बारँ बार भरमाई ॥ १ ॥ मेरे
ठाकुर बालकु इकतु घरि आणु ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईरे भजु राम नामु नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मिरतकु मडा सरीरु
है सभु जगु जितु राम नामु नहीं वसिआ ॥ राम नामु गुरि उदकु चुआइआ फिरि हरिआ होआ रसिआ ॥ २ ॥ मै निरखत
निरखत सरीरु सभु खोजिआ इकु गुरुमुखि चलतु दिखाइआ ॥ बाहरु खोजिं मुए सभिं साकत हरिं गुरुमती घरिं पाइआ ॥ ३
॥ दीना दीन दइआल भए है जिउ क्रिसनु बिदर घरिं आइआ ॥ मिलिओ सुदामा भावनी धारिं सभु किछु आगै दालदु भँजिं
समाइआ ॥ ४ ॥ राम नाम की पैज वडेरी मेरे ठाकुरि आपि रखाई ॥ जे सभिं साकत करहि बखीली इक रती तिलु न घटाई ॥
५ ॥ जन की उसतति है राम नामा दह दिसि सोभा पाई ॥ निँदकु साकतु खविं न सकै तिलु अपणै घरि लूकी लाई ॥ ६ ॥ जन
कउ जनु मिलिं सोभा पावै गुण महि गुण परगासा ॥ मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे जो होवहि दासनि दासा ॥ ७ ॥ आपे
जलु अपरंपरु करता आपे मेलिं मिलावै ॥ नानक गुरुमुखि सहजिं मिलाए जिउ जलु जलहिं समावै ॥ ८ ॥ १ ॥ ९ ॥

बसंतु महला ५ वरु १ दुतुकीआ १८ सितिगुर प्रसादि ॥

सुणि सारखी मन जपि पिआर ॥ अजामलु उधरिआ कहि एक बार ॥ बालमीकै होआ साधसंगु ॥ धू कउ मिलिआ हरि
निसंग ॥ १ ॥ तेरिआ संता जाचउ चरन रेन ॥ ले मसतकि लावउ करि क्रिपा देन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गनिका उधरी हरि
कहै तोत ॥ गजइंद्र धिआइओ हरि कीओ मोख ॥ बिप्र सुदामे दालदु भंज ॥ रे मन तू भी भजु गोबिंद ॥ २ ॥ बधिकु
उधारिओ खमि प्रहार ॥ कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥ बिदरु उधारओ दासत भाइ ॥ रे मन तू भी हरि धिआइ ॥ ३ ॥
प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ बसत्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥ जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ रे मन सेवि तू परहि पार
॥ ४ ॥ धंनै सेविआ बाल बुधि ॥ त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥ बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥ रे मन तू भी होहि दासु
॥ ५ ॥ जैदेव तिआगिओ अहंमेव ॥ नाई उधरिओ सैनु सेव ॥ मनु डीगि न डोलै कहूँ जाइ ॥ मन तू भी तरसहि सरणि
पाइ ॥ ६ ॥ जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीओ आपि ॥ से तैं लीने भगत राखि ॥ तिन का गुणु अवगणु न बीचारिओ कोइ ॥
इह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥ ७ ॥ कबीरि धिआइओ एक रंग ॥ नामदेव हरि जीउ बसहि सँगि ॥ रविदास धिआए प्रभ
अनूप ॥ गुर नानक देव गोविंद रूप ॥ ८ ॥ १ ॥ बसंतु महला ५ ॥ अनिक जनम भ्रमे जोनि माहि ॥ हरि सिमरन बिनु
नरकि पाहि ॥ भगति बिहूना खंड खंड ॥ बिनु बूझै जमु देत डंड ॥ १ ॥ गोबिंद भजहु मेरे सदा मीत ॥ साच सबद करि
सदा प्रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतोखु न आवत कहूँ काज ॥ धूम बादर सभि माइआ साज ॥ पाप करंतौ नह संगाइ ॥
बिखु का माता आवै जाइ ॥ २ ॥ हउ हउ करत बधे बिकार ॥ मोह लोभ डूबौ संसार ॥ कामि क्रोधि मनु वसि कीआ ॥
सुपनै नामु न हरि लीआ ॥ ३ ॥ कब ही राजा कब मंगनहारु ॥ दूख सूख बाधौ संसार ॥ मन उधरण का साजु नाहि ॥
पाप बंधन नित पउत जाहि ॥ ४ ॥ ईठ मीत कोऊ सखा नाहि ॥ आपि बीजि आपे ही खाहि ॥ जा कै कीन्है होत बिकार
॥

से छोडि चलिआ खिन महि गवार ॥ ५ ॥ माइआ मोहि बहु भरमिआ ॥ किरत रेख करि करमिआ ॥ करणैहारु
अलिपतु आपि ॥ नही लेपु प्रभ पुँन पापि ॥ ६ ॥ राखि लेहु गोबिंद दइआल ॥ तेरी सरणि पूरन क्रिपाल ॥ तुझ बिन
दूजा नही ठाउ ॥ करि किरपा प्रभ देहु नाउ ॥ ७ ॥ तू करता तू करणहारु ॥ तू ऊचा तू बहु अपारु ॥ करि किरपा लडि
लेहु लाइ ॥ नानक दास प्रभ की सरणाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

वसंत की वार महलु ७ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अँमित
फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुडि न धाई ॥ १ ॥ पँजे बधे
महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि द्यु खडोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ
॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥ २ ॥ किथहु उपजै कह
रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जँत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥
अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥ ३ ॥ १ ॥

वसंतु वाणी भगतां की ॥ कबीर जी घरु १ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

मउली धरती मउलिआ अकासु ॥ घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु ॥ १ ॥ राजा रामु मउलिआ अनत भाइ ॥ जह
देखउ तह रहिआ समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुतीआ मउले चारि बेद ॥ सिँमिति मउली सिउ कतेब ॥ २ ॥ सकँरु
मउलिओ जोग धिआन ॥ कबीर को सुआमी सभ समान ॥ ३ ॥ १ ॥ पँडित जन माते पढि पुरान ॥ जोगी माते जोग
धिआन ॥ सँनिआसी माते अहँमेव ॥ तपसी माते तप कै भेव ॥ १ ॥ सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ सँग ही चोर घरु
मुसन लाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जागै सुकदेउ अरु अकूरु ॥ हणवँतु जागै धरि लँकूरु ॥ सकँर जागै चरन सेव ॥

कलि जागे नामा जैदेव ॥ २ ॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरुमुखि जागै सोई सारु ॥ इसु देही के अधिक काम ॥ कहि
 कबीर भजि राम नाम ॥ ३ ॥ २ ॥ जोइ खसमु है जाइआ ॥ पूति बापु खेलाइआ ॥ बिनु श्रवणा खीरु पिलाइआ ॥ १
 ॥ देखहु लोगा कलि को भाउ ॥ सुति मुकलाई अपनी माउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पगा बिनु हुरीआ मारता ॥ बदनै बिनु खिर
 खिर हासता ॥ निद्रा बिनु नरु पै सोवै ॥ बिनु बासन खीरु बिलोवै ॥ २ ॥ बिनु असथन गऊ लवेरी ॥ पैडे बिनु बाट
 घनेरी ॥ बिनु सतिगुर बाट न पाई ॥ कहु कबीर समझाई ॥ ३ ॥ ३ ॥ प्रहलाद पठाए पड़नसाल ॥ सँगि सखा बहु लीए
 बाल ॥ मो कउ कहा पड़ाहवसि आल जाल ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु श्री गोपाल ॥ १ ॥ नहीं छोडउ रे बाबा राम नाम ॥
 मेरो अउर पढ़न सिउ नहीं कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँडै मरकै कहिओ जाइ ॥ प्रहलाद बुलाए बेगि धाइ ॥ तू राम कहन की
 छोडु बानि ॥ तुझु तुरतु छडाऊ मेरो कहिओ मानि ॥ २ ॥ मो कउ कहा सतावहु बार बार ॥ प्रभि जल थल गिरि कीए पहार
 ॥ इकु रामु न छोडउ गुरहि गारि ॥ मो कउ घालि जारि भावै मारि डारि ॥ ३ ॥ काढि खड़गु कोपिओ रिसाइ ॥ तुझ
 शखनहारो मोहि बताइ ॥ प्रभ थँभ ते निकसे कै बिसथार ॥ हरनाखसु छेदिओ नख बिदार ॥ ४ ॥ ओइ परम पुरख देवाधि
 देव ॥ भगति हेति नरसिँघ भेव ॥ कहि कबीर को लखै न पार ॥ प्रहलाद उधारे अनिक बार ॥ ५ ॥ ४ ॥ इसु तन मन मधे
 मदन चोर ॥ जिनि गिआन रतनु हिरि लीन मोर ॥ मै अनाथु प्रभ कहउ काहि ॥ को को न बिगूतो मै को आहि ॥ १ ॥
 माधउ दारुन दुखु सहिओ न जाइ ॥ मेरो चपल बुधि सिउ कहा बसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सनक सनँदन सिव सुकादि ॥
 नाभि कमल जाने ब्रहमादि ॥ कबि जन जोगी जटाधारि ॥ सभ आपन अउसर चले सारि ॥ २ ॥ तू अथाहु मोहि थाह
 नाहि ॥ प्रभ दीना नाथ दुखु कहउ काहि ॥ मोरो जनम मरन दुखु आथि धीर ॥ सुख सागर गुन रउ कबीर ॥ ३ ॥ ५ ॥
 नाइकु एकु बनजारे पाच ॥ बरध पचीसक सँगु काच ॥ नउ बहीआं दस गोनि आहि ॥ कसनि बहतारि लागी ताहि ॥ १ ॥

मोहि ऐसे बनज सिउ नहीन काजु ॥ जिह घटै मूलु नित बढै बिआजु ॥ रहाउ ॥ सात सूत मिलि बनजु कीन ॥ करम भावनी
सँग लीन ॥ तीनि जगाती करत शरि ॥ चलो बनराजा हाथ झारि ॥ २ ॥ पूंजी हिरानी बनजु टूट ॥ दह दिसि टांडो गहिओ
फूटि ॥ कहि कबीर मन सरसी काज ॥ सहज समानो त भरम भाज ॥ ३ ॥ ६ ॥

बसंतु हिंडोलु घरु २ १४ शितिगुर प्रसादि ॥

माता जूठी पिता भी जूठा जूठे ही फल लागे ॥ आवहि जूठे जाहि भी जूठे जूठे मरहि अभागे ॥ १ ॥ कहु पंडित सूचा कवनु
ठाउ ॥ जहां बैसि हउ भोजनु खाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहबा जूठी बोलत जूठा करन नेत्र सभि जूठे ॥ इंद्री की जूठि उतरसि
नाही ब्रहम अगनि के लूठे ॥ २ ॥ अगनि भी जूठी पानी जूठा जूठी बैसि पकाइआ ॥ जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि
खाइआ ॥ ३ ॥ गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ॥ कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

रामानंद जी घरु १ १४ शितिगुर प्रसादि ॥

कत जाईऐरे घर लागो रँगु ॥ मेरा चितु न चलै मनु भइओ पँगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक दिवस मन भई उमंग ॥ घसि चंदन चोआ
बहु सुगंध ॥ पूजन चाली ब्रहम ठाइ ॥ सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ॥ १ ॥ जहा जाईऐ तह जल पखान ॥ तू पूरि
रहिओ है सभ समान ॥ बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥ ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥ २ ॥ सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥
जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥ रामानंद सुआमी रमत ब्रहम ॥ गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥ ३ ॥ १ ॥

बसंतु बाणी नामदेउ जी की १४ शितिगुर प्रसादि ॥

साहिबु संकटवै सेवकु भजै ॥ चिरकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥ १ ॥ तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै ॥ चरन कमल मेरे
हीअरे बसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु मांडै ॥ तैसे संत जनां राम नामु न छाडै ॥ २ ॥ गंगा गाइआ
गोदावरी संसार के

कामा ॥ नाराइणु सुप्रसन्न होइ त सेवकु नामा ॥ ३ ॥ १ ॥ लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥ काइआ डूबै केसवा ॥ १ ॥
सँसारु समुँदे तारि गोबिँदे ॥ तारि लै बाप बीठुला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥ तेरा पारु न पाइआ
बीठुला ॥ २ ॥ होहु दइआलु सतिगुर मेलिं तू मो कउ ॥ पारि उतारे केसवा ॥ ३ ॥ नामा कहै हउ तरि भिं न जानउ ॥ मो
कउ बाह देहि बीठुला ॥ ४ ॥ २ ॥ सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥ पीछै तिनका लै करि हांकती ॥ १ ॥ जैसे
पनकत श्रूटि टि हांकती ॥ सरि धोवन चाली लाडुली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धोबी धोवै बिरह बिराता ॥ हरि चरन मेरा मनु राता
॥ २ ॥ भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥ अपने भगत पर करि दइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

बसंतु बाणी रविदास जी की १४ शितिगुर प्रसादि ॥

तुइहि सुइँता कछु नाहि ॥ पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥ गरबवती का नाही ठाउ ॥ तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ॥ १ ॥ तू
काइ गरबहि बावली ॥ जैसे भादउ खँबराजु तू तिस ते खरी उतावली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे कुरँकु नहीं पाइओ भेदु ॥ तनि
सुगँध दूढै प्रदेसु ॥ अप तन का जो करे बीचारु ॥ तिसु नहीं जमकँकरु करे खुआरु ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र का करहि अहँकारु
॥ ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥ फेड़े का दुखु सहै जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥ ३ ॥ साधू की जउ लेहि ओट ॥
तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥ कहि रविदास जो जपै नामु ॥ तिसु जाति न जनमु जोनि कामु ॥ ४ ॥ १ ॥

बसंतु कबीर जीउ १४ शितिगुर प्रसादि ॥

सुरह की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूँछट ऊपरि झमक बाल ॥ १ ॥ इस घर महि है सुतूँढि खाहि ॥ अउर किस ही के तू मति
ही जाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चाकी चाटहि चूनु खाहि ॥ चाकी का चीथरा कहां लै जाहि ॥ २ ॥ छीके पर तेरी बहुतु डीठि ॥
मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि ॥ ३ ॥ कहि कबीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईट ढेम ॥ ४ ॥ १ ॥

शुगु सारग चउपदे महला १ घरु १

१ॐ सतिनामु करता पुरुखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुरु प्रसादि ॥

अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥ चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥

१ ॥ रहाउ ॥ पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥ मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥ १ ॥
मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरीरे ॥ जब की राम रंगीलै राती राम जपत मन धीरे ॥ २ ॥ हउमै छोडि भई
बैरागनि तब साची सुरति समानी ॥ अकुल निरँजन सिउ मनु मानिआ बिसरी लाज लोकानी ॥ ३ ॥ भूर भविख नाही तुम
जैसे मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ हरि कै नामि रती सोहागनि नानक राम भराता ॥ ४ ॥ १ ॥ सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ
रहीरे दुखु बिआपै ॥ जिहवा सादु न फीकी रस बिनु बिनु प्रभ कालु सँतापै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु दरसु न परसै प्रीतम तब
लगु भूख पिआसी ॥ दरसन देखत ही मनु मानिआ जल रसि कमल बिगासी ॥ १ ॥ ऊनवि घनहरु गरजै बरसै कोकिल मोर
बैरागै ॥ तरवर बिख बिहंग भुइअंगम घरि पिरु धन सोहागै ॥ २ ॥ कुचिल कुरुपि कुनारि कुलखनी पिर का सहजु न
जानिआ ॥ हरि रस रँगि रसन नही त्रिपती दुर्मति दूख समानिआ ॥ ३ ॥ आइ न जावै ना दुखु पावै ना दुख दरदु सरीरे ॥
नानक प्रभ ते सहज सुहेली प्रभ देखत ही मनु धीरे ॥ ४ ॥ २ ॥ सारग महला १ ॥ दूरि नाही मेरो प्रभु पिआरा ॥ सतिगुरु

बचनि मेरो मनु मानिआ हरि पाए प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इन बिधि हरि मिलिऐ वर कामनि धन सोहागु पिआरी ॥ जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी ॥ १ ॥ जिसु मनु मानै अभिमानु न ता कउ हिंसा लोभु विसारे ॥ सहजिं रवै वरु कामणि पिर की गुरमुखि रँगि सवारे ॥ २ ॥ जारउ ऐसी प्रीति कुटंब सनबँधी माइआ मोह पसारी ॥ जिसु अंतरि प्रीति राम रसु नाही दुबिधा करम बिकारी ॥ ३ ॥ अंतरि रतन पदारथ हित कौ दुरै न लाल पिआरी ॥ नानक गुरमुखि नामु अमोलकु जुगि जुगि अंतरि धारी ॥ ४ ॥ ३ ॥

सारंग महला ४ घरु १ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

हरि के संत जना की हम धूरि ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ आतमरामु रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु संतु मिलै सांति पाइऐ किलविख दुख काटे सभि दूरि ॥ आतम जोति भई परफूलित पुरखु निरंजनु देखिआ हजूरि ॥ १ ॥ वडै भागि सतसंगति पाई हरि हरि नामु रहिआ भरपूरि ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीआ सतसंगति पग नाए धूरि ॥ २ ॥ दुर्मति बिकार मलीन मति होछी हिरदा कुसुधु लागा मोह कूरु ॥ बिनु करमा किउ संगति पाइऐ हउमै बिआपि रहिआ मनु झूरि ॥ ३ ॥ होहु दइआल क्रिपा करि हरि जी मागउ सतसंगति पग धूरि ॥ नानक संतु मिलै हरि पाइऐ जनु हरि भेटिआ रामु हजूरि ॥ ४ ॥ १ ॥ सारंग महला ४ ॥ गोबिंद चरनन कउ बलिहारी ॥ भवजलु जगत् न जाई तरणा जपि हरि हरि पारि उतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै प्रतीति बनी प्रभ केरी सेवा सुरति बीचारी ॥ अनदिनु राम नामु जपि हिरदै सरब कला गुणकारी ॥ १ ॥ प्रभु अगम अगोचरु रविआ सब ठाई मनि तनि अलख अपारी ॥ गुर किरपाल भए तब पाइआ हिरदै अलखु लखारी ॥ २ ॥ अंतरि हरि नामु सरब धरणीधर साकत कउ दूरि भइआ अहंकारी ॥ त्रिसना जलत न कबहू बूझहि जूरे बाजी हारी ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि गुन गावहि

गुरि किंचत किरपा धारी ॥ नानक जिन कउ नदरि भई है तिन की पैज सवारी ॥ ४ ॥ २ ॥ सारग महला ४ ॥ हरि हरि
 अँमित नामु देहु पिआरे ॥ जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ तिन के काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जन दीन भए
 गुर आगै तिन के दूख निवारे ॥ अनदिनु भगति करहिं गुर आगै गुर कै सबदि सवारे ॥ १ ॥ हिरदै नामु अँमित रसु
 रसना रसु गावहि रसु बीचारे ॥ गुर परसादि अँमित रसु चीनीहआ ओइ पावहि मोख दुआरे ॥ २ ॥ सतिगुरु पुरखु
 अचलु अचला मति जिंसु द्विड़ता नामु अधारे ॥ तिसु आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥ ३ ॥ मनमुख
 भ्रमि दूजै भाइ लागे अँतरि अगिअन गुबारे ॥ सतिगुरु दाता नदरि न आवै ना उरवारि न पारे ॥ ४ ॥ सबे घटि घटि
 रविआ सुआमी सब कला कल धारे ॥ नानकु दासनि दासु कहत है करि किरपा लेहु उबारे ॥ ५ ॥ ३ ॥ सारग महला ४
 ॥ गोबिद की ऐसी कार कमाइ ॥ जो किछु करे सु सति करि मानहु गुरमुखि नामि रहहु लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 गोबिद प्रीति लगी अति मीठी अवर विसरि सभ जाइ ॥ अनदिनु रहसु भइआ मनु मानिआ जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥
 जब गुण गाइ तब ही मनु त्रिपतै सांति वसै मनि आइ ॥ गुर किरपाल भए तब पाइआ हरि चरणी चितु लाइ ॥ २ ॥ मति
 प्रगास भई हरि धिआइआ गिआनि तति लिव लाइ ॥ अँतरि जोति प्रगटी मनु मानिआ हरि सहजि समाधि लगाइ ॥ ३
 ॥ हिरदै कपटु नित कपटु कमावहि मुखहु हरि हरि सुणाइ ॥ अँतरि लोभु महा गुबारा तुह कूटै दुख खाइ ॥ ४ ॥ जब
 सुप्रसँन भए प्रभ मेरे गुरमुखि परचा लाइ ॥ नानक नाम निरँजनु पाइआ नामु जपत सुखु पाइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ सारग
 महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि मनु मानी ॥ मेरै हीअरै सतिगुरि प्रीति लगाई मनि हरि हरि कथा सुखानी ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ दीन दइआल होवहु जन ऊपरि जन देवहु अकथ कहानी ॥ सँत जना मिलि हरि रसु पाइआ हरि मनि तनि मीठ
 लगानी ॥ १ ॥ हरि कै रँगि रते बैरागी जिन्ह गुरमति नामु पछानी ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ सुखु पाइआ सभ चूकी

आवण जानी ॥ २ ॥ नैणी बिरहु देखा प्रभ सुआमी रसना नामु वखानी ॥ स्रवणी कीरतनु सुनउ दिनु राती हिरदै हरि हरि
 भानी ॥ ३ ॥ पँच जना गुरि वसगति आणे तउ उनमनि नामि लगानी ॥ जन नानक हरि किरपा धारी हरि रामै नामि समानी
 ॥ ४ ॥ ५ ॥ सारग महला ४ जपि मनि राम नामु पढु सारु ॥ राम नाम बिनु थिरु नहीं कोई होरु निहफल सभु बिसथारु ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ किआ लीजै किआ तजीरे बउरे जो दीसै सो छारु ॥ जिस्नु बिखिआ कउ तूमह अपुनी करि जानहु सा छाडि जाहु
 सिरि भारु ॥ १ ॥ तिलु तिलु पलु पलु अउध फुनि घाटै बूझि न सकै गावारु ॥ सो किछु करै जि साथि न चालै इहु साकत का
 आचारु ॥ २ ॥ संत जना कै सँगि मिलु बउरे तउ पावहि मोख दुआरु ॥ बिनु सतसँग सुखु किनै न पाइआ जाइ पूछहु बेद
 बीचारु ॥ ३ ॥ राणा राउ सभै कोऊ चालै झूठ छोडि जाइ पासारु ॥ नानक संत सदा थिरु निहचलु जिन राम नामु आधारु
 ॥ ४ ॥ ६ ॥

सारग महला ४ घरु ३ दुपदा १९ शितिगुर प्रसादि ॥

काहे पूत झगरत हउ सँगि बाप ॥ जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस्नु धन का तुम गरबु
 करत हउ सो धनु किसहि न आप ॥ खिन महि छोडि जाइ बिखिआ रसु तउ लागै पछुताप ॥ १ ॥ जो तुमरे प्रभ होते सुआमी
 हरि तिन के जापहु जाप ॥ उपदेसु करत नानक जन तुम कउ जउ सुनहु तउ जाइ संताप ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

सारग महला ४ घरु ५ दुपदे पड़ताल १९ शितिगुर प्रसादि ॥

जपि मन जगँनाथ जगदीसरो जगजीवनो मनमोहन सिउ प्रीति लागी मै हरि हरि हरि टेक सभ दिनसु सभ राति ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ हरि की उपमा अनिक अनिक अनिक गुन गावत सुक नारद ब्रहमादिक तव गुन सुआमी गनिन न जाति ॥ तू हरि बेअँतु तू
 हरि बेअँतु तू हरि सुआमी तू आपे ही जानहि आपनी भांति ॥ १ ॥ हरि कै निकटि निकटि हरि निकट ही बसते ते हरि के जन
 साधू

हरि भगात ॥ ते हरि के जन हरि सिउ रलि मिले जैसे जन नानक सललै सलल मिलाति ॥ २ ॥ १ ॥ ८ ॥ सारंग महला
४ ॥ जपि मन नरहरे नरहर सुआमी हरि सगल देव देवा श्री राम राम नामा हरि प्रीतमु मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु ग्रिहि
गुन गावते हरि के गुन गावते राम गुन गावते तितु ग्रिहि वाजे पँच सबद वड भाग मथोरा ॥ तिन्ह जन के सभि पाप गए
सभि दोख गए सभि रोग गए कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु गए तिन्ह जनके हरि मारि कटे पँच चोरा ॥ १ ॥ हरि राम
बोलहु हरि साधू हरि के जन साधू जगदीसु जपहु मनि बचनि करमि हरि हरि आराधू हरि के जन साधू ॥ हरि राम बोलि हरि
राम बोलि सभि पापि गवाधू ॥ नित नित जागरणु करहु सदा सदा आनँदु जपि जगदीसोरा ॥ मन इछे फल पावहु सभै फल
पावहु धरमु अरथु काम मोखु जन नानक हरि सिउ मिले हरि भगत तोरा ॥ २ ॥ २ ॥ ९ ॥ सारंग महला ४ ॥ जपि मन
माधो मधुसूदनो हरि श्रीरंगो परमेसुरो सति परमेसरो प्रभु अंतरजामी ॥ सभ दूखन को हँता सभ सूखन को दाता हरि प्रीतम
गुन गाओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि घटि घटे घटि बसता हरि जलि थले हरि बसता हरि थान थानंतरि बसता मै हरि देखन को
चाओ ॥ कोई आवै संतो हरि का जनु संतो मेरा प्रीतम जनु संतो मोहि मारगु दिखलावै ॥ तिसु जन के हउ मलि मलि धोवा
पाओ ॥ १ ॥ हरि जन कउ हरि मिलिआ हरि सरधा ते मिलिआ गुरुमुखि हरि मिलिआ ॥ मेरै मनि तनि आनँद भए मै
देखिआ हरि राओ ॥ जन नानक कउ किरपा भई हरि की किरपा भई जगदीसुर किरपा भई ॥ मै अनदिनो सद सद सदा हरि
जपिआ हरि नाओ ॥ २ ॥ ३ ॥ १० ॥ सारंग महला ४ ॥ जपि मन निरभउ ॥ सति सति सदा सति ॥ निरवैरु अकाल
मूरति ॥ आजूनी संभउ ॥ मेरे मन अनदिनो धिआइ निरँकारु निराहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि दरसन कउ हरि दरसन कउ
कोटि कोटि तेतीस सिध जती जोगी तट तीरथ परभवन करत रहत निराहारी ॥ तिन जन की सेवा थाइ पई जिन्ह कउ
किरपाल होवतु बनवारी ॥ १ ॥ हरि के हो संत भले ते ऊतम भगत भले जो भावत हरि राम मुरारी ॥ जिन्ह का

अँगु करै मेरा सुआमी तिन्ह की नानक हरि पैज सवारी ॥ २ ॥ ४ ॥ ११ ॥ सारंग महला ४ पड़ताल ॥ जपि मन
 गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु सभ स्रिसटि का प्रभो मेरे मन हरि बोलि हरि पुरखु अबिनासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि
 का नामु अँमितु हरि हरि हरे सो पीरे जिसु रामु पिआसी ॥ हरि आपि दइआलु दइआ करि मेलै जिसु सतिगुरु सो
 जनु हरि हरि अँमित नामु चखासी ॥ १ ॥ जो जन सेवहि सद सदा मेरा हरि हरे तिन का सभु दूरु भरु भउ जासी
 ॥ जनु नानकु नामु लए तां जीवै जिउ चात्रिकु जलि पीरे त्रिपतासी ॥ २ ॥ ५ ॥ १२ ॥ सारंग महला ४ ॥ जपि
 मनि सिरी रामु ॥ राम रमत रामु ॥ सति सति रामु ॥ बोलहु भईआ सद राम रामु रामु रवि रहिआ सरबगे ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ रामु आपे आपि आपे सभु करता रामु आपे आपि आपि सभतु जगे ॥ जिसु आपि क्रिपा करे मेरा राम राम
 राम राइ सो जनु राम नाम लिव लागे ॥ १ ॥ राम नाम की उपमा देखहु हरि संतहु जो भगत जनां की पति राखै
 विचि कलिजुग अगे ॥ जन नानक का अँगु कीआ मेरै राम राइ दुसमन दूरु गए सभि भगे ॥ २ ॥ ६ ॥ १३ ॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु १ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर मूरति कउ बलि जाउ ॥ अंतरि पिआस चात्रिक जिउ जल की सफल दरसनु कदि पाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 अनाथा को नाथु सरब प्रतिपालकु भगति वछलु हरि नाउ ॥ जा कउ कोइ न राखै प्राणी तिसु तू देहि असराउ ॥ १
 ॥ निधरिआ धर निगतिआ गति निथाविआ तू थाउ ॥ दह दिस जाउ तहां तू संगे तेरी कीरति करम कमाउ ॥ २
 ॥ एकसु ते लाख लाख ते एका तेरी गति मिति कहि न सकाउ ॥ तू बेअंतु तेरी मिति नही पाईए सभु तेरो खेलु
 दिखाउ ॥ ३ ॥ साधन का सँगु साध सिउ गोसटि हरि साधन सिउ लिव लाउ ॥ जन नानक पाइआ है गुरमति हरि
 देहु दरसु मनि चाउ ॥ ४ ॥ १ ॥ सारंग महला ५ ॥ हरि जीउ अंतरजामी जान ॥ करत बुराई मानुख ते छपाई
 साखी भूत पवान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैसनौ नामु करत खट करमा अंतरि लोभ जूठान ॥ संत सभा

की निँदा करते डुबे सभ अगिआन ॥ १ ॥ करहि सोम पाकु हिरहि पद दरबा अँतरिं झूठ गुमान ॥ सासत्र बेद की बिधि नही
 जाणहि बिआपे मन कै मान ॥ २ ॥ सँधिआ काल करहि सभिं वरता जिउ सफरी दँफान ॥ प्रभू भुलाए ऊझड़िं पाए निहफल
 सभिं करमान ॥ ३ ॥ सो गिआनी सो बैसनौ पढ़िआ जिसु करी क्रिपा भगवान ॥ ओनि सतिगुरु सेवि परम पद पाइआ
 उधरिआ सगल बिस्वान ॥ ४ ॥ किआ हम कथह किछु कथि नही जाणह प्रभ भावै तिवै बोलान ॥ साधसँगति की धूरिं इक
 मांगउ जन नानक पइओ सरान ॥ ५ ॥ २ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो नाचनो रहो ॥ लालु रगीला सहजे पाइओ
 सतिगुर बचनि लहो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुआर कँनिआ जैसे सँगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो ॥ जउ सुरिजनु ग्रिह
 भीतरि आइओ तब मुखु काजिं लजो ॥ १ ॥ जिउ कनिको कोठारी चड़िओ कबरो होत फिरो ॥ जब ते सुध भए है बारहि
 तब ते थान थिरो ॥ २ ॥ जउ दिनु रैन तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो ॥ बजावनहारो ऊठि सिधारिओ तब फिरिं बाजु न
 भइओ ॥ ३ ॥ जैसे कुँभ उदक पूरिं आनिओ तब ओहु भिँन द्रिसटो ॥ कहु नानक कुँभु जलै महि डारिओ अँभै अँभ मिलो ॥
 ४ ॥ ३ ॥ सारग महला ५ ॥ अब पूछे किआ कहा ॥ लैनो नामु अँमित रसु नीको बावर बिखु सिउ गहिं रहा ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ दुलभ जनमु चिरँकाल पाइओ जातउ कउडी बदलहा ॥ काथूरी को गाहकु आइओ लादिओ कालर बिख जिहवा ॥ १
 ॥ आइओ लाभु लाभन कै ताई मोहनि ठागउरी सिउ उलझिं पहा ॥ काच बादरै लालु खोई है फिरिं इहु अउसरु कदिं लहा ॥
 २ ॥ सगल पराध एकु गुणु नही ठाकुरु छोडह दासि भजहा ॥ आई मसटि जड़वत की निआई जिउ तसकरु दरिं सांनिहहा
 ॥ ३ ॥ आन उपाउ न कोऊ सूझै हरि दासा सरणी परि रहा ॥ कहु नानक तब ही मन छुटीऐ जउ सगले अउगन मेटिं धरहा
 ॥ ४ ॥ ४ ॥ सारग महला ५ ॥ माई धीरि रही प्रिअ बहुतु बिरागिओ ॥ अनिक भांति आनूप रँग रे तिन्ह सिउ रुचै न
 लागिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निसि बासुर प्रिअ प्रिअ मुखिं टेउ नीं द पलक नही जागिओ ॥ हार कजर

बसत्र अनिक सीगार रे बिनु पिर सभै बिखु लागिओ ॥ १ ॥ पूछउ पूछउ दीन भांति करि कोऊ कहै प्रिअ देसांगिओ ॥ हींओ
 देंउ सभु मनु तनु अरपउ सीसु चरण परि राखिओ ॥ २ ॥ चरण बँदना अमोल दासरो देंउ साधसंगति अरदांगिओ ॥ करहु
 क्रिपा मोहि प्रभू मिलावहु निमख दरसु पेखांगिओ ॥ ३ ॥ द्रिसटि भई तब भीतरि आइओ मेरा मनु अनदिनु सीतलांगिओ
 ॥ कहु नानक रसि मंगल गाए सबदु अनाहदु बाजिओ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सारग महला ५ ॥ माई सति सति सति हरि सति सति
 सति साधा ॥ बचनु गुरु जो पूरै कहिओ मै छीकि गांठरी बाधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि
 ससीअर बेनाधा ॥ गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध बचन अटलाधा ॥ १ ॥ अँड बिनासी जेर बिनासी उतभुज
 सेत बिनाधा ॥ चारि बिनासी खटहि बिनासी इकि साध बचन निहचलाधा ॥ २ ॥ राज बिनासी ताम बिनासी सातकु भी
 बेनाधा ॥ द्रिसटिमान है सगल बिनासी इकि साध बचन आगाधा ॥ ३ ॥ आपे आपि आप ही आपे सभु आपन खेलु
 दिखाधा ॥ पाइओ न जाई कही भांति रे प्रभु नानक गुर मिलि लाधा ॥ ४ ॥ ६ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि बासिबो गुर
 गोबिंद ॥ जहां सिमरनु भइओ है ठाकुर तहां नगर सुख आनंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जहां बीसरै ठाकुरु पिआरो तहां दूख सभ
 आपद ॥ जह गुन गाइ आनंद मंगल रूप तहां सदा सुख संपद ॥ १ ॥ जहा खवन हरि कथा न सुनीऐ तह महा भइआन
 उदिआनद ॥ जहां कीरतनु साधसंगति रसु तह सघन बास फलानद ॥ २ ॥ बिनु सिमरन कोटि बरख जीवै सगली अउध
 ब्रिथानद ॥ एक निमख गोबिंद भजनु करि तउ सदा सदा जीवानद ॥ ३ ॥ सरनि सरनि सरनि प्रभ पावउ दीजै साधसंगति
 किरपानद ॥ नानक पूरि रहिओ है सरब मै सगल गुणा बिधि जानद ॥ ४ ॥ ७ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि राम
 भरोसउ पाए ॥ जो जो सरणि परिओ करुणानिधि ते ते भवहि तराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखि सोइओ अरु सहजि समाइओ
 सहसा गुरहि गवाए ॥ जो चाहत सोई हरि कीओ मन बांछत फल पाए ॥ १ ॥ हिरदै जपउ नेत्र धिआनु लावउ खवनी

कथा सुनाए ॥ चरणी चलए मारगि ठाकुर कै रसना हरि गुण गाए ॥ २ ॥ देखिओ द्रिसटि सरब मंगल रूप उलटी संत
 कराए ॥ पाइओ लालु अमोलु नामु हरि छोडि न कतहू जाए ॥ ३ ॥ कवन उपमा कउन बडाई किआ गुन कहउ रिझाए ॥
 होत क्रिपाल दिन दइआ प्रभ जन नानक दास दसाए ॥ ४ ॥ ८ ॥ सारग महला ५ ॥ ओइ सुख का सिउ बरनि सुनावत
 ॥ अनद बिनोद पेखि प्रभ दरसन मनि मंगल गुन गावत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसम भई पेखि बिसमादी पूरि रहे किरपावत ॥
 पीओ अँमित नामु अमोलक जिउ चाखि गूंगा मुसकावत ॥ १ ॥ जैसे पवनु बंध करि राखिओ बूझ न आवत जावत ॥ जा
 कउ रिदै प्रगासु भइओ हरि उआ की कही न जाइ कहावत ॥ २ ॥ आन उपाव जेते किछु कहीअहि तेते सीखे पावत ॥
 अचिंत लालु ग्रिह भीतरि प्रगटिओ अगम जैसे परखावत ॥ ३ ॥ निरगुण निरँकार अबिनासी अतुलो तुलिओ न जावत ॥
 कहु नानक अजरु जिनि जरिआ तिस ही कउ बनि आवत ॥ ४ ॥ ९ ॥ सारग महला ५ ॥ बिखई दिनु रैनि इव ही गुदारै
 ॥ गोबिंदु न भजै अहँबुधि माता जनमु जूरे जीउ हरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु अमोला प्रीति न तिस सिउ पर निँदा हितकारै
 ॥ छापरु बांधि सवारै त्रिण को दुआरै पावकु जारै ॥ १ ॥ कालर पोट उठावै मूँडहि अँमितु मन ते डारै ॥ ओढै बसत्र
 काजर महि परिआ बहुरि बहुरि फिरि झारै ॥ २ ॥ काटै पेडु डाल परि ठाढौ खाइ काइ मुसकारै ॥ गिरिओ जाइ रसातलि
 परिओ छिटी छिटी सिर भारै ॥ ३ ॥ निरवैरै सँगि वैरु रचाए पहुचि न सकै गवारै ॥ कहु नानक संतन का राखा पारब्रहमु
 निरँकारै ॥ ४ ॥ १० ॥ सारग महला ५ ॥ अवरि सभि भूले भ्रमत न जानिआ ॥ एकु सुधाखरु जा कै हिरदै वसिआ तिनि
 बेदहि ततु पछानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परविरति मारगु जेता किछु होईऐ तेता लोग पचारा ॥ जउ लउ रिदै नही परगासा
 तउ लउ अँध अँधारा ॥ १ ॥ जैसे धरती साथै बहु बिधि बिनु बीजै नही जाँमै ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई है तुटै नाही
 अभिमानै ॥ २ ॥ नीरु बिलोवै अति स्रमु पावै नैनू कैसे रीसै ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न काहू मिलत नही जगदीसै

॥ ३ ॥ खोजत खोजत इहै बीचारिओ सरब सुखा हरि नाम ॥ कहु नानक तिसु भइओ परापति जा कै लेखु मथामा ॥ ४ ॥
 ११ ॥ सारग महला ५ ॥ अनदिनु राम के गुण कहीऐ ॥ सगल पदारथ सरब सूख सिधि मन बांछत फल लहीऐ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ आवहु संत प्रान सुखदाते सिमरह प्रभु अबिनासी ॥ अनाथहु नाथु दिन दुख भँजन पूरि रहिओ घट वासी ॥ १ ॥
 गावत सुनत सुनावत सरधा हरि रसु पी वडभागे ॥ कलि कलेस मिटे सभि तन ते राम नाम लिव जागे ॥ २ ॥ कामु क्रोधु झूठु
 तजि निँदा हरि सिमरनि बँधन तूटे ॥ मोह मगन अहँ अँध ममता गुर किरपा ते छूटे ॥ ३ ॥ तू समरथु पारब्रहम सुआमी करि
 किरपा जनु तेरा ॥ पूरि रहिओ सरब महि ठाकुरु नानक सो प्रभु नेरा ॥ ४ ॥ १२ ॥ सारग महला ५ ॥ बलिहारी गुरदेव
 चरन ॥ जा कै सँगि पारब्रहमु धिआईऐ उपदेसु हमारी गति करन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूख रोग भै सगन बिनासे जो आवै हरि
 संत सरन ॥ आपि जपै अवरह नामु जपावै वड समरथ तारन तरन ॥ १ ॥ जा को मँत्रु उतारै सहसा ऊणे कउ सुभर भरन ॥
 हरि दासन की आगिआ मानत ते नाही फुनि गरभ परन ॥ २ ॥ भगतन की टहल कमावत गावत दुख काटे ता के जनम मरन
 ॥ जा कउ भइओ क्रिपालु बीठुला तिनि हरि हरि अजर जरन ॥ ३ ॥ हरि रसहि अघाने सहजि समाने मुख ते नाही जात बरन
 ॥ गुर प्रसादि नानक संतोखे नामु प्रभू जपि जपि उधरन ॥ ४ ॥ १३ ॥ सारग महला ५ ॥ गाइओ शी मै गुण निधि मँगल
 गाइओ ॥ भले संजोग भले दिन अउसर जउ गोपालु शीझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह चरन मोरलो माथा ॥ हमरै मसतकि
 संत धरे हाथा ॥ १ ॥ साधह मँत्रु मोरलो मनूआ ॥ ता ते गतु होए त्रै गुनीआ ॥ २ ॥ भगतह दरसु देखि नैन रँगा ॥ लोभ
 मोह तूटे भ्रम सँगा ॥ ३ ॥ कहु नानक सुख सहज अनँदा ॥ खोलि भीति मिले परमानँदा ॥ ४ ॥ १४ ॥

सारग महला ५ घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

कैसे कहउ मोहि जीअ बेदनाई ॥ दरसन पिआस प्रिअ प्रीति मनोहर

मनु न रहै बहु बिधि उमकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चितवनि चितवउ प्रिअ प्रीति बैरागी कदि पावउ हरि दरसाई ॥ जतन
करउ इहु मनु नही धीरै कोऊ है रे सँतु मिलाई ॥ १ ॥ जप तप सँजम पुँन सभि होमउ तिसु अरपउ सभि सुख जाई ॥
एक निमख प्रिअ दरसु दिखावै तिसु सँतन कै बलि जाई ॥ २ ॥ करउ निहोरा बहुतु बेनती सेवउ दिनु रैनाई ॥ मानु
अभिमानु हउ सगल तिआगउ जो प्रिअ बात सुनाई ॥ ३ ॥ देखि चरित्र भई हउ बिसमनि गुरि सतिगुरि पुरखि
मिलाई ॥ प्रभ रँग दइअल मोहि छिह महि पाइआ जन नानक तपति बुझाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ सारग महला ५ ॥
रे मूढे तू किउ सिमरत अब नाही ॥ नरक घोर महि उरध तपु करता निमख निमख गुण गांही ॥ १ ॥ रहाउ ॥
अनिक जनम भ्रमतौ ही आइओ मानस जनमु दुलभाही ॥ गरभ जोनि छोडि जउ निकसिओ तउ लागो अन ठांही ॥
१ ॥ करहि बुराई ठगाई दिनु रैनि निहफल करम कमाही ॥ कणु नाही तुह गाहण लागे धाइ धाइ दुख पांही ॥ २ ॥
मिथिआ सँगि कूडि लपटाइओ उरझि परिओ कुसमांही ॥ धरम राइ जब पकरसि बवरे तउ काल मुखा उठि जाही ॥ ३
॥ सो मिलिआ जो प्रभू मिलाइआ जिसु मसतकि लेखु लिखांही ॥ कहु नानक तिन जन बलिहारी जो अलिप रहे मन
मांही ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ सारग महला ५ ॥ किउ जीवनु प्रीतम बिनु माई ॥ जा के बिछुरत होत मिरतका छिह
महि रहनु न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ हीं अ प्रान को दाता जा कै सँगि सुहाई ॥ करहु क्रिपा सँतहु मोहि अपुनी
प्रभ मँगल गुण गाई ॥ १ ॥ चरन सँतन के माथे मेरे ऊपरि नैनहु धूरि बांछाई. ॥ जिह प्रसादि मिलिऐ प्रभ नानक
बलि बलि ता कै हउ जाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १७ ॥ सारग महला ५ ॥ उआ अउसर कै हउ बलि जाई ॥ आठ पहर
अपना प्रभु सिमरनु वडभागी हरि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भलो कबीरु दासु दासन को ऊतमु सैनु जनु नाई ॥ ऊछ ते
ऊच नामदेउ समदरसी रविदास ठाकुर बणि आई ॥ १ ॥ जीउ पिँडु तनु धनु साधन का इहु मनु सँत रेनाई ॥

संत प्रतापि भ्रम सभिं नासे नानक मिले गुसाई ॥ २ ॥ ४ ॥ १८ ॥ सारग महला ५ ॥ मनोरथ पूरे सतिगुर आपि ॥
 सगल पदारथ सिमरनि जा कै आठ पहर मेरे मन जापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँमित नामु सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही
 त्रिपतास ॥ जनम जनम के किलबिख नासहि आगै दरगह होइ खलास ॥ १ ॥ सरनि तुमारी आइओ करते पाख्रहम
 पूरन अबिनास ॥ करि किरपा तेरे चरन धिआवउ नानक मनि तनि दरस पिआस ॥ २ ॥ ५ ॥ १९ ॥

सारग महला ५ वरु ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मन कहा लुभाईऐ आन कउ ॥ ईत ऊत प्रभु सदा सहाई जीअ सँगि तेरे काम कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँमित नामु प्रिअ
 प्रीति मनोहर इहै अघावन पांन कउ ॥ अकाल मूरति है साध संतन की ठाहर नीकी धिआन कउ ॥ १ ॥ बाणी मँत्रु महा
 पुरखन की मनहि उतारन मांन कउ ॥ खोजि लहिओ नानक सुख थानां हरि नामा बिस्वाम कउ ॥ २ ॥ १ ॥ २० ॥
 सारग महला ५ ॥ मन सदा मँगल गोबिंद गाइ ॥ रोग सोग तेरे मिटहि सगल अघ निमख हीऐ हरि नामु धिआइ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई साधू सरणी जाइ पाइ ॥ जउ होइ क्रिपालु दीन दुख भँजन जम ते होवै धरम
 राइ ॥ १ ॥ एकस बिनु नाही को दूजा आन न बीओ लवै लाइ ॥ मात पिता भाई नानक को सुखदाता हरि प्रान साइ
 ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन सगल उधारे सँग के ॥ भए पुनीत पवित्र मन जनम जनम के दुख
 हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मारगि चले तिन्ही सुखु पाइआ जिन्ह सिउ गोसटि से तेरे ॥ बूडत घोर अँध कूप महि ते साधू
 सँगि पारि परे ॥ १ ॥ जिन्ह के भाग बडे है भाई तिन्ह साधू सँगि मुख जुरे ॥ तिन्ह की धूरि बाँछै नित नानकु प्रभु मेरा
 किरपा करे ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन राम राम राम धिआंए ॥ एक पलक सुख साध समागम
 कोटि बैकुँठह पांए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ देह जपि हेत पुनीता जम की त्रास निवारै ॥ महा पतित के पातिक उतरहि

हरि नामा उरि धारै ॥ १ ॥ जो जो सुनै राम जसु निरमल ता का जनम मरण दुखु नासा ॥ कहु नानक पाईए वडभागीं,
मन तन होइ बिगासा ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥

सारंग महला ५ दुपदे घरु ४ १९ शितिगुर प्रसादि ॥

मोहन घरि आवहु करउ जोदरीआ ॥ मानु करउ अभिमानै बोलउ भूल चूक तेरी प्रिअ चिरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटि
सुनउ अरु पेखउ नाही भरमि भरमि दुख भरीआ ॥ होइ क्रिपाल गुर लाहि पारदो मिलउ लाल मनु हरीआ ॥ १ ॥ एक
निमख जे बिसरै सुआमी जानउ कोटि दिनस लख बरीआ ॥ साधसंगति जी भीर जउ पाई तउ नानक हरि सँगि मिरीआ ॥
२ ॥ १ ॥ २४ ॥ सारंग महला ५ ॥ अब किआ सोचउ सोच बिसारी ॥ करणा सा सोई करि रहिआ देहि नाउ बलिहारी ॥
१ ॥ रहाउ ॥ चहु दिस फूलि रही बिखिआ बिखु गुर मँत्रु मूखि गरुडारी ॥ हाथ देइ राखिओ करि अपुना जिउ जल कमला
अलिधारी ॥ १ ॥ हउ नाही किछु मै किआ होसा सभ तुम ही कल धारी ॥ नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु सँत
सदकारी ॥ २ ॥ २ ॥ २५ ॥ सारंग महला ५ ॥ अब मोहि सरब उपाव बिकराते ॥ करण कारण समरथ सुआमी हरि
एकसु ते मेरी गाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखे नाना रूप बहु रँग अन नाही तुम भांते ॥ देंहि अधारु सरब कउ ठाकुर जीअ
पान सुखदाते ॥ १ ॥ भ्रमतौ भ्रमतौ हारि जउ परिओ तउ गुर मिलि चरन पराते ॥ कहु नानक मै सरब सुखु पाइआ इह
सूखि बिहानी राते ॥ २ ॥ ३ ॥ २६ ॥ सारंग महला ५ ॥ अब मोहि लबधिओ है हरि टेका ॥ गुर दइआल भए सुखदाई
अँधुलै माणिकु देखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काटे अगिआन तिमर निरमलीआ बुधि बिगास बिबेका ॥ जिउ जल तरँग फेनु जल
होई है सेवक ठाकुर भए एका ॥ १ ॥ जह ते उठिओ तह ही आइओ सभ ही एकै एका ॥ नानक द्रिसटि आइओ सब ठाई
प्राणपती हरि मसका ॥ २ ॥ ४ ॥ २७ ॥ सारंग महला ५ ॥ मेरा मनु एकै ही प्रिअ मांगै ॥ पेखि आइओ सरब

थान देस प्रिअ रोम न समसरि लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै नीरे अनिक भोजन बहु बिंजन तिन सिउ द्रिसटि न करै रुचांगै ॥ हरि रसु चाहै प्रिअ प्रिअ मुखि टेरै जिउ अलि कमला लोभांगै ॥ १ ॥ गुण निधान मनमोहन लालन सुखदाई सरबांगै ॥ गुरि नानक प्रभ पाहि पठाइओ मिलहु सखा गलि लागै ॥ २ ॥ ७ ॥ २८ ॥ सारग महला ७ ॥ अब मेरो ठाकुर सिउ मनु मानां ॥ साध क्रिपाल दइआल भए है इहु छेदिओ दुसटु बिगाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही सँदर तुमहि सिआने तुम ही सुघर सुजाना ॥ सगल जोग अरु गिआन धिआन इक निमख न कीमति जानां ॥ १ ॥ तुम ही नाइक तुम्हहि छत्रपति तुम पूरि रहे भगवाना ॥ पावउ दानु सँत सेवा हरि नानक सद कुरबानां ॥ २ ॥ ६ ॥ २९ ॥ सारग महला ७ ॥ मेरै मनि चीति आए प्रिअ रंगा ॥ बिसरिओ धँधु बँधु माइआ को रजनि सबाई जंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि सेवउ हरि रिदै बसावउ हरि पाइआ सतसंगा ॥ ऐसो मिलिओ मनोहरु प्रीतमु सुख पाए मुख मंगा ॥ १ ॥ प्रिउ अपना गुरि बसि करि दीना भोगउ भोग निसंगा ॥ निरभउ भए नानक भउ मिटिआ हरि पाइओ पाठंगा ॥ २ ॥ ७ ॥ ३० ॥ सारग महला ७ ॥ हरि जीउ के दरसन कउ कुरबानी ॥ बचन नाद मेरे खवनहु पूरे देहा प्रिअ अँकि समानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छूटहि ते गुरि कीई सोहागनि हरि पाइओ सुघड़ सुजानी ॥ जिह घर महि बैसनु नहीं पावत सो थानु मिलिओ बासानी ॥ १ ॥ उन्ह कै बसि आइओ भगति बछलु जिनि राखी आन सँतानी ॥ कहु नानक हरि सँगि मनु मानिआ सभ चूकी काणि लोकानी ॥ २ ॥ ८ ॥ ३१ ॥ सारग महला ७ ॥ अब मेरो पँचा ते सँगु तूटा ॥ दरसनु देखि भए मनि आनद गुर किरपा ते छूटा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखम थान बहुत बहु धरीआ अनिक राख सूरूटा ॥ बिखम गार्ह करु पहुचै नाही सँत सानथ भए लूटा ॥ १ ॥ बहुतु खजाने मेरै पालै परिआ अमोल लाल आखूटा ॥ जन नानक प्रभि किरपा धारी तउ मन महि हरि रसु घूटा ॥ २ ॥ ९ ॥ ३२ ॥ सारग महला ७ ॥ अब मेरो ठाकुर सिउ मनु लीना ॥

प्रान दानु गुरि पूरै दीआ उरझाइओ जिउ जल मीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर इह अरपि सगल दानु
 कीना ॥ मंत्रु द्विड़ाइ हरि अउखधु गुरि दीओ तउ मिलिओ सगल प्रबीना ॥ १ ॥ ग्रिहु तेरा तू ठाकुरु मेरा गुरि हउ खोई प्रभु
 दीना ॥ कहु नानक मै सहज घरु पाइआ हरि भगति भँडार खजीना ॥ २ ॥ १० ॥ ३३ ॥ सारग महला ५ ॥ मोहन
 सभि जीअ तेरे तू तारहि ॥ छुटहि संघार निमख किरपा ते कोटि ब्रहमँड उधारहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करहि अरदासि बहुतु
 बेनँती निमख निमख साम्हारहि ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भँजन हाथ देइ निसतारहि ॥ १ ॥ किआ ए भूपति बपुरे
 कहीअहि कहु ए किस नो मारहि ॥ राखु राखु राखु सुखदाते सभु नानक जगतु तुम्हारहि ॥ २ ॥ ११ ॥ ३४ ॥ सारग
 महला ५ ॥ अब मोहि धनु पाइओ हरि नामा ॥ भए अचिँत त्रिसन सभ बुझी है इहु लिखिओ लेखु मथामा ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ खोजत खोजत भइओ बैरागी फिरि आइओ देह गिरामा ॥ गुरि क्रिपाल सउदा इहु जोरिओ हथि चरिओ लालु अगामा
 ॥ १ ॥ आन बापार बनज जो करीअहि तेते दूख सहामा ॥ गोबिद भजन के निरमै वापारी हरि रासि नानक राम नामा ॥
 २ ॥ १२ ॥ ३५ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि मिसट लगे प्रिअ बोला ॥ गुरि बाह पकरि प्रभ सेवा लाए सद दइआलु हरि
 ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ तू ठाकुरु सरब प्रतिपालकु मोहि कलत्र सहित सभि गोला ॥ माणु ताणु सभु तूहै तूहै इकु नामु
 तेरा मै ओल्हा ॥ १ ॥ जे तराति बैसालहि तउ दास तुम्हारे घासु बढावहि केतक बोला ॥ जन नानक के प्रभ पुरख बिधाते
 मेरे ठाकुर अगह अतोला ॥ २ ॥ १३ ॥ ३६ ॥ सारग महला ५ ॥ रसना राम कहत गुण सोहँ ॥ एक निमख ओपाइ
 समावै देखि चरित मन मोहँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु सुणिये मनि होइ रहसु अति रिदै मान दुख जोहँ ॥ सुखु पाइओ दुखु
 दूरि पराइओ बणि आई प्रभ तोहँ ॥ १ ॥ किलविख गए मन निरमल होई है गुरि काढे माइआ द्रोहँ ॥ कहु नानक मै सो प्रभु
 पाइआ करण कारण समरथोहँ ॥ २ ॥ १४ ॥ ३७ ॥ सारग महला ५ ॥ नैनहु देखिओ चलतु तमासा ॥ सभ हू दूरि

सभ हू ते नैरै अगम अगम घट वासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अभूलु न भूलै लिखिओ न चलावै मता न करै पचासा ॥ खिन महि
 साजि सवारि बिनाहै भगति वछल गुणतासा ॥ १ ॥ अंध कूप महि दीपकु बलिओ गुरि रिदै कीओ परगासा ॥ कहु
 नानक दरसु पेखि सुखु पाइआ सभ पूरन होई आसा ॥ २ ॥ १५ ॥ ३८ ॥ सारग महला ५ ॥ चरनह गोबिंद मारगु
 सुहावा ॥ आन मारगु जेता किछु धाईऐ तेतो ही दुखु हावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे हसत पुनीत
 टहलावा ॥ रिदा पुनीत रिदै हरि बसिओ मसत पुनीत संत धूरावा ॥ १ ॥ सरब निधान नामि हरि हरि कै जिसु करमि
 लिखिआ तिनि पावा ॥ जन नानक कउ गुर पूरा भेटिओ सुखि सहजे अनद बिहावा ॥ २ ॥ १६ ॥ ३९ ॥ सारग
 महला ५ ॥ धिआइओ अँति बार नामु सरवा ॥ जह मात पिता सुत भाई न पहुचै तहा तहा तूरखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंध
 कूप ग्रिह महि तिनि सिमरिओ जिसु मसतकि लेखु लिखा ॥ खूलहे बंधन मुकति गुरि कीनी सभ तूहै तुही दिखा ॥ १ ॥
 अँमित नामु पीआ मनु त्रिपतिआ आघाए रसन चखा ॥ कहु नानक सुख सहजु मै पाइआ गुरि लाही सगल तिखा ॥ २
 ॥ १७ ॥ ४० ॥ सारग महला ५ ॥ गुर मिलि ऐसे प्रभू धिआइआ ॥ भइओ क्रिपालु दइआलु दुख भँजनु लगै न ताती
 बाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते सास सास हम लेते तेते ही गुण गाइआ ॥ निमख न बिछुरै घरी न बिसरै सद संगे जत
 जाइआ ॥ १ ॥ हउ बलि बलि बलि बलि चरन कमल कउ बलि बलि गुर दरसाइआ ॥ कहु नानक काहू परवाहा जउ सुख
 सागरु मै पाइआ ॥ २ ॥ १८ ॥ ४१ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि सबदु लगो गुर मीठा ॥ खुलिहो करमु भइओ
 परगासा घटि घटि हरि हरि डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहम आजोनी संभउ सरब थान घट बीठा ॥ भइओ परापति
 अँमित नामा बलि बलि प्रभ चरणीठा ॥ १ ॥ सतसंगति की रेणु मुखि लागी कीए सगल तीरथ मजनीठा ॥ कहु नानक
 रँगि चलूल भए है हरि रँगु न लहै मजीठा ॥ २ ॥ १९ ॥ ४२ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरि नामु दीओ गुरि साथे ॥

निमख बचनु प्रभ हीअरै बसिओ सगल भूख मेरी लाथे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा निधान गुण नाइक ठाकुर सुख समूह सभ
 नाथे ॥ एक आस मोहि तेरी सुआमी अउर दुतीआ आस बिराथे ॥ १ ॥ नैण त्रिपतासे देखि दरवासा गुरि कर धारे मेरै
 माथे ॥ कहु नानक मै अतुल सुखु पाइआ जनम मरण भै लाथे ॥ २ ॥ २० ॥ ४३ ॥ सारग महला ५ ॥ रे मूढ़े आन
 काहे कत जाई ॥ सँगि मनोहरु अँप्रितु है रे भूलि भूलि बिखु खाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ सुँदर चतुर अनूप बिधाते तिस
 सिउ रुच नही राई ॥ मोहनि सिउ बावर मनु मोहिओ झूठि ठगउरी पाई ॥ १ ॥ भइओ दइआलु क्रिपालु दुख हरता सँतन
 सिउ बनि आई ॥ सगल निधान घरै महि पाए कहु नानक जोति समाई ॥ २ ॥ २१ ॥ ४४ ॥ सारग महला ५ ॥ ओअँ
 प्रिअ प्रीति चीति पहिलरीआ ॥ जो तउ बचनु दीओ मेरे सतिगुर तउ मै साज सीगरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम भूलह तुम
 सदा अभूला हम पतित तुम पतित उधरीआ ॥ हम नीच बिरख तुम मैलागर लाज सँगि सँगि बसरीआ ॥ १ ॥ तुम गँभीर
 धीर उपकारी हम किआ बपुरे जँतरीआ ॥ गुर क्रिपाल नानक हरि मेलिओ तउ मेरी सूखि सेजरीआ ॥ २ ॥ २२ ॥ ४५
 ॥ सारग महला ५ ॥ मन ओइ दिनस धँनि परवानां ॥ सफल ते घरी सँजोग सुहावे सतिगुर सँगि गिआनां ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ धँनि सुभाग धँनि सोहागा धँनि देत जिनि मानां ॥ इहु तनु तुम्हरा सभु छिहु धनु तुमरा हींउ कीओ करबानां ॥ १
 ॥ कोटि लाख राज सुख पाए इक निमख पेखि द्रिसटानां ॥ जउ कहहु मुखहु सेवक इह बैसीरे सुख नानक अँत न जानां
 ॥ २ ॥ २३ ॥ ४६ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो सहसा दूखु गइआ ॥ अउर उपाव सगल तिआगि छोडे सतिगुर
 सरणि पइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब सिधि कारज सभि सवरे अहँ रोग सगल ही खइआ ॥ कोटि पराध खिन महि खउ
 भई है गुर मिलि हरि हरि कहिआ ॥ १ ॥ पँच दास गुरि वसगति कीने मन निहचल निरभइआ ॥ आइ न जावै न कत ही
 डोलै थिरु नानक राजइआ ॥ २ ॥ २४ ॥ ४७ ॥ सारग महला ५ ॥ प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई ॥

मनमोहनू मेरे जीअ को पिआरो कवन कहा गुन गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खेलिं खिलाइ लाड लाडावै सदा सदा अनदाई ॥
प्रतिपालै बारिक की निआई जैसे मात पिताई ॥ १ ॥ तिसु बिनु निमख नही रहि सकीऐ बिसरि न कबहू जाई ॥ कहु
नानक मिलिं संतसंगति ते मगन भए लिव लाई ॥ २ ॥ २५ ॥ ४८ ॥ सारग महला ५ ॥ अपना मीतु सुआमी गाईऐ ॥
आस न अवर काहू की कीजै सुखदाता प्रभु धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख मंगल कलिआण जिसहि घरि तिस ही सरणी
पाईऐ ॥ तिसहि तिआगि मानुखु जे सेवहु तउ लाज लोनु होइ जाईऐ ॥ १ ॥ एक ओट पकरी ठाकुर की गुर मिलि मति
बुधि पाईऐ ॥ गुण निधान नानक प्रभु मिलिआ सगल चुकी मुहताईऐ ॥ २ ॥ २६ ॥ ४९ ॥ सारग महला ५ ॥ ओट
सताणी प्रभ जीउ मेरै ॥ दिसटि न लिआवउ अवर काहू कउ माणि महति प्रभ तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि
अपुनै काढि लीआ बिखु घेरै ॥ अँमितु नामु अउखधु मुखि दीनो जाइ पइआ गुर परै ॥ १ ॥ कवन उपमा कहउ एक मुख
निरगुण के दातेरै ॥ काटि सिलक जउ अपुना कीनो नानक सूख घनेरै ॥ २ ॥ २७ ॥ ५० ॥ सारग महला ५ ॥ प्रभ
सिमरत दूख बिनासी ॥ भइओ क्रिपालु जीअ सुखदाता होई सगल पलासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवरु न कोऊ सूझै प्रभ
बिनु कहु को किसु पहि जासी ॥ जिउ जाणहु तिउ राखहु ठाकुर सभु किछु तुम ही पासी ॥ १ ॥ हाथ देइ राखे प्रभि अपुने
सद जीवन अबिनासी ॥ कहु नानक मनि अनदु भइआ है काटी जम की फासी ॥ २ ॥ २८ ॥ ५१ ॥ सारग महला ५ ॥
मेरो मनु जत कत तुझहिं सम्हारै ॥ हम बारिक दीन पिता प्रभ मेरे जिउ जानहि तिउ पारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब भूखौ तब
भोजनु मांगै अघाए सूख सघारै ॥ तब अरोग जब तुम सँगि बसतौ छुटकत होइ खारै ॥ १ ॥ कवन बसेरो दास दासन को
थापिउ थापनहारै ॥ नामु न बिसरै तब जीवनु पाईऐ बिनती नानक इह सारै ॥ २ ॥ २९ ॥ ५२ ॥ सारग महला ५ ॥
मन ते भै भउ दूरै पशइओ ॥ लाल दइआल गुलाल लाडिले सहजि सहजि गुन गाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर बचनाति

कमात क्रिपा ते बहुरि न कतहू धाइओ ॥ रहत उपाधि समाधि सुख आसन भगति वछलु ग्रिहि पाइओ ॥ १ ॥ नाद बिनोद
 कोड आनँदा सहजे सहजि समाइओ ॥ करना आपि करावन आपे कहु नानक आपि आपाइओ ॥ २ ॥ ३० ॥ ५३ ॥
 सारग महला ५ ॥ अँमित नामु मनहि आधारो ॥ जिनि दीआ तिसु कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूझी
 त्रिसना सहजि सुहेला कामु क्रोधु बिखु जारो ॥ आइ न जाइ बसै इह ठाहर जह आसनु निरँकारो ॥ १ ॥ एकै परगटु एकै
 गुपता एकै धुँधूकारो ॥ आदि मधि अँति प्रभु सोई कहु नानक साचु बीचारो ॥ २ ॥ ३१ ॥ ५४ ॥ सारग महला ५ ॥ बिनु
 प्रभ रहनु न जाइ घरी ॥ सरब सूख ताहू कै पूरन जा कै सुखु है हरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मँगल रूप प्रान जीवन धन सिमरत
 अनद घना ॥ वड समरथु सदा सद सँगे गुन रसना कवन भना ॥ १ ॥ थान पवित्रा मान पवित्रा पवित्र सुनन कहनहारे ॥
 कहु नानक ते भवन पवित्रा जा महि सँत तुम्हारे ॥ २ ॥ ३२ ॥ ५५ ॥ सारग महला ५ ॥ रसना जपती तुही तूही ॥ मात
 गरभ तुम ही प्रतिपालक प्रित मँडल इक तुही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमहि पिता तुम ही फुनि माता तुमहि मीत हित भ्राता ॥ तुम
 परवार तुमहि आधार तुमहि जीअ प्रानदाता ॥ १ ॥ तुमहि खजीना तुमहि जरीना तुम ही माणिक लाला ॥ तुमहि पारजात
 गुर ते पाए तउ नानक भए निहाला ॥ २ ॥ ३३ ॥ ५६ ॥ सारग महला ५ ॥ जाहू काहू अपुनो ही चिति आवै ॥ जो काहू
 को चैरो होवत ठाकुर ही पहि जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपने पहि दूख अपने पहि सूखा अपुने ही पहि बिरथा ॥ अपुने पहि
 मानु अपुने पहि ताना अपने ही पहि अरथा ॥ १ ॥ किनही राज जोबनु धन मिलखा किनही बाप महतारी ॥ सरब थोक
 नानक गुर पाए पूरन आस हमारी ॥ २ ॥ ३४ ॥ ५७ ॥ सारग महला ५ ॥ झुठो माइआ को मद मानु ॥ धोह मोह दूरि करि
 बपुरे सँगे गोपालहि जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ राज जोबन अरु उमरे मीर मलक अरु खान ॥ मिथिआ कापर सुगँध
 चतुराई मिथिआ भोजन पान ॥ १ ॥ दीन बँधरो दास दासरो सँतह की सारान ॥ मांगनि मांगउ होइ अचिँता मिलु नानक

के हरिं प्रान ॥ २ ॥ ३५ ॥ ५८ ॥ सारग महला ५ ॥ अपुनी इतनी कछू न सारी ॥ अनिक काज अनिक धावरता
 उरझिओ आन जँजारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिउस चारिं के दीसहि सँगी ऊहां नाही जह भारी ॥ तिन सिउ राचि माचि हितु
 लाइओ जो कामि नहीं गावारी ॥ १ ॥ हउ नाही नाही किछु मेरा ना हमरो बसु चारी ॥ करन करावन नानक के प्रभ सँतन
 सँगि उधारी ॥ २ ॥ ३६ ॥ ५९ ॥ सारग महला ५ ॥ मोहनी मोहत रहै न होरी ॥ साधिक सिध सगल की पिआरी तुटै न
 काहू तोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खटु सासत्र उचरत रसनागर तीरथ गवन न थोरी ॥ पूजा चक्र बरत नेम तपीआ ऊहा गैलि न
 छोरी ॥ १ ॥ अँध कूप महि पतित होत जगु सँतहु करहु परम गति मोरी ॥ साधसँगति नानकु भइओ मुकता दरसनु पेखत
 भोरी ॥ २ ॥ ३७ ॥ ६० ॥ सारग महला ५ ॥ कहा करहि रे खाटि खाटुली ॥ पवनि अफार तोर चामरो अति जजरी तेरी
 रे माटुली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊही ते हरिओ ऊहा ले धरिओ जैसे बासा मास देत झाटुली ॥ देवनहारु बिसारिओ अँधुले
 जिउ सफरी उदरु भरै बहि हाटुली ॥ १ ॥ साद बिकार बिकार झूठ रस जह जानो तह भीर बाटुली ॥ कहु नानक समझु रे
 इआने आजु कालिं खुलहै तेरी गांठुली ॥ २ ॥ ३८ ॥ ६१ ॥ सारग महला ५ ॥ गुर जीउ सँगि तुहरै जानिओ ॥ कोटि
 जोध उआ की बात न पुछीरे तां दरगह भी मानिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन मूलु प्राणी का कहीरे कवन रूपु द्रिसटानिओ
 ॥ जोति प्रगास भई माटी सँगि दुलभ देह बखानिओ ॥ १ ॥ तुम ते सेव तुम ते जप तापा तुम ते ततु पछानिओ ॥ करु
 मसतकि धरि कटी जेवरी नानक दास दसानिओ ॥ २ ॥ ३९ ॥ ६२ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरि दीओ सेवक कउ नाम
 ॥ मानसु का को बपुरो भाई जा को राखा राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि महाजनु आपे पँचा आपि सेवक कै काम ॥ आपे
 सगले दूत बिदारे ठाकुर अँतरजाम ॥ १ ॥ आपे पति राखी सेवक की आपि कीओ बँधान ॥ आदि जुगादि सेवक की राखै
 नानक को प्रभु जान ॥ २ ॥ ४० ॥ ६३ ॥ सारग महला ५ ॥ तू मेरे मीत राखा हरि प्रान ॥ मनु धनु जीउ पिँडु सभु तुमरा

इहु तनु सीतो तुमरै धान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही दीए अनिक प्रकारा तुम ही दीए मान ॥ सदा सदा तुम ही पति राखहु
 अंतरजामी जान ॥ १ ॥ जिन सँतन जानिआ तू ठाकुर ते आए परवान ॥ जन का संगु पाईऐ वडभागी नानक सँतन कै
 कुरबान ॥ २ ॥ ४१ ॥ ६४ ॥ सारग महला ५ ॥ करहु गति दइआल सँतहु मोरी ॥ तुम समरथ कारन करना तूटी तुम ही
 जोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के बिखई तुम तारे सुमति सँगि तुमरै पाई ॥ अनिक जोनि भ्रमते प्रभ बिसरत सासि
 सासि हरि गई ॥ १ ॥ जो जो सँगि मिले साधू कै ते ते पतित पुनीता ॥ कहु नानक जा के वडभागा तिनि जनमु पदारथु
 जीता ॥ २ ॥ ४२ ॥ ६५ ॥ सारग महला ५ ॥ ठाकुर बिनती करन जनु आइओ ॥ सब सूख आनँद सहज रस सुनत
 तुहारो नाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा निधान सूख के सागर जसु सभ महि जा को छाइओ ॥ सँतसँगि रँग तुम कीए
 अपना आपु द्रिसटाइओ ॥ १ ॥ नैनहु सँगि सँतन की सेवा चरन झारी केसाइओ ॥ आठ पहर दरसनु सँतन का सुखु
 नानक इहु पाइओ ॥ २ ॥ ४३ ॥ ६६ ॥ सारग महला ५ ॥ जा की राम नाम लिव लागी ॥ सजनु सुरिदा सुहेला सहजे
 सो कहीऐ बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रहित बिकार अल्प माइआ ते अहँबुधि बिखु तिआगी ॥ दरस पिआस आस एकहि
 कीटेक हीऐं प्रिआ पागी ॥ १ ॥ अचिँत सोइ जागनु उठि बैसनु अचिँत हसत बैरागी ॥ कहु नानक जिनि जगतु ठगाना सु
 माइआ हरि जन ठागी ॥ २ ॥ ४४ ॥ ६७ ॥ सारग महला ५ ॥ अब जन ऊपरि को न पुकारै ॥ पूकारन कउ जो उदमु
 करता गुरु परमेसरु ता कउ मारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरवैरै सँगि वैरु रचावै हरि दरगह ओहु हारै ॥ आदि जुगादि प्रभ की
 वडिआई जन की पैज सवारै ॥ १ ॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ चरन कमल आधारै ॥ गुर कै बचनि जपिओ नाउ
 नानक प्रगट भइओ सँसारै ॥ २ ॥ ४५ ॥ ६८ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन छोडिआ सगला आपु ॥ जिउ जानहु तिउ
 रखहु गुसाई पेखि जीवां परतापु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसि साध की सँगति बिनसिओ सगल सँतापु ॥ मित्र सत्र

पेखि समतु बीचारिओ सगल सँभाखन जापु ॥ १ ॥ तपति बुझी सीतल आघाने सुनि अनहद बिसम भए बिसमाद ॥
 अनदु भइआ नानक मनि साचा पूरन पूरे नाद ॥ २ ॥ ४६ ॥ ६९ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै गुरि मोरो सहसा उतारिआ
 ॥ तिसु गुर कै जाईए बलिहारी सदा सदा हउ वारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का नामु जपिओ दिनु राती गुर के चरन मनि
 धारिआ ॥ गुर की धूरि करउ नित मजनु किलविख मैलु उतारिआ ॥ १ ॥ गुर पूरे की करउ नित सेवा गुरु अपना
 नमसकारिआ ॥ सब फला दीनेह गुरि पूरे नानक गुरि निसतारिआ ॥ २ ॥ ४७ ॥ ७० ॥ सारग महला ५ ॥ सिमरत
 नामु प्रान गति पावै ॥ मिटहि कलेस त्रास सभ नासै साधसँगि हितु लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि मनि आराधे
 रसना हरि जसु गावै ॥ तजि अभिमानु काम क्रोधु निँदा बासुदेव रँगु लावै ॥ १ ॥ दामोदर दइआल आराधहु गोबिंद करत
 सोहावै ॥ कहु नानक सभ की होइ रेना हरि हरि दरसि समावै ॥ २ ॥ ४८ ॥ ७१ ॥ सारग महला ५ ॥ अपुने गुर पूरे
 बलिहारै ॥ प्रगट प्रतापु कीओ नाम को राखे राखनहारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ कीए सेवक दास अपने सगले दूख
 बिदारै ॥ आन उपाव तिआगि जन सगले चरन कमल रिद धारै ॥ १ ॥ प्रान अधार मीत साजन प्रभ एकै एकैकारै ॥ सभ
 ते ऊच ठाकुरु नानक का बार बार नमसकारै ॥ २ ॥ ४९ ॥ ७२ ॥ सारग महला ५ ॥ बिनु हरि है को कहा बतावहु ॥
 सुख समूह करुणा मै करता तिसु प्रभ सदा धिआवहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सूति परोए जँता तिसु प्रभ का जसु गावहु
 सिमरि ठाकुरु जिनि सभु किछु दीना आन कहा पहि जावहु ॥ १ ॥ सफल सेवा सुआमी मेरे की मन बाँछत फल पावहु ॥
 कहु नानक लाभु लाहा लै चालहु सुख सेती घरि जावहु ॥ २ ॥ ५० ॥ ७३ ॥ सारग महला ५ ॥ ठाकुर तुम्ह सरणाई
 आइआ ॥ उतरि गइओ मेरे मन का सँसा जब ते दरसनु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना
 नामु जपाइआ ॥ दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ॥ १ ॥ बाह पकरि कढि लीने अपुने ग्रिह

अँध कूप ते माइआ ॥ कहु नानक गुरि बँधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥ २ ॥ ५१ ॥ ७४ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि
 के नाम की गति ठाँदी ॥ बेद पुरान सिम्रिति साधू जन खोजत खोजत काढी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव बिरँच अरु इंद्रु लोक
 ता महि जलतौ फिरिआ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी भए सीतल दूखु दरदु भ्रमु हिरिआ ॥ १ ॥ जो जो तरिओ पुरातनु
 नवतनु भगति भाइ हरि देवा ॥ नानक की बेनँती प्रभ जीउ मिलै संत जन सेवा ॥ २ ॥ ५२ ॥ ७५ ॥ सारग महला ५ ॥
 जिहवे अँमित गुण हरि गाउ ॥ हरि हरि बोलि कथा सुनि हरि की उचरहु प्रभ को नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु रतन धनु
 सँचहु मनि तनि लावहु भाउ ॥ आन बिभूत मिथिआ करि मानहु साचा इहै सुआउ ॥ १ ॥ जीअ प्रान मुकति को दाता
 एकस सिउ लिव लाउ ॥ कहु नानक ता की सरणाई देत सगल अपिआउ ॥ २ ॥ ५३ ॥ ७६ ॥ सारग महला ५ ॥ होती
 नही कवन कछु करणी ॥ इहै ओट पाई मिलि संतह गोपाल ओक की सरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँच दोख छिद्र इआ तन महि
 बिरवै बिआधि की करणी ॥ आस अपार दिनस गणि राखे ग्रसत जात बलु जरणी ॥ १ ॥ अनाथह नाथ दइआल सुख
 सागर सरब दोख भै हरणी ॥ मनि बाँछत चितवत नानक दास पेखि जीवा प्रभ चरणी ॥ २ ॥ ५४ ॥ ७७ ॥ सारग
 महला ५ ॥ फीके हरि के नाम बिनु साद ॥ अँमित रसु कीरतनु हरि गाईऐ अहिनि सि पूरन नाद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत
 सांति महा सुखु पाईऐ मिटि जाहि सगल बिखाद ॥ हरि हरि लाभु साधसँगि पाईऐ घरि लै आवहु लादि ॥ १ ॥ सभ ते ऊच
 ऊच ते ऊचो अँतु नही मरजाद ॥ बरनि न साकउ नानक महिमा पेखि रहे बिसमाद ॥ २ ॥ ५५ ॥ ७८ ॥ सारग महला ५
 ॥ आइओ सुनन पड़न कउ बाणी ॥ नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समझु
 अचेत चेति मन मेरे कथी संतन अकथ कहाणी ॥ लाभु लैहु हरि रिदै अराधहु छुटकै आवण जाणी ॥ १ ॥ ऊदमु सकति
 सिआणप तुम्हरी देहि त नामु वखाणी ॥ सेई भगत भगति से लागे नानक जो प्रभ भाणी ॥ २ ॥ ५६ ॥ ७९ ॥ सारग

महला ५ ॥ धनवंत नाम के वणजारे ॥ सांझीं करहु नाम धनु खाटहु गुर का सबदु वीचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छोडहु कपटु होइ
 निरवैरा सो प्रभु सँगि निहारे ॥ सचु धनु वणजहु सचु धनु सँचहु कबहू न आवहु हारे ॥ १ ॥ खात खरचत किछु निखुटत
 नाही अगनत भरे भँडारे ॥ कहु नानक सोभा सँगि जावहु पारब्रहम कै दुआरे ॥ २ ॥ ५७ ॥ ८० ॥ सारग महला ५ ॥ प्रभ
 जी मोहि कवनु अनाथु बिचारा ॥ कवन मूल ते मानुखु करिआ इहु परतापु तुहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्राण सरब के दाते
 गुण कहे न जाहि अपारा ॥ सभ के प्रीतम सब प्रतिपालक सरब घटां आधार ॥ १ ॥ कोइ न जाणै तुमरी गति मिति आपहि
 एक पसारा ॥ साध नाव बैठावहु नानक भव सागरु पारि उतारा ॥ २ ॥ ५८ ॥ ८१ ॥ सारग महला ५ ॥ आवै राम सरणि
 वडभागी ॥ एकस बिनु किछु होरु न जाणै अवरि उपाव तिआगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन बचक्रम आराधै हरि हरि साधसँगि
 सुखु पाइआ ॥ अनद बिनोद अकथ कथा रसु साचै सहजि समाइआ ॥ १ ॥ करि किरपा जो अपुना कीनो ता की ऊतम
 बाणी ॥ साधसँगि नानक निसतरीऐ जो राते प्रभ निरबाणी ॥ २ ॥ ५९ ॥ ८२ ॥ सारग महला ५ ॥ जा ते साधू सरणि
 गही ॥ सांति सहजु मनि भइओ प्रगासा बिरथा कछु न रही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ होहु क्रिपाल नामु देहु अपुना बिनती एह कही
 ॥ आन बिउहार बिसरे प्रभ सिमरत पाइओ लाभु सही ॥ १ ॥ जह ते उपजिओ तही समानो साई बसतु अही ॥ कहु नानक
 भरमु गुरि खोइओ जोती जोति समही ॥ २ ॥ ६० ॥ ८३ ॥ सारग महला ५ ॥ रसना राम को जसु गाउ ॥ आन सुआद
 बिसारि सगले भलो नाम सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल बसाइ हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ साधसँगति होहि निरमलु
 बहुड़ि जोनि न आउ ॥ १ ॥ जीउ प्राण अधारु तेरा तू निथावे थाउ ॥ सासि सासि सम्हालि हरि हरि नानक सद बलि जाउ
 ॥ २ ॥ ६१ ॥ ८४ ॥ सारग महला ५ ॥ बैकुंठ गोबिंद चरन नित धिआउ ॥ मुकति पदारथु साधू सँगति अँमितु हरि का
 नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतम कथा सुणीजै श्रवणी मइआ करहु भगवान ॥ आवत जात दोऊ परव

पूरन पाईऐ सुख बिस्राम ॥ १ ॥ सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगति सरेसट पूरी ॥ कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर
 सगल बिधि ऊरी ॥ २ ॥ ६२ ॥ ८५ ॥ साचे सतिगुरु दातारा ॥ दरसनु देखि सगल दुख नासहि चरन कमल बलिहारा
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सति परमेसरु सति साध जन निहचलु हरि का नाउ ॥ भगति भावनी पारब्रहम की अबिनासी गुण गाउ
 ॥ १ ॥ अगमु अगोचरु निति नही पाईऐ सगल घटा आधारु ॥ नानक वाहु वाहु कहु ता कउ जा का अँतु न पारु ॥ २
 ॥ ६३ ॥ ८६ ॥ सारग महला ५ ॥ गुर के चरन बसे मन मेरै ॥ पूरि रहिओ ठाकुरु सभ थाई निकटि बसै सभ नेरै ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ बँधन तोरि राम लिव लाई संतसंगि बनि आई ॥ जनमु पदारथु भइओ पुनीता इछा सगल पुजाई ॥ १ ॥ जा
 कउ क्रिपा करहु प्रभ मेरे सो हरि का जसु गावै ॥ आठ पहर गोबिंद गुन गावै जनु नानकु सद बलि जावै ॥ २ ॥ ६४ ॥
 ८७ ॥ सारग महला ५ ॥ जीवनु तउ गनीऐ हरि पेखा ॥ करहु क्रिपा प्रीतम मनमोहन फोरि भरम की रेखा ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ कहत सुनत किछ सांति न उपजत बिनु बिसास किआ सेखां ॥ प्रभू तिआगि आन जो चाहत ता कै मुखि लागै
 कालेखा ॥ १ ॥ जा कै रासि सरब सुख सुआमी आन न मानत भेखा ॥ नानक दरस मगन मनु मोहिओ पूरन अरथ
 बिसेखा ॥ २ ॥ ६५ ॥ ८८ ॥ सारग महला ५ ॥ सिमरन राम को इकु नाम ॥ कलमल दगध होहि खिन अँतरि कोटि
 दान इसनान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन जँजार ब्रिथा श्रमु घालत बिनु हरि फोकट गिआन ॥ जनम मरन संकट ते छुटै
 जगदीस भजन सुख धिआन ॥ १ ॥ तेरी सरनि पूरन सुख सागर करि किरपा देवहु दान ॥ सिमरि सिमरि नानक प्रभ
 जीवे बिनसि जाइ अभिमान ॥ २ ॥ ६६ ॥ ८९ ॥ सारग महला ५ ॥ धूरतु सोई जि धुर कउ लागै ॥ सोई धुरंधरु सोई
 बसुंधरु हरि एक प्रेम रस पागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलबँच करै न जानै लाभै सो धूरतु नही मूढा ॥ सुआरथु तिआगि
 असारथि रचिओ नह सिमरै प्रभु रूढा ॥ १ ॥ सोई चतुरु सिआणा पँडितु सो सूरु सो दानां ॥ साधसंगि जिनि

हरि हरि जपिओ नानक सो परवाना ॥ २ ॥ ६७ ॥ ९० ॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरि संत जना की जीवनि ॥ बिखै
रस भोग अँम्रित सुख सागर राम नाम रसु पीवनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँचनि राम नाम धनु रतना मन तन भीतरि सीवनि ॥
हरि रँग रंग भए मन लाला राम नाम रस खीवनि ॥ १ ॥ जिउ मीना जल सिउ उरझानो राम नाम सँगे लीवनि ॥ नानक
सँत चात्रिक की निआई हरि बूँद पान सुख थीवनि ॥ २ ॥ ६८ ॥ ९१ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नामहीन बेताल ॥
जेता करन करावन तेता सभि बँधन जँजाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु प्रभ सेव करत अन सेवा बिरथा काटै काल ॥ जब जमु
अडु सँघारै प्रानी तब तुमरो कउनु हवाल ॥ १ ॥ राखि लेहु दास अपुने कउ सदा सदा किरपाल ॥ सुख निधान नानक प्रभु
मेश साधसँगे धन माल ॥ २ ॥ ६९ ॥ ९२ ॥ सारग महला ५ ॥ मनि तनि राम को बिउहारु ॥ प्रेम भगति गुन गावन
गीधे पोहत नह सँसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खवनी कीरतनु सिमरनु सुआमी इहु साध को आचारु ॥ चरन कमल असथिति
रिद अँतरि पूजा पान को आधारु ॥ १ ॥ प्रभ दीन दइआल सुनहु बेनँती किरपा अपनी धारु ॥ नामु निधानु उचरउ नित
रसना नानक सद बलिहारु ॥ २ ॥ ७० ॥ ९३ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नामहीन मति थोरी ॥ सिमरत नाहि
सिरीधर ठाकुर मिलत अँध दुख घोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम सिउ प्रीति न लागी अनिक भेख बहु जोरी ॥ तूटत
बार न लागै ता कउ जिउ गागरि जल फोरी ॥ १ ॥ करि किरपा भगति रसु दीजै मनु खचित प्रेम रस खोरी ॥ नानक दास
तेरी सरणई प्रभ बिनु आन न होरी ॥ २ ॥ ७१ ॥ ९४ ॥ सारग महला ५ ॥ चितवउ वा अउसर मन माहि ॥ होइ इकत्र
मिलहु संत साजन गुण गोबिंद नित गाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु हरि भजन जेते काम करीअहि तेते बिरथे जाहि ॥ पूरन
परमानंद मनि मीठे तिसु बिनु दूसर नाहि ॥ १ ॥ जप तप सँजम करम सुख साधन तुलि न कछुरे लाहि ॥ चरन कमल
नानक मनु बेधिओ चरनह सँगे समाहि ॥ २ ॥ ७२ ॥ ९५ ॥ सारग महला ५ ॥ मेश प्रभु सँगे अँतरजामी ॥

आगै कुसल पाछै खेम सूखा सिमरत नामु सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजन मीत सखा हरि मेरै गुन गोपाल हरि राइआ ॥
 बिसरि न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरू मिलाइआ ॥ १ ॥ करि किरपा राखे दास अपने जीअ जँत वसि जा कै ॥ एका लिव
 पूरन परमेसुर भउ नहीं नानक ता कै ॥ २ ॥ ७३ ॥ ९६ ॥ सारग महला ५ ॥ जा कै राम को बलु होइ ॥ सगल मनोरथ
 पूरन ताहू के दूखु न बिआपै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जनु भगतु दासु निजु प्रभ का सुणि जीवां तिसु सोइ ॥ उदमु करउ
 दरसनु पेखन कौ करमि परापति होइ ॥ १ ॥ गुर परसादी दिसटि निहारउ दूसर नाही कोइ ॥ दानु देहि नानक अपने कउ
 चरन जीवां सँत धोइ ॥ २ ॥ ७४ ॥ ९७ ॥ सारग महला ५ ॥ जीवतु राम के गुण गाइ ॥ करहु किरपा गोपाल बीठुले
 बिसरि न कब ही जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु धनु सभु तुमरा सुआमी आन न दूजी जाइ ॥ जिउ तू राखहि तिव ही रहणा
 तुम्हरा पैनेह खाइ ॥ १ ॥ साधसँगति कै बलि बलि जाई बहुड़ि न जनमा धाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाई जिउ भावै तिवै
 चलाइ ॥ २ ॥ ७५ ॥ ९८ ॥ सारग महला ५ ॥ मन रे नाम को सुख सार ॥ आन काम बिकार माइआ सगल दीसहि छार
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिहि अंध कूप पतित प्राणी नरक घोर गुबार ॥ अनक जोनी भ्रमत हरिओ भ्रमत बारँ बार ॥ १ ॥ पतित
 पावन भगति बछल दीन किरपा धार ॥ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै साधसँगि उधार ॥ २ ॥ ७६ ॥ ९९ ॥ सारग महला ५
 ॥ बिराजित राम को परताप ॥ आधि बिआधि उपाधि सभ नासी बिनसे तीनै ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिसना बुद्धी पूरन सभ
 आसा चूके सोग सँताप ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी मन तन आतम धाप ॥ १ ॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर साधू कै
 सँगि खाप ॥ भगति वछल भै काटनहारे नानक के माई बाप ॥ २ ॥ ७७ ॥ १०० ॥ सारग महला ५ ॥ आतुरु नाम बिनु
 सँसार ॥ त्रिपति न होवत कूकरी आसा इतु लागो बिखिआ छार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ जनमत
 बारो बार ॥ हरि का सिमरनु निमख न सिमरिओ जमकँकर करत खुआर ॥ १ ॥ होहु किरपाल दिन दुख भँजन तेरिआ

सँतह की शवार ॥ नानक दासु दरसु प्रभ जाचै मन तन को आधार ॥ २ ॥ ७८ ॥ १०१ ॥ सारग महला ५ ॥ मैला हरि
 के नाम बिनु जीउ ॥ तिनि प्रभि साचै आपि भुलाइआ बिख्रै ठगउरी पीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमतौ बहु भांती
 थिति नही कतहू पाई ॥ पूरा सतिगुरु सहजि न भेटिआ साकतु आवै जाई ॥ १ ॥ राखि लेहु प्रभ सँमिथ दाते तुम प्रभ
 अगम अपार ॥ नानक दास तेरी सरणाई भवजलु उतरिओ पार ॥ २ ॥ ७९ ॥ १०२ ॥ सारग महला ५ ॥ रमण कउ
 राम के गुण बाद ॥ साधसँगि धिआईए परमेसरु अँमित जा के सुआद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत एकु अचुत अबिनासी
 बिनसे माइआ माद ॥ सहज अनद अनहद धुनि बाणी बहुरि न भए बिखाद ॥ १ ॥ सनकदाइक ब्रहमदाइक गावत गावत
 सुक प्रहिलाद ॥ पीवत अमिउ मनोहर हरि रसु जपि नानक हरि बिसमाद ॥ २ ॥ ८० ॥ १०३ ॥ सारग महला ५ ॥
 कीन्हे पाप के बहु कोट ॥ दिनसु रैनी थकत नाही कतहि नाही छोट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बजर बिखर बिआधी सिरि
 उठाई पोट ॥ उघरि गईआं खिनहि भीतरि जमहि गासे झोट ॥ १ ॥ पसु परेत उसट गरधब अनिक जोनी लेट ॥ भजु
 साधसँगि गोबिंद नानक कछु न लागै फेट ॥ २ ॥ ८१ ॥ १०४ ॥ सारग महला ५ ॥ अँधे खावहि बिसू के गटाक ॥
 नैन खवन सरीरु सभु हुटिओ सासु गइओ तत घाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथ रजाणि उदरु ले पोखहि माइआ गईआ हाटि
 ॥ लिंकबिख करत करत पछुतावहि कबहु न साकहि छांति ॥ १ ॥ निँदकु जमदूती आइ सँघारिओ देवहि मूँड उपरि मटाक
 ॥ नानक आपन कटारी आपस कउ लाई मनु अपना कीनो फाट ॥ २ ॥ ८२ ॥ १०५ ॥ सारग महला ५ ॥ टूटी निँदक
 की अध बीच ॥ जन का राखा आपि सुआमी बेमुख कउ आइ पहूची मीच ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उस का कहिआ कोइ न सुणई
 कही न बैसणु पावै ॥ ईहां दुखु आगै नरकु भुँचै बहु जोनी भरमावै ॥ १ ॥ प्रगटु भइआ खँडी ब्रहमँडी कीता अपना
 पाइआ ॥ नानक सरणि निरभउ करते की अनद मँगल गुण गाइआ ॥ २ ॥ ८३ ॥ १०६ ॥ सारग महला ५ ॥

त्रिसना चलत बहु परकारि ॥ पूरन होत न कतहु बातहि अँति परती हरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सांति सूख न सहजु उपजै इहै
 इसु बिउहारि ॥ आप पर का कछु न जानै काम क्रोधहि जारि ॥ १ ॥ संसार सागरु दुखि बिआपिओ दास लेवहु तारि ॥
 चरन कमल सरणाइ नानक सद सदा बलिहारि ॥ २ ॥ ८४ ॥ १०७ ॥ सारग महला ५ ॥ रे पापी तै कवन की मति लीन
 ॥ निमख घरी न सिमरि सुआमी जीउ पिँडु जिनि दीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीवत सवँत सुखीआ नामु सिमरत खीन
 ॥ गरभ उदर बिललाट करता तहां होवत दीन ॥ १ ॥ महा माद बिकार बाधा अनिक जोनि भ्रमीन ॥ गोबिंद बिसरे
 कवन दुख गनीअहि सुखु नानक हरि पद चीन्ह ॥ २ ॥ ८५ ॥ १०८ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री चरनह ओट गही ॥
 दरसनु पेखि मेरा मनु मोहिओ दुरमति जात बही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगह अगाधि ऊच अबिनासी कीमति जात न कही ॥
 जलि थलि पेखि पेखि मनु बिगसिओ पूरि रहिओ सब मही ॥ १ ॥ दीन दइआल प्रीतम मनमोहन मिलि साधह कीनो
 सही ॥ सिमरि सिमरि जीवत हरि नानक जम की भीर न फही ॥ २ ॥ ८६ ॥ १०९ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री मनु
 मेरो मतवारो ॥ पेखि दइआल अनद सुख पूरन हरि रसि रपिओ खुमारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल भए ऊजल जसु गावत
 बहुरि न रोवत कारो ॥ चरन कमल सिउ डोरी राची भेटिओ पुरखु अपारो ॥ १ ॥ करु गहि लीने सरबसु दीने दीपक
 भइओ उजारो ॥ नानक नामि रसिक बैरागी कुलह समूहां तारो ॥ २ ॥ ८७ ॥ ११० ॥ सारग महला ५ ॥ माई री आन
 सिमरि मरि जांहि ॥ तिआगि गोबिंदु जीअन को दाता माइआ सँगि लपटाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु बिसारि चलहि अन
 मारगि नरक घोर महि पाहि ॥ अनिक सजाई गणत न आवै गरभै गरभि भ्रमाहि ॥ १ ॥ से धनवँते से पतिवँते हरि की
 सरणि समाहि ॥ गुर प्रसादि नानक जगु जीतिओ बहुरि न आवहि जांहि ॥ २ ॥ ८८ ॥ १११ ॥ सारग महला ५ ॥
 हरि काटी कुटिलता कुठारि ॥ भ्रम बन दहन भए खिन भीतरि राम नाम परहारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध निँदा

परहरीआ काटे साधूकै सँगि मारि ॥ जनमु पदारथु गुरुमुखि जीतिआ बहुरि न जूरे हारि ॥ १ ॥ आठ पहर प्रभ के गुण
 गावहु पूरन सबदि बीचारि ॥ नानक दासनि दासु जनु तेरा पुनह पुनह नमसकारि ॥ २ ॥ ८९ ॥ ११२ ॥ सारग महला
 ५ ॥ पोथी परमेसर का थानु ॥ साधसँगि गावहि गुण गोविंद पूरन ब्रहम गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधिक सिध सगल
 मुनि लोचहि बिरले लागै धिआनु ॥ जिसहि क्रिपालु होइ मेरा सुआमी पूरन ता को कामु ॥ १ ॥ जा कै रिदै वसै भै भँजनु
 तिसु जानै सगल जहानु ॥ खिनु पलु बिसरु नही मेरे करते इहु नानकु मांगै दानु ॥ २ ॥ ९० ॥ ११३ ॥ सारग महला
 ५ ॥ वूठा सरब थाई मेहु ॥ अनद मँगल गाउ हरि जसु पूरन प्रगटिओ नेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि कुँट दह दिसि जल
 निधि ऊन थाउ न केहु ॥ क्रिपा निधि गोबिंद पूरन जीअ दानु सभ देहु ॥ १ ॥ सति सति हरि सति सुआमी सति
 साधसँगेहु ॥ सति ते जन जिन परतीति उपजी नानक नह भरमेहु ॥ २ ॥ ९१ ॥ ११४ ॥ सारग महला ५ ॥ गोबिद
 जीउ तू मेरे प्रान अधार ॥ साजन मीत सहाई तुम ही तू मेरो परवार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारिओ मेरै माथै
 साधसँगि गुण गाए ॥ तुमरी क्रिपा ते सभ फल पाए रसकि राम नाम धिआए ॥ १ ॥ अबिचल निव धराई सतिगुरि कबहू
 डोलत नाही ॥ गुर नानक जब भए दइआरा सरब सुखा निधि पांही ॥ २ ॥ ९२ ॥ ११५ ॥ सारग महला ५ ॥ निबही
 नाम की सचु खेप ॥ लाभु हरि गुण गाइ निधि धनु बिख्रै माहि अलेप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जँत सगल सँतोखे आपना
 प्रभु धिआइ ॥ रतन जनमु अपार जीतिओ बहुड़ि जोनि न पाइ ॥ १ ॥ भए क्रिपाल दइआल गोबिद भइआ साधू सँगु ॥
 हरि चरन रासि नानक पाई लगा प्रभ सिउ रँगु ॥ २ ॥ ९३ ॥ ११६ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री पेखि रही बिसमाद ॥
 अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के स्वाद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बंधप है सोई मनि हरि को अहिलाद ॥
 साधसँगि गाए गुन गोबिंद बिनसिओ सबु परमाद ॥ १ ॥ डोरी लपटि रही चरनह सँगि भ्रम भै सगले खाद ॥ एक

अधारु नानक जन कीआ बहुरि न जोनि भ्रमाद ॥ २ ॥ ९४ ॥ ११७ ॥ सारग महला ५ ॥ माई शी माती चरन समूह ॥
 एकसु बिनु हउ आन न जानउ दुतीआ भाउ सभ लूह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिआगि गोपाल अवर जो करणा ते बिखिआ के खुह
 ॥ दरस पिआस मेरा मनु मोहिओ काटी नरक ते धूह ॥ १ ॥ संत प्रसादि मिलिओ सुखदाता बिनसी हउमै हूह ॥ राम रँगि
 राते दास नानक मउलिओ मनु तनु जूह ॥ २ ॥ ९५ ॥ ११८ ॥ सारग महला ५ ॥ बिनसे काच के बिउगार ॥ राम भजु
 मिलि साधसंगति इहै जग महि सार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईत ऊत न डोलि कतहू नामु हिरदै धारि ॥ गुर चरन बोहिथ मिलिओ
 भागी उतरिओ संसार ॥ १ ॥ जलि थलि महिअलि पूरि रहिओ सरब नाथ अपार ॥ हरि नामु अँमितु पीउ नानक आन रस
 सभि खार ॥ २ ॥ ९६ ॥ ११९ ॥ सारग महला ५ ॥ ताते करण पलाह करे ॥ महा बिकार मोह मद मातौ सिमरत नाहि हरे
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि जपते नाराइण तिन के दोख जरे ॥ सफल देह धँनि ओइ जनमे प्रभ कै संगि रले ॥ १ ॥ चारि
 पदारथ असट दसा सिधि सभ ऊपरि साध भले ॥ नानक दास धूरि जन बाँछै उधरहि लागि पले ॥ २ ॥ ९७ ॥ १२० ॥
 सारग महला ५ ॥ हरि के नाम के जन कांखी ॥ मनि तनि बचनि एही सुखु चाहत प्रभ दरसु देखहि कब आखी ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ तूबेअँतु पारब्रहम सुआमी गति तेरी जाइ न लाखी ॥ चरन कमल प्रीति मनु बेधिआ करि सरबसु अँतरि राखी ॥ १
 ॥ बेद पुरान सिमिति साधू जन इह नाणी रसना भाखी ॥ जपि राम नामु नानक निसतरीरे होरु दुतीआ बिरथी साखी ॥ २
 ॥ ९८ ॥ १२१ ॥ सारग महला ५ ॥ माखी राम की तू माखी ॥ जह दुरगँध तहा तू बैसहि महा बिखिआ मद चाखी ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ कितहि असथानि तू टिकनु न पावहि इह विधि देखी आखी ॥ संता बिनु तै कोइ न छाडिआ संत परे गोबिद की
 पाखी ॥ १ ॥ जीअ जँत सगले तै मोहे बिनु संता किनै न लाखी ॥ नानक दासु हरि कीरतनि राता सबदु सुरति सचु साखी
 ॥ २ ॥ ९९ ॥ १२२ ॥ सारग महला ५ ॥ माई शी काटी जम की फास ॥ हरि हरि जपत सरब सुख पाए बीचे ग्रसत उदास
 ॥

१ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा लीने करि अपुने उपजी दरस पिआस ॥ सँतसँगि मिलि हरि गुण गाए बिनसी दुतीआ आस ॥
 ॥ १ ॥ महाउदिआन अटवी ते काढे मारगु सँत कहिओ ॥ देखत दरसु पाप सभि नासे हरि नानक रतनु लहिओ ॥ २
 ॥ १०० ॥ १२३ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री अरिओ प्रेम की खोरि ॥ दरसन रुचित पिआस मनि सुँदर सकत न कोई
 तोरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान मान पति पित सुत बंधप हरि सरबसु धन मोर ॥ धिगु सरीरु असत बिसटा क्रिम बिनु हरि
 जानत होर ॥ १ ॥ भइओ क्रिपाल दीन दुख भँजनु परा पूरबला जोर ॥ नानक सरणि क्रिपा निधि सागर बिनसिओ
 आन निहोर ॥ २ ॥ १०१ ॥ १२४ ॥ सारग महला ५ ॥ नीकी शम की धुनि सोइ ॥ चरन कमल अनूप सुआमी जपत
 साधू होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चितवता गोपाल दरसन कलमला कढु धोइ ॥ जनम मरन बिकार अँकुर हरि काटि छाडे
 खोइ ॥ १ ॥ परा पूरबि जिसहि लिखिआ बिरला पाए कोइ ॥ स्वण गुण गोपाल करते नानका सचु जोइ ॥ २ ॥ १०२
 ॥ १२५ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की मति सार ॥ हरि बिसारि जु आन राचहि मिथन सभ बिसथार ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ साधसँगमि भजु सुआमी पाप होवत खार ॥ चरनारबिंद बसाइ हिरदै बहुरि जनम न मार ॥ १ ॥ करि अनुग्रह
 राखि लीने एक नाम अधार ॥ दिन रैनि सिमरत सदा नानक मुख ऊजल दरबारि ॥ २ ॥ १०३ ॥ १२६ ॥ सारग
 महला ५ ॥ मानी तूँ शम कै दरि मानी ॥ साध सँगिमिलि हरि गुण गाए बिनसी सभ अभिमानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि
 अनुग्रहु अपुनी करि लीनि गुरमुखि पूर गिआनी ॥ सरब सूख आनँद घनेरे ठाकुर दरस धिआनी ॥ १ ॥ निकटि वरतनि
 सा सदा सुहागनि दह दिस साई जानी ॥ प्रिअ रँग रँगि रती नाराइण नानक तिसु कुरबानी ॥ २ ॥ १०४ ॥ १२७ ॥
 सारग महला ५ ॥ तुअ चरन आसरो ईस ॥ तुमहि पछानू साकु तुमहि सँगि राखनहार तुमै जगदीस ॥ रहाउ ॥ तु
 हमरो हम तुमरे कहीऐ इत उत तुम ही राखे ॥ तू बेअँतु अपरँपरु सुआमी गुर किरपा लाखै ॥ १ ॥ बिनु बकने बिनु कहन

कहावन अंतरजामी जानै ॥ जा कउ मेलि लए प्रभु नानकु से जन दरगह माने ॥ २ ॥ १०५ ॥ १२८ ॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु ५ १८ शितिगुर प्रसादि ॥

हरि भजि आन करम बिकार ॥ मान मोहु न बुझत त्रिसना काल ग्रस संसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीवत हसत सोवत अउध
बिती असार ॥ नरक उदरि भरमंत जलतो जमहि कीनी सार ॥ १ ॥ पर द्रोह करत बिकार निँदा पाप रत कर द्वार ॥ बिना
सतिगुर बूझ नाही तम मोह महां अंधार ॥ २ ॥ बिखु ठगउरी खाइ मूठो चिति न सिरजनहार ॥ गोबिंद गुपत होइ रहिओ
निआरो मातंग मति अहंकार ॥ ३ ॥ करि क्रिपा प्रभ संत शखे चरन कमल आधार ॥ कर जोरि नानकु सरनि आइओ गोपाल
पुख अपार ॥ ४ ॥ १ ॥ १२९ ॥

सारंग महला ५ घरु ६ पड़ताल १८ शितिगुर प्रसादि ॥

सुभ बचन बोलि गुन अमोल ॥ किंकरी बिकार ॥ देखु री बीचार ॥ गुर सबदु धिआइ महलु पाइ ॥ हरि सँगि रँग करती महा
केल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुपन री संसारु ॥ मिथनी बिसथारु ॥ सखी काइ मोहि मोहिली प्रिअ प्रीति रिदै मेल ॥ १ ॥ सरब री
प्रीति पिआरु ॥ प्रभु सदा ही दइआरु ॥ कांएं आन आन रुचीऐ ॥ हरि सँगि सँगि खचीऐ ॥ जउ साधसंग पाए ॥ कहु
नानक हरि धिआए ॥ अब रहे जमहि मेल ॥ २ ॥ १ ॥ १३० ॥ सारंग महला ५ ॥ कंचना बहु दत करा ॥ भूमि दानु अरपि
धरा ॥ मन अनिक सोच पवित्र करत ॥ नाहीरे नाम तुलि मन चरन कमल लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि बेद जिहव भने ॥ दस
असट खसट श्रवन सुने ॥ नही तुलि गोविंद नाम धुने ॥ मन चरन कमल लागे ॥ १ ॥ बरत संधि सोच चार ॥ क्रिआ कुँटि
निराहार ॥ अपरस करत पाकसार ॥ निवली करम बहु बिसथार ॥ धूप दीप करते हरि नाम तुलि न लागे ॥ राम दइआर सुनि
दीन बेनती ॥ देहु दरसु नैन पेखउ जन नानक नाम मिसट लागे ॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥ सारंग महला ५ ॥ राम राम राम

जापि रमत राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतन कै चरन लागे काम क्रोध लोभ तिआगे गुर गोपाल भए क्रिपाल लबधि
अपनी पाई ॥ १ ॥ बिनसे भ्रम मोह अँध टूटे माइआ के बँध पूरन सरबत्र ठाकुर नह कोऊ बैराई ॥ सुआमी सुप्रसँन भए
जनम मरन दोख गए संतन कै चरन लागि नानक गुन गाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरे हरि मुखहु
बोलि हरि हरे मनि धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ श्रवन सुनन भगति करन अनिक पातिक पुनहचरन ॥ सरन परन साधू आन
बानि बिसारे ॥ १ ॥ हरि चरन प्रीति नीत नीति पावना महि महा पुनीत ॥ सेवक भै दूरि करन कलिमल दोख जारे ॥
कहत मुक्त सुनत मुक्त रहत जनम रहते ॥ राम राम सार भूत नानक ततु बीचारे ॥ २ ॥ ४ ॥ १३३ ॥ सारग महला ५
॥ नाम भगति मागु संत तिआगि सगल कामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीति लाइ हरि धिआइ गुन गुोबिंद सदा गाइ ॥ हरि जन
की रेन बाँछ दैनहार सुआमी ॥ १ ॥ सरब कुसल सुख बिश्राम आनदा आनँद नाम जम की कछु नाहि त्रास सिमरि
अँतरजामी ॥ एक सरन गोबिंद चरन संसार सगल ताप हरन ॥ नाव रूप साधसँग नानक पारगरामी ॥ २ ॥ ५ ॥
१३४ ॥ सारग महला ५ ॥ गुन लाल गावउ गुर देखे ॥ पँचा ते एकु छूटा जउ साधसँगि पगरउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ द्रिसटउ
कछु सँगि न जाइ मानु तिआगि मोहा ॥ एकै हरि प्रीति लाइ मिलि साधसँगि सोहा ॥ १ ॥ पाइओ है गुण निधानु सगल
आस पूरी ॥ नानक मनि अनँद भए गुरि बिखम गार्ह तोरी ॥ २ ॥ ६ ॥ १३५ ॥ सारग महला ५ ॥ मनि बिरागैगी ॥
खोजती दरसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संतन सेवि कै प्रिउ हीअरै धिआइओ ॥ आनँद रूपी पेखि कै हउ महलु पावउगी
॥ १ ॥ काम करी सभ तिआगि कै हउ सरणि परउगी ॥ नानक सुआमी गरि मिले हउ गुर मनावउगी ॥ २ ॥ ७ ॥ १३६
॥ सारग महला ५ ॥ ऐसी होइ परी ॥ जानते दइआर ॥ १ ॥ मातर पितर तिआगि कै मनु संतन पाहि बेचाइओ ॥
जाति जनम कुल खोईए हउ गावउ हरि हरी ॥ १ ॥ लोक कुटँब ते टूटीए प्रभ किरति किरति करी ॥ गुरि मो कउ

उपदेसिआ नानक सेवि एक हरी ॥ २ ॥ ८ ॥ १३७ ॥ सारंग महला ५ ॥ लाल लाल मोहन गोपाल तू ॥ कीट हसति
 पाखाण जंत सब मै प्रतिपाल तू ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह दूरि पूरि हजूरि संगे ॥ सुंदर रसाल तू ॥ १ ॥ नह बचन बरन नह
 कुलह कुल ॥ नानक प्रभ किरपाल तू ॥ २ ॥ ९ ॥ १३८ ॥ सारंग मः ५ ॥ करत केल बिखै मेल चंद्र सूर मोहे ॥ उपजता
 बिकार दुंदर नउपरी ड्रुनंतकार सुंदर अनिग भाउ करत फिरत बिनु गोपाल धोहे ॥ रहाउ ॥ तीनि भउने लपटाइ रही काच
 करमि न जात सही उनमत अंध धंध रचित जैसे महा सागर होहे ॥ १ ॥ उधरे हरि सत दास काटि दीनी जम की फास पतित
 पावन नामु जा को सिमरि नानक ओहे ॥ २ ॥ १० ॥ १३९ ॥ ३ ॥ १३ ॥ १५५ ॥

१३९ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सारंग महला ९ ॥

हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥ कां की मात पिता सट बनिता को काहू को भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धनु धरनी अरि संपति सगरी
 जो मानिओ अपनाई ॥ तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥ १ ॥ दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि
 न बढाई ॥ नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥ २ ॥ १ ॥ सारंग महला ९ ॥ कहा मन बिखिआ सिउ
 लपटाही ॥ या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कां को तनु धनु संपति कां की का सिउ
 नेहु लगाही ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥ १ ॥ तजि अभिमानु सरणि सतन गहु मुकति होहि छिन
 माही ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥ २ ॥ २ ॥ सारंग महला ९ ॥ कहा नर अपनो जनमु
 गवावै ॥ माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा
 लोभावै ॥ जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥ १ ॥ मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै
 ॥ जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥ २ ॥ ३ ॥ सारंग महला ९ ॥ मन करि कबहू न हरि गुन गाइओ
 ॥

बिखिआसकत रहिउ निसि बासुर कीनो अपनो भाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसि सुनिओ नहि काननि पर दारा
लपटाइओ ॥ पर निँदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइओ ॥ १ ॥ कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु
गवाइओ ॥ कहि नानक सब अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३ ॥ १३९ ॥ ४ ॥ १७९ ॥

रागु सारग असटपदीआ महला १ घरु १ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई ॥ जै जगदीस तेरा जसु जाचउ मै हरि बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की पिआस
पिआसी कामनि देखउ रैनि सबाई ॥ श्रीधर नाथ मेरा मनु लीना प्रभु जानै पीर पराई ॥ १ ॥ गणत सरीरि पीर है हरि बिनु
गुर सबदी हरि पाई ॥ होहु दइआल क्रिपा करि हरि जीउ हरि सिउ रहां समाई ॥ २ ॥ ऐसी खत खहु मन मेरे हरि चरणी
चितु लाई ॥ बिसम भए गुण गाइ मनोहर निरभउ सहजि समाई ॥ ३ ॥ हिरदै नामु सदा धुनि निहचल घटै न कीमति पाई
॥ बिनु नावै सभु कोई निरधनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ४ ॥ प्रीतम प्रान भए सुनि सजनी दूत मुए बिखु खाई ॥ जब की
उपजी तब की तैसी रँगुल भई मनि भाई ॥ ५ ॥ सहज समाधि सदा लिव हरि सिउ जीवां हरि गुन गाई ॥ गुर कै सबदि रता
बैरागी निज घरि ताडी लाई ॥ ६ ॥ सुध रस नामु महा रसु मीठा निज घरि ततु गुसाई ॥ तह ही मनु जह ही तै राखिआ
ऐसी गुरमति पाई ॥ ७ ॥ सनक सनादि ब्रहमादि इंद्रादिक भगति रते बनि आई ॥ नानक हरि बिनु घरी न जीवां हरि का
नामु वडाई ॥ ८ ॥ १ ॥ सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ धीरै मनु मेरा ॥ कोटि कल्प के दूख बिनासन साचु द्रिड़ाइ
निबेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रोधु निवारि जले हउ ममता प्रेमु सदा नउ रंगी ॥ अनभउ बिसरि गए प्रभु जाचिआ हरि निरमाइलु
संगी ॥ १ ॥ चंचल मति तिआगि भउ भँजनु पाइआ एक सबदि लिव लागी ॥ हरि रसु चाखि त्रिखा निवारी हरि

मेलिं लए बडभागी ॥ २ ॥ अभरत सिंचि भए सुभर सर गुरमति साचु निहाला ॥ मन रति नामि रते निहकेवल आदि
 जुगादि दइआला ॥ ३ ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मोरा बडै भाग लिव लागी ॥ साच बीचारि किलविख दुख काटे मनु
 निरमलु अनरागी ॥ ४ ॥ गहिर गंभीर सागर रतनागर अवर नही अन पूजा ॥ सबदु बीचारि भरम भउ भँजनु अवरु न
 जानिआ दूजा ॥ ५ ॥ मनुआ मारि निरमल पदु चीनिआ हरि रस रते अधिकई ॥ एकस बिनु मै अवरु न जानां सतिगुरि
 बूझ बुझाई ॥ ६ ॥ अगम अगोचरु अनाथु अजोनी गुरमति एको जानिआ ॥ सुभर भरे नाही चितु डोलै मन ही ते मनु
 मानिआ ॥ ७ ॥ गुर परसादी अकथउ कथीरे कहउ कहावै सोई ॥ नानक दीन दइआल हमारे अवरु न जानिआ कोई ॥ ८
 ॥ २ ॥

सारग महला ३ असटपदीआ घरु १ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मन मेरे हरि कै नामि वडाई ॥ हरि बिनु अवरु न जाणा कोई हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदि भउ
 भँजनु जमकाल निखँजनु हरि सेती लिव लाई ॥ हरि सुखदाता गुरमुखि जाता सहजे रहिआ समाई ॥ १ ॥ भगतां का
 भोजनु हरि नाम निरँजनु पैन्हणु भगति बडाई ॥ निज घरि वासा सदा हरि सेवनि हरि दरि सोभा पाई ॥ २ ॥ मनमुख बुधि
 काची मनुआ डोलै अकथु न कथै कहानी ॥ गुरमति निहचलु हरि मनि वसिआ अँमित साची बानी ॥ ३ ॥ मन के तरँग
 सबदि निवारे रसना सहजि सुभाई ॥ सतिगुर मिलि रहीरे सद अपुने जिनि हरि सेती लिव लाई ॥ ४ ॥ मनु सबदि मरै ता
 मुकतो होवै हरि चरणी चितु लाई ॥ हरि सरु सागरु सदा जलु निरमलु नावै सहजि सुभाई ॥ ५ ॥ सबदु वीचारि सदा रँगि
 राते हउमै त्रिसना मारी ॥ अँतरि निहकेवलु हरि रविआ सभु आतमरामु मुरारी ॥ ६ ॥ सेवक सेवि रहे सचि राते जो तेरै मनि
 भाणे ॥ दुबिधा महलु न पावै जगि झूठी गुण अवगण न पछाणे ॥ ७ ॥ आपे मेलिं लए अकथु कथीरे सचु सबदु सचु बाणी
 ॥ नानक साचे सचि समाणे हरि का नामु वखाणी ॥ ८ ॥ १ ॥ सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि का नामु अति मीठा ॥

जनम जनम के किलविख भउ भँजन गुरमुखि एको डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि कोटंतर के पाप बिनासन हरि साचा मनि
 भाइआ ॥ हरि बिनु अवरु न सूझै दूजा सतिगुरि एकु बुझाइआ ॥ १ ॥ प्रेम पदारथु जिन घटि वसिआ सहजे रहे समाई ॥
 सबदि रते से रँगे चलूले राते सहजि सुभाई ॥ २ ॥ रसना सबदु वीचारि रसि राती लाल भई रँगु लाई ॥ राम नामु
 निहकेवळु जाणिआ मनु त्रिपतिआ सांति आई ॥ ३ ॥ पँडित पढि पढि मोनी सभिं थाके भ्रमि भेख थके भेखधारी ॥ गुर
 परसादि निरँजनु पाइआ साचै सबदि वीचारी ॥ ४ ॥ आवा गउणु निवारि सचि राते साच सबदु मनि भाइआ ॥ सतिगुरु
 सेवि सदा सुखु पाईए जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ ५ ॥ साचै सबदि सहज धुनि उपजै मनि साचै लिव लाई ॥ अगम
 अगोचरु नामु निरँजनु गुरमुखि मँनि वसाई ॥ ६ ॥ एकस महि सभु जगतो वरतै विरला एकु पछाणै ॥ सबदि मरै ता सभु
 किछु सूझै अनदिनु एको जाणै ॥ ७ ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु बूझै होरु कहणा कथनु न जाई ॥ नानक नामि रते
 सदा बैरागी एक सबदि लिव लाई ॥ ८ ॥ २ ॥ सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि की अकथ कहाणी ॥ हरि नदरि करे सोई
 जनु पाए गुरमुखि विरलै जाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गहिर गँभीरु गुणी गहीरु गुर कै सबदि पछानिआ ॥ बहु बिधि करम
 करहि भाइ दूजै बिनु सबदै बउरानिआ ॥ १ ॥ हरि नामि नावै सोई जनु निरमलु फिरि मैला मूलि न होई ॥ नाम बिना सभु
 जगु है मैला दुजै भरमि पति खोई ॥ २ ॥ किआ द्विडां किआ सँग्रहि तिआगी मै ता बूझ न पाई ॥ होहि दइआलु क्रिपा करि
 हरि जीउ नामो होइ सखाई ॥ ३ ॥ सचा सचु दाता करम बिधाता जिसु भवै तिसु नाइ लाए ॥ गुरु दुआरै सोई बूझै जिस
 नो आपि बुझाए ॥ ४ ॥ देखि बिसमादु इहु मनु नही चेतै आवा गउणु सँसारा ॥ सतिगुरु सेवे सोई बूझै पाए मोख दुआरा
 ॥ ५ ॥ जिन्ह दरु सूझै से कदे न विगाड़हि सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ सचु सँजमु करणी किरति कमावहि आवण जाणु रहाई
 ॥ ६ ॥ सेदरि साचै साचु कमावहि जिन गुरमुखि साचु अधारा ॥ मनमुखु दूजै भरमि भुलाए ना बूझहि वीचारा ॥ ७ ॥

आपे गुरुमुखि आपे देवै आपे करि करि वेखै ॥ नानक से जन थाइ पर है जिन की पति पावै लेखै ॥ ८ ॥ ३ ॥

सारंग महला ७ असटपदीआ वरु १ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

गुसाई. परतापु तुहारो डीठा ॥ करन करावन उपाइ समावन सगल छत्रपति बीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राणा राउ राज भए रँका
उनि झूठे कहणु कहाइओ ॥ हमरा राजनु सदा सलामति ता को सगल घटा जसु गाइओ ॥ १ ॥ उपमा सुनहु राजन की
सँतहु कहत जेत पाहूचा ॥ बेसुमार बड साह दातारा ऊचे ही ते ऊचा ॥ २ ॥ पवनि परोइओ सगल अकारा पावक कासट
सँगे ॥ नीरु धरणि करि राखे एकत कोइ न किस ही सँगे ॥ ३ ॥ घटि घटि कथा राजन की चालै घरि घरि तुझहि उमाहा ॥
जीअ जँत सभि पाछै करिआ प्रथमे रिजकु समाहा ॥ ४ ॥ जो किछु करणा सु आपे करणा समलति काहू दीन्ही ॥ अनिक
जतन करि करह दिखाए साची साखी चीन्ही ॥ ५ ॥ हरि भगता करि राखे अपने दीनी नामु वडाई ॥ जिनि जिनि करी
अवगिआ जन की ते तै दीए रुढाई ॥ ६ ॥ मुकति भए साधसंगति करि तिन के अवगन सभि परहरिआ ॥ तिन कउ देखि
भए किरपाला तिन भव सागरु तरिआ ॥ ७ ॥ हम नान्हे नीच तुम्हे बड साहिब कुदरति कउण बीचारा ॥ मनु तनु सीतलु
गुर दरस देखे नानक नामु अधारा ॥ ८ ॥ १ ॥

सारंग महला ७ असटपदी वरु ६ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

अगम अगाधि सुनहु जन कथा ॥ पारब्रहम की अचरज सभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सदा सतिगुर नमसकार ॥ गुर किरपा
ते गुन गाइ अपार ॥ मन भीतरि होवै परगासु ॥ गिआन अँजनु अगिआन बिनासु ॥ १ ॥ मिति नाही जा का बिसथारु
॥ सोभा ता की अपर अपार ॥ अनिक रँगु जा के गने न जाहि ॥ सोग हरख दुहहू महि नाहि ॥ २ ॥ अनिक ब्रहमे जा के
बेद धुनि करहि ॥ अनिक महेस बैसि धिआनु धरहि ॥ अनिक पुरख अँसा अवतार ॥ अनिक इँद्र ऊभे दरबार ॥ ३ ॥

अनिक पवन पावक अरु नीर ॥ अनिक रतन सागर दधि खीर ॥ अनिक सूर ससीअर नखिआति ॥ अनिक देवी देवा
 बहु भांति ॥ ४ ॥ अनिक बसुधा अनिक कामधेन ॥ अनिक पारजात अनिक मुखि बेन ॥ अनिक अकास अनिक
 पाताल ॥ अनिक मुखी जपीऐ गोपाल ॥ ५ ॥ अनिक सासत्र सिमीति पुरान ॥ अनिक जुगति होवत बखिआन ॥
 अनिक सरोते सुनहि निधान ॥ सरब जीअ पूरन भगवान ॥ ६ ॥ अनिक धरम अनिक कुमेर ॥ अनिक बरन अनिक
 कनिक सुमेर ॥ अनिक सेख नवतन नामु लेहि ॥ पारब्रहम का अँतु न तेहि ॥ ७ ॥ अनिक पुरीआ अनिक तह खँड
 ॥ अनिक रूप रँग ब्रहमँड ॥ अनिक बना अनिक फल मूल ॥ आपहि सूखम आपहि असथूल ॥ ८ ॥ अनिक
 जुगादि दिनस अरु राति ॥ अनिक परलउ अनिक उतपाति ॥ अनिक जीअ जा के ग्रिह माहि ॥ रमत राम पूरन सब
 ठाँइ ॥ ९ ॥ अनिक माइआ जा की लखी न जाइ ॥ अनिक कला खेलै हरि राइ ॥ अनिक धुनित ललित संगीत ॥
 अनिक गुप्त प्रगटे तह चीत ॥ १० ॥ सभ ते ऊछ भगत जा कै सँगि ॥ आठ पहर गुन गावहि रँगि ॥ अनिक
 अनाहद आनँद झुनकार ॥ उआरस का कछु अँतु न पार ॥ ११ ॥ सति पुरखु सति असथानु ॥ ऊच ते ऊच निरमल
 निरवानु ॥ अपुना कीआ जानहि आपि ॥ आपे घटि घटि रहिओ बिआपि ॥ क्रिपा निधान नानक दइआल ॥ जिनि
 जपिआ नानक ते भए निहाल ॥ १२ ॥ १ ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥

शारंग छँत महला ७ १३ शितिगुर प्रसादि ॥

सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ घटि घटि पूरन है अलिंपाता ॥ घटि घटि पूरनु करि बिसथीरनु जल तरँग जिउ रचनु
 कीआ ॥ हभि रस माणे भोग घटाणे आन न बीआ को थीआ ॥ हरि रँगि इक रँगि ठाकुरु सँतसँगि प्रभु जाता ॥
 नानक दरसि लीना जिउ जल मीना सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ १ ॥ कउन उपमा देउ कवन बडाई ॥ पूरन पुरि
 रहिओ सब ठाई ॥ पूरन मनमोहन घट घट सोहन जब खिँचै तब छाई ॥ किउ न अराधहु मिलि करि साधहु घरी मुहतक

बेला आई ॥ अरथु दरबु सभु जो किछु दीसै सँगि न कछहू जाई ॥ कहु नानक हरि हरि आराधहु कवन उपमा देउ कवन बडाई ॥ २ ॥ पूछउ संत मेरो ठाकुरु कैसा ॥ हींउ अराधउं देहु सदेसा ॥ देहु सदेसा प्रभ जीउ कैसा कह मोहन परवेसा ॥ अँग अँग सुखदाई पूरन ब्रहमाई थान थानंतर देसा ॥ बँधन ते मुकता घटि घटि जुगता कहि न सकउ हरि जैसा ॥ देखि चरित नानक मनु मोहिओ पूछै दीनु मेरो ठाकुरु कैसा ॥ ३ ॥ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ धँनि सु रिदा जिह चरन बसाइआ ॥ चरन बसाइआ संत संगाइआ अगिआन अँधेरु गवाइआ ॥ भइआ प्रगासु रिदै उलासु प्रभु लोड़ीदा पाइआ ॥ दुखु नाठा सुखु घर महि वूठा महा अनंद सहजाइआ ॥ कहु नानक मै पूरा पाइआ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

शारंग की वार महला ४ राइ महमे रसने की धुनि १८ शितिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला २ ॥ गुरु कुंजी पाहू निवलु मन कोठा तनु छति ॥ नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघडै अवर कुंजी हथि ॥ १ ॥ महला १ ॥ न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥ न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ न भीजै रूपीं मालीं, रंगि ॥ न भीजै तीरथि भविरे नाँगि ॥ न भीजै दातीं, कीतै पुँनि ॥ न भीजै बाहरि बैठिआ सुँनि ॥ न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूर ॥ न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीए मन कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥ २ ॥ महला १ ॥ नव छिअ खट का करे बीचारु ॥ निसि दिन उचरै भार अठार ॥ तिनि भी अँतु न पाइआ तोहि ॥ नाम बिहूण मुकति किउ होइ ॥ नाभि वसत ब्रहमै अँतु न जाणिआ ॥ गुरमुखि नानक नामु पछाणिआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपे आपि निरँजना जिनि आपु उपाइआ ॥ आपे खेलु रचाइओनु सभु जगतु सबाइआ ॥ त्रै गुण आपि सिरजिअनु माइआ मोहु वधाइआ ॥ गुर परसादी उबरे जिनि भाणा भाइआ ॥ नानक सचु वरतदा सभ सचि समाइआ ॥ १ ॥ सलोक महला २ ॥ आपि उपाए नानका आपे रखै वेक ॥

मँदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥ सभना साहिबु एकु है वेखै धँधै लाइ ॥ किसै थोड़ा किसै अगला खाली
 कोई नाहि ॥ आवहि नँगे जाहि नँगे विचे करहि विथार ॥ नानक हुकमु न जाणीऐ अगै कार्ड कार ॥ १ ॥ महला १ ॥
 जिनसि थापि जीआं कउ भेजै जिनसि थापि लै जावै ॥ आपे थापि उथापै आपे एते वेस करावै ॥ जेते जीअ फिरहिं
 अउधूती आपे भिखिआ पावै ॥ लेखै बोलणु लेखै चलणु काइतु कीचहि दावे ॥ मूलु मति परवाणा एहो नानकु आखिं
 सुणाए ॥ करणी उपरि होइ तपावसु जे को कहै कहाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि चलतु रचाइओनु गुण परगटी आइआ
 ॥ गुरबाणी सद उचरै हरि मँनि वसाइआ ॥ सकति गई भ्रमु कटिआ सिव जोति जगाइआ ॥ जिन कै पोतै पुँनु है गुरु
 पुरखु मिलाइआ ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि नामि समाइआ ॥ २ ॥ सलोक महला २ ॥ साह चले वणजारिआ
 लिखिआ देवै नालि ॥ लिखे उपरि हुकमु होइ लईऐ वसतु सम्हालि ॥ वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइ ॥ कोई लाहा
 लै चले इकि चले मूलु गवाइ ॥ थोड़ा किनै न मँगिओ किसु कहीऐ साबासि ॥ नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए
 रासि ॥ १ ॥ महला १ ॥ जुड़ि जुड़ि विछुड़े विछुड़ि जुड़े ॥ जीवि जीवि मुए मुए जीवे ॥ केतिआ के बाप केतिआ के बेटे
 केते गुर चले हूए ॥ आगै पाछै गणत न आवै किआ जाती किआ हुणि हूए ॥ सभु करणा किरतु करि लिखीऐ करि करि
 करता करे करे ॥ मनमुखि मरीऐ गुरमुखि तरीऐ नानक नदरी नदरि करे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनमुखि दूजा भरमु है दूजै
 लोभाइआ ॥ कूडु कपटु कमावदे कूडो आलाइआ ॥ पुत्र कलत्रु मोहु हेतु है सभु दुखु सबाइआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि
 भरमहि भरमाइआ ॥ मनमुखि जनमु गवाइआ नानक हरि भाइआ ॥ ३ ॥ सलोक महला २ ॥ जिन वडिआई तेरे नाम
 की ते रते मन माहि ॥ नानक अँम्रितु एकु है दूजा अँम्रितु नाहि ॥ नानक अँम्रितु मनै माहि पाईऐ गुर परसादि ॥ तिन्ही
 पीता रँग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आदि ॥ १ ॥ महला २ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥ नानक एकी

बाहरा दूजा दाता नाहि ॥ करता सो सालाहीऐ जिनि कीता आकारु ॥ दाता सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ नानक
 आपि सदीव है पूरा जिसु भँडारु ॥ वडा करि सालाहीऐ अँतु न पारावारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि का नामु निधानु है सेविऐ
 सुखु पाई ॥ नामु निरँजनु उचरां पति सिउ घरि जाई ॥ गुरुमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई ॥ मति पँखेरु वसि होइ
 सतिगुरु धिआई ॥ नानक आपि दइआलु होइ नामे लिवलाई ॥ ४ ॥ सलोक महला २ ॥ तसु सिउ कैसा बोलणा जि आपे
 जाणै जाणु ॥ चीरी जा की ना फिरै साहिबु सो परवाणु ॥ चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥ जो तिसु भावै नानका
 साई भली कार ॥ जिना चीरी चलणा हथि तिन्हा किछु नाहि ॥ साहिब का फुरमाणु होइ उठी करलै पाहि ॥ जेहा चीरी
 मिलिआ तेहा हुकमि कमाहि ॥ घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥ १ ॥ महला २ ॥ सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई
 पोतेदार ॥ कुँजी जिन कउ दितीआ तिन्हा मिले भँडार ॥ जह भँडारी हू गुण निकलहि ते कीअहि परवाणु ॥ नदरि तिन्हा
 कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु निरँजनु निरमला सुणिए सुखु होई ॥ सुणि सुणि मँनि वसाईऐ बूझै
 जनु कोई ॥ बहदिआ उठदिआ न विसरै साचा सचु सोई ॥ भगता कउ नाम अधारु है नामे सुखु होई ॥ नानक मनि तबनि
 रवि रहिआ गुरुमुखि हरि सोई ॥ ५ ॥ सलोक महला १ ॥ नानक तुलीअहि तोल जे जीउ पिछै पाईऐ ॥ इकसु न पुजहि बोल
 जे पूरे पूरा करि मिलै ॥ वडा आखणु भारा तोलु ॥ होर हउली मती हउले बोल ॥ धरती पाणी परबत भारु ॥ किउ कँडै तोलै
 सुनिआरु ॥ तोला मासा रतक पाइ ॥ नानक पुछिआ देइ पुजाइ ॥ मूरख अँधिआ अँधी धातु ॥ कहि कहि कहणु कहाइनि
 आपु ॥ १ ॥ महला १ ॥ आखणि अउखा सुणणि अउखा आखि न जापी आखि ॥ इकि आखि आखहि सबदु भाखहि
 अरध उरध दिनु राति ॥ जे किह होइ त किहु दिसै जापै रूपु न जाति ॥ सभिं कारण करता करे घट अउघट घट थापि ॥
 आखणि अउखा नानका आखि न जापै आखि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणिए मनु रहसीऐ नामे सांति आई ॥ नाइ

सुणिए मनु त्रिपतीए सभ दुख गवाई ॥ नाइ सुणीए नाउ ऊपजै नामे वडिआई ॥ नामे ही सभ जाति पति नामे गति पाई ॥
॥ गुरमुखि नामु धिआईए नानक लिव लाई ॥ ६ ॥ सलोक महला १ ॥ जूठि न रागीं, जूठि न वेदीं, ॥ जूठि न चँद सूरज
की भेदी ॥ जूठि न अँनी जूठि न नाई ॥ जूठि न मीहु वहिँए सभ थाई ॥ जूठि न धरती जूठि न पाणी ॥ जूठि न पउणै
माहि समाणी ॥ नानक निगुरिआ गुणु नाही कोइ ॥ मुहि फेरिँए मुहु जूठा होइ ॥ १ ॥ महला १ ॥ नानक चुलीआ
सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥ सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥ ब्रहमण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु
॥ राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥ पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥ पाणी पिता जगत का फिरि
पाणी सभु खाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ नाइ सुणिए सभ सिधि है रिधि पिछै आवै ॥ नाइ सुणिए नउ निधि मिलै मन चिँदिआ
पावै ॥ नाइ सुणिए संतोखु होइ कवला चरन धिआवै ॥ नाइ सुणिए सहजु ऊपजै सहजे सुखु पावै ॥ गुरमती नाउ पाईए
नानक गुण गावै ॥ ७ ॥ सलोक महला १ ॥ दुख विचि जँमणु दुखि मरणु दुखि वरतणु संसारि ॥ दुखु दुखु अगै आखीए
पढ़ि पढ़ि करहि पुकार ॥ दुख कीआ पँडा खुलहीआ सुखु न निकलिओ कोइ ॥ दुख विचि जीउ जलाइआ दुखीआ चलिआ
रोइ ॥ नानक सिफती रतिआ मनु तनु हरिआ होइ ॥ दुख कीआ अगी मारीअहि भी दुखु दारु होइ ॥ १ ॥ महला १ ॥
नानक दुनीआ भसु रँगु भसू हू भसु खेह ॥ भसो भसु कमावणी भी भसु भरीए देह ॥ जा जीउ विचहु कटीए भसू भरिआ
जाइ ॥ अगै लेखै मँगिरे होर दसूणी पाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ नाइ सुणिए सुचि संजमो जमु नेड़ि न आवै ॥ नाइ सुणिए घटि
चानणा आनेहरु गवावै ॥ नाइ सुणिए आपु बुझीए लाहा नाउ पावै ॥ नाइ सुणिए पाप कटीअहि निरमल सचु पावै ॥
नानक नाइ सुणिए मुख उजले नाउ गुरमुखि धिआवै ॥ ८ ॥ सलोक महला १ ॥ घरि नाराइणु सभा नालि ॥ पूज करे
रखै नावालि ॥ कुँगू चँनणु फुल चड़ाए ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाए ॥ माणूआ मँगि मँगि पैन्हे खाइ ॥ अँधी कँमी अँध सजाइ
॥

भुखिआ देइ न मरदिआ रखै ॥ अँधा झगड़ा अँधी सथै ॥ १ ॥ महला १ ॥ सभे सुरती जोग सभि सभे बेद पुराण ॥ सभे
 करणे तप सभि सभे गीत गिआन ॥ सभे बुधी सुधि सभि सभि तीरथ सभि थान ॥ सभि पातिसाहीआ अमर सभि सभि
 खुसीआ सभि खान ॥ सभे माणस देव सभि सभो जोग धिआन ॥ सभे पुरीआ खँड सभि सभे जीअ जहान ॥ हुकमि
 चलाए आपणै करमी वहै कलाम ॥ नानक सचा सचि नाइ सचु सभा दीबानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ मँनिरे सुखु ऊपजै नामे
 गति होई ॥ नाइ मँनिरे पति पाईरे हिरदै हरि सोई ॥ नाइ मँनिरे भवजलु लँघीरे फिरि बिघनु न होई ॥ नाइ मँनिरे पँथु
 परगटा नामे सभ लोई ॥ नानक सतिगुरि मिलिरे नाउ मँनिरे जिन देवै सोई ॥ ९ ॥ सलोक मः १ ॥ पुरीआ खँडा सिरि
 करे इक पैरि धिआए ॥ पउणु मारि मनि जपु करे सिरु मुँडी तलै देइ ॥ किसु उपरि ओहु टिक टिकै किस नो जोरु करेइ ॥
 जिस नो कहीरे नानका किस नो करता देइ ॥ हुकमि रहाए आपणै मूरखु आपु गणेइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ है है आखां कोटि
 कोटि कोटी हू कोटि कोटि ॥ आखँ आखां सदा सदा कहणि न आवै तोटि ॥ ना हउ थकां न ठाकीआ एवड रखहि जोति ॥
 नानक चसिअहु चुख बिंद उपरि आखणु दोसु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ मँनिरे कुलु उधरै सभु कुटँबु सबाइआ ॥ नाइ मँनिरे
 संगति उधरै जिन रिदै वसाइआ ॥ नाइ मँनिरे सुणि उधरे जिन रसन रसाइआ ॥ नाइ मँनिरे दुख भुख गई जिन नामि चितु
 लाइआ ॥ नानक नामु तिनी सालाहिआ जिन गरु मिलाइआ ॥ १० ॥ सलोक मः १ ॥ सभे राती सभि दिह सभि थिती
 सभि वार ॥ सभे रुती माह सभि धरतीं, सभि भार ॥ सभे पाणी पउण सभि सभि अगनी पाताल ॥ सभे पुरीआ खँड सभि
 सभि लोअ लोअ आकार ॥ हुकमु न जापी केतड़ा कहि न सकीजै कार ॥ आखहि थकहि आखि आखि करि सिफतीं,
 वीचार ॥ त्रिणु न पाइओ बपुड़ी नानकु कहै गवार ॥ १ ॥ मः १ ॥ अखीं, परणै जे फिरां देखां सभु आकारु ॥ पुछा
 गिआनी पँडितां पुछा बेद बीचार ॥ पुछा देवां माणसां जोध करहि अवतार ॥ सिध समाधी सभि सुणी जाइ देखां दरबारु
 ॥

अगै सचा सचि नाइ निरभउ भै विणु सारु ॥ होर कची मती कचु पिचु अँधिआ अँधु बीचारु ॥ नानक करमी बँदगी नदरि
 लँघाए पारि ॥ २ ॥ पउडी ॥ नाइ मँनिरे दुर्मति गई मति परगटी आइआ ॥ नाउ मँनिरे हउमै गई सभि रोग गवाइआ ॥
 नाइ मँनिरे नामु ऊपजै सहजे सुखु पाइआ ॥ नाइ मँनिरे सांति ऊपजै हरि मँनि वसाइआ ॥ नानक नामु रतँनु है गुरुमुखि हरि
 धिआइआ ॥ ११ ॥ सलोक मः १ ॥ होरु सरीकु होवै कोई तेरा तिसु अगै तुधु आखां ॥ तुधु अगै तुधै सालाही मै अँधे नाउ
 सुजाखा ॥ जेता आखणु साही सबदी भाखिआ भाइ सुभाई ॥ नानक बहुता एहो आखणु सभ तेरी वडिआई ॥ १ ॥ मः १
 ॥ जां न सिआ किआ चाकरी जां जँमे किआ कार ॥ सभि कारण करता करे देखै वारो वार ॥ जे चुपै जे मँगिरे दाति करे
 दातारु ॥ इकु दाता सभि मँगते फिरि देखहि आकारु ॥ नानक एवै जाणीरे जीवै देवणहारु ॥ २ ॥ पउडी ॥ नाइ मँनिरे
 सुरति ऊपजै नामे मति होई ॥ नाइ मँनिरे गुण उचरै नामे सुखि सोई ॥ नाइ मँनिरे भ्रमु कटीरे फिरि दुखु न होई ॥ नाइ मँनिरे
 सालाहीरे पापां मति धोई ॥ नानक पूरे गुर ते नाउ मँनीरे जिन देवै सोई ॥ १२ ॥ सलोक मः १ ॥ सासत्र बेद पुराण पढँता
 ॥ पूकारँता अजाणँता ॥ जां बूझै तां सूझै सोई ॥ नानकु आखै कूक न होई ॥ १ ॥ मः १ ॥ जां बूझै तां सूझै सोई ॥
 नानकु आखै कूक न होई ॥ १ ॥ मः १ ॥ जां हउ तेरा तां सभु किछु मेरा हउ नाही तू होवहि ॥ आपे सकता आपे सुरता
 सकती जगतु परोवहि ॥ आपे भेजे आपे सदे रचना रचि रचि वेखै ॥ नानक सचा सची नाई सचु पवै धुरि लेखै ॥ २ ॥ पउडी
 ॥ नामु निरँजन अलखु है किउ लखिआ जाई ॥ नामु निरँजन नालि है किउ पाईरे भाई ॥ नामु निरँजन वरतदा रविआ सभ
 ठाई ॥ गुर पूरे ते पाईरे हिरदै देइ दिखाई ॥ नानक नदरी करमु होइ गुर मिलीरे भाई ॥ १३ ॥ सलोक मः १ ॥ कलि होई कुते
 मुही खाजु होआ मुरदारु ॥ कूडु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥ जिन जीवँदिआ पति नही मुइआ मँदी सोइ ॥
 लिखिआ होवै नानका करता करे सु होइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ रँना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥ सीलु सँजमु

सुच भँनी खाणा खाजु अहाजु ॥ सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥ नानक सचा एकु है अउरु न सचा भालि ॥
 ॥ २ ॥ पउडी ॥ बाहरि भसम लेपन करे अँतरि गुबारी ॥ खिँथा झोली बहु भेख करे दुर्मति अहँकारी ॥ साहिब सबदु न
 ऊचरै माइआ मोह पसारी ॥ अँतरि लालचु भरमु है भरमै गावारी ॥ नानक नामु न चेतई जूरे बाजी हारी ॥ १४ ॥ सलोक
 मः १ ॥ लख सिउ प्रीति होवै लख जीवणु किआ खुसीआ किआ चाउ ॥ विछुड़िआ विसु होइ विछोड़ा एक घड़ी महि जाइ ॥
 जे सउ वहिआ मिठा खाजै भी फिरि कउड़ा खाइ ॥ मिठा खाधा चिति न आवै कउड़तणु धाइ जाइ ॥ मिठा कउड़ा देवै रोग
 ॥ नानक अँति विगुते भोग ॥ इखि इखि इखणा इगड़ा इख ॥ इखि इखि जाहि इखहि तिन्ह पासि ॥ १ ॥ मः १
 ॥ कापडु काठु रंगाइआ रांगि ॥ घर गच कीते बागे बाग ॥ साद सहज करि मनु खेलाइआ ॥ तै सह पासहु कहणु कहाइआ
 ॥ मिठा करि कै कउड़ा खाइआ ॥ तिनि कउड़ै तनि रोगु जमाइआ ॥ जे फिरि मिठा पेड़ै पाइ ॥ तउ कउड़तणु चूकसि माइ
 ॥ नानक गुरमुखि पावै सोइ ॥ जिस नो प्रापति लिखिआ होइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ जिन कै हिरदै मैलु कपटु है बाहरु
 धोवाइआ ॥ कूडु कपटु कमावदे कूडु परगटी आइआ ॥ अँदरि होइ सु निकलै नह छपै छपाइआ ॥ कूड़े लालचि लागिआ
 फिरि जूनी पाइआ ॥ नानक जो बीजै सो खावणा करतै लिखि पाइआ ॥ १५ ॥ सलोक मः २ ॥ कथा कहाणी बेदीं, आणी
 पापु पुँनु बीचारु ॥ दे दे लैणा लै लै देणा नरकि सुरगि अवतार ॥ उतम मधिम जातीं जिनसी भरमि भवै संसारु ॥ अँमित
 बाणी ततु वखाणी गिआन धिआन विचि आई ॥ गुरमुखि आखी गुरमुखि जातीं सुरतीं, करमि धिआई ॥ हुकमु साजि हुकमै
 विचि रखै हुकमै अँदरि वेखै ॥ नानक अगहु हउमै तुटै तां को लिखीरे लेखै ॥ १ ॥ मः १ ॥ बेदु पुकारे पुँनु पापु सुरग नरक
 का बीउ ॥ जो बीजै सो उगवै खांदा जाणै जीउ ॥ गिआनु सलाहे वडा करि सचो सचा नाउ ॥ सचु बीजै सचु उगवै दरगह
 पाईए थाउ ॥ बेदु वपारी गिआनु रासि करमी पलै होइ ॥ नानक रासी बाहरा लदि न चलिआ कोइ ॥ २ ॥ पउडी ॥

निँम् बिखु बहु सँचीरे अँमित रसु पाइआ ॥ बिसीअरु मँत्रि विसाहीरे बहु दूधु पीआइआ ॥ मनमुखु अभिँनु न भिजई
 पथरु नावाइआ ॥ बिखु महि अँमितु सिँचीरे बिखु का फलु पाइआ ॥ नानक संगति मेलि हरि सभ बिखु लहि जाइआ ॥
 १६ ॥ सलोक मः १ ॥ मरणि न मूरतु पुछिआ पुछी थिति न वारु ॥ इकन्ही लदिआ इकि लदि चले इकन्ही बधे भार ॥
 इकन्हा होई साखती इकन्हा होई सार ॥ लसकर सणै दमामिआ छुटे बँक दुआर ॥ नानक ढेरी छारु की भी फिरि होई छार
 ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक ढेरी ढहि पई मिटी सँदा कोटु ॥ भीतरि चोरु बहालिआ खोटु वे जीआ खोटु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
 जिंन अँदरि निँदा दुसटु है नक वढे नक वढाइआ ॥ महा करूप दुखीए सदा काले मुह माइआ ॥ भलके उठि नित पर दरबु
 हिरहि हरि नामु चुराइआ ॥ हरि जीउ तिन की संगति मत करहु रखि लेहु हरि राइआ ॥ नानक पइरे किरति कमावदे
 मनमुखि दुखु पाइआ ॥ १७ ॥ सलोक मः ४ ॥ सभु कोई है खसम का खसमहु सभु को होइ ॥ हुकमु पछाणै खसम का ता
 सचु पावै कोइ ॥ गुरमुखि आपु पछाणीरे बुरा न दीसै कोइ ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआईरे सहिला आइआ सोइ ॥ १ ॥
 मः ४ ॥ सभना दाता आपि है आपे मेलणहारु ॥ नानक सबदि मिले न विछुडहि जिना सेविआ हरि दातारु ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ गुरमुखि हिरदै सांति है नाउ उगवि आइआ ॥ जप तप तीरथ सँजम करे मेरे प्रभ भाइआ ॥ हिरदा सुधु हरि सेवदे सोहहि
 गुण गाइआ ॥ मेरे हरि जीउ एवै भवदा गुरमुखि तराइआ ॥ नानक गुरमुखि मेलिआनु हरि दरि सोहाइआ ॥ १८ ॥
 सलोक मः १ ॥ धनवँता इव ही कहै अवरी धन कउ जाउ ॥ नानकु निरधनु तितु दिनि जितु दिनि विसरै नाउ ॥ १ ॥ मः १
 ॥ सूरजु चडै विजोगि सभसै घटै आरजा ॥ तनु मनु रता भोगि कोई हरै को जिणै ॥ सभु को भरिआ फूकि आखणि
 कहणि न थँमीहरे ॥ नानक वेखै आपी फूक कढाए ढहि पवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतसंगति नामु निधानु है जिथहु हरि पाइआ
 ॥ गुर परसादी घटि चानणा आन्हरु गवाइआ ॥ लोहा पारसि भेटीरे कँचनु होइ आइआ ॥ नानक सतिगुरि मिलिरे

नाउ पाईऐ मिलि नामु धिआइआ ॥ जिन्ह कै पोतै पुँनु हत तिन्ही दरसनु पाइआ ॥ १९ ॥ सलोक मः १ ॥ धिगु तिना
का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥ खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥ सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न
दादि ॥ अकलि एह न आखीऐ अकलि गवाईऐ बादि ॥ अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ अकली पढि कै
बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ नानकु आखै राहु एहु होरि गलां सैतानु ॥ १ ॥ मः २ ॥ जैसा करै कहावै तैसा ऐसी बनी
जरूरति ॥ होवहि लिँड झिँड नह होवहि ऐसी कहीऐ सूरति ॥ जो ओसु इछे सो फलु पाए तां नानक कहीऐ मूरति ॥ २
॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु अँमित बिरखु है अँमित रसि फलिआ ॥ जिसु परापति सो लहै गुर सबदी मिलिआ ॥ सतिगुरु कै
भाणै जो चलै हरि सेती रलिआ ॥ जमकालु जोहि न सकई घटि चानणु बलिआ ॥ नानक बखसि मिलाइअनु फिरि गरभि
न गलिआ ॥ २० ॥ सलोक मः १ ॥ सचु वस्तु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥ दइआ देवता खिमा जपमाली
ते माणस परधान ॥ जुगति धोती सुरति चउका तिलकु करणी होइ ॥ भाउ भोजनु नानका विरला त कोई कोइ ॥ १ ॥
महला ३ ॥ नउमी नेमु सचु जे करै ॥ काम क्रोधु त्रिसना उचरै ॥ दसमी दसे दुआर जे ठाकै एकादसी एकु करि जाणै ॥
दुआदसी पँच वसगति करि राखै तउ नानक मनु मानै ॥ ऐसा वस्तु रहीजै पाडे होर बहुतु सिख किआ दीजै ॥ २ ॥ पउड़ी
॥ भूपति राजे रँग राइ सँचहि बिखु माइआ ॥ करि करि हेतु वधाइदे पर दरबु चुराइआ ॥ पुत्र कलत्र न विसहहि बहु प्रीति
लगाइआ ॥ वेखदिआ ही माइआ धुहि गई पछुतहि पछुताइआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि नानक हरि भाइआ ॥ २१ ॥
सलोक मः १ ॥ गिआन विहूणा गावै गीत ॥ भुखे मुलां घरे मसीति ॥ मखटू होइ कै कँन पड़ाए ॥ फकरु करे होरु
जाति गवाए ॥ गुरु पीरु सदाए मँगण जाइ ॥ ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु
पछाणहि सेइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ मनहु जि अँधे कूप कहिआ बिरदु न जाणन्ही ॥ मनि अँधै ऊँधै कवलि दिसन्हि

खरे करूप ॥ इकि कहि जाणहि कहिआ बुझहि ते नर सुघड़ सरूप ॥ इकना नाद न बेद न गीअ रसु रस कस न जाणँति ॥
 ॥ इकना सुधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहँति ॥ नानक से नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करँति ॥ २ ॥
 ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि सभ पवितु है धनु सँपै माइआ ॥ हरि अरथि जो खरचदे देदे सुख पाइआ ॥ जो हरि नामु धिआइदे
 तिन तोटि न आइआ ॥ गुरमुखां नदरी आवदा माइआ सुटि पाइआ ॥ नानक भगतां होरु चिति न आवई हरि नामि
 समाइआ ॥ २२ ॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ सचै सबदि जिन्हा एक लिव लागी ॥ गिरह कुटंब
 महि सहजि समधी ॥ नानक नामि रते से सचे बैरागी ॥ १ ॥ मः ४ ॥ गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥ सबदै
 सादु न आइओ सचि न लगे भाउ ॥ सतिगुरु पिआरा न लगई मनहठि आवै जाइ ॥ जे इक विख अगाहा भरे तां दस
 विखां पिछाहा जाइ ॥ सतिगुरु की सेवा चाकरी जे चलहि सतिगुरु भाइ ॥ आपु गवाइ सतिगुरु नो मिलै सहजे रहै समाइ
 ॥ नानक तिन्हा नामु न वीसरै सचे मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ खान मलूक कहाइदे को रहणु न पाई ॥ गडह मँदर
 गच गीरीआ किछु साथि न जाई ॥ सोइन साखति पउण वेग धिगु धिगु चतुराई ॥ छतीह अँमित परकार करहि बहु मैलु
 वधाई ॥ नानक जो देवै तिसहि न जाणन्ही मनमुखि दुकु पाई ॥ २३ ॥ सलोक मः ३ ॥ पढ़ि पढ़ि पँडित मोनी थके
 देसंतर भवि थके भेखधारी ॥ दूजै भाइ नाउ कदे न पाइनि दुखु लाग़ा अति भारी ॥ मूरख अँधे त्रै गुण सेवहि माइआ कै
 बिउहारी ॥ अँदरि कपटु उदरु तरण कै ताई पाठ पड़हि गावारी ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिन हउमै विचहु मारी ॥
 नानक पड़णा गुणणा इकु नाउ है बूझै को बीचारी ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नांगे आवणा नांगे जाणा हरि हुकमु पाइआ किआ कीजै
 ॥ जिस की वसतु सोई लै जाइगा रोसु किसै सिउ कीजै ॥ गुरमुखि होवै सु भाणा मँने सहजे हरि रसु पीजै ॥ नानक
 सुखदाता सदा सलाहिहु रसना रामु रवीजै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गड़ि काइआ सीगार बह भांति बणाई ॥ रँग परँग कतीफिआ

पहिरहिं धर माई ॥ लाल सुपेद दुलीचिआ बहु सभा बणाई ॥ दुखु खाणा दुखु भोगणा गरबै गरबाई ॥ नानक नामु न
 चेतिओ अँति लए छडाई ॥ २४ ॥ सलोक मः ३ ॥ सहजे सुखि सुती सबदि समाइ ॥ आपे प्रभिं मेलिं लई गलिं लाइ ॥
 दुबिधा चूकी सहजि सुभाइ ॥ अँतरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ से कँठि लए जिं भँनि घड़ाइ ॥ नानक जो धुरिं मिले से
 हुणि आणिं मिलाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ किआ जपु जापहिं होरिं ॥ बिसटा अँदरिं कीट से मुठे धँधै
 चोरिं ॥ नानक नामु न वीसरै झूठे लालच होरिं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु सलाहनि नामु मँनि असथिरु जगि सोई ॥ हिरदै
 हरि हरि चितवै दूजा नही कोई ॥ रोमि रोमि हरि उचरै खिनु खिनु हरि सोई ॥ गुरमुखिं जनमु सकारथा निरमलु मलु खोई
 ॥ नानक जीवदा पुरखु धिआइआ अमरा पदु होई ॥ २५ ॥ सलोक मः ३ ॥ जिनी नामु विसारिआ बहु कर्म कमावहिं
 होरिं ॥ नानक जम पुरिं बधे मारीअहिं जिउ सँनीह उपरिं चोर ॥ १ ॥ मः ५ ॥ धरति सुहावड़ी आकासु सुहँदा जपँदिआ
 हरि नाउ ॥ नानक नाम विहूणिआ तिन्ह तन खावहिं काउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु सलाहनि भाउ करिं निज महली वासा
 ॥ ओइ बाहुडिं जोनि न आवनी फिरिं होहिं न बिनासा ॥ हरि सेती रँगि रवि रहे सभ सास गिरासा ॥ हरिं का रँगु कदे न
 उतरै गुरमुखिं परगासा ॥ ओइ किरपा करिं कै मेलिंअनु नानक हरि पासा ॥ २६ ॥ सलोक मः ३ ॥ जिचरु इहु मनु लहरी
 विचि है हउमै बहुतु अहँकारु ॥ सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु ॥ सेवा थाइ न पवई तिस की खपिं खपिं होइ
 खुआरु ॥ नानक सेवकु सोई आखीरे जो सिरिं धरे उतारिं ॥ सतिगुर का भाणा मँनि लए सबदु रखै उर धारिं ॥ १ ॥ मः
 ३ ॥ सो जपु तपु सेवा चाकरी जो खसमै भावै ॥ आपे बखसे मेलिं लए आपतु गवावै ॥ मिलिआ कदे न वीछुडै जोती
 जोति मिलावै ॥ नानक गुर परसादी सो बुझसी जिसु आपि बुझावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु को लेखे विचि है मनमुखु
 अहँकारी ॥ हरि नामु कदे न चेतई जमकालु सिरिं मारी ॥ पाप बिकार मनूर सभिं लदे बहु भारी ॥ मारगु बिखमु डरावणा

किउ तरीऐ तारी ॥ नानक गुरि राखे से उबरे हरि नामि उधारी ॥ २७ ॥ सलोक मः ३ ॥ विणु सतिगुर सेवे सुखु नही मरि
 जँमहि वारो वार ॥ मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजै भाइ विकार ॥ इकि गुर परसादी उबरे तिसु जन कउ करहि सभि
 नमसकार ॥ नानक अनदिनु नामु धिआइ तू अँतरि जितु पावहि मोख दुआर ॥ १ ॥ मः ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ
 सचु मरणा हरि नामु ॥ धँधा करतिआ जनमु गइआ अँदरि दुखु सहामु ॥ नानक सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ जिन्ह पूरबि
 लिखिआ करामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ लेखा पड़ीऐ हरि नामु फिरि लेखु न होई ॥ पुछि न सकै कोइ हरि दरि सद ढोई ॥
 जमकालु मिलै दे भेट सेवकु नित होई ॥ पूरे गुर ते महलु पाइआ पति परगटु लोई ॥ नानक अनहद धुनी दरि वजदे मिलिआ
 हरि सोई ॥ २८ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुर का कहिआ जे करे सुखी हू सुखु सारु ॥ गुर की करणी भउ कटीऐ नानक पावहि
 पारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइ ॥ गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ि न आवणु होइ ॥ नानक नामि
 विसारिऐ आवण जाणा दोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मँगत जनु जाचै दानु हरि देहु सुभाइ ॥ हरि दरसन की पिआस है दरसनि
 त्रिपताइ ॥ खिनु पलु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरां माइ ॥ सतिगुरि नालि दिखालिआ रवि रहिआ सभ थाइ ॥ सुतिआ
 आपि उठालि देइ नानक लिव लाइ ॥ २९ ॥ सलोक मः ३ ॥ मनमुख बोलि न जाणन्ही ओना अँदरि कामु क्रोधु अहँकारु
 ॥ थाउ कुथाउ न जाणनी सदा चितवहि बिकार ॥ दरगह लेखा मँगीऐ ओथै होहि कूड़िआर ॥ आपे स्त्रिसटि उपाइअनु
 आपि करे बीचारु ॥ नानक किस नो आखीऐ सभु वरतै आपि सचिआरु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हरि गुरमुखि तिन्ही अराधिआ
 जिन्ह करमि परापति होइ ॥ नानक हउ बलिहारी तिन्ह कउ जिन्ह हरि मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आस करे सभु
 लोके बहु जीवणु जाणिआ ॥ नित जीवण कउ चितु गइह मँडप सवारिआ ॥ वलवँच करि उपाव माइआ हिरि आणिआ ॥
 जमकालु निहाले सास आव घटै बेतालिआ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे हरि गुर रखवालिआ ॥ ३० ॥

सलोक मः ३ ॥ पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणदे माइआ मोह सुआइ ॥ दूजै भाइ नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥
 जिन्हि कीते तिसै न सेवन्ही देदा रिजकु समाइ ॥ जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवहि जाइ ॥ जिन कउ पूरबि
 लिखिआ सतिगुरु मिलिआ तिन आइ ॥ अनदिनु नामु धिआइदे नानक सचि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सचु वणजहि सचु
 सेवदे जि गुरुमुखि पैरी पाहि ॥ नानक गुरकै भाणै जे चलहि सहजे सचि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आसा विचि अति दुखु
 घणा मनमुखि चितु लाइआ ॥ गुरुमुखि भए निरास परम सुखु पाइआ ॥ विचे गिरह उदास अलिपत लिव लाइआ ॥
 ओना सोगु विजोगु न विआपई हरि भाणा भाइआ ॥ नानक हरि सेती सदा रवि रहे धुरि लए मिलाइआ ॥ ३१ ॥ सलोक
 मः ३ ॥ पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ॥ गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ ॥ अँहे वसि
 माणकु पइआ घरि घरि वेचण जाइ ॥ ओना परख न आवई अहु न पलै पाइ ॥ जे आपि परख न आवई तां पारखीआ
 थावहु लइओ परखाइ ॥ जे ओसु नालि चितु लाए तां वथु लहै नउ निधि पलै पाइ ॥ घरि होदैं धनि जगु भुखा मुआ बिनु
 सतिगुर सोझी न होइ ॥ सबदु सीतलु मनि तनि वसै तिथै सोगु विजोगु न कोइ ॥ वसतु पराई आपि गरबु करे मूरखु आपु
 गणार ॥ नानक बिनु बूझे किनै न पाइओ फिरि फिरि आवै जाए ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनि अनदु भइआ मिलिआ हरि प्रीतम
 सरसे सजण सँत पिआरे ॥ जो धुरि मिले न विछुड़हि कबहू जि आपि मेले करतारे ॥ अँतरि सबदु रविआ गुरु पाइआ
 सगले दूख निवारे ॥ हरि सुखदाता सदा सलाही अँतरि रखां उर धारे ॥ मनमुखु तिन की बखीली कि करे जि सचै सबदि
 सवारे ॥ ओना दी आपि पति रखसी मेरा पिआरा सरणागति पए गुर दुआरे ॥ नानक गुरुमुखि से सुहेले भए मुख ऊजल
 दरबारे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इसतरी पुरखै बहु प्रीति मिलि मोहु वधाइआ ॥ पुत्रु कलत्रु नित वेखै विगसै मोहि माइआ ॥
 देसि परदेसि धनु चोराइ आणि मुहि पाइआ ॥ अँति होवै वैर विरोधु को सकै न छडाइआ ॥ नानक विणु

नावै धिगु मोहु जितु लगि दुखु पाइआ ॥ ३२ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि अँमितु नामु है जितु खाथै सभ भुख जाइ ॥
 त्रिसना मूलि न होवई नामु वसै मनि आइ ॥ बिनु नावै जि होरु खाणा तितु रोगु लगै तनि धाइ ॥ नानक रस कस सबदु
 सलाहणा आपे लए मिलाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जीआ अँदरि जीउ सबदु है जितु सह मेलावा होइ ॥ बिनु सबदै जगि
 आनेहरु है सबदे परगटु होइ ॥ पँडित मोनी पड़ि पड़ि थके भेख थके तनु धोइ ॥ बिनु सबदै किनै न पाइओ दुखीए चले
 रोइ ॥ नानक नदरी पाईए करमि परापति होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इसत्री पुरखै अति नेहु बहि मँदु पकाइआ ॥ दिसदा
 सबु किछु चलसी मेरे प्रभ भाइआ ॥ किउ रहीए थिरु जगि को कढहु उपाइआ ॥ गुर पूरे की चाकरी थिरु कँधु सबाइआ
 ॥ नानक बखसि मिलाइअनु हरि नामि समाइआ ॥ ३३ ॥ सलोक मः ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ गुर का भउ हेतु
 अपारु ॥ लोभि लहरि सुधि मति गई सचि न लगै पिआरु ॥ गुरमुखि जिना सबदु मनि वसै दरगह मोख दुआरु ॥
 नानक आपे मेलि लए आपे बखसणहारु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै बिँद ॥ तिसु
 सिउ किउ मन रूसीए जिसहि हमारी चिँद ॥ २ ॥ मः ४ ॥ सावण आइआ झिम झिमा हरि गुरमुखि नामु धिआइ ॥
 दुख भुख काड़ा सभु चुकाइसी मीहु वुठा छरबर लाइ ॥ सभ धरति भई हरीआवली अँनु जँमिआ बोहल लाइ ॥ हरि
 अचिँतु बुलावै क्रिपा करि हरि आपे पावै थाइ ॥ हरि तिसहि धिआवहु संत जनहु जु अँते लए छडाइ ॥ हरि कीरति भगति
 अनँदु है सदा सुखु वसै मनि आइ ॥ जिन्हा गुरमुखि नामु अराधिआ तिना दुख भुख लहि जाइ ॥ जन नानकु त्रिपतै
 गाइ गुण हरि दरसनु देहु सुभाइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ गुर पूरे की दाति नित देवै चडै सवाईआ ॥ तुसि देवै आपि दइआलु न
 छपै छपाईआ ॥ हिरदै कवलु प्रगासु उनमनि लिंव लाईआ ॥ जे को करे उस दी रीस सिरि छाई पाईआ ॥ नानक अपड़ि
 कोइ न सकई पूरे सतिगुर की वडिआईआ ॥ ३४ ॥ सलोक मः ३ ॥ अमरु वेपरवाहु है तिसु नालि सिआणप

न चलई न हुजति करणी जाइ ॥ आपु छोडि सरणाइ पवै मॉनि लए रजाइ ॥ गुरमुखि जम डंडु न लगई हउमै विचहु जाइ ॥
 नानक सेवकु सोई आखीरे जि सचि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ दाति जोति सभ सूरति तेरी ॥ बहुतु सिआणप हउमै मेरी ॥
 बहु करम कमावहि लोभि मोहि विआपे हउमै कदे न चूकै फेरी ॥ नानक आपि कराए करता जो तिसु भावै साई गल चंगेरी ॥ २ ॥
 पउडी मः ५ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचु नामु अधारु ॥ गुरि पूरै मेलाइआ प्रभु देवणहारु ॥ भागु पूरा तिन जागिआ जपिआ
 निरंकारु ॥ साधू संगति लागिआ तरिआ संसारु ॥ नानक सिफति सलाह करि प्रभ का जैकारु ॥ ३५ ॥ सलोक मः ५ ॥ सभे
 जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥ अँनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भँनि तरु ॥ अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥
 लेवहु कँठि लगाइ अपदा सभ हरु ॥ नानक नामु धिआइ प्रभ का सफलु घरु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ वुठे मेघ सुहावणे हुकमु कीता
 करतारि ॥ रिजकु उपाइओनु अगला ठाँडि पई संसारि ॥ तनु मनु हरिआ होइआ सिमरत अगम अपार ॥ करि किरपा प्रभ
 आपणी सचे सिरजणहार ॥ कीता लोड़हि सो करहि नानक सद बलिहार ॥ २ ॥ पउडी ॥ वडा आपि अगँमु है वडी वडिआई ॥
 गुर सबदी वेखि विगसिआ अँतरि सांति आई ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे है भाई ॥ आपि नाथु सभ नथीअनु सभ हुकमि
 चलाई ॥ नानक हरि भावै सो करे सभ चलै रजाई ॥ ३६ ॥ १ ॥ सुधु ॥

रागु सारंग बाणी भगतां की ॥ कबीर जी ॥ १३३ सतिगुर प्रसादि ॥

कहा नर गरबसि थोरी बात ॥ मन दस नाजु टका चारि गांठी ऐंडौ टेढौ जातु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुतु प्रतापु गांउ सउ पाए दुइ लख
 टका बरात ॥ दिवस चारि की करहु साहिबी जैसे बन हर पात ॥ १ ॥ ना कोऊ लै आइओ इहु धनु ना कोऊ लै जातु ॥ रावन हूँ
 ते अधिक छत्रिपति खिन महि गए बिलात ॥ २ ॥ हरि के संत सदा थिरु पूजहु जो हरि नामु जपात ॥ जिन कउ क्रिपा

।करत है गोबिंदु ते सतसंगि मिलात ॥ ३ ॥ मात पिता बनिता सुत संपति अति न चलत संगत ॥ कहत कबीरु राम भजु
 बउरे जनमु अकारथ जात ॥ ४ ॥ १ ॥ राजास्रम मिति नही जानी तेरी ॥ तेरे संतन की हउ चेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हसतो
 जाइ सु रोवतु आवै रोवतु जाइ सु हसै ॥ बसतो होइ होइ सु ऊजरु ऊजरु होइ सु बसै ॥ १ ॥ जल ते थल करि थल ते कूआ
 कूप ते मेरु करावै ॥ धरती ते आकासि चढावै चढे अकासि गिरावै ॥ २ ॥ भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥ खल
 मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥ ३ ॥ नारी ते जो पुरखु करावै पुरखन ते जो नारी ॥ कहु कबीर साधु को प्रीतमु
 तिसु मूरति बलिहारी ॥ ४ ॥ २ ॥

सारंग बाणी नामदेउ जी की ॥ १४३३३तिगुर प्रसादि ॥

कांरे मन बिखिआ बन जाइ ॥ भूलौरे ठगमूरी खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे मीनु पानी महि रहै ॥ काल जाल की सुधि नही
 लहै ॥ जिहबा सुआदी लीलित लोह ॥ ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह ॥ १ ॥ जिउ मधु माखी संचै अपार ॥ मधु लीनो
 मुखि दीनी छारु ॥ गऊ बाछ कउ संचै खीरु ॥ गला बांधि दुहि लेइ अहीरु ॥ २ ॥ माइआ कारनि स्रमु अति करै ॥ सो
 माइआ लै गाडै धरै ॥ अति संचै समझै नही मूडह ॥ धनु धरती तनु होइ गइओ धूड़ि ॥ ३ ॥ काम क्रोध त्रिसना अति जरै ॥
 साधसंगति कबहू नही करै ॥ कहत नामदेउ ता ची आणि ॥ निरभै होइ भजीऐ भगवान ॥ ४ ॥ १ ॥ बदरु की न होड माधउ
 मो सिउ ॥ ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा
 ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥ १ ॥ आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा ॥ कहत नामदेउ तू
 मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥ २ ॥ २ ॥ दास अनिन मेरो निज रूप ॥ दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत
 ग्रिह कूप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी बाधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि ॥ एक समै मो कउ गहि बांधै तउ फुनि

मो पै जबाबु न होइ ॥ १ ॥ मै गुन बँध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास ॥ नामदेव जा के जीअ ऐसी तैसो ता के प्रेम
प्रगास ॥ २ ॥ ३ ॥

सारँग १४ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥ अनपावनी भगति नही उपजी भूखै दानु न दीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु न बिसरिओ क्रोधु
न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा ॥ पर निँदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥ १ ॥ बाट पारि घरु मूसि बिरानो पेटु
भरै अप्राधी ॥ जिहि परलोक जाइ अपकीरति सोई अबिदिआ साथी ॥ २ ॥ हिँसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही
पाली ॥ परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥ ३ ॥ १ ॥ ६ ॥
छाडि मन हरि बिमुखन को सँगु ॥

सारँग महला ९ सूरदास ॥ १४ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

हरि के सँग बसे हरि लोक ॥ तनु मनु अरपि सरबसु सभ अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखि भए
निरबिखई पाए है सगले थोक ॥ आन बसतु सिउ काजु न कछूरे सुँदर बदन अलोक ॥ १ ॥ सिआम सुँदर तजि आन जु
चाहत जिउ कुसटी तनि जोक ॥ सूरदास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इहु परलोक ॥ २ ॥ १ ॥ ८ ॥

सारँग कबीर जीउ ॥ १४ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु कउनु सहाई मन का ॥ मात पिता भाई सुत बनिता हितु लागो सभ फन का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगे कउ किछु तुलहा
बांधहु किआ भरवासा धन का ॥ कहा बिसासा इस भांडे का इतनकु लागै ठनका ॥ १ ॥ सगल धरम पुँन फल पावहु धूरि
बाँछहु सभ जन का ॥ कहै कबीरु सुनहु रे सँतहु इहु मनु उडन पँखेरु बन का ॥ २ ॥ १ ॥ ९ ॥

शुगु मलर चउपदे महला १ वरु १

वडि सेति नामु करता पुरुखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसदि ॥

खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि

गइआ है मरणा ॥ खसमु विसारि खुआरी कीनी धिगु जीवणु नही रहणा ॥ १ ॥ प्राणी एको नामु धिआवहु ॥ अपनी पति सेती घरि जावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधनो सेवहि तुड्डु किआ देवहि मांगहि लेवहि रहहि नही ॥ तू दाता जीआ सभना का जीआ अंदरि जीउ तूही ॥ २ ॥ गुरमुखि धिआवहि सि अँमितु पावहि सेई सूचे होही ॥ अहिनिशि नामु जपहु रे प्राणी मैले हछे होही ॥ ३ ॥ जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ॥ नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ॥ ४ ॥ १ ॥ मलर महला १ ॥ करउ बिनउ गुर अपने प्रीतम हरि वरु आणि मिलावै ॥ सुणि घनघोर सीतलु मनु मोरा लाल रती गुण गावै ॥ १ ॥ बरसु घना मेरा मनु भीना ॥ अँमित बूँद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि सुखी वर कामणि पिआरी जिसु गुर बचनी मनु मानिआ ॥ हरि वरि नारि भई सोहागणि मनि तनि प्रेमु सुखानिआ ॥ २ ॥ अवगण तिआगि भई बैरागनि असथिरु वरु सोहागु हरी ॥ सोगु विजोगु तिसु कदे न विआपै हरि प्रभि अपनी किरपा करी ॥ ३ ॥ आवण जाण नही मनु निहचलु पूरे गुर की ओट गही ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि धनु सोहागणि सचु सही ॥ ४ ॥

२ ॥ मलार महला १ ॥ साची सुरति नामि नही त्रिपते हउमै करत गवाइआ ॥ पर धन पर नारी रतु निँदा बिखु खाई दुखु
 पाइआ ॥ सबदु चीनि भै कपट न छूटे मनि मुखि माइआ माइआ ॥ अजगरि भारि लदे अति भारी मरि जनमे जनमु
 गवाइआ ॥ १ ॥ मनि भावै सबदु सुहाइआ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि भेख बहु कीन्हे गुरि राखे सचु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 तीरथि तेजु निवारि न नूहते हरि का नामु न भाइआ ॥ रतन पदारथु परहरि तिआगिआ जत को तत ही आइआ ॥
 बिसटा कीट भए उत ही ते उत ही माहि समाइआ ॥ अधिक सुआद रोग अधिकई बिनु गुर सहजु न पाइआ ॥ २ ॥ सेवा
 सुरति रहसि गुण गावा गुरमुखि गिआनु बीचारा ॥ खोजी उपजै बादी बिनसै हउ बलि बलि गुर करतारा ॥ हम नीच
 होते हीणमति झूठे तू सबदि सवारणहारा ॥ आतम चीनि तहा तू तारण सचु तारे तारणहारा ॥ ३ ॥ बैसि सुथानि कहां
 गुण तेरे किआ किआ कथउ अपारा ॥ अलखु न लखीऐ अगमु अजोनी तूँ नाथां नाथणहारा ॥ किसु पहि देखि कहउ तू
 कैसा सभि जाचक तू दातारा ॥ भगतिहीणु नानकु दरि देखहु इकु नामु मिलै उरि धारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला १ ॥
 जिनि धन पिर का सादु न जानिआ सा बिलख बदन कुमलानी ॥ भई निरासी करम की फासी बिनु गुर भरमि भुलानी ॥
 १ ॥ बरसु घना मेरा पिरु घरि आइआ ॥ बलि जावां गुर अपने प्रीतम जिनि हरि प्रभु आणि मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ नउतन प्रीति सदा ठाकुर सिउ अनदिनु भगति सुहावी ॥ मुकति भए गुरि दरसु दिखाइआ जुगि जुगि भगति सुभावी
 ॥ २ ॥ हम थारे त्रिभवण जगु तुमरा तू मेरा हउ तेरा ॥ सतिगुरि मिलिऐ निरँजनु पाइआ बहुरि न भवजलि फेरा ॥ ३
 ॥ अपुने पिर हरि देखि विगासी तउ धन साचु सीगारो ॥ अकुल निरँजन सिउ सचि साची गुरमति नामु अधारो ॥ ४ ॥
 मुकति भई बँधन गुरि खोलहे सबदि सुरति पति पाई ॥ नानक राम नामु रिंद अंतरि गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ ४ ॥
 महला १ मलार ॥ पर दारा पर धनु पर लोभा हउमै बिखै बिकार ॥ दुसट भाउ तजि निँद पराई

कामु क्रोधु चंडारु ॥ १ ॥ महल महि बैठे अगम अपार ॥ भीतरि अँमितु सोई जनु पावै ॥ जिसु गुर का सबदु रतनु
 आचार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुख सुख दोऊ सम करि जानै बुरा भला संसार ॥ सुधि बुधि सुरति नामि हरि पाईरे सतसंगति
 गुर पिआर ॥ २ ॥ अहिनिशि लाहा हरि नामु परापति गुरु दाता देवणहारु ॥ गुरमुखि सिख सोई जनु पाए जिस नो
 नदरि करे करतारु ॥ ३ ॥ काइआ महलु मंदरु घरु हरि का तिसु महि राखी जोति अपार ॥ नानक गुरमुखि महलि
 बुलाईरे हरि मेले मेलणहार ॥ ४ ॥ ५ ॥

मलार महला १ घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

पवणै पाणी जाणै जाति ॥ काइआं अगनि करे निभरांति ॥ जँमहि जीअ जाणै जे थाउ ॥ सुरता पँडितु ता जा नाउ ॥
 १ ॥ गुण गोबिंद न जाणीअहि माइ ॥ अणडीठा किछु कहणु न जाइ ॥ किआ करि आखि वखाणीरे माइ ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ ऊपरि दरि असमानि पइआलि ॥ किउ करि कहीरे देहु वीचारि ॥ बिनु जिहवा जो जपै हिआइ ॥ कोई जाणै
 कैसा नाउ ॥ २ ॥ कथनी बदनी रहै निभरांति ॥ सो बूझै होवै जिसु दाति ॥ अहिनिशि अंतरि रहै लिव लाइ ॥ सोई
 पुरखु जि सचि समाइ ॥ ३ ॥ जाति कुलीनु सेवकु जे होइ ॥ ता का कहणा कहहु न कोइ ॥ विचि सनातीं, सेवकु होइ
 ॥ नानक पण्हीआ पहिरै सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ मलार महला १ ॥ दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख ॥ इकु दुखु सकतवार
 जमदूत ॥ इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ ॥ वैद न भोले दारु लाइ ॥ १ ॥ वैद न भोले दारु लाइ ॥ दरदु होवै दुखु रहै
 सरीर ॥ ऐसा दारु लगै न बीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खसमु विसारि कीए रस भोग ॥ तां तनि उठि खलोए रोग ॥ मन अँधे
 कउ मिलै सजाइ ॥ वैद न भोले दारु लाइ ॥ २ ॥ चंदन का फलु चंदन वासु ॥ माणस का फलु घट महि सासु ॥ सासि
 गइरे काइआ ढलि पाइ ॥ ता कै पाछै कोइ न खाइ ॥ ३ ॥ कँचन काइआ निरमल हँसु ॥ जिसु महि नामु निरँजन अँसु
 ॥ दूख रोग सभि गइआ गवाइ ॥ नानक छूटसि साचै नाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥ मलार महला १ ॥ दुख महुरा

मारण हरि नामु ॥ मिला संतोख पीसणु हथि दानु ॥ नित नित लेहु न छीजै देह ॥ अंत कालि जमु मारै ठेह ॥ १
 ॥ ऐसा दारु खाहि गवार ॥ जितु खाधै तेरे जाहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु जोबनु सभु छांव ॥ रथि
 फिरदै दीसहि थाव ॥ देह न नाउ न होवै जाति ॥ ओथै दिहु ऐथै सभ राति ॥ २ ॥ साद करि समधां त्रिसना घिउ
 तेलु ॥ कामु क्रोधु अगनी सिउ मेलु ॥ होम जग अरु पाठ पुराण ॥ जो तिसु भावै सो परवाण ॥ ३ ॥ तपु कागदु
 तेरा नामु नीसानु ॥ जिन कउ लिखिआ एहु निधानु ॥ से धनवंत दिसहि घरि जाइ ॥ नानक जननी धंणी माइ ॥
 ४ ॥ ३ ॥ ८ ॥ मलार महला १ ॥ बागे कापड़ बोलै बैण ॥ लंमा नकु काले तेरो नैण ॥ कबहूँ साहिबु देखिआ भैण
 ॥ १ ॥ ऊडां ऊडि चडां असमानि ॥ साहिब संप्रिथ तेरै ताणि ॥ जलि थलि डूंगरि देखां तीर ॥ थान धनंतरि
 साहिबु बीर ॥ २ ॥ जिनि तनु साजि दीए नालि खंभ ॥ अति त्रिसना उठणै की डंझ ॥ नदरि करे तां बंधां धीर ॥
 जिउ वेखाले तिउ वेखां बीर ॥ ३ ॥ नइहु तनु जाइगा न जाहिगे खंभ ॥ पउणै पाणी अगनी का सनबंध ॥ नानक
 करमु होवै जपीरे करि गुरु पीरु ॥ सचि समावै एहु सरीरु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९ ॥

मलार महला ३ चउपदे घरु १ १४ शितिगुर प्रसादि ॥

निरंकारु आकारु है आपे आपे भरमि भुलाए ॥ करि करि करता आपे वेखै जितु भावै तितु लाए ॥ सेवक कउ एहा
 वडिआई जा कउ हुकमु मनाए ॥ १ ॥ आपणा भाणा आपे जाणै गुर किरपा ते लहीरे ॥ एहा सकति सिवै घरि आवै
 जीवदिआ मरि रहीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेद पडै पडि वादु वखाणै ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ एह त्रिगुण माइआ जिनि
 जगत्तु भुलाइआ जनम मरण का सहसा ॥ गुर परसादी एको जाणै चूकै मनहु अँदेसा ॥ २ ॥ हम दीन मूरख
 अवीचारी तुम चिंता करहु हमारी ॥ होहु दइआल करि दासु दासा का सेवा करी तुमारी ॥ एकु निधानु देहि तु अपणा
 अहिनिशि नामु वखाणी ॥ ३ ॥ कहत नानकु गुर परसादी बूझहु कोई ऐसा करे वीचारा ॥ जिउ जल ऊपरि

फेनु बुदबुदा तेसा इहु संसारा ॥ जिस ते होआ तिसहि समाणा चूकि गइआ पासारा ॥ ४ ॥ १ ॥ मलार महला ३ ॥
 जिनी हुकमु पछाणिआ से मेले हउमै सबदि जलाइ ॥ सची भगति करहि दिनु राती सचि रहे लिव लाइ ॥ सदा सचु हरिं
 वेखदे गुर कै सबदि सुभाइ ॥ १ ॥ मन रे हुकमु मँनि सुखु होइ ॥ प्रभ भाणा अपणा भावदा जिसु बखसे तिसु बिघनु न
 कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण सभा धातु है ना हरि भगति न भाइ ॥ गति मुकति कदे न होवई हउमै करम कमाहि ॥
 साहिब भावै सो थीऐ पड़े किरति फिरहि ॥ २ ॥ सतिगुर भेटिऐ मनु मरि रहै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ तिस की
 कीमति ना पवै कहणा किछु न जाइ ॥ चउथै पदि वासा होइआ सचै रहै समाइ ॥ ३ ॥ मेरा हरि प्रभु अगम अगोचरु है
 कीमति कहणु न जाइ ॥ गुर परसादी बुझीऐ सबदे कार कमाइ ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि हरि दरि सोभा पाइ ॥ ४
 ॥ २ ॥ मलार महला ३ ॥ गुरमुखि कोई विरला बूझै जिस नो नदरि करेइ ॥ गुर बिनु दाता कोई नाही बखसे नदरि
 करेइ ॥ गुर मिलिऐ सांति ऊपजै अनदिनु नामु लएइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि अँमित नामु धिआइ ॥ सतिगुरु पुरखु मिलै
 नाउ पाईऐ हरि नामे सदा समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख सदा विछुड़े फिरहि कोइ न किस ही नालि ॥ हउमै वडा रोगु
 है सिरि मारे जमकालि ॥ गुरमति सतसंगति न विछुड़हि अनदिनु नामु सम्हालि ॥ २ ॥ सभना करता एकु तू नित
 करि देखहि वीचारु ॥ इकि गुरमुखि आपि मिलाइआ बखसे भगति भँडार ॥ तू आपे सभु किछु जाणदा किसु आगै
 करी पूकार ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु अमितु है नदरी पाइआ जाइ ॥ अनदिनु हरि हरि उचरै गुर कै सहजि सुभाइ ॥
 नानक नामु निधानु है नामे ही चितु लाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला ३ ॥ गुरु सालाही सदा सुखदाता प्रभु नाराइणु
 सोई ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ वडी वडिआई होई ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे सचि समावै सोई ॥ १ ॥
 मन रे गुरमुखि रिदै वीचारि ॥ तजि कूडु कुटंबु हउमै बिखु तिसना चलणु रिदै सम्हालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु

दाता राम नाम का होरु दाता कोई नाहीं ॥ जीअ दानु देइ त्रिपतासे सचै नामि समाही ॥ अनदिनु हरि रविआ रिद अंतरि
 सहजि समाधि लगाही ॥ २ ॥ सतिगुर सबदी इहु मनु भेदिआ हिरदै साची बाणी ॥ मेरा प्रभु अलखु न जाई लखिआ
 गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे दइआ करे सुखदाता जपीरे सारिंगपाणी ॥ ३ ॥ आवण जाणा बहुडि न होवै गुरमुखि
 सहजि धिआइआ ॥ मन ही ते मनु मिलिआ सुआमी मन ही मँनु समाइआ ॥ साचे ही सचु साचि पतीजै विचहु आपु
 गवाइआ ॥ ४ ॥ एको एकु वसै मनि सुआमी दूजा अवरु न कोई ॥ एको नामु अँम्रितु है मीठा जगि निरमल सचु सोई ॥
 नानक नामु प्रभू ते पाईरे जिन कउ धुरि लिखिआ होई ॥ ५ ॥ ४ ॥ मलार महला ३ ॥ गण गँधरब नामे सभि उधरे गुर का
 सबदु वीचारि ॥ हउमै मारि सद मँनि वसाइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए
 मिलाइ ॥ अनदिनु बाणी सबदे गाँवै साचि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ मन मेरे खिनु खिनु नामु सम्हालि ॥ गुर की दाति सबद
 सुखु अंतरि सदा निबहै तेरै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख पाखँडु कदे न चूकै दूजै भाइ दुखु पाए ॥ नामु विसारि
 बिखिआ मनि राते बिरथा जनमु गवाए ॥ इहु वेला फिरि हथि न आवै अनदिनु सदा पछुताए ॥ मरि मरि जनमै कदे न बूझै
 विसटा माहि समाए ॥ २ ॥ गुरमुखि नामि रते से उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ जीवन मुकति हरि नामु धिआइआ हरि
 राखिआ उरि धारि ॥ मनु तनु निरमलु निरमल मति ऊतम ऊतम बाणी होई ॥ एको पुरखु एकु प्रभु जाता दूजा अवरु न
 कोई ॥ ३ ॥ आपे करे कराए प्रभु आपे आपे नदरि करेइ ॥ मनु तनु राता गुर की बाणी सेवा सुरति समेइ ॥ अंतरि वसिआ
 अलख अभेवा गुरमुखि होइ लखाइ ॥ नानक जिसु भावै तिसु आपे देवै भावै तिवै चलाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ मलार महला ३
 दुतुके ॥ सतिगुर ते पावै घरु दरु महलु सु थानु ॥ गुर सबदी चूकै अभिमानु ॥ १ ॥ जिन कउ लिलटि लिखिआ धुरि
 नामु ॥ अनदिनु नामु सदा सदा धिआवहि साची दरगह पावहि मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की बिधि सतिगुर ते जाणै

अनदिनु लागै सद हरि सिउ धिआनु ॥ गुर सबदि रते सदा बैरागी हरि दरगह साची पावहि मानु ॥ २ ॥ इहु मनु खेलै
 हुकम का बाधा इक खिन महि दह दिस फिरि आवै ॥ जां आपे नदरि करे हरि प्रभु साचा तां इहु मनु गुरमुखि ततकाल
 वसि आवै ॥ ३ ॥ इसु मन की बिधि मन हू जाणै बूझै सबदि वीचारि ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू भव सागरु जितु
 पावहि पारि ॥ ४ ॥ ६ ॥ मलार महला ३ ॥ जीउ पिँडु प्राण सभि तिस के घटि घटि रहिआ समाई ॥ एकसु बिनु मै
 अवरु न जाणा सतिगुरि दीआ बुझाई ॥ १ ॥ मन मेरे नामि रहउ लिव लाई ॥ अदिसटु अगोचरु अपरंपरु करता गुर
 कै सबदि हरि धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु भीजै एक लिव लागै सहजे रहे समाई ॥ गुर परसादी भ्रमु भउ भागै एक
 नामि लिव लाई ॥ २ ॥ गुर बचनी सचु कार कमावै गति मति तब ही पाई ॥ कोटि मधे किसहि बुझाए तिनि राम नामि
 लिव लाई ॥ ३ ॥ जह जह देखा तह एको सोई इह गुरमति बुधि पाई ॥ मनु तनु प्राण धरीं, तिसु आगै नानक आपु
 गवाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ मलार महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा दूख निवारणु सबदे पाइआ जाई ॥ भगती रते सद बैरागी दरि
 साचै पति पाई ॥ १ ॥ मन रे मन सिउ रहउ समाई ॥ गुरमुखि राम नामि मनु भीजै हरि सेती लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ मेरा प्रभु अति अगम अगोचरु गुरमति देइ बुझाई ॥ सचु सँजमु करणी हरि कीरति हरि सेती लिव लाई ॥ २ ॥
 आपे सबदु सचु साखी आपे जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ देही काची पउणु वजाए गुरमुखि अँप्रितु पाई ॥ ३ ॥ आपे
 साजे सभ कारै लाए सो सचु रहिआ समाई ॥ नानक नाम बिना कोई किछु नाही नामे देइ वडाई ॥ ४ ॥ ८ ॥ मलार
 महला ३ ॥ हउमै बिखु मनु मोहिआ लदिआ अजगर भारी ॥ गरुडु सबदु मुखि पाइआ हउमै बिखु हरि मारी ॥ १ ॥
 मन रे हउमै मोहु दुखु भारी ॥ इहु भवजलु जगतु न जाई तरणा गुरमुखि तरु हरि तारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ
 मोहु पसारा सभ वरतै आकारी ॥ तुरीआ गुणु सतसंगति पाईए नदरी पारि उतारी ॥ २ ॥ चँदन गंध सुगंध है बहु

बासना बहकारि ॥ हरि जन करणी ऊतम है हरि कीरति जगि बिसथारि ॥ ३ ॥ क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मेरे हरि हरि
हरि उर धारि ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइआ मनि जपिआ नामु मुरारि ॥ ४ ॥ ९ ॥

मलार महला ३ घरु २ १८ सतिगुरु प्रसादि ॥

इहु मनु गिरही कि इहु मनु उदासी ॥ कि इहु मनु अवरनु सदा अविनासी ॥ कि इहु मनु चंचलु कि इहु मनु बैरागी ॥ इसु
मन कउ ममता किथहु लागी ॥ १ ॥ पंडित इसु मन का करहु बीचारु ॥ अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु ॥ १
॥ रहाउ ॥ माइआ ममता करतै लाई ॥ एहु हुकमु करि खिसटि उपाई ॥ गुरु परसादी बूझहु भाई ॥ सदा रहहु हरि की
सरणाई ॥ २ ॥ सो पंडितु जो तिहां गुणा की पंड उतारै ॥ अनदिनु एको नामु वखाणै ॥ सतिगुरु की ओहु दीखिआ
लेइ ॥ सतिगुरु आगै सीसु धरेइ ॥ सदा अलगु रहै निरबाणु ॥ सो पंडितु दरगह परवाणु ॥ ३ ॥ सभनां महि एको एकु
वखाणै ॥ जां एको वेखै तां एको जाणै ॥ जा कउ बखसे मेले सोइ ॥ ऐथै ओथै सदा सुखु होइ ॥ ४ ॥ कहत नानकु
कवन बिधि करे किआ कोइ ॥ सोई मुकति जा कउ किरपा होइ ॥ अनदिनु हरि गुण गावै सोइ ॥ सासत्र बेद की फिरि
कूक न होइ ॥ ५ ॥ १ ॥ १० ॥ मलार महला ३ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि मनमुख भरमाई ॥ जमकालु मारे नित पति
गवाई ॥ सतिगुरु सेवा जम की काणि चुकाई ॥ हरि प्रभु मिलिआ महलु घरु पाई ॥ १ ॥ प्राणी गुरुमुखि नामु धिआइ
॥ जनमु पदारथु दुबिधा खोइआ कउडी बदलै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा गुरुमुखि लगै पिआरु ॥ अंतरि
भगति हरि हरि उरि धारु ॥ भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ दरि साचै दिसै सचिआरु ॥ २ ॥ बहु करम करे सतिगुरु
नही पाइआ ॥ बिनु गुरु भरमि भूले बहु माइआ ॥ हउमै ममता बहु मोहु वधाइआ ॥ दूजै भाइ मनमुखि दुखु पाइआ ॥
३ ॥ आपे करता अगम अथाहा ॥ गुरु सबदी जपीऐ सचु लाहा ॥ हाजरु हजूरि हरि वेपरवाहा ॥ नानक गुरुमुखि

नामि समाहा ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ मलार महला ३ ॥ जीवत मुक्त गुरमती लागे ॥ हरि की भगति अनदिनु सद
जागे ॥ सतिगुरु सेवहि आपु गवाइ ॥ हउ तिन जन के सद लागउ पाइ ॥ १ ॥ हउ जीवां सदा हरि के गुण गाई
॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु अगिआनु गुबारु ॥
मनमुख मोहे मुगध गवार ॥ अनदिनु धँधा करत विहाइ ॥ मरि मरि जँमहि मिलै सजाइ ॥ २ ॥ गुरमुखिं राम नामि
लिव लाई ॥ कूडै लालचि ना लपटाई ॥ जो किछु होवै सहजि सुभाइ ॥ हरि रसु पीवै रसन रसाइ ॥ ३ ॥ कोटि
मधे किसहि बुझाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई ॥ जो धुरि मिलिआ सु विछुडि न जाई ॥ नानक हरि हरि नामि समाई
॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥ मलार महला ३ ॥ रसना नामु सभु कोई कहै ॥ सतिगुरु सेवे ता नामु लहै ॥ बँधन तोड़े
मुकति घरि रहै ॥ गुर सबदी असथिरु घरि बहै ॥ १ ॥ मेरे मन काहे रोसु करीजै ॥ लाहा कलजुगि राम नामु है
गुरमति अनदिनु हिरदै रवीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाबीहा खिनु खिनु बिललाइ ॥ बिनु पिर देखे नींद न पाइ ॥ इहु
वेछोड़ा सहिआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै तां मिलै सुभाइ ॥ २ ॥ नामहीणु बिनसै दुखु पाइ ॥ त्रिसना जलिआ
भूख न जाइ ॥ विणु भागा नामु न पाइआ जाइ ॥ बहु बिधि थाका करम कमाइ ॥ ३ ॥ त्रै गुण बाणी बेद बीचारु
॥ बिखिआ मैलु बिखिआ वापारु ॥ मरि जनमहि फिरि होहि खुआरु ॥ गुरमुखिं तुरीआ गुणु उरि धारु ॥ ४ ॥
गुरु मानै मानै सभु कोइ ॥ गुर बचनी मनु सीतलु होइ ॥ चहु जुगि सोभा निरमल जनु सोइ ॥ नानक गुरमुखिं
विरला कोइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ९ ॥ १३ ॥ २२ ॥

शगु मलार महला ४ वरु १ चउपदे १४ सतिगुर प्रसादि ॥

अनदिनु हरि हरि धिआइओ हिरदै मति गुरमति दूख विसारी ॥ सभ आसा मनसा बँधन तूटै हरि हरि प्रभि किरपा
धारी ॥ १ ॥ नैनी हरि हरि लागी तारी ॥ सतिगुरु देखि मेश मनु

बिगसिओ जनु हरि भेटिओ बनवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि ऐसा नामु विसारिआ मेरा हरि हरि तिस कै कुलिं लागी
 गारी ॥ हरि तिस कै कुलिं परसूति न करीअहु तिसु बिधवा करि महतारी ॥ २ ॥ हरि हरि आनि मिलावहु गुरु साधू
 जिसु अहिनिंसि हरि उरि धारी ॥ गुरि डीठै गुर का सिखु बिगसै जिउ बारिकु देखि महतारी ॥ ३ ॥ धन पिर का इक ही
 सँगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ गुरि पूरै हउमै भीति तोरीं जन नानक मिले बनवारी ॥ ४ ॥ १ ॥ मलार महला ४
 ॥ गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई ॥ किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू
 की धूरि गवाई ॥ १ ॥ तीरथि अठसठि मजनु नाई ॥ सतसंगति की धूरि परी उडि नेत्री सभ दुर्मति मैलु गवाई ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ जाहरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिओ महसाई ॥ कांसी क्रिसनु चरावत गाऊ मिलिं हरि जन
 सोभा पाई ॥ २ ॥ जितने तीरथ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधू की ताई ॥ हरि का संतु मिलै गुर साधू लै तिस
 की धूरि मुखि लाई ॥ ३ ॥ जितनी खिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई ॥ नानक लिलाटि
 होवै जिसु लिखिआ तिसु साधू धूरि दे हरि पारि लँघाई ॥ ४ ॥ २ ॥ मलार महला ४ ॥ तिसु जन कउ हरि मीठ लगाना
 जिसु हरि हरि क्रिपा करै ॥ तिस की भूख दूख सभि उतरै जो हरि गुण हरि उचरै ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि हरि निसतरै
 ॥ गुर के बचन करन सुनि धिआवै भव सागरु पारि परै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन के हम हाटि बिहाडो जिसु हरि हरि
 क्रिपा करै ॥ हरि जन कउ मिलिंआं सुखु पाईरे सभ दुर्मति मैलु हरै ॥ २ ॥ हरि जन कउ हरि भूख लगानी जनु त्रिपतै
 जा हरि गुन बिचरै ॥ हरि का जनु हरि जल का मीना हरि बिसरत फूटि मरै ॥ ३ ॥ जिनि एह प्रीति लाई सो जानै कै
 जानै जिसु मनि धरै ॥ जनु नानकु हरि देखि सुखु पावै सभ तन की भूख टरै ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला ४ ॥ जितने
 जीअ जँत प्रभि कीने तितने सिरिं कार लिखावै ॥ हरि जन कउ हरि दीन्ह वडाई हरि जनु हरि करै लावै ॥ १ ॥

सतिगुरु हरि हरि नामु द्विडावै ॥ हरि बोलहु गुर के सिख मेरे भाई हरि भउजलु जगतु तरावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो गुर
 कउ जनु पूजे सेवे सो जनु मेरे हरि प्रभ भावै ॥ हरि की सेवा सतिगुरु पूजहु करि किरपा आपि तरावै ॥ २ ॥ भरमि भूले
 अगिआनी अँधुले भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै ॥ निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि सभ बिरथी घाल गवावै ॥ ३ ॥ ब्रहमु बिँदे सो
 सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै ॥ तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर बहु बिधि सति करि मुखि सँचहु तिसु
 पुँन की फिरि तोटि न आवै ॥ ४ ॥ सतिगुरु देउ परतखि हरि मूरति जो अँम्रित बचन सुणावै ॥ नानक भाग भले तिसु
 जन के जो हरि चरणी चितु लावै ॥ ५ ॥ ४ ॥ मलार महला ४ ॥ जिन्ह कै हीअरै बसिओ मेरा सतिगुरु ते सँत भले
 भल भांति ॥ तिन्ह शेखे मेरा मनु बिगसै हउ तिन कै सद बलि जांत ॥ १ ॥ गिआनी हरि बोलहु दिनु राति ॥ तिन्ह
 की त्रिसना भूख सभ उतरी जो गुरमति राम रसु खांति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के दास साध सखा जन जिन मिलिआ
 लहि जाइ भरांति ॥ जिउ जल दुध भिँन भिँन काढै चुणि हँसुला तिउ देही ते चुणि काढै साधू हउमै ताति ॥ २ ॥ जिन
 कै प्रीति नाही हरि हिरदै ते कपटी नर नित कपटु कमांति ॥ तिन कउ किआ कोई देइ खवालै ओइ आपि बीजि आपे ही
 खांति ॥ ३ ॥ हरि का चिहनु सोई हरि जन का हरि आपे जन महि आपु रखांति ॥ धनु धँनु गुरू नानकु समदरसी
 जिनि निँदा उसतति तरी तरांति ॥ ४ ॥ ५ ॥ मलार महला ४ ॥ अगमु अगोचरु नामु हरि ऊतमु हरि किरपा ते जपि
 लइआ ॥ सतसंगति साध पाई वडभागी साँगि साधू पारि पइआ ॥ १ ॥ मेरै मनि अनदिनु अनदु भइआ ॥ गुर
 परसादि नामु हरि जपिआ मेरे मन का भ्रमु भउ गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन हरि गाइआ जिन हरि जपिआ तिन संगति
 हरि मेलहु करि मइआ ॥ तिन का दरसु देखि सुखु पाइआ दुखु हउमै रोगु गइआ ॥ २ ॥ जो अनदिनु हिरदै नामु
 धिआवहि सबु जनमु तिना का सफलु भइआ ॥ ओइ आपि तरे खिसटि सभ तारी सभु कुलु भी पारि पइआ ॥ ३ ॥

तुधु आपे आपि उपाइआ सभु जगु तुधु आपे वसि करि लइआ ॥ जन नानक कउ प्रभि किरपा धारी बिखु डुबदा काढि लइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ मलार महला ४ ॥ गुर परसादी अँमितु नही पीआ तिसना भूख न जाई ॥ मनमुख मूढ जलत अहँकारी हउमै विचि दुखु पाई ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ दुखि लागै पछुताई ॥ जिस ते उपजे तिसहि न चेतहि धिगु जीवणु धिगु खाई ॥ १ ॥ प्राणी गुरमुखि नामु धिआई ॥ हरि हरि क्रिपा करे गुरु मेले हरि हरि नामि समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख जनमु भइआ है बिरथा आवत जात लजाई ॥ कामि क्रोधि डूबे अभिमानी हउमै विचि जलि जाई ॥ तिन सिधि न बुधि भई मति मधिम लोभ लहरि दुखु पाई ॥ गुर बिहून महा दुखु पाइआ जम पकरे बिललाई ॥ २ ॥ हरि का नामु अगोचर पाइआ गुरमुखि सहजि सुभाई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना हरि गुण गाई ॥ सदा अनँदि रहै दिनु राती एक सबदि लिव लाई ॥ नामु पदारथु सहजे पाइआ इह सतिगुर की वडिआई ॥ ३ ॥ सतिगुर ते हरि हरि मनि वसिआ सतिगुर कउ सद नलि जाई ॥ मनु तनु अरपि रखउ सभु आगै गुर चरनी चितु लाई ॥ अपनी क्रिपा करहु गुर पूरे आपे लैहु मिलाई ॥ हम लोह गुर नाव बोहिथा नानक पारि लँघाई ॥ ४ ॥ ७ ॥

मलार महला ४ पड़ताल घरु ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जन बोलत श्रीराम नामा मिलि साधसंगति हरि तोर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि धनु बनजहु हरि धनु सँचहु जिंसु लागत है नही चोर ॥ १ ॥ चात्रिक मोर बोलत दिनु राती सुनि घनिहर की घोर ॥ २ ॥ जो बोलत है मिग मीन पँखेरु सु बिनु हरि जापत है नही होर ॥ ३ ॥ नानक जन हरि कीरति गाई छूटि गइओ कम का सभ सोर ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ मलार महला ४ ॥ राम राम बोलि बोलि खोजते बडभागी ॥ हरि का पँथु कोऊ बतावै हउ ता कै पाइ लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हमारो

मीतु सखाई हम हरि सिउ प्रीति लागी ॥ हरि हम गावहि हरि हम बोलहि अउरु दुतीआ प्रीति हम तिआगी ॥ १ ॥
मनमोहन मोरो प्रीतम रामु हरि परमानंदु बैरागी ॥ हरि देखे जीवत है नानक इक निमख पलो मुखि लागी ॥ २ ॥ २
॥ ९ ॥ ९ ॥ १३ ॥ ९ ॥ ३१ ॥

शगु मलार महला ५ चउपदे घरु १ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

किया तू सोचहि किया तू चितवहि किया तू करहि उपाए ॥ ता कउ कहहु परवाह काहू की जिह गोपाल सहाए ॥ १ ॥
बरसै मेघु सखी घरि पाहुन आए ॥ मोहि दीन क्रिपा निधि ठाकुर नव निधि नामि समाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक
प्रकार भोजन बहु कीए बहु बिंजन मिसटाए ॥ करी पाकसाल सोच पवित्रा हुणि लावहु भोगु हरि राए ॥ २ ॥ दुसट
बिदारे साजन रहसे इहि मँदिर घर अपनाए ॥ जउ ग्रिहि लालु रँगीओ आइआ तउ मै सभि सुख पाए ॥ ३ ॥ संत सभा
ओट गुर पूरे धुरि मसतकि लेखु लिखाए ॥ जन नानक कंतु रँगीला पाइआ फिरि दूखु न लागै आए ॥ ४ ॥ १ ॥
मलार महला ५ ॥ खीर अधारि बारिकु जब होता बिनु खीरै रहनु न जाई ॥ सारि सम्हालि माता मुखि नीरै तब ओहु
त्रिपति अघाई ॥ १ ॥ हम बारिक पिता प्रभु दाता ॥ भूलहि बारिक अनिक लख बरीआ अन ठउर नाही जह जाता ॥
१ ॥ रहाउ ॥ चंचल मति बारिक बपुरे की सरप अगनि कर मैलै ॥ माता पिता कँठि लाइ राखै अनद सहजि तब खेलै
॥ २ ॥ जिस का पिता तू है मेरे सुआमी तिसु बारिक भूख कैसी ॥ नव निधि नामु निधानु ग्रिहि तेरै मनि बांछै सो
लैसी ॥ ३ ॥ पिता क्रिपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि मांगै सो देना ॥ नानक बारिकु दरसु प्रभ चाहै मोहि हिदै
बसहि नित चरना ॥ ४ ॥ २ ॥ मलार महला ५ ॥ सगल विधी जुरि आहरु करिआ तजिओ सगल अँदेसा ॥ कारजु
सगल अरँभिओ घर का ठाकुर का भारोसा ॥ १ ॥ सुनीरे बाजै बाज सुहावी ॥ भोरु भइआ मै प्रिअ मुख पेखे

ग्रिहि मँगल सुहलावी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनूआ सवारे थानां पूछउ संता जाए ॥ खोजत खोजत मै पाहुन
 मिलिओ भगति करउ निवि पाए ॥ २ ॥ जब प्रिअ आइ बसे ग्रिहि आसनि तब हम मँगलु गाइआ ॥ मीत साजन
 मेरे भए सुहेले प्रभु पूरा गुरु मिलाइआ ॥ ३ ॥ सखी सहेली भए अनँदा गुरि कारज हमरे पूरे ॥ कहु नानक वरु
 मिलिआ सुखदाता छोडि न जाई दूरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला ५ ॥ राज ते कीट कीट ते सुरपति करि दोख
 जठर कउ भरते ॥ क्रिपा निधि छोडि आन कउ पूजहि आतम घाती हरते ॥ १ ॥ हरि बिसरत ते दुखि दुखि मरते
 ॥ अनिक बार भ्रमहि बहु जोनी टेक न काहू धरते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिआगि सुआमी आन कउ चितवत मूड
 मुगध खल खर ते ॥ कागर नाव लँघहि कत सागरु त्रिथा कथत हम तरते ॥ २ ॥ सिव बिरँचि असुर सुर जेते
 काल अगनि महि जरते ॥ नानक सरनि चरन कमलन की तुम्ह न डारहु प्रभ करते ॥ ३ ॥ ४ ॥

रागु मलार महला ५ दुपदे घरु १ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभ मेरे उइ बैरागी तीआगी ॥ हउ इकु खिनु तिसु बिनु हरि न सकउ प्रीति हमारी लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उन कै
 सँगि मोहि प्रभु चिति आवै संत प्रसादि मोहि जागी ॥ सुनि उपदेसु भए मन निरमल गुन गाए रँगि रंगी ॥ १ ॥
 इहु मनु देइ कीए संत मीता क्रिपाल भए बडभागीं, ॥ १ ॥ महा सुखु पाइआ बरनि न साकउ रेनु नानक जन पागी
 ॥ २ ॥ १ ॥ ५ ॥ मलार महला ५ ॥ माई मोहि प्रीतमु देहु मिलाई ॥ सगल सहेली सुख भरि सूती जिह घरि
 लालु बसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि अवगन प्रभु सदा दइआला मोहि निरगुनि किआ चतुराई ॥ करउ बराबरि जो
 प्रिअ सँगि रातीं, इह हउमै की ढीठाई ॥ १ ॥ भई निमाणी सरनि इक ताकी गुर सतिगुर पुरख सुखदाई ॥ एक
 निमख महि मेरा सभु दुखु काटिआ नानक सुखि रैनि बिहाई ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥ मलार महला ५ ॥

बरसु मेघ जी तिलु बिलमु न लाउ ॥ बरसु पिआरे मनहि सधारे होइ अनदु सदा मनि चाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम तेरी धर
 सुआमीआ मेरे तू किउ मनहु बिसारे ॥ इसत्री रूप चेरी की निआई सोभ नही बिनु भरतारे ॥ १ ॥ बिनउ सुनिओ जब
 ठाकुर मेरै बेगि आइओ किरपा धारे ॥ कहु नानक मेरो बनिओ सुहागो पति सोभा भले अचारे ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥
 मलार महला ५ ॥ प्रीतम साचा नामु धिआइ ॥ दूख दरद बिनसै भव सागरु गुर की मूरति रिदै बसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 दुसमन हते दोखी सभि विआपे हरि सरणाई आइआ ॥ राखनहारै हाथ दे राखिओ नामु पदारथु पाइआ ॥ १ ॥ करि
 किरपा किलविख सभि काटे नामु निरमलु मनि दीआ ॥ गुण निधानु नानक मनि वसिआ बाहुडि दूख न थीआ ॥ २ ॥
 ४ ॥ ८ ॥ मलार महला ५ ॥ प्रभ मेरे प्रीतम प्रान पिआरे ॥ प्रेम भगति अपनो नामु दीजै दइआल अनुग्रहु धारे ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ सिमरउ चरन तुहारे प्रीतम रिदै तुहारी आसा ॥ संत जना पहि करउ बेनती मनि दरसन की पिआसा ॥ १
 ॥ बिछुरत मरनु जीवनु हरि मिलते जन कउ दरसनु दीजै ॥ नाम अधारु जीवन धनु नानक प्रभ मेरे किरपा कीजै ॥ २
 ॥ ५ ॥ ९ ॥ मलार महला ५ ॥ अब अपने प्रीतम सिउ बनि आई ॥ राजा रामु रमत सुखु पाइओ बरसु मेघ सुखदाई
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु पलु बिसरत नही सुख सागरु नामु नवै निधि पाई ॥ उदौतु भइओ पूरन भावी को भेटे संत सहाई
 ॥ १ ॥ सुख उपजे दुख सगल बिनासे पारब्रहम लिव लाई ॥ तरिओ संसारु कठिन भै सागरु हरि नानक चरन
 धिआई ॥ २ ॥ ६ ॥ १० ॥ मलार महला ५ ॥ घनिहर बरसि सगल जगु छाइआ ॥ भए क्रिपाल प्रीतम प्रभ मेरे अनद
 मंगल सुख पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटे कलेस त्रिसन सभ बूझी पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ साधसंगि जनम मरन
 निवारे बहुरि न कतहू धाइआ ॥ १ ॥ मनु तनु नामि निरँजनि रातउ चरन कमल लिव लाइआ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि
 अपनै नानक दास सरणाइआ ॥ २ ॥ ७ ॥ ११ ॥ मलार महला ५ ॥ बिछुरत किउ जीवे ओइ जीवन ॥ चितहि

उलास आस मिलबे की चरन कमल रस पीवन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ पिआस तुमारी प्रीतम तिन कउ अंतरु नाही ॥
 जिन कउ बिसरै मेरो रामु पिआरा से मूए मरि जांहीं ॥ १ ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगदीसुर पेखत सदा हजुरे ॥ नानक
 रवि रहिओ सभ अंतरि सरब रहिआ भरपूरे ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥ मलार महला ५ ॥ हरि कै भजनि कउन कउन न तारे ॥
 खग तन मीन तन म्रिग तन बराह तन साधू सँगि उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देव कुल दैत कुल जरख्य किंनर नर सागर उतरे
 पारे ॥ जो जो भजनु करै साधू सँगि ता के दूख बिदारे ॥ १ ॥ काम करोध महा बिखिआ रस इन ते भए निरारे ॥ दीन
 दइआल जपहि करुणा मै नानक सद बलिहारे ॥ २ ॥ ९ ॥ १३ ॥ मलार महला ५ ॥ आजु मै बैसिओ हरि हाट ॥ नामु
 रासि साझी करि जन सिउ जाउ न जम कै घाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहमि राखे भ्रम के खुलहे कपाट ॥
 बेसुमार साहु प्रभु पाइआ लाहा चरन निधि खाट ॥ १ ॥ सरनि गही अचुत अबिनासी किलबिख काढे है छांटी ॥ कलि
 कलेस मिटे दास नानक बहुरि न जोनी माट ॥ २ ॥ १० ॥ १४ ॥ मलार महला ५ ॥ बहु बिधि माइआ मोह हिरानो ॥
 कोटि मधे कोऊ बिरला सेवकु पूरन भगतु चिरानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इत उत डोलि डोलि समु पाइओ तनु धनु होत बिरानो
 ॥ लोग दुराइ करत ठगिआई होतौ सँगि न जानो ॥ १ ॥ म्रिग पँखी मीन दीन नीच इह सकँट फिरि आनो ॥ कहु नानक
 पाहन प्रभु तारहु साधसँगति सुख मानो ॥ २ ॥ ११ ॥ १५ ॥ मलार महला ५ ॥ दुसट मुए बिखु खाई री माई ॥ जिस के
 जीअ तिन ही रखि लीने मेरे प्रण कउ किरपा आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरजामी सभ महि वरतै तां भउ कैसा भाई ॥ सँगि
 सहाई छोडि न जाई प्रभु दीसै सभनी ठाई ॥ १ ॥ अनाथा नाथु दीन दुख भँजन आपि लीए लडि लाई ॥ हरि की ओट
 जीवहि दास तेरे नानक प्रभु सरणाई ॥ २ ॥ १२ ॥ १६ ॥ मलार महला ५ ॥ मन मेरे हरि के चरन रवीजै ॥ दरस पिआस
 मेरो मनु मोहिओ हरि पँख लगाइ मिलीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत मारगु पाइओ साधू सेव

करीजै ॥ धारि अनुग्रह सुआमी मेरे नामु महा रसु पीजै ॥ १ ॥ त्राहि त्राहि करि सरनी आए जलतउ किरपा कीजै ॥ करु
 गहि लेहु दास अपुने जउ नानक अपुनो कीजै ॥ २ ॥ १३ ॥ १७ ॥ मलार मः ५ ॥ प्रभ को भगति बछलु बिरदाइओ ॥
 निंदक मारि चरन तल दीने अपुनो जसु वरताइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जैकारु कीनो सभ जग महि दइआ जीअन महि
 पाइओ ॥ कंठि लाइ अपुनो दासु राखिओ ताती वउ न लाइओ ॥ १ ॥ अंगीकारु कीओ मेरे सुआमी भ्रमु भउ मेटि
 सुखाइओ ॥ महा अनंद करहु दास हरि के नानक बिस्वासु मनि आइओ ॥ २ ॥ १४ ॥ १८ ॥

रागु मलार महला ५ चउपदे घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरुमुखि दीसै ब्रहम पसारु ॥ गुरुमुखि त्रै गुणीआं बिसथारु ॥ गुरुमुखि नाद बेद बीचारु ॥ बिनु गुर पूरे घोर अंधारु ॥
 १ ॥ मेरे मन गुरु गुरु करत सदा सुखु पाईए ॥ गुर उपदेसि हरि हिरदै वसिओ सासि गिरासि अपना खसमु धिआईए ॥
 १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण विटहु बलि जाउ ॥ गुर के गुण अनदिनु नित गाउ ॥ गुर की धूड़ि करउ इसनानु ॥ साची
 दरगह पाईए मानु ॥ २ ॥ गुरु बोहिथु भवजल तारणहारु ॥ गुरि भेटिऐ न होइ जोनि अउतारु ॥ गुर की सेवा सो जनु
 पाए ॥ जा कउ करमि लिखिआ धुरि आए ॥ ३ ॥ गुरु मेरी जीवनि गुरु आधारु ॥ गुरु मेरी वरतणि गुरु परवारु ॥
 गुरु मेरा खसमु सतिगुर सरणाई ॥ नानक गुरु पारब्रहमु जा की कीम न पाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥ मलार महला ५ ॥
 गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाए ॥ अपने सेवक कउ लए प्रभु लाइ ॥ ता की कीमति कही न
 जाइ ॥ १ ॥ करि किरपा पूरन सुखदाते ॥ तुम्हरी क्रिपा ते तूँ चिति आवहि आठ पहर तेरै रँगि राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 गावणु सुनणु सभु तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो साचि समाणा ॥ जपि जपि जीवहि तेरा नांउ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही थाउ
 ॥

२ ॥ दुख सुख करते हुकमु रजाइ ॥ भाणै बखस भाणै देइ सजाइ ॥ दुहां सिरिआं का करता आपि ॥ कुरबाणु जाई तेरे
 परताप ॥ ३ ॥ तेरी कीमति तूहै जाणहि ॥ तू आपे बूझहि सुणि आपि वखाणहि ॥ सेई भगत जो तुधु भाणे ॥ नानक तिन
 कै सद कुरबाणे ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥ मलार महला ५ ॥ परमेसरु होआ दइआलु ॥ मेघु वरसै अँम्रित धार ॥ सगले जीअ
 जँत त्रिपतासे ॥ कारज आए पूरे रासे ॥ १ ॥ सदा सदा मन नामु सम्हालि ॥ गुरु पूरे की सेवा पाइआ ऐथै ओथै निबहै नालि
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु भँना भै भँजनहार ॥ आपणिआ जीआ की कीती सार ॥ राखनहार सदा मिहरवान ॥ सदा सदा
 जाईरे कुरबान ॥ २ ॥ कालु गवाइआ करतै आपि ॥ सदा सदा मन तिस नो जापि ॥ द्रिसटि धारि राखे सभि जँत ॥ गुण
 गावहु नित नित भगवँत ॥ ३ ॥ एको करता आपे आप ॥ हरि के भगत जाणहि परताप ॥ नावै की पैज रखदा आइआ ॥
 नानकु बोलै तिस का बोलाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ २१ ॥ मलार महला ५ ॥ गुरु सरणाई सगल निधान ॥ साची दरगहि पाईरे
 मानु ॥ भ्रमु भउ दूखु दरदु सभु जाइ ॥ साधसँगि सद हरि गुण गाइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुरु पूरा सालहि ॥ नामु निधानु जपहु
 दिनु राती मन चिँदै फल पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु जेवडु अवरु न कोइ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु सोइ ॥ जनम मरण
 दूख ते राखै ॥ माइआ बिखु फिरि बहुडि न चाखै ॥ २ ॥ गुरु की महिमा कथनु न जाइ ॥ गुरु परमेसरु साचै नाइ ॥ सचु
 सँजमु करणी सभु साची ॥ सो मनु निरमलु जो गुरु सँगि राची ॥ ३ ॥ गुरु पूरा पाईरे वड भागि ॥ कामु क्रोधु लोभु मन ते
 तिआगि ॥ करि किरपा गुरु चरण निवासि ॥ नानक की प्रभ सचु अरदासि ॥ ४ ॥ ४ ॥ २२ ॥

रागु मलार महला ५ पडताल घरु ३ १८ सतिगुरु प्रसादि ॥

गुरु मनारि प्रिअ दइआर सिउ रँगु कीआ ॥ कीनो री सगल सीं गार ॥ तजिओ री सगल बिकार ॥

धावतो असथिरु थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसेरे मन पाइके आपु गवाइ के करि साधन सिउ सँगु ॥ बाजे बजहि मिदंग
 अनाहद कोकिल री राम नामु बोलै मधुर बैन अति सुहीआ ॥ १ ॥ ऐसी तेरे दरसन की सोभ अति अपार प्रिअ अमोघ तैसे
 हौ सँगि सँत बने ॥ भव उतार नाम भने ॥ रम राम राम माल ॥ मनि फेरते हरि सँगि सँगीआ ॥ जन नानक प्रिउ प्रीतमु
 थीआ ॥ २ ॥ १ ॥ २३ ॥ मलार महला ५ ॥ मनु घनै भ्रमै बनै ॥ उमके तरसि चालै ॥ प्रभ मिलबे की चाह ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ त्रै गुन माई मोहि आई कहँउ बेदन काहि ॥ १ ॥ आन उपाव सगर कीए नहि दूख साकहि लाहि ॥ भजु सरनि
 साधू नानका मिलु गुन गोबिंदहि गाहि ॥ २ ॥ २ ॥ २४ ॥ मलार महला ५ ॥ प्रिअ की सोभ सुहावनी नीकी ॥ हाहा
 हूहू गँधब अपसरा अनँद मँगल रस गावनी नीकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुनित ललित गुनग्य अनिक भांति बहु बिधि रूप
 दिखावनी नीकी ॥ १ ॥ गिरि तर थल जल भवन भरपूरि घटि घटि लालन छावनी नीकी ॥ साधसँगि रामईआ रसु
 पाइओ नानक जा के भावनी नीकी ॥ २ ॥ ३ ॥ २५ ॥ मलार महला ५ ॥ गुर प्रीति पिआरे चरन कमल रिद अंतरि
 धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसु सफलओ दरसु पेखिओ गए किलबिख गए ॥ मन निरमल उजिआरे ॥ १ ॥ बिसम
 बिससै बिसम भई ॥ अघ कोटि हरते नाम लई ॥ गुर चरन मसतकु डारि पही ॥ प्रभ एक तूँ ही एक तुही ॥ भगत टेक
 तुहारे ॥ जन नानक सरनि दुआरे ॥ २ ॥ ४ ॥ २६ ॥ मलार महला ५ ॥ बरसु सरसु आगिआ ॥ होहि आनँद सगल
 भाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँत सँगे मनु परफडै मिलि मेघ धर सुहाग ॥ १ ॥ घन घोर प्रीति मोर ॥ चितु चात्रिक बूँद ओर
 ॥ ऐसो हरि सँगे मन मोह ॥ तिआगि माइआ धोह ॥ मिलि सँत नानक जागिआ ॥ २ ॥ ५ ॥ २७ ॥ मलार महला ५
 ॥ गुन गुोपाल गाउ नीत ॥ राम नाम धारि चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छोडि मानु तजि गुमानु मिलि साधूआ के सँगि ॥
 हरि सिमरि एक रँगि मिटि जाहि दोख मीत ॥ १ ॥ पारब्रहम भए दइआल ॥ बिनसि गए बिखै जँजाल ॥ साध जनां

कै चरन लागि ॥ नानक गावै गोबिंद नीत ॥ २ ॥ ६ ॥ २८ ॥ मलार महला ५ ॥ घनु गरजत गोबिंद रूप ॥ गुन
गावत सुख चैन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि चरन सरन तरन सागर धुनि अनहता रस बैन ॥ १ ॥ पथिक पिआस चित
सरोवर आतम जलु लैन ॥ हरि दरस प्रेम जन नानक करि किरपा प्रभ दैन ॥ २ ॥ ७ ॥ २९ ॥ मलार महला ५ ॥ हे
गोबिंद हे गोपाल हे दइआल लाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान नाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥ १ ॥ हे सम्रथ अगम
पूरन मोहि माइआ धारि ॥ २ ॥ अंध कूप महा भइआन नानक पारि उतार ॥ ३ ॥ ८ ॥ ३० ॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु १ १९ शितिगुर प्रसादि ॥

चकवी नैन नीं,द नहि चाहै बिनु पिर नीं,द न पाई ॥ सूरु चहै प्रिउ देखै नैनी निवि निवि लागै पाई ॥ १ ॥ पिर भावै प्रैमु
सरवाई ॥ तिसु बिनु घड़ी नही जगि जीवा ऐसी पिआस तिसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरवरि कमलु किरणि आकासी बिगसै
सहजि सुभाई ॥ प्रीतम प्रीति बनी अभ ऐसी जोती जोति मिलाई ॥ २ ॥ चात्रिकु जल बिनु प्रिउ प्रिउ टेरै बिलप करै
बिललाई ॥ घनहर घोर दसौ दिसि बरसै बिनु जल पिआस न जाई ॥ ३ ॥ मीन निवास उपजै जल ही ते सुख दुख पुरबि
कमाई ॥ खिनु तिलु हरि न सकै पलु जल बिनु मरनु जीवनु तिसु ताई ॥ ४ ॥ धन वांढी पिरु देस निवासी सचे गुर पहि
सबदु पठाई ॥ गुण संग्रहि प्रभु रिदै निवासी भगति रती हरखाई ॥ ५ ॥ प्रिउ प्रिउ करै सभै है जेती गुर भावै प्रिउ पाई.
॥ प्रिउ नाले सद ही सचि संगे नदरी मेलि मिलाई ॥ ६ ॥ सभ महि जीउ जीउ है सोई घटि घटि रहिआ समाई ॥ गुर
परसादि घर ही परगासिआ सहजे सहजि समाई ॥ ७ ॥ अपना काजु सवारहु आपे सुखदाते गोसाई ॥ गुर परसादि घर
ही पिरु पाइआ तउ नानक तपति बुझाई ॥ ८ ॥ १ ॥ मलार महला १ ॥ जागतु जागि रहै गुर सेवा बिनु हरि मै को

नाही ॥ अनिक जतन करि रहणु न पावै आचु काचु ढरि पांही ॥ १ ॥ इसु तन धन का कहहु गरबु कैसा ॥ बिनसत बार न
 लागै बवरे हउमै गरबि खपै जगु ऐसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जहदीस प्रभू रखवारे राखै परखै सोई ॥ जेती है तेती तुझ ही ते
 तुम्ह सरि अवरु न कोई ॥ २ ॥ जीअ उपाइ जुगति वसि कीनी आपे गुरुमुखि अँजनु ॥ अमरु अनाथ सरब सिरि मोरा
 काल बिकाल भरम भै खँजनु ॥ ३ ॥ कागद कोटु इहु जगु है बपुरो रँगनि चिहन चतुराई ॥ नान्ही सी बूँद पवनु पति खोवै
 जनमि मरै खिनु ताई ॥ ४ ॥ नदी उपकँठि जैसे घरु तरवरु सरपनि घरु घर माही ॥ उलटी नदी कहां घरु तरवरु
 सरपनि डसै दूजा मन मांही ॥ ५ ॥ गारुड़ गुर गिआनु धिआनु गुर बचनी बिखिआ गुरुमति जारी ॥ मन तन हेंव भए सचु
 पाइआ हरि की भगति निरारी ॥ ६ ॥ जेती है तेती तुधु जाचै तू सरब जीआं दइआला ॥ तुम्हरी सरणि परे पति राखहु
 साचु मिलै गोपाला ॥ ७ ॥ बाधी धँधि अँध नही सूझै बधिक करम कमावै ॥ सतिगुर मिलै त सूझसि बूझसि सच मनि
 गिआनु समावै ॥ ८ ॥ निरगुण देह साच बिनु काची मै पूछउ गुरु अपना ॥ नानक सो प्रभु प्रभू दिखावै बिनु साचे जगु
 सुपना ॥ ९ ॥ २ ॥ मलार महला १ ॥ चातरिक मीन जल ही ते सुखु पावहि सारिँग सबदि सुहाई ॥ १ ॥ रैनि बबीहा
 बोलिओ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रिअ सिउ प्रीति न उलटै कबहू जो तै भावै साई ॥ २ ॥ नीद गई हउमै तनि थाकी सच
 मति रिदै समाई ॥ ३ ॥ रूखीं, बिरखीं, ऊडउ भूखा पीवा नामु सुभाई ॥ ४ ॥ लोचन तार ललता बिललाती दरसन
 पिआस रजाई ॥ ५ ॥ प्रिअ बिनु सीगारु करी तेता तनु तापै कापरु अँगि न सुहाई ॥ ६ ॥ अपने पिआरे बिनु इकु खिनु
 रहि न सकंउ बिन मिले नीं, द न पाई ॥ ७ ॥ पिरु नजीकि न बूझै बपुडी सतिगुरि दीआ दिखाई ॥ ८ ॥ सहजि मिलिआ
 तब ही सुखु पाइआ तिसना सबदि बुझाई ॥ ९ ॥ कहु नानक तुझ ते मनु मानिआ कीमति कहनु न जाई ॥ १० ॥ ३ ॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

अखली ऊंडी जलु भर नालि ॥ डूगरु ऊचउ गडु पातालि ॥ सागरु सीतलु गुर सबद वीचारि ॥ मारगु मुकता हउमै मारि ॥ १ ॥ मै अँधुले नावै की जोति ॥ नाम अधारि चला गुर कै भै भैति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर सबदी पाधरु जाणि ॥ गुर कै तकीऐ साचै ताणि ॥ नामु समूहलसि रूडीह बाणि ॥ थैं भावै दरु लहसि पिराणि ॥ २ ॥ ऊडां बैसा एक लिव तार ॥ गुर कै सबदि नाम आधार ॥ ना जलु डूंगरु न ऊची धार ॥ निज घरि वासा तह मगु न चालणहार ॥ ३ ॥ जितु घरि वसहि तुहै बिधि जाणहि बीजउ महलु न जापै ॥ सतिगुर बाझहु समझ न होवी सभु जगु दबिधा छापै ॥ करण पलाव करै बिललातउ बिनु गुर नामु न जापै ॥ पल पँकज महि नामु छडाए जे गुर सबदु सिजापै ॥ ४ ॥ इकि मूरख अँधे मुगध गवार ॥ इकि सतिगुर कै भै नाम अधार ॥ साची बाणी मीठी अँम्रित धार ॥ जिनि पीती तिसु मोख दुआर ॥ ५ ॥ नामु भै भाइ रिदै वसाही गुर करणी सचु बाणी ॥ इँदु वरसै धरति सुहावी घटि घटि जोति समाणी ॥ कालरि बीजसि दुरमति ऐसी निगुरे की नीसाणी ॥ सतिगुर बाझहु घोर अँधारा डूबि मुए बिनु पाणी ॥ ६ ॥ जो किछु कीनो सुप्रभूरजाइ ॥ जो धुरि लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ एक सबदि राचै सचि समाइ ॥ ७ ॥ चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालँ ॥ सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलँ ॥ जांमणु मरणा दीसै सिरि ऊभौ खुधिआ निद्रा कालँ ॥ नानक नामु मिलै मनि भावै साची नदरि रसालँ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ मलार महला १ ॥ मरण मुकति गति सार न जानै ॥ कँठे बैठी गुर सबदि पछानै ॥ १ ॥ तू कैसे आडि फाथी जालि ॥ अलखु न जाचहि रिदै सम्हालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक जीअ कै जीआ खाही ॥ जलि तरती बूडी जल माही ॥ २ ॥ सरब जीअ कीए प्रतपानी ॥ जब पकडी तब ही पछुतानी ॥ ३ ॥ जब गलि फास पडी अति भारी ॥ ऊडि न साकै पँख पसारी ॥ ४ ॥ रसि चूगहि मनमुखि गावारि ॥

फाथी छूटहि गुण गिआन बीचारि ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवि तूटै जमकालु ॥ हिरदै साचा सबदु समाहलु ॥ ६ ॥ गुरमति साची
सबदु है सारु ॥ हरि का नामु रखै उरि धारि ॥ ७ ॥ से दुख आगै जि भोग बिलासे ॥ नानक मुकति नही बिनु नावै साचे ॥
८ ॥ २ ॥ ५ ॥

मलार महला ३ असटपदीआ घरु १ ॥ १४ सतिगुरु प्रसादि ॥

करमु होवै ता सतिगुरु पाईए विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलिऐ कँचनु होईए जां हरि की होइ रजाइ ॥ १ ॥ मन
मेरे हरि हरि नामि चितु लाइ ॥ सतिगुरु ते हरि पाईए साचा हरि सिउ रहै समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु ते गिआनु ऊपजै तां
इह संसा जाइ ॥ सतिगुरु ते हरि बुझीए गरभ जोनी नह पाइ ॥ २ ॥ गुर परसादी जीवत मरै मरि जीवै सबदु कमाइ ॥ मुकति
दुआरा सोई पाए जि विचहु आपु गवाइ ॥ ३ ॥ गुर परसादी सिव घरि जँमै विचहु सकति गवाइ ॥ अचरु चरै बिबेक बुधि पाए
पुरखै पुरखु मिलाइ ॥ ४ ॥ धातुर बाजी संसारु अचेतु है चलै मूलु गवाइ ॥ लाहा हरि सतसंगति पाईए करमी पलै पाइ ॥ ५
॥ सतिगुरु विणु किनै न पाइआ मनि वेखहु रिदै बीचारि ॥ वडभागी गुरु पाइआ भवजलु उतरे पारि ॥ ६ ॥ हरि नामां हरि
टेक है हरि हरि नामु अधारु ॥ क्रिपा करहु गुरु मेलहु हरि जीउ पावउ मोख दुआरु ॥ ७ ॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि
ठाकुरि मेटणा न जाइ ॥ नानक से जन पूरन होए जिन हरि भाणा भाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ मलार महला ३ ॥ बेद बाणी जगु
वरतदा त्रै गुण करे बीचारु ॥ बिनु नावै जम डँडु सहै मरि जनमै वारो वार ॥ सतिगुरु भेटे मुकति होइ पाए मोख दुआरु ॥ १
॥ मन रे सतिगुरु सेवि समाइ ॥ वडै भागि गुरु पूरा पाइआ हरि हरि नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपणै खिसटि
उपाई हरि आपे देइ अधारु ॥ हरि आपणै भाणै मनु निरमलु कीआ हरि सिउ लागा पिआरु ॥ हरि कै भाणै सतिगुरु

भेटिआ सभु जनमु सवारणहारु ॥ २ ॥ वाहु वाहु बाणी सति है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ वाहु वाहु करि प्रभु सालाहीरे
 तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ आपे बखसे मेलि लए करमि परापति होइ ॥ ३ ॥ साचा साहिबु माहरो सतिगुरि दीआ
 दिखाइ ॥ अँमितु वरसै मनु सँतोखीरे सचि रहै लिव लाइ ॥ हरि कै नाइ सदा हरी आवली फिरि सुकै ना कुमलाइ ॥
 ४ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ मनि वेखहु को पतीआइ ॥ हरि किरपा ते सतिगुरु पाईरे भेटै सहजि सुभाइ ॥
 मनमुख भरमि भुलाइआ बिनु भागा हरि धनु न पाइ ॥ ५ ॥ त्रै गुण सभा धातु है पड़ि पड़ि करहि वीचारु ॥ मुकति
 कदे न होवई नहु पाइन्हि मोख दुआरु ॥ बिनु सतिगुर बँधन न तुटही नामि न लगै पिआरु ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि
 पँडित मोनी थके बेदां का अभिआसु ॥ हरि नामि चिति न आवई नह निज घरि होवै वासु ॥ जमकालु सिरहु न उतरै
 अंतरि कपट विणासु ॥ ७ ॥ हरि नावै नो सभु को परतापदा विणु भागां पाइआ न जाइ ॥ नदरि करे गुरु भेरीरे हरि
 नामु वसै मनि आइ ॥ नानक नामे ही पति ऊपजै हरि सिउ रहां समाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

मलार महला ३ असटपदी घरु २ ॥ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि क्रिपा करे गुर की कारै लाए ॥ दुखु पलहरि हरि नामु वसाए ॥ साची गति साचत चितु लाए ॥ गुर की बाणी
 सबदि सुणाए ॥ १ ॥ मन मेरे हरि हरि सेवि निधानु ॥ गुर किरपा ते हरि धनु पाईरे अनदिनु लागै सहजि धिआनु
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु पिर कामणि करे सीं गारु ॥ दुहचारणी कहीरे नित होइ खुआरु ॥ मनमुख का इहु बादि
 आचारु ॥ बहु करम द्विड़ावहि नामु विसारि ॥ २ ॥ गुरमुखि कामणि बणिआ सींगारु ॥ सबदे पिरु राखिआ उर
 धारि ॥ एक पछाणै हउमै मारि ॥ सोभावँती कहीरे नारि ॥ ३ ॥ बिनु गुर दाते किनै न पाइआ ॥ मनमुख लोभि
 दूजै लोभाइआ ॥ ऐसे गिआनी बूझहु कोइ ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न होइ ॥ ४ ॥ कहि कहि कहणु कहै सभु कोइ
 ॥ बिनु मन मूए भगति न होइ ॥ गिआन मती कमल परगासु ॥ तितु घटि नामै नामि निवासु ॥ ५ ॥

हउमै भगति करे सभु कोइ ॥ ना मनु भीजै ना सुखु होइ ॥ कहि कहि कहणु आपु जाणाए ॥ बिरथी भगति सभु जनमु गवाए ॥ ६ ॥ से भगत सतिगुर मनि भाए ॥ अनदिनु नामि रहे लिव लाए ॥ सद ही नामु वेखहि हजूरि ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥ ७ ॥ आपे बखसे देइ पिआरु ॥ हउमै रोगु वडा संसारि ॥ गुर किरपा ते इहु रोगु जाइ ॥ नानक साचे साचि समाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ ५ ॥ ८ ॥

शगु मलार छँत महला ५ ॥ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रीतम प्रेम भगति के दाते ॥ अपने जन सँगि राते ॥ जन सँगि राते दिनसु राते इक निमख मनहु न वीसरै ॥ गोपाल गुण निधि सदा सँगे सब गुण जगदीसरै ॥ मनु मोहि लीना चरन सँगे नाम रसि जन माते ॥ नानक प्रीतम क्रिपाल सदहूँ किनै कोटि मधे जाते ॥ १ ॥ प्रीतम तेरी गति अगम अपारे ॥ महा पतित तुम्ह तारे ॥ पतित पावन भगति वछल क्रिपा सिँधु सुआमीआ ॥ संतसँगे भजु निसँगे रंउ सदा अंतरजामीआ ॥ कोटि जनम भ्रमंत जोनी ते नाम सिमरत तारे ॥ नानक दरस पिआस हरि जीउ आपि लेहु समाहरे ॥ २ ॥ हरि चरन कमल मनु लीना ॥ प्रभ जल जन तेरे मीना ॥ जल मीन प्रभ जीउ एक तूहै भिन आन न जानीरे ॥ गहि भुजा लेवहु नामु देवहु तउ प्रसादी मानीरे ॥ भजु साधसँगे एक रँगे क्रिपाल गोबिंद दीना ॥ अनाथ नीच सरणाइ नानक करि मइआ अपुना कीना ॥ ३ ॥ आपस कउ आपु मिलाइआ ॥ भ्रम भँजन हरि राइआ ॥ आचरज सुआमी अंतरजामी मिले गुण निधि पिआरिआ ॥ महा मंगल सूख उपजे गोबिंद गुण नित सारिआ ॥ मिलि सँगि सोहे देखि मोहे पुरबि लिखिआ पाइआ ॥ बिनवँति नानक सरनि तिन की जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

वार मलार की महला १ राणे कैलास तथा मालदे की धुनि ॥ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ३ ॥ गुर मिलिऐ मनु रहसीऐ जिउ वुठै धरणि

सींगारु ॥ सभ दिसै हरीअवली सर भरे सुभर ताल ॥ अंदरु रचै सच रँगि जिउ मँजीठै लालु ॥ कमलु विगसै सचु मनि गुरु
 कै सबदि निहालु ॥ मनमुख दूजी तरफ है वेखहु नदरि निहालि ॥ फाही फाथे मिरग जिउ सिरि दीसै जमकालु ॥ खुधिआ
 त्रिसना निँदा बुरी कामु क्रोधु विकरालु ॥ एनी अखी नदरि न आवई जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ तुधु भावै सँतोखीआं
 चूकै आल जँजालु ॥ मूलु रहै गुरु सेविये गुरु पउड़ी बोहिथु ॥ नानक लगी ततु लै तूँ सचा मनि सचु ॥ १ ॥ महला १ ॥
 हेको पाधरु हेकु दरु गुरु पउड़ी निज थानु ॥ रूडउ ठाकुरु नानका सभि सुख साचउ नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपीन्है आपु
 साजि आपु पछाणिआ ॥ अँबरु धरति विछोडि चँदोआ ताणिआ ॥ विणु थँम्हा गगनु रहाइ सबदु नीसाणिआ ॥ सूरजु
 चँदु उपाइ जोति समाणिआ ॥ कीए राति दिनँतु चोज विडाणिआ ॥ तीरथ धरम वीचार नावण पुरबाणिआ ॥ तुधु सरि
 अवरु न कोइ कि आखि वखाणिआ ॥ सचै तरबति निवासु होर आवण जाणिआ ॥ १ ॥ सलोक मः १ ॥ नानक साचणि
 जे वसै चहु ओमाहा होइ ॥ नागां मिरगां मछीआं रसीआं घरि धनु होइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक सावणि जे वसै चहु वेछोडा
 होइ ॥ गाई पुता निरधना पँथी चाकरु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा सचिआरु जिनि सचु वरताइआ ॥ बैठा ताड़ी लाइ
 कवलु छपाइआ ॥ ब्रहमै वडा कहाइ अँतु न पाइआ ॥ ना तिसु बापु न माइ किनि तू जाइआ ॥ ना तिसु रूपु न रेख वरन
 सबाइआ ॥ ना तिसु भुख पिआस रजा थाइआ ॥ गुरु महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ॥ सचे ही पतीआइ सचि समाइआ
 ॥ २ ॥ सलोक मः १ ॥ वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढँढोले बांह ॥ भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥ १ ॥ मः २
 ॥ वैदा वैदु सुवैदु तू पहिलां रोगु पछाणु ॥ ऐसा दारु लोडि लहु जितु वँजै रोगा घाणि ॥ जितु दारु रोग उठअहि तनि सुखु
 वसै आइ ॥ रोगु गवाइहि आपणा त नानक वैदु सदाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु देव उपाइआ ॥ ब्रहमे दिते बेद
 पूजा लाइआ ॥ दस अवतारी रामु राजा आइआ ॥ दैता मारे थाइ हुकमि सबाइआ ॥ ईस महेसुरु सेव तिन्ही अँतु न

पाइआ ॥ सची कीमति पाइ तखतु रचाइआ ॥ दुनीआ धँधै लाइ आपु छपाइआ ॥ धरमु कराए धुरहु फुरमाइआ ॥ ३ ॥
 सलोक मः २ ॥ सावणु आइआ हे सखी कँतै चिति करेहु ॥ नानक झूरि मरहि दोहागणी जिन्ह अवरी लागे नेहु ॥ १ ॥
 मः २ ॥ सावणु आइआ हे सखी जलहरु बरसनहारु ॥ नानक सुखि सवनु सोहागणी जिन्ह सह नालि पिआरु ॥ २ ॥
 ॥ पउड़ी ॥ आपे छिँझ पवाइ मलाखाड़ा रचिआ ॥ लथे भड़थू पाइ गुरमुखि मचिआ ॥ मनमुख मारे पछाड़ि मूरख
 कचिआ ॥ आपि भिड़ै मारे आपि आपि कारजु रचिआ ॥ सबना खसमु एकु है गुरमुखि जाणीरे ॥ हुकमी लिखै सिरि
 लेखु विणु कलम मसवाणीरे ॥ सतसंगति मेलापु जिथै हरि गुण सदा वखाणीरे ॥ नानक सचा सबदु सलाहि सचि
 पछाणीरे ॥ ४ ॥ सलोक मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ अवरि करेदा वँन ॥ किआ जाणा तिसु साह सिउ केव रहसी
 रँगु ॥ रँगु रहिआ तिन्ह कामणी जिन्ह मनि भउ भाउ होइ ॥ नानक भै भाइ बाहरी तिन तनि सुखु न होइ ॥ १ ॥ मः ३
 ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै नीरु निपँगु ॥ नानक दुखु लागे तिन्ह कामणी जिन्ह कँतै सिउ मनि भँगु ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ दोवै तरफा उपाइ इकु वरतिआ ॥ बेद बाणी वरताइ अँदरि वादु घतिआ ॥ परविरति निरविरति हाठा दोवै विचि धरमु
 फिरै रैबारिआ ॥ मनमुख कचे कूड़िआर तिन्हीं निहचउ दरगह हारिआ ॥ गुरमती सबदि सूर है कामु क्रोधु जिन्हीं मारिआ
 ॥ सचै अँदरि महलि सबदि सवारिआ ॥ से भगत तुधु भावदे सचै नाइ पिआरिआ ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा तिन्हा
 विटहु हउ वारिआ ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै लाइ झड़ी ॥ नानक भाणै चलै कँत कै सु माणे
 सदा रली ॥ १ ॥ मः ३ ॥ किआ उठि उठि देखहु बपुडें इसु मेघै हथि किछु नाहि ॥ जिनि एहु मेघु पठाइआ तिसु राखहु
 मन माँहि ॥ तिस नो मँनि वसाइसी जा कउ नदरि करेइ ॥ नानक नदरी बाहरी सभ करण पलाह करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
 सो हरि सदा सरेवीरे जिसु करत न लागै वार ॥ आडाणे आकास करि खिन महि ढारि उसारणहार ॥ आपे जगतु उपाइ कै

कुदरति करे वीचार ॥ मनमुख अगै लेखा मँगीरे बहुती होवै मार ॥ गुरमुखि पति सिउ लेखा निबडै सिफति बँडार ॥
 ओथै हथु न अपडै कूक न सुणीरे पुकार ॥ ओथै सतिगुरु बेली होवै कठि लए अँती वार ॥ एना जँता नो होर सेवा नही
 सतिगुरु सिरि करतार ॥ ६ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा जिस नो तू पूकारदा तिस नो लोचै सभु कोइ ॥ अपणी किरपा
 करि कै वससी वणु त्रिणु हरिआ होइ ॥ गुर परसादी पाईरे विरला बूझै कोइ ॥ बहदिआ उठदिआ नित धिआईरे सदा सदा
 सुखु होइ ॥ नानक अँमितु सद ही वरसदा गुरमुखि देवै हरि सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ कलमलि होई मेदनी अरदासि करे लिव
 लाइ ॥ सचै सुणिआ कँनु दे धीरक देवै सहजि सुभाइ ॥ इँद्रे नो फुरमाइआ वुठा छहबर लाइ ॥ अनु धनु उपजै बहु घणा
 कीमतु कहणु न जाइ ॥ नानक नामु सलाहि तू सभना जीआ देदा रिजकु संबाहि ॥ जितु खाधै सुखु ऊपजै फिरि दूरु न
 लागै आइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि जीउ सचा सचु तू सचे लौहि मिलाइ ॥ दूजै दूजी तरफ है कूड़ि मिलै न मिलिआ जाइ ॥
 आपे जोड़ि विछोड़िरे आपे कुदरति देइ दिखाइ ॥ मोहु सोगु विजोगु है पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ
 जो हरि चरणी रहे लिव लाइ ॥ जिउ जल महि कमलु अलिपतु है ऐसी बणत बणाइ ॥ से सुखीए सदा सोहणे जिन्ह विचहु
 आपु गवाइ ॥ तिन्ह सोगु विजोगु कदे नही जो हरि कै अँकि समाइ ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ नानक सो सालाहीरे जिसु
 वसि सभु किछु होइ ॥ तिसै सरेविहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुरमुखि हरि प्रभु मनि वसै तां सदा सदा सुखु
 होइ ॥ सहसा मूलि न होवई सभ चिँता विचहु जाइ ॥ जो किछु होइ सु सहजे होइ कहना किछु न जाइ ॥ सचा साहिबु
 मनि वसे तां मनि चिँदिआ फलु पाइ ॥ नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पँनै पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥
 अँमितु सदा वरसदा बूझनि बूझणहार ॥ गुरमुखि जिन्ही बुझिआ हरि अँमितु रखिआ उरि धारि ॥ हरि अँमितु पीवहि
 सदा रँगि राते हउमै त्रिसना मारि ॥ अँमितु हरि का नामु है वरसै किरपा धारि ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि

आतमरामु मुरारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अतुलु किउ तोलीऐ विणु तोले पाइआ न जाइ ॥ गुर कै सबदि वीचारीऐ गुण महि रहै
 समाइ ॥ अपना आपु आपि तोलसी आपे मिलै मिलाइ ॥ तिस की कीमति ना पवै कहणा किछु न जाइ ॥ हउ बलिहारी
 गुर आपणे जिनि सची बूझ दिती बुझाइ ॥ जगतु मुसै अँमितु लुटीऐ मनमुख बूझ न पाइ ॥ विणु नावै नालि न चलसी
 जासी जनमु गवाइ ॥ गुरमती जागे तिन्ही घरु रखिआ दूता का किछु न वसाइ ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा ना
 बिललाइ ना तरसाइ एहु मनु खसम का हुकमु मँनि ॥ नानक हुकमि मँनिऐ तिख उतरै चडै चवगलि वँनु ॥ १ ॥ मः ३ ॥
 बाबीहा जल महि तेरा वासु है जल ही माहि फिराहि ॥ जल की सार न जाणही तां तूँ कूकण पाहि ॥ जल थल चहु दिसि
 वरसदा खाली को थाउ नाहि ॥ एत जाल वरसदै तिख मरहि भाग तिना के नाहि ॥ नानक गुरमुखि तिन सोझी पई जिन
 वसिआ मन माहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाथ जती सिध पीर किनै अँतु न पाइआ ॥ गुरमुखि नामु धिआइ तुझै समाइआ ॥
 जुग छतीह गुबारु तिस ही भाइआ ॥ जला बिँबु असरालु तिनै वरताइआ ॥ नीलु अनीलु अगँमु सरजीतु सबाइआ ॥
 अगनि उपाई वादु भुख तिहाइआ ॥ दुनीआ कै सिरि कालु दूजा भाइआ ॥ रखै रखणहारु जिनि सबदु बुझाइआ ॥ ९
 ॥ सलोक मः ३ ॥ इहु जलु सभ तै वरसदा वरसै भाइ सुभाइ ॥ से बिरखा हरीआवले जो गुरमुखि रहे समाइ ॥ नानक
 नदरी सुखु होइ एना जँता का दुखु जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ भिँनी रैणि चमकिआ वुठा छहबर लाइ ॥ जितु वुठै अनु धनु
 बहुतु ऊपजै जां सहु करे रजाइ ॥ जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ जीआं जुगति समाइ ॥ इहु धनु करते का खेलु है कदे आवै कदे
 जाइ ॥ गिआनीआ का धनु नामु है सद ही रहै समाइ ॥ नानक जिन कउ नदरि करे तां इहु धनु पलै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ आपे लेखा मँगसी आपि कराए कार ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ हुकमु
 करे गावारु ॥ आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥ आपे वेखै सुणे आपि सभसै दे आधारु ॥ सभ

महि एकु वरतदा सिरिं सिरिं करे बीचारु ॥ गुरमुखिं आपु वीचारीऐ लगै सचि पिआरु ॥ नानक किस नो आखीऐ आपे
 देवणहारु ॥ १० ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा एहु जगतु है मत को भरमि भुलाइ ॥ इहु बाबीहा पसू है इस नो बूझणु नाहि
 ॥ अँमितु हरि का नामु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ नानक गुरमुखि जिन्ह पीआ तिन्ह बहुड़ि न लागी आइ ॥ १ ॥ मः ३
 ॥ मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ सांति होइ ॥ हरि जीउ अपणी क्रिपा करे तां वरतै सभ लोइ ॥ वुठै जीआ जुगति
 होइ धरणी नो सीगारु होइ ॥ नानक इहु जगतु सभु जलु है जल ही ते सभ कोइ ॥ गुर परसादी को विरला बूझै सो जनु
 मुक्तु सदा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा वेपरवाहु इको तू धणी ॥ तू सभु किछु आपे आपि दूजै किसु गणी ॥ माणस कूड़ा
 गरबु सची तुधु मणी ॥ आवा गउणु रचाइ उपाई मेदनी ॥ सतिगुरु सेवे आपणा आइआ तिसु गणी ॥ जे हउमै विचहु
 जाइ त केही हणत गणी ॥ मनमुख मोहि गिबारि जिउ भुला मँझि वणी ॥ कटे पाप असँख नावै इक कणी ॥ ११ ॥
 सलोक मः ३ ॥ बाबीहा खसमै का महलु न जाणही महलु देखि अरदासि पाइ ॥ आपणै भाणै बहुता बोलहि बोलिआ
 थाइ न पाइ ॥ खसमु वडा दातारु है जो इछे सो फल पाइ ॥ बाबीहा किआ बपुड़ा जगतै की तिख जाइ ॥ १ ॥ मः ३
 ॥ बाबीहा भिँनी रैणि बोलिआ सहजे सचि सुभाइ ॥ इहु जलु मेरा जीउ है जल बिनु रहणु न जाइ ॥ गुर सबदी जलु
 पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ नानक जिसु बिनु चसा न जीवदी सो सतिगुरि दीआ मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ खँड पताल
 असँख मै गणत न होई ॥ तू करता गोविँदु तुधु सिरजी तुधै गोई ॥ लख चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ॥ इकि राजे
 खान मलूक कहहि कहावहि कोई ॥ इकि साह सदावहि सँचि धनु दूजै पति खोई ॥ इकि दाते इकि मँगते सभना सिरिं
 सोई ॥ विणु नावै बाजारीआ भीहावलिं होई ॥ कूड़ निखुटे नानका सचु करे सु होई ॥ १२ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा
 गुणवँती महलु पाइआ अउगणवँती दूरि ॥ अँतरिं तेरै हरि वसै गुरमुखिं सदा हजूरि ॥ कूक पुकार न होवई नदरी नदरिं

निहाल ॥ नानक नामि रते सहजे मिले सबदि गुरू कै घाल ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बाबीहा बेनती करे करि किरपा देहु जीअ
दान ॥ जल बिनु पिआस न ऊतरै छुटकि जांहि मेरे प्रान ॥ तू सुखदाता बेअंतु है गुणदाता नेधानु ॥ नानक गुरमुखि
बखसि लए अँति बेली होइ भगवानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइ कै गुण अउगण करे बीचारु ॥ त्रै गुण सब
जँजालु है नामि न धरे पिआरु ॥ गुण छोडि अउगण कमावदे दरगह होहि खुआरु ॥ जूरे जनमु तिनी हरिआ कितु आए
सँसारि ॥ सचै सबदि मनु मारिआ अहिनिंसि नामि पिआरि ॥ जिनी पुरखी उरि धारिआ सचा अलख अपारु ॥ तू
गुणदाता निधानु हहि असी अवगणिआर ॥ जिसु बखसे सो पाइसी गुर सबदी वीचारु ॥ १३ ॥ सलोक मः ५ ॥ राति न
विहावी साकतां जिन्हा विसरै नाउ ॥ राती दिनस सुहेलीआ नानक हरि गुण गांउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ रतन जवेहर माणका
हभे मणी मथँनि ॥ नानक जो प्रभि भाणिआ सचै दरि सोहँनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा सतिगुरु सेवि सचु सम्हालिआ ॥
अँति खलोआ आइ जिं सतिगुर अगै घालिआ ॥ पोहि न सकै जमकालु सचा रखवालिआ ॥ गुर साखी जोति जगाइ
दीवा बालिआ ॥ मनमुख विणु नावै कूडिआर फिरहि बेतालिआ ॥ पसू माणस चँमि पलेटे अँदरहु कालिआ ॥ सभो वरतै
सचु सचै सबदि निहालिआ ॥ नानक नामु निधानु है पूरै गुरि देखालिआ ॥ १४ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहै हुकमु
पछाणिआ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ मेघु वरसै दइआ करि गूडी छहबर लाइ ॥ बाबीहै कूक पुकार रहि गई सुखु वसिआ मनि
आइ ॥ नानक सो सालाहीरे जिं देदा सभनां जीआ रिजकु समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ चात्रिक तून जाणही किआ तुधु विचि
तिखा है कितु पीतै तिख जाइ ॥ दूजै भाइ भरँमिआ अँमित जलु पलै न पाइ ॥ नदरि करे जे आपणी तां सतिगुरु मिलै
सुभाइ ॥ नानक सतिगुर ते अँमित जलु पाइआ सहजे रहिआ समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि वण खँडि बैसहि जाइ सद्गु न
देवही ॥ इकि पाला ककरु भँनि सीतलु जलु हेंवही ॥ इकि भसम चढ़ावहि अँगि मैलु न धोवही ॥ इकि जटा

बिकट बिकराल कुलु घरु खोवही ॥ इकि नगन फिरहि दिनु राति नींद न सोवही ॥ इकि अगनि जलावहि अँगु आपु
 विगोवही ॥ विणु नावै तन छारु किआ कहि रोवही ॥ सोहनि खसम दुआरि जिं सतिगुरु सेवही ॥ १५ ॥ सलोक मः ३
 ॥ बाबीहा अँमित वेलै बोलिआ तां दरि सुणी पुकार ॥ मेघै नो फुरमानु होआ वरसहु किरपा धारि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै
 जिनी सचु रखिआ उरि धारि ॥ नानक नामे सभ हरीआवली गुर कै सबदि वीचारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बाबीहा इव तेरी तिखा
 न उतरै जे सउ करहि पुकार ॥ नदरी सतिगुरु पाईरे नदरी उपजै पिआरु ॥ नानक साहिबु मनि वसै विचहु जाहि विकार
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि जैनी उझड़ पाइ धुरहु खुआइआ ॥ तिन मुखि नाही नामु न तीरथि नहाइआ ॥ हथी सिर खोहाइ न
 भदु कराइआ ॥ कुचिल रहहि दिन राति सबदु न भाइआ ॥ तिन जाति न पति न करमु जनमु गवाइआ ॥ मनि जूठै
 वेजाति जूठा खाइआ ॥ बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥ गुरमुखि ओअँकारि सचि समाइआ ॥ १६ ॥ सलोक
 मः ३ ॥ सावणि सरसी कामणी गुर सबदी वीचारि ॥ नानक सदा सुहागणी गुर कै हेति अपारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सावणि
 दझै गुण बाहरी जिंसु दूजै भाइ पिआरु ॥ नानक पिर की सार न जाणई सभु सीगरु खुआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा
 अलख अभेउ हठि न पतीजई ॥ इकि गावहि राग परीआ रागि न भीजई ॥ इकि नचि नचि पूरहि ताल भगति न कीजई ॥
 इकि अँनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥ त्रिसना होई बहुतु किवै न धीजई ॥ करम वधहि कै लोअ खपि मरीजई ॥
 लाहा नामु संसारि अँमितु पीजई हरि भगती असनेहि गुरमुखि घीजई ॥ १७ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि मलार रागु जो
 करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ॥ गुर सबदी एकु पछाणिआ एको सचा सोइ ॥ मनु तनु सचा सचु मनि सचे सची सोइ ॥
 अँदरि सची भगति है सहजे ही पति होइ ॥ कलिजुग महि घोर अँधारु है मनमुख राहु न कोइ ॥ से वडभागी नानका जिन
 गुरमुखि परगटु होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इँदु वरसै करि दइआ लोकां मनि उपजै चाउ ॥ जिस कै हुकमि इँदु वरसदा तिस कै

सद बलिहारै जांउ ॥ गुरमुखिं सबदु सम्हालीऐ सचे के गुण गाउ ॥ नानक नामि रते जन निरमले सहजे सचि समाउ ॥ २
 ॥ पउड़ी ॥ पूरा सतिगुरु सेवि पूरा पाइआ ॥ पूरै करमि धिआइ पूरा सबदु मँनि वसाइआ ॥ पूरै गिआनि धिआनि मैलु
 चुकाइआ ॥ हरि सरि तीरथि जाणि मनूआ नाइआ ॥ सबदि मरै मनु मारि धँनु जणेदी माइआ ॥ दरि सचै सचिआरु सचा
 आइआ ॥ पुछि न सकै कोइ जां खामै भाइआ ॥ नानक सचि सालाहि लिखिआ पाइआ ॥ १८ ॥ सलोक मः १ ॥
 कुलहां देदे बावले लैदे वडे निलज ॥ चूहा खड न मावई तिकलि बँन्है छज ॥ देन्हि दुआई से मरहि जिन कउ देनि सि जाहि
 ॥ नानक हुकमु न जापई किथै जाइ समाहि ॥ फसलि अहाड़ी एकु नामु सावणी सचु नाउ ॥ मै महदू दु लिखाइआ खसमै
 कै दर जाइ ॥ दुनीआ के दर केतडे केते आवहि जांहि ॥ केते मँगहि मँगते केते मँगि मँगि जाहि ॥ १ ॥ मः १ ॥ सउ मणु
 हसती घिउ गुडु खावै पँजि सै दाणा खाइ ॥ डकै फूकै खेह उडावै साहि गइरे पछुताइ ॥ अँधी फूकि मुई देवानी ॥ खसमि
 मिटी फिरि भानी ॥ अधु गुल्हा चिड़ी का चुगणु गैणि चड़ी बिललाइ ॥ खसमै भावै ओहा चँगी जिं करे खुदाइ खुदाइ ॥
 सकता सीहु मारे सै मिरिआ सभ पिछै पै खाइ ॥ होइ सताणा घुरै न मावै साहि गइरे पछुताइ ॥ अँधा किस नो बुकि सुणावै
 ॥ खसमै मूलि न भावै ॥ अक सिउ प्रीति करे अक तिडा अक डाली बहि खाइ ॥ खसमै भावै ओहो चँगा जिं करे खुदाइ
 खुदाइ ॥ नानक दुनीआ चारि दिहाड़े सुखि कीतै दुखु होई ॥ गला वाले हैनि घणैरे छडि न सकै कोई ॥ मखीं, मिठै मरणा
 ॥ जिन तू रखाहि तिन नेड़ि न आवै तिन भउ सागरु तरणा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अगम अगोचरु तू धणी सचा अलख
 अपारु ॥ तू दाता सभि मँगते इको देवणहारु ॥ जिनी सेविआ तिनी सुख पाइआ गुरमती वीचारु ॥ इकना नो तुधु एवै
 भावदा माइआ नालि पिआरु ॥ गुर कै सबदि सलाहीऐ अंतरि प्रेम पिआरु ॥ विणु प्रीती भगति न होवई विणु सतिगुर न
 लगै पिआरु ॥ तू प्रभु सभि तुधु सेवदे इक ढाढी करे पुकार ॥ देहि दानु संतोखीआ सचा नामु मिलै आधारु ॥ १९ ॥

सलोक मः १ ॥ राती कालु घटै दिनि कालु ॥ छिजै काइआ होइ परालु ॥ वरतणि वरतिआ सरब जंजालु ॥ भुलिआ चुकि
 गइआ तप तालु ॥ अंधा झखि झखि पइआ झेरि ॥ पिछै रोवहि लिआवहि फेरि ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही ॥ मोइआ
 रोहि रोदे मरि जांहीं, नानक खसमै एवै भावै ॥ सेई मुए जिन चिति न आवै ॥ १ ॥ मः १ ॥ मुआ पिआरु प्रीति मुई मुआ
 वैरु वादी ॥ वंनु गइआ रूपु विणसिआ दुखी देह रुली ॥ किथहु आइआ कह गइआ किहु न सीओ किहु सी ॥ मनिमुखि
 गला गोईआ कीता चाउ रली ॥ नानक सचे नाम बिनु सिर खुर पति पाटी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंम्रित नामु सदा सुखदाता
 अंते होइ सखाई ॥ बाझु गुरु जगतु बउराना नावै सार न पाई ॥ सतिगुरु सेवहि से परवाणु जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥
 सो साहिबु सो सेवकु तेहा जिसु भाणा मंनि वसाई ॥ आपणै भाणै कहु किनि सुखु पाइआ अंधा अंधु कमाई ॥ बिखिआ कदे
 ही रजै नाही मूरख भुख न जाई ॥ दूजै सभु को लागि विगुता बिनु सतिगुरु बूझ न पाई ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिस
 नो किरपा करे रजाई ॥ २० ॥ सलोक मः १ ॥ सरमु धरमु दुइ नानका जे धनु पलै पाइ ॥ सो धनु मित्रु न कांढीरे जितु
 सिरि चोटां खाइ ॥ जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउ फकीर ॥ जिन्ह कै हिरदै तू वसहि ते नर गुणी गहीर ॥ १ ॥ मः १
 ॥ दुखी दुनी सहेडीरे जाइ त लगहि दुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ रूपी भुख न उतरै जां देखां तां
 भुख ॥ जेते रस सरीर के तेते लगहि दुख ॥ २ ॥ मः १ ॥ अंधी कंमी अंधु मनु मनि अंधै तनु अंधु ॥ चिकड़ि लाइरे किआ
 थीरे जां तुटै पथर बंधु ॥ बंधु तुटा बेडी नहीं ना तुलहा ना हाथ ॥ नानक सचे नाम विणु केते डुबे साथ ॥ ३ ॥ मः १ ॥
 लख मण सुइना लख मण रुपा लख साहा सिरि साह ॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लखी घोड़ी पातिसाह ॥ जिथै साइरु
 लंघणा अगनि पाणी असगाह ॥ कंधी दिसि न आवई धाही पवै कहाह ॥ नानक ओथै जाणीअहि साह केई पातिसाह ॥ ४
 ॥ पउड़ी ॥ इकन्हा गलीं, जंजीर बंदि रबाणीरे ॥ बधे छुटहि सचि सचु पछाणीरे ॥ लिखिआ पलै पाइ सो सचु

जाणीरे ॥ हुकमी होइ निबेडु गइआ जाणीरे ॥ भउजलु तारणहारु सबदि पछाणीरे ॥ चोर जार जूआर पीड़े घाणीरे
 ॥ निंदक लाइतबार मिले हढ़वाणीरे ॥ गुरमुखि सचि समाइ सु दरगह जाणीरे ॥ २१ ॥ सलोक मः २ ॥ नाउ फकरै
 पातिसाहु मूरख पँडितु नाउ ॥ अँधे का नाउ पारखू एवै करे गुआउ ॥ इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥ नानक
 गुरमुखि जाणीरे कलि का एहु निआउ ॥ १ ॥ मः १ ॥ हरणां बाजां तै सिक्दारां एन्हा पढ़िआ नाउ ॥ फांधी लगी
 जाति फहाइनि अगै नाही थाउ ॥ सो पढ़िआ सो पँडितु बीना जिन्ही कमाणे नाउ ॥ पहिलो दे जड़ अँदरि जँमै ता उपरि
 होवै छांउ ॥ राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइनिह बैठे सुते ॥ चाकर नहदा पाइनिह घाउ ॥ रतु पितु कुतिहो चटि
 जाहु ॥ जिथै जीआं होसी सार ॥ नकीं, वढीं, लाइतबार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपि उपाए मेदनी आपे करदा सार ॥ भै
 बिनु भरमु न कटीरे नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुर ते भउ ऊपजै पाईरे मोख दुआर ॥ भै ते सहजु पाईरे मिलि जोती
 जोति अपार ॥ भै ते भैजलु लँधीरे गुरमती वीचारु ॥ भै ते निरभउ पाईरे जिस दा अँतु न पारावारु ॥ मनमुख भै की
 सार न जाणन्ही तिसना जलते करहि पुकार ॥ नानक नावै ही ते सुखु पाइआ गुरमती उरि धार ॥ २२ ॥ सलोक मः १
 ॥ रूपै कामै दोसती भुखै सादै गँठु ॥ लबै मालै घुलि मिलि मिचलि ऊँघै सउड़ि पलँघु ॥ भँउकै कोपु खुआरु होइ फकडु
 पिटे अँधु ॥ चुपै चँगा नानका विणु नावै मुहि गँधु ॥ १ ॥ मः १ ॥ राजु मालु रूपु जाति जोबनु पँजे ठग ॥ एनी ठगीं,
 जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥ एना ठगनिह ठग से जि गुर की पैरी पाहि ॥ नानक करमा बाहरे होरि केते मुठे जाहि
 ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पढ़िआ लेखेदारु लेखा मँगीरे ॥ विणु नावै कूड़िआरु अउखा तँगीरे ॥ अउघट रुधे राह गलीआं
 शेकीआं ॥ सचा वेपरवाहु सबदि सँतोखीआं ॥ गहिर गभीर अथाहु हाथ न लभई ॥ मुहे मुहि चोटा खाहु विणु गुर कोइ
 न छुटसी ॥ पति सेती घरि जाहु नामु वखाणीरे ॥ हुकमी साह गिराह देंदा जाणीरे ॥ २३ ॥ सलोक मः १ ॥

पउणै पाणी अगनी जीउ तिन किआ खुसीआ किआ पीड़ ॥ धरती पाताली आकासी इकि दरि रहनि वजीर ॥ इकना वडी
 आरजा इकि मरि होहि जहीर ॥ इकि दे खाहि निखुटै नाही इकि सदा फिरहि फकीर ॥ हुकमी साजे हुकमी ढाहे एक चसे
 महि लख ॥ सभु को नथै नथिआ बखसे तोड़े नथ ॥ वरना चिहना बाहरा लेखे बाझु अलखु ॥ किउ कथीरे किउ आखीरे
 जापै सचो सचु ॥ करणा कथना कार सभ नानक आपि अकथु ॥ अकथ की कथा सुणेइ ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु सदा
 सुखु होइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ अजरु जरै त नउ कुल बँधु ॥ पूजै प्राण होवै थिरु कँधु ॥ कहां ते आइआ कहां एहु जाणु ॥
 जीवत मरत रहै परवाणु ॥ हुकमै बूझै ततु पछाणै ॥ इहु परसादु गुरु ते जाणै ॥ होंदा फडीअगु नानक जाणु ॥ ना हउ
 नामै जूनी पाणु ॥ २ ॥ पउडी ॥ पढीरे नामु सालाह होरि बुधीं, मिथिआ ॥ बिनु सचे वापार जनमु बिरथिआ ॥ अँतु न
 पारावारु न किनही पाइआ ॥ सभु जगु गरबि गुबारु तिन सचु न भाइआ ॥ चले नामु विसारि तावणि ततिआ ॥ बलदी
 अँदरि तेलु दुबिधा घतिआ ॥ आइआ उठी खेलु फिरै उवतिआ ॥ नानक सचै मेलु सचै रतिआ ॥ २४ ॥ सलोक मः १ ॥
 पहिलां मासहु निँमिआ मासै अँदरि वासु ॥ जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हडु चँमु तनु मासु ॥ मासहु बाहरि कढिआ मँमा
 मासु गिरासु ॥ मूहु मासै का जीभ मासै की मासै अँदरि सासु ॥ वडा होआ वीआहिआ घरि लै आइआ मासु ॥ मासहु ही
 मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ॥ सतिगुरि मिलिरे हुकमु बुझीरे तां को आवै रासि ॥ आपि छुटे नह छूटीरे नानक बचनि
 बिणासु ॥ १ ॥ मः १ ॥ मासु मासु करि मूरखु झगड़े गिआनु धिआनु नहीं जाणै ॥ कउणु मासु कउणु सागु कहावै किसु
 महि पाप समाणे ॥ गैडा मारि होम जग कीए देवतिआ की बाणे ॥ मासु छोडि बैसि नकु पकढि राती माणस खाणे ॥ फडु
 करि लोकां नो दिखलावहि गिआनु धिआनु नहीं सूझै ॥ नानक अँधे सिउ किआ कहीरे कहै न कहिआ बूझै ॥ अँधा सोइ
 जि अँधु कमावै तिसु रिदै सि लोचन नाही ॥ मात पिता की रक्तु निपँने मछी मासु न खांही ॥ इसत्री पुरखै जां

निसि मेला ओथै पंधु कमाही ॥ मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै
 पांडे ॥ बाहर का मासु मँदा सुआमी घर का मासु चंगेरा ॥ जीअ जँत सभि मासहु होए जीइ लइआ वासेरा ॥ अभखु भखहि
 भखु तजि छोडहि अंधु गुरु जिन केरा ॥ मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु
 कहावै पांडे ॥ मासु पुराणी मासु कतेबीं, चहु जुगि मासु कमाणा ॥ जजि काजि वीआहि सुहावै ओथै मासु समाणा ॥ इसत्री
 पुरख निपजहि मासहु पातिसाह सुलतानां ॥ जे ओइ दिसहि नरकि जादे तां उन्ह का दानु न लैणा ॥ देदा नरकि सुरगि लैदे
 देखहु एहु धिडाणा ॥ आपि न बूझै लोक बुझाए पांडे खरा सिआणा ॥ पांडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उर्पना ॥ तोइअहु
 अँनु कमादु कपाहां तोइअहु त्रिभवणु गँना ॥ तोआ आखै हउ बहु बिधि हछा तोरे बहुतु बिकारा ॥ एते रस छोडि होवै
 सँनिआसी नानकु कहै विचारा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ किआ आखा इक जीभ तेरा अँतु न किन ही पाइआ ॥ सचा सबदु
 वीचारि से तुझ ही माहि समाइआ ॥ इकि भगवा वेसु करि भरमदे विणु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ देस दिसंतर भवि थके तुधु
 अँदरि आपु लुकाइआ ॥ गुर का सबदु रतँनु है करि चानणु आपि दिखाइआ ॥ आपणा आपु पछाणिआ गुरमती सचि
 समाइआ ॥ आवा गउणु बजारीआ बाजारु जिनी रचाइआ ॥ इकु थिरु सचा सालाहणा जिन मनि सचा भाइआ ॥ २५
 ॥ सलोक मः १ ॥ नानक माइआ करम बिरखु फल अँमित फल विसु ॥ सभ कारण करता करे जिसु खवाले तिसु ॥ १ ॥
 मः २ ॥ नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥ एनी जलीई नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥ २ ॥
 पउड़ी ॥ सिरि सिरि होइ निबेडु हुकमि चलाइआ ॥ तेरै हथि निबेडु तूहै मनि भाइआ ॥ कालु चलाए बँनि कोई न रखसी ॥
 जरु जरवाणा कँनिह चडिआ नचसी ॥ सतिगुरु बोहिथु बेडु सचा रखसी ॥ अगनि भखै भड़हाडु अनदिनु भखसी ॥
 फाथा चुगै चोग हुकमी छुटसी ॥ करता करे सु होगु कूडु निखुटसी ॥ २६ ॥ सलोक मः १ ॥ घर महि घरु देखाइ

देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु ॥ पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु ॥ दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल
 हैरानु ॥ तार घोर बाजिंत्र तह साचि तखति सुलतानु ॥ सुखमन कै घरि रागु सुनि मंडलि लिव लाइ ॥ अकथ कथा
 बीचारीऐ मनसा मनहि समाइ ॥ उलटि कमलु अँमिति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ ॥ अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि
 समाइ ॥ सभि सखीआ पंचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु ॥ सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु ॥ १ ॥ मः १
 ॥ चिलिमिलि बिसीआर दुनीआ फानी ॥ कालूबि अकल मन गोर न मानी ॥ मन कमीन कमतरीन तू दरीआउ खुदाइआ
 ॥ एकु चीजु मुझै देहि अवर जहर चीज न भाइआ ॥ पुराब खाम कूजै हिकमति खुदाइआ ॥ मन तुआना तू कुदरती आइआ
 ॥ सग नानक दीबान मसताना नित चडै सवाइआ ॥ आतम दुनीआ खुनक नामु खुदाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी नवी मः ५ ॥
 सभो वरतै चलतु चलतु वखाणिआ ॥ पारब्रहमु परमेसरु गुरमुखि जाणिआ ॥ लथे सभि विकार सबदि नीसाणिआ ॥
 साधू सँगि उधारु भए निकणिआ ॥ सिमरि सिमरि दातारु सभि रँग माणिआ ॥ परगटु भइआ संसारि मिहर छावाणिआ
 ॥ आपे बखसि मिलाए सद कुरबाणिआ ॥ नानक लए मिलाइ खसमै भाणिआ ॥ २७ ॥ सलोक मः १ ॥ धँनु सु कागदु
 कलम धँनु धनु भांडा धनु मसु ॥ धनु लेखारी नानका जिनि नामु लिखाइआ सचु ॥ १ ॥ मः १ ॥ आपे पटी कलम आपि
 उपरि लेखु भि तूँ ॥ एको कहीऐ नानका दुजा काहे कू ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तूँ आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥ तुधु
 बिनु दूजा को नही तूरहिआ समाई ॥ तेरी गति मिति तुहै जाणदा तुधु कीमति पाई ॥ तू अलख अगोचरु अगमु है गुरमति
 दिखाई ॥ अंतरि अगिआनु दुखु भरमु है गुर गिआनि गवाई ॥ जिसु क्रिपा करहि तिसु मेलि लैहि सो नामु धिआई ॥ तू
 करता पुरखु अगँमु है रविआ सभ ठाई ॥ जितु तू लाइहि सचिआ तितु को लगै नानक गुण गाई ॥ २८ ॥ १ ॥ सुधु ॥

रागु मलार बाणी नामदेव जीउ की ॥ १४३ शक्तिगुर प्रसादि ॥

सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥ भगति दानु दीजै जाचहि संत जन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जां चै घरि दिग दिसै सराइचा
बैकुंठ भवन चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले ॥ जां चै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवडे कउतकु कालु बपुड़ा
कोटवालु सुकरा सिरी ॥ सु ऐसा राजा श्री नरहरी ॥ १ ॥ जां चै घरि कुलालु ब्रहमा चतुर मुख डांवड़ा जिनि बिस्व संसारु
राचीले ॥ जां कै घरि ईसरु बावला जगत गुरु तत सारखा गिआनु भाखीले ॥ पापु पुंनु जां चै डांगीआ दुआरे चित्रु गुपतु
लेखीआ ॥ धरम राइ परुली प्रतिहारु ॥ सो ऐसा राजा श्री गोपालु ॥ २ ॥ जां चै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ
गावंत आछै ॥ सरब सासत्र बहुरूपीआ अनगरुआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहि काछे ॥ चउर ढूल जां चै है पवणु ॥
चेरी सकति जीति ले भवणु ॥ अंड टूक जा चै भसमती ॥ सो ऐसा राजा त्रिभवण पती ॥ ३ ॥ जां चै घरि कूरमा पालु
सहस्र फनी बासकु सेज वालूआ ॥ अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी मेघ माला पाणीहारीआ ॥ नख प्रसेव
जा चै सुरसरी ॥ सपत समुंद जां चै घड़थली ॥ एते जीअ जां चै वरतणी ॥ सो ऐसा राजा त्रिभवण धणी ॥ ४ ॥ जां चै
घरि निकट वरती अरजनु ध्रु प्रहलादु अंबरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला ॥ एते जीअ जां चै हहि घरी ॥
सरब बिआपक अंतर हरी ॥ प्रणवै नामदेउ तां ची आणि ॥ सगल भगत जा चै नीसाणि ॥ ५ ॥ १ ॥ मलार ॥ मो कउ तू
न बिसरि तु न बिसारि ॥ तू न बिसारे रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपरि सभ कोपिला ॥ सूदु
सूदु कर मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला ॥ १ ॥ मूए हूए जउ मुकटि देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥ ए पंडीआ मो कउ
ढेढ कहत तेरी पैज पिंछउडी होइला ॥ २ ॥ तू जु दइआलु क्रिपालु कहीअतु हैं अतिभुजि भइओ अपारला ॥ फेरि दीआ

देहुरा नामे कउ पँडीअन कउ पिछवारला ॥ ३ ॥ २ ॥

मलार बाणी भगत रविदास जी की १४ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चँमारँ ॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरसरी सलल क्कित बारुनी रे
सँत जन करत नही पानँ ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनँ ॥ १ ॥ तर तारि अपवित्र करि
मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारँ ॥ भगति भागउतु लेखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करु नमसकारँ ॥ २ ॥ मेरी जात कुट
बांढला ढोर ढोवँता नितहि बनारसी आस पास ॥ अब बिप्र परधान तिहि करहि डँडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा
॥ ३ ॥ १ ॥ मलार हरि जपत तेऊ जना पदम कलवास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक होइ
बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥ जा कै भागवतु लेखीऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप
छीपा ॥ बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥ १ ॥ जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु
करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥ जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥ २ ॥ जा के कुटँब
के ढेढ सभ डोर ढोवँत फिरहि अजहु बनारसी आस पास ॥ आचार सहित बिप्र करहि डँडउति तिन तनै रविदास दासान
दासा ॥ ३ ॥ २ ॥

मलार १४ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥ साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥ मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥ आवैगी
नीद कहा लगु सोवउ ॥ १ ॥ जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥ झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥ २ ॥ कहु
रविदास भइओ जब लेखो ॥ जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥

शगु कानड़ा चउपदे महला ४ घरु १

१ॐ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

मेश मनु साध जनां मिलि हरिआ ॥ हउ बलिं बलिं बलिं बलिं साध जनां कउ मिलि संगति पारि
उतरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि क्रिपा करहु प्रभु अपनी हम साध जनां पग परिआ ॥ धनु धनु साध जिन हरि प्रभु जानिआ
मिलि साधू पतित उधरिआ ॥ १ ॥ मनूआ चलै चलै बहु बहु बिधि मिलि साधू वसगति करिआ ॥ जिउं जल तँतु पसारिओ
बधकि ग्रसि मीना वसगति खरिआ ॥ २ ॥ हरि के संत संत भल नीके मिलि संत जना मलु लहीआ ॥ हउमै दुरतु गइआ सभु
नीकरि जिउ साबुनि कापरु करिआ ॥ ३ ॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि गुर सतिगुर चरन उर धरिआ ॥ सभु
दालदु दूख भँज प्रभु पाइआ जन नानक नामि उधरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेश मनु संत जना पग रेन ॥ हरि
हरि कथा सुनी मिलि संगति मनु कोरा हरि रँगि भेन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम अचित अचेत न जानहि गति मिति गुरि कीए सुचित
चितेन ॥ प्रभि दीन दइआलि कीओ अँगीक्रितु मनि हरि हरि नामु जपेन ॥ १ ॥ हरि के संत मिलहि मन प्रीतम कटि देवउ

हीआरा तेन ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ हम कीए पतित पवेन ॥ २ ॥ हरि के जन ऊतम जगि कहीअहि जिन
 मिलिआ पाथर सेन ॥ जन की महिमा बरनि न साकउ ओइ ऊतम हरि हरि केन ॥ ३ ॥ तुम्ह हरि साह वडे प्रभ सुआमी
 हम वणजारे रासि देन ॥ जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु लदि वाखरु हरि हरि लेन ॥ ४ ॥ २ ॥ कानड़ा महला ४ ॥
 जपि मन राम नाम परगास ॥ हरि के संत मिलि प्रीति लगानी विचे गिरह उदास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम हरि हिरदै जपिओ
 नामु नरहरि प्रभि क्रिपा करी किरपास ॥ अनदिनु अनदु भइआ मनु बिगसिआ उदम भए मिलन की आस ॥ १ ॥ हम हरि
 सुआमी प्रीति लगाई जितने सास लीए हम ग्रास ॥ किलबिख दहन भए खिन अंतरि तूटि गए माइआ के फास ॥ २ ॥
 किआ हम किरम किआ कर्म कमावहि मूरख मुगध रखे प्रभ तास ॥ अवगनीआरे पाथर भारे सतसंगति मिलि तरे तरास
 ॥ ३ ॥ जेती खिसटि करी जगदीसरि ते सभि ऊच हम नीच बिखिआस ॥ हमरे अवगुन सँगि गुर मेटे जन नानक मेलि
 लीए प्रभ पास ॥ ४ ॥ ३ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरै मनि राम नामु जपिओ गुर वाक ॥ हरि हरि क्रिपा करी जगदीसरि
 दुरमति दूजा भाउ गइओ सभ झाक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना रूप रंग हरि केरे घटि घटि रामु रविओ गुपलाक ॥ हरि के
 संत मिले हरि प्रगटे उघरि गए बिखिआ के ताक ॥ १ ॥ संत जना की बहुतु बहु सोभा जिन उरि धारिओ हरि रसिक
 रसाक ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ जैसे गऊ देखि बछराक ॥ २ ॥ हरि के संत जना महि हरि हरि ते जन ऊतम
 जनक जनाक ॥ तिन हरि हिरदै बासु बसानी छूटि गई मुसकी मुसकाक ॥ ३ ॥ तुम्हरे जन तुम्ह ही प्रभ कीए हरि राखि
 लेहु आपन अपनाक ॥ जन नानक के सखा हरि भाई मात पिता बंधप हरि साक ॥ ४ ॥ ४ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरे
 मन हरि हरि राम नामु जपि चीति ॥ हरि हरि वसतु माइआ गढ़ि वेढी गुर कै सबदि लीओ गडु जीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 मिथिआ भरमि भरमि बहु भ्रमिआ लुबधो पुत्र कलत्र मोह प्रीति ॥ जैसे तरवर की तुछ छाइआ खिन महि बिनसि जाइ

देह भीति ॥ १ ॥ हमरे प्रान प्रीतम जन ऊतम जिन मिलिआ मनि होइ प्रतीति ॥ परचै रामु रविआ घट अंतरि असथिरु
 रामु रविआ रंगि प्रीति ॥ २ ॥ हरि के संत संत जन नीके जिन मिलिआं मनु रंगि रंगीति ॥ हरि रंगु लहै न उतरै कबहु हरि
 हरि जाइ मिलै हरि प्रीति ॥ ३ ॥ हम बहु पाप कीए अपराधी गुरि काटे कटित कटीति ॥ हरि हरि नामु दीओ मुखि अउखधु
 जन नानक पतित पुनीति ॥ ४ ॥ ५ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम जगंनाथ ॥ घूमन घेर परे बिखु बिखिआ
 सतिगुर काढि लीए दे हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुआमी अभै निरँजन नरहरि तुम्ह राखि लेहु हम पापी पाथ ॥ काम क्रोध
 बिखिआ लोभि लुभते कासट लोह तरे सँगि साथ ॥ १ ॥ तुम्ह वड पुरख बड अगम अगोचर हम दूढि रहै पाई नही हाथ ॥
 तू परै परै अपरंपरु सुआमी तू आपन जानहि आपि जगंनाथ ॥ २ ॥ अद्रिसटु अगोचर नामु धिआए सतसंगति मिलि
 साथू पाथ ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति हरि हरि जपिओ अकथ कथ काथ ॥ ३ ॥ हमरे प्रभ जगदीस गुसाई हम
 राखि लेहु जगंनाथ ॥ जन नानकु दासु दास दासन को प्रभ करहु क्रिपा राखहु जन साथ ॥ ४ ॥ ६ ॥

कानड़ा महला ४ पड़ताल घरु ५ ॥ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मन जापहु राम गुपाल ॥ हरि रतन जेहर लाल ॥ हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल ॥ हरि हो हो किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 तुमरे गुन अगम अगोचर एक जीह किआ कथै बिचारी राम राम राम राम लाल ॥ तुमरी जी अकथ कथा तू तू तू ही जानहि
 हउ हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ हमरे हरि प्रान सखा सुआमी हरि मीता मेरे मनि तनि जीह हरि हरे हरे राम
 नाम धनु माल ॥ जा को भागु तिनि लीओ ही सुहागु हरि हरि हरे हरे गुन गावै गुरमति हउ बलि बले हउ बलि बले जन
 नानक हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ हरि गुन गावहु जगदीस ॥ एका
 जीअ कीचै लख बीस ॥ जपि हरि हरि सबदि जपीस ॥ हरि हो हो किरपीस ॥

१ ॥ रहाउ ॥ हरि किरपा करि सुआमी हम लाइ हरि सेवा हरि जपि जपे हरि जपि जपे जपु जापउ जगदीस ॥ तुमरे जन
 रामु जपहि ते ऊतम तिन कउ हउ घुमि घुमे घुमि घुमि जीस ॥ १ ॥ हरि तुम वड वडे वडे वड ऊचे सो करहि जि तुधु
 भावीस ॥ जन नानक अँमितु पीआ गुरमती धनु धँनु धनु धँनु धँनु गुरू साबीस ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥ कानड़ा महला ४
 ॥ भजु रामो मनि राम ॥ जिसु रूप न रेख वडाम ॥ सतसँगति मिलु भजु राम ॥ बड हो हो भाग मथाम ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ जितु ग्रिहि मँदरि हरि होतु जासु तितु घरि आनदो आनँदु भजु राम राम राम ॥ राम नाम गुन गावहु हरि प्रीतम उपदेसि
 गुरू गुर सतिगुरा सुखु होतु हरि हरे हरि हरे हरे भजु राम राम राम ॥ १ ॥ सभ सिसटि धार हरि तुम किरपाल करता सभु
 तू तू तू राम राम राम ॥ जन नानको सरणागती देहु गुरमती भजु राम राम राम ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥ कानड़ा महला ४ ॥
 सतिगुर चाटउ पग चाट ॥ जितु मिलि हरि पाधर बाट ॥ भजु हरि रसु रस हरि गाट ॥ हरि हो हो लिखे लिलाट ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ खट करम किरिआ करि बहु बहु बिसथार सिध साधिक जोगीआ करि जट जटा जट जाट ॥ करि भेख न पाईए
 हरि ब्रहम जोगु हरि पाईए सतसँगती उपदेसि गुरू गुर सँत जना खोलि खोलि कपाट ॥ १ ॥ तू अपरँपरु सुआमी अति
 अगाहु तू भरपुरि रहिआ जल थले हरि इकु इको इक एकै हरि थाट ॥ तू जाणहि सभ बिधि बूझहि अपे जन नानक के प्रभ
 घटि घटे घटि घटे घटि हरि घाट ॥ २ ॥ ४ ॥ १० ॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन गोबिध माधो ॥ हरि हरि अगम
 अगाधो ॥ मति गुरमति हरि प्रभु लाधो ॥ धुरि हो हो लिखे लिलाधो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु माइआ सँचि बहु चितै
 बिकार सुखु पाईए हरि भजु सँत सँत सँगती मिलि सतिगुरू गुरू साधो ॥ जिउ छुहि पारस मनूर भए कँचन तिउ पतित
 जन मिलि सँगती सुध होवत गुरमती सुध हाधो ॥ १ ॥ जिउ कासट सँगि लोहा बहु तरता सिउ पापी सँगि तरे साध साध
 सँगती गुर सतिगुरू गुर साधो ॥ चारि बरन चारि आस्रम है कोई मिलै गुरू नानक सो आपि तरै कुल सगल तराधो ॥

२ ॥ ५ ॥ ११ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ हरि जसु गावहु भगवान ॥ जसु गावत पाप लहान ॥ मति गुरमति सुनि जसु
कान ॥ हरि हो हो किरपान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेर जन धिआवहि इक मनि इक चीति ते साधू सुख पावहि जपि हरि हरि
नामु निधान ॥ उस्तति करहि प्रभ तेरीआ मिलि साधू साध जना गुर सतिगुरु भगवान ॥ १ ॥ जिन कै हिरदै तू
सुआमी ते सुख गल पावहि ते तरे भव सिँधु ते भगत हरि जान ॥ तिन सेवा हम लाइ हरे हम लाइ हरे जन नानक के हरि तू
तूतूतूतू भगवान ॥ २ ॥ ६ ॥ १२ ॥

कानड़ा महला ५ वरु २ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

गाईरे गुण गोपाल क्रिपा निधि ॥ दूख बिदारन सुखदाते सतिगुर जा कउ भेटत होइ क्रिपा सगल सिधि ॥ १ ॥ रहाउ
॥ सिमरत नामु मनहि साधारै ॥ कोटि पराधी खिन महि तारै ॥ १ ॥ जा कउ चीति आवै गुरु अपना ॥ ता कउ दूखु
नही तिलु सुपना ॥ २ ॥ जा कउ सतिगुरु अपना राखै ॥ सो जनु हरि रसु रसना चाखै ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि कीनी
मइआ ॥ हलति पलति मुख ऊजल भइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ आराधउ तुझहि सुआमी अपने ॥ ऊठत
बैठत सोवत जागत सासि सासि सासि हरि जपने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता कै हिरदै बसिओ नामु ॥ जा कउ सुआमी कीनो
दानु ॥ १ ॥ ता कै हिरदै आई सांति ॥ ठाकुर भेटे गुर बचनांति ॥ २ ॥ सरब कला सोई परबीन ॥ नाम मँत्रु जा कउ
गुरि दीन ॥ ३ ॥ कहु नानक ता कै बलि जाउ ॥ कलिजुग महि पाईआ जिनि नाउ ॥ ४ ॥ २ ॥ कानड़ा महला ५ ॥
कीरति प्रभ की गाउ मेरी रसनां ॥ अनिक बार करि बँदन सँतन ऊहां चरन गोबिंद जी के बसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक
भांति करि दुआरु न पावउ ॥ होइ क्रिपालु त हरि हरि धिआवउ ॥ १ ॥ कोटि करम करि देह न सोधा ॥ साधसंगति
महि मनु परबोधा ॥ २ ॥ त्रिसन न बूझी बहु रँग माइआ ॥ नामु लैत सरब सुख पाइआ ॥ ३ ॥ पारब्रहमु जब भए
दइआल ॥ कहु नानक तउ छूटे जँजाल ॥ ४ ॥ ३ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी मांग गोबिंद ते ॥ टहल सँतन की सँगु

साधू का हरि नामां जपि परम गते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा चरना ठाकुर सरना ॥ सोई कुसलु जु प्रभ जीउ करना ॥ १ ॥
 सफल होत इह दुलभ देही ॥ जा कउ सतिगुरु मइआ करेही ॥ २ ॥ अगिआन भरमु बिनसै दुख डेरा ॥ जा कै ह्रिदै
 बसहि गुर पैरा ॥ ३ ॥ साधसँगि रँगि प्रभु धिआइआ ॥ कहु नानक तिनि पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥
 भगति भगतन हूँ बनि आई ॥ तन मन गलत भए ठाकुर सिउ आपन लीए मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावनहारी गावै गीत
 ॥ ते उधरे बसे जिह चीत ॥ १ ॥ पेखे बिँजन परोसनहारै ॥ जिह भोजनु कीनो ते त्रिपतारै ॥ २ ॥ अनिक स्वांग काछे
 भेखधारी ॥ जैसो सा तेसो द्रिसटारी ॥ ३ ॥ कहन कहावन सगल जँजार ॥ नानक दास सचु करणी सार ॥ ४ ॥ ५ ॥
 कानड़ा महला ५ ॥ तेरो जनु हरि जसु सुनत उमाहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनहि प्रगासु पेखि प्रभ की सोभा जत कत
 पेखउ आहिओ ॥ १ ॥ सभ ते परै परै ते ऊचा गहिर गँभीर अथाहिओ ॥ २ ॥ ओति पोति मिलिओ भगतन कउ जन
 सिउ परदा लाहिओ ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि गावै गुण नानक सहज समाधि समाहिओ ॥ ४ ॥ ६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥
 सँतन पहि आपि उधारन आइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन भेटत होत पुनीता हरि हरि मँत्रु द्विड़ाइओ ॥ १ ॥ काटे रोग
 भए मन निरमल हरि हरि अउखधु खाइओ ॥ २ ॥ असथित भए बसे सुख थाना बहुरि न कतहू धाइओ ॥ ३ ॥ सँत
 प्रसादि तरे कुल लोगा नानक लिपत न माइओ ॥ ४ ॥ ७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ जब ते
 साधसँगति मोहि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को बैरी नहीं बिगाना सगल सँगि हम कउ बनि आई ॥ १ ॥ जो प्रभ कीनो सो
 भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ॥ २ ॥ सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥ ३ ॥ ८ ॥
 कानड़ा महला ५ ॥ ठाकुर जीउ तुहारो परना ॥ मानु महतु तुम्हारै ऊपरि तुम्हरी ओट तुम्हारी सरना ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी
 आस भरोसा तुम्हरा नामु रिदै लै धरना ॥ तुमरो बलु तुम सँगि सुहेले जो जो कहहु सोई सोई करना ॥ १ ॥ तुमरी दइआ

मइआ सुखु पावउ होहु क्रिपाल त भउजलु तरना ॥ अभै दानु नामु हरि पाइओ सिरु डारिओ नानक सँत चरना
 ॥ २ ॥ ९ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साध सरनि चरन चितु लाइआ ॥ सुपन की बात सुनी पेखी सुपना नाम मँत्रु
 सतिगुरू दिड़ाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह त्रिपतानो राज जोबनि धनि बहुरि बहुरि फिरि धाइआ ॥ सुखु
 पाइआ त्रिसना सभ बुझी है सांति पाई गुन गाइआ ॥ १ ॥ बिनु बूझै पसू की निआई भ्रमि मोहि बिआपिओ
 माइआ ॥ साधसँगि जम जेवरी काटी नानक सहजि समाइआ ॥ २ ॥ १० ॥ कानड़ा महला ५ ॥ हरि के
 चरन हिरदै गाइ ॥ सीतला सुख सांति मूरति सिमरि सिमरि नित धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल आस होत
 पूरन कोटि जनम दुखु जाइ ॥ १ ॥ पुँन दान अनेक किरिआ साधू सँगि समाइ ॥ ताप सँताप मिटे नानक
 बाहुडि कालु न खाइ ॥ २ ॥ ११ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ३ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

कथीरे सँतसँगि प्रभ गिआनु ॥ पूरन परम जोति परमेसुर सिमरत पाईऐ मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत जात रहै
 खम नासे सिमरत साधू सँगि ॥ पतित पुनीत होहि खिन भीतरि पारब्रहम कै रँगि ॥ १ ॥ जो जो कथै सुनै हरि
 कीरतनु ता की दुर्मति नास ॥ सगल मनोरथ पावै नानक पूरन होवै आस ॥ २ ॥ १ ॥ १२ ॥ कानड़ा महला
 ५ ॥ साधसँगति निधि हरि को नाम ॥ सँगि सहार्इ जीअ कै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँत रेनु निति मजनु करै
 ॥ जनम जनम के किलबिख हरै ॥ १ ॥ सँत जना की ऊची बानी ॥ सिमरि सिमरि तरे नानक प्राणी ॥ २ ॥
 २ ॥ १३ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साधू हरि हरे गुन गाइ ॥ मान तनु धनु प्रान प्रभ के सिमरत दुखु जाइ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ ईत ऊत कहा लोभावाहि एक सिउ मनु लाइ ॥ १ ॥ महा पवित्र सँत आसनु मिलि सँगि गोबिदु
 धिआइ ॥ सगल तिआगि सरनि आइओ नानक लेहु मिलाइ ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ पेखि

पेखिं बिगसिउ साजन प्रभु आपना इकांत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनदा सुख सहज मूरति तिसु आन नाही भांति ॥ १ ॥
 सिमरत इक बार हरि हरि मिटि कोटि कसमल जांति ॥ २ ॥ गुण रमंत दूख नासहि रिद भइअंत सांति ॥ ३ ॥ अँम्रिता रसु
 पीउ रसना नानक हरि रँगि रात ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साजना सँत आउ मेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनदा
 गुन गाइ मँगल कसमला मिटि जाहि परैरै ॥ १ ॥ सँत चरन धरउ माथै चांदना छिहि होइ अँधेरै ॥ २ ॥ सँत प्रसादि कमलु
 बिगसै गोबिंद भजउ पेखिं नैरै ॥ ३ ॥ प्रभु क्रिपा ते सँत पाए वारि वारि नानक उह बैरै ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥ कानड़ा महला
 ५ ॥ चरन सरन गोपाल तेरी ॥ मोह मान धोह भरम राखि लीजै काटि बेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूडत सँसार सागर ॥ उधरे
 हरि सिमरि रतनागर ॥ १ ॥ सीतला हरि नामु तेरा ॥ पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥ २ ॥ दीन दरद निवारि तारन ॥ हरि क्रिपा
 निधि पतित उधारन ॥ ३ ॥ कोटि जनम दूख करि पाइओ ॥ सुखी नानक गुरि नामु द्विड़ाइओ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥
 कानड़ा महला ५ ॥ धनि उह प्रीति चरन सँगि लागी ॥ कोटि जाप ताप सुख पाए आइ मिले पूरन बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ मोहि अनाथु दासु जनु तेरा अवर ओट सगली मोहि तिआगी ॥ भोर भरम काटे प्रभु सिमरत गिआन अँजन मिलि सोवत
 जागी ॥ १ ॥ तू अथाहु अतु बडो सुआमी क्रिपा सँधु पूरन रतनागी ॥ नानकु जाचकु हरि हरि नामु मांगै मसतकु आनि
 धरिओ प्रभु पागी ॥ २ ॥ ७ ॥ १८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कुचिल कठोर कपट कामी ॥ जिउ जानहि तिउ तारि सुआमी
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू समरथु सरनि जोगु राखहि अपनी कल धारि ॥ १ ॥ जाप ताप नेम सुचि सजम नाही इन बिधे छुटकार
 ॥ गरभ घोर अँध ते काढहु प्रभु नानक नदरि निहारि ॥ २ ॥ ८ ॥ १९ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ४ १९ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

नाराइन नरपति नमसकारै ॥ ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ

आपि मुक्त मोहि तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन कवन कचन गुन कहीरे अंतु नही कछु पारै ॥ लाख लाख लाख कई कोरै
 को है ऐसो बीचारे ॥ १ ॥ बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै ॥ कहु नानक संतन रसु आई है जिउ चाखि
 गूंगा मुसकारै ॥ २ ॥ १ ॥ २० ॥ कानड़ा महला ५ ॥ न जानी संतन प्रभ बिनु आन ॥ ऊच नीच सभ पेखि समानो
 मुखि बकनो मनि मान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि पूरि रहे सुख सागर भै भँजन मेरे प्रान ॥ मनहि प्रगासु भइओ भ्रमु
 नासिओ मँत्रु दीओ गुर कान ॥ १ ॥ करत रहे क्रतग्य करुणा मै अंतरजामी गियान ॥ आठ पहर नानक जसु गावै मांगन
 कउ हरि दान ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कहन कहावन कउ कई केतै ॥ ऐसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत
 जोग कउ बेतै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु नाही सभु सुखु ही है रे एकै एकी नेतै ॥ बुरा नही सभु भला ही है रे हार नही सभ जेतै
 ॥ १ ॥ सोगु नाही सदा हरखी है रे छोडि नाही किछ लेतै ॥ कहु नानक जनु हरि हरि हरि है कत आवै कत रमतै ॥ २ ॥
 ३ ॥ २२ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ हीए को प्रीतमु बिसरि न जाइ ॥ तन मन सलत भए तिह सँगे मोहनी मोहि रही मोरी माइ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जै पहि कहउ त्रिथा हउ अपनी तेऊ तेऊ गहे अटकाइ ॥ अनिक भांति की एकै जाली ता की गँठि नही
 छोराइ ॥ १ ॥ फिरत फिरत नानक दासु आइओ संतन ही सरनाइ ॥ काटे अगिआन भरम मोह माइआ लीओ कँठि
 लगाइ ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ आनद रँग बिनोद हमारै ॥ नामो गावनु नामु धिआवनु नामु हमारे प्रान
 अधारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामो गिआनु नामु इसनाना हरि नामु हमारे कारज सवारै ॥ हरि नामो सोभा नामु बडाई भउजलु
 बिखमु नामु हरि तारै ॥ १ ॥ अगम पदारथ लाल अमोला भइओ परापति गुर चरनारै ॥ कहु नानक प्रभ भए क्रिपाला
 मगन भए हीअरै दरसारै ॥ २ ॥ ५ ॥ २४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साजन मीत सुआमी नेरो ॥ पेखत सुनत सभन के
 सँगे थोरै काज बुरो कह फेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना जेतो लपटाइओ कछू नही नाही कछु तेरो ॥ आगै द्रिसटि

आवत सभ परगट ईहा मोहिओ भरम अँधेरो ॥ १ ॥ अटकिओ सुत बनिता सँग माइआ देवनहारु दातारु बिसेरो ॥
 कहु नानक एकै भारोसउ बँधन काटनहारु गुरु मेरो ॥ २ ॥ ६ ॥ २५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ बिख्रै दलु सँतनि तुम्हरै
 गाहिओ ॥ तुमरी टेक भरोसा ठाकुर सरनि तुम्हारी आहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के महा पराछत दरसनु भेटि
 मिटाइओ ॥ भइओ प्रगासु अनद उजीआरा सहजि समाधि समाहिओ ॥ १ ॥ कउनु कहै तुम ते कछु नाही तुम समरथ
 अथाहिओ ॥ क्रिपा निधान रँग रूप रस नामु नानक कै लाहिओ ॥ २ ॥ ७ ॥ २६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ बूडत प्राणी
 हरि जपि धीरै ॥ बिनसै मोहु भरमु दुखु पीरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरउ दिनु रैनि गुर के चरना ॥ जत कत पेखउ तुमरी
 सरना ॥ १ ॥ सँत प्रसादि हरि के गुन गाइआ ॥ गुर भेटत नानक सुखु पाइआ ॥ २ ॥ ८ ॥ २७ ॥ कानड़ा महला
 ५ ॥ सिमरत नामु मनहि सुखु पाईऐ ॥ साध जना मिलि हरि जसु गाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा प्रभ रिदै बसेरो
 ॥ चरन सँतन कै माथा मेरो ॥ १ ॥ पारब्रहम कउ सिमरहु मनां ॥ गुरमुखि नानक हरि जसु सुनां ॥ २ ॥ ९ ॥ २८
 ॥ कानड़ा महला ५ ॥ मेरे मन प्रीति चरन प्रभ परसन ॥ रसना हरि हरि भोजनि त्रिपतानी अखीअन कउ सँतोखु प्रभ
 दरसन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करननि पूरि रहिओ जसु प्रीतम कलमल दोख सगल मल हरसन ॥ पावन धावन सुआमी
 सुख पँथा अँग सँग काइआ सँत सरसन ॥ १ ॥ सरनि गही पूरन अबिनासी आन उपाव थकित नहीं करसन ॥ करु
 गहि लीए नानक जन अपने अँध घोर सागर मरसन ॥ २ ॥ १० ॥ २९ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कुहकत कपट खपट
 खल गरजत मरजत मीचु अनिक बरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहँ मत अन रत कुमित हित प्रीतम पेखत भ्रमत लाख
 गरीआ ॥ १ ॥ अनित बिउहार अचार बिधि हीनत मम मद मात कोप जरीआ ॥ करुण क्रिपाल गोपाल दीन बँधु
 नानक उधरु सरनि परीआ ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥ कानड़ा महला ५ ॥ जीअ प्राण मान दाता ॥ हरि बिसरते ही हानि
 ॥

१ ॥ रहाउ ॥ गोबिंद तिआगि आन लागहि अँप्रितो डारि भूमि पागहि ॥ बिखै रस सिउ आसकत मूडे काहे सुख मानि ॥ १ ॥ कामिक्रोधि लोभि बिआपिओ जनम ही की खानि ॥ पतित पावन सरनि आइओ उधरु नानक जानि ॥ २ ॥ १२ ॥ ३१ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ अविलोकउ राम को मुखारबिंद ॥ खोजत खोजत रतनु पाइओ बिसरी सभ चिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल रिदै धारि ॥ उतरिआ दुखु मँद ॥ १ ॥ राज धनु परवारु मेरै सरबसो गोबिंद ॥ साधसँगमि लाभु पाइओ नानक फिरि न मरँद ॥ २ ॥ १३ ॥ ३२ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ५ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभ पूजहो नामु अराधि ॥ गुर सतिगुर चरनी लागि ॥ हरि पावहु मनु अगाधि ॥ जगु जीतो हो हो गुर किरपाधि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक पूजा मै बहु बिधि खोजी सा पूजा जिं हरि भावासि ॥ माटी की इह पुतरी जोरी किआ एह कर्म कमासि ॥ प्रभ बाह पकरि जिसु मारगि पावहु सो तुधु जँत मिलासि ॥ १ ॥ अवर ओट मै कोइ न सूझै इक हरि की ओट मै आस ॥ किआ दीनु करे अरदासि ॥ जउ सभ घटि प्रभू निवास ॥ प्रभ चरन की मनि पिआस ॥ जन नानक दासु कहीअतु है तुम्हरा हउ बलि बलि सद बलि जास ॥ २ ॥ १ ॥ ३३ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ६ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

जगत उधारन नाम प्रिअ तेरै ॥ नव निधि नामु निधानु हरि केरै ॥ हरि रँग रँग रँग अनूपेरै ॥ काहे रे मन मोहि मगनेरै ॥ नैनहु देखु साध दरसेरै ॥ सो पावै जिसु लिखतु लिलेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवउ साध सँत चरनेरै ॥ बाँछउ धूरि पवित्र करेरै ॥ अठसठि मजनु मैलु कटेरै ॥ सासि सासि धिआवहु मुखु नही मोरै ॥ किछु सँगि न चालै लाख करेरै ॥ प्रभ जी को नामु अँति पुकरेरै ॥ १ ॥ मनसा मानि एक निरँकेरै ॥ सगल तिआगहु भाउ दूजेरै ॥ कवन कहां हउ गुन

प्रिअ तैरै ॥ बरनि न साकउ एक टुलैरै ॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै ॥ मिलु नानक देव जगत गुरु कैरै ॥ २ ॥ १ ॥
 ३४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी कउन बिधे दरसन परसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस पिआस सफल मूरति उमगि हीउ
 तरसना ॥ १ ॥ दिन लीन पिआस मीन सँतना हरि सँतना ॥ हरि सँतना की रेन ॥ हीउ अरपि देन ॥ प्रभ भए है किरपेन
 ॥ मानु मोहु तिआगि छोडिओ तउ नानक हरि भेटना ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ रंगा रंग रंगन के रंगा ॥
 कीट हसत पूरन सभ सँगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरत नेम तीरथ सहित गँगा ॥ जलु हेवत भूख अरु नँगा ॥ पूजाचार करत
 मेलँगा ॥ चक्र करम तिलक खाटँगा ॥ दरसनु भेटे बिनु सतसँगा ॥ १ ॥ हठि निग्रहि अति रहत बिटँगा ॥ हउ रोगु
 बिआपै चुकै न भँगा ॥ काम क्रोध अति त्रिसन जरँगा ॥ सो मुकतु नानक जिसु सतिगुरु चँगा ॥ २ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ७ १३ सतिगुरु प्रसादि ॥

तिख बूझि गई गई मिलि साध जना ॥ पँच भागे चोर सहजे सुखैनो हरे गुन गावती गावती गावती दरस पिआरि ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ जैसी करी प्रभ मो सिउ मो सिउ ऐसी हउ कैसे करउ ॥ हीउ तुम्हारे बलि बले बलि बले बलि गई ॥ १ ॥ पहिले पै
 सँत पाइ धिआइ धिआइ प्रीति लाइ ॥ प्रभ थानु तेरो केहरो जितु जँतन करि बीचारु ॥ अनिक दास कीरति करहि तुहारी
 ॥ सोई मिलिओ जो भावतो जन नानक ठाकुर रहिओ समाइ ॥ एक तूही तूही तूही ॥ २ ॥ १ ॥ ३७ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ८ १३ सतिगुरु प्रसादि ॥

तिआगीरे गुमानु मानु पेखता दइआल लाल हां हां मन चरन रेन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि सँत सँत गुपाल गिआन धिआन ॥
 १ ॥ हिरदै गोबिंद गाइ चरन कमल प्रीति लाइ दीन दइआल मोहना ॥ क्रिपाल दइआ मइआ धारि ॥ नानकु मागै नामु
 दानु ॥ तजिं मोहु भरमु

सगल अभिमानु ॥ २ ॥ १ ॥ ३८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ प्रभ कहन मलन दहन लहन गुर मिले आन नही उपाउ ॥ १
॥ रहाउ ॥ तटन खटन जटन होमन नाही डँडधार सुआउ ॥ १ ॥ जतन भांतन तपन भ्रमन अनिक कथन कथते नही
थाह पाई ठाउ ॥ सोधि सगर सोधना सुखु नानका भजुनाउ ॥ २ ॥ २ ॥ ३९ ॥

कानड़ा महला ५ वरु ९ १० सतिगुर प्रसादि ॥

पतित पावनु भगति बछलु भै हरन तारन तरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नैन तिपते दरसु पेखि जसु तोखि सुनत करन ॥ १ ॥
पान नाथ अनाथ दाते दीन गोबिंद सरन ॥ आस पूरन दुख बिनासन गही ओट नानक हरि चरन ॥ २ ॥ १ ॥ ४० ॥
कानड़ा महला ५ ॥ चरन सरन दइआल ठाकुर आन नाही जाइ ॥ पतित पावन बिरदु सुआमी उधरते हरि धिआइ ॥ १
॥ रहाउ ॥ सैसार गार बिकार सागर पतित मोह मान अँध ॥ बिकल माइआ सँगि धँध ॥ करु गहे प्रभ आपि काढहु
राखि लेहु गोबिंद राइ ॥ १ ॥ अनाथ नाथ सनाथ सँतन कोटि पाप बिनास ॥ मनि दरसनै की पिआस ॥ प्रभ पूरन
गुनतास ॥ क्रिपाल दइआल गुपाल नानक हरि रसना गुन गाइ ॥ २ ॥ २ ॥ ४१ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ वारि वारउ
अनिक डारउ ॥ सुखु प्रिअ सुहाग पलक रात ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक मँदर पाट सेज सरवी मोहि नाहि इन सिउ तात ॥
१ ॥ मुकट लाल अनिक भोग बिनु नाम नानक हात ॥ रूखो भोजनु भूमि सैन सरवी प्रिअ सँगि सूखि बिहात ॥ २ ॥
३ ॥ ४२ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ अहँ तोरो मुखु जोरो ॥ गुरु गुरु करत मनु लोरो ॥ प्रिअ प्रीति पिआरो मोरो ॥ १ ॥
रहाउ ॥ छिहि सेज सुहावी आगनि चैना तोरो री तोरो पँच दूतन सिउ सँगु तोरो ॥ १ ॥ आइ न जाइ बसे निज आसनि
ऊँध कमल बिगसोरो ॥ छुटकी हउमै सोरो ॥ गाइओ री गाइओ प्रभ नानक गुनी गहेरो ॥ २ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ कानड़ा

मः ५ घरु ९ ॥ तांते जापि मना हरि जापि ॥ जो संत बेद कहत पँथु गाखरो मोह मगन अहँ ताप ॥ रहाउ ॥ जो राते माते
सँगि बपुरी माइआ मोह सँताप ॥ १ ॥ नामु जपत सोऊ जनु उधरै जिसहि उधारहु आप ॥ बिनसि जाइ मोह भै भरमा
नानक संत प्रताप ॥ २ ॥ ५ ॥ ४४ ॥

कानड़ा महला ५ घरु १० १३ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

ऐसो दानु देहु जी संतहु जात जीउ बलिहारि ॥ मान मोही पँच दोही उरझि निकटि बसिओ ताकी सरनि साधूआ दूत सँगु
निवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम जोनि भ्रमिओ हारि परिओ दुआरि ॥ १ ॥ किरपा गोबिंद भई मिलिओ नामु अधारु
॥ दुलभ जनमु सफलु नानक भव उतारि पारि ॥ २ ॥ १ ॥ ४५ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ११ १३ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

सहज सुभाए आपन आए ॥ कछु न जानौ कछु दिखाए ॥ प्रभ मिलिओ सुख बाले भोले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संजोगि मिलाए
साध सँगाए ॥ कतहू न जाए घरहि बसाए ॥ गुन निधानु प्रगटिओ इह चोलै ॥ १ ॥ चरन लुभाए आन तजाए ॥ थान
थनाए सरब समाए ॥ रसकि रसकि नानकु गुन बोलै ॥ २ ॥ १ ॥ ४६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ गोबिंद ठाकुर मिलन दुशई.
॥ परमिति रूपु अगँम अगोचर रहिओ सरब समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहनि भवनि नाही पाइओ पाइओ अनिक उकति
चतुराई ॥ १ ॥ जतन जतन अनिक उपावरे तउ मिलिओ जउ किरपाई ॥ प्रभू दइआर क्रिपार क्रिपा निधि जन नानक संत
रेनाई ॥ २ ॥ २ ॥ ४७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ माई सिमरत राम राम राम ॥ प्रभ बिना नाही होरु ॥ चिरतवउ
चरनारबिंद सासन निसि भोर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाइ प्रीति कीन आपन तूटत नहीं जोरु ॥ प्रान मनु धनु सरबसो हरि गुन
निधे सुख मोर ॥ १ ॥ ईत ऊत राम पूरनु निरखत रिद खोरि ॥ संत सरन तरन नानक बिनसिओ दुखु घोर ॥ २ ॥ ३ ॥

४८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ जन को प्रभु सँगे असनेहु ॥ साजनो तू मीतु मेरा छिहि तेरै सभु केहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु मांगउ
तानु मांगउ धनु लखमी सुत देह ॥ १ ॥ मुकति जुगति भुगति पूरन परमानंद परम निधान ॥ भै भाइ भगति निहाल नानक
सदा सदा कुरबान ॥ २ ॥ ४ ॥ ४९ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ करत करत चरच चरच चरचरी ॥ जोग धिआन भेख गिआन
फिरत फिरत धरत धरत धरचरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहँ अहँ अहँ अवर मूड मूड मूड बवरई ॥ जति जात जात जात सदा सदा
सदा सदा काल हई ॥ १ ॥ मानु मानु मानु तिआगि मिरतु मिरतु निकटि निकटि सदा हई ॥ हरि हरे हरे भाजु कहतु नानकु
सुनहु रे मूड बिनु भजन भजन भजन अहिला जनमु गई ॥ २ ॥ ५ ॥ ५० ॥ १२ ॥ ६२ ॥

कानड़ा असटपदीआ महला ४ घरु १ १८ सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन राम नामु सुखु पावैगो ॥ जिउ जिउ जपै तिवै सुखु पावै सतिगुरु सेवि समावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जनां की
खिनु खिनु लोचा नामु जपत सुखु पावैगो ॥ अन रस साद गर सभ नीकरि बिनु नावै किछु न सुखावैगो ॥ १ ॥ गुरमति हरि
हरि मीठा लागु गुरु मीठे बचन कढावैगो ॥ सतिगुर बाणी पुरखु पुरखोतम बाणी सिउ चितु लावैगो ॥ २ ॥ गुरबाणी सुनत
मेरा मनु द्रविआ मनु भीना निज घरि आवैगो ॥ तह अनहत धुनी बाजहि नित बाजे नीझर धार चुआवैगो ॥ ३ ॥ राम नामु
इकु तिल तिल गावै मनु गुरमति नामि समावैगो ॥ नामु सुणै नामो मनि भावै नामे ही त्रिपतावैगो ॥ ४ ॥ कनिक कनिक पहिरे
बहु कँगना कापरु भांति बनावैगो ॥ नाम बिना सभि फीक फिकाने जनमि मरै फिरि आवैगो ॥ ५ ॥ माइआ पटल पटल है
भारी घरु घूमनि घेरि घुलावैगो ॥ पाप बिकार मनूर सभि भारे बिखु दुतरु तरिओ न जावैगो ॥ ६ ॥ भउ बैरागु भइआ

है बोहिथु गुरु खेवटु सबदि तरावैगो ॥ राम नामु हरि भेटीरे हरि रामै नामि समावैगो ॥ ७ ॥ अगिआनि लाइ सवालिया
 गुर गिआनै लाइ जगावैगो ॥ नानक भाणै आपणै जिउ भावै तिवै चलावैगो ॥ ८ ॥ १ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन
 हरि हरि नामु तरावैगो ॥ जो जो जपै सोई गति पावै जिउ ध्रु प्रहिलादु समावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा क्रिपा क्रिपा करि
 हरि जीउ करि किरपा नामि लगावैगो ॥ करि किरपा सतिगुरु मिलावहु मिलि सतिगुर नामु धिआवैगो ॥ १ ॥ जनम
 जनम की हउमै मलु लागी मिलि संगति मलु लहि जावैगो ॥ जिउ लोहा तरिओ संगि कासट लागि सबदि गुरु हरि पावैगो
 ॥ २ ॥ संगति संत मिलहु सतसंगति मिलि संगति हरि रसु आवैगो ॥ बिनु संगति करम करै अभिमानी कढि पाणी
 चीकडु पावैगो ॥ ३ ॥ भगत जना के हरि रखवारे जन हरि रसु मीठ लगावैगो ॥ खिनु खिनु नामु देइ वडिअई सतिगुर
 उपदेसि समावैगो ॥ ४ ॥ भगत जना कउ सदा निवि रहीरे जन निवहि ता फल गुन पावैगो ॥ जो निँदा दुसट करहि
 भगता की हरनाखस जिउ पचि जावैगो ॥ ५ ॥ ब्रहम कमल पुतु मीन बिआसा तपु तापन पूज करावैगो ॥ जो जो भगतु
 होइ सो पूजहु भरमन भरमु चुकावैगो ॥ ६ ॥ जात नजाति देखि मत भरमहु सुक जनक पर्गीं लागि धिअवैगो ॥ जूठन
 जूठि पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलु न डुलावैगो ॥ ७ ॥ जनक जनक बतठे संघासनि नउ मुनी धूरि लै लावैगो ॥
 नानक क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मै दासनि दास करावैगो ॥ ८ ॥ २ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु गुरमति रसि गुन गावैगो
 ॥ जिहवा एक होइ लख कोटी लख कोटी कोटि धिआवैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस फनी जपिओ सेखनागै हरि
 जपतिआ अँतु न पावैगो ॥ तू अथाहु अति अगमु अगमु है मति गुरमति मनु ठहरावेगो ॥ १ ॥ जिन तू जपिओ तेई जन
 नीके हरि जपतिअहु कउ सुखु पावैगो ॥ बिदर दासी सुतु छोक छोहरा क्रिसनु अँकि गलिं लावैगो ॥ २ ॥ जल ते ओपति
 भई है कासट कासट अँगि तरावैगो ॥ राम जना हरि आपि सवारे अपना बिरदु रखावैगो ॥ ३ ॥ हम पाथर लोह

लोह बड पाथर गुर संगति नाव तरावैगो ॥ जिउ सतसंगति तरिओ जुलाहो संत जना मनि भावैगो ॥ ४ ॥ खरे खरोए
बैठत ऊठत मारगि पंखि धिआवैगो ॥ सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो ॥ ५ ॥ सासनि सासि
सासि बलु पाई है निहसासनि नामु धिआवैगो ॥ गुर परसादी हउमै बूझै तौ गुरमति नामि समावैगो ॥ ६ ॥ सतिगुरु
दाता जीअ जीअन को भगहीन नही भावैगो ॥ फिरि एह वेला हाथि न आवै परतापै पछुतावैगो ॥ ७ ॥ जे को भला लोडै
भल अपना गुर आगै ढहि ढहि पावैगो ॥ नानक दइआ दइआ करि ठाकुर मै सतिगुर भसम लगावैगो ॥ ८ ॥ ३ ॥
कानड़ा महला ४ ॥ मनु हरि रंगि राता गावैगो ॥ भै भै त्रास भए है निरमल गुरमति लागि लगावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि
रंगि राता सद बैरागी हर निकटि तिना घरि आवैगो ॥ तिन की पंक मिलै तां जीवा करि किरपा आपि दिवावैगो ॥ १ ॥
दुबिधा लोभि लगे है प्राणी मनि कोरै रंगु न आवैगो ॥ फिरि उलटिओ जनमु होवै गुर बचनी गुरु पुरखु मिलै रंगु लावैगो ॥
२ ॥ इंद्री दसे दसे फुनि धावत त्रै गुणीआ खिनु न टिकावैगो ॥ सतिगुर परचै वसगति आवै मोख मुकति सो पावैगो ॥ ३
॥ ओअंकारि एको रवि रहिआ सभु एकस माहि समावैगो ॥ एको रूपु एको बहु रंगी सभु एकतु बचनि चलावैगो ॥ ४ ॥
गुरमुखि एको एकु पछाता गुरमुखि होइ लखावैगो ॥ गुरमुखि जाइ मिलै निज महली अनहद सबदु बजावैगो ॥ ५ ॥
जीअ जंत सभ सिसाटि उपाई गुरमुखि सोभा पावैगो ॥ बिनु गुर भेटे को महलु न पावै आइ जाइ दुखु पावेगो ॥ ६ ॥
अनेक जनम विछुडे मेरे प्रीतम करि किरपा गुरु मिलावैगो ॥ सतिगुर मिलत महा सुखु पाइआ मति मलीन बिगसावैगो
॥ ७ ॥ हरि हरि क्रिपा करहु जगजीवन मै सरथा नामि लगावैगो ॥ नानक गुरु गुरु है सतिगुरु मै सतिगुरु सरनि
मिलावैगो ॥ ८ ॥ ४ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मन गुरमति चाल चलावैगो ॥ जिउ मैगलु मसतु दीजै तलि कुंडे गुर अंकसु
सबदु द्विड़ावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चलतौ चलै चलै दह दह दिसि गुरु राखै हरि लिव लावैगो ॥ सतिगुरु सबदु

देइ रिंद अंतरि मुखि अँमितु नामु चुआवैगो ॥ १ ॥ बिसिअर बिसू भरे है पूरन गुरु गरुड सबदु मुखि पावैगो ॥ माइआ
 भुइअंग तिसु नेडि न आवै बिखु झारि झारि लिव लावैगो ॥ २ ॥ सुआन लोभु नगर महि सबला गुरु खिन महि मारि
 कढावैगो ॥ सतु संतोखु धरमु आनि राखे हरि नगरी हरि गुन गावैगो ॥ ३ ॥ पँकज मोह निघरतु है प्रानी गुरु निघरत
 काढि कढावैगो ॥ त्राहि त्राहि सरनि जन आए गुरु हाथी दे निकलावैगो ॥ ४ ॥ सुपनंतरु संसारु सभु बाजी सभु बाजी
 खेलु खिलावैगो ॥ लाहा नामु गुरमति लै चालहु हरि दरगह पैधा जावैगो ॥ ५ ॥ हउमै करै करावै हउमै पाप कोइले आनि
 जमावैगो ॥ आइआ कालु दुखदाई होए जो बीजे सो खवलावैगो ॥ ६ ॥ संतहु राम नामु धनु सँचहु लै खरचु चले पति
 पावैगो ॥ खाइ खरचि देवहि बहुतेरा हरि देदे तोटि न आवैगो ॥ ७ ॥ राम नाम धनु है रिंद अंतरि धनु गुर सरणाई पावैगो
 ॥ नानक दइआ दइआ करि दीनी दुखु दालदु भँजि समावैगो ॥ ८ ॥ ५ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु सतिगुर सरनि
 धिआवैगो ॥ लोहा हिरनु होवै सँगि पारस गुनु पारस को होइ आवैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु महा पुरखु है पारसु जो
 लागै सो फलु पावैगो ॥ जिउ गुर उपदेसि तरे प्रहिलादा गुरु सेवक पैज परखावैगो ॥ १ ॥ सतिगुर बचनु बचनु है नीको
 गुर बचनी अँमितु पावैगो ॥ जिउ अँबरीके अमरा पद पाए सतिगुर मुख बचन धिआवैगो ॥ २ ॥ सतिगुर सरनि सरनि
 मनि भाई सुधा सुधा करि धिआवैगो ॥ दइआल दीन भए है सतिगुर हरि मारगु पँथु दीखावैगो ॥ ३ ॥ सतिगुर सरनि पए
 सो थापे तिन राखन कउ प्रभु आवैगो ॥ जो को सरु सँधै जन ऊपरि फिरि उलटो तिसै लगावैगो ॥ ४ ॥ हरि हरि हरि
 हरि हरि सरु सेवहि तिन दरगह मानु दिवावैगो ॥ गुरमति गुरमति गुरमति धिआवहि हरि गलि मिलि मिलि मिलावैगो ॥
 ५ ॥ गुरमुखि नादु बेदु है गुरमुखि गुर परचै नामु धिआवैगो ॥ हरि हरि रूपु हरि रूपो होवै हरि जन कउ पूज करावैगो ॥
 ६ ॥ साकत नर सतिगुरु नहीं कीआ ते बेमुख हरि भरमावैगो ॥ लोभ लहरि सुआन की संगति बिखु

माइआ करैंगे लगावैगो ॥ ७ ॥ राम नामु सभ जग का तारकु लागि संगति नामु धिआवैगो ॥ नानक राखु राखु प्रभ मेरे
सतसंगति राखि समावैगो ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

कानडा छँत महला ७ १८ सितिगुर प्रसादि ॥

से उधरे जिन राम धिआए ॥ जतन माइआ के कामि न आए ॥ राम धिआए सभि फल पाए धनि धँनि ते बडभागीआ ॥
सतसंगि जागे नामि लागे एक सिउ किव लागीआ ॥ तजि मान मोह बिकार साधू लागि तरउ तिन कै पाए ॥ बिनवँति नानक
सरणि सुआमी बडभागि दरसनु पाए ॥ १ ॥ मिलि साधू नित भजह नाराइण ॥ रसकि रसकि सुआमी गुण गाइण ॥ गुण गाइ
जीवह हरि अमिउ पीवह जनम मरणा भागए ॥ सतसंगि पाईए हरि धिआईए बहुड़ि दूखु न लागए ॥ करि दइआ दाते पुरख
बिधाते सँत सेव कमाइण ॥ बिनवँति नानक जन धूरि बाँछहि हरि दरसि सहजि समाइण ॥ २ ॥ सगले जँत भजहु गोपालै ॥
जप तप सँजम पूरन घालै ॥ नित भजहु सुआमी अंतरजामी सफल जनमु सबाइआ ॥ गोबिदु गाईए नित धिआईए परवाणु सोई
आइआ ॥ जप ताप सँजम हरि हरि निरँजन गोबिंद धनु संगि चालै ॥ बिनवँति नानक करि दइआ दीजै हरि रतनु बाधउ पालै
॥ ३ ॥ मँगलचार चोज आनँदा ॥ करि किरपा मिले परमानँदा ॥ प्रभ मिले सुआमी सुखहगामी इछ मन की पुँनीआ ॥ बजी
बधाई सहजे समाई बहुड़ि दूखि न रँनीआ ॥ ले कँठि लाए सुख दिखाए बिकार बिनसे मँदा ॥ बिनवँति नानक मिले सुआमी
पुरख परमानँदा ॥ ४ ॥ १ ॥

कानडे की वार महला ४ मूसे की वार की धुनी १८ सितिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ राम नामु निधानु हरि गुरमति राखु उर धारि ॥

दासन दासा होइ रहु हउमै बिखिआ मारि ॥ जनमु पदारथु जीतिआ कदे न आवै हरि ॥ धनु धनु वडभागी नानका जिन
 गुरमति हरि रसु सारि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ गोविंदु गोविंदु गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु ॥ गोविंदु गोविंदु गुरमति धिआईरे
 तां दरगह पाईरे मानु ॥ गोविंदु गोविंदु गोविंदु जपि मुखु ऊजला परधानु ॥ नानक गुर गोविंदु हरि जितु मिलि हरि पाइआ
 नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे ही सिध साधिको तू आपे ही जुग जोगीआ ॥ तू आपे ही रस रसीअडा तू आपे ही भोग
 भोगीआ ॥ तू आपे आपि वरतदा तू आपे करहि सु होगीआ ॥ सतसंगति सतिगुर धंनु धनो धंन धंन धनो जितु मिलि हरि
 बुलग बुलोगीआ ॥ सभि कहहु मुखहु हरि हरि हरे हरि हरि हरे हरि बोलत सभि पाप लहोगीआ ॥ १ ॥ सलोक मः ४ ॥
 हरि हरि हरि हरि नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ हउमै ममता नासु होइ दुरमति कढै धोइ ॥ नानक अनदिनु गुण उचरै जिन
 कउ धुरि लिखिआ होइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि आपे आपि दइआलु हरि आपे करे सु होइ ॥ हरि आपे आपि वरतदा हरि
 जेवडु अवरु न कोइ ॥ जो हरि प्रभ भावै सो थीरे जो हरि प्रभु करे सु होइ ॥ कीमति किनै न पाईआ बेअंतु प्रभु हरि सोइ ॥
 नानक गुरमुखि हरि सालाहिआ तनु मनु सीतलु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ जोति तेरी जगजीवना तू घटि घटि हरि रंग
 रंगना ॥ सभि धिआवहि तुधु मेरे प्रीतमा तू सति सति पुरख निरंजना ॥ इकु दाता सभु जगतु भिखारीआ हरि जाचहि सभ
 मंग मंगना ॥ सेवकु ठाकुरु सभु तूहै तूहै गुरमती हरि चंग चंगना ॥ सभि कहहु मुखहु रिखीकेसु हरे रिखीकेसु हरे जितु
 पावहि सभ फल फलना ॥ २ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ जो इछहि सो फलु
 पाइसी गुर सबदी लगै धिआनु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु
 आतम ब्रहमु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि हरि नामु पवितु है नामु
 जपत दुखु जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन मनि वसिआ आइ ॥ सतिगुर कै भानै जो चलै तिन दालदु दुखु

लहि जाइ ॥ आपणै भाणै किनै न पाइओ जन वेखहु मनि पतीआइ ॥ जनु नानकु दासन दासु है सतिगुर लागे पाइ ॥ २ ॥
 ॥ पउडी ॥ तूँ थान थनंतरि भरपूरु हहि करते सभ तेरी बणत बणावणी ॥ रँग परँग सिसटि सभ साजी बहु बहु बिधि
 भांति उपावणी ॥ सभ तेरी जोति जोती विचि वरतहि गुरमती तुधै लावणी ॥ जिन होहि दइआलु तिन सतिगुरु मेलहि
 मुखि गुरमुखि हरि समझावणी ॥ सभि बोलहु राम रमो स्त्री राम रमो जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जावणी ॥ ३ ॥
 सलोक मः ४ ॥ हरि हरि अँमितु नाम रसु हरि अँमितु हरि उर धारि ॥ विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥
 मनि हरि हरि नामु धिआइआ बिखु हउमै कटी मारि ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ तिन जुऐ जनमु सभु हारि ॥ गुरि तुठै
 हरि चेताइआ हरि नामा हरि उर धारि ॥ जन नानक ते मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि कीरति उतमु
 नामु है विचि कलिजुग करणी सारु ॥ मति गुरमति कीरति पाईऐ हरि नामा हरि उरि हारु ॥ वडभागी जिन हरि धिआइआ
 तिन सउपिआ हरि भँडारु ॥ बिनु नावै जि कर्म कमावणे नित हउमै होइ खुआरु ॥ जलि हसती मलि नावालीऐ सिरि भी
 फिरि पावै छारु ॥ हरि मेलहु सतिगुरु दइआ करि मनि वसै एकँकारु ॥ जिन गुरमुखि सुणि हरि मँनिआ जन नानक तिन
 जैकारु ॥ २ ॥ पउडी ॥ राम नामु वखरु है ऊतमु हरि नाइकु पुरखु हमारा ॥ हरि खेलु कीआ हरि आपे वरतै सभु जगतु
 कीआ वणजारा ॥ सभ जोति तेरी जोती विचि करते सभु सचु तेरा पासारा ॥ सभि धिआवहि तुधु सफल से गावहि
 गुरमती हरि निरँकारा ॥ सभि चवहु मुखहु जगँनाथु जगँनाथु जगजीवनो जितु भवजल पारि उतारा ॥ ४ ॥ सलोक मः
 ४ ॥ हमरी जिहवा एक प्रभ हरि के गुण अगम अथाह ॥ हम किउ करि जपह इआणिआ हरि तुम वड अगम अगाह ॥ हरि
 देहु प्रभू मति ऊतमा गुर सतिगुर कै पणि पाह ॥ सतसंगति हरि मेलि प्रभ हम पापी संगि तराह ॥ जन नानक कउ हरि
 बखसि लैहु हरि तुठै मेलि मिलाह ॥ हरि किरपा करि सुणि बेनती हम पापी किरम तराह ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि

करहु क्रिपा जगजीवना गुरु सतिगुरु मेलि दइआलु ॥ गुरु सेवा हरि हम भाईआ हरि होआ हरि किरपालु ॥ सभ आसा
 मनसा विसरी मनि चूका आल जँजालु ॥ गुरि तुठै नामु द्विड़ाइआ हम कीए सबदि निहालु ॥ जन नानक अतुटु धनु
 पाइआ हरि नामा हरि धनु मालु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि तुम्ह वड वडे वडे वड ऊचे सभ ऊपरि वडे वडौना ॥ जो धिआवहि
 हरि अपरँपरु हरि हरि हरि धिआइ हरे ते होना ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी तिन काटे पाप कटोना ॥ तुम जैसे
 हरि पुरख जाने मति गुरमति मुखि वड वड भाग वडोना ॥ सभि धिआवहु आदि सते जुगादि सते परतखि सते सदा सदा
 सते जनु नानकु दासु दसोना ॥ ५ ॥ सलोक मः ४ ॥ हमरे हरि जगजीवना हरि जपिओ हरि गुर मँत ॥ हरि अगमु
 अगोचरु अगमु हरि हरि मिलिआ आइ अचिँत ॥ हरि आपे घटि घटि वरतदा हरि आपे आपि बिअँत ॥ हरि आपे सभ रस
 भोगदा हरि आपे कवला कँत ॥ हरि आपे भिखिआ पाइदा सभ सिसाटि उपाई जीअ जँत ॥ हरि देवहु दानु दइआल प्रभ
 हरि मांगहि हरि जन सँत ॥ जन नानक के प्रभ आइ मिलु हम गावह हरि गुण छँत ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि प्रभु सजणु नामु
 हरि मै मनि तनि नामु सरीरि ॥ सभि आसा गुरमुखि पूरीआ जन नानक सुणी हरि धीर ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि ऊतमु
 हरिआ नामु है हरि पुरखु निरँजनु मउला ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन सेवे चरन नित कउला ॥ नित सारि
 सम्हाले सभ जीअ जँत हरि वसै निकटि सभ जउला ॥ सो बूझै जिंसु आपि बुझाइसी जिंसु सतिगुरु पुरखु प्रभु सउला ॥
 सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे गोविंद हरे गुण गावत गुणी समउला ॥ ६ ॥ सलोक मः ४ ॥ सुतिआ हरि प्रभु
 चेति मनि हरि सहजि समाधि समाइ ॥ जन नानक हरि हरि चाउ मनि गुरु तुठा मेले माइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि इकसु
 सेती पिरहड़ी हरि इको मेरै चिति ॥ जन नानक इकु अधारु हरि प्रभ इकस ते गति पति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पँचे सबद वजे
 मति गुरमति वडभागी अनहदु वजिआ ॥ आनद मूलु रामु सभु देखिआ गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥ आदि जुगादि

वेसु हरि एको मति गुरुमति हरि प्रभु भजिआ ॥ हरि देवहु दानु दइआल प्रभ जन राखहु हरि प्रभ लजिआ ॥ सभि धँनु
 कहहु गुरु सतिगुरु गुरु सतिगुरु जितु मिलि हरि पडदा कजिआ ॥ ७ ॥ सलोकु मः ४ ॥ भगति सरोवरु उछलै सुभर
 भरे वहँनि ॥ जिना सतिगुरु मँनिआ जन नानक वड भाग लहँनि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि हरि नाम असँख हरि हरि के गुन
 कथनु न जाहि ॥ हरि हरि अगमु अगाधि हरि जन कितु बिधि मिलहि मिलाहि ॥ हरि हरि जसु जपत जपँत जन इकु
 तिलु नही कीमति पाइ ॥ जन नानक हरि अगम प्रभ हरि मेलि लैहु लडि लाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥ हरि अगमु अगोचरु
 अगमु हरि किउ करि हरि दरसनु पिखा ॥ किछु वखरु होइ सु वरनीऐ तिसु रूपु न रिखा ॥ जिसु बुझाए आपि बुझाइ देइ
 सोई जनु दिखा ॥ सतसंगति सतिगुरु चटसाल है जितु हरि गुण सिखा ॥ धनु धँनु सु रसना धँनु कर धँनु सु पाधा
 सतिगुरु जितु मिलि हरि लेखा लिखा ॥ ८ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि नामु अँमितु है हरि जपीऐ सतिगुरु भाइ ॥ हरि
 हरि नामु पवितु है हरि जपत सुनत दुखु जाइ ॥ हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥ हरि
 दरगह जन पैनाईअनि जिन हरि मनि वसिआ आइ ॥ जन नानक ते मुख उजले जिन हरि सुणिआ मनि भाइ ॥ १ ॥
 मः ४ ॥ हरि हरि नामु निधानु है गुरुमुखि पाइआ जाइ ॥ जिन धुरि मसतकि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥
 तनु मनु सीतलु होइआ सांति वसी मनि आइ ॥ नानक हरि हरि चउदिआ सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥ २ ॥ पउडी ॥
 हउ वारिआ तिन कउ सदा सदा जिना सतिगुरु मेरा पिआरा देखिआ ॥ तिन कउ मिलिआ मेरा सतिगुरु जिन कउ धुरि
 मसतकि लेखिआ ॥ हरि अगमु धिआइआ गुरुमती तिसु रूपु नही प्रभ रेखिआ ॥ गुरु बचनि धिआइआ जिना अगमु
 हरि ते ठाकुर सेवक रलि एकिआ ॥ सभि कहहु मुखहु नर नरहरे नर नरहरे नर नरहरे हरि लाहा हरि भगति विसेखिआ ॥
 ९ ॥ सलोक मः ४ ॥ राम नामु रमु रवि रहे रमु रामो रामु रसीति ॥ घटि घटि आतमरामु है प्रभि खेलु कीओ रँगि रीति ॥

हरिं निकटि वसै जगजीवना परगासु कीओ गुर मीति ॥ हरि सुआमी हरि प्रभु तिन मिले जिन लिखिआ धुरि हरि प्रीति ॥
 जन नानक नामु धिआइआ गुर बचनि जपिओ मनि चीति ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि प्रभु सजणु लोडि लहु भागि वसै वड भागि
 ॥ गुरि पूरै देखालिआ नानक हरि लिव लागि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धनु धनु सुहावी सफल घड़ी जितु हरि सेवा मनि भाणी ॥
 हरि कथा सुणावहु मेरे गुरसिखहु मेरे हरि प्रभु अकथ कहाणी ॥ किउ पाईऐ किउ देखीऐ मेरा हरि प्रभु सुघडु सुजाणी ॥ हरि
 मेलि दिखाए आपि हरि गुर बचनी नामि समाणी ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ जो जपदे हरि निरबाणी ॥ १० ॥ सलोक
 मः ४ ॥ हरि प्रभु रते लोइणा गिआन अँजनु गुरु देइ ॥ मै प्रभु सजणु पाइआ जन नानक सहजि मिलेइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥
 गुरमुखि अँतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ नामु चितवै नामो पडै नामि रहै लिव लाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ चिँता
 गई बिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै त्रिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी
 ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे वसगति कीता ॥ इकि मनमुख करि हाराइ अनु इकना मेलि गुरु तिना जीता ॥ हरि
 ऊतमु हरि प्रभु नामु है गुर बचनि सभागै लीता ॥ दुखु दालदु सभो लहि गइआ जां नाउ गुरु हरि दीता ॥ सभि सेवहु
 मोहनो मनमोहनो जगमोहनो जिनि जगतु उपाइ सभो वसि कीता ॥ ११ ॥ सलोक मः ४ ॥ मन अँतरि हउमै रोगु है भ्रमि
 भूले मनमुख दुरजना ॥ नानक रोगु वजाइ मिलि सतिगुरि साधू सजना ॥ १ ॥ मः ४ ॥ मनु तनु तामि सगारवा जां देखा
 हरि नैणे ॥ नानक सो प्रभु मै मिलै हउ जीवा सद सुणे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जगँनाथ जगदीसर करते अपारँपर पुरखु अतोलु
 ॥ हरि नामु धिआवहु मेरे गुरसिखहु हरि ऊतमु हरि नामु अमोलु ॥ जिन धिआइआ हिरदै दिनसु राति ते मिले नही हरि
 रेलु ॥ वडभागी सँगति मिलै गुर सतिगुर पूरा बोलु ॥ सभि धिआवहु नर नाराइणो नाराइणो जितु चूका जम झगडु
 झगोलु ॥ १२ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि जन हरि हरि चउदिआ सरु सँधिआ गावार ॥ नानक हरि जन हरि लिव उबरे

जिनि सँधिआ तिसु फिरि मार ॥ १ ॥ मः ४ ॥ अखी प्रेमि कसाईआ हरि हरि नामु पिखँन्हि ॥ जे करि दूजा देखदे जन नानक
 कढि दिचन्हि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जलि थलि महीअलि पूरनो अपरँपरु सोई ॥ जीअ जँत प्रतिपालदा जो करे सु होई ॥ मात
 पिता सुत भ्रात मीत तिसु बिनु नही कोई ॥ घटि घटि अंतरि रवि रहिआ जपिअहु जन कोई ॥ सगल जपहु गोपाल गुन परगटु
 सभ लोई ॥ १३ ॥ सलोक मः ४ ॥ गुरमुखि मिले सि सजणा हरि प्रभ पाइआ रँगु ॥ जन नानक नामु सलाहि तू लुडि लुडि
 दरगहि वँजु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि तूहै दाता सभस दा सभि जीअ तुम्हारे ॥ सभि तुथै नो आराधदे दानु देहि पिआरे ॥ हरि
 दातै दातारि हथु कढिआ मीहु वुठा सैसारे ॥ अँनु जँमिआ खेती भाउ करि हरि नामु सम्हारे ॥ जनु नानकु मँगै दानु प्रभ हरि
 नामु अधारे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इछा मन की पूरीऐ जपीऐ सुख सागरु ॥ हरि के चरन अराधीअहि गुर सबदि रतनागरु ॥
 मिलि साधू सँगि उधारु होइ फाटै जम कागरु ॥ जनम पदारथु जीतीऐ जपि हरि बैरागरु ॥ सभि पवहु सरनि सतिगुरु की
 बिनसै दुख दागरु ॥ १४ ॥ सलोक मः ४ ॥ हउ ढूँँदी सजणा सजणु मैडै नालि ॥ जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि
 देहि दिखालि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ नानक प्रीति लाई तिनि सचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि
 रसन रसाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै को उचरि सुनावै ॥ जनम जनम की मलु उतरै मन चिँदिआ पावै ॥ आवणु
 जाणा मेटीऐ हरि के गुण गावै ॥ आपि तरहि सँगी तराहि सभ कुटँबु तरावै ॥ जनु नानकु तिसु बलिहारणै जो मेरे हरि प्रभ भावै
 ॥ १५ ॥ १ ॥ सुधु ॥

रागु कानड़ा बाणी नामदेव जीउ की १९ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥ जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसै घटा घट लीप न छीपै ॥ बँधन मुक्ता
 जातु न दीसै ॥ १ ॥ पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥ नामे के सुआमी बीठलु ऐसा ॥ २ ॥ १ ॥

रगु कलिआन महला ४

वसि सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

रामा रम रामै अँतु न पाइआ ॥ हम बारिक प्रतिपारे तुमरे

तू बड पुरखु पिता मेरा माइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम असँख अगम हहि अगम अगम हरि राइआ ॥ गुणी गिआनी
सुरति बहु कीनी इकु तिलु नही कीमति पाइआ ॥ १ ॥ गोबिद गुण गोबिद सद गावहि गुण गोबिद अँतु न पाइआ ॥ तू
अमिति अतोलु अपरँपर सुआमी बहु जपीऐ थाह न पाइआ ॥ २ ॥ उसतति करहि तुमरी जन माधौ गुन गावहि हरि राइआ
॥ तुम्ह जल निधि हम मीने तुमरे तेरा अँतु न कतहू पाइआ ॥ ३ ॥ जन कउ क्रिपा करहु मधसूदन हरि देवहु नामु जपाइआ
॥ मै मूरख अँधुले नामु टेक है जन नानक गुरमुखि पाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ कलिआनु महला ४ ॥ हरि जनु गुन गावत
हसिआ ॥ हरि हरि भगति बनी मति गुरमति धुरि मसतकि प्रभि लिखिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के पग सिमरउ दिनु राती
मनि हरि हरि हरि बसिआ ॥ हरि हरि हरि कीरति जगि सारी घसि चँदनु जसु घसिआ ॥ १ ॥ हरि जन हरि हरि हरि लिव
लाई सभि साकत खोजि पइआ ॥ जिउ किरत सँजोगि चलिओ नर निँदकु पगु नागनि छुहि जलिआ ॥ २ ॥ जन के तुम्ह
हरि राखे सुआमी तुम्ह जुगि जुगि जन राखिआ ॥ कहा भइआ दैति करी बखीली सभ करि करि झरि परिआ ॥ ३ ॥ जेते
जीअ जँत प्रभि कीए सभि कालै मुखि गसिआ ॥ हरि जन हरि हरि हरि प्रभि राखे जन नानक सरनि पइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

कलिआन महला ४ ॥ मेरे मन जपु जपि जगँनाथे ॥ गुरु उपदेसि हरि नामु धिआइओ सभि लिक्बिख दुख लाथे ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ रसना एक जसु गाइ न साकै बहु कीजै बहु रसुनथे ॥ बार बार खिनु पल सभि गावहि गुन कहि न सकहि प्रभ
 तुमनथे ॥ १ ॥ हम बहु प्रीति लगी प्रभ सुआमी हम लोचह प्रभु दिखनथे ॥ तुम बड दाते जीअ जीअन के तुम जानहु हम
 बिरथे ॥ २ ॥ कोई मारगु पँथु बतावै प्रभ का कहु तिन कउ किआ दिनथे ॥ सभु तनु मनु अरपउ अरपि अरापउ कोई मेलै
 प्रभ मिलथे ॥ ३ ॥ हरि के गुन बहुत बहुत बहु सोभा हम तुछ करि करि बरनथे ॥ हमरी मति वसगति प्रभ तुमरै जन नानक
 के प्रभ समरथे ॥ ४ ॥ ३ ॥ कलिआन महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि गुन अकथ सुनथई ॥ धरमु अरथु सभु कामु मोखु है
 जन पीछै लागि फिरथई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो हरि हरि नामु धिआवै हरि जनु जिसु बडभाग मथई ॥ जह दरगहि प्रभु लेखा
 मार्गै तह छुटै नामु धिआइथई ॥ १ ॥ हमरे दोख बहु जनम जनम के दुखु हउमै मैलु लगथई ॥ गुरि धारि क्रिपा हरि जलि
 नावाए सभ किलबिख पाप गथई ॥ २ ॥ जन कै रिद अंतरि प्रभु सुआमी जन हरि हरि नामु भजथई ॥ जह अँती अउसरु
 आइ बनतु है तह राखै नामु साथई ॥ ३ ॥ जन तेरा जसु गावहि हरि हरि प्रभु हरि जपिओ जगँनथई ॥ जन नानक के प्रभ
 राखे सुआमी हम पाथर रखु बुडथई ॥ ४ ॥ ४ ॥ कलिआन मजहला ४ ॥ हमरी चितवनी हरि प्रभु जानै ॥ अउरु कोई
 निँद करै हरि जन की प्रभु ता का कहिआइकु तिलु नहीं मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउर सभ तिआगि सेवा करि अचुत जो सभ
 ते ऊच ठाकुरु भगवानै ॥ हरि सेवा ते कालु जोहि न साकै चरनी आइ पवै हरि जानै ॥ १ ॥ जा कउ राखि लेइ मेरा
 सुआमी ता कउ सुमति देइ पै कानै ॥ ता कउ कोई अपरि न साकै जा की भगति मेरा प्रभु मानै ॥ २ ॥ हरि के चोज विडान
 देखु जन जो खोटा खरा इक निमख पछानै ॥ ताते जन कउ अनदु भइआ है रिद सुध मिले खोटे पछुतानै ॥ ३ ॥

तुम हरि दाते समरथ सुआमी इकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै ॥ जन नानक कउ हरि क्रिपा करि दीजै सद बसहि रिदै मोहि
हरि चरानै ॥ ४ ॥ ५ ॥ कलिअन महला ४ ॥ प्रभ कीजै क्रिपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥ हउ तुमरी करउ नित
आस प्रभ मोहि कब गलि लावहगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहगे ॥ सुतु खिनु खिनु
भूलि बिगारि जगत पित भावहगे ॥ १ ॥ जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ मोहि दूजी नाही ठउर जिंसु पहि
हम जावहगे ॥ २ ॥ जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहगे ॥ जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥ ३ ॥ हरि
आपे होइ क्रिपालु आपि लिव लावहगे ॥ जनु नानक सरनि दुआरि हरि लाज रखावहगे ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

कलिआनु भोपाली महला ४ १ॐ शितिगुर प्रसादि ॥

पारब्रहमु परमेसुरु सुआमी दूख निवारणु नाराइणे ॥ सगल भगत जाचहि सुख सागर भव निधि तरण हरि चिंतामणे ॥
१ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल जगदीस दमोदर हरि अंतरजामी गोबिंदे ॥ ते निरभउ जिन श्रीरामु धिआइआ गुरमति मुरारि
हरि मुकंदे ॥ १ ॥ जगदीसुर चरन सरन जो आए ते जन भव निधि पारि परे ॥ भगत जना की पैज हरि शखै जन नानक
आपि हरि क्रिपा करे ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

शगु कलिआनु महला ५ वरु १ १ॐ शितिगुर प्रसादि ॥

हमारै एह किरपा कीजै ॥ अलि मकरंद चरन कमल सिउ मनु फेरि फेरि रीझै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन जला सिउ काजु न
कछूरे हरि बूंद चातरिक कउ दीजै ॥ १ ॥ बिनु मिलबे नाही संतोखा पेखि दरसन नानकु जीजै ॥ २ ॥ १ ॥ कलिआन
महला ५ ॥ जाचिकु नामु जाचै जाचै ॥ सरब धार सरब के नाइक सुख समूह के दाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केती केती
मांगनि मागै भावनीआ सो पाईरे ॥ १ ॥

सफल सफल सफल दरसुरे परसि परसि गुन गाईये ॥ नानक तत तत सिउ मिलिऐ हीरै हीरु बिधाईये ॥ २ ॥ २ ॥
 कलिआन महला ५ ॥ मेरे लालन की सोभा ॥ सद नवतन मन रंगी सोभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा
 भगति दानु जसु मंगी ॥ १ ॥ जोग गिआन धिआन सेखनागै सगल जपहि तरंगी ॥ कहु नानक संतन बलिहारै जो
 प्रभ के सद सँगी ॥ २ ॥ ३ ॥

कलिआन महला ५ वरु २ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

तेरै मानि हरि हरि मानि ॥ नैन बैन श्रवन सुनीऐ अंग अंगे सुख प्रानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इत उत दह दिसि रविओ मेर
 तिनहि समानि ॥ १ ॥ जत कता तत पेखीऐ हरि पुरख पति परधान ॥ साधसंगि भ्रम भै मिटे कथे नानक ब्रहम
 गिआन ॥ २ ॥ १ ॥ ४ ॥ कलिआन महला ५ ॥ गुन नाद धुनि अनंद बेद ॥ कथत सुनत मुनि जना मिलि संत
 मंडली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआन धिआन मान दान मन रसिक रसन नामु जपत तह पाप खंडली ॥ १ ॥ जोग जुगति
 गिआन भुगति सुरति सबद तत बेते जपु तपु अखंडली ॥ ओति पोति मिलि जोति नानक कछु दुखु न डंडली ॥ २ ॥
 २ ॥ ५ ॥ कलिआनु महला ५ ॥ कउनु बिधि ता की कहा करउ ॥ धरत धिआनु गिआनु ससत्रगिआ अजर पदु कैसे
 जरउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसन महेस सिध मुनि इंद्रा कै दरि सरनि परउ ॥ १ ॥ काहू पहि राजु काहू पहि सुरगा कोटि
 मधे मुकति कहउ ॥ कहु नानक नाम रसु पाईऐ साधू चरन गहउ ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥ कलिआन महला ५ ॥ प्रानपति
 दइआल पुरख प्रभ सखे ॥ गरभ जोनि कलि काल जाल दुख बिनासनु हरि रखे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम धारी सरनि
 तेरी ॥ प्रभ दइआल टेक मेरी ॥ १ ॥ अनाथ दीन आसवंत ॥ नामु सुआमी मनहि मंत ॥ २ ॥ तुझ बिना प्रभ किछु
 न जानू ॥ सरब जुग महि तुम पछानू ॥ ३ ॥ हरि मनि बसे निसि बासरो ॥ गोबिंद नानक आसरो ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७
 ॥ कलिआन महला ५ ॥ मनि तनि जापीऐ भगवान ॥ गुर पूरे सुप्रसन्न भए सदा सूरख कलिआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सरब कारज सिधि भए गाइ गुन गुपाल ॥ मिलि साधसंगति प्रभू सिमरे नाठिआ दुख काल ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ
 मेरिआ करउ दिनु रैनि सेव ॥ नानक दास सरणागती हरि पुरख पूरन देव ॥ २ ॥ ५ ॥ ८ ॥ कलिआनु महला ५ ॥
 प्रभु मेश अंतरजामी जाणु ॥ करि किरपा पूरन परमेसर निहचलु सचु सबदु नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि बिनु आन
 न कोई समरथु तेरी आस तेरा मनि ताणु ॥ सरब घटा के दाते सुआमी देहि सु पहिरणु खाणु ॥ १ ॥ सुरति मति
 चतुराई सोभा रूपु रँगु धनु माणु ॥ सरब सूख आनंद नानक जपि राम नामु कलिआणु ॥ २ ॥ ६ ॥ ९ ॥
 कलिआनु महला ५ ॥ हरि चरन सरन कलिआन करन ॥ प्रभ नामु पतित पावनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि जपि
 निसंग जमकालु तिसु न खावनो ॥ १ ॥ मुकति जुगति अनिक सूख हरि भगति लवै न लावनो ॥ प्रभ दरस लुबध
 दास नानक बहुड़ि जोनि न धावनो ॥ २ ॥ ७ ॥ १० ॥

कलिआन महला ४ असटपदीआ ॥ १३ सतिगुर प्रसादि ॥

रामा रम रामो सुनि मनु भीजै ॥ हरि हरि नामु अँमितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कासट महि
 जिउ है बैसंतरु मथि सँजमि काठि कढीजै ॥ राम नामु है जोति सर्बाई ततु गुरमति काठि लईजै ॥ १ ॥ नउ दरवाज
 नवे दर फीके रसु अँमितु दसवे चुईजै ॥ क्रिपा क्रिपा किरपा करि पिआरे गुर सबदी हरि रसु पीजै ॥ २ ॥ काइआ
 नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै ॥ रतन लाल अमोल अमोलक सतिगुर सेवा लीजै ॥ ३ ॥
 सतिगुरु अगमु अगमु है ठाकुरु भरि सागर भगति करीजै ॥ क्रिपा क्रिपा करि दीन हम सारिँग इक बूँद नामु मुखि
 दीजै ॥ ४ ॥ लालनु लालु लालु है रँगनु मनु रँगन कउ गुर दीजै ॥ ५ ॥ बसुधा सपत दीप है सागर कठि कँचनु काठि
 धरीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि रसु दीजै ॥ ६ ॥ साकत नर प्राणी सद भूखे नित भूखन

भूख करीजै ॥ धावतु धाड़ धावहि प्रीति माइआ लख कोसन कउ बिधि दीजै ॥ ७ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि जन ऊतम किआ
 उपमा तिन्ह दीजै ॥ राम नाम तुलि अउरु न उपमा जन नानक क्रिपा करीजै ॥ ८ ॥ १ ॥ कलिआन महला ४ ॥ राम गुरु
 पारसु परसु करीजै ॥ हम निरगुणी मनूर अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग मुकति बैकुंठ सभि
 बांछहि निति आसा आस करीजै ॥ हरि दरसन के जन मुकति न मांगहि मिलि दरसन त्रिपति मन धीजै ॥ १ ॥ माइआ मोहु
 सबलु है भारी मोहु कालख दाग लगीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन अलिपत है मुकते जिउ मुरगाई पँकु न भीजै ॥ २ ॥ चंदन वासु
 भुइअंगम वेड़ी किव मिलीरे चंदनु लीजै ॥ काढि खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु छेदि छेदि रसु पीजै ॥ ३ ॥ आनि आनि
 समधा नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै ॥ ४ ॥ साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै ॥ परसनि परसु भए साधू
 जन जनु हरि भगवानु दिखीजै ॥ ५ ॥ साकत सूतु बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥ तंतु सूतु किछु निकसे नाही
 साकत संगु न कीजै ॥ ६ ॥ सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु रवीजै ॥ अंतरि रतन जवेहर माणक गुर किरपा
 ते लीजै ॥ ७ ॥ मेरा ठाकुरु वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह मिलीजै ॥ नानक मेलि मिलाए गुरु पूरा जन कउ पूरनु
 दीजै ॥ ८ ॥ २ ॥ कलिआनु महला ४ ॥ राम रम रामो रामु रवीजै ॥ साधू साध साध जन नीके मिलि साधू हरि रंगु कीजै
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभु जगु है जेता मनु डोलत डोल करीजै ॥ क्रिपा क्रिपा करि साधु मिलावहु जगु थँमन कउ थँमु
 दीजै ॥ १ ॥ बसुधा तलै तलै सभ ऊपरि मिलि साधू चरन रुलीजै ॥ अति ऊतम अति ऊतम होवहु सभ सिसटि चरन तल
 दीजै ॥ २ ॥ गुरमुखि जोति भली सिव नीकी आनि पानी सकति भरीजै ॥ मैन दंत निकसे गुर बचनी सारु चबि चबि हरि
 रसु पीजै ॥ ३ ॥ राम नाम अनुग्रहु बहु कीआ गुर साधू पुरख मिलीजै ॥ गुन राम नाम बिसथीरन कीए हरि सगल भवन

जसु दीजै ॥ ४ ॥ साधू साध साध मनि प्रीतम बिनु देखे हरि न सकीजै ॥ जिउ जल मीन जल जल प्रीति है खिनु जल
बिनु फूटि मरीजै ॥ ५ ॥ महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूरि न पीजै ॥ तिना तिसना जलत जलत नही बूझहि
डँडु धरम शइ का दीजै ॥ ६ ॥ सभि तीरथ बरत जग्य पुँन कीए हिवै गालि गालि तनु छीजै ॥ अतुला तोलु राम नामु है
गुरमति को पुजै न तोल तुलीजै ॥ ७ ॥ तव गुन ब्रहम ब्रहम तू जानहि जन नानक सरनि परीजै ॥ तू जल निधि मीन हम
तेरे करि किरपा सँगि रखीजै ॥ ८ ॥ ३ ॥ कलिआन महला ४ ॥ रामा रम रामो पूज करीजै ॥ मनु तनु अरपि धरउ सभु
आगै रसु गुरमति गिआनु द्विडीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहम नाम गुण साख तरोवर नित चुनि चुनि पूज करीजै ॥ आतम
देउ देउ है आतमुरसि लागै पूज करीजै ॥ १ ॥ बिबेक बुधि सभ जग महि निरमल बिचरि बिचरि रसु पीजै ॥ गुर परसादि
पदारथु पाइआ सतिगुर कउ इहु मनु दीजै ॥ २ ॥ निरमोलकु अति हीरो नीको हीरै हीरु बिधीजै ॥ मनु मोतीसालु है गुर
सबदी जितु हीरा परखि लईजै ॥ ३ ॥ सँगति सँत सँगि लागि ऊचे जिउ पीप पलास खाइ लीजै ॥ सभ नर महि प्राणी
ऊतमु होवै राम नामै बासु बसीजै ॥ ४ ॥ निरमल निरमल करम बहु कीने नित साखा हरी जडीजै ॥ धरमु फुलु फलु गुरि
गिआनु द्विडाइआ बहकार बासु जगि दीजै ॥ ५ ॥ एक जोति एको मनि वसिआ सभ ब्रहम द्रिसटि इकु कीजै ॥
आतमरामु सभ एकै है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजै ॥ ६ ॥ नाम बिना नकटे नर देखहु तिन घसि घसि नाक वढीजै ॥
साकत नर अहँकारी कहीअहि बिनु नावै धिगु जीवीजै ॥ ७ ॥ जब लगु सासु सासु मन अंतरि ततु बेगल सरनि परीजै ॥
नानक क्रिपा क्रिपा करि धारहु मै साधू चरन परखीजै ॥ ८ ॥ ४ ॥ कलिआन महला ४ ॥ रामा मै साधू चरन धुवीजै ॥
किलबिख दहन होहि खिन अंतरि मेरे ठाकुर किरपा कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंगत जन दीन खरे दरि ठाढे अति तरसन
कउ दानु दीजै ॥ त्राहि त्राहि सरनि प्रभ आए मो कउ गुरमति नामु द्विडीजै ॥ १ ॥ काम करोधु नगर महि सबला नित उठि

उठि जूझु करीजै ॥ अंगीकारु करहु रखि लेवहु गुर पूरा काढि कढीजै ॥ २ ॥ अंतरि अगनि सबल अति बिखिआ हिव
 सीतलु सबदु गुर दीजै ॥ तनि मनि सांति होइ अधिकार्इ रोगु काटै सूखि सवीजै ॥ ३ ॥ जिउ सूरजु किरणि रविआ सरब ठाई
 सभ घटि घटि शमु रवीजै ॥ साधू साध मिले रसु पावै ततु निज घरि बैठिआ पीजै ॥ ४ ॥ जन कउ प्रीति लगी गुर सेती जिउ
 चकवी देखि सूरीजै ॥ निरखत निरखत रैनि सभ निरखी मुखु काढै अँमितु पीजै ॥ ५ ॥ साकत सुआन कहीअहि बहु लोभी
 बहु दुरमति मैलु भरीजै ॥ आपन सुआइ करहि बहु बाता तिना का विसाहु किआ कीजै ॥ ६ ॥ साधू साध सरनि मिलि
 सँगति जितु हरि रसु काढि कढीजै ॥ परउपकार बोलहि बहु गुणीआ मुखि सँत भगत हरि दीजै ॥ ७ ॥ तू अगम दइआल
 दइआ पति दाता सभ दइआ धारि रखि लीजै ॥ सरब जीअ जगजीवनु एको नानक प्रतिपाल करीजै ॥ ८ ॥ ५ ॥
 कलिआनु महला ४ ॥ शमा हम दासन दास करीजै ॥ जब लागि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिवीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 सँकरु नारदु सेखनाग मुनि धूरि साधू की लोचीजै ॥ भवन भवन पवितु होहि सभि जह साधू चरन धरीजै ॥ १ ॥ तजि
 लाज अहँकारु सभु तजीरे मिलि साधू सँगि रहीजै ॥ धरमराइ की कानि चुकावै बिखु डुबदा काढि कढीजै ॥ २ ॥ भरमि सूके
 बहु उभि सुक कहीअहि मिलि साधू सँगि हरीजै ॥ ता ते बिलमु पलु ढिल न कीजै जाइ साधू चरनि लगीजै ॥ ३ ॥ राम नाम
 कीरतन रतन वथु हरि साधू पासि रखीजै ॥ जो बचनु गुर सति सति करि मानै तिसु आगै काढि धरीजै ॥ ४ ॥ सँतहु सुनहु
 सुनहु जन भाई गुरि काढी बाह कुकीजै ॥ जे आतम कउ सुखु सुखु नित लोड़हु तां सतिगुर सरनि पवीजै ॥ ५ ॥ जे वडभागु
 होइ अति नीका तां गुरमति नामु द्विड़ीजै ॥ सभु माइआ मोहु बिखमु जगु तरीरे सहजे हरि रसु पीजै ॥ ६ ॥ माइआ माइआ
 के जो अधिकार्इ विचि माइआ पचै पचीजै ॥ अगिआनु अँधेरु महा पँथु बिखड़ा अहँकारि भारि लदि लीजै ॥ ७ ॥ नानक
 राम रम रमु रम रम रामै ते गति कीजै ॥ सतिगुरु मिलै ता नामु द्विड़ाए राम नामै रलै मिलीजै ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

ॐ सतिनाम् करता पुरुषु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

गगु परभाती विभास महला १ चउपदे घरु १ ॥

नाइ तेरै तरणा नाइ पति पूज ॥ नाउ तेरा गहणा मति मकसूदु ॥ नाइ तेरै नाउ मँने सभ कोइ ॥ विणु नावै पति कबहु न होइ ॥ १ ॥ अवर सिआणप सगली पाजु ॥ जै बखसे तै पूरा काजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाउ तेरा ताणु नाउ दीबाणु ॥ नाउ तेरा लसकरु नाउ सुलतानु ॥ नाइ तेरै माणु महत परवाणु ॥ तेरी नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ २ ॥ नाइ तेरै सहजु नाइ सालाह ॥ नाउ तेरा अँमितु बिखु उठि जाइ ॥ नाइ तेरै सभि सुख वसहि मनि आइ ॥ बिनु नावै बाधी जम पूरि जाइ ॥ ३ ॥ नारी बेरी घर दर देस ॥ मन कीआ खुसीआ कीचहि वेस ॥ जां सदे तां ढिल न पाइ ॥ नानक कूडु कूडो होइ जाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला १ ॥ तेरा नामु रतनु करमु चानणु सुरति तिथै लोइ ॥ अँधेरु अँधी वापरै सगल लीजै खोइ ॥ १ ॥ इहु सँसारु सगल बिकारु ॥ तेरा नामु दारु अवरु नासति करणहारु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाताल पुरीआ

एक भार होवहि लाख करोड़ि ॥ तेरे लाल कीमति ता पवै जां सिरै होवहि होरि ॥ २ ॥ दूखा ते सुख ऊपजहि सूखी होवहि
 दूख ॥ जितु मुखि तू सालाहीअहि तितु मुखि कैसी भूख ॥ ३ ॥ नानक मूरखु एकु तू अवरु भला सैसारु ॥ जितु तनि
 नामु न ऊपजै से तन होहि खुआर ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला १ ॥ जै कारणि बेद ब्रहमै उचरे सँकरि छोडी माइआ ॥ जै
 कारणि सिध भए उदासी देवी मरमु न पाइआ ॥ १ ॥ बाबा मनि साचा मुखि साचा कहीऐ तरीऐ साचा होई ॥ दुसमनु दूखु न
 आवै नेडै हरि मति पावै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि बिंब पवणै की बाणी तिनि नाम के दासा ॥ ते तसकर जो नामु न
 लेवहि वासहि कोट पँचासा ॥ २ ॥ जे को एक करै चँगिआई मनि चिति बहुतु बफावै ॥ एते गुण एतीआ चँगिआईआ देइ न
 पछोतावै ॥ ३ ॥ तुधु सालाहनि तिन धनु पलै नानक का धनु सोई ॥ जे को जीउ कहै ओना कउ जम की तलब न होई ॥ ४
 ॥ ३ ॥ प्रभाती महला १ ॥ जा कै रूपु नाही जाति नाही नाही मुखु मासा ॥ सतिगुरि मिले निरँजनु पाइआ तेरै नामि है
 निवासा ॥ १ ॥ अउधू सहजे ततु बीचारि ॥ जा ते फिरि न आवहु सैसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै करमु नाही धरमु नाही
 नाही सुचि माला ॥ सिव जोति कँनहु बुधि पाई सतिगुरु रखवाला ॥ २ ॥ जा कै बरतु नाही नेमु नाही नाही बकबाई ॥
 गति अवगति की चिँत नाही सतिगुरु फुरमाई ॥ ३ ॥ जा कै आस नाही निरास नाही चिति सुरति समझाई ॥ तँत कउ
 परम तँतु मिलिआ नानका बुधि पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला १ ॥ ता का कहिआ दरि परवाणु ॥ बिखु अँमितु दुइ सम
 करि जाणु ॥ १ ॥ किआ कहीऐ सरबे रहिआ समाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रगटी जोति चूका
 अभिमानु ॥ सतिगुरि दीआ अँमित नामु ॥ २ ॥ कलि महि आइआ सो जनु जाणु ॥ साची दरगह पावै माणु ॥ ३ ॥
 कहणा सुनणा अकथ घरि जाइ ॥ कथनी बदनी नानक जलि जाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला १ ॥ अँमितु नीरु गिआनि
 मन मजनु अठसठि तीरथ सँगि गहे ॥ गुर उपदेसि जवाहर माणक सेवे सिखु सो खोजि लहै ॥ १ ॥ गुर समानि

तीरथु नहीं कोइ ॥ सरु संतोखु तासु गुरु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुर्मति मैलु
 हैरे ॥ सतिगुरि पाइरे पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥ २ ॥ रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीरे ॥ जा
 की वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीरे ॥ ३ ॥ गुरुमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरुमुखि सिव घरि जाईरे ॥
 गुरुमुखि नानक सचि समाईरे गुरुमुखि निज पदु पाईरे ॥ ४ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला १ ॥ गुरु परसादी विदिआ वीचारै
 पड़ि पड़ि पावै मानु ॥ आपा मधे आपु परगासिआ पाइआ अँमितु नामु ॥ १ ॥ करता तू मेरा जजमानु ॥ इक देखिणा
 हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पँच तसकर धावत राखे चूका मनि अभिमानु ॥ दिसटि बिकारी
 दुर्मति भागी ऐसा ब्रहम गिआनु ॥ २ ॥ जतु सतु चावल दइआ कणक करि प्रापति पाती धानु ॥ दूधु करमु संतोख घीउ
 करि ऐसा मांगउ दानु ॥ खिमा धीरजु करि गऊ लवेरी सहजे बछरा खीरु पीरे ॥ सिफति सरम का कपड़ा मांगउ हरि गुण
 नानक खतु रहै ॥ ४ ॥ ७ ॥ प्रभाती महला १ ॥ आवतु किनै न राखिआ जावतु किउ राखिआ जाइ ॥ जिस ते होआ
 सोई परु जाणै जां उस ही माहि समाइ ॥ १ ॥ तुहै है वाहु तेरी रजाइ ॥ जो किछु करहि सोई परु होइबा अवरु न करणा
 जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे हरहत की माला टिँड लगत है इक सरवनी होर फेर भरीअत है ॥ तैसो ही इहु खेलु खसम जा
 जिउ उस की वडिआई ॥ २ ॥ सुरती कै मारगि चलि कै उलटी नदरि प्रगासी ॥ मनि वीचारि देखु ब्रहम गिआनी कउनु
 गिरही कउनु उदासी ॥ ३ ॥ जिस की आसा तिस ही सउपि कै एहु रहिआ निरबाणु ॥ जिस ते होआ सोई करि मानिआ
 नानक गिरही उदासी सो परवाणु ॥ ४ ॥ ८ ॥ प्रभाती महला १ ॥ दिसटि बिकारी बँधानि बाधै हउ तिस कै बलि जाई
 ॥ पाप पुँन की सार न जाणै भूला फिरै अजाई ॥ १ ॥ बोलहु सचु नामु करतार ॥ फुनि बहुड़ि न आवण वार ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ ऊचा ते फुनि नीचु करतु है नीच करै सुलतानु ॥ जिनी जाणु सुजाणिआ जगि ते पूरे परवाणु ॥

२ ॥ ता कउ समझावण जाईरे जे को भूला होई ॥ आपे खेल करे सभ करता ऐसा बूझै कोई ॥ ३ ॥ नाउ प्रभातै सबदि
 धिआईरे छोडहु दुनी परीता ॥ प्रणवति नानक दासनि दासा जगि हारिआ तिनि जीता ॥ ४ ॥ ९ ॥ प्रभाती महला १
 ॥ मनु माइआ मनु धाइआ मनु पँखी आकासि ॥ तसकर सबदि निवारिआ नगरु वुठा साबासि ॥ जा तू राखहि राखि
 लैहि साबतु होवै रासि ॥ १ ॥ ऐसा नामु रतनु निधि मेरै ॥ गुरुमति देहि लगउ पगि तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु जोगी मनु
 भोगीआ मनु मूरखु गावारु ॥ मनु दाता मनु मँगता मन सिरि गुरु करतारु ॥ पँच मारि सुखु पाइआ ऐसा ब्रहमु वीचारु
 ॥ २ ॥ घटि घटि एकु वखाणीरे कहउ न देखिआ जाइ ॥ खोटो पूठो शलीरे बिनु नावै पति जाइ ॥ जा तू मेलहि ता
 मिलि रहां जां तेरी होइ रजाइ ॥ ३ ॥ जाति जनमु नह पूछीरे सचु घरु लेहु बताइ ॥ सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ
 ॥ जनम मरन दुखु काटीरे नानक छूटसि नाइ ॥ ४ ॥ १० ॥ प्रभाती महला १ ॥ जागतु बिगसै मूठो अँधा ॥ गलि
 फाही सिरि मारे धँधा ॥ आसा आवे मनसा जाइ ॥ उरझी ताणी किछु न बसाइ ॥ १ ॥ जागसि जीवण जागणहार ॥
 सुख सागर अँमित भँडारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहिओ न बूझै अँधु न सूझै भोंडी कार कमाई ॥ आपे प्रीति प्रेम परमेसुरु
 करमी मिले वडाई ॥ २ ॥ दिनु दिनु आवै तिलु तिलु छीजै माइआ मोहु घटाई ॥ बिनु गुरु बूडो ठउर न पावै जब लग दूजी
 राई ॥ ३ ॥ अहिनिासि जीआ देखि सम्हालै सुखु दुखु पुरबि कमाई ॥ करमहीणु सचु भीखिआ मांगै नानक मिलै वडाई
 ॥ ४ ॥ ११ ॥ प्रभाती महला १ ॥ मसटि करउ मूरखु जगि कहीआ ॥ अधिक बकउ तेरी लिव रहीआ ॥ भूल चूक तेरै
 दरबारि ॥ नाम बिना कैसे आचार ॥ १ ॥ ऐसे झूठि मुठे संसारा ॥ निँदकु नँदै मुझै पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिंसु
 निँदहि सोई बिधि जाणै ॥ गुरु कै सबदे दरि नीसाणै ॥ कारण नामु अँतरगति जाणै ॥ जिस नो नदरि करे सोई बिधि
 जाणै ॥ २ ॥ मै मैलौ ऊजलु सचु सोइ ॥ ऊतमु आखि न ऊचा होइ ॥ मनमुरु खुलिह महा बिखु खाइ ॥ गुरुमुखि

होइ सु राचै नाइ ॥ ३ ॥ अंधौ बोलौ मुगधु गवारु ॥ हीणौ नीचु बुरौ बुरिआरु ॥ नीधन कौ धनु नामु पिआरु ॥ इहु धनु
 सारु होरु बिखिआ छारु ॥ ४ ॥ उसतति निँदा सबदु वीचारु ॥ जो देवै तिस कउ जैकारु ॥ तू बखसहि जाति पति होइ
 ॥ नानकु कहै कहावै सोइ ॥ ५ ॥ १२ ॥ प्रभाती महला १ ॥ खाइआ मैलु वधाइआ पैधै घर की हाणि ॥ बकि बकि वादु
 चलाइआ बिनु नावै बिखु जाणि ॥ १ ॥ बाबा ऐसा बिखम जालि मनु वासिआ ॥ बिबलु झागि सहजि परगासिआ ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ बिखु खाणा बिखु बोलणा बिखु की कार कमाइ ॥ जम दरि बाधे मारीअहि छूटसि साचै नाइ ॥ २ ॥ जिव
 आइआ तिव जाइसी कीआ लिखि लै जाइ ॥ मनमुखि मूलु गवाइआ दरगह मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ जगु खोटौ सचु निरमलौ
 गुर सबदीं वीचारि ॥ ते नर विरले जाणीअहि जिन अंतरि गिआनु मुरारि ॥ ४ ॥ अजरु जरै नीझरु झरै अमर अनंद
 सरूप ॥ नानकु जल कौ मीनु सै थे भावे राखहु प्रीति ॥ ५ ॥ १३ ॥ प्रभाती महला १ ॥ गीत नाद हरख चतुराई ॥ रहस
 रँग फुरमाइसि काई ॥ पैन्हण खाणा चीति न पाई ॥ साचु सहजु सुखु नामि वसाई ॥ १ ॥ किआ जानां किआ करै करावै
 ॥ नाम बिना तनि किछु न सुखावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोग बिनोद स्वाद आनँदा ॥ मति सत भाइ भगति गोबिँदा ॥
 कीरति करम कार निज सँदा ॥ अंतरि खतौ राज रविँदा ॥ २ ॥ प्रिउ प्रिउ प्रीति प्रेमि उर धारी ॥ दीना नाथु पीउ बनवारी
 ॥ अनदिनु नामु दानु ब्रतकारी ॥ त्रिपति तरँग ततु बीचारी ॥ ३ ॥ अकथौ कथउ किआ मै जोरु ॥ भगति करी कराइहि
 मोर ॥ अंतरि वसै चूकै मै मोर ॥ किसु सेवी दूजा नहीं होरु ॥ ४ ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा ॥ ऐसा अँमितु अंतरि डीठा
 ॥ जिनि चाखिआ पूरा पदु होइ ॥ नानक धापिओ तनि सुखु होइ ॥ ५ ॥ १४ ॥ प्रभाती महला १ ॥ अंतरि देखि सबदि
 मनु मानिआ अवरु न रांगनहारा ॥ अहिनिंसि जीआ देखि समाले तिस ही की सरकारा ॥ १ ॥ मेरा प्रभु रांगि घणौ अति
 रूडौ ॥ दीन दइआलु प्रीतम मनमोहनु अति रस लाल सगुडौ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊपरि कूपु गगन पनिहारी अँमितु

पीवणहारा ॥ जिस की रचना सो बिधि जाणै गुरमुखिं गिआनु वीचारा ॥ २ ॥ पसरि किरणिं रसि कमल बिगासे ससि
 घरि सूरु समाइआ ॥ कालु बिंधुसि मनसा मनि मारी गुर प्रसादि प्रभु पाइआ ॥ ३ ॥ अति रसि रंगि चल्लौ राती दूजा
 रंगु न कोई ॥ नानक रसनि रसाए राते रवि रहिआ प्रभु सोई ॥ ४ ॥ १५ ॥ प्रभाती महला १ ॥ बाहर महि रावल
 खापि जावहि चहु छिअ महि सँनिआसी ॥ जोगी कापडीआ सिरखूथे बिनु सबदै गलिं फासी ॥ १ ॥ सबदि रते पूरे
 बैरागी ॥ अउहठि हसत महि भीखिआ जाची एक भाइ लिव लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमण वादु पड़हि करि किरिआ
 करणी करम कराए ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही मनमुखु विछुडि दुखु पाए ॥ २ ॥ सबदि मिले से सूचाचारी साची
 दरगह माने ॥ अनदिनु नामि रतनि लिव लागे जुगि जुगि साचि समाने ॥ ३ ॥ सगले करम धरम सुचि सँजम जप तप
 तीरथ सबदि वसे ॥ नानक सतिगुर मिलै मिलाइआ दूख पराछत काल नसे ॥ ४ ॥ १६ ॥ प्रभाती महला १ ॥ सँता
 की रेणु साध जन सँगति हरि कीरति तरु तारी ॥ कहा करै बपुरा जमु डरपै गुरमुखिं रिदै मुरारी ॥ १ ॥ जलिं जाउ
 जीवनु नाम बिना ॥ हरि जपि जापु जपउ जपमाली गुरमुखिं आवै सादु मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेस साचु सुखु
 जा कउ किआ तिसु उपमा कहीऐ ॥ लाल जवेहर रतन पदारथ खोजत गुरमुखिं लहीऐ ॥ २ ॥ चीनै गिआनु धिआनु
 धनु साचौ एक सबदि लिव लावै ॥ निरालंबु निरहारु निहकेवलु निरभउ ताडी लावै ॥ ३ ॥ साइर सपत भरे जल
 निरमलिं उलटी नाव तरावै ॥ बाहरिं जातौ ठाकि रहावै गुरमुखिं सहजिं समावै ॥ ४ ॥ सो गिरही सो दासु उदासी
 जिनि गुरमुखिं आपु पछानिआ ॥ नानकु कहै अवरु नहीं दूजा साच सबदि मनु मानिआ ॥ ५ ॥ १७ ॥

रागु प्रभाती महला ३ चउपदे १८ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखिं विरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई ॥ नामि रते सुखु पावै साचि रहै लिव लाई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु
 जन भाई ॥

गुर प्रसादि मनु असथिरु होवै अनदिनु हरि रसि रहिआ अघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु भगति करहु दिनु राती इसु जुग
 का लाहा भाई ॥ सदा जन निरमल मैलु न लागै सचि नामि चितु लाई ॥ २ ॥ सुखु सीगारु सतिगुरु दिखाइआ नामि
 वडी वडिआई ॥ अखुट भँडार भरे कदे तोटि न आवै सदा हरि सेवहु भाई ॥ ३ ॥ आपे करता जिस नो देवै तिसु वसै मनि
 आई ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू सतिगुरि दीआ दिखाई ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ निरगुणीआरे कउ बखसि लै
 सुआमी आपे लैहु मिली ॥ तू बिअँतु तेरा अँतु न पाइआ सबदे देहु बुझाई ॥ १ ॥ हरि जीउ तुधु विटहु बलि जाई ॥ तनु
 मनु अरपी तुधु आगै राखउ सदा रहां सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपणे भाणे विचि सदा रखु सुआमी हरि नामो देहि
 वडिआई ॥ पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिनु सहजि समाई ॥ २ ॥ तेरै भाणै भगति जे तुधु भावै आपे बकसि मिली ॥ तेरै
 भाणै सदा सुखु पाइआ गुरि त्रिसना अगनि बुझाई ॥ ३ ॥ जो तू करहि सु होवै करते अवरु न करणा जाई ॥ नानक नावै
 जेवडु अवरु न दाता पूरे गुर ते पाई ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि सालाहिआ जिँना तिन सलाहि हरि
 जाता ॥ विचहु भरमु गइआ है दूजा गुर कै सबदि पछाता ॥ १ ॥ हरि जीउ तू मेरा इकु सोई ॥ तुधु जपी तुधै सालाही गति
 मति तुझ ते होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सालाहनि से सादु पाइनि मीठा अँमितु सारु ॥ सदा मीठा कदे न फीका गुर
 सबदी वीचारु ॥ २ ॥ जिनि मीठा लाइआ सोई जाणै तिसु विटहु बलि जाई ॥ सबदि सलाही सदा सुखदाता जो इछै सो
 फलु पाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई गुर सबदी सचु पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ
 तिन तू राखनु जोगु ॥ तुधु जेवडु मै अवरु न सूझै ना को होआ न होगु ॥ १ ॥ हरि जीउ सदा तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै
 तितु राखहु मेरे सुआमी एह तेरी वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन करहि प्रतिपाल ॥ आपि क्रिपा

करि राखहु हरि जीउ पोहि न सकै जमकालु ॥ २ ॥ तेरी सरणाई सची हरि जीउ ना ओह घटै न जाइ ॥ जो हरि छोडि
 दूजै भाइ लागै ओहु जँमै तै मरि जाइ ॥ ३ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिना दूख भूख किछु नाहिं ॥ नानक नामु
 सलाहिं सदा तू सचै सबदि समाहिं ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु जब लगु जीअ
 परान ॥ गुर सबदी मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ॥ सफलु जनमु तिसु प्रानी केरा हरि कै नामि समान ॥ १ ॥
 मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ॥ हरि का नामु सदा सुखदाता सहजे हरि रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूलु पछाणनि तिस
 निज घरि वासा सहजे ही सुखु होई ॥ गुर कै सबदि कमलु परगासिआ हउमै दुरमति खोई ॥ सभना महि एको सचु वरतै
 विरला बूझै कोई ॥ २ ॥ गुरमती मनु निरमलु होआ अँप्रितु ततु वखानै ॥ हरि का नामु सदा मनि वसिआ विचि मन ही
 मनु मानै ॥ सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जितु आतमरामु पछानै ॥ ३ ॥ मानस जनमि सतिगुरु न सेविआ बिरथा
 जनमु गवाइआ ॥ नदरि करे तां सतिगुरु मेले सहजे सहजि समाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरै भागि
 धिआइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ आपे भांति बणाए बहु रंगी सिसटि उपाइ प्रभि खेलु कीआ ॥ करि करि
 वेखै करे कराए सरब जीआ नो रिजकु दीआ ॥ १ ॥ कली काल महि रविआ रामु ॥ घटि घटि पूरि रहिआ प्रभु एको
 गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ ॥ नामु
 रतनु तिना हिरेद्वै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भजि पइआ ॥ २ ॥ इंद्री पँच पँचे वसि आणै खिमा संतोखु गुरमति पावै ॥
 सो धनु धनु हरि जनु वड पूरा जो भै बैरागि हरि गुण गावै ॥ ३ ॥ गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥
 करि आचार बहु सँपउ सँचै जो किछु करै सु नरकि परै ॥ ४ ॥ एको सबदु एको प्रभु वरतै सभ एकसु ते उतपति चलै ॥
 नानक गुरमुखि मेलिं मिलाए गुरमुखि हरि हरि जाइ रलै ॥ ५ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ मेरे मन गुरु अपणा सालाहिं

पूरा भागु होवे मुखि मसतकि सदा हरि के गुण गाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँमितु नामु भोजनु हरि देइ ॥ कोटि मधे कोथ
 विरला लेइ ॥ जिस नो अपणी नदरि करेइ ॥ १ ॥ गुर के चरण मन माहि वसाइ ॥ दुखु अन्हेरा अँदरहु जाइ ॥
 आपे साचा लए मिलाइ ॥ २ ॥ गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु ॥ ऐथै ओथै एहु अधारु ॥ आपे देवै सिरजनहारु
 ॥ ३ ॥ सचा मनाए अपणा भाणा ॥ सोई भगतु सुघडु सोजाणा ॥ नानकु तिस कै सद कुरबाणा ॥ ४ ॥ ७ ॥
 १७ ॥ ७ ॥ २४ ॥

प्रभाती महला ४ विभास १३ सतिगुर प्रसादि ॥

रसकि रसकि गुन गावह गुरमति लिव उनमनि नामि लगान ॥ अँमितु रसु पीआ गुर सबदी हम नाम विटहु कुरबान
 ॥ १ ॥ हमरे जगजीवन हरि प्रान ॥ हरि ऊतमु रिद अँतरि भाइओ गुरि मँतु दीओ हरि कान ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 आवहु सँत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि नामु वखान ॥ कितु बिधि किउ पाईऐ प्रभु अपुना मो कउ करहु उपदेसु हरि
 दान ॥ २ ॥ सतसँगति महि हरि हरि वसिआ मिलि सँगति हरि गुन जान ॥ वडै भागि सतसँगति पाई गुरु
 सतिगुरु परसि भगवान ॥ ३ ॥ गुन गावह प्रभ अगम ठाकुर के गुन गाइ रहे हैरान ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा
 धारी हरि नामु दीओ खिन दान ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ उगवै सूरु गुरमुखि हरि बोलहि सभ रैनि
 समाहलहि हरि गाल ॥ हमरै प्रभि हम लोच लगाई हम करह प्रभू हरि भाल ॥ १ ॥ मेरा मनु साधू धूरि खाल ॥ हरि
 हरि नामु द्विड़ाइओ गुरि मीठा गुर पग झारह हम बाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत कउ दिनु रैनि अँधारी मोहि फाथे
 माइआ जाल ॥ खिनु पलु हरि प्रभु रिदै न वसिओ रिनि बाधे बहु बिधि बाल ॥ २ ॥ सतसँगति मिलि मति बुधि पाई
 हउ छूटे ममता जाल ॥ हरि नामा हरि मीठ लगाना गुरि कीए सबदि निहाल ॥ ३ ॥ हम बारिक गुर अगम गुसाई गुर
 करि किरपा प्रतिपाल ॥ बिखु भउजलु डुबदे काढि लेहु प्रभ गुर नानक बाल गुपाल ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला ४

इकु खिनु हरि प्रभि किरपा धारी गुन गाए रसक रसीक ॥ गावत सुनत दोऊ भए मुकते जिना गुरमुखि खिन हरि पीक ॥
 १ ॥ मेरै मनि हरि हरि राम नामु रसु टीक ॥ गुरमुखि नामु सीतल जलु पाइआ हरि हरि नामु पीआ रसु डीक ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ जिन हरि हिरदै प्रीति लगानी तिना मसतकि ऊजल टीक ॥ हरि जन सोभा सभ जग ऊपरि जिउ विचि उडवा
 ससि कीक ॥ २ ॥ जिन हरि हिरदै नामु न वसिओ तिन सभि कारज फीक ॥ जैसे सीगारु करै देह मानुख नाम बिना
 नकटे नक कीक ॥ ३ ॥ घटि घटि रमईआ रमत राम राइ सभ वरतै सभ महि ईक ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी
 गुर बचन धिआइओ घरी मीक ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ अगम दइआल क्रिपा प्रभि धारी मुखि हरि हरि नामु
 हम कहे ॥ पतित पावन हरि नामु धिआइओ सभि किलबिख पाप लहे ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु रवि रहे ॥ दीन
 दइआलु दुख भँजनु गाइओ गुरमति नामु पदारथु लहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि नगरि हरि बसिओ मति गुरमति
 हरि हरि सहे ॥ सरीरि सरोवरि नामु हरि प्रगटिओ घरि मँदरि हरि प्रभु लहे ॥ २ ॥ जो नर भरमि भरमि उदिआने ते
 साकत मूड मुहे ॥ जिउ मिग नाभि बसै बासु बसना भरमि भ्रमिओ द्वार गहे ॥ ३ ॥ तुम वड अगम अगाधि बोधि प्रभ
 मति देवहु हरि प्रभ लहे ॥ जन नानक कउ गुरि हाथु सिरि धरिओ हरि राम नामि रवि रहे ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला ४
 ॥ मनि लागी प्रीति राम नाम हरि हरि जपिओ हरि प्रभु वडफा ॥ सतिगुर बचन सुखाने हीअरै हरि धारी हरि प्रभ क्रिपफा
 ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नाम हरि निमखफा ॥ हरि हरि दानु दीओ गुरि पूरै हरि नामा मनि तनि बसफा ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ काइआ नगरि वसिओ घरि मँदरि जपि सोभा गुरमुखि करपफा ॥ हलाति पलाति जन भए सुहेले जपि मुख ऊजल
 गुरमुखि तरफा ॥ २ ॥ अनभउ हरि हरि हरि लिव लागी हरि उर धारिओ गुरि निमखफा ॥ कोटि कोटि के दोख सभ
 जन के हरि दूरि कीए इक पलफा ॥ ३ ॥ तुमरे जन तुम ही ते जाने प्रभ जानिओ जन ते मुखफा ॥ हरि हरि आपु धरिओ

हरि जन महि जन नानकु हरि प्रभु इकफा ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ गुर सतिगुरि नामु द्विडाइओ हरि हरि हम मुए जीवे
हरि जपिभा ॥ धनु धँनु गुरू गुरु सतिगुरु पूरा बिखु डुबदे बाह देइ कढिभा ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु अरधांभा ॥ उपजपि
उपाइ न पाईऐ कतहू गुरि पूरै हरि प्रभु लाभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु रसु राम रसाइणु रसु पीआ गुरमति रसभा ॥ लोह मनूर
कँचनु मिलि संगति हरि उर धारिओ गुरि हरिभा ॥ २ ॥ हउमै बिखिआ नित लोभि लुभाने पुत कलत मोहि लुभिभा ॥ तिन
पग संत न सेवे कबहू ते मनमुख भूँभर भरभा ॥ ३ ॥ तुमरे गुन तुम ही प्रभ जानहु हम परे हारि तुम सरनभा ॥ जिउ जानहु
तिउ राखहु सुआमी जन नानकु दासु तुमनभा ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

प्रभाती बिभास पड़ताल महला ४ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥ ॥

जपि मन हरि हरि नामु निधान ॥ हरि दरगह पावहि मान ॥ जिनि जपिआ ते पारि परान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनि मन हरि हरि
नामु करि धिआनु ॥ सुनि मन हरि कीरति अठसठि मजानु ॥ सुनि मन गुरमुखि पावहि मानु ॥ १ ॥ जपि मन परमेसुरु
परधानु ॥ खिन खोवै पाप कोटान ॥ मिलु नानक हरि भगवान ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

प्रभाती बिभास पड़ताल महला ४ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

मनु हरि कीआ तनु सभु साजिआ ॥ पँच तत रचि जोति निवाजिआ ॥ सिंहजा धरति बरतन कउ पानी ॥ निमख न विसारहु
सेवहु सारिगपानी ॥ १ ॥ मन सतिगुरु सेवि होइ परम गते ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा तां तू पावहि प्रानपते ॥ १ ॥ रहाउ
॥ कापड़ भोग रस अनिक भुँचाए ॥ मात पिता कुटँब सगल बनाए ॥ रिजकु समाहे जलि थलि मीत ॥ सो हरि सेवहु नीता
नीत ॥ २ ॥ तहा सखाई जह कोइ न होवै ॥ कोटि अप्राध इक खिन महि धोवै ॥ दाति करै नही पछोतावै ॥ एका बखस
फिरि बहुरि न बुलावै ॥ ३ ॥ किरत संजोगी पाइआ भालि ॥ साधसंगति महि बसे गुपाल ॥ गुर मिलि आए तुमरै दुआर ॥

जन नानक दरसन देहु मुरारि ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ प्रभ की सेवा जन की सोभा ॥ काम क्रोध मिटे तिसु लोभा ॥
 ॥ नामु तेरा जन कै भँडारि ॥ गुन गावहि प्रभ दरस पिआरि ॥ १ ॥ तुमरी भगति प्रभ तुमहि जनाई ॥ काटि जेवरी जन
 लीए छडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जनु राता प्रभ कै रँगि ॥ तिनि सुखु पाइआ प्रभ कै सँगि ॥ जिंसु रसु आइआ सोई जानै
 ॥ पेखि पेखि मन महि हैरानै ॥ २ ॥ सो सुखीआ सभ ते ऊतमु सोइ ॥ जा कै ह्रिदै वसिआ प्रभु सोइ ॥ सोई निहचलु
 आवै न जाइ ॥ अनदिनु प्रभ के हरि गुण गाइ ॥ ३ ॥ ता कउ करहु सगल नमसकारु ॥ जा कै मनि पूरनु निरँकारु ॥
 करि किरपा मोहि ठाकुर देवा ॥ नानकु उधरै जन की सेवा ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुन गावत मनि होइ अनँद ॥
 आठ पहर सिमरउ भगवँत ॥ जा कै सिमरनि कलमल जाहि ॥ तिसु गुर की हम चरनी पाहि ॥ १ ॥ सुमति देवहु संत
 पिआरे ॥ सिमरउ नामु मोहि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि गुरि कहिआ मारगु सीधा ॥ सगल तिआगि नामि हरि
 गीधा ॥ तिसु गुर कै सदा बलि जाईए ॥ हरि सिमरनु जिंसु गुर ते पाईए ॥ २ ॥ बूडत प्राणी जिनि गुरहि तराइआ ॥ जिंसु
 प्रसादि मोहै नही माइआ ॥ हलतु पलतु जिनि गुरहि सवारिआ ॥ तिसु गुर ऊपरि सदा हउ वारिआ ॥ ३ ॥ महा मुग्ध ते
 कीआ गिआनी ॥ गुर पूरे की अकथ कहानी ॥ पारब्रहम नानक गुरदेव ॥ वडै भागि पाईए हरि सेव ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती
 महला ५ ॥ सगले दूख मिटे सुख दीए अपना नामु जपाइआ ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाए सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १
 ॥ हम बारिक सरनि प्रभ दइआल ॥ अवगण काटि कीए प्रभि अपुने राखि लीए मेरै गुर गोपालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताप पाप
 बिनसे खिन भीतरि भए क्रिपाल गुसाई ॥ सासि सासि पारब्रहमु अराधी अपुने सतिगुर कै बलि जाई ॥ २ ॥ अगम
 अगोचरु बिअँतु सुआमी ता का अँतु न पाईए ॥ लाहा खाटि होईए धनवँता अपुना प्रभू धिआईए ॥ ३ ॥ आठ पहर

पारब्रह्म धिआई सदा सदा गुन गाइआ ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ पारब्रह्म गुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला
 ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभि नासे ॥ सचु नामु गुरि दीनी रासे ॥ प्रभ की दरगह सोभावँते ॥ सेवक सेवि सदा
 सोहँते ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ सगले रोग दोख सभि बिनसहि अगिआनु अँधेरा मन ते जाई ॥ १ ॥
 रहाउ ॥ जनम मरन गुरि राखे मीत ॥ हरि के नाम सिउ लागी प्रीति ॥ कोटि जनम के गए कलेस ॥ जो तिसु भावै सो
 भल होस ॥ २ ॥ तिसु गुरु कउ हउ सद बलि जाई ॥ जिसु प्रसादि हरि नामु धिआई ॥ ऐसा गुरु पाईऐ वडभागी ॥
 जिसु मिलते राम लिव लागी ॥ ३ ॥ करि किरपा पारब्रह्म सुआमी ॥ सगल घटा के अँतरजामी ॥ आठ पहर अपुनी
 लिव लाइ ॥ जनु नानक प्रभ की सरणाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ करि किरपा अपुने प्रभि कीए ॥ हरि का
 नामु जपन कउ दीए ॥ आठ पहर गुन गाइ गुबिँद ॥ भै बिनसे उतरी सभ चिँद ॥ १ ॥ उबरे सतिगुरु चरनी लागि ॥ जो
 गुरु कहै सोई भल मीठा मन की मति तिआगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि वसिआ हरि प्रभु सोई ॥ कलि कलेस किछु
 बिघनु न होई ॥ सदा सदा प्रभु जीअ कै सँगि ॥ उतरी मैलु नाम कै रँगि ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागो पिआरु ॥
 बिनसे काम क्रोध अहँकार ॥ प्रभ मिलन का मारगु जानां ॥ भाइ भगति हरि सिउ मनु मानां ॥ ३ ॥ सुणि सजण सँत
 मीत सुहेले ॥ नामु रतनु हरि अगह अतोले ॥ सदा सदा प्रभु गुण निधि गाईऐ ॥ कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥ ४ ॥ ६
 ॥ प्रभाती महला ५ ॥ से धनवँत सेई सचु साहा ॥ हरि की दरगह नामु विसाहा ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मीत ॥
 गुरु पूरा पाईऐ वडभागी निरमल पूरन रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाइआ लाभु वजी वाधाई ॥ सँत प्रसादि हरि के गुन गाई
 ॥ २ ॥ सफल जनमु जीवन परवाणु ॥ गुरु परसादी हरि रँगु माणु ॥ ३ ॥ बिनसे काम क्रोध अहँकार ॥ नानक
 गुरुमुखि उतरहि पारि ॥ ४ ॥ ७ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुरु पूरा पूरी ता की कला ॥ गुरु का सबदु सदा सद अटला ॥

गुर की बाणी जिंसु मनि वसै ॥ दूखु दरदु सभु ता का नसै ॥ १ ॥ हरि रँगि राता मनु राम गुन गावै ॥ मुकतु साधू धूरी नावै
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी उतरे पारि ॥ भउ भरमु बिनसे बिकार ॥ मन तन अंतरि बसे गुर चरना ॥ निरभै साध परे हरि
 सरना ॥ २ ॥ अनद सहज रस सूख घनेरे ॥ दुसमनु दूखु न आवै नेरे ॥ गुरि पूरै अपुने करि राखे ॥ हरि नामु जपत
 किलबिख सभि लाथे ॥ ३ ॥ संत साजन सिख भए सुहेले ॥ गुरि पूरै प्रभ सिउ लै मेले ॥ जनम मरन दुख फाहा काटिआ
 ॥ कहु नानक गुरि पडदा ढाकिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सतिगुरि पूरै नामु दीआ ॥ अनद मंगल कलिआण
 सदा सुखु कारजु सगला रासि थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल गुर के मनि वूठे ॥ दूख दरद भ्रम बिनसे झूठे ॥ १ ॥
 नित उठि गावहु प्रभु की बाणी ॥ आठ पहर हरि सिमरहु प्राणी ॥ २ ॥ घरि बाहरि प्रभु सभनी थाई ॥ सँगि सहार्ई जह हउ
 जाई ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ सदा जपे नानकु गुणतासु ॥ ४ ॥ ९ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ पारब्रहमु प्रभु
 सुघड़ सुजाणु ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी दरसन कउ जाईऐ कुरबाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किलबिख मेटे सबदि संतोखु ॥ नामु
 अराधन होआ जोगु ॥ साधसँगि होआ परगासु ॥ चरन कमल मन माहि निवासु ॥ १ ॥ जिनि कीआ तिनि लीआ राखि
 ॥ प्रभु पूरा अनाथ का नाथु ॥ जिसहि निवाजे किरपा धारि ॥ पूरन करम ता के आचार ॥ २ ॥ गुण गावै नित नित नित
 नवे ॥ लख चउरासीह जोनि न भवे ॥ ईहां ऊहां चरण पूजारे ॥ मुखु ऊजलु साचे दरबारे ॥ ३ ॥ जिंसु मसतकि गुरि
 धरिआ हाथु ॥ कोटि मधे को विरला दासु ॥ जलि थलि महीअलि पेखै भरपूरि ॥ नानक उधरसि तिसु जन की धूरि ॥ ४ ॥
 १० ॥ प्रभाती महला ५ ॥ कुरबाणु जाई गुर पूरे अपने ॥ जिंसु प्रसादि हरि हरि जपु जपने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अँमित बाणी
 सुणत निहाल ॥ बिनसि गए बिखिआ जँजाल ॥ १ ॥ साच सबद सिउ लागी प्रीति ॥ हरि प्रभु अपुना आइआ चीति ॥ २
 ॥

नामु जपत होआ परगासु ॥ गुरु सबदे कीना रिदै निवासु ॥ ३ ॥ गुरु समरथ सदा दइआल ॥ हरि जपि जपि नानक
भए निहाल ॥ ४ ॥ ११ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ ॥ दीन दइआल भए किरपाला
अपणा नामु आपि जपाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सँतसँगति मिलि भइआ प्रगास ॥ हरि हरि जपत पूरन भई आस ॥ १
॥ सरब कलिआण सुख मनि वूढे ॥ हरि गुण गाए गुरु नानक तूढे ॥ २ ॥ १२ ॥

प्रभाती महला ५ वरु २ विभास १८ सतिगुरु प्रसादि ॥

अवरु न दूजा ठाउ ॥ नाही बिनु हरि नाउ ॥ सरब सिधि कलिआन ॥ पूरन होहि सगल काम ॥ १ ॥ हरि को नामु
जपीऐ नीत ॥ काम क्रोध अहँकारु बिनसै लगै एकै प्रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामि लागै दूखु भागै सरनि पालन जोगु ॥
सतिगुरु भेटै जमु न तेटै जिसु धुरि होवै सँजोगु ॥ २ ॥ रैनि दिनसु धिआइ हरि हरि तजहु मन के भरम ॥ साधसँगति
हरि मिलै जिसहि पूरन करम ॥ ३ ॥ जनम जनम बिखाद बिनसे राखि लीने आपि ॥ मात पिता मीत भाई जन नानक
हरि हरि जापि ॥ ४ ॥ १ ॥ १३ ॥

प्रभाती महला ५ विभास पड़ताल १८ सतिगुरु प्रसादि ॥

रम राम राम राम जाप ॥ कलि कलेस लोभ मोह बिनसि जाइ अहँ ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि सँत चरन लागि
मनु पवितु जाहि पाप ॥ १ ॥ नानकु बारिकु कछु न जानै राखन कउ प्रभु माई बाप ॥ २ ॥ १ ॥ १४ ॥ प्रभाती महला
५ ॥ चरन कमल सरनि टेक ॥ ऊच मूच बेअँतु ठाकुरु सरब ऊपरि तुही एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान अधार दुख बिदार
दैनहार बुधि बिबेक ॥ १ ॥ नमसकार रखनहार मनि अराधि प्रभु मेक ॥ सँत रेनु करउ मजनु नानक पावै सुख अनेक
॥ २ ॥ २ ॥ १५ ॥

प्रभाती असटपदीआ महला १ विभास १८ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा बउरी मनु बउराइआ ॥ झूठै लालचि जनमु गवाइआ ॥ लपटि रही फुनि बंधु न पाइआ ॥ सतिगुरिं राखे नामु
द्रिडाइआ ॥ १ ॥ ना मनु मरै न माइआ मरै ॥ जिनि किछु कीआ सोई जाणै सबदु वीचारि भउ सागरु तरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
माइआ सँचि राजे अहँकारी ॥ माइआ साथि न चलै पिआरी ॥ माइआ ममता है बहु रँगी ॥ बिनु नावै को साथि न सँगी ॥
२ ॥ जिउ मनु देखहि पर मनु तैसा ॥ जैसी मनसा तैसी दसा ॥ जैसा करमु तैसी लिव लावै ॥ सतिगुरु पूछि सहज घरु
पावै ॥ ३ ॥ रागि नादि मनु दूजै भाइ ॥ अंतरि कपटु महा दुखु पाइ ॥ सतिगुरु भेटै सोझी पाइ ॥ सचै नामि रहै लिव लाइ
॥ ४ ॥ सचै सबदि सचु कमावै ॥ सची बाणी हरि गुण गावै ॥ निज घरि वासु अमर पदु पावै ॥ ता दरि साचै सोभा पावै ॥
५ ॥ गुरु सेवा बिनु भगति न होई ॥ अनेक जतन करै जे कोई ॥ हउमै मेशा सबदे खोई ॥ निरमल नामु वसै मनि सोई ॥ ६
॥ इसु जग महि सबदु करणी है सारु ॥ बिनु सबदै होरु मोहु गुबारु ॥ सबदे नामु रखै उरि धारि ॥ सबदे गति मति मोख
दुआरु ॥ ७ ॥ अवरु नाही करि देखणहारो ॥ साचा आपि अनूपु अपारो ॥ राम नाम ऊतम गति होई ॥ नानक खोजि
लहै जनु कोई ॥ ८ ॥ १ ॥ प्रभाती महला १ ॥ माइआ मोहि सगल जगु छाइआ ॥ कामणि देखि कामि लोभाइआ ॥ सुत
कँचन सिउ हेतु वधाइआ ॥ सभु किछु अपना इकु रामु पराइआ ॥ १ ॥ ऐसा जापु जपउ जपमाली ॥ दुख सुख परहरि
भगति निराली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधान तेरा अँतु न पाइआ ॥ साच सबदि तुझ माहि समाइआ ॥ आवा गउणु तुधु
आपि रचाइआ ॥ सेई भगत जिन सचि चितु लाइआ ॥ २ ॥ गिआनु धिआनु नरहरि निरबाणी ॥ बिनु सतिगुर भेटे कोइ
न जाणी ॥ सगल सरोवर जोति समाणी ॥ आनद रूप विटहु कुरबाणी ॥ ३ ॥ भाउ भगति गुरमती पाए ॥ हउमे विचहु
सबदि जलाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ सचा नामु मँनि वसाए ॥ ४ ॥ बिसम बिनोद रहे परमादी ॥ गुरमति

मानिआ एक लिव लागी ॥ देखि निवारिआ जल महि आगी ॥ सो बूझै होवै वडभागी ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए
 ॥ अनदिनु जागै सचि लिव लाए ॥ एको जागै अवरु न कोइ ॥ सुखदाता सेवे निरमलु होइ ॥ ६ ॥ सेवा सुरति सबदि
 वीचारि ॥ जपु तपु संजमु हउमै मारि ॥ जीवन मुकतु जा सबदु सुणाए ॥ सची रहत सचा सुखु पाए ॥ ७ ॥ सुखदाता
 दुखु मेटणहारा ॥ अवरु न सूझसि बीजी कारा ॥ तनु मनु धनु हरि आगै राखिआ ॥ नानकु कहै महा रसु चाखिआ ॥ ८
 ॥ २ ॥ प्रभाती महला १ ॥ निवली कर्म भुअंगम भाठी रेचक पूरक कुंभ करै ॥ बिनु सतिगुर किछु सोझी नाही भरमे भूला
 बूडि मरै ॥ अंधा भरिआ भरि भरि धोवै अंतर की मलु कदे न लहै ॥ नाम बिना फोकट सभिं करमा जिउ बाजीगरु भरमि भुलै
 ॥ १ ॥ खटु कर्म नामु निरंजनु सोई ॥ तू गुण सागरु अवगुण मोही ॥ १ ॥ राहउ ॥ माइआ धंधा धावणी दुरमति कार
 बिकार ॥ मूरखु आपु गणाइदा बूझि न सकै कार ॥ मनसा माइआ मोहणी मनमुख बोल खुआर ॥ मजनु झूठा चंडाल का
 फोकट चार सींगार ॥ २ ॥ झूठी मन की मति है करणी बादि बिबादु ॥ झूठे विचि अहंकरणु है खसम न पावै सादु ॥ बिनु
 नावै होरु कमावणा फिका आवै सादु ॥ दुसटी सभा विगुचीए बिखु वाती जीवण बादि ॥ ३ ॥ ए भ्रमि भूले मरहु न कोई ॥
 सतिगुरु सेवि सदा सुखु होई ॥ बिनु सतिगुर मुकति किनै न पाई ॥ आवहि जांहि मरहि मरि जाई ॥ ४ ॥ एहु सरीरु है त्रै
 गुण धातु ॥ इस नो विआपै सोग संतापु ॥ सो सेवहु जिंसु माई न बापु ॥ विचहु चूकै तिसना अरु आपु ॥ ५ ॥ जह जह
 देखा तह तह सोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मिकति न होई ॥ हिरदै सचु एह करणी सारु ॥ होरु सभु पारखंडु पूज खुआरु ॥ ६
 ॥ दुबिधा चूकै तां सबदु पछाणु ॥ घरि बाहरि एको करि जाणु ॥ एहा मति सबदु है सारु ॥ विचि दुबिधा माथै पवै छारु ॥
 ७ ॥ करणी कीरति गुरमति सारु ॥ संत सभा गुण गिआनु बीचारु ॥ मनु मारे जीवत मरि जाणु ॥ नानक नदरी नदरि
 पछाणु ॥ ८ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला १ दरवणी ॥ गोतमु तपा अहिलिआ इसत्री तिसु देखि डँद्रु लुभाइआ ॥ सहस सरीर

चिह्न भग हूए ता मनि पछोताइआ ॥ १ ॥ कोई जाणि न भूलै भाई ॥ सो भूलै जिसु आपि भुलाए बूझै जिसै बुझाई ॥ १
 ॥ रहाउ ॥ तिनि हरी चँदि प्रिथमी पति राजै कागदि कीम न पाई ॥ अउगणु जाणै त पुँन करे किउ किउ नेखासि बिकाई ॥
 २ ॥ करउ अढाई धरती मांगी बावन रूपि बहानै ॥ किउ पइआलिं जाइ किउ छलीऐ जे बलिं रूपु पछानै ॥ ३ ॥ राजा
 जनमेजा दे मतीं, बरजि बिआसि पढाइआ ॥ तिन्हि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ ॥ ४ ॥ गणत न
 गणीं, हुकमु पछाणा बोली भाइ सुभाई ॥ जो किछु वरतै तुधै सलाहीं, सभ तेरी वडिआई ॥ ५ ॥ गुरमुखिं अलिंपतु लेपु
 कदे न लागै सदा रहै सरणाई ॥ मनमुखु मुगधु आगै चेतै नाही दुखिं लागै पछुताई ॥ ६ ॥ आपे करे कराए करता जिनि एह
 रचना रचीऐ ॥ हरि अभिमानु न जाई जीअहु अभिमाने पै पचीऐ ॥ ७ ॥ भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै
 ॥ नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादिं अघुलै ॥ ८ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला १ ॥ आखणा सुनणा नामु अधारु ॥
 धँधा छुटकि गइआ वेकारु ॥ जिउ मनमुखिं दूजै पति खोई ॥ बिनु नावै मै अवरु न कोई ॥ १ ॥ सुणिं मन अँधे मूरख
 गवार ॥ आवत जात लाज नही लागै बिनु गुर बूडै बारो बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु मन माइआ मोहि बिनासु ॥ धुरि हुकमु
 लिखिआ तां कहीऐ कासु ॥ गुरमुखिं विरला चीन्है कोई ॥ नाम बिहूना मुकति होई ॥ २ ॥ भ्रमि भ्रमि डोलै लख चउरासी
 ॥ बिनु गुर बूझै जम की फासी ॥ इहु मनूआ खिनु खिनु ऊभिं पइआलिं ॥ गुरमुखिं छुटै नामि सम्हालिं ॥ ३ ॥ आपे सदे
 ढिल न होइ ॥ सबदि मरै सहिला जीवै सोइ ॥ बिनु गुर सोझी किसै न होइ ॥ आपे करै करावै सोइ ॥ ४ ॥ झगडु चुकावै
 हरि गुण गावै ॥ पूरा सतिगुरु सहजिं समावै ॥ इहु मनु डोलत तउ ठहरावै ॥ सचु करणी करि कार कमावै ॥ ५ ॥ अँतरि
 जूठा किउ सुचि होइ ॥ सबदी धोवै विरला कोइ ॥ गुरमुखिं कोई सचु कमावै ॥ आवणु जाणा ठाकिं रहावै ॥ ६ ॥ भउ
 खाणा पीणा सुखु सारु ॥ हरि जन संगति पावै पारु ॥ सचु बोलै बोलावै पिआरु ॥ गुर का सबदु

करणी है सारु ॥ ७ ॥ हरि जसु करमु धरमु पति पूजा ॥ काम क्रोध अगनी महि भूँजा ॥ हरि रसु चाखिआ तउ मनु भीजा ॥
 प्रणवति नानकु अवरु न दूजा ॥ ८ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला १ ॥ राम नामु जपि अंतरि पूजा ॥ गुर सबदु वीचारि अवरु नही
 दूजा ॥ १ ॥ एको रवि रहिआ सभ ठाई ॥ अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु आगै जीअड़ा तुझ पासि
 ॥ जिउ भावै तिउ रखहु अरदासि ॥ २ ॥ सचु जिहवा हरि रसन रसाई ॥ गुरमति छूटसि प्रभ सरणाई ॥ ३ ॥ करम धरम
 प्रभि मेरै कीए ॥ नामु वडाई सिरि करमां कीए ॥ ४ ॥ सतिगुर कै वसि चारि पदारथ ॥ तीनि समाए एक कितारथ ॥ ५ ॥
 सतिगुरि दीए मुकति धिआनां ॥ हरि पदु चीन्हि भए परधाना ॥ ६ ॥ मनु तनु सीतलु गुरि बूझ बुझाई ॥ प्रभु निवाजे किनि
 कीमति पाई ॥ ७ ॥ कहु नानक गुरि बूझ बुझाई ॥ नाम बिना गति किनै न पाई ॥ ८ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला १ ॥ इकि धुरि
 बखसि लए गुरि पूरै सची बणत बणाई ॥ हरि रँग राते सदा रँगु साचा दुख बिसरे पति पाई ॥ १ ॥ झूठी दुर्मति की चतुराई
 ॥ बिनसत बार न लागै काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख कउ दुखु दरदु विआपसि मनमुखि दुखु न जाई ॥ सुख दुख दाता
 गुरमुखि जाता मेलि लए सरणाई ॥ २ ॥ मनुख ते अभ भगति न होवसि हउमै पचहि दिवाने ॥ इहु मनूआ खिनु ऊभि
 पइआली जब लागि सबद न जाने ॥ ३ ॥ भूख पिआसा जगु भइआ तिपति नही बिनु सतिगुर पाए ॥ सहजै सहजु मिलै सुखु
 पाईरे दरगह पैधा जाए ॥ ४ ॥ दरगह दाना बीना इकु आपे निरमल गुर की बाणी ॥ आपे सुरता सचु वीचारसि आपे बूझै पदु
 निरबाणी ॥ ५ ॥ जलु तरँग अगनी पवनै फुनि त्रै मिलि जगतु उपाइआ ॥ ऐसा बलु छलु तिन कउ दीआ हुकमी ठाकि
 रहाइआ ॥ ६ ॥ ऐसे जन विरले जग अंदरि परखि खजानै पाइआ ॥ जाति वरन ते भए अतीता ममता लोभु चुकाइआ ॥ ७
 ॥ नामि रते तीरथ से निरमल दुखु हउमै मैलु चुकाइआ ॥ नानकु तिन के चरन परवालै जिना गुरमुखि साचा भाइआ ॥ ८ ॥

७ ॥

प्रभाती महला ३ विभास १८ शितिगुर प्रसादि ॥

गुर परसादी वेखु तू हरि मंदरु तेरै नालि ॥ हरि मंदरु सबदे खोजीरे हरि नामो लेहु सम्हालि ॥ १ ॥ मन मेरे सबदि रपै रँगु होइ ॥ सची भगति सचा हरि मंदरु प्रगटी साची सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होइ ॥ २ ॥ हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ रखिआ हुकमि सवारि ॥ धुरि लेखु लिखिआ सु कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ ३ ॥ सबदु चीन्हि सुखु पाइआ सचै नाइ पिआर ॥ हरि मंदरु सबदे सोहणा कंचनु कोटु अपार ॥ ४ ॥ हरि मंदरु एहु जगतु है गुर बिनु घोरंधार ॥ दूजा भाउ करि पूजदे मनमुख अंध गवार ॥ ५ ॥ जिथै लेखा मंगीरे तिथै देह जाति न जाइ ॥ साचि रते से उबरे दुखीए दूजै भाइ ॥ ६ ॥ हरि मंदर महि नामु निधानु है ना बूझहि मुगध गवार ॥ गुर परसादी चीन्हिआ हरि रखिआ उरि धारि ॥ ७ ॥ गुर की बाणी गुर ते जाती जिं सबदि रते रँगु लाइ ॥ पवितु पावन से जन निरमल हरि कै नामि समाइ ॥ ८ ॥ हरि मंदरु हरि का हाटु है रखिआ सबदि सवारि ॥ तिसु विचि सउदा एकु नामु गुरमुखि लैनि सवारि ॥ ९ ॥ हरि मंदर महि मनु लोहटु है मोहिआ दूजै भाइ ॥ पारसि भेटिरे कंचनु भइआ कीमति कही न जाइ ॥ १० ॥ हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥ नानक गुरमुखि वणजीरे सचा सउदा होइ ॥ ११ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ भै भाइ जागे से जन जाग्रण करहि हउमै मैलु उतारि ॥ सदा जागहि घरु अपणा राखहि पंच तसकर काढहि मारि ॥ १ ॥ मन मेरे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ जित मारगि हरि पाईरे मन सेई करम कमाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सहज धुनि ऊपजै दुखु हउमै विचहु जाइ ॥ हरि नामा हरि मनि वसै सहजे हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ गुरमती मुख सोहणे हरि रखिआ उरि धारि ॥ ऐथै ओथै सुखु घणा जपि हरि हरि उतरे पारि ॥ ३ ॥ हउमै विचि जाग्रणु न होवई हरि भगति न पवई थाइ ॥ मनमुख

दरिं ढोई ना लहहि भाइ दूजै करम कमाइ ॥ ४ ॥ धिगुखाणा धिगुपैन्हणा जिन्हा दूजै भाइ पिआरु ॥ बिसटा के कीड़े
 बिसटा राते मरिं जँमहि होहि खुआरु ॥ ५ ॥ जिन कउ सतिगुरु भेटिआ तिना विटहु बलिं जाउ ॥ तिन की संगति
 मिलिं रहां सचे सचि समाउ ॥ ६ ॥ पूरै भागि गुरु पाईऐ उपाइ कितै न पाइआ जाइ ॥ सतिगुरु ते सहजु ऊपजै हउमै
 सबदि जलाइ ॥ ७ ॥ हरिं सरणाई भजु मन मेरे सभ किछु करणै जोगु ॥ नानक नामु न वीसरै जो किछु करै सुहोगु ॥
 ८ ॥ २ ॥ ७ ॥ २ ॥ ९ ॥

विभास प्रभाती महला ५ असटपदीआ १३ सतिगुरु प्रसादि ॥

मात पिता भाई सुतु बनिता ॥ चूगहिं चोग अनँद सिउ जुगता ॥ उरझिं परिओ मन मीठ मोहारा ॥ गुन गाहक मेरे
 प्रान अधारा ॥ १ ॥ एकु हमारा अंतरजामी ॥ धर एका मै टिक एकसु की सिरिं साहा वड पुरखु सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ
 ॥ छल नागनि सिउ मेरी टूटनि होई ॥ गुरिं कहिआ इह झूठी धोही ॥ मुखिं मीठी खाई कउराइ ॥ अँमित नामि मनु
 रहिआ अघाइ ॥ २ ॥ लोभ मोह सिउ गई विखोटि ॥ गुरिं क्रिपालिं मोहिं कानीं छोटि ॥ इह ठगवारी बहुतु घर गाले
 ॥ हम गुरिं राखिं लीए किरपाले ॥ ३ ॥ काम क्रोध सिउ ठाटु न बनिआ ॥ गुर उपदेसु मोहिं कानीं सुनिआ ॥ जह
 देखउ तह महा चँडाल ॥ राखिं लीए अपुनै गुरिं गोपाल ॥ ४ ॥ दस नारी मै करी दुहागनि ॥ गुरिं कहिआ एह रसहि
 बिखागनि ॥ इन सनबँधी रसातलिं जाइ ॥ हम गुरिं राखे हरिं लिव लाइ ॥ ५ ॥ अहँमेव सिउ मसलति छोडी ॥ गुरिं
 कहिआ इहु मूरखु होडी ॥ इहु नीघरु घरु कही न पाए ॥ हम गुरिं राखिं लीए लिव लाए ॥ ६ ॥ इन लोगन सिउ हम
 भए बैराई ॥ इक ग्रिह महिं दूइ न खटाई ॥ आए प्रभ पहिं अचरिं लागि ॥ करहु तपावसु प्रभ सरबागि ॥ ७ ॥ प्रभ
 हसिं बोले कीए निआंए ॥ सगल दूत मेरी सेवा लाए ॥ तूँ ठाकुरु इहु ग्रिहु सभु तेरा ॥ कहु नानक गुरिं कीआ नेबेरा ॥
 ८ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ मन महिं क्रोधु महा अहँकारा ॥ पूजा करहिं बहुतु बिसथारा ॥ करिं इसनानु तनि

चक्र बणाए ॥ अंतर की मलु कब ही न जाए ॥ १ ॥ इतु संजमि प्रभु किनही न पाइआ ॥ भगउती मुद्रा मनु मोहिआ
 माइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाप करहि पंचां के बसिरे ॥ तीरथि नाइ कहहि सभि उतरे ॥ बहुरि कमावहि होइ निसँक ॥
 जम पुरि बांधि खरे कालँक ॥ २ ॥ घूघर बाधि बजावहि ताला ॥ अंतरि कपटु फिरहि बेताला ॥ वरमी मारी सापु न
 मूआ ॥ प्रभु सभ किछु जानै जिनि तू कीआ ॥ ३ ॥ पूँअर ताप गेरी के बसत्रा ॥ अपदा का मारिआ ग्रिह ते नसता ॥
 देसु छोडि परदेसहि धाइआ ॥ पंच चंडाल नाले लै आइआ ॥ ४ ॥ कान फराइ हिराए टूका ॥ घरि घरि मांगै
 त्रिपतावन ते चूका ॥ बनिता छोडि बद नदरि पर नारी ॥ वेसि न पाईऐ महा दुखिआरी ॥ ५ ॥ बोलै नाही होइ बैठा
 मोनी ॥ अंतरि कल्प भवाईऐ जोनी ॥ अंत ते हरता दूखु देही सहता ॥ हुकमु न बूझै विआपिआ ममता ॥ ६ ॥ बिनु
 सतिगुर किनै न पाई परम गते ॥ पूछहु सगल बेद सिँमिते ॥ मनमुख करम करै अजाई ॥ जिउ बालू घर ठउर न ठाई
 ॥ ७ ॥ जिस नो भए गोबिंद दइआला ॥ गुर का बचनु तिनि बाधिओ पाला ॥ कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ ॥
 नानकु तिन कै सँगि तराइआ ॥ ८ ॥ जे होवै भागु ता दरसनु पाईऐ ॥ आपि तरै सभु कुटंबु तराईऐ ॥ १ ॥ रहाउ
 दूजा ॥ २ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभि काटे ॥ धरमराइ के कागर फाटे ॥ साधसंगति मिलि
 हरि रसु पाइआ ॥ पारब्रह्मुरिद माहि समाइआ ॥ १ ॥ राम रमत हरि हरि सुखु पाइआ ॥ तेरे दास चरन सरनाइआ
 ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चूका गउणु मिटिआ अंधिआरु ॥ गुरि दिखलाइआ मुकति दुआरु ॥ हरि प्रेम भगति मनु तनु सद
 राता ॥ प्रभू जनाइआ तब ही जाता ॥ २ ॥ घटि घटि अंतरि रविआ सोइ ॥ तिसु बिनु बीजो नाही कोइ ॥ बैर
 बिरोध छेदे भै भरमां ॥ प्रभि पुँनि आत्मै कीने धरमा ॥ ३ ॥ महा तरँग ते कोढै लागा ॥ जनम जनम का टूटा गांढा
 ॥ जपु तपु संजमु नामु सम्हालिआ ॥ अपुनै ठाकुरि नदरि निहालिआ ॥ ४ ॥ मँगल सूख कलिआण तिथाई ॥

जह सेवक गोपाल गुसाई ॥ प्रभ सुप्रसन्न भए गोपाल ॥ जनम जनम के मिटे बिताल ॥ ५ ॥ होम जग उरध तप पूजा
 ॥ कोटि तीरथ इसनानु करीजा ॥ चरन कमल निमख रिदै धारे ॥ गोबिंद जपत सभि कारज सारे ॥ ६ ॥ ऊचे ते
 ऊचा प्रभ थानु ॥ हरि जन लावहि सहजि धिआनु ॥ दास दासन की बांछउ धूरि ॥ सरब कला प्रीतम भरपूरि ॥ ७ ॥
 मात पिता हरि प्रीतमु नेरा ॥ मीत साजन भरवासा तेरा ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ जपि जीवै नानकु गुणतास ॥
 ८ ॥ ३ ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥

विभास प्रभाती बाणी भगत कबीर जी की ११ शितिगुर प्रसादि ॥

मरन जीवन की संका नासी ॥ आपन रंगि सहज परगासी ॥ १ ॥ प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥ राम रतनु
 पाइआ करत बीचारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह अनँदु दुखु दूरि पइआना ॥ मनु मानकु लिव ततु लुकाना ॥ २ ॥ जो किछु
 होआ सु तेरा भाणा ॥ जो इव बूझै सु सहजि समाणा ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु किलबिख गए खीणा ॥ मनु भइआ
 जगजीवन लीणा ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती ॥ अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किस केरा ॥ हिंदू मूरति नाम
 निवासी दुह महि ततु नहेरा ॥ १ ॥ अलह राम जीवउ तेरे नाई ॥ तू करि मिहरामति साई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दखन देसि
 हरी का बासा पछिमि अलह मुकामा ॥ दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा ॥ २ ॥ ब्राहमन गिआस
 करहि चउबीसा काजी मह रमजाना ॥ गिआरह मास पास कै राखै एकै माहि निधाना ॥ ३ ॥ कहा उडीसे मजनु कीआ
 किआ मसीति सिरु नाएं ॥ दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै जाएं ॥ ४ ॥ एते अउरत मरदा साजे ए सभ
 रूप तुम्हारे ॥ कबीरु पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥ ५ ॥ कहतु कबीरु सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना
 ॥ केवल नामु जपहु रे प्राणी तब ही निहचै तरना ॥ ६ ॥ २ ॥ प्रभाती ॥ अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ
 बँदे ॥ एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मँदे ॥ १ ॥ लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥ खालिकु खलक

खलक महि खालिकु पूरि रहिओ सब ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥ ना कछु
 पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै ॥ २ ॥ सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥ हुकमु पछानै सु
 एकै जानै बँदा कहीऐ सोई ॥ ३ ॥ अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुडु दीना मीठा ॥ कहि कबीर मेरी सँका नासी
 सरब निरँजनु डीठा ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती ॥ बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै ॥ जउ सभ महि एकु खुदाइ
 कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै ॥ १ ॥ मुलां कहहु निआउ खुदाई ॥ तेरे मन का भरमु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पकरि
 जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिलि कीआ ॥ जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलालु किआ कीआ ॥ २ ॥
 किआ ऊजू पाकु कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरु लाइआ ॥ जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबै
 जाइआ ॥ ३ ॥ तूँ नापाकु पाकु नहीं सूझिआ तिस का मरमु न जानिआ ॥ कहि कबीर भिसति ते चूका दोजक सिउ मनु
 मानिआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती ॥ सुँन सँधिआ तेरी देव देवाकर अधपति आदि समाई ॥ सिध समाधि अँतु नहीं पाइआ
 लागि रहे सरनाई ॥ १ ॥ लेहु आरती हो पुरखु निरँजन सतिगुर पूजहु भाई ॥ ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै अलखु न
 लखिआ जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥ जोति लाइ जगदीस जगाइआ बूझै
 बूझनहारा ॥ २ ॥ पँचे सबद अनाहद बाजे सँगे सारिँगपानी ॥ कबीर दास तेरी आरती कीनी निरँकार निरबानी ॥ ३
 ॥ ५ ॥

प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की १४ सतिगुर प्रसादि ॥

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ ॥ अंतरजामी रामु खाई मै डरु कैसे चहीऐ ॥ १ ॥ बेधीअले गोपाल
 गुसाई ॥ मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी ॥ मानै बासै नान भेदी भरमतु
 है सँसारी ॥ २ ॥ गुर कै सबदि एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी ॥ सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ मसतु

बीचारी ॥ ३ ॥ जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ता ची अबिगतु बाणी ॥ नाम कहै जगजीवनु पाइआ हिरदै अलख
 बिडाणी ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती ॥ आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगुता का अंतु न जानिआ ॥ सरब निरंतरि रामु रहिआ
 रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥ १ ॥ गोबिदु गाजै सबदु बाजै आनद रूपी मेरो रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बावन बीखू
 बानै बासु ते सुख लागिला ॥ सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला ॥ २ ॥ तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा सँगे कंचनु
 भैइला ॥ तू दइआलु रतनु लालु नामा साचि समाइला ॥ ३ ॥ २ ॥ प्रभाती ॥ अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ ॥
 घटि घटि अंतरि ब्रह्मु लुकाइआ ॥ १ ॥ जीअ की जोति न जानै कोई ॥ तै मै कीआ सु मालूमु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
 जिउ प्रगासिआ माटी कुँभेउ ॥ आप ही करता बीठुलु देउ ॥ २ ॥ जीअ का बंधनु करमु बिआपै ॥ जो किछु कीआ सु
 आपै आपै ॥ ३ ॥ प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै ॥ अमरु होइ सद आकुल रहै ॥ ४ ॥ ३ ॥

प्रभाती भगत बेणी जी की १८ सितिगुर प्रसादि ॥

तनि चंदनु मसतकि पाती ॥ रिद अंतरि कर तल काती ॥ ठग दिसटि बगा लिव लागा ॥ देखि बैसनो प्रान मुख भागा
 ॥ १ ॥ कलि भगवत बंद चिरामँ ॥ क्रूर दिसटि रता निसि बादँ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नितप्रति इसनानु सरीरँ ॥ दुइ धोती
 करम मुखे खीरँ ॥ रिदै छुरी संधिआनी ॥ पर दरबु हिरन की बानी ॥ २ ॥ सिल पूजसि चक्र गणेशँ ॥ निसि जागसि
 भगति प्रवेशँ ॥ पग नाचसि चितु अकरमँ ॥ ए लंपट नाच अधरमँ ॥ ३ ॥ मिग आसणु तुलसी माला ॥ कर ऊजल
 तिलकु कपाला ॥ रिदै कूडु कँठि रुद्राखँ ॥ रे लंपट क्रिसनु अभाखँ ॥ ४ ॥ जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥ सभ
 फोकट धरम अभीनिआ ॥ कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ ५ ॥ १ ॥

ॐ सतिनामु करता पुरुषु निरभउ निरवैरु

अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

शुगु जैजावँती महला ९ ॥

शुमु सिमरि शुमु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥ माइआ को सँगु तिआगु प्रभ जू की सरनि
लागु ॥ जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुपने जिउ धनु पछानु कोहे परि करत मानु ॥
बारु की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥ १ ॥ नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥ छिनु छिनु करि गइओ
कालु तैसे जातु आजु है ॥ २ ॥ १ ॥ जैजावँती महला ९ ॥ शुमु भजु शुमु भजु जनमु सिरातु है ॥ कहउ कहा बार बार
समझत नह किउ गवार ॥ बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु
लेहि ॥ अँति बार सँगि तेरै इहै एकु जातु है ॥ १ ॥ बिखिआ बिखु जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धारि ॥ नानक जन
कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥ २ ॥ २ ॥ जैजावँती महला ९ ॥ रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥ इह जग महि शुम नामु
सो तउ नही सुनिओ कानि ॥ बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानस को जनमु लीनु
सिमरनु नह निमख कीनु ॥ दारा सुख भइओ दीनु पगहु परी बेरी ॥ १ ॥ नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जग पसारु
॥ सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जा की चेरी ॥ २ ॥ ३ ॥ जैजावँती महला ९ ॥ बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजुरे ॥

निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नहरे अजान ॥ कालु तउ पहुचिओ आनि कहा जैहै भाजिरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असाथिरु जो
मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥ किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाजरे ॥ १ ॥ राम भगति हीए आनि छाडि देतै
मन को मानु ॥ नानक जन इह बखानि जग महि बिराजुरे ॥ २ ॥ ४ ॥

१४३ शतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

सलोक सहस्रकृती महला १ ॥

पढ़ि पुस्तक सँधिआ बादँ ॥ सिल पूजसि बगुल समाधँ ॥ मुखि झूठु बिभूखन सारँ ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारँ ॥ गलि माला
तिलक लिलाटँ ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटँ ॥ जो जानसि ब्रहमँ करमँ ॥ सभ फोकट निसचै करमँ ॥ कहु नानक निसचौ धियावै
॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ १ ॥ निहफलँ तस्य जनमस्य जावद ब्रहम न बिंदते ॥ सागरँ संसारस्य गुर परसादी तरहि के
॥ करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥ २ ॥ जोग सबदँ गिआन सबदँ
बेद सबदँ त ब्राहमणह ॥ ख्यत्री सबदँ सूर सबदँ सूद्र सबदँ परा कृतह ॥ सरब सबदँ त एक सबदँ जे को जानसि भेउ ॥ नानक
ता को दासु है सोई निरँजन देउ ॥ ३ ॥ इक क्रिस्नँ त सरब देवा देव देवात आतमह ॥ आतमँ श्री बास्वदेवस्य जे कोई जानसि
भेव ॥ नानक ता को दासु है सोई निरँजन देव ॥ ४ ॥

सलोक सहस्रकृती महला ७

१४३ शतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

कतँच माता कतँच पिता कतँच बनिता बिनोद सुतह ॥ कतँच

भ्रात मीत हित बंधव कतंच मोह कुटंब्यते ॥ कतंच चपल मोहनी रूपं पेखंते तिआगं कोरति ॥ रहंत संग भगवान
 सिमरण नानक लबध्यं अचुत तनह ॥ १ ॥ धिगंत मात पिता सनेहं धिग सनेहं भ्रात बांधवह ॥ धिग स्नेहं बनिता
 बिलास सुतह ॥ धिग स्नेहं ग्रिहारथ कह ॥ साधसंग स्नेह सत्यिं सुखयं बसंति नानकह ॥ २ ॥ मिथ्यंत देहं खीणंत
 बलनं ॥ बरधंति जरूआ हित्यंत माइआ ॥ अत्यंत आसा आथित्य भवनं ॥ गनंत स्वासा भैयान धरमं ॥ पतंति मोह
 कूप दुरलभ्य देहं तत आस्रयं नानक ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद गोपाल क्रिपा ॥ ३ ॥ काच कोटं रचंति तोयं लेपनं रक्त
 चरमणह ॥ नवंत दुआरं भीत रहितं बाइ रूपं असथंभनह ॥ गोबिंद नामं नह सिमरंति अगिआनी जानंति असथिरं ॥
 दुरलभ देह उधरंत साध सरण नानक ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरे जपंति ॥ ४ ॥ सुभंत तुयं अचुत गुणग्यं पूरनं बहुलो
 क्रिपाला ॥ गंभीरं ऊचै सरबगि अपारा ॥ भ्रितिआ प्रिअं बिस्त्राम चरणं ॥ अनाथ नाथे नानक सरणं ॥ ५ ॥ मिगी
 पेखंत बधिक प्रहारेण लख्य आवधह ॥ अहो जस्य रखेण गोपालह नानक रोम न छेद्यते ॥ ६ ॥ बहु जतन करता बलवंत
 कारी सेवंत सूरु चतुर दिसह ॥ बिखम थान बसंत ऊचह नह सिमरंत मरणं कदांचह ॥ होवंति आगिआ भगवान पुरखह
 नानक कीटी सास अकरखते ॥ ७ ॥ सबदं रतं हितं मइआ कीरतं कली करम क्रितुआ ॥ मिटंति तत्रागत भरम मोहं ॥
 भगवान रमणं सरबत्र थान्यिं ॥ द्रिसट तेयं अमोघ दरसनं बसंत साध रसना ॥ हरि हरि हरि हरे नानक प्रिअं जापु जपना
 ॥ ८ ॥ घटंत रूपं घटंत दीपं घटंत रवि ससीअर नख्यत्र गगनं ॥ घटंत बसुधा गिरि तर सिखंडं ॥ घटंत ललना सुत
 भ्रात हीतं ॥ घटंत कनिक मानिक माइआ स्वरूपं ॥ नह घटंत केवल गोपाल अचुत ॥ असथिरं नानक साध जन ॥ ९
 ॥ नह बिलंब धरमं बिलंब पापं ॥ द्रिडंत नामं तजंत लोभं ॥ सरणि संतं किलबिख नासं प्रापतं धरम लखियण ॥ नानक
 जिह सुप्रसन्न माधवह ॥ १० ॥ मिरत मोहं अल्प बुध्यं रचंति बनिता बिनोद साहं ॥ जौबन बहिक्रम कनिक कुंडलह ॥

बचित्र मंदिर सोभंति बसत्रा इत्यंत माइआ व्यापितं ॥ हे अचुत सरणि संत नानक भो भगवानए नमह ॥ ११ ॥ जनमं त
 मरणं हरखं त सोगं भोगं त रोगं ॥ ऊचं त नीचं नान्हा सुमूचं ॥ राजं त मानं अभिमानं त हीनं ॥ प्रविरति मारगं वरतंति
 बिनासनं ॥ गोबिंद भजन साध संगेण असथिरं नानक भगवंत भजनासनं ॥ १२ ॥ किरपंत हरिअं मति ततु गिआनं ॥
 बिगसीधिये बुधा कुसल थानं ॥ बस्थितं रिखिअं तिआग मानं ॥ सीतलंत रिदियं द्रिडु संत गिआनं ॥ रहंत जनमं हरि दरस
 लीणा ॥ बाजंत नानक सबद बीणां ॥ १३ ॥ कहंत बेदा गुणंत गुनीआ सुणंत बाला बहु बिधि प्रकार ॥ द्रिडंत
 सुबिदिआ हरि हरि क्रिपाला ॥ नाम दानु जाचंत नानक देनहार गुर गोपाला ॥ १४ ॥ नह चिंता मात पित भातह नह
 चिंता कछु लोक कह ॥ नह चिंता बनिता सुत मीतह प्रविरति माइआ सनबंधनह ॥ दइआल एक भगवान पुरखह नानक
 सरब जीअ प्रतिपालकह ॥ १५ ॥ अनित्य वितं अनित्य चितं अनित्य आसा बहु बिधि प्रकारं ॥ अनित्य हेतं अहं बंधं भरम
 माइआ मलनं बिकारं ॥ फिरंत जोनि अनेक जठरागनि नह सिमरंत मलीण बुध्यं ॥ हे गोबिंद करत मइआ नानक पतित
 उधारण साध संगमह ॥ १६ ॥ गिरंत गिरि पतित पातालं जलंत देदीप्य बैस्वांतरह ॥ बहंति अगाह तोयं तरंगं दुखंत ग्रह
 चिंता जनमंत मरणह ॥ अनिक साधनं न सिध्यते नानक असथंभं असथंभं असथंभं सबद साध स्वजनह ॥ १७ ॥ घोर
 दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥ मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥
 १८ ॥ अंधकार सिमरत प्रकारं गुण रमंत अघ खंडनह ॥ रिद सबंति भै भीत दूतह करम करत महा निरमलह ॥ जनम
 मरण रहंत श्रोता सुख समूह अमोघ दरसनह ॥ सरणि जोगं संत प्रिअ नानक सो भगवान खेमं करोति ॥ १९ ॥ पाछं
 करोति अग्रणीवह निरासं आस पूरनह ॥ निरधन भयं धनवंतह रोगीअं रोग खंडनह ॥ भगत्यं भगति दानं राम नाम गुण
 कीरतनह ॥ पारब्रहम पुरख दातारह नानक गुर सेवा किं न लभ्यते ॥ २० ॥ अधरं धरं धारणह निरधनं धन

नाम नरहरह ॥ अनाथ नाथ गोबिंदह बलहीण बल केसवह ॥ सरब भूत दयाल अचुत दीन बांधव दामोदरह ॥ सरबग्य पूरन
पुख भगवानह भगति वल्ल करुणा मयह ॥ घटि घटि बसंत बासुदेवह पारब्रहम परमेसुरह ॥ जाचँति नानक क्रिपाल प्रसादँ
नह बिसरँति नह बिसरँति नाराइणह ॥ २१ ॥ नह समरथँ नह सेवकँ नह प्रीति परम पुखोतमँ ॥ तव प्रसादि सिमरते नामँ
नानक क्रिपाल हरि हरि गुरँ ॥ २२ ॥ भरण पोखण करतँ जीआ बिस्वाम छादन देवँत दानँ ॥ खिजँत रतन जनम चतुर
चेतनह ॥ वरतँति सुख आनँद प्रसादह ॥ सिमरँत नानक हरि हरि हरे ॥ अनित्य रचना निरमोह ते ॥ २३ ॥ दानँ परा
पूरबेण भुँचँते महीपते ॥ बिपरीत बुध्यँ मारत लोकह नानक चिरँकाल दुख भोगते ॥ २४ ॥ त्रिथा अनुग्रहु गोबिंदहु जस्य
सिमरण रिदँतरह ॥ आरोग्यँ महा रोग्यँ बिसिम्रिते करुणा मयह ॥ २५ ॥ रमणँ केवलँ कीरतनँ सुधरमँ देह धारणह ॥ अम्रित
नामु नाराइण नानक पीवतँ संत न त्रिप्यते ॥ २६ ॥ सहण सील संतँ सम म्रितस्य दुरजनह ॥ नानक भोजन अनिक प्रकारेण
निंदक आवध होइ उपतिस्टते ॥ २७ ॥ तिरसकार नह भवँति नह भवँति मान भँगनह ॥ सोभा हीन नह भवँति नह पोहँति
सँसार दुखनह ॥ गोबिंद नाम जपँति मिलि साध संगह नानक से प्राणी सुख बासनह ॥ २८ ॥ सैना साध समूह सूर अजितँ
सँनाहँ तनि निँम्रताह ॥ आवधह गुण गोबिंद रमणँ ओट गुर सबद कर चरमणह ॥ आरूढते अस्व रथ नागह बुझँते प्रभ
मारगह ॥ बिचरते निरभयँ सत्रु सैना धायँते गोपाल कीरतनह ॥ जितते बिस्व सँसारह नानक वस्यँ करोति पँच तसजरह ॥
२९ ॥ म्रिग त्रिसना गँधरब नगरँ द्रुम छाया रचि दुरमतिह ॥ ततह कुटँब मोह मिथ्या सिमरँति नानक राम राम नामह ॥ ३०
॥ नच राग रतन कँठँ नह चँचल चतुर चातुरह ॥ भाग उदिम लबध्यँ माइआ नानक साधसँगि खल पँडितह ॥ ३१ ॥ कँठ
रमणीय राम राम माला हसत ऊच प्रेम धारणी ॥ जीह भणि जो उतम सलोक उधरणँ नैन नँदनी ॥ ३२ ॥ गुर मँत्र हीणस्य

जो प्राणी धिगँत जनम भ्रसटणह ॥ कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥ ३३ ॥ चरणारबिंद भजनँ
रिदयँ नाम धारणह ॥ कीरतणँ साधसँगेण नानक नह द्रिसटँति जमदूतनह ॥ ३४ ॥ नच दुरलभँ धँन रूपँ नच दुरलभँ
स्वरग राजनह ॥ नच दुरलभँ भोजनँ बिँजनँ नच दुरलभँ स्वछ अँबरह ॥ नच दुरलभँ सुत मित्र भ्रात बांधव नच दुरलभँ
बनिता बिलासह ॥ नच दुरलभँ बिदिआ प्रबीणँ नच दुरलभँ चतुर चँचलह ॥ दुरलभँ एक भगवान नामह नानक लबधियँ
साधसँगि क्रिपा प्रभँ ॥ ३५ ॥ जत कतह ततह द्रिसटँ स्वरग मरत पयाल लोकह ॥ सरबत्र रमणँ गोबिंदह नानक लेप छेप
न लिप्यते ॥ ३६ ॥ बिखया भयँति अँम्रितँ द्रुसटां सखा स्वजनह ॥ दुखँ भयँति सुख्यँ भै भीतँ त निरभयह ॥ थान बिहून
बिश्चाम नामँ नानक क्रिपाल हरि हरि गुरह ॥ ३७ ॥ सरब सील ममँ सीलँ सरब पावन मम पावनह ॥ सरब करतब ममँ
करता नानक लेप छेप न लिप्यते ॥ ३८ ॥ नह सीतलँ चँद्र देवह नह सीतलँ बावन चँदनह ॥ नह सीतलँ सीत रुतेण
नानक सीतलँ साध स्वजनह ॥ ३९ ॥ मँत्रँ राम राम नामँ ध्यानँ सरबत्र पूरनह ॥ ग्यानँ सम दुख सुखँ जुगति निरमल
निरवैरणह ॥ दयालँ सरबत्र जीआ पँच दोख बिवरजितह ॥ भोजनँ गोपाल कीरतनँ अल्प माया जल कमल रहतह ॥
उपदेसँ सम मित्र सत्रह भगवँत भगति भावनी ॥ पर निँदा नह श्रोति श्रवणँ आपु त्यागि सगल रेणुकह ॥ खट लख्यण
पूरनँ पुरखह नानक नाम साध स्वजनह ॥ ४० ॥ अजा भोगँत कँद मूलँ बसँते समीपि केहरह ॥ तत्र गते सँसारह नानक
सोग हरखँ बिआपते ॥ ४१ ॥ छलँ छिद्रँ कोटि बिघनँ अपराधँ किलबिख मलँ ॥ भरम मोहँ मान अपमानँ मदँ माया
बिआपितँ ॥ म्रित्यु जनम भ्रमँति नरकह अनिक उपावँ न सिध्यते ॥ निरमलँ साध सँगह जपँति नानक गोपाल नामँ ॥
रमँति गुण गोबिंद नित प्रतह ॥ ४२ ॥ तरण सरण सुआमी रमण सील परमेसुरह ॥ करण कारण समरथह दानु देत प्रभु
पूरनह ॥ निरास आस करणँ सगल अरथ आलयह ॥ गुण निधान सिमरँति नानक सगल जाचँत जाचिकह ॥ ४३ ॥

दुर्गम स्थान सुगमं महा दूख सर्व सुखणह ॥ दुर्बचन भेद भरमं साकत पिसनं त सुरजनह ॥ असथितं सोग हरखं भै
 खीणं त निरभवह ॥ भै अटवीअं महा नगर बासं धरम लख्यण प्रभ मइआ ॥ साध संगम राम राम रमणं सरणि नानक हरि
 हरि दयाल चरणं ॥ ४४ ॥ हे अजित सूर संग्रामं अति बलना बहु मरदनह ॥ गण गंधरब देव मानुख्यं पसु पंखी बिमोहनह
 ॥ हरि करणहारं नमसकारं सरणि नानक जगदीस्वरह ॥ ४५ ॥ हे कामं नरक बिश्रामं बहु जोनी भ्रमावणह ॥ चित हरणं
 त्रै लोक गंम्यं जप तप सील बिदारणह ॥ अल्प सुख अवित चंचल ऊच नीच समावणह ॥ तब भै बिमुंचित साध संगम
 ओट नानक नाराइणह ॥ ४६ ॥ हे कलि मूल क्रोधं कदंच कुणा न उपरजते ॥ बिखयंत जीवं वस्यं करोति निरत्यं करोति
 जथा मरकटह ॥ अनिक सासन ताड़ंति जमदूतह तव संगे अधमं नरह ॥ दीन दुख भंजन दयाल प्रभु नानक सर्व जीअ
 रख्या करोति ॥ ४७ ॥ हे लोभा लंपट संग सिरमोरह अनिक लहरी कलोलते ॥ धावंत जीआ बहु प्रकारं अनिक भांति बहु
 डोलते ॥ नच मित्रं नच इसटं नच बाधव नच मात पिता तव लजया ॥ अकरणं करोति अखाद्यि खाद्यं असाज्यं साजिं
 समजया ॥ त्राहि त्राहि सरणि सुआमी बिग्यामि नानक हरि नरहरह ॥ ४८ ॥ हे जनम मरण मूलं अहंकारं पापातमा ॥
 मित्रं तजंति सत्रं द्रिडंति अनिक माया बिस्तीरनह ॥ जावंत जावंत थकंत जीआ दुख सुख बहु भोगणह ॥ भरम भयान
 उदिआन रमणं महा बिकट असाध रोगणह ॥ बैद्यं पारब्रहम परमेस्वर आराधि नानक हरि हरि हरे ॥ ४९ ॥ हे प्राण नाथ
 गोबिंदह क्रिपा निधान जगद गुरो ॥ हे संसार ताप हरणह करुणामै सभ दुख हरो ॥ हे सरणि जोग दयालह दीना नाथ
 मया करो ॥ सरीर स्वसथ खीण समए सिमरंति नानक राम दामोदर माधवह ॥ ५० ॥ चरण कमल सरणं रमणं गोपाल
 कीरतनह ॥ साध संगेण तरणं नानक महा सागर भै दुतरह ॥ ५१ ॥ सिर मस्तक रख्या पारब्रहमं हस्त काया रख्या
 परमेस्वरह ॥ आतम रख्या गोपाल सुआमी धन चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ सर्व रख्या गुर दयालह भै दूख

बिनासनह ॥ भगति वछल अनाथ नाथे सरणि नानक पुरख अचुतह ॥ ५२ ॥ जेन कला धारओ आकासँ बैसँतरँ कासट
 बेसटँ ॥ जेन कला ससि सूर नख्यत्र जोतियँ सासँ सरीर धारणँ ॥ जेन कला मात गरभ प्रतिपालँ नह छेदँत जठर रोगणह
 ॥ तेन कला असथँभँ सरोवरँ नानक नह छिजँति तरँग तोयणह ॥ ५३ ॥ गुसाईं गरिस्ट रूपेण सिमरणँ सरबत्र जीवणह
 ॥ लबध्यँ सँत संगेण नानक स्वछ मारग हरि भगतणह ॥ ५४ ॥ मसँक भगनँत सैलँ करदमँ तरँत पपीलकह ॥ सागरँ
 लँघँति पिँगँ तम परगास अँधकह ॥ साध संगेणि सिमरँति गोबिँद सरणि नानक हरि हरि हरे ॥ ५५ ॥ तिलक हीणँ जथा
 बिप्रा अमर हीणँ जथा राजनह ॥ आवध हीणँ जथा सूरु नानक धरम हीणँ तथा बैस्नवह ॥ ५६ ॥ न सँखँ न चक्रँ न गदा
 न सिआमँ ॥ अस्चरज रूपँ रहँत जनमँ ॥ नेत नेत कथँति बेदा ॥ ऊच मूच अपार गोबिँदह ॥ बसँति साध रिदयँ अचुत
 बुझँति नानक बडभागीअह ॥ ५७ ॥ उदिआन बसनँ सँसारँ सनबँधी स्वान सिआल खरह ॥ बिखम सथान मन मोह
 मदिँरँ महां असाध पँच तसकरह ॥ हीत मोह भै भरम भ्रमणँ अहँ फांस तीख्यण कठिनह ॥ पावक तोअ असाध घोरँ अगम
 तीर नह लँघनह ॥ भजु साधसँगि गोपाल नानक हरि चरण सरण उधरण क्रिपा ॥ ५८ ॥ क्रिपा करँत गोबिँद गोपालह
 सगल्यँ रोग खँडणह ॥ साध संगेणि गुण रमत नानक सरणि पुरन परमेसुरह ॥ ५९ ॥ सिआमलँ मधुर मानुख्यँ रिदयँ
 भूमि वैरणह ॥ निवँति होवँति मिथिआ चेतनँ सँत स्वजनह ॥ ६० ॥ अचेत मूडा न जाणँत घटँत सासा नित प्रते ॥
 छिजँत महा सँदरी काँडआ काल कँनिआ ग्रासते ॥ रचँति पुरखह कुटँब लीला अनित आसा बिखिआ बिनोद ॥ भ्रमँति
 भ्रमँति बहु जनम हारिओ सरणि नानक करुणा मयह ॥ ६१ ॥ हे जिहबे रे रसगे मधुर प्रिअ तुयँ ॥ सत हतँ परम बादँ
 अवरत एथह सुध अछरणह ॥ गोबिँद दामोदर माधवे ॥ ६२ ॥ गरबँति नारी मदोन मतँ ॥ बलवँत बलातकारणह ॥
 चरण कमल नह भजँत त्रिण समानि धिगु जनमनह ॥ हे पपीलका ग्रसटे गोबिँद सिमरण तुयँ धने ॥ नानक

अनिक बार नमो नमह ॥ ६३ ॥ त्रिणंत मेरँ सहकंत हरीअँ ॥ बूडंत तरिअँ ऊणंत भरीअँ ॥ अंधकार कोटि सूर उजारँ ॥
 बिनवँति नानक हरि गुर दयारँ ॥ ६४ ॥ ब्रहमणह सँगि उधरणँ ब्रहम करम जि पूरणह ॥ आतम रतँ संसार गहँते नर नानक
 निहफलह ॥ ६५ ॥ पर दरब हिरणँ बहु विघन करणँ उचरणँ सरब जीअ कह ॥ लउ लई त्रिसना अतिपति मन माए करम करत
 सि सूकरह ॥ ६६ ॥ मते समेव चरणँ उधरणँ भै दुतरह ॥ अनेक पातिक हरणँ नानक साध संगम न संसयह ॥ ६७ ॥ ४ ॥

महला ७ गाथा १८ शितिगुर प्रसादि ॥

करपूर पुहप सुगंधा परस मानुख्य देहँ मलीणँ ॥ मजा रुधिर द्रुगंधा नानक अथि गरबेण अग्यानणो ॥ १ ॥ परमाणो परजंत
 आकासह दीप लोअ सिखँडणह ॥ गछेन नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते ॥ २ ॥ जाणो सति होवँतो मरणो द्रिसटेण
 मिथिआ ॥ कीरति साथि चलँथो भणँति नानक साध संगेण ॥ ३ ॥ माया चित भरमेण इसट मित्रेखु बांधवह ॥ लबध्यँ साध
 संगेण नानक सुख असथानँ गोपाल भजणँ ॥ ४ ॥ मैलागर संगेण निँमु बिरख सि चंदनह ॥ निकटि बसँतो बांसो नानक
 अहँ बुधि न बोहते ॥ ५ ॥ गाथा गुँफ गोपाल कथँ मथँ मान मरदनह ॥ हँत पंच सत्रेण नानक हरि बाणे प्रहारणह ॥ ६ ॥
 बचन साध सुख पँथा लहँथा बड करमणह ॥ रहँता जनम मरणेन रमणँ नानक हरि कीरतनह ॥ ७ ॥ पत्र भुरिजेण झड़ीयँ नह
 जड़ीअँ पेड सँपता ॥ नाम बिहूण बिरखमता नानक बहँति जोनि बासरो रैणी ॥ ८ ॥ भावनी साध संगेण लभँतँ बड भागणह
 ॥ हरि नाम गुण रमणँ नानक संसार सागर नह बिआपणह ॥ ९ ॥ गाथा गूड अपारँ समझणँ बिरला जनह ॥ संसार काम
 तजणँ नानक गोबिंद रमणँ साध संगमह ॥ १० ॥ सुमंत्र साध बचना कोटि दोख बिनासनह ॥ हरि चरण कमल ध्यानँ नानक
 कुल समूह उधारणह ॥ ११ ॥ सुंदर मंदर सैणह जेण मध्य हरि कीरतनह ॥ मुकते रमण गोबिंदह नानक लबध्यँ बड भागणह
 ॥ १२ ॥ हरि

लबधो मित्र सुमितो ॥ बिदारण कदे न चितो ॥ जा का असथलु तोलु अमितो ॥ सोई नानक सखा जीअ सँगि कितो ॥ १३ ॥
 अपजसँ मिटँत सत पुत्रह ॥ सिमरतव्य रिदै गुर मँत्रणह ॥ प्रीतम भगवान अचुत ॥ नानक सँसार सागर तारणह ॥ १४ ॥
 मरणँ बिसरणँ गोबिँदह ॥ जीवणँ हरि नाम ध्यावणह ॥ लभणँ साध सँगेण ॥ नानक हरि पूरबि लिखणह ॥ १५ ॥ दसन
 बिहून भुयँगँ मँत्रं गारुडी निवारँ ॥ ब्याधि उपाड़ण सँतँ ॥ नानक लबध करमणह ॥ १६ ॥ जथ कथ रमणँ सरणँ सरबत्र
 जीअणह ॥ तथ लगणँ प्रेम नानक ॥ परसादँ गुर दरसनह ॥ १७ ॥ चरणारबिँद मन बिध्यँ ॥ सिध्यँ सरब कुसलणह ॥ गाथा
 गावँति नानक भब्यँ परा पूरबणह ॥ १८ ॥ सुभ बचन रमणँ गवणँ साध सँगेण उधरणह ॥ सँसार सागरँ नानक पुनरपि जनम
 न लभ्यते ॥ १९ ॥ बेद पुराण सासत्र बीचारँ ॥ एकँकार नाम उर धारँ ॥ कुलह समूह सगल उधारँ ॥ बडबागी नानक को तारँ
 ॥ २० ॥ सिमरणँ गोबिँद नामँ उधरणँ कुल समूहणह ॥ लबधिअँ साध सँगेण नानक वडभागी भेटँति दरसनह ॥ २१ ॥ सरब
 दोख परँतिआगी सरब धरम द्विडँतणः ॥ लबधेणि साध सँगेणि नानक मसतकि लिख्यणः ॥ २२ ॥ होये है होवँतो हरण भरण
 सँपूरणः ॥ साधू सतम जाणो नानक प्रीति कारणँ ॥ २३ ॥ सुखेण बैण रतनँ रचणँ कसुँभ रँगणः ॥ रोग सोग बिओगँ नानक
 सुखु न सुपनह ॥ २४ ॥

फुनहे महला ९ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

हाथि कलँम अगँम मसतकि लेखावती ॥ उरझि रहिओ सभ सँगि अनूप रूपावती ॥ उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥
 मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥ १ ॥ सँत सभा महि बैसि कि कीरति मै कहां ॥ अरपी सबु सीगारु एहु जीउ सभु दिवा ॥
 आस पिआसी सेज सु कँति विछाईये ॥ हरिहां मसतकि होवे भागु त साजनु पाईये ॥ २ ॥ सखी काजलु हार तँबोल सभै किछु
 साजिआ ॥ सोलह कीए सीगार कि अँजनु पाजिआ ॥ जे घरि आवै कँतु त सभु किछु पाईये ॥ हरिहां

कँतै बाझ सीगारु सभु बिरथा जाईये ॥ ३ ॥ जिंसु घरि वसिआ कँतु सा वडभागणे ॥ तिसु बणिआ हभु सीगारु साई
 सोहागणे ॥ हउ सुती होइ अचिंत मनि आस पुराईआ ॥ हरिहां जा घरि आइआ कँतु त सबु किछु पाईआ ॥ ४ ॥ आसा
 इती आस कि आस पुराईये ॥ सतिगुर भए दइआल त पूरा पाईये ॥ मै तनि अवगण बहुतु कि अवगण छाइआ ॥ हरिहां
 सतिगुर भए दइआल त मनु ठहराइआ ॥ ५ ॥ कहु नानक बेअँतु बेअँतु धिआइआ ॥ दुतरु इहु संसारु सतिगुरु
 तराइआ ॥ मिटिआ आवा गउणु जां पूरा पाइआ ॥ हरिहां अँम्रितु हरि का नामु सतिगुर ते पाइआ ॥ ६ ॥ मेरै हाथि
 पदमु आगनि सुख बासना ॥ सखी मोरै कँठि रतँनु पेखि दुखु नासना ॥ बासउ सँगि गुपाल सगल सुख रासि हरि ॥
 हरिहां रिधि सिधि नव निधि बसहि जिंसु सदा करि ॥ ७ ॥ पर त्रिअ रावणि जाहि सेई ता लाजीअहि ॥ नितप्रति हिरहि
 पर दरबु छिद्र कत ढाकीअहि ॥ हरि गुण रमत पवित्र सगल कुल तारई ॥ हरिहां सुनते भए पुनीत पारब्रहम बीचारई ॥ ८
 ॥ ऊपरि बनै अकासु तलै धर सोहती ॥ दह दिस चमकै बीजुलि मुख कउ जोहती ॥ खोजत फिरउ बिदेसि पीउ कत
 पाईये ॥ हरिहां जे मसतकि होवै भागु त दरसि समाईये ॥ ९ ॥ डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥ बधोहु पुरखि बिधातै
 तां तू सोहिआ ॥ वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥ हरिहां नानक कसमल जाहि नाइये रामदास सर ॥ १० ॥
 चात्रिक चित सुचित सु साजनु चाहीये ॥ जिंसु सँगि लागे प्राण तिसै कउ आहीये ॥ बनु बनु फिरत उदास बूँद जल कारणे
 ॥ हरिहां तितु हरि जनु मांगै नामु नानक बलिहारणै ॥ ११ ॥ मित का चितु अनूपु मरँमु न जानीये ॥ गाहक गुनी अपार
 सु ततु पछानीये ॥ चितहि चितु समाइ त होवै रँगु घना ॥ हरिहां चँचल चोरहि मारि त पावहि सचु धना ॥ १२ ॥ सुपनै
 ऊभी भई गहिओ की न अँचला ॥ सुँदर पुरख बिराजित पेखि मनु बँचला ॥ खोजउ ता के चरण कहहु कत पाईये ॥
 हरिहां सोथ जतँनु बताइ सखी प्रिउ पाईये ॥ १३ ॥ नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ ॥ करन न सुनही

नादु करन मुँदि घालिआ ॥ रसना जपै न नामु तिलु तलु करि कटीरे ॥ हरिहां जब बिसरै गोबिंद राइ दिनो दिनु घटीरे ॥ १४ ॥
पँकज फाथे पँक महा मद गुँफिआ ॥ अँग सँग उरझाइ बिसरते सुँफिआ ॥ है कोऊ ऐसा मीतु जि तौरै बिखम गांठि ॥ नानक इकु
श्रीधर नाथु जि टूटे लेइ सांठि ॥ १५ ॥ धावउ दसा अनेक प्रेम प्रण कारणे ॥ पँच सतावहि दूत कवन बिधि मारणे ॥ तीखण
बाण चलाइ नामु प्रभ ध्याईरे ॥ हरिहां महां बिखादी घात पूरन गुरु पाईरे ॥ १६ ॥ सतिगुर कीनी दाति मूलि न निखुटई ॥
खावहु भुँचहु सभि गुरुमुखि छुटई ॥ अँमितु नामु निधानु दिता तुसि हरि ॥ नानक सदा अराधि कदे न जाहि मरि ॥ १७ ॥
जिथै जाए भगतु सु थानु सुहावणा ॥ सगले होए सुख हरि नामु धिआवणा ॥ जीअ करनि जैकारु निँदक मुए पचि ॥ साजन
मनि आनँदु नानक नामु जपि ॥ १८ ॥ पावन पतित पुनीत कतह नही सेवीरे ॥ झूठै रँगि खुआरु कहां लगु खेवीरे ॥
हरिचँदउरी पेखि काहे सुखु मानिआ ॥ हरिहां हउ बलिहारी तिँन जि दरगहि जानिआ ॥ १९ ॥ कीने करम अनेक गवार बिकार
घन ॥ महा द्रुगँधत वासु सठ का छारु तन ॥ फिरतउ गरब गुबारि मरणु नह जानई ॥ हरिहां हरिचँदउरी पेखि काहे सचु मानई
॥ २० ॥ जिस की पूजै अउध तिसै कउणु राखई ॥ बैदक अनिक उपाव कहां लउ भाखई ॥ एको चेति गवार काजि तेरै आवई
॥ हरिहां बिनु नावै तनु छारु ब्रिथा सभु जावई ॥ २१ ॥ अउखधु नामु अपारु अमोलकु पीजई ॥ मिलि मिलि खावहि संत
सगल कउ दीजई ॥ जिसै परापति होइ तिसै ही पावणे ॥ हरिहां हउ बलिहारी तिँनह जि हरि रँगु रावणे ॥ २२ ॥ वैदा सँदा सँगु
इकठा होइआ ॥ अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ ॥ जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ ॥ हरिहां दूख रोग सभि
पाप तन ते खिसरिआ ॥ २३ ॥

चउबोले महला ९ ॥ १४ ॥ सतिगुर प्रसादि ॥

सँमन जउ इस प्रेम की दम कियहु होती साट ॥ रावन हुते सु रँक नहि जिनि सिर दीने काटि ॥ १ ॥ प्रीति प्रेम तनु खचि

रहिआ बीचु न राई होत ॥ चरन कमल मनु बेधिओ बूझनु सुरति सँजोग ॥ २ ॥ सागर मेर उदिआन बन नव खँड बसुधा भरम
 ॥ मूसन प्रेम पिरँम कै गनउ एक करि करम ॥ २ ॥ मूसन मसकर प्रेम की रही जु अँबरु छाड़ ॥ बीधे बांधे कमल महि भवर रहे
 लपटाइ ॥ ४ ॥ जप तप सँजम हरख सुख मान महत अरु गरब ॥ मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देंउ सरब ॥ ५ ॥ मूसन
 मरमु न जानई मरत हिरत सँसार ॥ प्रेम पिरँम न बेधिओ उरझिओ मिथ बिउहार ॥ ६ ॥ घबु दबु जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल
 ॥ मूसन तब ही मूसीऐ बिसरत पुरख दइआल ॥ ७ ॥ जा के प्रेम सुआउ है चरन चितव मन माहि ॥ नानक बिरही ब्रहम के आन
 न कतहू जाहि ॥ ८ ॥ लख घाटीं ऊँचौ घनो चँचल चीत बिहाल ॥ नीच कीच निमित्त घनी करनी कमल जमाल ॥ ९ ॥ कमल
 नैन अँजन सिआम चँद्र बदन चित चार ॥ मूसन मगन मरँम सिउ खँड खँड करि हार ॥ १० ॥ मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध
 न सिमरत अँग ॥ प्रगटि भइओ सभ लोअ महि नानक अधम पतँग ॥ ११ ॥

सलोक भगत कबीर जीउ के ११ श्रुतिगुर प्रसादि ॥

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥ आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥ १ ॥ कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु
 ॥ बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥ २ ॥ कबीर डगमग किआ करहि कहा डिलावहि जीउ ॥ सरब सूख को नाइको
 राम नाम रसु पीउ ॥ ३ ॥ कबीर कँचन के कुँडल बने ऊपरि लाल जड़ाउ ॥ दीसहि दाधे कान जिउ जिन्ह मनि नाही नाउ ॥ ४ ॥ कबीर
 ऐसा एकू आधु जो जीवत मिरतकु होइ ॥ निरभै होइ कै गुन रवै जत पेखउ तत सोइ ॥ ५ ॥ कबीर जा दिन हउ मूआ पाछै भइआ अनँदु
 ॥ मोहि मिलिओ प्रभु आपना सँगी भजहि गोबिँदु ॥ ६ ॥ कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥ जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु
 हमारा सोइ ॥ ७ ॥ कबीर आई मुझहि पहि अनिक करे करि भेस ॥ हम राखे गुर आपने उनि कीनो आदेसु ॥ ८ ॥ कबीर सोई मारीऐ
 जिह मूरे सुखु होइ ॥ भलो भलो सभु को कहै बुरो न मानै कोइ ॥ ९ ॥

कबीर राती होवहि कारीआ कारे ऊभे जँत ॥ लै फाहे उठि धावते सि जानि मारे भगवँत ॥ १० ॥ कबीर चँदन का बिरवा
 भला बेढुओ ढाक पलास ॥ ओइ भी चँदनु होइ रहे बसे जु चँदन पासि ॥ ११ ॥ कबीर बांसु बडाई बूडिआ इउ मत डूबहु
 कोइ ॥ चँदन कै निकटे बसै बांसु सुगँधु न होइ ॥ १२ ॥ कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि ॥ पाइ
 कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथि ॥ १३ ॥ कबीर जह जह हउ फिरिओ कउतक ठाओ ठाइ ॥ इक राम सनेही बाहरा
 ऊजरु मरै भांड ॥ १४ ॥ कबीर सँतन की झुँगीआ भली भठि कुसती गाउ ॥ आगि लगउ तिह धउलहर जिह नाही हरि
 को नाउ ॥ १५ ॥ कबीर सँत मूए किआ होईऐ जो अपुने छिहि जाइ ॥ रोवहु साकत बापुरे जु हाटै हाट बिकाइ ॥ १६ ॥
 कबीर साकतु ऐसा है जैसी लसन की खानि ॥ कोने बैठे खाईऐ परगट होइ निदानि ॥ १७ ॥ कबीर माइआ डोलनी
 पवनु झकोलनहारु ॥ सँतहु माखनु खाइआ छाछि पीऐ संसारु ॥ १८ ॥ कबीर माइआ डोलनी पवनु वहै हिव धार ॥
 जिनि बिलोइआ तिनि खाइआ अवर बिलोवनहार ॥ १९ ॥ कबीर माइआ चोरटी मुसि मुसि लावै हाटि ॥ एकु कबीरा
 ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट ॥ २० ॥ कबीर सूख न एंह जुगि करहि जु बहुतै मीत ॥ जो चितु राखहि एक सिउ ते
 सुखु पावहि नीत ॥ २१ ॥ कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनँदु ॥ मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानँदु ॥ २२ ॥
 राम पदारथु पाइ कै कबीरा गांठि न खोलह ॥ नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही मोलु ॥ २३ ॥ कबीर ता सिउ प्रीति
 करि जा को ठाकुरु रामु ॥ पँडित राजे भूपती आवहि कउने काम ॥ २४ ॥ कबीर प्रीति इक सिउ कीए आन दुबिधा जाइ
 ॥ भावै लांबे केस करु भावै घररि मुडाइ ॥ २५ ॥ कबीर जगु काजल की कोठरी अँध परे तिस माहि ॥ हउ बलिहारी
 तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि ॥ २६ ॥ कबीर इहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि ॥ नांगे पावहु ते गए जिन के लाख
 करोरि ॥ २७ ॥ कबीर इहु तनु जाइगा कवनै मारगि लाइ ॥ कै संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइ ॥ २८ ॥ कबीर

मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोइ ॥ ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥ २९ ॥ कबीर मानस जनमु
 दुलँभु है होइ न बारै बार ॥ जिउ बन फल पाके भइ गिरहि बहुरि न लागहि डार ॥ ३० ॥ कबीरा तुही कबीरु तू तेरो नाउ
 कबीरु ॥ राम रतनु तब पाईऐ जउ पहिले तजहि सरीरु ॥ ३१ ॥ कबीर झँखु न झँखीऐ तुमरो कहिओ न होइ ॥ कर्म
 करीम जु करि रहे मेटि न साकै कोइ ॥ ३२ ॥ कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ राम कसउटी सो सहै मरि जीवा
 होइ ॥ ३३ ॥ कबीर ऊजल पहिरहि कापरे पान सुपारी खाहि ॥ एकस हरि के नाम बिनु बाधे जम पुरि जाहि ॥ ३४ ॥
 कबीर बेडा जरजरा फूटे छेक हजार ॥ हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार ॥ ३५ ॥ कबीर हाड जरे जिउ लाकरी
 केस जरे जिउ घासु ॥ इहु जगु जरता देखि कै भइओ कबीरु उदासु ॥ ३६ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ चाम लपेटे हाड ॥
 हैवर ऊपरि छत्र तर ते फुनि धरनी गाड ॥ ३७ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ ऊचा देख अवासु ॥ आजु काल्हि भइ लेटणा
 ऊपरि जामै घासु ॥ ३८ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ रँकु न हसीऐ कोइ ॥ अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइ
 ॥ ३९ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ देही देखि सुरंग ॥ आजु काल्हि तजि जाहुगे जिउ कांचुरी भुयंग ॥ ४० ॥ कबीर लूटना
 है तो लूटि लै राम नाम है लूटि ॥ फिरि पाछै पछुताहुगे प्रान जाहिंगे छुटि ॥ ४१ ॥ कबीर ऐसा कोई न जनमिओ अपनै
 घरि लावै आगि ॥ पांचउ लरिका जारि कै रहै राम लिव लागि ॥ ४२ ॥ को है लरिका बेचई लरिकी बेचै कोइ ॥ साझा करै
 कबीर सिउ हरि सँगि बनजु करेइ ॥ ४३ ॥ कबीर इह चेतावनी मत सहसा रहि जाइ ॥ पाछै भोग जु भोगवे तिन को गुडु लै
 खाहि ॥ ४४ ॥ कबीर मै जानिओ पड़िबो भलो पड़िबे सिउ भल जोगु ॥ भगति न छाडउ राम की भावै निँदउ लोगु ॥ ४५
 ॥ कबीर लोगु कि निँदै बपुड़ा जिह मनि नाही गिआनु ॥ राम कबीरा रवि रहे अवर तजे सभ काम ॥ ४६ ॥ कबीर परदेसी
 कै घाघरै चहु दिसि लागी आगि ॥ खिँथा जलि कोइला भई तागे आँच न लाग ॥ ४७ ॥ कबीर खिँथा जलि कोइला

भई खापरु फूट मफूट ॥ जोगी बपुड़ा खेलिओ आसनि रही बिभूति ॥ ४८ ॥ कबीर थोरै जलिं माछुली झीवरिं मेलिओ
 जालु ॥ इह टोघनै न छूटसहि फिरि करि समुंदु सम्हालि ॥ ४९ ॥ कबीर समुंदु न छोडीऐ जउ अति खारो होइ ॥ पोखरिं
 पोखरिं दूढटे भलो न कहिहै कोइ ॥ ५० ॥ कबीर निगुसांए बहि गए थांघी नाही कोइ ॥ दीन गरीबी आपुनी करते होइ सु
 होइ ॥ ५१ ॥ कबीर बैसनउ की कूकरिं भली साकत की बुरी माइ ॥ ओह नित सुनै हरिं नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ
 ॥ ५२ ॥ कबीर हरना दूबला इहु हरीआरा तालु ॥ लाख अहेरी एकु जीउ केता बँचउ कालु ॥ ५३ ॥ कबीर गंगा तीर जु
 घरु करहि पीवहि निरमल नीरु ॥ बिनु हरिं भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर ॥ ५४ ॥ कबीर मनु निरमलु भइआ
 जैसा गंगा नीरु ॥ पाछै लागो हरिं फिरै कहत कबीर कबीर ॥ ५५ ॥ कबीर हरदी पीअरी चूनां ऊजल भाइ ॥ राम
 सनेही तउ मिलै दोनउ बरन गवाइ ॥ ५६ ॥ कबीर हरदी पीरतनु हरै चून चिहनु न रहाइ ॥ बलिहारी इह प्रीति कउ जिह
 जाति बरनु कुलु जाइ ॥ ५७ ॥ कबीर मुकति दुआरा संकुरा राई दसएं भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहिओ निकसो किउ कै
 जाइ ॥ ५८ ॥ कबीर ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥ ५९ ॥
 कबीर ना मोहि छानि न छापरी ना मोहि घरु नही गाउ ॥ मति हरिं पूछै कउनु है मेरे जाति न नाउ ॥ ६० ॥ कबीर मुहि
 मरने का चाउ है मरउ त हरिं कै दुआरु ॥ मत हरिं पूछै कउनु है परा हमारै बार ॥ ६१ ॥ कबीर ना हम कीआ न करहिगे
 ना करिं सकै सरीरु ॥ किआ जानउ किछु हरिं कीआ भइओ कबीरु कबीरु ॥ ६२ ॥ कबीर सुपनै हू बरड़ाइ कै जिह
 मुखिं निकसै रामु ॥ ता के पग की पानही मेरे तन को चामु ॥ ६३ ॥ कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिओ नाउ ॥
 चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ॥ ६४ ॥ कबीर महिदी करिं घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ तै सह बात न
 पूछीऐ कबहु न लाई पाइ ॥ ६५ ॥ कबीर जिह दरिं आवत जातिअहु हटकै नाही कोइ ॥ सो दरु कैसे छोडीऐ जो दरु

ऐसा होइ ॥ ६६ ॥ कबीर डूबा था पे उबरिओ गुन की लहरि डूबकि ॥ जब देखिओ बेड़ा जरजरा तब उतरि परिओ हउ
 फरकि ॥ ६७ ॥ कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ ॥ माखी चँदनु परहरै जह बिगँध तह जाइ ॥ ६८ ॥
 कबीर बैदु मूआ रोगी मूआ मूआ सभु संसारु ॥ एकु कबीरा ना मूआ जिह नाही रोवनहारु ॥ ६९ ॥ कबीर रामु न
 धिआइओ मोटी लागी खोरि ॥ काइआ हांडी काठ की ना ओह चहँ बहोरि ॥ ७० ॥ कबीर ऐसी होइ परी मन को भावतु
 कीनु ॥ मरने ते किआ डरपना जब हाथि सिधउरा लीन ॥ ७१ ॥ कबीर रस को गांडो चूसीरे गुन कउ मरीरे कोइ ॥
 अवगुनीआरे मानसै भलो न कहिहै कोइ ॥ ७२ ॥ कबीर गागरि जल भरी आजु कालिह जैहै फूटि ॥ गुरु जु न चेतहि
 आपनो अध माझि लीजहिगे लूटि ॥ ७३ ॥ कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ ॥ गले हमारे जेवरी जह खिँचै तह
 जाउ ॥ ७४ ॥ कबीर जपनी काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥ हिरदै रामु न चेतवी इह जपनी किआ होइ ॥ ७५ ॥
 कबीर बिरहु भुयँगमु मनि बसै मँतु न मानै कोइ ॥ राम बिओगी ना जीरे जीरे त बउरा होइ ॥ ७६ ॥ कबीर पारस चँदनै
 तिन्ह है एक सुगँध ॥ तिह मिलि तेऊ ऊतम भए लोह काठ निरगँध ॥ ७७ ॥ कबीर जम का ठेंगा बुरा है ओहु नही सहिआ
 जाइ ॥ एकु जु साधू मोहि मिलिओ तिन्हि कीआ अँचलि लाइ ॥ ७८ ॥ कबीर बैदु कहै हउ ही भला दारु मेरै वसि ॥ इह
 तउ बसतु गुपाल की जब भावै लेखि खसि ॥ ७९ ॥ कबीर नउबति आपनी दिन दस लेहु बजाइ ॥ नदी नाव संजोग
 जिउ बहुरि न मिलहै आइ ॥ ८० ॥ कबीर सात समुँदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ ॥ बसुधा कागदु जउ करउ हरि जसु
 लिखनु न जाइ ॥ ८१ ॥ कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल ॥ कबीर रमईआ कँठि मिलु चूकहि सरब
 जँजाल ॥ ८२ ॥ कबीर ऐसा को नही मँदरु देइ जराइ ॥ पांचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ ॥ ८३ ॥ कबीर ऐसा
 को नही इहु तनु देवै फूकि ॥ अँधा लोगु न जानई रहिओ कबीरा कूकि ॥ ८४ ॥ कबीर सती पुकारै चिह चड़ी सुनु हो बीर

मसान ॥ लोगु सबाइआ चलि गइओ हम तुम कामु निदान ॥ ८५ ॥ कबीर मनु पँखी भइओ उडि उडि दह दिस जाइ ॥
 जो जैसी सँगति मिलै सो तैसो फलु खाइ ॥ ८६ ॥ कबीर जा कउ खोजते पाइओ सोई ठउरु ॥ सोई फिरि कै तू भइआ
 जा कउ कहता अउरु ॥ ८७ ॥ कबीर मारी मरउ कुसँग की केले निकटि जु बेरि ॥ उह झूलै उह चीरीऐ साकत सँगु न हेरि
 ॥ ८८ ॥ कबीर भार पराई सिरि चरै चलिओ चाहै बाट ॥ अपने भारहि ना डरै आगै अउघट घाट ॥ ८९ ॥ कबीर बन
 की दाधी लाकरी ठाढी करे पुकार ॥ मति बसि परउ लुहार के जारै दूजी बार ॥ ९० ॥ कबीर एक मरँते दुइ मूए दोइ मरँतह
 चारि ॥ चारि मरँतह छह मूए चारि पुरखु दुइ नारि ॥ ९१ ॥ कबीर देखि देखि जगु ढूँढिआ कहूँ न पाइआ ठउरु ॥ जिनि
 हरि का नामु न चेतिओ कहा भुलाने अउर ॥ ९२ ॥ कबीर सँगति करीऐ साध की अँति करै निरबाहु ॥ साकत सँगु न
 कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु ॥ ९३ ॥ कबीर जग महि चेतिओ जानि कै जग महि रहिओ समाइ ॥ जिन हरि का नामु न
 चेतिओ बादहि जनमें आइ ॥ ९४ ॥ कबीर आसा करीऐ राम की अवरै आस निरास ॥ नरकि परहि ते मानई जो हरि नाम
 उदास ॥ ९५ ॥ कबीर सिख साखा बहुते कीए केसो कीओ न मीतु ॥ चाले थे हरि मिलन कउ बीचै अटकियो चीतु ॥
 ९६ ॥ कबीर कारनु बपुरा किया करै जउ रामु न करै सहाइ ॥ जिह जिह डाली पगु धरउ सोई मुरि मुरि जाइ ॥ ९७ ॥
 कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥ रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥ ९८ ॥ कबीर साधू की सँगति
 रहउ जउ की भूमी खाउ ॥ होनहारु सो होइहै साकत सँगि न जाउ ॥ ९९ ॥ कबीर सँगति साध की दिन दिन दूना हेतु
 ॥ साकत कारी कांबरी धोए होइ न सेतु ॥ १०० ॥ कबीर मनु मूँडिआ नही केस मूँडाए कांइ ॥ जो किछ कीआ सो मन
 कीआ मूँडा मूँडु अजाइ ॥ १०१ ॥ कबीर रामु न छोडीऐ तनु धनु जाइ त जाउ ॥ चरन कमल चितु बेधिआ रामहि नामि
 समाउ ॥ १०२ ॥ कबीर जो हम जँतु बजावते टूटि गई सब तार ॥ जँतु बिचारा किया करै चले बजावनहार ॥ १०३ ॥

कबीर माइ मूँडउ तिह गुरू की जा ते भरमु न जाइ ॥ आप डुबे चहु बेद महि चले दीए बहाइ ॥ १०४ ॥ कबीर जेते पाप
 कीए राखे तलै दुराइ ॥ परगट भए निदान सभ जब पूछे धरमराइ ॥ १०५ ॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै पालिओ
 बहुतु कुटंबु ॥ धँधा करता रहि गइआ भाई रहिआ न बंधु ॥ १०६ ॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन जाइ
 ॥ सरपनि होइ कै अउतरै जाए अपुने खाइ ॥ १०७ ॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि ॥ गदही होइ कै
 अउतरै भारु सहै मन चारि ॥ १०८ ॥ कबीर चतुराई अति घनी हरि जपि हिरदै माहि ॥ सूरी ऊपरि खेलना गुरै त ठाहर
 नाहि ॥ १०९ ॥ कबीर सोई मुखु धँनि है जा मुखि कहीऐ रामु ॥ देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु ॥ ११० ॥
 कबीर सोई कुल भली जा कुल हरि को दासु ॥ जिह कुल दासु न ऊपजै सो कुल ढाकु पलासु ॥ १११ ॥ कबीर है गइ
 बाहन सघन घन लाख धजा फहराहि ॥ इआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि ॥ ११२ ॥ कबीर सभु
 जगु हउ फिरिओ मांदलु कँध चढाइ ॥ कोई काहू को नहीं सभ देखी ठोकि बजाइ ॥ ११३ ॥ मारगि मोती बीथरे अँधा
 निकसिओ आइ ॥ जोति बिना जगदीस की जगतु उलँघे जाइ ॥ ११४ ॥ बूडा बँसु कबीर का उपजिओ पूतु कमालु ॥
 हरि का सिमरनु छाडि कै घरि ले आया मालु ॥ ११५ ॥ कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइ ॥ पाछै पाउ न
 दीजीऐ आगै होइ सु होइ ॥ ११६ ॥ कबीर जगु बाधिओ जिह जेवरी तिह मत बँधहु कबीर ॥ जैहहि आटा लोन जिउ
 सोन समानि सरीरु ॥ ११७ ॥ कबीर हँसु उडिओ तनु गाडिओ सोझाई सैनाह ॥ अजहू जीउ न छोडई रँकाई नैनाह ॥
 ११८ ॥ कबीर नैन निहारउ तुझ कउ स्रवन सुनउ तुअ नाउ ॥ बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ ॥ ११९ ॥
 कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि ॥ चरन कमल की मउज महि रहउ अँति अरु आदि ॥ १२० ॥ कबीर
 चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान ॥ कहिबे कउ सोभा नहीं देखा ही परवानु ॥ १२१ ॥ कबीर देखि कै किह

कहउ कहे न को पतिआइ ॥ हरि जैसा तैसा उही रहउ हरखि गुन गाइ ॥ १२२ ॥ कबीर चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि
 चितारे ॥ जैसे बचरहि कूँज मन माइआ ममता रे ॥ १२३ ॥ कबीर अँबर घनहरु छाइआ बरखि भरे सर ताल ॥ चात्रिक
 जिउ तरसत रहै तिन को कउनु हवालु ॥ १२४ ॥ कबीर चकई जउ निसि बीछुरै आइ मिलै परभाति ॥ जो नर बिछुरे राम
 सिउ ना दिन मेले न राति ॥ १२५ ॥ कबीर रैनाइर बिछोरिआ रहुरे संख मझूरि ॥ देवल देवल धाहडी देसहि उगवत सूर ॥
 १२६ ॥ कबीर सूता किआ करहि जागु रोइ भै दुख ॥ जा का बासा गोर महि सो किउ सोवै सुख ॥ १२७ ॥ कबीर सूता
 किआ करहि उठि कि न जपहि मुरारि ॥ इक दिन सोवनु होइगो लांबे गोड पसारि ॥ १२८ ॥ कबीर सूता किआ करहि बैठा
 रह अरु जागु ॥ जा के सँग ते बीछुरा ता ही के सँगि लागु ॥ १२९ ॥ कबीर संत की गैल न छोडीरे मारगि लागु जाउ ॥
 पेखत ही पुँनीत होइ भेटत जपीरे नाउ ॥ १३० ॥ कबीर साकत सँगु न कीजीरे दूरहि जाईरे भागि ॥ बासनु कारो परसीरे
 तउ कछु लागै दागु ॥ १३१ ॥ कबीर रामु न चेतिओ जरा पहुँचिओ आइ ॥ लागी मँदिर दुआर ते अब किआ काठिआ जाइ
 ॥ १३२ ॥ कबीर कारनु सो भइओ जो कीने करतारि ॥ तिसु बिनु दूसरु को नही एकै सिरजनहारु ॥ १३३ ॥ कबीर फल
 लागे फलनि पाकनि लागे आंब ॥ जाइ पहुँचहि खसम कउ जउ बीचि न खाही कांब ॥ १३४ ॥ कबीर ठाकुरु पूजहि मोलिं
 ले मनहठि तीरथ जाहि ॥ देखा देखी स्वांगु धरि भूले भटका खाहि ॥ १३५ ॥ कबीर पाहनु परमेसुरु कीआ पूजै सभु संसारु
 ॥ इस भरवासे जो रहे बूडे काली धार ॥ १३६ ॥ कबीर कागद की ओबरी मसु के करम कपाट ॥ पाहन बोरी पिरथमी पँडित
 पाड़ी बाट ॥ १३७ ॥ कबीर कालिं करँता अबहि करु अब करता सुइ ताल ॥ पाछै कछु न होइगा जउ सिर परि आवै कालु ॥
 १३८ ॥ कबीर ऐसा जँतु इकु देखिआ जैसी धोई लाख ॥ दीसै चँचलु बहु गुना मति हीना नापाक ॥ १३९ ॥ कबीर मेरी
 बुधि कउ जमु न करै तिसकार ॥ जिनि इहु जमूआ सिरजिआ सु जपिआ परविदगार ॥ १४० ॥ कबीर कसतूरी भइआ

भवर भए सभ दास ॥ जिउ जिउ भगति कबीर की तित तित राम निवास ॥ १४१ ॥ कबीर गहगचि परिओ कुटंब कै काठै
 रहि गइओ रामु ॥ आइ परे धरमराइ के बीचहि धूमा धाम ॥ १४२ ॥ कबीर साकत ते सूकर भला रखै आछा गाउ ॥ उहु
 साकतु बपुरा मरि गइआ कोइ न लैहै नाउ ॥ १४३ ॥ कबीर कउडी कउडी जोरि कै जोरै लाख करोरि ॥ चलती बार न कछु
 मिलिओ लई लंगोटी तोरि ॥ १४४ ॥ कबीर बैसनो हूआ त किआ भइआ माला मेलीं चारि ॥ बाहरि कंचनु बाहरा भीतरि
 भरी भंगार ॥ १४५ ॥ कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु ॥ ऐसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु ॥
 १४६ ॥ कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइआ पंथी कउ दुखु देइ ॥ ऐसा तेरा दासु है जिउ धरनी महि खेह ॥ १४७ ॥ कबीर
 खेह हूई तउ किआ भइआ जउ उडि लागै अंग ॥ हरि जनु ऐसा चाहीऐ जिउ पानी सरबंग ॥ १४८ ॥ कबीर पानी हूआ त
 किआ भइआ सीरा ताता होइ ॥ हरि जनु ऐसा चाहीऐ जैसा हरि ही होइ ॥ १४९ ॥ ऊच भवन कनकमानी सिखरि धजा
 फहराइ ॥ ता ते भली मधूकरी सँतसँगि गुन गाइ ॥ १५० ॥ कबीर पाटन ते ऊजरु भला राम भगत जिह ठाइ ॥ राम
 सनेही बाहरा जम पुरु मेरे भांइ ॥ १५१ ॥ कबीर गंग जमुन के अँतरे सहज सुँन के घाट ॥ तहा कबीरै मटु कीआ खोजत
 मुनि जन बाट ॥ १५२ ॥ कबीर जैसी उपजी पेड ते जउ तैसी निबहै ओड़ि ॥ हीरा किस का बापुरा पूजहि न रतन करोड़ि
 ॥ १५३ ॥ कबीरा एकु अचंभउ देखिओ हीरा हाट बिकाइ ॥ बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइ ॥ १५४ ॥ कबीरा
 जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥ जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥ १५५ ॥ कबीर माइआ
 तजी त किआ भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ ॥ मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥ १५६ ॥ कबीर साचा
 सतिगुरु मै मिलिआ सबदु जु बाहिआ एकु ॥ लागत ही भुइ मिलि गइआ परिआ कलेजे छेकु ॥ १५७ ॥ कबीर साचा
 सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक ॥ अँधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक ॥ १५८ ॥ कबीर है गै

बाहन सघन घन छत्रपती की नारि ॥ तासु पटंतर ना पूजै हरि जन की पनिहारि ॥ १५९ ॥ कबीर त्रिप नारी किउ
 निंदीऐ किउ हरि चेरी कउ मानु ॥ ओह मांग सवारै बिखै कउ ओह सिमरै हरि नामु ॥ १६० ॥ कबीर थूनी पाई थिति भई
 सतिगुर बंधी धीर ॥ कबीर हीरा बनजिआ मान सरोवर तीर ॥ १६१ ॥ कबीर हरि हीरा जन जउहरी ले कै मांडै हाट ॥
 जब ही पाईअहि पारखू तब हीरन की साट ॥ १६२ ॥ कबीर काम परे हरि सिमरीऐ ऐसा सिमरहु नित ॥ अमरा पुर बासा
 करहु हरि गइआ बहोरै बित ॥ १६३ ॥ कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥ रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै
 नामु ॥ १६४ ॥ कबीर जिह मारगि पंडित गए पाछै परी बहीर ॥ इक अवघट घाटी राम की तिह चडि रहिओ कबीर ॥
 १६५ ॥ कबीर दुनीआ के दोखे मूआ चालत कुल की कानि ॥ तब कुलु किस का लाजसी जब ले धरहि मसानि ॥ १६६
 ॥ कबीर डूबहिगो रे बापुरे बहु लोगन की कानि ॥ पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु ॥ १६७ ॥ कबीर भली
 मधूकरी नाना बिधि को नाजु ॥ दावा काहू को नहीं बडा देसु बड राजु ॥ १६८ ॥ कबीर दावै दाइनु होतु है निरदावै रहै
 निसँक ॥ जो जनु निरदावै रहै सो गनै इँद्र सो रँक ॥ १६९ ॥ कबीर पालि समुहा सरवरु भरा पी न सकै कोई नीरु ॥
 भाग बडे तै पाइओ तूँ भरि भरि पीउ कबीर ॥ १७० ॥ कबीर परभाते तारे खिसहि तिउ इहु खिसै सरीरु ॥ ए दुइ अखर
 ना खिसहि सो गहि रहिओ कबीरु ॥ १७१ ॥ कबीर कोठी काठ की दह दिसि लागी आगि ॥ पंडित पंडित जलि मूए
 मूरख उबरे भागि ॥ १७२ ॥ कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ ॥ बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ ॥
 १७३ ॥ कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥ मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥
 १७४ ॥ कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु ॥ जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि ॥
 १७५ ॥ कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ ॥ कै जानै आपन धनी कै दासु दिवानी होइ ॥ १७६ ॥ कबीर

भली भई जो भउ परिआ दिसा गई. सभ भूलिं ॥ ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलिं कूलिं ॥ १७७ ॥ कबीरा
 धूरिं सकेलिं कै पुरीआ बांधी देह ॥ दिवस चारिं को पेखना अँति खेह की खेह ॥ १७८ ॥ कबीर सूरज चांद कै उदै भई
 सभ देह ॥ गुर गोबिंद के बिनु मिले पलटि भई सभ खेह ॥ १७९ ॥ जह अनभउ तह भै नही जह भउ तह हरि नाहि ॥
 कहिओ कबीर बिचारिं कै सँत सुनहु मन माहि ॥ १८० ॥ कबीर जिन्हु किछू जानिआ नही तिन सुख नीद बिहाइ ॥
 हमहु जु बूझा बूझना पूरी परी बलाइ ॥ १८१ ॥ कबीर मारे बहुतु पुकारिआ पीर पुकारै अउर ॥ लागी चोट मरँम की
 रहिओ कबीरा ठउर ॥ १८२ ॥ कबीर चोट सुहेली सेल की लागत लेइ उसास ॥ चोट सहारै सबद की तासु गुरू मै दास
 ॥ १८३ ॥ कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि साई न बहरा होइ ॥ जा कारनि तूँ बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥ १८४
 ॥ सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ ॥ कबीर जा की दिल साबति नही ता कउ कहां खुदाइ ॥ १८५ ॥ कबीर
 अलह की करिं बँदगी जिह सिमरत दुख जाइ ॥ दिल महि साई परगटै बुझै बलँती नाइ ॥ १८६ ॥ कबीर जोरी कीए
 जुलमु है कहता नाउ हलालु ॥ दफतरि लेखा मांगीरे तब होइगो कउनु हवालु ॥ १८७ ॥ कबीर खूबु खाना खीचरी जा
 महि अँमितु लोनु ॥ हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु ॥ १८८ ॥ कबीर गुरु लागा तब जानीरे मिटै मोहु तन ताप ॥
 हरख सोग दाझै नही तब हरि आपहि आपि ॥ १८९ ॥ कबीर राम कहन महि भेदु है ता महि एकु बिचारु ॥ सोई रामु
 सभै कहहि सोई कउतकहार ॥ १९० ॥ कबीर रामै राम कहु कहिबे माहि बिबेक ॥ एकु अनेकहि मिलिं गइआ एक
 समाना एक ॥ १९१ ॥ कबीर जा घर साध न सेवीअहि हरि की सेवा नाहि ॥ ते घर मरहट सारखे भूत बसाहि तिन माहि
 ॥ १९२ ॥ कबीर गूँगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥ पावहु ते पिँगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥ १९३ ॥ कबीर
 सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥ लागत ही भुइ गिरिं परिआ परा करेजे छेकु ॥ १९४ ॥ कबीर निरमल बूँद

अकास की परि गई भूमि बिकार ॥ बिनु संगति इउ मांनई होइ गई भठ छार ॥ १९५ ॥ कबीर निरमल बूंद अकास की
 लीनी भूमि मिलाइ ॥ अनिक सिआने पचि गए ना निरवारी जाइ ॥ १९६ ॥ कबीर हम काबे हउ जाइ था आगै मिलिआ
 खुदाइ ॥ साई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइ ॥ १९७ ॥ कबीर हज काबै होइ होइ गइआ केती बार
 कबीर ॥ साई मुझ महि किआ खता मुखहु न बोलै पीर ॥ १९८ ॥ कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि कहते हहि जु हलालु
 ॥ दफतरु दर्ई जब काठि है होइगा कउनु हवालु ॥ १९९ ॥ कबीर जोरु कीआ सो जुलमु है लेइ जबाबु खुदाइ ॥
 दफतरि लेका नीकसै मार मुहै मुहि खाइ ॥ २०० ॥ कबीर लेखा देना सुहेला जउ दिल सूची होइ ॥ उसु साचे दीवान
 महि पला न पकरै कोइ ॥ २०१ ॥ कबीर धरती अरु आकास महि दुइ तूँबही अबध ॥ खट दरसन सँसे परे अरु
 चउरासीह सिध ॥ २०२ ॥ कबीर मेरा मुझ महि किछु नहीं जो किछु है सो तेरा ॥ तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा
 ॥ २०३ ॥ कबीर तूँतूँ करता तूहूआ मुझ महि रहान हूँ ॥ जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥ २०४ ॥
 कबीर बिकारह चितवते झूठे करते आस ॥ मनोरथु कोइ न पूरिओ चाले ऊठि निरास ॥ २०५ ॥ कबीर हरि का सिमरनु
 जो करै सो सुखीआ सँसारि ॥ इत उत कतहि न डोलई जिस राखै सिरजनहार ॥ २०६ ॥ कबीर घाणी पीड़ते सतिगुरु
 लीए छडाइ ॥ परा पूरबली भावनी परगटु होई आई ॥ २०७ ॥ कबीर टालै टोलै दिनु गइआ बिआजु बढँतउ जाइ ॥ ना
 हरि भजिओ न खतु फटिओ कालु पहुँचो आइ ॥ २०८ ॥ महला ५ ॥ कबीर कूकरु भउकना करँग पिछै उठि धाइ ॥
 करमी सतिगुरु पाइआ जिनि हउ लीआ छडाइ ॥ २०९ ॥ महला ५ ॥ कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥
 धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥ २१० ॥ महला ५ ॥ कबीर चावल कारने तुख कउ मुहली लाइ ॥ सँगि
 कुसँगी बैसते तब पूछै धरमराइ ॥ २११ ॥ नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥ काहे छीपहु छाइलै राम न

लावहु चीतु ॥ २१२ ॥ नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संमाहलि ॥ हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरँजन नालि ॥
 २१३ ॥ महला ५ ॥ कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥ २१४
 ॥ कबीर कीचड़ि आटा गिरि परिआ किछू न आइओ हाथ ॥ पीसत पीसत चाबिआ सोई निबहिआ साथ ॥ २१५ ॥
 कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥ काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै ॥ २१६ ॥ कबीर लागी प्रीति
 सुजान सिउ बरजै लोगु अजानु ॥ ता सिउ टूटी किउ बनै जा के जीअ परान ॥ २१७ ॥ कबीर कोठे मँडप हेतु करि काहे
 मरहु सवारि ॥ कारजु साढे तीनि हथ घनी त पउने चारि ॥ २१८ ॥ कबीर जो मै चितवउ ना करै किआ मेरे चितवे होइ ॥
 अपना चितविआ हरि करै जो मेरे चिति न होइ ॥ २१९ ॥ मः ३ ॥ चिँता भि आपि कराइसी अचिँतु भि आपे देइ ॥
 नानक सो सालाहीरे जि सभना साइ करेइ ॥ २२० ॥ मः ५ ॥ कबीर रामु न चेतिओ फिरिआ लालच माहि ॥ पाप करँता
 मरि गइआ अउध पुनी खिन माहि ॥ २२१ ॥ कबीर काइआ काची कारवी केवल काची धातु ॥ साबतु रखहि त राम भजु
 नाहि त बिनठी बात ॥ २२२ ॥ कबीर केसो केसो कूकीरे न सोईरे असार ॥ राति दिवस के कूकने कबहू के सुनै पुकार ॥
 २२३ ॥ कबीर काइआ कजली बनु भइआ मनु कुँचरु मय मँतु ॥ अँकसु ग्यानु रतनु है खेवटु बिरला सँतु ॥ २२४ ॥
 कबीर राम रतनु मुखु कोथरी पारख आगै खोलि ॥ कोई आइ मिलैगो गाहकी लेगो महगे मोलि ॥ २२५ ॥ कबीर रामु
 नामु जानिओ नही पालिओ कटकु कुटँबु ॥ धँधे ही माहि मरि गइओ बाहरि भई न बँब ॥ २२६ ॥ कबीर आखी केरे माटुके
 पलु पलु गई बिहाइ ॥ मनु जँजालु न छोडई जम दीआ दमामा आइ ॥ २२७ ॥ कबीर तरवर रूपी रामु है फल रूपी बैरागु
 ॥ छाइआ रूपी साधु है जिनि तजिआ बादु बिबादु ॥ २२८ ॥ कबीर ऐसा बीजु बोइ बारह मास फलँत ॥ सीतल छाइआ
 गहिर फल पँखी केल करँत ॥ २२९ ॥ कबीर दाता तरवरु दया फलु उपकारी जीवँत ॥ पँखी चले दिसावरी

बिरखा सुफल फलंत ॥ २३० ॥ कबीर साधू सँगु परापती लिखिआ होइ लिलाट ॥ मुकति पदारथु पाईऐ ठाक न अवघट घाट
 ॥ २३१ ॥ कबीर एक घड़ी आधी घरी आधी हूँ ते आप ॥ भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥ २३२ ॥ कबीर भांग
 माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खाहि ॥ तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जाहि ॥ २३३ ॥ नीचे लोइन करि रहउ ले
 साजन घट माहि ॥ सभ रस खेलउ पीअ सउ किसी लखावउ नाहि ॥ २३४ ॥ आठ जाम चउसठि घरी तुअ निरखत रहै जीउ
 ॥ नीचे लोइन किउ करउ सभ घट देखउ पीउ ॥ २३५ ॥ सुनु सखी पीअ महि जीउ बसै जीअ महि बसै कि पीउ ॥ जीउ पीउ
 बूझउ नहीं घट महि जीउ कि पीउ ॥ २३६ ॥ कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरू नाहि ॥ अरझि उरझि कै पचि मूआ
 चारउ बेदहु माहि ॥ २३७ ॥ हरि है खांडु रेतु महि बिखरी हाथी चुनी न जाइ ॥ कहि कबीर गुरि भली बुझाई कीटी होइ है खाइ
 ॥ २३८ ॥ कबीर जउ तुहि साध पिरँम की सीसु काटि करि गोइ ॥ खेलत खेलत हाल करि जो किछु होइ त होइ ॥ २३९ ॥
 कबीर जउ तुहि साध पिरँम की पाके सेती खेलु ॥ काची सरसउं पेलि कै ना खलि भई न तेलु ॥ २४० ॥ ढूँढत डोलहि अँध गति
 अरु चीनत नाही सँत ॥ कहि नामा किउ पाईऐ बिनु भगतहु भगवँतु ॥ २४१ ॥ हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥
 ते नर दोजक जाहिगे सति भारखै रविदास ॥ २४२ ॥ कबीर जउ ग्रिहु करहि त धरमु करु नाही त करु बैरागु ॥ बैरागी बँधनु करै
 ता को बडो अभागु ॥ २४३ ॥

सलोक सेख फरीद के १६ सतिगुर प्रसादि ॥

जितु दिहाडै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥ मलकु जि कँनी सुणीदा मुहु देखाले आइ ॥ जिंद निमाणी कठीऐ हडा कू कड़काइ ॥
 साहे लिखे न चलनी जिंदू कूँ समझाइ ॥ जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ ॥ आपण हथी जोलि कै कै गलि लगै धाइ ॥
 वालहु निकी पुरसलात कँनी न सुणीआइ ॥ फरीदा किड़ी पवँदीई खड़ा न आपु मुहाइ ॥ १ ॥ फरीदा दर दरवेसी

गाखडी चलां दुनीआं भति ॥ बँन्हि उठाई पोटली किथै वँजा घति ॥ २ ॥ किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥
 साईं मेरै चँगा कीता नाही त हँ भी दझां आहि ॥ ३ ॥ फरीदा जे जाणा तिल थोड़डे सँमलि बुकु भरी ॥ जे जाणा सहु नँढडा
 तां थोड़ा माणु करी ॥ ४ ॥ जे जाणा लडु छिजणा पीडी पाई गँढि ॥ तै जेवडु मै नाहि को सभु जगु डिठा हँढि ॥ ५ ॥
 फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥ आपनडे गिरीवान महि सिरु नीं, वां करि देखु ॥ ६ ॥ फरीदा जो तै मारनि
 मुकीआं तिन्हा न मारे घुँमि ॥ आपनडै घरि जाईरे पैर तिन्हा दे चुँमि ॥ ७ ॥ फरीदा जा तउ खटण वेल तां तूरता दुनी सिउ
 ॥ मरग सवाई नीहि जां भरिआ तां लदिआ ॥ ८ ॥ देखु फरीदा जु थीआ दाडी होई भूर ॥ अगहु नेडा आइआ पिछा रहिआ
 दूरि ॥ ९ ॥ देखु फरीदा जिं थीआ सकर होई विसु ॥ साईं बाझहु आपणे वेदण कहीरे किसु ॥ १० ॥ फरीदा अखी देखि
 पतीणीआं सुणि सुणि शीणे कँन ॥ साख पकँदी आईआ होर करेदी वँन ॥ ११ ॥ फरीदा कालीं, जिनी न राविआ धउली रावै
 कोइ ॥ करि साईं सिउ पिरहडी रँग नवेला होइ ॥ १२ ॥ मः ३ ॥ फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जे को चिति करे ॥
 आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ ॥ एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥ १३ ॥ फरीदा जिन्ह
 लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ॥ कजल रेख न सहदिआ से पँखी सूइ बहिठु ॥ १४ ॥ फरीदा कूकेदिआ चांगेदिआ
 मती देदिआ नित ॥ जो सैतानि वँजाइआ से कित फेरहि चित ॥ १५ ॥ फरीदा थीउ पवाही दभु ॥ जे साईं लोइहि सभु ॥
 इकु छिजहि बिआ लताडीअहि ॥ तां साईं दै दरि वाडीअहि ॥ १६ ॥ फरीदा खाकु न निँदीरे खाकू जेडु न कोइ ॥
 जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥ १७ ॥ फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लब त कूडा नेहु ॥ किचरु झति लघाईरे छपरि
 तुटै मेहु ॥ १८ ॥ फरीदा जँगलु जँगलु किआ भवहि वणि कँडा मोडेहि ॥ वसी खु हिलाईरे जँगलु किआ ढूढेहि ॥ १९ ॥
 फरीदा इनी निकी जँघीरे थल डूँगर भविओम्हि ॥ अजु फरीदै कूझडा सै कोहां थीओमि ॥ २० ॥ फरीदा राती वडीआं धुखि

धुखि उठनि पास ॥ धिगु तिन्हा दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥ २१ ॥ फरीदा जे मै होदा वारिआ मिता आइडिआं
 ॥ हेडा जलै मजीठ जिउ उपरि अंगारा ॥ २२ ॥ फरीदा लोडै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु ॥ हँडै उंन कताइदा
 पैधा लोडै पटु ॥ २३ ॥ फरीदा गलीए चिकडु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥ चला त भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु ॥ २४
 ॥ भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥ जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥ २५ ॥ फरीदा मै भोलावा पग
 दा मतु मैली होइ जाइ ॥ गहिला रूहु न जाणई सिरु भि मिटी खाइ ॥ २६ ॥ फरीदा सकर खंडु निवात गुडु माखिओ
 मांड्रा दुधु ॥ सभे वसतू मिठीआं ख न पूजनि तुधु ॥ २७ ॥ फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥ जिना खाधी
 चोपडी घणे सहनिगे दुख ॥ २८ ॥ रुखी सुखी खाइ कै ठंडा पाणी पीउ ॥ फरीदा देखि पराई चोपडी ना तरसाए जीउ
 ॥ २९ ॥ अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुडे मुडि जाइ ॥ जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ॥ ३० ॥ साहुरै ढोई
 ना लहै पेईरे नाही थाउ ॥ पिरु वातडी न पुछई धन सोहागणि नाउ ॥ ३१ ॥ साहुरै पेईरे कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥
 नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥ ३२ ॥ नाती धोती संबही सुती आइ नचिंदु ॥ फरीदा रही सु बेडी हिंडु दी गई
 कथूरी गंधु ॥ ३३ ॥ जोबन जादे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥ फरीदा कितीं, जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥
 ३४ ॥ फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहि विछावण लेफु ॥ एहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ॥ ३५ ॥ बिरहा
 बिरहा आखीरे बिरहा तू सुलतानु ॥ फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥ ३६ ॥ फरीदा ए विसु
 गंदला धरीआं खंडु लिवाडि ॥ इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाडि ॥ ३७ ॥ फरीदा चारि गवाइआ हँडि कै चारि
 गवाइआ सँमि ॥ लेखा रबु मंगेसीआ तू आंहो केहे कँमि ॥ ३८ ॥ फरीदा दरि दरवाजै जाइ कै किउ डिठो घडीआलु ॥
 एहु निदोसां मारीरे हम दोसां दा किआ हालु ॥ ३९ ॥ घडीए घडीए मारीरे पहरी लहै सजाइ ॥ सो हेडा घडीआल जिउ

दुखी रैणिं विहाइ ॥ ४० ॥ बुढा होआ सेख फरीदु कँबणि लगी देह ॥ जे सउ वरिहआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥ ४१
 ॥ फरीदा बारि पराइरे बैसणा साई मुझै न देहि ॥ जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥ ४२ ॥ कँधि कुहाड़ा सिरिं घड़ा
 वणिं कै सरु लोहारु ॥ फरीदा हउ लोड़ी सहु आपणा तू लोड़हि अँगिआर ॥ ४३ ॥ फरीदा इकना आटा अगला इकना
 नाही लोणु ॥ अगै गए सिँजापसनि चोटां खासी कउणु ॥ ४४ ॥ पासि दमामे छतु सिरिं भेरी सडो रड ॥ जाइ सुते जीराण
 महि थीए अतीमा गड ॥ ४५ ॥ फरीदा कोठे मँडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥ कूड़ा सउदा करिं गए गोरी आइ पर ॥ ४६
 ॥ फरीदा खिँथडि मखा अगलीआ जिँदु न काई मेख ॥ वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ॥ ४७ ॥ फरीदा दुहु दीवी
 बलँदिआ मलकु बहिठा आइ ॥ गडु लीता घटु लुटिआ दीवडे गइआ बुझाइ ॥ ४८ ॥ फरीदा वेखु कपाहै जिं थीआ जिं
 सिरिं थीआ तिलाह ॥ कमादँ अरु कागदँ कुँने कोइलिंआह ॥ मँदँ अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥ ४९ ॥ फरीदा
 कँनि मुसला सूफु गलिं दिलिं काती गुडु वाति ॥ बाहरिं दिसै चानणा दिलिं अधिआरी राति ॥ ५० ॥ फरीदा रती रतु न
 निकलै जे तनु चीरै कोइ ॥ जो तन रते ख सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥ ५१ ॥ मः ३ ॥ इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तँनु न
 होइ ॥ जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइ ॥ भै पइरे तनु खीणु होइ लोभु रतु विचहु जाइ ॥ जिउ बैसँतरिं धातु
 सुधु होइ तितु हरिं का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ नानक ते जन सोहणे जिं रते हरिं रँगु लाइ ॥ ५२ ॥ फरीदा सोई सरवरु
 दूढि लहु जिथहु लभी वथु ॥ छपडि दूढै किआ होवै चिकडि डुबै हथु ॥ ५३ ॥ फरीदा नँढी कँतु न राविओ वडी थी मुईआसु
 ॥ धन कूकेंदी गोर में तै सह ना मिलीआसु ॥ ५४ ॥ फरीदा सिरु पलिंआ दाड़ी पली मुछां भी पलीआं ॥ रे मन गहिले
 बावले माणहि किआ रलीआं ॥ ५५ ॥ फरीदा कोठे धुकणु केतड़ा पिर नीदड़ी निवारि ॥ जो दिह लधे गाणवे गए विलाड़ी
 विलाडि ॥ ५६ ॥ फरीदा कोठे मँडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥ मिटीं पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥ ५७ ॥

फरीदा मँडप मालु न लाइ मरग सताणी चिति धरि ॥ साई जाइ सम्हालि जिथै ही तउ वँजणा ॥ ५८ ॥ फरीदा जिन्ही कँमी
 नाहि गुण ते कँमडे विसारि ॥ मत्तु सरमँदा थीवही साई दै दरबारि ॥ ५९ ॥ फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि
 ॥ दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां डी जीरांदि ॥ ६० ॥ फरीदा काले मैडे कपडे काला मैडा वेसु ॥ गुनही भरिआ मै फिरा लोको कहै
 दरवेसु ॥ ६१ ॥ तती तोइ न पलवै जे जलि टुबी देइ ॥ फरीदा जो डोहागणि ख दी झूरेदी झूरेइ ॥ ६२ ॥ जां कुआरी ता चाउ
 वीवाही तां मामले ॥ फरीदा एहो पछोताउ वति कुआरी न थीऐ ॥ ६३ ॥ कलर केरी छपड़ी आइ उलथे हँझ ॥ चिँजू बोड़निह
 ना पीवहि उडण सँदी डँझ ॥ ६४ ॥ हँसु उडरि कोध्रै पइआ लोको विडारणि जाइ ॥ गहिला लोको न जाणदा हँसु न कोध्रा खाइ
 ॥ ६५ ॥ चलि चलि गईआं पँखीआं जिन्ही वसाए तल ॥ फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥ ६६ ॥ फरीदा
 इट सिराणे भुइ सवणु कीड़ा लड़िओ मासि ॥ केतड़िआ जुग वापरे इकतु पइआ पासि ॥ ६७ ॥ फरीदा भँनी घड़ी सवँनवी टूटी
 नागर लजु ॥ अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु ॥ ६८ ॥ फरीदा भँनी घड़ी सवँनवी टूटी नागर लजु ॥ जो सजण भुइ
 भारु थे से किउ आवहि अजु ॥ ६९ ॥ फरीदा बे निवाजा कुतिआ एह न भली रीति ॥ कबही चलि न आइआ पँजे वखत
 मसीति ॥ ७० ॥ उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि ॥ जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥ ७१ ॥ जो
 सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥ कुँने हेठि जलाईऐ बालण सँदै थाइ ॥ ७२ ॥ फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू
 जाणिओहि ॥ तै पासहु ओइ लदि गए तूँ अजै न पतीणोहि ॥ ७३ ॥ फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ॥ अगै मूलि न
 आवसी दोजक सँदी भाहि ॥ ७४ ॥ महला ५ ॥ फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै ख माहि ॥ मँदा किस नो आखीऐ जां
 तिसु बिनु कोई नाहि ॥ ७५ ॥ फरीदा जि दिहि नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख ॥ पवनि न इती मामले सहां न इती दुख ॥
 ७६ ॥ चबण चलण रतँन से सुणीअर बहि गए ॥ हेडे मुती धाह से जानी चलि गए ॥ ७७ ॥ फरीदा

बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥ देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥ ७८ ॥ फरीदा पँख पराहुणी दुनी सुहावा
 बागु ॥ नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥ ७९ ॥ फरीदा राति कथूरी वँडीऐ सुतिआ मिले न भाउ ॥ जिँन्हा
 नैण नीं,द्रावले तिँन्हा मिलण कुआउ ॥ ८० ॥ फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥ ऊचे चडिं कै देखिआ
 तां घरि घरि एहा अगि ॥ ८१ ॥ महला ५ ॥ फरीदा भूमि रँगावली मँझि विसूला बाग ॥ जो जन पीरि निवाजिआ तिँन्हा
 अँच न लाग ॥ ८२ ॥ महला ५ ॥ फरीदा उमर सुहावडी सँगि सुवँनडी देह ॥ विरले केई पाईअनि जिँन्हा पिआरे नेह ॥
 ८३ ॥ कँधी वहण न ढाहि तउ भी लेखा देवणा ॥ जिधरि रब रजाइ वहणु तिदाऊ गँउ करे ॥ ८४ ॥ फरीदा दुखा सेती दिहु
 गइआ सूलां सेती राति ॥ खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कपर वाति ॥ ८५ ॥ लँमी लँमी नदी वहै कँधी केरै हेति ॥ बेड़े नो कपरु
 किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥ ८६ ॥ फरीदा गलीं, सु सजण वीह इकु ढूँढेदी न लहां ॥ धुखां जिउ मांलीह कारणि तिँन्हा
 मा पिरि ॥ ८७ ॥ फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु ॥ कँनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु ॥ ८८ ॥ फरीदा
 रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहँन्हि ॥ जो जो वँजै डीहड़ा सो उमर हथ पवँनि ॥ ८९ ॥ फरीदा तनु सुका पिँजरु थीआ
 तलीआं खूँडहि काग ॥ अजै सुखु न बाहुडिओ देखु बँदे के भाग ॥ ९० ॥ कागा करँग ढँढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥
 ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥ ९१ ॥ कागा चूँडि न पिँजरा बसै त उडरि जाहि ॥ जितु पिँजरै मेरा सहु वसै
 मासु न तिदू खाहि ॥ ९२ ॥ फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥ सरपर मैथै आवणा मरणहु ना डरिआहु
 ॥ ९३ ॥ एनी लोइणी देखदिआ केती चलिं गई ॥ फरीदा लोकां आपो आपणी मै आपणी पई ॥ ९४ ॥ आपु सचारहि मै
 मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥ फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥ ९५ ॥ कँधी उतै रुखड़ा किचरकु बँने धीरु
 ॥ फरीदा कचै भाँडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥ ९६ ॥ फरीदा महला निसखण हरि गए वासा आइआ तलिं ॥

गोरं से निमाणीआ बहसनि रूहां मलिं ॥ आरबीं सेखा बँदगी चलणु अजु कि कलिं ॥ ९७ ॥ फरीदा मउतै दा बँना एवै दिसै
 जिउ दरीआवै ढाहा ॥ अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥ इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥
 अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह ओगाहा ॥ ९८ ॥ फरीदा दरीआवै कँन्है बगुला बैठा केल करे ॥ केल करेदे हँझ नो
 अचिँते बाज पर ॥ बाज पर तिसु ख दे केलां विसरीआं ॥ जो मनि चिति न चेतै सनि सो गाली ख कीआं ॥ ९९ ॥ साढे
 त्रै मण देहुरी चलै पाणी अँनि ॥ आइओ बँदा दुनी विचि वति आसूणी बँन्हि ॥ मलकल मउत जां आवसी सभ दरवाजे भँनि
 ॥ तिन्हा पिआरिआ भाईआं अगै दिता बँन्हि ॥ वेखहु बँदा चलिआ चहु जणिआ दै कँन्हि ॥ फरीदा अमल जि कीते दुनी
 विचि दरगह आए कँमि ॥ १०० ॥ फरीदा हउ बलिहारी तिन्हा पँखीआ जँगलि जिन्हा वासु ॥ ककरु चुगनि थलि वसनि
 ख न छोडनि पासु ॥ १०१ ॥ फरीदा रुति फिरी वणु कँबिआ पत झडे झडि पाहि ॥ चारे कुँडा ढूँडीआं रहणु किथाऊ नाहि
 ॥ १०२ ॥ फरीदा पाडि पटोला धज करी कँबलडी पहिरेउ ॥ जिन्ही वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥ १०३ ॥ मः ३ ॥
 काइ पटोला पाडती कँबलडी पहिरेइ ॥ नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ ॥ १०४ ॥ मः ५ ॥ फरीदा
 गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबि आगाह ॥ खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥ १०५ ॥ फरीदा तिना मुख
 डरावणे जिना विसारिओनु नाउ ॥ ऐथै दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ॥ १०६ ॥ फरीदा पिछल राति न जागिओहि
 जीवदड़ो मुइओहि ॥ जे तै खु विसारिआ त रबि न विसरिओहि ॥ १०७ ॥ मः ५ ॥ फरीदा कँतु रँगवला वडा वेमुहताजु
 ॥ अलह सेती रतिआ एहु सचावां साजु ॥ १०८ ॥ मः ५ ॥ फरीदा दुखु सुखु इकु करि दिल ते लाहि विकारु ॥ अलह
 भावै सो भला तां लभी दरबारु ॥ १०९ ॥ मः ५ ॥ फरीदा दुनी वजाई वजदी तूँ भी वजहि नालिं ॥ सोई जीउ न वजदा
 जिंसु अलहु करदा सार ॥ ११० ॥ मः ५ ॥ फरीदा दिलु रता इसु दुनी सिउ दुनी न कितै कँमि ॥ मिसल फकीरां गाखडी सु

पाईऐ पूर करँमि ॥ १११ ॥ पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥ जो जागँन्हि लहँनि से साई कँनो दाति ॥ ११२ ॥ दाती
 साहिब सँदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ इकि जागँदे ना लहन्हि इकन्हा सुतिआ देइ उठालि ॥ ११३ ॥ ढूढेदीए सुहाग कू तउ
 तनि काई कोर ॥ जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥ ११४ ॥ सबर मँझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥ सरब सँदा बाणु
 खालकु खता न करी ॥ ११५ ॥ सरब अँदरि साबरी तनु एवै जालेन्हि ॥ होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥ ११६ ॥
 सबरु एहु सुआउ जे तूँ बँदा दिडु करहि ॥ वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥ ११७ ॥ फरीदा दरवेसी गाखड़ी चोपड़ी
 परीति ॥ इकनि किनै चालीऐ दरवेसावी रीति ॥ ११८ ॥ तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलँन्हि ॥ पैरी थकां सिरि जुलां जे मूँ
 पिरी मिलँन्हि ॥ ११९ ॥ तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ सिरि पैरी किआ फेड़िआ अँदरि पिरी निहालि ॥ १२०
 ॥ हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥ नानक अलखु न लखीऐ गुरुमुखि देइ दिखालि ॥ १२१ ॥ हँसा देखि तरँदिआ बगा
 आइआ चाउ ॥ डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥ १२२ ॥ मै जाणिआ वड हँसु है तां मै कीता सँगु ॥ जे जाणा बगु
 बपुड़ा जनि न भेड़ी अँगु ॥ १२३ ॥ किआ हँसु किआ बगुला जाकउ नदरि धरे ॥ जे तिसु भावै नानका कागहु हँसु करे ॥ १२४
 ॥ सरवर पँखी हेकड़ो फाहीवाल पचास ॥ इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ॥ १२५ ॥ कवणु सु अखरु कवणु गुणु
 कवणु सु मणीआ मँतु ॥ कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कँतु ॥ १२६ ॥ निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ
 मँतु ॥ ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आई कँतु ॥ १२७ ॥ मति होदी होइ इआणा ॥ ताण होदे होइ निताना ॥ अणहोदे आपु
 वँडाए ॥ को ऐसा भगतु सदाए ॥ १२८ ॥ इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥ हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ
 अमोलवे ॥ १२९ ॥ सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥ जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥ १३० ॥

१३ सति नाम करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मैरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

सवथे श्री मुखवाक्य महला ९ ॥

आदि पुरख करतार करण कारण सभ आपे ॥ सब रहिओ भरपूरि सगल घट रहिओ बिआपे ॥ न्यापतु देखीऐ जगति जानै कउनु तेरी गति सब की रख्या करै आपे हरि पति ॥ अबिनासी अबिगत आपे आपि आपि उतपति ॥ एकै तूही एकै अन नाही तुम भति ॥ हरि अँतु नाही पारावारु कउनु है करै बीचारु जगत पिता है सब प्रान को अधारु ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ १ ॥ अँमित प्रवाह सरि अतुल भँडार भरि परै ही ते परै अपर अपार परि ॥ आपुनो भावनु करि मँत्रि न दूसरो धरि ओपति परलौ एकै निमख तु घरि ॥ आन नाही समरि उजिआरो निरमरि कोटि पराछत जाहि नाम लीए हरि हरि ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ २ ॥

सगल भवन धारे एक थें कीए बिसथारे पूरि रहिओ सब महि आपि है निरारे ॥ हरि गुन नाही अंत पारे जीअ जंत सभि
 थारे सगल को दाता एकै अलख मुरारे ॥ आप ही धारन धारे कुदरति है देखारे बरनु चिहनु नाही मुख न मसारे ॥ जनु
 नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ ३ ॥ सरब
 गुण निधानं कीमति न ग्यानं ध्यानं ऊचे ते उचौ जानीजै प्रभ तेरो थानं ॥ मनु धनु तेरो प्रानं एकै सूति है जहानं कवन
 उपमा देउ बडे ते बडानं ॥ जानै कउनु तेरो भेउ अलख अपार देउ अकल कला है प्रभ सरब को धानं ॥ जन नानकु भगतु
 दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ ४ ॥ निरंकारु आकार
 अछल पूरन अबिनासी ॥ हरखवंत आनंत रूप निरमल बिगासी ॥ गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नही पासी ॥ जा
 कउ होंहि क्रिपाल सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ॥ धंनि धंनि ते धंनि जन जिह क्रिपालु हरि हरि भयउ ॥ हरि गुरु नानकु
 जिंन परसिअउ सि जनम मरण दुह थे रहिओ ॥ ५ ॥ सति सति हरि सति सति सते सति भणीऐ ॥ दूसर आन न अवरु
 पुरखु पऊरातनु सुणीऐ ॥ अंम्रितु हरि को नामु लैत मनि सभ सुख पाए ॥ जेह रसन चाखिओ तेह जन त्रिपति अघाए
 ॥ जिह ठाकुरु सुप्रसंनु भयो सतसंगति तिह पिआरु ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ तिन्ह सभ कुल कीओ उधारु
 ॥ ६ ॥ सचु सभा दीबाणु सचु सचे पहि धरिओ ॥ सचै तरवति निवासु सचु तपावसु करिओ ॥ सचि सिरज्युउ संसारु
 आपि आभुलु न भुलउ ॥ रतन नामु अपारु कीम नहु पवै अमुलउ ॥ जिह क्रिपालु होयउ गुर्विंदु सरब सुख तिनहू पाए
 ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ ते बहुड़ि फिरि जोनि न आए ॥ ७ ॥ कवनु जोगु कउनु ग्यानु ध्यानु कवन बिधि
 उस्तति करीऐ ॥ सिध साधिक तेतीस कोरि तिरु कीम न परीऐ ॥ ब्रहमादिक सनकादि सेख गुण अंतु न पाए ॥ अगहु
 गहिओ नही जाइ पूरि सब रहिओ समाए ॥ जिह काटी सिलक दयाल प्रभि सेइ जन लगे भगते ॥ हरि गुरु

करत अघनां ॥ मिरतु मँजार पसारि मुखु निरखत भुँचत भुगति भूख भुखना ॥ सिमरि गुपाल दइआल सतसँगति
 नानक जगु जानत सुपना ॥ ४ ॥ देह न गेह न नेह न नीता माइआ मत कहा लउ गारहु ॥ छत्र न पत्र न चउर न चावर
 बहती जात रिदै न बिचारहु ॥ हथ न अस्व न गज सिँघासन छिन महि तिआगत नांग सिधारहु ॥ सूर न बीर न मीर न
 खानम सँगि न कोऊ द्रिसटि निहारहु ॥ कोट न ओट न कोस न छोटा करत बिकार दोऊ कर झारहु ॥ मित्र न पुत्र कलत्र
 साजन सख उलटत जात बिरख की छारहु ॥ दीन दयाल पुरख प्रभ पूरन छिन छिन सिमरहु अगम अपारहु ॥ स्त्रीपति
 नाथ सरणि नानक जन हे भगवँत क्रिपा करि तारहु ॥ ५ ॥ प्रान मान दान मग जोहन हीतु चीतु दे ले ले पारी ॥
 साजन सैन मीत सुत भाई ताहू ते ले रखी निरारी ॥ धावन पावन कूर कमावन इह बिधि करत अउध तन जारी ॥ कर्म
 धर्म सँजम सुच नेमा चँचल सँगि सगल बिधि हारी ॥ पसु पँखी बिरख असथावर बहु बिधि जोनि भ्रमिओ अति भारी
 ॥ खिनु पलु चसा नामु नही सिमरिओ दीना नाथ प्रानपति सारी ॥ खान पान मीठ रस भोजन अँत की बार होत कत
 खारी ॥ नानक सँत चरन सँगि उधरे होरि माइआ मगन चले सभि डारी ॥ ६ ॥ ब्रहमादिक सिव छँद मुनीसुर रसकि
 रसकि ठाकुर गुन गावत ॥ इंद्र मुनिँद्र खोजते गोरख धरणि गगन आवत फुनि धावत ॥ सिध सनुख्य देव अरु दानव
 इकु तिलु ता को मरमु न पावत ॥ प्रिअ प्रभ प्रीति प्रेम रस भगती हरि जन ता कै दरसि समावत ॥ तिसहि तिआगि आन
 कउ जाचहि मुख दँत रसन सगल घसि जावत ॥ रे मन मूड सिमरि सुखदाता नानक दास तुझहि समझावत ॥ ७ ॥
 माइआ रँग बिरँग करत भ्रम मोह कै कूपि गुबारि परिओ है ॥ एता गबु अकासि न मावत बिसटा अस्त क्रिमि उदरु
 भरिओ है ॥ दह दिस धाइ महा बिखिआ कउ पर धन छीनि अगिआन हरिओ है ॥ जोबन बीति जरा रोगि ग्रसिओ
 जमदूतन डँनु मिरतु मरिओ है ॥ अनिक जोनि सँकट नरक भुँचत सासन दूख गरति गरिओ है ॥ प्रेम भगति

उधरहि से नानक करि किरपा सँतु आपि करिओ है ॥ ८ ॥ गुण समूह फल सगल मनोरथ पूरन होई आस हमारी ॥ अउखध मंत्र तंत्र पर दुख हर सरब रोग खँडण गुणकारी ॥ काम क्रोध मद मतसर त्रिसना बिनसि जाहि हरि नामु उचारी ॥ इसनान दान तापन सुचि किरिआ चरण कमल हिरदै प्रभ धारी ॥ साजन मीत सरवा हरि बँधप जीअ धान प्रभ प्रान अधारी ॥ ओट गही सुआमी समरथह नानक दास सदा बलिहारी ॥ ९ ॥ आवध कटिओ न जात प्रेम रस चरन कमल सँगि ॥ दावनि बँधिओ न जात बिधे मन दरस मगि ॥ पावक जरिओ न जात रहिओ जन धूरि लागि ॥ नीरु न साकसि बोरि चलहि हरि पँथि पगि ॥ नानक रोग दोख अघ मोह छिदे हरि नाम खगि ॥ १ ॥ १० ॥ उदमु करि लागे बहु भाती बिचरहि अनिक सासत्र बहु खटूआ ॥ भसम लगाइ तीरथ बहु भ्रमते सुखम देहु बँधहि बहु जटूआ ॥ बिनु हरि भजन सगल दुख पावत जिउ प्रेम बढाइ सूत के हटूआ ॥ पूजा चक्र करत सोमपाका अनिक भांति थाटहि करि थटूआ ॥ २ ॥ ११ ॥ २० ॥

सर्वईए महलो पहिले के १ १३८९ गुरु प्रसादि ॥

इक मनि पुरखु धिआइ बरदाता ॥ सँत सहारु सदा बिखिआता ॥ तासु चरन ले रिदै बसावउ ॥ तउ परम गुरू नानक गुन गावउ ॥ १ ॥ गावउ गुन परम गुरू सुख सागर दुरत निवारण सबद सरे ॥ गावहि गँभीर धीर मति सागर जोगी जँगम धिआनु धरे ॥ गावहि ईंद्रादि भगत प्रहिलादिक आतम रसु जिनि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ २ ॥ गावहि जनकादि जुगति जोगेसुर हरि रस पूरन सरब कला ॥ गावहि सनकादि साध सिधादिक मुनि जन गावहि अछल छला ॥ गावै गुण धोमु अटल मँडलवै भगति भाइ रसु जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ३ ॥ गावहि कपिलादि आदि जोगेसुर अपरँपर अवतार वरो ॥ गावै जमदगनि परसारमेसुर कर कुठारु रघु तेजु हरिओ ॥ उधौ

अक्रूरु बिदरु गुण गावै सरबातमु जिनि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ४ ॥
 गावहि गुण बरन चारि खट दरसन ब्रहमादिक सिमरँथि गुना ॥ गावै गुण सेसु सहस जिहबा रस आदि अँति लिव लागि
 धुना ॥ गावै गुण महादेउ बैरागी जिनि धिआन निरँतरि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि
 माणिओ ॥ ५ ॥ राजु जोगु माणिओ बसिओ निरवैरु रिदँतरि ॥ खिसटि सगल उधरी नामि ले तरिओ निरँतरि ॥ गुण
 गावहि सनकदि आदि जनकादि जुगह लागि ॥ धँनि धँनि गुरु धँनि जनमु सकयथु भलौ जगि ॥ पातालपुरी जैकार धुनि
 कबि जन कल वखाणिओ ॥ हरि नाम रसिक नानक गुर राजु जोगु तै माणिओ ॥ ६ ॥ सतजुगि तै माणिओ छलिओ
 बलि बावन भाइओ ॥ त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ ॥ दुआपुरि क्रिसन मुरारि कँसु किरतारथु कीओ ॥ उग्रसैण
 कउ राजु अभै भगतह जन दीओ ॥ कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अँगदु अमरु कहाइओ ॥ स्त्री गुरु राजु अबिचलु अटलु
 आदि पुरखि फुरमाइओ ॥ ७ ॥ गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन ॥ नामा भगतु कबीरु सदा गावहि सम लोचन
 ॥ भगतु बेणि गुण रवै सहजि आतम रँगु माणै ॥ जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरु न जाणै ॥ सुखदेउ
 परीख्यतु गुण रवै गोतम रिखि जसु गाइओ ॥ कबि कल सुजसु नानक गुर नित नवतनु जगि छाइओ ॥ ८ ॥ गुण गावहि
 पायालि भगत नागादि भुयँगम ॥ महादेउ गुण रवै सदा जोगी जति जँगम ॥ गुण गावै मुनि व्यासु जिनि बेद व्याकरण
 बीचारिअ ॥ ब्रहमा गुण उचरै जिनि हुकमि सभ खिसटि सवारीअ ॥ ब्रहमँड खँड पूरन ब्रहमु गुण निरगुण सम जाणिओ ॥
 जपु कल सुजसु नानक गुर सहजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ९ ॥ गुण गावहि नव नाथ धँनि गुरु साचि समाइओ ॥
 मांधाता गुण रवै जेन चक्रवै कहाइओ ॥ गुण गावै बलि राउ सपत पातालि बसँतौ ॥ भरथरि गुण उचरै सदा गुर सँगि रहँतौ
 ॥ दूरबा पररउ अँगरै गुर नानक जसु गाइओ ॥ कबि कल सुजसु नानक गुर घटि घटि सहजि समाइओ ॥ १० ॥

सवईऐ महले दूजे के २ १३ सतिगुरु प्रसादि ॥

सोई पुरखु धँनु करता कारण करतारु करण समरथो ॥ सतिगुरु धँनु नानकु मसतकि तुम धरिओ जिनि हथो ॥ त
धरिओ मसतकि हथु सहजिं अमिउ वुठउ छजिं सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥ मारिओ कँटकु कालु गरजिं धावतु
लीओ बरजिं पँच भूत एक घरिं राखिं ले समजिं ॥ जगु जीतउ गुरु दुआरिं खेलहिं समत सारिं रथु उनमनिं लिव राखिं
निरँकारिं ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारिं ॥ १ ॥ जा की द्रिसटि अँम्रित धार
कालुख खनि उतार तिमर अग्यान जाहिं दरस दुआर ॥ ओइ जु सेवहिं सबदु सारु गाखडी बिखम कार ते नर भव उतारिं
कीए निरभार ॥ सतसंगति सहज सारिं जागीले गुरु बीचारिं निँमरी भूत सदीव परम पिआरि ॥ कहु कीरति कल सहार
सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ २ ॥ तै तउ द्रिडिओ नामु अपारु बिमल जासु बिथारु साधिक सिध
सुजन जीआ को अधारु ॥ तू ता जनिक राजा अउतारु सबदु संसारिं सारु रहहिं जगत्र जल पदम बीचार ॥
कलिपतरु रोग बिदारु संसार ताप निवारु आतमा त्रिबिधि तैरै एक लिव तार ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप
मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ ३ ॥ तै ता हदरथि पाइओ मानु सेविआ गुरु परवानु साधि अजगरु जिनि
कीआ उनमानु ॥ हरिं हरिं दरस समान आतमा वँतगिआन जाणीअ अकल गति गुरु परवान ॥ जा की द्रिसटि अचल
ठाण बिमल बुधि सुथान पहिरिं सील सनाहु सकति बिदारि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु
परसि मुरारि ॥ ४ ॥ द्रिसटि धरत तम हरन दहन अघ पाप प्रनासन ॥ सबद सूर बलवँत काम अरु क्रोध बिनासन ॥
लोभ मोह वसि करण सरण जाचिक प्रतिपालण ॥ आतम रत संग्रहण कहण अँम्रित कल ढालण ॥ सतिगुरु कल
सतिगुरु तिलकु सति लागै सो पै तरै ॥ गुरु जगत फिरणसीह अँगरउ राजु जोगु लहणा करै ॥ ५ ॥ सदा अकल

लिव रहै करन सिउ इछा चारह ॥ द्रुम सपूर जिउ निवै खवै कसु बिमल बीचारह ॥ इहै ततु जाणिओ सरब गति अलखु बिडाणी ॥
 ॥ सहज भाइ सँचिओ किरणि अँम्रित कल बाणी ॥ गुर गमि प्रमाणु तै पाइओ सतु सँतोखु ग्राहजि लयौ ॥ हरि परसिओ कलु
 समुलवै जन दरसनु लहणे भयौ ॥ ६ ॥ मनि बिसासु पाइओ गहरि गहु हदरथि दीओ ॥ गरल नासु तनि नठयो अमिउ
 अँटरगति पीओ ॥ रिदि बिगासु जागिओ अलखि कल धरी जुगँतरि ॥ सतिगुरु सहज समाधि रविओ सामानि निरँतरि ॥
 उदारउ चित दारिद हरन पिखँतिह कलमल त्रसन ॥ सद रँगि सहजि कलु उचरै जसु जँपउ लहणे रसन ॥ ७ ॥ नामु अवखधु
 नामु आधारु अरु नामु समाधि सुखु सदा नाम नीसाणु सोहै ॥ रँगि रतौ नाम सिउ कल नामु सुरि नरह बोहै ॥ नाम परसु जिनि
 पाइओ सतु प्रगटिओ रवि लोइ ॥ दरसनि परसिरे गुरु कै अठसठि मजनु होइ ॥ ८ ॥ सचु तीरथु सचु इसनानु अरु भोजनु
 भाउ सचु सदा सचु भाखँतु सोहै ॥ सचु पाइओ गुर सबदि सचु नामु मँगती बोहै ॥ जिंसु सचु सँजमु वरतु सचु कबि जन कल
 वखाणु ॥ दरसनि परसिरे गुरु कै सचु जनु परवाणु ॥ ९ ॥ अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥ काम क्रोध
 अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल ॥ सदा सुखु मनि वसै दूखु सँसारह खोवै ॥ गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै
 ॥ सु कहु टल गुरु सेवीरे अहिनिंसि सहजि सुभाइ ॥ दरसनि परसिरे गुरु कै जनम मरण दुख जाइ ॥ १० ॥

सवाईए महले तीजे के ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

सोई पुरखु सिवरि साचा जा का इकु नामु अछलु सँसारे ॥ जिनि भगत भवजल तारे सिमरहु सोई नामु परधानु ॥ तितु नामि
 रसिकु नानकु लहणा थपिओ जेन सब सिधी ॥ कवि जन कल्य सबुधी कीरति जन अमरदास बिस्तरिया ॥ कीरति रवि किरणि
 प्रगटि सँसारह साख तरोवर मवलसरा ॥ उतरि दखिणहि पुबि अरु पस्चमि जै जैकारु जपँथि नरा ॥ हरि नामु रसनि

गुरुमुखि बरदायउ उलटि गंग पस्चमि धरीआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुरु कउ फुरिआ ॥ १ ॥
 सिमरहि सोई नामु जरख्य अरु किंनर साधिक सिध समाधि हरा ॥ सिमरहि नख्यत्र अवर धूमंडल नारदादि प्रहलादि वरा
 ॥ ससीअरु अरु सूरु नामु उलासहि सैल लोअ जिनि उधरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुरु
 कउ फुरिआ ॥ २ ॥ सोई नामु सिवरि नव नाथ निरंजनु सिव सनकादि समुधरिआ ॥ वचरासीह सिध बुध जितु राते
 अंबरीक भवजलु तरिआ ॥ उधउ अक्रूरु तिलोचनु नामा कलि कबीर किलविख हरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव
 तारणु अमरदास गुरु कउ फुरिआ ॥ ३ ॥ तितु नामि लागि तेतीस धिआवहि जती तपीसुर मनि वसिआ ॥ सोई नामु
 सिमरि गंगेव पितामह चरण चित अम्रित रसिआ ॥ तितु नामि गुरु गंभीर गरुअ मति सत करि संगति उधरीआ ॥
 सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु आमरदास गुरु कउ फुरिआ ॥ ४ ॥ नाम किति संसारि किरणि रवि सुरतर साखह ॥
 उतरिं देखिणि पुबिं देसि पस्चमि जसु भाखह ॥ जनमु त इहु सकयथु जितु नामु हरिं रिदै निवासै ॥ सुरिं नर गण गंधरब
 छिअ दरसन आसासै ॥ भलउ प्रसिधु तेजो तणौ कल्य जोडिं कर ध्याइअओ ॥ सोई नामु भगत भवजल हरणु गुरु
 अमरदास तै पाइओ ॥ ५ ॥ नामु धिआवहि देव तेतीस अरु साधिक सिध नर नामि खंड ब्रहमंड धारे ॥ जह नामु
 समाधिओ हरखु सोगु सम करि सहारे ॥ नामु सिरोमणि सरब मै भगत रहे लिव धारि ॥ सोई नामु पदारथु अमर गुरु तुसि
 दीओ करतारि ॥ ६ ॥ सति सूरउ सीलिं बलवंतु सत भाइ संगति सघन गरुअ मति निरवैरि लीणा ॥ जिंसु धीरजु धुरि
 धवलु धुजा सेति बैकुंठ बीणा ॥ परसहि संत पिआरु जिह करतारह संजोगु ॥ सतिगुरु सेवि सुखु पाइओ अमरि गुरि
 कीतउ जोगु ॥ ७ ॥ नामु नावणु नामु रस खाणु अरु भोजनु नाम रसु सदा चाय मुखि मिस्ट बाणी ॥ धनि सतिगुरु
 सेविओ जिंसु पसाइ गति अगम जाणी ॥ कुल संबूह समुधरे पायउ नाम निवासु ॥ सकयथु जनमु कल्युचरै गुरु परस्यिउ

अमर प्रगासु ॥ ८ ॥ बारिजु करि दाहिणै सिधि सनमुख मुखु जोवै ॥ रिधि बसै बांवांगि जु तीनि लोकांतर मोहै ॥ रिदै
 बसै अकहीउ सोइ रसु तिन ही जातउ ॥ मुखहु भगति उचरै अमरु गुरु इतु रंगि रातउ ॥ मसतकि नीसाणु सचउ करम
 कल्य जोडि कर ध्याइअउ ॥ परसिअउ गुरु सतिगुरु तिलकु सरब इछ तिनि पाइअउ ॥ ९ ॥ चरण त पर सकयथ चरण
 गुरु अमर पवलि रय ॥ हथ त पर सकयथ हथ लगहि गुरु अमर पय ॥ जीह त पर सकयथ जीह गुरु अमरु भणिजै ॥
 नैण त पर सकयथ नयणि गुरु अमरु पिखिजै ॥ श्रवण त पर सकयथ श्रवणि गुरु अमरु सुणिजै ॥ सकयथु सु हीउ
 जितु हीअ बसै गुरु अमरदासु निज जगत पित ॥ सकयथु सु सिरु जालपु भणै जु सिरु निवै गुरु अमर नित ॥ १ ॥ १०
 ॥ तिनर दुख नह भुख तिनर निधन नहु कहीअहि ॥ तिनर सोकु नहु हूरे तिनर से अंतु न लहीअहि ॥ तिनर सेव नहु
 करहि तिनर सय सहस समपहि ॥ तिनर दुलीचै बहहि ति नर उथपि बिथपहि ॥ सुख लहहि तिनर संसार महि अभै पटु
 रिप मधि तिह ॥ सकयथ तिनर जालपु भणै गुरु अमरदासु सुप्रसंनु जिह ॥ २ ॥ ११ ॥ तै पढिअउ इकु मनि धरिअउ
 इकु करि इकु पछाणिओ ॥ नयणि बयणि मुहि इकु इकु दुहु ठांड न जाणिओ ॥ सुपनि इकु परतखि इकु इकस महि
 लीणउ ॥ तीस इकु अरु पंजि सिधु पैतीस न खीणउ ॥ इकहु जिं लखु लखहु अलखु है इकु इकु करि वरनिअउ ॥ गुरु
 अमरदास जालपु भणै तू इकु लोडहि इकु मनिअउ ॥ ३ ॥ १२ ॥ जि मति गही जैदेवि जि मति नामै संमाणी ॥ जि
 मति त्रिलोचन चिति भगत कंबीरहि जाणी ॥ रुकमांगद करतूति रामु जंपहु नित भाई ॥ अंमरीकि प्रहलादि सरणि
 गोबिंद गति पाई ॥ तै लोभु क्रोधु त्रिसना तजी सुमति जल्य जाणी जुगति ॥ गुरु अमरदासु निज भगतु है देखि दरसु
 पावउ मुकति ॥ ४ ॥ १३ ॥ गुरु अमरदासु परसीरे पुहमि पातिक बिनासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीरे सिध साधिक
 आसासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीरे धिआनु लहीरे पउ मुकिहि ॥ गुरु अमरदासु परसीरे अभउ लभै गउ चुकिहि ॥

इकु बिनि दुगण जु तउ रहै जा सुमंत्रि मानव हिलहि ॥ जालपा पदारथ इतडे गुर अमरदासि डिठै मिलहि ॥ ५ ॥ १४ ॥
 सचु नामु करतारु सु द्रिडु नानकि संग्रहिअउ ॥ ता ते अंगदु लहणा प्रगटि तासु चरणह लिव रहिअउ ॥ तितु कुलि गुर
 अमरदासु आसा निवासु तासु गुण कवण वखाणउ ॥ जो गुण अलख अगंम तिनह गुण अंतु न जाणउ ॥ बोहिथउ बिधातै
 निरमयौ सभ संगति कुल उधरण ॥ गुर अमरदास कीरतु कहै त्राहि त्राहि तुअ पा सरण ॥ १ ॥ १५ ॥ आपि नराइणु कला
 धारि जग महि परवरियउ ॥ निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥ जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥
 जिह मिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥ नानक कुलि निमलु अवतरियउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥ गुर अमरदास
 तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥ २ ॥ १६ ॥ जपु तपु सतु संतोखु पिखि दरसनु गुरसिखहु ॥ सरणि परहि ते
 उबरहि छोडि जम पुर की लिखह ॥ भगति भाइ भरपूरु रिदै उचरै करतारै ॥ गुरु गउहरु दरीआउ पलक डुबंत्यह तारै ॥
 नानक कुलि निमलु अवतरियउ गुण करतारै उचरै ॥ गुरु अमरदासु जिन्ह सेविअउ तिन्ह दुखु दरिद्रु परहरि परै ॥ ३ ॥ १७
 ॥ चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि न सकउ ॥ सब चित तुडु पासि साधसंगति हउ तकउ ॥ तेरै हुकमि पवै
 नीसाणु तउ करउ साहिब की सेवा ॥ जब गुरु देखै सुभ दिसटि नामु करता मुखि मेवा ॥ अगम अलख कारण पुरख जो
 फुरमावहि सो कहउ ॥ गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ ॥ ४ ॥ १८ ॥ भिखे के ॥ गुर गिआनु अरु
 धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥ सचि सचु जाणीरे इक चितहि लिव लावै ॥ काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥
 निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥ कलि माहि रूपु करता पुरखु सो जाणै जिनि किछ कीअउ ॥ गुरु मिलियउ
 सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥ १ ॥ १९ ॥ रहिओ संत जहउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥ सनिआसी
 तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥ बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ ॥ कहतिअह

कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ ॥ हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन्ह के गुण हउ किआ कहउ ॥ गुरु दयि
मिलायउ भिखिआ जिव तूरखहि तिव रहउ ॥ २ ॥ २० ॥ पहिरि समाधि सनाहु गिआनि है आसणि चडिअउ
॥ ध्रंम धनखु कर गहिओ भगत सीलह सरि लडिअउ ॥ भै निरभउ हरि अटलु मनि सबदि गुर नेजा गडिओ ॥
काम क्रोध लोभ मोह अपतु पँच दूत बिखँडिओ ॥ भलउ भूहालु तेजो तना निपति नाथु नानक बरि ॥ गुर
अमरदास सचु सत्य भणि तै दलु जितउ इव जुधु करि ॥ १ ॥ २१ ॥ घनहर बूँद बसुध रोमावलि कुसम बसंत
गनंत न आवै ॥ रवि ससि किरणि उदरु सागर को गँग तरंग अँतु को पावै ॥ रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के
कबि जन भल्य उनह जो गावै ॥ भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ १ ॥ २२ ॥

सर्वाए महलो चउथे के ४ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

इक मनि पुरखु निरँजनु धिआवउ ॥ गुर प्रसादि हरि गुण सद गावउ ॥ गुन गावत मनि होइ बिगासा ॥
सतिगुर पूरि जनह की आसा ॥ सतिगुरु सेवि परम पदु पायउ ॥ अबिनासी अबिगतु धिआयउ ॥ तिसु भेटे
दारिद्रु न चँपै ॥ कल्य सहारु तासु गुण जँपै ॥ जँपउ गुण बिमल सुजन जन केरे अमिअ नामु जा कउ फुरिआ
॥ इनि सतगुरु सेवि सबद रसु पाया नामु निरँजन उरि धरिआ ॥ हरि नाम रसिकु गोबिंद गुण गाहकु चाहकु
तत समत सरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ १ ॥ छुटत परवाह अमिअ अमरा
पद अँमित सरोवर सद भरिआ ॥ ते पीवहि संत करहि मनि मजनु पुब जिनहु सेवा करीआ ॥ तिन भउ निवारि
अनभै पदु दीना सबद मात्र ते उधर धरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ २ ॥
सतगुर मति गूढ बिमल सतसंगति आतमु रँगि चल्लु भया ॥ जाग्या मनु कवलु

सहजि परकास्या अभै निरँजनु घरहि लहा ॥ सतगुरि दयालि हरि नामु द्विदाया तिसु प्रसादि वसि पँच करे ॥ कवि कल्य
 ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ ३ ॥ अनभउ उनमानि अकल लिव लागी पारसु भेटिआ सहज घरे ॥
 सतगुर परसादि परम पदु पाया भगति भाइ भँडार भरे ॥ मेदिआ जनमांतु मरण भउ भागा चितु लागु सँतोख सरे ॥ कवि
 कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ ४ ॥ अभर भरे पायउ अपारु रिद अँतरि धारिउ ॥ दुख भँजनु
 आतम प्रबोधु मनि ततु बीचारिओ ॥ सदा चाइ हरि भाइ प्रेम रसु आपे जाणइ ॥ सतगुर कै परसादि सहज सेती रँगु माणइ
 ॥ नानक प्रसादि अँगद सुमति गुर अमरि पद पाइओ ॥ ५ ॥ सँतोख सरोवरि बसै अमिअ रसु रसन प्रकासै ॥ मिलत
 सांति उपजै दुरतु दूरँतरि नासै ॥ सुख सागरु पाइअउ दिँतु हरि मगि न हुटै ॥ सँजमु सतु सँतोखु सील सँनाहु मफुटै ॥
 सतिगुरु प्रमाणु बिध नै सिरिउ जगि जस तूर बजाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै अभै अमर पदु पाइअउ ॥ ६ ॥ जगु
 जितउ सतिगुर प्रमाणि मनि एकु धिआयउ ॥ धनि धनि सतिगुर अमरदासु जिनि नामु द्विदायउ ॥ नव निधि नामु निधानु
 रिधि सिधि ता की दासी ॥ सहज सरोवरु मिलिओ पुरखु भेटिओ अबिनासी ॥ आदि ले भगत जितु लागि तरे सो गुरि
 नामु द्विडाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै हरि प्रेम पदारथु पाइअउ ॥ ७ ॥ प्रेम भगति परवाह प्रीति पुबली न हुटइ ॥
 सतिगुर सबदु अथाहु अमिअ धारा रसु गुटइ ॥ मति माता सँतोखु पिता सरि सहज समायउ ॥ आजोनी सँभविअउ जगतु
 गुर बचनि तरायउ ॥ अबिगत अगोचरु अपरपरु मनि गुर सबदु वसाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै जगत उधारणु
 पाइअउ ॥ ८ ॥ जगत उधारणु नव निधानु भगतह भव तारणु ॥ अम्रित बूँद हरि नामु बिसु की बिखै निवारणु ॥ सहज
 तरोवर फलिओ गिआन अँम्रित फल लागे ॥ गुर प्रसादि पाईअहि धँनि ते जन बडभागे ॥ ते मुकते भए सतिगुर

सबदि मनि गुर परचा पाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै सबद नीसानु बजाइअउ ॥ ९ ॥ सेज सधा सहजु छावाणु
 संतोख सराइचउ सदा सील सँनाहु सोहै ॥ गुर सबदि समाचरिओ नामु टेक सँगादि बोहै ॥ अजोनीउ भल्यु अमलु
 सतिगुर सँगि निवासु ॥ गुर रामदास कल्युचरै तुअ सहज सरोवरि बासु ॥ १० ॥ गुरु जिन्ह कउ सुप्रसँनु नामु हरि रिदै
 निवासै ॥ जिन्ह कउ गुरु सुप्रसँनु दुरतु दूरँतरि नासै ॥ गुरु जिन्ह कउ सुप्रसँनु मानु अभिमानु निवारै ॥ जिन्ह कउ गुरु
 सुप्रसँनु सबदि लागि भवजलु तारै ॥ परचउ प्रमाणु गुर पाइअउ तिन सकयथउ जनमु जगि ॥ श्री गुरु सरणि भजु कल्य
 कबि भुगति मुकति सभ गुरु लागि ॥ ११ ॥ सतिगुरि खेमा ताणिआ जुग जूथ समाणे ॥ अनभउ नेजा नामु टेक जितु
 भगत अघाणे ॥ गुरु नानकु अँगदु अमरु भगत हरि सँगि समाणे ॥ इह राज जोग गुर रामदास तुम्ह हू रसु जाणे ॥ १२
 ॥ जनकु सोइ जिनि जाणिआ उनमनि रथु धरिआ ॥ सतु संतोखु समाचरे अभरा सरु भरिआ ॥ अकथ कथा अमरा पुरी
 जिसु देइ सु पावै ॥ इहु जनक राजु गुर रामदास तुझ ही बणि आवै ॥ १३ ॥ सतिगुर नामु एक लिव मनि जपै द्रिडु तिन्ह
 जन दुख पापु कहु कत होवै जीउ ॥ तारण तरण खिन मात्र जा कउ द्रिस्टि धारै सबदु रिद बीचारै कामु क्रोधु खोवै जीउ ॥
 जीअन सभन दाता अगम ग्यान बिख्याता अहिनिंसि ध्यान धावै पलक न सोवै जीउ ॥ जा कउ देखत दरिद्रु जावै नामु सो
 निधानु पावै गुरमुखि ग्यानि दुरमति मैलु धोवै जीउ ॥ सतिगुर नामु एक लिव मनि जपै द्रिडु तिन जन दुख पाप कहु कत
 होवै जीउ ॥ १ ॥ धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है ॥ जा की सेवा सिध साध मुनि जन सुरि नर जाचहि सबद सारु एक
 लिव लाई है ॥ फुनि जानै को तेरा अपारु निरभउ निरँकारु अकथ कथनहारु तुझहि बुझाई है ॥ भरम भूले संसार छुटहु
 जूनी संघार जम को न डँड काल गुरमति ध्याई है ॥ मन प्राणी मुगध बीचारु अहिनिंसि जपु धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है
 ॥ २ ॥ हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥ कवन उपमा देउ कवन सेवा सेरेउ एक मुख रसना रसहु

जुग जोरिं कर ॥ फुनि मन बच क्रम जानु अनत दूजा न मानु नामु सो अपारु सारु दीनो गुरिं रिद धर ॥ नल्य कवि पारस
 परस कच कँचना हुइ चँदना सुबासु जासु सिमरत अन तर ॥ जा के देखत दुआरे काम क्रोध ही निवारे जी हउ बलिं बलिं जाउ
 सतिगुर साचे नाम पर ॥ ३ ॥ राजु जोगु तखतु दीअन गुर रामदास ॥ प्रथमे नानक चँदु जगत भयो आनँदु तारनि मनुख्य
 जन कीअउ प्रगास ॥ गुर अँगद दीअउ निधानु अकथ कथा गिआनु पँच भूत बसि कीने जमत न त्रास ॥ गुर अमरु गुरू श्री
 सति कलिंजुगि राखी पति अघन देखत गतु चरन कवल जास ॥ सभ बिधि मान्येउ मनु तब ही भयउ प्रँसनु राजु जोगु
 तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ ४ ॥ रड ॥ जिसहि धार्येउ धरति अरिं विउमु अरु पवणु ते नीर सर अवर अनल अनादि
 कीअउ ॥ ससि रिखि निसि सूर दिनि सैल तरुअ फल फुल दीअउ ॥ सुरिं नर सपत समुद्र किअ धारिओ त्रिभवण जासु ॥
 सोई एकु नामु हरिं नामु सति पाइओ गुर अमर प्रगासु ॥ १ ॥ ५ ॥ कचह कँचनु भइअउ सबदु गुर स्रवणहि सुणिओ ॥
 बिखु ते अँमितु हुयउ नामु सतिगुर मुखे भणिअउ ॥ लोहउ होयउ लालु नदरिं सतिगुरु जदि धारै ॥ पाहण माणक करै
 गिआनु गुर कहिअउ बीचारै ॥ काठहु श्रीखँड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइअ ॥ सतिगुरू चरन जिन्ह परसिआ
 से पसु परेत सुरिं नर भइअ ॥ २ ॥ ६ ॥ जामि गुरू होइ वलिं धनहि किआ गारवु दिजाइ ॥ जामि गुरू होइ वलिं लख
 बाहे किआ किजाइ ॥ जामि गुरू होइ वलिं गिआन अरु धिआन अनन परि ॥ जामि गुरू होइ वलिं सबदु साखी सु सचह
 घरिं ॥ जो गुरू गुरू अहिनिं सिसि जपै दासु भटु बेनति कहै ॥ जो गुरू नामु रिद महि धरै सो जनम मरण दुह थे रहै ॥ ३ ॥
 ७ ॥ गुर बिनु घोरु अँधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥ गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ गुरु करु सचु
 बीचारु गुरू करु रे मन मेरे ॥ गुरु करु सबद सुपँन अघन कटहि सभ तेरे ॥ गुरु नयणिं बयणिं गुरु गुरु करहु गुरू सति
 कवि नल्य कहि ॥ जिनि गुरू न देखिअउ नहु कीअउ ते अकथ संसार महि ॥ ४ ॥ ८ ॥ गुरू गुरू गुरु करु

मन मेरे ॥ तारण तरण सम्रथु कलिजुगि सुनत समाधि सबद जिसु केरे ॥ फुनि दुखनि नासु सुखदायकु सूरुज जो धरत धिआनु
बसत तिह नेरे ॥ पूरुज पुरखु रिदै हरि सिमरत मुखु देखत अघ जाहि परेरे ॥ जउ हरि बुधि रिधि सिधि चाहत गुरू गुरू गुरू
करु मन मेरे ॥ ५ ॥ ९ ॥ गुरू मुखु देखिं गुरू सुखु पायउ ॥ हुती जु पिआस पिऊस पिवाँन की बछँत सिधि कउ बिधि
मिलायउ ॥ पूरुन भो मन ठउर बसो रस बासन सिउ जु दहँ दिसि धायउ ॥ गोबिंदवालु गोबिंदपुरी सम जल्यन तीरि बिपास
बनायउ ॥ ६ ॥ १० ॥ समरथ गुरू सिरि हथु धर्यउ ॥ गुरि कीनी क्रिपा हरि नामु दीअउ जिसु देखि चरँन अघँन हर्यउ ॥
निसि बासुर एक समान धिआन सु नाम सुने सुतु भान डर्यउ ॥ भनि दास सु आस जगत्र गुरू की पारसु भेटि परसु कर्यउ ॥
रामदासु गुरू हरि सति कीयउ समरथ गुरू सिरि हथु धर्यउ ॥ ७ ॥ ११ ॥ अब राखहु दास भाट की लाज ॥ जैसी राखी
लाज भगत प्रहिलाद की हरनारखस फारे कर आज ॥ फुनि द्रोपती लाज राखी हरि प्रभ जी छीनत बसत्र दीन बहु साज ॥
सोदामा अपदा ते राखिआ गनिका पढत पूरे तिह काज ॥ श्री सतिगुर सुप्रसँन कलजुग होइ राखहु दास भाट की लाज ॥ ८
॥ १२ ॥ झोलना ॥ गुरू गुरू गुरू गुरू गुरू जपु प्राणीअहु ॥ सबदु हरिं हरिं जपै नामु नव निधि अपै रसनि अहिनिंसि रसै
सति करि जानीअहु ॥ फुनि प्रेम रँग पाईरे गुरमुखहि धिआईरे अँन मारगु तजहु भजहु हरि ग्यानीअहु ॥ बचन गुर रिदि धरहु
पँच भू बसि करहु जनमु कुल उधरहु द्वारि हरि मानीअहु ॥ जउ त सभ सुख इत उत तुम बँछवहु गुरू गुरू गुरू गुरू गुरू जपु
प्राणीअहु ॥ १ ॥ १३ ॥ गुरू गुरू गुरू गुरू गुरू जपि सत करि ॥ अगम गुन जानु निधानु हरि मनि धरहु ध्यानु अहिनिंसि
करहु बचन गुर रिदै धरि ॥ फुनि गुरू जल बिमल अथाह मजनु करहु सँत गुरसिख तरहु नाम सच रँग सरि ॥ सदा निरवैरु
निरँकारु निरभउ जपै प्रेम गुर सबद रसि करत द्रिडु भगति हरि ॥ मुगध मन भ्रमु तजहु नामु गुरमुखि भजहु गुरू गुर गुरू गुरू

गुरू जपु सति करि ॥ २ ॥ १४ ॥ गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईये ॥ उदधि गुरु गहिर गंभीर बेअँतु हरि नाम नग
 हीर मणि मिलत लिव लाईये ॥ फुनि गुरू परमल सरस करत कँचनु परस मैलु दुर्मति हिरत सबदि गुरु ध्याईये ॥ अँमित
 परवाह छुटकँत सद द्वारि जिंसु ग्यान गुर बिमल सर सँत सिख नाईये ॥ नाम निरबाणु निधानु हरि उरि धरहु गुरू गुरु गुरु
 करहु गुरू हरि पाईये ॥ ३ ॥ १५ ॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मँन रे ॥ जा की सेव सिव सिध साधिक सुर असुर गण
 तरहि तेतीस गुर बचन सुणि कँन रे ॥ फुनि तरहि ते सँत हित भगत गुरु गुरु करहि तरिओ प्रहलादु गुर मिलत मुनि जँन रे
 ॥ तरहि नारदादि सनकादि हरि गुरमुखहि तरहि इक नाम लागि तजहु रस अँन रे ॥ दासु बेनति कहै नामु गुरमुखि लहै
 गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मँन रे ॥ ४ ॥ १६ ॥ २९ ॥ सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि ॥ करी क्रिपा सतजुगि जिनि
 धू परि ॥ श्री प्रहलाद भगत उधरीअँ ॥ हस्त कमल माथे पर धरीअँ ॥ अलख रूप जीअ लख्या न जाई ॥ साधिक सिध
 सगल सरणाई ॥ गुर के बचन सति जीअ धारहु ॥ माणस जनमु देह निस्तारहु ॥ गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु
 तरिआ न कोइ ॥ गुर प्रसादि प्रभु पाईये गुर बिनु मुकति न होइ ॥ गुरु नानकु निकटि बसै बनवारी ॥ तिनि लहणा थापि
 जोति जगि धारी ॥ लहणै पँथु धरम का कीआ ॥ अमरदास भले कउ दीआ ॥ तिनि श्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ ॥
 हरि का नामु अखै निधि अप्यउ ॥ अप्यउ हरि नामु अखै निधि चहु जुगि गुर सेवा करि फलु लहीअँ ॥ बँदहि जो चरण
 सरणि सुखु पावहि परमानंद गुरमुखि कहीअँ ॥ परतखि देह पारब्रहमु सुआमी आदि रूपि पोखण भरणँ ॥ सतिगुरु गुरु
 सेवि अलख गति जा की श्री रामदासु तारण तरणँ ॥ १ ॥ जिह अमित बचन बाणी साधू जन जपहि करि बिचिति चाओ
 ॥ आनँदु नित मँगलु गुर दरसनु सफलु संसारि ॥ संसारि सफलु गंगा गुर दरसनु परसन परम पवित्र गते ॥ जीतहि जम
 लोकु पतित जे प्राणी हरि जन सिव गुर ग्यानि रते ॥ रघुबंसि तिलकु सुँदरु दसरथ घरि मुनि बँछहि जा की सरणँ ॥

सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की श्री रामदासु तारण तरणँ ॥ २ ॥ संसारु अगम सागरु तुलहा हरि नामु गुरु मुखि
पाया ॥ जगि जनम मरणु भगा इह आई हीरे परतीति ॥ परतीति हीरे आई जिन जन कै तिन्ह कउ पदवी उच भई ॥ तजि
माइआ मोहु लोभु अरु लालचु काम क्रोध की ब्रिथा गई ॥ अवलोक्या ब्रहमु भरमु सभु छुटक्या दिव्य दिस्टि कारन करणँ ॥
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की श्री रामदासु तारण तरणँ ॥ ३ ॥ परतापु सदा गुर का घटि घटि परगासु भया जसु
जन कै ॥ इकि पड़हि सुणहि गावहि परभातिहि करहि इस्नानु ॥ इस्नानु करहि परभाति सुध मनि गुर पूजा बिधि सहित
करँ ॥ कँचनु तनु होइ परसि पारस कउ जोति सरूपी ध्यानु धरँ ॥ जगजीवनु जगँनाथु जल थल महि रहिआ पूरि बहु बिधि
बरनँ ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की श्री रामदासु तारण तरणँ ॥ ४ ॥ जिनहु बात निश्चल ध्रुअ जानी तेई जीव
काल ते बचा ॥ तिन्ह तरिओ समुद्रु रुद्रु खिन इक महि जलहर बिंब जुगति जगु रचा ॥ कुँडलनी सुरझी सतसंगति
परमानंद गुरु मुखि मचा ॥ सिरी गुरु साहिबु सभ ऊपरि मन बच क्रम सेवीरे सचा ॥ ५ ॥ वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु
वाहि जीउ ॥ कवल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग कहत मा जसोद जिसहि दही भातु खाहि जीउ ॥ देखि रूपु अति अनूपु
मोह महा मग भई किंकनी सबद इनतकार खेलु पाहि जीउ ॥ काल कलम हुकमु हाथि कहहु कउनु मेटि सकै ईसु बँम्यु ग्यानु
ध्यानु धरत हीरे चाहि जीउ ॥ सति साचु श्री निवासु आदि पुरकु सदा तुही वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीउ ॥ १
॥ ६ ॥ राम नाम परम धाम सुध बुध निरीकार बेसुमार सरबर कउ काहि जीउ ॥ सुथर चित भगत हित भेखु धरिओ
हरनाखसु हरिओ नख बिदारि जीउ ॥ संख चक्र गदा पदम आपि आपु कीओ छदम अपरँपर पारब्रहम लखै कउनु ताहि जीउ
॥ सति साचु श्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीउ ॥ २ ॥ ७ ॥ पीत बसन कुँद
दसन प्रिआ सहित कँठ माल मुकटु सीसि मोर पँख चाहि जीउ ॥ बेवजीर बडे धीर धरम अँग अलख

अगम खेलु कीआ आपणै उछाहि जीउ ॥ अकथ कथा कथी न जाइ तीनि लोक रहिआ समाइ सुतह सिध रूपु धरिओ
 साहन कै साहि जीउ ॥ सति साचु स्त्री निवासु आदि पुरकु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ ३ ॥ ८
 ॥ सतिगुरू सतिगुरू सतिगुरू गुर्बिंद जीउ ॥ बलिहि छलन सबल मलन भगिंत फलन कान्ह कुअर निहकलँक बजी डँक
 चलहू दल रविंद जीउ ॥ राम रवण दुरत दवण सकल भवण कुसल करण सरब भूत आपि ही देवाधि देव सहस मुख फनिंद
 जीउ ॥ जरम करम मछ कछ हुअ बराह जमुना कै कूलि खेलु खेलिओ जिनि गिंद जीउ ॥ नामु सारु हीए धारु तजु
 बिकारु मन गयँद सतिगुरू सतिगुरू सतगूरु गुर्बिंद जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥ सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥
 गुर कहिआ मानु निज निधानु सचु जानु मँत्रु इहै निसि बासुर होइ कल्यानु लहहि परम गति जीउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु
 जण जण सिउ छाडु थोहु हउमै जा फँधु काटु साधसँगि रति जीउ ॥ देह गेहु त्रिअ सनेहु चित बिलासु जगत एहु चरन
 कमल सदा सेउ दिइता करु मति जीउ ॥ नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयँद सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू
 सति जीउ ॥ ५ ॥ १० ॥ सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहु गुरू तेरा सभु सदका ॥ निरँकारु प्रभु सदा सलामति कहि न
 सकै कोऊ तू कद का ॥ ब्रहमा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मद का ॥ चवरासीह लख जोनि उपाई
 रिजकु दीआ सभ हू कउ तद का ॥ सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाह गुरू तेरा सभु सदका ॥ १ ॥ ११ ॥ वाहु वाहु का बडा
 तमासा ॥ आपे हसै आपि ही चितवै आपे चँदु सूरु परगासा ॥ आपे जलु आपे थलु थँम्हनु आपे कीआ घटि घटि बासा
 ॥ आपे नरु आपे फुनि नारी आपे सारि आप ही पासा ॥ गुरमुखि संगति सभै बिचारहु वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ २
 ॥ १२ ॥ कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहिगुरू तेरी सभ रचना ॥ तू जलि थलि गगनि पयालि पूरि रह्या अँमित ते मीठे
 जा के बचना ॥ मानहि ब्रहमादिक रुद्रादिक काल का कालु निरँजन जचना ॥ गुर प्रसादि पाईए परमारथु सतसंगति सेती

मनु खचना ॥ कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाह गुरू तेरी सभ रचना ॥ ३ ॥ १३ ॥ ४२ ॥ अगमु अनंतु अनादि
आदि जिसु कोइ न जाणे ॥ सिव बिरँचि धरि ध्यानु नितहि जिसु बेदु बखाणै ॥ निरँकारु निरवैरु अवरु नही दूसर कोई
॥ भँजन गढ़ण समथु तरण तारण प्रभु सोई ॥ नाना प्रकार जिनि जगु कीओ जनु मथुरा रसना रसै ॥ श्री सति नामु
करता पुरखु गुर रामदास चितह बसै ॥ १ ॥ गुरू समरथु गहि करीआ ध्रुव बुधि सुमति सम्हारन कउ ॥ फुनि ध्रँम धुजा
फहरँति सदा अघ पुँज तरँग निवारन कउ ॥ मथुरा जन जानि कही जीअ साचु सु अउर कछू न बिचारन कउ ॥ हरि नामु
बोहिथु बडौ कलि मै भवसागर पारि उतारन कउ ॥ २ ॥ सँतत ही सतसँगति सँग सुरँग रते जसु गावत है ॥ ध्रम पँथु
धरिओ धरनीधर आपि रहे लिव धारि न धावत हे ॥ मथुरा भनि भाग भले उन्ह के मन इछत ही फल पावत है ॥ रवि के
सुत को तिन्ह त्रासु कहा जु चरँन गुरू चितु लावत है ॥ ३ ॥ निरमल नामु सुधा परपूरन सबद तरँग प्रगटित दिन
आगरु ॥ गहिर गँभीरु अथाह अति बड सुभरु सदा सभ बिधि रतनागरु ॥ सँत मराल करहि कँतूहल तिन जम त्रास
मिटिओ दुख कागरु ॥ कलजुग दुरत दूरि करबे कउ दरसनु गुरू सगल सुख सागरु ॥ ४ ॥ जा कउ मुनि ध्यानु धरै
फिरत सगल जुग कबहु क कोऊ पावै आतम प्रगास कउ ॥ बेद बाणी सहित बिरँचि जसु गावै जा को सिव मुनि गहि न
तजात कबिलास कँउ ॥ जा कौ जोगी जती सिध साधिक अनेक तप जटा जूट भेख कीए फिरत उदास कउ ॥ सु तिनि
सतिगुरि सुख भाइ क्रिपा धारी जीअ नाम की बडाई दई गुर रामदास कउ ॥ ५ ॥ नामु निधानु धिआन अंतरगति तेज
पुँज तिहु लोग प्रगासे ॥ देखत दरसु भटकि भ्रमु भजत दुख परहरि सुख सहज बिगासे ॥ सेवक सिख सदा अति लुभित
अलि समूह जिउ कुसम सुबासे ॥ बिद्यमान गुरि आपि थप्यउ थिरु साचउ तरखतु गुरू रामदासै ॥ ६ ॥ तार्यउ संसारु
माया मद मोहित अँमित नामु दीअउ समरथु ॥ फुनि कीरतिवँत सदा सुख संपति रिधि अरु सिधि न छोडइ सथु ॥

दानि बडौ अतिवँतु महाबलि सेवकि दासि कहिओ इहु तथु ॥ ताहि कहा परवाह काहू की जा कै बसीसि धरिओ गुरि हथु ॥
 ७ ॥ ४९ ॥ तिनि भवन भरपूरि रहिओ सोई ॥ अपन सरसु कीअउ न जगत कोई ॥ आपुन आपु आप ही उपायउ ॥
 सुरि नर असुर अँतु नही पायउ ॥ पायउ नही अँतु सुरे असुरह नर गण गँध्रब खोजँत फिरे ॥ अबिनासी अचलु अजोनी
 सँभउ पुरखोतमु अपार परे ॥ करण कारण समरथु सदा सोई सरब जीआ मनि ध्याइयउ ॥ श्री गुर रामदास जयो जय जग
 महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ १ ॥ सतिगुरि नानकि भगति करी इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ ॥ अँगदि अनँत
 मूरति निज धारी अगम ग्यानि रसि रस्यउ हीअउ ॥ गुरि अमरदासि करतारु कीअउ वसि वाहु वाहु करि ध्याइयउ ॥ श्री
 गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ २ ॥ नारदु धू प्रहलाद सुदामा पुब भगत हरि के जु गणँ ॥
 अँबरीकु जयदेव त्रिलोचनु नामा अवरु कबीरु भणँ ॥ तिन कौ अवतारु भयउ कलि भितरि जसु जगत्र परि छाइयउ ॥
 श्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ ३ ॥ मनसा करि सिमरँत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु
 तिणँ ॥ बाचा करि सिमरँत तुझै तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणँ ॥ करम करि तुअ दरस परस पारस सर बल्य भट जसु
 गाइयउ ॥ श्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ ४ ॥ जिह सतिगुर सिमरँत नयन के तिमर
 मिटहि खिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरँथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरँथि जीअ की तपति मिटावै ॥ जिह
 सतिगुर सिमरँथि रिधि सिधि नव निधि पावै ॥ सोई रामदासु गुरु बल्य भणि मिलि संगति धँनि धँनि करहु ॥ जिस
 सतिगुर लागि प्रभु पाईऐ सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥ ५ ॥ ५४ ॥ जिनि सबदु कमाइ परम पदु पाइओ सेवा करत न
 छोडिओ पासु ॥ ता ते गउहरु ग्यान प्रगटु उजीआरउ दुख दरिद्र अँध्यार को नासु ॥ कवि कीरत जो सँत चरन मुडि
 लागहि तिन्ह काम क्रोध जम को नही त्रासु ॥ जिव अँगदु अँगि सँगि नानक गुर तिव गुर अमरदास कै गुरु रामदासु ॥ १

॥

जिनि सतिगुरु सेवि पदारथु पायउ निसि बासुर हरि चरन निवासु ॥ ता ते सँगति सघन भाइ भउ मानहि तुम मलीआगर
 प्रगट सुबासु ॥ ध्रु प्रहलाद कबीर तिलोचन नामु लतै उपज्यो जु प्रगास ॥ जिह पिखत अति होइ रहसु मनि सोई सँत सहारु
 गुरु रामदासु ॥ २ ॥ नानकि नामु निरँजन जान्यउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई ॥ ता ते अँगदु अँगि सँगि भयो साइरु
 तिनि सबद सुरति की नीव रखाई ॥ गुर अमरदास की अकथ कथा है इक जीह कछु कही न जाई ॥ सोढी ख्रिस्टि सकल
 तारण कउ अब गुर रामदास कउ मिली बडाई ॥ ३ ॥ हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अँमितु छाडि बिखै बिखु खाई ॥ माया
 मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ॥ इकु उतम पँथु सुनिओ गुर सँगति तिह मिलँत जम त्रास मिटाई ॥ इक
 अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई ॥ ४ ॥ ५८ ॥ मोहु मलिं बिवसि कीअउ कामु गहिं केस पछाड्यउ ॥
 क्रोधु खँडि परचँडि लोभु अपमान सिउ झाड्यउ ॥ जनमु कालु कर जोडि हुकमु जो होइ सु मँनै ॥ भव सागरु बँधिअउ सिख
 तारे सुप्रसँनै ॥ सिरि आतपतु सचौ तखतु जोग भोग सँजुतु बलि ॥ गुर रामदास सचु सत्य भणि तू अटलु राजि अभगु दलि
 ॥ १ ॥ तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु ॥ सुनि नर साधिक सिध सिख सेवँत धुरह धुरु ॥ आदि जुगादि
 अनादि कला धारी त्रिहु लोअह ॥ अगम निगम उधरण जरा जँमिहि आरोअह ॥ गुर अमरदासि थिरु थपिअउ परगामी
 तारण तरण ॥ अघ अँतक बदै न सत्य कवि गुर रामदास तेरी सरण ॥ २ ॥ ६० ॥

सवीए महले पँजवे के ७ वरि सतिगुर प्रसादि ॥

सिमरँ सोई पुरखु अचलु अबिनासी ॥ जिसु सिमरत दुरमति मलु नासी ॥ सतिगुर चरण कवल रिदि धारँ ॥ गुर अरजुन गुण
 सहजि

बिचारँ ॥ गुर रामदास घरि कीअउ प्रगासा सगल मनोरथ पूरी आसा ॥ तै जनमत गुरमति ब्रह्म पछाणिओ ॥ कल्य
 जोड़ि कर सुजसु बखाणिओ ॥ भगति जोग कौ जैतवारु हरि जनकु उपायउ ॥ सबद गुरू परकासिओ हरि रसन
 बसायउ ॥ गुर नानक अँगद अमर लागि उतम पदु पायउ ॥ गुर अरजुनु घरि गुर रामदास भगति उतरि आयउ ॥ १
 ॥ बडभागी उनमानिअउ रिदि सबदु बसायउ ॥ मनु माणकु संतोखिअउ गुरि नामु द्विदायउ ॥ अगमु अगोचरु
 पारब्रह्मु सतिगुरि दरसायउ ॥ गुर अरजुनु घरि गुर रामदास अनभउ ठहरायउ ॥ २ ॥ जनक राजु बरताइआ सतजुगु
 आलीणा ॥ गुर सबदे मनु मानिआ अपतीजु पतीणा ॥ गुरु नानकु सचु नीव साजि सतिगुर संगि लीणा ॥ गुरु
 अरजुनु घरि गुर रामदास अपरँपरु बीणा ॥ ३ ॥ खेलु गूढउ कीअउ हरि राइ संतोखि समाचरिओ बिमल बुधि
 सतिगुरि समाणउ ॥ आजोनी संभविअउ सुजसु कल्य कवीअणि बखाणिअउ ॥ गुरि नानकि अँगदु वर्यउ गुरि अँगदि
 अमर निधानु ॥ गुरि रामदास अरजुनु वर्यउ पारसु परसु प्रमाणु ॥ ४ ॥ सद जीवणु अरजुनु अमोलु आजोनी संभउ ॥
 भय भँजनु पर दुख निवारु अपारु अनँभउ ॥ अगह गहणु भ्रमु भांति दहणु सीतलु सुख दातउ ॥ आसँभउ उदविअउ
 पुरखु पूरन बिधातउ ॥ नानक आदि अँगद अमर सतिगुर सबदि समाइअउ ॥ धनु धँनु गुरू रामदास गुरु जिनि पारसु
 परसि मिलाइअउ ॥ ५ ॥ जै जैकारु जासु जग अँदरि मँदरि भागु जुगति सिव रहता ॥ गुरु पूरा पायउ बडभागी लिव
 लागी मेदनि भरु सहता ॥ भय भँजनु पर पीर निवारनु कल्य सहारु तोहि जसु बकता ॥ कुलि सोढी गुर रामदास तनु
 धरम धुजा अरजुनु हरि भगता ॥ ६ ॥ ध्रँम धीरु गुरमति गभीरु पर दुख बिसारणु ॥ सबद सारु हरि सम उदारु
 अहँमेव निवारणु ॥ महा दानि सतिगुर गिआनि मनि चाउ न हुटै ॥ सतिवँतु हरि नामु मँत्रु नव निधि न निखुटै ॥ गुर
 रामदास तनु सरब मै सहजि चँदोआ ताणिअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै राजु जोगु रसु जाणिअउ ॥ ७ ॥ भै निरभउ

माणिअउ लाख महि अलखु लखायउ ॥ अगमु अगोचर गति गभीरु सतिगुर परचायउ ॥ गुर परचै परवाणु राज महि
 जोगु कमायउ ॥ धँनि धँनि गुरु धँनि अभर सर सुभर भरायउ ॥ गुर गम प्रमाणि अजरु जरिओ सरि संतोख समाइयउ
 ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै सहजि जोगु निजु पाइयउ ॥ ८ ॥ अमिउ रसना बदनि बर दाति अलख अपार गुर सूर सबदि
 हउमै निवार्यउ ॥ पँचा हरुनि दलिअउ सुँन सहजि निज घरि सहायउ ॥ हरि नामि लागि जग उधर्यउ सतिगुरु रिदै
 बसाइअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै कनकह कलसु दीपाइअउ ॥ ९ ॥ सोरठे ॥ गुरु अरजुनु पुरखु प्रमाणु पारथउ
 चालै नही ॥ नेजा नाम नीसाणु सतिगुर सबदि सवारिअउ ॥ १ ॥ भवजलु साइरु सेतु नामु हरी का बोहिथा ॥ तुअ
 सतिगुर सँ हेतु नामि लागि जगु उधर्यउ ॥ २ ॥ जगत उधारणु नामु सतिगुर तुठै पाइअउ ॥ अब नाहि अवर सरि कामु
 बारँतरि पूरी पडी ॥ ३ ॥ १२ ॥ जोति रूपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ ॥ ता ते अँगदु भयउ तत सिउ ततु
 मिलायउ ॥ अँगदि किरपा धारि अमरु सतिगुरु थिरु कीअउ ॥ अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ ॥ गुर
 रामदास दरसनु परसि कहि मथुरा अँमित बयण ॥ मूरति पँच प्रमाण पुरखु गुरु अरजुनु पिखहु नयण ॥ १ ॥ सति रूपु
 सति नामु सतु संतोखु धरिओ उरि ॥ आदि पुरखि परतखि लिख्यउ अछरु मसतकि धुरि ॥ प्रगट जोति जगमगै तेजु
 भूअ मँडलिं छायाउ ॥ पारसु परसि परसु परसि गुरि गुरु कहायउ ॥ भनि मथुरा मूरति सदा थिरु लाइ चितु सनमुख रहहु
 ॥ कलिजुगि जहाजु अरजुनु गुरु सगल ख्रिस्टि लागि बितरहु ॥ २ ॥ तिह जन जाचहु जगत्र पर जानीअतु बासुर
 रयनि बासु जा को हितु नाम सिउ ॥ परम अतीतु परमेसुर कै रँगि रँग्यौ बासना ते बाहरि पै देखीअतु धाम सिउ ॥
 अपरपरँपर पुरख सिउ प्रेमु लाग्यौ बिनु भगवँत रसु नाही अउरै काम सिउ ॥ मथुरा को प्रभु श्रब मय अरजुन गुरु भगति कै
 हेति पाइ रहिओ मिलि राम सिउ ॥ ३ ॥ अँतु न पावत देव सबै मुनि इंद्र महा सिव जोग करी ॥ फुनि बेद बिर्चि

बिचारि रहिओ हरि जापु न छाड्यउ एक घरी ॥ मथुरा जन को प्रभु दीन दयालु है संगति ख्रिस्टि निहालु करी ॥ रामदासि
 गुरु जग तारन कउ गुरु जोति अरजुन माहि धरी ॥ ४ ॥ जग अउर न याहि महा तम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ
 ॥ तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा जिन्ह अँमितु नामु पीअउ ॥ इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान
 बीअउ ॥ परतछि रिदै गुरु अरजुन के हरि पूरन ब्रह्मि निवासु लीअउ ॥ ५ ॥ जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते
 फिरते बहु धायउ ॥ कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ ॥ ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ
 अवतारु बनायउ ॥ जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरु फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥ ६ ॥ कलि समुद्र भए रूप प्रगटि
 हरि नाम उधारनु ॥ बसहि संत जिंसु रिदै दुख दारिद्र निवारनु ॥ निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥ मन बच
 जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ धरनि गगन नव खँड महि जोती स्वरूपी रहिओ भरि ॥ भनि मथुरा कछु भेदु
 नही गुरु अरजुनु परतरुव्य हरि ॥ ७ ॥ १९ ॥ अजै गंग जलु अटलु सिख संगति सभ नावै ॥ नित पुराण बाचीअहि बेद
 ब्रह्मा मुखि गावै ॥ अजै चवरु सिरि दुलै नामु अँमितु मुखि लीअउ ॥ गुरु अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥
 मिलि नानक अँगद अमर गुरु गुरु रामदासु हरि पहि गयउ ॥ हरिबँस जगति जसु संचर्यउ सु कवणु कहै श्री गुरु मुयउ ॥ १
 ॥ देवपुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥ हरि सिँघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ॥ रहसु कीअउ सुर देव तोहि
 जसु जय जय जँपहि ॥ असुर गए ते भागि पाप तिन्ह भीतरि कँपहि ॥ काटे सु पाप तिन्ह नरहु के गुरु रामदासु जिन्ह
 पाइयउ ॥ छत्रु सिँघासनु पिरथमी गुरु अरजुन कउ दे आइअउ ॥ २ ॥ २१ ॥ ९ ॥ ११ ॥ १० ॥ १० ॥ २२ ॥

१४१०
ॐ सतिनाम् करता पुरुषु निरभउ निरवैरु

अकाल मूरति अजूनी सैभँ गुर प्रसादि ॥

अलोक वारां ते वधीक ॥ महला १ ॥

उतंगी पैओहरी गहिरी गँभीरी ॥ ससुडि सुहीआ किव करी निवणु न जाइ
थणी ॥ गचु जिं लगा गिडवडी सखीए धउलहरी ॥ से भी ढहदे डिठु मै मुँध न गरबु थणी ॥ १ ॥ सुणि मुँधे हरणाखीए गूडा
वैणु अपारु ॥ पहिला वसतु सिजाणि कै तां कीचै वापारु ॥ दोही दिचै दुरजना मित्रां कूँ जैकारु ॥ जितु दोही सजण मिलनि
लहु मुँधे वीचारु ॥ तनु मनु दीजै सजणा ऐसा हसणु सारु ॥ तिस सउ नेहु न कीचई जिं दिसै चलणहारु ॥ नानक जिन्ही
इव करि बुझिआ तिन्हा विटहु कुरबाणु ॥ २ ॥ जे तूँ तारु पाणि ताहू पुछु तिडँन्ह कल ॥ ताहू खरे सुजाण वँजा एन्ही कपरी
॥ ३ ॥ झड़ झखड़ ओहाड़ लहरी वहनि लखेसरी ॥ सतिगुर सिउ आलाइ बेडे डुबणि नाहि भउ ॥ ४ ॥ नानक दुनीआ
कैसी होई ॥ सालकु मितु न रहिओ कोई ॥ भाई बँधी हेतु चुकाइआ ॥ दुनीआ कारणि दीनु गवाइआ ॥ ५ ॥ है है करि कै
ओहि करेनि ॥ गल्हा पिटनि सिर खोहेनि ॥ नाउ लैनि अरु करनि समाइ ॥ नानक तिन बलिहारै जाइ ॥ ६ ॥ रे मन डीगि
न डोलीरे सीधै मारगि धाउ ॥ पाछै बाघु डरावणो आगै अगनि तलाउ ॥ सहसै जीअरा परि रहिओ मा कउ अवरु न ढँगु ॥
नानक गुरमुखि छुटीरे हरि प्रीतम सिउ सँगु ॥ ७ ॥ बाघु मरै मनु मारीरे जिसु सतिगुर दीखिआ होइ ॥ आपु पछाणै हरि

मिले बहुड़ि न मरणा होइ ॥ कीचड़ि हाथु न बूडई एका नदरि निहालि ॥ नानक गुरुमुखि उबरे गुरु सरवरु सची पालि ॥ ८ ॥
 अगनि मरै जलु लोड़ि लहु विणु गुर निधिजलु नाहि ॥ जनमि मरै भरमाईऐ जे लख करम कमाहि ॥ जमु जागाति न
 लगई जे चलै सतिगुर भाइ ॥ नानक निरमलु अमर पदु गुरु हरि मेलै मेलाइ ॥ ९ ॥ कलर केरी छपडी कऊआ मलि मलि
 नाइ ॥ मनु तनु मैला अवगुणी चिँजु भरी गंधी आइ ॥ सरवरु हँसि न जाणिआ कागु कुपँखी सँगि ॥ साकत सिउ ऐसी
 प्रीति है बूझहु गिआनी रँगे ॥ सँत सभा जैकारु करि गुरुमुखि करम कमाउ ॥ निरमल नाहवणु नानका गुरु तीरथु
 दरीआउ ॥ १० ॥ जनमे का फलु किआ गणी जां हरि भगति न भाउ ॥ पैथा खाथा बादि है जां मनि दूजा भाउ ॥ वेखणु
 सुनणा झूठु है मुखि झूठा आलाउ ॥ नानक नामु सलाहि तू होरु हउमै आवउ जाउ ॥ ११ ॥ हैनि विरले नाही घणे फैल
 फकडु संसारु ॥ १२ ॥ नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु ॥ चोटै सेती जो मरै लगी सा परवाणु ॥ जिस नो लाए
 तिसु लगे लगी ता परवाणु ॥ पिरम पैकामु न निकलै लाइआ तिनि सुजाणि ॥ १३ ॥ भांडा धोवै कउणु जि कचा साजिआ
 ॥ धातू पँजि रलाइ कूड़ा पाजिआ ॥ भांडा आणगु रासि जां तिसु भावसी ॥ परम जोति जागाइ वाजा वावसी ॥ १४ ॥
 मनहु जि अँधे घूप कहिआ बिरदु न जाणनी ॥ मनि अँधे ऊँधे कवल दिसनि खरे करूप ॥ इकि कहि जाणनि कहिआ
 बुझनि ते नर सुघड सरूप ॥ इकना नादु न बेदु न गीअ रसु रसु कसु न जाणँति ॥ इकना सिधि न बुधि न अकलि सर
 अखर का भेउ न लहँति ॥ नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करँत ॥ १५ ॥ सो ब्रहमणु जो बिँदै ब्रहमु ॥ जपु
 तपु सँजमु कमावै करमु ॥ सील सँतोख का रखै धरमु ॥ बँधन तोड़ै होवै मुक्तु ॥ सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु ॥ १६ ॥
 खत्री सो जु करमा का सूरु ॥ पुँन दान का करै सरीरु ॥ खेतु पछाणै बीजै दानु ॥ सो खत्री दरगह परवाणु ॥ लबु लोभु जे
 कूडु कमावै ॥ अपणा कीता आपे पावै ॥ १७ ॥ तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ सिरि पेरी किआ फेड़िआ

अँदरि पिरी सम्हालि ॥ १८ ॥ सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न कोइ ॥ नानक ते सोहागणी जिन्हा गुरमुखि परगटु होइ ॥
 ॥ १९ ॥ जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि न
 कीजै ॥ २० ॥ नालि किराड़ा दोसती कूडै कूडी पाइ ॥ मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥ २१ ॥ गिआन हीणं
 अगिआन पूजा ॥ अँध वरतावा भाउ दूजा ॥ २२ ॥ गुर बिनु गिआनु धरम बिनु धिआनु ॥ सचु बिनु साखी मूलो न बाकी
 ॥ २३ ॥ माणू घलै उठी चलै ॥ सादु नाही इवेही गलै ॥ २४ ॥ रामु झुरै दल मेलवै अँतरि बलु अधिकार ॥ बँतर कि सैना
 सेवीऐ मनि तनि जुझु अपारु ॥ सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूओ सरापि ॥ नानक करता करणहारु करि वेखै धापि
 उथापि ॥ २५ ॥ मन महि झुरै रामचँदु सीता लछमण जोगु ॥ हणवँतरु आराधिआ आइआ करि संजोगु ॥ भूला दैतु न
 समझई तिनि प्रभ कीए काम ॥ नानक वेपरवाहु सो किरतु न मिटई राम ॥ २६ ॥ लाहौर सहर जहरु कहरु सवा पहरु ॥
 २७ ॥ महला ३ ॥ लाहौर सहरु अँमित सरु सिफती दा घरु ॥ २८ ॥ महला १ ॥ उदोसाहै किआ निसानी तोटि न आवै
 अँनी ॥ उदोसीअ घरे ही वुठी कूडिई. रँनी धँमी ॥ सती रँनी घरे सिआपा रोवनि कूडी कँमी ॥ जो लेवै सो देवै नाही खटे दँम
 सहँसी ॥ २९ ॥ पबर तूँ हरीआवला कवला कँचन वँनि ॥ कै दोखडै सडिओहि काली होईआ देहुरी नानक मै तनि भँगु ॥
 जाणा पाणी ना लहां जै सेती मेरा सँगु ॥ जितु डिठै तनु परफुडै चडै चवगणि वँनु ॥ ३० ॥ रजि न कोई जीविआ पहुचि न
 चलिआ कोई ॥ गिआनी जीवै सदा सदा सुरती ही पति होइ ॥ सरफै सरफै सदा सदा एवै गई विहाइ ॥ नानक किस नो
 आखीऐ विणु पुछिआ ही लै जाइ ॥ ३१ ॥ दोसु न देअहु राइ नो मति चलै जां बुढा होवै ॥ गलां करे घणेरीआ तां अँन्हे पवणा
 खाती टोवै ॥ ३२ ॥ पूरे का कीआ सभ किछु पूरा घटि वधि किछु नाही ॥ नानक गुरमुखि ऐसा जाणै पूरे माँहि समाँही ॥ ३३
 ॥

सलोक महला ३ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

अभिआगत एह न आखीअहि जिन के मन महि भरमु ॥ तिन के दिते नानका तेहो जेहा धरमु ॥ १ ॥ अभै निरंजन परम पदु ता का भीखकु होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥ २ ॥ होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नवा खंडा विचि जाणीआ अपने चज वीचार ॥ ३ ॥ ब्रहमण कैली घातु कंजका अणचारी का धानु ॥ फिटक फिटका कोडु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥ पाहि एते जाहि वीसरि नानका इकु नामु ॥ सभ बुधी जालीअहि इकु रहै ततु गिआनु ॥ ४ ॥ माथै जो धुरि लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥ नानक जो लिखिआ सो वरतदा सो बूझै जिस नो नदरि होइ ॥ ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ कूडै लालचि लागि ॥ धंधा माइआ मोहणी अंतरि तिसना अगि ॥ जिन्हा वेलि न तूबड़ी माइआ ठगे ठगि ॥ मनमुख बंन्हि चलाईअहि ना मिलही वगि सगि ॥ आपि भुलाए भुलीऐ आपे मेलि मिलाइ ॥ नानक गुरमुखि छुटीऐ जे चलै सतगुरि भाइ ॥ ६ ॥ सालाही सालाहणा भी सचा सालाहि ॥ नानक सचा एकु दरु बीभा परहरि आहि ॥ ७ ॥ नानक जह जह मै फिरउ तह तह साचा सोइ ॥ जह देखा तह एकु है गुरमुखि परगटु होइ ॥ ८ ॥ दूख विसारणु सबदु है जे मनि वसाए कोइ ॥ गुर किरपा ते मनि वसै करम परापति होइ ॥ ९ ॥ नानक हउ हउ करते खपि मुए खूहणि लख असंख ॥ सतिगुर इक मनि सेविआ तिन जन लागउ पाइ ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै माइआ की भुख जाइ ॥ से जन निरमल ऊजले जि गुरमुखि नामि समाइ ॥ नानक होरि पतिसाहीआ कूड़ीआ नामि रते पातिसाह ॥ ११ ॥ जिउ पुरखै घरि भगती नारि है अति लोचै भगती भाइ ॥ बहु रस सालणे सवारदी खट रस मीठे पाइ ॥ तिउ बाणी भगत सलाहदे हरि नामै चितु लाइ ॥ मनु तनु धनु आगै राखिआ सिरु वेचिआ गुर आगै जाइ ॥ भै भगती भगत बहु लोचदे प्रभ लोचा पूरि मिलाइ ॥ हरि प्रभु वेपरवाहु है कितु खाधै तिपताइ ॥

सतिगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हरिगुण गाइ ॥ धनु धनु कलजुगि नानका जिं चले सतिगुर भाइ ॥ १२ ॥ सतिगुरु
न सेविओ सबदु न रखिओ उर धारि ॥ धिगु तिना का जीविआ कितु आए संसारि ॥ गुरमती भउ मनि पवै तां हरि रसि
लगै पिआरि ॥ नाउ मिलै धुरि लिखिआ जन नानक पारि उतारि ॥ १३ ॥ माइआ मोहि जगु भरमिआ घरु मुसै खबरि
न होइ ॥ काम क्रोधि मनु हिरि लइआ मनमुख अंधा लोइ ॥ गिआन खड़ग पंच दूत संघारे गुरमति जागै सोइ ॥ नाम
रतनु परगासिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ नामहीन नकटे फिरहि बिनु नावै बहि रोइ ॥ नानक जो धुरि करतै लिखिआ सु
मेटि न सकै कोइ ॥ १४ ॥ गुरमुखा हरि धनु खटिआ गुर कै सबद वीचारि ॥ नामु पदारथु पाइआ अतुट भरे भंडार ॥
हरि गुण बाणी उचरहि अंतु न पारावारु ॥ नानक सभ कारण करता करै वेखै सिरजनहारु ॥ १५ ॥ गुरमुखि अंतरि
सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥ तिथै ऊंघ न भुख है हरि अमित नामु सुख वासु ॥ नानक दुखु सुखु विआपत
नहीं जिथै आतमराम प्रगासु ॥ १६ ॥ काम क्रोध का चोलड़ा सभ गलिं आए पाइ ॥ इकि उपजहि इकि बिनसि जांहि
हुकमे आवै जाइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई रंगु लगा दूजै भाइ ॥ बंधनि बंधि भवाईअनु करणा कछु न जाइ ॥ १७ ॥ जिन
कउ किरपा धारीअनु तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ सतिगुरि मिले उलटी भई मरि जीविआ सहजि सुभाइ ॥ नानक
भगती रतिआ हरि हरि नामि समाइ ॥ १८ ॥ मनमुख चंचल मति है अंतरि बहुतु चतुराई ॥ कीता करतिआ बिरथा
गइआ इकु तिलिं थाइ न पाई ॥ पुंनु दानु जो बीजदे सभ धरमराइ कै जाई ॥ बिनु सतिगुरु जमकालु न छोडई दुजै भाइ
खुआई ॥ जोबनु जांदा नदरि न आवई जरु पहुचै मरि जाई ॥ पुतु कलतु मोहु हेतु है अंति बेली को न सखाई ॥
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए नाउ वसै मनि आई ॥ नानक से वडे वडभागी जिं गुरमुखि नामि समाई ॥ १९ ॥ मनमुख
नामु न चेतनी बिनु नावै दुख रोइ ॥ आतमरामु न पूजनी दूजै किउ सुखु होइ ॥ हउमै अंतरि मैलु है सबदि न काढहि

धोइ ॥ नानक बिनु नावै मैलिआ मुए जनमु पदारथु खोइ ॥ २० ॥ मनमुख बोले अँधुले तिसु महि अगनी का वासु ॥
 बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु ॥ ओना आपणी अँदरि सुधि नही गुर बचनि न करहि विसासु ॥
 गिआनीआ अँदरि गुर सबदु है नित हरि लिव सदा विगासु ॥ हरि गिआनीआ की रखदा हउ सद बलिहारी तासु ॥
 गुरमुखि जो हरि सेवदे जन नानकु ता का दासु ॥ २१ ॥ माइआ भुइअंगमु सरपु है जगु घेरिआ बिखु माइ ॥ बिखु का
 मारणु हरि नामु है गुर गरुड सबदु मुखि पाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ मिलि सतिगुर
 निरमलु होइआ बिखु हउमै गइआ बिलाइ ॥ गुरमुखा के मुख उजले हरि दरगह सोभा पाइ ॥ जन नानकु सदा कुरबाणु
 तिन जो चालहि सतिगुर भाइ ॥ २२ ॥ सतिगुर पुरखु निरवैरु है नित हिरदै हरि लिव लाइ ॥ निरवैरै नालि वैरु रचाइदा
 अपणै घरि लूकी लाइ ॥ अँतरि क्रोधु अहँकारु है अनदिनु जलै सदा दुखु पाइ ॥ कूडु बोलि बोलि नित भउकदे बिखु खाधे
 दूजै भाइ ॥ बिखु माइआ कारणे भरमदे फिरि घरि घरि पति गवाइ ॥ बेसुआ केरे पूत जिउ पिता नामु तिसु जाइ ॥ हरि
 हरि नामु न चेतनी करतै आपि खुआइ ॥ हरि गुरमुखि किरपा धारीअनु जन विछुडे आपि मिलाइ ॥ जन नानकु तिसु
 बलिहारणै जो सतिगुर लागे पाइ ॥ २३ ॥ नामि लगे से ऊबरे बिनु नावै जम पुरि जाहि ॥ नानक बिनु नावै सुखु नही
 आइ गए पछुताहि ॥ २४ ॥ चिँता धावत हरि गए तां मनि भइआ अनँदु ॥ गुर प्रसादी बुझीरे साधन सुती निचिँद ॥
 जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन्हा भेटिआ गुर गोविँदु ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि पाइआ परमानँदु ॥ २५ ॥ सतिगुरु
 सेवनि आपणा गुर सबदी वीचारि ॥ सतिगुर का भाणा मँनि लैनि हरि नामु रखहि उर धारि ॥ ऐथै ओथै मँनीअनि हरि
 नामि लगे वापारि ॥ गुरमुखि सबदि सिजापदे तितु साचै दरबारि ॥ सचा सउदा खरचु सचु अँतरि पिरमु पिआरु ॥
 जमकालु नेडि न आवई आपि बखसे करतारि ॥ नानक नाम रते से धनवँत हैनि निरधनु होरु संसारु ॥ २६ ॥ जन की

टेक हरि नामु हरि बिनु नावै ठवर न ठाउ ॥ गुरमती नाउ मनि वसै सहजे सहजि समाउ ॥ वडभागी नामु धिआइआ
 अहिनिंसि लागा भाउ ॥ जन नानकु मँगै धूड़ि तिन हउ सद कुरबाणै जाउ ॥ २७ ॥ लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती
 करे पुकार ॥ इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ नालि चलै न अँती वार ॥ बिनु हरि सांति न आवई किसु आगै करी पुकार ॥
 वडभागी सतिगुरु पाइआ बूझिआ ब्रहमु बिचारु ॥ तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरि धारि ॥ २८ ॥
 असी खते बहुतु कमावदे अँतु न पारावारु ॥ हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ हरि जीउ लेखै वार
 न आवई तूँ बखसि मिलावणहारु ॥ गुर तुठै हरि प्रभु मेलिआ सभ किलविख कटि विकार ॥ जिना हरि हरि नामु धिआइआ
 जन नानक तिन्ह जैकारु ॥ २९ ॥ विछुड़ि विछुड़ि जो मिले सतिगुर के भै भाइ ॥ जनम मरण निहचलु भए गुरमुखि नामु
 धिआइ ॥ गुर साधू संगति मिलै हीरे रतन लभँन्हि ॥ नानक लालु अमोलका गुरमुखि खोजि लहँन्हि ॥ ३० ॥ मनमुख
 नामु न चेतिओ धिगु जीवणु धिगु वासु ॥ जिस दा दिता खाणा पैणणा सो मनि न वसिओ गुणतासु ॥ इहु मनु सबदि न
 भेदिओ किउ होवै घर वासु ॥ मनमुखीआ दोहागणी आवण जाणि मुईआसु ॥ गुरमुखि नामु सुहागु है मसतकि मणी
 लिखिआसु ॥ हरि हरि नामु उरि धारिआ हरि हिरदै कमल प्रगासु ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा हउ सद बलिहारी तासु ॥
 नानक तिन मुख उजले जिन अँतरि नामु प्रगासु ॥ ३१ ॥ सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई ॥ भेख
 करहि बहु करम विगुते भाइ दूजै परज विगोई ॥ नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोई ॥ ३२ ॥ हरि का नाउ
 अति वड ऊचा ऊची हू ऊचा होई ॥ अपड़ि कोइ न सकई जे सउ लोचै कोई ॥ मुखि संजम हछा न होवई करि भेख भवै सभ
 कोई ॥ गुर की पउड़ी जाइ चडै करमि परापति होई ॥ अँतरि आइ वसै गुर सबदु वीचारै कोइ ॥ नानक सबदि मरै मनु
 मानीऐ साचे साची सोइ ॥ ३३ ॥ माइआ मोहु दुखु सागरु है बिखु दुतरु तरिआ न जाइ ॥ मेश मेश करदे पचि मुए हउमै

करत विहाइ ॥ मनमुखा उरवारु न पारु है अध विचि रहे लपटाइ ॥ जो धुरि लिखिआ सु कमावणा करणा कछु न जाइ ॥
 गुरमती गिआनु रतनु मनि वसै सभु देखिआ ब्रहम सुभाइ ॥ नानक सतिगुरि बोहिथै वडभागी चडै ते भउजलि पारि लँघाइ
 ॥ ३४ ॥ बिनु सतिगुर दाता को नही जो हरि नामु देइ आधारु ॥ गुर किरपा ते नाउ मनि वसै सदा रहै उरि धारि ॥
 तिसना बुझै तिपति होइ हरि कै नाइ पिआरि ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ हरि अपनी किरपा धारि ॥ ३५ ॥ बिनु सबदै जगतु
 बरलिआ कहणा कछु न जाइ ॥ हरि रखे से उबरे सबदि रहे लिव लाइ ॥ नानक करता सभ किछु जाणदा जिनि रखी बणति
 बणाइ ॥ ३६ ॥ होम जग सभि तीरथा पढि पंडित थके पुराण ॥ बिखु माइआ मोहु न मिटई विचि हउमै आवणु जाणु ॥
 सतिगुर मिलिऐ मलु उतरी हरि जपिआ पुरखु सुजाणु ॥ जिना हरि हरि प्रभु सेविआ जन नानकु सद कुरबाणु ॥ ३७ ॥
 माइआ मोहु बहु चितवदे बहु आसा लोभु विकार ॥ मनमुखि असथिरु ना थीऐ मरि बिनसि जाइ खिन वार ॥ वडभागु होवै
 सतिगुरु मिलै हउमै तजै विकार ॥ हरि नामा जपि सुखु पाइआ जन नानक सबदु वीचार ॥ ३८ ॥ बिनु सतिगुर भगति न
 होवई नामि न लगै पिआरु ॥ जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि ॥ ३९ ॥ लोभी का वेसाहु न कीजै जे का
 पारि वसाइ ॥ अँति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ ॥ मनमुख सेती सँगु करे मुहि कालख दागु लगाइ ॥ मुह काले तिन्ह
 लोभीआं जासनि जनमु गवाइ ॥ सतसँगति हरि मेलि प्रभु हरि नामु वसै मनि आइ ॥ जनम मरन की मलु उतरै जन नानक
 हरि गुन गाइ ॥ ४० ॥ धुरि हरि प्रभि करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ जिउ पिँडु सभु तिस दा प्रतिपालि करे हरि राइ ॥
 चुगल निँदक भुखे रुलि मुर एना हथु न किथाऊ पाइ ॥ बाहरि पाखँड सभ करम करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ खेति
 सरीरि जो बीजीरे सो अँति खलोआ आइ ॥ नानक की प्रभु बेनती हरि भावै बखसि मिलाइ ॥ ४१ ॥ मन आवणु जाणु न
 सुझई ना सुझै दरबारु ॥ माइआ मोहि पलेटिआ अँतरि अगिआनु गुबारु ॥ तब नरु सुता

जागिआ सिरि डँडु लहा बहु भारु ॥ गुरमुखं करं उपरि हरि चेतिया से पाइनि मोख दुआरु ॥ नानक आपि ओहि उधरे
सभ कुटंब तरे परवार ॥ ४२ ॥ सबदि मरै सो मुआ जापै ॥ गुर परसादी हरि रसि धापै ॥ हरि दरगहि गुर सबदि सिजापै
॥ बिनु सबदै मुआ है सभु कोइ ॥ मनमुखु मुआ अपुना जनमुखोइ ॥ हरि नामु न चेताहि अँति दुखु रोइ ॥ नानक करता
करे सु होइ ॥ ४३ ॥ गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अँतरि सुरति गिआनु ॥ सदा सदा हरि गुण रवहि अँतरि सहज
धिआनु ॥ ओइ सदा अनँदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥ तिना नदरी इको आइआ सभु आतमरामु पछानु ॥
४४ ॥ मनमुख बालकु बिरधि समानि है जिन्हा अँतरि हरि सुरति नाही ॥ विचि हउमै कर्म कमावदे सभ धरमराइ कै जांही
॥ गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइ ॥ ओना मैलु पतंगु न लगई जिं चलनि सतिगुर भाइ ॥ मनमुख जूठि न
उतरै जे सउ धोवण पाइ ॥ नानक गुरमुखि मेलिअनु गुर कै अँकि समाइ ॥ ४५ ॥ बुरा करे सुकेहा सिद्धै ॥ आपणै रोहि
आपे ही दइ ॥ मनमुखि कमला रगडै लुझै ॥ गुरमुखि होइ तिसु सभ किछु सुझै ॥ नानक गुरमुखि मन सिउ लुझै ॥ ४६
॥ जिना सतिगुरु पुरखु न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ ओइ माणस जूनि न आखीअनि पसू ढोर गावार ॥ ओना
अँतरि गिआनु न धिआनु है हरि सउ प्रीति न पिआरु ॥ मनमुख मुए विकार महि मरि जँमहि वारो वार ॥ जीवदिआ नो
मिलै सु जीवदे हरि जगजीवन उर धारि ॥ नानक गुरमुखि सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ ४७ ॥ हरि मँदरु हरि साजिआ
हरि वसै जिसु नालि ॥ गुरमती हरि पाइआ माइआ मोहि परजालि ॥ हरि मँदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ॥
धनु भगवँती नानका जिना गुरमुखि लधा हरि भालि ॥ वडभागी गड़ मँदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइआ नालि ॥ ४८ ॥
मनमुख दह दिसि फिरि रहे अति तिसना लोभ विकार ॥ माइआ मोहु न चुकई मरि जँमहि वारो वार ॥ सतिगुरु सेवि सुखु
पाइआ अति तिसना तजि विकार ॥ जनम मरन का दुखु गइआ जन नानक सबदु बीचारि ॥ ४९ ॥ हरि हरि नामु

धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमलु विगसिआ
 सभु आतम ब्रह्मु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥ ५० ॥ धनासरी धनवँती जाणीऐ
 भाई जां सतिगुर की कार कमाइ ॥ तनु मनु सउपे जीअ सउ भाई लए हुकमि फिराउ ॥ जह बैसावहि बैसह भाई जह
 भेजहि तह जाउ ॥ एवडु धनु होरु को नही भाई जेवडु सचा नाउ ॥ सदा सचे के गुण गावां भाई सदा सचे के सँगि रहाउ
 ॥ पैणु गुण चँगिआईआ भाई आपणी पति के साद आपे खाइ ॥ तिस का किआ सालाहीऐ भाई दरसन कउ बलि
 जाइ ॥ सतिगुर विचि वडीआ वडिआईआ भाई करमि मिलै तां पाइ ॥ इकि हुकमु मँनि न जाणनी भाई दूजै भाइ फिराइ
 ॥ सँगति ढोई ना मिलै भाई बैसणि मिलै न थाउ ॥ नानक हुकमु तिना मनाइसी भाई जिना धुरे कमाइआ नाउ ॥
 तिन्ह विटहु हउ वारिआ भाई तिन कउ सद बलिहारै जाउ ॥ ५१ ॥ से दाडीआं सचीआ जिं गुर चरनी लगँन्हि ॥
 अनदिनु सेवनि गुरु आपणा अनदिनु अनदि रहँन्हि ॥ नानक से मुह सोहणे सचै दरि दिसँन्हि ॥ ५२ ॥ मुख सचे सचु
 दाडीआ सचु बोलहि सचु कमाहि ॥ सचा सबदु मनि वसिआ सतिगुर माहि समाहि ॥ सची रासी सचु धनु उतम पदवी
 पाहि ॥ सचु सुणहि सचु मँनि लैनि सची कार कमाहि ॥ सची दरगह बैसणा सचु माहि समाहि ॥ नानक विणु सतिगुर
 सचु न पाईऐ मनमुख भूले जाहि ॥ ५३ ॥ बाबीहा प्रिउ प्रिउ करे जलनिधि प्रेम पिआरि ॥ गुर मिले सीतल जलु पाइआ
 सभि दूख निवारणहारु ॥ तिस चुकै सहजु ऊपजै चुकै कूक पुकार ॥ नानक गुरमुखि सांति होइ नामु रखहु उरि धारि
 ॥ ५४ ॥ बाबीहा तूँ सचु चउ सचे सउ लिव लाइ ॥ बोलिआ तेरा थाइ पवै गुरमुखि होइ अलाइ ॥ सबदु चीनि तिख
 उतरै मँनि लै रजाइ ॥ चारे कुँडा झोकि वरसदा बूँद पवै सहजि सुभाइ ॥ जल ही ते सभ ऊपजै बिनु जल पिआस न
 जाइ ॥ नानक हरि जलु जिनि पीआ तिसु भूख न लागै आइ ॥ ५५ ॥ बाबीहा तूँ सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइ ॥

सभु किछु तैरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइ ॥ झिमि झिमि अँमितु
वरसदा तिसना भुख सभ जाइ ॥ कूक पुकार न होवई जोति जोति मिलाइ ॥ नानक सुखिं सवन्हि सोहागणी सचै नामि
समाइ ॥ ५६ ॥ धुरहु खसमि भेजिआ सचै हुकमि पठाइ ॥ इंदु वरसै दइआ करिं गूढी छहबर लाइ ॥ बाबीहे तनि मनि
सुखु होइ जां ततु बूंद मुहि पाइ ॥ अनु धनु बहुता उपजै धरती सोभा पाइ ॥ अनदिनु लोकु भगति करे गुर कै सबदि समाइ
॥ आपे सचा बखसि लए करि किरपा करै रजाइ ॥ हरि गुण गावहु कामणी सचै सबदि समाइ ॥ भै का सहजु सीगारु
करिहु सचि रहहु लिव लाइ ॥ नानक नामो मनि वसै हरि दरगह लए छडाइ ॥ ५७ ॥ बाबीहा सगली धरी जे फिरहि ऊडि
चड़हि आकासि ॥ सतिगुरि मिलिऐ जलु पाईऐ चूकै भूख पिआस ॥ जीउ पिँडु सभु तिस का सभु किछु तिस कै पासि ॥
विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि ॥ नानक घटि घटि एको वरतदा सबदि करे परगास ॥ ५८
॥ नानक तिसै बसंतु है जिं सतिगुरु सेवि समाइ ॥ हरि वुठा मनु तनु सभु परफडै सभु जगु हरीआवलु होइ ॥ ५९ ॥
सबदे सदा बसंतु है जित तनु मनु हरिआ होइ ॥ नानक नामु न वीसरै जिनि सिरिआ सभु कोइ ॥ ६० ॥ नानक तिना
बसंतु है जिना गुरमुखिं वसिआ मनि सोइ ॥ हरि वुठै मनु तनु परफडै सभु जगु हरिआ होइ ॥ ६१ ॥ वडडै झालिं
झलुंभलै नावड़ा लइऐ किसु ॥ नाउ लईऐ परमेसरै भँनण घड़ण समरथु ॥ ६२ ॥ हरहत भी तूँ तूँ करहि बोलहि भली बाणि
॥ साहिबु सदा हदूरि है किआ उची करहि पुकार ॥ जिनि जगतु उपाइ हरि रँगु कीआ तिसै विटहु कुरबाणु ॥ आपु छोडहि
तां सहु मिलै सचा एहु वीचारु ॥ हउमै फिका बोलणा बुझिं न सका कार ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु तुझै धिआइदा अनदिनु
सदा विहाण ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ करिं करिं थके वीचार ॥ नदरि करहि जे आपणी तां आपे लैहि सवारि ॥
नानक गुरमुखिं जिन्ही धिआइआ आए से परवाणु ॥ ६३ ॥ जोगु न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि ॥ नानक

घरि बैठिआ जोगु पाईऐ सतिगुर कै उपदेसि ॥ ६४ ॥ चारे कुँडा जे भवहि बेद पड़हि जुग चारि ॥ नानक साचा भेटै हरि
मनि वसै पावहि मोख दुआर ॥ ६५ ॥ नानक हुकमु वरतै खसम का मति भवी फिरहि चल चित ॥ मनमुख सउ करि
दोसती सुख कि पुछहि मित ॥ गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु ॥ जँमण मरण का मूलु कटीऐ तां सुख
होवी मित ॥ ६६ ॥ भुलिआं आपि समझाइसी जा कउ नदरि करे ॥ नानक नदरी बाहरी करण पलाह करे ॥ ६७ ॥

सलोक महला ४ १४ सतिगुर प्रसादि ॥

डभागीआ सोहागणी जिन्हा गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ अंतरि जोति परगासीआ नानक नामि समाइ ॥ १ ॥ वाहु
वाहु सतिगुरु पुरखु है जिनि सचु जाता सोइ ॥ जितु मिलिऐ तिख उतरै तनु मनु सीतलु होइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु सति
पुरखु है जिस नो समतु सभ कोइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरवैरु है जिसु निँदा उसतति तुलि होइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु
सुजाणु है जिसु अंतरि ब्रहमु वीचारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरँकारु है जिसु अँतु न पारावारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरु है जि
सचु द्रिड़ाए सोइ ॥ नानक सतिगुरु वाहु वाहु जिस ते नामु परापति होइ ॥ २ ॥ हरि प्रभ सचा सोहिला गुरमुखि नामु
गोविँदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनँदु ॥ वडभागी हरि पाइआ पूरन परमानँदु ॥ जन नानक नामु
सलाहिआ बहुडि न मनि तनि भँगु ॥ ३ ॥ मूँ पिरीआ सउ नेहु किउ सजण मिलहि पिआरिआ ॥ हउ दूढेदी तिन सजण
सचि सवारिआ ॥ सतिगुरु मैडा मितु है जे मिलै त इहु मनु वारिआ ॥ देंदा मूँ पिरु दसि हरि सजणु सिरजणहारिआ ॥
नानक हउ पिरु भाली आपणा सतिगुर नालि दिखालिआ ॥ ४ ॥ हउ खड़ी निहाली पँधु मतु मूँ सजणु आवए ॥ को
आणि मिलावै अजु मै पिरु मेलि मिलावए ॥ हउ जीउ करी तिस विटउ चउ खँनीऐ जो मै पिरी दिखावए ॥ नानक हरि होइ
दइआलु तां गुरु पूरा मेलावए ॥ ५ ॥ अंतरि जोरु हउमै तन माइआ कूड़ी आवै जाइ ॥ सतिगुर का

फुरमाइआ मँनि न सकी दुतरु तरिआ न जाइ ॥ नदरि करे जिसु आपणी सो चलै सतिगुर भाइ ॥ सतिगुर का दरसन
 सफलु है जो इछे सो फलु पाइ ॥ जिनी सतिगुरु मँनिआं हउ तिन के लागउ पाइ ॥ नानकु ता का दासु है जिं अनदिनु रहै
 लिव लाइ ॥ ६ ॥ जिना पिरी पिआरु बिनु दरसन किउ त्रिपतीऐ ॥ नानक मिले सुभाइ गुरमुखि इहु मनु रहसीऐ ॥ ७
 ॥ जिना पिरी पिआरु किउ जीवनि पिर बाहरे ॥ जां सहु देखनि आपणा नानक थीवनि भिं हरे ॥ ८ ॥ जिना गुरमुखि
 अँदरि नेहु तै प्रीतम सचै लाइआ ॥ राती अतै डेहु नानक प्रेमि समाइआ ॥ ९ ॥ गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा
 पाईऐ ॥ अनदिनु रहहि अनँदि नानक सहजि समाईऐ ॥ १० ॥ सचा प्रेम पिआरु गुर पूरे ते पाईऐ ॥ कबहू न होवै भँगु
 नानक हरि गुण गाईऐ ॥ ११ ॥ जिन्हा अँदरि सचा नेहु किउ जीवनिहि पिरी विहूणिआ ॥ गुरमुखि मेले आपि नानक
 चिरी विछुँनिआ ॥ १२ ॥ जिन कउ प्रेम पिआरु तउ आपे लाइआ करमु करि ॥ नानक लेहु मिलाइ मै जाचिक दीजै नामु
 हरि ॥ १३ ॥ गुरमुखि हसै गुरमुखि रोवै ॥ जिं गुरमुखि करे साई भगति होवै ॥ गुरमुखि होवै सु करे वीचारु ॥
 गुरमुखि नानक पावै पारु ॥ १४ ॥ जिना अँदरि नामु निधानु है गुरबाणी वीचारि ॥ तिन के मुख सद उजले तितु सचै
 दरबारि ॥ तिन बहदिआ उठदिआ कदे न विसरै जिं आपि बखसे करतारि ॥ नानक गुरमुखि मिले न विछुड़हि जिं मेले
 सिरजणहारि ॥ १५ ॥ गुर पीरां की चाकरी महां करडी सुख सारु ॥ नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाए हेत पिआरु ॥
 सतिगुर की सेवै लागिआ भउजलु तरै संसारु ॥ मन चिँदिआ फलु पाइसी अँतरि बिबेक बीचारु ॥ नानक सतिगुरि
 मिलिऐ प्रभु पाईऐ सभु दूख निवारणहारु ॥ १६ ॥ मनमुख सेवा जो करे दूजै भाइ चितु लाइ ॥ पुतु कलतु कुटँबु है
 माइआ मोहु वधाइ ॥ दरगहि लेखा मँगीऐ कोई अँति न सकी छडाइ ॥ बिनु नावै सभु दुखु है दुखदाई मोह माइ ॥ नानक
 गुरमुखि नदरी आइआ मोह माइआ विछुड़ि सभ जाइ ॥ १७ ॥ गुरमुखि हुकमु मँने सह केरा हुकमे ही सुखु पाए ॥

हुकमो सेवे हुकमु अराधे हुकमे समै समाए ॥ हुकमु वरतु नेमु सुच संजमु मन चिंदिआ फलु पाए ॥ सदा सुहागणि जि
 हुकमै बूझै सतिगुरु सेवै लिव लाए ॥ नानक क्रिपा करे जिन ऊपरि तिना हुकमे लए मिलाइ ॥ १८ ॥ मनमुखि हुकमु
 न बुझे बपुड़ी नित हउमै करम कमाइ ॥ वरत नेमु सुच संजमु पूजा पाखंडि भरमु न जाइ ॥ अंतरहु कुसुधु माइआ मोहि
 बेधे जिउ हसती छारु उडाए ॥ जिनि उपाए तिसै न चेतहि बिनु चेतै किउ सुखु पाए ॥ नानक परपंचु कीआ धुरि करतै
 पूरबि लिखिआ कमाए ॥ १९ ॥ गुरुमुखि परतीति भई मनु मानिआ अनदिनु सेवा करत समाइ ॥ अंतरि सतिगुरि
 गुरु सभ पूजे सतिगुर का दरसु देखै सभ आइ ॥ मंणीरे सतिगुर परम बीचारी जितु मिलिरे तिसना भुख सभ जाइ ॥
 हउ सदा सदा बलिहारी गुर अपुने जो प्रभु सचा देइ मिलाइ ॥ नानक करमु पाइआ तिन सचा जो गुर चरणी लगे आइ
 ॥ २० ॥ जिन पिरीआ सउ नेहु से सजण मै नालि ॥ अंतरि बाहरि हउ फिरां भी हिरदै रखा समालि ॥ २१ ॥ जिना
 इक मनि इक चिति धिआइआ सतिगुर सउ चितु लाइ ॥ तिन की दुख भुख हउमै वडा रोगु गइआ निरदोख भए लिव
 लाइ ॥ गुण गावहि गुण उचरहि गुण महि सवै समाइ ॥ नानक गुर पूरे ते पाइआ सहजि मिलिआ प्रभु आइ ॥ २२ ॥
 मनमुखि माइआ मोहु है नामि न लगै पिआरु ॥ कूडु कमावै कूडु संघरै कूड़ि करै आहारु ॥ बिखु माइआ धनु संचि
 मरहि अंति होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुचि संजमु करहि अंतरि लोभु विकार ॥ नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ
 न पवै दरगह होइ खुआरु ॥ २३ ॥ सभना रागां विचि सो भला भाई जितु वसिआ मनि आइ ॥ रागु नादु सभु सचु है
 कीमति कहीं न जाइ ॥ रागै नादै बाहरा इनी हुकमु न बूझिआ जाइ ॥ नानक हुकमै बूझै तिना रासि होइ सतिगुर ते
 सोझी पाइ ॥ सभु किछु तिस ते होइआ जिउ तिसै दी रजाइ ॥ २४ ॥ सतिगुर विचि अंम्रित नामु है अंम्रितु कहै कहाइ
 ॥ गुरुमती नामु निरमलु निरमल नामु धिआइ ॥ अंम्रित बाणी ततु है गुरुमुखि वसै मनि आइ ॥ हिरदै कमलु

परगासिआ जोती जोति मिलाइ ॥ नानक सतिगुरु तिन कउ मेलिओनु जिन धुरि मसतकि भागु लिखाइ ॥ २५ ॥ अँदरि
 तिसना अगि है मनमुख भुख न जाइ ॥ मोहु कुटँबु सभु कूडु है कूडि रहिआ लपटाइ ॥ अनदिनु चिँता चिँतवै चिँता बधा जाइ
 ॥ जँमणु मरणु न चुकई हउमै करम कमाइ ॥ गुरु सरणाई उबरै नानक लए छडाइ ॥ २६ ॥ सतिगुरु पुरख हरि धिआइदा
 सतसंगति सतिगुरु भाइ ॥ सतसंगति सतिगुरु सेवदे हरि मेले गुरु मेलाइ ॥ एहु भउजलु जगतु संसारु है गुरु बोहिथु नामि
 तराइ ॥ गुरसिखी भाणा मँनिआ गुरु पूरा पारि लँघाइ ॥ गुरसिखां की हरि धूडि देहि हम पापी भी गति पाहि ॥ धुरि मसतकि
 हरि प्रभ लिखिआ गुरु नानक मिलिआ आइ ॥ जमकँकर मारि बिदारिअनु हरि दरगह लए छडाइ ॥ गुरसिखा नो साबासि है
 हरि तुठा मेलि मिलाइ ॥ २७ ॥ गुरि पूरै हरि नामु दिडाइआ जिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ राम नामु हरि कीरति गाइ करि
 चानणु मगु देखाइआ ॥ हउमै मारि एक लिव लागी अँतरि नामु वसाइआ ॥ गुरमती जमु जोहि न सकै सचै नाइ समाइआ ॥
 सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ जन नानकु नाउ लए तां जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥ २८ ॥
 मन अँतरि हउमै रोगु भ्रमि भूले हउमै साकत दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुरु साधू सजणा ॥ २९ ॥ गुरमती हरि
 हरि बोले ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रँगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ गुरु
 सतिगुरु नामु दिडाइआ मनु अनतु न काहू डोले ॥ जन नानकु हरि का दासु है गुरु सतिगुरु के गुल गोले ॥ ३० ॥

सलोक महला ९ १४ सतिगुरु प्रसादि ॥

रते सेई जिं मुखु न मोडँन्हि जिन्ही सिआता साई ॥ झड़ि झड़ि पवदे करे बिरही जिन्ह कारि न आई ॥ १ ॥ धणी विहूणा पाट
 पटँबर भाही सेती जाले ॥ धूडी विचि लुडँदडी

सोहां नानक तै सह नाले ॥ २ ॥ गुर कै सबदि अराधीरे नामि रँगि बैरागु ॥ जीते पँच बैराईआ नानक सफल मारु इहु
 रागु ॥ ३ ॥ जां मूँडकु त लख तउ जिती पिनणे दरि कितडे ॥ बामणु बिरथा गइओ जनँमु जिनि कीतो सो विसरे ॥ ४
 ॥ सोरठि सो रसु पीजीऐ कबहू न फीका होइ ॥ नानक राम नाम गुन गाईअहिं दरगह निरमल सोइ ॥ ५ ॥ जो प्रभिं रखे
 आपि तिन कोइ न मारई ॥ अँदरि नामु निधानु सदा गुण सारई ॥ एका टेक अगँम मनि तनि प्रभु धारई ॥ लगा रँगु
 अपारु को न उतारई ॥ गुरमुखि हरि गुण गाइ सहजि सुखु सारई ॥ नानक नामु निधानु रिदै उरि हारई ॥ ६ ॥ करे सु
 चँगा मानि दुयी गणत लाहि ॥ अपणी नदरि निहालिं आप लैहु लाइ ॥ जन देहु मती उपदेसु विचहु भरमु जाइ ॥ जो
 धुरि लिखिआ लेखु सोई सभ कमाइ ॥ सभु कछु तिस दै वसि दूजी नाहि जाइ ॥ नानक सुख अनद भए प्रभ की मँनि
 रजाइ ॥ ७ ॥ गुरु पूरा जिन सिमरिआ सेई भए निहाल ॥ नानक नामु अराधणा कारजु आवै रासि ॥ ८ ॥ पापी कर्म
 कमावदे करदे हाए हाइ ॥ नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे धमराइ ॥ ९ ॥ नामु धिआइनि साजना जनम
 पदारथु जीति ॥ नानक धरम ऐसे चवहिं कीतो भवनु पुनीत ॥ १० ॥ खुभड़ी कुथाइ मिठी गलणिं कुमँत्रीआ ॥ नानक
 सेई उबरे जिना भागु मथाहि ॥ ११ ॥ सुतडे सुखी सर्वँन्हि जो रते सह आपणै ॥ प्रेम विछोहा धणी सउ अठे पहर
 लवँन्हि ॥ १२ ॥ सुतडे असँख माइआ झूठी कारणे ॥ नानक से जागँन्हि जि रसना नामु उचारणे ॥ १३ ॥ मिग
 तिसना पेखिं भुलणे वुठे नगर गँधब ॥ जिनी सचु अराधिआ नानक मनि तनि फब ॥ १४ ॥ पतित उधारण पारब्रहमु
 सँम्रथ पुरखु अपारु ॥ जिसहि उधारे नानका सो सिमरे सिरजणहारु ॥ १५ ॥ दूजी छोडि कुवाटडी इकस सउ चितु
 लाइ ॥ दूजै भारीं, नानका वहणिं लुढँदडी जाइ ॥ १६ ॥ तिहटडे बाजार सउदा करनि वणजारिआ ॥ सचु वखरु
 जिनी लदिआ से सचडे पासार ॥ १७ ॥ पँथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गवारिं ॥ नानक हरि बिसराइ कै पउदे नरकि

ताहि तै जानि ॥ १४ ॥ हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥ १५
 ॥ भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ १६ ॥ जिहि बिखिआ
 सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥ १७ ॥ जिहि माइआ ममता तजी सभ ते
 भइओ उदासु ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥ १८ ॥ जिहि प्राणी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ कह
 नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥ १९ ॥ भै नासन दुर्मति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ निसि दिनु जो नानक
 भजै सफल होहि तिह काम ॥ २० ॥ जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनुहु हरि नामु ॥ कहु नानक सुनि रे मना परहि न
 जम कै धाम ॥ २१ ॥ जो प्राणी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥ २२ ॥ जिउ
 सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥ २३ ॥ निसि दिनु माइआ कारने
 प्राणी डोलत नीत ॥ कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥ २४ ॥ जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग
 रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥ २५ ॥ प्राणी कछु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कह नानक बिनु हरि भजन परत
 ताहि जम फंध ॥ २६ ॥ जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुनि रे मना दुलभ मानुख देह ॥ २७
 ॥ माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥ २८ ॥ जो प्राणी
 निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥ हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥ २९ ॥ मनु माइआ मै फधि रहिओ
 बिसरिओ गोबिंद नामु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥ ३० ॥ प्राणी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु
 ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥ ३१ ॥ सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥ कहु नानक हरि
 भजु मना अँति सहाई होइ ॥ ३२ ॥ जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥ कहु नानक हरि

भजु मना निरभै पावहि बासु ॥ ३३ ॥ जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ दुरमति सिउ नानक
 फधिओ राखि लेहु भगवान ॥ ३४ ॥ बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवस्था जानि ॥ कहु नानक हरि भजन
 बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥ ३५ ॥ करणो हुतो सुना कीउ परिओ लोभ कै फँध ॥ नानक समिओ रमि गइओ अब किउ
 रोवत अँध ॥ ३६ ॥ मनु माइआ मै रसि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥ नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति
 ॥ ३७ ॥ नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥ ३८ ॥ जतन
 बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥ ३९ ॥ जगतु भिखारी फिरतु
 है सभ को दाता रामु ॥ कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥ ४० ॥ झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ
 जानु ॥ इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥ ४१ ॥ गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥ जिहि
 प्राणी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥ ४२ ॥ जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ तिहि नर
 हरि अँतरु नही नानक साची मानु ॥ ४३ ॥ एक भगति भगवान जिह प्राणी कै नाहि मनि ॥ जैसे सूकर सुआन
 नानक मानो ताहि तनु ॥ ४४ ॥ सुआमी को गिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ नानक इह बिधि हरि भजउ
 इक मनि हुइ इक चिति ॥ ४५ ॥ तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ नानक निहफल जात तिह जिउ कुँचर
 इसनानु ॥ ४६ ॥ सिरु कँपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥
 ४७ ॥ निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥ ४८ ॥
 जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥ ४९ ॥ रामु गइओ रावनु
 गइओ जा कउ बहु परवारु ॥ कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥ ५० ॥ चिँता ता की कीजीऐ जो
 अनहोनी होइ ॥ इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥ ५१ ॥ जो उपजिओ सो बिनसि है परो आज कै कालि

॥

नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जँजाल ॥ ५२ ॥ दोहरा ॥ बलु छुटकिओ बँधन परे कछू न होत उपाइ ॥ कहु नानक
 अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥ ५३ ॥ बलु होआ बँधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥ नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै
 तुम ही होत सहाइ ॥ ५४ ॥ सँग सखा सभिं तजिं गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥ कहु नानक इह बिपति मै टेक एक
 रघुनाथ ॥ ५५ ॥ नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥ कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मँतु ॥ ५६
 ॥ राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥ जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥ ५७ ॥ १ ॥

मुँदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिँनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥ अँमित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ जे को खावै
 जे को भुँचै तिस का होइ उधारो ॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ तम संसारु चरन लागि तरीऐ सभु
 नानक ब्रहम पसारो ॥ १ ॥

सलोक महला ५ ॥

तेश कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति
 होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ १ ॥

ਇਸ ਪੇਥੀ ਦੀ ਨਕਲ ਤੁਸੀਂ <http://www.GuruGranthSahib.com> ਤੋਂ ਮੁਫ਼ਤ ਪਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹੋ ॥

STRICTLY FOR FREE DISTRIBUTION.

A **free** copy of this volume can be obtained from <http://www.GuruGranthSahib.com>